112584

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

26 AUG 1983

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

A 6025

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction ...

साधारण संस्करण
January, 1937

पूर्ण संख्या १२६
पौष, १९९३

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव

मूल्य ।।)
Price -/8/-

राजसंस्करण	वार्षिक मूल्य १२)	विदेश के लिये	१२)	प्रति संख्या	१)
साधारण संस्करण	,, ,, ६)	,, ,,	६)	,,	।।)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पैसे की बचत कीजिए !!

व्यर्थ समय न खोइए !

पुस्तकें खरीदने में विशेष सुविधा

हिंदुस्तान-भर के हिंदी-प्रकाशकों की सभी पुस्तकें हमारे यहाँ मौजूद रहती हैं !

यदि आपको कभी किसी पुस्तक की आवश्यकता हो, तो फ़ौरन्
हमें एक पत्र डाल दीजिए

आपको इधर-उधर—बीसों जगह—भटकने की ज़रूरत नहीं,

क्योंकि

गंगा-ग्रंथागार हिंदी-पुस्तकों की सबसे बड़ी दुकान है

इस दुकान में उपन्यास, नाटक, काव्य, इतिहास, प्रहसन, गल्प, विज्ञान, खेती, मनोरंजन, राष्ट्रीय, धार्मिक आदि-आदि सभी विषयों की हिंदी-पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह रहता है।

हमारे यहाँ ३०० से भी कहीं ज़्यादा हिंदी-प्रकाशकों के ग्रंथ मौजूद हैं।

एक कार्ड डालकर बड़ा सूची-पत्र मँगा लें

हमारे यहाँ से मँगाने में डाक-खर्च तथा समय, दोनो की बचत होती है। हमारे यहाँ इस बात की बड़ी सावधानी रक्खी जाती है कि ग्राहकों को किसी प्रकार की हानि न उठानी पड़े। पत्र बड़े ध्यान से पढ़े जाते हैं, और पत्र पहुँचते ही पुस्तकें तुरंत रवाना की जाती हैं। यदि किसी कारण विलंब की संभावना होती है, तो पत्र द्वारा सूचना दे दी जाती है।

नई पुस्तकें ! नई पुस्तकें !! नई पुस्तकें !!!

जो अभी—इसी मास में—प्रकाशित हुई हैं

बिहारी-दर्शन (आलोचना) मूल्य २), २॥); ब्रज-भारती (काव्य) मूल्य ॥), १)
फूलों की सेज (कामशास्त्र) मूल्य २), २॥); अतीत के चित्र (कहानियाँ) मूल्य ॥=), १=)

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लेख-सूची

		पृष्ठ
१.	साधना (कविता)—[लेखक, श्री-रामकुमार वर्मा	४७३
२.	गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश'	४७४
३.	मोहिनी (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत गँवार एम्० ए०, डी० लिट्० ...	४७५
४.	तुलसीदास की रामोपासना—[लेखक, श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि ...	४८६
५.	मृत्यु से (कविता)—[लेखक, श्रीयुत बालकृष्ण राव	४९८
६.	मेरी जापान-यात्रा और जापानी जीवन पर विहंगम दृष्टि (सचित्र, यात्रा)—[लेखक, श्रीयुत सेठ लक्ष्मणप्रसाद, बैंकर और रईस	४९९

रामचरितमानस

सुप्रसिद्ध देशी और विदेशी विद्वानों से प्रशंसित, सरल और प्रामाणिक टीका-सहित

टीकाकार—रामनरेश त्रिपाठी

शुद्ध संस्करण; आकार बड़ा; पृष्ठ १६००; छपाई सुंदर; कपड़े की जिल्द; मूल्य ५)

सुधा के ग्राहकों से ३)

यह रियायत ३० जनवरी, १९३७ तक के लिये ही है। एक पुस्तक का वज़न लगभग ढाई सेर; डाक-व्यय १॥); रेल से मँगाने में किफ़ायत होगी। पता—

हिंदी-मंदिर, प्रयाग

स्त्री-मात्र के अवश्य पढ़ने योग्य

तीन पुस्तकें

अमेरिकन स्त्री-शिक्षा—अमेरिका देश की स्त्रियाँ अपने नटखट और बुरे चलन के पतियों को कैसे वश में रखती हैं, वह सब इसमें बताया गया है। दाम १)

जापानी स्त्री-शिक्षा—यह पुस्तक जापान में दो हजार वर्ष से दहेज में दी जाती है। ससुराल में जाकर स्त्रियों को कैसे रहना चाहिए, यह इसमें बताया गया है। सभी देशों की स्त्रियों को उपकारी है। कन्या-पाठशालाओं में बाँटने की चीज़ है। दाम सिर्फ ।)

वेदना-हीन प्रसव—वेदना-हीन प्रसव कैसे हो सकता है, यही इसमें बताया गया है। क़ीमत ॥)

सुशीला और सुशिक्षिता स्त्रियों को **बालसुधा** का नमूना मुफ़्त मिलेगा।

मँगाने का पता—

सुख-संचारक-कंपनी, मथुरा

		पृष्ठ
७.	ब्रजभाषा का क्षेत्र क्या सीमित है ?—[लेखक, श्रीयुत किशोरीदास वाजपेयी	५०९
८.	अंतरराष्ट्रीय संधियों का मूल्य—[लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०	५११
९.	ब्रजभारती पर एक दृष्टि (आलोचना)—[लेखक, श्रीपं० रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एलू-एलू० बी०, ऐडवोकेट ...	५१६
१०.	चीन की संस्कृति और उस पर लाव त्जे का प्रभाव—[लेखक, श्रीरामनाथलाल 'सुमन'	५१९
११.	समय (कहानी)—[लेखक, श्रीकामेश्वरनाथ भार्गव विशारद	५२५
१२.	लिक्खाड़जी (व्यंग्य चित्र) ...	५३२
१३.	सुधा-चित्रावली	५३३
१४.	चयन—[लेखकगण, श्रीयुत गिरिधरजी शर्मा 'नवरत्न', श्रीयुत लोचनप्रसाद पांडेय, श्रीसुशीलकुमारी मिश्र, कुमारी	

विज्ञापन

नेमिदूत

इस काव्य में मेघदूत के चतुर्थ पद की पाद-पूर्ति करते हुए विक्रमसुत सांगण ने जैनियों के बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ और राजुल का चरित्र चित्रण किया है। यह खड़ी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि, महिषासुर-बध के लेखक कुँ० हिम्मतसिंहजी का किया हुआ सरस हिंदी-पद्यानुवाद, मुनिराज विद्याधिजयजी महाराज-लिखित भूमिका-सहित, प्रकाशित हुआ है। मूल्य ।–)

गंगा-ग्रंथागार

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सूतिका, पौरुषहीनता, अजीर्ण और ज्वर को दूर करनेवाला

सर्वश्रेष्ठ टॉनिक वाइन

पता—ढाका-आयुर्वेदीय फ़ार्मेसी लिमिटेड

एक पिंट का दो रुपए आठ आने

क्वार्टर का चार रुपए आठ आने

स्थानीय एजेंटों से लीजिए

या

सीधे हेड ऑफ़िस ढाका (बंगाल) से मँगाइए

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

11584

पृष्ठ

दमयंती 'प्रभाकर', श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', श्रीयुत मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट' और श्रीयुत लक्ष्मीधर वाजपेयी ५३७

१५. परीक्षा—[लेखक, श्रीचंद्रिकाप्रसाद 'जिज्ञासु', श्रीयुत रामदत्त शुक्ल ऐडवोकेट और श्रीयुत 'उमेश' ५४७

१६. नए फूल ५५०

१७. सौरभ (संपादकीय विचार) ... ५५१

❀ उत्साह-स्फूर्ति-तेज ❀

अनुत्साह और मुख पर की झाँख दूर कर प्रत्येक अंग में उत्साह, स्फूर्ति और तेज लाने के लिये "शक्ति-संजीवनी" गोलियाँ ही उत्तम इलाज है।

क़ीमत ६० गोलियों की (सोने की वरक़-वाली) शीशी की १२) बारह रुपए।

आतंक-निग्रह-औषधालय

जामनगर, काठियावाड़

नक़ली माल हर्गिज़ मत लीजिए

WILKINSON'S

SARSAPARILLA

विलकिंसन साहब का सार्सापैरिला दुनिया-भर में प्रसिद्ध है, और एक पूरी शताब्दी से नाम पैदा कर रहा है। विलकिंसन साहब का सार्सापैरिला बीमारी रोकने के लिये एक ज़बर्दस्त ढाल है। यह शरीर को आक्रमण सहन करने के लिये बल देता है। ख़राब ख़ून को बदलकर ठीक स्वाभाविक हालत पर लाता है।

नक़ली माल से होशियार रहिए, इसकी हरएक असली शीशी पर यह ट्रेडमार्क और दस्तख़त बना रहता है।

Trade Mark

Thomas Wilkinson

मालिक और बनानेवाले

टॉमस विलकिंसन लिमिटेड मैन्यूफ़ैक्चरिंग केमिस्ट्स

नं० ४६, साउथवार्क स्ट्रीट, लंदन, S. E. I. इँगलैंड

शुष्क यकृत, शिथिलता, सुजली, फोड़ा, गठिया, चर्म-रोग, कमज़ोरी इत्यादि के लिये बहुत ही अच्छी और बहुमूल्य दवा

मुफ़्त ! मुफ़्त !!

सुखी जीवन, उत्तम संतति तथा संसार-सुख प्राप्त करने के सरल नियम समझानेवाली—

वैद्यकविद्या

पुस्तक विना डाक-महसूल बिलकुल मुफ़्त भेजी जाती है। आज ही मँगावें—

मदनमंजरी फ़ार्मेसी, जामनगर काठियावाड़

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. मीरा की प्रिय वंशी ४७३
२. स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीतारामजी का परिवार ५०८
३. कुमारी दमयंती 'प्रभाकर' ५०९

(ख) व्यंग्य

४. लिक्खाड़जी ५३२

(ग) सादे

५. सेठ लक्ष्मणप्रसाद, बैंकर और रईस, आगरा ४९९
६. कोबे के निकट रोक्को-पर्वत पर रस्सी का मार्ग ५०१
७. रोक्को-पर्वत का रस्सी-मार्ग का स्टेशन ... ५०४
८. श्रीरामनाथ 'सुमन' ५२०
९. श्रीयुत ब्रिजलाल बियाणी, अकोला (बरार) ५३३
१०. कविराज बिहारीलाल (बिजावर) ... ५३४
११. लोचनप्रसाद पांडेय ५३५
१२. जन्मांध बालक रामदास ५३५
१३. राजपूताने की एक रमणी ५३६
१४. श्रीयुत सम्राट् अष्टम एडवर्ड ... ५५१
१५. सिसेज़ सिंपसन ५५२
१६. स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीतारामजी ५५९

रजिस्टर्ड

अमृतांजन पेन बाम

सबसे उत्तम, दर्द दूर करनेवाला भारतीय मरहम सर्व प्रकार के दर्दों को दूर करता है। सब जगह मिलता है।

अमृतांजन डिपो, कलकत्ता, बंबई और मद्रास।

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

❀ रूपविलास ❀

खूबसूरत बनाने के लिये यही प्रसिद्ध दवा है। मुहासा, झाईं, फुंसी, झुर्री, बदरौनकी, कुरियाँ वग़ैरह बहुत जल्द दूर होकर गोरा गुलाब के फूल-सा खिला गुलाबी छटा मुख पर दमकने लगती है। कैसा ही बदसूरत, बदरौनक मनुष्य क्यों न हो, १५ ही रोज़ के लगाने से दूना चेहरा खूबसूरत नज़र न आवे, तो दाम वापस। यह स्त्री-पुरुष दोनों का दिल ख़ुश करनेवाली मनोमोहिनी ख़ुशबूदार दवा है। क़ीमत फ़ी डिब्बा १॥) एक रुपया दस आना, डाक-खर्च =)

पता—रूपविलास-कंपनी, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, इटावा (यू० पी०)

५००) इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफेदी) की अद्भुत वनौषध। तीन दिन में पूरा आराम। यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा कर थक गए हों, तो इसे लगावें। बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, —) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २)

पता—श्रीवैद्यराज अम्बिकाकिशोरराम, नं० एम० १२९ पो० कतरीसराय (गया)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम जिला प्रतापगढ़

मुकद्दमा नं० ४ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २३—४—३७

ठा० लालबहादुरसिंह वल्द कवेदीनसिंह व ठा० राजेंद्र बहादुरसिंह नाबालिगान बरिफाकत ठा० लालबहादुर सिंह पिदर खुद सोमवंशी साकिन कटाता परगना व जिला प्रतापगढ़

सायलान

बनाम

रामनाथ वग़ैरह फरीकसानियान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहेह ज़ैल दरख़्वास्तकुंनिदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल हो तो अंदर मियाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

तफसील जायदाद ग़ैरमनकूला हस्ब दफा ७ इनकंबर्ड ऐक्ट

नाम मौजा परगना व जिला	किस्म	हक़ीयत	नं० खाता	तादाद हिस्सा रकबा	मालगुजारी	हिस्सा सालाना
१. बोजहामुहाल कामतासिंह परगना व जिला प्रतापगढ़	आला	०	१६ आना	९०.॥ऽ।	१५९॥)	मुसल्लम
२. टिकरी मुहाल कामतासिंह पट्टी कामतासिंह परगना प्रतापगढ़	,,	२	०	२०७.॥२ऽ॥।३	१९६।-)॥	,,
३. अकोटिया मुहाल कामतासिंह परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	१	०	६०.॥।२ऽ॥	९३॥)	,,
४. कटाता परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	१	१६ आना	१६२.॥४ऽ॥१	२८६)	,,
५. माखनपुर पट्टी लालबहादुरसिंह परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	१	बीघा वा ८६	३०.।१ऽ३	४६।=)॥	,,
६. अकारीपुरमुहालखासपट्टीकामतासिंह परगना व जि० प्रतापगढ़	,,	१२	२३.॥।४ऽ१	२३.॥।४ऽ१	३०।)	,,
७. अंतपुर पट्टी कामतासिंह परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	२७	०	३.।ऽ१	।-)॥	,,
८. पनियारी पट्टी सेहतशाह परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	१२	०	६०.॥।१ऽ॥४	१००॥=)	,,
९. पूरे चकईवेदुआ मौजा टेऊगा मुहाल कामतासिंह परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	१	१६ आना	१३२.॥।१ऽ।४	१७०॥)	,,
१०. खजुरनी मुहाल शिवपुर पट्टी सेहतशाह परगना प्रतापगढ़	,,	२	२ आना	१९.॥ऽ॥।२	३८॥)॥	,,
११. बोझी परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	३	०	शामिलात १०.॥२ऽ॥१	शामिल खाता नं० ५२	,, बकदर निस्फ
	,,	५३	०	॥४ऽ॥	१५॥≡)	मुसल्लम
	,,	५४	०	७.॥।३ऽ॥	शामिल खाता ६३	,,
	,,	५५	०	१०.॥।ऽ॥	,,	मिनजुमला २०के५हिस्सा
	,,	५६	०	१.ऽ।	,,	मुसल्लम
	,,	५७	०	३.ऽ॥२	,,	,,
	,,	५८	०	४.ऽ।४	,,	,,
	,,	६२	शामिलात	२३.२ऽ।३	,,	नकद हिस्सा

नाम मौजा व परगना	हकीयत	नंबर खाता	तादाद खेवट	हिस्सा	रकबा	मालगुजारी	हिस्सा सायलान
१२.पूरे खरगराय परगना व जिला प्रतापगढ़ पट्टी सेहतशाह	आला	३७	०		१.।१५३	६॥=)	मुसल्लम
	,,	३८	०		१.॥५१	,,	५/६
	,,	३९	०		५.॥३५।४	,,	मुसल्लम
	,,	४०	०		१॥।४५।	,,	,,
	,,	४१	०		.१५	,,	,,
	,,	४२	०		॥।३५॥	,,	,,
	,,	४५	शामिलात देह		४३.॥२५॥।३	,,	हस्ब हसीस
१३. पूरे नियादर परगना प्रतापगढ़	,,	१	१६ आना		१७२.५४ ७१॥)	मिनजुमला १६ आना १०½पई	
१४. भटपूरा परगना व जिला प्रतापगढ़	,,	१०	०		१९.१५।३ ४२॥।=)॥	मुसल्लम	
	,,	११	०		.॥४५॥।३	शामिल खाता १० बकदर निस्फ	
	,,	२१	०		१॥।१५	,, मिनजुमला ५ के ४ हिस्सा	
	,,	३०	०		१.।३५१	,, ,, ७३९ के १८४ ,,	
	,,	३१	०		.४५॥।४	,, मुसल्लम	
	,,	३३	शामिलात देह		७६.॥।५॥।२	,, बकदर निस्फ	
१५. बुआपुर परगना व ज़िला परतापगढ़ पट्टी सेहतशाह	आला	४०	०		.३.२)॥।३	२५।=)	मुसल्लम
	,,	४१	०		४.॥।४५।	शामिल खाता ४० हस्ब हसीस	
	,,	५०	०		१.१५॥४	,,	,,
	,,	५३	०		२,॥।३५॥४	,,	मुसल्लम
	,,	५४	०		॥।१५।॥३	,,	बकदर निस्फ़
	,,	५५	०		.॥३५॥३	,,	हस्ब हसीस
	,,	५६	०		३५॥	,,	,,
	,,	६०	०		८॥।५।४	,,	५/६
	,,	६२	०		२ ॥।१५।३	,,	हस्ब हसीस
	,,	६५	०		२.१५	,,	मिनजुमला ४ के १ हिस्सा
	,,	६६	०		२.॥१५।२	,,	,,
	,,	६७	०		१.॥२५॥३	,,	मिनजुमला ५ के १ हिस्सा
	,,	६८	०		१.॥१५।॥१	,,	मिनजुमला ४ के १ हिस्सा
	,,	६९	०		२.॥५।	,,	,,
	,,	७०	०		॥३५०	,,	हस्ब हसीस
	,,	७१	०		११७.५३	,,	,,
	,,	७३	शामिलातदेह		८.।२५॥।	,,	,,
१६-पहाड़पुर गजेहरा रगना व जिला परतापगढ़	,,	२०	०		१७.॥।५।१	,,	मिनजुमला७२२३के४०१हिस्सा
	,,	२१	०		२०.॥।१५।शामिलखातानं०२०	,,	८३२६ के २७९६ ,,
	,,	२२	०		१२.५॥।	,,	,, ४००७ के१२७० में हस्ब हसीस
	,,	२३	०		॥३५॥२	,,	मिनजुमला निस्फ के हस्ब हसीस
	,,	२४	०		६.॥४५॥४	,,	मिनजुमला२४६४के६१०हिस्सा
	,,	२५	०		४.५१	,,	,, १६११ के ४७० ,,
	,,	२६	०		१८८.॥।३५॥।२	,,	शामिलात थोक में हस्ब हिस्सा
	,,	६१	०		१९.॥।१५॥।	,,	शामिलात देह में ,,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नाम मौजा व परगना	हकीयत नंबर खाता खेवट	तादाद हिस्सा	रकबा	मालगुजारी हिस्सा	सायलान
१७. भजनपुर परगना व जिला प्रतापगढ़ पट्टी सेहतशाह	आला २	०	२४२.॥ऽ२	२९१॥)	मिनजुमला १२६के६३ हिस्सा
	,, ३	०	१२७.१ऽ॥।४	१७६-)	मिनजुमला२३८१४के२२२६,,
		०			,, ,, के४४५२
	मुरतहनी ,,	०	...	...	मिनजानिब उदितसिंह
पट्टी मुहिबशाह	आला ८	०	१५७.॥।२ऽ॥।२	१७२॥-)	मिनजुमला ३७२०के८३हिस्सा
	मरतहनी	०	,,	,,	,, ,, के ७२ ,,
	,,	०			मिनजानिब उदितसिंह
१८. नरहरपट्टी परगना व जिला परतापगढ़	आला १९	०	२१ऽ	३१॥।=)	मिनजुमला १६३ के ८३ हिस्सा
	,, २०	०	२.४ऽ।	शामिलात खाता १९ हिस्सा	८०/१७७
	,, २१	०	५.२ऽ।२	,,	६७२/२०१९७
	,, २४	०	२३४.॥४ऽ॥२	,,	७८०६/१०४३१५
	,, ३५	०	१.२ऽ।	२-)	मुसल्लम
१९. अजमेरशाह परगना प्रतापगढ़ थोकलोकमान	,, ३६	०	६६.।१ऽ३	,,	शामिलात देह हस्ब हसीस
२० सराय ताराचंद परगना व जिला परतापगढ़ थोक लोकमन पट्टी सेहतशाह	,, ५३	०	१.ऽ३	३।≡)	मुसलम
	,, ५५	०	.१ऽ	शामिला खाता ५३	२/१९
	,, ५६	०	.॥।१ऽ४	,,	४ऽ१
	,, ५७	०	॥ २ऽ॥२	,,	बकदर निस्फ हिस्सा
	,, ५८	०	१.॥४ऽ	,,	.।ऽ।२
	,, ५९	०	३२.ऽ॥।१	शामिलात देह में हस्ब हसीस	

फेहरिस्त 'ज' जायदाद मनकूला मदखला सायलान

गाय	भैंस	घोड़ी
१	१	१

आज बतारीख १७ माह दिसंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी हुआ।

मुंसरिम

२४ वर्ष के आज़मूदा मशहूर सुरमे !

ट्रेकोरीन—(रजिस्टर्ड) रोहों-जैसे असाध्य रोगो को जड़ से खोनेवाली दवा।

ल्युकोमीन—(रजिस्टर्ड) फूली, माड़ा, जाला, खुजली, धुंध, रतौंधी, आँखों की लाली, परवाल, बिरूनियों का गिरना आदि आँख के रोगों की रामबाण ओषधि। बीसियों का चश्मा छूट गया। अंधे सूझते हो गए। सैकड़ों प्रशंसा-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। मूल्य छोटी शीशी ॥), बड़ी १), नमूना मुफ्त।

सैकड़ों डॉक्टर, हकीम, वैद्य और अस्पताल इस्तेमाल करा रहे हैं।

जवाहर केमिकल वर्क्स, माईथान, आगरा।

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम जिला खीरी
मुक़द्दमा नंबर २८ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १० मार्च सन् १९३७ ई०
लेखराज वल्द भजनलाल कौम कलवार साकिन पसिगवाँ जिला खीरी सायल

बनाम

१—प्रसादीलाल वल्द अँगनेलाल कौम वाथम वैश्य साकिन शहिजहाँपुर मुहल्ला भाटनटोला परगना शहिजहाँपुर
२—पं० बंसगोपाल वल्द दुर्गाप्रसाद कौम ब्राह्मण साकिन पसिगवाँ परगना पसिगवाँ
३—लाला गजोधरलाल वल्द देवीप्रसाद कौम कायस्थ साकिन पसिगवाँ परगना पसिगवाँ ज़िला खीरी
४—इतवारी नाबालिग़ वल्द लाखुन व बवलायत मु० लछिमिन मादर खुद कौम अहीर साकिन खिरहा परगना पसिगवाँ
५—इंद्रजीत वल्द कुंजबिहारीलाल कौम कायस्थ साकिन पसिगवाँ परगना पसिगवाँ जिला खीरी

हरगाह जायदाद मुंदर्जा दरख्वास्त कुनिंदा कज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्ज़ा में हस्ब दफ़ा ८ व १० यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ में जाहिर की है लिहाज़ा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल खास हो, तो अंदर मियाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

मुंदर्जा बयान तहरीरी सायलान दरख्वास्तकुनिंदा

नंबर शुमार	नाम मौज़ा मय परगना	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा	नवीन हक़	मालगुज़ारी
१	किशुनपूर अजीत परगना पसिगवाँ	×	२ बिस्वा १० बिसवांसी	हक़ आला	२९।।।-)।।।
२	चक मनोहर परगना पसिगवाँ	×	१८ एकड़ ७१ डिस्मिल	,,	२५)
३	मौज़ा उड़ेलिया परगना पसिगवाँ	×	२३ एकड़ ५९ डिस्मिल	,,	१९-)।।।
४	मौज़ा अमोरह परगना मुहमदी	×	१८ एकड़ ८५ डिस्मिल	,,	
५	मौज़ा बहादुरनगर परगना औरंगाबाद	×	१५ बिस्वा	,,	४०।।≡)

जायदाद ममलूक़ा सायल दफ़ा ६०

काश्तकारी बल	बैल जोत	भैंस	गाय	बछरा
१६ रास	६ रास	२ रास	५० रास	२० रास
भैंसा	अद्धा	गाड़ी	घोड़ा	लोटा कसकुट
४ रास	एक	एक	एक रास	६ अदद
लोटा फूल	थाली फूल	थाली कसकुट	चिमचा पीतल	
४ अदद	४ अदद	४ अदद	एक	
कड़ाही आहिनी	गगरा पीतल	गगरा लोहा	चक्की संघ	बालटी
एक अदद	२ अदद	२ अदद	एक	२ अदद
जाजिम	पलँग	दरी कलाँ	क़ालीन	दरी खुर्द
२ अदद	८ अदद	४ अदद	२ अदद	२ अदद

एक किता मकान व अहाता महदूदा अरबा जैल वाक़े पसिगवाँ ज़िला खीरी

अहाता एक — मकान रहनेवाला एक

पूरब तालाब — पच्छिम रास्ता — उत्तर तालाब — दक्खिन रास्ता वर दरख्त शीशम

महासिल काश्त वाक़े पसिगवाँ तख्मीनन १२५ बीघा एक किता बाग वाक़े पसिगवाँ परगना पसिगवाँ ज़िला खीरी

तफ़सील जायदाद जो महाजनान दिखलाते हैं

नदारद

आज तारीख ८ माह दिसंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बअदालत जनाब मिस्टर लक्ष्मीनारायण मिश्र साहब बहादुर स्पेशल जज साहब बहादुर सेकंड ग्रेड शाहजहाँपुर
तारीख़ पेशी २५ फ़रवरी सन् १९३७ ई०
मु० नंबर १४५ सन् १९३६ ई०
१—अपरबलसिंह वल्द रामसिंह
२—श्रीपालसिंह } नाबालिग़ान पिसरान अपरबलसिंह बविलायत अपरबलसिंह पिदर ख़ुद अक़्वाम
३—शिशुपालसिंह } ठाकुर साकिनान मौज़ा चौकी आजमपुर परगना जलालाबाद ज़िला शाहजहाँपुर
सायलान

बनाम

१—ज्वालासिंह वल्द हनुवंतसिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौज़ा हटगढ़ परगना जलालाबाद ज़िला शाहजहाँपुर
२—गयाबख़्शसिंह वल्द भूपसिंह
३—श्रीपालसिंह नाबालिग़ वल्द शिवबख़्शसिंह बविलायत मुसम्मात सेठीकुँवरि मादर ख़ुद
४—रनजीत सिंह नाबालिग़ वल्द माधोसिंह बविलायत मुसम्मात चुन्नाकुँवरि मादर ख़ुद
} अक़्वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा कमालपुर परगना बिजोहा ज़िला हरदोई
५—मुसम्मात भगना ज़ौजे द्वारिकासिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौज़ा चौकी आज़मपूर परगना जलालाबाद ज़िला शाहजहाँपुर
६—रामदयाल वल्द नामालूम क़ौम महाजन साकिन क़स्बा जलालाबाद ज़िला शाहजहाँपुर
७—रामदयाल वल्द बलदेवप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा पतौरा परगना बिजोहा ज़िला हरदोई
८—डालसिंह वल्द गंगोलीसिंह
९—मुसम्मात गंगाप्यारी ज़ौजे तालुकसिंह
१०—भारतसिंह नाबालिग़ वल्द धूमसिंह बविलायत डालसिंह चचा हक़ीक़ी
} अक़्वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा कोटियाँ मुताल्लिक़ा चौकी आज़मपुर परगना जलालाबाद ज़ि०शाहजहाँपुर
फ़रीक़सानियान

हरगाह मुसम्मियान अपरबलसिंह सायलान वग़ैरह ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बजरिए जनाब कलेक्टर साहब बहादुर बहराइच गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख़्वास्तदिहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो वह अंदर तीन माह अज़ तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट में अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख़ ११ नवंबर, १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसरिम

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला खीरी
मुक़द्दमा दीवानी नं० १२५ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १५ मार्च १९३७ ई०
दयाराम वल्द माधौराम क़ौम ब्राह्मण साकिन जोहौरा परगना हैदराबाद ज़िला खीरी
सायल

बनाम

१—रामभजन } पिसरान जगन्नाथप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिनान जोहौरा परगना हैदराबाद ज़िला खीरी
२—रामभरोसे }
फ़रीक़सानियान

हरगाह मुसम्मे दयाराम ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बजरिए जनाब डिप्टी-कमिश्नर साहब बहादुर खीरी गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख़्वास्तदिहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह अज़ तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट में अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख़ ८ दिसंबर, १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

बअदालत जनाब डाक्टर लक्ष्मीनारायण मिश्र साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम फ़तेहपुर

नमूना नं० १६६

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

मुक़द्दमा नं० २११ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १७—४—३७

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदाद हाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

१—शिवरामसिंह वल्द तिलोकसिंह
२—योपकसिंह वल्द राजासिंह

} अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा मीराई परगना खिदकी ज़िला फ़तेहपुर — सायलान

बनाम

१—रामशंकर वल्द अधारसिंह
२—गंगादेई दुख़्तर अधारसिंह
३—मु० जानकी कुँवरि बेवा दुर्गासिंह
४—छेदूसिंह वल्द रघुबरसिंह

} अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा मीराई परगना खिदकी ज़िला फ़तेहपुर — फ़रीक़सानियान

सायलान मज़कूरा बाला ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे इस गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा खिलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अग़राज़ व मौरकाजात के लिये जेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब पं० हरीशंकर चतुर्वेदी साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम जिला लखनऊ

मुक़द्दमा नं० २६ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २५—२—३७ ई०

१—मिर्ज़ा मुमताज़बेग
२—मिर्ज़ा नक़ीबेग
३—मुसम्मात कुबराख़ातून ज़ौजा असगरबेग

} पिसरान मोहम्मदतक़ीबेग — साकिनान मौज़ा परमदी परगना महोना जिला लखनऊ — सायलान

बनाम

१—मिर्ज़ा बादशाहहुसेन वल्द मोहम्मदहुसेन साकिन बेगमगंज जिला बाराबंकी
२—मुसम्मात एवज़ुन्निसा ज़ौजा सज्जादहुसेन साकिन मौज़ा मतई जिला बाराबंकी

फ़रीक़सानियान

हरगाह जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा कर्ज़ख़्वाह ने अपने बयान तहरीरी दरख़्वास्त सराहत कर्ज़ा में हस्ब दफ़ा ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर किया है। लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी को हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल हो तो अंदर मियाद ३ माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे। बाद इनक़िज़ाय मियाद कोई उज्र मसमूअ न होगा।

तफ़सील जायदाद

हिस्सा ज़मींदारी मौज़ा बरगदी ८)॥ परगना महोना जिला लखनऊ

मुंसरिम

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम जिला खीरी
मुक़द्दमा नं० १३४ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ३१—३—१९३७ ई०
मुंशी रामरतनलाल वल्द देवीप्रसाद क़ौम कायस्थ साकिन सिकंदराबाद जिला खीरी सायल

बनाम

१—कालिकाप्रसाद वल्द देवीप्रसाद क़ौम कायस्थ साकिन सिकंदराबाद परगना हैदराबाद ज़िला खीरी
२—मथुराप्रसाद, ३—मिट्ठूलाल, ४—हज़ारीलाल, ५—मुसम्मात हुलासी बेवा श्यामलाल } पिसरान भजनलाल अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा जमूरा परगना हैदराबाद ज़िला खीरी
६—सरजूप्रसाद वल्द रामचरण क़ौम ब्राह्मण साकिन सकतापूर परगना पैंडा जिला खीरी
७—सरस्वतीप्रसाद नाबालिग़ वल्द बंशीलाल बविलायत मु० फूलमती मादर खुद
८—छोटेलाल, ९—कालीचरण, १०—हज़ारीलाल, ११—पुत्तूलाल } पिसरान मिहीलाल क़ौम कायस्थ साकिन मौजा जमूरा परगना हैदराबाद ज़िला खीरी

फ़रीक़सानियान

हरगाह सायल ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बज़रिए जनाब कलेक्टर साहब बहादुर खीरी गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाजा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख़्वास्तदिहंदा की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह अज़ तारीख़ शाया होने नोटिस गजट अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़ के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में क़ाबिल समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाजिरी कर्जख्वाहान मसमू और फैसल होगी।

आज बतारीख २३ दिसंबर १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला लखनऊ
मु० नंबर ७५ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २०—२—१९३७ ई०
१—चक्रबख़्शसिंह, २—प्रागबख़्शसिंह } पिसरान रनधीरसिंह अक़वाम ठाकुर साकिन पलटी हैदराबाद परगना कुरसी ज़िला बाराबंकी सायलान

बनाम

१—गौरीशंकर वल्द ईश्वरीसिंह क़ौम ठाकुर साकिन हिम्मतपुर परगना महोना तहसील मलीहाबाद ज़िला लखनऊ
२—मुसम्मात उमादेवी बेवा परमेश्वरीदीन ब्राह्मण साकिन नंदपुर परगना कुरसी ज़िला बाराबंकी
३—रामगुरू नाबालिग़ बविलायत मस्तेगीर पिदर खुद, क़ौम गोसाईं साकिन गोविंदपुरी परगना महोना तहसील मलीहाबाद ज़िला लखनऊ

फ़रीक़सानियान

हरगाह सायलान ने दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में जरिए साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर ज़िला लखनऊ गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी हाज़ा दाख़िल कर दिया है, लिहाज़ा जुमला अशख़ास को कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख्वास्त-देहदा की ज़ात व जायदाद पर हो, अंदर तीन माह शाया होने नोटिस गजट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़ा के मय जुमला ज़रूरी काग़ज़ात सुबूत दाखिल करें, वरना कोई उज्र बाद में काबिल समाअत न होगा और दरख्वास्त बअदम हाज़िरी कर्ज़ख्वाहान मसमू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ २० माह नवंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस मुताबिक कानून जदीद

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल मुकाम गोरखपुर जिला गोरखपुर

नं० मुकद्दमा ८८ सन १९३६ ई०

तारीख पेशी १७—२—३७

१—बाबू जयबहादुरसिंह वल्द बाबू रामसिंह मुतवफ्फी
२—बाबू राजबहादुरसिंह
३—बाबू महाराजसिंह
४—बाबू रामगोबिंदसिंह
५—बाबू नंदकिशोरसिंह
६—बाबू शिवमंगलसिंह
७—बाबू राजेंद्रसिंह
८—बाबू त्रिभुवनसिंह
९—बाबू पृथीनारायणसिंह
१०—बाबू नेवलकिशोरसिंह
११—बाबू हरिरामसिंह

साकिनान मौजा कामहा तप्पा कटहरा परगना हवेली गोरखपुर — सायलान

हरगाह सायलान ने दरख्वास्त दफा ४ ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाजा में जरिए जनाब साहब कलेक्टर बहादुर जिला गोरखपुर गुजरानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी हस्ब दफा ८ कानून मजकूर अदालत हाजा में दाखिल कर दिया है लिहाजा जुमला अशखास को जिनका कोई प्राइवेट कर्ज़ा डिगरी-शुदा या गैरडिगरीशुदा मुतजिकरा सायलान की जात या जायदाद के खिलाफ होवे वह अंदर तीन माह तारीख शाया होने गजट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने कर्जा के दाखिल करें, वरना कोई उज्र बाद में काबिल समाअत न होगा और दरख्वास्त बगैर हाजिरी कर्जाख्वाह एकतरफा मस्मू और फैसल होगी।

आज बतारीख ३ माह ११ सन् १९३६ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस बनाम जुमला क़र्ज़ख़्वाहान हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर २१२ सन् १९३६ ई०

१—अशर्फ़ीलाल वल्द मन्नालाल
२—मुसम्मात चमेली बेवा मोतीलाल वल्द अशर्फ़ीलाल
३—शिवनारायणलाल नाबालिग़ वल्द मोतीलाल बविलायत मुसम्मात चमेली मादर खुद

अक़वाम कायस्थ साकिनान व क़स्बा गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई — सायलान

बनाम

१—रघुबरदयाल वल्द डाल क़ौम ब्राह्मण साकिन क़दीम मौज़ा टंडौर परगना गोपामऊ वारिदहाल मढ़ी मौक़ूआ मौज़ा खर्गपुर परगना आलमनगर तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

२—भोला वल्द भवानीप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा टंडौरखेड़ा परगना गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई — फ़रीक़सानियान

हरगाह दरख़्वास्त सायलान हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० बअदालत साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर हरदोई में पेश होकर अदालत हाज़ा में मौसूल हुई है और सायलान ने अपना बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा ८ ऐक्ट मज़कूर दाख़िल अदालत हाज़ा कर दिया है, लिहाज़ा फ़रीक़सानियान मज़कूरुस्सदर व नीज़ हर ख़ास व आम को बज़रिए नोटिस हाज़ा मुत्तिला किया जाता है कि जिस शख़्स का कोई क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरी-शुदा ख़िलाफ़ ज़ात व जायदाद सायलान मुतज़िकरा सदर होवे, वह क़र्ज़ा मज़कूर की बाबत तारीख़ इशाअत नोटिस हाज़ा से तीन माह के अंदर अपना बयान तहरीरी हस्ब ऐक्ट मज़कूर असालतन ख़्वाह बज़रिए वकील जो कि हालात मुक़द्दमा से बख़ूबी वाक़िफ़ हो, दाख़िल अदालत करे व नीज़ ज़रूरी काग़ज़ात भी ताईद बयान तहरीरी ख़ुद में दाख़िल करे। बाद इनक़िज़ाय मियाद मुद्दत मज़कूर कोई उज्र मसमू न होगा और फ़ैसला दरख़्वास्त मज़कूर एकतरफ़ा बअदम हाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान होगा।

मुंसरिम

Haridwar. Digitized by eGangotri

112584

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला प्रतापगढ़
नं० मुक़द्दमा २२६ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी २ मार्च सन् १९३७ ई०
दरख्वास्त हस्ब दफा ४ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
मतई वल्द हरबख्श बारी साकिन अमेठी डाकखाना कुंडा ज़िला प्रतापगढ़ सायल

हरगाह मुसम्मे मतई वल्द हरबख्श क़ौम बारी साकिन अमेठी ने दरख्वास्त हस्ब दफा ४ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाजा में जरिए जनाब डिप्टी-कमिश्नर साहब बहादुर ज़िला प्रतापगढ़ तहसील कुंडा परगना बहार गुजरानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी अदालत हाजा में दाखिल कर दिया है। लिहाजा जुमला अशखास को जिनका कर्जा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा दरख्वास्तदेहंदगान मजकूर की जात या जायदाद पर हो, अंदर तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट से अपना बयान तहरीरी निस्बत कर्जा के अदालत हाजा में दाखिल करें, वर्ना बाद को कोई उज्र काबिल समाअत न होगा और दरख्वास्त बअदम हाजिरी क़र्ज़देहंदगान मसमू और फैसल होगी।

मुंसरिम

(नोटिस हस्ब दफा ९ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला बाराबंकी
मुक़द्दमा नं० १०९ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ३१—३—१९३७
शेख़ आबिदअली वल्द हामिदअली साकिन मौज़ा सैदनपुर ज़िला बाराबंकी सायल

बनाम

अयोध्या-बैंक लिमिटेड, फ़ैज़ाबाद

हरगाह कि सायल मज़कूराबाला ने दरख्वास्त ज़ेर दफा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० गुज़रानी है, लिहाजा नोटिस हस्ब दफा ९ ऐक्ट मज़कूर दिया जाता है कि जिस शख्स का क़र्ज़ा डिगरीशुदा ख्वाह गैरडिगरीशुदा ज़ात व जायदाद सायल मज़कूराबाला पर हो, वह अपना बयान तहरीरी तारीख़ मुश्तहरी नोटिस गज़ट से अंदर तीन माह अदालत हाज़ा में पेश करे। ऐसा न करने पर दरख्वास्त मज़कूर गैरहाज़िरी में समाअत की जावेगी।

आज बतारीख़ ७ माह दिसंबर सन् १९३६ ई० को मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला बाराबंकी
मुक़द्दमा नंबर १०३ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १२ मार्च सन् १९३७ ई०
१—पं० रामेश्वरप्रसाद वल्द पं० रामप्रकाश
२—बच्चा नाबालिग बविलायत पं० रामेश्वरप्रसाद पिदर खुद
} अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा पींड परगना देवाँ तहसील नवाबगंज ज़िला बाराबंकी सायलान

बनाम

१—ख़ाँसाहब मौलवी फ़रीदउद्दीनअहमद वल्द मौलवी फ़ख़रुद्दीनअहमद साकिन क़स्बा देवाँ परगना देवाँ ज़िला बाराबंकी
२—मिस्टर अलीउद्दीनअहमद वल्द मौलवी फ़ख़रुद्दीनअहमद बैरिस्टर-ऐट-ला गोलागंज लखनऊ
३—बाबू श्यामबली निगम वल्द लाला दीनदयाल क़ौम कायस्थ वकील साकिन नवाबगंज ज़िला बाराबंकी

फ़रीक़सानियान

मुक़द्दमा मुंदर्जा उनवान में सायल मज़कूराबाला ने दरख्वास्त ज़ेर दफ़ा ४ एक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में गुज़रानी है, लिहाज़ा नोटिस हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट मज़कूर दिया जाता है कि जिस शख्स का क़र्ज़ा डिगरीशुदा ख्वाह गैरडिगरीशुदा ज़ात व जायदाद सायल मज़कूराबाला पर हो, वह अपना बयान तहरीरी तारीख़ मुश्तहरी नोटिस हाज़ा से अंदर तीन माह अदालत हाज़ा में पेश करें।

आज बतारीख़ १ दिसंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम सीतापुर

इनकंबर्ड नंबर १८० सन् १९३६ ई०

बयान तहरीरी ३०—३—३७

पेशी ३१—३—३७

ठाकुर रोहनसिंह वल्द बख़्तावरसिंह ठाकुर साकिन पट्टी नेवादा परगना गोंदलामऊ तहसील मिसरिख ज़िला सायल सीतापूर

बनाम

१—महाबीरसिंह वल्द मथुरासिंह क़ौम ठाकुर	साकिन पट्टी नेवादा डाकखाना बरताल	परगना
२—संतरीसिंह वल्द ठाकुरप्रसादसिंह	अक़वाम ठाकुर साकिन गामपुर डाकखाना बरताल	गोंदलामऊ
३—फ़तेहसिंह वल्द पृथीपालसिंह		
४—कल्लू	पिसरान मौजी क़ौम मीरशिकार साकिन फतेहपूर डाकखाना बरताल	तहसील
५—बच्चन		
६—गोबिंदप्रसाद वल्द नामालूम क़ौम ब्राह्मण साकिन गोंदलामऊ डा० बरताल		मिसरिख ज़िला
७—कैलाशसिंह वल्द मंशासिंह क़ौम ठाकुर साकिन तौकलपूर डाकखाना सिधौली		
८—मुसम्मात लालकुँवरि बेवा दिगबिजयसिंह कौम ठाकुर साकिन सवरा तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ		सीतापुर

फरीकसानियान

हर खास व आम को बजरिए नोटिसहाज़ा इत्तिला दी जाती है कि मुक़द्दमा मुंदर्जे उनवान में मुसम्मे रोहनसिंह सायल ने दरख़्वास्त हस्ब निफ़ाज़ दफा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० इनकंबर्ड स्टेट्स अदालत हाज़ा में बजरिए जनाब कलेक्टर साहब बहादुर सीतापुर गुजरानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी बतफसील क़र्ज़ाज़ात दाख़िल कर दिया है, लिहाज़ा वह अशख़ास जिनका कर्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा बजिम्मा सायल मुंदर्जा बाला के जात या जायदाद पर हो. अंदर तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट से अपना बयान तहरीरी बनिस्बत अपने क़र्ज़ के दाख़िल करें, वर्ना कोई उज्र किसी शख़्स का अगर कानूनन उसको दाख़िल करने बयान तहरीरी का हक़ था, बाकी न रहेगा, बाद में काबिल समाअत न होगा और दरख़्वास्त क़र्ज़ख़्वाहान मसमू व फ़ैसल होगी।

मुंसरिम

बहजलास जनाब बाबू शंभूदयालसिंह साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम बस्ती

मुकद्दमा नं० ५११ सन् १९३६ ई०

फामं इत्तिलानामा हस्ब दफा ६ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

इश्तिहार

मुतफर्का

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन १९३४ ई०), जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

घेरावन पांडे वल्द सरजूप्रसाद पांडे मुतवफ्फी साकिन बसडलिया तप्पा थरौली मुंसिफी बाँसी परगना व तहसील बाँसी जिला बस्ती

सायल ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ६ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् ३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन १९३५ ई० तर्मीम हुआ है इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुतल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिनके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मजकूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिये जेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर बाजाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ९ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् ३४ ई०

बअदालत जनाब पंडित हरिशंकर चतुर्वेदी स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम जिला लखनऊ

मुकद्दमा नं० १२६ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ९—३—१९३७ ई०

१—मुसम्मात श्यामा उर्फ़ रामप्यारी बेवा मथुराप्रसाद कायस्थ उम्र ५५ साल, साकिन कस्बा काकोरी जिला लखनऊ

२—कुंजबिहारी उम्र ३१ साल
३—अचलबिहारी उम्र २९ साल
४—बृजबिहारी उम्र २३ साल
५—चंद्रकिशोर उम्र २० साल
} पिसरान बाबू मथुराप्रसाद अक्रवाम कायस्थ साकिनान कस्बा काकोरी जिला लखनऊ हालवारिद

६—हरीशंकर नाबालिग उम्र ९ साल
७—रामकिशोर नाबालिग उम्र ८ साल
८—रामप्रकाश नाबालिग उम्र ४ साल
} शहर कानपुर, रामनारायण बाज़ार नार्दर्न इंडिया टेलरिंग शाप बत्तिलायत कुंजबिहारीलाल सायल नं० २ पिदर खुद सायलान

बनाम

जगदंबाप्रसाद वल्द कामताप्रसाद कौम कायस्थ साकिन कस्बा काकोरी तहसील व जिला लखनऊ

फरीकसानी

हरगाह कि सायल मजकूराबाला ने दरख्वास्त ज़ेर दफा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० गुजरानी है। लिहाजा नोटिस हस्ब दफा ९ ऐक्ट मजकूर दिया जाता है कि जिस शख्स का कर्जा डिगरीशुदा खवाह ग़ैरडिगरी-शुदा जात व जायदाद सायल मजकूरे बाला पर हो, वह अपना बयान तहरीरी तारीख मुश्तहरी नोटिस गजट से अंदर तीन माह अदालत हाजा में पेश करे। ऐसा न करने पर दरख्वास्त मजकूर ग़ैरहाजिरी में एकतरफा समाअत की जायगी।

आज बतारीख ९ दिसंबर सन् १९३६ ई० को मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

पहनिए नहीं, खाइए।

जवाहिरात पहनने में जानोमाल का ख़तरा है

मगर

जवाहिरात से विधि-पूर्वक बना हुआ

—जवाहर मोहरा—

निर्बलों को बलवान् और बूढ़ों को जवान बनाता है। बदन, दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी दूर करता है। किसी भी अवस्था में गिरी हुई नब्ज़ को उभारता है। जहाँ अन्य ओषधियाँ निष्फल होती हैं, वहाँ भी यह चमत्कार दिखाता है। १० ख़ूराक की १ शीशी २॥), फ़ी तोला ६०) रुपए।

सब प्रकार की आयुर्वेदिक ओषधियों और बहुमूल्य रसों के मिलने का पुराना और विश्वास-पात्र स्थान—

वैद्यराज हकीम बनारसीदास वैद्यशास्त्री, आयुर्वेदाचार्य
शारदा-फ़ार्मेसी
लाठीमोहाल, कानपुर

सस्ती, सुंदर, शुद्ध छपाई के लिये

भगवानदीन

आर्यभास्कर-प्रेस, आगरा प्रसिद्ध है

यहाँ संस्कृत, हिंदी और उर्दू की पुस्तकें, समाचार-पत्र और विज्ञापन आदि समस्त साहित्य ठीक समय पर, सस्ते दरों पर, छापकर दिए जाते हैं।

आर्यभास्कर-प्रेस आर्य-जगत् का सबसे प्रिय-प्रेस है। प्रत्येक आर्य-समाज, आर्य-संस्था और आर्य-सज्जन का यह कर्तव्य है कि अपनी पुस्तकें, व्यावसायिक-कागज़-पत्र, लेटर-हेडिंग, कार्ड, लिफ़ाफ़े, सूचीपत्र, विज्ञापन, नोटिस आदि समस्त कार्य आर्यभास्कर-प्रेस में ही छपावें। घर बैठे सब काम सुविधा से, उचित रेटों पर, शुद्ध, स्वच्छ रीति से प्राप्त करें।

पत्र-व्यवहार का पता—व्यवस्थापक भगवानदीन, आर्यभास्कर-प्रेस, माईथान, आगरा।

आप आर्य हैं? आर्य-संस्कृति के प्रेमी हैं? अपनी संतानों को भी सच्चा आर्य बनाना चाहते हैं? जगत् में आर्य-संस्कृति का वातावरण उत्पन्न करना चाहते हैं? अनायास वैदिक सिद्धांतों को जानना चाहते हैं?

यदि हाँ, तो आप अति शीघ्र आर्यमित्र के ग्राहक बन जाइए।

क्योंकि—आर्यमित्र—आर्यजगत् की वाणी है।

आर्यमित्र—समस्त आर्य-प्रतिनिधियों और आर्य-संस्थाओं का सम्मानित पत्र है।

आर्यमित्र—किसी भी उच्च कोटि के साप्ताहिक पत्र से किसी बात में कम नहीं।

आर्यमित्र—धार्मिक, सामाजिक और नैतिक उन्नति का संदेश सुनाता है।

आर्यमित्र—वैदिक सभ्यता, वैदिक सिद्धांत, उपनिषदों के शांतिप्रद उपदेश और प्राचीन ऋषियों के विचारों का सर्वोपरि प्रतिनिधि, सर्वश्रेष्ठ प्रचारक और सर्वोत्तम उपदेशक है।

आर्यमित्र—वेदों, दर्शनों, ब्राह्मण-ग्रंथों और स्मृतियों के विद्वानों और पश्चिमी साइंसों के जानने-वाले उत्तमोत्तम विद्वानों के लेखों से भूषित रहता है।

आर्यमित्र—उत्तम, जाग्रत्, शिक्षित-पठित परिवारों, उच्च कोटि के शिक्षित हज़ारों जन-समुदाय और अग्रसर महिला-जगत् में आदरपूर्वक पढ़ा जाता है।

आर्यमित्र—प्रत्येक नवयुवक और नवयुवतियों एवं किशोर-किशोरियों, बालक-बालिकाओं, सभी के हाथों में विना शंका के देने योग्य है, वह शुद्ध एवं पवित्र संस्कार उत्पन्न करता है।

आर्यमित्र—धर्म-प्रेम, देश-प्रेम, जाति-प्रेम, समाज-प्रेम, और संगठन उत्पन्न करता तथा सामाजिक दोषों की निर्भीक आलोचना करता है।

आर्यमित्र—देश, विदेश, जहाँ-जहाँ हिंदू आर्य-जाति के लोग जा बसे हैं, सर्वत्र जाता है।

आर्यमित्र—आर्य-जगत् में सर्वप्रिय, माननीय पत्रों में से प्रमुख है। आप आर्यमित्र से अपने को सर्वथा वंचित न रखिए। वार्षिक मूल्य केवल ३॥) । नमूना मँगाइए।

पत्र-व्यवहार का पता—व्यवस्थापक आर्यमित्र, आगरा।

Haridwar. Digitized by eGangotri

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष १०
खंड १

पौष, ३१४ तुलसी-संवत् (१९९३ वि०)—
जनवरी, १९३७

संख्या ६
पूर्ण संख्या १२६

साधना

यह तुम्हारी साधना।
सृष्टि का प्रत्येक स्वर
संवाद सुख का है बना।
इस विरह के एक क्षण में
मिलन का संदेश है,
किस तरह अपनी बताओ
मैं करूँ आराधना?

मान हूँ मैं, किंतु वह तो
शांति की है मूर्छना,
मैं तुम्हीं में लीन—मुझको
साँस से मत बाँधना।
यह तुम्हारी साधना।

कवि-कुटीर, लखनऊ
१७। १२। ३६

श्रीरामकुमार वर्मा

गीत

[श्रीयुत 'बचनेश']

सरद के प्रात, स्याम दरसाय ।
अरुन पाग, रबि मुकुट, मंजु दुति पीत पटी छहराय ।
बिमल नभ गात ॥ स्याम० ॥

बक - अवली मोतिन की माला, सुक बनमाल सुहाय ।
दृगनि गरि जात ॥ स्याम० ॥

बिचरहिं बगरि बदरियाँ इत-उत धौरी-धौरी गाय ।
मंदगति जात ॥ स्याम० ॥

मधुकर-गुंजनि मुरलि-मधुर-धुनि बरबस स्रवन समाय ।
हृदय रसि जात ॥ स्याम० ॥

बिकसित कंज-पुंज गोपिन के नैन रहे टक लाय ।
सजल रस रात ॥ स्याम० ॥

मुदित हंस * 'बचनेस' स्व मानस † दरस-मुक्त-रस ‡ पाय ।
सो बलि-बलि जात ॥ स्याम० ॥

---

* हंस = १ मराल, २ जीव ।
† मानस = १ मानसर, २ हृदय ।
‡ दरस-मुक्त-रस = १ दर्शन-रूपी मोतियों का स्वाद, २ दर्शन का परमानंद-रस ।

गंगा-पुस्तकमाला के ग्रंथ

भाषा और भाव, दोनों में उच्च, उदार, उन्नत भावों से परिपूर्ण और मानव-हृदय को उन्नत करनेवाले होते हैं ।

स्थायी ग्राहक बनें, और पढ़कर देखें

Haridwar. Digitized by eGangotri

मोहिनी

[श्रीयुत 'गँवार', एम्० ए०, डी० लिट्०]

(१)

मेरा नाम है दिनेश वसु। कई पुश्तों से मेरे पूर्वज बंगाल से आकर बिहार में बस गए थे। इस प्रकार बंगाली होते हुए भी मैं अपनी ओर से अपने को बिहारी ही समझता था। यद्यपि घर पर बँगला बोली जाती थी, तथापि अपने बिहारी मित्रों में मैं विशुद्ध मगही बोलता था, क्या मजाल कि ज़रा भी बंगालीपन आ जाय। भागलपुर के ज़िला-स्कूल से मैट्रिकुलेशन पास करके मैं पटना-कॉलेज में दाख़िल हुआ। इस समय "बिहार केवल बिहारियों के लिये", यह ध्वनि उठना आरंभ हो गई थी। मैं इस ध्वनि का पूरा समर्थक था। दूसरे सूबों से आकर क्यों लोग हमारे प्रांत पर क़ब्ज़ा किए बैठे हैं? इस उपद्रव की जड़ में थी बंगालियों ही की संकुचित नीति। जब बिहार बंगाल का भाग था, तब स्वभावतः उच्च बंगाली अधिकारियों ने धड़ाधड़ बंगाली भरे। बिहारियों की क्षीण आवाज़ इसके विरोध में उठी, पर बंगाली तो सभी क्षेत्रों में सर्वेसर्वा थे। वह क्षीण आवाज़ कुचल डाली गई। पर अब स्थिति भिन्न थी। अब बिहारियों का अधिकार था, और इन्होंने मेरे-ऐसे पुश्त-दर-पुश्त से बिहार में बसे हुए बंगालियों को भी बंगाली समझा। मैंने मैट्रिकुलेशन में हिंदी ली थी, बंगाली नहीं। तुलसीदास का भक्त था, वैष्णव था (इतना स्वीकार करूँगा कि मछली खाना मुझे पसंद था, उसे नहीं छोड़ पाया)। बी० ए० पास किया। प्रथम श्रेणी में। पर बिहार में नौकरी मिलने की आशा न थी। और बंगाल, वहाँ हम लोगों को कौन पूछता। हमारा तो हाल धोबी के कुत्ते का-सा था। अतः सोचा कि चलो, कलकत्ता चलकर हिंदी का एम्० ए० कर लें। नया-नया खुला था। लौटकर, संभव है, किसी कॉलेज में हिंदी की प्रोफ़ेसरी मिल जाय। गया, और कर आया। प्रथम श्रेणी में प्रथम। लौटा, तब कई जगह प्रार्थना-पत्र भेजे। सब व्यर्थ। "अब हिंदी भी बंगाली पढ़ावेंगे! यह भी होगा!" इस वातावरण में नौकरी कहाँ। धैर्य से बी० एल्० की डिगरी प्राप्त की, और पटना में वकालत आरंभ की। बिहारियों से चिढ़ हो गई। यह अपने नहीं, इनसे कोई सहानुभूति न रक्खो। रुपया कमाने के लिये ही मीठा बोलो, बस। यह धारणा बँध गई। धीरे-धीरे मेरी वकालत चल निकली। आख़िर दिमाग़ तो बंगाली ही था, बिहारियों का-सा गुट्ठल नहीं। मैं नौकरी करने की बात छोड़ बैठा।

(२)

तुलसीदास की पुस्तकों का मेरे ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा था। अयोध्या, काशी, चित्रकूट के सजीव चित्र मेरे हृदय-पटल पर खिंचे थे। एक साल दुर्गा-पूजा की छुट्टियों में अयोध्या गया, दूसरे साल चित्रकूट। विनय-पत्रिका के पद मुझे वहाँ घसीट ले गए। चित्रकूट ने मेरा जीवन ही कुछ-का-कुछ कर दिया।

प्रयाग से ही चित्रकूट का एक पंडा साथ हो लिया था। भला-सा बुड्ढा ब्राह्मण था। उसकी आकृति से भोलापन और सज्जनता टपकती थी। मैंने उसे मना नहीं किया। सुरम्य जंगलों और छोटी-छोटी पहाड़ियों के सुंदर दृश्य देखता हुआ चित्रकूट पहुँचा। पंडाजी के पक्के मकान की

छुत के दो कमरे ले लिए। नौकर साथ था ही, खाने-पीने का सारा प्रबंध वही करता था। मैं निश्चिंत होकर मंदाकिनी में स्नान करता, मनोरम दृश्य देखता और सबेरे-शाम मंदिरों की आरती में शामिल होता था।

चित्रकूट एक छोटी-सी बस्ती है। मंदिर, सीढ़ी, फ़क़ीर, साधू, पंडे, यात्री और बंदर, ये ही उसकी मुख्य विभूतियाँ हैं। चार-पाँच दिन में ही मैंने तीर्थ-स्थान देख लिए। जी ऊब उठा। सोचा, अब पूरी छुट्टी तो यहाँ बिता न सकूँगा, चला जाय कहीं और।

(३)

मंदाकिनी के किनारे एक रोज़ संध्या को बैठा हुआ मैं रवींद्र बाबू का "आमि जीवने मरणे शयने स्वपने तोमाके क्यानो गो पाई न" ज़रा उच्च स्वर से गा रहा था। देखा, सामने से एक अर्धवयस्क बंगाली सज्जन आ रहे हैं। उनसे मिलने पर मुझे ऐसा मालूम हुआ, जैसे विदेश में कोई अपना स्नेही मिल गया हो। कुछ ही मिनट में परिचय करके हम लोग हिल-मिल गए। यह थे क्षितिमोहन सरकार। बर्दवान के रहनेवाले। अब चित्रकूट में आकर कई साल से बस गए थे। घर पर कुछ ज़मींदारी थी, उससे कुछ रुपया आ जाता था, कुछ यहाँ होमियोपैथी डॉक्टरी करके कमा लेते थे। चित्रकूट में खर्च ही कितना। मज़े से गुज़र हो जाती थी। सरकार बाबू ने एक छोटा-सा घर बना लिया था। मुझे वहाँ लिवा ले गए। अपनी पत्नी से परिचय कराया, और अपनी लड़की मोहिनी से। ये ही तीन प्राणी उस घर में रहते थे।

मोहिनी को मैंने देखा, उसने मुझे। उसमें क्या आकर्षण-शक्ति थी, मैं कह नहीं सकता। वह खूब गोरी न थी, पर शरीर की गठन सुंदर थी। आँखें बड़ी-बड़ी, चेहरे पर गंभीरता और भोलापन। उसे कोई भी अनुपम सुंदरी न कहता, पर उसने मेरे ऊपर प्रभाव डाला। सरकार बाबू की पत्नी मुझे खिलाने-पिलाने के प्रबंध में लग गईं। गृहपति और मोहिनी मेरे पास बैठे रहे। सरकार बाबू ने मोहिनी से बताया कि कैसे अकस्मात् मुझसे मुलाक़ात हो गई। मोहिनी को गाने का शौक़ था। अंदर से सितार उठा लाई, बोली—"बाबा, लो बजाओ, और बसु महाशय गावें।" मैंने बहुत आना-कानी की। कहा—"मैं तबला बजा सकूँगा, गा नहीं सकता। मेरा गला फटे बाँस को मात करता है।" पर कौन सुनता था। एक गीत गाना ही पड़ा। अब मोहिनी की बारी आई। मैंने तबला लिया, सरकार बाबू ने सितार और फिर मोहिनी का मोहन राग। वह दिव्य संगीत। मीरा का पद था "मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरा न कोई।" सरकार बाबू तन्मय थे, और तन्मय थी मोहिनी। और मैं, मैं स्वर्ग में था।

उस संध्या को सरकार बाबू के यहाँ भोजन में मुझे जो स्वाद मिला, वह अब तक याद है। भंग के नशे में मस्त चौबे की तरह मैं खाता ही चला गया। पंडाजी के यहाँ अपने कमरे में लौटने पर मैं विचारों के स्रोत में बहने लगा।

"मोहिनी सचमुच मोहिनी है। ऐसा लावण्य। मैंने बहुत बंगाली लड़कियाँ देखी थीं। एक-से-एक गोरी, एक-से-एक शोख, एक-से-एक सुंदरी। पर उन सबको पार कर आया था। आत्मबल का अभिमान हो गया था। सोचा था, स्त्री-जाति में मुझे दास बनाने की शक्ति नहीं। पर आज। आज वह अहंकार चूर्ण हो चुका था। मेरे हृदय ने निश्चय कर लिया कि यदि इस सृष्टि में कोई स्त्री तुम्हारे लिये है, तो मोहिनी।"

अब छुट्टी समाप्त होने के पूर्व चित्रकूट से जाने की चर्चा मन ने छोड़ दी। सरकार बाबू के यहाँ रोज़ का आना-जाना। उनके अनुरोध से भोजन भी वहीं, जल-पान भी वहीं। सरकार-परिवार के

Haridwar. Digitized by eGangotri

साथ एक बार फिर हनूमान-धारा, जानकी-कुंड, स्फटिक शिला, गुप्त गोदावरी आदि स्थान देखे। अब की इन स्थानों पर अलौकिक रमणीयता मालूम हुई। चित्रकूट के सभी दृश्य रमणीय थे। यहाँ के बंदर भी अच्छे मालूम पड़ने लगे। मंदिरों की आरती में भक्ति का स्रोत बहता मालूम हुआ। आरती के समय मैंने देखा, सरकार बाबू और मोहिनी 'सीताराम जय सीताराम' कहते-कहते भक्तों की तरह नाचने लगते थे। मोहिनी की इस समय की छटा दिव्य थी। लालसा का लेशमात्र भी उसके इस रूप के निकट नहीं जा सकता था।

धीरे-धीरे मुझे निश्चय हो गया कि मोहिनी भी मुझसे स्नेह करती है। मुझे आत्मविश्वास हुआ। कालिदास के "अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभय प्रार्थना कुरुते" इन शब्दों की अनुभूति हुई। सरकारद्वय, पति-पत्नी, मुझसे पुत्रवत् स्नेह करने लगे थे।

(४)

मेरी छुट्टी समाप्त होने को जब एक सप्ताह रह गया, तो एक दिन मौका पाकर मैंने मोहिनी से निःसंकोच कहा—"मोहिनी, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैं तुम्हारा दास हूँ।"

उसने मुस्किराकर कहा—"अच्छी बात है।"

"क्या तुम भी मुझे प्यार करती हो, कर सकोगी?"

"करती होऊँ, तो?"

"करती हो?"

"हाँ।"

मेरा साहस बढ़ा। मैंने उसे स्पर्श करने को हाथ बढ़ाए। तुरंत उसके चेहरे का रंग बदल गया। उसकी त्योरियाँ चढ़ गईं। वह एक पद पीछे खिसक गई। मैं सहम गया। साहस करके बोला—"मोहिनी, क्या तुम्हें मेरे वचनों में विश्वास नहीं? मैं छल नहीं करता। प्रतारणा नहीं करता। मैं तुम्हारा हूँ, तुमने मुझे मेरी स्वामिनी बनने का वचन दिया है।"

मोहिनी बोली—"बसु महाशय! मैं तुम्हारी स्वामिनी बनूँगी नहीं, अब भी हूँ। मैं भी तुम्हें प्यार करती हूँ। पर, पर इससे अधिक नहीं। मैं विवाहिता हूँ, यह शरीर दूसरे का है। इसके स्वामी जीवित हैं। मैं उनसे विश्वासघात नहीं कर सकती।" फिर मेरी उदास मुखाकृति देखकर बोली—"प्रियतम! तुम मुझे प्यार करो। खूब, जी भरकर। मैं भी तो तुम्हें प्यार करती हूँ। जिस क्षण मैंने तुम्हें देखा था, उसी क्षण तुम्हें हृदय समर्पित कर चुकी थी। प्यार तो अंतःकरण की वस्तु है। वह सूक्ष्म है। स्थूल शरीर को बीच में क्यों आने दिया जाय।"

उस संध्या को फिर गाना जमा। मोहिनी का वही मीरा का पद था—"मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरा न कोई।" वही तन्मयता और चेहरे पर वही गांभीर्य।

डेरे पर आज मैं विक्षिप्त-सा लौटा। मेरे सुख के संसार को ठेस लगी। मोहिनी की प्रेम की फ़िलासफ़ी, कड़ुई ओषधि की तरह, मेरे गले से न उतरी। दूसरे दिन कुछ ज्वर-सा मालूम हुआ, मैं सरकार बाबू के यहाँ न जा सका। सरकार बाबू तीसरे पहर स्वयं आए। मैं ज्वर से पीड़ित था। ज़ोर का बुखार था। सरकार बाबू ने दवा खिलाई। अपने घर उठा ले चलने का बहुत दबाव डाला, पर मैंने हठ-वश मना कर दिया। इस पर सरकार बाबू कुछ रुष्ट-से होकर लौट गए। मेरे कमरे की खिड़की से मोहिनी के घर की छत दिखाई देती थी। मैंने देखा, मोहिनी संध्या समय अपनी छत पर बैठी हुई घंटों मेरे कमरे की ओर देखती रही। एक बार मैं बाहर निकला। उसने मुझे वहीं से देखा। उठकर मुझे नमस्कार करने के लिये अपनी अंजलि मस्तक तक ले गई। इस सहृदयता और समवेदना से मेरा

दिल पसीज गया। उस रात को मुझे नींद आई। केवल एक बार उठकर बाहर आया। चाँदनी रात में मोहिनी छत पर टहलती दिखाई दी। वही दिव्य मूर्ति, निष्कपट प्रेम की मूर्ति।

(५)

दूसरे दिन प्रातःकाल ही, जब मैं बिस्तर से उठा ही था, मोहिनी और उसके पिता आ गए। उसने स्वयं जाकर पानी गरम किया, और मेरा मुँह-हाथ धुलवाया। औषधि खिलाकर निश्चिंत होने पर उसने मुझसे कहा—"बसु बाबू, घर पर चले चलिए। वहीं ठीक उपचार हो सकेगा।" मैंने सर हिलाकर 'नाहीं' कर दी। तब वह सरकार बाबू से बोली—"बाबा, जाओ, मा को भेज दो; हम दोनो यहीं रहकर इनकी देख-भाल करेंगे। और, एक तार इनके घर को दे दो। इनकी घरवाली आ जाय, तो इन्हें सांत्वना मिले।" मैं बोला—"यदि यही सब उपद्रव करना है, तो चलो, मैं ही चला चलता हूँ। मैं सोचता था, आप लोगों को व्यर्थ कष्ट दे रहा हूँ।" सरकार बाबू प्रसन्न हो गए। बोले—"बेटा दिनेश! तुम तो अपने हो, तुम्हारी सेवा करके हम लोगों को हर्ष ही होगा, कष्ट कैसा। तो मैं डोली ले आऊँ।" नौकर से सामान ठीक करने को कहकर वह डोली लेने चले गए।

मोहिनी बोली—"कहो दास महाशय, एक ही दिन में सारी दासता रफ़ूचक्कर हो गई! अच्छा चरित्र-बल है!" फिर मुस्किराकर बोली—"पर मैं ऐसी-वैसी स्वामिनी नहीं हूँ। मैं क्या अनायास ही अपने क्रीतदास को मुक्त कर दूँगी। हाँ, क्रीत दास! मैंने अपना अमूल्य हृदय समर्पित कर तुम्हें खरीदा है। तुम मेरे पंजे से छूट सकोगे? देश-विदेश, सभी कहीं तुम्हारे मत्थे पर मेरी दासता का टीका रहेगा। मुक्ति के सब प्रयत्न निष्फल होंगे। समझे।" मैं खूब समझ रहा था। अंतरात्मा को एक अकथनीय उल्लास मिल रहा था। मैंने कहा—"यदि स्वामिनी को दास की कुछ परवा न रहे, तब? यह तो विडंबना है।" इस पर वह बोली—"मेरे सर्वस्व! यदि तुम्हारी दृष्टि मेरे अंतःकरण में प्रवेश कर सकती। यदि तुम प्रेम की वास्तविकता को परख सकते। परवा? परवा क्या चीज़ होती है, मेरा तो सारा जीवन ही त्वन्मय हो रहा है। मेरे गिरिधर गोपाल, मेरे राम, सभी तुम्हीं हो। माता-पिता ने यह शरीर दूसरे को सौंप दिया था, बचपन ही में। इस पर मेरा अधिकार नहीं। पर मेरा हृदय, मेरी आत्मा, सब कुछ तुम्हारी ही है। इस पर मेरा अब तक प्रभुत्व रहा है। इसे भी लेने का उन्हें अधिकार था, पर उनमें लेने की योग्यता न थी। और, मैं उन्हें दे भी न सकी। तुमने अब इतने वर्षों बाद इन पर क़ब्ज़ा किया है। तुम्हीं हो इनके प्रभु, मेरे स्वामी! मैं अपने ही दास की दासी हूँ।" फिर अचानक अट्टहास करके बोली—"नहीं-नहीं, दासी नहीं, स्वामिनी; और तुम हो मेरे दास, मेरे क्रीत-दास हो न? कहो 'हाँ'।"

मैंने मेस्मेरिज़म के विषयभूत व्यक्ति की तरह 'हाँ' कर दी। उसके रोम-रोम से प्रसन्नता टपक रही थी। उसका हाथ लेकर मैंने अपने कपोलों पर रख लिया। ज्वर से जलते हुए शरीर को कितनी शांति मिली, कितनी सांत्वना।

(६)

सरकार बाबू के घर पर भी मैं तीन दिन बुखार में पड़ा रहा। रात को और दोपहर को मेरा ज्वर तीव्र हो जाता था, मध्य रात्रि के उपरांत सबेरे तक और तीसरे पहर से संध्या तक कम। मोहिनी प्रायः हर वक़्त मेरे पास रहती। कभी-कभी रात को आराम-कुर्सी पर ऊँघते हुए मैंने उसे देखा, पर उन तीन रातों में सोते हुए उसे कभी नहीं पाया। ज़रा-सी आहट होने पर वह चौंक-सी पड़ती थी। मेरे ज़रा-सा कराहने पर भी वह पास आकर मेरे मस्तक पर, मेरे कपोलों पर, मेरे शरीर

Haridwar. Digitized by eGangotri

पर हाथ फेरती थी। शरीर टूटने पर सहारे से मेरा शरीर दाबती थी। कभी-कभी मैं उसका कोमल कर-पल्लव अपने ओठों पर रख लेता था। उसने मना नहीं किया।

कुछ स्वस्थ होने पर मैं कहता—"मोहिनी! यह सब कष्ट किसलिये कर रही हो?" वह उत्तर देती—"स्वान्तःसुखाय।" और फिर कभी-कभी अट्टहास करके चंचलता-पूर्वक कहती—"मैं अपने दास की परवा करती हूँ, डरती हूँ, कहीं वह भाग न जाय, इसीलिये दिन-रात पहरा देती हूँ।" मैं कहता—"तुम बीमार पड़ जाओगी। आराम कर लो।' वह फूलकर बोलती—"नहीं, मैं बीमार क्यों पड़ूँगी। पड़ूँगी, तो भी अच्छा। मेरे दास को विश्वास हो जायगा कि उसकी मालकिन उसकी परवा करती है। तब भाग जाने का प्रयत्न शिथिल कर देगा। आराम? आराम इससे अधिक क्या होगा? मैं अनंत सुख का अनुभव कर रही हूँ। मुझे अपूर्व शांति मिल रही है। हाँ, इस शरीर को तुम्हारे निमित्त हिलाने-डुलाने से। तुम्हारी सेवा करने से। क्या इस सुख को छीनना चाहते हो?" इस प्रकार घोंसले में बैठे हुए पक्षियुगल की तरह हम दोनो एक दूसरे के उल्लास और आनंद के साधन हो रहे थे। जब मैं बहुत बोलता, तो वह मौन धारण कर लेती। कहती—"मेरे बोलने से तुम्हें बोलने की प्रवृत्ति होती है, इससे तुम्हारा ज्वर उतरेगा नहीं। चुप क्यों नहीं रहते?" मैं सोचता, चुप क्यों नहीं रहता? क्यों? क्यों?

मेरा ज्वर उतर गया। मुझे पथ्य मिलने लगा। एक सप्ताह में मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। पटना लौटने का इरादा हुआ। मैंने मोहिनी से कहा—"चलो, प्राण! भाग चलें। उड़ चलें।" उसने कहा—"क्यों?" मैं बोला—"इस प्रकार कितने दिन हम लोगों का प्रेम चल सकेगा?" उसने कहा—"अनंत काल के उस पार तक।" मैंने कहा—"प्रतिबंध होंगे?" वह बोली—"प्रतिबंध? प्रतिबंध किसकी ओर से। पिता-माता की ओर से? कभी नहीं। उनका मेरे ऊपर असीम प्रेम है। वह मुझे प्रसन्न करने के लिये, आनंदित देखने के लिये सहर्ष मेरा प्रत्येक कार्य, प्रत्येक प्रस्ताव स्वीकार करेंगे। उनकी ओर से कोई प्रतिबंध नहीं हो सकता। रहा समाज। उसकी मैं परवा नहीं करती। और समाज, समाज तो शरीर को देखता है, और मेरा शरीर तो कुछ करता नहीं। फिर समाज को क्या आपत्ति होगी? और हो भी, तो बला से। यहाँ हम लोग किसी के यहाँ आते-जाते नहीं। कोई बंगाली-परिवार और है नहीं। फिर कटाक्षों के लिये क्षेत्र कहाँ? मैं निष्कलंक हूँ और निष्पाप।" मैंने कहा—"तुम क्या समझती हो, मैं विवाहित हूँ?" वह बोली—"नहीं।" "फिर उस रोज़ घर-वाली की बात क्यों की थी?" "केवल तुम्हें चिढ़ाने के लिये; तुम्हें उत्तेजित करने के लिये।"

मुझे पटना जाना आवश्यक था, मुक़दमों का प्रबंध कुछ नहीं कर आया था।

(७)

चलने के पूर्व सरकार बाबू से खुलकर बातचीत हुई। वह सब समझते थे। बोले—"दिनेश! मोहिनी का पति पागल है, पागल। मैंने जब मोहिनी उसे समर्पित की थी, तब वह सुशील, होनहार बालक था। अच्छे संपन्न, कुलीन माता-पिता का पुत्र। सोचा था, मेरी इकलौती पुत्री सुख से रहेगी। पर भाग्य ने साथ न दिया। मोहिनी ससुराल गई भी न थी कि वह पागल हो गया। उसके पिता ने संदेश भेजा—'बहू को भेज दो, संभव है, मेरा पुत्र उसे देखकर स्वस्थ हो जाय।' मोहिनी गई, रोते-रोते, डरते-डरते। वहाँ उस नराधम ने मेरी बेटी को बड़ी यातनाएँ दीं। तीन-तीन दिन तक कोठरी में ताला डालकर बंद रखता। उस पर डंडे बरसाता। जब मोहिनी के सास-ससुर विरोध

करते, तो उन्हें भी न छोड़ता। मोहिनी के कारण उसका पागलपन घटा नहीं, बढ़ ही गया। समधी ने संदेश भेजा—'लड़की को जीवित रखना चाहते हो, तो लिवा ले जाओ।' मैं रातो रात मोहिनी को लिवा लाया। भागकर इस निर्जन, निर्बंधु स्थान में रहता हूँ। मेरे विश्वासपात्र एक नौकर को छोड़कर किसी को पता नहीं कि हम कहाँ हैं। और इधर कोई उधर का बंगाली आता नहीं। आता भी है, तो मैं मिलता नहीं। आज दस वर्ष से यहाँ हूँ। मोहिनी तब १३ वर्ष की थी। अब दुनिया की ऊँच-नीच सब समझती है। उसे सुखी देखने के लिये हम सब कुछ करना चाहते हैं। उससे कहा—'बेटा! फिर से विवाह कर ले।' वह बोली—'छिः! बाबा, ऐसी घृणित बात। एक बार दान किया हुआ शरीर तुम अपने ही हाथों से, उसके मालिक के रहते, दूसरे को देने का पाप करोगे?' मैंने कहा—'बेटी! तू अपने आप ही विवाह कर ले।' वह क्रुद्ध होकर बोली—'मैं अपने पिता की कृतघ्न बनूँगी? पिताजी, पुत्री के प्रति आपके बड़े उदार विचार हैं!' मैं लज्जा से गड़ गया। मेरी बेटी ने किसी की ओर निगाह नहीं उठाई। हाँ, अब उसमें कुछ परिवर्तन देखता हूँ। बेटा दिनेश, संभव है, तुम उसे सुखी कर सको।"

मोहिनी से मैंने कहा—"अब कब आऊँ?" वह बोली—"तुम जा कहाँ रहे हो? तुम तो निरंतर मेरे पास हो। सोते-जागते, बैठते-उठते। तुम अब जा न सकोगे।" मैंने कहा—"इस शरीर को कल शाम तक पटना पहुँचना है।" वह बोली—"मैं पार्थिव शरीर की बात नहीं करती। वह तो विभिन्न वस्तु है। मैं सूक्ष्म हृदय और आत्मा की बात करती हूँ, जहाँ प्रेम निवास करता है। मुझे तुम्हारे चले जाने में कोई आपत्ति नहीं। लौटोगे, तो अच्छा; न लौटोगे, तो भी जिऊँगी। शीघ्र लौटोगे, तो धन्य समझूँगी। मैंने अपना शरीर तो अर्पण किया नहीं है, जो तुम्हारे शरीर पर अधिकार कर सकूँ। और क्या कहूँ।" उसका स्वर था गद्गद, और नेत्रों में छलकते थे आँसू।

विदा होते समय मैंने बाहु-पाश उसकी ओर बढ़ाया। वह पीछे हट गई। मैंने उसका हाथ पकड़कर अपने ओठों पर रखने की अभिलाषा की। उसने भ्रुकुटि-मात्र से मना कर दिया। मैं उबल पड़ा—"यह फ़िलासफ़ी, यह प्रतारणा मेरी समझ में नहीं आती। जब मैं ज्वर-ग्रस्त था, तब यह फ़िलासफ़ी कहाँ थी। क्या तुम्हारे शरीर ने मेरे शरीर का स्पर्श नहीं किया था। मेरे ओठों ने तुम्हारे कोमल कर का चुंबन नहीं किया था? अब क्या अंतर हो गया?" वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली—"तुम हो बड़े मूर्ख, वज्र-मूर्ख। दास ही जो ठहरे। बुद्धि कहाँ से आवे। अरे, तब मैं थी नर्स, और तुम थे मरीज़। वह शरीर-स्पर्श संन्यास-बुद्धि से था, उसका पाप मुझे नहीं लगेगा। पर अब, अब तुम स्वस्थ हो। अब आपत्ति-काल नहीं है। मर्यादा की रक्षा होनी चाहिए।" मैंने धीर होकर कहा—"पर मैं तो चिर-रोग-ग्रस्त हूँ दायमुल मरीज़ हूँ। मुझे हर समय दवा की ज़रूरत है।" वह बोली—"बने हुए हो। मरीज़ों की तुम्हारी-सी सूरत होती है? बाँके छैला।"

उसकी फ़िलासफ़ी दुर्गम थी। अगम। मैंने कहा—"पत्र लिखोगी?" बोली—"हाँ।" मैंने कहा—"कितनी बार?" उसने कहा—"जितने बार दास की आज्ञा हो।" मैंने कहा—"रोज़।" उसने कहा—"बहुत अच्छा, हुज़ूर।" सकुचते हुए उसने पूछा—"आओगे?" मैंने कहा—"बुलाओगी?" उसने कहा—"क्या बुलाने पर ही आओगे?" मैं बोला—"दास अकारण आवे, तो स्वामिनी बुरा माने।" वह कहने लगी—"दास को अपने कर्तव्य का ज्ञान नहीं। उसे हरदम हाज़िर रहना चाहिए।"

Haridwar. Digitized by eGangotri

मैंने कहा—"हरदम हाज़िर तो रहूँगा। इस शरीर से तो तुम्हें सरोकार नहीं।" वह चुप हो गई। थोड़ी देर रुककर बोली—"मेरे स्वामी, यदि ऐसे न आ सको, तो जब बुलाऊँ, तब तुरंत आना।" मैंने कहा—"तुम समझती हो, मैं बिना आए रह सकूँगा। निठुर कहीं की। भर्तृहरि ने सच कहा था कि नारी-हृदय पत्थर का होता है।" उसे मेरा उत्तर सुनकर परम संतोष हुआ।

उसके और मेरे दोनो के नेत्रों मे थे आँसू।

(८)

"प्रियतम! मेरे नाथ! तुम कहते थे कि मुझे तुम्हारे शरीर से कोई सरोकार नहीं। कितनी झूठी बात थी वह। यदि तुम्हारे शरीर की परवा न होती, तो क्या व्यर्थ ही मैंने तीन रात और तीन दिन जगकर एक कर दिए थे? क्या मैं तुम्हारे पार्थिव अस्तित्व को भूल सकती हूँ? और, फिर यदि मैं तुम्हारे शरीर पर भी अपना अधिकार समझूँ, तो इसमें तुम्हें आपत्ति क्यों है? तुमने तो अपना सर्वस्व मुझे समर्पित किया है। मेरी तरह तुम्हें कोई बाधा तो है नहीं। नहीं, मेरे सर्वस्व, तुम्हारे शरीर पर भी मेरा स्वत्व है।"

उसकी चिट्ठी रोज़ आती।

"जीवन-सर्वस्व! तुमने मुझसे साथ चलने का अनुरोध किया था। उड़ चलने का। अब सोचती हूँ, काश मैं तुम्हारे साथ उड़ सकती। दो सारसों की तरह लाल, पीले, नीले बादलों की हम लोग सैर करते। वहाँ से इस पृथ्वी की अवहेलना कर सकते। कितना सुख होता। उसका साक्षात् अनुभव कर सकोगे?"

एक रोज़ उसने लिखा—

"तुम्हारे नेत्र मेरे सामने नाच रहे हैं। तुम्हारा अधर मेरी ओर नीयत करके फड़क रहा है। कितनी अभागिनी हूँ मैं। अपने प्रियतम को, अपने सर्वेश्वर को संतुष्ट न कर सकी। पाप? पाप क्या वस्तु है? क्या अंतरात्मा का नियंत्रण पाप नहीं है? सोचती हूँ, जब तुमने साथ चलने का प्रस्ताव किया था, तो मैं आत्मबल संचित करके कहती—हाँ, चलो। नाथ! ले चलो। कहाँ? नरक में चलोगे। चलो। स्वर्ग में चलना चाहते हो, चलो। अंतरिक्ष में? अथवा इसी पृथ्वी पर जंगल में, पर्वत पर, कंदराओं में। यदि तुम मेरे साथ हो, तो मुझे किसका भय है। पर यथेष्ट आत्मबल संचित न कर सकी। और, अब यहाँ पड़ी हूँ, फटफटा रही हूँ।

"तुम कहते हो, यह जीवन इस प्रकार कब तक चलेगा। कब तक निभेगी? मेरी ओर से सर्वदा। और प्रियतम, तुमसे भिक्षा माँगती हूँ कि तुम अपनी ओर से भी सर्वदा निभाना। निभाना, मेरे स्वामी! नहीं तो मैं जीवित नहीं रह सकूँगी। जानती हूँ, तुमसे अपूर्व त्याग करने की प्रार्थना कर रही हूँ। पर तुम यह त्याग कर सकोगे अवश्य। मुझे पक्का विश्वास है। तुममें अगाध श्रद्धा है। तुम्हें संतुष्ट नहीं कर सकी। ईश्वर करे, इस पार्थिव लीला के समाप्त होने के पूर्व तुम्हें तृप्त कर सकूँ। तुम्हारे भुज-पंजर में बद्ध होकर। तुम्हें यह शरीर भी समर्पित कर।

"तुम अधीर हो रहे हो। तुम्हें भविष्य अंधकारमय दिखाई देता है। प्राणेश्वर, अतीत और भविष्य को किसने देखा है? इस जीवन का हम लोग न आदि जानते हैं, न अंत। केवल मध्य-भाग दृष्टिगोचर होता है। सो भी कितना मध्य-भाग? हम लोग इस संसार-नाटक में क्षण-भर अपनी-अपनी भूमिका करके चल देते हैं। खिलौने हैं, मिट्टी के खिलौने हैं हम।

"तुम कहते हो, तुम तरस रहे हो। ज्वाला से जल रहे हो। निठुर! चोर! क्या मैं नहीं तरस रही, क्या मैं नहीं जल रही? मैंने तुम्हारा सर्वस्व अपहरण किया है। हाँ, किया तो है। पर बदले में क्या कुछ भी गँवाया नहीं? कहाँ गई मेरी नींद,

कहाँ गई शांति। कहाँ गई देवताओं की भक्ति? मूर्तियाँ अब पत्थर की मालूम होती हैं। इनकी क्या पूजा करूँ? मेरे देवता! तुम तो यहाँ हो नहीं। किस पर पुष्प चढ़ाऊँ, किसे आत्मबलि दूँ?

"क्या आओगे नहीं? पूरा एक महीना, ३० बड़े-बड़े दिनों का महीना, बीत गया। पर तुमने आने की सुधि न ली। बिना बुलाए आओ। आने को कह गए थे, इसलिये आओ। पर मैं अपनी ओर से नहीं बुलाती। आना, तो उलाहना न देना कि तुमने बुलाया था। मुझमें बुलाने की अभी शक्ति नहीं। पर एक बार बुला सकूँगी, ऐसा विश्वास दृढ़ होता जाता है।"

रोज़ इसी प्रकार के पत्र आते, और मैं रोज़ उत्तर लिखता। वकालत, साहित्य, सब नीरस जान पड़ता था। रस था, तो एक मोहिनी की स्मृति में। उसके पत्र पढ़ने में और उसे पत्र लिखने में। मेरा रवैया देखकर मेरा मुंशी हैरान था। मित्र कुछ समझ न पाते थे। मैंने अपना संसार ही अलग बना रक्खा था। उस संसार में दो ही जीवित प्राणी थे, एक मेरी प्रेयसी और दूसरा मैं।

कभी-कभी मैं सोचता—"दिनेश, इस पगली के साथ तुम भी पागल हो गए हो क्या? तुममें तो वकील का चाचित्तापन है। एक ज़रा-सी छोकरी के भुलावे में आ गए। अरे, नारी-संसार की इति मोहिनी में ही तो है नहीं। एक-से-एक पड़ी हैं। तुम पर प्राण न्योछावर करेंगी, तुम्हारी जूतियाँ चाटेंगी। छोड़ो इस जंजाल को।" मन उत्तर देता—"उससे विश्वासघात करूँ! उस साध्वी से! उस सती से! किसके लिये? रुपया कमाने के लिये। इंद्रिय-लोलुपता के लिये। लालसा की तृप्ति के लिये। नहीं, यह न होगा।"

फिर उसका पत्र मिला।

"कैसे छलिया हो तुम, निर्मोही। आने को कहकर भी नहीं आए। कहते हो, किसलिये आऊँ? क्यों, मुझे देखने को चित्त नहीं करता? आँखें लालायित नहीं हैं? कानों में मेरा दुख-दर्द सुनने की शक्ति नहीं रही? तुम तो मुझे एकटक देखना चाहते थे, और अब डेढ़ महीना हो गया। क्या मैं ही आऊँ? पर मैं अपने से डरती हूँ, और डरती हूँ तुमसे।

"मुझे मेरे ही शस्त्रों से मारते हो। लिखते हो, तुम्हें मेरे चले आने में आपत्ति नहीं थी, अब क्यों शोर मचाती हो। अच्छा, मेरे स्वामी, मत आओ। यहीं से बैठी-बैठी तुम्हारी पूजा करती हूँ, मेरे इष्टदेव। मेरे पास है ही क्या, जिसके लिये तुम आओगे? जिस हृदय को मैं अमूल्य समझती थी, उसका तुमने कोई मूल्य नहीं लगाया। तुम्हारी-ऐसी मोहिनी मेरी आँखें नहीं हैं, न वह गोरा वर्ण, न वह रूप। मैं तुम्हारी तुलना क्योंकर कर सकूँगी। पर तुमने मेरे ऊपर दया की थी। मुझे मूर्च्छा के संसार से जीवित संसार में ला रक्खा था। और, तुमने मेरी दासता स्वीकार की थी। क्या वह विडंबना थी?"

(६)

बड़े दिन की छुट्टियों में मैं फिर चित्रकूट गया। मोहिनी का प्रेम उमड़ पड़ा। आँसुओं की झड़ी लग गई। बड़ी देर तक वह सिसक-सिसककर रोती रही। मैं बैठा-बैठा उसके आँसू पोंछ रहा था। वह चुप हुई। मुस्किराई। बोली—"देखो, तुम आ गए न। मेरा मन कहता था, तुम आओगे अवश्य। तुम्हारी क्या सेवा करूँ?"

जितने दिन मैं रहा, मोहिनी मेरे पास रही। अपने आप खिलाना-पिलाना, साथ-साथ टहलने जाना। दिन-भर, बड़ी रात तक कमरे में बैठे-बैठे बातें करना। ऐसा मालूम होता, मानो हम लोगों के वार्तालाप का कोई अंत नहीं। कितना सुख था, और साथ-ही-साथ कितना दुख। मोहिनी के पत्रों से जो आत्मनियंत्रण की शिथिलता जान

Haridwar Digitized by eGangotri

पड़ती थी, वह यहाँ समाप्त हो गई। वह थी, वही दृढ़, पूर्व की-सी। एक दिन मैंने मोहिनी से कहा—"मैं जाता हूँ। मुझसे यह यातना नहीं सही जाती। यहाँ रहकर मेरी प्यास बढ़ती जाती है। तुम्हें जादू आता है, नहीं तो मुझे वश में कैसे कर लेतीं। पर यदि यही सिलसिला जारी रहना है, तो दूर से ही सही।" मोहिनी मेरी बात सुनकर पीली पड़ गई। रुष्ट होकर बोली—"तो पुरुषों को प्रेम करना नहीं आता। कितना आधिभौतिक है उनका प्रेम। तुम्हें यातना है, और क्या मुझे नहीं है? पर सुख इस यातना से कहीं अधिक है या नहीं? तुमने मेरे साथ प्रतारणा की है। मैं मूर्च्छा में पड़ी अचेतनावस्था में अपने दिन काट रही थी। तुमने आकर मुझे जगाया, और अब छोड़ देना चाहते हो, ठुकराना चाहते हो।" कहते-कहते रो पड़ी। मैंने कहा—"अरी मूर्ख, तू चिढ़ गई। कितनी पगली है तू। मुझमें शक्ति है तुझे छोड़ने की, जादूगरनी? मेरी स्वामिनी! मेरी रानी! मैं हूँ तेरा क्रीतदास, सच्चा। मोल लिया हुआ।" उसे कुछ सांत्वना हुई।

अब की जब मैं विदा हुआ, तो वह उतनी अधीर न थी। कम-से-कम ऊपर से नहीं मालूम पड़ी। उसने आने का भी विशेष आग्रह नहीं किया। पर पत्र बराबर लिखते रहने की वह विनती करने लगी।

पटना लौटकर मैंने अपने को दृढ़ किया। काम में चित्त ज़बर्दस्ती लगाने लगा। मित्रों में अनिच्छा रहते भी बैठता-उठता। पर प्रयत्न करने पर भी रहता खोया हुआ-सा। मोहिनी को पत्र लिखता। पर अपने को ज़रा रोक-थामकर। उसके पत्र भी बहुधा नियंत्रित-से आते। पर कभी-कभी वह नियंत्रण दिखाई नहीं पड़ता। एक बार उसने लिखा—"प्रियतम मेरे! तुम मुझसे रुष्ट हो। कहते नहीं, पर पत्रों से तुम्हारा रोष साफ़ झलकता है। मैं सोचती हूँ, मैंने शरीर को निर्लिप्त रखने की टेक बेकार की। जैसा तुम कहते हो, शायद यह आत्म-प्रतारणा ही है। पर जब एक बार टेक कर ली है, तो उसे निभ ही जाने दो, मेरे स्वामी। गिरिधर गोपाल ने कितनों की टेक रक्खी थी। राम ने कितने भक्तों की आन निभाई थी। फिर तुम एक भक्त प्रेयसी की टेक नहीं रख सकते, मेरे भगवान्?

"फिर मैं सोचती हूँ, यदि मैंने कभी इस शरीर को समर्पण करने का प्रस्ताव किया, तो क्या तुम इसे स्वीकार करोगे? क्या तुम्हें लोक-लज्जा दुःखित न करेगी? तुम्हारा प्रेम ऐहिक है। तुम्हें सारी ऐहिक बातें सूझेंगी। तब क्या इसी प्रकार साथ दे सकोगे?"

इसका उत्तर पाकर "तुम कहते हो कि तुम मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकार करोगे। अच्छा तो है, प्राण। परमेश्वर वह दिन भी ला रहा है। तब देखूँगी, मेरे स्वामी।"

मैं समझा, मोहिनी बदल रही है। कुछ आशा हुई। चित्त को सांत्वना मिली। मैंने लिखा—"मैं आऊँ।" उसने उत्तर दिया—"अभी नहीं। आत्मा को बल प्राप्त कर लेने दो।"

कई महीने इसी तरह निकल गए।

(१०)

वसंत जा रहा था, और गर्मी आ रही थी। पटना से तबियत उखड़ गई थी। चलूँ। पर कहाँ। चित्रकूट? मोहिनी को अपने उचाट की बात लिखी। उसने समवेदना प्रकट की, पर आने को नहीं लिखा। मेरे आत्मसम्मान को धक्का लगा। मैंने एक सप्ताह तक पत्र नहीं लिखा। उसने अपने पत्रों में हृदय निकालकर रख दिया।

"मेरे नाथ! तुम मुझे पत्र नहीं लिखोगे। अच्छा, न लिखो। पर पगली मोहिनी बात कहकर पीछे हटनेवाली नहीं है। मैंने रोज़ पत्र लिखने की

प्रतिज्ञा की थी। उस पर दृढ़ हूँ। क्या तुम अस्वस्थ हो? मालूम तो हो, मैं दौड़कर आ जाऊँ। क्या तुम पटना से कहीं और चले गए? पर चले जाते, तो भी तो पत्र लिख सकते थे। मेरे पत्र न-जाने किन हाथों में पड़ रहे होंगे। पर इससे क्या? लोग हँसें, तो हँसने दो। 'मीरा की लगन लागि, होनी होइ सो होई।'"

अचानक एक रोज़ उसका यह निमंत्रण मिला—"प्रियतम मेरे! मेरे आज्ञा-बद्ध दास! मेरे मंत्र-मुग्ध मोहन! आओ! तुरंत आओ! मैं आत्म-समर्पण करूँगी। क्या अब भी विलंब करोगे? प्रत्येक क्षण असह्य हो रहा है। आओ अपनी स्वामिनी के पास।"

मैंने पहली ही गाड़ी पकड़ी। आत्मविस्मृति में किसी प्रकार चित्रकूट पहुँच गया। कमरे में मोहिनी बैठी थी। उसके सामने एक थाल में फूल, एक में मिठाई। केश खुले हुए। दिव्य ज्योति। कमरे में मेरे पैर रखते ही उसने फूल मेरे चरणों पर बरसा दिए। मस्तक चरणों पर रखकर मेरे चरण चूम लिए। फिर एकाएक उठकर उसने अपनी बाँहें मेरे गले में डाल दीं। अपना मस्तक मेरे वक्षःस्थल पर रखकर अविरल आँसू बहाने लगी। सरकार बाबू और उनकी पत्नी यह लीला देखकर अंदर चले गए।

हिचकियाँ रुकने पर वह उसी अवस्था में बोली—"प्रियतम! अब संतुष्ट हो!" मैंने उसका चिबुक उठाकर ज़रा निमेष-भर उसकी ओर देखा, और फिर नेत्र निमीलित कर मैंने, जितना प्यार कर सकता था, उसे प्यार किया। फिर आँखें खोलीं। कितनी मादकता थी उसकी आँखों में, और कितना मधु था उसके ओठों में।

भोजन के उपरांत सरकार बाबू बैठे और मैं। वह बोले—"बेटा! मैं अब निश्चिंत हूँ। मोहिनी तुम्हारे हाथों सुख पावेगी।" मोहिनी से जब फिर मिला, तो मैंने कहा—"कहाँ गई, देवीजी की टेक?" वह बोली—"अच्छा, आपको अपनी आकर्षण-शक्ति का ज़ोम है। मेरी टेक, वह तो पूरी होकर रही। इस शरीर का अधिकारी जब इस संसार में नहीं रहा, तब मैंने इसे तुम्हें अर्पण किया है, समझे मूर्खराज।"

सरकार बाबू ने विवाह की विधि करने का प्रस्ताव किया। मैंने भी इच्छा प्रकट की। पर मोहिनी ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया। अपने पिता से बोली—"बाबा, तुम भी पागल की-सी बातें करते हो। एक विवाह से तुम्हें तृप्ति नहीं हुई। उसका सुख देख लिया न। नहीं, मैं विवाह के नाम से भी डरती हूँ। विवाह कहीं इनको मुझसे छीन न ले जाय। विवाह न करूँगी, तो क्या हानि होगी? यह मुझे छोड़ ही देंगे न? और यदि विवाह करके भी छोड़ दिया, तब यह मुझसे वचन-बद्ध हैं और मैं इनसे। इस परस्पर प्रतिज्ञा में जो पवित्रता है, सो विवाह-विधि में कहाँ।"

तब भी संध्या को गृहपत्नी ने हम दोनो को पास-पास बिठलाकर आरती उतारी। दोनो के वस्त्र एक में जोड़ दिए। सरकार बाबू ने संकल्प पढ़ा। वृद्ध जनों को संतुष्ट करने के लिये मोहिनी ने इतने ही की अनुमति दी।

(११)

रात को जब हम लोग मिले, तो मैंने देखा, उसका शरीर बहुत दुबला था। चेहरे की ज्योति से उसके शरीर की इस कृशता का कौन अनुमान कर सकता था। मैंने पूछा—"क्या तुम बीमार थीं? पहले तो इतनी दुबली नहीं थीं।" वह खिलखिला-कर बोली—"मैं, मैं क्यों बीमार पड़ूँगी। बीमार पड़ते हैं तुम्हारे-ऐसे छलिया, तुम्हारे-ऐसे पापी। पर ज्वाला से तो मैं भी नहीं बच सकी। और तुम? तुम क्या मोटे होकर लौटे हो? क्या मैं तुमसे भी दुबली हो गई हूँ?" हाँ, वह मुझसे भी दुबली हो

Digitized by eGangotri

गई थी। मैंने सोचा, इतने दिनों कष्ट भोगा है, अब स्वस्थ हो जायगी।

सरकार बाबू के चित्रकूट रहने की अब कोई आवश्यकता नहीं थी। मैंने और मोहिनी ने चार महीने के पर्यटन का इरादा किया। सरकारद्वय इस बीच बर्दवान लौट जायँगे, और दुर्गा-पूजा आरंभ होने के पूर्व ही दोनो युवक-युवती और वृद्ध पटना आकर स्थायी निवास ग्रहण करेंगे। यही निश्चय हुआ।

हम दोनो पक्षी उड़ चले। विंध्याटवी, हिमपर्वत, कश्मीर-सुषमा, गंगा का किनारा, किसका अनुभव नहीं किया। उड़ना और बसेरा लेना। साथ-ही-साथ चहचहाना। साथ-ही-साथ चुगना। कितना सुख था उन दिनों। चार-पाँच महीने क्षणों की तरह बीत गए। "दिन ऐश के घड़ियों में गुज़र जाते हैं कैसे।"

मोहिनी का स्वास्थ्य पहले से कुछ सँभला। पर फिर वह थकी-सी रहने लगी। मैंने कहा—"चलो, पटना चलकर आराम किया जाय।" उसने नहीं कर दी—"क्या पटना इससे सुंदर है? यहाँ कितना सुख है? कितना उल्लास है।"

दुर्गा-पूजा आरंभ होते-होते हम लोग पटना पहुँचे। सरकार बाबू एक सप्ताह पूर्व ही आ गए थे। मोहिनी को देखकर वह त्रस्त हुए। उसके शरीर में घुन लग गया था।

मोहिनी की चिकित्सा प्रारंभ हुई। मेडिकल कॉलेजवालों ने क्षय निर्धारित किया। मैं सन्न रह गया। हाथ-पाँव ढीले पड़ गए। मोहिनी को अपने रोग का पूर्व से ही कुछ आभास था। बोली—"प्रियतम! गत बड़े दिन की छुट्टियों के बाद से ही मेरी तबियत गिरी-गिरी रहती थी। मरने के पूर्व मैं अपनी ओर से तुम्हें हर तरह संतुष्ट करना चाहती थी। यही चिंता थी, यही प्रार्थना। परमेश्वर ने वह साध पूरी कर दी। तुम्हें जी-भर प्यार कर लिया। तुम्हें सर्वस्व समर्पण कर चुकी। मिसेज़ बसु का प्रिय नाम भी पा लिया। अब क्या चाहिए? वैसे तो मानुषी वांछाओं का कोई अंत नहीं है। मैं तुम्हारा घर सँवारती, कितना सुख होता। तुम्हारे पास अपनी पार्थिव स्मृति छोड़ जाती, तो कितना सौभाग्य होता। पर मैं संतुष्ट हूँ। इतने ही के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देती हूँ।"

मुझे एक क्षीण-सी आशा थी कि मेरी प्राण-सर्वस्व को कोई मुझसे अलग न कर सकेगा। पर वह आशा विलुप्त होने लगी। एक दिन मैंने कहा—"प्रेयसि! मुझ पर तरस खाओ। मुझे निःसहाय छोड़कर क्या तुम्हें सुख होगा?" वह फीकी हँसी हँसकर बोली—"नाथ! आत्मबल संचित करके जी रही हूँ, नहीं तो कभी की चली गई होती। तुम धैर्य ग्रहण करो। हम लोग चिर-वियुक्त नहीं रह सकते। फिर कहीं मिलेंगे। यहाँ तो हम लोग दूसरे के बाँधे हुए लट्टू हैं, बाँधनेवाले की इच्छा के वशीभूत।"

अंतिम दिनों में मैंने कहा—"मुझसे क्या कहती हो?" बोली—"अब क्या कहूँ। सब कुछ तो कह चुकी।" अपना हाथ मेरे अधर पर लाकर लालसा-भरे नेत्रों से प्यार करने का संकेत किया। मैंने उस अस्थि-पंजर को गोद में भर लिया। उसका सारा शरीर मेरे आँसुओं से तरबतर हो गया। देखा, उसके चेहरे पर संतोष था और शांति। बिदा होने के कुछ घंटों पूर्व वह बोली—"नाथ, मैं तुम्हें बुलाऊँगी, बुलाने आऊँगी, तब साथ हो लेना। मना मत करना। मेरे क्रीतदास हो। मंत्र-मुग्ध, आज्ञा-बद्ध। जन्म-जन्मांतर के लिये। समझे।"

(१२)

हतभाग्य मैं आज उसके पार्थिव अस्तित्व की अवशिष्ट राख त्रिवेणी को समर्पित कर आया हूँ। और, यहाँ से लौटा जा रहा हूँ—उसकी पुकार की प्रतीक्षा में। वह बात की धनी है, टेक की पूरी है। शीघ्र आवेगी, और मुझे ले जायगी। वहाँ—जहाँ वियोग नहीं है!

तुलसीदास की रामोपासना *

[श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि]

तुलसी-पूर्व राम-भक्ति

शुक्ल यजुर्वेद में कहा है—"श्रद्धया सत्यमाप्यते" अर्थात् श्रद्धा से ही सत्य की प्राप्ति होती है१। ऐसी श्रद्धा विशेषता के साथ संहिता-काल में आर्य ऋषियों की स्तुतियों में विद्यमान मिलती है। इंद्र की सामर्थ्य की प्रतीति इसी श्रद्धा के कारण थी२—"श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्र" और विष्णु की उपासना इसी श्रद्धा-भाव से प्रचलित की गई३। शनैः-शनैः श्रद्धा की व्यापकता सभी धार्मिक कृत्यों और आध्यात्मिक चिंतनों में मालूम पड़ने लगी, और श्रद्धा विराट् विश्व के परमार्थ-परायण विशाल यज्ञ की जीत स्वीकार की गई। ऋग्वेद ४ में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है—

"यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे।
एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि॥
श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते।
श्रद्धां हृदय्या१ याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु॥
श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यं दिनं परि।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः॥"

वेद-काल के परवर्ती युगों में भी इस श्रद्धा की विशेषता सर्वदा बनी रही, और प्रत्येक सिद्धांत के साथ अटल श्रद्धा की आवश्यकता समझाई गई। महाभारत ने अपने समय में श्रद्धा के विषय में कहा—'अग्रे सर्व्वेषु यज्ञेषु श्रद्धायज्ञो विधीयते१।" इसके पूर्व ज्ञानवादियों ने श्रद्धा में विवेक को भी आवश्यक बतलाया था, और अपने ज्ञान की श्रेष्ठता के निर्वाहार्थ काल-पात्र-वस्तु-गुण आदि पर उचित विचार करते हुए श्रद्धा रखने की शिक्षा दी थी, पर धीरे-धीरे वह उच्च भाव पुनः साधारण मनोवृत्ति के ही अनुकूल बन गया था। गीता में फिर श्रद्धा को वैदिक विशेषता प्रदान कर कृष्ण ने श्रद्धा-स्रोत को सबल बनाने का सफल यत्न किया। मोह-ग्रस्त अर्जुन को पहला उपदेश श्रद्धा का ही दिया गया।

मानव-प्रतिनिधि अर्जुन को गीता में ज्ञान की पवित्रता भी बतलाई गई, और कर्म का स्वरूप भी समझाया गया। किंतु ज्ञान और कर्म दोनो के साथ गीतागुरु कृष्ण ने श्रद्धा को सम्मान दिया; संभवतः ज्ञानियों के तत्त्वज्ञान को भी कर्मवादियों की ही श्रद्धा से समन्वित कर भेद मिटाने का प्रयत्न किया गया। कृष्ण ने कहा—"श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्।" अर्थात् जिस ज्ञान के सदृश इस पृथ्वी पर कुछ भी चिंत्य विषय नहीं है, वह श्रद्धावानों को ही प्राप्त होता है२। अर्जुन का चित्त आकर्षित हुआ, भगवान् उनके सामने ज्ञान के साथ कर्म का संबंध समझाते गए, और अवसर देख फिर श्रद्धा की आवश्यकता प्रकट की३—"श्रद्धया परया तप्तं।" क्योंकि तब तक अर्जुन को कृष्ण-वचनों में विश्वास आ रहा था, और कृष्ण ने अपने कथन की दैवी सामर्थ्य को भी समझाते हुए ब्रह्म के अवतार-रहस्य

---

* हिंदी-विश्वविद्यालय, प्रयाग की परीक्षाओं—संवत १९९३—के अवसर पर संग्रहालय-भवन में २२-९-३६ ई० को लेखक द्वारा दिया गया व्याख्यान।

१ शुक्लयजुः पू० अ० १५। २ ऋग्वेद २—१२—४। ३ ऋग्वेद १—५६—३। ४ ऋग्वेद १०—१५१ सूक्त पूरा।

१ महाभारत शांतिपर्व, अ० ५९। २ गीता ४-३९; 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। ३ गीता १७-१७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को प्रकट कर दिया था। अर्जुन के मस्तिष्क-मंदिर में प्रतिध्वनित हो रहा है—"प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।" श्रद्धा के तीसरे सोपान पर आकर अर्जुन को नितांत गत-संदेह करना कृष्ण को उचित जँचा। उन्होंने कर्म-मुक्त हो शुभ लोक-प्राप्ति का विश्वास देते हुए फिर व्यक्त किया१—"श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः।" अब अर्जुन को कोई शंका नहीं रह गई। उनका हृदय-दौर्बल्य कृष्ण-भगवान् के उपदेशों से दूर हो गया, वह कर्म-रत हुए।

महाभारत आरंभ हुआ, और समाप्त हुआ, कौरव-पांडव दोनो ही काल-चक्र से ग्रस्त हो अदृश्य हुए; किंतु उस पर घटित कृष्ण के प्रत्येक युग-धर्म की रक्षा की शिक्षा का प्रभाव हिंदू-समाज में बढ़ता ही गया, और वह आज भी दृश्य है। योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर पार्थ के संबंध२ का अनुकरण मनुष्य करते ही गए, और धीरे-धीरे भक्ति-वाद की लहर प्रबल हुई। स्तुति, ज्ञान, कर्म, शून्य मंत्र-तंत्र आदि सभी भावनाएँ तरंगित हो-होकर भक्ति-वाद के विकास में सहायिका बनीं।

भक्ति-वाद का संबंध आरंभ में वैदिक देवता रुद्र और विष्णु के साथ हुआ। इनके विवरण में श्रद्धा-भक्ति की अत्यधिक वृद्धि हो जाने पर समाज में रुद्र से शिव और विष्णु से कृष्ण तथा राम के अवतार का सिद्धांत स्थिर किया गया३। शिव के उपासकों का शैव-मत निकला, और विष्णु-भक्तों का वैष्णव-मत विष्णु विशेषणों के साथ प्रचलित हुआ। वैष्णव-मत की दो शाखाएँ हुईं—एक शाखा ने कृष्ण को इष्टदेव माना और दूसरी ने राम को, पर विशेषता कृष्ण-मत की ही रही।

राम-भक्ति की उतनी प्राचीनता नहीं, जितनी कृष्ण-भक्ति की, क्योंकि राम-भक्ति का भाव कृष्ण-भक्ति से पीछे पैदा हुआ। राम का सम्मान हिंदू-समाज में लोकादर्श की दृष्टि से विशेषतः हुआ, पर कृष्ण के साथ प्रेम और हितैषिता का भाव था। राम में ईश्वरत्व का स्थापन बहुत पीछे किया गया। प्राचीन विवरणों से ज्ञात होता है कि राम की आख्यायिका प्रारंभ में वीरता के भाव से सनी थी, और राम को एक आदर्श वीर मानकर समाज उनका सम्मान करता था। जान पड़ता है, कृष्ण में ईश्वरत्व स्थापित होते देख समय-समय पर कुछ विद्वानों ने राम को भी कृष्ण की पंक्ति में लाने की चेष्टा की, पर समाज में वे यत्न उतनी ख्याति नहीं पा सके। भक्ति-विकास के अंतिम काल में ही राम में श्रद्धा को भक्ति का रूप प्राप्त हुआ, और राम-भक्ति एक संप्रदाय के रूप में बह चली।

भारतीय धर्म-प्रिय पुरुषों की प्रवृत्ति सहसा वेदों की ओर हो जाती है, और मत-संप्रदाय के आचार्य तथा अनुयायी अपने विचारों की प्राचीनता वेद-मूलक सिद्ध करने को लालायित पाए जाते हैं। ऐसी दशा कभी-कभी राम-भक्तों की भी पाई जाती है, और उनकी ओर से 'राम' और 'सीता' को वेद-वचनों में ढूँढ़ने का प्रयत्न किया जाता है। परंतु जानना चाहिए कि 'संहिता' या 'ब्राह्मण' में किसी संप्रदाय के विचार से राम या सीता का वर्णन नहीं किया गया। राम-

१ गीता १८-७१। २ गीता १८-७८।

3 "Finally, it is chiefly owing to the undue importance assigned to *bhakti* that Vishnuism gradually lost sight of the heroic side of its legends; that it preferred to fall back upon the idyllic expisodes in the history of Krishna and Rama; that it made divive love speak more and more the language of human passion, and that it became at length an erotic religion". A. Barth: The Religions of India, P. 230, also P. 176.

सीता-हनुमान आदि तो शब्द ही हैं, और उनका प्रयोग भी स्वभाविक है। पर जहाँ कहीं उनका प्रयोग हो, वहाँ राम के ईश्वरत्व-वर्णन के लिये ही हो, यह युक्ति-संगत प्रतीत नहीं होता। 'सीता'-शब्द ऋग्वेद में आया है १ यथा—"अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा", "इन्द्रः सीतां विगृह्णातु तां पूषानुयच्छतु।" परंतु यहाँ सीता का संबंध न राम से है न राम-कथा से, बल्कि 'इंद्र'-शब्द के साथ व्यवहार में आया है, क्योंकि उस समय ईश्वर-से शक्तिमान् क्षेत्रपति इंद्र थे, और वृष्टि से उनका घनिष्ठ संबंध था। 'सीता'-शब्द भी कृषि से संबंध रखनेवाला है, इसी से पीछे वैष्णव-मत में भी सीता को 'श्री' का अवतार कहा गया। अवतारी राम का प्रसंग वेद में कहीं भी नहीं है।

संहिता के बाद बने ब्राह्मण-ग्रंथ वेदों के समान ही पवित्र माने जाते हैं। वे प्राचीन भी हैं, और रामायण, महाभारत, उपनिषद् आदि से बहुत पहले लिखे गए हैं। उनमें तीन रामों के उल्लेख मिलते हैं। शतपथ ब्राह्मण२ में उपतस्विन् के वंशज राम औपतस्विनि का वर्णन है, पर वह एक आचार्य थे, दशरथ-पुत्र राम नहीं। एक दूसरे आचार्य का नाम जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण३ में भी मिलता है, वह क्रतुजात-वंशज राम क्रातुजातेय थे। तीसरे राम आचार्य राम भार्गवेय थे, जिनका प्रसंग ऐतरेय ब्राह्मण४ में है। इनके अलावा वेद-ब्राह्मण में अन्य राम नहीं हैं।

महाभारत और पुराणों में तीन अवतारी राम के विशद वर्णन प्राप्त होते हैं५। वे तीन हैं—षोड़शराजिक दशरथ-पुत्र राम, कृष्ण-भ्राता हलधर बलराम और भृगुवंशी जमदग्नि-पुत्र परशुराम। इनमें प्रथम दो क्षत्रिय थे, और तृतीय ब्राह्मण। महाभारत में राम दाशरथि का राम जामदग्न्य से युद्ध भी वर्णित है१ और हलधर बलराम का अवतारी कृष्ण के साथ ही होना लिखा है, तथापि वायु, ब्रह्मांड और मत्स्य-पुराणों में रामचंद्र की गणना चक्रवर्तियों में ही की गई है। उनका अवतार-वाद से संयोग धीरे-धीरे उनके सद्गुणों के विचार से किया गया।

'रामपूर्वतापनीयोपनिषद्' और 'रामोत्तरतापनीयोपनिषद्' का संबंध राम-सीता से है, और उनमें राम को ब्रह्म तथा सीता को मूल-प्रकृति-रूप कहा गया है; उनमें राम उपास्य देव भी कहे गए हैं। किंतु ये ग्रंथ उतने प्राचीन नहीं जान पड़ते, जितने अन्य प्रामाणिक उपनिषदें। वाल्मीकि-रामायण में राम विष्णु के अवतार कहे गए हैं, लेकिन भक्ति-दृष्टि से वह भाव कृष्ण-भक्ति के आगे बहुत समय तक दबा रहा, समाज में अपना पूरा सम्मान नहीं पा सका। कृष्ण-भक्ति का प्रचार दक्षिण-भारत में होने पर ही राम-भक्ति की ओर भी लोग झुके।

राम-भक्ति की ओर ध्यान आकर्षित कराने का प्रयत्न १२वीं शताब्दी में रामानुजाचार्य ने किया। विशिष्टाद्वैत द्वारा शंकर के अद्वैत मत के विरोध में रामानुजाचार्य ने मायावाद का खंडन किया, और अवतारी भगवान् की भक्ति राम में जारी की। कृष्ण की उपासना पहले से ही हो रही थी, और दक्षिण-भारत में अनेक कृष्ण-भक्त थे। रामानुजाचार्य के शिष्यों के राम-भक्ति ग्रहण करने का विशेष कारण यह भी हुआ कि उनके गुरु का नाम राम-पद-युक्त था। बाद में, १४वीं शताब्दी में, उत्तर-भारत में रामानंद स्वामी ने रामोपासना की पताका फहराई। उनके समय में कृष्ण-भक्त थे,

१ ऋग्वेद ४-५७-६,७। २ शतपथ ब्राह्मण ४-६-१-७। ३ जैमिनीयोप० ३-४०-१, ४-१६-१। ४ ऐतरेय ७-२७-३। ५ महाभारत ७-५५-२१७० से ७०,१२-२९-९१०, १०३७।

१ महाभारत ३-९९-८६५८,८२; पद्मपुराण ६-२६९-१५४-१७८।

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

पर उनकी शृंगार-प्रियता सीमा को पार कर गई थी। यद्यपि रामानुज ने जाति-भेद दूर करने का प्रयास किया था, तो भी उनकी शिक्षा समाज के दलित-अशिक्षित लोगों के पास तक नहीं पहुँच पाती थी। क्योंकि विद्या का आधार संस्कृत थी, और संस्कृत बोल-चाल की भाषा न थी। रामानंद-जी ने इन कठिनाइयों को दूर कर राम-भक्ति पर बोल-चाल की भाषा में शिक्षा दी, और साथ ही जाति-पाँति-भेद को एकदम दूर कर दिया। फलतः जुलाहे, चमार, हज्जाम आदि उनके शिष्य हुए, और राम-भक्ति का प्रचार उत्तर-भारत में यत्र-तत्र आसानी से किया जा सका। किंतु रामानंद के बाद प्रचार-प्रगति पुनः शिथिल हो गई, क्योंकि रामानंद के मुख्य-मुख्य शिष्य स्वमत-स्थापन द्वारा गुरु-सम्मान पाने की ओर झुके। सौभाग्यतः सोलहवीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामानंद की रामोपासना को ज़ोर देने का संकल्प किया, और उन्होंने एतदर्थ राम-चरित-मानस-रचना-प्रयत्न-सुफल-स्वरूप राम-कथामृत-मंदाकिनी को भारत-भूतल पर प्रवाहित किया। आज उस मानस के दर्शन-मज्जन-पान द्वारा त्रिविध भय दूर करने में असंख्य लोगों को श्रद्धांजलि-हीन देख मानस की उपयोगिता और तुलसी-लक्ष्य की सिद्धि का अंदाज़ा सहज में ही लगाया जा सकता है।

तुलसी-काल का हिंदू-समाज

गोस्वामी तुलसीदासजी की निधन-तिथि के संबंध में प्रसिद्ध है—

संवत सोरह सौ असी, असी-गंग के तीर,
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।

इससे विदित होता है कि वि० सं० १६८० के पूर्व गास्वामीजी का प्रादुर्भाव हुआ। उस समय हिंदुस्थान में हिंदुओं का चक्रवर्तित्व, जिसके अनेक विवरण संस्कृत-ग्रंथों में मिलते हैं, नष्ट हो चुका था। हिंदी के प्राचीन चारण महाकवि चंदबरदाई के 'पृथ्वीराज-रासो' ग्रंथ के पूज्य पात्र पृथ्वीराज से जयचंद का जो अनबन हुआ, उसका कुफल धीरे-धीरे उत्तरी भारत से हिंदू-राजसत्ता का नाश की ओर प्रधावित होना हुआ, और उस गति में अंत में पठानों के साम्राज्य की नींव पड़ी। पठान-पतन के पश्चात् भी हिंदुओं में राजनीतिक ऐक्य घटित नहीं हो सका, और पठानों के बदले मुग़ल उत्तरी भारत के सबल शासक हुए। मुग़ल शासकों में बादशाह अकबर ने हिंदू-मुसलमान-मेल का भाव प्रदर्शित किया, जिससे धार्मिक मतभेद बहुत कुछ कम हो गया। और, उत्तरी भारत में ऐसी शांति का दर्शन हुआ, जिससे समाजोन्नति संभव हो सकी, तथा लोग साहित्य-कला और धर्म के उत्कर्ष की ओर ध्यान दे सके। तो भी मुग़लों के आचार-विचार के प्रभाव ने हिंदू-समाज के पुरातन भावों में बहुत कुछ परिवर्तन कर दिया था, और सामाजिक स्थिति पहले से बदल गई थी।

समाज के धनी-मानी पुरुषों पर सामाजिक समुन्नति का उत्तरदायित्व बराबर ही रहता है, और उनके प्रोत्साहन से ही कोई उत्कर्ष पल्लवित-पुष्पित हो सकता है, पर मुग़ल-शासन-काल में बात कुछ और ही थी। मुग़ल बादशाह आराम-पसंद होने के अलावा पूर्ण स्वेच्छाचारी थे, और उनके नवाब, मुसाहिब, दरबारी उन विशेषाधिकारों का उपभोग कर रहे थे, जो न रिकों को किसी प्रकार प्राप्त न थे। धनी नवाब का जीवन सुरा-सुंदरी-सुख-भोग के ही लिये था, और उनका धन इसी लक्ष्य की पूर्ति का साधन १। उधर साधारण मज़दूरों का जीवन दुःख और ग़रीबी का था। वे बहुत कम पारिश्रमिक पर किसी प्रकार जीवन व्यतीत करते थे, तो भी उन पर अत्या-

1. Fancisco Pelsaert: The Remonstrantie, pp. 64-66.

चार हो ही जाते और वे नत-मस्तक उन्हें सहन करते १।

धार्मिक जीवन में भी वैसा ही वैषम्य था। मुसलमान पीर-फ़क़ीर की पूजा करते और अपने त्योहारों को धूमधाम से मनाया करते थे। उनमें शिया-सुन्नी का भी भारी भेद था २। महदवी और रोशनी फ़िरक़े के लोगों में भी भारी पारस्परिक वैमनस्य था, और दोनो अपनी-अपनी उन्नति चाहते थे ३। इसी प्रकार हिंदुओं में भी मत-मतांतरों के कारण अनैक्य का प्राबल्य था। मुसलमानों के आचार-विचार का प्रभाव हिंदुओं के विचारों में अंतर पैदा करने के अलावा उनके अपने सांप्रदायिक विचार भी उनके सामाजिक बंधन शिथिल करने को तुले हुए थे। न कोई राजभय था, न सामाजिक बंधन किसी प्रकार कार्यवान् था। वैदिक सिद्धांतों का बल भी मतवादित्व के आगे एकदम शिथिल था। ढोंग का बोलबाला था। भिन्न-भिन्न पौराणिक धारणाओं के प्रचार से समाज में जो अनुत्तर-दायित्व फैल रहा था, उसका फल फूट और मात्सर्य था। वास्तविक ब्रह्म-चिंतन लुप्तप्राय था। वास्तव में लोगों का ध्यान मोह और आपस के भेदों की ओर था। जैसा गोस्वामीजी ने स्वयं लिखा है—

ब्रह्म-ज्ञान बिनु नारि-नर कहहिं न दूसरि बात;
कौड़ी लागि ते मोह-बस करहिं बिप्र-गुरु-घात।
बादहिं सूद्र द्विजन सन, हम तुमतें कछु घाटि;
जानहिं ब्रह्म सो बिप्रवर, आँखि दिखावहिं डाँटि।

बौद्ध-मत के तिरोहित होने की दशा में वैष्णव-मत ने जो रूप उत्तरी भारत में धारण किया, उसमें बौद्ध-जैन-मतों के अंतिम विचार भी मिले हुए थे, और तांत्रिक संप्रदाय का प्रभाव भी उस पर था। अतः सोलहवीं शताब्दी के हिंदू-धर्म के अंतर्गत विविध विचित्र विचार समाज में चल रहे थे। कहीं राधा-कृष्ण की उपासना थी, कहीं अघोरियों का सम्मान था, कहीं शैवों का डमरू बज रहा था, कहीं शाक्तों की साधना चल रही थी, कहीं कबीर के अनुयायी कबीर-साखियों में मग्न थे, और कहीं नानक-मत का अनुसरण किया जा रहा था। हिंदू-समाज के धर्मगुरु ब्राह्मणों की निष्ठा पौराणिक उपाख्यानों में थी। श्रुति-स्मृति-सम्मान ताक़ पर था, और उनके विद्वान् उसी प्रकार शांत थे, जिस प्रकार पावस में कोकिल। इसी शोचनीय दशा को गोस्वामीजी ने समय-समय पर व्यक्त करते हुए 'अशुभ भेष भूषण धरैं', 'स्वारथ-सहित सनेह सब', 'सब-भच्छक परमारथी', 'कल्पहिं पंथ अनेक' आदि लिखा है—

दंभ-सहित कलि-धरम सब, छल-समेत व्यवहार;
स्वारथ-सहित सनेह सब, रुचि-अनुहरत अचार।
चोर, चतुर, बटपार, नट, प्रभुप्रिय भँड़आ, भंड;
सब-भच्छक परमारथी, कलि सुपंथ पाखंड।

गोस्वामीजी की कविताओं में यत्र-तत्र ऐसे उद्गार भी मिलते हैं, जिनसे तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों का ज्ञान होता है। विवेक के अभाव में समाज के लोगों में 'भेड़िया-धँसान' की प्रवृत्ति उस समय काम कर रही थी, और भ्रांति को ही आदर प्राप्त था। धर्म के नाम पर ढोंग को प्रधानता दी जाती थी। इस गिरी मनोवृत्ति पर बाध्य हो गोस्वामीजी को लिखना पड़ा—

तुलसी भेंड़ी की धँसनि, जड़-जनता-सनमान;
उपजत ही अभिमान भो, खोवत मूढ़ अपान।

समाज में स्त्रियों की गति भी कुछ विचित्र थी, और बौद्ध-काल के अवशिष्ट विचार भक्ति-जगत् में अभी तक व्याप्त थे। जिस प्रकार बौद्ध-मठों में भिक्षुओं के साथ भिक्षुणियों का संसर्ग रहा था, उसी प्रकार कृष्ण-भक्ति में गोपियों की कथा से

1. Dr. Sarkar and Dutta: Modern Indian History Vol. I, part III, pp. 32-33.
2. Fancisco Pelsaert: The Remonstrantie, pp. 69, 74.
3 J. I. H. 1930, pp. 317-19.

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रभावित भक्तिनें भक्त-मंडलियों में साधु-संत-सेवा की ओर झुकी पाई जाती थीं। पर इस झुकाव से जो बुरा फल हो सकता है, वह गोस्वामीजी के पूर्व ही बौद्ध-मत के इतिहास में प्रदर्शित हो चुका था, और भक्ति-वाद में भी उसका रूपांतर दृष्टिगत ही था। वास्तव में स्त्रियों का साथ वैरागी साधु-संन्यासियों के लिये विषमय था। इसे गोस्वामीजी ने अपने पदों में व्यक्त किया, 'काम को केवल नारि' के अलावा उन्होंने कहा—'का न करै अबला प्रबल।' वास्तव में माया-रूपी नारी के नयन-शर से विद्ध हो जाने की दशा में नारी का रूप अपना सौंदर्य गँवा बैठता है, अतः मातृरूप की पवित्रता से पृथक् भोग की सामग्री मानी जाने पर स्त्री-जाति से समाज का मस्तक ऊँचा नहीं हो सकता। गोस्वामीजी के पहले वेद-धर्म, लोक-धर्म, देह-धर्म और लज्जा-धर्म छोड़, स्वजनों की भर्त्सना की चिंता न कर परकीया के आदर्श में कहा जा चुका था—'सर्व त्याग करि करे कृष्ण-भजन।' तदनंतर कृष्ण-भक्ति में लीन मीरा बेसुध गा रही थी—'श्रीगिरिधर आगे नाचूँगी; लोक-लाज कुल की मरजादा यामें एक न राखूँगी।' पर यह आदर्श गोस्वामीजी को प्रिय न था। उन्होंने उसके विरोध में स्त्रियों के स्वभाव को 'सब विधि अगम अगाध दुराऊ' कहा, तथा 'अवगुन आठ सदा उर रहहीं' तक समझाया, और स्त्रियों को भी अपने आदर्श-पालन की शिक्षा देते हुए मानस में अनसूया से कहलाया—

एकइ धरम, एक ब्रत - नेमा,
काय-बचन - मन - पति - पद-प्रेमा।
पति-बंचक पर-पति रति करई,
रौरव-नरक कलप सत परई।

परकीया-आदर्श के प्रचार को प्रोत्साहन मिलने का मुख्य कारण साहित्यिक जगत् में राधाकृष्ण के प्रेम-वर्णन की ओर कवियों की विशेष रुचि का होना था। पुष्य कवि से जोधराज कवि तक चारण-काव्य का युग हरा-भरा रहा। जोधराज के बाद से भक्ति-काव्य के युग का आरंभ हुआ। रामानंद स्वामी के शिष्य भवानंद ने हिंदी में वेदांतदर्शन पर 'अमृत-धार' की रचना की। कबीर-पंथ-प्रवर्तक कबीर ने साखियों में अध्यात्म की चर्चा की, और विद्यापति ने सुंदर पदों में राधाकृष्ण के शृंगार का वर्णन कर सरस काव्य की ओर लोगों को आकर्षित किया। विद्यापति के समकालीन कवि चंडीदास, उमापति और जयदेव की कविताओं में भी प्रेम और शृंगार का ही वर्णन मुख्य रहा। किंतु धीरे-धीरे यह शैली अश्लीलता में रँगने लगी, और शृंगारी कवियों ने राधाकृष्ण के प्रेम को मनमाने वर्णन का आधार बना लिया[1]। मीराबाई तथा सूरदास के पदों में भी राधाकृष्ण का प्रेम स्पष्टतः आध्यात्मिक रूप नहीं पा सका, किंतु मुग़ल बादशाह अकबर के दरबार में नीति-परक काव्य के रचनेवाले भी कुछ कवि हुए। अंत में गोस्वामीजी को इन सभी बातों पर विचार करना पड़ा, और उनके आदर्श-निर्वाह में काव्य-स्वरूप को भी बदलने की आवश्यकता अनिवार्य जँची। उन्होंने वैसी ही चेष्टा की, और भक्ति, सत्संग, सेवा, अवतार आदि युग-प्रिय विषयों को दर्शाते हुए राम-कथा की अनुपम रचनाएँ हिंदी में प्रस्तुत कर अपने उद्देश्य की पूर्ति

1. "Subsequent authors have never done anything but, *longo intervallo*, imitate him. But while the founder of the school never dealt with any subject without adoring it with some truly poetic conceit, his imitators have too often turned his quaintness into obscurity, and his passionate love-song into the literature of the brothel".—George A. Grierson. *The Modern Vernacular Literature of Hindustan*, P. 11.

की। राम-कथा की पवित्रता और उपयोगिता के संबंध में 'राम-कथा-मंदाकिनी' पर तुलसी के ही विचार विवेचन योग्य हैं।

तुलसीदास ने स्वयं काव्य के भिन्न-भिन्न स्थलों में अपने समय के हिंदू-समाज की दुर्दशा का विशद विवरण किया है, कलियुग के अनुपम तांडव-नृत्य का चित्रण भी सामाजिक दशा का ही रूपक है, और जहाँ कहीं पाखंड-खंडन किया है, वहाँ भी समाज की गिरी मनोवृत्ति का परिचय सुरक्षित है। हिंदू समाज के पथ-प्रदर्शक ब्राह्मण-संन्यासियों की अकर्मण्यता, धर्माचार्यों की विषय-लोलुपता, शूर-वीरों की कायरता, पारस्परिक विद्वेष-कलह-दंभ आदि के जो स्पष्ट उल्लेख निर्भयता से तुलसीदासजी ने अपने साहित्य में किए हैं, उनमें उनकी समाज-प्रियता के सिवा हिंदू-जाति की तत्कालीन अवस्था की पर्याप्त झलक सुरक्षित है। वहाँ एक-एक शब्द विचारने योग्य है।

तुलसीदास का उद्देश्य

राम-कथा के अपनाने में गोस्वामीजी विवेक को गँवाकर अंधभक्ति के आश्रित नहीं हुए, वह निश्चित उद्देश्य के साथ रामचरित-चर्चा में तत्पर हुए। हिंदू-समाज की दुर्गति पर विचार करते हुए उन्होंने अपने समाज और धर्म की समुचित सेवा का जो संकल्प किया, उसका पालन उन्हें रामचरित्र-चित्रण में ही संभव जँचा। कृष्ण-भक्ति में शृंगार का जैसा स्वरूप था, वह समाज के लिये आदर्श कदापि नहीं था, न वह लोकादर्श के विचार से समाज में मान्य था। कृष्णोपासना भक्ति-प्रधान थी, और उस भक्ति का आधार प्रेम और शृंगार था। इस ओर प्लावित हिंदू-समाज को विवेक-पूर्ण आदर्श की ओर लाने के निमित्त सर्वप्रथम रामानंदजी ने राम-भक्ति को बल दिया, और उसी मार्ग का अवलंबन गोस्वामीजी को भी प्रिय लगा, तथा उन्होंने राम-भक्ति को रामचरित-मानस द्वारा इतना सर्वप्रिय बनाने का पांडित्य-पूर्ण प्रयास किया १।

राम-संप्रदाय को दृढ़ बनाने के उद्देश्य की पूर्ति में तुलसीदास ने जनप्रियता पर सर्वप्रथम ध्यान दिया, और उनकी रुचि के अनुकूल अपनी कविताओं में भक्ति को प्रधानता दी। पर भक्ति का इष्टदेव कृष्ण को न कह राम को कहा। सांसारिक दुःख-बंधन से मुक्त होने के निमित्त उन्होंने राम की कृपा प्राप्त करने की शिक्षा दी—'द्रवैं जानकी-कंत, तब छूटै संसार-दुख' २, और जानकीकंत की कृपा-प्राप्ति के निमित्त विश्वास-पूर्वक राम में भक्ति करना बतलाया। क्योंकि वैसी अचल भक्ति से ही राम की कृपा भक्तों पर अनायास हो जाती है, तभी जीव को विश्राम भी मिलता है—'रामकृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्राम।'३ ज्ञानियों के लिये भी राम-भक्ति की ऐसी ही आवश्यकता का समर्थन गोस्वामीजी ने किया, और अपने ग्रंथों में भक्ति और ज्ञान को परस्पराश्रित वर्णन किया। ऐसा करने में उनका लक्ष्य था भक्ति-वाद और ज्ञान-वाद के बीच के अंतर को दूर कर दोनो विचार के लोगों में अभिन्नता उत्पन्न करने का। जिस प्रकार गीता में सांख्य-योग की अभिन्नता बतलाते हुए कहा गया था—'एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति', उसी प्रकार तुलसीदास ने कहा—'ज्ञानहिं भगतिहिं नहिं कछु भेदा, उभय हरहिं भव-संभव

---

1. "Ramanand was the original saviour of Upper India from the fate which has befallen Bengal, but Tulsi Das was the great apostle who carried his doctrine east and west and made it an abiding faith"—George A. Grierson: *The Modern Vernacular Literature of Hindustan, P. 10.*

२. दोहावली १३६। ३. दोहावली १३३।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेदा।' परंतु यहीं वह ठहर नहीं गए। उन्होंने दोनो की सार्थकता को अनिवार्य कहा। ज्ञान-युक्त भक्ति तथा भक्ति-युक्त ज्ञान दोनो की सार्थकता उत्तर-कांड में, बड़े ही सुंदर ढंग से, समझाई।

राम-भक्ति में तुलसीदासजी ने गीता की शैली का अनुसरण बड़ी ही उत्तमता से किया। उन्होंने भक्ति-ज्ञान के भेद को मिटाने के अतिरिक्त मुक्ति-संबंधी विभिन्न धारणाओं के अंतर को राम-भक्ति द्वारा दूर करने का प्रयास आजीवन किया। उन्होंने रामोपासना के स्वरूप को स्थिर करने के निमित्त राम-चरितमानस की रचना की, और अपने अन्य ग्रंथ विनयपत्रिका, गीतावली, कवितावली, दोहावली आदि में भी राम-भक्ति का ही वर्णन किया, तथा रामोपासना-विवेचन के क्रम में अपने समय की सामाजिक मनोवृत्ति के प्रत्येक अंग पर मनन किया। गीता में जिस भाँति कर्मयोग-शिक्षा द्वारा कर्म, ज्ञान, ध्यान, भक्ति, त्याग आदि के धार्मिक भावों की एकमूलता स्थापित कर विरोध मिटाने की चेष्टा की गई थी, उसी तरह राम-भक्ति द्वारा कर्म, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, साधु-सेवा और सत्संग आदि के पारस्परिक अभिन्न-संबंध को गोसाईंजी ने अपने ग्रंथों में दर्शाया।

हिंदू-शास्त्रों में कर्म्म के फल-भोग में विशद व्याख्या वर्षों से होती आई थी। समाज में वह भाव प्रबल था; अतः गोस्वामीजी उस पर विचार क्यों न करते। भक्ति को समझाते हुए भी उन्होंने स्वीकार किया—'कर्म-कोष सँग लै गयो, तुलसी अपनी बानि' कर्म-प्रसंग में उन्होंने कहा—जीवात्मा अनादि काल से कर्म-कोष को लिए आता है। वह सर्वदा स्वभावतः कर्म में लगा रहता है। जल-तरंगों की भाँति कर्म-प्रवाह में भी ऊर्मियाँ उठती रहती हैं। यदि इस कर्म-बंधन से असंग कोई है, तो अखिल कर्म-संचालन करते भी वह परमात्मा ही। तुलसी-सतसई में इस संबंध के कई दोहे हैं, और वे मनन करने योग्य हैं।

कर्म-बंधन से मुक्ति पाने की ओर उपनिषद् व षड्दर्शनों का चिंतन हुआ था, और उन्होंने ज्ञान को श्रेष्ठ कहा था, तथा जो ध्यान-परायण तपस्वी थे, वे संसार से विरक्त हो वैरागी बनना उत्तम बतलाते थे। गीता में इनका समन्वय कर निष्काम कर्मयोग की अच्छाई प्रतिपादित की गई। बस, कृष्ण-भक्ति की प्रबल लहर में समाज बहने लगा। चारो ओर भक्ति की ही चर्चा थी। भक्ति में भी द्वैत था—शिवोपासक शैव और विष्णु-लीला-भक्त वैष्णव आपस में वैमनस्य रखते थे। 'मोह-द्रोह-ममता-लपटाने' लोग स्व-कल्पित आचार में मस्त थे। ऐसी दशा में गोस्वामीजी ने अपने उद्देश्य को सफल बनाने के निमित्त मत-मतांतरों के पारस्परिक भेद-भावों को मिटानेवाला प्रयास भला समझा। उन्होंने एतदर्थ ज्ञान-गिरा-गातीत के अवतार राम के संबंध में 'भगत-हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप' कहकर शैव-वैष्णव-विरोध मिटाने के लिये शिव और विष्णु में अभिन्नता का स्थापन किया, कहा—

संकर-प्रिय मम द्रोही, सिव-द्रोही मम दास;
ते नर करहिं कलप-भरि घोर नरक महँ बास।

फिर गुरु की महिमा पर स्वमत व्यक्त किया गया। गुरु-माहात्म्य सनातन से ऊँचा स्थान रखता आ रहा था, और तंत्र एवं भक्ति-भाव ने उसे ब्रह्म-विशेषता की कोटि में ला बिठाया था। उसकी अवहेलना करने की ओर तुलसीदास की रुचि कैसे हो सकती थी? उन्होंने भी राम-कथा का आरंभ करते हुए गुरु-वंदना की—'बंदौं गुरु-पद-पदुम-परागा, सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।' इसका हेतु भी उन्होंने दिया, और उसी हेतु-क्रम में ज्ञान-बिराग-भक्ति को एक ही धागे में पिरोकर प्रत्येक के पार्थक्य का मूलोच्छेद करना विचारा। स्पष्टतः व्यक्त किया—

बिनु गुरु होइ कि ग्यान
ग्यान कि होइ बिराग बिनु?

गावहिं बेद - पुरान,
सुख कि लहिय हरि-भगति बिनु ?

इस निष्कर्ष को पहुँचने के लिये उन्हें राम-भक्ति में एक आदर्श समाज के सामने समुपस्थित करना था। गोस्वामीजी ने राम-भक्ति के प्रचार का प्रयास भी इसी लक्ष्य से किया कि हिंदू-समाज अपने भविष्य का निर्माण उस आदर्श के अनुकूल करे, जो उसके लिये समुचित ही नहीं, उसी का था। समाज विषयोन्मादक शृंगार और प्रेम में अधिक भक्ति रखकर समुन्नत नहीं हो सकता था, इस कारण उसे एक आदर्श समाज की आवश्यकता थी। अतः राम-चरित-मानस में लोकादर्श-चित्रण के प्रत्येक पग पर गोस्वामीजी ने पतन-गत समाज की निम्नांकित दशा अपने ध्यान में रक्खी। कलिकाल-वर्णन के सिलसिले में उस पर उद्गार प्रकट किए।

हिंदू-समाज को वैसी शोच्य दशा से उद्धार-मार्ग पर लाने की प्रबलेच्छा से प्रेरित हो पंडित-प्रवर तुलसीदासजी ने विवेक-वेशालंकृत काव्य-स्रोत में राम-भक्ति-सुधा को प्रवाहित करने का यथासाध्य निष्काम प्रयत्न किया, और राम-चरित-मानस में ज्ञान-कर्म-भक्ति-समन्वय-स्वरूप मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र का जीवित-जाग्रत्-जाज्वल्यमान जीवन-वृत्त अपने समाज के समक्ष समुपस्थित किया। यही उनका अमृतत्व है, जिसके प्रभाव से आज गोस्वामी तुलसीदास का सुयश-स्रोत मानव-मंडली में पवित्र गंगावत् तरंगित हो रहा है।

तुलसी की रामोपासना का स्वरूप

उपनिषदों में ब्रह्म का निरूपण किया गया था, और भक्ति-वाद के विकास-काल में उस ब्रह्म को मनुज-कोटि में लाने का यत्न भक्तों द्वारा किया गया। अवतार-वाद द्वारा ब्रह्म का चिंतन अवतार-रूप में करने की शिक्षा दी गई, और यह भावना दृढ़ हुई कि ब्रह्म भू-भार-हरण के निमित्त मनुष्य-तन धारण कर मानव-स्वभावानुकूल लीला करते, दुष्टों का नाश और संतों की रक्षा करते हैं। जो उस रूप के ब्रह्म की भक्ति करता है, उसके प्रति ब्रह्म की महती अनुकंपा अनायास हो जाती है, और उसी से मुक्ति-लाभ हो जाता है। अवतारी पुरुष के नाम-जाप को वैदिक ऋचाओं और साधना-मंत्रों से भी अधिक सम्मान दिया गया। कृष्ण-भक्ति में ये सारी बातें पूर्णतः विकसित हुईं, और गोस्वामीजी के समय तक जन-रुचि ऐसी ईश्वरीय लीला के प्रति प्रगाढ़ हो चुकी थी। धर्मविद् धार्मिक कथा-वाचक पंडित भक्ति की महिमाएँ लोगों को सुनाया करते थे—

न तपोभिर्न वेदैश्च न ज्ञानेनापि कर्मणा ;
हरिर्हि साध्यते भक्त्या प्रमाणं तत्र गोपिकाः।
अलं व्रतैरलं तीर्थैरलं योगैरलं मखैः ;
अलं ज्ञानकलापैश्च भक्तिरेकैव मुक्तिदा।

तुलसीदासजी ने इसका विरोध नहीं किया। वह इसी भाव के साथ समाज-सुधार को अग्रसर हुए, और उन्होंने राम-भक्ति को भी ऐसा ही रूप दिया। राम को ब्रह्म—पौराणिक काल के विष्णु—का अवतार बतलाया। उनकी सर्वव्यापकता में 'राम-नाममय सब जग जानी' कहा, और कलिकाल में मोक्ष पाने का केवल साधन राम-नाम को ही मानते हुए घोषित किया—

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना ;
एक अधार राम - गुन - गाना।
सब भरोस तजि जो भजि रामहिं ;
प्रेम - समेत गाव गुन - ग्रामहिं।
सोइ भव तर कछु संशय नाहीं ;
नाम - प्रताप प्रगट कलि माहीं।

किंतु—'साचा सुमिरन नाम-बिलासा' और 'बिना नाम नरकै परा पढ़ता चारो बेद' के कहनेवाले रैदास, कबीरदास की विद्या-बुद्धि में और गोस्वामीजी के पांडित्य तथा उद्देश्य में आकाश-पाताल का अंतर

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

था। गोस्वामीजी प्रकांड पंडित होने के अतिरिक्त वैदिक सिद्धांतानुयायी, विवेकी, समाज-सुधारक थे, और उनका लक्ष्य 'गुरुडम' की ओर न होकर वर्णाश्रम की बिगड़ी दशा को समाज पर प्रकट करने के प्रति था। अतः गोस्वामीजी ने युगभावानुकूल राम को ब्रह्म—विष्णु—का अवतार मुक्तिदाता मानते भी राम-कथा को मानवाचरण के लिये आदर्श-स्वरूप समाज के सामने रक्खा। उन्होंने राम के जीवन में ईश्वरत्वारोपण ही न कर उसे शिक्षात्मक तथा आध्यात्मिक भी बनाया। उन्हें राम-भक्ति को ज्ञान से खाली रखना प्रिय नहीं हुआ, इस हेतु उन्होंने भक्ति और ज्ञान को समकक्ष बनाया, और विवेक तथा प्रेम से धनुष्पाणि राम की भक्ति करने का उपदेश किया। इसी से उन्होंने कलि में मोक्ष का एक आधार बतलाया—'राम-गुन-ग्याना', जिसका तात्पर्य यह कदापि नहीं हो सकता कि दुराचार-लीन, ज्ञान-विहीन, आचरण-रहित, पर-पीड़क अपने को नराधम रखते हुए भी 'मरा-मरा' कथन-मात्र से मुक्ति प्राप्त कर लेगा। तुलसीदास ने अपने राम को विश्वव्यापी, अविनाशी ब्रह्म के समान एक रहस्य का रूप दिया है, और उस रहस्य को राम-चरित्र-गुणानुभव के साथ निष्काम भक्ति द्वारा ही भक्त समझ सकते हैं। रामायण में राम की लीलाएँ समाप्त कर ज्ञान-दीपक को प्रस्तुत करने का यही अभिप्राय संभव जान पड़ता है, और वहाँ गोस्वामीजी ने कहा भी है—

सोऽहमस्मि इति वृत्ति अखंडा;
दीप-शिखा सोइ परम प्रचंडा।
आतम-अनुभव-सुख स्वप्रकाशा;
तब भव-मूल भेद-भ्रम-नाशा।
प्रबल अविद्या कर परिवारा;
मोह आदि तम मिटहिं अपारा।
तब सोइ बुद्धि पाय उजियारा
उर-गृह बैठि ग्रंथि निरवारा।
छोरन ग्रंथि पाव जो सोई;
तब यह जीव कृतारथ होई।

स्पष्ट है कि गोस्वामीजी ने जिस राम की भक्ति को संसार-दुःख-सागर से मुक्तिदायिनी कहा, उस राम को उन्होंने दो रूपों में हिंदी-भाषी संसार के सामने रक्खा—पहला रूप ब्रह्म है, जिसका निरूपण सनातन से आर्य ज्ञानियों ने संस्कृत-साहित्य में किया है, दूसरा रूप अवतार-प्रिय विष्णु भगवान् का है, जिनकी लीलाओं के पठन-मनन-श्रवण से साधारण विचार के लोगों की आत्मतुष्टि हो सकती है। इन दोनो को एक करने का सुंदर साधन राम-चरित्र-वर्णन है, जिसका संकेत गोस्वामीजी ने राम-चरित-मानस के माहात्म्य-वर्णन और मानस-रोग-निदान में व्यक्त किया है। राम-चरित-मानस की पंक्तियों का स्वाध्याय भी यही प्रमाणित करता है। तुलसीदास अपने को अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत, त्रैत आदि का पोषक बताने के संकल्प में लीन किसी ग्रंथ में दिखाई नहीं देते, बल्कि अपने उद्देश्य की पूर्ति में वह यथावश्यकता परंपरागत वैदिक विचारों को ही ग्रहण करते अपनी रचनाओं में पाए जाते हैं। पुनः 'तुलसिदास परिहरै तीनि भ्रम, तब आपन पहिचानै' कहकर गोस्वामीजी ने द्वैताद्वैत आदि विचारों से पृथक् रह अपने आपके पहचानने के औपनिषदिक सत्य को स्वीकार किया है, और राम के स्वरूप-वर्णन में भी उन्होंने औपनिषदिक ब्रह्म के साथ त्रिमूर्ति-भावनाओं को संबद्ध किया है। तदनंतर सामाजिक शील एवं पुरातन शुभाचार को पांडित्यालोक में स्पष्टतः दर्शाने का यत्न किया है।

हम देखते हैं, 'बिनु पद चलै, सुनै बिनु काना' का ब्रह्मसिद्धांत श्वेताश्वतर के 'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता' १ का रूपांतर-मात्र है, और 'तुलसी तुममें

१. श्वेताश्वतर ३-१९।

तुम हूँ उर माहीं'१ पर मांडूक्य के 'नान्तः प्रज्ञं न बहिः प्रज्ञं नोभयतः प्रज्ञं न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञं' की छाप है। फिर वेद से षड्दर्शन तक के वैदिक दर्शन के समन्वय गीता के सिद्धांतों से भी गोस्वामीजी ने अपने ब्रह्म—अवतारी राम—को युक्त किया है। कृष्ण ने अपने संबंध में कहा था—'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज', तुलसीदास ने राम के संबंध में कहा कि सब भरोस को तजकर राम को भजन करनेवाला निस्संदेह संसार से तरण पाता है—'सोइ भव तर कछु संशय नाहीं।' कृष्ण के माया-रूप 'भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया' को भी गोस्वामीजी ने राम में प्रदर्शित किया—'उमा, दारुयोषित की नाईं सबै नचावत राम गुसाईं।' इतना ही नहीं, गीता के भक्ति-संबंधी सिद्धांतों को भी राम-भक्ति में समाविष्ट करने पर उन्होंने उचित ध्यान दिया, और साथ ही कालांतर के कृष्ण-भक्ति-दोषों से रहित राम-भक्ति को श्रेष्ठ, सरल, सुंदर और सुरुचि-पूर्ण प्रतिपादित किया। कृष्ण-भक्ति के स्थान में राम-भक्ति को समाज में मान्य बनाने में उन्होंने अनुपम युक्तियों से काम लिया, जिसका विवेचन मनन का एक स्वतंत्र विषय है। उसी संबंध में शिव और राम के अभेद दर्शाने के अभिप्राय पर भी ध्यान देना चाहिए २। तब देखना चाहिए कि तुलसीदास राम के द्वारा हिंदू-समाज को सामाजिक आदर्श की शिक्षा देना चाहते थे, और उसी को उन्होंने आस्तिक बुद्धि द्वारा संपादित किया। राम-चरित-मानस के पात्रों में मानव-चरित्र का जैसा चित्रण किया गया है, वैसा आचरण किसी समाज का होने से वह समाज वास्तव में सुखी हो सकता है, क्योंकि उसमें वर्णित ईश्वर-लीलाएँ केवल पाठ के निमित्त न होकर आचरण के हेतु हैं। इसीलिये गोस्वामीजी ने रामचंद्र में 'नर-रूप हरि' के स्थान में 'हरि-रूप नर' का अलौकिक वर्णन किया है। और, वह वर्णन राम-चरित-मानस में प्रधानतः गीता की समता रखता है। उस वर्णन में राम-भक्ति का निरूपण ज्ञान-मार्ग और व्यवहार-मार्ग का अनुसरण करते हुए रुचि, परोपदेश और अनुभव के प्रमाणालोक में विचित्र ढंग से किया गया है। कृष्ण-भक्ति के सारे सिद्धांत राम-भक्ति से संबद्ध करने की ओर भी ध्यान रहा है, और जिस प्रकार संस्कृत-ग्रंथों में विष्णु-रुद्र में अभेद बतलाया गया है, उसी प्रकार राम-शिव में भी अनैक्य पर प्रकाश डाला गया है।

गोस्वामीजी को श्रीराम के पवित्र जीवन द्वारा मानव-समाज को दिखाना था कि आस्तिक बुद्धि द्वारा परोपकार और सदाचार से किस प्रकार मनुष्य हरि-रूप को प्राप्त हो सकता है, और धर्म-जिज्ञासुओं के समक्ष कृष्ण के कर्मयोग एवं शिव के त्यागमय लोक-कल्याण का व्यावहारिक स्वरूप रखने का भी लक्ष्य था। इसी से गोस्वामीजी की राम-भक्ति आचरण में वर्तने का विषय है, कोरे सिद्धांत का विषय नहीं, और उनके राम एक कर्तव्यनिष्ठ योगी हैं, जिनका अपने सुखों का तनिक भी ध्यान न रखते हुए समाज को सुखी बनाने का दृढ़ संकल्प था। उनके जीवन में न कोई नर-सामर्थ्य के नितांत बाहर की घटना है, न कोई दोषमय आचरण। वेद-मर्यादा-पोषक गोस्वामीजी ने जातकर्म से विवाह तक सारे वैदिक कृत्यों का पालन राम से कराया है, और अंत में राक्षसों को मार अयोध्या के राजा होने पर राम द्वारा प्रजा में पूरी प्रसन्नता छा जाने के वर्णन से वह आप ही हर्षित होते दिखाई देते हैं। तभी राम-राज्य-वर्णन में वह मुदित-मन कह सके—

राम-राज बैठे त्रय लोका
हर्षित भएउ, गएउ सब शोका।

१. कवितावली उत्तरकांड ६४। २. विस्तृत वर्णन 'भारतीय ईश्वरवाद' के १६वें अंश में देखें।

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

बैर न करै काहु सन कोई ;
राम-प्रताप विषमता खोई ।
वर्णाश्रम निज-निज धरम, निरत वेद-पथ लोग ;
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक न रोग ।

दैहिक दैविक भौतिक तापा
राम-राज काहुहिं नहिं व्यापा ।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ;
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति-नीती ।

बचाइए

किसे ?

देश के ग़रीबों की आबरू

कैसे ?

देशी व्यापार की उन्नति करके

आपकी मदद के लिये

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत—

सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक १)
रंग की पुस्तक १)
सरल रसायन १) } साथ लेने
हिंदी-केमिस्ट्री १) } से १॥) में
आरोग्य-विद्या ॥)
रिसाला साबुनसाज़ी उर्दू ॥)
तद्धित-प्रयोग-सूची =)
इत्र की पुस्तक (छप रही है)
देशी जड़ी बूटी और गुण (छप रही है)

१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक ॥)
सुगंधित तैल और इत्र की पुस्तक १)
बार्निश और पेंट १)
विद्युत्-शास्त्र (Electricity) ॥)
आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)
स्वर्ण-पथ-प्रदर्शक -)॥
तंतु-कला (सूत का हुनर) और माड़ी की पुस्तक १)
अनुवाद-कला (Sanskrit Teacher) १)

तैयार हैं

पौने मूल्य में जनवरी तक के लिये

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्०, ए० एम्० एस्० टी०, मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्ड्स ऑफ़् लंदन इंस्टिच्यूट, विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरकंद गली, बनारस सिटी ।

मृत्यु से

[श्रीयुत बलकृष्ण राव]

प्रेयसि, तुम ज्योत्स्ना में हँस लो,
मैं तम में छिप रो लूँ पल-भर;
तुम जगो जगत की आशा बन,
मैं स्मृतियों में सो लूँ पल-भर।
तुम चिर छविमय जीवन-प्रदीप,
हो सतत दूर, पर चिर समीप;
तुम रश्मि-राशि बनकर बरसो,
मैं मलिन स्वप्न धो लूँ पल-भर।
तुम चल-पल्लव-दल, मैं मर्मर,
तुम विश्व-विपंची, मैं मृदु स्वर;
तुम माया की अभिव्यक्ति बनो,
प्रिय, मैं मृण्मय हो लूँ पल-भर।

दुनिया में हलचल मचा देनेवाली अद्भुत पुस्तक

(आसामी, बंगाली, तिलस्मी राज या खज़ाना करामात)

यह वही अद्भुत पुस्तक है, जिसने भारत के कोने-कोने में हलचल मचा दी है, और जिसका पहला संस्करण हज़ारों की तादाद में, ५) मूल्य होते हुए भी, हाथोंहाथ ख़त्म हो गया। पहले एडीशन पर हज़ारों आदमियों का यह कहना है कि यह पुस्तक नहीं, बल्कि नामर्दों को मर्द, बाँझों को संतान, रोगियों को नीरोग और हज़ारों प्राणियों को प्रतिवर्ष काल के मुख से बचानेवाली भारत के पूज्य महात्माओं की अद्भुत शक्ति का भंडार सचमुच (ख़ज़ाना चमत्कार) ही है। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश (आसाम), बंगाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण विद्या की अद्भुत लीलाएँ, जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं, बल्कि एक अद्भुत शक्ति का भंडार हाथ लगेगा, और इस विद्या की सचाई शीशे की तरह प्रकट हो जायगी। पुस्तक के बारे में हमारी गारंटी है। यदि किसी तरह आपको नापसंद हो, तो ३ दिन देखकर वापस कर सकते हैं। हम तुरंत मूल्य लौटा देंगे। इससे बढ़कर और क्या सचाई होगी। अब नए संस्करण में दर्सों अद्भुत वशीकरण आदि के परीक्षित, कभी न फ़ेल होनेवाले, प्रयोग बढ़ाए गए हैं। पृष्ठ-संख्या पहले से अधिक लगभग ६००। मूल्य वही ५), सजिल्द ।।।) अधिक और डाक-महसूल ।।।) अलग है। परंतु ऑर्डर के साथ पेशगी रुपया भेजनेवालों को महसूल माफ़ होता है।

नोट—अब की बार पुस्तक का सस्ता एडीशन भी निकाला गया है। मूल्य ३।।), सजिल्द ४।।); महसूल अलग है। ऑर्डर में सजिल्द व सस्ता एडीशन के बारे में स्पष्ट लिखें, जिसमें भूल न हो।

पता—मैनेजर इंडियन स्टोर्स (१६) जेनरल मर्चेंट ऐंड बैंकर्स

शीलांग (आसाम)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी जापान-यात्रा और जापानी जीवन पर विहंगम दृष्टि

[श्रीयुत सेठ लक्ष्मणप्रसाद बैंकर और रईस]

त ग्रीष्म-ऋतु में मैंने जापान जाने का विचार किया, और तदनुसार २८ मई सन् १९३६ को बंबई से रवाना हुआ। इन दिनों अरब-सागर में तरंगें कुछ अधिक वेग से उठा करती हैं, जिनके कारण जहाज़ प्रायः कुछ हिलता रहता है। प्रारंभ के दो दिन तक कुछ चक्कर-से मालूम होते रहे। अन्य यात्रियों से, जो पहले भी समुद्र-यात्रा कर चुके थे, पूछने पर ज्ञात हुआ कि ऐसी दशा कुछ ही समय तक रहती है। यह जानकर कुछ शांति हुई। दो दिन बाद यात्रा बड़ी सुगमता से व्यतीत होने लगी। भिन्न-भिन्न देशों के पुरुषों से मिलना, उनसे बातचीत करना, उनका रहन-सहन देखना और उनके साथ खेल इत्यादि में भाग लेना, ये सब मनोरंजन के साधन थे। मांसाहारियों के लिये तो जहाज़ पर काफ़ी अच्छा प्रबंध था ही, किंतु शाकाहारियों के लिये भी अच्छा प्रबंध था। जो कमी मालूम हुई, उसे जहाज़ के स्टुवर्ड ने बड़ी तत्परता से पूरा कर दिया। जहाज़ के भोजन-प्रबंधकों ने भोजन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी। मुझे यह संदेह था कि जहाज़ पर शायद उन मनुष्यों के लिये, जो मांसाहारी नहीं हैं, खाने का संतोष-जनक प्रबंध न होगा।

सेठ लक्ष्मणप्रसाद बैंकर और रईस, आगरा

कोलंबो के बंदर पर जहाज़ लगभग एक दिन ठहरा। यहाँ केवल मुख्य-ही-मुख्य स्थान देखने का समय मिला। जैसे अजायबघर, बुद्धजी का मंदिर, लीनीयो पर्वत, विक्टोरिया - पार्क आदि। यहाँ के प्रवासी भारतवासी अधिकतर व्यापारी हैं, और भिन्न-भिन्न प्रकार का व्यापार करते हैं। नगर के बाहर चारो ओर हरियाली-ही-हरियाली दिखाई देती है। रेशम तथा जवाहरात की दूकानें और बड़े-बड़े दफ़्तर प्रायः बंदरगाह के समीप ही हैं। यहाँ के निवासी अधिक संख्या में नंगे पैर ही दिखाई देते हैं।

कोलंबो से चलकर जहाज़ पिनांग पहुँचा। यह पहाड़ी टापू है। इसके चारो ओर आबादी है, और हरियाली दृष्टिगोचर होती है। मोटर-गाड़ी

से इस टापू के चारो ओर, पेचदार मार्ग से, जाना पड़ा। चित्त अत्यंत प्रसन्न था। यहाँ चीनी लोग भी रहते हैं। उनका सर्पों का मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। मंदिर के प्रत्येक स्थान पर साँप-ही-साँप दृष्टिगोचर होते हैं। चीनी लोग इन्हीं की पूजा करते हैं। एक दूसरा मंदिर चीनी लोगों का और है, जो बहुत बड़ा है। यहाँ मगर, कछुए तथा भाँति-भाँति के जानवर हैं, जिनकी चीनी लोग पूजा करते हैं। भगवान् बुद्ध की मूर्ति भी है। ये सब जानवर पवित्र और शुद्ध समझकर मंदिर में रक्खे गए हैं। इन्हें खाने के काम में भी लाते हैं। खाद्य पदार्थों में समझे जाने के कारण ही शायद वे शुद्ध एवं पवित्र माने गए हों। यह कोई बड़ा व्यापारिक स्थान नहीं मालूम होता।

सिंगापुर पूर्वीय बंदरगाहों में मुख्य है। इस स्थान पर अनेक जहाज़ और किश्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। नगर बहुत ही सुंदर है। यहाँ एक अजायबघर भी है। चीनी लोग यहाँ बहुत बड़ी संख्या में बसते हैं। समुद्र-तट पर खड़े हुए विशाल भवन एवं अट्टालिकाएँ बड़ी रमणीक तथा मनोहर प्रतीत होती हैं।

हांगकांग एक पहाड़ी टापू है, जो ब्रिटिश सरकार के अधीन है। बंदर के समीप का पर्वतीय दृश्य अति रमणीक एवं मनोहर है। यहाँ के उपवन एवं पार्क बड़े मनोरंजक हैं। पहाड़ी पर चढ़ने के लिये ट्राम जाती है। साधारणतया देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि ट्राम चक्करदार मार्ग से पहाड़ी की चोटी पर पहुँचती होगी; किंतु यह बात नहीं है। वह पहाड़ी पर बिलकुल सीधी ऊपर को जाती है। कुछ-कुछ दूरी पर स्टेशन हैं। ऐसी ट्रामें स्विटज़रलैंड में पाई जाती हैं। अँगरेज़ों ने इस नगर को बहुत ही सुंदर बनाया है। इस बंदर पर बाहर से आनेवाली वस्तुओं पर किसी प्रकार का 'कर' नहीं है। इसी कारण यहाँ वस्तुएँ सस्ती मिलती हैं। यहाँ भारतीय व्यापारी भी हैं। पुलिस में पंजाबी सिक्ख ही अधिक हैं। जहाज़ से इस नगर का दृश्य रात्रि के समय अत्यंत सुंदर प्रतीत होता है। पर्वत के शिखर तक बराबर आबादी होने के कारण चारो ओर प्रकाश दिखाई देता है।

चीन का दूसरा बंदरगाह शांघाई है। यह नगर कई विदेशी जातियों के अधीन है, और अपने-अपने भागों में अपना-अपना प्रबंध है। अँगरेज़ी भागों में सिक्ख चौराहों पर खड़े दिखाई देते हैं। यह बड़ा बंदरगाह है, और ह्विंगपो-नदी के किनारे स्थित है। नदी के दोनो तटों पर खड़े हुए बड़े-बड़े विशाल भवन नगर की शोभा द्विगुणित कर देते हैं। नदी के दूसरे किनारे पर कारख़ाने अधिक हैं। यहाँ जहाज़ दो दिन ठहरा, इसी कारण देखने का काफ़ी समय मिला।

शांघाई से चलकर जहाज़ कोबे पहुँचा, जो जापानी बंदरगाह है। मैं जापान पहुँचने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। बंदर पर जापानी क़ुलियों का एक-सा पहरावा देखा। यह बात अन्य किसी भी बंदर पर नहीं थी। मेरा यह विचार कि जापानी बड़े साफ़-सुथरे रहते हैं, और भी दृढ़ हो गया। हम कोबे-होटल में जाकर ठहरे, किंतु वहाँ शाकाहारी भारतीयों के निमित्त कोई प्रबंध न था। अंत को यह सुनकर कि वहाँ ऐसे हिंदुओं के लिये भी होटल है, बड़ी प्रसन्नता हुई। इसी में अधिकतर भारतवासी ठहरते हैं, इसका नाम 'ईस्टरन लॉज' है। भोजन की सब सुविधाएँ हैं। यहाँ भारतवासियों की संख्या लगभग एक हज़ार है। कुछ तो अपने बाल-बच्चों-सहित रहते हैं, जिनमें अधिकतर कमीशन-एजेंट का काम करते हैं; अर्थात् जो वस्तुएँ भारत आती हैं, उन्हीं के द्वारा आती हैं। कुछ

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

अपने इच्छानुसार अन्यान्य काम करते हैं। यहाँ एक भारतीय क्लब भी है। यहाँ हिंदू-मुसलमान विना किसी भेद-भाव के एकता से रहते हैं। आजकल भारतीय क्लब के सभापति एक मुसलमान सज्जन हैं। कोबे के मुख्य बाज़ार में पुरुष और स्त्रियाँ सायंकाल को बहुत बड़ी संख्या में घूमती हैं। रात्रि के समय रंग-बिरंगी रोशनी अति सुंदर प्रतीत होती है। ओसाका जापान का सबसे बड़ा व्यापारिक नगर है, और कोबे के समीप ही है। ओसाका जाते हुए सड़क पर कुछ-न-कुछ आबादी मिलती है। मेरा अनुमान है, कुछ समय बाद, ये दोनो नगर एक ही हो जायँगे। ओसाका और कोबे के बीच ट्रैफ़िक बहुत अधिक है। सड़क पर सदैव भीड़ रहती है। १०-१२ मिनट के अंतर से बिजली की गाड़ियाँ इधर-उधर आती-जाती रहती हैं। ट्रामों और मोटरों का तो कहना ही क्या? वहाँ के ट्रैफ़िक को देखकर बुद्धि भ्रांत-सी हो जाती है। ओसाका में थोक-बंद माल बेचनेवाली दूकानें अधिक हैं। नगर के चारो ओर असंख्य कारख़ाने हैं। यहाँ के स्टोर देखने से अचंभा होता है। हर प्रकार का माल ८-८, १०-१० मंज़िलों के स्टोरों में भरा पड़ा है। भिन्न-भिन्न वस्तुओं का प्रबंध अलग-अलग है। कोबे और ओसाका के समीप ही एक 'रोप ट्रेन' है, जो एक पहाड़ी की चोटी तक जाती है। आश्चर्य-जनक वस्तु है। यह पृथ्वी पर नहीं चलती; बल्कि लटकती हुई आती-जाती है। एक बार १५-२० मनुष्य जा सकते हैं। पहाड़ की चोटी से नगर का दृश्य बहुत सुंदर और मनोरंजक दिखाई देता है।

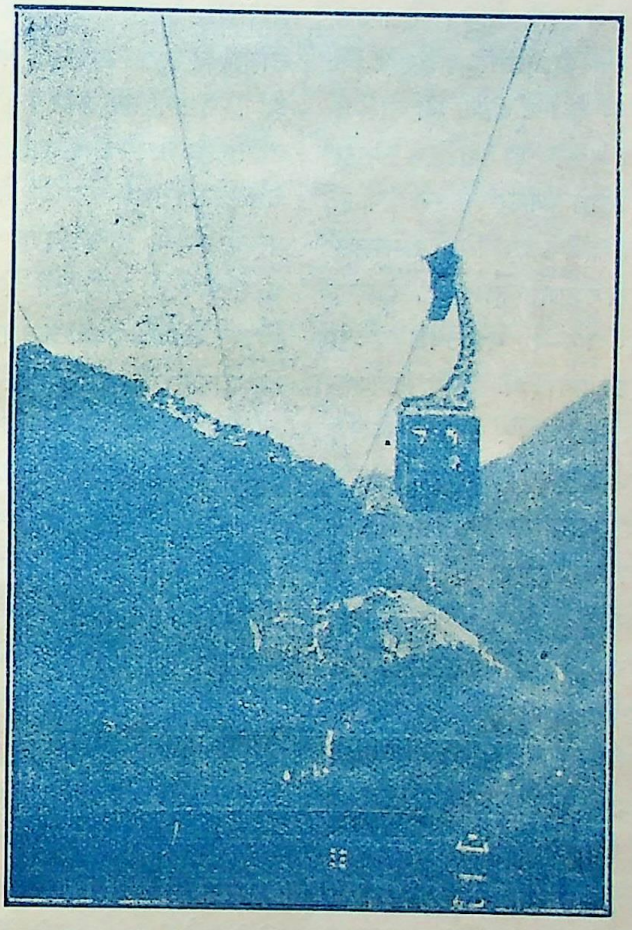

कोबे के निकट रोक्को-पर्वत पर रस्सी का मार्ग

क्योटी जापान की प्राचीन राजधानी है। प्राचीन काल के ऐतिहासिक महल अब भी मौजूद हैं। यहाँ आजकल फ़ौज रहती है। नगर में एक बड़ा सुंदर भवन है, जिसमें प्राचीन काल के चित्र, प्रदर्शनी के रूप में, रक्खे हुए हैं। इस भवन में लकड़ी के बड़े-बड़े खंभे लगे हुए हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में जापान की बड़ी इमारतों में लकड़ी ही काम में लाई जाती थी। नगर इतना सुंदर नहीं, जितना कोबे अथवा ओसाका।

क्योटी के पास एक नारा-नामक नगर है। यह भी किसी समय जापान की राजधानी रह चुका है। यहाँ एक उपवन बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें

सैकड़ों हिरन पाए जाते हैं। जापान का सबसे बड़ा बुद्ध भगवान् का मंदिर भी यहीं स्थित है, जिसमें महात्मा बुद्ध की सबसे विशाल मूर्ति है।

यूकोहामा जापान का द्वितीय बंदरगाह है। यहाँ भी कुछ भारतीय हैं, जो कमीशन-एजेंट का काम करते हैं। किंतु इस शहर में कोई हिंदुस्थानी होटल नहीं है। नगर बड़ा सुंदर है। यूकोहामा से कुछ दूर जापान की वर्तमान राजधानी टोकियो है। इस नगर की जन-संख्या बहुत अधिक है। संसार के नगरों में इसका दूसरा नंबर है। ट्रैफ़िक की तो हद ही नहीं है। नए ढंग के भवन ही अधिक संख्या में हैं। सम्राट् का सुंदर भवन नगर के समीप ही है। इस नगर में सब आवश्यक सामग्रियाँ सुगमता-पूर्वक मिल जाती हैं। राजधानी होने के कारण बड़े दफ़्तर यहीं हैं। जापान में सबसे अच्छा स्थान सिनेमा और थिएटर आदि के लिये टकासज़ूका है। यहाँ का प्रबंध उत्तम है। टोकियो से हम मोटरकार से वापस आए। इस कारण हमें जापान के ग्रामीण जीवन पर दृष्टिपात करने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। जापानी कृषक बड़े ही उद्यमी हैं। स्त्रियाँ भी कृषि में भाग लेती हैं। चावल की अधिक पैदावार है। चाय की पैदावार कम नहीं है। प्राकृतिक दृश्य बड़े हृदयहारी हैं। फ़्यूज़ी-पर्वत, जो कोणाकार है, किसी समय ज्वालामुखी था। इसकी चोटी सदैव बर्फ़ से आच्छादित रहती है। इसमें गर्म पानी तथा गंधक के सोते हैं। यहाँ मनुष्य प्रायः स्नान एवं मनोरंजन के लिये आते हैं। जापान में सिंचाई का भी बहुत अच्छा प्रबंध है।

जो जापान के इतिहास से थोड़ा भी परिचित है, वह जानता है कि जो जापान ७० वर्ष पहले किसी भी गणना में नहीं था, वही आज संसार के अतीव उन्नतिशील देशों में गिना जाता है। अजायबघरों में जापान का प्राचीन पहरावा इस बात का द्योतक है। आज से सौ वर्ष पूर्व जापान पूर्ण-रूपेण असभ्य था, तथा अज्ञान की गहरी निद्रा में मग्न था। तो क्या कारण है, जिससे वह आज उन्नतिशील देशों में अग्रगण्य हो गया? जिस देश की आबादी भारत की जन-संख्या का केवल ५वाँ या ६वाँ भाग है, वह समस्त संसार को अपनी ओर आकर्षित करे! उसकी रहन-सहन और शिक्षा-प्रणाली संसार के लिये उदाहरण हो! उसके नागरिकों का कार्य-क्रम और रंग-ढंग निराला ही हो! संसार के लगभग सभी देशों में उसकी व्यापारिक साख और धाक हो! और यह सब अद्भुत चमत्कार आधी शताब्दी में ही हो जाय! ये विचार प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में उथल-पुथल मचाया करते हैं। जो कुछ मैंने थोड़े समय में देखा और विचार किया, उसके आधार पर यह कहा जाता है कि जापान की उन्नति के निम्न-लिखित साधन हैं—

सच्ची देश-भक्ति, उत्कट विद्या-प्रेम, उत्तम शासन, दृढ़ कर्तव्य-पालन और अटूट राजभक्ति।

देश-भक्ति

जापान की देश-भक्ति अतीव प्रशंसनीय है। वह देश के प्रश्न के सम्मुख अपने जीवन को तुच्छ समझता है। यह पूर्णरूपेण सत्य है। एक जापानी अपने देश तथा धर्म के लिये अपने को न्योछावर कर देता है। उसके देश-प्रेम का इतिहास साक्षी है। जापान का बच्चा-बच्चा अपने इतिहास एवं पूर्वजों के कार्य से पूर्णतः परिचित है। इसी कारण वे भी अपने प्राण देश-प्रेम की बलिवेदी पर चढ़ाने के लिये सदैव प्रस्तुत रहते हैं।

जापानी लोग भारतीय आम बहुत पसंद करते हैं; तथापि अपने देश के फलों पर संतोष करते हैं। परंतु हम जापान के सेब भी गर्व-पूर्वक खाते हैं; अन्य वस्तुओं का तो कहना ही क्या? समस्त भारतीय बाज़ार जापानी वस्तुओं से पटे पड़े हैं। जापान विदेशों से अनावश्यक वस्तु मँगाने में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी मान-हानि समझता है। जहाँ तक संभव है, वह उस वस्तु को अपने देश में ही पैदा करता है, और अंत में विवश होकर ही विदेश से मँगाता है। जापान नक़ल तो तुरंत ही कर लेता है। कहीं भी उसने कोई लाभदायक वस्तु देखी कि अपने पुरुषार्थ से वैसी ही तैयार की। किंतु शोक! महा-शोक!! हमारा ढंग इसके सर्वथा प्रतिकूल है!!!

जापान की शिक्षा

जापान की इस आश्चर्यजनक उन्नति का द्वितीय कारण वहाँ की शिक्षा-प्रणाली है। प्रत्येक बालक को कुछ समय तक हर दशा में शिक्षा प्राप्त करने के लिये अनिवार्यतः स्कूल जाना पड़ता है। प्राइमरी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् स्कूलों और कॉलेजों में भी लड़के और लड़कियाँ, बहुसंख्या में, शिक्षा प्राप्त करती हैं। साधारण ग्राम में भी, जिसमें केवल कुछ झोपड़े ही होते हैं, एक प्राइमरी स्कूल अवश्य होगा। विद्यार्थियों को हर प्रकार की सुविधा है। छोटे-छोटे बालकों को, एक ही वेष-भूषा में, एक थैला पीठ पर ले जाते हुए देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। जापान की जन-संख्या भारत की जन-संख्या का ५वाँ या ६वाँ भाग है, और उसका क्षेत्रफल हमारे सूबे से कुछ ही ज़्यादा, तब भी उस रिपोर्ट के अनुसार, जो मुझे मिली थी, वहाँ ४६ विश्वविद्यालय हैं। १६ तो अकेले टोकियो नगर में हैं; जब कि समस्त भारत में केवल १८ ही हैं। जापान में २५,६२६ प्राइमरी स्कूल हैं, १०५ नॉर्मल स्कूल, ६७ ट्रेनिंग स्कूल, ७३ अंधों के स्कूल, १२२ गूँगों के लिये, १,५१२ लड़कों के, ६७० लड़कियों के हाईस्कूल, ३३६ कृषि-संबंधी, २६६ व्यापार-संबंधी, ४,५०० पुस्तकालय और अन्य प्रकार के १,८८० स्कूल हैं। इस तालिका से सरलता से मालूम किया जा सकता है कि जापान में शिक्षा का कैसा उत्तम प्रबंध है। स्कूलों में हर प्रकार की शिक्षा आवश्यकतानुसार दी जाती है। जापानी युवकों को सैनिक-शिक्षा भी दी जाती है। मिडिल क्लास के पश्चात् जापानी लड़के या लड़कियाँ, अपनी-अपनी रुचि के अनुसार, कॉलेज में प्रवेश करते हैं। स्कूल-जीवन में वे अपने उद्देश्य को निश्चित कर लेते हैं। वहाँ भारत की-सी दशा नहीं। बी० ए० और एम्० ए० पास कर लेने पर भी यह निश्चित नहीं कर पाते कि उन्हें क्या करना है? जापानी शिल्प-कला की ओर अधिक ध्यान देते हैं। उसके लिये उन्हें साधन भी अत्युत्तम प्राप्त हैं। स्कूलों में देश-प्रेम का पाठ विद्यार्थियों के हृदय में कूट-कूट-कर भर दिया जाता है। हरएक जापानी विद्यार्थी अपने पूर्वजों के जीवन से पूर्ण परिचित होता है। क्योंकि स्कूलों में ऐसे ही जीवन-चरित्र पढ़ाए जाते हैं। स्वच्छता के लिये जापान प्रसिद्ध है। विद्यार्थी स्वच्छता का पाठ स्कूल और मकान पर यथेष्ट रूप से सीख लेते हैं। जापान के विद्यार्थियों का वस्त्राभूषण एक-सा ही है। धनी-निर्धन, प्रत्येक के साथ सम व्यवहार किया जाता है। लिबास बहुत ही साधारण है। लड़कों एवं लड़कियों को व्यायाम के लिये ख़ूब उत्साहित किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि कुछ समय में ही उनका औसत एक इंच के लगभग अधिक बढ़ गया है। इसका मुख्य कारण वहाँ के व्यायामों के उत्तम साधन हैं। लड़कियाँ, लड़कों के समान, प्रत्येक खेल अथवा व्यायाम में भाग लेती हैं। शिक्षा भी उन्हें लड़कियों की उपयोगिता के अनुसार दी जाती है। जैसे भोजन बनाना, सीना-पिरोना, गाना-बजाना, पूजा, त्योहार मनाना और मकान सजाना आदि। टोकियो के एक लड़कियों के स्कूल को देखने का मुझे अवसर मिला। स्कूल के हेडमास्टर साहब ने बड़ी नम्रता एवं उदारता का व्यवहार किया, और प्रत्येक क्लास में मुझे ले गए। वहाँ की स्वच्छता और शासन देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। लड़कियों को अँगरेज़ी का अभ्यास भी कराया जाता

है। ड्रिल भी होती है। सच तो यह कि जापान स्वच्छता, एकता एवं शासन का घर है। मैंने इसके संबंध में जैसा पढ़ा और सुना था, वास्तव में वैसा ही पाया। कभी-कभी लड़के एवं लड़कियाँ नगरों में परेड करते हुए निकलते हैं। एक स्कूल के लड़कों को शहर में सैनिकों के समान मार्च करते देखा। हरएक के कंधे पर बंदूक थी। इससे ज्ञात होता है, उन्हें हथियारों का प्रयोग भी बताया जाता है। वास्तव में जापानी शिक्षा, वहाँ की आवश्यकता के अनुसार, पूर्ण कही जा सकती है। वहाँ ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती, जो रोटी के प्रश्न को भी हल न कर सके, और न विद्यार्थियों को किसी दूसरी दृष्टि से ही उपयोगी हो। वहाँ बेकारी का नाम नहीं है। क्या ही अच्छा हो, यदि भारत में भी उसी प्रकार की शिक्षा का प्रबंध हो जाय। यह तभी हो सकता है, जब शिल्प-कला की ओर ध्यान हो। तभी भारत रोटी का प्रश्न हल करने में समर्थ होगा, तभी देश-व्यापिनी बेकारी नष्ट होगी। यह वहाँ की शिक्षा-प्रणाली का ही प्रभाव है, जिसने जापान को वर्तमान जापान बना दिया, और थोड़े-से ही समय में उसकी गणना सभ्य देशों में हो गई। जापानी लड़के अथवा लड़कियाँ जब स्कूलों या कॉलेजों से अपनी शिक्षा समाप्त करके संसार-क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो उन्हें किसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। बड़ी उत्तमता एवं चतुराई से अपने कर्तव्यों का यथेष्ट रीति से पालन करते हैं। जापान में लड़कियाँ हर महकमे में उतनी ही योग्यता के साथ काम करती हैं, जितनी योग्यता से लड़के। सच तो यह कि जापानी लड़कियाँ अपने कुटुंब तथा देश के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। ट्रांबे, दफ़्तर, स्टोर, होटल और कारखाने इत्यादि में लड़कियाँ बहुसंख्या में काम करती हैं। मैंने एक लड़की भी नहीं देखी, जो मैला वस्त्र पहने हो, और जिसके बाल भली भाँति न कढ़े हों। स्वच्छता उनकी प्रकृति बन गई है। जिस देश में शिक्षा का सुप्रबंध होता है, वह अवश्य उत्थान करता है। हर देश अपने भाग्य को स्वयं बनाता है, और उसी पर उसकी उन्नति एवं अवनति निर्भर है। किसी ने ठीक कहा है—"Nations rise and fall according to their destinies but I believe their destinies are shaped by their peoples, and God helps those who help themselves."

रोक्को-पर्वत का रस्सी-मार्ग का स्टेशन

Digitized by eGangotri

अवसर न खोइए !

केवल ३ मास के लिये

५) की पुस्तकें ३) में

चुनिए,

छाँटिए, और

आज ही ऑर्डर भेज दीजिए

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

१. उपन्यास

कर्म-फल (सचित्र)—मूल-लेखिका, मेरी कॉरेली; अनुवादक, प्रोफ़ेसर बैजनाथ कोटी; मूल्य १॥), २)

कर्म-मार्ग—अनुवादक, श्रीदुर्गाविनायकप्रसाद एम्० ए०, एल्-एल्० बी० मूल्य १॥), २)

कुंडली-चक्र—लेखक, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, ऐडवोकेट; मूल्य १), १॥)

क़ैदी—अनु०, श्रीऋषभचरण जैन; मूल्य १), १॥)

कोतवाल की करामात—लेखक, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, ऐडवोकेट ; मूल्य १), १॥)

गिरिबाला (सचित्र)—लेखक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट ; मू० १) १॥)

जुझार तेजा (सचित्र)—लेखक, मेहता लज्जाराम शर्मा ; मूल्य ॥), १)

पतन (सचित्र)—लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य १॥), २)

पवित्र पापी (सचित्र)—अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार ; मूल्य ३), ३॥)

पाप की ओर—अनुवादक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी०ए०, एल्-एल्०बी ; मूल्य १), १॥)

प्रतिमा (सचित्र)—लेखक, श्रीपं० गोविंदवल्लभ पंत ; मूल्य १॥), २)

प्रेम की भेंट—लेखक, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, ऐडवोकेट ; मूल्य १), १॥)

प्रेम-परीक्षा—मूल-लेखिका, मेरी कॉरेली; अनुवादक, श्रीपशुपाल वर्मा; मूल्य ॥=), १।=)

बिदा (सचित्र)—लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी०ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य २॥), ३)

भाग्य—लेखक, श्रीऋषभचरण जैन; मूल्य १), १॥)

मदारी (सचित्र)—लेखक, पं० गोविंदवल्लभ पंत; मूल्य १॥), २)

मृत्युंजय—लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी; मूल्य ॥), १)

मा—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'; मूल्य ३), ३॥)

विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १), १॥)

विजया (सचित्र)—मूल-लेखक श्रीशरच्चंद्र चट्टोपाध्याय; अनु०, पं०रूपनारायण पांडेय; मू० १॥), २)

बिराटा की पद्मिनी (सचित्र)—लेखक, बाबू वृंदावनलालजी वर्मा ऐडवोकेट ; मूल्य २॥), ३)

सौ अजान और एक सुजान—लेखक, स्वर्गीय श्रीयुत पं० बालकृष्ण भट्ट ; मूल्य ॥=), १=)

संसार-रहस्य अथवा अधःपतन—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥), २)

२. गल्प और कहानियाँ

अद्भुत आलाप—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी , मूल्य ॥), १)

अक्षत (सचित्र)—लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ; मूल्य १), १॥)

चित्रशाला (सचित्र, दो भाग)—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' मूल्य ३), ४)

जासूस की डाली (सचित्र)—लेखक, बाबू गोपालराम गहमरी, जासूस-संपादक; मू० १॥), २)

तूलिका (सचित्र)—लेखक, श्रीविनोदशंकरजी व्यास ; मूल्य १), १॥)

नाट्य-कथाऽमृत (सचित्र)—लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए० एल्० टी० ; मूल्य १), १॥)

प्रेम-गंगा (सचित्र)—अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा; संपादक 'हिंदूपंच' ; मूल्य १), १॥)

मंजरी (सचित्र)—अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १), १॥)

वाटिका (सचित्र)—लेखक, पं० अमृतलालजी नागर ; मूल्य ॥), ॥=)

संध्या-प्रदीप—लेखक, श्रीगोविंदवल्लभ पंत ; मूल्य १), १॥)

३. नाटक

आहुति अथवा जयपाल—अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १), १॥)

उत्सर्ग—लेखक, श्रीचतुरसेनजी शास्त्री; मू०।=), ।॥)

कर्बला—लेखक, स्व०श्रीप्रेमचंदजी ; मूल्य १॥), २)

कृष्णकुमारी (सचित्र)—लेखक, पं०रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १), १॥)

कीचक—लेखक, श्रीभगवन्नारायण भार्गव बी०ए०, एक्स्-एम्० एल्० सी०; मूल्य १), १॥)

खाँजहाँ (सचित्र)—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १=), १॥=)

जयद्रथ-वध—लेखक, पं० गोकुलचंद शर्मा एम्० ए०, मूल्य ॥), १)

पतिव्रता (सचित्र)—अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १।=), १॥।=)

प्रबुद्ध यामुन—ले०, श्रीवियोगी हरि; मू० १), १॥)

शकुंतला—अनु०, राजा लक्ष्मणसिंह, मू० ॥), १)

समाज या अछूतोद्धार—लेखक, श्रीघनानंद बहुगुणा एम्० ए० ; मूल्य ॥।=), १।=)

सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन (सचित्र)—अनुवादक, श्रीठाकुर लक्ष्मणसिंह वकील; मूल्य ॥), १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

४. व्यंग्य, हास्य और प्रहसन

अचलायतन—मूल-लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर ; अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय; मूल्य ॥), १)

प्रायश्चित्त-प्रहसन—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य =), ।-)

मध्यम व्यायोग—लेखिका, श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल ; मूल्य =), ।)

मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, स्वर्गीय पंडित शिवनाथजी शर्मा बी० ए० ; मूल्य २॥), ३)

रावबहादुर—मूल-लेखक, मौलियर ; अनुवादक, पं० लल्लीप्रसाद पांडेय ; मूल्य ।॥), १।)

लबड़धोंधों (सचित्र)—लेखक, स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ; मूल्य ।॥), १।)

विवाह-विज्ञापन (सचित्र)—ले०, स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ; मूल्य १), १॥)

५. काव्य

आत्मार्पण (सचित्र)—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र' ; मूल्य ।॥), १।)

उषा (सचित्र)—लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त 'कुसुम' ; मूल्य ॥=), १=)

दुलारे-दोहावली—लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव ; मूल्य ॥), १), १॥)

देव-सुधा—लेखक, मिश्रबंधु ; मूल्य १), १॥)

पराग (सचित्र)—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य ॥), १)

भारत-गीत—लेखक, कवि-सम्राट् स्व० पं० श्रीधर पाठक ; मूल्य ।॥=), १।=)

मधुवन—लेखक, श्रीआनंदकुमारजी ; मू० १), ।=)

रति-रानी—लेखक, 'सुहृत्त्रय' ; मूल्य १।॥), २।)

लतिका—लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी; मू० १), १॥)

६. साहित्य

निबंध-निचय—लेखक, हिंदी के उत्कृष्ट समालोचक पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ; मूल्य १), १॥)

प्रबंध-पद्म—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'; मूल्य १), १॥)

विश्व-साहित्य—लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए० ; मूल्य १॥), २)

साहित्य-संदर्भ—ले०, आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य १॥), २)

सौंदरानंद-महाकाव्य—प्रणेता, अध्यापक रामदीन पांडेय एम्० ए० ; मूल्य ॥), १)

संभाषण—लेखक, पं० दुलारेलालजी भार्गव ; मूल्य १), ॥)

हिंदी—लेखक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट; मूल्य ॥=), १=)

७. समालोचनाएँ

कवि-कुल-कंठाभरण—लेखक, पं० प्रतापनारायण मिश्र और शुकदेवबिहारी मिश्र ; मूल्य ॥), १)

नैषध-चरित-चर्चा—लेखक, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ।॥), १।)

भवभूति—अनुवादक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ज्वालादत्त शर्मा ; मूल्य ॥=), १=)

संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न—लेखक, हिंदी-संसार के धुरंधर समालोचक मिश्रबंधु मूल्य १।), १॥)

८. जीवन-चरित्र

अयोध्यासिंह उपाध्याय मूल्य =), ।-)

केशवचंद्र सेन—ले०, भारतीय हृदय; मू० १), १॥)

द्विजेंद्रलाल राय—लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ; मूल्य =), ।-)

देश-हितैषी श्रीकृष्ण—लेखक, स्वर्गीय प० राधाचरण गोस्वामी ; मूल्य -), =)

प्राचीन पंडित और कवि—ले०, आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥=), १।=)

सम्राट् चंद्रगुप्त—ले०, पं० बालमुकुंद वाजपेयी ; मूल्य १), ।=)

९. इतिहास

इँगलैंड का इतिहास (तीन भाग, सचित्र)—ले० डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, पी-एच्० डी० ; (उर्दू-हिंदी पृथक्) मूल्य ३॥), ४)

१०. कृषि

उद्यान (सचित्र)—ले०, श्रीशंकरराय जोशी एग्रिकल्चरल ऑफ़िसर ; मूल्य १=), १॥=)

गेहूँ की खेती (सचित्र)—लेखक, श्रीबी० एस्० निगम ; मूल्य १), १॥)

११. स्वास्थ्य और चिकित्सा

तात्कालिक चिकित्सा (सचित्र)—लेखक, बाबू लालबहादुरलाल ; मूल्य १), १॥)
प्राकृतिक स्वास्थ्य—लेखक, श्रीठाकुरदासजी ; मूल्य ॥), ॥=)
ब्रह्मचर्य-साधन—लेखक, आचार्य चतुरसेन शास्त्री; मूल्य ॥), १)
स्वास्थ्य की कुंजी (सचित्र)—लेखक, डॉ० बाबूराम गर्ग ; मूल्य १), १॥)

१२. वैज्ञानिक

भूकंप—लेखक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मू० ॥=), १।=)

१३. नवयुवकोपयोगी

अछूत-समस्या—लेखक, महात्मा गांधी; मू० ॥), १)
एशिया में प्रभात—मूल-ले०, पाल रिचर्ड; अनु०, ठा० कल्याणसिंह शेखावत बी० ए० ; मूल्य ॥), १)
काम-विज्ञान—लेखक, श्रीदीनानाथ व्यास विशारद; मूल्य १), १॥)
किशोरावस्था (सचित्र)—ले०, गोपालनारायण-सेन-सिंह बी० ए० ; मूल्य ॥=), १=)
नीति-रत्नमाला—अनुवादक, श्रीगोपालविट्ठल दुगवेकर ; मूल्य ।), ।=)
फिर निराशा क्यों?—ले०, श्रीगुलाबराय एम्० ए०; मूल्य ॥), १)
भिखारी से भगवान्—अनुवादक, ठाकुर बाबू-नंदनसिंह बी० ए० ; मूल्य १), १॥)
मुक्ति-मंदिर—अनुवादक, प्रो० बेनीमाधव अग्रवाल; मूल्य ॥।=), १।=)
सुख तथा सफलता—लेखक, स्व० पं० त्रिलोक-नाथ भार्गव बी० ए० ; मूल्य ।), ।=)
हिंदू-जीवन का रहस्य—लेखक, देवता-स्वरूप भाई परमानंदजी एम्० ए० ; मूल्य ॥।=), १।=)

१४. योग

जीवन-मरण-रहस्य—ले०, ठाकुर प्रसिद्धनारायण-सिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य ॥), १)
प्राणायाम—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ॥।=), १।=)
राजयोग—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १॥), २)

१५. सुकवि-माधुरी-माला

मिश्रबंधु-विनोद—लेखकगण, मिश्रबंधु ; मूल्य द्वितीय खंड ३), तृतीय खंड २), चतुर्थ खंड ४)

१६. विविध

किसान कैसे उठें—ले०, श्रीशीतलासहाय; मू० —)
किसानों का क़र्ज़—ले०, श्रीशीतलासहाय ; मू० ।)॥
बैल—लेखक, सियारामशरण गुप्त ; मूल्य —)।
पाली-प्रबोध—लेखक, पं० आद्यादत्तजी ठाकुर एम्० ए०, काव्यतीर्थ मूल्य १), १॥)
भारत में बाइबिल—(दो भाग)—ले०, श्रीसंत-राम बी० ए० ; मू० प्रत्येक भाग १॥), २)
पुरानी दुनिया—लेखक, श्रीरामचंद्र वर्मा ; मू० १॥), २)

१७. महिलोपयोगी

पत्रांजलि—मूल-लेखक, श्रीसतीशचंद्र चक्रवर्ती ; अनुवादक, पं० काश्यायनीदत्त त्रिवेदी; मू० ।—), ।=)
भारत में विदुषी नारियाँ—संपादिका, श्रीमती कृष्णकुमारी ; मूल्य ।=), ॥)
नारी-उपदेश—स्व० गिरिजाकुमार घोष मूल्य ।=), ॥)
कमला-कुसुम—श्रीमती गिरिजादेवी; मूल्य ॥=), १=)
देवी द्रौपदी—कविवर श्रीरामचरित उपाध्याय मूल्य ।=), ॥)
लक्ष्मी—स्व० गिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ।=), ॥)
महिला-मोद—साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसा-दजी द्विवेदी ; मूल्य १), ।=)
देवी सती—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥), १)
वनिता-विलास—साहित्य-महारथी पं० महावीर-प्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ।=), ॥)
गुप्त संदेश—डॉक्टर युद्धवीरसिंहजी; प्रत्येक भाग ; मूल्य ॥=), १=)
भारतीय स्त्रियाँ—मूल-लेखक, श्रीमती महारानी साहबा बड़ौदा ; अनुवादक, बाबू रामचंद्रजी वर्मा; मूल्य १), १॥)
देवी पार्वती—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=), १=)
नल-दमयंती—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=), १=)
सती सावित्री—अध्यापक हरिप्रसादजी द्विवेदी 'श्रीहरि' मूल्य ॥), ॥), १)
प्रसूति-तंत्र—डॉ० रामदयाल कपूर एम्० बी०, बी० एस० ; मूल्य २॥), ३)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

बालकोपयोगी सस्ता-सचित्र साहित्य

सुघड़ चमेली—स्व० पं० रामजीदास भार्गव मू०-)
बाल-नीति-कथा (प्रथम भाग)—मूल-ले०, श्रीए० बी० ध्रुव, एम्० ए०, एल्-एल० बी०, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस-चैंसलर; अनु० स्व० पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०, प्रो० लखनऊ-युनिवर्सिटी १), १॥)
गधे की कहानी—पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० ॥), १)
लड़कियों के खेल—श्रीगिरिजाकुमार घोष ।-),।=)
नटखट पाँड़े—पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० १), १॥)
कीड़े-मकोड़े—पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० ।=), ।॥=)
भारत के सपूत—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ।=), ।॥=)
खिलवाड़—पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० १), १॥)
भूकवच—श्रीशंकररावजी जोशी ।=), ॥)
इतिहास की कहानियाँ—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ।=), ॥)
विचित्र वीर—हास्यरसावतार पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी ॥), १)
हँसी-खेल—श्रीजगमोहन 'विकसित' ॥) १)
सुनहरीनदी का राजा—स्वर्गीय पं० ईश्वरी-प्रसादजी शर्मा ।=), ।॥=)
मर्यादाराम की कहानियाँ—वि० रामनाथ ऐयर बी० ए०, बी० एल्० ।=), ।॥=)
भगवान् गौतम बुद्ध—स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसाद जी शर्मा ।), ।=)
दिलावर सियार—पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० ।=), ॥)
युधिष्ठिर—कृष्णगोपालजी माथुर ॥), १)
कथा-कहानी—वि० रामनाथ ऐयर बी० ए०, बी० एल्० ।), ॥)
घरेलू कहानियाँ—कुमारी गोपालदेवी हिंदी-प्रभाकर ।=), ॥=)
लोमड़ी रानी—श्रीबाबूलाल भार्गव 'कीर्ति' ।=), ॥)

मिलने का पता— गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

छप गई ! प्रकाशित हो गई !!

भार्गव-चित्रावली

के

दोनों भाग

'सुधा' में जो रंगीन तथा तिरंगे चित्र अब तक प्रकाशित हुए हैं, हिंदी-संसार में उनकी धूम है। हज़ारों पाठक-पाठिकाओं के अनुरोध से हमने इन चित्रों में से छाँटकर उत्कृष्ट चित्रों का संग्रह इस चित्रावली में प्रकाशित किया है। इस चित्रावली में कुल

सोलह चित्र

हैं। देखने लायक़ चीज़ है। छपाई-सफ़ाई, जिल्द-बँधाई के संबंध में कुछ कहना वृथा है। शादी-विवाह के अवसर पर बहू-बेटियों को उपहार देने योग्य चीज़ है। मूल्य प्रत्येक भाग का केवल २) रु०; डाक-व्यय अलग।

व्यवस्थापक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

वास्तविक सौंदर्य चाहते या चाहती हो, तो

राज ज़ीनत पिल्ज़ का सेवन कीजिए

सब क्रीम, स्नो, पाउडर बेकार हो जाते हैं, यदि मनुष्य के शरीर में रक्त कम हो, खराब हो, पीला हो, सफ़ेद हो, या शरीर में किसी कारण निर्बलता आ गई हो। हमने श्रीमान पंडित ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य (आविष्कारक अमृतधारा) की संरक्षता में टॉयलेट का कारख़ाना जारी किया, तो पंडितजी ने अपने विशेष अनुभूत प्रयोगों से हमें 'राज ज़ीनत वटी' का एक अद्भुत प्रयोग दिया, जिससे हर स्त्री-पुरुष वास्तव में सुंदर बन सकता है।

निम्न-लिखित गुण हैं—

(१) रक्त शुद्ध करती, उत्पन्न करती और लाल करके चेहरे पर लाली लाती हैं, और रक्त-विकार से उत्पन्न हुई फुंसी, झाईं, दाग़, मुँहासा, बालझड़ आदि को दूर करती हैं।

(२) किसी कारण से निर्बलता हो या किसी रोग से उठे हों, तो बहुत शीघ्र फिर शरीर के भीतर बल तथा स्फूर्ति भरती हैं। ये गोलियाँ जनरल टॉनिक हैं, और जनरल डिबीलिटी, निर्बलता, सुस्ती को दूर करती हैं।

(३) स्त्री तथा पुरुष दोनों सेवन कर सकते हैं, और दोनों की शक्ति बढ़ाती हैं, तथा यौवन स्थिर रखती हैं। बूढ़ों में यौवन की उमंगें भरती हैं, पुरुषों के प्रमेह, स्वप्नदोष, सुस्ती रोग दूर होते हैं। स्त्रियों के श्वेत प्रदर (श्वेत पानी) आदि को हितकर हैं। इन रोगों के वास्ते भटकने की आवश्यकता नहीं। विश्वास-पूर्वक सेवन कीजिए।

(४) खाँसी, नजला, ज़ुकाम, कटि-पीड़ा, कमर की निर्बलता, स्थायी सिर-पीड़ा, मस्तिष्क की निर्बलता, वातज, क़ब्ज़ रोगों को भी दूर करती हैं।

(५) इनसे पाचन-शक्ति तीव्र होती है। खाया-पिया शरीर में लगता है। हर प्रकार की शक्तियाँ बढ़ती हैं। कोष्ठबद्धता नहीं रहती है, शरीर फ़ुर्तीला होता है। प्रतिदिन प्रातः दो गोली दूध, चाय, छाछ, शर्बत आदि के साथ खानी चाहिए। सेवन-विधि-पत्र साथ होगा। मूल्य २८ गोली एक रुपया। सेवन कीजिए, और ज़िंदगी का मज़ा उठाइए।

ज़ीनत ट्रूथ पाउडर	राज-स्नो	राज-डेपिलेटरी पाउडर	राज-कोल्ड क्रीम	राज-टूथ-पाउडर
यह देशी अति लाभदायक द्रवों का संग्रह है। दाँतों और मसूड़ों के लिये अद्वितीय वस्तु है। पायोरिया का निश्चित इलाज है। मूल्य प्रति शीशी ॥)	घर से बाहर निकलते समय इसे लगाना न भूलिए। मूल्य प्रति शीशी ॥।)	अर्थात् बाल उड़ाने का पाउडर। मूल्य ॥) नमूना =)	चमड़ी की रक्षा करती है। सुंदरता बढ़ाने में उत्तम है। चेहरे में पड़ी हुई झुर्रियाँ भी इससे दूर होती हैं। मूल्य ॥।)	यह सफ़ेद रंग और विलायती ढंग का मंजन है, जो दाँतों को साफ़ करने और रोगों को दूर करने में अति उत्तम है। मूल्य प्रति शीशी ।=)

ज़ीनत उबटन	ज़ीनत हेयर आयल	राज ज़ीनत हेयर फ़िक्सिंग क्रीम	ज़ीनत हेयर लोशन इत्यादि
मूल्य १)	मूल्य ॥।)	मूल्य ॥)	१)

आवश्यकतानुसार वस्तुएँ मँगवाइए, इस्तेमाल करके प्रसन्न होइए, और हमारे परिश्रम का गुण-गान कीजिए।

मैनेजर राज ज़ीनत वर्क्स नं० ८ राजभवन ऐबट रोड, लखनऊ

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

जापान को एक स्कूल कहा जा सकता है। वहाँ के मनुष्य किसी बात को सीखने के लिये इस प्रकार इच्छुक रहते हैं, जिस प्रकार बत्तख पानी में तैरने के लिये। यह शायद उनकी शिक्षा-दीक्षा का ही प्रभाव है। वे मृत्यु से भी नहीं डरते! जब उन्हें जीवन को बलिदान करने की आवश्यकता प्रतीत होती है, तो वे उसे एक साधारण वस्तु समझकर बलिदान कर देते हैं। इस बात के सैकड़ों उदाहरण हैं। इन्हीं के कारण जापान ने इतनी उन्नति की है, और इन्हीं के बल पर वह समस्त संसार में अपना मस्तक ऊँचा किए हुए है।

जापान की राजभक्ति

जापान का बच्चा-बच्चा अपने सम्राट् की सच्चे हृदय से प्रतिष्ठा करना जानता है। सम्राट् के विषय में जापानियों की यह धारणा है कि उसे ईश्वर ने उनकी रक्षा और पथ-प्रदर्शन के लिये भेजा है। इसी आधार पर सम्राट्-भक्ति को उन्होंने धर्म का रूप दे रक्खा है, जिसे शिंटोइज़्म कहते हैं। शिंटोइज़्म का मुख्य सिद्धांत यही है कि सम्राट् और उसके पूर्वजों की पूजा की जाय।

दृढ़ कर्तव्य-पालन

जापानी लोग प्रायः बौद्ध-मत ही को मानते हैं, और भगवान् बुद्ध के मंदिर स्थान-स्थान पर पाए जाते हैं। एक बड़ी आश्चर्य-जनक बात यह है कि यद्यपि जापानी बुद्ध भगवान् के सिद्धांतों के माननेवाले हैं—और बुद्धदेव का मुख्य सिद्धांत है "अहिंसा परमो धर्मः" अर्थात् प्राणिमात्र पर दया-भाव रखना, किसी को कष्ट न देना, किसी की जान न लेना—तथापि लगभग सब जापानी मांसाहारी हैं। मछली उनका मुख्य भोजन है। कुछ पुजारी निस्संदेह मांस नहीं खाते। जापानी भक्षित जीवों की आत्मा की शांति के लिये ईश्वर से विनय करके इन पापों से मुक्त होना चाहते हैं। वर्ष में इसके लिये एक दिन निश्चित है, जब वे उन जीवों की शांति के लिये प्रार्थना करें, जो उनकी ख़ूराक बन चुके हैं। कुछ नौजवान ऐसा कहते हुए सुनाई पड़ते हैं कि बुद्धजी के प्राचीन सिद्धांत उनकी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते। कुछ जापानी ईसाई-मत के भी हैं। सच तो यह कि देश-प्रेम ही उनका मुख्य धर्म है।

जापान की लड़कियाँ और स्त्रियाँ

रेलवे, दफ़्तर, ट्राम, कारख़ाना, कहीं भी जाइए, जापानी लड़कियाँ काम करती हुई नज़र आती हैं। वे अपना कर्तव्य-पालन बड़ी चतुराई एवं सुंदरता से करती हैं। प्रत्येक मनुष्य दंग होकर सोचता है कि जापान इतना सस्ती चीज़ें किस प्रकार तैयार करके विदेशों को भेजता है। इसका मुख्य कारण यह है कि जापान की लड़कियाँ हर जगह अधिक संख्या में काम करती हैं। और चूँकि उन्हें हर प्रकार की शिक्षा मिल चुकी है, इसलिये वे अपना काम बड़ी सुगमता से कर लेती हैं। उनका वेतन भी बहुत थोड़ा है। चूँकि जापान का रहन-सहन बहुत सादा है। इसी कारण उन्हें वह वेतन काफ़ी हो जाता है। भारत में जो स्त्रियाँ कारख़ानों में काम करती हैं, वे ऐसी हैं, जिन्हें अच्छी शिक्षा नहीं मिलती। इस कारण वे मोटा और मामूली काम करती हैं। उन्हें एक कार्य के करने का अवसर नहीं दिया जाता। कारण यह कि वे इस योग्य नहीं। किंतु जापान की लड़कियाँ वहाँ के लिये उतनी ही उपयोगी हैं, जितने लड़के। यही कारण है कि जापान सस्ता माल तैयार करता है। सस्ता माल तैयार करने के और भी कई कारण हैं; किंतु ये उनमें से मुख्य हैं। जापानी लड़कियाँ अपने ही लिये जीवित रहना नहीं जानतीं, प्रत्युत अपने कुटुंब और अपने देश के लिये जीवित रहकर धन पैदा करती हैं; यदि आवश्यकता पड़े, तो बड़े-से-बड़ा त्याग करने को प्रस्तुत रहती हैं। उनकी नम्रता देखकर

हर विदेशी का सर नीचे झुक जाता तथा भारत की प्राचीन स्त्री-सभ्यता का एक चित्र सामने आ जाता है। उनका व्यवहार प्रशंसनीय है। वहाँ की लड़कियों की शादी लगभग २० या २२ वर्ष की आयु में होती है। इस आयु में शादी करना बहुत लाभप्रद होता है। ऐसा कहा जाता है कि ३० फ़ीसदी जापानी लड़कियों को शादी करने का सौभाग्य नहीं प्राप्त होता, क्योंकि वहाँ लड़कियों की संख्या लड़कों की अपेक्षा अधिक है। यह अवश्य उनके लिये एक बड़ी भारी असुविधा है, और इसका जो फल होता है, उससे जापान मुक्त नहीं है। यदि आज उन्हें भी भारत की भाँति घर की चहारदीवारी में बंद कर दिया जाय, तो निस्संदेह जापान की हालत में एकदम परिवर्तन हो जाय। और, यह परिवर्तन उसके लिये एक बड़ा आघात होगा। सच तो यह कि जापान की शीघ्र-गामिनी उन्नति का श्रेय वहाँ की लड़कियों एवं स्त्रियों को ही है।

जापान में सम्राट् मीजी के शासन-काल से पूर्व वहाँ की स्त्रियों की दशा बड़ी शोचनीय थी। वही दशा थी, जो आजकल भारत में स्त्रियों की है। जिस प्रकार भारतीय स्त्रियों को पुरुषों से नीची, पैर की जूती, या संतान पैदा करने की मशीन, अथवा अपनी पैशाचिक कामनाओं की शांति का साधन समझते हैं, उसी प्रकार जापान ने भी उन्हें एक समय समझ रक्खा था। स्त्रियों को शिक्षित बनाना पाप समझा जाता था। जापान के सम्राट् ने घोषणा की थी कि दरबारियों और अमीरों को यह आवश्यक है कि वे अन्य देशों में, जहाँ तक संभव हो, अपनी माता-बहनों को भी साथ ले जायँ, ताकि वे वहाँ की स्त्रियों की दशा तथा रहन-सहन का पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकें, और उनके समान अपना जीवन बना सकें। सम्राट् मीजी ने स्वयं पाँच लड़कियों को अपने खर्चे से, सन् १८७१ ई० में, इसलिये अमेरिका भेजा कि वे उस देश की स्त्रियों का रहन-सहन, शिक्षा एवं रिवाज इत्यादि सीखकर अपने देश की बहनों का सुधार करें। सम्राट् ने उन्हें अपने हाथों से रेशमी वस्त्र पहनाए, और कहा—"मेरी प्यारी बेटियो, तुम विदेश से शिक्षा प्राप्त करके लौटो, तो यह न भूल जाना कि तुम्हारे बादशाह ने तुम्हें जिस उद्देश्य से अमेरिका भेजा है, वह यहाँ की स्त्रियों का सुधार करना है। जापानी स्त्रियों को शिक्षित और सभ्य बनाना, एवं नए युग का नवीन पाठ पढ़ाना, तथा उन्हें अमेरिका की महिलाओं के समान चतुर बनाना तुम्हारे जीवन का मुख्य ध्येय होगा। यदि तुम इस उद्देश्य की पूर्ति में असफल रहीं, तो मेरे दुःख की सीमा न रहेगी।" उस समय से जापानी स्त्रियों की दशा में एक अद्भुत परिवर्तन होता गया, और आज वे अपने देश के लिये अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। सर्वप्रथम, सन् १९१० ई० में, स्त्रियों की जो सभा स्थापित हुई, उसका नाम Women's Patroitic Association था। आज उसके सदस्यों की गणना लगभग ५०,००० से अधिक है। उसी समय से एक स्त्री के होते हुए दूसरी स्त्री से शादी न करने का क़ानून बन गया। सन् १९३६ ई० से उन्हें वकालत करने का भी अधिकार मिल गया। उनकी शारीरिक अवस्था में भी बहुत परिवर्तन हो गया है। जापानी और अमेरिकन लड़कियों की तुलना करते हुए एक अमेरिकन ने यहाँ तक कहा है—"कारखानों में काम करनेवाली जापानी लड़कियों का स्वास्थ्य हमारी मिसों से कहीं अच्छा है। उनके गुलाबी गाल और मुस्किराते चेहरे इस बात को दर्शाते हैं कि वे अपनी वर्तमान स्थिति से पूर्ण प्रसन्न हैं।"

कारखाने से बाहर हवा खाने अथवा कुछ खरीदने के लिये जाती हुई किसी लड़की को देखकर यह कहना कठिन है कि यह एक मिल में काम करने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाली लड़की है, अथवा किसी कॉलेज में पढ़नेवाली। जो लड़कियाँ मिलों अथवा कारख़ानों में काम करती हैं, उन्हें वेतन के अतिरिक्त दवा इत्यादि मुफ़्त मिलती है। साल में ४० या ६० दिन का वेतन और दिया जाता है। प्रतिवर्ष वेतन में १० से २० फ़ीसदी तक तरक़्क़ी दी जाती है। लड़कियों के लिये काम करने का समय लगभग २½ साल से ३ साल तक है। इसके बाद जिनकी शादी हो जाती है, वे काम छोड़ देती हैं। कारख़ानों में अधिक संख्या लड़कियों और स्त्रियों ही की होती है। 'कानीकफरेची' मिलों में ५५,००० स्त्री-पुरुष काम करते हैं। इनमें ५०,००० औरतें हैं, और केवल ५,००० आदमी। भारतीय मिलों में भी स्त्रियाँ काम करती हैं, किंतु उनके मुख पीले, वस्त्र मैले होते हैं; और जिन मिलों में करोड़ों रुपए साल का माल तैयार होता है, उनके मज़दूर एक धोती और एक चादर तक को तरसते हैं। यह ठीक वही बात हुई कि पानी की मछली प्यासी रहे। धनी मनुष्यों ने ग़रीबों का ध्यान न रखना कुछ अपना धर्म मान लिया है। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि धनी और ग़रीब, दोनो उसी प्रभु के पास से आते हैं। मज़दूर संतुष्ट न रहने के कारण जितना काम कर सकते हैं, नहीं करते। और, इस प्रकार वे अपने स्वामियों के लिये उतने उपयोगी सिद्ध नहीं होते, जितने अन्य देश के। भारत में न उनकी दवा का प्रबंध है, और न उनके स्वास्थ्य एवं बुढ़ापे का ख़याल। इस प्रकार इस संबंध में भी जापान और भारत में बड़ा अंतर दिखाई देता है। क्या हम यह आशा कर सकते हैं कि भारतीय मिलवाले मनुष्यता के नाते अपने निर्धन मज़दूरों के साथ दया और प्रेम का व्यवहार करेंगे ?

जापान नम्रता में आजकल सबसे अग्रगण्य है। जिन पुरुषों ने संसार का भ्रमण किया है, उनका यह कहना है कि जापान ही संसार में सबसे अधिक नम्र है। मुझे और देश देखने का तो अवसर प्राप्त नहीं हुआ, इस कारण मैं नहीं कह सकता कि यह कहाँ तक सच है ; किंतु इसमें संदेह नहीं कि जापानी सदैव, प्रत्येक समय, मुस्किराते अथवा हँसते हुए ही दिखाई पड़ते हैं।

जापानी बड़े प्रेम और आदर के साथ प्रत्येक का स्वागत करते हैं। वे क्रोध करना तो जानते ही नहीं। दूकानदार हों या अफ़सर, सभी का व्यवहार बड़ा नम्र एवं शिष्ट होता है। वे गाली-गलौज करना जानते ही नहीं। जापानियों के यहाँ जो सबसे बड़ी गाली समझी जाती है, वह है 'बाका' अर्थात् मूर्ख।

जापान की वेष-भूषा एवं घरेलू रहन-सहन

जापानी प्रायः पश्चिमी पोशाक में ही दिखाई देते हैं; किंतु एक लंबा-चौड़ा एवं ढीला-ढाला कोट भी पहनते हैं। पेट पर गर्म पेटी अवश्य होती है। दफ़्तर जानेवाले जापानी लगभग ६० फ़ीसदी अँगरेज़ी पोशाक पहनते हैं। स्त्रियों की जापानी पोशाक बड़ी विचित्र है। एक लंबा नीचे तक चोग़ा अथवा झंगा-सा होता है। उस पर पेटी होती है। इस पेटी के कई चक्कर होते हैं, और नीचे पुरुषों की भाँति गर्म पेटी होती है। उनका कहना है, पेट गर्म रखने के लिये वे ऐसा करती हैं। पीठ पर कपड़े की एक रँगदार पट्टी होती है, जो साधारणतया फूलदार होती है। सब लड़कियाँ इस पोशाक में दिखाई नहीं देतीं। कुछ ने अँगरेज़ी भी अपना ली है। कुछ लड़कियाँ और स्त्रियाँ अँगरेज़ी ढंग के केश रखती हैं। मोज़े प्रायः सभी प्रयोग में लाते हैं। कोई भी लिबास हो, वह स्वच्छ अवश्य होगा। जापानी अपने घर गुलदस्तों से सजाना बहुत पसंद करते हैं। गान-विद्या का भी बहुत प्रचार है। दूकानों पर फ़ोनोग्राफ़ की अलाप गूँजा करती है। रेडियो भी

बहुत देखने में आते हैं। इनका खर्च भी कम है। जापानियों के रहने का मकान हलकी लकड़ी के ढाँचे पर होता है। प्रत्येक स्थान पर स्वच्छता का बहुत ध्यान दिया जाता है। मेज़-कुर्सी पर बैठने का रिवाज नहीं है। प्रायः चटाई के बहुत सुंदर फ़र्श होते हैं। दफ़्तर, स्टोर इत्यादि के बड़े विशाल भवन हैं। जापान में बिजली का खर्च बहुत थोड़ा है।

क्या हमारे भारतीय भाइयों के हृदय में कभी यह विचार आता है कि एक देश, जिसकी जन-संख्या भारत से बहुत कम है, उन्नति के ऐसे उच्च शिखर पर कैसे पहुँचा? प्राचीन भारत भी उन्नति की ऐसी ही परा काष्ठा को पहुँचा हुआ था, जिसके कारण यह समस्त संसार के लिये आदर्श था। एक समय उन्नति के उच्च शिखर पर आसन जमाए हुए अन्य समस्त देशों से, प्रत्येक बात में, अग्रगण्य था। भारत को देखने के लिये अन्य देश व्याकुल रहा करते थे, तथा भारत के मनुष्यों को अपना गुरु बनाने में बड़ा सौभाग्य मानते थे। धन्य! प्राचीन भारत, धन्य !!

किंतु हम भारतीयों को साथ-ही-साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि भारत की प्राचीन सभ्यता की नींव जल के बुदबुद अथवा बालू पर स्थापित नहीं थी, जो ज़रा-से झटके में नष्ट-भ्रष्ट हो जाय। यदि ऐसा होता, तो वह ऐसे भयंकर भूचालों के प्रबल झोंकों को सहकर अपने को अब तक स्थिर न रख सकती। यूनान और मिस्र की सभ्यता उन भूचालों को न सह सकी, और अब प्रगतिशील देशों में उनकी कोई गणना नहीं।

हमारा प्राचीन इतिहास अमूल्य शिक्षाओं से ओत-प्रोत है। यदि हम सत्यता, श्रद्धा एवं दृढ़ता-पूर्वक उसी का अनुकरण करते हुए उन्नति की ओर बढ़े चलें, तो अवश्य हम उन्नतिदेवी के दर्शन करने में फिर से सफल हो सकेंगे।

यदि आपको जीता-जागता नवीन आदर्श लेना हो, तो जापान से लीजिए। जो इतने-से अल्प काल में अद्भुत एवं चमत्कृत उन्नति करके आदर्श रूप बना बैठा है। यह नहीं कहा जा सकता कि जापान प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण है। यहाँ भी अपूर्णता के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। कोई भी देश पूर्ण नहीं कहा जा सकता। जहाँ चार गुण होते हैं, वहाँ एक अवगुण होता ही है। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि उसके इने-गिने दोषों से बचते हुए उसके गुणों का ही अनुसरण करें, और अपनी प्राचीन आर्य-संस्कृति में जापान के नवीन आदर्शों का ऐसा पुट डालें कि हमारा अपना व्यक्तित्व भी न मिटे, और जीवन की नवीन आवश्यकताओं की भी पूर्ति हो जाय।

हे विभो! क्या हम उस दिन को फिर देखेंगे, जब हमारा देश अपनी नैसर्गिक प्राचीन वैदिक सभ्यता की गोद में फिर नवजीवन प्राप्त करेगा? तथास्तु।

बिहार में भूकंप क्यों आया?

भूकंप-नामक पुस्तक मँगाकर पढ़ें। सब कारण भूकंप आने के दिए हैं। किस तरह भूकंप से बचा जा सकता है, यह सब भी लिखा है। हर घर में यह पुस्तक पहुँचनी चाहिए, जिसमें भूकंप आने पर जान-माल की हानि न हो। १३ चित्र। पृष्ठ १४२; मूल्य ।।।=), सजिल्द १।=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

Digitized by eGangotri

ब्रजभाषा का क्षेत्र क्या सीमित है ?

[श्रीयुत किशोरीदास वाजपेयी]

भी हाल में प्रकाशित ब्रज-भाषा-काव्य के एक संग्रह की भूमिका में यह लिखा गया है कि ब्रज-भाषा की अभिव्यंजन-शक्ति सीमित है, और नवीन भाव भली भाँति इस भाषा द्वारा प्रकट नहीं किए जा सकते। ब्रजभाषा-प्रेमियों तथा दूसरे भी भाषा-तत्त्वविशारदों को इस पर विचार करना चाहिए। क्या सचमुच ब्रजभाषा की शक्ति ऐसी परिमित है, जिससे नवीन बातें और भाव सौंदर्य-पूर्वक प्रकट ही नहीं किए जा सकते ? यदि ऐसा है, तो फिर यह भाषा किस काम की ? काव्य के लिये तो कौड़ी-काम की भी फिर यह भाषा नहीं ! तब बाबा भिखारीदासजी कैसे लिख गए—'भाषा ब्रजभाषा रुचिर' ? हमें इस पर विचार करना है।

वस्तुतः अब से सैकड़ों वर्ष पहले प्रकट होकर महाकवि भूषण ने उपर्युक्त 'धारणा' का खंडन कर दिया था। उन्होंने स्पष्ट करके दिखा दिया था कि स्वभावतः कोमल भाषा भी मौक़े पर कड़ककर बोल सकती और अवसर के अनुरूप अपना रूप प्रकट कर सकती है। उपयोग करनेवाला चाहिए। परंतु वह सब होने पर भी, आज भी, वैसी 'धारणा' रखनेवाले सज्जन वर्तमान हैं, और ब्रजभाषा के सिर अपनी अशक्ति का दोष थोप रहे हैं! मैं उन कवि महोदय से पूछता हूँ, कृपा कर उन भावों का नामनिर्देश तो कर दें, जिनका अभिव्यंजन ब्रजभाषा में नहीं हो सकता। ज़रा बात स्पष्ट तो हो जाय। हम लोग भी तो कुछ समझ लें। यदि एक बच्चे से किसी भाषा में कुछ ठीक नहीं कहते बनता, तो क्या कोई भी उस भाषा में वह बात न कह सकेगा ? ऐसा कैसे जान लिया गया ? मैं समझता हूँ, इसकी परीक्षा हो जानी चाहिए। और, वह परीक्षा तभी हो सकती है, जब वैसी 'धारणा' रखनेवाले सज्जन उन भावों की एक सूची प्रकट करें। फिर ब्रजभाषावाले उन भावों को ब्रज-भाषा में प्रकट करके देखेंगे। यदि सफलता-पूर्वक इस भाषा में उन भावों का अभिव्यंजन हो जाय, तब तो ठीक; अन्यथा फिर ब्रजभाषा आंशिक गूँगी सिद्ध ही हो जायगी। परंतु जब तक इस प्रकार जाँच नहीं हो जाती, तब तक वैसी बात कह देना कोई मूल्य नहीं रखता।

आश्चर्य तो यह है कि वैसी 'धारणा' रखनेवाले भी आज व्रजभाषा के उपासक-रूप में प्रकट होकर वैसा कह रहे हैं। इस प्रकार के 'नादान दोस्तों' से बेचारी व्रजभाषा का बहुत कुछ अहित हो सकता है। इसलिये सावधानी की आवश्यकता है।

मैं समझता हूँ, मेरा उपर्युक्त निवेदन 'चैलेंज' करके स्वीकार किया जायगा। मैं दावे के साथ उस 'धारणा' का खंडन करता हूँ, और कोई भी भाषा-तत्त्व को पहचाननेवाला ऐसा दावा करेगा। परंतु इस दावे में अभिमान का भाव न समझिएगा—'कहहुँ सुभाव, न कछु अभिमानू।' और, यदि अभिमान ही समझा जाय, तो वह भी सही; यद्यपि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं ही क्या कोई भी व्रजभाषा का जाननेवाला कोई भी भाव इस भाषा में बखूबी प्रकट कर सकता है। यह कोई असाधारण बात नहीं है, जिसके लिये 'चैलेंज' की आवश्यकता हो। परंतु जिन लोगों की वैसी 'धारणा' है, उन्हें विश्वास दिलाने के लिये ही इस ज़ोर के साथ कहा गया है।

आशा है, मेरे इस निवेदन पर ध्यान अवश्य जायगा।

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Registered **'कॉनटैक्स'** रजिस्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करके और अधिक संतान उत्पन्न करके अपने स्वास्थ और सुंदरता को मिट्टी में मिलाना और अकाल-मृत्यु के मुख में जाना नहीं चाहतीं, तथा दासों और अनाथों की संख्या बढ़ाना महापाप समझती हैं, वे कॉनटैक्स के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥) ; डाक-ख़र्च ।=)

आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

अंतरराष्ट्रीय संधियों का मूल्य

[श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०]

"The ancient and mediæval fashion of giving pledges and hostages for the fulfilment of treaties has passed away, and states now rely on their own power, and on considerations of self-interests and feelings of duty, to secure the observance of engagements entered into with them."—T. J. Lawrence.

युद्धों को रोककर शांति स्थिर रखने की समस्या नई नहीं है। यह बहुत प्राचीन है। युद्ध अतीत काल से बराबर होते आए हैं। मानव-समाज में प्रत्येक व्यक्ति के अंदर क्रोध की मात्रा थोड़े-बहुत अंश में सदा से रहती आई है। बदला लेने की प्रवृत्ति इसी का परिणाम है। और, जब मनुष्य इस कार्य में रत होता है, उस स्थिति को हम लड़ाई के नाम से पुकारते हैं। इसी के बड़े रूप का नाम युद्ध है। इसमें बहुत-से व्यक्ति एक विशाल समूह बनाकर सार्वजनिक हित के लिये इसी प्रकार सुसंगठित एक दूसरे दल या दलों के साथ लड़ते हैं।

मानव-समाज में एक दल—जो अपने अन्य साथियों से अधिक समुन्नत, समझदार, विचार-शील एवं दूरदर्शी होता है—इस लड़ाकू प्रकृति का विरोधी रहा है। इन लड़ाइयों को रोकने के लिये इसने अनेक प्रकार के उपाय खोज निकाले। उन उपायों में संधि एक बहुत प्रमुख और उपयोगी तरीक़ा रहा है।

संधियों का उपयोग मानव-समाज ने दो प्रकार से किया है। प्रथम वह है, जब दो लड़ते हुए दल अपने वैर-भाव को भुलाकर प्रेम-पूर्वक आपस में मिलते हैं, और इसका आधार होती हैं कुछ शर्तें। इसमें दो लड़ती हुई शक्तियाँ लड़ना छोड़ देती हैं। दूसरा तरीक़ा वह है, जिसके अनुसार दो विरोधी शक्तियों में, जो युद्ध करने के लिये सब प्रकार से तत्पर होती हैं, शांति स्थापित कर ली जाती है। वे आपस में संधि कर लेती हैं, अपने पुराने विरोधी भाव भूल जाती हैं, और शांति-पूर्वक रहने लगती हैं। युद्ध के कारण मिटाने के लिये उनमें भी कुछ शर्तें हो जाती हैं। जब तक इस प्रकार की शर्तें क़ायम रहती हैं, दोनो प्रकार के मामलों में, तब तक कोई लड़ाई नहीं होती। जहाँ किसी ने भी उनके मानने में ढिलाई की कि तुरंत लड़ाई के साजोसामान सजने लगते हैं। जब तक ये शर्तें दोनो ओर से मानी जाती रहती हैं, उनमें किसी प्रकार का द्वेष-भाव नहीं आने पाता। उनकी युद्ध की प्रवृत्ति शांत रहती है। एक दूसरे के प्रति उनमें अच्छे और विश्वास करने के भाव रहते हैं। परिस्थितियों के बदल जाने से यदि उनकी शर्तों में किसी प्रकार के हेर-फेर की आवश्यकता हुई, तब ये दोनो दल उसे भी आसानी से तय कर लेते हैं। दोनो के दिलों में एक दूसरे के लिये गुंजाइश रहती है, पारस्परिक आवश्यकताओं के लिये वे अपने हितों के दावों को कम करने अथवा वापस लेने को तैयार रहते हैं। अविश्वास, बेईमानी, दग़ा और फ़रेब का वातावरण वहाँ बहुत

कम होता है। वे अपनी-अपनी माँगों को सीधे-सादे और स्पष्ट रूप में पेश करते हैं। उनमें किसी प्रकार की लगावट-छिपावट नहीं होती। सारा वातावरण शांति का इच्छुक होता है, और अपने नए संबंध को स्थायी बनाने का।

इस वातावरण में हुई ये संधियाँ चिरस्थायी होती हैं। वे जल्दी टूटती नहीं। संधिकर्ता देश उन्हें ईमानदारी और सच्चे दिल से पालन करने में बराबर तत्पर रहते हैं। उनमें एक प्रकार की पवित्रता होती है, जिसका लिहाज़ सभी देश करते हैं। उनके अनुसार कार्य करने में वे अपना गौरव समझते हैं। उनकी पूर्ति प्राण-पण से करते हैं। अनेक वर्ष व्यतीत हो जाते हैं, और किसी को शिकायत का कोई अवसर नहीं मिलता। सभी शांति के उपासक होते हैं। वे अपने-अपने देश को धन-धान्य आदि सब प्रकार से संपन्न बनाने के इच्छुक रहते हैं।

इस प्रकार की संधियाँ प्रायः शांति के समय होती हैं। उनका उद्देश भविष्य में भी शांति स्थापित करने का होता है। दो या इससे अधिक देश जब शांति के उपासक होते हैं, अथवा किन्हीं राजनीतिक कारणों से अपने लिये शांति स्थापित रखना ज़रूरी समझते हैं, तब वे आपस में किसी निश्चित अथवा अनिश्चित काल तक, जब तक कोई खास अंतरराष्ट्रीय घपला न पड़े, समझौता कर लेते हैं। कभी-कभी वे आपस में युद्ध न करने की शर्तें भी कर लेते हैं, और यह भी कि एक दूसरे की लड़ाई के समय सहायता करेंगे। ये संधियाँ गुटबंदी करने के उद्देश से होती हैं, और जिनमें उन देशों का लक्ष्य प्रायः शक्ति को समतुल्य रखना होता है।

परिस्थितियों के बदल जाने और संसार के पिछले चंद वर्षों में बहुत आगे बढ़ जाने से एक नए प्रकार की संधियों की सृष्टि और हो गई है। इनमें कुछ देश मिलकर कुछ क़ानून-क़ायदे तय कर लेते हैं, जिनके अनुसार वे सब अपना आचरण करने की प्रतिज्ञा करते हैं। विगत महासमर के बाद इस प्रकार की संधियों की संख्या बहुत बढ़ गई है। इनका महत्त्व भी बहुत बढ़ गया है। इन संधियों के आधार पर बनाए गए क़ानून-क़ायदों को वे सब राष्ट्र मानने के लिये तैयार रहते हैं, जो उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। केवल शांति के समय ही नहीं, वरन् लड़ाई के ज़माने में भी इन्हें पालन करना उनका पवित्र कर्तव्य होता है। यदि वे लड़ाई के समय किसी भी लड़नेवाले देश से संबंध न रखकर बिलकुल तटस्थ रहते हैं, तो भी उनका इनके प्रति क्या कर्तव्य है, यह बात स्पष्ट रूप से पहले से तय हो जाती है।

इन क़ानूनों की सृष्टि धीरे-धीरे होती आई है, और इस समय इनका भारी प्रभाव है। इन्हीं को अब हम अंतरराष्ट्रीय क़ानून कहते हैं। जिस प्रकार लड़ाई के सामान और ढंग दिन-प्रति-दिन बदलते जा रहे हैं, और नई-नई चीज़ों का आविष्कार होता जा रहा है, इनकी संख्या भी बढ़ती जा रही है। इन क़ानूनों के ठीक-ठीक मानी बतलाने के लिये तथा देशों के इनको तोड़ने के इरादे और कार्य को न्याय-पूर्वक बताने के लिये योरप के हेग नगर में एक Permanent Court of International Justice की स्थापना हो चुकी है। कितने ही देशों ने इसका उपयोग किया है। न केवल इस प्रकार के क़ानून-भंग के मामले इस अदालत के सामने पेश हुए हैं, वरन् संधियों के मामले भी आए हैं। यदि संधियों में कोई ऐसी बात आ गई है, जिसका अर्थ बड़ा गोलमोल है, तो उसे साफ़ करने के लिये इस न्यायालय की शरण ली गई है।

इस न्यायालय को इस प्रकार बनाया गया है कि यह किसी देश से प्रभावित न होकर अपनी

Digitized by eGangotri

स्वतंत्रता स्थापित रख सके। मामले पेश होने का तरीक़ा भी ख़ास ढंग का है। इसके जज निर्वाचित करने के नियम भी इसी दृष्टिकोण से बनाए गए हैं।

इतना सुंदर प्रयत्न और संगठन होते हुए भी क्या सभी देश अपनी संधियों को इन क़ानून-क़ायदों के अनुसार आचरण में लाते हैं? वास्तव में यह प्रश्न अत्यंत विवाद-ग्रस्त है। हमारी राय में तो इन संधियों का और संधियों को क़ायम रखनेवाली मैशीनरी का मूल्य केवल तब तक है, जब तक अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति में कोई हलचल पैदा नहीं होती, और उन संधिवर्ती देशों में किसी प्रकार की नई महत्त्वाकांक्षा का जन्म नहीं होता। जब देशों में लड़ाइयाँ हो रही हैं, तब अन्य राष्ट्रों का क्या रुख होगा, इसका निर्णय कोई नहीं कर सकता। न कोई यह भविष्यवाणी कर सकता है कि अमुक अंतरराष्ट्रीय क़ानून अथवा संधि के अनुसार अमुक देश का बर्ताव इस प्रकार होना चाहिए।

एक समय अवश्य ऐसा था, जब शांति के समय किसी समझौते में सभी भाग लेनेवाले देश उसकी शर्तों को श्रद्धा एवं आदर की दृष्टि से देखते थे। उनका पालन करना उनका पवित्र कर्तव्य था। लड़ाई के समय भी वे उन्हें उसी मुस्तैदी से निभाते थे। उनके कार्यों में किसी प्रकार का छल-फ़रेब न हुआ करता था। परंतु अब ज़माना बदल गया है, परिस्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हो चुका है, और प्रत्येक संधि का मूल्य उनके लिये शांति या लड़ाई के ज़माने में कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता। जहाँ कहीं उनके मतलब का प्रश्न आया, इस क़ानून-क़ायदे की परवा नहीं की गई। वे सब वहीं तक माननीय होते हैं, जहाँ तक उनका संबंध उन देशों के हितों और स्वार्थों से नहीं होता। प्रत्येक देश के लिये इन संधियों का मूल्य स्वार्थ-सिद्धि के लिये ही है। जब चाहें वे इन्हें तोड़ सकते हैं। संधियों का मानना अथवा न मानना Inter-national morality (अंतरराष्ट्रीय सदाचार) का प्रश्न ही है। इस समय उनका इससे अधिक मूल्य नहीं कि वे देशों की स्वार्थ-सिद्धि में मदद देती हैं। जहाँ इनसे उनकी स्वार्थ-सिद्धि नहीं होती, वे उनकी परवा नहीं करते।

इधर कुछ वर्षों में ऐसी अनेक घटनाएँ हुई हैं, जिनके द्वारा हम अपने इस कथन को और भी अधिक स्पष्ट कर सकते हैं। ६ फ़रवरी, १९२२ ई० को अमेरिका के सुप्रसिद्ध शहर वाशिंगटन में एक संधि हुई थी, जिसमें इँगलैंड, फ़्रांस, इटली, अमेरिका और जापान ने भाग लिया था कि वे लड़ाई में ज़हरीली गैसों का इस्तेमाल नहीं करेंगे। अंतर-राष्ट्रीय क़ानून के अनुसार भी इसका उपयोग वर्जित है। पर कौन नहीं जानता कि इटली ने इसी गैस के आधार पर अबीसीनिया पर विजय प्राप्ति की है, और किसी राष्ट्र ने चूँ तक न की। बात यह थी कि उन देशों का इसे रोकने में कोई हित न था, न अबीसीनिया और इटली की लड़ाई से उन देशों को कोई नुक़सान ही था। यदि इन देशों को इस युद्ध में ज़रा भी दिलचस्पी होती, और वे स्वयं इसमें उतरना चाहते, तो इसी ज़हरीली गैस का प्रयोग एक भारी बवंडर खड़ा करा देता। विगत महासमर में इँगलैंड ने जर्मनी और बेलजियम की लड़ाई में दिलचस्पी ली, और इँगलैंड को उसमें पड़ना कितने ही कारणों से आवश्यक था। अतएव सीधा उसमें न पड़कर अपने उन कारणों को छिपाया गया, जिनके द्वारा इँगलैंड को इसमें भाग लेना ज़रूरी हो गया था। जर्मनी के ख़िलाफ़ तैयार होने के लिये उसने उस संधि का सहारा लिया, जो वर्षों पहले जर्मनी और इँगलैंड आदि देशों में बेलजियम-देश की स्वतंत्रता की इज़्ज़त करने के संबंध में हुई थी। यह बात अब किसी भी राजनीति के विद्यार्थी से

छिपी नहीं कि यह कोरा बहाना था। इँगलैंड को तो वैसे भी लड़ना था, यदि यह बहाना न मिलता, तो वह कोई दूसरा बहाना ढूँढ़ता। दूसरी ओर यदि इँगलैंड को स्वयं इसमें पड़ने की ज़रूरत न होती, तो वह इस संधि की ज़रा भी परवा न करके उन दोनो को लड़ने देता।

इन दो उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि संधियों का मूल्य वास्तव में स्वार्थ-साधन की दृष्टि से ही होता है।

यही कारण है कि संधियों का अब उतना महत्त्व नहीं रहा, जितना कुछ समय पूर्व था, जब देश एक दूसरे के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करने में कभी न चूकते थे, और जब उनके सामने स्वार्थ का प्रश्न न होकर सदाचार का प्रश्न था। अब तो सदाचार का स्टैंडर्ड बहुत नीचा हो गया है। संधियों के प्रति अविश्वास की मात्रा दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि इनके प्रति आदर के भाव अब भी क्यों मौजूद हैं? अभी परिस्थिति ऐसी उत्पन्न नहीं हुई है, जब हम इनकी ओर से बिलकुल उदासीन हो जायँ। शायद निकट भविष्य में ऐसा हो जाय, क्योंकि इनके प्रति सभी देशों में अविश्वास की भावना बढ़ ही रही है। अभी वह समय नहीं आया, जब इन्हें बिलकुल ठुकरा दिया जाय। बराबर की शक्तिवाले देशों में संधियों का मूल्य इस प्रकार अवश्य घट गया है, पर एक कमज़ोर तथा दूसरे शक्तिशाली राष्ट्र में कमज़ोर देश के लिये इनका प्रभाव ज्यों-का-त्यों बना है। शक्तिशाली देश जब चाहे अपनी संधि को ठुकरा दे। कमज़ोर देश कुछ कर ही नहीं सकता। पर यदि कमज़ोर देश ऐसा करे, तो शक्तिशाली देश उसे निगल सकता है।

जब दो बराबर की शक्तिवाले देश इस प्रकार की संधि करते हैं, तब वे बिलकुल निश्चिंत नहीं हो जाते। उन्हें बराबर आपस में संदेह बना रहता है, और वे अपने कार्यों में उस संधि के आधार पर एक दूसरे पर बहुत कम क्या, बिलकुल नहीं-से निर्भर रहते हैं। संधि होने पर भी एक देश दूसरे देश पर भरोसा करके कोई कार्य नहीं कर सकता। प्रत्येक देश को अपनी शक्ति के अनुसार काम करना पड़ता है। यह भले ही हो कि समय आने पर, परिस्थिति अनुकूल होने पर, दूसरा देश संधि के अनुसार आचरण करे। पर ऐसा करने की कोई गारंटी नहीं। इस अविश्वास की मात्रा और भी अधिक बढ़ जाती है, जब संधिवाले देश को संसार के अन्य शक्तिशाली देशों के बीच में आना होता है, और जहाँ उसके हितों का संबंध रहता है। जब इटली के समान शक्तिशाली देश का अबीसीनिया के समान शक्ति-हीन देश से मुक़ाबिला आ पड़े, तो यह संभव है कि बहुत अंशों तक इटली की संधि के अनुसार अन्य देश आचरण करें, और इस युद्ध में हुआ भी ऐसा ही। इटली के खिलाफ़ किसी ने चूँ तक न की, और यदि किसी ने की, तो कम-से-कम संधिवाले देश बराबर इटली के साथ रहे।

इधर कुछ महीने से अंतरराष्ट्रीय वातावरण अत्यंत क्षुब्ध है। इटली की साम्राज्य-पिपासा तथा महासमर होने की आशंका से समस्त संसार में खलभली मची हुई है। प्रत्येक देश शस्त्रीकरण की ओर बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा है, और इसके साथ-साथ अपने देश को अन्य साधनों द्वारा सुरक्षित करने के अतिरिक्त गुटबंदी भी करना चाहता है। इसी चाह के फल-स्वरूप विगत कुछ महीनों में कितनी ही महत्त्व-पूर्ण घटनाएँ हुई हैं। कितनी ही संधियाँ भी हुई हैं, जिन्होंने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है।

इन संधियों के आधार पर हमारे बहुतेरे पाठकों ने आगामी महासमर के संबंध में बहुत-सी

Digitized by eGangotri

कल्पनाएँ कर ली होंगी। उन्होंने शायद इसका भी अंदाज़ा लगाया हो कि इस भावी युद्ध में कौन देश किसके साथ रहेंगे? इस लेख द्वारा हमारा अभिप्राय पाठकों के सामने यही प्रकट करने का है कि वे इनके आधार पर कोई कल्पना न करें, क्योंकि इनका मूल्य कुछ नहीं है। सबसे अधिक उपयोगी चीज़ है स्वार्थ, और केवल इसी के आधार पर वे भावी महासमर के संबंध में कुछ कल्पना भले ही कर सकते हैं। स्वार्थ के प्रश्न को भी हम अभी से तय नहीं कर सकते, क्योंकि वह भी उसी समय की परिस्थिति पर निर्भर है।

आगामी युद्ध अंतरराष्ट्रीय संधियों के लिये एक नया अध्याय प्रारंभ करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

शिशु-पालन

यह गृहिणियों और माताओं के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अपूर्व पुस्तक है। इसमें पाश्चात्य और पूर्वीय मतों की छान-बीन करके बच्चों के पालन के विषय में अत्यंत उपयोगी बातें लिखी गई हैं। इसमें शिशु-परिचर्या, शिशुओं के आहार, शिशुओं के भोजनों से संबंध रखनेवाले रोग, उत्पत्ति-कालीन रोग, शिशु-रोगों की चिकित्सा, चिरजीवी शिशुओं के सामुद्रिक लक्षण, शिशुओं की अच्छी आदतें, गृह-चिकित्सा और शिशुओं के प्रति महाकवि भवभूति के चुने हुए वाक्य इत्यादि विषयों का बड़ी ही सुंदरता-पूर्वक वर्णन हुआ है। इसकी भाषा सरल, सुबोध और मुहाविरेदार है। प्रत्येक बाल-बच्चेदार गृहस्थ के घर में इसकी एक प्रति रहना आवश्यक है। यह शिशु-पालन की गाइड है। मूल्य लगभग २)।

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ब्रज-भारती * पर एक दृष्टि

[श्रीपं० रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ऐडवोकेट]

"Paint me as I am or I shall not pay thee."—Oskar Vilde.

दी-साहित्य में ब्रजभाषा का स्थान अत्यंत महत्त्व-पूर्ण है। ब्रज-भारती का काव्य-साहित्य तो इतना अधिक उत्कृष्ट है कि संसार की किसी भी भाषा के काव्यों से उसकी तुलना की जा सकती है। सूरसागर तथा महाकवि तुलसीदास-कृत विनयपत्रिका आदि ग्रंथ ब्रजभारती की ही नहीं, किंतु संसार की संपत्ति हैं। इन्हीं कतिपय ब्रजभारती के अमूल्य ग्रंथ-रत्नों पर ही प्रत्येक हिंदी-भाषा-भाषी गर्व कर सकता है। प्रस्तुत ग्रंथ ब्रज-भारती उसी ब्रजभारती की नवीनतम संपत्ति है।

कवित्व ईश्वरीय देन है। प्रत्येक मनुष्य कवि नहीं बन सकता, न ठोक-पीटकर बनाया जा सकता है। यदि कोई समालोचक अथवा लेखक कविता लिखने बैठे, तो कविता की प्रत्येक पंक्ति पुकार-पुकारकर उसकी कवित्व-हीनता उद्घोषित करेगी। अलंकार एवं भाषा का पांडित्य कवित्व-प्रतिभा के अभाव को छिपाने में समर्थ नहीं है, तथा कवि की प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्द में उसकी अनुभूति तथा अंतरात्मा निहित रहती है। प्रत्येक भाव में उसका हृदय गति करता रहता है। रचयिता की प्रतिभा कविता स्वयं बतला देती है।

ब्रज-भारती का कवि यथार्थ में प्रतिभावान् है। उसकी भाषा में सौंदर्य है, पंक्तियों में अंतस्तल की अनुभूति और कविता में प्राण। उसकी रचना प्राणमय, मनोमय और विज्ञानमय है। इसी को दूसरे शब्दों में 'सत्यं शिवं सुंदरम्' का सम्मिश्रण कहा जा सकता है। कवि ब्रजभाषा के प्राचीन स्वरूप की रक्षा करता हुआ नवीन शैली एवं भावों के सम्मिश्रण में निस्संदेह उत्तीर्ण हो गया है।

'अवसान'-शीर्षक कविता, जो मेरी सम्मति में कवि का मास्टर पीस है, ब्रजभाषा-साहित्य के लिये गर्व की चीज़ है।

साँवरे के रूप में है साँवरी,
पूतरी क्यों ध्यान में है लीन-सी।

अभेद तथा ऐक्य की कितनी सूक्ष्म अनुभूति है। प्राचीन भाव को कितने परिमार्जित ढंग से रक्खा गया है। कबीर ने इसी भाव को इस प्रकार कहा है—

लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल;
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।

भगवान् शंकराचार्य यहीं आकर व्याकुल हो उठे थे—

दासोऽहमिति या बुद्धिः पूर्वमासीज्जनार्दने;
दाकारो लोपितस्तेन गोपीवस्त्रापहारिणा।

किंतु ब्रज-भारती का कवि इन दोनो से ऊपर उठ गया है। उसकी दृष्टि में अभेद ज्ञान होकर भी ध्याता और ध्येय पृथक् हैं। ध्येय को प्राप्त कर चुकने पर भी ध्याता ध्यान ही है। भक्ति और प्रेम का अस्तित्व एकदम नष्ट नहीं हुआ। इसी उच्चतम भाव को भगवान् शंकराचार्य ने, षट्पदी-नामक स्तोत्र में, इस प्रकार कहा है—

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्;
सामुद्रो हि तरङ्गः क्वचन न तारङ्गो हि समुद्रः।

"हे नाथ, भेद नष्ट हो जाने पर भी मैं

---

* ब्रजभाषा-कविताओं का संग्रह। लेखक, पं० उमाशंकरजी वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ; छपाई अच्छी; मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

Digitized by eGangotri

तुम्हारा हूँ, तुम मेरे नहीं। समुद्र की तरंग हो सकती है, परंतु तरंगों का समुद्र नहीं हो सकता।" कवि के शब्दों में भी पुतली श्याममय होकर भी श्याम के ध्यान में ही लीन है।

कवि की नायिका के प्राणों को किसी का मधुर नाम शांत नहीं रहने देता। वह कहती है—

हे सखी, काको मधुर वह नाउँ री,
बींधि प्रानन माँहि आज समाइगो;
हाय! कैसो दुखद ऊरध स्वास री,
धुआँ-सो उर में उमड़िके छाइगो।

चिरकाल हुआ, इसी भाव पर मुग्ध होकर एक ब्रज-कवि कह उठा—

वा तन की मुसकानि री माई,
सँभारि न जैहै, न जैहै, न जैहै।

किंतु मुसकान और नाम में महान् अंतर है। मुसकान बाह्य सौंदर्य है और नाम अंतःसौंदर्य।

नायिका के लिये बाँसुरी की स्मृति पीर का कारण बनी हुई है—

पीर तें कसकति अरी यह पाँसुरी,
बिथित अंतस में बजी वह बाँसुरी;
बाँसुरी की सुधि जो आवत आजु री,
हाय! आँखिन तें ढरत क्यों आँसु री।

शब्दों में कितना सौंदर्य है। निर्माण में कितनी कला। बाँसुरी की स्मृति व्यथित अंतरतल में बाँसुरी बजा देती है। 'हरिऔध'जी ने भी इसी भाव को अच्छे ढंग से कहा है—

जब विरह विधाता ने रचा विश्व में था,
फिर स्मृति रचने में कौन-सी चातुरी थी।

हितानंदजी की भी पंक्ति प्रसिद्ध है—

सुधि आवत बाँसुरी की जु सखी,
नयना अँसुआ ढरि ल्यायौ करैं।

किंतु 'उमेश'जी की कविता में एक अनिर्वचनीय सौंदर्य, अनुभूति और प्राण हैं, जो और कहीं दृष्टि-गोचर नहीं होते।

'मीरा'-शीर्षक कविता में भी कवि की प्रतिभा व्यक्त है—

तेरी रसना में स्याम हू की रसना कौं देखि,
बिख की पियाली सोऊ लाजनि अमृत भो।

मंसूर के लिये भी इसी प्रकार कहा गया है—

किया अच्छा जिन्होंने धार पर मंसूर को खींचा,
उसे दुश्वार था जीना जहाँ में राज़हाँ होकर।

ऐसे लोगों के लिये मृत्यु यथार्थ में अमृत के समान है। अन्य कवियों ने भी इसी भाव को अन्य रूप में रक्खा है—

प्रेम-सहित मरिबौ भलौ, जो बिष देय बुलाय।
(रहीम)

तुम होगे सुक़रात, ज़हर के प्याले होंगे,
हाथों में हथकड़ी, पदों में छाले होंगे।
(सनेही)

'कामना'-शीर्षक कविता में 'रसखान' का आभास है, किंतु कवि ने उन्हीं भावों में नवीनता ला दी है।

'आदि-शक्ति' कविता को समझने के लिये वैदिक देवता-ज्ञान आवश्यक है। हिंदी-साहित्य में यह अपने ढंग की पहली ही कविता है।

'अनुपम ज्योति'-शीर्षक कविता सौंदर्य एवं सौष्ठव की दृष्टि से अनुपम है।

अब गूँजि उठ्यौ कुंजन में
माते भृंगन कौ गुंजन;
हाँ झूमि उठ्यौ प्रानन में
मृदु कुसुमन कौ नंदन-बन।

यहाँ शब्द-लावण्य दर्शनीय है। तथा

मेरे नैननि कौ आली,
अंजन बनि गयौ निरंजन।

पंक्ति को पढ़कर मीरा की उस पंक्ति की ओर ध्यान जाता है—

... ... दृगन कौ तोहिं अंजन करि लेहुँ;
ना मैं देखूँ और को, ना तोहिं देखन देहुँ।

'ज्योत्स्ना', 'सौंदर्य' और 'अंतर्वेदना' की कवि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ताएँ भी अच्छी एवं भाव-पूर्ण हैं। 'पृथ्वी'-शीर्षक कविता की निम्न-लिखित पंक्ति

पापिन के पाप-भार ही तें चूरि ह्वै कै हाय,
देखि लीजौ धरा धूरि ह्वै कै उड़ि जाइहै।

पढ़कर कौशलेंद्रजी की

काँपता पवन अविराम पंथ चलने से,
धरा हुई धूल भार जग का उठाने से।

कविता याद आ जाती है।

'कृपाण', 'वीर-वज्र', 'अग्नि-आह्वान' आदि कविताएँ भी अत्यंत ओजस्विनी तथा वीर-रस के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

यहाँ अधिक उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं। बस, इतना कहना पर्याप्त होगा कि 'उमेश'जी की 'ब्रज-भारती' हिंदी-साहित्य की एक नवीन, कमनीय कृति है। जिन लोगों ने ब्रजभाषा के विरुद्ध यह अभियोग लगाया है कि उसमें नवीन भावों या नवीन छंदों का उपयोग नहीं हो सकता, वे इस पुस्तक को एक बार आद्योपांत देखें, उन्हें वह मिथ्या धारणा नितांत भ्रमात्मक सिद्ध होगी। ब्रजभाषा-साहित्य में ऐसी सुंदर पुस्तक अभी तक नहीं निकली। ऐसी अनुपम पुस्तक लिखकर 'उमेश'जी ने हिंदी की अवर्णनीय सेवा की है।

STAR TRADE SKB MARK REGD.
स्टार ट्रेड-मार्क

डाबर (डाः एस, के, बर्मन) लिः

५० वर्ष से अधिक का सुप्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेंट दवाओं का बृहत् भारतीय कार्यालय!
विभाग नं० (४६) पोस्ट-बक्स ५५४, कलकत्ता।

सुधा! तेरे बाल तो बड़े रूखे, खराब और छोटे थे। ये इतने चमकीले, सुंदर और लंबे कैसे हो गए?

केश-राज
(Regd.)
(केश-तेलों का राजा)

तुमने 'सुधा' में क्या यह विज्ञापन पहले कभी नहीं पढ़ा? यही मेरे बालों की कायापलट करनेवाला है। देखो—

मूल्य प्रति-शीशी ॥।-) तेरह आना; डा० म० ॥=)

इसके लगाने से बाल लंबे, चिकने, काले और मुलायम होते हैं। बालकों का रूखापन और खुश्की दूर होती है। इसमें नाम-मात्र भी ह्वाइट आयल नहीं है। बालों की जड़ को मजबूत और उन्हें सुंदर करता है।

नमूना =) जो केवल एजेंटों से ही मिलता है।

नोट—दवाएँ सब जगह मिलती हैं। खरीदते समय स्टार ट्रेड-मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

लखनऊ शहर के सोल एजेंट—द्वा किंग्स मेडिकल हाल, २५, अमीनाबाद-पार्क

चीन की संस्कृति और उस पर लाव त्ज़े का प्रभाव

[श्रीरामनाथ 'सुमन']

आज हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं, जिसमें केवल गति है, और गति है। यह गति हमारी उन्नति की कसौटी बन गई है। आधुनिक मानव केवल इसी माप-दंड से अपने को और दूसरों को नापता है। यह सफलता, साहसिकता, प्रलोभन, धन, कार्य, युद्ध, संघर्ष और अशांति का युग जैसे अन्य किसी विचार-धारा का औचित्य मानने को तैयार नहीं। उसका विज्ञान दर्शन-शास्त्र का उपहास करता है; उसकी इंजीनियरिंग की सफलताएँ प्रकृति की ओर उपेक्षा से देखती हैं; उसकी शल्य-चिकित्सा मृत्यु पर विजय पाने की आशा से उन्मत्त है।

फिर यह सफलताओं और संभावनाओं का युग संसार की प्राचीन सभ्यताओं को क्यों मुँह लगने दे? क्यों वह उनकी ओर विजयोन्माद-भरी आँखों से न देखे?

पर ठहरिए। प्रश्न का एक उपसंहार भी है, और वह कुछ कम महत्त्व-पूर्ण, कुछ कम अर्थ-भरा नहीं है। हमारे ये चिकित्सागार, सैनिटोरियम, पागलखाने, जेल, कोढ़ियों के आश्रय-स्थान भरे हुए क्यों हैं? और क्यों दिन-दिन बढ़ते जा रहे हैं? हमारी बड़ी-बड़ी युनिवर्सिटियों और प्रयोगशालाओं के होते हुए भी इसके उत्तर में युग का अहंकार मौन और नत-मस्तक है। इतनी सफलताओं के होते हुए भी मानव का सुख परछाईं की भाँति साथ रहकर भी हाथ में नहीं आता। हमारे अध्यापकों की बुद्धि चक्कर में है।

और, यह स्वाभाविक है। आज हम जिस कृत्रिम 'बाह्य' में उलझे हुए और उसमें अपने को सजाकर दर्शनीय-से बने चल रहे हैं, उसने हमारे सच्चे 'अंतर' से हमारी आँखें फेर दी हैं। हमने बड़े गर्व के साथ जीवन के क्षणिक स्वार्थों को जीवन के तात्त्विक एवं आध्यात्मिक सत्यों पर प्रधानता दी है। आत्मा के प्रकाश-मंदिर की जगह ईंट और पत्थर के चकाचौंध करनेवाले मंदिरों ने ले ली है, और हमारी सभ्यता हमें सरल एवं संतुष्ट जीवन से जटिल एवं अशांतिमय जीवन की ओर लिए जा रही है। हमारा मस्तिष्क नर-संहार के अस्त्रों के निर्माण में लगा हुआ है। होड़, प्रतिहिंसा, प्रलोभन, अहंकार से वातावरण विक्षुब्ध है। ऐसी अवस्था में यह आश्चर्य की बात नहीं कि प्राचीन ज्ञानियों एवं द्रष्टाओं का तत्त्व-ज्ञान हमें नहीं सुहाता। न केवल इतना, वरन् वह हमारे लिये उपेक्षा एवं अवहेला का विषय बन गया है। आजकल की सभ्यता प्राचीन सभ्यता के अनुयायियों का उपहास करने में गर्व का अनु-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

भव करती है। उदाहरणार्थ चीनियों को समाचार-पत्रों, भाषणों एवं सिनेमा-चित्रों द्वारा जंगली, कुटिल, कपटी एवं नितांत असभ्य जाति के रूप में आधुनिक सभ्यता ने हमारे सामने रक्खा है। चीनी अफ़ीमची है। वह गंदा है। वह विश्वास-घातक है। वह ख़ूँख़्वार है।

परंतु सत्य प्रचार के प्रहारों के बीच भी जीता रहा है, और इतिहास ने हमें बताया है कि चीनी सभ्यता संसार की एक अत्यंत प्राचीन सभ्यता है। और, जिस समय आज के सभ्यों के पुरखे जंगलों में जानवरों की तरह नंगे घूमते थे, तब चीन एक श्रेष्ठ समाज-व्यवस्था और सभ्यता का निर्माता होने का गौरव प्राप्त कर चुका था।

श्रीरामनाथ 'सुमन'

हम यह भी नहीं भूल सकते कि लगभग ४० करोड़ आदमियों का यह राष्ट्र शताब्दियों से अपनी कला-कुशलता और अपने परिश्रम के लिये संसार में विख्यात है। आज से २,००० वर्ष पहले बनी १२ सौ मील लंबी और २५ फ़ीट ऊँची चीन की दीवार आधुनिक सभ्यता के अहंकार एक उत्तर है। हम यह भी नहीं भूल सकते कि काग़ज़ और मुद्रण-यंत्र (जो आज की सभ्यता की रीढ़ हैं) विश्व को चीन की देन हैं, और वस्त्रों के योरपियन नामों में से अनेक का जन्म चीन में हुआ, जैसा सिल्क, सैटिन, नानकिन इत्यादि से प्रकट है। चीनी सभ्यता में सदा सुशीलता और नम्रता पर ज़ोर दिया गया है। वहाँ शिक्षा का उद्देश्य विद्या नहीं, सदाचार एवं शिष्टाचार है। चीन की सभ्यता का उल्लेख करते हुए अमेरिका के डॉ० अल्फ्रेड मार्टिन ने एक बार लिखा था—

"...the fundamental aim of all her education has been not so much learning as behaviour. Hence it happens that, in some respects, the Chinese, as a whole, are the most moral people in the world. They are taught from childhood to rely on reason rather than on physical force for the vindication of their rights. So high is the standard of business ethics that a paper contract is not necessary to bind a Chinese merchant. Etiquette is scrupulously observed in every walk of life, making a regularly organised police force unnecessary. Politeness, de-

Digitized by eGangotri

ference to elders, respect of authority, are conspicuous traits in all classes of society. These, which are among the acknowledged marks of the highest possible civilization, we find on a national scale in China."

"चीन की शिक्षा का मूल उद्देश्य पांडित्य उतना नहीं रहा है, जितना शिष्टाचार। इसलिये कुछ दृष्टियों से तो चीनवाले संसार में सबसे सदाचारी लोग हैं। उन्हें बचपन से ही सिखाया जाता है कि वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिये शरीर-बल की अपेक्षा विवेक पर अधिक आस्था रक्खें। व्यापार में ईमानदारी का दर्जा इतना ऊँचा है कि चीनी व्यापारी के लिये किसी काग़ज़ी वायदे की ज़रूरत नहीं पड़ती। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिष्टाचार का पालन इस तरह किया जाता है कि नियमित पुलिस की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। शालीनता, गुरुजनों का आदर, अधिकार के प्रति श्रद्धा, ये बातें समाज के सभी वर्गों में पाई जाती हैं। ये गुण सर्वोच्च सभ्यता के चिह्न हैं, और ये चीन में राष्ट्रीय—समष्टि—रूप में पाए जाते हैं।"

चीन की इस सभ्यता पर जहाँ कनफ़्यूशश का प्रभाव है, वहाँ लाव त्ज़े का प्रभाव भी कुछ कम नहीं। तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से तो लाव त्ज़े का स्थान निश्चय ही कनफ़्यूशश से कहीं अधिक महत्त्व-पूर्ण है। लाव त्ज़े का जन्म ईसवी सन् के लगभग ६०४ वर्ष पूर्व हुआ था। आरंभ से ही त्ज़े गहराई में डूबकर सोचने का आदी था। उसने कनफ़्यूशश की भाँति दुनिया में जो कुछ जैसा देखा, उसे ही नहीं मान लिया, वरन् उसके बारे में बार-बार विचार किया—"ऐसा क्यों है ? कौन ऐसा कर रहा है ?" ज्ञान की प्रबल प्यास उसके जीवन में आरंभ से दिखाई पड़ती है, और उसका 'क्यों' सदा उसके मन को जाग्रत् एवं सतर्क रखता है।

कहा जाता है, चाऊ-प्रांत में (जहाँ त्ज़े रह रहा था) शासन-व्यवस्था इतनी ख़राब हो गई थी कि सदा झगड़े, फ़साद और विद्रोह होते रहते थे। जनता त्रस्त और दुःखित थी। त्ज़े को जनता की ग़रीबी और दुःखों ने प्रभावित तो किया, परंतु कनफ़्यूशश की भाँति उसने कर्म एवं सेवा का मार्ग न पकड़कर निवृत्ति और आध्यात्मिक चिंतन का मार्ग पकड़ा। संसार के दुःखों से दूर होकर एकांत में रहने के लिये देश छोड़कर चल दिया। परंतु सीमा-प्रांत पर जो सेना रहती थी, उसके नायक ने उसे रोक लिया, और इस 'ज्ञानवयोवृद्ध' (लाव त्ज़े का यही भाव है) से अनुरोध किया कि संसार का त्याग करने के पूर्व वह जीवन के तत्त्व-ज्ञान को लेख-बद्ध कर दे। त्ज़े ने उसी सैनिक-दल के साथ रहकर वहाँ वह पुस्तक लिखी, जो ताव-धर्म के लिये वेद की भाँति पवित्र एवं श्रेष्ठ है। मात्रा एवं परिमाण की दृष्टि से यह एक बहुत छोटी पुस्तक है। इसमें मुश्किल से पाँच हज़ार शब्द होंगे, परंतु उच्च तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से यह संसार की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक है। इसकी भाषा, इसके भाव, सब इसकी महानता एवं श्रेष्ठता प्रकट कर रहे हैं। चीनी भाषा एवं तत्त्व-ज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान् अध्यापक गोवलेंज ने इस पुस्तक की श्रेष्ठता के संबंध में लिखा है—"One of the most eminent master-pieces of the Chinese language; one of the profoundest books of philosophy the world has ever produced."

"यह चीनी-भाषा के श्रेष्ठतम ग्रंथों में से अन्यतम है; और संसार के तत्त्व-ज्ञान के ग्रंथों में एक अत्यंत श्रेष्ठ एवं गंभीर पुस्तक है।"

इस पुस्तक के दो खंड हैं। पहले खंड 'ताव' में जीवन कैसे ? इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है। 'ताव'-शब्द का कोई पर्याय हिंदी, संस्कृत या अँगरेज़ी-भाषा में नहीं है, इसलिये उसे समझाना कठिन है। प्रकृति या प्रवृत्ति-शब्द से उसका किंचित् अर्थ निकलता है। यह 'ताव' सब वस्तुओं के पीछे अंतर्हित है, यह मूल सत् है, यह विश्व की प्रकृति है। इस 'ताव' का प्रधान लक्षण यह है कि वही सब कुछ करता है, परंतु अपने कर्तृत्व का ज़रा भी आभास नहीं देता—बिना कुछ करने के लक्षण के सब कुछ करता है। वह महान् है; वह निराकार, अतींद्रिय और व्यापक है। वह अव्यय है, और कभी अशांत नहीं होता।

लाव त्ज़े ने लिखा—"इसी निष्क्रिय सक्रियता में 'ताव' मनुष्य के समुचित जीवन की व्यवस्था करता है। मनुष्य में सबसे बड़ा 'तेह' या विशेषता यह होनी चाहिए कि वह इस 'ताव' की शांति एवं निष्क्रियता में ओत-प्रोत हो जाय। संसार में यह जो अशांति है, यह जो उत्तेजन है, इसके सहारे किसी आदर्श की प्राप्ति की आशा मूर्खता है। संसार में आसक्ति, उसे सुधारने या बिगाड़ने की तीव्र आकांक्षा, सब पाप है। आचार के तीन आभूषणों में 'ऊवेई' (निष्क्रियता) सर्वोत्तम है। सच्चा शिष्य चिर-मौन रहता है, और 'ताव' के विषय में भी कुछ नहीं कहता। वह सब विद्याओं का त्याग एवं और जानने की इच्छा की उपेक्षा करता है। वह शून्यवादी है।"

इस निष्क्रियता में, जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है, हमारे वेदांत-ज्ञान का अतिशय साम्य है। हमारे यहाँ जो कर्मों से पूर्ण निवृत्ति या अनासक्ति है, वही 'ताव'-धर्म में 'ऊवेई' है। इस पुस्तक के अध्ययन से प्रतीत होता है कि 'ताव'-धर्म की शिक्षाएँ न केवल उच्च दार्शनिक तत्त्वों से भरी हैं, वरन् सार्वदेशिक भी हैं। जब ईसा का जन्म नहीं हुआ था, और जब ईसाई-धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, तब, ईसवी सन् के आरंभ के ५०० वर्ष पूर्व, लाव-त्ज़े ने लिखा था—"जो भले हैं, उनके लिये मैं भला हूँ, पर जो भले नहीं हैं, उनके लिये भी मैं भला हूँ।" बुराई के बदले भी भलाई का यह कैसा उदाहरण है।

जिन चीज़ों से आसक्ति बढ़ती है, उन सबका लाव-त्ज़े ने विरोध किया है, फिर चाहे वे

Digitized by eGangotri

धार्मिक बातें हों या और कोई। लाव त्ज़े का देवताओं में कोई विश्वास नहीं था। उसने सब प्रकार की पूजा-उपासना का विरोध किया है। पर धर्म की संकीर्णताओं का विरोधी होते हुए भी लाव त्ज़े आध्यात्मिकता में ओत-प्रोत था। उसका कहना था कि जीवन की संपूर्ण प्रवृत्तियाँ हमें अहंकार की काई और दलदल की ओर ले जाती हैं, इसलिये हमें उनसे निःसंग होकर शून्य में उठना चाहिए। इसीलिये उसने कहा कि मनुष्य की मुक्ति का उपाय 'ताव' के साथ सान्निद्धय है।

'ताव तेह किंग' के अध्ययन से स्पष्ट है कि इसका तत्त्व-ज्ञान परिपूर्ण आत्मा का तत्त्व-ज्ञान है; वह सत् और असत् की पूर्ण एकात्म्यानुभव का सिद्धांत है। हेगेल से २३०० वर्ष पूर्व उसके कुछ मौलिक सिद्धांतों का प्रतिपादन हम लाव त्ज़े द्वारा होता देखते हैं। यह बताता है कि वह परिपूर्ण सत् (Absolute Being) ही सत्ता और असत्ता, चेतन और जड़, सत् और असत् (being and not-being) का स्रोत है। सत् या चेतन तत्त्व है, सार है। असत् या अचेतन अस्तित्व है। पहला अरूप है, दूसरा रूपवाला।

लाव त्ज़े के मत से "चूँकि चेतन या सत् ही अचेतन या असत् का स्रोत है, इसलिये चेतन या सत् के प्रति एकात्म्यानुभूति न होने देने से मनुष्य अचेतन या असत् को—अर्थात् जिसका रूप और अस्तित्व प्रकट है, उन सबको—प्राप्त कर सकता है।..... कर्म से निःसंगता ही संपूर्ण शक्ति का स्रोत है। ज्ञानी जल की भाँति है, जो देखने में सबसे कोमल चीज़ है, पर कड़ी-से-कड़ी चीज़ को तोड़ देता है। ज्ञानी होने के लिये मनुष्य को सद्योजात शिशु की भाँति होना चाहिए।.....प्रत्येक वस्तु से उसकी विरोधी चीज़ पैदा होती रहती है—कठिन से सरल, सरल से कठिन,.....प्रथम से अंतिम और अंतिम से प्रथम, का क्रम चलता है। दुर्जन और सज्जन, दोनों एक दूसरे के लिये आवश्यक हैं।"

व्यावहारिक नीति की दृष्टि से भी लाव त्ज़े के विचार उपयोगी हैं। उसके मत से मनुष्य को आत्मा की उस अंतर्मुखी शांति को पाने का लक्ष्य अपने सामने रखना चाहिए, जो उसे नियमों एवं बंधनों से उदासीन या मुक्त कर देती है, और अपने आप सत्य की ओर ले जाती है।.....प्रत्येक में 'ताव' व्यक्त है। व्यक्ति के इस दैवी तत्त्व के अंश बाह्य जगत् में भी हैं। इसी कारण निसर्ग में इतनी व्यवस्था और सामंजस्य है, और इसकी प्राप्ति से ही अपूर्ण पूर्ण हो जाता है। इस प्रकार इस चिरंतन 'ताव' की स्थिति है। वह अदेह, सर्वव्यापक और संपूर्ण जगत् का नियामक है। चूँकि यह सर्व-व्यापक है, अतः मनुष्य में भी यह उसके विवेक-रूप में सन्निहित है। यह स्वयं अपनी ओर जाने के लिये मानव को प्रेरित करता है। मनुष्य को केवल निष्क्रिय, अनासक्त भाव से इस प्रेरणा का अनुसरण करना चाहिए। उसे वस्तुओं की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रकृति बदलने या प्रकृति के नियमों में परिवर्तन करने की चेष्टा छोड़कर ताव के प्रति आत्मार्पण करना चाहिए। इसी शांति एवं विश्वास में उसे महान् शक्ति प्राप्त होगी।

कनफ़्यूशश और लाव त्ज़े का गंतव्य स्थल एक ही है। प्रकृति में जो क्रम, व्यवस्था और सामंजस्य है, उसे दोनों जीवन के संपूर्ण व्यक्तिगत संबंधों में प्रतिफलित करना चाहते हैं। पर दोनों के साधन और मार्ग भिन्न हैं। कनफ़्यूशश प्रवृत्तिमार्गी है, तो त्ज़े निवृत्तिमार्गी। लाव त्ज़े नियमोपनियमों एवं आचारों के अनुसार चलने में विश्वास नहीं रखता; वह अंतःशांति, पवित्रता, निःसंगता और 'ताव' की प्रेरणा के प्रति आत्मसमर्पण में विश्वास रखता है। वह व्यक्ति की आत्मा के मूल में जाकर उसे संस्कृत करता है। वह हृदय को, आचरण के अंतःस्रोतों को स्पर्श करता है। वह जानता है कि अंतःशुद्धि से बाह्य शुद्धि अपने आप हो जायगी। लाव त्ज़े मानव-जीवन को अंदर से परिष्कृत करता है; कनफ़्यूशश उसे बाहर से संस्कृत करना चाहता है। लाव त्ज़े अधिक आध्यात्मिक है, और कनफ़्यूशश अधिक नैतिक एवं व्यावहारिक। डॉ० मार्टिन ने दोनों की तुलना करते हुए ठीक ही लिखा है—"The one operated from the centre to the circumference, the other from the circumference to the centre."

"एक केंद्र से परिधि की ओर जाता है; दूसरा परिधि से केंद्र की ओर।"

यह ठीक है कि कनफ़्यूशश लाव त्ज़े से अधिक लोक-प्रिय हुआ, पर इसका कारण यही था कि लाव त्ज़े का तत्त्व-ज्ञान गूढ़ है, और कठिन तप एवं संयम के बिना उसका अनुकरण संभव नहीं। आध्यात्मिकता कभी लोक-प्रिय नहीं हुई। पर चीनी सभ्यता एवं संस्कृति पर लाव त्ज़े का प्रभाव कुछ कम नहीं है। चीनियों में जो नम्रता, अद्भुत सहन-शक्ति इत्यादि है, वह उसी की गहरी छाप का परिणाम है। हाँ, यह दुःख की बात है कि आज उसी के नाम पर उसकी शिक्षाओं के बिलकुल विरुद्ध आचरण हो रहा है, पर ऐसा अन्याय मानव-स्वार्थ ने सभी धर्मों के तात्त्विक सत्यों के साथ किया है। ईसा के अनुयायी मानव-संहार में पटुता प्राप्त कर रहे हैं, और बुद्ध के अनुयायी मांसाहार में प्रमुदित हैं।

कलेंडर छपाइए !

समय आ गया है। नमूने मँगाइए, और पसंद करके अभी से ऑर्डर बुक करा दीजिए। गत साल में हमारे पास आख़ीर समय पर इतने ऑर्डर आ गए थे कि हम जल्दी-जल्दी छपाकर ग्राहकों के पास समय पर नहीं पहुँचा सके। कलेंडर विज्ञापन का सबसे उत्तम साधन है। इसके बिना व्यापार में वृद्धि नहीं हो सकती। कृपया रेट और नियम के लिये आज ही पत्र डाल दीजिए।

मैनेजर गंगा-कलेंडर-मैनुफ़ैक्चरिंग कंपनी, २५, लाटूश रोड, लखनऊ

Digitized by eGangotri

समय

[श्रीकामेश्वरनाथ भार्गव, विशारद]

आज बी० ए० का परीक्षा-फल निकल गया है, और प्रमोद उस दुस्तर सागर को तैर गया है। जब से उसने समाचार-पत्र देखा है, तब से उसके विवर्ण मुख पर न-जाने कैसा लोना-सा भाव झलक आया है। पत्नी ने सुना, तो विद्युत् की तरह प्रसन्नता की रेखा उसके होठों पर दौड़ गई, चिंतित गालों पर बरबस खून दौड़ आया। उसने प्रमोद की ओर कृतज्ञता-भरे बड़े-बड़े दो पानीदार नेत्रों से देखा, जैसे उसे उसने गहरे पानी से उबार लिया हो। वह सोचने लगी—"वह बड़े ग़रीब हैं; बड़ी कठिनाई से इस सागर में ग़ोते लगाकर बाहर निकलने का प्रयत्न कर रहे हैं। बड़े कष्ट और विषमता से उन्होंने ट्यूशनें कर, अपनी संचित पूँजी इस सट्टे में लगाकर यह बी० ए० की डिगरी हासिल कर पाई है। इस उत्तीर्ण होने पर ही हम दोनो के आशा-तंतु बँधे हुए हैं, और अब यही प्रश्न हल करना है कि किस प्रकार जीवन यापन किया जाय।"

वह जानती है, प्रमोद के इस पर कितने अरमान हैं, पर जैसे उनका भविष्य विकराल रूप में सामने खड़ा दाँत किटकिटा रहा है। एक पतली-सी टेकरी पर उनका आशा-दीप रक्खा है; न-मालूम कब, कौन-सी वायु से, वह बुझ जाय। उसे ऐसा जान पड़ने लगा कि भविष्य उनके छोटे-से संसार को हज़म कर डकार भी न लेगा।

उसकी आँखें पानी में तैरने लगीं। इसी समय उल्लास से प्रमोद ने उसका आलिंगन कर मुँह चूम लिया। उसने इसका कोई भी प्रतिरोध न किया। हृदय की संचित पूँजी एक दूसरे के आलिंगन से पिघलकर बह निकली। प्रमोद का हृदय रो उठा, आत्मा व्याकुल हो उठी। प्रमोद ने उसे अपने वक्ष से हटाया, और उसके विषादमय, सलोने मुखड़े की ठुड्डी को ऊँचा कर बड़े प्यार से कहा—"अरे, तुम तो रोती हो मनू!"

वह उसके आँसू पोछने लगा।

मनोरमा चुप न हुई, वह और भी सिसकने लगी। उसका मुख ऊपर हो गया, पर पलक नीचे ही गिरे रहे, जैसे वे कृतज्ञता से नर्म होकर नीचे ही पड़े रहना चाहते हों। प्रमोद ने उन जल-बिंदुओं से एक बड़े सत्य की कल्पना की, पर अनजान बनकर बोला—"बोलो न, मनू!"

उसकी पलकों को किसी तार ने जैसे ऊपर खींच लिया। वे ऊपर उठीं, और मनोरमा के मुख पर एक नवीन भाव-मिश्रित विषाद आ गया। बोली—"कुछ भी तो नहीं है। यह तो खुशी है न।" उसका स्वर कुछ कंपित-सा था, कुछ झिझका-सा।

आत्मा भुनकर राख हो रही है—फिर भी नारी-प्रवृत्ति सुखी है, प्रसन्न है। इसी से जैसे उनके नयनों में अलसता के स्थान पर अधिकतया अवसाद और सतर्कता बढ़ जाती है—वह आभा नहीं, वह तेज नहीं, केवल वहाँ रह जाते हैं दो कोटर-से नेत्र, और सुता हुआ म्लान चेहरा। और, फिर इन परिस्थितियों से डरकर भी वे निडर-सी होकर कहती हैं—"हम इसमें भी खुश हैं।" प्रमोद टीस उठा। उसे दुख नहीं हुआ, वेदना होने लगी। हृदय पिघलकर कोयों में संचित हो गया। प्रमोद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

निर्निमेष दृष्टि से ताकता हुआ अवरुद्ध कंठ से बोला—"कितना कठिन है यह जीवन-संग्राम मनू? यदि इसमें सफल हो सकता।"

मनोरमा के पलक उठे—कंपित, हलकी वायु से थिरकते हुए तिनके की तरह। आँखें प्रमोद से चार हुईं। पर वह अपने नेत्रों को स्थिर न रख सकी, और वे उसी तिनके की तरह पृथ्वी चूमने लगे। कितना रहस्यात्मक है उस तिनके का उत्थान-पतन। वह बोली—"इतने हताश क्यों...?"

धीरज से वह अधिक न बोल सकी। प्रमोद ने इस बात पर ध्यान दिया या नहीं, नहीं कह सकते कि एक नौसिखिया नाविक भयंकर भँवर में पड़कर भी मलार गाता है। पर वह कहने लगा—"फिर तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ? कोई इतना भी तो नहीं देगा, जिससे जीवन की रस्सी कट जाय।"

एक विकट समस्या मनोरमा के समक्ष आ उपस्थित हुई, जैसे उसे उसको ज़बर्दस्ती ही हल करना होगा। पर वह उस समस्या को क्योंकर हल करे? जब स्वयं प्रमोद ही अधीर हो रहा है, तो उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या करे? और, यदि वह समस्या हल नहीं करती, तो भविष्य तो प्रत्यक्ष है ही—एक रुद्र रूप में दारिद्र्य और क्षुधा उनके सामने खड़ी हो जायगी, और फिर उससे बचना दुर्निवार हो जायगा। फिर उस समय दोनो सास्तित्व हो ऐसी जगह जा पड़ेंगे, जहाँ क्षुधा और दारिद्र्य एक समूह में खड़े हो बिलबिलाएँगे। मनोरमा ने विचारा और बहुत कुछ। शांत और गंभीर स्वर में बोली—"जिस ईश्वर ने हमें पैदा किया है, वह हमें खाना भी देगा। भगवान् ऐसा हीन पुरुष नहीं, जो हमें यों ही मर जाने देगा। हमारी उत्पत्ति किसी अलक्षित भाव से नहीं हुई है। अपने उत्पन्न करने में भी तो उसका कुछ ध्येय है। उठो, सक्रिय बनो। कर्तव्य की कसौटी पर चढ़ समुद्र में कूद पड़ो, और साथ में.....साथ में मैं हूँ। छिः! अकर्मण्य कब तक बने रहोगे। पार लगाना उसका काम है, और फिर भाग्य....."

इतनी सतर्कता से बढ़ती हुई भी वह अपने विचारों पर सक्रम न चल सकी। 'भाग्य'? उसे जैसे लगा—यह सब व्यर्थ है; उसने जो कुछ कहा है, सब झूठ है; छाया-मात्र है। भाग्य-पिंड तो उसे गंभीर समुद्र में अनिश्चित-सा दिखाई दिया। वह काँपकर चुप रह गई। सचमुच यदि वह ज़रा-सी भी सचेत न होती, तो अचेत हो चिल्ला अवश्य उठती। उसकी उथल-पुथल प्रमोद से अलक्षित ही रही, वह अपनी चिंता में ही मग्न रहा। मनोरमा की चुप्पी उसके मस्तिष्क में खट्-से लगी, और वह सचेत हुआ—"पर, क्योंकर ईश्वर पर भरोसा किया जाय। बच्चे निर्दोष और निष्कपट होते हैं। उसे उन पर तो दया करनी चाहिए न। हम पर न करे, न सही। 'रानी' का बिलखना मुझसे तो नहीं देखा जाता। और, चारो ओर अँधेरा है, अँधेरा। एक भी तारा तो टिमटिमाता दिखाई नहीं पड़ रहा है, जिससे उसी के प्रकाश में आगे बढ़ने का प्रयत्न करूँ।" उसके स्वर में विकंपित निराशा थी।

आँधी से उखड़े पेड़ की तरह प्रमोद खाट पर जा गिरा। चिंता से आँखों के सामने अँधेरा फैल गया। मनोरमा भी खड़ी न रह सकी। उसका निगृहीत संयम भी स्खलित होने लगा। अस्त होती हुई गोधूलि की संध्या में घड़ियाल बज रहे थे—वे अभागे भी विपत्ति की आशंकाओं से टंकरित हो उठे।

* * *

महत्त्वाकांक्षावाले प्रमोद को इस दुर्गम संसार में पेट पालने का कोई विषम मार्ग भी तो न दिखाई पड़ा। उसकी चिंताओं से संसार का कोई कार्य रुका नहीं; अबाध गति से यह जीवन-संग्राम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलता रहा। क्षीण हास्य से समय ने उसकी अनेकों वस्तुओं को उसी के उदरस्थ करा दिया। और, ऐसी विषमताओं के मध्य भी तो उसका एक दैनिक नियम-सा बन गया था—बेकारी के मध्य अपने को भुलाने का यह सर्वोत्तम मार्ग था। ऊषा की वेला के आस-पास ही वह घर से निकल जाता, और कभी दोपहर की चटखती हुई धूप में और कभी गोधूलि में अपनी आशा-जनित निराशा को अपने सामने सवाक्-सी देख थर्राता हुआ घर आता था। बेचारी निस्सहाया अबला मनोरमा का मस्तिष्क चर्खी बन गया था। विषाद-युक्त नेत्रों से बैठी वह प्रमोद की बाट देखा करती, और वह कर ही क्या सकती थी। जो कुछ उसकी शक्ति में था, वह सब कुछ कर चुकी थी।

प्रमोद जहाँ गया, वहीं अवहेलना मिली, कटु तिरस्कार मिला, और मिली मीठी-मीठी फटकार। सब चुपचाप सुन लेता, दाँत पीसकर रह जाता। उसका अभिमान स्वार्थ की चक्की में निर्दयता से पीस दिया गया था। सहानुभूति के नाम पर लोग आँखें फिरा लेते थे। बची थी केवल एक पत्नी, जो आवेगों को दबा कभी-कभी सांत्वना दे दिया करती थी। जिस समय सारा शहर प्रकाश से जगमग-जगमग करता था, उस समय भूखा-प्यासा प्रमोद अपने कर्मों को अँधेरे में ठोका करता। कितना अंतर है! कितनी विडंबना!! कहाँ तो जीवन-अभिनय में पार्ट खेलनेवाले सक्रिय मनुष्य और कहाँ अकर्मण्यता की गोद में पड़ा हुआ बेचारा प्रमोद! पर उसके लिये और कोई चारा न था।

भोजन उसे कभी मिलता, कभी नहीं; और न भी मिलता, तो चिंता न थी। दारिद्र्य और वेदना ने उसे विमूढ़ बना दिया था। मनोरमा रोकती, तो झिड़क देता, चिल्ला पड़ता। मस्तिष्क में कीड़े लग रहे थे—किताबों की तरह दीमक उसके तन को चाटे जा रही थी। क्षुधावसाद उसके चेहरे पर स्थिर था। अपनी अस्पष्ट स्थिति का विचार कर वह काँप जाता, और डरकर आँखें बंद कर लेता। बाज़ार की झल्-झल् करती हुई वस्तुएँ उसके हृदय में तीर-सी जा खटकतीं—सदा नहीं, कभी-कभी।

उसे अपने जीवन से घृणा हो चली थी—अपने से ही नहीं, विश्व-भर से। समाज के नेताओं को देख वह राख हो जाता, खद्दरधारियों को देख उसकी आँखों में खून उतर आता था। पर वह निस्सहाय था, बल-हीन था, बाधा-युक्त था। एक समय था—कुछ दिन पहले ही—वह उनका आदर करता था, उनके लिये उसकी आँखों में शील था; पर आज वह उन्हीं की ओर क्रूर दृष्टि से देख रहा है। उनकी स्वार्थपरता देख वह उनकी मज्जा का स्वाद लेना चाहता है; चाहता है उनका खून अच्छी तरह चूसे। वह इस बात से अज्ञात है कि आज, कल, परसों—नहीं तो निकट भविष्य में—वह उनके कार्यों के मध्य पहुँच एक विस्फोटक पदार्थ का काम करेगा—जब, जिस समय वह बंधन-रहित होगा। कई बार उसने आत्मघात करने की कल्पना की, पर वे कल्पनाएँ सक्रिय न हो सकीं। कारण, मनोरमा और 'रानी', ये दो बाधाएँ स्थूल रूप में उपस्थित जो थीं। उसमें अभी इतनी हिम्मत नहीं हुई थी कि उन्हें निराधार छोड़ सके।

दिन, सप्ताह और महीने उलझते चले। परिवर्तन था भी और नहीं भी।

* * *

एक दिन की घटना है—

पूर्व के सिंदूरी रंग के साथ सक्रिय संसार की खट्-खट् प्रारंभ हो गई थी। प्रमोद उठा, और स्थिर नेत्रों से एक ओर देखता हुआ बाहर जाने को तैयार हुआ। इतने में मनोरमा ने अवरुद्ध वाणी में कातर होकर डरते-डरते कहा—"देखो, आज न जाओ; कुछ खा लो।"

कुछ दिनों से प्रमोद पर एक पागलपन सवार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हो गया था। ज़रा-ज़रा-सी बात पर वह उत्तेजित हो जाता, ऊधम-सा मचा देता, इसी से मनोरमा डर रही थी। जाते-जाते प्रमोद रुक गया। खड़ा रहा, और कुछ क्षण पश्चात् बोला—"क्या खाऊँ ? तेरा सिर ?"

"प्राणे..."

"छिः ! खाना देगी...अरे, ला, दे न, बैठी-बैठी क्या देख रही है ?" मनोरमा सहम गई—प्रमोद का ऐसा विकृत रूप उसने आज तक न देखा था। वह कुछ पीछे हट गई, पर प्रमोद प्रलाप-सा कर रहा था—"ओह, भूखे और प्यासे को भी क्या खाने की आवश्यकता है ? स्वार्थी दुनिया ? खाने के बदले तुझे रक्त दूँगा, रक्त। यह व्यभिचार भी करूँगा। भले ही गर्त में गिर पड़ूँ। पर, डर किसका ? मैं क्यों डरूँ किसी से। तू नहीं, मैं नहीं, कोई नहीं...अजब..."

विमूढ़ता में विक्षिप्त-सा हो झल्लाता हुआ किसी और ही उधेड़-बुन में बाहर निकला। आगे बढ़ा—जैसे एक-एक पग तौलकर रख रहा हो। सिर पर हाथ दे मारा, और फिर बग़लों में कठोरता से हाथ दबा, ओठों को काटता हुआ, समाज के बंधन और दूसरों के वैभव-जनित विषमयी वेदना को आँखों में दाबे वह चलने लगा। उसका मस्तिष्क तूफ़ान में जहाज़ की तरह पहाड़ियों से टकराकर लौट-लौट आता था—चूर नहीं हो रहा था—नष्ट होने की कोई संभावना ही न थी। इच्छा होने लगी कि सारे विश्व को निगल जाय, उसे भस्मीभूत कर दे। यह एक अमानुषीय धारणा कुहरे की तरह उसके मस्तिष्क में फैल रही थी, पर वह धारणा अव्यक्त थी। और, जब इस चिंता में लिप्त मनुष्य के स्वाभिमान, सम्मान, जड़ता और निराधारता के मध्य प्रमोद की स्थिति थी, तभी—"बाबूजी ! बाबूजी !!"

प्रमोद एकदम न रुका, रुक ही न सका। एक क़दम, दो क़दम और फिर अनंत पथ के एक बटोही की तरह वह निश्चल खड़ा हो गया। कुछ संभावना हुई, कुछ विश्वास। प्रतिशोध की अग्नि स्नेह की इन पतली झंकारों से परे थी—बहुत दूर, अगम्य-सी। मुड़ा, और मुड़ते हुए सुन पड़ा—"बाबूजी !" स्वर पर आँखें जमाईं, देखा—उसकी 'रानी'—कृशांगी, क्षुत्पीड़िता, दलिता, स्नेह-राशि 'रानी' पौली की चौखट पकड़े पुकार रही थी—"बाबूजी ! बाबूजी !"

उपहास करती हुई ऊषा की उस अरुणाई में भी प्रमोद दुःख से सुख की ओर, चिंतापरता से अचिंत्यावस्था की ओर आकर्षित हुआ। भगवती प्रकृति की उदारता का यह बाल-संगीत वह छोड़ न सका। इस उन्माद में भी, पागलपन में भी स्नेह का, ममता का एक क्षीण तार झन-झन कर रहा था। वह सब कुछ भूल गया। लौटकर चला उस काव्य की ओर—अपनी बिटिया की ओर। 'रानी' निश्चल नेत्रों से चौखट पकड़े किंवाड़ से सटी खड़ी रही। लपककर उसने उसे उठा लिया, उठाकर, कसकर बाहु-पाश में बाँध लिया, और चूम लिया—जैसे वह उससे छिनी जा रही हो, जैसे वह अवसर फिर कभी न मिलेगा।

उसकी मनःस्थिति अच्छी न थी। उन्निद्र रोगी की तरह विचार-हीन होने पर भी वह विचारी और तन्मय था—अक़्लमंद, पर किसी की साया में आया हुआ, थपेड़े खाया हुआ-सा। रानी के उलझे हुए बालों में हाथ फेरते हुए वह बोला—"क्या है, रानी ?"

"सिटमिट लाना मेरे लिये। मिठाई।"

हाय रे बच्चे का हृदय ! प्रमोद उलझ-सा गया, पर सुलझाने का कोई प्रयत्न न किया। उसके नेत्रों में स्वप्न-सा छा गया, छाती भारी हो आई। वह अविचलित न रह सका। वह अपने को भूलने लगा। सारा विश्व उसके लिये एक बिंदु-मात्र-सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो चला। अमंद भाव और अचल नेत्रों से वह अपनी बिटिया को निहारने लगा। रानी के निस्तेज मुख ने उसमें पुरुषार्थ भर दिया हो, वैसे वह अपनी स्थिति को उत्तुंग और सब वस्तुओं को तुच्छ देखने लगा। एक भाव उसके मस्तिष्क में और पैंठ जमाने लगा—वीतरागत्व, पर-समता के समावेश से उसके मस्तिष्क में एक लहर और आई—स्नेह से जलते हुए दीपक की, प्रतिशोध की।

"रानी, तुम्हारा यह फ़्राक फटा क्यों है?" सहसा वह पूछ ही तो बैठा।

उस निर्बोध बच्ची को भी जैसे यह प्रश्न खटक गया। वह प्रमोद के प्रश्न को समझ न पाई, इसी से उसने आश्चर्य से अनसमझ हो अपने दृष्टि-बिंदु प्रमोद के मुख पर गड़ा दिए। डरते-डरते बोली—"अम्मा कहती हैं, तुम्हारे पास और नहीं है।"

प्रमोद के नेत्रों से टप्-से दो आँसू टपक पड़े—"रानी!"

"बाबू!" रानी सहमकर चिल्लाई—"बाबू, तुम तो रोते हो?"

बिना किसी प्रेरणा के यह सब कुछ हो गया। कल और आज के मध्य सुख-दुख की अनुभूति अंतर्हित होते-होते रुक गई। उसने रानी को गोद से उतार दिया। "तेरे लिये मिठाई लाऊँगा बेटी, कहीं से भी, पर.....पर तू अभी बड़ी भोली है।" वह जाते-जाते बड़बड़ाने लगा।

* * *

निराशा की गुदड़ी में आशाओं को लपेटे प्रमोद लक्ष्य-हीन चलने लगा। वह आज बड़ा विरक्त था। रानी आज उसके लिये कठोरतम थी, लेकिन उसकी संतुष्टि का कोई उपचार न था। केवल यही समस्या उसके सामने थी, और सबको भूल गया था।

"प्रमोद।"

गर्दन ऊपर की, माथे में शिकनें पड़ गईं। यह उसके जातीय पंच-सरपंच थे।

"अच्छे तो हो?"

"हाँ, आपकी दया से बहुत अच्छा हूँ। कहिए, कुछ काम है?"

"नहीं तो, यों ही पूछा था।"

"यह तो आप खुद ही देख सकते हैं कि अच्छा हूँ या बुरा। देख लीजिए न।" प्रमोद के शब्दों में घृणा और तिरस्कार था।

"शांत होओ प्रमोद। हुआ क्या है?"

प्रमोद पर फिर पागलपन सवार हुआ—"हँ-हँ हुआ क्या है? आप देख नहीं रहे हैं क्या?"

"क्या?"

"अरे साहब, होना क्या है? मौत से बढ़कर दुनिया में और क्या होना है। चलो, जल्दी मरेंगे, पाप कटेगा। आपकी इल्लत छूटेगी। आप इसमें फँसकर अपने कार्यों में क्यों बाधा डालते हैं?"

प्रमोद की लाल आँखें, शब्दों का रहस्य और कथन की आड़ में छिपे तांडव-नृत्य का अट्टहास देख वह काँप गए; पर गंभीर स्वर में बोले—"सच कहो, क्या हुआ?"

उन्होंने प्रमोद का कंधा थपथपाया।

"ओह, कुछ भी तो नहीं हुआ है!" उसकी आँखों में खून बरबस दौड़ा आ रहा था—"आप पुण्य लूटे जाइए न। आपका किसी की हालत से क्या संबंध है। और, तीन जीवों की हत्या का अभिशाप आपको थोड़े ही लगेगा। छिः, आप और दोषी! असंगत है।"

इसी समय उसे याद हो आया—रानी का कृश गात, पीला चेहरा, बच्चे का हृदय, पिता का स्नेह। उसकी घृणा दूर-सी होती गई, पर उत्तेजना थी—"देखिए साहब, आपका पद बड़ा उत्तरदायित्व-पूर्ण है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्', पर आपको इससे क्या? आप तो अपना स्वार्थ साधे जाइए। फिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ऐसा अवसर हाथ न आएगा..., लेकिन इस समय आप चार पैसे का दान कर सकेंगे क्या ?"

उसके स्वर में आजिज़ी थी। उन्होंने सब कुछ समझ लिया, और जेब में जितने भी पैसे थे—पैसा, इकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी, रुपया—सब उसकी हथेली पर रख दिए। कितना दीर्घ दान था यह !

"पर मुझे तो चार पैसे चाहिए, चार पैसे ! इन सबकी आवश्यकता नहीं है।"

"ले जाओ इन्हें भी मेरी ओर से।"

"नहीं।" उसका स्वर दृढ़ था—"उपकार।" इकन्नी लेकर वह आगे बढ़ा। पंच महाशय देखते ही रह गए। प्रमोद का प्रतिदान केवल 'उपकार' शब्द में था। जीवन का सामंजस्य वह परिस्थितियों से न कर सकता था, और न उसे अभी तक जीवन को पापमय बनाना आता था। यदि ऐसा कर सकता, तो—

* * *

तो लोग उसे आज दुरदुराते नहीं। पर, इस प्रकार वह कब तक रह सकता था। परिस्थितियाँ प्रतिदिन गूढ़ और जटिल होती गईं ; जीवन कठोर, विषमय। समय के साथ उसकी सहृदयता नष्ट हो चली थी, और विपरीत इसके उसके हृदय में एक स्वार्थी भाव प्रबल होता जा रहा था—अपनी रक्षा और समाज से प्रतीकार। और, ऐसी भावनाएँ उदय होकर सदा की तरह अस्त नहीं हो जाने लगीं। द्वंद्व छिड़ता और धीरे-धीरे वे अपनी स्थिरता जमा लेतीं। उसके कोटर-लीन नेत्रों में पागलपन की विभीषिका ज्वलंत थी। जिस 'खून' के शब्द से वह पहले काँप उठता था, उसे अब उसका हृदय प्यार करने को तैयार है। सब उसके सामने अब निरर्थक है। हृदय में किसी की भी चाह नहीं रही है। हृदय का एक-एक कोना विचित्र प्रकार के अमानुषिक भावों से पूरित होता जा रहा है, पर कोई भी उस प्रवाह को रोकने का प्रयत्न नहीं कर रहा है। "कर्मण्येवाधिकारस्ते"-वाली उक्ति उसकी चमकती हुई आँखों से लपटें निकाल देती है। उसके सामने अनेक रूपों में नाचती रहती है—अपनी शरीर-रक्षा। मार-पीट ! हत्या !! खून !!! ये सब तो, ओह, उस सुख को पाने के सरल मार्ग हैं। पाप उसके लिये पुण्य है, और उससे प्राप्त सुख उसके लिये दुख नहीं, शांति है।

इन्हीं दिनों असहाय दारिद्र्य, निविड़ जठराग्नि और अश्रांत ज्वर में कई दिनों से पीड़िता मनोरमा आज चिंता-मुक्त हो गई ! उड़ने के पूर्व पंछी एक हलकी-सी चीख कर गया। प्रमोद आया—मनोरमा का शरीर निर्जीव पड़ा था। न-मालूम कब तक विस्फारित नेत्रों से वह इसे देखा किया। उसने उसके मास-पिंड को हिलाया-डुलाया, पर सब मौन, निश्चेष्ट। उन्माद में वह मुट्ठी बाँध उठ खड़ा हुआ। खिड़की के बाहर देखा—सब कुछ शांत, नीरव, क्षितिज के उस छोर पर एक काली भयावह रेखा। पास में ही एक ओर पड़ी थी 'रानी' ; भूख से तड़पती हुई आज वह रोती-रोती सो गई थी। अपनी निर्दय आँखें जमाए प्रमोद उधर ही चला। आज इस अप्रस्तुत आपत्ति ने उसे पूरा निर्दयी और पत्थर बना दिया था। 'रानी' के लिये उसके हृदय में आज स्नेह के निर्मल प्रासाद के स्थान पर एक जीर्ण-शीर्ण खँडहर था, जिसमें अबाबीलें और चमगीदड़ें खचाखच 'चिड़-चिड़ा' रही थीं। वह आज बड़ा उग्र और दारुण लग रहा था।

सोती 'रानी' को उसने अपने पंजों से जा झिंझोड़ा। 'रानी' चौंक उठी। "अम्मा...भूख... ...बाबू !"

तब तक प्रमोद ने उसे दोनो हाथों से कसकर उठा लिया था। उसमें आज बड़ी शक्ति आ गई थी। "क्या है ?...भूख ?...आज तुझे भी भर पेट खिलाऊँगा।...बोल...ले...ए...ए...."

Digitized by eGangotri

उसने 'रानी' को ज़मीन पर धर पटका। सिर धम्म से बोला। वह एक ओर को लुढ़क गई, और पीड़ा से आक्रोश कर उठी। वह आज रुधिर-प्रिय मूर्तिमान पिशाच था। वह हँसा—एक विकराल हास्य, आँखें चमक उठीं स्मशान की लपटों की तरह। 'रानी' के सिर से रक्त बहने लगा। वह बैठ गया। ख़ूनी हाथों को देख वह फिर हँसा-सा। 'रानी' करुण-क्रंदन कर रही थी, डरी-सी ऐंठी जा रही थी। प्रमोद ने उसे फिर उठाया, घिघियाकर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। प्रमोद इस बार हँसा नहीं। चेहरे पर एक मानवीय गंभीरता आ गई। उसने 'रानी' के रक्त-वर्ण सिर को देखा—देखकर काँप-सा गया। हृदय की कोमल वृत्तियाँ उभरने को हुईं, किंतु जठराग्नि, दारिद्र्य, मानव-जाति से प्रतिशोध! उसकी आँखों में लपलपाहट फिर स्फुरित हुई। वह निर्द्वंद्व हो उठा, और अंधा-सा बन उसकी गर्दन दबोच दी। क्षीण रव से 'रानी' की हड्डियाँ कड़कड़ा उठीं—"...म्मा...बाबू.....ग़ ऽ ऽ ऽ.....।" बंद आँखें खुल पड़ीं, निकल पड़ीं, और खुली-की-खुली रह गईं। प्रमोद ने उसके निर्जीव गालों को फिर एक बार चूम लिया, पर उसकी छाती उफन रही थी—"तेरी मा गई, तू भी जा लुच्ची।—तुझे किसके भरोसे रख सकता था।"

नीरव रात्रि थी। प्रमोद उठ खड़ा हुआ। चतुर्थी की क्षीण चाँदनी पतले-पतले बादलों से झिर रही थी। उन निर्जीव देहों को वहीं छोड़ प्रमोद एक ओर को निकल पड़ा—लक्ष्य-हीन-सा।

* * *

कह नहीं सकते कि हत-प्राण उन दो शवों का क्या हुआ। पर हाँ, प्रमोद के भाग्य में कुछ और भी लिखा था। कुछ दिवस पश्चात् क्रांतिकारियों के एक दल के साथ प्रमोद भी पकड़ा गया। प्रमोद पर डी० एस्० पी० की हत्या का अभियोग लगाया गया था; और सत्य के पीछे तथा कुछ अपने कर्मों के प्रायश्चित्त-स्वरूप उसने सत्य बात की उपेक्षा न की। इसके प्रतिदान में उसे फाँसी का दंड मिला। लोग भले ही 'ख़ून के बदले फाँसी' कहकर इस न्याय को उचित कहें, पर यदि मूर्ख समाज उसकी अवज्ञा न करता, तो उसका भविष्य इतना कटीला और भयंकर न होता।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।),

डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)
१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।॥-)
२५ ,, ,, ,, ५=)

मिलने का पता
श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

लिक्खाड़जी

टॉल्स्टॉय-शैली सुमरि, मारि करम पै मेख,
यह बैठे लिक्खाड़जी लिखन ललित नवलेख।

(दीनानाथ व्यास)

Digitized by eGangotri

सुधा-चित्रावली

"सुधा, जनवरी, १९३७—पौष, १९९३, पूर्ण संख्या १२६"

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा
(आर्डर ५, क़ायदा १, ५)

मुक़द्दमा नं० ४१४ सन् १९३६ ई० ख़फ़ीफ़ा

बअदालत जनाब डॉक्टर लक्ष्मीनारायण मिश्र साहब बहादुर मुंसिफ़ जज ख़फ़ीफ़ा फ़तेहपुर ज़िला कानपु

विशेश्वरप्रसाद वल्द देबीदीन क़ौम वैश्य साकिन मौज़ा नबीशाह परगना कोयला ज़िला फ़तेहपुर

मुद्दई

बनाम

बिशेश्वरप्रसाद वल्द माधोप्रसाद क़ौम वैश्य साकिन हाल मुक़ाम लावलन सिटी नं० ८४ पोस्ट अटली कल

मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत २००) के दायर की है, लिहाजा आपको हुक्म होता है आप बतारीख़ २९ माह जनवरी सन् १९३७ ई० बवक़्त १० बजे दिन के अमालतन या मारफ़त वकील के मुक़द्दमे के हालात से वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमा का जवा सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हों और जवाबदेही दावा करें और हरगाह वही तारीख जो आपके इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तज हुई है। पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर व नीज़ तम दस्तावेज़ात को जिन पर आप अपनी जवाबदेही की ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आप को इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैरहाजिरी आप मसमू और फ़ैसल होगा।

बसन्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ ११ माह जनवरी सन् १९३७ ई० ज किया गया।

मुंसरिम

सेवी परिचित हैं। आपकी विजय
हिंदी की विजय है।]

लिक्खाड़जी

लेसीविन

एक अत्यंत गुणकारी, उत्तेजक, पुष्टिकारक और खोई हुई शक्ति को पुनः वापस लानेवाली

टानिक

इसमें जौ, लेसीथीन और चिरायता के सत्त और विटामिन प्राप्य हैं।

बंगाल केमिकल्स—कलकत्ता

टॉल्स्टॉय-शैली सुमरि, मारि करम पै मेख,
यह बैठे लिक्खाड़जी लिखन ललित नवलेख।

(दीनानाथ व्यास)

Digitized by eGangotri

सुधा-चित्रावली

श्रीयुत ब्रिजलाल बियाणी, अकोला (बरार)

[आप बरार-निर्वाचन-क्षेत्र से कौंसिल ऑफ़् स्टेट के चुनाव में अत्यधिक बहुमत से विजयी हुए हैं। आपको ५६२ में ४३८ मत मिले। श्रीबियाणीजी पिछले नागपुर-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। आपसे प्रायः सभी हिंदी-साहित्य-सेवी परिचित हैं। आपकी विजय हिंदी की विजय है।]

कविराज बिहारीलाल (बिजावर)

[आपका 'साहित्य-सागर'-नामक विस्तृत रीति-ग्रंथ छप रहा है। शीघ्र निकलेगा। आप सुंदर कविता करते हैं।]

Digitized by eGangotri

लोचनप्रसाद पांडेय

[आपकी 'पद-रज'-शीर्षक कविता ५३७ पृष्ठ पर प्रकाशित है ।]

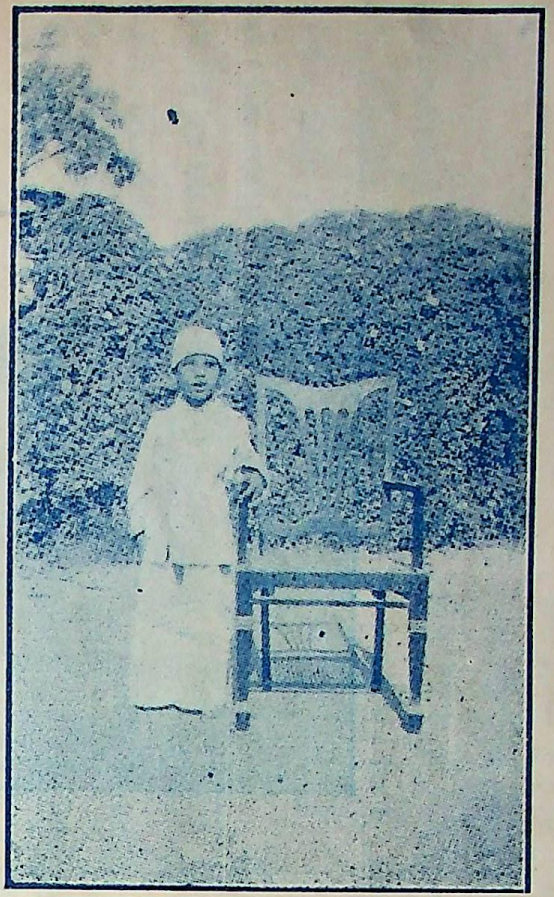

जन्मांध बालक रामदास

[अजमेर की सुप्रसिद्ध समाज-सेविका श्रीमती मनोरमादेवी ने अंधों के लिये 'होम फ़ॉर ब्लाइंड' नाम की संस्था खोली है । उसी संस्था के इस छात्र ने, अजमेर के गत अखिल भारतीय संगीत-सम्मेलन में, गान-प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया है । हम इस संस्था की हृदय से उन्नति चाहते हैं ।]

राजपूताने की एक रमणी

Digitized by eGangotri

१. वर्तमान नरेशों से

(१)

स्वारथ के साधने में ऐसी गुप्त चालें चलें,
जिनका न नाम कोई भी किसी को अँदाजा हो;
श्वेतवेष-धारी दगाबाज दानवों को राखि,
दबा खावें प्रजा-रोटी बासी हो कि ताज़ा हो।
सत्वगुण-हीन जहाँ धूर्तता की ऐसी मूर्ति,
जिनका अमित माया-भरा गाजा-बाजा हो;
बगुला - भगति - रत, कपट-निरत नित,
निंदनीय सर्वथा हैं रानी हो कि राजा हो।

(२)

त्रिलोकी के नाथ विष्णु रक्षक हैं त्रिलोकी के,
तुमने भी की है कभी प्रजा की भलाई क्या?
दल-दल। दानवों को उन्होंने की। देव-रक्षा,
बिपद प्रजा की कभी तुमने है मिटाई क्या?
'नवरत्न' अवतार बनते हो प्रभू के, तो
प्रभु धर्म पै भी कभी आँख है लगाई क्या?
आज तो तुम्हारे उस प्रभु की भी पूछ नहीं,
फिर अवतार की तो बात ही चलाई क्या?

गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

× × ×

२. पद-रज

शत-शत हीरन सों जड़ित चहत न सुबरन-मौर;
तव पद-पदुम-पराग-हित करहु कृष्ण! मन भौंर।
धनद नृपन सों सतत कहि हय गय हेम हवाल;
तुअ पद-रेनु बिसारि को निरभय भयउ दयाल!
दीन कृषक पग-धूरि सों करि भूषित निज भाल;
को नहिं बरबस बस कियो दीनबंधु * गोपाल।

लोचनप्रसाद पांडेय

× × ×

* हलधर-प्रिय।

३. कोकिल

एक बार—बस एक बार दे मीठा बोल सुना कोकिल !
जिस मधु-ऋतु की तू प्यारी है,
जिस पर तू भी बलिहारी है,
अब वही स्वयं ही आ पहुँची है, स्वागत-साज सजा कोकिल !
तू कुहू - कुहू कर एक बार,
बज उठें हृदय के तार - तार,
तू मधुर - मधुर निज वाणी से दे जीवन धन्य बना कोकिल !
तू डाल - डाल पर डोल - डोल,
प्राणों में अमृत घोल - घोल,
कानों में कर रस की वर्षा दे जग का ताप मिटा कोकिल !
तू चहक - चहककर, फूल - फूल,
कुसुमित डालों पर झूल - झूल,
आ, आम्र-कुंज में लुक - छिपकर दे मीठी तान गुँजा कोकिल !

सुशीलकुमारी मिश्र

× × ×

४. धूमिल फूल

स्त्रियों को स्वभाव से ही संगीत से अत्यधिक प्रेम है। इसलिये वह चक्की पीसते, खाना पकाते, चरखा कातते, झूला झूलते अथवा अन्य किसी समय भी संगीत को नहीं भूलतीं। भिन्न-भिन्न समयों पर गाए जानेवाले उनके गीत भिन्न-भिन्न हैं। दोपहर को जिस प्रकार हम मनोरंजन के लिये कोई काव्य-पुस्तक पढ़ते हैं, उसी प्रकार वे भी गीत गाती हैं। इस प्रकार के कुछ गीत निम्न-लिखित हैं—

आजु एकादसिया कै बरती रहब हम।
माई-बाप की सेवा करिबै,
उनहुँ के दुधवा से उरिन होब हम ॥ आजु० ॥
सास-ससुर की सेवा करिबै,
उनहुँ के हाड़ गया पहुँचाउब करिबै ॥ आजु० ॥
जेठा-जेठानी की सेवा करिबै,
उनहुँ के बलक अपन करि लेबइ ॥ आजु० ॥
देवरा-देवरानी की सेवा करिबै,
उनहुँ के मरद भइया करि समुझब ॥ आजु० ॥
भाई-भौजाई की सेवा करिबै,
उनहुँ के लवा से अदइ हम होबइ ॥ आजु० ॥
कुस-कन्या की सेवा करिबै,
उनहुँ के दयज दइ, उरिना होब हम ॥ आजु० ॥
उनहुँ के पाँव पूजि उरिना होब हम।
आजु एकादसिया कै परन करब हम ॥

कैसे सुंदर भाव हैं। जब ग्राम्य महिलाएँ एकत्र होकर इस गीत को अलापती हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो स्वर्गीया देवियाँ सुधा-वर्षण कर रही हों। कैसी महत्ता है! इस गीत को सुनकर भी कौन ग्राम्य रमणियों को अशिक्षिता कहेगा? निरक्षरा होते हुए भी वे कितनी ज्ञानवती हैं! जिसे अपने कर्तव्य का ऐसा सुंदर ज्ञान प्राप्त हो, उससे बढ़कर कौन उच्च है? गीत-रचयित्री ने

Digitized by eGangotri

एकादशी के व्रत की कैसी सुंदर व्याख्या की है। माता-पिता एवं सास-ससुर की सेवा इच्छित फल-दायिनी होती है। वृद्धावस्था में यदि वे प्रसन्न होकर आशीर्वाद दें, तो उस आशीर्वाद में संसार की सारी ऋद्धि-सिद्धियाँ निहित हैं। जेठ-जेठानी के पुत्रों को अपने पुत्र के समान जानना और देवर को छोटे भाई के समान समझना हिंदू नारी के अपने गुण हैं। तभी तो वह घर की रानी कहलाती है। ऋग्वेद में लिखा है—

"हे स्त्री, तू घर की मालकिन बनकर जा, और वहाँ जितने स्त्री-पुरुष हों, उनसे रानी की तरह बात-चीत कर।

"प्रजा की सेवा करके ही राजा राजपद का सच्चा अधिकारी है, और सेवा-व्रत को धारण करने पर ही स्त्री घर की वास्तविक अधीश्वरी बनती है।"

भाई-भाभी के लवा से उऋण होने का भाव भी सुंदर है। विवाह-संस्कार के समय भाई बहन के हाथ में धान देकर आशीर्वाद देता है—

"हे बहन, धान में जिस तरह चावल मिले हुए हैं, उसी तरह तुम दोनो कभी पृथक् न होना, नहीं तो तुम्हारा जीवन भूसी की तरह निष्फल हो जायगा।"

भाई की यह शिक्षा बहन के जीवन के सुख का कारण है। कन्या का पूजन तो भारतीय सदा ही देवी के रूप में करते आए हैं।

रे तैं कित की बन्नो ब्याही,
मेरे तो जान का गाला स।
रे मैं देही की थी ठाढ़ी,
रे इसके बोलों ने कर दई आधी।
बहू नहीं कोई हुवाला स,
रे ओबरे में पेड़ रूस के।
वो बहू नहीं कोइ चाला स,
रे इसके सास-ननद का ना कायदा।
रे बोलूँ तो बोले ज्यादा,
रे समझे तो समझाइयो रे।
माता की ओड़ निभाइयो रे,
लाल बड़े दुख से रे पाला था।

गाँवों में सास-बहू की लड़ाई प्रसिद्ध है। अब यह विषय इतना प्रसिद्ध हो गया है कि लेखक इस पर लेख लिखते, व्याख्यानदाता व्याख्यान देते और कथा-वाचक कथा कहते नहीं थकते। परंतु प्रायः सब सासों को ही दोष देते हैं। बहू के हृदय की वेदना लोग समझने लगे हैं। किंतु सासों की निंदा करने का कुछ ऐसा रिवाज पड़ गया है कि उनकी मनोवेदना समझने की कोई चेष्टा नहीं करता। हमारी शिक्षिता बहनें भी इस ओर से उदासीन हैं। इस गीत में किसी वृद्धा का बहू के आचरणों से दुःखित होकर सहसा कंठ फूट निकला है, और वह इसी प्रकार अपनी मनोवेदना कुछ कम कर लेना चाहती है। गीत की अंतिम पंक्तियों में मा की टूटी हृदय-वीणा की झंकार झंकृत है। वह अपने पुत्र से कहती है—

"हे पुत्र, तुम उसे समझाना। मातृत्व के गौरव की रक्षा करना। मेरे लाल, मैंने तुम्हें बड़े दुखों से पाला था।"

यदि पुत्र आज्ञाकारी होता है, तो मा का हृदय कमल की तरह खिल उठता है, किंतु यदि उसका व्यवहार अच्छा नहीं होता, तो मा का हृदय टूट जाता है। उसे अपनी सारी कष्ट-कहानी स्मरण हो आती है। संतान-पालन खेल नहीं है। उस समय मा को कितनी आशाएँ होती हैं। यदि मा की आशाएँ पूरी न हों, तो बेचारी का जीवन ही नष्ट हो जाता है। बहुएँ तनिक भी इस बात का विचार नहीं करतीं कि उनका पति उनका होने से पहले सास का पुत्र है। सास उनकी अपेक्षा उससे सेवा कराने की अधिक अधिकारिणी है। कितनी आशा से सास पुत्र का विवाह करती है। परंतु वृद्धावस्था में उसकी आशाएँ धूल में मिल जाती हैं। बहूरानी आते ही कहती हैं—

या घर में अब दुइहैं रहिहैं, मैं और मेरा दूल्हा ;
डोले में से जब उतरौंगी, अलग धरौंगी चूल्हा ।

वे पति पर अपना एकाधिकार चाहती हैं। सास को इससे निराशा होना स्वाभाविक ही है। इस प्रकार घर, जहाँ प्रेम की वृष्टि होनी चाहिए थी, बहुओं की अज्ञानता से कलह के केंद्र बन जाते हैं। 'चाँद' के किसी अंक में इस विषय पर अच्छा कार्टून था, जिसके नीचे ये कड़ियाँ लिखी थीं—

सास समझती है यह मेरा, बहू समझती है मेरा ;
दोनों की खींचा-तानी ने उसको आफ़त में घेरा ।
सास समझती है मेरा सुत मुझसे छीन रही है हाय !
बहू समझती है पति खोकर मैं हो जाऊँगी असहाय !

इसी दशा पर घाघ ने माता-पिता के शोक-पूर्ण उद्गार इस प्रकार प्रकट किए हैं—

धियैं जँवाई ले गए, बहुएँ ले गईं पूत ;
कहै 'घाघ' सुन 'घाघनी', हम रहे ऊत-के-ऊत ।"

बहुओं का कर्तव्य है कि वे पति की जन्मदात्री होने के कारण सास का खूब सम्मान करें। कबीरजी ने तो यहाँ तक कहा है—

गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय ?
बलिहारी गुरु आपने, गोबिंद दियो दिखाय ।

ओरै - धोरै ताल - तलैया,
बिच मैं जोर जवानी का ;
ऐसौ इतर लगा मोरी प्यारी,
छाती फटै मोरे दुस्मन की ।
ओरै - धोरै बाग - बगीचा,
बिच मैं जोर जवानी का ;
ऐसौ इतर लगा मोरी प्यारी,
छाती फटै मोरे दुस्मन की ।

कैसा वीर-रस-पूर्ण गीत है। पति युद्ध-क्षेत्र में जाने के लिये पत्नी से बिदा लेने आया है। वह कह रहा है—

"मेरी प्यारी स्त्री, ऐसा सुगंधित इत्र लगाओ कि दूर से उसकी सुगंध से मेरे वैरी का हृदय ईर्ष्या से जल उठे।"

मैथिलीशरणजी गुप्त ने भी तो जयद्रथ-बध में कहा है—

क्षत्राणियों के अर्थ भी सबसे बड़ा गौरव यही,
सज्जित करें पति-पुत्र को रण के लिये जो आप ही।
जो वीर पति के कीर्ति-पथ में विघ्न-बाधा डालतीं,
होकर सती भी वे कहाँ कर्तव्य अपना पालतीं।

धन्य है वह स्त्री, जो अपने पति को देश-रक्षार्थ युद्ध-क्षेत्र में जाने के लिये स्वयं सज्जित करती है, जो देश के लिये अपने पति को भी दे देती है। आज भारत के लिये ऐसी ही वीरांगनाओं की आवश्यकता है।

(कुमारी) दमयंती 'प्रभाकर'

× × ×

५. संसार

(१)

भृंग-अवलियाँ और कुसुम-कलियाँ हिल-मिलकर केलि-विनोद
करने में निश्चिंत मग्न थीं, निज को, जग को भूल समोद ।
आकर सहसा मारुत-दूती बोली यों उनसे सविचार—
"अरे भ्रांत ! भूलो मत सुख है क्षण-भंगुर, संसार असार ।"
काँप उठी कुसुमावलि, निकली सुरभि-आह ऐसा सुनकर,
उन्हें विरत लखकर भागा वह विमन स्वार्थ-रत भृंग-निकर ।

Digitized by eGangotri

(२)

तारक - गण कमनीय गगन में हिल-मिल करते थे झिलमिल ;
बातें कर अज्ञात परस्पर, खूब हँस रहे थे खिलखिल।
आकर तदा निशाकर सुंदर, उर में लिए शोक का भार
बोला—"तुम यों रहो न भूले, यह दुखमय संसार असार।"
सुनकर हुए सितारे सारे तब मन मारे दुखित, मलीन ;
काँप उठे, कुछ-कुछ रोए भी, दुख-वश कुछ हो गए विलीन।

(३)

जब देखा कि छोड़कर सरिता वैभव-पूर्ण पिता का क्रोड़
चली जा रही है अनंत से मिलने को जग से मुख मोड़।
सकरुण कलकल स्वर से मानो बार-बार कह रही पुकार—
"साज यहाँ के सब नश्वर हैं, मायामय संसार असार।"
तब मैंने जाना कि सत्य ही है दुख-पूर्ण जगद्बंधन ;
जीवन को अनंत में लय कर देना ही जीवन का धन।

(४)

जो दल-फल तरु के रस से ही होते रहे सरस, परिपुष्ट,
हाय ! उन्हीं को जब देखा तरुवर से होते विलग अतुष्ट,
तब समझा कि यहाँ है केवल भ्रांति-मोह-माया-अधिकार ;
कोई नहीं किसी का जग में, यह कृतघ्न, निष्ठुर संसार।

(५)

विविध-व्याधि-चिंताओं का लेकर निर्बल कंधों पर भार
जब कि देखता, दुख-वश करते हुए लोक को हाहाकार,
मन तब कह उठता है, सचमुच जग है विस्तृत कारागार ;
वन्य कुसुम-से शांति-सौख्य हैं, है दुखमय असार संसार।

(६)

मन ने मुझसे कहा कि देखो, करते जिन्हें बहुत तुम प्यार,
जिनके चिंतन में रहकर तुम देते निज सुख-शांति बिसार,
जिनके लिये बहाकर आँसू प्रेम - क्षेत्र सरसाते आह !
वही तुम्हें ठुकराते निर्मम, करते नहीं तनिक परवाह !

ध्वनि वह हुई हृदय से सचमुच दुख है सुख का उपसंहार ;
भूल न जाना विश्व विवेकी ! स्वार्थ-पूर्ण संसार असार।
राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत'

× × ×

६. 'बच्चन'जी और निराशावाद

किसी देश का साहित्य उस देश का जीता-जागता इतिहास है—उस देश की जातीय और राष्ट्रीय आशाओं, आकांक्षाओं और स्थितियों को जानने का अद्वितीय साधन है। मनुष्य सामाजिक जीव है ; समाज में रहने के कारण उसके अच्छे-बुरे प्रभाव उस पर पड़ते हैं। सच्चा कलाकार इन प्रभावों से प्रभावित होकर अपनी कृतियों द्वारा उन्हें विश्व के सम्मुख रखता है—उसकी कृतियाँ तत्कालीन प्रभावों से कभी अछूती नहीं रह सकतीं। देश-काल के अनुसार जनता की चित्त-वृत्ति बदलती रहती है, जो साहित्य में प्रतिबिंबित रहती है। और, यही कारण है कि भिन्न-भिन्न कालों में प्रकार-विशेष के साहित्य का सृजन होता है। राजपूत-काल में वीर-साहित्य का ही सृजन हुआ, और कई रासो हमारे साहित्य में हैं। मुसलमान-काल में परिस्थितियों के अनुकूल भक्ति की लहर उठी, और रामचरित-मानस, सूरसागर-सरीखे श्रेष्ठ भक्ति-ग्रंथ लिखे गए। इसके उपरांत अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ के स्वर्ण-काल में शृंगारिक कविताओं और ग्रंथों का बोल-बाला रहा। वर्तमान समय में बहुमुखी साहित्य-श्री-वृद्धि हो रही है, पर काव्य-संसार में मुख्यतः देश-प्रेम, जातीयता की भावना की कल्लोलिनी कलकल कर रही है। सर्वश्री बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त, पं० माखनलालजी चतुर्वेदी, 'सनेही'जी, 'नवीन'जी और श्रीमती सुभद्राकुमारीजी चौहान की कृतियों में अपूर्व देश-प्रेम की झलक है। 'गुप्त'जी का साहित्य इसी प्रेम से भरा है। 'भारत-भारती' तो नवयुवकों के गले का हार बनी रही। श्रीमती सुभद्राकुमारीजी की 'झाँसी की रानी' की कविता अब भी कहीं-कहीं सुनाई पड़ती है। इन महानुभावों की कृतियों का जनता ने खुले हृदय से स्वागत किया है।

सर्वश्री 'पंत'जी, 'निराला'जी और 'प्रसाद'जी, सर्व-साधारण की वस्तु नहीं हैं। वे साहित्यिकों की अपनी चीज़ हैं। 'पंत'जी तो अब बहुत कुछ निखर-से गए हैं, और सरल हो गए हैं ; पर 'निराला', 'प्रसाद' अब भी गूढ़ हैं। 'पंत'जी में 'परिवर्तन-वाद' की, जिसमें आशावाद की हलकी पुट है, मृदु स्वर-लहरी झनकार रही है। वह वर्तमान मानव-समाज का पुनर्निर्माण चाहते हैं। जो रूढ़िवाद घुसा है, उसके प्रति उनके हृदय में भयानक क्रांति की ज्वाला धधक रही है। और, इसीलिये जितनी भी आजकल उनकी फुटकल कविताएँ छपती हैं, सभी में रूढ़िवाद के प्रति क्रांति की गहरी आवाज़ है—

गा, कोकिल ! बरसा पावक-कण !
नष्ट - भ्रष्ट हो जीर्ण - पुरातन,
ध्वंस - भ्रंश जग के जड़ बंधन ;
पावक - पग धर आए नूतन,
हो पल्लवित नवल मानवपन।
('सरस्वती' सितंबर, १९३५)

श्रीहरवंशरायजी 'बच्चन' एक नई सौग़ात लेकर साहित्य में आए हैं। 'बच्चन'जी में प्रसाद-गुण प्रचुर मात्रा में है, और इस दृष्टि से वह 'गुप्त'जी की श्रेणी में रक्खे जा सकते हैं। छोटी-सी बात को अनूठे ढंग से कहने की 'बच्चन'जी में विशेष प्रतिभा है। इसके सिवा आपकी कविता में 'निराशा-वाद' की ज़बरदस्त पुट रहती है। 'बच्चन'-जी की 'हलाहल' कविता ने तथा 'गुप्त'जी की

Digitized by eGangotri

'यशोधरा' की कुछ निराशा-पूर्ण पंक्तियों ने कई नवयुवकों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला है। उनमें से एक इन पंक्तियों का लेखक भी है।

मनुष्य को निराशा दो तरह से हो सकती है—अपने स्वयं के दुःख-पूर्ण जीवन से अथवा दूसरों का दुःख-पूर्ण, दयनीय जीवन देखकर। गौतम को दूसरे कारण से जीवन से वैराग्य हो गया था। हम 'बच्चन'जी के व्यक्तिगत जीवन से परिचित नहीं। हम तो यही कल्पना करेंगे कि आपकी 'निराशा' दूसरों को देखकर पैदा हुई है।

जब मनुष्य रात-दिन परिश्रम करता है, और फिर भी पेट-भर भोजन नहीं पाता, उसके परिश्रम का उचित पुरस्कार नहीं मिलता, तो उसका हृदय टूट जाता है। उसे जीवन से निराशा हो जाती है—विश्व झूठा लगने लगता है। संत कवियों के समय में अनवरत अत्याचार के कारण ऐसी परिस्थिति हो गई थी, और यदि उस समय संत कवि निर्गुण-वाद का आश्रय न लेते, तो आज शायद हिंदू सगुण क्या, ईश्वरवाद का भी कठिनता से पता लगता।

'बच्चन'जी का कवि-हृदय वर्तमान सामाजिक परिस्थिति को देखकर इतना नैराश्य-पूर्ण हो गया है। उनकी कृतियों में यह 'निराशा' का भाव प्रकट अथवा अप्रकट रूप से अंकित रहता है।

दुःख-पूर्ण जीवन को भुलाने के लिये कभी-कभी लोग मधु-सेवन करने लगते हैं। यदि कोई कवि ऐसा करने लगता है, तो फिर साहित्य में 'मधु-वाद' की सृष्टि आरंभ होती है। हम पहले कह चुके हैं कि हम 'बच्चन'जी से व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं। कह नहीं सकते, वह पीते हैं या नहीं, पर इतना अवश्य है कि वह साहित्य में 'मधु-वाद' की भी ओर बढ़े हैं। वह बिना पिए ही 'मधु-वाद' की सृष्टि करते हैं, अथवा मस्ती में, यह हमारे लिये अभी पहेली है।

इस तरह, हम देखते हैं, मधु-वाद का निराशा-वाद से घनिष्ठ संबंध है।

'मधुआ'-नामक कहानी में 'प्रसाद'जी एक पीनेवाले से पीने का कारण उसके ही मुँह से इस प्रकार कहलाते हैं—"सरकार! बूढ़ों से सुने हुए वे नवाबी के सोने-से दिन! अमीरों की रंगरेलियाँ! दुखियों की दर्द-भरी आहें! रंग-महलों में घुल-घुलकर मरनेवाली बेगमें अपने आप सिर में चक्कर काटती रहती हैं। मैं उनकी पीड़ा से रोने लगता हूँ। अमीर कंगाल हो जाते हैं। बड़े-बड़े घमंड चूर होकर धूल में मिल जाते हैं। तब भी दुनिया बड़ी पागल है। मैं उसे—पागलपन को—भूलने के लिये शराब पीने लगता हूँ—सरकार! नहीं तो यह बुरी बला कौन अपने गले लगाता।"

अब हम कुछ उदाहरण द्वारा यह दिखाएँगे कि 'बच्चन'जी में विश्व के प्रति कितनी उदासीनता है, तथा विश्व को वह किस तरह कारागार-सा समझते हैं।

ताजमहल को देखकर न-जाने कितने कवियों ने कविताएँ कीं, पर 'बच्चन'जी उसे देख उसकी अस्थिरता पर विचारने लगते हैं—

किसी ने बनवाया भी ताज
किसी की यदि रखने को याद;
न क्या वह हो जाएगा नष्ट,
न हो जाएगा वह बरबाद?
ताज का एक-एक पाषाण
कहा करता दिन-रात पुकार—
"मुझे खा जाएगी दिन एक
इसी यमुना की भूखी धार।"

औरंगज़ेब ने अपने समय में अपनी शक्ति-सत्ता जमा रक्खी थी, पर आज वह एक मिट्टी-पत्थर की क़ब्र में बंद है—

कहाँ है वह नृप औरँगज़ेब,
कहाँ उसकी नंगी तलवार?
कहाँ है उसका क्रोध कराल,
कँपा जो देता था संसार?

एक मिट्टी - पत्थर की क़ब्र
ढँक रही उसका आज शरीर ;
छुपा करती उसका उपहास,
बंद है इसमें आलमगीर।

इसके द्वारा मानो सत्ताधारियों और ज़ुल्म करनेवालों को 'बच्चन'जी शिक्षा दे रहे हैं।

इसी 'हलाहल'-कविता का अंतिम चरण नैराश्य का पूर्ण अवतार है—

सभी जब हो जाएगा नष्ट,
मरेगा भूखों काल महान ;
दैव एकाकीपन से ऊब
तजेगा आत्मघात कर प्राण।
शून्य में उठ-उठ नीरव नाद
करेगा प्राप्त अनंत विकाश ;
प्रलय-लय-नाश, प्रलय-लय-नाश,
प्रलय-लय-नाश, प्रलय-लय-नाश।

भविष्य की कैसी भयानक कल्पना है !

सुना है, प्रो० मनोरंजन एम्० ए० ने, किसी प्रांतीय साहित्य-सम्मेलन के सभापति की हैसियत से, एक भाषण देते हुए 'बच्चन'जी की इस कविता की कड़ी आलोचना की थी, और कहा था कि उठते राष्ट्र के लिये ऐसी कविताएँ हानिकारक हैं। प्रो० सा० का कहना सर्वथा सत्य है, पर कविता अथवा साहित्य विज्ञान नहीं है, जो किन्हीं नियमों से बँधा हुआ है। यदि नियम-बद्ध होकर कविता बनाई जायगी, तो बनेगी अवश्य, पर प्राण-हीन होगी। कवि अपनी भावनाओं को दाब नहीं सकता। वे तो आप-ही-आप बह निकलती हैं, अब चाहे वे राष्ट्र के लिये लाभप्रद हों या न हों।

शायद पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी ने उन पर यह इल्ज़ाम लगाया था कि उनकी कविता में 'वासना' की गहरी पुट रहती है। पं० बनारसीदास का नाम मैंने इसलिये लिया कि 'विशाल भारत' की 'वासना'-कविता के नीचे उन्होंने 'संपादक' की हैसियत से अपने 'रिमार्क' को क़बूल किया है। दूसरे, 'बच्चन'जी ने उसी कविता में कहा है—

वृद्ध जग को क्यों खटती है क्षणिक मेरी जवानी !

इस इल्ज़ाम का 'वासना'-शीर्षक रचना द्वारा पर्याप्त रूप से उत्तर दिया गया। इसमें भी निराशावाद की झलक देखिए—

कल शुरू होगी ख़तम कल
प्रेम की मेरी कहानी ;
कौन हूँ मैं जो रहेगी
विश्व में मेरी निशानी।
क्या किया मैंने नहीं जो
कर चुका संसार अब तक ;
वृद्ध जग को क्यों खटकती
है क्षणिक मेरी जवानी !
प्राण प्राणों से सकें मिल
किस तरह दीवाल है तन ;
काल है घड़ियाँ न गिनता,
बेड़ियों का शब्द 'झनझन'।
वेद लोकाचार प्रहरी
ताकते हर चाल मेरी ;
बद्ध इस वातावरण में
क्या करे अभिलाष यौवन।
अल्पतम इच्छा यहाँ
मेरी बनी बंदी पड़ी है ;
विश्व क्रीड़ास्थल नहीं रे,
विश्व कारागार मेरा।

'निराशा-वाद' हो या 'मधु-वाद' या 'आशा-वाद', 'बच्चन'जी अपने ढंग के एक ही कवि हैं। कविता में ग़ज़ब का प्रसाद, ओज, संगीत, प्रवाह और मस्ती रहती है। नवयुवक साहित्यिक उन पर लट्टू हैं। 'बच्चन'जी से साहित्य को बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। ईश्वर उन्हें चिरायु करें।

मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट'

× × ×

७. इस वर्ष हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का सभापति कौन हो ?

(त्रिपिटकाचार्य श्रीराहुल सांकृत्यायन)

भारत के प्रत्येक प्रांत के विद्वानों और खासकर हिंदी-संसार को राहुलजी का नाम अविदित नहीं है। राहुलजी अभी लगभग सात-ही-आठ वर्ष से हिंदी-साहित्य के मैदान में आए हैं, परंतु इतने ही थोड़े समय में क्या साहित्य-निर्माण, क्या हिंदी-प्रचार और क्या नागरी अक्षरों के सुधार की मौलिक कल्पना इत्यादि किसी भी हिंदी-संबंधी आंदोलन को लीजिए, आपने हिंदी-संसार में एक प्रकार से तहलक़ा-सा मचा दिया है।

विद्वत्ता की दृष्टि से देखा जाय, तो राहुलजी एक अंतरराष्ट्रीय विद्वान्, जो अन्य भारतीय अंतरराष्ट्रीय विद्वानों से किसी-किसी अंश में आगे ही बढ़े हुए सिद्ध होंगे, सर्वमान्य-से हो रहे हैं। बौद्ध-साहित्य को आगे लेकर आपने संस्कृत, पाली, तिब्बती इत्यादि प्राचीन भाषाओं का बहुत ही गहरा मंथन और आलोड़न-विलोड़न किया है, जिसकी धाक आप भारतीय विद्वत्समाज में भारत की ओरियंटल-कान्फ्रेंस की हिंदी-शाखा के सभापतित्व में काफ़ी तौर से जमा चुके हैं। हिंदी-भाषा और साहित्य के निर्माण तथा प्रचार के संबंध में जो कार्य आपने इन थोड़े दिनों में किया है, उसका थोड़ा-सा दिग्दर्शन यहाँ कराया जाता है—

(१) मूल पाली-भाषा के बौद्ध-ग्रंथों का आपने हिंदी में प्रामाणिक अनुवाद किया है। जैसे 'मज्झिमनिकाय', 'विनयपिटक', 'दीघनिकाय' इत्यादि, जिनका अनुवाद अभी तक किसी देशी भाषा में नहीं हुआ था।

(२) मूल तिब्बती-भाषा में बौद्ध-साहित्य के लगभग १०,००० ग्रंथ आप बीसों खच्चरों पर लादकर तिब्बत से भारत में उतार लाए हैं। इन ग्रंथों में 'कंजूर' (बुद्ध-वचन) और 'तंजूर' (शास्त्र-वचन) इत्यादि के सैकड़ों महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ भी शामिल हैं। यह दुर्लभ बौद्ध-साहित्य आपने भारत में लाकर पटना-म्यूज़ियम में धर दिया है।

(३) इसी वर्ष आप फिर तिब्बत की यात्रा करके धर्म-कीर्ति, प्रज्ञाकर गुप्त, आचार्य वसुबंधु इत्यादि बौद्ध दार्शनिकों के बारह-तेरह सौ वर्ष पुराने ग्रंथ तिब्बत के प्रसिद्ध 'साक्य मठ' से लाए हैं। यह साहित्य भारतवर्ष में ही क्या, बल्कि संसार के किसी भी खंड में अलभ्य था। इसलिये इस साहित्य का दर्शन करने के लिये योरप के चिरोवास्की इत्यादि बौद्ध विद्वान्, अपने अनेक शिष्यों के साथ, भारत आ रहे हैं।

(४) हिंदी-साहित्य की अत्यंत प्राचीनता के विषय में तो राहुलजी की खोज बहुत ही मौलिक और अमूल्य है ; क्योंकि हिंदी-साहित्य का इतिहास अभी तक प्रत्यक्ष रूप से सिर्फ़ बारहवीं शताब्दी तक पहुँच पाया था। इससे पुराने एक-आध कवि का नाम-मात्र ही मिल पाया है ; परंतु राहुलजी ने नालंदा-विश्वविद्यालय के लुईपा, सरहपा आदि बौद्ध-कवियों की बहुत-सी पुरानी हिंदी-कविता तिब्बत में जाकर ढूँढ़ निकाली है। यह कविता आठवीं-नवीं शताब्दी की है। इस प्रकार हिंदी-साहित्य का प्राचीन इतिहास राहुलजी ने लगभग चार सौ वर्ष पीछे और भी बढ़ा दिया है। इस संबंध के आपके हिंदी-लेखों के अनुवाद फ्रेंच-जर्नलों में भी निकले हैं।

(५) राहुलजी ने जो साहित्य और विस्तृत ज्ञान तिब्बत, जापान, चीन, नैपाल, ईरान इत्यादि देशों से उपलब्ध किया है, उस पर आपने अब तक हिंदी-भाषा में बीसियों ग्रंथ और सैकड़ों लेख लिखे हैं। उनका अनुवाद अब हिंदी से बँगला में प्रकाशित हो रहा है। इस प्रकार जिस बँगला-भाषा को महात्मा गांधी, डॉ० रवींद्रनाथ ठाकुर, बाबू रामानंद चटर्जी इत्यादि प्रथम श्रेणी की मान

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रहे हैं—इस प्रकार से राहुलजी हिंदी-भाषा को बँगला से ऊपर ले जाकर 'प्रथम श्रेणी' से भी ऊपर बैठा रहे हैं।

(६) बौद्ध-धर्म के तीनो वृहत्काय 'पिटक', जो मूल पाली-भाषा में हैं, और जो अभी तक श्यामी, सिंहली, बर्मी, जापानी, चीनी और रोमन अक्षरों में ही मिलते थे, उन्हें राहुलजी अब नागरी अक्षरों में छपवा रहे हैं। अब इन मूल पाली-ग्रंथों को पढ़ने के लिये लोगों को रोमन-लिपि की शरण न लेनी पड़ेगी।

(७) नागरी लिपि के सुधार-संबंध में जो आंदोलन आजकल उठा हुआ है, उसमें क्रियात्मक रूप से एक सिर्फ़ राहुलजी ही भाग ले रहे हैं, और अब अपने लिखे हुए ग्रंथ तथा लेख अपने विचारानुसार सुधरी हुई लिपि में ही प्रकाशित कराते हैं।

इन बातों से हिंदी-संसार को मालूम हो जायगा कि इस वर्ष मद्रास-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व के लिये महापंडित त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायनजी का चुनाव कितनी विशेषता रखता है। सम्मेलन के प्रत्येक क्षेत्र पर राहुलजी की शक्ति, उनके प्रभाव, उनकी योग्यता और विद्वत्ता का बहुत सुंदर और व्यापक परिणाम होने की पूर्ण संभावना है। प्रत्येक हिंदी-हितैषी को इस विषय में अपने विचार हिंदी-जनता के समक्ष उपस्थित करने चाहिए।

लक्ष्मीधर वाजपेयी

सूर्य स्वदेशी रजिस्टर्ड छाप

आरोंदा नीलगिरि तेल

ARONDA NILGIRI EUCALYPTUS OIL

INDIAN-SUN BRAND

गर्मी में गम्हौरी, पिरकी, लू-लपट, खुजली, घाव व घिनहीं इत्यादि ; बरसात में सर्दी, जुकाम, हैज़ा, मलेरिया, आँव, क़ै, दस्त, दाद, खाज, खुजली, फोड़े, फुंसी, बरसाती कीड़े, ज़हरीले कीड़े, बिच्छू, सूजन, फूलन, गठिया, वात, हड्डियों के जोड़ों में दर्द और जाड़े में इन्फ़्लुएंज़ा, ठंड, खाँसी, सर्दी तथा हर मौसम में दाँत, दाढ़, कान तथा पेट के दर्द से और बवासीर, कान में कोई कीड़ा घुस जाने, चोट लग जाने, जल जाने वग़ैरः व्याधियों से लोग बहुत हैरान होते हैं। आरोंदा तेल सब तकलीफ़ दूर करता है। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष, सबको फ़ायदा पहुँचाता है। १ पौंड, ४ औंस, २ औंस, १ औंस और ½ औंस की शीशियाँ मिलती हैं।

एजेंट—के. एल्. वर्मा, एम्. ए., रामगली, रायपुर, सी. पी. पता—खांडालेकर बंधु (सा) बंबई ४

चाँद का नववर्षांक—संपादिका, श्रीमती महादेवी वर्मा एम्० ए० ; मैनेजिंग डाइरेक्टर, पं० निरंजनलाल भार्गव ; प्रकाशक, चाँद-प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद ; वार्षिक मूल्य ६॥) ; इस अंक का मूल्य १॥) ; पृष्ठ-संख्या १६० ; चित्र तिरंगे ३, दुरंगे ३ और इकरंगे ३५

'चाँद' शिक्षित और समुन्नत महिलाओं का श्रेष्ठ पत्र है। चाँद में केवल नारी-आंदोलन ही नहीं, अपितु सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों से संबंध रखनेवाली भी पर्याप्त ज्ञातव्य सामग्री रहती है, अतः इसे 'उत्कट सुधारक पत्र' भी माना जाता है। 'चाँद' की लेखिकाएँ केवल महिलाएँ ही नहीं, बड़े-बड़े धुरंधर क्रांतिकारी लेखक हैं। विशेषांक निकालने में भी चाँद ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। प्रतिवर्ष एक-से-एक बढ़कर और एक-से-एक सुंदर विशेषांक निकलते रहते हैं। किंतु प्रस्तुत नववर्षांक वैसा अच्छा नहीं हुआ, जैसे पहले निकल चुके हैं। अस्तु। 'चाँद' का हिंदी-मासिक पत्रों में विशेष स्थान है। अब भार्गवजी-जैसे श्रेष्ठ प्रबंधक के हाथों में आ जाने से चाँद और भी उन्नति करेगा, ऐसा हिंदी-संसार को विश्वास है।

चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु

× × ×

कविता-कुसुमाकर—श्रीद्वारकेश-ग्रंथमाला का पंचम पुष्प; श्रीद्वारकेश-कवि-मंडल, कांकरोली का प्रथम तथा द्वितीय वार्षिक हिंदी-संस्कृत-समस्या-पूर्ति-संग्रह (१९८९-१९९० वि०); प्रकाशक, प्रो० कंठमणि शास्त्री विशारद, संचालक श्रीविद्या-विभाग, कांकरोली ; मुद्रक, गंगा-फ़ाइन-आर्ट-प्रेस, लखनऊ ; मूल्य प्रति पुस्तक अजिल्द ॥) तथा सजिल्द ॥)। पृष्ठ-संख्या १२६ और १२६। काग़ज़, छपाई प्रसिद्ध प्रेसें-सदृश।

वर्तमान हिंदी-साहित्य-युग में कवि-सम्मेलनों का एक महत्त्व-पूर्ण स्थान है। जिन कवियों अथवा काव्य-प्रेमियों को कवि-सम्मेलनों में जाने का अवसर प्राप्त होता रहता है, वे निर्विवाद यह कह सकते हैं कि उस समय—जब सम्मेलन बड़ी सज-धज के साथ लगातार कई घंटे होता रहता है, और साधारण-असाधारण सब कोटि के कविगण स्वेच्छा-पूर्वक अपनी-अपनी कविताओं को तन्मयता-पूर्वक सुनाते हैं—एक तटस्थ, किंतु देश-कालज्ञ व्यक्ति को मि० जोड का यह प्रसिद्ध वाक्य याद आता है—"Our Poets write poetry not because they have something to say but because they consider it a right to say something." अर्थात् हमारे कविगण इसलिये काव्य नहीं करते कि उन्हें कुछ कहना है, किंतु वे कुछ-न-कुछ कहना अपना अधिकार समझते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हैं। वस्तुतः हिंदी-क्षेत्र में और संस्कृत-समस्या-पूर्ति करने में भी इस बात का ध्यान प्रायः नहीं रक्खा जाता कि कविताओं में कोई शाश्वत महत्त्व की स्थायी वस्तु आ जाय, किंतु इसके विपरीत क्षुद्र, अस्थायी, कुप्रभावोत्पादक तुकबंदी भी उस समय बड़े मार्के की चीज़ समझी जाती है।

काव्य आँकनेवालों की अक्षम्य शिथिलता और विवेक-शून्य प्रशंसात्मक समालोचनाओं के कारण हमारे साहित्य में उच्च कोटि के काव्यों का यथोचित आदर नहीं हो पाता। परिमार्जित भाषा में हृदयग्राही भावों के चित्रण के साथ-ही-साथ काव्य की उपयोगिता और प्रभाव की ओर भी दृष्टि रखना सफल कवि के लिये उतना ही अनिवार्य रूप से आवश्यक है, जितना संगीत-कला-विज्ञ के लिये राग-रागिनियों को यथासमय गाना। असामयिक संगीत के कुप्रभाव से जो हानि हो सकती है, उसी प्रकार का अहित अनुपयोगी कविता से भी होता है।

काव्य-संबंधी इन मौलिक सिद्धांतों को दृष्टि में रखकर जब हम उपर्युक्त संग्रहों को ध्यान से देखते हैं, तो यही ज्ञात होता है कि संग्रहकर्ता महोदय ने इन पुस्तकों से ऐसी कविताओं को स्थान-च्युत करना अपना कर्तव्य न समझा, जिन्हें न तो समयोचित कहा जा सकता है, और न अनेक अर्थों में काव्य ही। इसमें संदेह नहीं कि अनेक कवियों की हिंदी तथा संस्कृत-कविताएँ सुंदर हैं, और उनमें कुछ स्थायित्व की भी मात्रा है। इन कविताओं को संग्रह करने के उपलक्ष में संग्रहकर्ता धन्यवाद के पात्र हैं। किंतु किन्हीं-किन्हीं कविताओं में अश्लील शृंगार के अवांछनीय वर्णन को यदि श्रोताओं तक ही मर्यादित रखकर पुस्तकों में मुद्रित न कराया जाता, तो अधिक अच्छा होता। इस प्रकार की कविताएँ होनहार युवक-युवतियों के हाथ में देना, उनके अविकसित मनोभावों को अनायास क्षुब्ध करने का सहज प्रयास है। देश की दयनीय दशा को दृष्टि में रखकर यदि कविगण काव्य करें, तो उन्हें प्रकट होगा कि वीर-विहीन वर्तमान भारत जाति को अश्लील, शृंगारिक, क्षुद्र कविताओं से और भी भीरुता तथा विलासप्रियता का आखेट बनाया जा सकता है। उनमें वीरता, धैर्य, साहस, दया, सहिष्णुता, सत्य-निष्ठा, धर्मपरायणता आदि गुण उत्पन्न करने के लिये तो और ही रसों में काव्य लिखा जाना चाहिए।

उपयोगिता-अनुपयोगिता सबको एक दृष्टि से देखनेवाले काव्य-मर्मज्ञों और काव्य-प्रेमियों के लिये ये दोनो पुस्तकें संग्रहणीय हो सकती हैं। इन पुस्तकों की यह भी विशेषता है कि एक-एक विस्तृत प्राक्कथन के साथ एक में ३३ और दूसरी में ४८ कवियों का परिचय भी दिया गया है। साथ ही एक संग्रह (१९८९) में तृतीय पीठाधीश्वर गोस्वामी श्री१०८ श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज, कांकरोली (अध्यक्ष श्रीद्वारकेश-कवि-मंडल) और श्रद्धेय गोस्वामी श्री१०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराज, कांकरोली (संस्थापक काशी-कवि-मंडल) के सुंदर चित्र दिए गए हैं। द्वितीय (१९९०) संग्रह में प्रो० कंठमणि शर्मा, कांकरोली (मंत्री श्रीद्वारकेश-कवि-मंडल तथा संचालक विद्या-विभाग) और गो० विट्ठलनाथजी महाराज, कांकरोली (उपाध्यक्ष श्रीद्वारकेश-कवि-मंडल) के सुंदर चित्र दिए गए हैं।

रामदत्त शुक्ल (ऐडवोकेट)

× × ×

काकली—लेखिका, श्रीसुभद्रादेवी गुप्ता; प्रकाशक, विद्या-मंदिर, नरसिंहपुर (सी० पी०); मूल्य ।≈)

'काकली' नाम की इस छोटी पुस्तक में सुभद्रा-देवीजी की कविताओं का सुंदर चयन है। 'याचना' कविता अत्यंत करुण है। दीन की आत्मा का प्रतिबिंब नीचे-लिखी पंक्तियों में देखें—

दो मुट्ठी अन्नों की ओर।
नीर-भरे अपने नयनों से
दीन-समाज सुधा की चाह
उत्कंठा से ताक रहा है,
देख रहा है जग की ओर।
दो मुट्ठी अन्नों की ओर।

शैशव, यौवन, ताज, विद्या-दान आदि की कविताएँ इस पुस्तक में अपना विशेष स्थान रखती हैं। सुभद्रादेवीजी की शैली अत्यंत सरल, प्रभावोत्पादिनी और अन्य कवयित्रियों से बिलकुल विभिन्न है। 'काकली' को वही पसंद करेगा, जिसने ऋतुराज का-सा हृदय पाया है। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। पाठक स्वयं देखें।

× × ×

दिव्य-दोहावली—लेखक तथा चित्रकार, श्रीयुत अंबिकाप्रसाद वर्मा बी० ए० 'दिव्य'; प्रकाशक, श्रीयुत गयाप्रसाद वर्मा, टीकमगढ़ (बुंदेलखंड); । मूल्य १)

'दुलारे-दोहावली' ने व्रज-भाषा-साहित्य में एक नया जीवन-सा प्रकट कर दिया है। उससे प्रभावित होकर कई सुंदर दोहावलियाँ, थोड़े ही समय के अंदर, तैयार हुई हैं। दिव्यजी की 'दोहावली' इसी समय की एक अनुपम वस्तु है। दिव्यजी की इस दोहावली में ३३७ दोहे हैं। वे एक-से-एक बढ़कर हैं। आरंभ में हिंदी के योग्य विद्वान् पं० गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' द्वारा लिखित एक बहुत ही विद्वत्ता-पूर्ण भूमिका है।

दोहे बहुत ही मार्मिक और हृदय पर चोट करनेवाले हैं। उदाहरण के तौर पर यहाँ कुछ दोहे दिए जाते हैं—

विरह

लखि बिरहिन के प्रान सखि, मीचहु नाहिं दिखात;
फिर-फिर आवत लैन, पै मुआ समुझि फिरि जात।
संध्या माहिं सँयोग की, दृग-दिहरी के बीच—
विरह? ताहि पिय मारिहै हिरनाकुस कौ नीच।

नवीन उक्ति

गज तो सुमर्‌यौ हरि तुम्हैं, हम सुमरैं कहु काह;
हम गजगामिनि हेतु हरि, तुमहु बनत जब ग्राह।
दोऊ अँखियाँ हिय लगीं, लिपट रहीं बेपीर;
उँगरी भई बजाज की, रही चीर सों चीर।
नयन-नीर-निधि की कछू उलटी चाल लखाइ;
मख-शशि देखे घटत जल बिनु देखे उमड़ाइ।
गिरि-से ऊँचे निरखि कै, उर पै उठे उरोज;
गिरिधर आए तो नहीं, तिय निरखत हिय रोज।
ना बाहर, ना भीतरै, ना दिन में, ना रैन;
पिय बिनु मरत न बिरह कहुँ हिरनाकुस सौ ऐन।

इस प्रकार वर्माजी के दोहों में प्रेम, विरह, शृंगार पर बहुत ही अनूठी उक्तियाँ हैं। सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर यह बात अवश्य माननी पड़ेगी कि वर्माजी ने कुछ दोहों पर जो चित्र अंकित किए हैं, वे शृंगारी होते हुए भी, बहुत सुंदर हैं। 'दिव्य-दोहावली' लिखकर वर्माजी ने सचमुच अपने नाम को सार्थक किया है। मैं हृदय से पुस्तक की प्रशंसा करता हूँ। मर्मज्ञ कवियों तथा आलोचकों को उनकी यह दोहावली अवश्य पसंद आएगी। पुस्तक की जिल्द सुंदर तथा छपाई उत्तम है। स्वरचित चित्रों ने इसका कलेवर और भी सुंदर कर दिया है।

'उमेश'

CC0. Gurukul K...

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'इंस्टालमेंट' (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा ; मूल्य १)

(२) 'लंपा - चंपा' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंह ; मूल्य ।)

(३) 'गौरवशाली जीवन' (नवयुवकोपयोगी)—श्रीयुत जेम्स एलन की पुस्तक का हिंदी-अनुवाद ; मूल्य १)

(४) 'परी-रानी' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत कोमल पंडित ; मूल्य ।-)

(५) 'बाग़बानी' (कृषि-विद्या)—लेखक, रा० सा० पुरुषोत्तम-विनायक मराठे ; मूल्य १।)

(६) 'मिस्टर तिवारी का टेलीफ़ोन' (हास्य-रस की अपूर्व पुस्तक)—लेखक, श्रीसरयू पंडा गौड़ ; मूल्य १)

(७) 'परदा' (स्त्र्युपयोगी)—लेखक, श्रीसत्यदेव विद्यालंकार ; मूल्य २।)

(८) 'बुढ़ापा, उसके कारण और निवारण'—लेखक, बाबू केशवकुमार ठाकुर; मूल्य १।)

(९) 'कर्म-रहस्य' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत कन्हैयालाल अग्रवाल ; मूल्य २)

(१०) 'बाल-मनोरंजन' प्रथम भाग (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत ज्यातिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ; मूल्य ।)

(११) 'पतितोद्धारक जैन-धर्म'—लेखक, श्रीबाबू कामताप्रसाद जैन एम्० आर० ए० एस्० ; मूल्य १।)

(१२) 'क़िस्मत की करामात' (जासूसी उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत गिरीशचंद्र जोशी ; मूल्य १।)

(१३) 'शैतानी शरारत' (जासूसी उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत पंडित कार्त्तिकेयचरण मुख्योपाध्याय ; मूल्य १।)

(१४) 'योरप में सात मास' (भ्रमण)—लेखक, श्रीधर्मचंद सरावगी ; मूल्य २।)

(१५) 'स्वामी चौखटानंद' (सामाजिक उपन्यास)—लेखक, श्रीजी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य २।)

(१६) 'नीति-निबंधावली' (दर्शनशास्त्र)—लेखक, श्रीगोपाल-दामोदर तामसकर एम्० ए०, एल्० टी० ; मूल्य २)

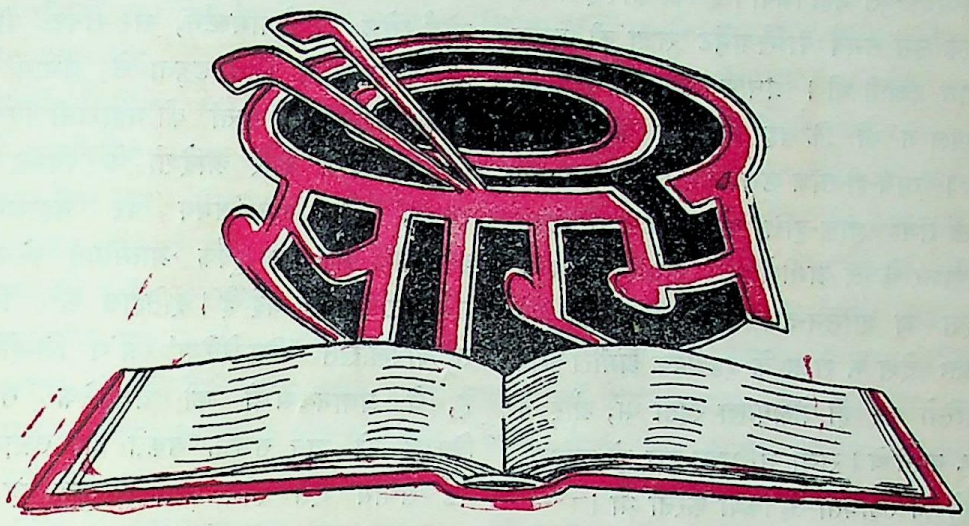

[संपादकीय विचार]

१. सम्राट् का गृह-त्याग

जनवरी, १९३६ का दिन ब्रिटिश - साम्राज्य की राज्यतंत्रवादिता का अंतिम संदेश लेकर ही उदय हुआ था। सम्राट् पंचम जॉर्ज के देहावसान के साथ-ही-साथ राजों के दैवी अधिकारों का चिरंतन विश्वास आंग्ल राजनीति से लुप्तप्राय हो गया। 'राजा प्रकृति-रञ्जनात्' का मध्यकालीन प्रजातंत्रवादी जयघोष इँगलैंड में धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ रहा था। योरप की डावाँडोल स्थिति, भूतलशायी राजमुकुट तथा निर्वासित सम्राट्-मंडल, तीनो ही मिलकर उस जयघोष को प्रतिध्वनित तथा शतशः विस्तीर्ण करने में सहायता दे रहे थे। अंततोगत्वा १० दिसंबर, १९३६ को उस जयघोष का तुमुल निनाद सम्राट् के सिंहासन को हिलाकर ही संतुष्ट हुआ, और उस हिलते हुए सिंहासन पर से मज़बूत क़दम रखकर उतरते हुए सम्राट् एडवर्ड अष्टम को संसार ने देखा, एवं देखकर सहानुभूति का एक भी आँसू विना बहाए, विना कान-पूँछ हिलाए, पत्थर के ढोकों के समान हृदय-हीनता प्रदर्शित करनेवाले उनके देशवासियों के प्रति वह घृणा की भावना से परिपूर्ण हो गया। वास्तव में एडवर्ड अष्टम के गृह-त्याग ने इँगलैंड की हृदय-हीनता तथा बहुजन-शासन को बड़े ही नग्न रूप में संसार के सामने रख दिया।

प्रेम के जिस अभिनय को लेकर इतना बखेड़ा खड़ा किया गया है, वह उतना भयानक अथवा महत्त्व-पूर्ण न था, जितना उसे बना दिया गया है। सम्राट् एडवर्ड से बहुत पहले ही इस प्रकार के विवाहों की परिपाटी इँगलैंड के इतिहास में बद्धमूल हो चुकी थी। हेनरी अष्टम ने अपनी दासियों तक से परिणय किया, और एक स्त्री के जीवित रहते हुए भी दूसरी से विवाह तथा व्यभिचार-संबंध स्थापित किए। जॉर्ज चतुर्थ ने भी मिसेज़ फ़िट्-ज़िराल्ड से विवाह किया। किंतु उन्हें इँगलैंड की

जनता ने पद-च्युत नहीं किया। इसका कारण केवल यह था कि उस समय पार्लियामेंट राजा की प्रभुता में विश्वास रखती थी। प्रधान मंत्री की सत्ता भी इतनी प्रबल न थी कि वह साम्राज्य का सर्वेसर्वा बन सके। साथ-ही-साथ उस समय के राजा भी लोक-सत्ता तथा लोक-वृत्ति को एकदम निःसत्त्व बनाए रखकर केवल अमीरों और पादरियों के हाथ में ही देश का शासन-तंत्र सौंपे रहा करते थे। परिणामतः देश में राजा के पृष्ठपोषक अमीरों और पेटू पादरियों का ही बोलबाला रहता था, और वे जो चाहें, करते थे। राजा भी भला-बुरा जो चाहता, इन लोगों की सहायता से, किया करता था।

श्रीयुत सम्राट् अष्टम एडवर्ड

[जिन्होंने इँगलैंड का सिंहासन त्याग दिया।]

महारानी विक्टोरिया के शासन-काल के प्रारंभ से ही ज़माना बदल चला। महारानी की कम उम्र का तत्कालीन प्रधान मंत्रियों और विशेषतः वैदेशिक मंत्रियों ने खूब फ़ायदा उठाया, और ६०-७० वर्ष के दीर्घ काल में प्रजा-सत्ता को शासन-तंत्र की प्रधान शक्ति बना दिया। लार्ड सैलिस्बरी, लॉर्ड रसेल, लॉर्ड पामर्स्टन, सर रॉबर्ट पील तथा मि० ग्लैडस्टन ने जिस दृढ़ता से प्रधान मंत्रित्व की ज़िम्मेदारी या सत्ता को महारानी विक्टोरिया की इच्छाओं और आदेशों के विरुद्ध क़ायम रक्खा, और समय-समय पर महारानी के अधिकारों को बल-पूर्वक आत्मसात् किया, यह नई बात नहीं रह गई है। इतिहास और विशेषतः स्ट्रेची-लिखित 'विक्टोरिया' ग्रंथ जिन्होंने पढ़ा है, वे प्रधान मंत्री की वैधानिक सत्ता के विकास को खूब समझ सकते हैं। सम्राट् एडवर्ड सप्तम ऐसे सीधे तथा आरामतलब व्यक्ति

मिसेज़ सिंपसन

[जिनके लिये सम्राट् ने सिंहासन त्याग दिया, गृह भी त्याग दिया।]

थे कि वह वैधानिक झंझटों से दूर रहने में ही कुशल समझते थे। किंतु उनके समय में भी प्रधान मंत्री तथा तदंतर्गत प्रजाशक्ति की वैधानिक सत्ता

का प्रश्न हाउस ऑफ़् लॉर्ड्स के साथ हुए १९११ के वैधानिक युद्ध में स्पष्ट रूप से देश के सामने आया, और उस युद्ध में भी मि० आस्क्विथ प्रधान मंत्री की ही विजय रही। राजा को अपने मित्र लॉर्डों का विरोध करना पड़ा, और प्रधान मंत्री का साथ देना पड़ा। सम्राट् पंचम जॉर्ज तो बड़े ही सीधे गऊ आदमी थे। वह अपनी टाँग अड़ाना जानते ही न थे, इसीलिये उनका राज्य-काल घटना-विहीन रहा। किंतु उनके सीधेपन का भी प्रजा-सत्ता ने अपने लिये शक्ति-संचय करने में पर्याप्त उपयोग किया। १९३५ के अंत में—यदि स्पष्ट बात कही जाय, तो—इँगलैंड का राजा शक्ति-हीन, जरठ व्याघ्र के समान रह गया था। शासन की प्रत्येक शक्ति केबिनेट और प्रधान मंत्री के ही हाथ में आ गई थी।

किंतु इधर इँगलैंड की लोक-सत्ता में भी अनेक परिवर्तन हुए। महायुद्ध के समय तक देश में केवल दो दल ही प्रधान थे—दक़ियानूसी और उदार। किंतु जर्मनी और रूस के साम्राज्यों के ध्वंसावशेषों से जो अग्नि-स्फुलिंग वायु-वितान में उद्धूत होकर देश-देशांतर में फैले, उनकी चिन-गारियाँ इँगलैंड में भी मूर्तिमती हुईं, और मज़दूर-आंदोलन का रूप धारण करके तुरंत ही एक महाकाय राजनीतिक शक्ति के रूप में प्रकट हुईं। लेबर-दल भी बना, और देश में संपत्ति तथा श्रम का संघर्ष प्रारंभ हुआ। संपत्ति पर निर्भर मठों और महंतों को भी इस प्रतिपल बढ़नेवाली आपदा का आभास मिला, और साम्यवाद तथा बोलशेविज़्म के विरुद्ध अमीरों और पादरियों तथा उनके मित्र दक़ियानूसियों की जिहाद शुरू हुई। श्रमजीवियों ने डटकर उनका मुक़ाबिला किया। अंततोगत्वा दक़ियानूसी सरकार ने श्रम-जीवी नेताओं को फोड़-फाड़कर श्रमजीवियों की सत्ता तोड़ने की कोशिश की। मैक्डोनाल्ड तथा लॉर्ड टॉमस-जैसे श्रमजीवी नेता अपने दल से विद्रोह करके पद-लोलुपता की मीठी बेवक़ूफ़ी में जा फँसे। और, देश में नेशनलिस्ट सरकार नाम की एक बिना सिर-पैर की सरकार का जन्म हुआ। दक़ियानूसी लॉर्डों और पादरियों ने समझा कि आई हुई बला टल गई, और अब साम्यवाद तथा बोल्शेविज़्म का नाम भी देश में न रहेगा। लेकिन उनकी यह धारणा ग़लत सिद्ध हुई। देश की बढ़ती हुई बेकारी ने उस अग्नि को और भी प्रबल ज्वाला के रूप में भड़का दिया। वेल्स तथा कोयले के क्षेत्रों, लोहे के कारख़ानों और कपड़े की मिलों में असंतोष की प्रबल लहर बहने लगी। इधर भारत में भी साम्यवाद और जनसत्तावाद की प्रबल धारा प्रवाहित हो रही थी, जिससे १९३५ के अंत तक इँगलैंड की यह नई नेशनलिस्ट सरकार बेहद परेशान-सी थी। इतने में स्वर्ग सिधारे सम्राट् पंचम जॉर्ज, और उनके स्थान पर गद्दीनशीन हुए सम्राट् एड्वर्ड अष्टम। बस, ऊँट की पीठ पर आख़िरी तिनका रख दिया गया, और उसकी कमर टूटने लगी।

सम्राट् एडवर्ड अष्टम बड़े ही प्रतिभावान्, प्रजा-प्रिय, ग़रीबी के पृष्ठपोषक तथा हद दर्जे के आत्म-विश्वासी और आत्मनिर्भर व्यक्ति हैं। बचपन से ही राजनीति का उन्हें अध्ययन तथा मनन कराया गया है। वह संसार-भर भ्रमण करके सांसारिक विषयों और दुनिया-भर की बातों का विशिष्ट अनु-भव प्राप्त कर चुके हैं। अतएव देश की दरिद्रता, श्रमजीवियों के कष्टों और प्रजा की बेकारी का उनके हृदय पर बड़ा ही करुणामय चित्र अंकित था। राजसिंहासन पर आते ही, बल्कि प्रिंस ऑफ़् वेल्स की हालत में ही उन्होंने वेल्स, कार्नवाल, स्काटलैंड आदि प्रांतों के बेकारों की आर्थिक दशा सुधारने के सुंदर प्रयत्न प्रारंभ किए, जिनके कारण दक़िया-नूसी मंत्रिमंडल के साथ उनका संघर्ष भी हो

CC0. Gurukul Kangri Collection

गया। अपने विशेष अधिकारों का उपयोग करके उन्होंने मंत्रिमंडल के सिर पर पदाघात किया, और देश के बेकारों की सहायता के प्रयत्न प्रारंभ किए। उनकी सहानुभूति भी सदा ग़रीबों और श्रमजीवियों के साथ थी। अमीरों, लॉर्डों तथा पादरियों के हाथ की कठपुतली बनने से उन्हें साफ़ इनकार था। वह नृत्य करने के लिये प्रायः लॉर्ड-पत्नियों और अमीरों की छबीली मिसों को मनोनीत न करके साधारण युवतियों को ही पसंद करते थे। कहने का अभिप्राय यह कि उनकी प्रवृत्ति प्रायः साम्यवाद की ओर थी, और वह अमीर तथा ग़रीब के कृत्रिम भेद को दूर करके सच्ची राष्ट्रीयता को ही देखना चाहते थे। उनका यही दरिद्र-सौहार्द उन्हें ले डूबा। दरिद्रता के साथ पादरियों की भी दुश्मनी है, क्योंकि ग़रीबों से पादरियों को ऐश करानेवाला धन नहीं मिल सकता, इसीलिये स्वतंत्र वृत्ति-वाले हमारे चरित-नायक को पादरी फूटी आँख अच्छे न लगते थे। वह चर्च ऑफ़् इँगलैंड की दक़ियानूसी मनहूसियत में विश्वास न रखते थे। इसलिये डॉ० ब्लंट-जैसे स्वार्थी बिशप तथा आर्क बिशप ऑफ़् कैंटरबरी-जैसे अमीर-तबियत आदमी सम्राट् को सिंहासन पर देखकर मन-ही-मन जला करते थे। युवराज-काल से ही उनकी यह प्रवृत्ति प्रकट हो गई थी, और इसीलिये सम्राट् जॉर्ज पंचम जब हृद्रोग से पीड़ित हुए थे, तब महारानी मेरी का सबसे बड़ा प्रयत्न इसी ओर था कि किसी प्रकार युवराज आफ़्रिका के जंगलों से सीधे लंदन आ जायँ, अन्यथा उनके राज्य-च्युत होने का भय था। सम्राट् जॉर्ज के देहावसान पर भी एडवर्ड अष्टम को राजसिंहासन न मिलने देने की योजना की जा रही थी, ऐसा प्रतीत होता है; क्योंकि मृत्यु के समय सम्राट् जॉर्ज पंचम ने अपने हाथ से अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य दिए जाने का आदेश लेखबद्ध किया था। इसके पश्चात् सम्राट् एडवर्ड पर घातक आक्रमण करने का भी प्रयत्न किया गया। किंतु इन सब उपायों पर उन्होंने विजय प्राप्त की, और वह सिंहासन पर आए। उनका राज्या-भिषेक-काल इतनी दूर जो रक्खा गया, उसमें भी रहस्य का आभास मर्मज्ञों को मिलता है। अस्तु। येन केन प्रकारेण उन्हें सिंहासन से हटाया ही गया, और प्रधान मंत्री ने अपनी सत्ता सर्वोपरि सिद्ध करके दिखला दी। इस ढोंग से संसार की आँखें चौंधियाई नहीं, बल्कि उसे इँगलैंड के राजनीतिक जगत् में हुए इस महत्त्व-पूर्ण शांत विप्लव को देखकर शिक्षा ग्रहण करने का मौक़ा मिला है।

सहयोगी 'कर्मवीर' के शब्दों में 'हिंदुओं की दृष्टि में यह पुरुषोत्तम-मास है, किंतु इस महीने में पुरुषोत्तम-कार्य आठवें एडवर्ड से बन पड़ा है। मुसलमानों की दृष्टि से यह रमज़ान का—उपवास का—महीना है। इसका पर्यवसान क़ुरबानी से होना चाहिए।' बादशाह एडवर्ड ने अपनी क़ुरबानी देकर सच्चा रमज़ान मनाया है। यह ग़रीबों का युग है, और आज प्रेम का साधक आठवाँ एडवर्ड समझता है कि प्रेम का देवता साम्राज्य के सुनहले महलों में नहीं रहने दिया जा सकता, वहाँ से तो उसे देश-निकाला लेना ही पड़ेगा। प्रेम के देवता की प्रतिष्ठा तो ग़रीबी में ही की जा सकती है। मानव-प्रेम की आराधना करनेवाले जगत् के मनस्वी भी चाहे उन्हें साम्यवादी या ग़द्दार कहकर भले ही बदनाम करें, यदि संसार के ग़रीबों को राज्यों और तिजोरियों की ग़ुलामी से खींचकर मानव के व्यक्तिगत अधिकारों की तरफ़ लाते हैं, तो कौन-सा अपराध करते हैं।

सम्राट् के गृह-त्याग से जहाँ हमें ग़रीबी और प्रेम की वेदी पर सर्वस्व निछावर करनेवाले आत्म-त्याग की अलौकिकता और सम्राट् के महान् मनुष्यत्व का आभास मिलता है, वहाँ

इँगलैंड की जनता की भेड़चाल, वहाँ के महामंत्री की अद्भुत शक्ति तथा वहाँ के पादरियों, समाचार-पत्रों और लॉर्डों की प्रचार-शक्ति का भी पर्याप्त अनुभव होता है। 'राजा प्रकृतिरञ्जनात्।' के सिद्धांत का पालन इँगलैंड में किस ढंग से राजा से बरबस करा लिया जाता है, यह भी खूब स्पष्ट हो जाता है। किंतु साथ-ही-साथ हमें यह देखकर आश्चर्य भी नहीं होता कि अमीरी का दम भरनेवाले अँगरेज़ भारत में भी प्रकृति-रंजन के सिद्धांत का पालन क्यों नहीं करते।

खैर, जो कुछ भी हुआ, वह इँगलैंड के 'स्वान्तः-सुखाय' हुआ, और यह अब निश्चित है कि स्वतंत्र वृत्तिवाला दरिद्र-बंधु सम्राट् इँगलैंड के सिंहासन पर सदियों में भी न आवेगा। प्रधान मंत्री के हाथ में शासन-सूत्र देकर साम्राज्य-संघटन के साधन-मात्र बननेवाले व्यक्ति इस पद के लिये दुर्लभ न होंगे। क्या हम आशा करें कि हमारे वर्तमान सम्राट् जॉर्ज षष्ठ केवल अपने पिता के चरण-चिह्नों पर चलनेवाले ही न बने रहकर, अपने पूज्य ज्येष्ठ भाई का भी अनुकरण कर प्रजा की ग़रीबी और दरिद्रों की बेकारी की ओर भी नज़र उठाएँगे। ज़माने का तक़ाज़ा है कि वह इस ओर ज़रूर देखें, वरना यह बढ़ती हुई ग़रीबी और बातों से न शांत होनेवाली पेट की ज्वाला भीषण दावानल का रूप न धारण कर ले। उस समय मि० बाल्डविन और उनके हिमायती पादरियों तथा अमीरों की ये चोचलेबाज़ियाँ साम्राज्य को कष्ट-मुक्त न कर सकेंगी।

× × ×

२. महायुद्ध की संभावना

लोग कहते हैं, महायुद्ध शीघ्र ही होगा। अभी हाल में ही माननीय श्रीयुत श्रीनिवासजी शास्त्री महोदय ने रंगून में जो व्याख्यान दिया, उसमें भी महायुद्ध की संभावना पर अधिक प्रकाश डाला गया है। किंतु वस्तु-स्थिति उतनी भयंकर नहीं मालूम देती, जितनी उसकी विभीषिका बनाई गई है। आगामी महायुद्ध संसार की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति को देखते हुए अभी बहुत सन्निकट नहीं मालूम होता। अमेरिका की वर्तमान रण-सज्जा, जिसकी घोषणा कुछ दिन हुए पत्रों में प्रकाशित हुई थी, इस बात की परिचायिका है कि प्रशांत महासागर ही इस बार रणस्थल का रूप धारण करेगा। हमारे इस अनुमान की पुष्टि के लिये अनेक राजनीतिक तथा अंतरराष्ट्रीय कारण हैं। सबसे मुख्य तथा प्रबल कारण तो यह है कि योरप, अमेरिका और जापान के बाज़ार इसी महासागर में हैं। भूमध्य सागर के व्यापारिक क्षेत्र—ईजिप्ट, मोरक्को, ट्यूनिस, सोमालीलैंड, आफ्रिका आदि—में इटली, ज़ेकोस्लोवकिया और फ्रांस की वस्तुएँ ही अधिक मात्रा में सफल होती हैं। क्योंकि इनके राजनीतिक प्रभाव, इन देशों के सान्निध्य और व्यापारिक सुविधाओं का बहुत बड़ा असर वस्तुओं के दामों पर पड़ता है, और इँगलैंड, जापान, अमेरिका के मुक़ाबिले में इन देशों की वस्तुएँ वहाँ ज़्यादा सस्ती पड़ती हैं। अतएव इन दूरवर्ती देशों को प्रशांत महासागर के बाज़ारों के अतिरिक्त और कोई भी व्यापारिक क्षेत्र उपलब्ध नहीं है। चीन, स्याम, इंडोचाइना, ब्रह्मदेश, भारत, जावा, सुमात्रा और ईस्टर्न आर्चिपैलेगो में इन देशों की लाखों फ़ैक्टरियों के माल की जितनी खपत होती है, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं होती। किंतु व्यापारिक संघर्ष इतना बढ़ गया है कि प्रत्येक राष्ट्र अपनी व्यापारिक प्रभुता के लिये सतत-यत्न हो रहा है। चीन की जागृति और मांचूरिया में बढ़ते हुए जापान के प्रभाव को देखकर इन सभी शक्तिशाली राष्ट्रों के हृदयों में बेहद उछल-कूद मच रही है। चीन-जैसा ४० करोड़ जन-संख्यावाला बाज़ार जापान के हाथ में जाते देखकर तथा भारत में जापानी माल का प्रभुत्व स्थापित होता पाकर

CC0. Gurukul Kangri Collection

अमेरिका और इँगलैंड के हृदय उद्विग्न हो उठे हैं। उन्हें डर है कि यदि प्रगति ऐसी ही रही, तो शीघ्र ही जापान पूर्वीय बाज़ारों का स्वामी बन बैठेगा। यही कारण है कि पूर्वीय बाज़ारों के द्वार सिंगापुर में अँगरेज़ों ने एक महाप्रबल जहाज़ी बेड़ा—जिसमें सभी विध्वंसकारी आधुनिक युद्धोपकरण बहुत बड़ी संख्या में संगृहीत हैं, तथा जिनकी सहायता से ३६ घंटे तक संसार की सभी शक्तियों की संघटित सेनाओं का निर्बाध निरोध किया जा सकता है—आयोजित किया है। दूसरी ओर अमेरिका ने भी युद्ध-सज्जा प्रबल रूप में प्रारंभ कर दी है। परिणामतः पूर्व और पश्चिम, दोनो पार्श्वों से प्रशांत महासागर दुर्ग-रूप धारण कर रहा है। उत्तर में जापान और रूस की सेनाएँ भी उस पर दृष्टि लगाए बैठी हैं।

व्यापारिक कारण-कार्यावली के अतिरिक्त राजनीतिक परिस्थिति ने भी इस समस्या को उग्र रूप दे रक्खा है। फ़्रांस के प्रजातंत्र का जर्मन-साम्राज्यवाद सदा से ही शत्रु रहा है। महायुद्ध के बाद जर्मन-साम्राज्य छिन्न-भिन्न होकर एक प्रजातंत्र ज़रूर वहाँ स्थापित हुआ था, लेकिन वह प्रजातंत्र साम्राज्यवाद का ही एक हानिकर रूपांतर, एक-जनतंत्र-मात्र ही है। हिटलर की तानाशाही का ही वहाँ बोलबाला है। क़ैसरशाही का ही रूपांतर हिटलरशाही है। भेद केवल यह है कि क़ैसर अपने दैवी अधिकारों और अमीरों के बल पर क़ैसर था, लेकिन हिटलर जन-मत और मज़दूरों के बल पर जर्मनी का सर्वेसर्वा है। फ़्रांस के लिये इस परिवर्तन का कोई मूल्य नहीं, क्योंकि दोनो देशों के शासन-तंत्र भिन्न-भिन्न आदर्शों को लिए हुए हैं। फ़्रांस और जर्मनी की यह रूर-सीमावलंबिनी नैसर्गिक शत्रुता योरप की शांति के लिये सदा अग्नि-स्फुलिंग का काम देती रही है। शक्ति-संतुलन के सिद्धांत को योरप की राजनीति में क़ायम रखने के लिये फ़्रांस और जर्मनी की यह सीमा-नीति सदा बड़े गंभीर विचार का विषय रही है। राष्ट्रों की दलबंदी इस प्रश्न को लेकर ही होती रही है। स्पेन के वर्तमान गृह-युद्ध में इस दलबंदी का रूप खूब स्पष्ट हुआ है। फ़्रांस, ब्रिटेन तथा रूस एक ओर है, जर्मनी और इटली दूसरी ओर। फ़्रांस और रूस के बीच एक समझौता या संधि भी इन दिनों हो गई है। फलतः जर्मनी को आत्म-रक्षा के लिये फ़्रांस और रूस के शत्रुओं से संधि करना आवश्यक हो गया है। उसने जापान और इटली से संधि कर भी ली है। इन संधियों का अंतरराष्ट्रीय परिणाम यह हुआ है कि जापान के मांचूरिया में बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिये रूस यदि कुछ भी यत्न करता है, तो पीछे से जर्मनी उसकी टाँग योरप में खींचता है। किंतु मांचूरिया में जापान के प्रभुत्व को रोकना रूस के लिये अत्यंत आवश्यक है, और चीन के व्यापारिक क्षेत्रों पर क़ब्ज़ा करना भी। ऐसी दशा में रूस और जापान में युद्ध होने की संभावना की जा सकती है। किंतु जापान कभी एकाएक रूस से युद्ध नहीं ठानेगा, क्योंकि रूस की महती हवाई सेना कुछ घंटों में ही जापान का ढेर कर देने में समर्थ है। जापान की बहुत बड़ी जहाज़ी ताक़त इसके बदले में रूस का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती, क्योंकि रूस का पूर्वीय भाग प्रायः ऊजड़ और बर्फ़ीला रेगिस्तान ही है। जापान की जहाज़ी तोपें उस प्रदेश में कुछ बहुत अधिक नुक़सान नहीं कर सकतीं। इसीलिये जापान ने अपने साथ जर्मन हवाई शक्ति को लिया है। लेकिन यदि कहीं प्रशांत महासागर में युद्ध की संभावना हुई, तो जापान, जर्मनी तथा इटली की सम्मिलित हवाई, जहाज़ी तथा स्थल-सेनाओं के मुक़ाबिले में फ़्रांस, रूस, इँगलैंड तथा अमेरिका की हवाई सेनाएँ, ब्रिटेन, फ़्रांस और अमेरिका के महान् जहाज़ी बेड़े तथा रूस, भारत और उपनिवेशों की महती स्थल-

सेनाएँ रण-क्षेत्र में उतरेंगी, यह निस्संदेह है। तब हाथी और मच्छड़ का मुक़ाबिला रहेगा। ऐसी दशा में न तो जर्मनी ही इतना पागल है कि वह व्यर्थ में अपना रहा-सहा बाल्टिक समुद्र-तट रूस के हवाले करा दे, और न जापान ही इतना बेवक़ूफ़ है कि वह अपना सर्वनाश करा डाले। रहा इटली, सो उसके लिये प्रशांत महासागर का महायुद्ध व्यापारिक दृष्टि से घातक ही होगा। स्वेज़ और जिब्राल्टर के दरवाज़े बंद करके अँगरेज़ और फ़्रेंच लोग उसे ऐसी मार मारेंगे कि उसकी सड़ी-सी जहाज़ी ताक़त सदियों के लिये मर मिटेगी। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए यह संभव नहीं मालूम होता कि महायुद्ध शीघ्र ही आरंभ हो जाय। होगा, यह तो निश्चित ही है, लेकिन कोई भी राष्ट्र अकेले ही युद्ध की संभावना उत्पन्न करने की हिम्मत अभी ५ वर्ष तक तो कर नहीं सकता। जापान की हवाई ताक़त यदि शीघ्र ही बेहद बढ़ गई, तो अलबत्ता यह डर हो सकता है कि वह अकेला ही युद्ध प्रारंभ कर दे, लेकिन इसकी भी संभावना कम है; क्योंकि जापानी लोग हवाई युद्ध से डरते-से हैं, और उतने अच्छे हवाई उड़ाके नहीं होते, जितने रूसी या अँगरेज़। इसके अतिरिक्त रूस की रण-सज्जा इतनी विकट है कि जापान सहसा उसका आक्रमण सह नहीं सकेगा।

यह सब होते हुए भी अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति ऐसी है कि किसी भी दिन छोटे-से भी कारण को लेकर कुछ विभ्राट् उपस्थित हो सकता है। लेकिन मांचूरिया के प्रश्न पर जापान का लीग से त्याग-पत्र, अबीसीनिया का इटली द्वारा आक्रांत होना, स्पेन का गृह-युद्ध तथा चीन के प्रधान मंत्री चियाँग-काई-शेक की गिरफ़्तारी आदि महत्त्व-पूर्ण घटनाएँ सही-सलामत निकल जाते देखकर अनुमान होता है कि संसार का प्रत्येक राष्ट्र युद्ध की तैयारी करते रहने पर भी युद्ध नहीं चाहता, और किसी-न-किसी तरह अपरिवर्तनशील परिस्थिति बनाए रखने में ही अपनी कुशल समझता है। रूस और इँगलैंड की महाशक्तियाँ इस परिस्थिति को संगठित रूप से सँभाले हुए हैं। यदि इन दोनों में से एक भी विलग हुआ, तो संसार की ख़ैर नहीं।

× × ×

३. चलने का तरीक़ा

विलायत की 'चार्म'-नामक पत्रिका में श्रीमर्जेरी विलसन का एक लेख चलने के विषय में प्रकाशित हुआ है, जो बड़ा ही मनोरंजक है। उनका कहना है—"भले प्रकार चलना भी एक कला है, जो अभ्यास और सावधानी से सीखी जा सकती है। लोगों को चलते समय सीधा होकर और एक पंक्ति में चलना चाहिए। एक सीध में न चलना बड़ा ही भद्दा और दोष-पूर्ण मालूम होता है।

"एक पंक्ति की सीध में चलने के लिये अपने शरीर को पर्याप्त सँभालने की आवश्यकता होती है, जो किसी प्रकार की कसरत से कम नहीं है, और अभ्यास उसे पूर्णता देता है। जो लोग अपने शरीर को सँभालने में असमर्थ होते हैं, वे कभी सीधे होकर नहीं चल सकते। अधिकतर लोग दुहरी पंक्ति में, इधर-उधर झूमते, चलते देखे जाते हैं, और उनकी यह आदत सरलता से नहीं सुधारी जा सकती। सीधी होकर एक पंक्ति में चलनेवाली स्त्री अधिक आकर्षक और सुंदरी जान पड़ती है। और, यदि वह महीन तथा पतले (शरीर से चिपके हुए) वस्त्र पहने हो, तो उसकी कोमलता और माधुर्य दुगना बढ़ जाता है। नाटे क़द की तथा शरीर से भारी स्त्रियाँ भी यदि अपने को सँभालकर सीधी चलने का अभ्यास करें, तो वे भी हलकी और सुंदर दिखाई देंगी।

"पुरुषों के लिये भी सीधे होकर चलना उन्हें महत्त्व-पूर्ण और आकर्षक बनाता है। शरीर को संयत रूप में रखकर पुरुष भी यदि एक पंक्ति में

CC0. Gurukul Kangri Collection

चलने का अभ्यास डालें, तो उनके लिये भी यह एक विशेषता होगी।"

× × ×

४. टर्की के जेलख़ाने अब सुधार-गृह

टर्की में शीघ्र ही जेलखानों को तोड़कर 'सुधार-गृह' बनाए जायँगे। अंकारा का समाचार है कि टर्की के न्याय-मंत्री द्वारा घोषित किए गए एक नए शासन-नियम के अनुसार वर्तमान जेलों के स्थान पर नए सुधार-गृहों का निर्माण होगा, जिनका मुख्य उद्देश्य क़ैदियों को 'समाज का सच्चा, ईमानदार और उपयोगी सदस्य' बनने की शिक्षा देना होगा। ये नवीन सुधार-गृह कारखानों, पुस्तकालयों, स्नान-गृहों, व्यायाम-शालाओं तथा अन्य उपयोगी विभागों से संयुक्त होंगे, और समाज की सभी नियमित आवश्यकताओं की उनमें रक्खे जानेवाले क़ैदियों को सुलभता रहेगी।

लंबी अवधि के क़ैदियों को, यदि उनका चाल-चलन तथा व्यवहार अच्छा है, चार प्रकार की क्रमिक नियमावली के पालन का अवसर दिया जायगा। पहले उन्हें एकांत क़ैद में रक्खा जायगा, किंतु धीरे-धीरे उनके साथ होनेवाले व्यवहार में सुधार होते जायँगे, और उन्हें मिलनेवाली सुविधाएँ बढ़ती जायँगी, यहाँ तक कि वे चौथी नियमावली में आ जायँगे, जिसके बाद उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता देकर 'सुधार-गृह' में कारावास की अवधि बिताने का अवसर दिया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त उन्हें प्रति सप्ताह कई घंटे अपने संबंधियों तथा कुटुंबियों से भेंट करने के लिये मिलेंगे, और इसके लिये सुधार-गृहों में विशेष स्थानों की योजना रहेगी। ऐसी छुट्टियों के अवसर पर उन क़ैदियों पर वार्डरों की देख-रेख और निगहबानी का कोई प्रतिबंध न रहेगा।

अच्छे चाल-चलन के क़ैदियों की सज़ा घट जाने के अतिरिक्त उन्हें सरकार की ओर से वेतन भी मिला करेगा, जिसे इच्छानुसार व्यय करने का उन्हें पूरा अधिकार होगा। आगामी महीनों में १,००० से अधिक क़ैदी खेती-बारी और खानों के काम में लगा दिए जायँगे, क्योंकि उनका चाल-चलन अच्छा पाया जाता है। उन्हें अच्छी मज़दूरी मिला करेगी, जिसमें वे अच्छी तरह जीविका निर्वाह कर सकें, और काम न मिलने पर भी कुछ दिनों तक बचे हुए धन से अपना काम चला सकें। ऐड्रिआनोप्ल के एक जेलखाने में भी लगभग १,००० क़ैदियों को तुर्की क़ालीन तैयार करना सिखाया जा रहा है, जो उन्हें उद्योगी नागरिक बनाने का ही एक प्रयास है।

× × ×

५. जापान की बढ़ती हुई जन-संख्या का परिणाम

जापान-सरकार के सभी विभागों की ओर से उपनिवेशों में जापानियों को बसाने की शीघ्रता की जा रही है, क्योंकि जापान की बढ़ती हुई जन-संख्या का प्रश्न उनके सामने दिन-दिन जटिल होता जा रहा है। इसी विचार से जापान-सरकार ने सभी देशों में अपने विदेशी विभाग के अफ़सरों को सूचना भेजी है कि वे लोग फ़िलिपाइन-द्वीप, नेदरलैंड्स और ईस्ट इंडीज़ के उपनिवेशों में जापानियों के बसने की आज्ञा प्राप्त करने का प्रयत्न करें, और इस संबंध के सभी प्रतिबंधों को दूर किए जाने की भी यथाशक्ति चेष्टा करें।

जल-सेना, युद्ध-विभाग, अर्थ और व्यापार-विभाग तथा विदेशी विभाग के भिन्न-भिन्न मंत्रि-मंडलों की संयुक्त कमेटी द्वारा जापान-सरकार ने यह निश्चय किया है कि पैसफ़िक महासागर तथा दक्षिण के समुद्रों में जो द्वीप तथा उपनिवेश हैं, उनमें अधिक तत्परता के साथ जापानियों को बसाए जाने की चेष्टा की जाय। कई वर्षों से इन्हीं द्वीपों तथा उपनिवेशों की ओर जापान की दृष्टि लगी

76055

हुई है, और वह उनमें जापानियों की विस्तृत जन-संख्या का स्वप्न देख रहा है।

सन् १६१७ के अमेरिकन उपनिवेशीय ऐक्ट की १११वीं धारा के अनुसार फ़िलिपाइन-द्वीपों में ठेके पर काम करनेवाले मज़दूरों को प्रवेश की आज्ञा नहीं है; किंतु यदि सच पूछा जाय, तो इसके विपरीत ही थोड़े-से जापानी मज़दूरों को वहाँ जाने की भी आज्ञा मिल चुकी है, इस शर्त पर कि वे मज़दूर खेती-बारी के अतिरिक्त किसी भी दूसरे व्यवसाय में न लगेंगे। नेदरलैंड्स में भिन्न-भिन्न देशों के निवासियों के प्रवेश के संबंध में एक क़ानून बना हुआ है, जिसके अनुसार उनकी संख्या तथा क्रम निश्चित है। इसी नियम के अनुसार बटेविया - द्वीप में प्रतिवर्ष वहाँ की जन - संख्या के वार्षिक औसत के दस प्रतिशत के हिसाब से प्रवासियों को रहने की आज्ञा मिलती है। इस प्रकार जापानी प्रवासियों का औसत बटेविया में प्रतिवर्ष ८०० है। १ नवंबर सन् १६३३ को फ़िलिपाइन-द्वीपों में २०,४०० जापानी थे, और नेदरलैंड्स में उनकी संख्या ६,६०० थी, जो जापानी वैदेशिक विभाग की रिपोर्ट से मालूम हुआ है। यदि जापानी प्रवासियों की यही गति रही, तो निकट भविष्य में एशिया के तटस्थ उपनिवेशों और द्वीपों में उनके साम्राज्य की कल्पना असंभव नहीं है।

× × ×

६. अवधवासी रायबहादुर लाला सीतारामजी का निधन!

बड़े खेद की बात है कि हिंदी-संसार के वयोवृद्ध साहित्य - सेवी अवधवासी रायबहादुर लाला सीतारामजी बी० ए०, रिटायर्ड डिप्टी - कलेक्टर का शरीरांत अभी २ जनवरी को हो गया! आप बहुत दिनों तक गवर्नमेंट के हिंदी-आलोचक-विभाग के अध्यक्ष थे। आपने शेक्सपियर के बहुत-से नाटकों और कालिदास के ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया। तुलसी-कृत रामायण के संशोधन में भी आपने बहुत परिश्रम उठाया। कलकत्ता-युनिवर्सिटी का हिंदी-कोर्स आप ही का संगृहीत किया हुआ है। हिंदी की आपने चिरस्मरणीय सेवा की थी। निधन के

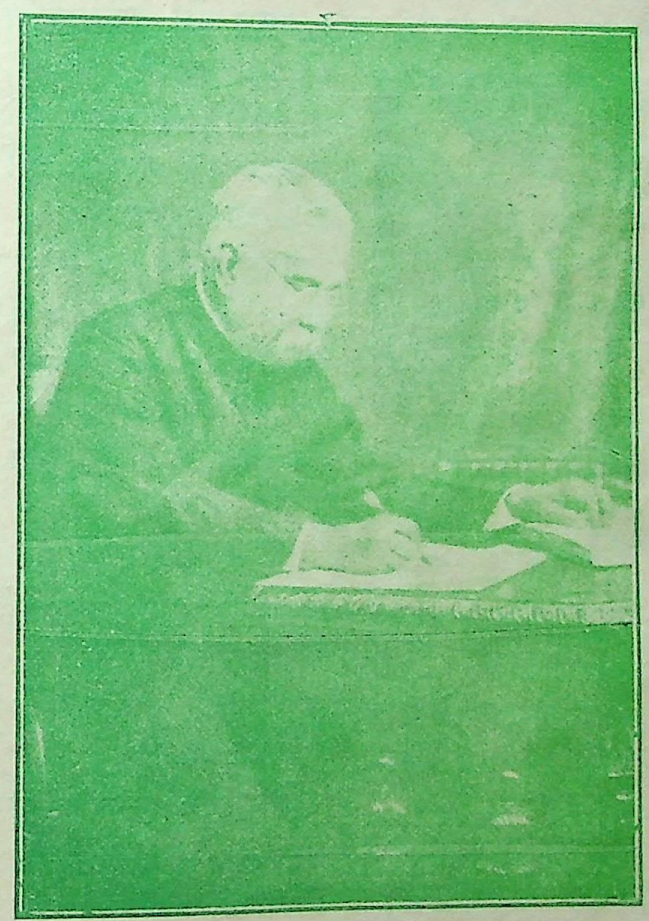

स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीतारामजी

CC0. Gurukul Kangri Collection

दो रोज़ पहले ही आपने अपनी पौत्री कुमारी शांता शारदा बी० ए० से लिखवाकर हमारे पास पत्र भिजवाया था, अतएव हमें स्वप्न में भी यह खयाल न था कि आपका शरीरांत शीघ्र ही हो जायगा। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्-गति दें, और दुखी परिवार को धैर्य। आपके परिवार का और आपका चित्र प्रकाशित किया जा रहा है।

कुछ ओषधियाँ

जिनके सेवन से आप पुनः स्वस्थ, युवा, स्फूर्त और उत्तेजित हो सकते हैं।

अक्सीर नं० ७१—यह ओषधि कंठ से उतरते ही पुष्टि-वर्द्धक प्रभाव दिखाती है। उ साह बढ़ाती है। बुढ़ापे में जवानी मालूम होने लगती है। हृदय तथा मस्तिष्क को आनंद मिलाता है। मूल्य ४ ड्राम ४), २ ड्राम २)

अक्सीर नं० १८ (शिंगरफ़-भस्म)—पट्ठों को असाधारण बल प्रदान करती है। नपुंसकता दूर करने की बलवान् ओषधि है। बूढ़ों की लाठी है। वातज व कफज रोग, अर्धांगवात, आर्दितवात, संधिवात, शून्यवात, कफज खाँसी, मंदाग्नि आदि को रामबाण है। मूल्य १ तोला १०)

अक्सीर नं० ५०—संसार-भर में इसके समान बलदायक ओषधि नहीं है। पहली ही गोली अपना प्रभाव दिखाती है। समस्त पुरुष-संबंधी निर्बलताओं को दूर करके पुनः नवीन बल प्रदान करती है। मूल्य ३० गोली १४), ८ गोली ४) है।

दत्त मकरध्वज वटी नं० ३—ये गोलियाँ पौष्टिक हैं, शीघ्रपतननाशक हैं। सबसे बढ़कर बात यह है कि मादक तथा सुस्ती करनेवाली वस्तु इसमें कोई नहीं है। १६ गोली ८), नमूना २ गोली १)

तिला नं० १—यदि बाहरी विकार भी साथ हों, तो मालिश के लिये इसको भी मँगवाकर रगों-पट्ठों को ताक़त पहुँचावें। मूल्य ५), नमूना १)

पत्र-व्यवहार तथा तार का पता—अमृतधारा, लाहौर

विज्ञापक—मैनेजर अमृतधारा-औषधालय, अमृतधारा-भवन, अमृतधारा-रोड, अमृतधारा-डाकखाना, लाहौर।

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

लेखक, कविवर पं० गोविंदवल्लभ पंत। नाटककार के रूप में पंतजी का नाम कितना प्रसिद्ध हुआ है, यह आप सभी हिंदी-प्रेमियों पर प्रकट है। पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है।

सुंदर, सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २), सादी का १॥)

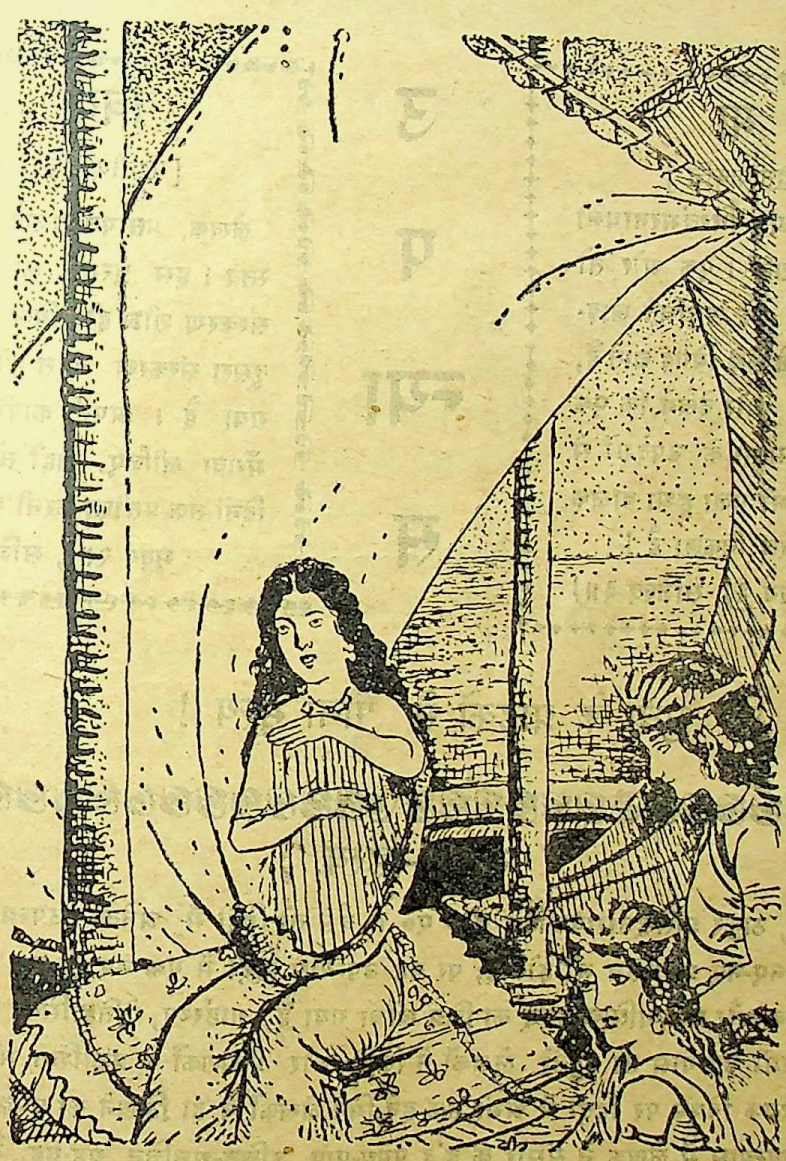

प्रत्येक अध्याय विचित्र रहस्य प्रकट करता है।

पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। पाठक पढ़कर ही इसका असली आनंद प्राप्त कर सकेंगे। १२ रेखा-चित्रों-सहित। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ को आज ही पत्र लिखिए

चित्रावली

उपन्यास

बिदा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, प्रतापनारायण श्रीवास्तव। इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही बिक गया। दूसरा संस्करण बहुत थोड़ा रह गया है। अपनी कापी शीघ्र मँगवा लीजिए, नहीं तो बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

मा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, पं० विश्वंभरनाथजी शर्मा 'कौशिक'। एक ओर तो आप देखेंगे कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे कैसे बिगड़ जाते हैं, और दूसरी ओर देखेंगे कि एक दृढ़-चित्त माता के उपदेशों से ग़रीबी में भी पला हुआ बालक कैसा सच्चरित्र निकला है!

मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य!

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २७४; मूल्य १॥), सजिल्द २)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

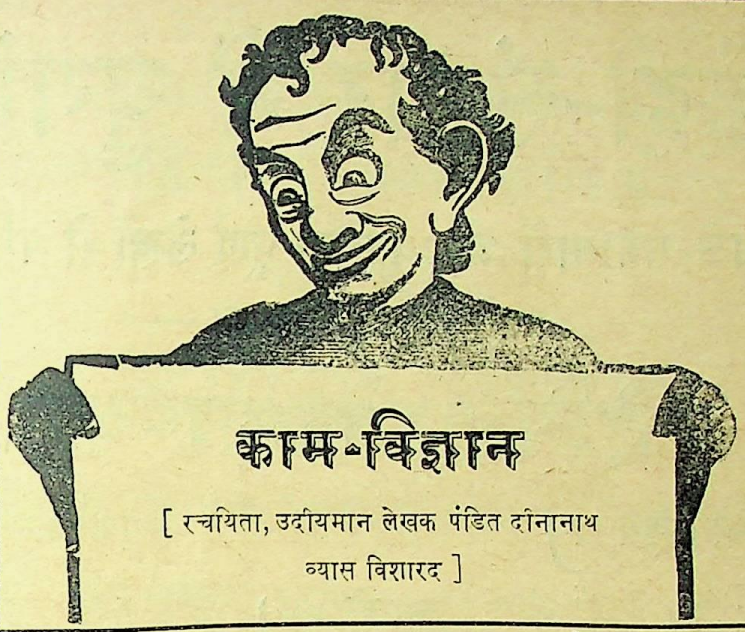

काम-विज्ञान

[रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद]

यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को ख़रीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

विषय-सूची

१. स्त्री का स्थान
२. विवाह क्यों और कब ?
३. वर्तमान परिणीत जीवन
४. वैवाहिक शिक्षण
५. वैषयिक शिक्षा
६. विषय का नैतिक धरातल
७. पति-निर्वाचन
८. जीवन-सहचरी
९. सच्चा वैवाहिक जीवन
१०. दुखी विवाह
११. सुखी विवाह
१२. दांपत्य प्रेम एवं ईर्ष्या
१३. स्त्री और सौंदर्य
१४. वैषयिक उत्कंठा
१५. नव-परिणीता वधू
१६. सहवास पर एक दृष्टि
१७. चुंबन
१८. आलिंगन
१९. सहवास
२०. कुछ महत्व-पूर्ण क्रियाएँ
२१. उपसंहार

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC0. Gurukul Kangri Collection

हिंदी-संसार में युगांतर

ताज़े समाचारों और विद्वत्ता-पूर्ण लेखों से परिपूर्ण

सबसे सस्ता ८ पृष्ठ का—

दैनिक लोकमान्य

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति १ पैसा

छमाही ४॥)

१२ पृष्ठ का—

साप्ताहिक लोकमान्य

वार्षिक मूल्य २) एक प्रति २ पैसा

सर्वत्र एजेंटों की आवश्यकता है

एजेंसी के नियम अति उदार हैं

एजेंसी के नियमों और नमूने के लिये

आज ही लिखिए—

मैनेजर लोकमान्य-कार्यालय

१६०, हरीसन रोड, कलकत्ता

छप रहा है ! शीघ्र प्रकाशित होगा !! अभी से ऑर्डर भेजिए !!!

काम-विज्ञान-साहित्य का अनुपम ग्रंथ-रत्न

विवाहितों की अमर अभिलाषा

सचित्र

दांपत्य जीवन

लेखक—रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०

यदि आप यह चाहते हैं कि

(१) आप यौवन का सच्चा आनंद प्राप्त कर सकें ;
(२) आप जीवन-पर्यंत अपने बल-वीर्य और स्वास्थ्य का सुख भोग सकें ;
(३) आप विवाहित जीवन के कर्तव्यों का भली भाँति पालन कर सकें ;
(४) आप अपनी गृह-देवी को प्रसन्न करके गृह को शांति और आनंद का स्वर्ग बनावें ;
(५) आपका दांपत्य जीवन सफल रहे, और दांपत्य प्रेम नित्यप्रति बढ़ता रहे ;

तो

आपसे हमारा यह अनुरोध है कि आप इस ग्रंथ-रत्न का एक बार अवश्य ही अवलोकन करें। सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक ने 'दांपत्य जीवन' में विवाहित स्त्री-पुरुषों की समस्या के उन सभी पहलुओं पर गंभीरता और स्पष्टता से प्रकाश डाला है, जिन्हें 'गोपनीय' कहा जाता है। विवेचन सर्वथा वैज्ञानिक रीति से किया गया है, और इसमें काम-विज्ञान के सिद्धांत (Theory) और प्रयोग (Practice) का समन्वय इतनी उत्तमता से हुआ है कि पाठक सहजता से उसे ग्रहण कर सकता है। हिंदी-भाषा में, इस विषय पर, ऐसी सुंदर, उपयोगी और वैज्ञानिक रचना आज तक प्रकाशित नहीं हुई। पति-पत्नी के कर्तव्य-कर्मों का निरूपण जितनी स्पष्टता और सचाई के साथ इसमें किया गया है, वैसा आपको हिंदी में कहीं नहीं मिलेगा।

इस अनुपम ग्रंथ की महत्ता का ज्ञान आपको विषय-सूची ही से हो जायगा।

विषय-सूची

१—विवाह—विवाह क्या है ? विवाह-प्रथा, विवाह की रीतियाँ, आदर्श विवाह। २—दांपत्य-जीवन में काम। ३—स्त्री-पुरुष की जननेंद्रियाँ। ४—रजोदर्शन। ५—सुहागरात। ६—मैथुन का विवेचन। ७—मैथुन के आसन। ८—गर्भ-विज्ञान गर्भ के लक्षण, गर्भ में पुत्र या पुत्री, भ्रूण का विकास, गर्भावस्था में मैथुन, गर्भ-रक्षा के उपाय, शिशुचर्या। ९—संतानोत्पत्ति पर नियंत्रण—स्वाभाविक रीति से संतान-निग्रह के उपाय। १०—शीघ्रपतन। ११—दांपत्य स्वास्थ्य।

१५० पृष्ठ, बढ़िया काग़ज़ पर कला-पूर्ण छपाई, चित्ताकर्षक गेट-अप, आवश्यक चित्र भी रहेंगे।

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

'वीणा' क्यों पढ़ना चाहिए?

क्योंकि संत निहालसिंह लिखते हैं—

"I like the copy of the magazine..... The articles are well-written and deal with topics that greatly interest me. I congratulate your Samiti on the production."

'वीणा' मध्यभारत, राजपूताना और मध्यप्रदेश की एकमात्र उच्च कोटि की साहित्यिक सचित्र मासिक पत्रिका है। ग़रीबों को झोपड़ियों से लेकर राजा-महाराजाओं के महलों तक जाती है।

वीणा में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए

वार्षिक मूल्य ४) एक प्रति का ।≡)॥

नमूने का अंक मुफ़्त नहीं भेजा जाता।

व्यवस्थापक 'वीणा', वीणा-बिल्डिंग्स, इंदौर

'विश्वधर्मांक'

की

एक रूप-रेखा

विशेषांक की अभूतपूर्व योजना

'गीताधर्म' के दूसरे वर्ष का एक बहुत बड़ा विशेषांक होगा 'विश्वधर्मांक'। यह बड़ा अंक क्या संसार-भर के धर्मों का विश्वकोष अर्थात् इनसाइक्लोपेडिया (Encyclopaedea) होगा। इसमें सभी प्रधान धर्मों का दिग्दर्शन कराया जायगा। बड़े-बड़े धर्म-प्रवर्तकों, आचार्यों और उन धर्मों के माननेवाले प्रांत आदि के चित्र देकर इस उपयोगी अंक को और भी उपयोगी तथा सुंदर बनाया जा रहा है। इस अंक का मूल्य होगा तीन रुपए। वर्ष-भर के ग्राहकों के लिये ४) चार रुपए में ही बारहो अंक मिलेंगे, इसका अर्थ यह है कि वर्ष-भर के बाक़ी अंक १) एक ही रुपया में मिलेंगे।

इस अंक की विषय-सूची तो पूरे ग्रंथ के लिख जाने पर ही अक्षरानुक्रम के अनुसार बनेगी। पर उसकी एक रूप-रेखा हम यहाँ दे रहे हैं—

(१) भूमिका में पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, विश्वधर्मांक का लक्ष्य और धर्म शब्द की ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा भाषा-वैज्ञानिक मीमांसा रहेगी। इसी भाग में धार्मिक शब्दों की एक सूची रहेगी अँगरेजी, संस्कृत आदि पर्यायों के साथ।

(२) परिचय-खंड में विश्व के भौगौलिक विभाग के अनुसार अर्थात् आजकल के सभी देशों और प्रांतों के प्रचलित मतों का परिचय दिया जायगा। साथ ही विश्व के इतिहास का ध्यान रखकर कुछ बीते युग के धर्मों का भी परिचय दिया जायगा। अंत में धर्मों तथा धार्मिक संस्थाओं का एक इतिहास रहेगा, जिसमें धर्म के पहले की सत्य भावना और उसके पीछे की विकसित धर्म-भावना दोनो का स्वरूप यथामति दिखाया जायगा।

(३) परिशिष्ट में भिन्न-भिन्न धर्मों पर लिखे हुए भिन्न-भिन्न विशेष पुरुषों के लेख एवं प्राचीन काल के अनेक महापुरुष तथा आधुनिक काल के जीवित विचारकों और नेताओं के धर्म-संबंधी विचारों का संग्रह रहेगा। पश्चात् धर्म पर कुछ सामान्य लेख भी रहेंगे, और सबसे अंत में गीताधर्म और विश्वधर्म के संबंध में कुछ चर्चा रहेगी। अनुक्रमणियों से परिशिष्ट समाप्त होगा।

चित्र और मानचित्र आवश्यकतानुसार सभी खंडों में रहेंगे।

प्रार्थना—इस बड़े कार्य में सभी लोगों का सहयोग अपेक्षित है। अर्थवान् अर्थ से और लेखक तथा विद्वान् विद्या से हमारी सहायता कर सकते हैं। हमारी इच्छा है कि इस अंक के द्वारा हमारे सभी भाई विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में फैले हुए एक विश्वधर्म को पहचान सकें। धर्म का दूसरा पर्याय है ईश्वर, पर लोग भिन्न-भिन्न रूपों में ईश्वर को नहीं पहचान पाते, इसलिये भ्रम में पड़ जाते हैं। इससे हमारी इच्छा है कि हम इस विशेषांक द्वारा धर्म अथवा ईश्वर के उन भिन्न-भिन्न रूपों को एक बार देखने और उन पर विचार करने की कोशिश करें। धर्म के इस विश्व-रूप के साक्षात् दर्शन से विश्व की एकता का अनुभव होगा, ऐसी हमें आशा है। अब हमारे भाई हमारे लक्ष्य को समझ गए होंगे, और वे अधिक-से-अधिक ग्राहक बनकर और बनाकर हमारे आर्थिक भार को हलका करेंगे। विद्वान् कुछ बातें सुझावें, तो इस शिक्षा और ऐक्य-प्रचार के कार्य में बड़ा काम हो सकता है।

जो सज्जन अपने धर्म, मत, संप्रदाय, पंथ, धर्म-ग्रंथ अथवा संस्था-विशेष का परिचय देकर हमारी सहायता कर सकते हों, वे अवश्य कृपा करें। सूचना १५ जनवरी, १९३७ के पूर्व ही हमारे कार्यालय में आ जानी चाहिए।

अपने धर्म-संबंधी विशेष विचारों तथा ग्रंथों के नाम आदि भेजकर जो लेखक तथा धर्माचार्य सहायता करने की कृपा करना चाहें, उनकी जानकारी के लिये हम कुछ विषयों के नाम दे देते हैं—

१. हिंदू, २. यहूदी, ३. ईसाई, ४. इस्लाम-धर्म और ५. चारो धर्मों की शाखाएँ, संप्रदाय तथा पंथ।

प्रार्थी—संपादक 'गीताधर्म', साक्षीविनायक, काशी।

CC0. Gurukul Kangri Collection

छप रही है ! **रानी बिटिया** छप रही है !!

(लेखक—श्रीज़हूरबख़्श 'हिंदी-कोविद')

इस पुस्तक में एक ऐसी लड़की की कहानी लिखी गई है, जो अत्यंत सुशीला और बुद्धिमती थी। जब उस पर विपत्ति पड़ी, तब उसने अपूर्व धैर्य और कष्ट-सहिष्णुता का परिचय दिया, एवं केवल स्वावलंबन का आश्रय लेकर अपने तथा अपने आत्मीयों के अंधकार-पूर्ण दिवस प्रकाशमय कर दिए। कहानी आदि से अंत तक अत्यंत रोचक और हृदयग्राही है। पुस्तक की भाषा इतनी सरल है कि उसे अक्षर-ज्ञान-मात्र रखनेवाली बालिकाएँ तथा महिलाएँ बड़ी आसानी से समझ लेंगी। वास्तव में, हिंदी में, बालिकाओं के हितार्थ ऐसा नसीहत-आमेज़ पुस्तकें बहुत ही कम प्रकाशित हुई हैं। यह पुस्तक प्रत्येक पढ़ी-लिखी बालिका के हाथ में देने योग्य है। जो बालिका इसे पाएगी, आदि से अंत तक पढ़े बिना न मानेगी, और पुस्तक-समाप्ति के पश्चात् उसके मन पर जो प्रभाव पड़ेगा, वह बहुत सुंदर होगा। ऐसी उपयोगी पुस्तक का मूल्य लगभग ।।) होगा। चित्र १२। कृपा कर अपनी प्यारी बालिका के लिये एक प्रति ख़रीद दीजिए।

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

बंबई का सर्व-प्रथम

साहित्य-सिनेमा-प्रधान विविध-विषय-विभूषित, सचित्र, साप्ताहिक

वार्षिक मूल्य ४) **न्यू सिनेमा-संसार** एक प्रति –)

संपादक—
श्रीनिधि द्विवेदी

संचालिका—
श्रीमती श्यामसरोजदेवी

प्रत्येक अंक में पढ़िए—

सुंदर कहानियाँ, मधुर कविताएँ, सार-गर्भित, साहित्यिक, सिनेमा-विषयक, सामाजिक एवं विविध वैचित्र्य-पूर्ण लेख, आलोचना, समाचार, मनोरंजक हास्य आदि। प्रत्येक अंक में रंगीन एवं सादे अनेकों चित्र। प्रतिवर्ष ४ विशेषांक। नमूने के लिये –) का टिकट भेजिए। विज्ञापनदाता के लिये स्वर्ण-सुयोग।

पत्र-व्यवहार का पता—

मैनेजर

'न्यू सिनेमा-संसार', कालबादेवी रोड, बंबई

नोटिस बनाम कर्ज़ख़्वाहान हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुकाम हरदोई

मुक़द्दमा नं० ३१९ सन् १९३६ ई०

१—भगवानदीन
२—सुंदरलाल
३—बालकराम
४—मुसम्मात जानकी बेवा
} पिसरान जगन्नाथ } अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा सरवर परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई डाकख़ाना पिहानी

सायलान

बनाम

१—मथुराप्रसाद
२—बृजकिशोर
३—राधेश्याम
} पिसरान डालचंद अक़वाम ब्राह्मण साकिन मौज़ा कुरगावाँ परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

४—मुसम्मात कौशिल्या ज़ौजे भगवानदीन क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा सरवर परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

५—मुसम्मात रूपाकुँवरि बेवा चंद्रबहादुरसिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौज़ा बंदरहा परगना पंडरवा डाकख़ाना पिहानी तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

६—रामभजन वल्द छबिनाथ क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा सरवर परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

७—मूलचंद वल्द कुंजबिहारीलाल क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा कुँवरपुर बसीठ परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

८—गिरिजादयाल वल्द भारथप्रसाद कौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा अंजना परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

९—परफ़ेक्ट कंपनी कोल्हू, बहरामघाट ज़िला बाराबंकी हाल शहर लखनऊ मोहल्ला हज़रतगंज, नेवल-किशोर रोड मार्फ़त बाबू श्याममनोहर वकील रिसीवर कोल्हू कंपनी

१०—अयोध्या वल्द दुर्गा क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा सरवर परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

११—चोख वल्द नामालूम क़ौम वैश्य साकिन मौज़ा अलीपुर परगना पसगवा तहसील महमदी ज़िला खीरी

१२—अयोध्याप्रसाद वल्द नंदराम कौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा सरवर परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई फ़रीक़सानियान

१३—गयादीन वल्द नामालूम क़ौम वैश्य साकिन मौजा पिहानी, सदर बाज़ार परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई

हरगाह दरख़्वास्त सायलान हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० बअदालत साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर हरदोई पेश होकर अदालत हाज़ा में वसूल हुई है, और सायलान ने बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट मज़कूर दाख़िल अदालत हाज़ा कर दिया है। लिहाज़ा फ़रीकसानियान मज़कूरुलसदर व नीज़ ख़ास व आम को बज़रिए नोटिस हाजा मुत्तिला किया जाता है कि जिस शख़्स का कोई क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ ज़ात व जायदाद सायलान मुतज़िक्रा सदर हो, वह क़र्ज़ा मज़कूरा के बाबत तारीख़ अशाअत नोटिस हाजा से तीन माह के अंदर अपना बयान तहरीरी बमूजिब ऐक्ट मज़कूर असालतन ख़ुद या बज़रिए वकील जो कि हालात मुक़द्दमा से बख़ूबी वाक़िफ़ हो दाख़िल अदालत करे व नीज़ जरूरी काग़ज़ात भी ताईद बयान तहरीरी ख़ुद में दाख़िल करे, बाद इनक़िज़ाय मीयाद मुद्दत मज़कूर के कोई उज्र मसमूअ न होगा और फ़ैसला दरख़्वास्त मज़कूर एकतरफ़ा बमुद्दमहाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान होगा।

आज बतारीख २९ अॉक्टोबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नोटिस बनाम क़र्ज़ख़्वाहान हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम हरदोई मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर ३३१ सन् १९३६ ई०

चौधरी सव्वरअली उर्फ़ बेग्गन वल्द चौधरी मुहम्मदअली साकिन क़स्बा संडीला, परगना, तहसील, डाकख़ाना सायल संडीला

बनाम

१—रामराजसिंह } पिसरान ठा० बेनीमाधवसिंह क़ौम ठाकुर साकिन बकासखेरा
२—सुरेशपालसिंह } परगना व तहसील संडीला डाकख़ाना बेनीगंज जि० हरदोई

३—सर्वजीतसिंह
४—तेजकुमारसिंह
५—विजयकुमारसिंह नाबालिग़ बविलायत सर्वजीतसिंह भाई हक़ीक़ी ख़ुद } पिसरान रामेश्वरसिंह } अकवाम ठाकुर साकिन मौज़ा अहिरी परगना गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई डाकख़ाना बघौली
६—ठाकुर प्रसादसिंह वल्द हरबख़्शसिंह

७—देवीदयाल
८—छोटेलाल नाबालिग़ बविलायत देवीदयाल भाई हक़ीक़ी ख़ुद } पिसरान रोहनसाह } अक़वाम वैश्य साकिनान मौज़ा गिरधरपूर परगना व तहसील संडीला डाकख़ाना बेनीगंज ज़िला हरदोई
९—मिसरी साह वल्द उदयसाह

१०—गजोधरप्रसाद } पिसरान विशेश्वरप्रसाद अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा महमूदपुर मज़रा महगवाँ
११—गंगाप्रसाद } परगना कल्याणमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई डाकख़ाना अतरौली

१२—चौ० शब्बीरअली वल्द चौ० मुहम्मदअली } अक़वाम शेख़ साकिनान संडीला मुहल्ला महवताँ तहसील संडीला ज़िला हरदोई
१३—मुसम्मात उम्मतुन्निसा बेवा चौ० मुहम्मदअली }

फ़रीक़सानियान

हरगाह दरख़्वास्त सायलान हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० बअदालत साहब डिप्टी-कमिश्नर पेश होकर अदालत हाज़ा में मौसूल हुई है और सायलान ने बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा ७ ऐक्ट मज़कूर दाख़िल अदालत हाज़ा कर दिया है, लिहाज़ा फ़रीक़सानियान मज़कूरुस्सदर व नीज़ ख़ास व आम को मुत्तिला किया जाता है कि जिस शख़्स का कोई क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरी-शुदा ख़िलाफ़ ज़ात व जायदाद सायलान मज़कूर हो, वह मय दस्तावेज़ात हक़ीयत व दीगर काग़ज़ात ज़रूरी क़र्ज़ा मज़कूर की बाबत तारीख़ इशाअत गज़ट नोटिस हाज़ा से ३ माह के अंदर बयान तहरीरी ऐक्ट बमूजिब मज़कूर असालतन ख़ुद या बज़रिए वकील जो कि हालात मुक़द्दमा से बख़ूबी वाक़िफ़ हो, दाख़िल अदालत करे, बाद इनक़िज़ाय मियाद मुक़र्रर कोई उज़्र मसमू न होगा।

आज बतारीख़ २ माह नवंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मु सरिम

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला प्रतापगढ़

मुक़द्दमा नंबर ३३ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ११ मई सन् १९३७ ई०

बाबू जदुराजसिंह वग़ैरह क़ौम क्षत्री साकिन मतहपुर परगना व ज़िला प्रतापगढ़

दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

नोटिस

बनाम बाबू जदुराजसिंह वग़ैरह साकिन मतहपुर परगना व ज़िला प्रतापगढ़

हरगाह मुसम्मियान बाबू जदुराजसिंह वग़ैरह ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बज़रिए जनाब साहब डिप्टी कमिश्नर बहादुर प्रतापगढ़ ज़िला प्रतापगढ़ जायानी है। और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है, लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरी शुदा व ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरे बाला दरख़्वास्त देहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट हाज़ा से अपना बयानत हरीरी निस्बत अपने क़र्ज़ा के दाख़िल करे, वरना कोई उज़्र बाद ३ माह क़ाबिल समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी क़र्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

मु सरिम

नोटिस हस्ब दफा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल बहराइच

इनकंबर्ड नंबर मुकद्दमा २२ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २४ फरवरी सन् १९३७ ई०

१—ठाकुर दर्शनसिंह वल्द ठाकुर फकीरबख्शसिंह

२—ठाकुर जगदेवसिंह वल्द दर्शनसिंह

३—ठाकुर सिद्धमानसिंह वल्द दर्शनसिंह

४—यदुनंदनसिंह } नाबालिगान पिसरान ठाकुर जगदेवसिंह बविलायत

५—संतबख्शसिंह } जगदेवसिंह पिदर खुद

६—माताबख्शसिंह } नाबालिगान पिसरान सिद्धमानसिंह बविलायत

७—दुर्गाबख्शसिंह } ठा० सिद्धमानसिंह पिदर खुद

बनाम

१—ठा० विंधेश्वरीबख्शसिंह वल्द दलथंभनसिंह कौम क्षत्री साकिन कटघरा परगना हिसामपुर डाकखाना चिलवरिया-स्टेशन जिला बहराइच

२—जंगलीसिंह वल्द गजासिंह कौम क्षत्री

३—पिरथीसिंह वल्द गजासिंह ,, } कौम क्षत्री साकिन हरिहरपुर परगना हिसामपुर

४—कुन्नूसिंह वल्द भभूतीसिंह ,,

५—ठकुराइन पतराजकुँवरि बेवा विशेश्वरबख्शसिंह } तहसील कैसरगंज डाकखाना चिलवरिया-स्टेशन

६—शिवनंदनसिंह वल्द नामालूम

७—रामपालसिंह } नाबालिगान पिसरान जैनंदन- } जिला बहराइच

८—विजयप्रतापसिंह } सिंह बरिफाकत शिवनंदनसिंह चचा खुद

९—प्रतापबहादुरसिंह वल्द इंद्राजबख्शसिंह

१०—जगदंबिकाप्रसादसिंह वल्द चंदीबख्शसिंह साकिन गोदवापुर परगना हिसामपुर डाकखाना चिलवरिया-स्टेशन जिला बहराइच

११—हरवंशसिंह वल्द लालताबख्शसिंह साकिन सरवा परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१२—दिरिगपालसिंह वल्द गोविंदसिंह कौम क्षत्री साकिन कटघरा कलाँ परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१३—भगौतीप्रसादसिंह वल्द पिरथीराजसिंह साकिन कटघरा कलाँ परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१४—जाहिदअली वल्द मुहम्मदअली कौम शेख साकिन पुरा हिरामन व पंडितपुरवा परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१५—लालबहादुरसिंह वल्द रघुबरसिंह साकिन खेरहटा परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१६—महाबीरसिंह वल्द सूरजबक्शीसिंह कौम क्षत्री साकिन गुरदत्तपुरवा परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१७—गफूरअली वल्द नामालूम कौम सैयद साकिन डिहवा परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१८—रामनाथ वल्द नकछेद कौम कलवार साकिन पातूपुर परगना हिसामपुर जिला बहराइच

१९—हनौमान वल्द बदरी कौम ब्राह्मण साकिन पतरहा दाखिली पातपुर परगना हिसामपुर जिला बहराइच

२०—सीतलसिंह वल्द दत्तसिंह कौम क्षत्री साकिन भटपुरवा दाखिली पातूपुर परगना हिसामपुर जिला बहराइच

२१—भगौतसिंह वल्द पिरथीसिंह } कौम क्षत्री साकिन हरिहरपुर परगना हिसामपुर जिला बहराइच

२२—महादेवसिंह वल्द जंगलीसिंह }

२३—गजराजसिंह वल्द देवीबख्शसिंह साकिन मौजे चिल्हौरिया परगना हिसामपुर जिला बहराइच

फरीकसानियान

हरगाह मुसम्मियान ठा० दर्शनसिंह वगैरह साकिनान मौजे भटपुरवा दाखिली पातूपुर परगना हिसामपुर जिला बहराइच ने दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाजा में बजरिए जनाब साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर गुजरानी है और मिनजानिब अपना बयान तहरीरी दाखिल कर दिया है, लिहाजा जुमला अशखास कि जिनका कर्जा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा मुतल्लिकराबाला दरख्वास्तदेहंदा की जात या जायदाद पर हो अंदर ३ माह तारीख शाया होने नोटिस गजट से बयान तहरीरी मिनजानिब अपने कर्जा के दाखिल करें, वरना कोई उज्र बाद में समाअत न होगा और दरख्वास्त बअदमहाजिरी कजख्वाहान मसमू और फैसल होगी।

आज बतारीख १९ माह अक्टूबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला प्रतापगढ़
मु० नंबर २४ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २५ फरवरी १९३७ ई०
दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
लाल फतेहबहादुरसिंह वग़ैरह साकिन दौलतपुर परगना अटेहा तहसील व ज़िला प्रतापगढ़

नोटिस

हरगाह मुसम्मियान लालबहादुरसिंह वगैरह ने दरख्वास्त हस्ब दफा ४ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में जरिए जनाब साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर ज़िला प्रतापगढ़ तहसील प्रतापगढ़ परगना प्रतापगढ़ गुज़रानी है। और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है, लिहाज़ा जुमला अशखास कि जिनका कर्ज़ा डिगरीशुदा मुतज़िकराबाला दरख्वास्तदेहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो, वे अंदर तीन माह तारीख शाया होने इस गज़ट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाखिल करें, वरना कोई उज्र बाद तीन माह काबिल समाअत न होगा और दरख्वास्त मुक़द्दमा हाज़िरी कर्ज़ख्वाहान मसमू और फ़ैसल होगा।

मुंसरिम

नोटिस

बअदालत जनाब साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला खीरी
मुक़द्दमा नं० ११६ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २६ फ़रवरी सन् १९३७ ई०

(१) आनंदसिंह उर्फ़ कृष्णसहाय वल्द लाला हरसहाय
(२) मु० रामदुलारी जौजे आनंदसिंह
} क़ौम कायस्थ साकिन औरंगाबाद परगना औरंगाबाद ज़िला खीरी

बनाम

(१) रामनारायण वल्द दौलतराय क़ौम कायस्थ
(२) शिवनाथ वल्द जगन्नाथ
(३) श्रीधर वल्द गंगादीन } क़ौम ब्राह्मण
(४) रामकुमार वल्द माधोराम
(५) हरिहरनाथबहादुर वल्द मुंशी माताप्रसाद क़ौम कायस्थ
(६) राजमंगलसिंह वल्द बलवंतसिंह } क़ौम कायस्थ
(७) तिलकसिंह वल्द लाला हरसहाय
(८) मु० अहमदीबेगम जौजे सैयद ताज़िमहुसेन क़ौम सैयद
(९) महेशप्रसाद वल्द ठाकुरसाह क़ौम वैश्य
} साकिनान औरंगाबाद परगना औरंगाबाद ज़िला खीरी

(१०) नरायन
(११) दुलार
} पिसरान तिलक क़ौम किसान साकिन रहिजनिया परगना औरंगाबाद ज़िला खीरी

(१२) स्वामीदयाल वल्द उलफ़तराय क़ौम कायस्थ साकिन मितौली परगना कस्ता ज़िला खीरी
(१३) भोलानाथ वल्द हेमनाथ क़ौम ब्राह्मण साकिन रोशननगर परगना कुकरा ज़िला खीरी
(१४) द्वारिकाप्रसाद वल्द नामालूम क़ौम ब्राह्मण साकिन सिकंदराबाद परगना हैदराबाद ज़िला खीरी
(१५) बाबू शिवकुमार साहब वकील वल्द मुंशी परमेश्वरीदयाल क़ौम कायस्थ साकिन लखीमपूर परगना व ज़िला खीरी
(१६) राजकुमार वल्द हरदेवबख़्श क़ौम कायस्थ वारिदहाल लखनऊ मोहल्ले लालकुँआँ वलद सरकार कंपनी मुत्तसिल चौराहा क़ैसरबाग़ परगना व ज़िला लखनऊ

हरगाह सायल ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बजरिए जनाब साहब कलेक्टर साहब बहादुर खीरी गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख़्वास्त-दिहंदा की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में काबिल समाअत न होगा। और दरख़्वास्त बवक़्त हाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान मसमू और फैसल होगी।

आज बतारीख़ ८ दिसंबर, १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस बनाम क़र्ज़ख्वाहान हस्ब दफ़ा ९९नकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर १८० सन् १९३० ई०

१—लोचनसिंह वल्द शोभासिंह
२—बिश्रामसिंह वल्द लोचनसिंह
३—मदारीसिंह वल्द बिश्रामसिंह
४—छोटासिंह } नाबालिग़ान पिसरान मदारीसिंह
५—बलवंतसिंह } बविलायत पिदर ख़ुद

अक़वाम ठाकुर साकिन रैपालपुर मज़रे शिवपुरी परगना कल्यानमल

सायलान

बनाम

१—गयादीन वल्द बलदेवप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन देवपाई मज़रे महगवाँ पोस्ट अतरौली तहसील संडीला ज़िला हरदोई
२—बच्चूसिंह } पिसरान रूपसिंह
३—लछमनसिंह }
४—मुंशीसिंह } पिसरान पुत्तूसिंह
५—नवाबसिंह } मुतवफ्फी

अक़वाम ठाकुर साकिनान लोहरई पोस्ट संडीला ज़िला हरदोई

६—गनेशप्रसाद वल्द भवनीप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन रामगढ़ पोस्ट बेनीगंज
७—सालिकराम } वल्द नामालूम क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा महमूदपूर मज़रे महगवाँ पोस्ट
८—कुंजबिहारीलाल } अतरौली तहसील संडीला ज़िला हरदोई
९—रामभरोसे वल्द नामालूम क़ौम ब्राह्मण साकिन परिहावाँ पोस्ट संडीला ज़िला हरदोई
१०—सरजूप्रसाद वल्द सवितादीन क़ौम ब्राह्मण साकिन महमूदपूर मज़रे महगवाँ थाना अतरौली ज़िला हरदोई
११—शंकरप्रसाद वल्द बलदेवप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन देवपाई मजरे महगवाँ पोस्ट अतरौली परगना कल्याणमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई
१२—गजोधरसिंह वल्द दलसिंह क़ौम ठाकुर साकिन जरुआ पोस्ट बेनीगंज परगना कल्याणमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई
१३—कोआपरेटिव बैंक संडीला तहसील संडीला ज़िला हरदोई

फरीक़सानियान

हरगाह दरख्वास्त सायलान हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर हरदोई में पेश होकर अदालत हाज़ा में मौसूल हुई है और सायलान ने अपना बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा ६ ऐक्ट मज़कूर दाख़िल अदालत हाज़ा कर दिया है, लिहाज़ा फ़रीक़सानियान मज़कूरुस्सदर व नीज़ हर ख़ास व आम को बज़रिए नोटिस हाजा मुत्तिला किया जाता है कि जिस शख़्स का कोई क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ जात व जायदाद सायलान मुतज़िकरा सदर होवे, वह क़र्ज़ा मजकूर की बाबत तारीख़ इशाअत नोटिस गजट से ३ माह के अंदर अपना बयान तहरीरी हस्ब ऐक्ट मजकूर असालतन ख़्वाह बज़रिए वकील जो कि हालात मुक़द्दमे से बख़ूबी वाक़िफ़ हो, दाख़िल अदालत हाजा करे, और नीज़ जरूरी काग़ज़ात भी ताईद बयान तहरीरी खुद में दाखिल करे, वरना बाद इनक़िज़ाय मियाद मुद्दत मजकूर कोई उज्र मसमूअ न होगा और फैसला दरख़्वास्त मज़कूर एकतरफ़ा बअदम हाज़िरी क़र्ज़ख्वाहान होगा।

आज बतारीख़ २७—१० ऑक्टोबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मंसरिम

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा
(ऑर्डर ५—क़ायदा १ व ५)

बअदालत जनाब मुंसिफ साहब बहादुर जौनपूर ज़िला जौनपूर
मुक़द्दमा नंबर ४५२ सन् १९३६ ई०
चाँदिका पांडे उम्र ५० साल वल्द रामदास पांडे साकिन मौज़ा ओरही परगना हवेली ज़िला जौनपूर मुद्दई

बनाम

१—महावीरप्रसाद उम्र ४५ साल
२—लक्ष्मीनारायण उम्र ३८ साल
पिसरान बागेश्वरीदयाल साकिन मोहल्ला चिड़ीमार-टोला शहर जौनपूर बरमकान पं० काशीनाथ वैद्य जौनपूर मुद्दाअलेहुम

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश दा.त् २००) के दायर की है, लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख़ २२ माह जनवरी सन् १९३७ ई० बवक्त दस बजे दिन के असालतन या मारफत वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हों और जवाबदिही दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़ जो आपके इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल कतई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है, पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को, जिनकी शहादत पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात को जिन पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

बसबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २ माह जनवरी सन् १९३७ ई० जारी किया गया। जज

नमूना नं० १६९
फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम आगरा
मुक़द्दमा नं० ६२० सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ५-४-१९३७ ई०

इश्तिहार
मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है
जमनाप्रसाद वल्द छेदालाल क़ौम ब्राह्मण साकिन फ़ीरोज़ाबाद ज़िला आगरा सायल

बनाम

१—फ़र्म श्रीरामचंद्र-मथुरमल मार्फत कन्हैयालाल साकिन फ़ीरोज़ाबाद ज़िला आगरा
२—पन्नाराम राधेश्याम साकिन शिकोहाबाद ज़िला मैनपुरी
३—ठाकुर बरि ज़ौजा राजसिंह साकिन मौज़ा पनीखेड़ा परगना फ़तेहाबाद ज़िला आगरा
४—हरनारायण राजसरूप मोहल्ला पट्टी कलाँ साकिन फ़ीरोज़ाबाद ज़िला आगरा
५—पन्नालाल व मोतीलाल नीम लुराका साकिन फ़ीरोज़ाबाद ज़िला आगरा
६—मिरज़ा ख़ैरातीबेग साकिन फीरोज़ाबाद ज़िला आगरा

की ओर से इस ग़रज़ से पेश हुई है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् ३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिनके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरी शुदा या ग़रडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अराज़ी व मौक़ाज़ात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

इत्तिला तारीख़ बग़रज़ तसफ़िया मराहिब इश्तिहार नीलाम हस्ब आर्डर ५ क़ायदा २० ज़ाब्ता दीवानी

बअदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर अमेठी ज़िला सुल्तानपुर

मुक़द्दमा खफ़ीफ़ा ७०१ सन् १९२७

मुक़द्दमा इजराय डिगरी नंबर २०७ सन् १९३६ ई०

फ़र्म जगन्नाथ व बैजनाथ जरिए बैजनाथ साकिन क़स्बा शाहगंज परगना अमेठी ज़िला सुल्तानपूर डिगरीदार

बनाम

रामअधारसिंह महिउन

बनाम रामअधारसिंह वल्द बिजयसिंह कौम क्षत्री साकिन मौज़ा मुन्नूपूर बरजौली परगना अलानमऊ ज़िला सुल्तानपूर

हरगाह कि मुक़द्दमा मंदरजाबाला में डिगरीदार ने नीलाम जायदाद ग़ैरमनक़ूला की दरख्वास्त की है, लिहाज़ा तुमको इस इत्तिलानामा के ज़रिए मुत्तिला किया जाता है कि तारीख़ २० जनवरी वास्ते तय करने मराहिब इश्तिहार नीलाम के मुक़र्रर की गई है।

आज बतारीख़ ५ जनवरी सन् १९३७ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ४ यू० पी० इनकंबड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब पं० ब्रजकृष्ण टोपा साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा अव्वल ज़िला लखनऊ

मुक़द्दमा नं० ५० सन् १९३१ ई०

तारीख़ पेशी ८—४—१९३७ ई०

१—जोरावरहुसेन
२—मुसतफ़ाहुसेन
३—अहमदहुसेन
४—मुसम्मात हसनजहां बेगम
५—मुसम्मात यूसुफ़जहांबेगम नाबालिगा बविलायत
६—जोरावरहुसेन बिरादर हक़ीक़ी ख़ुद

} पिसरान व दुख्तरान एज़ाजहुसेन अक़वाम मुग़ल साकिनान मौज़ा सकटवरजी परगना व तहसील व ज़िला लखनऊ

सायलान

बनाम

१—दामोदरदास वल्द बलदेवदास कौम रस्तोगी साकिन मोहल्ला सब्ज़ीमंडी चौक शहर लखनऊ
२—रामसरूप वल्द बसंतलाल
३—रामकिशोर
४—जुगलकिशोर
५—मुन्नीलाल
६—मदनगोपाल वल्द बलदेवदास रस्तोगी साकिन मोहल्ला बाग़ मक्का शहर लखनऊ

} नाबालिगान पिसरान बसंतलाल बविलायत रामस्वरूप बिरादर हक़ीक़ी ख़ुद

अक़वाम रस्तोगी साकिनान मुहल्ला सब्ज़ीमंडी चौक शहर लखनऊ

फ़रीक़सानियान

हरगाह कि सायलान मज़कूरेबाला ने दरख्वास्त जो दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० गुज़रानी है, लिहाज़ा नोटिसहस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट मज़कूर किया जाता है कि जिस शख़्स का क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ज़ात व जायदाद सायल मज़कूरेबाला पर हो, वह अपना बयान तहरीरी तारीख़ मुश्तहरी नोटिस गजट से अंदर तीन माह अदालत हाज़ा में पेश करे। ऐसा न करने पर दरख्वास्त मज़कूर ग़ैरहाज़िरी में एकतरफ़ा समाअत की जायगी।

आज बतारीख़ २१—१२—१९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दी ज्वाला बैंक

स्थापित १९२३

हेड ऑफ़िस—ज्वाला बिल्डिंग, दी माल, आगरा।

शाखाएँ—आगरा सिटी, अलीगढ़, इलाहाबाद (चौक), बनारस (बाँस का फाटक), कानपुर (मेस्टन रोड), कलकत्ता (पार्क स्ट्रीट), देहली (कश्मीरी गेट), देहरादून (मसूरी रोड), फ़ीरोज़ाबाद, झाँसी (सिविल लाइंस), कासगंज, लखनऊ (अमीनाबाद-पार्क), मिर्ज़ापुर और शिमला (माशोब्रा)।

व्यापारिक संबंध—दुनिया के तमाम बड़े-बड़े नगरों से।

प्रतिनिधि—न्यूयार्क और लंदन में कई अँगरेज़ी बैंक के हैं।

मैनेजिंग एजेंट्स—दी ज्वाला-इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड। मूलधन दस लाख रुपए, जो १००) प्रति हिस्से से १० हज़ार हिस्सों में विभाजित है। डाइरेक्टर विश्वसनीय, प्रभावशाली और व्यवसायी सज्जन हैं। बिक्री के लिये १०५) रु० प्रति शेयर मिल सकते हैं। मुनाफ़े का कम-से-कम ६ प्रति सैकड़ा का अनुमान लगाया गया है। सब तरह का बीमा किया जाता है।

हिफ़ाज़त—हिसाब मासिक छपता है। शेयर नहीं बेचे जाते। सीमा-रहित ज़िम्मेवारियाँ। बहुत अधिक नक़दी बैलेंस रखते हुए बक कई कठिन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुका है!

शेयर व गवर्नमेंट सिक्यूरिटीज़ की ख़रीद व बिक्री—कलकत्ता में एक ब्रांच ऑफ़िस होने से शीघ्र-व्यवस्था, कम ख़र्च और सुविधाओं की गारंटी; प्रोप्राइटर को २७ वर्ष का अनुभव है।

कारबार

चालू खाते—माहवारी कम-से-कम ५००) बक़ाया पर १ प्रतिशत सूद है।

सेविंग बैंक—सप्ताह में एक बार चेक द्वारा अधिक-से-अधिक १०००) एक हज़ार रुपए तक निकाला जा सकता है। माहवारी कम-से-कम बक़ाया पर २॥) प्रतिशत सूद है।

फ़िक्स्ड डिपॉज़िट—२४ मास का ४ प्रतिशत, १२ मास का ३ प्रतिशत, ६ मास का २½ प्रतिशत और ६ मास का २ प्रतिशत प्रतिवर्ष।

बैंक का एकाउंट ३०—६—३६ को

पूँजी आदि.....६,०.,०००) रु० (छ लाख)
ख़ुद ज़मानत पर दिया हुआ धन...७०,०००) रु० (सत्तर हज़ार)
ज़मानत पर दिया हुआ धन.....१५,२३,०००) रु० (पंद्रह लाख तेईस हज़ार)
जमा व हुंडियाँ.....२३,०१,०००) रु० (तेईस लाख एक हज़ार)
नक़द व हुंडियाँ.....६,०६,०००) रु० (नव लाख नव हज़ार)
कुल योग.....५४,०३,०००) रु० (चौवन लाख तीन हज़ार)

मि० डब्ल्यू० बी० डासन मैनेजर, हेड ऑफ़िस, आगरा

गुरुकुल पुस्तकालय

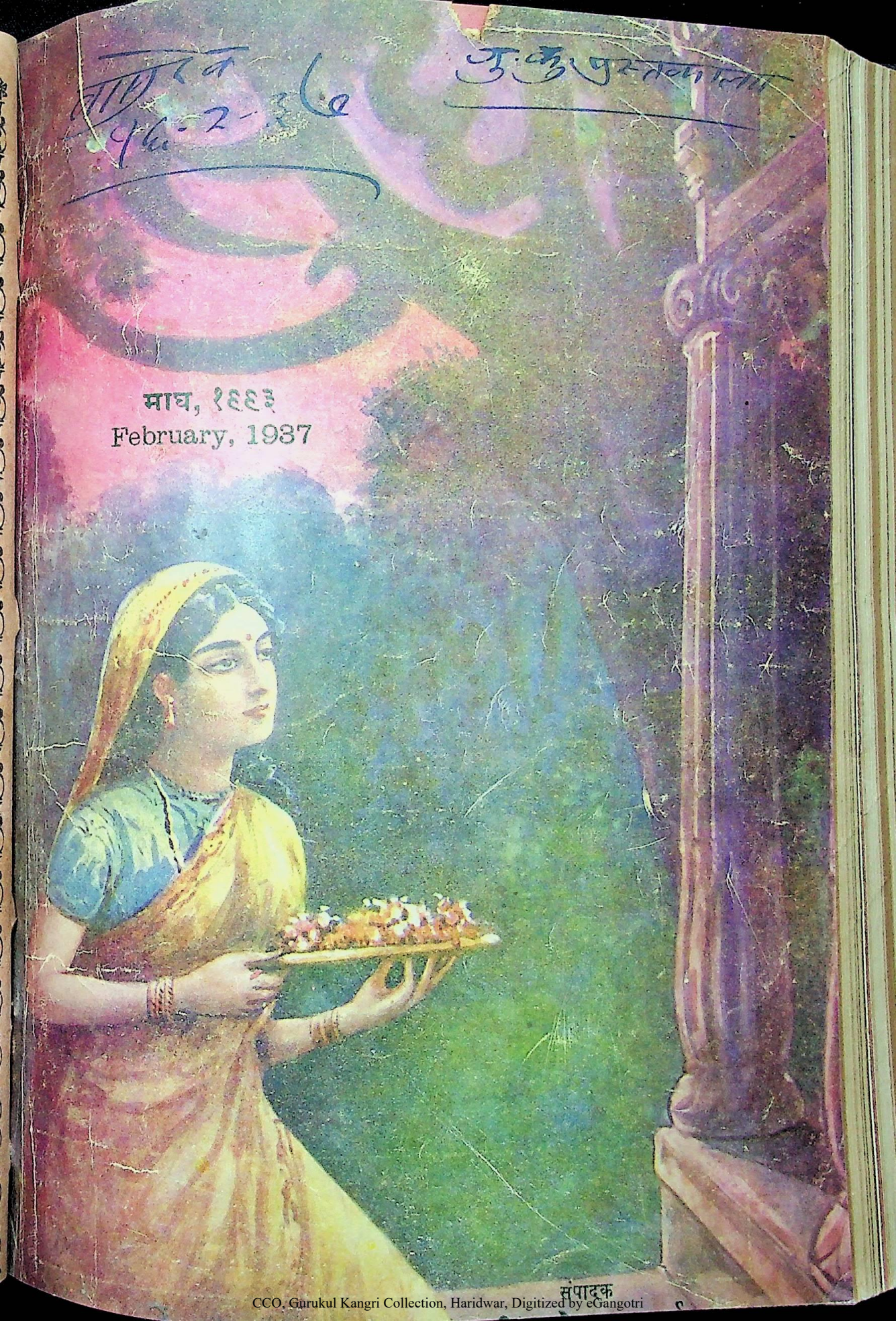

माघ, १९९३
February, 1937

संपादक

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Behar & Punjab.

साधारण संस्करण

पूर्ण संख्या १

माघ, १९९३

फ़रवरी, १९३

संपादक

सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता

दुलारेलाल भार्गव

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ द्वारा प्रकाशित

राजसंस्करण	वार्षिक मूल्य	१२)	विदेश के लिये	१२)	प्रति संख्या	१)
साधारण संस्करण	,, ,,	६)	,, ,,	६)	,,	॥)
सस्ता संस्करण	,, ,,	४)	,, ,,	४)	,,	।–)

नोट—प्रत्येक ग्राहक को हमारी १) की पुस्तकें मुफ़्त ! जो पुस्तकें चाहें, मँगा लें ।

76035

लेख-सूची

पृष्ठ

१. इष्टदेवी के प्रति (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ... १

२. श्रीभारतमाता-मंदिर (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत चंद्रिकाप्रसाद 'जिज्ञासु' २

३. लालारुख़ (कहानी)—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ६

विज्ञापन

नेमिदूत

इस काव्य में मेघदूत के चतुर्थ पद की पाद-पूर्ति करते हुए विक्रमसुत सांगण ने जैनियों के बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ और राजुल का

हिंदी-प्रेमियों के लिये अपूर्व अवसर !

सिर्फ २५० ग्राहकों को

'सुधा' सस्ता संस्करण ४) के बजाय ३) में और साधारण संस्करण ६) के बजाय ५) में दी जायगी, क्योंकि एक सुधा-प्रेमी ने अखिल भारतवर्षीय कवि-सम्मेलन, लखनऊ के अवसर पर २५०) रुपए सुधा के लिये दान दिए हैं।

आशा है, इस अवसर से लाभ उठाकर गरीब हिंदी-प्रेमी तथा पुस्तकालय फौरन ग्राहक बन जायँगे।

नोट—३ महीने तक सुधा (सस्ता संस्करण) हर जगह एजेंटों तथा ह्वीलर के बुक-स्टालों पर चार आने में मिलेगी।

उलीलाल भार्गव

सुशीला और सुशिक्षिता स्त्रियों को **बालसुधा** का नमूना मुफ्त मिलेगा।

मँगाने का पता—

सुख-संचारक-कंपनी, मथुरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Behar & Punjab.

साधारण संस्करण

पूर्ण संख्या १

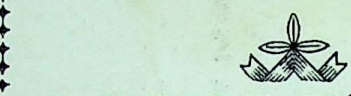

चाँद

राजसंस्करण	वार्षिक मूल्य १२)		विदेश के लिये १२)	प्रति संख्या	१)
साधारण संस्करण	,, ,, ६)		,, ,, ६)	,,	॥)
सस्ता संस्करण	,, ,, ४)		,, ,, ४)	,,	।–)

नोट—प्रत्येक ग्राहक को हमारी १) की पुस्तकें मुफ़्त ! जो पुस्तकें चाहें, मँगा लें ।

76035

लेख-सूची

पृष्ठ

१. इष्टदेवी के प्रति (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ... १

२. श्रीभारतमाता-मंदिर (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत चंद्रिकाप्रसाद 'जिज्ञासु' २

३. लालारुख (कहानी)—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ६

४. गुरुप्रकाशिका (दस्तूरमालिका)—[लेखक, स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए० ... ... १४

५. वर्तमान शिक्षा-प्रणाली—[लेखिका, कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता ... १७

६. गीत (कविता)—[श्रीयुत 'वचनेश'जी २३

७. दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थ-स्थान (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत केसरीमल अग्रवाल २४

विज्ञापन

नेमिदूत

इस काव्य में मेघदूत के चतुर्थ पद की पाद-पूर्ति करते हुए विक्रमसुत सांगण ने जैनियों के बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ और राजुल का चरित्र चित्रण किया है। यह खड़ी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि, महिषासुर-वध के लेखक कुँ० हिम्मतसिंहजी का किया हुआ सरस हिंदी-पद्यानुवाद, मुनिराज विद्याविजयजी महाराज-लिखित भूमिका-सहित, प्रकाशित हुआ है। मूल्य ।-)

गंगा-ग्रंथागार

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

स्त्री-मात्र के अवश्य पढ़ने योग्य

तीन पुस्तकें

अमेरिकन स्त्री-शिक्षा—अमेरिका देश की स्त्रियाँ अपने नटखट और बुरे चलन के पतियों को कैसे वश में रखती हैं, वह सब इसमें बताया गया है। दाम १।)

जापानी स्त्री-शिक्षा—यह पुस्तक जापान में दो हजार वर्ष से दहेज में दी जाती है। ससुराल में जाकर स्त्रियों को कैसे रहना चाहिए, यह इसमें बताया गया है। सभी देशों की स्त्रियों को उपकारी है। कन्या-पाठशालाओं में बाँटने की चीज़ है। दाम सिर्फ ।)

वेदना-हीन प्रसव—वेदना-हीन प्रसव कैसे हो सकता है, यही इसमें बताया गया है। कीमत ॥)

सुशीला और सुशिक्षिता स्त्रियों को **बालसुधा** का नमूना मुफ्त मिलेगा।

मँगाने का पता—

सुख-संचारक-कंपनी, मथुरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

८. पेरिस से दूसरा विस्तृत पत्र (यात्रा-विवरण)—[लेखक, डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय ... ३४

९. नेपाल भूकंप में और भूकंप बाद—[लेखक, लेफ़्टिनेंट श्रीयुत कमलबहादुर खतृचतू ३७

१०. इंद्रजाल (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ... ४३

११. चित्त-चर्चा (कविता)—[लेखक, कविसम्राट् श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ५२

१२. वेद कहाँ बने ?—[लेखक, श्रीयुत बैजनाथ शर्मा सारस्वत ५३

१३. भारत (कविता)—[लेखिका, कुमारी सावित्री श्रीवास्तव ५७

रजिस्टर्ड

अमृतांजन पेन बाम

सबसे उत्तम, दर्द दूर करनेवाला भारतीय मरहम सर्व प्रकार के दर्दों को दूर करता है। सब जगह मिलता है।

अमृतांजन डिपो, कलकत्ता, बंबई और मद्रास।

२४ वर्ष के आज़मूदा मशहूर सुरमे !

ट्रेकोरीन—(रजिस्टर्ड) रोहों-जैसे असाध्य रोगों को जड़ से खोनेवाली दवा।

ल्युकोमीन—(रजिस्टर्ड) फूली, माड़ा, जाला, खुजली, धुंध, रतौंधी, आँखों की लाली, परवाल, बिरूनियों का गिरना आदि आँख के रोगों की रामबाण ओषधि। बीसियों का चश्मा छूट गया। अंधे सूझते हो गए। सैकड़ों प्रशंसा-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। मूल्य छोटी शीशी ॥), बड़ी १), नमूना मुफ्त।

सैकड़ों डॉक्टर, हकीम, वैद्य और अस्पताल इस्तेमाल करा रहे हैं।

जवाहर केमिकल वर्क्स, माईथान, आगरा।

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

❀ रूपविलास ❀

ख़ूबसूरत बनाने के लिये यही प्रसिद्ध दवा है। मुहासा, झाईं, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वग़ैरह बहुत जल्द दूर होकर गोरा गुलाब के फूल-सा खिला गुलाबी छटा मुख पर दमकने लगती है। कैसा ही बदसूरत, बदरौनक़ मनुष्य क्यों न हो, १५ ही रोज़ के लगाने से दूना चेहरा ख़ूबसूरत नज़र न आवे, तो दाम वापस। यह स्त्री-पुरुष दोनो का दिल ख़ुश करनेवाली मनोमोहिनी ख़ुशबूदार दवा है। क़ीमत फ़ी डिब्बा १॥=) एक रुपया दस आना, डाक-खर्च =)

पता—रूपविलास-कंपनी, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, इटावा (यू० पी०)

पृष्ठ

१४. अभिभाषण—[लेखक, श्रीराहुल सांकृत्यायन ५८

१५. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', श्री'स्नेह-रश्मि', श्रीयुत गुरुनारायण सुकुल, श्रीयुत कपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्', श्रीयुत संतराम बी० ए०, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' बी० ए०, विशारद, श्रीयुत किशोरीदास वाजपेयी और श्रीयुत रसिकरंजन रतूड़ी ६५

१६. परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत 'जिज्ञासु' और श्रीयुत ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ७५

१७. नए फूल ७६

१८. सौरभ (संपादकीय विचार) ... ८०

दरभंगा के प्रसिद्ध आम और लीचियों की क़लमें व पौधे

सभी प्रकार के बंबई, लँगड़ा, कृष्णभोग, फ़जली तथा विना बीज का गुलाबी लीचियों की क़लमें ४०) प्रति सैकड़े। काग़ज़ी लेमन तथा इलाहाबादी अमरूद ३२) प्रति सैकड़े। सभी प्रकार के अनार बेदाना और नारंगी ६०) प्रति सैकड़े। रेल-महसूल तथा पैकिंग अलग। ऑर्डर के साथ पेशगी भेजनी चाहिए। २ से ३ वर्ष के पौधे ३ फ़ीट ऊँचे होंगे।

सुपरिंटेंडेंट बॉटैनिकल गार्डेन

नं० १९ दरभंगा (बिहार)

मृत संजीवनी सुधा

सूतिका, पौरुषहीनता, अजीर्ण और ज्वर को दूर करनेवाला

सर्वश्रेष्ठ टॉनिक वाइन

पता—ढाका-आयुर्वेदीय फ़ार्मेसी लिमिटेड

एक पिंट का दो रुपए आठ आने

क्वार्टर का चार रुपए आठ आने

स्थानीय एजेंटों से लीजिए

या

सीधे हेड ऑफ़िस ढाका (बंगाल) से मँगाइए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. कौसल्या के गोद में ब्रह्म ... १
२. हिंदी-साहित्य-सभा का उद्घाटनोत्सव ३६
३. बाबू शिवप्रसादजी गुप्त ३७

(ख) सादे

४. श्रीभारतमाता-मंदिर २
५. बाबू दुर्गाप्रसादजी ३
६. महात्माजी द्वारा पूर्णाहुति ४
७. मंदिर के उद्घाटनोत्सव पर भीड़ ... ५
८. भारतमाता की प्रतिमा ६
९. कुंड ७
१०. स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए० ... ... १५
११. श्रीयुत केसरीमल अग्रवाल ... २४
१२. ॐकारेश्वर २७

सुप्रसिद्ध हिंदी-साप्ताहिक

'जन-मत'

में

वर्तमान भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति पर विचारमूलक लेख, समालोचना, धारावाहिक उपन्यास, गल्प, उपयोगी प्रबंध, कविता, संगीत आदि विविध सचित्र विषयों की भरमार रहती है। आज ही 'जन-मत' के ग्राहक बनकर लाभ उठाइए। वार्षिक मूल्य ४) रु०। नमूना मुफ़्त।

पता—'जन-मत'-कार्यालय

११।५ नर्थरेंज पार्क सर्कस

कलकत्ता

स्थापित १९२३ ई०

"दमा-नाशक"

(रजिस्टर्ड)

सबसे बढ़कर, अचूक महौषध दमा और तपेदिक़ प्रथम व दूसरी अवस्थावाले रोगियों के लिये है।

मूल्य केवल १) प्रति शीशी जिसमें ३२ ख़ूराक होती हैं।

पता—ईश्वर मेडिकल हाल

बिल्डिंग शिवदत्तराम, अमृतसर, पंजाब

प्रमाणपत्र—मुझको दमा-रोग ने २२ साल से पीड़ित कर रक्खा था, और जिसकी चिकित्सा के हेतु मैंने हज़ारों रुपए व्यय कर दिए, किंतु सब व्यर्थ हुए, और आपकी ७ शीशियों ने मुझे पूर्ण आरोग्य कर दिया।

हस्ताक्षर पं० नार्सिंहदास

टांगडिनज्य, बरमा

* कामकला *

इस गोली के खाते ही नस-नस में शक्ति आ जाती है। आप घंटों आनंद कीजिए, पूर्ण रुकावट रहेगा। आप चकित हो जायँगे कि गोली है या जादू! युवकों को आनंद और वृद्धों को चैतन्यता देनेवाला है। इसके स्थायी सेवन से धातुक्षीणता स्वप्नदोष, शीघ्रपतन इत्यादि रोग नाश होकर शरीर पुष्ट और बलवान् होता है। इसमें कोई नशीली चीज़ नहीं है। बेफ़ायदा साबित होने पर ५०) इनाम। २४ गोली का मूल्य २)

पता—संजीवनी-औषधालय नं० २५, पो० कतरी सराय (गया)

१३. इलोरा में चट्टान काटकर बनाया हुआ कैलास-मंदिर २८
१४. पंचवटी में श्रीराम-मंदिर २९
१५. श्रीकुशावर्त-तीर्थ २९
१६. त्र्यंबकेश्वर का मंदिर ३०
१७. त्र्यंबकेश्वर का स्वर्ण-मुकुट ३०
१८. पार्वती-मंदिर (पूना) ... ...
१९. श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ...
२०. श्रीराहुल सांकृत्यायन ... ...
२१. सुलेखाचार्य पं० गौरीशंकर भट्ट ...
२२. पं० रूपनारायणजी पांडेय की स्वर्गीया माताजी ... ...

❀ उत्साह-स्फूर्ति-तेज ❀

अनुत्साह और मुख पर की झाँख दूर कर प्रत्येक अंग में उत्साह, स्फूर्ति और तेज लाने के लिये "शक्ति-संजीवनी" गोलियाँ ही उत्तम इलाज है।

क़ीमत ६० गोलियों के (सोने की वरक़-वाली) शीशी की १२) बारह रुपए।

आतंक-निग्रह-औषधालय

जामनगर, काठियावाड़

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, क़ब्ज़ियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ी० ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्यविद्या' पुस्तक मुफ्त मँगावें।

मदनमंजरीफ़ार्मेसी जामनगर काठियावाड़

लखनऊ एजेंट—निगम मेडिकल हाल
अमीनाबाद रोड

बनारस एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

श्वेत कुष्ठ को अद्भुत जड़ी

यह एक साधु-प्रदत्त है। यदि सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों, तो इस फ़क़ीरी जड़ी को लगावें। यदि इस महात्मा-प्रदत्त वनौषधि को दिन में ३ बार लगाने से बदन के सफ़ेद दाग़ बिलकुल न जाते रहें, और शरीर की असली रंगत न आ जाय, तो कुल दाम वापस। विश्वास न हो, तो प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लें।

मूल्य ३॥) ; डाक-खर्च अलग।

मैनेजर साधु-औषधालय

नं० १९, दरभंगा (बिहार)

पीने का ख़िज़ाब

यह एक साधु-प्रदत्त है। यदि आपके बाल ६० वर्ष के पहले ही सफ़ेद हो चुके हैं या होने लगे हैं, तो इस पीने के ख़िज़ाब को ११ दिन पीजिए। कुल बाल काले हो जायँगे, और ६० वर्ष तक बराबर काले रहेंगे। खूँटियाँ भी काली ही पैदा होंगी। यदि विश्वास न हो, तो प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लें।

११ दिन का मूल्य ५)
डाक-ख़र्च अलग।

मैनेजर साधु-औषधालय

नं० १९, दरभंगा (बिहार)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

व्यर्थ समय न खोइए ! पैसे की बचत कीजिए !!

पुस्तकें खरीदने में विशेष सुविधा

हिंदोस्तान-भर के हिंदी-प्रकाशकों की सभी पुस्तकें हमारे यहाँ मौजूद रहती हैं !

यदि आपको कभी किसी पुस्तक की आवश्यकता हो, तो फ़ौरन्
हमें एक पत्र डाल दीजिए

आपको इधर-उधर—बीसों जगह—भटकने की ज़रूरत नहीं,

क्योंकि

गंगा-ग्रंथागार हिंदी-पुस्तकों की सबसे बड़ी दुकान है

इस दुकान में उपन्यास, नाटक, काव्य, इतिहास, प्रहसन, गल्प, विज्ञान, खेती, मनोरंजन, राष्ट्रीय, धार्मिक आदि-आदि सभी विषयों की हिंदी-पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह रहता है।

हमारे यहाँ ३०० से भी कहीं ज़्यादा हिंदी-प्रकाशकों के ग्रंथ मौजूद हैं।

एक कार्ड डालकर बड़ा सूची-पत्र मँगा लें

हमारे यहाँ से मँगाने में डाक-खर्च तथा समय, दोनों की बचत होती है। हमारे यहाँ इस बात की बड़ी सावधानी रक्खी जाती है कि ग्राहकों को किसी प्रकार की हानि न उठानी पड़े। पत्र बड़े ध्यान से पढ़े जाते हैं, और पत्र पहुँचते ही पुस्तकें तुरंत रवाना की जाती हैं। यदि किसी कारण विलंब की संभावना होती है, तो पत्र द्वारा सूचना दे दी जाती है।

नई पुस्तकें ! नई पुस्तकें !! नई पुस्तकें !!!

जो अभी—इसी मास में—प्रकाशित हुई हैं

बिहारी-दर्शन (आलोचना) मूल्य २), २॥); ब्रज-भारती (काव्य) मूल्य ॥), १)
फूलों की सेज (कामशास्त्र) मूल्य २), २॥); अतीत के चित्र (कहानियाँ) मूल्य ॥=), १=)

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला फ़ैज़ाबाद
मुक़द्दमा नं० ४ बाबत सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ८ मार्च सन् १९३७ ई०
सय्यद औलादअली वल्द सय्यद आलेनबी साकिन बछरामपूर परगना पछिमरट ज़िला फ़ैज़ाबाद
सायल
बनाम
सय्यद मोहम्मदतक़ी वग़ैरह
फ़रीक़सानियान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सनाहत क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल है तो अंदर मियाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद
मुंदरजा बयान तहरीरी दरख़्वास्त कुनिंदा

नं० शुमार	नाम मौजा	नाम मोहाल	तादाद हिस्सा	नवैयत हक़
१	बछरामपूर परगना पछिमराट	असकरीबेगम	॥)	आंला
२	चक पैंडरा दाखिली बछरामपूर परगना पछिमराट	,,	॥)	,,
३	,,	क़ाज़िमहुसेन	॥)	,,
४	चक सेहरिया दाखिली बछरामपूर परगना पछिमराट	असकरीबेगम	॥)	,,
५	,,	क़ाज़िमहुसेन	॥)	,,

१८—१२—३६
मुंसरिम

नोटिस बनाम कर्ज़ख़्वाहान हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम हरदोई
मुक़द्दमा नंबर ३१३ सन् १९३६ ई०
१—उदैसिंह नाबालिग वल्द टीकमसिंह बविलायत मुसम्मात जितनीकुँवरि मादर हक़ीक़ी खुद बेवा टीकमसिंह कौम ठाकुर साकिन मौज़ा बेहटा गोकुल परगना बावन तहसील व ज़िला हरदोई
सायल
बनाम
१—बालादीन वल्द सालिकराम
२—गजोधरलाल
३—ज्वालाप्रसाद } पिसरान रामेश्वरप्रसाद
४—शिवप्रसाद
५—सुखनंदनलाल
६—रामनारायण } पिसरान रामदीन
७—मु० मिठनी कुँवरि बेवा बिहारीलाल
८—सधारीलाल वल्द बख्तौरीलाल
अकवाम ब्राह्मण साकिन मौज़ा बेहटा धीरा परगना बावन तहसील व ज़िला हरदोई
फ़रीक़सानियान

हरगाह दरख़्वास्त सायलान हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर हरदोई में पेश होकर अदालत हाज़ा में मौसूल हुई है और सायलान ने अपना बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा ६ ऐक्ट मज़कूर दाख़िल अदालत हाज़ा कर दिया है, लिहाज़ा फ़रीक़सानियान मज़कूरुलसदर व नीज़ हर ख़ास व आम को बज़रिए नोटिस हाज़ा मुत्तिला किया जाता है कि जिस शख़्स का कोई क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ जात व जायदाद सायलान मुतज़िक्रा सदर होवे, वह क़र्ज़ा मज़कूर की बाबत तारीख़ इशाअत नोटिस गज़ट से ३ माह के अंदर अपना बयान तहरीरी हस्ब ऐक्ट मज़कूर असालतन ख़्वाह बज़रिए वकील जो कि हालात मुक़द्दमे से बख़ूबी वाक़िफ़ हो, दाख़िल अदालत हाज़ा करे, और नीज़ ज़रूरी काग़ज़ात भी ताईद बयान तहरीरी खुद में दाख़िल करे, वरना बाद इनक़िज़ाय मियाद मुद्दत मज़कूर कोई उज्र मसमूअ न होगा और फ़ैसला दरख़्वास्त मज़कूर एकतरफ़ा बअदम हाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान होगा।

आज बतारीख़ २७ ऑक्टोबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला खीरी
दीवानी इनकंबर्ड मुकद्दमा नं० १ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १ मई सन् १९३७ ई०
—मितानसिंह } पिसरान खुशहालसिंह कौम ठाकुर साकिन मौज़ा लोहटी
—रोहनसिंह } परगना पैला ज़िला खीरी — सायलान

बनाम

१—स्पेशल मैनेजर साहब बहादुर कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स इलाका महेवा } परगना व
२—रानी विजयराजकुँवरि साहब बेवा ठाकुर जयद्रबहादुर सिंह कौम क्षत्री } ज़िला खीरी — फ़रीकसानियान

दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट सन् १९३४ ई०

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा कर्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत कर्ज़ा में हस्ब दफ़ा ८ व १० यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है। लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल हो, तो अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद मुज़हिरा सायलान (ग़ैरमनक़ूला)

१—हक़ीयत ज़मींदारी खेवट आला बक़द्दर १० बिस्वा ९४ एकड़ मिनजुमला मोहाल गेंदसिंह वाक़े मौज़ा लोहटी परगना पैला ज़िला खीरी।

२—हक़ीयत ज़मींदारी खेवट आला बक़द्दर तीन बिस्वा ६¾ बिस्वांसी रक़बा ३२ एकड़ १५ डिसमिल मिनजुमला मोहाल हर सेह मोहालात शामिलाती वाक़े मौज़ा लोहटी परगना पैला ज़िला खीरी।

तफ़सील जायदाद मुज़हिरा सायलान (मनक़ूला)

बैल गाड़ी के	गाड़ी मुसल्लम	भैंस	गायें
दो रास	एकमंजिल	४ रास	८ रास

१—एक क़िता प्रोनोट नविश्ते लेक्खा बहक़ मितानसिंह सायल
२— ,, ,, ,, ,, भूधर ,, ,, ,,
३— ,, ,, ,, ,, नरायन ,, ,, ,,
४— ,, ,, ,, ,, रामचरन ,, ,, ,,
५ ,, ,, ,, ,, बिसराम ,, ,, ,,
६— ,, ,, ,, ,, गजोधरसिंह ,, ,, ,,

आज बतारीख़ १४ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला सुलतानपूर
मुक़द्दमा नं० ३० सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी ५ मई सन् १९३७ ई०
बाबू बदरुद्दुनाख़ाँ वल्द मुस्तफ़ाख़ाँ साकिन बदलगढ़ परगना जगदीशपूर ज़िला सुलतानपूर — सायल

बनाम

१—राजा निसार अहमदख़ाँ वल्द कमर मोहम्मदख़ाँ साकिन महोना परगना जगदीशपूर ज़िला सुलतानपूर
२—बाबू इश्तियाक़ अहमदख़ाँ वल्द यारख़ाँ साकिन महोना पच्छिम परगना जगदीशपूर ज़िला सुलतानपूर
३—बाबू बशीरुद्दीनख़ाँ साकिन रेक्कबी परगना जगदीशपूर ज़िला सुलतानपूर
४—अबुलहसनख़ाँ साकिन बदलगढ़ परगना जगदीशपूर ज़िला सुलतानपूर — फ़रीकसानियान

हरगाह सायल ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बज़रिए जनाब साहब कलेक्टर साहब बहादुर सुलतानपूर गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतअल्लिक़रेहाला दरख़्वास्तदिहंदा की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गजट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाख़िल करें वरना कोई उज्र बाद में क़ाबिल समाअत न होगा। और दरख़्वास्त बमअदम हाज़िरी क़र्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

[illegible] तारीख़ २३ दिसंबर १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

हिंदी-साहित्य में एकदम अनूठी चीज़

वज्र-ग्रंथावली

(लेखक—श्रीऋषभचरण जैन)

एक मुद्दत से हिंदी में ऐसी पुस्तकों का निकलना बंद हो गया है, जिनमें सीधी-सादी भाषा में बेलाग बात कहकर समाज की बुराइयों की तरफ़ इशारा किया जाय। इसके परिणाम-स्वरूप हिंदी के पाठकों का ज़ायक़ा एकदम बिगड़ गया है, और हिंदू-समाज के पाखंडी सुधारकों को सुधरने की ज़रूरत महसूस होनी बंद हो गई है। आज हिंदोस्तान में, हिंदू-समाज में और हिंदी-भाषा में जैसी धाँधलबाज़ी मची हुई है, यह न आपसे छिपी है, न हमसे। इसी धाँधलबाज़ी का करारा इलाज करने के लिये हमने उपर्युक्त ग्रंथावली को जन्म दिया है। अगर आपके दिल में हिंदुत्व का ज़रा-सा भी ज़हर बच रहा है, तो आप ख़ुद इन पुस्तकों का एक सेट ख़रीद लीजिए, और अपने पढ़े-लिखे, समझदार, जवान और बुज़ुर्ग मित्रों को दीजिए। एक बात याद रखिए कि सिर्फ़ 'मंदिर-दीप' छोड़कर इस माला की पुस्तकें

स्त्रियों और बच्चों को न दीजिए!

इसलिये कि ये पुस्तकें ख़तरनाक ज़हर की शीशियाँ हैं, जिनका उपयोग सिर्फ़ विषैले कीटाणुओं को ज़िबह करना है!

—❀—

'वज्र-ग्रंथावली' की पहली ग्यारह पुस्तकों के नाम सुन लीजिए—

१. दिल्ली का कलंक १)	२. दुराचार के अड्डे १)	३. बुर्दा-फ़रोश १)
४. चाँदनी रात १)	'वज्र-ग्रंथावली' की अतिरिक्त पुस्तक **मंदिर-दीप** ३)	५. हर हाइनेस १)
६. चंपाकली १)		७. नरक-धाम १)
८. तीन इक्के १)	९. मयख़ाना १)	१०. हत्यारा १)

आपके शहर के सब बुकसेलर बेचते हैं।

प्रकाशक—साहित्य-मंडल, बाज़ार सीताराम, दिल्ली।

तार का पता—'चित्रपट' टेलीफ़ोन—'६४५२'

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३६ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम जिला सुलतानपुर

मुक़द्दमा नं० १८५ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ५—४—१९३७ ई०

बाबू सूरजभानसिंह वल्द बाबू भगवानबख़्शसिंह साकिन मीरमऊ परगना मोहनगंज तहसील महराजगंज जिला रायबरेली डाकखाना शाहमऊ सायल

बनाम

१—बाबू प्रतापबहादुरसिंह वल्द बाबू मोतीलालसिंह साकिन गंगागढ़ मज़रे भागीरथपुर

२—अल्लाहयास्त गूजर वल्द नकछेद गूजर साकिन पूरे नकछेद मज़रे बरारह परगना मोहनगंज तहसील महराजगंज जिला रायबरेली

३—बदरीप्रसाद सुकुल नाबालिग़ वल्द नामालूम बविलायत जगदंबा सुकुल चचा खुद
४—नकछेदखाँ वल्द नामालूम सा० पूरा नकछेदखाँ मज़रे बरारह
५—संकठाबख़्शसिंह वल्द रामबलीसिंह सा० राजापुर
६—ग़फ़ूरखाँ वल्द नामालूम साकिन भावापुर

परगना मोहनगंज तहसील महराजगंज डाकखाना शाहमऊ जिला रायबरेली

हरगाह मुसम्मी सायल ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३६ ई० गुज़रानी है इसलिये इत्तिला दी जाती है कि अंदर तीन माह तारीख शाया होने गज़ट से जिस किसी को उज़्र हो, अपना-अपना बयान तहरीरी दाखिल करे वरना बाद को कोई उज्र क़ाबिल समात न होगा और बअदम हाज़िरी फ़ैसला होगा

आज बतारीख १८ दिसंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस बनाम क़र्ज़ख़्वाहान हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर ३५४ सन् १९३६ ई०

दलजीतसिंह वल्द रसालसिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौज़ा गौरिया परगना कटियारी तहसील बिलग्राम ज़िला हरदोई सायल

बनाम

१—जंगीसिंह
२—मुंशीसिंह

पिसरान गेंदासिंह अकवाम ठाकुर साकिनान मौज़ा गौरिया परगना कटियारी तहसील बिलग्राम ज़िल हरदोई फरीक़सानियान

हरगाह दरख़्वास्त सायल हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् ३४ बअदालत साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर हरदोई पेश होकर अदालत हाजा में मौसूल हुई है, और सायल ने बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा ८ ऐक्ट मज़कूर दाख़िल अदालत हाज़ा कर दिया है। लिहाजा फ़रीकसानियान मज़कूरुलसदर व नीज़ ख़ास व आम को बज़रिए नोटिस हाजा मुत्तिला किया जाता है कि जिस शख़्स का कोई क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ ज़ात व जायदाद सायल मुतज़िक़रा सदर हो, वह क़र्ज़ा मजकूर के बाबत तारीख़ अशाअत नोटिस हाजा से तीन माह के अंदर अपना बयान तहरीरी बमूजिब ऐक्ट मजकूर असालतन खुद या बजरिए वकील जो कि हालात मुक़द्दमा से बख़ूबी वाकिफ़ हो, दाखिल अदालत करे व नीज जरूरी काग़ज़ात भी ताईद बयान तहरीरी खुद में दाखिल करे। बाद इनकिज़ाय मीयाद मुद्दत मजकूर के कोई उज्र मसमू न होगा और फैसला दरख़्वास्त मज़कूर एकतरफ़ा बअदमहाजिरी कर्जख़्वाहान होगा।

आज बतारीख २९ ऑक्टोबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम परतापगढ़

मुकद्दमा नं० २७० सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १२—५—३७ ई०

दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

हाजी मूसा वगैरा साकिन कटरा मेदिनीपुर परगना व ज़िला परतापगढ़

हरगाह मुसम्मियान हाजी मूसा वगैरा ने दरख़्वास्त हस्ब दफा यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४

बयान तहरीरी अदालत हाज़ा में दाखिल कर दिया है लिहाज़ा जुमला अशख़ास को जिनका कर्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा दरख़्वास्तदेहंदगान मज़कूर की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट से अपना बयान तहरीरी निस्बत कर्ज़ा के अदालत हाज़ा में दाखिल करे, वर्ना बाद को कोई उज्र क़ाबिल समाअत न होगा, और दरख़्वास्त बमदम हाज़िरी कर्ज़देहंदगान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख १२ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नमूना नं० १

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

बअदालत जनाब गिरिवरचरण अग्रवाल साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम बस्ती

मुक़दमा नं० ६१४ सन् १९३६ ई०

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

१—बाबू बलदेवप्रसादसिंह वल्द शंकरबख़्शसिंह
२—शारदाप्रसादसिंह वल्द बलदेवप्रसादसिंह

अक़वाम ठाकुर साकिनान पानन कुइयाँ तप्पा आदमपूर परगना रसूलपूर ज़िला बस्ती

ने इस की ग़रज़ से पेश है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन माह के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं, और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अग़राज़ व मौरकाजात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर सेकेंड ग्रेड ज़िला सुलतानपूर

मुक़दमा नं० १९५ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ८ एप्रिल सन् १९३७ ई०

धर्मपालसिंह साकिन उंचहरा परगना मीरापूर ज़िला सुलतानपूर — सायल

बनाम

१—रामप्रतापसिंह वल्द रामचरनसिंह
२—मोहनसिंह वल्द दिघीसिंह
३—विशेश्वरसिंह वल्द परागसिंह
४—बदरीसिंह वल्द परागसिंह

साकिनान उंचहरा परगना मीरापूर ज़िला सुलतानपूर

हरगाह मुसम्मे धर्मपालसिंह सायल ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बजरिए जनाब सा ब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर सुलतानपूर गुज़रानी है और मिनजानिब अपना बयान तहरीरी दाखिल कर दिया है, लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका कर्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतनिकरा बाला दरख़्वास्तदेहंदा की जात या जायदाद पर हो, अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट से बयान तहरीरी मिनजानिब अपने कर्ज़ा के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदमहाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख २ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

SUMMONS FOR DISPOSAL OF SUIT

(Order 5, Rules 1 and 5)

In the Court of the Judge Small Cause Court Allahabad

Suit No. 3540 of 1936

A. C Dey ... ... Plaintiff.

versus

The All India Insurance Co., ... Defendant

To

B. Kailash Narain Bhargava, Manager, The All India Insurance Co., Delhi.

Whereas plaintiff has instituted a suit against you for Rs. you are hereby summoned to appear in this Court in person, or by pleader duly instructed, and able to answer all material questions relating to the suit or who shall be accompanied by some persons able to answer all such questions, on the 26th. day of Februay 1937, at 10 o'clock in the noon, to answer the claim and as the day fixed for your appearance is appointed for the final disposal of the suit you must be prepared to produce on that day all the witnesses upon whose evidence and all the documents upon which you intend to rely in support of your defence.

Take notice that, in default of your appearance on the day before mentioned, the suit will be heard and determined in your absence.

Given under my hand and the seal of the Court this 2nd. day of Februay, 1937.

Judge.

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(ऑर्डर ५, क़ायदा १ व ५)

बअदालत जनाब शंकरलाल साहब बहादुर जज ख़फ़ीफ़ा मेरठ

मुक़द्दमा नंबर ४९५० सन् १९३६ ई०

मेसर्स उछाराम ऐंड कंपनी बैंकर बज़रिये लाला चिरंजीलाल वल्द लाला बदरीदास क़ौम वैश्य जैन, मैनेजर व हिस्सेदार बैंक मज़कूर, साकिन तोपख़ाना मेरठ मुद्दई

बनाम

बाबू रणबीरसिंह जैन ऑनरेरी सेक्रेटरी दी पब्लिसिटी बोर्ड इंडिया लखनऊ, ज़िला लखनऊ मुद्दआलेहुम

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत चेक के दायर की है, लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख़ ८ माह मार्च सन् १९३७ ई० बवक्त दस बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो, और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हों और जवाबदिही दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़ जो आपके इंतज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है, पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को, जिनकी शहादत पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात को जिन पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २६ माह जनवरी सन् १९३७ ई० जारी किया गया।

मुंसरिम

इत्तिलानामा वास्ते इजराय डिगरी अदालत दीवानी ज़ाहिर करने वजह न जारी होने इजराय डिगरी के

(आर्डर २१ क़ायदा २२ ज़ाब्ता दीवानी)

बअदालत जनाब सिविल जज साहब बहादुर परतापगढ़

मुक़दमा दीवानी नं० ११७ सन् १९३३ ई० मुक़दमा इजराय डिगरी ख़फ़ीफ़ा नं० ६७७ सन् १९३६ ई०

श्रीपति वल्द महादेव क़ौम ब्राह्मण पांडे साकिन भरवारी परगना पट्टी ज़िला परतापगढ़ डिगरीदार

बनाम

रामसुमेर वग़ैरा

मदीउनान डिगरी

बनाम रामकुबेर वल्द रामदत्त क़ौम ब्राह्मण साकिन रसुलहा परगना पट्टी ज़िला परतापगढ़ हाल मुक़ीम तार-ऑफ़िस जी० आई० पी० रेलवे, नागपुर

हरगाह मुसम्मे डिगरीदार ने दरख़्वास्त अदालत हाज़ा में वास्ते इजराय डिगरी अदालत दीवानी मुक़द्दमा नं० ११७ सन् १९३३ ई० के गुज़रानी है। लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तुम बतारीख़ २५ माह फ़रवरी सन् १९३७ ई० को इस अदालत में हाज़िर होकर अगर कोई उज़्र न जारी होने इजराय डिगरी मज़कूर के रखते हो तो पेश करो।

आज बतारीख़ १ फ़रवरी, १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नमूना नं० १६९

क़ानून इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

बअदालत जनाब श्रीगोपालसिंह साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

मुक़द्दमा नं० ८७८ सन् १९३६ ई०

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

१—केहरीसिंह वल्द नन्हवासिंह		अक़वाम गूजर साकिनान
२—विश्वंभरसिंह	पिसरान	बिजीपुरा ज़िला
३—भूखनसिंह	केहरीसिंह	मुज़फ़्फ़रनगर

सायलान ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् ३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज़ के कर्जों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिनके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अराज़ी व मौरूसाजात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Hari...

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला बाराबंकी
मुक़द्दमा नंबर १०४ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १६ मार्च सन् १९३७ ई०

१—अंबरलाल वल्द शिवचरनलाल
२—देवीदयाल } नाबालिगान पिसरान अंबरलाल पिदर खुद
३—शिवगोविंददयाल }
} अक़वाम कायस्थ साकिनान मरकामऊ परगना बदोसराय ज़िला बाराबंकी सायलान

बनाम

१—भगवानदीन
२—रामलाल
३—रामजियावन
४—रामअधीन
५—सीताराम
} पिसरान रघुबीर चौधरी कौम कलार बाथम वैश्य साकिन बदोसराय ज़िला बाराबंकी

६—मुसम्मात रामप्यारी बेवा मंसाराम
७—खुशीराम } पिसरान रामसुख
८—राजाराम }
} अक़वाम ब्राह्मण साकिनान पुरनया मजरा मरकामऊ परगना बदोसराय ज़िला बाराबंकी

९—देवकीनंदनप्रसाद नाबालिग़ बविलायत मुसम्मात शिवरानी ब्राह्मण साकिन बदोसराय ज़िला बाराबंकी

मुक़द्दमा मुंदर्जा उनवान में सायलान मज़कूराबाला ने दरख़्वास्त ज़ेर दफ़ा ४ ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई० गुज़रानी है, लिहाज़ा नोटिस हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट मज़कूरा दिया जाता है कि जिस शख़्स का क़र्ज़ा डिगरीशुदा ख़्वाह ग़ैरडिगरीशुदा ज़ात या जायदाद सायलान मज़कूरेबाला पर हो, वह अपना बयान तहरीरी तारीख़ मुश्तहरी नोटिस हाज़ा से अंदर तीन माह अदालत हाज़ा में पेश करे।

आज बतारीख़ ८ जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

नमूना नंबर १६९

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला मुरादाबाद
मुक़द्दमा नंबर ७१ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ६ मई सन् १९३७ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है
हबीबउल्लाह वल्द इनायतउल्लाह क़ौम शेख़ साकिन मोहल्ला असालतपुरा ज़िला मुरादाबाद सायल

बनाम

मुसम्मात पार्वती वग़ैरा फ़रीक़सानियान

सायल ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायल मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिनके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अग़राज़ व मौक़ाज़ात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

नमूना नं० १६९

बअदालत जनाब डॉक्टर लक्ष्मीनारायण मिश्रा साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम फतेहपुर

मुक़द्दमा नं० १८४ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ११—५—३७ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिका

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९१४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

१—श्यामसुंदर
२—शिवप्रसाद
३—रामप्रसाद
} पिसरान बिशुनगजाधर

४—जगदेवप्रसाद
५—रामप्रताप
} नाबालिग़ान पिसरान सीतलाप्रसाद बक़िलायत श्यामसुंदर चचा हकीकी

६—मु० भगवंत कुँवरि बेवा सुखपाल

} अकवाम ब्राह्मण साकिनान रेकूरा पैगंबरपुर परगना कोरिला ज़िला फतेहपुर

सायलान ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और विना डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर-एक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मजकूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिये ज़ेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

नमूना नंबर १६९

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला गोरखपुर

मुक़द्दमा नंबर ८६ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ३०—४—१९३७ ई०

इश्तिहार

मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

१—बाबू जगदेवराव
२—विदेश्वरीराव
३—विक्रमाजीतराव
४—बाबू रामेश्वरराव
} साकिनान मुडेरा तप्पा तरकुलवा डाकख़ाना तरकुलवा ज़िला गोरखपुर

सायलान ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे ग़ज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिनके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अगराज़ व मौरक़ाजात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इत्तिला तारीख बग़रज़ तसफ़िया मराति इश्तिहार नीलाम

बअदालत जनाब बाबू भगवतप्रसाद साहब बहादुर सिविल जज लखनऊ

मुक़द्दमा नं० ३४ सन् १९३५ ई०
मुक़द्दमा इजराय डिगरी नं० १५१ सन् १९३६ ई०

मिसेज़ चंद्रमणि दुबे ज़ौजे डॉक्टर एच्० एस्० दुबे जापलिंग रोड, लखनऊ — डिगरीदारिया

बनाम

लाला महादेवप्रसाद वग़ैरा मदीउनान डिगरी

बनाम १—राजनारायण	पिसरान	अक़वाम कुर्मी	
२—श्रीनारायण	महादेवप्रसाद	साकिनान	
३—तेजनारायण	नाबालिग़ान	ऐबट रोड	
४—जगतनारायण	बविलायत	थाना हज़रतगंज	
५—हरनारायण	राजनारायण	लखनऊ	
	बिरादर हक़ीक़ी खुद	मदीउनान	
	पिसरान महादेवप्रसाद		

हरगाह कि मुक़द्दमा मुंदर्जेबाला में डिगरीदार ने नीलाम जायदाद मरहूना की दरख्वास्त की है, तुमको इस इत्तिलानामा के ज़रिये मुत्तला किया जाता है कि तारीख २५ माह फरवरी सन् १९३७ ई० वास्ते तय करने मराति इश्तिहार नीलाम के मुक़र्रर की गई है।

आज बतारीख ४ माह फ़रवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नक़ली माल हर्गिज़ मत लीजिए

WILKINSON'S

SARSAPARILLA

विलकिंसन साहब का सार्सापैरिला दुनिया-भर में प्रसिद्ध है, और एक पूरी शताब्दी से नाम पैदा कर रहा है। विलकिंसन साहब का सार्सापैरिला बीमारी रोकने के लिये एक ज़बर्दस्त ढाल है। यह शरीर को आक्रमण सहन करने के लिये बल देता है। ख़राब ख़ून को बदलकर ठीक स्वाभाविक हालत पर लाता है।

नक़ली माल से होशियार रहिए, इसकी हरएक असली शीशी पर यह ट्रेडमार्क और दस्तख़त बना रहता है।

Thomas Wilkinson

मालिक और बनानेवाले

टॉमस विलकिंसन लिमिटेड मैन्यूफ़ैक्चरिंग केमिस्ट्स

नं० ४६, साउथवाक स्ट्रीट, लंदन, S. E. I. इँगलैंड

शुष्क यकृत, शिथिलता, खुजली, फोड़ा, गठिया, चर्म-रोग, कमज़ोरी इत्यादि के लिये बहुत ही

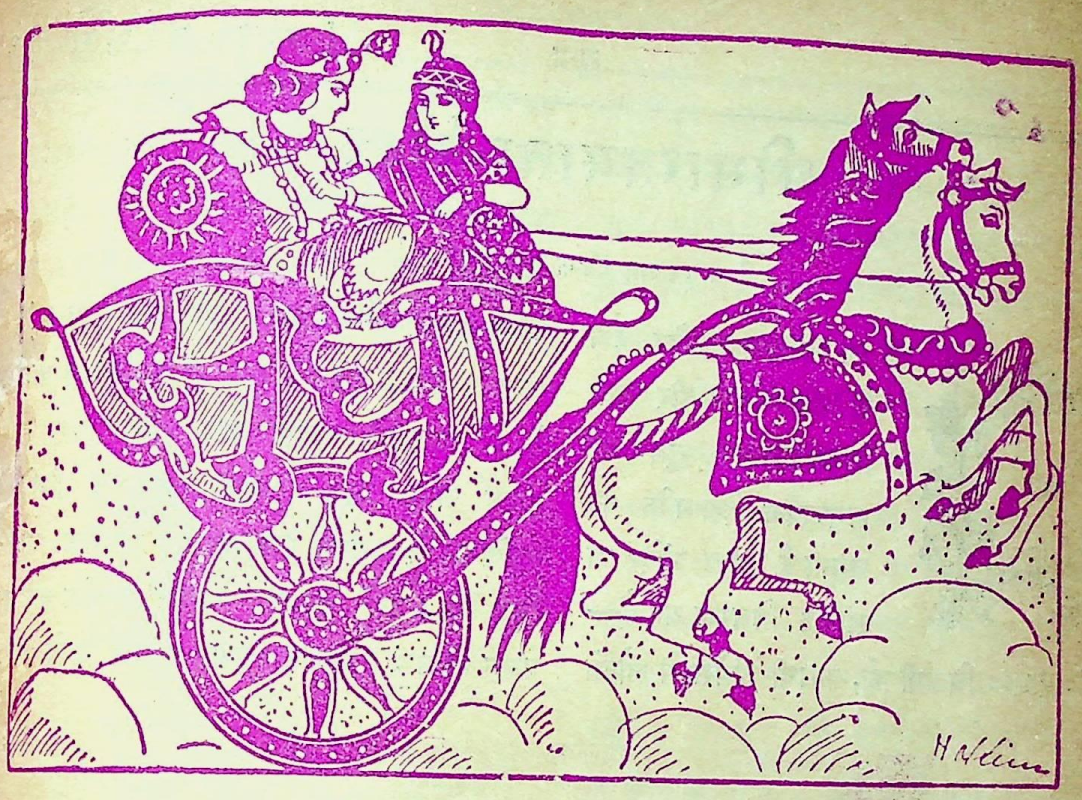

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष १०
खंड २

माघ, ३१४ तुलसी-संवत् (१९९३ वि०)—
फ़रवरी, १९३७

संख्या १
पूर्ण संख्या १२७

इष्टदेवी के प्रति

(गीत)

ममतामयि, मेरी मालिन री !
तन दरसन बिन छिन-छिन छीजत, बीतत गिनि-गिनि दिन री !
उनमन कबि-जन-द्रुम-गन केते कृपा-करनि कुसुमाए ;
मुसकावौ, मधुरावौ, मुरझ्यौ मम मन-मुकुल मलिन री !
सुरस-सुधा सुचि सुघराई सों सींचि सुजान सनेहिनि,
कबिता-कुसुम-कलित कब करिहौ कबि-कुटीर-क्यारिन री !

कवि-कटीर, लखनऊ
२३ । १ । ३७

दुलारेलाल भार्गव

CCO, Gurukul Kangri Collection

श्रीभारतमाता-मंदिर

[श्रीयुत बाबू चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु]

काशी का भारतमाता-मंदिर वहाँ के रईस दान-वीर बाबू शिवप्रसादजी गुप्त की समुज्ज्वल देश-भक्ति का नमूना है। इस मंदिर का संक्षिप्त विवरण यह है—

सं० १९७० विक्रमी को, कराची-कांग्रेस से लौटते समय, बा० शिवप्रसादजी पूना में धोंडे केशव-करवे के प्रसिद्ध विधवाश्रम का निरीक्षण करने गए। इस आश्रम में आपने भूमि पर बना हुआ भारत का मानचित्र देखा। यह उन्हें बड़ा सुंदर लगा। इच्छा हुई कि ऐसा ही मानचित्र काशी में भी बनवावें। इसके बाद संयोग-वश उन्हें योरप जाना पड़ा। वहाँ लंदन के ब्रिटिश म्यूज़ियम में आपने इस प्रकार के अनेक मान-चित्र देखे। उन्हें देखकर आपकी पूर्वोक्त इच्छा प्रबल हो उठी। भारत आकर आपने मित्रों और

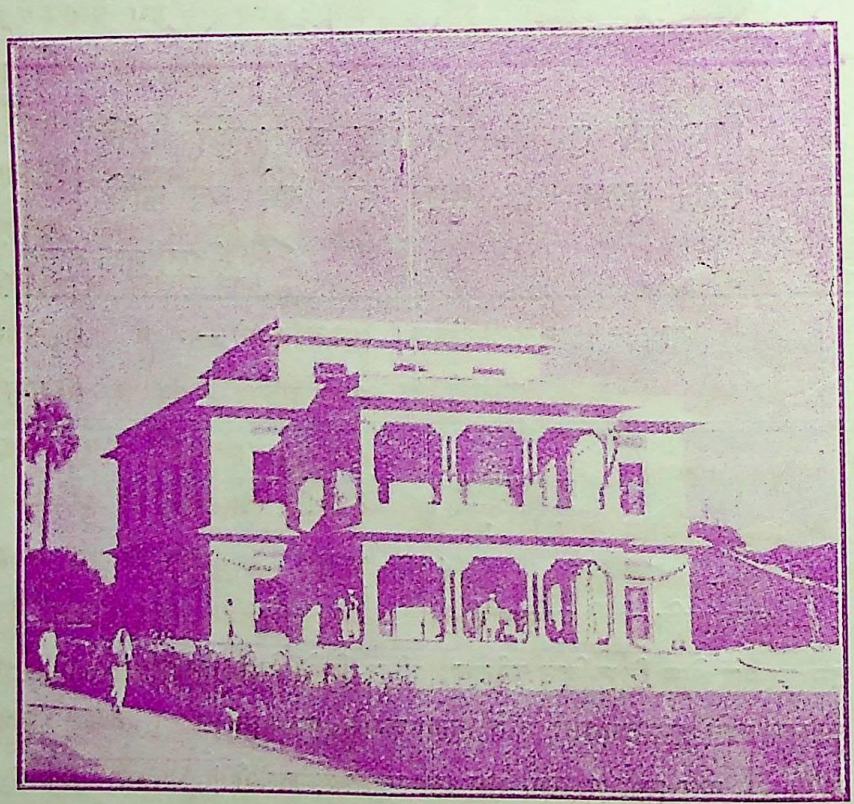

श्रीभारतमाता-मंदिर

गुरुजनों से इस विषय में परामर्श किया। परामर्श में यह निश्चय हुआ कि यह मानचित्र संगमरमर का बनवाया जाय, तो अति उत्तम हो।

फिर क्या था, कलाकार और शिल्पियों की खोज होने लगी। काशी-निवासी श्रीदुर्गाप्रसादजी ने यह भार उठाया, और बड़े परिश्रम तथा योग्यता से इसे निबाहा भी। इस प्रकार सं० १९७५ से कार्यारंभ हुआ, और ५-६ वर्षों के

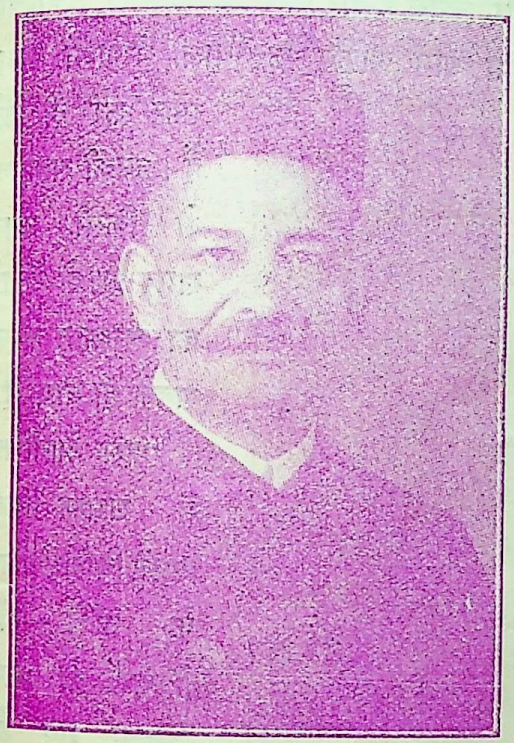

बाबू दुर्गाप्रसादजी

[काशी के प्रसिद्ध भारतमाता-मंदिर की भू-चित्र-रचना और निर्माण का कार्य आपके ही निरीक्षण में संपूर्ण हुआ है। आप मुद्राभिज्ञान-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता और उच्च कोटि के कलाकार हैं।]

परिश्रम में भारत का यह सुंदर मानचित्र तैयार हो गया। मानचित्र बनवाने पर, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, रविवार सं० १९८४ को, २४ लक्ष गायत्री-पुरश्चरण के उपरांत, सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् श्रीडॉक्टर भगवानदास के कर-कमलों से भारत-माता के मंदिर का शिलान्यास हुआ। मंदिर बन जाने पर, चारों वेदों के चार-चार पाठ और पूर्णाहुति होने के पश्चात्, महात्मा मोहनदास-कर्मचंद गांधी के कर-कमलों द्वारा गत विजया दशमी के शुभ मुहूर्त में सर्व-साधारण के दर्शनार्थ मंदिर का पाटोद्घाटन भी हो गया। इस मंदिर का संक्षिप्त विवरण, जो प्रकाशित हुआ है, इस प्रकार है—

"भारतमाता का यह सुंदर भू-चित्र संग-मरमर का बना है। इसका परिमाण, अर्थात् लंबाई और चौड़ाई, ३१ फ़ीट २ इंच और ३० फ़ीट २ इंच है। इसे बनाने में ११×११ इंच के सात सौ बासठ टुकड़े और कुछ और छोटे-मोटे टुकड़े काम में लाए गए हैं। भारत-भूमि की प्राकृतिक उँचाई और निचाई आदि पर दृष्टि रखते हुए ये टुकड़े बड़ी सावधानी और शुद्धता से काट-छाँटकर प्रस्तुत किए गए हैं। इस मानचित्र में उत्तर में पामीर-पर्वत-शिखरों से लेकर दक्षिण में लंका या सिंहलद्वीप के दक्षिणी छोर डुवुंडुर-तुडुव (डन्ड्रा) तक और पूर्व में मौलमीन तथा चीन की प्रसिद्ध प्राचीन दीवार क़हक़हा से लेकर पश्चिम में हेरात तक का समस्त भू-भाग दिखाया गया है। भारतवर्ष के साथ ही इसके समीपवर्ती प्रदेश—अफ़ग़ानिस्तान, बिलोचिस्तान, भोट (तिब्बत), ब्रह्मदेश (बर्मा), लंका (सिंहल) और मलाया प्रायद्वीप का अधिकांश भी दिखाया गया है।

"इस मानचित्र में धरातल भूमि एक इंच में ६.४ मील दिखाई गई है। इसका अर्थ यह हुआ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कि मानचित्र की एक इंच की लंबाई प्रकृत भूमि की ६ मील ७ सौ ४ गज़ (१ गज़ = ३ फ़ीट) के बराबर समझनी चाहिए। भिन्न-भिन्न स्थलों की उँचाई दिखाने के लिये यह मान लगभग सत्रहगुना बढ़ाकर लिया गया है, अर्थात् पहाड़ आदि की उँचाई एक इंच में दो हज़ार फ़ीट दिखाई गई है। हिमालय-पर्वत का सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट (गौरीशंकर) संगमरमर के एक ही टुकड़े को काटकर पौने पंद्रह इंच ऊँचा बनाया गया है। इसकी वास्तविक उँचाई, नवीन वैज्ञानिक गणना के अनुसार, उंतीस हज़ार फ़ीट से कुछ अधिक यानी लगभग साढ़े पाँच मील है।

महात्माजी द्वारा पूर्णाहुति

[महात्माजी पूर्णाहुति देने जा रहे हैं। पीछे डॉ० भगवानदासजी हैं।]

"इस मानचित्र के बर्ग से हमारी मातृ-भूमि वस्तुतः चार लाख पाँच हज़ार पाँच सौ गुना बड़ी है। इतने विस्तृत और वैचित्र्य-पूर्ण भू-भाग का अत्यंत शुद्ध मानचित्र बनाना कितना कठिन और श्रमसाध्य कार्य है, इसका अनुमान प्रत्येक विद्वान् और कलाविद् दर्शक कर सकता है। फिर भी इस बात का प्रयत्न करने में कोई बात उठा नहीं रक्खी गई है कि भरतखंड के पर्वतीय भागों, पहाड़ियों और ऊँचे मैदानों की समुद्र-पृष्ठ से उँचाई बिलकुल ठीक हो। दर्शकों की सुविधा के लिये समुद्र-पृष्ठ से पाँच सौ, एक हज़ार, दो हज़ार, तीन हज़ार, छ हज़ार, दस हज़ार, पंद्रह हज़ार, बीस हज़ार, पचीस हज़ार और उंतीस हज़ार पाँच सौ फ़ीट की उँचाइयाँ, शीघ्र ध्यान आकृष्ट करनेवाली रेखाओं द्वारा, स्पष्ट कर दी गई हैं। इनकी सहायता से किसी स्थान समुद्र-पृष्ठ से उँचाई का अनुमान करना सहज हो गया है।

"इस मानचित्र में समस्त पर्वत, अपने विचित्र प्रकार के ऊँचे - नीचे शिखरों के साथ, दिखाए गए हैं। पहाड़ी दर्रे और घाटियाँ भी अपनी सच्ची गहराई इस चित्र में दिखा रही हैं। सुविशाल हिमालय के चार सौ से अधिक शिखर अपने ठीक स्थानों पर इस तरह दिखाए गए हैं कि देखते ही उनकी उँचाई का भी ज्ञान हो जाता है। प्राचीन और अर्वाचीन भारतीय आख्यायिकाओं में सुप्रसिद्ध कैलास-पर्वत—जो प्रायः तीन सौ मील लंबी और डेढ़ सौ मील

चौड़ी, सदा बर्फ़ से ढकी संसार की सबसे बड़ी पर्वत-श्रेणी है—अपने भव्य शिखरों और हिमानियों (ग्लेसियरों) के साथ दिखाया गया है। सारांश यह कि मानचित्र को भारत-भूमि की सच्ची मूर्ति बनाने में कलाकार और शिल्पी ने अपनी ओर से कोई बात उठा नहीं रक्खी है।

"भूखंडों की उँचाई की तरह भारतवर्ष की सब प्रधान और सहायक नदियों के टेढ़े-मेढ़े सर्पगति-सम मार्गों को भी बड़ी सावधानी से यथासंभव ठीक-ठीक दिखाने का पूर्ण यत्न किया गया है। केवल मार्ग ही नहीं, वरंच नदियों की चौड़ाई और गहराई भी दर्शकों पर अनायास प्रकट करने में कोई आयास उठा नहीं रक्खा गया है। इसे देखने से समस्त प्रधान नदियों के उद्गम-स्थलों का—स्रोतों का ज्ञान भी सहज हो जाता है। नदियों की भाँति मुख्य-मुख्य झीलों का प्रदर्शन भी, ठीक-ठीक स्थानों पर, किया गया है। ऐसा करते समय उनके आकार और गहराई का भी ध्यान पूर्णतया रक्खा गया है। कारीगर ने जो कुशलता गिरि-पर्वतों का दैर्घ्य और आरोह दिखाने में दिखाई है, वही नद-नदियों और झील-सरोवरों की गति, गंभीरता तथा चौड़ाई प्रकट करने में भी दिखाई है।

"भू-मापन (पैमाइश) करनेवाले भारतीय

मंदिर के उद्घाटनोत्सव पर भीड़

विभाग ने अपनी भूमिति (माप) के आधार पर भारत-भूमि का जो नया नक़्शा बनाया है, उसी के आधार पर इस मानचित्र में विविध स्थल ऊँचे-नीचे काटे गए हैं, और उँचाई प्रकट करने के लिये, इसी नक़्शे के आधार पर, एक इंच को दो हज़ार फ़ीट के बराबर मान लिया गया है। भमिति करनेवाले वे पुरुष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने अति परिश्रम से भारत का ऐसा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतमाता की प्रतिमा

[जो वास्तव में संगमरमर का बना हुआ भारतवर्ष का विराट् भू-चित्र है।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पूर्ण और विशुद्ध भौगोलिक चित्र प्रस्तुत किया, जो इस पूर्णांग और नयनाभिराम प्रस्तर-मूर्ति का आधार बना।

"इस प्रस्तर-निर्मित भव्य भू-चित्र में प्रख्यात नगरों, इतिहास-प्रसिद्ध स्थानों, तीर्थों, नदियों, पर्वतों एवं गिरिवर्त्मों के नाम, उनकी लंबाई, चौड़ाई, उँचाई, गहराई आदि अभिव्यक्त करते हुए खोदे गए हैं।

कुंड

[इसमें भारतमाता का भू-चित्र रक्खा हुआ है। पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी बहन श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के साथ एक ओर खड़े देख रहे हैं।]

काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय की विश्व-सभा (कोर्ट) और शिष्ट-समिति (कौंसिल) के सदस्य श्रीदुर्गाप्रसादजी बी० ए० विज्ञान-कला-विशारद ने—जो कलाप्रेमी और मुद्राभिज्ञान-शास्त्र में निष्णात पुरुष हैं—अपने निरीक्षण में काशी के ही पटु शिल्पियों से यह मानचित्र बनवाया है। संगतराशों को इस विषय में दक्ष और अभ्यस्त करने में भी आपको विशेष परिश्रम करना पड़ा है। भारतवर्ष के विविध भखंडों की बिलकुल ठीक उँचाई प्रकट करने के लिये पहले उनके छोटे-छोटे चित्र बनाने पड़े, और बाद में, उन चित्रों के आधार पर, संगमरमर के वर्गाकार सात सौ बासठ टुकड़े ठीक अनुपात में काटे और गढ़े गए। ये ही प्रस्तर-खंड इस मानचित्र के अंग-प्रत्यंग हैं। इन खंडों को काटने, गढ़ने और जोड़ने में बीस कारीगर सतत पाँच वर्ष तक कार्य करते रहे।

"भारतमाता की इस मूर्ति के लिये एक सुरम्य उद्यान में विशाल मंदिर बनाया गया है, जो अभी पूर्ण नहीं हुआ है। वहाँ भारतोपांतवर्ती सागर भी, अपनी अल्पाधिक गंभीरता या गहराई के साथ, दिखाया गया है।

"भावनामय मनुष्य किसी भावना से प्रेरित होकर कोई कार्य कर जाता है। उसकी उपयोगिता का अनुभव आनेवाली पीढ़ियाँ ही करती हैं। फिर भी कहा जा सकता है कि लोक-शिक्षण की दृष्टि से यह भू-चित्र विद्यार्थियों और अध्यापकों तथा भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में गवेषणा करनेवाले विद्वानों के लिये उपयोगी होगा।

"इसकी सहायता से भारत के भूगोल, भूतल-निर्माण, भूगर्भ-शास्त्र तथा और अनेक विषयों पर सर्व-साधारण के लिये उपयोगी, सरल व्याख्यानों एवं शिक्षा-संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिये विशेष लाभप्रद, सुबोध व्याख्यानों का आयोजन सरलता से किया जा सकेगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"भारत के वायु-विज्ञान के संबंध में भी इससे बहुत कुछ सहायता मिल सकती है, और इसके आधार पर भारतीय मीटिरियालॉजी या अंतरिक्ष-विज्ञान की शिक्षा देना भी संभवतः सहज होगा।

"भारतीय संस्कृति के कारण, विकास तथा उसके विशेष-विशेष तत्त्वों का रहस्य समझने-समझाने में भी यह सहायक होगा, ऐसी आशा की जा सकती है।"

इस स्मरणीय महत्त्व-पूर्ण कार्य के लिये काशी के माननीय दान-वीर बाबू शिवप्रसादजी गुप्त की जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी होगी।

STAR TRADE SKB MARK (REGD.)
स्टार ट्रेड-मार्क

डाबर (डाः एस, के, बर्मन) लिः

५० वर्ष से अधिक का सुप्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेंट दवाओं का बृहत् भारतीय कार्यालय

विभाग नं० (४६) पोस्ट-बक्स ५५४, कलकत्ता।

तुम मुझसे बातें करने में इतनी घृणा क्यों करते हो?		तुम्हारे दाँत बड़े गंदे हैं। तुम्हारे मुँह से दुर्गंध आती है।
तो मैं क्या करूँ? तुम्हारी यह घृणा कैसे दूर हो?	दंत-मुक्ता (Regd.) (दाँत-रोग-नाशक सुगंधित मंजन)	रोज़ इसी से दाँत साफ़ करो। घृणा का कोई कारण नहीं रहेगा।

रोज़ इससे दाँत साफ़ करते रहने से दाँत मोती के समान चमकने लगते हैं, और मुँह से सुगंध आती है। दाँतों का हिलना, पायरिया, मसूड़ों का दर्द इससे अच्छा होता है। घर-घर में इसकी प्रशंसा हो रही है। मूल्य—प्रति डिब्बी ।-) पाँच आना; डा० म० ३ डिब्बी तक ।=)

नोट—दवाएँ सब जगह मिलती हैं। ख़रीदते समय स्टार ट्रेड-मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

लखनऊ शहर के सोल एजेंट—दी किंग्स मेडिकल हाल, २५, अमीनाबाद-पार्क

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लालारुख़

[आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

(१)

उस दिन दिल्ली के बाज़ार में बड़ी धूम थी। चारो तरफ़ चहल-पहल ही नज़र आती थी। घर-घर में जलसे हो रहे थे, और जशन मनाया जा रहा था, बाज़ार सजाए गए थे—ख़ास-कर चाँदनी चौक की सजावट आँखों में चका-चौंध उत्पन्न करती थी। असल बात यह थी कि बादशाह आलमगीर की दुलारी छोटी शाहज़ादी लालारुख़ का ब्याह बुख़ारे के शाहज़ादे से होना तय पा गया था। इसके साथ ही यह बात भी तमाम दरबारियों और बुख़ारा के एलचियों से सलाह-मशविरा करके तय पा गई थी, ख़ास तौर से बुख़ारा के शाहज़ादे ने इस बात पर पूरा ज़ोर दिया था कि उसे कश्मीर के दौलतख़ाने में शाहज़ादी का इस्तक़बाल करने की इजाज़त दी जाय, और बादशाह ने इस बात को मंज़ूर कर लिया था। उस दिन लालारुख़ की सवारी दिल्ली के बाज़ारों में होकर कश्मीर जा रही थी, और दिल्ली शहर की ये सब तैयारियाँ इसी सिल-सिले में थीं। जिन सड़कों से सवारी जानेवाली थी, उन पर गुलाब और केवड़े के अर्क़ का छिड़काव किया गया था। दूकानों की सब क़तारें फूलों से सजाई गई थीं। जगह-जगह पर मौल-सरी और बेले के गजरे से बंदनवार बनाए गए थे। बज़ाज़ों ने कमख़्वाब और ज़रवफ़्त के थानों को लटकाकर ख़ूबसूरत दरवाज़े तैयार किए थे, जौहरी और सुनारों ने सोने-चाँदी के ज़ेवरों और जवाहरात के क़ीमती जिंसों से अपनी दूकान के बाहरी हिस्से को सजाया था। इंतिज़ाम के दारोग़ा और बरकंदाज़ लाल-लाल बरदियाँ पहने और ज़री की पगड़ियाँ डाटे घोड़ों पर और पैदल इंतिज़ाम के लिये दौड़-धूप कर रहे थे। छज्जों और छतों पर लालारुख़ की सवारी देखने के लिये ठठ-की-ठठ औरतें आ जुटी थीं। परदानशीन बड़े घर की औरतें चिलमनों की आड़ में खड़ी होकर लाला-रुख़ की सवारी देखने का इंतिज़ार कर रही थीं। नजूमियों और ज्योतिषियों से लालारुख़ की बिदाई का महूरत दिखा लिया गया था, और ठीक महूरत पर लालारुख़ की सवारी लालक़िले से रवाना हुई। सबसे आगे शाही सवारों का एक दस्ता हाथ में नंगी तलवारें लिए आगे-आगे चल रहा था। उसके बाद ज़र्क़-बर्क़ पोशाक पहने, हाथ में बड़े-बड़े भाले लिए, बरकंदाज़ों का एक झुंड था। इसके बाद तातारी बाँदियाँ तीर-कमान कमर में कसे और नंगी तलवार हाथ में लिए, जड़ाऊ कमर-पेटी में ख़ंजर खोंसे, तीखी निगाहों से चारो तरफ़ देखती हुई, आगे बढ़ रही थीं। इसके बाद झूमते हुए शाही हाथी थे, जिन पर ज़रदोज़ी की सुनहरी झूलें पड़ी हुई थीं, और जिनकी सोने की अंबारियाँ सुनहरी धूप में चमचमा रही थीं। इनमें महीन रेशमी जाली के पर्दे पड़े हुए थे, जिनमें शाहज़ादी लालारुख़ की सहेलियाँ, उस्तानियाँ, मुग़लानियाँ और रिश्ते की दूसरी शाही औरतें थीं। इनके पीछे नक़ीबों की एक फ़ौज थी, जो चिल्ला-चिल्लाकर हुज़ूर शाहज़ादी की सवारी की आमद लोगों पर ज़ाहिर कर रही थी। इसके बाद ख़ास बाँदियों और महरियों के पैदल झुरमुट में क़ीमती, जड़ाऊ सुखपाल में शाहज़ादी लालारुख़ बैठी थी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक विश्वासपात्र बाँदी पीछे खड़ी शाहज़ादी पर धीरे-धीरे पंखा झल रही थी। सुखपाल पर गुलाबी रंग के निहायत ख़ूबसूरत, मकड़ी के जाले की तरह महीन पर्दे पड़े हुए थे। इनके पीछे घोड़े पर सवार एक सरदार खोजा फ़िदाहुसेन था, और उसके पीछे मुग़ल सरदारों का एक मज़बूत दस्ता। इसके बाद रसद, डेरे-तंबू और बल्लियों से लदे हुए बहुत-से ऊँट-ख़च्चर-हाथी तथा बेलदार-मज़दूर चल रहे थे।

(२)

लालारुख़ का सौंदर्य अप्रतिम था, और उसके कोमल तथा भावुक ख़यालातों की ख्याति देश-देशांतरों तक फैल गई थी। देश-देशांतरों के शाहज़ादे उसे एक बार देखने को तरसते थे। उसका रंग मोतियों के समान था, उसकी आभा और शरीर की कोमलता केले के नए पत्ते के समान थी। उसके दाँत हीरे के-से और आँखें कच्चे दूध के समान उज्ज्वल और निर्दोष थीं। उसका भोलापन और सुकुमारता अप्रतिम थी, और निर्मम आलमगीर, जो प्रेम की कोमलता से दूर रहा, इस अपनी नन्ही और भोली बेटी को सचमुच प्यार करता था। उसने अपने हाथों से सहारा देकर उसे सुखपाल में सवार कराया, और आँखों में आँसू भरकर विदा कराया।

सवारी जब दिल्ली की सीमा पार करके लहलहाते खेतों, जंगलों और पहाड़ियों पर पहुँची, तो लालारुख़ ने अपने नाज़ुक हाथों से परदा हटाकर एक नज़र दूर तक फैली हुई हरियाली पर डाली, और जो कुछ भी उसने देखा, उससे बहुत ख़ुश हुई। आज तक उसे जंगल की हरियाली देखने का मौक़ा नहीं मिला था, शाही महल के झरोखों से भी वह झाँक न पाती थी। शाही महल की तड़क-भड़क और बनावट से वह ऊब गई थी, इसलिये जंगल का दृश्य देखकर उसके मन में आनंद होना स्वाभाविक था। नए-नए दृश्य उसकी आँखों के आगे आते-जाते थे। रंग-बिरंगे फूलों से लदे हुए वृक्ष और लताएँ, स्वच्छंदता से चौकड़ी भरते हुए हिरनों के झुंड, चहचहाते हुए भाँति-भाँति के पक्षी उसके मन में कौतूहल पैदा कर रहे थे। वह उत्फुल्ल नेत्रों से प्रकृति की शोभा निहारती हुई और भाँति-भाँति के विचारों तथा शंका से उद्विग्न-सी आगे बढ़ रही थी। हर दस कोस पर पड़ाव पड़ता था।

एक दिन—जब सुदूर पश्चिम और उत्तर के आकाश की क्षितिज रेखा में हिमालय की धवल चोटियाँ प्रातःकाल की सुनहरी धूप-किरणों से चमककर, देखनेवालों के नेत्रों में चमत्कार पैदा कर रही थीं, और शीतल-मंद-सुगंध बांसती वायु गुदगुदाकर मन को प्रफुल्ल कर रही थी—लालारुख़ अपने खीमे में, रेशम के कोमल गद्दे और तकियों में अलसाई-सी पड़ी हुई, अपने अज्ञात यौवन से बिलकुल बेख़बर होकर, अपनी सहचरियों से सुरम्य कश्मीर की सुषमा का बखान सुन रही थी। महलसरा के खोजा दारोग़ा ने सामने आकर कोर्निश की, और अर्ज़ की कि "कश्मीर से बुख़ारे के नामवर शाहज़ादे ने हुज़ूर शाहज़ादी की ख़िदमत में एक नामी गवैए को भेजा है, और वह ड्योढ़ियों पर हाज़िर होकर क़दमबोसी की इजाज़त से सरफ़राज़ होना चाहता है।"

लालारुख़ का चेहरा शर्म से लाल हो गया। उसने कनखियों से अपनी एक सखी की ओर देखा, और फिर मुस्किराकर वीणा के झंकृत स्वरमें कहा—"क्या वह सिर्फ़ गवैया है?"

"नहीं हूज़ूर, वह एक नामी शायर भी है, और उसकी कविता की भी वैसी ही धूम है, जैसी उसके गाने की।"

"क्या वह बुख़ारे का बाशिंदा है?"

"नहीं हज़ूर, वह कश्मीर का रहनेवाला है। वह एक कमसिन, ख़ूबसूरत और निहायत बाअदब नौजवान है।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शाहज़ादी ने एक बार दारोग़ा की तरफ़ देखा, और पूछा—"क्या कह सकते हो कि शाहज़ादे के साथ उसके किस प्रकार के ताल्लुक़ात हैं ?"

"जी हाँ, तहक़ीक़ात से मालूम हुआ है कि हज़रत शाहज़ादे के साथ इस नौजवान के बिलकुल दोस्ताना ताल्लुक़ात हैं।"

"क्या शाहज़ादे ने कुछ ताकीद भी लिख भेजी है ?"

"जी हाँ हुज़ूर, उन्होंने लिखा है कि मैं अपने जिगरी दोस्त इब्राहीम को शाहज़ादी का इस्तक़बाल करने और उन्हें गाने तथा कविता से ख़ुश करने को भेजता हूँ। शाहज़ादी को उनसे परदा करने की ज़रूरत नहीं।"

शाहज़ादी नीची नज़र करके मुस्किराई, और धीमे स्वर से कहा—"बहुत ख़ूब। शाहज़ादे के दोस्त का हर तरह आराम से रहने का इंतिज़ाम कर दो।" इतना कहकर वह जल्दी से ख़्वाबगाह में चली गई, और ख़्वाजा सरा कोर्निश करके बाहर आया।

(३)

कहीं बदली छा रही थी। कश्मीर की घाटियों में लालारुख़ की छावनी पड़ी थी। चारो तरफ़ सुहावने दृश्य थे। दूर पर्वत-श्रेणियाँ शोभा बखेर रही थीं। चाँदनी छिटकी थी, और वह बदली में छन-छनकर धरती पर बिखर रही थी। लालारुख़ ने सुना, कोई वीणा के मधुर झंकार के साथ वीणा-विनिंदित स्वर में मस्ताना गीत गा रहा है। उस प्रशांत रात्रि में उस सुमधुर गायन और उसके प्रेम-भावना-पूर्ण शब्दों से लालारुख़ प्रभावित हो गई। उसने प्रधान दासी को बुलाकर कहा—"कौन गा रहा है ?"

"वही कश्मीरी कवि है।"

"बड़ा प्यारा गीत है।"

"और वह गायक उससे भी ज़्यादा प्यारा है।"

"क्या वह बहुत ख़ूबसूरत है ?"

"मगर हुज़ूर के तलुओं योग्य भी नहीं।"

लालारुख़ मुस्किराई। उसने कहा—"किसी को भेजकर उसे कहला दो, ज़रा नज़दीक आकर गावे।"

बाँदी "जो हुक्म" कहकर चली गई। और, कुछ क्षण बाद ही मूर्तिमती कविता और संगीत की मधुर धार उस भावुक शाहज़ादी के मानस-सरोवर में हिलोरें लेने लगी।

वह सोचने लगी, जिसका कंठ-स्वर इतना सुंदर है, और जिसका भाव इतना मधुर है, वह कितना सुंदर होगा। शाहज़ादी की इच्छा उसे एक बार आँख भरकर देख लेने की हुई। शाहज़ादे ने कहला भेजा था कि उससे परदा न किया जाय, परंतु शाहज़ादी इतनी हिम्मत न कर सकी। उसने प्रधान दासी के द्वारा कवि से कहला भेजा कि वह नित्य इसी भाँति शाहज़ादी के लिये गाया करे, तो शाहज़ादी उसका एहसान मानेगी। उस दिन से दिन-भर शाहज़ादी उस अमूर्त संगीत के रूप की कल्पना विविध भाँति करने लगी, और जब वह स्वर्ण-क्षण आता, तो उस स्वर-सुधा में मस्त हो जाती।

कश्मीर धीरे-धीरे निकट आ रहा था। शाहज़ादे से मिलने का दिन निकट आ रहा था। तमाम कश्मीर में शाहज़ादी के स्वागत की बड़ी भारी तैयारियाँ हो रही हैं, इसकी ख़बर रोज़-रोज़ शाहज़ादी को लग रही थी, पर शाहज़ादी का दिल धड़क रहा था। क्या सचमुच यह अमूर्त संगीत एक दिन विलीन हो जायगा। धीरे-धीरे शाहज़ादी के मन में कवि से साक्षात् करने की इच्छा बलवती होने लगी।

शालामार की सुंदर और स्वर्गीय छटा अवलोकन करती हुई लालारुख़ अनमनी-सी बैठी थी। अब वह उस अमूर्त के दर्शन से नेत्रों को धन्य किया चाहती थी। उसने उस स्निग्ध चाँदनी के एकांत में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उस कवि को बुला भेजा था। हाथ में वीणा लिए जब उसने घुटने टेककर शाहज़ादी को अभिवादन किया, तब क्षण-भर के लिये शाहज़ादी स्तंभित रह गई। उसके होठ काँपकर रह गए, बोल न सकी। कवि ने कहा—

"हुज़ूर शाहज़ादी ने ग़ुलाम को रूबरू हाज़िर होने का हुक्म देकर उसे निहाल कर दिया।"

"मैं, मैं तुम्हें विना देखे न रह सकी।"

"शाहज़ादी का क्या हुक्म है?"

"एक बार इस चाँदनी में मेरे सामने बैठकर वही प्यारा संगीत गा दो।"

"जो हुक्म।"

कवि की उँगलियों ने तारों में कंपन उत्पन्न किया, साथ ही कंठ का मधु भी प्रवाहित हुआ, शाहज़ादी उसमें खो गई। गाना खत्म कर, कवि ने साहस करके मुग्धा राजकुमारी का कोमल कर अपने होठों से लगा लिया। शाहज़ादी चीख उठी, उसने अपना हाथ खींच लिया; पर दूसरे ही क्षण उसने कहा—"ओह, इब्राहीम, मैं तुम्हारे विना नहीं जी सकती।" और, वह मूर्च्छित होकर कवि पर झुक गई।

(४)

शालामार बाग़ में शाहज़ादी ने कुछ दिन मुक़ाम करने की इच्छा प्रकट की। कश्मीर से शाहज़ादे के तक़ाज़े आ रहे थे कि जल्द सवारी आवे। पर शाहज़ादी शाहज़ादे के पास जाते घबराती थी, वह अपना हृदय कवि को दे चुकी थी। वैसी ही चाँदनी थी, संगमरमर की एक पटिया पर दोनो प्रेमी बैठे थे, फूलों का ढेर और शीराज़ी सामने रक्खी थी। शाहज़ादी ने कहा—"प्यारे इब्राहीम, इस क़दर मुतफ़िक्र क्यों हो?"

"शाहज़ादी, हम जो कुछ कर रहे हैं, उसका अंजाम क्या होगा? शाहज़ादा जब यह भेद जान लेंगे, तो हमारी जान की ख़ैर नहीं। मुझे अपनी ज़रा परवा नहीं, पर आपको उस प्रलय में मैं न देख सकूँगा।"

"ओह! इब्राहीम, शाहज़ादे बहुत उदार हैं, वह समझते होंगे, मुहब्बत में किसी का ज़ोर-ज़ुल्म नहीं चलता। वह हमें माफ़ कर देंगे।"

"नहीं शाहज़ादी, वह तुम्हें अपनी जान से ज़्यादा चाहते हैं, माफ़ न करेंगे।"

"तो इब्राहीम, मैं खुशी से तुम्हारे साथ मरूँगी। क्या तुम मौत से डरते हो?"

"नहीं दिलरुबा, और ख़ासकर इस प्यारी मौत से।"

"तो फिर यह राज़ क्यों पोशीदा रक्खा जाय, शाहज़ादे को लिख दिया जाय।"

"ये तमाम ठाट-बाट हवा हो जायँगे।"

"उसकी परवा नहीं, तुम मेरे सामने बैटकर इसी तरह गाया करना, मैं तुम्हारे लिये रोटियाँ पकाया करूँगी।"

"प्यारी शाहज़ादी, बेहतर हो, इस ग़ुलाम को भूल जाओ।"

"ऐसा न कहो, यह कल्मा सुनने से दिल धड़क उठता है।"

"तो फिर तुम्हारा क्या हुक्म है?"

"शाहज़ादे को मैं सब हक़ीक़त लिख भेजूँगी।"

"तुम क्यों, यह काम मैं करूँगा, फिर नतीजा चाहे भी जो हो।"

(५)

इब्राहीम के गिरफ़्तार होने की ख़बर आग की तरह शाहज़ादी के लश्कर में फैल गई। शाहज़ादी ने सुना, तो पागल हो गई। खाना-पीना छोड़ दिया। सवारी तेज़ी के साथ आगे बढ़ने लगी। ज्यों-ज्यों कश्मीर नज़दीक आता था, सजावट और स्वागत की धूमधाम बढ़ती जाती थी। परंतु शाहज़ादी बदहवास थी। शहर में उसका बड़ी धूम-धाम से स्वागत हुआ। और, जब महल के फाटक में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसकी सवारी घुसी, तो उस पर हीरे-मोती बखेरे गए। शाहज़ादी ने पक्का इरादा कर लिया था कि ज्यों ही वह शाहज़ादे के सामने पहुँचेगी, उसके क़दमों पर गिरकर इब्राहीम की जान-बख़शी की भीख माँगेगी।

शाहज़ादा जड़ाऊ तख़्त पर बैठा शाहज़ादी के स्वागत करने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके बग़ल में एक दूसरा जड़ाऊ तख़्त शाहज़ादी के लिये पड़ा था। शाहज़ादी ने ज्यों ही हवादान से पैर निकाला, शाहज़ादा उसे देखकर अवाक् रह गया—बिखरे बाल, मलिन वेश, सूखा और पीला चेहरा और सूजी हुई आँखें। शाहज़ादी ने आँख उठाकर शाहज़ादे को नहीं देखा, वह आगे बढ़कर तख़्त के नीचे ज़मीन पर लोट गई। उसने शाहज़ादे के पैर पकड़कर कहा—"क्षमा, क्षमा, ओ उदार शाहज़ादे! क्षमा।"

शाहज़ादे ने कहा—"उठो शाहज़ादी, तुम्हारे लिये सब कुछ किया जा सकता है, यह तुम्हारा तख़्त है, इस पर बैठो।" शाहज़ादी ने डरते-डरते आँखें उठाकर शाहज़ादे की ओर देखा। "या ख़ुदा" इतना ही उसके मुँह से निकला, और वह शाहज़ादे की गोद में बेहोश होकर लुढ़क गई।

(६)

"हाँ, तो तुम इब्राहीम की जाँ-बख़शी चाहती हो, प्यारी!"

"हाँ प्यारे, तुम इब्राहीम को जानते हो?"

"कुछ-कुछ।"

दोनो ठहाका मारकर हँस पड़े। लालारुख़ ने शाहज़ादे की गोद में मुँह छिपा लिया *।

---

* मूर के प्रसिद्ध कथानक से—स्वतंत्र परिवर्तन के साथ।

नक़्क़ालों के धोखे से बचो

असली चीज़ के सामने नक़ली चौथाई भी लाभ न देगी। नक़ली का कोई भरोसा नहीं, इसलिये स्वास्थ्य भी ख़तरों में होगा। कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य संपादक 'देशोपकारक' लाहौर की बनाई हुई

रजिस्टर्ड **अमृतधारा** रजिस्टर्ड

ही सैकड़ों रोगों के लिये रामबाण है। कुछ लोग इसकी बढ़ती बिक्री देखकर इसकी नक़लों से जनता को धोखा देने का प्रयत्न करते रहते हैं। जनता के स्वास्थ्य व माल की हानि न हो, इसलिये यह चेतावनी दी जाती है कि अब सदा पंडित जी का नाम आदि देखकर केवल अमृतधारा ही ख़रीदा करें। मूल्य बड़ी शीशी २॥), अर्द्ध ॥१), नमूना ॥)

पत्र-व्यवहार तथा तार का पता—**अमृतधारा, १३ लाहौर**

लखनऊ में एजेंट—छुन्नामल-रामदयाल परफ़्यूमर, अमीनाबाद

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरप्रकाशिका (दस्तूरमालिका)

[स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीताराम बा० ए०]

सारे देश के अधःपतन का एक कारण यह भी है कि हम अपनी पुरानी शासन-पद्धति नहीं जानते, और न जानने का उद्योग करते हैं। हम लोगों में अधिकतर यही समझते हैं कि हम सदा के दास और मूर्ख हैं। जो कुछ सभ्यता हममें आई है, वह अँगरेज़ी शासन के प्रभाव से। अब स्वामी दयानंद सरस्वती के उपदेशों से हमें अपनी प्राचीन सभ्यता का कुछ-कुछ ज्ञान होने लगा है। वह भी शुष्क ज्ञान-मात्र ही है।

हमारे पास एक प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तक है, जिसमें सारे राज्य-प्रबंध का गणित दिया हुआ है। इसका नाम गुरप्रकाशिका है। First Triennial Report of the Search of Hindi Manuscripts (हिंदी हस्त-लिखित पुस्तकों की पहली त्रैवार्षिक रिपोर्ट), पृष्ठ ३५ पर लिखा है—

"कमलाजन (१७६०) ई० में विद्यमान..... जालौन-ज़िले के कोंच नगर के रहनेवाले कायस्थ। उनका रचा हुआ एक ही ग्रंथ प्राप्त हुआ है।

"दस्तूरमालिका---गणित का ग्रंथ लीलावती के आधार पर १७६० ई० का लिखा हुआ। इस ग्रंथ की दो हस्त-लिखित प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। एक १८३३ ई० की, और दूसरी १८५५ ई० की लिखी।

"पहली प्रति कमला जन-कृत दस्तूरमालिका। ५२८ श्लोक। देखने में पुरानी। अजयगढ़-राज-पुस्तकालय में रक्षित।

"दूसरी प्रति १८५५ की लिखी छत्रपुर में, लाला देवीप्रसाद के पास, मिली थी।

आदि

"सिद्धश्री गणाधिपतये नमः अथ गुरप्रकाशिका दस्तूरमालिका।

छप्पै

गवरनंद आनंदकंद गजवदन बिराजत;
एकरदन सिर मुकुट स्रवन कुंडल छबि छाजत।
लंबोदर भुज चारि माल मुकता उर सोहहिं;
मूषक पर असवार देखि सुर-नर-मुनि मोहहिं।
(सुभ) रिद्धि नवनिद्धि (के) दाताजन संकटहरन;
जपत नाम पूजा प्रथम कमलाजन बंदत चरन।

दोहा

बंदत पद गननाथ के बिनव(त) हौं करजोर;
कमलाजन पै कृपा करि दीजै मंगल मोर।
संवत बिद्या[१४] बेद[४] सत ऊपर सैतालीस (१८४७);
सावन सुक्ला त्रोदसी भानवार सुभ ईस।

समाप्त

दफतर और दस्तूर की पद्धति कही जनाइ;
पढ़ौ, सुनौ, समझौ सबै, बिमल बुद्ध हो जाइ॥३७३॥
जैसी राही राह बिन जाने भटकत सोइ;
ऐसे गुर जाने बिना अटके है नर जोइ॥३७४॥
राह बनाए जात है फेर न पूछत पंथ;
ऐसे ही भ्रम जात है पढ़ै-सुनै यह ग्रंथ॥ ३७५॥
श्रीगुर-कृपा-प्रताप (को) अरु सत-संगत पाइ;
कमलाजन बरनन कियो लघुतम ग्रंथ बनाइ॥३७६॥
यह दफतर दस्तूर को पढ़ै-गुनै सब कोइ;
अटक जाइ धौकौ मिटे बुद्ध प्रकासित होइ॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इति श्रीगुरप्रताप संपूरन अगहन ब० ११ सं० १८६० लिखतं कायस्थ कन्हैयालाल मुकाम अजयगढ़ ।"

इन उद्धरणों को हमारी प्रति से मिलाने पर कोई विशेष अंतर नहीं है । अजयगढ़ की प्रति में गुरप्रकाशिका और दस्तूरमालिका साथ-ही-साथ लिखी हैं । इससे प्रकट है कि एक ही ग्रंथ के दो नाम हैं ।

हमने अजयगढ़ - नरेश के प्राइवेट सेक्रेटरी महोदय को लिखा; उत्तर मिला, वहाँ इस ग्रंथ की कोई प्रति नहीं है । कदाचित् खो गई। छत्रपुर - राज्य के विद्वान् दीवान श्रीपंडित चंपारामजी मिश्र ने भी यही उत्तर दिया । काशी - नागरी - प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में इस नाम का कोई ग्रंथ न कभी रहा, न अब है । इससे यह ग्रंथ अप्राप्य-सा हो गया है ।

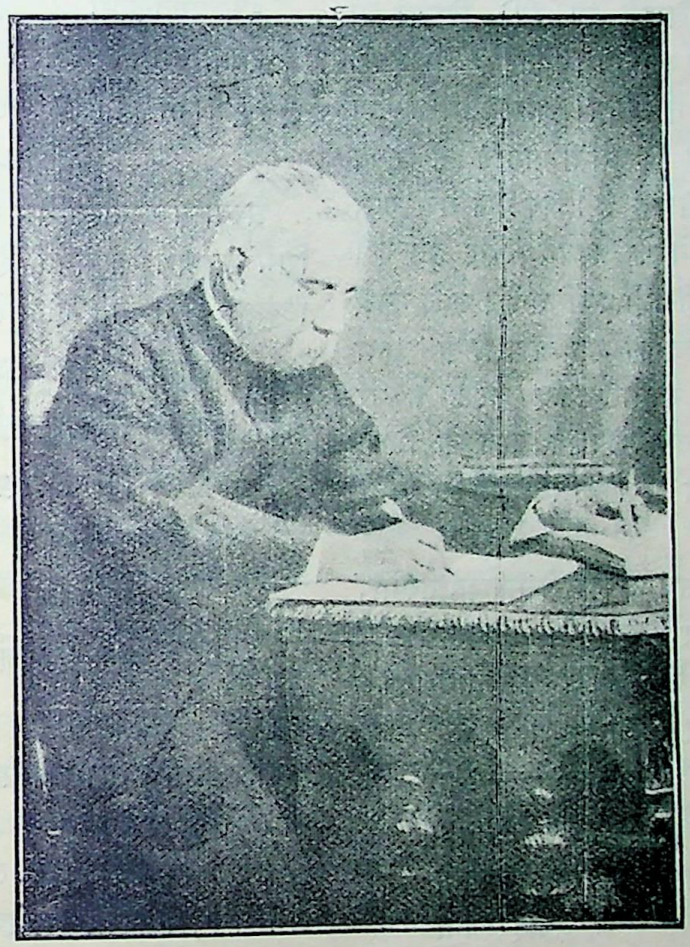

स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए०

हमारी प्रति में लिखने का समय नहीं दिया है, परंतु देखने में बहुत पुरानी प्रतीत होती है ।

अब हम इस अपूर्व ग्रंथ के विषयों को संक्षेप से लिखते हैं—

दस्तूर (دستور) फ़ारसी-भाषा का शब्द है । इसके अनेक अर्थ हैं । इनमें एक नियम (क़ायदा) भी है । यही अर्थ इस ग्रंथ में प्रयुक्त हुआ है ।

आरंभ में जमा-खर्च लिखने की रीति है । इसके लिये पहले क़लम बनाना, काग़ज़ कतरना बताया गया है । फिर अक्षर ह्रस्व और दीर्घ लिखना सिखाया गया है। जैसे इस प्रांत की पुरानी पाठशालाओं में सिखाया जाता है।

क बर कन्ने 'का', हरसिन 'कि', दीर्घन 'की', तर्कुन 'कु', बार्जुन 'कू', एकलै 'के', दुल्ले 'कै', कुरमत 'को', दुर्मत कामों 'कौ', मस्ते 'कं', दुर्बासी 'कः' ।

अक्षर बतलाकर गिनती बताई है । १ से १० तक को एक पदा, १० से २० तक को दूसरा पदा कहते हैं ।

पदे के जोड़ने की रीति यह है—

पदे का पहला अंक अंतिम अंक में जोड़कर ५ से गुणा कर दो, एक पदे का जोड़ हो गया । जैसे—

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०

१ + १० = ११

११ × ५ = ५५ यही पदे का जोड़ है ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इसके आगे दफ़्तर का दस्तूर है। इसमें पहले बही बनाने की रीति है। बही के पत्रों का अर्ज़ (चौड़ाई) ७ अंगुल होना चाहिए, और तूल (लंबाई) ११ अंगुल। बहियाँ बनाकर पहले रोज़नामा (روزنامچہ) लिखना चाहिए। पीछे स्याहा लिखकर अवारजा लिखा जाय। अवारजा को अँगरेज़ी में कैश-बुक कहते हैं। अवारजा लिखने की रीति विस्तार से लिखी है। इसी से खतौनी बनती है। इसके उपरांत कमलाजन ने खेतों और उनके पोत का वर्णन दिया है। पुरानी पद्धति से गुणा करने की रीति बड़ी रोचक है। जब खेत नप गए, तो जमा-वसूल लिखने के क़ायदे दिए हुए हैं। यह पद्धति अब भी कहीं-कहीं प्रचलित है। पहले नक़द के बदले अन्न की उपज का एक अंश लिया जाता था। अन्न बेचकर रुपया नक़द करने के गुर अत्यंत सुगम हैं। इसके उपरांत राज के भिन्न-भिन्न अंगों का वर्णन है। ये अंग क्रम से नीचे लिखे जाते हैं—

तोसाखाना—जिसमें कपड़ा, पेशक़ब्ज़, तरवार, ढाल, छुरी, जरी और रसम गिनाए गए हैं।

तोसाखाना दस्तूर में—कपड़ों का दाम निकालने का गुर बड़े ब्योरे के साथ है।

१. तोसाखाना	२. मखरुतखाना
३ महरुतमखाना	४. बबचाखाना
५. आबदारखाना	६. सर्फ़राज़ख़ाना
७. ज़रगरखाना	८. जवाहरखाना
९. खज़नदारखाना	१०. पीलखाना
११. अस्तबलखाना	१२. गाड़ीखाना
१३. सुतुरखाना	१४. सुखपालखाना
१५. रजारसखाना	१६. सिलहखाना
१७. बारूदखाना	१८. गुलज़ारखाना
१९. आहूखाना	२०. जुवारवतखाना
२१. तमोलखाना	२२. अदालतखाना
२३. गदखाना	२४. खुस्तखाना
२५. ताज़ीखाना	२६. अतन्याउतखाना
२७. समेदारखाना	२८. दफ़्तरखाना
२९. इमारतखाना	३०. तालीमखाना
३१. क़िस्तीखाना	३२. नौबतखाना
३३. इकेसादीखाना	३४. अदवियतखाना
३५. पंगतखाना	३६. मरातबखाना

इनके समझने के लिये हम एक दो 'खानों' का पूरा-पूरा विवरण लिखते हैं।

महिसुतमखाना

अरबी-शब्द मोहतशिम का अपभ्रंश है। मोहतशिम का अर्थ लज्जावती है। इसमें कंघी, डिबिया, टिकुली, चूड़ी आदि होती हैं। कमलाजन कहते हैं—

जानो चीज जनानी होय ;
लिखो लिबास-सहित सब सोय।

गाड़ीखाना

अब पुनि लिखिए गाड़ीखानो ;
रथ, बहलैं, छकड़ा परवानो।
गाड़ी, बैल लिबास सिताको ;
उठे खुराक लिखे सो जाको।

तोपखाने में तोपों की नाप-तौल बड़े विवरण के साथ दी हुई है।

सबसे विचित्र दस्तूर तालीमखाना है, जिसके अंग भाँड़, पतुरिया, कलावंत आदि हैं। तालीम का अर्थ शिक्षा है। हमारी समझ में नहीं आता कि भाँड़, पतुरिया आदि कौन-सी शिक्षा के अंग हैं।

अंत में हुंडी, जमा-ख़र्च की रीति देखकर ग्रंथ समाप्त किया गया है। पुरानी पद्धति जाननेवालों के लिये यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी है। हिंदोस्तानी एकेडेमी ने इसका प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया था, परंतु कई कारणों से वह काम रुक गया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली

[कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता]

यह युग जागृति का युग है। इस युग का बच्चा-बच्चा आज अपने वतन की रक्षा के लिये, क़ौम की आन के लिये, अपने देश की स्वतंत्रता के लिये हँसते-हँसते क़ुर्बान हो जाने को तैयार है। आज इस देश के किसी क्षेत्र में उतर जाइए, किसी मार्ग में चले जाइए, किसी गली में घूम जाइए, सब ओर आपको जागृति का, सुधारों का, क्रांति का गरमागरम बाज़ार ही दृष्टिगोचर होगा। राजनीतिक क्षेत्र में आज अपनी खोई हुई शक्तियों का पुनः आह्वान करने के लिये क्रांति के जोशीले नारे, मर्मस्पर्शी वक्तृताएँ और सुधारों की गंभीर बहसें श्रुतिगोचर हो रही हैं। धार्मिक क्षेत्र में अंध-विश्वासों के सड़े-गले पर्दे को फाड़कर शुद्ध, सात्त्विक तथा भावमय धर्म के स्वरूप का उद्घाटन करने, वैदिक मज़हब को सार्वभौम बनाने, ब्रिटिश साम्राज्य की तरह भव्य भारती के कोने-कोने में फैले हुए जड़ात्मवाद की सुदृढ़ जड़ों को खोखला तथा एकेश्वरवाद का प्रचार करने के लिये भारत की समस्त शक्तियाँ क्रांति तथा जागृति का झंडा हाथ में लेकर, सत्य और शांति के गीत गाती हुई, विजय-पथ पर प्रयाण कर रही हैं। सामाजिक क्षेत्र में चलिए, वहाँ भी मुट्ठी-भर मदांधों द्वारा ठुकराए गए भारत-माता के लाड़ले हरिजनों के उद्धार के लिये क्रांति तथा जागृति के गगन-भेदी नारे लग रहे हैं। परंतु बंधुगण! इस राष्ट्रीय जागृति के समय भी हमारे शिक्षित-समाज के दिमाग़ ठिकाने न आए, भारत के शिक्षा-सागर के अंदर क्रांति की लहरें न उठीं। जब अन्य राष्ट्र "We must teach or die." की दृढ़ धारणा कर स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय स्कूल खोलकर अपने अशिक्षित भाइयों को शिक्षित बनाने के प्रयास में लगे हुए हैं, वहाँ हमारे भारत के अंदर राष्ट्रीय स्कूल तथा कॉलेजों को तो क्या कहें, ब्रिटिश युनिवर्सिटियाँ भी उँगलियों पर गिनी जाने लायक़ हैं; और जो हैं, वे भी सिर्फ़ धनिकों के लिये, सर्व-साधारण के लिये नहीं। इसकी परीक्षा करना चाहते हैं, तो एक बार भारत के ग्रामों में चले जाइए, इसका पर्याप्त प्रमाण आपको मिल जायगा। और भी सुनिए, इन युनिवर्सिटियों की शिक्षा भारत के धनिकों के लाभ के लिये नहीं, अपितु उनके मस्तिष्कों को योरपियन ढाँचे में ढालने के लिये अथवा यों कहिए कि भारत को ही योरप बनाने के लिये—भारतीयों की भारतीयता का, उनके स्वात्माभिमान का अपहरण करने के लिये—है। आइए, योरप के मेकाले आदि महानुभावों के शब्दों में ही इसकी सत्यता की परीक्षा करते जाइए। जब भारत को शिक्षा देने के संबंध में विवाद उठा, तो उनके दो दल थे। एक का कथन था, पाश्चात्य शिक्षा दी जाय, और दूसरा कहता था, भारतीय साहित्य की शिक्षा दी जाय। पहले दल की विजय हुई, और तभी से भारत में स्कूल और कॉलेज खोले गए। ज़रा और आगे बढ़िए, और एक स्थूल दृष्टि से देखते जाइए कि इस पाश्चात्य शिक्षा के जारी करने का क्या उद्देश्य था। इस शिक्षा को आरंभ होते देख पुस्तकों के ढेर की ओर इशारा करते हुए बंबई के तत्कालीन गवर्नर एलफ़िंस्टन ने कहा था—"But that is a high road back

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

to Europe." अर्थात् यह तो हमारे योरप लौट जाने की सड़क है। इसका उत्तर मिस्टर चार्ल्स ग्रांट ने अपनी पुस्तक 'The Education of the Indian people' में इस प्रकार दिया है—"In success would lie our safety not our danger." अर्थात् शिक्षा की सफलता में हमारी रक्षा ही है, न कि आपत्ति। फिर मदरास के गवर्नर लॉर्ड मेकाले के निकट संबंधी सर सी० ट्रेविलियन ने अपनी पुस्तक 'भारतीय शिक्षा-प्रणाली' में और श्रीअलेक्ज़ेंडर डफ़ ने रोम और अकबर की नीति का दृष्टांत देते हुए यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि इँगलिश-भाषा और इँगलिश संस्कृति का प्रचार करना ही उनकी सफलता की कुंजी है। अंत में वह फिर कहते हैं—"भारतवासियों की भारतीयता के प्रति भावना तब तक वैसी ही बनी रहेगी, जब तक भारतीय भाषाओं के स्थान पर अँगरेज़ी का प्रचार न करेंगे। जब तक अँगरेज़ी का प्रचार न होगा, तब तक वर्तमान शासकों के प्रति उनका खिंचाव न होगा।" और आगे बढ़िए। साक्षात् मेकाले के शब्दों में ही इस शिक्षा-प्रणाली की स्थापना का उद्देश्य सुनिए। वह लिखता है—

"We want at present to do our best to form a class who may be interpreters between us and the million. We govern a class of persons Indian in blood and colour, but English, in taste, in opinion, in morals and intellect."

अर्थात् अपने स्वराज्य की नींव को सुदृढ़ रखने के लिये वे चाहते थे कि सारे अँगरेज़ ही उच्च पदों पर नियुक्त रहें। परंतु इतनी दूर से इतनी अधिक संख्या में अँगरेज़ों का भारतवर्ष में आना असंभव देखकर सहसा मेकाले के मुँह से उपर्युक्त वाक्य निकल पड़े, जिसके अंदर स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि हमें इस समय एक ऐसी श्रेणी की आवश्यकता है, जो ख़ून और रंग में तो भारतीय हो, किंतु अपने विचारों, चरित्र तथा बुद्धि में अँगरेज़। हंत! कितने दर्दनाक और भारतीयता के घातक वाक्य हैं। इसी प्रकार सर फ्रेडरिक होलिडे ने इसी विषय पर, हाउस ऑफ़ कॉमंस में, एक समय कहा था कि यह पाश्चात्य शिक्षा भारतीयों को बाइबिल का पाठ दे रही है। मैं विश्वास करता हूँ कि कलकत्ता-हिंदू-कॉलेज के विद्यार्थियों की बाइबिल में योग्यता सहस्रों इँगलिश विद्यार्थियों से अधिक है, और आज विदेशियों की कृपा के कारण ही भारतीय गीता या रामायण आदि धार्मिक ग्रंथों को कवियों की कपोल-कल्पना तथा वेदों को बच्चों की बिलबिलाहट समझते हैं। आह! कितनी हृदय-विदारक बातें हैं। ज़रा और सुनिए, १८०३ ई० में एक कमीशन यह देखने के लिये भारत भेजा गया कि विलायत की वस्तुएँ यहाँ किस तरह ज़्यादा खप सकती हैं। उसने जाकर अपने निरीक्षण के निचोड़ को बखानते हुए कहा कि विलायती वस्तुओं की खपत के लिये भारत में स्कूल और कॉलेज खोले जायँ। कारण, पाश्चात्य ढाँचे में ढले हुए काले अँगरेज़ अधिक संख्या में विदेशी वस्तुएँ ख़रीद सकते हैं। इस शिक्षा की स्थापना का बस यही उद्देश्य था। इसी नींव पर पाश्चात्य शिक्षा की "उपरि-उपरि स्वरूपा, मध्ये-मध्ये च कुरूपा" इमारत खड़ी की गई।

यह तो हुआ चित्र का एक पट। अब ज़रा इसकी मैशीनरी में तैयार होनेवाले नवयुवकों की निराली रंगतें भी देखिए कि वे मलेरिया के मच्छरों तथा बरसात के मेढकों की भाँति अधिक संख्या में इन कॉलेजों से निकलनेवाले काले अँगरेज़ अपने को स्वर्ग के फ़रिश्ते समझने लग गए। अपने देश-भाइयों से घृणा करने लगे। आंग्ल-कंपनियों में २०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की क्लर्की करने, विलासिता की होड़ लगाने, अपनी स्वाभाविक सादगी, सरलता तथा स्वातंत्र्य छोड़कर अँगरेज़ों की चापलूसी तथा नक़ल करने में ही अपने गौरव का भान करने लगे। अपनी भाषा से घृणा, अपने वेश से नफ़रत तथा अपने रहन-सहन से जी चुराने लगे। उन्हें बिना हैट लगाए सड़कों पर घूमने, बिना इँगलिश के बातचीत करने, बिना टेबुल के खाना खाने, बिना चुरुट दबाए तथा सिगरेट का विषैला धुआँ छोड़े भ्रमण करने और बिना आँखों में चश्मा लगाए बाहर निकलने में अपने अपमान का ज्ञान होने लगा। उनकी शान, उनका अभिमान तथा उनका गौरव वस्त्रों की साज-सजावट, मोटरों की गड़गड़ाहट और सिनेमा-हाउसों की खचखचाहट तक ही सीमित रह गया है। रोटी को ब्रेड तथा बिल्ली को कैट कहने में ही उनके ज्ञान की इतिश्री है। न कोई ज्ञान की चर्चा, न कोई परलोक-साधन की व्याख्या; न स्वदेशोद्धार का ध्यान, न पूर्वजों की गुण-गरिमा का ज्ञान; न कोई पूजा, न कोई पाठ; न उस वीरात्मा तिलक की सुध है, न भारतीयों के हृदय-सम्राट् गांधी की; न आनंद-कंद, भुवन-भावन भगवान् दयानंद की स्मृति है, न आर्य-पुरुषोत्तम राम तथा कृष्ण की। उन्हें बस एक ही धुन है अँगरेज़ बनने की, एक ही लगन है ब्लैक इँगलिशमैन कहलाने की, एक ही साध है क्लर्की करने की, एक ही इच्छा है भारत को इँगलैंड बना देने की, एक ही आशा है योरपियनों का दास कहलाने की, और एक ही उद्देश्य है अँगरेज़ों की चरण-चंचरीकता करने का। आजकल के बड़े-बड़े बी० ए०, एम्० ए० के मुखों से वाल्मीकि, कालिदास आदि के स्थान पर मिल्टन, शेक्सपियर तथा हार्ली आदि के नाम सुनाई देते हैं। उनके दिमाग़ उस गले-सड़े फोड़े के ढाँचे में ढल गए हैं, जो ऊपर से सफ़ेद, किंतु अंदर से गँदला होता है। उनका तो इहलोक तथा परलोक भी इँगलैंड ही बन गया है। स्वदेशोद्धार तथा स्वदेश-प्रेम की बातें तो उन्हें एक हौवा-सी प्रतीत होती हैं। भारत के राष्ट्रीय गानों को बेसुरा तथा भद्दा समझकर उन्हें तो वे सर्वथा ठुकरा चुके हैं। विद्वत्ता उनमें नहीं। चारित्रिक गुणों का उनमें अभाव है। मातृभाषा से वे सर्वथा अनभिज्ञ हैं। सादगी तथा सरलता का तो उन्होंने नाम ही नहीं सुना। सुयोग्य नागरिक वे नहीं बन सके। बुद्धि के विकास से वे सर्वथा विहीन हैं। अब बतलाइए, क्या वे शिक्षित हैं? क्या इन्हें ही शिक्षित कहा जा सकता हैं? ज़रा सुनिए तो सही, उनकी तो आज शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक, सब प्रकार की अवनति हो चुकी है। उनके हाथ-पैर सूखी लकड़ी-जैसे, मुँह सरसों के फूलों के रंग के समान, गालों में गड्ढे पड़े हुए, आँखें भीतर धँसी हुई, मस्तिष्क तो है ही नहीं, गला सड़ा फोड़ा। बाक़ी रहा मन। मन तो पहले ही विदेश का ग़ुलाम बन चुका है। अब ज़रा सोचिए, क्या ये ही काले अँगरेज़ अथवा अर्द्ध-भारतीय अपने कंधों पर इस नव-राष्ट्र की रक्षा का भार लेंगे, क्या इसी विलासिनी शिक्षा के बूते पर ५०० से अधिक मतभेदों में एकता-राशि का संचार करेंगे, क्या इसी शिक्षा के बल पर २५३ भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों को एक भाषा बोलना सिखाएँगे, क्या ये ही नवयुवक चीन और जापान की भाँति अपनी २२ अक्षरों की भाषाओं का खंडन कर हिंदी और देवनागरी-लिपि का भारत में प्रचार करेंगे, क्या यही विलासिनी शिक्षा भारतीयों के पारस्परिक युद्धों को रोकेगी, क्या ये ही शिक्षित जन अछूत जातियों को उठाकर उन्हें छाती से लगाएँगे, क्या इसी शिक्षा की ओट में विलासी, नर्तन करनेवाले खंभों के आश्रय हमारी जातीयता खड़ा हुआ चाहती है। भला, कभी सूखी रेत से भी किसी की प्यास बुझी है? हाय! इस शिक्षा ने तो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारत का सर्वनाश ही कर दिया ! अँगरेज़ी स्कूलों में शिक्षा पाए हुए लाखों भारतीय आज गवर्नमेंट के भिन्न-भिन्न विभागों में नियुक्त हैं। हज़ारों रेलवे-विभाग में काम करते हैं। परंतु बताइए, ये शिक्षित कहलानेवाले देश का क्या उपकार करते हैं? अदालतों के मुंशी, मुहर्रिर, पेशकार, बहुत-से तहसीलदार और डिप्टी-कलेक्टर आज बेचारी ग़रीब प्रजा की गाढ़ पसीने की कमाई का उपभोग कर रहे हैं। पुलिसवालों की तो बात ही निराली है। युनिवर्सिटियों के सब डिग्रीहोल्डर और अनेक न्यायालय केवल लोगों के जान-माल की रक्षा करते हैं या कुछ और? कुछ समझ नहीं पड़ता। हाय-हाय! यदि भारत का शिक्षित-समाज भी अँगरेज़ी के इस ड्यूटी शब्द का महान् और पुनीत अर्थ समझा होता, तो उसका भी पुनरुद्धार जापान की तरह, ५० वर्षों में ही, हो गया होता।

शिक्षा का अर्थ है विकास। मनुष्य को मनुष्य बनाकर विकास-मार्ग की ओर अग्रसर करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। जिस शिक्षा में सूझ नहीं, जो बुद्धि के विकास में सहायता नहीं देती, और जिसमें संकट-निवारण की क्षमता नहीं, वह शिक्षा नहीं, कुशिक्षा है। इँगलैंड ने हमें शिक्षा दी है, और उस शिक्षा ने हमारे ऊपर अनेक उपकार भी किए हैं। उसने सोए हुए मृतप्राय भारत में जागृति का संचार करने में भी बहुत अधिक भाग लिया है। उसी ने चिर काल से अविद्यांधकार-ग्रस्त भारत में विद्या-सूर्य का प्रकाश कराया। उसी ने भारतीयों के निराश हृदयों में आशा तथा उत्साह का समावेश कराया। परंतु फिर भी भारतीयता को निर्बल करने के परिणामों के सामने वे कुछ नहीं जँचते! और, यह भी माना कि वर्तमान काल में हमारे जातीय या राजनीतिक जीवन के लिये अँगरेज़ी-भाषा जानना परमावश्यक है, तथा हमें अपने उद्धार के लिये पूर्व-पश्चिम को मिलाना और विचारों के परस्पर परिवर्तन और विनिमय से सहायता लेना भी नितांत प्रयोजनीय है। परंतु अँगरेज़ी शिक्षा से यह तात्पर्य नहीं कि हम अपने को भूल जायँ, और अपनी भाषा को समूल नष्ट कर अँगरेज़ी का बाना पहन लें। शिक्षा का माध्यम हिंदी ही होना चाहिए। किसी भाषा का ज्ञान-मात्र ही शिक्षा नहीं कहा जा सकता। अँगरेज़ी-भाषा के ज्ञान की आवश्यकता तो मैं स्वीकार करती हूँ, परंतु यह बात समझ में नहीं आती कि भारत के मस्तिष्क के विकास के लिये भी विदेशी भाषा का आश्रय ग्रहण किया जाय। साइंस और विज्ञान-जैसे दिमाग़ी तथा हिस्ट्री-जैसे ज्ञानवर्द्धक विषय भी इँगलिश में पढ़ाए जायँ। इस पद्धति के अनुसार चलने का परिणाम यह होगा कि अधिकांश बालकों की सारी आयु विदेशी भाषा की जटिलता हल करने में ही लग जायगी। उनके मस्तिष्क का विकास न हो सकेगा, और न उन्हें किसी विषय का वास्तविक ज्ञान ही होगा। क्या आप संसार में कहीं का भी दृष्टांत उपस्थित कर सकते हैं, जहाँ बालकों की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषाएँ हों, अथवा किसी देश ने विदेशी भाषाओं के द्वारा ही उन्नति की हो। यदि नहीं, तो इस अनोखे सिद्धांत का प्रचार करने के लिये भारत ही क्यों बाधित किया जाता है? आज तक ऐसा कोई देश नहीं देखा गया, जहाँ युनिवर्सिटी की परीक्षाएँ सरकारी नौकरियों का द्वार खोलने की कुंजी मानी जायँ। परंतु भारत का ही इतना दुर्भाग्य है कि यहाँ युनिवर्सिटियों और कॉलेजों की स्थापना ही लोगों को क्लर्क बनाने तथा स्वार्थों की पूर्ति करने के लिये की गई है। इस पाश्चात्य शिक्षा-प्रणाली ने हमें केवल लिखना-पढ़ना सिखाकर अपने काम करने योग्य तो बनाया, किंतु इससे हमारी बुद्धि की गाँठ नहीं खुली, हमने अपनी शक्ति को नहीं जाना, अपने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आपको तुच्छ समझकर सदा आत्मावसादन ही करते रहे। पर आइए, आर्य-संस्कृति की धरोहरो ! शिक्षा किसी काले या गोरे चेहरे में नहीं है, शिक्षा बहुत अच्छी संस्कृत या इँगलिश बोलने में नहीं है, शिक्षा कोट-पतलून या हैट लगाने में नहीं है, शिक्षा मोटरों पर चढ़कर मटरगश्त करने में नहीं है, शिक्षा बहुत-से विद्वानों के नाम रटने में नहीं है, शिक्षा बी० ए० और एम्० ए० होने में नहीं है, बल्कि शिक्षा वह है, जिससे मनुष्य का अंतःकरण और बुद्धि बढ़े। आत्मिक, शारीरिक तथा बौद्धिक शक्तियों का विकास हो। शिक्षा का मुख्य अर्थ ही मनुष्य को मनुष्य बनाना है, जिससे वह अपनी शक्तियों को समझकर अपने कुटुंब, समाज तथा राष्ट्र की रक्षा कर संसार-मात्र के कल्याण का कारण हो। सभ्यगण ! विवेकशीलता भी कोई वस्तु है। क्या तुम उसका आलिंगन न करोगे ? क्या निरे मूर्ख बनकर, कर्मण्यता को तिलांजलि देकर, योगिराज कृष्ण के कर्मयोग को भुलाकर, आलस्य के भक्त बनकर ही बैठे रहोगे ? क्या तुम्हें अपनी उस दर्दनाक दशा पर ज़रा रहम नहीं आता ? क्या इस भव्य भारती के उद्धार का किंचिन्मात्र भी ध्यान नहीं आता ? क्या भारत के उद्धार के लिये बहाए गए उस वीर दयानंद के आँसू भूल गए ? क्या शंकर और बुद्ध भगवान् के दिव्य संदेश इतनी जल्दी विस्मृत हो गए ? बंधुओ, यह जागृति का युग है। इसके अंदर अकर्मण्यता के पर्यंक पर निश्चिंत सोए रहने का किसी को भी अधिकार नहीं। वीरो ! जागो। हृदय में नव-जीवन भरनेवाले नवयुग के इस नव-प्रभात में जागो। पराधीनता के बंधन तोड़ फेकनेवाले स्वाधीनता के इस संसार में जागो। हृदय का मल धो डालनेवाली सतोगुणमयी इस दुनिया में जागो ! उठो, अकाल और दुर्भिक्ष से पीड़ित ग़रीबों के साथ उठो। उन्नति के लिये उठनेवाले इस संसार के साथ उठो। हिम्मत हारनेवालों के साथ नहीं, हिम्मतवालों के साथ उठो। उठो, देखो, स्वाधीनता का विजय-नाद संसार के समस्त राष्ट्रों को जागृति का पुण्य पाठ पढ़ा रहा है। क्या तुम उसे न सुनोगे ? क्रांति की प्रबल धारा समस्त संसार में बह रही है, क्या तुम उसके चातक न बनोगे ? क्या तुम न सँभलोगे ? क्या तुम न सँभलोगे ? अनेक देशों ने अपनी चिर-विरहिता स्वाधीनता नायिका का आलिंगन किया। फिर क्या तुम निराश ही बने रहोगे ? निराश ही बने रहोगे ? भारतीयो, अब समय आ चुका है, अब तुम्हें तैयार होना ही पड़ेगा, उठना ही पड़ेगा, और अपनी इस अकर्मण्यता को ज़बरदस्ती तिलांजिल देनी ही पड़ेगी। याद रक्खो, यह शिक्षा का पहाड़ नहन्नी या नाखूनों से नहीं खोदा जा सकता, इसके लिये कुदाल या फावड़े की आवश्यकता है। इसलिये अब समय का ध्यान करके शिक्षा-प्रणाली में सुधार करना ही पड़ेगा। भारत-माता के सपूतो, आओ भारत-माता के सुधार-संग्राम में ! आओ देश की बलिवेदी पर। आओ ! आओ ! वीर बनकर आओ ! त्यागी कहाकर आओ ! स्वदेशोद्धार के दृढ़व्रती बनकर आओ ! धीर बनकर आओ ! आओ ! आओ ! निराशा को त्यागो, आशा का अंचल पकड़ो। उस सच्चिदानंद प्रभु की "अनाहूता पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः आरोहणं आक्रमणं जीवतो जीवतोपनम्" की वीर पुकार सुनो। भारत-माता के आशा-भरे नयनों को निहारो। तुम वीर हो। उन संसार-भर में धर्म और सदाचार का संचार करनेवालों की संतान हो। इसलिये उठो। निरीह बनकर देशोद्धार में सहायक बनो। यदि तुम ब्राह्मण हो, तो विद्या-दान से, यदि क्षत्रिय हो, तो शौर्य-दान से, यदि वैश्य हो, तो धन-दान से मातृभूमि की सहायता में संलग्न हो जाओ। अपने जीवनों को मातृभूमि की सेवा के लिये क़ुर्बान कर दो। अपने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दिलों को भारत-माता के चरणों में बिछा दो, अपने प्राणों को पीड़ितों के लिये लुटा दो। बस, राष्ट्रीयता तथा एकता की सुदृढ़ शृंखलाओं में बँधकर विश्व-गगन में चपला की तरह चमका दो। वीरो, "No language, no nationality." बिना भाषा के कोई राष्ट्रीयता स्थापित नहीं हो सकती। बिना सुशिक्षा के स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिये धन्य वह दिन होगा, जिस दिन इन विलासितामयी पाश्चात्य शिक्षा की घनघोर घटाओं को फाड़कर वैदिक शिक्षा-प्रणाली का सर्व-कला-संपन्न सूर्य प्रकाशित होगा। धन्य वह क्षण होगा, जिस दिन शिक्षणालयों से काले अँगरेज़ों के स्थान पर भारतीय संस्कृति के पुजारी, स्वदेश-प्रेम की भावनाओं से भरे हुए भारतीय निकलेंगे। धन्य वह पल होगा, जिस दिन माताएँ अपने बालकों को दूध पिलाती हुई वेद-मंत्रों का बड़े सुँदर स्वर में तथा "पूर्वा संस्कृति-विश्ववारा" का पुण्य गान करती हुई संसार-भर में वेदों के गान गुँजा देंगी। धन्य वह घड़ी होगी, जब इस विशाल विश्व का प्रत्येक प्राणी वेदों का हामी बन जायगा। बस। अखिलेश हमारी रक्षा करें, हमें उन्नत करें, और नव-जीवन प्रदान करें। अंत में उस देवादिदेव से मेरी यही प्रार्थना है, भिक्षा है और याचना है कि—

आ कोई हृदय में ममता की व्याकुल बाढ़ उठा दे;
मेरे मानस से मैं-तू का निष्ठुर भेद हटा दे।
तन्मयता के झूल हिंडोले मैं सोहं-सोहं गाऊँ;
सागर-चुंबित चरणों के कण-कण अपने को पाऊँ।

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Registered 'कॉनटैक्स' रजिस्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करके और अधिक संतान उत्पन्न करके अपने स्वास्थ और सुंदरता को मिट्टी में मिलाना और अकाल-मृत्यु के मुख में जाना नहीं चाहतीं, तथा दासों और अनाथों की संख्या बढ़ाना महापाप समझती हैं, वे कॉनटैक्स के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥); डाक-ख़र्च ।=)

आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गीत

[श्रीयुत 'वचनेश'जी]

कौन यह नीलांबर धारे।

कुंडल झलकत बनि-बनि रवि-ससि
भूषन बनि तारे।
कटि - किंकिनि बनि गगन - तरंगिनि
द्युति-वृति विस्तारे;
रुनुझुन - रुनुझुन नूपुर की धुनि
बनि खग गुंजारे।
पकरि लियो 'वचनेस' आज तोहि
प्रिया-सहित प्यारे।

जाके हास - विकास जगत को
खिलत सुमन सारे;
मोहित जन सब विधि हरि हर लौं
तन मन पन वारे।
पीछे छिपत लजात कहा अब
बचहु न इनकारे;

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में क्षुत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का।),
डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥=)
२५ ,, ,, ,, ५=) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थ-स्थान

[श्रीयुत केसरीमल अग्रवाल]

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम् ;
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते ।

भारतवर्ष धर्म-प्राण देश है । यहाँ अनेकों धर्म प्रचलित हैं । एक धर्म के साथ दूसरे धर्म की विभिन्नता होना भी न केवल स्वाभाविक, बल्कि अवश्यंभावी है । परंतु ईश्वर का अस्तित्व और सत्ता सब मानते हैं । इस बात पर सब एक मत हैं कि ईश्वर सर्व-शक्तिमान्, सर्वनियंता तथा सर्वत्र विद्यमान है । ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हुए भी हमारे धर्म-ग्रंथों में अनेक स्थान विशेष पवित्र, प्रभुता-पूर्ण एवं पूज्य माने गए हैं ।

श्रीयुत केसरीमल अग्रवाल

भारतवर्ष में ऐसे अनेक सुंदर और रमणीक प्राकृतिक स्थान हैं, जहाँ जाकर मनुष्य को एक प्रकार का नया आनंद प्राप्त होता है । मानसिक भाव पवित्रता की ओर आकर्षित हो जाते हैं । आत्मिक उन्नति होती है, और मन क्षुद्र चिंताओं के संकुचित घेरे से निकलकर विश्वव्यापी भगवान् के विशाल साम्राज्य में निर्द्वंद्व विचरण करने के लिये स्वतंत्र हो जाता है । ऐसे पवित्र स्थानों की हमारे यहाँ 'तीर्थ' संज्ञा है ।

इन पवित्र तीर्थों की यात्रा करने की प्रथा भारतवासियों में बहुत प्राचीन काल से है । जहाँ तक इतिहास और धार्मिक ग्रंथ मिलते हैं, तीर्थों के वर्णन सबमें भरे पड़े हैं । जो किसी भी तीर्थ की यात्रा कर लेता है, वह पुण्यात्मा और भाग्यशाली माना जाता है । आजकल पाश्चात्य शिक्षा में रँगे हुए और आर्य-संस्कृति से भ्रष्ट कुछ लोग तर्क द्वारा इन प्राचीन परिपाटियों पर से लोगों का विश्वास कम करने का प्रयत्न करते देखे जाते हैं । परंतु ईश्वर की सुंदर रचनाओं का आनंद लेने और उनका प्रत्यक्ष दर्शन कर ईश्वर के अधिक निकट पहुँचने की जो हार्दिक इच्छा है, उस पर तर्क अपना प्रभाव नहीं डाल सकता, और यदि उसने कुछ प्रभाव डाला भी है, तो उस इच्छा को और भी अधिक बलवती ही बनाया है ।

भारतवर्ष की समस्त भूमि पवित्र और तीर्थमय है, तदपि बहुत-से स्थान विशेष महत्त्व रखते हैं । इनमें भी गंगादि नदियाँ, चारो दिशाओं में चार धाम, अयोध्यादि सप्तपुरी, द्वादशज्योतिर्लिंग, आदि-तीर्थ पुष्कर तथा तीर्थराज प्रयाग आदि-आदि अधिक पुण्यफल-प्रद हैं । इन्हीं पवित्र तीर्थ-क्षेत्रों में जाकर स्नान, दान, तप आदि सत्कर्म करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त होकर सद्गति पाने का अधिकारी हो जाता है । इतना ही नहीं—

पापानि शतसंख्यानि ब्रह्महत्या समानि च ;
कृतान्यपि विनश्यन्ति तीर्थदर्शनकारिणाम् ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दुलारे-दोहावली

'सर्वोत्तम काव्य' है!

हिंदी, संस्कृत और अँगरेज़ी के सर्वश्रेष्ठ विद्वान

डॉक्टर गंगानाथ झा

(भूतपूर्व वाइस चैंसलर, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

दुलारे-दोहावली के संबंध में, भूमिका-स्वरूप, लिखते हैं—

'दुलारे-दोहावली' का प्रथम संस्करण जब निकला था, तभी मैंने—कुछ डरते हुए—लिखा था कि यह 'सर्वोत्तम कोटि' की कविता है। 'डरते हुए' इसलिये कि 'पंडित' प्रायः हिंदी से अनभिज्ञ समझे जाते हैं। ऐसी दशा में हिंदी-संसार के दिग्गजों द्वारा गर्हित भाषा में लिखे हुए काव्य को सराहनीय ही नहीं, पर 'सर्वोत्तम' कह देना एक निरे पंडित के लिये परम दुस्साहस कहा जा सकता है।

पर आज यह जानकर हर्ष है कि हिंदी पढ़नेवालों ने इस दोहावली को इतना अपनाया है कि इसका छठा संस्करण निकल रहा है, इसी प्रसंग में फिर से इन दोहों पर दृष्टि-पात करने का अवसर मिला है। आज भी इनको पढ़ने से जो आनंद—ब्रह्मास्वाद-सहोदर—अनुभूत हो रहा है, सो पहले से भी अधिक है। यही प्रमाण इसके 'उत्तम काव्य' होने का है—

"क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति
तदेव रूपं रमणीयतायाः।"

और काव्य का लक्षण भी पंडितराजोक्त ही मनोरम है—"रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्"—"रमणीयता च लोकोत्तरचमत्कारकारिता"। "लाभाल्लोभोऽभिजायते"—इन दोहों के तो ६ संस्करण हो गए। अब कवि और अधिक 'परिणत-प्रज्ञ' हो गए हैं। इस 'परिणता प्रज्ञा' के भी उद्गार अवश्य होते होंगे। आशा है, ये भी प्रकाशित होकर दृष्टिगोचर होंगे।

गंगानाथ झा

नोट—स्वनामधन्य, पूज्यपाद डॉक्टर गंगानाथ झा ने जिस 'परिणता प्रज्ञा' के उद्गारों के संबंध में ऊपर ध्यान दिलाया है, उसके संबंध में निवेदन है कि इधर २ वर्ष के अच्छे-अच्छे ५० दोहे छाँटकर दोहावली के इस संस्करण में रक्खे गए हैं, और पिछले संस्करण से उतने ही दोहे निकाल दिए गए हैं। दुलारे-दोहावली के कुछ अन्य दोहों का भी संस्कार किया गया है। आकार-वृद्धि की ओर ध्यान न देकर दोहावली को श्रेष्ठतम बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है। हिंदी-प्रेमियों को इसकी एक-एक प्रति मँगाकर हमारे इस कथन की सत्यता की जाँच कर लेनी चाहिए। मूल्य केवल ८ आने हैं, जिल्ददार का १ रुपया। सर्व-साधारण को सुलभ करने के लिये ही इसका मूल्य इतना कम रक्खा गया है। पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है, आप भी अपनी प्रति मँगा लें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३७, लाटूश रोड

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ब्रह्महत्या के सदृश महान् पाप भी तीर्थ के दर्शन-मात्र से नाश हो जाते हैं। यही कारण है, सहस्रों मनुष्य नित्यप्रति भिन्न-भिन्न तीर्थों की यात्रा करते नज़र आते हैं।

हमने ऊपर कहा है, चारो दिशा में चार धाम विशेष महत्त्व-पूर्ण माने गए हैं। इनकी रचना भी हुई है भारत-भूमि के अंतिम छोर पर। अर्थात् किसी एक धाम की यात्रा करनेवाले को उस मार्ग के सब तीर्थों का दर्शन हो जाय। पहले ज़माने में, जब यात्रियों के पैदल या गाड़ियों में जाने का रिवाज था, यात्रा का सच्चा आनंद मिलता था। मार्ग में प्रत्येक जगह स्नान-दर्शन की स्वतंत्रता और शांति-पूर्वक भ्रमण। अब रेल की सवारी से मुख्य स्थान पर तो जल्दी पहुँच जाते हैं, लेकिन रास्ते के बहुत-से तीर्थ छूट जाते हैं। कई स्थानों में हम उतरते भी हैं, लेकिन जल्दी हमारे साथ लगी रहती है। तब भी इस भाग-दौड़ के ज़माने में जितना हो जाता है, कम नहीं है। जो भावुक सज्जन तीर्थाटन करने की इच्छा करते हों, उनसे हमारा यही निवेदन है कि जहाँ कहीं भी जायँ, कुछ दिन रहकर शांति-पूर्वक दर्शन आदि का लाभ उठावें। मार्ग में जितना खर्च और कष्ट सहन किया है, कम-से-कम उतना आनंद तो प्राप्त कर लें। व्यर्थ की भाग-दौड़ मचाकर अपना वहाँ तक पहुँच जाना निष्फल न बनावें।

अभी जुलाई महीने का ज़िक्र है, हम द्वारकाजी में थे। सू० पी० के कोई खानदानी मा वकील साहब द्वारका-दर्शन को पधारे थे। द्वारका के एक सज्जन के पास बंबई के एक महाशय की सिफ़ारिश आई थी। उन्होंने उचित प्रबंध कर रक्खा था। कई पंडे आदि भी जुटक थे। इन्हें मार्ग में तीन दिन से कम तो लगे होंगे। लेकिन यहाँ द्वारका पहुँचकर दो रात्रि भी शांति-पूर्वक न रह सके। इतने समय में मार्ग की थकावट भी दूर न हुई होगी, फिर द्वारका में क्या देख सकते थे।

एक दूसरा दृष्टांत सुन लीजिए। हम बद्रीनाथजी के मंदिर में दर्शन कर रहे थे। एक जत्था मालवे के किसानों का दर्शन करने आया। ४-५ पुरुष और ७-८ स्त्रियाँ थीं। वे लोग भगवान् के द्वार पर पहुँचे ही थे कि उनके साथ की एक स्त्री अपनी वाचालता-वश सबसे कहने लगी—"देखो, वो देखो, भगवान की ठोड़ी में हीरो चमके है; आहा! केसो चमके है।" आदि-आदि।

उस देवी ने अपनी पूर्व-स्मृति के अनुसार (हीरा न होते हुए भी) सब साथियों से हीरा बताया। वे साथी भी जल्दी के कारण उसके साथ सहमत हो गए। ये लोग बद्रीनाथजी का दर्शन करके आए हैं। कठिन मार्ग के अनेकों कष्ट सहन किए हैं। घर आकर सबके सामने 'हीरा देखा' यह बात कहेंगे। तब कहिए, इन प्रत्यक्षदर्शी की बात पर कोई अविश्वास करेगा? नहीं, कदापि नहीं, क्योंकि ये बद्रीनाथ हो आए हैं। लेकिन महाशय, उन भोले मनुष्यों ने उतावली करके उस बाई के भ्रम को सच्चा मान लिया, और अन्य कई वस्तुएँ देखने की थीं, वे नहीं देख पाए। यहाँ आकर वे दूसरों को ही धोखे में नहीं डालते, खुद भी धोखा खा आए हैं।

अतः उतावला सो बावला न होकर तीर्थ-यात्रा शांति-पूर्वक करनी चाहिए, जिससे इस लोक में सुख और परलोक में सद्गति मिल सके।

आज हम आपको चारों दिशा के चार धामों में से दक्षिण तथा पश्चिम के दो धामों का दिग्दर्शन कराने की चेष्टा करते हैं। शांति-पूर्वक पढ़ते जाइए, मनोरंजन के साथ-साथ तीर्थ-यात्रा का भी आनंद आवेगा।

हम न तो लेखक हैं, और न हमें इस बात का ही अभ्यास है कि अपने अनुभवों को दूसरों के सामने किस रूप में प्रकट करें। न ये वृत्तांत व्यर्थ कागज़ रँगनेवाली थोथी कहानी हैं, और न इनमें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आपको निरर्थक उपन्यासों का मज़ा ही आवेगा। हाँ, यह उन पवित्र स्थानों का वर्णन है, जिनके दर्शन करके दरिद्र मनुष्य भी यज्ञों का पवित्र फल पा सकता है। यदि श्रद्धा-पूर्वक पढ़ लिया, तो संभव है, कुछ फल आपको भी उपलब्ध हो जाय, क्योंकि मानस तीर्थों में उत्तम तीर्थ विशुद्ध मन ही कहा है—

मानसतीर्थानि

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः ;
सर्वभूतदया तीर्थं सर्वत्रार्जवमेव च।
दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थमुच्यते ;
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता।
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यं तीर्थमुदाहृतम् ;
तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसा परा।

दक्षिण-भारत

भारतवर्ष की सीमा विभाजित करने के लिये पुण्य-सलिला नर्मदा मध्य-रेखा का काम करती है। नर्मदा का बहाव पूर्व से पश्चिम की ओर को है। इसके दाहने तट के भाग उत्तर और वाम पार्श्व के दक्षिण कहलाते हैं।

नर्मदा से दक्षिण में सर्वप्रथम जो तीर्थ है, वह है द्वादशज्योतिर्लिंगों में प्रसिद्ध "ॐकारममलेश्वरम्"। इसे ॐकारेश्वर और ॐकार मान्धाता भी कहते हैं। ॐकारेश्वर जाने के लिये बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे के खंडवा-अजमेर-सेक्शन में मोरटक्का-स्टेशन है। स्टेशन से ॐकारेश्वर सात मील है। स्टेशन पर मोटर तथा बैल-गाड़ी की सवारी मिलती है। ॐकारेश्वर में ठहरने को कई सुंदर धर्मशालाएँ हैं।

ॐकारेश्वर में नर्मदाजी दो धाराओं में विभाजित होकर बही हैं। दूसरी धार—जो अनुमानतः एक मील ऊपर को नर्मदाजी से अलग होकर ॐ रूपी पर्वत की परिक्रमा करके पुनः नर्मदा में आ मिली है—काबेरी नाम से प्रसिद्ध है। इन दोनो धाराओं के बीच का पर्वत 'टापू' बन गया है। यही ॐकारेश्वर शिवपुरी है।

ॐकारेश्वर में ब्रह्म, विष्णु और शिव, ये तीन पुरियाँ हैं।

ब्रह्मपुरी

इसमें ब्रह्माजी द्वारा स्थापित शिवलिंग ब्रह्मेश्वर हैं। एक मंदिर भगवान् लक्ष्मीनारायण का है। यह स्थान एकांत ऊँचे टीले पर अत्यंत मनोहर है।

विष्णुपुरी

नर्मदाजी के दक्षिण तट पर मान्धाता नाम से विख्यात पुरी है। मोटर तथा बैल-गाड़ी यहीं तक जाती हैं। भगवान् विष्णु का प्राचीन बड़ा मंदिर होने से इसे विष्णुपुरी कहते हैं। निकट ही अमलेश्वर (अमरेश्वर) का विशाल प्राचीन मंदिर है। कोई ॐकारेश्वर को ज्योतिर्लिंग कहते हैं, कोई अमलेश्वर को; लेकिन हम तो समझते हैं, दोनो ही ज्योतिर्लिंग हैं। अमलेश्वर में इंदौर-राज्य की ओर से सदैव लिंगार्चन होता रहता है। कार्त्तिकी पूर्णिमा पर बहुत बड़ा मेला लगता है।

शिवपुरी

नर्मदाजी के मध्य में टापू पर स्थित है। ॐकारेश्वर का मंदिर अत्यंत प्राचीन, बहुत विशाल बना हुआ है। हमने बुज़ुर्गों के मुँह से प्राचीन किंवदंती सुनी है—"यह मंदिर वास्तव में कौरवों ने बनवाया था। उसका द्वार पूर्वाभिमुख था। पांडवों को यह संवाद मालूम हुआ कि कौरवों ने मंदिर बनवाया है, तब उन लोगों ने आकर मंदिर का मुख फिरा दिया। अर्थात् मंदिर को पश्चिमाभिमुख कर दिया। जब दुर्योधन ने जाकर भगवान् श्रीकृष्ण से मंदिर बनवाने के समाचार कहे, उसी समय पांडवों ने भी यही वृत्तांत कहा। भगवान् श्रीकृष्ण चतुर तो थे ही, ताड़ गए, दाल में कुछ काला

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। उन्होंने कौरवों से पूछा, तुमने मंदिर का मुख किस ओर रक्खा है? दुर्योधन ने कहा, पूर्व में। तब अर्जुन से पूछा गया। उन्होंने पश्चिम में बतलाया। बस, निर्णय हो चुका। वहाँ आकर मंदिर देखा गया। पश्चिमाभिमुख निकला। कौरवों का बनवाया हुआ मंदिर उन्हें निराश करके सहज ही पांडवों के हाथ आ गया।"

कई लोगों की धारणा है कि यह मंदिर पेशवों द्वारा बनवाया हुआ है। लेकिन मंदिर की बनावट और उसमें लगे हुए पाषाण-स्तंभ आदि देखने से यही निश्चय होता है कि यह पेशवा-काल के बहुत पहले का बना है। संभव है, पांडवों के समय में या उसके थोड़ा आगे-पीछे बना हो, और पेशवों ने मरम्मत करा दी हो, जिससे खंभे वग़ैरा बेजोड़ लग गए हैं। कभी बना हो, मंदिर है बहुत सुदृढ़।

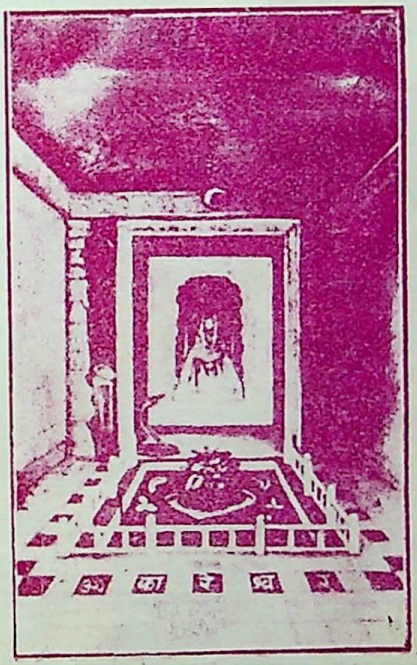

ॐकारेश्वर

भगवान् शंकर की प्रतिमा शिखर के नीचे न होकर बाज़ू की एक कोठरी में है। शिव-लिंग अनघटित पाषाण का (प्राकृतिक नर्मदेश्वर) स्वयंभू है। इसकी गहराई की थाह नहीं मिलती। जलहरी ऊपर से पहनाई हुई है। नर्मदाजी में जब बाढ़ आती है, तो जलहरी से जल ऊपर आ जाता है। यदि कोई चीज़ जलहरी में गिर जाती है, तो वह नर्मदाजी में चली जाती है।

ॐकार-पर्वत की परिक्रमा भी करते हैं। परिक्रमा में कई सुंदर दर्शनीय देव-स्थान हैं। नर्मदा-काबेरी-संगम में स्नान करके सर्वप्रथम ऋणमुक्तेश्वर का दर्शन होता है। यहाँ से थोड़ा आगे चलकर गौरी-सोमनाथ का प्रख्यात मंदिर है। गौरी-सोमनाथ की लिंग-प्रतिमा खड़े हुए मनुष्य के बराबर है। कहते हैं, यह प्रतिमा पहले स्फटिक या स्फटिक के सदृश सफ़ेद पाषाण की थी। इसके सामने खड़े होने पर इसमें यह प्रतिबिंब दिखाई देता था कि भविष्य में किस योनि में जन्म लेना होगा। महमूद ग़ज़नी जब इस मूर्ति के सामने आकर खड़ा हुआ, तो उसे अपना प्रतिबिंब वराह का दिखाई दिया। बस, उसी वक़्त मंदिर में आग लगवा दी गई, जिसके फल-स्वरूप श्वेत लिंग काला हो गया। वही आज तक वर्तमान है।

वहाँ से आगे जाने पर सिद्धनाथ का भग्न मंदिर है। इसकी बनावट सुंदर कला-पूर्ण थी, लेकिन धर्मांध यवनों द्वारा नष्टप्राय कर दिया गया है।

यहाँ से चलने पर भैरव-झाँप (भृगुपतन) की पहाड़ी है। पहले लोग यहाँ से नर्मदा में कूदकर देह त्याग करते थे। उनका विश्वास था कि यहाँ से गिरकर देह त्यागने से पुनर्जन्म नहीं होता, मोक्ष हो जाती है।

ॐकारेश्वर तीर्थ जितना ही पूज्य एवं पवित्र है, उतना ही रम्य और मनोहर भी। पर्वत पर बसा होने से बहुत ही सुंदर मालूम होता है। उसके आस-पास और भी अनेक ऐतिहासिक स्थान हैं—चौबीस अवतार, सात मात्रा, मार्कंडेय-शिला तथा गौमुख तीर्थ इत्यादि। यहाँ से अनुमानतः एक मील, काबेरी के उत्तर तट पर, जैनियों का तीर्थ-स्थान सिद्धवर कूट है। यह भी एकांत, रमणीक भूमि तप करने योग्य है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अजंता

अजंता जाने के लिये जलगाँव-स्टेशन से सड़क का रास्ता है। अड़तीस मील है। दूसरा मार्ग पाचोस-जामनेर-आंच लाइन में पाहुर-स्टेशन से है। पाहुर से अजंता का प्रसिद्ध स्थान केवल सात मील है। यहाँ शिला-तक्षण और चित्रकला के अद्भुत नमूने देखने को मिलते हैं।

इलोरा

इलोरा की गुफाएँ निज़ाम-राज्य में, दौलताबाद-स्टेशन से सात मील की दूरी पर, स्थित हैं। स्टेशन से गुफा तक पक्की सड़क बनी है। यहाँ एक समूची पहाड़ी काटकर मंदिरों के रूप में परिणत कर दी गई है। यहाँ हिंदू, जैन, बौद्ध, तीनों मंदिर हैं। हिंदू-मंदिरों में 'कैलास'-मंदिर सबसे बड़ा एवं सुंदर बना है। आततायी यवनों द्वारा इस मंदिर की भी बहुत क्षति हुई। कुछ लोगों के मत में इलोरा का प्राचीन नाम

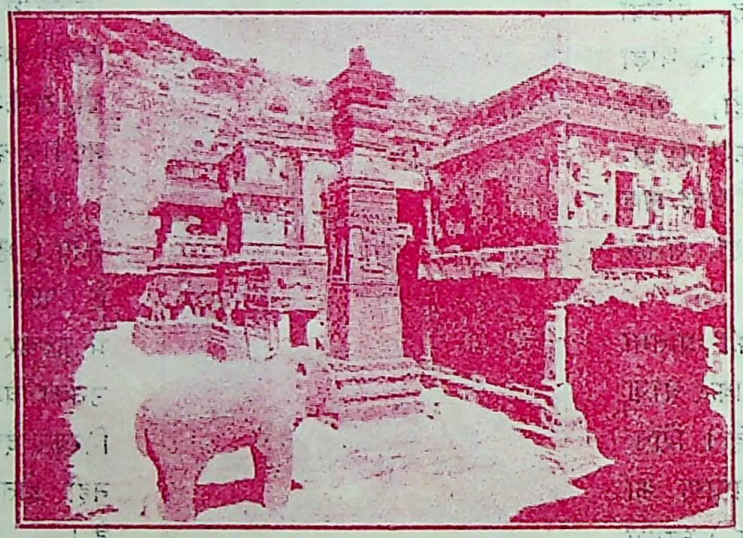

इलोरा में चट्टान काटकर बनाया हुआ कैलास-मंदिर

शिवालय है, और प्रसिद्ध "घृसृणेशं तु शिवालये" ज्योतिर्लिंग यही है। लेकिन यह मत निर्विवाद नहीं। यह स्थान अत्यंत रमणीक है, और शिला-तक्षण की कारीगरी भी उत्तम है, अतः अवश्य देखने योग्य है।

एलीफेंटा

एलीफेंटा की गुफाएँ बंबई से अनुमानतः छ मील दूर, समुद्र के अंदर एक टापू पर, स्थित हैं। नाव या स्टीमर द्वारा जाना होता है। यहाँ पहाड़ के अंदर गुफाएँ बनी हुई हैं। भूतनाथ भगवान् शिवजी तथा अन्य देवताओं के मंदिर हैं। मूर्तियाँ अत्यंत सुंदर एवं प्राचीन कला की स्मृति हैं। धर्मांध विदेशियों ने इसे भी भग्न कर दिया है। बंबईवाले इस स्थान को घारापुरी कहते हैं।

नासिक (पंचवटी)

नासिक जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। खंडवा से २३६ और बंबई से ११७ मील, नासिक-रोड-स्टेशन पर उतरकर मोटर या ताँगे द्वारा पाँच मील नासिक शहर है। गोदावरी के तट पर बसा हुआ नासिक शहर दक्षिण के बड़े नगरों में प्रख्यात है। गोदावरी के दक्षिण तट के शहर को नासिक और उत्तर भाग को पंचवटी कहते है। भगवान् श्रीरामचंद्रजी ने वनवास का अधिक समय यहीं व्यतीत किया था। यहीं लक्ष्मणजी ने शूर्पणखा की नासिका काटी थी, इसी से इस स्थान का नाम नासिक प्रख्यात हुआ।

त्र्यंबकेश्वर से चलकर गोदावरीजी का दर्शन यहीं होता है। यहाँ के दर्शनीय स्थानों में पंचवटी (जहाँ पाँच वट-वृक्ष हैं), सीता-गुफा तथा श्रीरामचंद्रजी का मंदिर विशेष महत्त्व के हैं। पांडव-गुफा भी देखने योग्य है। ठहरने को धर्मशालाएँ हैं। स्थान रमणीक एवं जल-वायु स्वास्थ्य-वर्द्धक है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

त्र्यंबकेश्वर

नासिक शहर से अठारह मील सड़क के रास्ते मोटर, ताँगे या बैल-गाड़ी से जाना होता है। मार्ग अत्यंत मनोरम है। त्र्यंबकेश्वर का स्थान अत्यंत

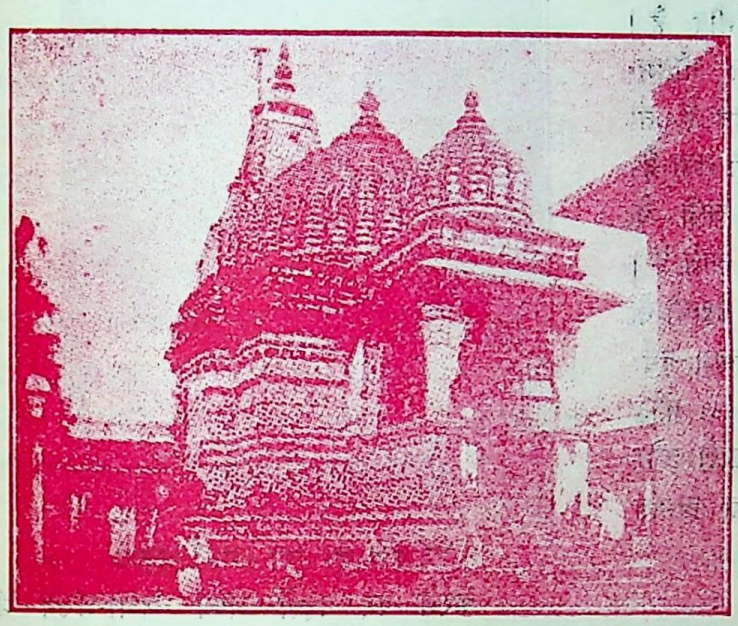

पंचवटी में श्रीराम-मंदिर

पवित्र एवं पुण्यफल-प्रद माना जाता है। यहीं गोदावरीजी का उद्गम-स्थान कुशावर्त-तीर्थ है। जैसे दृढ़-प्रतिज्ञ भगीरथजी ने तपस्या करके पतितपावनी गंगाजी को भूलोक में बुला लिया है, वैसे ही गोदावरीजी का प्रकट होना भी महर्षि गौतम के तप का प्रभाव है। जो महत्त्व उत्तरखंड में जाह्नवी गंगाजी का है, वैसा ही दक्षिण-भारत में गोदावरी पूज्य हैं। गोदावरीजी भगवान् शंकर की जटा से सर्व-प्रथम ब्रह्मगिरि पर प्रकट हुई थीं, और वहीं लोप भी हो गई। फिर महर्षि गौतम ने तपस्या करके गोदावरीजी को पुनः प्रसन्न किया, और एक पवित्र स्थान पर कुश द्वारा आवर्तन किया। वहाँ गोदावरीजी पुनः प्रकट हो गईं। कुश द्वारा आवर्तन करने से ही इस स्थान का नाम कुशावर्त विख्यात हुआ। इस कुशावर्त-तीर्थ पर, शक १६९०-९१ में, श्रीमंत होल्कर महाराज के फड़नवीस श्रीराव-जी आबाजी पारनेरकर ने सात-आठ लाख रुपया खर्च करके सुंदर कुंड और मंदिर आदि बनवा दिए हैं। यह षट्कोण बना होने से तीर्थराज कहलाता है।

चतुष्कोणं भवेत्तीर्थं
षट्कोणं तीर्थराडयम्।
(पाद्मे)

इस पवित्र कुंड में स्नान करने का बहुत पुण्य है। इस जल की महिमा आयुर्वेद में भी वर्णित है—

कण्डुकुष्ठप्रशमनं पवित्रं वह्निदीपनम्;
पाचनं कफवातघ्नं वारि गोदावरीभवम्।

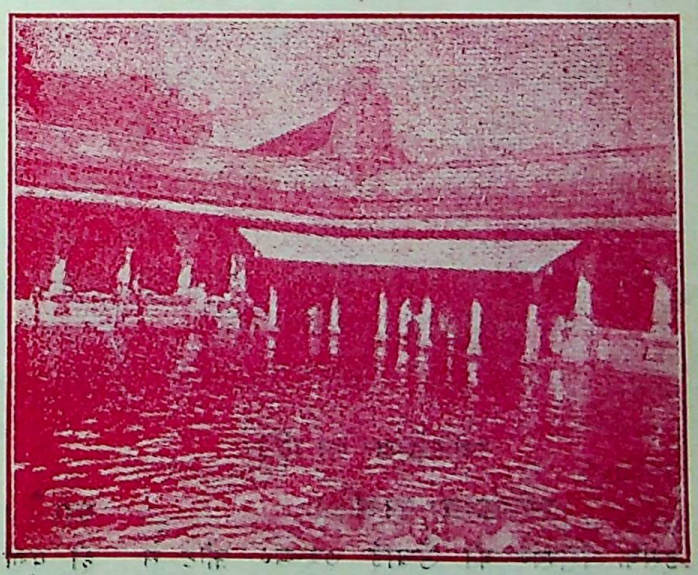

श्रीकुशावर्त-तीर्थ

गोदापूर्वरसायनं रसयुतां दृष्टानुपानं विना
आधिव्याधिजराज्वरादिशमनं धन्वन्तरिर्विस्मृतः;

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गोदावरी में सर्वत्र ही स्नान करना पुण्यदायक है। मूल, मध्य और अंत का विशेष महत्त्व है। यह मूल है; मध्य नांदेड़ में और अंत समुद्र-तट पर है। कुशावर्त के तट पर देवी गोदावरीजी का मंदिर बना है। प्रतिमा बहुत सुंदर, दर्शनीय है। कुशावर्त के निकट ही कनखल-तीर्थ और गौतम-तीर्थ नाम के दो कुंड और हैं। लेकिन एक में तो जल है ही नहीं, और दूसरे का ख़राब हो गया है, दोनो बेकार। त्र्यंबकेश्वर में स्नान हो जाने के बाद भगवान् त्र्यंबकेश्वर के मंदिर में जाते हैं। त्र्यंबकेश्वर का विशाल मंदिर, कहते हैं, पेशवों के समय का बना हुआ है। यह सुंदर देवालय पूर्व-पश्चिम २७० फ़ीट और उत्तर-दक्षिण २१७ फ़ीट घेरे के कोट के मध्य में है। कोट के चारो ओर चार दरवाज़े हैं। बीच में काले पत्थर का अत्यंत सुंदर, कला-पूर्ण बना हुआ मंदिर है।

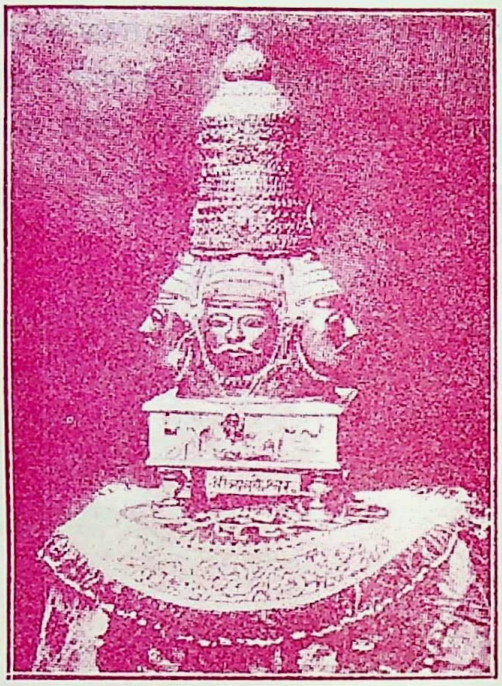

त्र्यंबकेश्वर का स्वर्ण-मुकुट

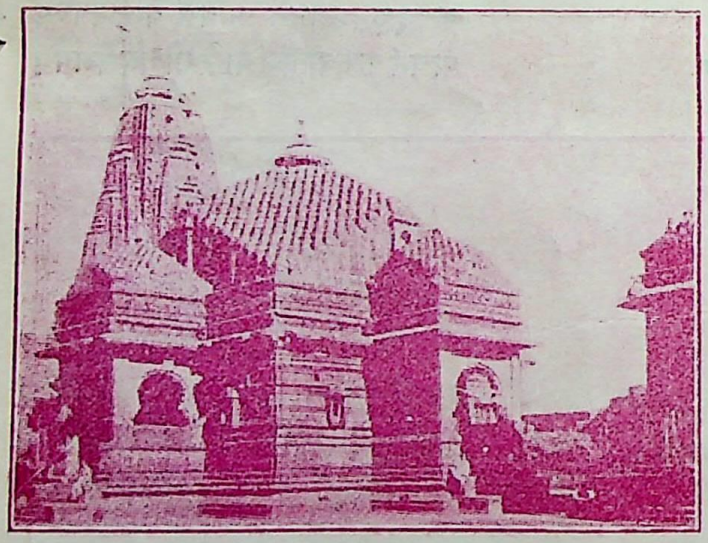

त्र्यंबकेश्वर का मंदिर

त्र्यंबकेश्वर का मंदिर

इसके शिखर की उँचाई ७५-८० फ़ीट से कम नहीं है। ऊपर की छत बहुत ही सुंदर है। मंदिर के सामने ही एक स्वतंत्र मंडप में शिव-वाहन नंदीगण विराज रहे हैं। मंदिर में प्रवेश करने पर पहले भव्य सभा-मंडप में पहुँचते हैं। इसे पार करके मुख्य शिखर के नीचे बने हुए शिवालय में जाते हैं। यह स्थान सभा-मंडप (जगमोहन) की भूमि से कुछ नीचा है—पाँच सीढ़ी उतरना पड़ता है। यहाँ एक छोटे कुंड में तीन छोटे शिव-लिंग हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु और शिव, तीनो देवों के प्रतीक माने जाते हैं। यह त्रिमूर्ति ही त्र्यंबक है। इनके ऊपर ब्रह्मगिरि से निकली हुई गौतमी (गोदावरी) की धारा अंदर से ही प्रकट होकर हर समय पड़ती रहती है। "त्र्यंबकं गौतमीतटे" ज्योतिर्लिंग यही है। शिवालय में केवल ब्राह्मण और संन्यासी ही पूर्ण शुचिता-पूर्वक जा सकते हैं। अन्य यात्रियों को सभा-मंडप से दर्शन करना पड़ता है। सोमवार की दोपहर को त्र्यंबकराज की सवारी निकलकर कुशावर्त पर जाती है। बड़ा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जमघट हो जाता है। बहुत सुंदर दृश्य होता है।

त्र्यंबकराज का पंचमुखी स्वर्ण-मुकुट बहुत सुंदर बना है। सोमवार को ही प्रधान पंडाजी के मकान पर शिवजी के रत्न-जटित मुकुट और आभूषणों के दर्शन कराए जाते हैं। जिनमें कई पांडवों के समय के बताते हैं। त्र्यंबकेश्वर के अन्य दर्शनीय स्थानों में भी कई उल्लेखनीय हैं—

ब्रह्मगिरि-पर्वत

यह अनुमानतः चार मील की चढ़ाई का पर्वत है। इसी के शिखर पर गौतम ऋषि ने तपस्या करके भगवान् शंकर को प्रसन्न किया था। यह स्थान समुद्र की सतह से ४,२४८ फ़ीट ऊँचा है। मार्ग में एक पक्की धर्मशाला और बावड़ी बनी है।

गंगा-द्वार

ब्रह्मगिरि के मध्य में, लेकिन उपर्युक्त मार्ग से एक मील बाज़ू में, सात सौ सीढ़ी चढ़कर जाना होता है। यहाँ गंगाजी ने गौतम ऋषि को पहलेपहल दर्शन दिया था। अब भी एक धार गोदावरीजी की पड़ती है। यही गोदावरी का मूल-स्थान है। इससे एक फ़र्लांग पर गोरखनाथजी की गुफा है। सीढ़ियाँ बहुत सुंदर बनी हैं।

नील-पर्वत

त्र्यंबक शहर से उत्तर में नील-पर्वत है। इस पर दत्तात्रेयजी की पादुका और भगवती नीलांबिका देवी का स्वयंभू स्थान है। ऊपर जाने के लिये दो सौ सीढ़ियाँ बनी हैं। इसके उत्तर पाद में बिल्वतीर्थ-नामक तालाब है। किसी समय यह सुंदर बँधा हुआ रहा होगा, अब तो फूट गया है। जल सुंदर और स्वास्थ्य-वर्द्धक है। इसमें कमल बहुत हैं। शहर में राम-मंदिर, श्रीकृष्ण-मंदिर, श्रीबल्लालेश्वर, श्रीबालाजी, लक्ष्मीनारायणजी आदि देवस्थान तथा सार्वजनिक वाचनालय, व्यायामशाला आदि संस्थाएँ देखने लायक़ हैं।

अंबरनाथ

अंबरनाथ का मंदिर कल्याण-जंक्शन से पूना-लाइन में ८ मील है। स्टेशन से मंदिर एक मील है। मंदिर काले पत्थर का बना हुआ प्राचीन है। ऊपर का शिखर गिर चुका है। अंदर एक गुफा बावड़ी के सदृश बनी है। २०-२५ सीढ़ी नीचे उतरकर शिवजी का मंदिर है। भगवान् शंकर सपरिवार विराज रहे हैं। मंदिर के ऊपर शिखर न रहने से गुफा में प्रकाश काफ़ी रहता है। जल के लिये नदी तो है, लेकिन गर्मियों में सूख जाती है। एक छोटा कुआँ है, उसी के जल से काम चल जाता है। एक धर्मशाला भी है। शिवरात्रि पर मेला लगता बताते हैं। एक माचिस का और दो अन्य कारखाने भी हैं।

लोनावला

कल्याण-पूना-लाइन में लोनावला का स्टेशन है। यहाँ बलबन का तालाब बहुत बड़ा है। इसी का जल एक पक्की बँधी हुई नहर द्वारा ले जाकर 'टाटा हायड्रो इलेक्ट्रिक वर्क्स' में काम में लाया जाता है। वर्षा १२५ इंच होती है। यह स्थान गर्मियों में भी ठंडा रहता है; अतः गर्मी के मौसम में बाहर के लोग भी स्वास्थ्य-सुधार के लिये यहाँ आ बसते हैं। बस्ती आधुनिक ढंग की है। बँगले अधिक हैं। प्रख्यात यौगिक शिक्षा देनेवाली संस्था 'कैवल्यधाम' का योगाश्रम भी यहीं है।

भीमाशंकर

"डाकिन्यां भीमशङ्करः" यह प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग है। लोनावला से १६ मील तलेगाँव-स्टेशन। वहाँ से मोटर द्वारा मंचर और मंचर से घोड़ा-गाँव। घोड़ा से भीमाशंकर जाने का मार्ग है। भगवान् शंकर ने त्रिपुरासुर को मारकर यहाँ विश्राम किया था। उस समय यहाँ अवध का भीमक-नामक राजा तप कर रहा था। भगवान् शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिया था। तभी से यह ज्योतिर्लिंग

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भीमाशंकर नाम से प्रख्यात हुआ। शिवजी की खास प्रतिमा से थोड़ा-थोड़ा जल झरता है। मंदिर के पास ही दो कुंड हैं, जिनको प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ नाना फड़नवीस ने बनवाया बताते हैं। यह सह्याद्रि पर्वत पर स्थित है। यहीं से भीमा नदी निकली है। भीमाशंकर जाने के लिये एक मार्ग नेरल-स्टेशन से भी है। इस मार्ग में दस मील तो बैल-गाड़ी जा सकती है, बाकी छ मील पहाड़ी रास्तों में पैदल चलना पड़ता है। पैदल का मार्ग बहुत मनोरम है।

पूना मूथा-नदी के दोनों किनारों पर बसा हुआ महाराष्ट्र देश का केंद्र और दक्षिण का प्रधान नगर है। इस मनोहर नगर को बहुत पहले से ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त है। पेशवों की राजधानी पूना ही थी। इतिहास-प्रसिद्ध, राजनीति-विशारद नाना फड़नवीस तथा स्वर्गीय लोकमान्य तिलक की जन्म-भूमि और क्रीड़ा-क्षेत्र पूना ही रहा। आज भी पूना विद्या और संस्कृति का केंद्र माना जाता है। पूना का विस्तृत वर्णन करने लगें, तो कई स्वतंत्र ग्रंथ इस एक ही शहर के वर्णन से भर जायँ। लेकिन हमारा विषय शहरों का वर्णन करना नहीं, यह तो बीच में आ गया है, और दक्षिण का केंद्र है, इसलिये प्रसंग-वश कुछ परिचय करा देते हैं।

पूना शहर अत्यंत रमणीक है। इसकी आबादी दो लाख से कुछ कम होगी। जल-वायु स्वास्थ्य-वर्द्धक है। विशेषतया जून से सितंबर तक का मौसम बहुत सुहावना रहता है। वर्षा असुमानतः २५-२७ इंच होती है। गर्मी अधिक नहीं पड़ती। इस वर्षा-काल में बंबई के गवर्नर भी यहीं आकर रहते हैं। शहर में कई कारखाने हैं। मिट्टी के सुतलों और ताँबे-पीतल के बर्तनों के लिये पूना प्रसिद्ध है। यहाँ कई दर्शनीय स्थान हैं। फर्ग्यूसन-कॉलेज और सर परशुरामभाऊ-कॉलेज आंग्ल विद्या के लिये विशेष सम्माननीय हैं।

डेकन कालेज में संस्कृत की उच्च शिक्षा दी जाती है। यहाँ संस्कृत के बड़े-बड़े विद्वान् हैं। यहाँ का भांडारकर-रिसर्च-इंस्टीट्यूट अपने विषय की अनूठी संस्था है। इसका प्राचीन ग्रंथ संग्रहालय बिलकुल तैयार है। सर भांडारकर के शोध, आविष्कार और प्रकाशन से कौन पढ़ा लिखा अनभिज्ञ है। वैदिक संशोधन-मंडल भी पूना की एक संस्था है। तिलक-स्मारक मंदिर में स्थित है। यह वेदों की भिन्न-भिन्न भाषा की प्राचीन प्रतियों का संग्रह करके उनमें से संशोधन करके शुद्ध, सर्वमान्य संस्करण प्रकाशित करना चाहते हैं। ऋग्वेद का एक भाग प्रकाशित भी हुआ है।

इतिहास-संशोधन-मंडल का कार्यालय भी देखने लायक है। अनेकों प्राचीन चित्र, पुस्तकें, सिक्के आदि वस्तुओं का संग्रह है। यह भारतवर्ष के इतिहास का संशोधित संस्करण प्रकाशित करना चाहते हैं। लेकिन इनसे बातचीत के सिलसिले में यह ज्ञात हुआ कि अब तक यह दक्षिण भारत का भी पूरा विवरण प्राप्त नहीं कर सके हैं। जब तक यह उदारता-पूर्वक सारे भारतवर्ष के इतिहास की खोज न करेंगे, तब तक हमें तो इनकी सफलता में शंका ही है। इनके संग्रह में नाना फड़नवीस के दो अंगरखे रक्खे हैं। ये भारत की प्राचीन कारीगरी का सच्चा इतिहास प्रकट करते हैं। एक मलमल का अँगरखा, जिसे नाना साहब घर में पहनते थे, काफी लंबा-चौड़ा है। इसका वज़न तीन तोले है। दूसरा कोट, जिसे पहनकर सवा साहब कचहरी जाते थे, (इसके दामन का घेरा साढ़े उंतालीस फीट है।) वज़न में केवल ढेढ़ सेर तोले है। इन्हें देखकर प्राचीन ऐतिहासिक बातों पर सहसा विश्वास हो जाता है। और चाँस की भोंगासी में मलमल का इतना बड़ा थान, जिससे अंगरखी सहित हाथी ढक जाता था, या गले में डालने का दुपट्टा इलायची के छिलके में बंद किया जा सकता था, मिथ्या किंवदंती ही नहीं, अटल सत्य है।

चित्रशाला-प्रेस लिथो की छपाई के लिये प्रसिद्ध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ही है। तुलसी-बाग़ का श्रीलक्ष्मीनारायण-मंदिर, बेल-बाग़ में श्रीरामचंद्रजी का मंदिर, सोमनाथ महादेव

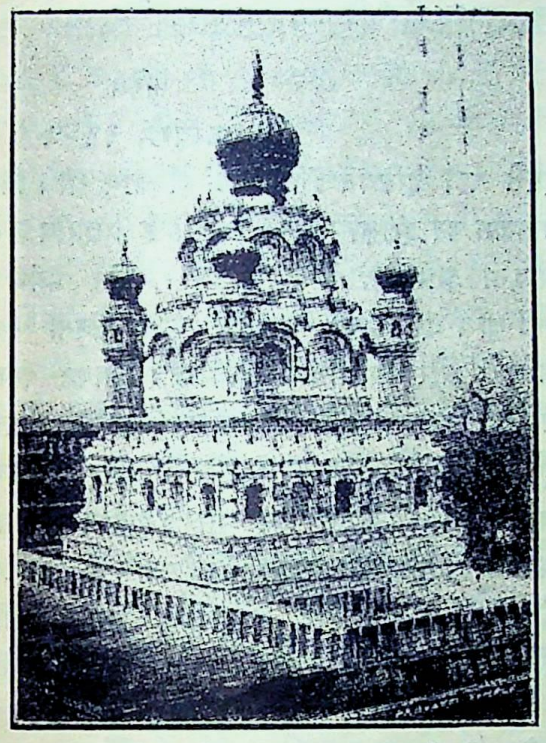

पार्वती-मंदिर (पूना)

आदि देवस्थानों के दर्शन अवश्य करना चाहिए।

पार्वती-पर्वत पर भगवती पार्वतीजी का दर्शन करके मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है। यह स्थान अत्यंत मनोहर है। पर्वत के ऊपर नल द्वारा पानी भी पहुँच गया है, धर्मशाला भी है। भगवान् शंकर, गणपति तथा स्वामी कार्त्तिकेय के अलग-अलग मंदिर हैं।

शिवाजी-स्मारक

पुल के पार एक सार्वजनिक बाग़ में छत्रपति शिवाजी का पुतला पूना की विशेष शोभा है। काले पाषाण की इस कला-पूर्ण बनी हुई प्रतिमा को देखकर यही विचार होता है कि छत्रपति शिवाजी आज भी हिंदुत्व की रक्षा के लिये तैयार खड़े हैं। कवि भूषण ने कहा भी है—

"शिवाजी न होतो, तो सुनत होती सबकी।"

इसके थोड़ा आगे, एक हरे-भरे बग़ीचे में, जंगली महाराज की समाधि है। यह कोई संत हो गए हैं; जिन्हें आज तक हिंदू और मुसलमान समान भक्ति-पूर्वक पूजते चले आ रहे हैं।

(क्रमशः)

लेसीविन

एक अत्यंत गुणकारी, उत्तेजक, पुष्टिकारक और खोई हुई शक्ति को पुनः वापस लानेवाली

टानिक

इसमें जौ, लेसीथीन और चिरायता के सत्त और विटामिन प्राप्य हैं।

बंगाल केमिकल—कलकत्ता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पेरिस से दूसरा विस्तृत पत्र

[डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

पेरिस

फ़रवरी, १९३५

यहाँ पिछले हफ़्ते अच्छा जाड़ा पड़ा। पहली बार अच्छी तरह बर्फ़ पड़ी, और फिर टेंपरेचर ज़ीरो के निकट रहने की वजह से दो-तीन दिन तक नहीं पिघली। सड़कों की बर्फ़ तो फ़ौरन् हटा दी जाती है, छतों और मकानों के किनारों पर अवश्य पड़ी रह जाती है। सुनते हैं, यहाँ (पेरिस में) ऐसे ही दो-चार दिन को तेज़ ठंड पड़ती है। फ़रवरी में शायद एक-दो बार ठंड बढ़ेगी, इसके बाद मार्च से मौसम बदलने लगेगा। २१ मार्च से यहाँ वसंत का आरंभ माना जाता है। ठंड की यहाँ धीरे-धीरे आदत हो जाती है। साधारणतया जाड़ों में यहाँ टेंपरेचर ४० फ़ा० के लगभग रहता है। 'लीडर' के अनुसार इलाहाबाद में आजकल ६० फ़ा० के लगभग टेंपरेचर है। ३२ फ़ा० पर बर्फ़ जमती है। ४० फ़ा० तक तो मुझे अब मालूम भी नहीं होता। ३२ फ़ा० के निकट का टेंपरेचर बाहर निकलने पर नाक-कान को ज़रूर तकलीफ़ देता है। बाहर कितना भी टेंपरेचर हो, मकान के अंदर कुछ पता नहीं चलता।

एक दिन मि० केसकर के साथ, मसनवी बर्फ़ के फ़ील्ड पर, पैरों में पहिए बाँधकर, हाकी के खेल का तमाशा देखने गया था। खेलनेवाले बहुत तेज़ी से रुककर दौड़ते हैं। हज़ारों आदमियों के बैठने का हॉल होगा। स्विटज़रलैंड और कनाडा में यह खेल स्वाभाविक है। यहाँ मसनवी ढंग से बर्फ़ जमाकर बंद हॉल में खेला जाता है। पिछले हफ़्ते यहाँ 'इंडियन इंस्टिट्यूट' में चाय थी। बिना तवालत का इंतज़ाम यहाँ रहता है। क़रीब १०० आदमी आमंत्रित थे। एक भी नौकर प्रबंध को नहीं था। एक मेज़ के पास कुछ स्त्रियाँ खड़ी हो गईं, और आमंत्रित लोग खुद जाकर अपना चाय का प्याला ले लेते थे, और मेज़ पर रक्खी हुई तश्तरियों से चुनकर, खाने की चीज़ें उठाकर खाते जाते थे। बैठने का भी इंतज़ाम न था। अपने यहाँ कुछ तो नक़ल हिंदोस्तान के अँगरेज़ों की हम लोग करते हैं, और कुछ पुरानी अमीरी की आदतें चल रही हैं।

जनवरी के पहले सप्ताह में एक दिन महाराज बड़ौदा से मिलने गया था। प्रो० लेवी ने उनसे मेरा ज़िक्र किया था, अतः उन्होंने मिलने की इच्छा प्रकट की, और मुझे तीसरे पहर चाय पर बुला भेजा। क़रीब डेढ़ घंटे बातचीत होती रही। प्रो० लेवी ने उनसे शायद दो बातों का ज़िक्र किया था—१. बड़ौदा में एक एकेडेमी या विद्यापीठ क़ायम करने का, तथा २. रियासत की ओर से योरप विद्यार्थी पढ़ने भेजने का। ज़्यादातर इन्हीं विषयों पर परामर्श होता रहा। भारत पहुँचने पर बड़ौदा आकर परिस्थिति का अध्ययन करने के लिये उन्होंने मुझसे अनुरोध किया है। हिंदी-उर्दू तथा हिंदी-गुजराती आदि के संबंध के विषय में भी बातचीत होती रही। महाराज बड़ौदा अब काफ़ी बुड्ढे हो गए हैं, लेकिन योरप की प्रथा के अनुसार बुढ़ापे को भुलाए रखना चाहते हैं। विचारों में भी बहुत

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ढीले हो गए हैं। कहते थे, भाषा का उद्देश्य विचार प्रकट करना है, जिस भी भाषा के द्वारा सुबीते से हो सके। उनकी समझ में उनकी रियासत में मराठी, गुजराती तथा हिंदी, ये तीन भाषाएँ व्यर्थ हैं। कहते थे, मैं तो गुजराती और मराठी को अभी हटा दूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि नासमझ जनता इसका विरोध करेगी, क्योंकि वह इस ऊँचे ख़याल को नहीं पहुँच सकती। उनके चारो तरफ़ जो आदमी थे, वे बिलकुल दरबारी ढंग के थे। एक अमेरिकन चतुर साहब भी थे, जो मुझसे बाद को बहुत देर बातचीत करते रहे। महाराजा बड़ौदा यहाँ अमीरीआरामतलबी की ज़िंदगी बसर करते हैं। यों व्यवहार तथा बातचीत में बहुत शिष्टता से पेश आए।

यहाँ (पेरिस में) आजकल चुंगी का चुनाव हो रहा है। मोहल्ले-मोहल्ले, जगह-जगह 'वार्डों' की तादाद के हिसाब से लकड़ी के बोर्ड लगा दिए गए हैं, जिन पर 'वार्डों' के नंबर पड़े हैं। अलग-अलग 'वार्डों' से खड़े होनेवाले लोगों के 'मैनीफ़ेस्टो' अपने-अपने बोर्डों पर लगे हैं। ये 'मैनीफ़ेस्टो' बड़े मनोरंजक हैं। एक पर फ़्रांस का नक़्शा है, और जर्मनी की फ़ौजें, तोपें, टैंक फ़्रांस की तरफ़ चले आ रहे हैं, और नीचे लिखा है, ऐसे आदमी को चुनकर भेजो, जो पेरिस की रक्षा को सर्वोपरि समझे। एक सज्जन चुने जाने पर स्त्रियों को वोट दिलाने के लिये लड़ने का वायदा करते हैं। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि फ़्रांस तथा योरप के कुछ अन्य छोटे देशों में अभी तक स्त्रियों को कौंसिल क्या, चुंगी तक में न वोट देने का अधिकार है, न चुनकर जाने का ही। बरसों से कोशिश हो रही है, लेकिन बहुमत इसके ख़िलाफ़ है। नई सभ्यता के संबंध में व्यवहार-रूप में योरप में काफ़ी मतभेद अभी तक चले जा रहे हैं। हमी लोग नक़ल करने में सबसे आगे हो जाते हैं।

इधर हाल में नेपोलियन के लगभग ३०० नए पत्र विलायत में मिले थे। यहाँ की सरकार ने उन्हें ख़रीद लिया है, और उनकी यहाँ प्रदर्शनी हो रही है। हज़ारों फ़्रांसीसी उन्हें बड़े चाव से देखने जाते हैं। राष्ट्रीयता क्या चीज़ है, यह यहाँ समझ में आता है। कल मैं भी देखने गया था।

मेरे 'फ़ोनटिक्स' के प्रोफ़ेसर ज़ेक (Czeko-Slovakian) हैं। आज दो-तीन घंटे उनसे बातचीत होती रही। अपने देश की स्वतंत्रता की कहानी सुनाते रहे। इस नाते भारत के साथ इन सबकी सहानुभूति है। पिछले हफ़्ते एक पोलैंड के विद्यार्थी के यहाँ चाय पर गया था। वह बड़े गौरव से अपने देश के उत्थान का हाल सुनाता था। कहता था, हमारा देश केवल १५ वर्ष से स्वतंत्र है, लेकिन देश की इतने ही समय में काया-पलट हो गई है। यहाँ इस तरह के बड़े रोचक अनुभव होते हैं।

योरप में रहने, खाने-पीने वग़ैरा की वैसी सफ़ाई क़रीब-क़रीब नामुमकिन है, जैसी अपने देश में होती है। हाँ, कोई अपना ख़ास इंतज़ाम करे, तो दूसरी बात है। नहाना सचमुच का हर इतवार को होता है, लेकिन फिर ख़ूब अच्छी तरह—बड़े टब में। कमरे में ठंडे और गरम पानी के नल हैं, अतः प्रायः नित्य ही शरीर अँगोछ लेता हूँ। १) नहाने के किराए के सिवा तबालत भी है। चार-पाँच मंज़िल उतरकर जाय, वहाँ चुंगी की नहाने की जगहें ।) आने तक की हैं। लेकिन जाड़े में बाहर नहाने जाना ठीक नहीं, क्योंकि गरम ग़ुसलख़ाने से बाहर ठंड में निकलना पड़ता है, और यह नुक़सान कर सकता है। खाने में मेरे रेस्टराँ में अब कोई कठिनाई नहीं होती ; बल्कि खाना मुँह लग गया है। दूसरे खाने की चीज़ों तथा उनके नामों की जानकारी हो जाने की वजह से अब चीज़ों के छाटने में दिक़्क़त नहीं पड़ती।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रेस्टराँवाले भी मेरे खाने को समझ गए हैं। चावल सादे अक्सर बनते हैं। उनके साथ आलू, मटर, मसूर की दाल या कोई साग मँगवा लिया। डबल रोटी रहती ही है। फिर और क्या चाहिए। बाद को डबल रोटी का एकआध टुकड़ा दही, शहद या मुरब्बे से खा लिया। सच तो यह है कि यहाँ का खाना तंदुरुस्ती के लिये बहुत अच्छा है।

अंडों से कभी-कभी खींच-तान हो जाती है। आज सुबह एक नए शाकाहारी रेस्टराँ में गया था। यहाँ एक तरह का बथुए का साग होता है, जो पेट साफ़ रखता है। मैंने एक तश्तरी साग मँगवाया। नौकरनी बहुत साफ़ तश्तरी में साग लाई, किंतु उसके ऊपर दो टुकड़े तराशे हुए अंडे के भी रख लाई। मैंने जब कहा कि अंडा मैं नहीं खाता, तो आँखें फाड़कर देखने लगी, और उन्हें हटाकर तश्तरी सामने रख दी। मैंने दूसरी तश्तरी लाने को कहा, तो बात उसकी समझ में बिलकुल नहीं आई। दुबारा वह बिना अंडे का साग लाई ज़रूर, लेकिन वहीं से अंडे के टुकड़े हटाकर ले आई, या कड़ाही से नया साग लाई, यह भगवान् जाने। साक्षात्रूप में तो अंडा ज़रूर नहीं खाया, लेकिन अनजाने कुछ अंश पेट में पहुँच गया हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। इन चीज़ों से अब मैं पहले की तरह डरता नहीं हूँ। वे अलग खुश रहें, मैं अलग खुश हूँ।

दुनिया में हलचल मचा देनेवाली अद्भुत पुस्तक

(आसामी, बंगाली, तिलस्मी राज़ या ख़ज़ाना करामात)

यह वही अद्भुत पुस्तक है, जिसने भारत के कोने-कोने में हलचल मचा दी है, और जिसका पहला संस्करण हज़ारों की तादाद में, ५) मूल्य होते हुए भी, हाथोंहाथ ख़त्म हो गया। पहले एडीशन पर हज़ारों आदमियों का यह कहना है कि यह पुस्तक नहीं, बल्कि नामर्दों को मर्द, बाँझों को संतान, रोगियों को नीरोग और हज़ारों प्राणियों को प्रतिवर्ष काल के मुख से बचानेवाली भारत के पूज्य महात्माओं की अद्भुत शक्ति का भंडार सचमुच (ख़ज़ाना चमत्कार) ही है। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश (आसाम), बंगाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण विद्या की अद्भुत लीलाएँ, जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं, बल्कि एक अद्भुत शक्ति का भंडार हाथ लगेगा, और इस विद्या की सचाई शीशे की तरह प्रकट हो जायगी। पुस्तक के बारे में हमारी गारंटी है। यदि किसी तरह आपको नापसंद हो, तो ३ दिन देखकर वापस कर सकते हैं। हम तुरंत मूल्य लौटा देंगे। इससे बढ़कर और क्या सचाई होगी। अब नए संस्करण में दर्सों अद्भुत वशीकरण आदि के परीक्षित, कभी न फ़ेल होनेवाले, प्रयोग बढ़ाए गए हैं। पृष्ठ-संख्या पहले से अधिक लगभग ६००। मूल्य वही ५), सजिल्द ।।।) अधिक और डाक-महसूल ।।।) अलग है। परंतु ऑर्डर के साथ पेशगी रुपया भेजनेवालों को महसूल माफ़ होता है।

नोट—अब की बार पुस्तक का सस्ता एडीशन भी निकाला गया है। मूल्य ३॥), सजिल्द ४॥); महसूल अलग है। ऑर्डर में सजिल्द व सस्ता एडीशन के बारे में स्पष्ट लिखें, जिसमें भूल न हो।

पता—मैनेजर इंडियन स्टोर्स (१६) जेनरल मर्चेंट ऐंड बैंकर्स
शीलांग (आसाम)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिंदी-साहित्य-सभा का उद्घाटनोत्सव

(साइंस-कॉलेज, नागपुर-विश्वविद्यालय)

[उद्घाटनोत्सव के अतिरिक्त कवि-सम्मेलन, वाद-विवाद भी हुए थे। बाईं ओर से बीच में प्रोफ़ेसर विद्याभास्कर शुक्ल, उनके बाद प्रिंसिपल डे और फिर सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव (उद्घाटनकर्ता) बैठे हैं।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar. Digitized by eGangotri

रेस्टराँवाले
सादे अक्सर

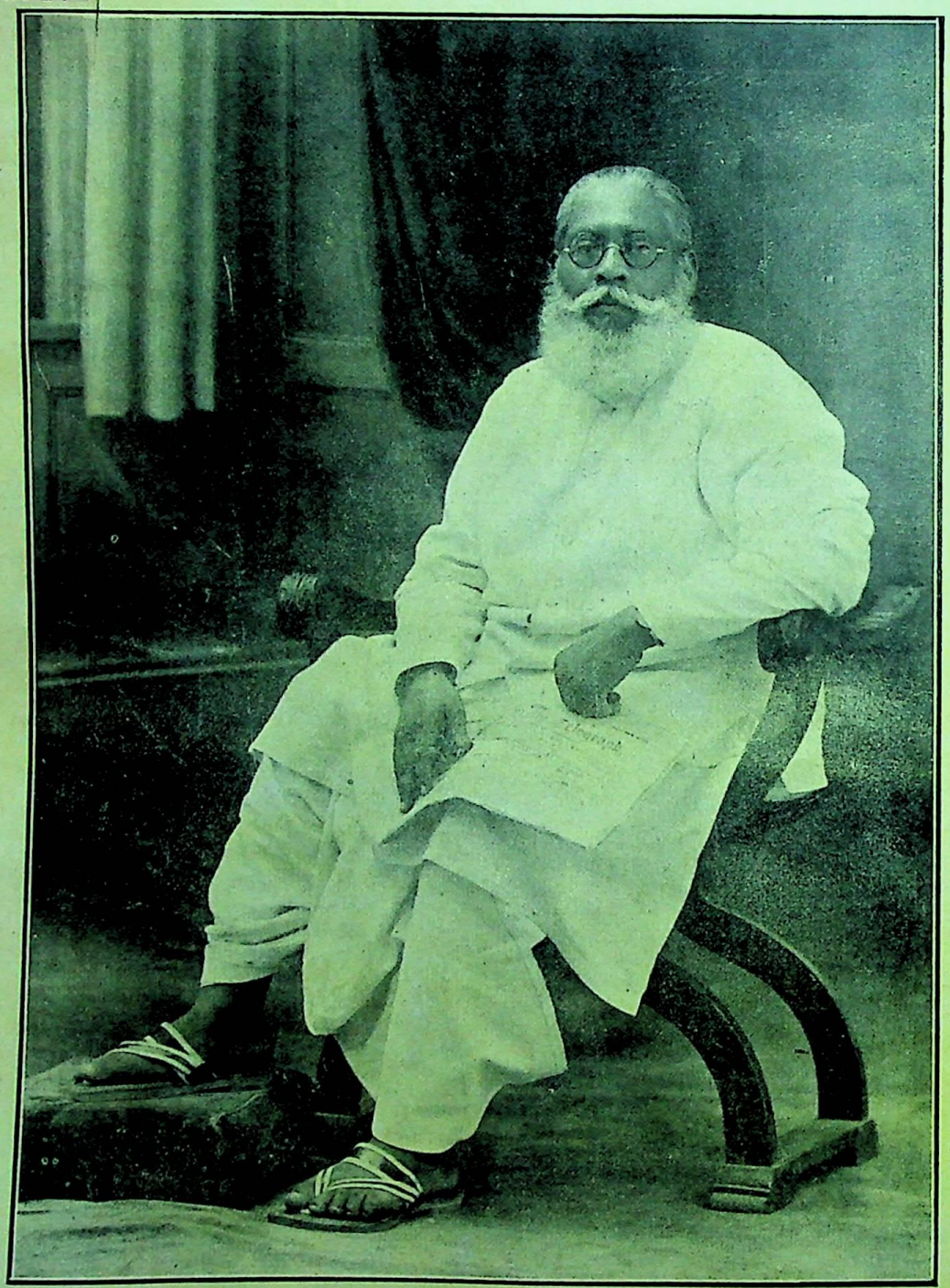

लक्ष्मी के स्वामी और सरस्वती के सेवक

बाबू शिवप्रसादजी गुप्त

[आप ही ने पवित्र नगरी काशी में भारत-माता के अपूर्व मंदिर का निर्माण करवाया है।]

गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नेपाल भूकंप में और भूकंप बाद

[लेफ़्टिनेंट श्रीयुत कमलबहादुर खत्री छत्री]

नेपाल की राजधानी काष्ठमंडप (काठमांडू) आजकल संसार-भर में प्रसिद्ध है। काठमांडू बहुत ही मनोहर जगह में स्थित है। इसकी उँचाई समुद्र-तल से ४७०० फ़ीट है। इसके पूर्व, क़रीब दो मील की दूरी पर, श्रीपशुपति प्रभु का मंदिर है। श्रीपशुपति और श्रीमाता गुह्यकाली-मंदिरवाले पहाड़ को चीरकर, पहाड़ से टकराती हुई, पुण्य-सलिला वागमती मधुर कलरव करती हुई राजेश्वरीघाट में फैल जाती है। नेपाल घाटी यानी पाटन, भक्तपुर (भातगाँव), काठमांडू एक दूसरे से सटे हुए हैं। इन शहरों के इलाक़े में २० मील लंबा और १४ मील चौड़ा साफ़ मैदान है। इसमें मोटर, घोड़ागाड़ी, साइकिल इत्यादि सब चल सकती हैं। समस्त नेपाल ५४०० वर्गमील है। घाटी की भूमि बहुत अच्छी होने के कारण धान, गेहूँ, जई, जौ तथा तरह-तरह की शाक-भाजी की अच्छी फ़स्ल होती है। राजधानी के चारों ओर सात-आठ हज़ार फ़ीट ऊँचा घने जंगल का मैदान पहाड़ों से परिवेष्टित है। इन पहाड़ों के पीछे, पूरब के कोने से पश्चिम के कोने तक फैले हुए, सफ़ेद, संसार-विख्यात मौंट एवरेस्ट (२९००२ फ़ीट), धवलागिरि (२६८२६ फ़ीट), कांचन-जंगा (२८१४६ फ़ीट)-जैसे विशाल हिम-गिरि भारत और मंगोलिया को अलग करके दोनों के बीच में अपना आतंक दिखाते हुए दुर्ग के समान दिखाई पड़ते हैं। अरुणोदय और संध्या के समय जब रवि का प्रकाश सुनहला-सा होकर संसार-भर में फैल जाता है, तो श्रीपशुपति प्रभु के मंदिर की सोने की छत और हिम-गिरि एक रंग के हो जाते हैं। सितंबर, ऑक्टोबर, फ़रवरी और मार्च के महीने में यहाँ प्राकृत सौंदर्य की प्रधानता रहती है। अनुपम छटा छाई रहती है। यहाँ का जल-वायु भी कुछ ऐसा चित्ताकर्षक हो जाता है कि मन अनायास ही प्रफुल्लित होने लगता है। यहाँ के उद्यान अनेक मनोमोहक सुरभित सुमनों से सुशोभित हो जाते हैं। यह दृश्य अनिर्वचनीय, अद्वितीय तथा कवियों के लिये अध्ययन और मनन करने योग्य है, एवं चित्रकारों के लिये हस्त-कौशल-प्रदर्शन की सामग्री। नेपाल के जल, वायु, पर्वत और आकाश से शांति फैलकर प्रत्येक मनुष्य के हृदय में आनंद-उमंग के पुष्प खिले रहते हैं। यहाँ के अन्न में भारी शक्ति, वायु में स्फूर्ति, ठंडे जल में वीरता और श्रीपशुपति प्रभु तथा श्रीगुह्यकाली माता की गोद में जन्म और वृद्धि होने के कारण गोर्खालियों का न्याय, धर्म, प्रेम और बहादुरी संसार-भर में विख्यात है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समय-समय में नेपाल पर ईस्ट इंडिया कंपनी, मुसलमान नवाबों और चीन-जैसे बड़े साम्राज्य ने भी कई बार आक्रमण किए, पर श्रीपशुपति प्रभु तथा श्रीगुह्यकाली माता के अनुग्रह से संख्या में अल्प होने पर भी गोर्खालियों ने कई बार अपना रण-कौशल दिखाकर दुश्मनों के दाँत खट्टे किए हैं। इस पवित्र भूमि में पर-राष्ट्र पैर नहीं रख पाया है। बीसवीं शताब्दी में हिंदू-धर्म का यही एक खंभा शेष रह गया है। इस पुण्य भूमि में गौ, ब्राह्मण, वेद और योगियों की पूजा होती रहती है। बाल-वृद्ध-अबलाओं की रक्षा होती है। अतिथि-सत्कार गोर्खाली अपना धर्म समझते हैं। एक मनुष्य बेपैसे, आदर-पूर्वक और मज़े में राज्य-भर की यात्रा कर सकता है।

विक्रम संवत् १९९० में माघ २ गते (ईस्वी १९३४ जनवरी १५) का दिन था। टावर-क्लॉक की सुई तेज़ी से ढाई बजा रही थी। संगीत के साथ-साथ दो कार्टर की टंकार आज इसने कोसों दूर सुनाई। शायद यह इसका अंतिम बार सुनाना था! तुंडीखेल क़वायद-मैदान में बैंड बज रहा था। उसी बाजे की ताल में क़वायद चल रही थी। लड़के अपने-अपने खेल में रमे हुए थे। पंडित पढ़ा रहे थे। व्यापारी व्यापार में मस्त थे। प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी दिनचर्या में लग रहे थे। सड़क पर बहती हुई नदी की तरह मनुष्य अपनी-अपनी सवारी पर चल रहे थे। अकस्मात् माता सर्पसहा काँप उठी, प्रलयंकरी तांडव नृत्य दिखाने लगी। चारो ओर से भयानक करुण-क्रंदन सहसा गूँज उठा। इमारतें धड़ाधड़ गिरने लगीं। धूलि के कारण एक दूसरे को कठिनता से देख पाता था। गगन-मंडल में घोर अंधकार छा रहा था। वह दृश्य कैसा भीषण था! किसी को भी सुध-बुध नहीं थी, यदि थी, तो अपने ही प्राण की। दारुण भय होने के कारण धर्म-भीरु भक्त लोगों का तो कहना ही क्या, नास्तिक भी भगवन्नाम का ढिंढोरा पिटवा रहे थे। परम कृपालु श्रीपशुपति प्रभु तथा श्रीमाता गुह्यकाली ने सबकी फ़रियाद सुन ली। थोड़ी ही देर में भूकंप की आँधी रुक गई। अब सब लोगों को याद आने लगी—"मेरी मा, बाप, धन, घर, इष्ट-मित्र किधर होंगे।" फ़ौजी सिपाही और अफ़सरों के मन में भी वैसी ही आग जल रही थी। पर शिक्षित सिपाही थे, अपना कर्तव्य भली भाँति जानते थे, अपना धैर्य ख़ूब सँभाल रक्खा। थोड़ी ही देर में वर्तमान कमांडर-इन-चीफ़ पद्मशमशेर जंगबहादुर राणा साहब (तत्कालीन सीनियर कमांडिंग जनरल) अपनी सेनाओं को अच्छी तरह समझाकर कहने लगे—"भाइयो, आज नेपाल पर महान् संकट आ पड़ा है। ऐसी दुर्घटना के समय काम करना मनुष्य-मात्र का कर्तव्य है, पर सबसे बढ़कर सिपाहियों का। अब तुम लोगों को, जहाँ-जहाँ ऑर्डर हो, वहाँ जाकर काम करना होगा।" बस, शिक्षित सिपाहियों को इतना यथेष्ट था। ऑर्डर के अनुसार सिपाही निर्दिष्ट स्थानों को चल पड़े। बहुत-सी फ़ौज को खँडहर में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पड़े हुए जीवित मनुष्यों के निकालने का हुक्म मिला। बाज़ार और घर सब ज़मीन में मिल रहे थे। कितने ही प्राणी ग़ायब थे। देखकर हृदय काँप उठता था!

इस दुर्घटना के समय नेपाल के भाग्य-विधाता वर्तमान महाराजा युद्धशमशेर जंग-बहादुर राणा साहब नेपाल-तराई में काली नदी के तट पर सहस्र गो-दान और पश्चिमी तराई का सुधार करने के लिये पधारे थे। दुर्घटना का समाचार सुनते ही महाराजा साहब काठमांडू की ओर चल पड़े। रास्ता ख़राब था, इससे बहुत समय लग गया। माघ २२ में तुंडीखेल (क़वायद करने का मैदान) में जंगी पोशाक पहने हुए, सफ़ेद अरबी घोड़े पर सवार, आगे-पीछे स्टॉफ़-आफ़िसर और रिसालों के बीच में महाराज की सवारी पहुँची। इस मैदान में अगणित मनुष्य अपना दुख सुनाने को एकत्र थे। महाराजा साहब को देखते ही सहस्रों कंठों ने स्वागत-गुंजन किया। महाराजा साहब अपने धैर्य से तनिक भी विचलित न हुए। उन्होंने सब लोगों को आश्वासन देते हुए आदेश किया—"सज्जनो, बीती हुई प्राकृतिक दुर्घटना पर शोक मत करो। ऐसी दुर्घटना माता अनंता की गोद में होती ही रहती है। यथासाध्य दुःख दूर करने की कोशिश की जायगी। धन-जन से परिपूर्ण वैसा ही नेपाल बनाने का प्रयत्न किया जायगा। सर्वशक्तिमान् परमात्मा पर अटल विश्वास कर धर्म में सदा प्रवृत्त रहो। इससे जय होती है। मैंने काली-नदी में सहस्र गो-दान किया है। उसका फल तुम्हीं लोगों को मिलेगा। अब हताश मत हो, धैर्य-पूर्वक काम करो। मेरी तरफ़ से सब तरह की मदद मिलेगी।" लाखों कंठों ने जय-ध्वनि की।

भूकंप-पीड़ितों के लिये सरकार की ओर से सब चीज़ों का अच्छा प्रबंध था। इसके दूसरे-तीसरे दिन से ही शहर-शहर, गाँव-गाँव गिरे हुए मकान, ईंटों-पत्थरों के नीचे पड़े हुए मृत मनुष्य, धन, अन्न आदि निकालने के लिये फ़ौजी सिपाही रक्खे गए। जंगी क़ानून (Martial Law) जारी किया गया। रात्रि में बाहर कोई भी नहीं जा सकता था। यदि कार्य-विशेष से कोई जाता भी था, तो सभी गलियों और सड़कों पर संतरियों का सशस्त्र पहरा था। उनके तीन बार बुलाने पर बोलना पड़ता था। यदि न बोला, या चोरी करते दिखाई पड़ा, तो उसके ऊपर गोली चलाने का ऑर्डर था। इसीलिये गिरी-पड़ी चीज़ को भी उठाने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता था। इसी समय अनाज का भाव भी चढ़ गया। सरकार ने यह देखते ही भूकंप के पहलेवाले भाव में ही बिक्री करने के लिये ऑर्डर दिया। यह सुनकर क्षुद्र व्यापारियों ने अनाज दबाना शुरू कर दिया। तब सरकार की तरफ़ से लाखों रुपए का अनाज ख़रीदा गया। बाज़ारी भाव से भी सस्ते मूल्य पर बिक्री करने और कराने के लिये जंगी ऑफ़िसर और सिपाही गोदाम-गोदाम, दूकान-दूकान पर रहने लगे। यही नहीं, स्वयं कमांडर-इन-चीफ़

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पद्मशमशेर जंगबहादुर राणा साहब महल से दूध ला-लाकर ग़रीबों के बाल-बच्चों को अपने हाथ से प्रेम-पूर्वक पिलाते थे। या यों कहिए, यह समय था राम-राज्य का।

नेपाल के गाँव-गाँव में प्रायः ईंट, पत्थर और लकड़ी के बने हुए पक्के घर होते हैं। इन खँडहरों में दबकर कितने ही आदमी मृत्यु के शिकार हो गए थे। जो बचे थे, उनमें अस्सी फ़ीसदी तो भयानक घाव की चोट से अधमरे-से पड़े हुए थे। इनके लिये डॉक्टरी चिकित्सा की आवश्यकता थी। तीसरे-चौथे दिन से ही जंगी सामान रखने के भांडार (Mobilising Store) से दवाई के बैग तथा स्ट्रेचर आदि आवश्यकीय वस्तुएँ निकालीं गईं, और मेजर जनरल ब्रह्मशमशेर जंगबहादुर राणा साहब की अध्यक्षता में प्रथम सहायता शिक्षित सिपाहियों की दी गई। आपने उन लोगों को क्षिति-ग्रस्त गाँवों में रख दिया, और जहाँ की दशा अति शोचनीय थी, वहाँ स्वयं जाकर ग़रीब किसानों के सड़े हुए घाव अपने ही हाथों से साफ़ करके उनकी मरहम-पट्टी करते थे। दुःसाध्य बीमारों को मोटर द्वारा भेजकर हॉस्पिटल में भर्ती कराते थे। आपका ऐसा तन-तोड़ परिश्रम देखकर प्रत्येक मानव-हृदय में इसकी ओर और भी दुगुना उत्साह बढ़ जाता था। आपके अनवरत परिश्रम के कारण एक आदमी भी बिगड़ नहीं पाया।

उधर जिन-जिन लोगों के अन्न, धन, पिता, माता भूकंप के ग्रास हो गए थे, ऐसे भिखमंगे बाल-बच्चों के लिये महाराजा साहब के बेटे गाँव-गाँव, शहर-शहर देख-भाल करने के लिये भेज दिए गए। आप लोगों ने उन ग़रीबों के प्रति कई वर्णनातीत कष्ट-साध्य काम किए। अपनी ओर से एक-एक महीने तक का सामान—चावल, दाल, घी, कंबल—दे दिया करते थे। यह नियम महीनों जारी रक्खा गया।

महाराजा साहब इधर भूकंप-पीड़ितोद्धारक संस्था स्थापित करके इसमें तन-मन लगा रहे हैं। इसके प्रबंध के लिये बहुत-सा रुपया रख दिया गया। ग़रीबों को कई लाख रुपए बाँटे गए। ईंट, लकड़ी और आवश्यक सामान सस्ते मूल्य पर सरकार की ओर से दिया गया। गाँव के लोगों के लिये सरकारी जंगल मफ़्त में खोल दिया गया।

उपर्युक्त घटना के पंद्रह महीने बाद आज नया नेपाल हो गया है। पुराना घर आज नया हो रहा है। बहुतेरे लोग ऐसे थे, जिनके एक ही घर में चार परिवार मुश्किल से रहा करते थे, आज सरकारी जगह तथा आवश्यकीय सामान मुफ़्त मिलने से उनके चार घर बन गए। सड़कें नए क़िस्म की पक्की और फ़ुट-बोर्ड रखकर बन रही हैं। कलकत्ते की तरह नई बाजार वैज्ञानिक ढंग से बन रही है।

बहुत-से घर बढ़ जाने और बिजली का उपयोग अधिक होने के कारण पुरानी बिजली की शक्ति कम हो रही थी। वर्तमान महाराजा ने नया पावर-हाउस बनवाकर अब बीसों बरस के लिये बिजली का अच्छा प्रबंध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्रियोपयोगी सर्वोत्तम उपन्यास

कमला-कुसुम

[लेखिका—श्रीमती गिरिजादेवी]

(सचित्र)

शीघ्र मँगाइए

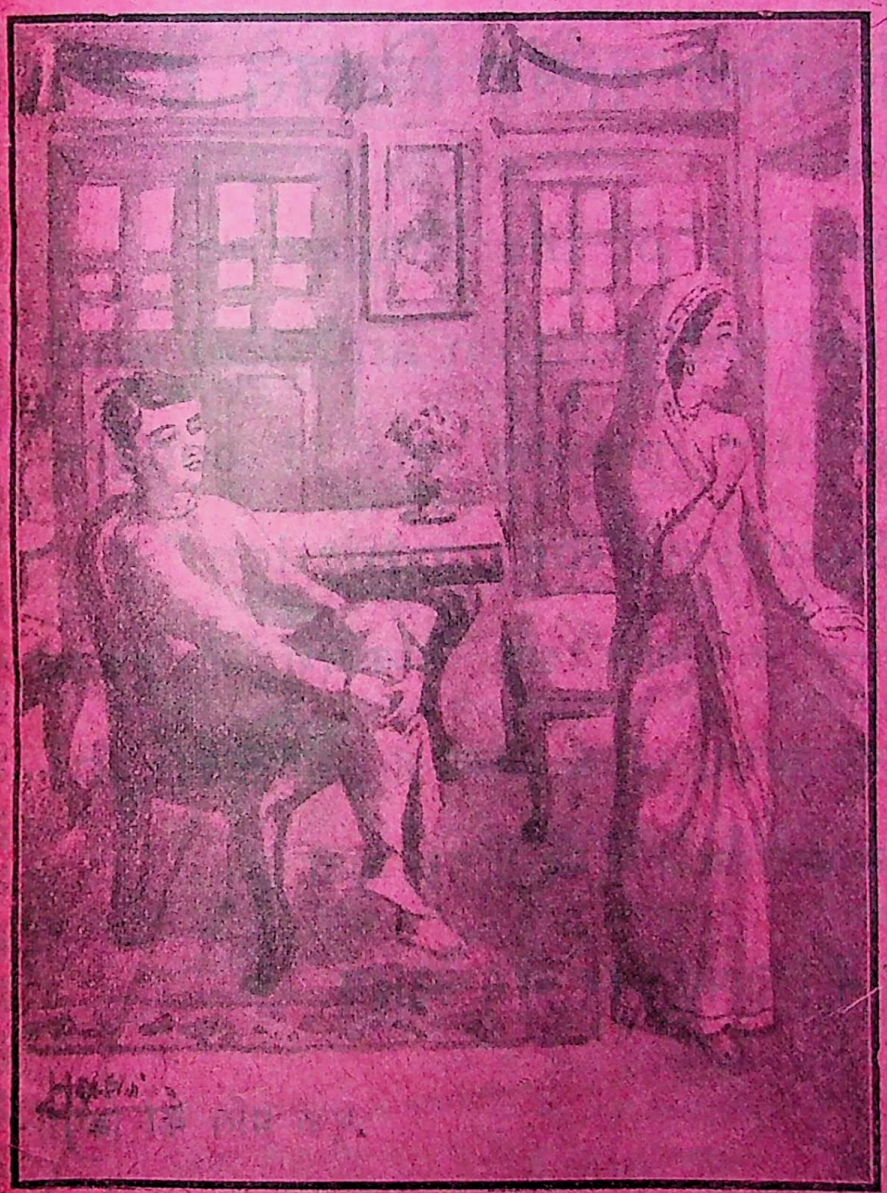

सावित्री और दमयंती भारत में चाहे फिर जन्म न लें, लेकिन उन्होंने सतीत्व के जो आदर्श स्थापित कर दिए हैं, उनके सामने भारत के स्त्री और पुरुष अभी तक आदर और भक्ति से सिर झुकाते हैं। इस पुस्तक में उसी सतीत्व का मर्मस्पर्शी चित्र खींचा गया है। देश और काल में परिवर्तन हो गया है, पर भाव वही है। कुसुम का निस्स्वार्थ पति-प्रेम देखकर किस रमणी का हृदय न नाच उठेगा! कमला के चरित्र में नई शिक्षा का कुछ असर आ गया है। उसने अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरे पुरुष से विवाह न करके घर से निकल जाना ही उत्तम समझा है। लेकिन वह वही असर है, जो हम अपनी युवतियों में देखना चाहते हैं। जब कुसुम को मालूम होता है कि कृष्णकांत कमला से प्रेम करते हैं, तो वह अपनी क़िस्मत को रोती नहीं, उसे अपने पति से सच्ची सहानुभूति हो जाती है। वह योगिनी बनकर कमला की खोज में निकलती और अंत में उसे खोज लाती है। जब कमला और कृष्णकांत का विवाह हो रहा है, तो वह आती है, और दोनो के गलों में फूलों की माला डालकर तुरंत चली जाती है। कितनी अलौकिक पति-भक्ति है! पढ़कर जी फड़क उठता है। पुस्तक में कई एक सादे और रंगीन चित्र भी दिए गए हैं, जिससे पुस्तक और भी चित्ताकर्षक बन गई है। एक बार प्रारंभ कर फिर बिना ख़त्म किए जी नहीं मानता। पुस्तक का मूल्य है केवल ॥=); सजिल्द १=)

मिलने का पता—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'वीणा' क्यों पढ़ना चाहिए?

क्योंकि संत निहालसिंह लिखते हैं—

"I like the copy of the magazine..... The articles are well-written and deal with topics that greatly interest me. I congratulate your Samiti on the production."

'वीणा' मध्यभारत, राजपूताना और मध्यप्रदेश की एकमात्र उच्च कोटि की साहित्यिक सचित्र मासिक पत्रिका है। गरीबों की झोपड़ियों से लेकर राजा-महाराजाओं के महलों तक जाती है।

वीणा में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए

वार्षिक मूल्य ४) एक प्रति का ।=)॥

नमूने का अंक मुफ़्त नहीं भेजा जाता।

व्यवस्थापक 'वीणा', वीणा-बिल्डिंग्स, इंदौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारत के लक़वा, फ़ालिज, गठिया, अर्द्धांग वातवाले,

अस्सी तरह के वात-रोगों से पीड़ित लोगो !

कान खोलकर सुन लो ! आँखें खोलकर पढ़ लो !!

सत्य ही धर्म है, सत्य ही स्वयं ईश्वर है।

एकमात्र, परोपकार-पुण्य-संचय के लिये,

छोटे से राजेंद्रकुमार को

ग़रीब-दुखियों के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये,

चालीस साल का संसार-प्रसिद्ध

असली नारायण तैल

आगामी ३० मार्च सन् ३७ तक

आधी क़ीमत में मिलेगा

ऐसा अलभ्य अवसर जीवन में फिर नहीं मिलेगा !

इस मौक़े पर चूकनेवाले ज़िंदगी-भर पछताएँगे।

अनेक अक़्ल के दुश्मन

ऐसा भी समझते हैं कि जिस तेल की क़ीमत १२ से ६) रुपया सेर कर दी है वह असली न होगा। उन्हें दिमाग़ का भूसा निकालकर सोचना चाहिए कि अगर हम अब ख़राब तेल या कोई भी दवा निकम्मी देंगे, तो इतनी हानियाँ होंगी—

(१) हमारी फ़र्म पर से ४० साल का जमा हुआ विश्वास उठ जायगा।

(२) हमारा रोज़गार सदा के लिये नाश हो जायगा।

(३) लाखों ग़रीबों की आहों से हमारा सत्यानास हो जायगा। अगर चार महीने में हमें लाख-पचास हज़ार का घाटा भी हो जायगा, तो आगे हम, पूरी क़ीमत के समय, चौगुना कमा लेंगे।

फिर कहते हैं, वात-रोग-पीड़ित ग़रीबो ! मत चूको।

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, गली रावलिया, मथुरा,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

वास्तविक सौंदर्य चाहते या चाहती हो, तो

राज ज़ीनत पिल्ज़ का सेवन कीजिए

सब क्रीम, स्नो, पाउडर बेकार हो जाते हैं, यदि मनुष्य के शरीर में रक्त कम हो, ख़राब हो, पीला हो, सफ़ेद हो, या शरीर में किसी कारण निर्बलता आ गई हो। हमने श्रीमान पंडित ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य (आविष्कारक अमृतधारा) की संरक्षता में टॉयलेट का कारख़ाना जारी किया, तो पंडितजी ने अपने विशेष अनुभूत प्रयोगों से हमें 'राज ज़ीनत बटी' का एक अद्भुत प्रयोग दिया, जिससे हर स्त्री-पुरुष वास्तव में सुंदर बन सकता है।

निम्न-लिखित गुण हैं—

(१) रक्त शुद्ध करती, उत्पन्न करती और लाल करके चेहरे पर लाली लाती हैं, और रक्त-विकार से उत्पन्न हुई फुंसी, झाईं, दाग़, मुँहासा, बालझड़ आदि को दूर करती हैं।

(२) किसी कारण से निर्बलता हो या किसी रोग से उठे हों, तो बहुत शीघ्र फिर शरीर के भीतर बल तथा स्फूर्ति भरती हैं। ये गोलियाँ जनरल टॉनिक हैं, और जनरल डिबीलिटी, निर्बलता, सुस्ती को दूर करती हैं।

(३) स्त्री तथा पुरुष दोनों सेवन कर सकते हैं, और दोनों की शक्ति बढ़ाती हैं, तथा यौवन स्थिर रखती हैं। बूढ़ों में यौवन की उमंगें भरती हैं, पुरुषों के प्रमेह, स्वप्नदोष, सुस्ती-रोग दूर होते हैं। स्त्रियों के श्वेत प्रदर (श्वेत पानी) आदि को हितकर हैं। इन रोगों के वास्ते भटकने की आवश्यकता नहीं। विश्वास-पूर्वक सेवन कीजिए।

(४) खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, कटि-पीड़ा, कमर की निर्बलता, स्थायी सिर-पीड़ा, मस्तिष्क की निर्बलता, वातज, क़ब्ज़ रोगों को भी दूर करती हैं।

(५) इनसे पाचन-शक्ति तीव्र होती है। खाया-पिया शरीर में लगता है। हर प्रकार की शक्तियाँ बढ़ती हैं। कोष्ठबद्धता नहीं रहती है, शरीर फ़र्तीला होता है। प्रतिदिन प्रातः दो गोली दूध, चाय, छाछ, शर्बत आदि के साथ खानी चाहिए। सेवन-विधि-पत्र साथ होगा। मूल्य २८ गोली एक रुपया। सेवन कीजिए, और ज़िंदगी का मज़ा उठाइए।

ज़ीनत टूथ पाउडर	राज-स्नो	राज-डेपिलेटरी पाउडर	राज-कोल्ड क्रीम	राज-टूथ-पाउडर
यह देशी अति लाभदायक द्रवों का संग्रह है। दाँतों और मसूड़ों के लिये अद्वितीय वस्तु है। पायोरिया का निश्चित इलाज है। मूल्य प्रति शीशी ॥)	घर से बाहर निकलते समय इसे लगाना न भूलिए। मूल्य प्रति शीशी ।॥)	अर्थात् बाल उड़ाने का पाउडर। मूल्य ॥) नमूना =)	चमड़ी की रक्षा करती है। सुंदरता बढ़ाने में उत्तम है। चेहरे में पड़ी हुई झुर्रियाँ भी इससे दूर होती हैं। मूल्य ।॥)	यह सफ़ेद रंग और विलायती ढंग का मंजन है, जो दाँतों को साफ़ करने और रोगों को दूर करने में अति उत्तम है। मूल्य प्रति शीशी ।=)

ज़ीनत उबटन मूल्य १)

ज़ीनत हेयर आयल मूल्य ॥।)

राज ज़ीनत हेयर फ़िक्सिंग क्रीम मूल्य ॥)

ज़ीनत हेयर लाशन इत्यादि १)

आवश्यकतानुसार वस्तुएँ मँगवाइए, इस्तेमाल करके प्रसन्न होइए, और हमारे परिश्रम का गुण-गान कीजिए।

मैनेजर राज ज़ीनत वर्क्स, नं० ८, राजभवन, ऐबट रोड, लखनऊ

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला बनारस
मुक़द्दमा नंबर १६६ सन् १९३९ ई०
तारीख़ पेशी ८—३—१९३७ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

१—सूरजसिंह वल्द बुद्धसिंह
२—गोविंदसिंह } पिसरान रामेश्वरसिंह
३—सतनारायणसिंह
४—परागीसिंह } पिसरान गोविंदसिंह
५—प्रभूसिंह
६—रामचंद्रसिंह } पिसरान सतनारायणसिंह
७—कामतासिंह
८—कपिलदेवसिंह नाबालिग़ वल्द सूरजसिंह बविलायत सूरजसिंह

अक़वाम क्षत्री साकिन भौजा बगहा कुरहापुर परगना नरवन ज़िला बनारस

सायलान ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् ३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिग्री किए हुए निजके क़र्ज़ों के मुतालिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुतालिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिनके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिग्रीशुदा या ग़ैरडिग्रीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अग़राज़ व मौक़ाज़ात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला लखनऊ
मुक़द्दमा नं० ११५ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १७ फ़रवरी सन् १९३७ ई०
रामपालसिंह वल्द दुर्गासिंह कौम साकिन ननदौली परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ

सायल

बनाम

१—लाला अयोध्यानाथ साहब तालुक़ेदार मौरावाँ ज़िला उन्नाव
२—चंद्रिकाप्रसाद ब्राह्मण साकिन हलौली परगना निगोहाँ तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ
३—शिवग़ुलाम कलवार } साकिनान कालो करौंदी परगना व तहसील मोहनलालगंज
४—कुँवरसिंह वल्द बैजनाथसिंह } ज़िला लखनऊ
५—जंगलीसिंह वल्द महिपालसिंह साकिन कौम ठाकुर परगना बछरावाँ ज़िला रायबरेली
६—बहादुर कुर्मी साकिन मैरोपुर मज़रा मीरकनगर परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ
७—सर राजा रामपालसिंह साहब तालुक़ेदार कुर्री सुदौली ज़िला रायबरेली

फ़रीक़सानियान

हरगाह मुसम्मी रामपालसिंह सायल ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बज़रिए जनाब कलेक्टर साहब बहादुर लखनऊ गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिग्रीशुदा या ग़ैरडिग्रीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख़्वास्त दिहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो वह अंदर तीन माह आज तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट में अपना बयान तहरीरी मिसबत अपने क़र्ज़े के मय जुमला ज़रूरी काग़ज़ात सबूत दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी क़र्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख़ ११ नवंबर १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसरिम

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर सर्कंड ग्रेड मुकाम व जिला शाहजहाँपुर

मुक़द्दमा नंबर १६३ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १७ एप्रिल सन् १९३७ ई०

१—करोरीलाल वल्द सुंदरलाल
२—जगतनारायण
३—रामनारायण
४—महेशनारायण
} नाबालिगान पिसरान करोरीलाल अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मोहल्ला फतेहपुर रैती जिला शाहजहाँपुर सायलान

बनाम

१—लाला सुंदरलाल वल्द लाला श्यामलाल कौम अग्रवाल साकिन मोहल्ला चौकसी जिला शाहजहाँपुर
२—लाला निवलकिशोर वल्द लाला राधाकृष्ण कौम अग्रवाल मोहल्ला दिलावरगंज जिला शाहजहाँपुर
३—बंशीधर वल्द लालमन कौम वैश्य साकिन शाहजहाँपुर हालवारिद रामा साइकिल स्टोर फैजाबाद
४—राधेश्याम
५—नन्हू काई
} नाबालिगान पिसरान पं० लक्ष्मीनारायण मुतवफ़्फ़ी बविलायत मु० गंगा मादर सु० साकिन मोहल्ला फतेहपुर रैती जिला शाहजहाँपुर
६—रामेश्वरदयाल
७—हृदयनारायण
८—गंगाधर
} पिसरान प्यारेलाल कौम ब्राह्मण साकिन मौजा कौड़ियाकलाँ परगना कांट जिला शाहजहाँपुर
९—छोटेलाल वल्द सुंदरलाल
१०—हरद्वारीलाल नाबालिग बविलायत छोटेलाल पिदर खुद
} अक़वाम ब्राह्मण साकिन मोहल्ला फतेहपुर रैती जिला शाहजहाँपुर
११—बच्चूसिंह वल्द पुहुपसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा कौड़ियाकलाँ परगना कांट जिला शाहजहाँपुर
१२—संकठासहाय वल्द बलदेवप्रसाद कौम ब्राह्मण साकिन मौजा कौड़ियाकलाँ परगना कांट जिला शाहजहाँपुर
१३—लछमनसिंह वल्द भिम्मासिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा केशवपुर परगना पिछोहा जिला हरदोई फरीकसानियान

हरगाह करोरीलाल वग़ैरह सायलान ने दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाजा में बजरिए जनाब कलेक्टर साहब बहादुर शाहजहाँपुर गुजरानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाखिल कर दिया है। लिहाजा-जुमला अशखास कि जिनका कर्ज डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा मुतजिकरेबाला दरख़्वास्त देहंदा की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह अज तारीख शाया होने नोटिस गजट अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने कर्ज के दाखिल करें, वरना कोई उज्र बाद में काबिल समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाजिरी कर्जख्वाहान मसमू और फैसल होगी।

आज बतारीख १२ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

समन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा (ऑर्डर ५, क़ायदा १, ५)

नं० मुक़द्दमा १४५१ सन् १९३६ ई०

बअदालत जनाब मिस्टर हरनाथप्रसाद साहब मुंसिफ़, जज ख़फ़ीफ़ा फ़तेहाबाद मुकाम आगरा

हाजीमोहम्मद अबूसईद वल्द मोहम्मदअब्दुलमजीद क़ौम शेख़ साकिन फ़ीरोज़ाबाद जिला आगरा मुद्दई

बनाम

शेख़ अब्दुलसलाम मालिक फ़र्म एस० ए० सलाम ऐंड को० नं० ४० कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत १०७)॥ के दायर की है, लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख़ ६ माह फ़रवरी सन् १९३७ ई० बवक़्त दस बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से वाकई वाकिफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हों और जवाबदिही दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़ जो आपके इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल कतई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है, पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को, जिनकी शहादत पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात को जिन पर आप अपनी जवाबदेही की ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

बसञ्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख ४ माह जनवरी सन् १९३७ ई० जारी किया गया।

जज

दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ यू० पी० इनकंबर्ड इस्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दायम ज़िला परतापगढ़
मुक़दमा नं० २२१ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २५—२—३७ ई०
रामदुलारे वग़ैरह साकिन हरई पट्टी तहसील पट्टी ज़िला परतापगढ़
हरगाह मुसम्मे रामदुलारे वग़ैरा ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बजरिए जनाब डिप्टी-कमिश्नर साहब बहादुर खीरी गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख़्वास्त दिहंदा की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह अज़ तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान मसमू और फैसल होगी।

आज बतारीख २१ ऑक्टोबर १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

सम्मन बिनावर तनक़ीह मुक़दमा
(ऑर्डर ५, क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़दमा ५०८ सन् १९३६ ई०
बअदालत जनाब एडीशनल मुंसिफ़ साहब बहादुर ज़िला बनारस
जरीबंधन वल्द रामदीन क़ौम अहीर साकिन मौज़ा गौहाई परगना कुसीवार राजा ज़िला बनारस मुद्दई

बनाम

विश्वनाथ वल्द गनपत हज्जाम साकिन खेमापूर परगना कुसीवार राजा ज़िला बनारस मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत हिस्सा रसदी के दायर की है, लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ८ माह फ़रवरी सन् १९३७ ई० बवक़्त १० बजे दिन के हाज़िर हो और जवाबदेही दावा मुद्दई मज़कूर की करो, और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमे के तजवीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाबदावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत या दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ ११ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

जज

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर मिस्टर जीवनचंद्र मलिक साहब स्पेशल जज दर्जा अव्वल ज़िला फ़र्रुख़ाबाद
मुक़दमा नं० २२ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २६ फ़रवरी सन् १९३७ ई०

१—अमरनाथ
२—त्रिलोकीनाथ उर्फ़ राधेश्याम
} पिसरान लालबिहारीशरण क़ौम कायस्थ साकिन लखीमपुर ज़िला खीरी सायल

बनाम

१—बाँकेलाल वल्द छंगालाल
२—भगवानप्रसाद वल्द बिहारीलाल
} क़ौम ब्राह्मण साकिन छिबरामऊ तहसील छिबरामऊ ज़िला फ़र्रुख़ाबाद फ़रीकसानियान

हरगाह सायलान ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में जरिए साहबडिप्टी-कमिश्नर बहादुर ज़िला फ़र्रुख़ाबाद गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी हाज़ा दाख़िल कर दिया है, लिहाज़ा जुमला अशख़ास को कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख़्वास्त देहंदा की ज़ात व जायदाद पर हो, अंदर तीन माह शाया होने नोटिस गज़ट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़ा के मय जुमला ज़रूरी काग़ज़ात सुबूत दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में काबिल समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी कर्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ १२ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर सेकेंड ग्रेड ज़िला शाहजहाँपुर

मुक़द्दमा नं० १६० सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १७ एप्रिल सन् १९३७ ई०

१—छोटेलाल वल्द सुंदरलाल
२—हरद्वारीलाल नाबालिग वल्द छोटेलाल } अक़्वाम ब्राह्मण साकिन मोहल्ला फतेपुर रैती परगना व ज़िला शाहजहाँपुर सायलान
बविलायत छोटेलाल पिदर खुद

बनाम

१—जाला सुंदरलाल वल्द लाला श्यामलाल क़ौम अगरवाल साकिन मोहल्ला चौकसी परगना व ज़िला शाहजहाँपुर
२—मोहम्मद अहसनउल्लाखाँ वल्द मौलवी सलेउल्लाइखाँ क़ौम पठान साकिन मोहल्ला पुख्ता तालाब ज़िला शाहजहाँपुर
३—राधेश्याम } नाबालिगान पिसरान पं० लक्ष्मीनारायण क़ौम ब्राह्मण बविलायत मु० गंगा मादर
४—नन्हूकाई } खुद साकिनान मोहल्ला फतेहपुर रैती ज़िला शाहजहाँपुर
५—रामेश्वरदयाल } पिसरान प्यारेलाल अक़्वाम ब्राह्मण साकिन मौज़ा कौरियाकलाँ परगना कांट
६—हृदयनारायण } ज़िला शाहजहाँपुर
७—गंगाधर }
८—बच्चूसिंह वल्द पुहुपसिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौज़ा कौरिया कलाँ परगना कांट ज़िला शाहजहाँपुर
९—लछमनसिंह वल्द भिखासिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौज़ा केशवपुर परगना पिछोहा ज़िला हरदोई
१०—करोरीलाल वल्द पं० सुंदरलाल
११—जगतनारायण } नाबालिगान पिसरान करोरीलाल अक़्वाम ब्राह्मण बविलायत करोरीलाल पिदर
१२—रामनारायण } खुद साकिनान मोहल्ला फ़तेहपुर रैती ज़िला शाहजहाँपुर
१३—महेशनारायण }
१४—संकठासहाय वल्द बलदेवप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा कौरिया कलाँ परगना कांट ज़िला शाहजहाँपुर फ़रीक़सानियान

हरगाह मुसम्मे छोटेलाल वग़ैरह ने दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३५ ई० अदालत हाज़ा में बरिए जवाब डिप्टी-कमिश्नर साहब बहादुर शाहजहांपुर गुज़रानी है और बिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाखिल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख्वास्त दिहंदा की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह आज तारीख शाया होने नोटिस गज़ट में अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाखिल करें, वरना कोई उज्र बाद में समाअत न होगा और दरख्वास्त ब अदम हाज़िरी क़र्ज़ख्वाहान मसमू और फैसल होगी।

आज बतारीख १२ जनवरी १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसरिम

नमूना नं० १६९

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब बाबू श्रीगोपालसिंह साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर
मुक़द्दमा नं० ७९१ सन् १९३६ ई० इश्तिहार

मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० ऐक्ट २१ सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

सैयद हामिदहुसैन वल्द सैयद मूसीरज़ा साकिन जौली परगना जौली जानसठ ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर सायल ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाय जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ दर्ज डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे इस गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं

कर दिया है। अब बहुत सस्ते मूल्य पर बिजली मिलती है।

विदेशी मशीनों से बनी हुई वस्तु अति सस्ते मूल्य पर बिकने के कारण नेपाल के कला-कौशल पर धक्का पड़ता जा रहा था, ऐसी स्थिति देखकर महाराजा साहब की ओर से अनावश्यक चीज़ें इस ओर आने से मना कर दी गईं।

शासन-प्रणाली में थोड़े ही समय में बहुत-सा चिरस्थायी सुधार हुआ है। बाल-वृद्ध-विवाह की कुप्रथाएँ हटाने के लिये क़ानून जारी किया गया। कई ऐसे सामाजिक विषय पर पूर्ण सुधार किया गया, जो कहना असंभव है। फ़ौजी बात का तो कहना ही क्या, स्वयं महाराजा साहब एक बहादुर सेनापति हैं, आधुनिक युद्ध-कला में निपुण हैं। मिलिशिया की तालीम ज़ोरों से चल रही है। प्रॉविडेंट फ़ंड का इंतज़ाम फ़ौज के लिये आप ही ने किया है। कृषि-सुधार में भी ज़ोर लगा रक्खा है। को-ऑपरेटिव-क्रेडिट-सिस्टम आप ही ने नेपाल में पहलेपहल स्थापित की है।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि जाति में जीवन और जागृति विद्या-प्रचार ही से होती है। अतः आपने महाराजा होते ही सरस्वती-पूजा का एक विशेष उत्सव मनाकर देश के धुरंधर विद्वानों को उच्च उपाधियों से भूषित किया है। शिक्षा-विभाग के उच्च पदाधिकारियों से लेकर साधारण शिक्षकों तक का वेतन दुगुना कर दिया गया। अच्छे विद्यार्थियों को स्वयं महाराजा ने अपने ही हाथ से पुरस्कार दिया, और स्थायी प्रबंध भी किया। हरएक विद्यार्थी को विद्योपार्जन के लिये उचित छात्र-वृत्ति भी मिलती है। नेपाल में निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

आप संसार-भर के प्रायः सभी शक्तिशाली राष्ट्रों की उच्च-उच्च उपाधियों से विभूषित हैं। इटली, फ्रांस, चीन, बेल्जियम, ग्रेट ब्रिटेन इत्यादि सभी ने आपका सहर्ष सम्मान किया है। नेपाल-सरकार से सम्राट् पंचम जार्ज को 'ओजस्वी राजन्य' और इटली के सर्वेसर्वा मुसोलिनी को 'सुप्रदीप्त मान्यवर'(नेपाल-तारा के प्रबंध में पहली श्रेणी)न-मक उपाधियाँ मिली हैं। इन उपाधियों से उन्हें विभूषित करने, प्लेनीपोटेंशेयरी मिनिस्टर नियुक्त करने, और मिशन ले जाने का काम महाराजा साहब के पुत्र—उत्तरीय भाग के कमांडिंग-जनरल, प्रसिद्ध प्रबल गोरखा-दक्षिण-बाहु—सुप्रदीप्त मान्यवर बहादुर शमशेर-जंगबहादुर राणा का ही है।

न्याय करने में आप प्रवीण हैं। सनातन-धर्म आपको अपनी आँख से भी अधिक प्यारा है—प्रजा, देश और प्राण से भी। आपकी उम्र अभी ६१ वर्ष की है। गोली चलाने में आप इतने निपुण हैं कि बिजली की तरह चलते हुए बाघ को एक ही गोली से चूहे की तरह गिरा देते हैं। अस्सी फ़ीसदी गोर्खाली गोली चलाने में प्रवीण हैं, तो भी मुल्क-भर में आपके मुक़ाबिल गोली चलानेवाला कोई नहीं। इस उम्र में भी आप बहुत तेज़ घोड़े की सवारी का शौक़ रखते हैं। रोज़ सुबह एक घंटा आप घोड़े की सवारी करते हैं।

आपने कई बार सोने का तुलादान किया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Hardwar

सप्तकौशिका के तट पर सहस्र गो-दान अभी हुआ है। कोटि होम हर साल होता ही रहता है। ऐसे ही धर्म के कारण इस पुण्य भूमि पर आज तक दुर्भिक्ष पैर नहीं जमा सका। ईश्वर पर अटल विश्वास होने के कारण आप ऐसे स्वावलंबी हैं कि इस सर्वनाशी भूकंप में भी विदेशी चंदा कृतज्ञता-पूर्वक आपने स्वीकार नहीं किया। अपने ही धन एवं परिश्रम से पुराने नेपाल को नया नेपाल कर दिया, नवीन जीवन भर दिया, और संसार को दिखा दिया कि परिश्रम तथा निःस्वार्थ सेवा से क्या नहीं हो सकता।

बचाइए

किसे ?

देश के ग़रीबों की आबरू

कैसे ?

देशी व्यापार की उन्नति करके

आपकी मदद के लिये

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत—

सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक	१)		१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक ।।)
रंग की पुस्तक	१)		सुगंधित तैल और इत्र की पुस्तक १)
सरल रसायन	१)	साथ लेने	वार्निश और पेंट १)
हिंदी-केमिस्ट्री	१)	से १॥) में	विद्युत्-शास्त्र (Electricity) ।।)
आरोग्य-विद्या	।।)		आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)
रिसाला साबुनसाज़ी उर्दू	।।)		स्वर्ण-पथ-प्रदर्शक -)॥
तद्धित-प्रयोग-सूची	=)		तंतु-कला (सूत का हुनर) और माड़ी की पुस्तक १)
इत्र की पुस्तक (छप रही है)			अनुवाद-कला (Sanskrit Teacher) १)
देशी जड़ी बूटी और गुण (छप रही है)			

तैयार हैं

पौने मूल्य में जनवरी तक के लिये

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्०, ए० एम्० एस्० टी०, मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्ड्स ऑफ़् लंदन इंस्टिच्यूट, विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरक़ंद गली, बनारस सिटी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इंद्रजाल

[श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी]

दिलीप ने देखा, राधा झट से दौड़कर उसके निकट नहीं आई, वरन् खंभे की ओट में खड़ी हो गई। क्षण-भर उसने उसकी ओर देखा, फिर उस दृष्टि-विस्तार को समेटती हुई वह एकाएक विमनस्क हो उठी। दिलीप को प्रतीत हुआ, राधा लजा गई है। वह अब दूसरे की हो चुकी है। विवाह के पश्चात् उसका गौना भी हो गया है। किंतु दिलीप अपनी दृष्टि में उसे ग्रहण करता ही गया। किसी भी प्रकार उसकी ओर से अपने आपको विरुद्ध कर लेने की भावना वह स्वीकार न कर सका। वह बराबर सोचता रहा—वही तो राधा है, अभी तक वैसा ही भोला मुख है, वही विमोहक छवि-माधुरी। कहीं कुछ भी तो नहीं बदला है। हाँ, इतना ही परिवर्तन हो गया है कि उसकी कुंतल-राशि की मध्य रेखा पर, भाल के उत्तर-प्रांत में, थोड़े सिंदूर-बिंदु और झलक उठे हैं। साथ ही पैरों की उँगलियों में दो-दो श्वेत मछलियाँ भी और आ गई हैं। किंतु ये सब तो बाह्य परिवर्तन हैं। दिलीप को उससे कोई आपत्ति नहीं हो सकती। राधा जो उसके पास झट से आ नहीं सकी, एक बार उसे देखकर ही ठिठुककर रह गई, अपने इस मनोभाव से क्या यह स्पष्ट रूप से नहीं प्रकट करती कि उसके मन-प्राण में अब भी वह उसी प्रकार मूर्तित है, किसी भी भाँति उसे बाहर नहीं फेंक सकी है।

और राधा?

श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी

उसके मन में एक बार आया कि वह भागकर पीछे लौट जाय, या और कहीं जाकर छिप रहे। दिलीप को उसका बोध तक न हो सके। किंतु एक बार जो उसने उसे देख पाया, तो उसके पैर भूमि से चिपक गए। नतमुखी होकर वह जैसी खड़ी थी, वैसी ही खड़ी रह गई। लौट पड़ने की बात को लेकर उसका अंतःकरण तत्पर न हो सका। वह सोचती रह गई—दिलीप, माना कि उसका कोई नहीं है, तो भी वह अभी तक उसका 'दिलीप दादा' तो बना ही है। क्या ऐसा भी कभी संभव हो सकता है

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि वह अपने ऐसे 'दादा' से लजाकर छिप रहने को तैयार हो जाय ! दिलीप के लिये जैसी यह अवहेलना की बात है, वैसी ही स्वतः उसके लिये भी अशिष्टता-पूर्ण। विमल मन के लिये लिप्सा—अमर्यादित, अवैध और अनियंत्रित लिप्सा—जैसे वर्जित है, वैसे ही अप्रीतिकर, अशिष्ट, अशोभन, तिक्त उपेक्षा-भाव भी तो सर्वथा अनुचित है, क्षुद्रता-द्योतक।

राधा की मा अकस्मात् एक नवागत को आँगन में देखकर पहले तो एकदम विस्मयाकुल हो उठीं, फिर क्षण-भर में ही उसे पहचानकर विपुल उल्लास से बोलीं—"आओ लल्ला, बैठो।" और एक छोटी-सी मचिया बैठने के लिये उन्होंने दिलीप के आगे कर दी।

* * *

दिलीप कभी पंद्रह वर्ष का था, और तहसील के हाईस्कूल में पढ़ता था। बड़े दिन की छुट्टियों में घर आया था। ढेरों संतरे, सेब, केले, काजू, किशमिश, पिस्ता, अखरोट अपने साथ लाया था। संध्या का समय था। राधा उस समय उसके घर में ही उसकी मा के पास बैठी हुई उससे बनियाइन बुनना सीख रही थी। दिलीप को आया जानकर वह उठ बैठी, और बोली—"चाची, अब मैं जाती हूँ।"

राधा ग्यारह वर्ष की हो गई थी, और गाँव के स्कूल में पढ़ती थी। बचपन से ही वह दिलीप को दादा कहती आ रही थी। इससे भी पूर्व उस समय—जब दिलीप सात वर्ष का था, और गाँव के स्कूल में पढ़ता था—राधा उसके आगे नंगी खेला करती थी। दिलीप स्कूल से लौटता, राधा दूर से उसे देखकर दौड़ पड़ती, और उसके पैरों तक लटकती धोती को छूती हुई उससे लिपट जाती। राधा कनक-वर्णा थी, और शरीर से भी बहुत स्वस्थ रहती थी। रास्ते-चलते पड़ोसी तक उसे गोद में लेकर खिलाने में सुख पाते थे। दिलीप के कोई बहन न थी, न उसके घर में कोई और छोटा बच्चा। वह भी पड़ोस की राधा को दुलराने-खिलाने में बड़ा सुख अनुभव करता था।

हाँ, तो राधा को अपने घर लौटता हुआ जानकर दिलीप मा से कहने लगा—"अम्मा, राधा जा रही है।"

राधा चल खड़ी हुई थी। दिलीप की मा ने कहा—"अरी, क्या चली ही गई रधिया ?"

राधा खड़ी हो गई, और वहीं से बोली—"क्या है चाची ?"

"अरी सुन। बड़ी शरमीली बनी है।"

राधा लौट पड़ी। एक बार उसने दिलीप की ओर देखा, एक बार चाची को। फिर नीचे की ओर मुँह करके चाची के पास आकर खड़ी हो गई।

चाची ने ढेर-के-ढेर फल और मेवे राधा की धोती के छोर में भरकर बाँध दिए। वह लौटकर जाने लगी। चाची ने उसकी टुड्ढी उठाकर, वाम कपोल पर प्यार की एक हलकी चपत-सी जमाकर कहा—"ठगिनी कहीं की !" फिर मन-ही-मन सोचा, विचारकर स्थिर किया कि इसके साथ दिलीप का ब्याह हो सकता, तो कितना अच्छा होता !

राधा और भी लजा गई। कुछ बोली नहीं, चलती ही गई। फिर दिलीप जब तक पढ़ने को चला नहीं गया, राधा चाची के घर नहीं आई।

* * *

दिलीप चाची की चरण-धूलि मस्तक पर लगाकर मचिया पर बैठ गया।

चाची ने पहले तो आशीर्वाद दिया। बोलीं—"सदा सुखी रहो लल्ला।" फिर पूछा—"कब आए लल्ला ?"

"कल आया हूँ चाची। दस दिन की छुट्टी है।" दिलीप ने नपे-तुले शब्दों में कह दिया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वह इधर-उधर देखता रहा। उसके जी में आया कि वह उठकर तुरंत चल दे, किंतु कुछ सोचकर थोड़ी देर बैठ लेना ही उसने उचित समझा।

राधा कहीं चली गई थी।

चाची भीतर जाकर कुछ खोजने लगीं।

आँगन के एक कोने में तुलसी का पेड़ है। दिलीप खड़ा होकर उसके निकट जा पहुँचा। वह देखने लगा कि मिट्टी का एक दीपक रक्खा है, जिसमें अधजली बत्ती पड़ी है, और थोड़ा-सा जमा हुआ घी उसे ढके हुए है। उसे स्मरण हो आया कि राधा नित्य इसी दीपक से तुलसी की आरती करती है।

वह सोचने लगा—मनुष्य का जीवन भी एक दीपक है। बत्ती बदल जाती है, किंतु दीपक वही बना रहता है। घी हुआ या तेल, जब कम पड़ जाता है, तभी और छोड़ दिया जाता है। यों दीपक और जीवन, दोनो के लिये स्नेह की अपेक्षा है। स्नेहाभाव यदि कभी पास न टिक सके, तो बत्ती आज है, और सदा रहेगी। किंतु जब स्नेह चुक गया हो, तब बत्ती कैसे टिक सकती है, कब तक टिक सकती है। वह जल जायगी, और दीपक में उसका शरीर-भर, कुछ देर के लिये, रह जायगा। फिर तो वायु का एक झोंका ही उसे क्षति-मान् कर डालेगा। जीवन के भीतर जो बत्ती पड़ी है, जिसे हम चाहे जो कह लें—कल्पना की रानी या स्वप्न की प्रतिमा—तभी तक ज्योतित रहेगी, जब तक स्नेह रहेगा। और, जब वह स्नेह ही नहीं रह गया, तब वह प्रभा, वह प्रकाश, कहाँ दृष्टिगत होगा।

दिलीप के मन में आया—तो क्या राधा के जीवन-रूपी दीपक में, बत्ती के रूप में, सचमुच कोई दूसरी प्रतिमा है?

चाची एक कटोरे में कुछ मिष्टान्न ले आईं, एक गिलास में गरम दूध, दूसरे में जल। फिर भीतर जाकर बोलीं—"कहाँ गई री! रधिया!"

राधा बोली—"यहाँ बैठी हूँ अम्मा।"

चाची ने वहीं से कह दिया—"अरी, अपने दादा के लिये पान तो लगाकर दे जा।"

पहले ही राधा ने अपने को बहुत सँभालकर उत्तर दिया था। कहीं कंठ का आर्द्र भाव न प्रकट हो जाय। अब मा का यह आदेश पाकर तो उसका सारा संयम ही भंग हो गया। विचार-लीन, रुद्ध आँसू निकल ही पड़े।

मिठाई खाते हुए दिलीप बोला—"और कहो चाची, राधा को ससुराल कैसी मिली?"

"अब जैसी कुछ है, अच्छी ही है लल्ला। कहने को बत्तिस, लेकिन असल में चालिस तक की उम्र है। चँदोवा बालों से साफ़ हो गया है। यों खाने-पहनने के लिये सभी कुछ है, सोने के गहने हैं, घर में गाय-भैंस भी है।" चाची ने इस तरह कहा कि बाहर के व्यावहारिक संतोष और भीतर की व्यथा, दूध के साथ पानी की भाँति किसी प्रकार मिल न सकी, वरन् गंगा-यमुना के आकस्मिक मिलन की-सी शुभ्र-श्याम रेखाएँ पृथक्-पृथक् झलक उठीं।

दिलीप ने कहना चाहा कि चलो, ब्याह हो गया, यह बहुत अच्छी बात हुई; किंतु फिर चाची के शुष्क, विषण्ण मुख और उनके तत्कालीन अंतः-निःसृत निःश्वास को लक्ष करके वह कुछ कह न सका।

राधा जब से पान लगा रही है, तब से यही सोचती है कि इन पानों के साथ उसका ज़रा भी संबंध नहीं है, किसी प्रकार नहीं है। जैसे ये निर्जीव पान हैं, वैसे ही उनके साथ उसकी उँग-लियों का अचेतन स्पर्श है। चाहे चूना अधिक हो जाय, चाहे कत्था; वह कुछ नहीं जानती। वह कुछ जानना नहीं चाहती। यह यहाँ आए ही क्यों? क्या ज़रूरत थी इनके यहाँ आने की? फिर पूछते हैं कि कैसी ससुराल मिली? यह जानकर तुम करोगे क्या कि मुझे क्या मिला है, और क्या नहीं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मिला ? मान लो, मुझे कुछ भी नहीं मिला, तो क्या तुम उसकी पूर्ति कर दोगे ? या मान लो, सब कुछ मिला है, तो इन सब बातों को जानकर तुम करोगे क्या ?

दिलीप जल-पान कर चुका है, और राधा उसे पान देने जा रही है। नमित दृष्टि है उसकी। मोतियों से गुँथे हुए उसके कानों के रिंग डोल रहे हैं। धीरे-धीरे पग धरती हुई वह आ रही है। नेत्रों को ऐसा संयत, ऐसा अविचल बना रक्खा है उसने, जैसे दिलीप की ओर देखना उसके लिये वर्जित है, पाप है। निकट आकर उसने पान अपनी मा के हाथ में दे दिए। मा ने चाहा कि कह दे—दद्दा को ही क्यों नहीं देती ; किंतु राधा की मुद्रा की ओर देखकर उसने उसके हाथ से पान लेकर दिलीप को दे दिए।

दिलीप अब इस घर में कभी न आएगा। राधा तो खैर, दूसरे की हो ही चुकी, लेकिन चाची भी बदल गई हैं। न, अब उसे इस घर में कभी नहीं आना होगा ; क्योंकि गोस्वामी तुलसीदासजी ने बड़े अनुभव से यह दोहा रचा था—

आवत ही हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह ;
तुलसी तहाँ न जाइए कंचन बरसे मेह।

पान लेकर दिलीप बोला—"अब चलूँगा चाची।"

चाची ने अप्रकृत विस्मय का भाव प्रदर्शित कर कहा—"जाओगे ? अच्छा।"

दिलीप चाची के पैर छूकर चल दिया।

चाची ने पूर्ववत् आशीर्वाद दिया—"सदा सुखी रहो।" दिलीप चलता ही गया, उन्मथित-सा, विमूढ़-सा। लौटते हुए किसी की ओर देखा तक नहीं।

राधा पान देकर भीतर चली गई थी। किंतु जब उसे प्रतीत हुआ कि दिलीप जा रहा है, तो वह तुरंत लौटकर खंभे की ओट में खड़ी हो गई।

दिलीप चला गया, चाची रसोई बनाने में लग गईं। राधा धीरे-धीरे बाहरी द्वार तक जा पहुँची। जिस अकंपित विवेक से उसने अपने आपको चारो ओर से खींच-खाँचकर बाँध रक्खा था, प्रच्छन्न प्यार के एक ही झोंके ने उसे विकल्प रूप से ऐसा झकझोर डाला कि किसी भी प्रकार वह अपने आपको प्रकृतिस्थ न रख सकी। द्वार पर खड़ी होकर वह सामने की ओर देखने लगी।

पैरों के चप्पलों तक लटकती और दोनो ओर चक्कर दे-देकर घूमती हुई धोती की चुन्नट, जानु-पर्यंत आवृत खादी की श्वेत क़मीज़ और सिर पर छल्लेदार केश-राशि। जहाँ तक दृष्टि-पथ में उत्तरोत्तर धुँधले हो रहे इस दृश्य को राधा की आँखें ग्रहण कर सकीं, राधा खड़ी रही। अंत में जब दिलीप का वह पृष्ठ-भाग उसकी दृष्टि से सर्वथा लुप्त ही हो गया, तो वह फिर भीतर लौट आई। उसके मन में आया कि दिलीप अगर उसका कोई नहीं है, तो यह संसार मिथ्या है, जीवन मिथ्या है, कहीं कुछ भी सत्य नहीं है। सभी व्यर्थ है।

* * *

दिलीप की मा कह रही थी—"अब मुझसे और न सहा जायगा मुन्नू। वह जब अच्छी तरह थे, तब तू पढ़ रहा था। मेरी बड़ी इच्छा थी कि उसी समय बहू आ जाती, और वह इस आँगन में उसके पायल की झनकार सुनकर अपनी साध पूरी करते। मैं उनसे कहती-कहती हार गई, पर उस समय तुम पिता-पुत्र किसी तरह न माने। मैं समझती थी, ऐसी जल्दी क्या पड़ी है। एक-दो वर्ष और सही। पर, मेरा वह धीरज ही मेरे लिये अभाग्य बन गया, और वह चलते-फिरते हुए एक दिन चलते बने। .... अब हँसते-खेलते पड़ोस के बहू-बेटों को देखती हूँ, तो ऐसा जान पड़ता है कि यह सब धन-दौलत कुछ नहीं है। जब कोई उसका भोग करनेवाला न होगा, तो वह भी बेकार है। ... मैं तेरे लिये कोई चीज़ नहीं हूँ!

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मेरी इच्छाओं का कोई मूल्य नहीं। जान पड़ता है, और तो सब चला ही गया है, तू भी अब अपना नहीं रहा है।"

उसकी आँखों में आँसू भर आए।

दिलीप बड़ा ज़िद्दी है। उसने तय कर लिया है कि वह अविवाहित रहेगा। राधा ने उसे भुला दिया है। वह उसे भुला सकती है। वह नारी है, हिंदू-नारी। बचपन में उसका ब्याह हुआ था। तब वह जानती भी न थी कि दिलीप उसका कौन है। वह अपने माता-पिता से मुँह खोलकर क्या कहती, कैसे कहती? उसके बाद—उसके बाद वह कर ही क्या सकती थी?

किंतु दिलीप ने पुरुष का हृदय पाया है। राधा उसकी होकर भी दूसरे की होकर रह सकती है, तो क्या दिलीप उसी का होकर, फिर किसी का न होकर, नहीं रह सकता? प्रेम कोई विनिमय नहीं है। वह तो उत्सर्ग का प्रतीक है। उसने उसे भुला दिया है, तो क्या इसीलिये उसके लिये आवश्यक है कि वह भी उसे भूल जाय? न, दिलीप से ऐसा हो नहीं सकता। वह जीवन को क्षण-भंगुर मानता आया है। प्रेम के आगे वह ऐसे तुच्छ जीवन को कुछ भी महत्त्व न देगा। जिस प्रकार अब तक चल रहा है, उसी प्रकार चलेगा।

दिन चल रहे हैं। दिलीप डॉक्टरी पढ़ रहा था। वह अब एम्० बी०, बी० एस्० होकर आ गया है। देहात छोड़कर अब वह कानपुर नगर में रहता है। उसके साथ सिर्फ़ उसकी मा है, और कोई नहीं। उसकी मा नित्य सबेरे ताँगे पर बैठकर गंगा नहाने जाती है। दोपहर को जब लौटती है, तो दिलीप भोजन करने आ जाता है। महराजिन उस समय तक भोजन की सारी सामग्रियाँ तैयार कर रखती हैं। मा उसे पास बिठालकर खिलाती है। दिलीप मा से इधर-उधर की बातें करता है। वह कभी मुस्किरा उठता है, कभी कोई ऐसी बात भी कर देता है कि मा उलझन में पड़ जाती है, या दिलीप को भला-बुरा कहने लगती है। दिलीप चुपचाप उन बातों को सुन लेता है।

एक दिन की बात है। जान पड़ता है, नवंबर-मास का वह दिन जीवन के सभी साधारण दिनों की अपेक्षा कुछ नवीन था, उसकी कोई विशेषता थी। तभी तो दिलीप मा की उस बात को सुनकर कहने लगा—"अच्छा तो अम्मा, मैं अब ब्याह करना चाहता हूँ। पूछो, किसके साथ? तो बताऊँ।"

"दिलीप अब भी नटखट बालक बना हुआ है। वह अपनी मा तक से ठठोली करता है। देखो तो, वह कैसी बात कर बैठा है! जिसने अपने जीवन के अट्ठाइस वर्ष यों ही, हँसते-खेलते, बिता दिए, मा कहते-कहते हार गई, अन्य आत्मीय जन समझा-समझाकर थक गए, किंतु दिलीप ने किसी की बात न मानी। और, आज वही दिलीप चला है मा से ठठोली करने! दुष्ट कहीं का—शैतान!" मा के मन में आया और गया। वह दिलीप की ओर ताकती रही। उसके चिर-विषण्ण, चिर-पीड़ित मन-प्राण में दिलीप का यह कथन विषाक्त तीर की तरह जा लगा। दिलीप के लिये यह नई बात नहीं है। इसी तरह, मालूम नहीं कितनी बार, वह सारी बातें तय कर चुका है, किंतु दो दिन में ही फिर पलट गया है। क्या उसकी मा इतनी नादान है कि वह दिलीप की इस बात को सत्य मानकर तरंगित आशा से लहरा उठेगी। न, दिलीप ठटोली ही कर रहा है।

"किंतु यह बात, सच पूछो तो, सर्व-साधारण के लिये ठीक हो सकती है। ठठोली वह समझे, जो उसका अभ्यासी हो। दिलीप की मा उसकी बात को ठठोली क्यों समझे? वह तो मा का हृदय है। कोई और होता, तो वह एक बार समझ लेती

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि यह भी शाब्दिक मृग-तृष्णा ही है, एक प्रकार का वाक्छल ! किंतु वह तो मा है। किसी भी प्रकार, अपने दिलीप की किसी भी बात को, वह अपरूप नहीं देखना चाहती। उसका दिलीप अभी अबोध बालक ही बना हुआ है। अभी उसकी अवस्था ही क्या है ? अभी तो वह बच्चा है। कौन जाने निश्चित मन से ही वह इस प्रकार की बात उठा रहा हो !" मा ने इधर-उधर भूल-भटककर सोचा, स्थिर किया। उसकी अम्लान मुद्रा बात-की-बात में आशा के उज्ज्वल आलोक से उद्दीप्त हो उठी।

दिलीप इसी समय पूछ बैठा—"तुम कुछ बोलीं नहीं अम्मा !"

मा ने कहा—"मालूम नहीं, कितनी बार तू इसी तरह की बातें कर-करके मुझे बेकार परेशान कर चुका है। इसीलिये तेरी इस बात का विश्वास जाता रहा। तू चाहे सच भी कहे, तो भी मुझे शंका बनी ही रहती है। मैं अभी यही सोच रही थी कि क्या यह संभव नहीं हो सकता कि तेरी इस बार की बात सच निकल आए।"

"सचमुच अम्मा, अब मैं विवाह कर लेना चाहता हूँ।" दिलीप उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखकर बोला—"किंतु जब तुम उसे स्वीकार कर लो, तब।"

अब मा को बोध हुआ कि जो बात उठाई जा रही है, वह निराधार नहीं है। वह बोली—"मुझे क्यों स्वीकार न होगा ? यह कैसी बात तूने कही ?"

बात के प्रकार में कुछ विस्मय भी झलक उठा।

दिलीप बोला—"जिसके साथ मैं विवाह करना चाहता हूँ अम्मा, वह विधवा है। उसके जीवन को अभी तक किसी ने छू नहीं पाया है। कभी वह बड़ी भाग्यशीला थी; किंतु विवाह होने के साथ ही, जब संसार की दृष्टि में वह सौभाग्यवती हुई, मालूम नहीं, कहाँ से उसके सिर पर रक्खा हुआ अमृत विष-घट बन गया। वह प्रकट सौभाग्य उसके लिये सर्वथा अभाग्य सिद्ध हुआ। ज़िंदगी के साथ मौत का मेल कहीं संभव होता है ! सुना है, अब वह विधवा हो गई है। वह एक दुखिया नारी है अम्मा। संसार उसे अभागिनी कहता है। मैं उसके साथ विवाह करके एक बार उसे सौभाग्यवती-रूप में देखना चाहता हूँ।"

मा बोली—"यह मैं कुछ नहीं जानती। मैं तो बहू चाहती हूँ; ऐसी बहू, जिसे पाकर मैं तुझे देखूँ, तेरे भोले भविष्य को देखूँ। अब मुझे यह नहीं देखना है कि वह बहू तू कहाँ से, किस तरह, क्या सोचकर उठा लाया है !"

यह मा है दिलीप। इसे मा कहते हैं। तू समझता आया है कि मा के लिये संस्कृति प्यारी है, समाज प्यारा है ! लेकिन तूने यह क्यों नहीं सोचा कि मा के लिये क्या संस्कृति और क्या समाज, कोई चीज़ नहीं है। वह तो अपने भोले भविष्य की ओर देखती है—वह तो अपनी एक-मात्र आशा की ओर टकटकी लगाकर निहारती रहती है।

दिलीप मा के उत्तर से चरम आह्लादित हो उठा।

* * *

नौकर ने कहा—"बहूजी ने आपको वहीं बुलाया है।"

दिलीप फफूँद-स्टेशन से औरैया (इटावा) एक ताँगे पर सवार होकर आया था। उसने कभी औरैया देखा न था। वह समझता था, एक साधारण क़स्बा होगा, किंतु नहर पार करने के बाद जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, वैसे-ही-वैसे उसे प्रतीत हुआ, यह तो एक सुशोभित क़स्बा है। सड़क के दोनो ओर पक्के, ख़ुशनुमा मकान और बँगले हैं। पुष्प-वाटिकाएँ और लताएँ उनकी शोभा अपने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आप बतला रही हैं। तहसील के निकट से बाज़ार की ओर मुड़कर उसने एक अढ़तिए के यहाँ पूछा—"यहाँ कोई आनंदीप्रसाद अवस्थी रहते थे? घर के ज़मींदार और संपन्न थे।"

उत्तर मिला—"हाँ। अब वह तो नहीं रहे, उनकी मुसम्मात हैं। उधर आगे चलकर, इसी सड़क पर वह जो पीपल का पेड़ दिखाई पड़ता है, उसी से लगी हुई दक्षिण की ओर जो गली गई है, वहीं उनका मकान है।"

दिलीप ताँगे पर बैठ गया। ताँगा उसी ओर चल दिया।

थोड़ी देर में दिलीप एक फाटक के अंदर था। नौकर ने दिलीप का संदेश भीतर जाकर कहा। वह तुरंत लौट आया, और बोला—"बहूजी ने आपको वहीं बुलाया है।"

दुमंज़िला पक्का मकान है। साफ़-सुथरे कमरे। दिलीप ज़ीने की सीढ़ियों से चढ़ता चला गया। आगे उसे एक कमरा मिला। उसमें एक पलँग बिछा हुआ था। खादी की श्वेत चादर अपनी उज्ज्वलता से प्रमाणित करती थी कि वह अभी ताज़ी निकाली गई है।

दो बजने का समय था। दिलीप ने देखा, राधा ज़मीन में शीतलपाटी पर बैठी हुई है। ओह, कितनी कृश हो गई है! न वह मांसल देह-यष्टि है, न वह मदिर लावण्य। सब कुछ खो गया है। जिस राधा को वह देखने आया था, वह कोई और थी। न, यह राधा नहीं है—नहीं है।

दिलीप अपने आपको स्थिर न रख सका, उसकी आँखें भर आईं। कमरे के द्वार पर वह खड़ा-का-खड़ा रह गया।

राधा बोली—"खड़े क्यों हो, आओ, इधर निकल आओ।"

दिलीप राधा के पास जिस संकल्प को लेकर आया है, उसकी गति कहाँ है? कहाँ गया उसका वह अविचल उत्साह? कहाँ गए उसके वे उत्फुल्ल लोचन, जो राधा के अंतस्तल को भेदकर उसे चरम विलोड़ित कर डालेंगे? मनुष्य कितना अभिमान करता है अपनी संलग्नता का! सोचता है, वह असंभव का अस्तित्व ही न रक्खेगा, इस शब्द तक को चूर-चूर करके सदा के लिये नष्ट कर डालेगा; किंतु यह नहीं सोचता कि अदृष्ट के एक ही पग-चालन में सब व्यर्थ हो जाता है!—मनुष्य के समस्त अनुष्ठान और संकल्प उसके एक संकेत के आगे तुच्छ बन जाते हैं!

दिलीप पलँग पर बैठ गया। वह कुछ बोला नहीं। कुछ पूछ भी नहीं सका। पूछने या बोलने को इस दिलीप के पास क्या कुछ था नहीं? उसके मन में आया कि वह कहे, तुम्हीं को देखने-सुनने चला आया हूँ राधा। किंतु विश्वास-गर्भित वाणी का यह कथन किसी प्रकार उसके ध्वस्त कंठ से फूट न सका। फिर उसने स्थिर किया कि वह पूछे—क्या हाल-चाल है राधा? किंतु यह तो एक प्रकार का व्यंग्य हुआ। हाल-चाल क्या उससे अब तक छिप रह सका है, जो वह ऐसा प्रश्न कर रहा है। छिः! अपनी राधा से वह इस प्रकार का प्रश्न करे! यह तो एक प्रकार की अवहेलना होगी, उसकी एक प्रकार की प्रवंचना। न, वह इस तरह का प्रश्न नहीं कर सकता।

राधा सिसक-सिसककर रो उठी। तब स्थिर होकर, सँभलकर, दिलीप ने कहा—"रोओ मत राधा। आज, इतने दिनों बाद भी, मैं यही मानता हूँ कि मैं होऊँ या तुम, कोई भी हो, सभी अपने कर्म-फल के ही अधीन हैं। कोई कुछ नहीं करता। जो कुछ भी होता है, हमीं अपने आप करते हैं, या किए हुए का पाते हैं। तब हम रोएँ क्यों?"

पूर्व-पत्नी से उत्पन्न दो छोटे बच्चे कहीं खेल रहे थे। इसी समय आ पहुँचे। राधा की गोद में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आकर बैठ गए। दोनो लड़कियाँ थीं। बड़ी बोली—"काए कों लोती हो अम्मी। न लोओ, न लोआ।" वह धोती के छोर से राधा के आँसू पोंछने लगी।

छोटी बोली "अम्मी, जे कोन हें।" नन्हीं-सी तर्जनी दिलीप की ओर उठाकर, भोली जिज्ञासा से, कौतुक-भरी चितवन से।

राधा बोली—"यह तेरे मम्मा हैं लल्ली। देख, ये फल-मेवे लाए हैं। जा-जा, उनकी गोद में जाकर बैठ।"

दोनों खिलौने दिलीप की ओर पहले देखकर रह गए, फिर मुस्किराए, हँसे और उछलकर एक दिलीप की गोद में बैठ गया, दूसरा उसके कंधे पर।

जीवन में पहली बार दिलीप ने अनुभव किया—यही संसार का स्वर्ग है, आनंद-कादंबिनी यहीं बहती है। मानवात्मा का चरम उत्थान यहीं होता है। यही वह स्थल है, जहाँ मनुष्य अपने आशा-स्वप्नों को चरितार्थ होते देखकर अनुभव करता है कि देवराज इंद्र का सुखोपभोग भी मेरे इस सुख के आगे तुच्छ है। बच्चों के साथ देर तक दिलीप खेलता रहा।

*　　*　　*

रात आई। साथ बैठकर राधा ने दिलीप को भोजन कराया। बच्चे सो गए। वार्तालाप का प्रवाह फिर फूट निकला।

"तो तुम कल ही चले जाओगे? और भी दो-एक दिन रह नहीं सकते?" अपलक दृष्टि से दिलीप की ओर देखती हुई राधा बोली।

"हाँ राधा," दिलीप टहलते हुए, फ़र्श की ओर देखता हुआ, आर्द्र कंठ से कहने लगा—"मैं नहीं जानता था कि मैं खुद इतने दिनों तक स्थिर रह सकूँगा।" फिर रुक-रुककर कहा—"मैंने यह भी नहीं सोचा था कि कभी ऐसा भी समय आ सकता है, जब मैं तुमसे मिलकर तुम्हारा इस तरह समाचार लेने आऊँगा।" फिर कुछ गंभीर होकर बोला—"यह ठीक है कि एक जीवन की आहुति देकर प्राप्त की गई साधना के महत्त्व को इस प्रकार व्यर्थ कर डालना कोई उत्कर्ष नहीं है। इसके सिवा मैं यह भी मानता आया हूँ कि आदर्श जीवन तो त्याग और तपस्या का ही प्रतीत होता है; तो भी मैं इतना जानता हूँ राधा, कि यह उत्सर्ग, यह समर्पण हृदय से ही फूटकर सदा नहीं निकला करता। इस चाह के भीतर एक गहरी आह भी छिपी रहती है। मनुष्य अपने को चाहे तो भूल सकता है, तो भी मनुष्य की अपने को भुला देने की यह कामना, उसके हृदय का यथार्थ चित्र अंकित करते समय, यह कभी नहीं देखता कि उसकी अमुक रेखा संस्कृति और समाज के लिये सर्वथा अप्रीतिकर, अवांछनीय और अशोभन है, इस कारण मंद है, धुँधली; या वह नितांत स्वाभाविक, सब प्रकार से अनिवार्य होने के कारण चरम अपेक्षित है। इसलिये उद्दीप्त। क्या पुलकित रोम-रोम का अकल्पित उल्लास, क्या चिर-शांत, समाहित आशा-लता और क्या अश्रु-विगलित विवर्ण चेष्टा, उसके लिये सदा समकक्ष ही रहती है।"

राधा बोली—कुछ आवेश में आकर, कुछ उत्तेजित होकर—"तो इसका तो सीधा-सादा अर्थ यह है कि तुम मुझसे नहीं, मेरे शरीर से अपना नाता रखते आए हो। जान पड़ता है, मेरे प्रेम को तुमने इतना क्षीण-काय समझ रक्खा है कि तुम इस शरीर को छोड़कर अलग से उसे देख ही नहीं पाते! मैं समझ नहीं पाती दिलीप, आखिर तुम चाहते क्या हो?"

"मैं एक बार यही जान लेना चाहता हूँ राधा, कि हमारे बीच में यह जो संस्कृति और समाज के आतंक की दीवार खड़ी है, उसे हमारा यह प्रेम उल्लंघन करने में जो समर्थ नहीं हो रहा है,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसका कारण क्या है ?—उसके आधार में क्या है ? मैं यह स्पष्ट रूप से जान लेना चाहता हूँ कि हम लोगों में से किसने अपने आपको धोखा दे रक्खा है ? मैं नहीं मानता कि हमारा शरीर और आत्मगत धर्म आज कुछ और है, और कल कुछ और। मैं आज और कल के अंतर से परे पहुँच गया हूँ। जो चीज़ जिसकी है, मैं तो उसे उसी के पास देखने पर विश्वास रखता हूँ। क्यों नहीं है, और क्यों नहीं हो पाती, खाजते-खोजते, उसका पता पा लेने पर, मैं उसे छोड़ना नहीं जानता। अपने और जगत् के कल्याण के लिये, दो तड़पती हुई आत्माओं के विच्छेद, विभ्रम और विरोध को ध्वंस करते रहने में ही मैंने अपनी सार्थकता मानी है। मैं बुद्धिवादी हूँ राधा, विश्वबंध हिंदू-संस्कृति की दुर्बल वृत्तियों के विध्वंस का स्वप्न देखते-देखते आज मैं केवल अपने आपको मानता हूँ, और किसी को नहीं मानता।"

इस कथन के प्रारंभ में दिलीप नत-मुख था, मध्य में उसका मस्तक उन्नत हो गया, और अंत तक पहुँचते-पहुँचते एक अदमनीय आलोक उसके आनन पर ज्योतित हो उठा।

राधा अब अवाक् हो उठी। उसके नेत्र भर आए। एक-एक कर अनेक मोती उसकी खादी की श्वेत साड़ी को भिगोने लगे। दिलीप उसके निकट आकर बैठ गया। राधा उसकी गोद में गिरकर सिसकने लगी। दिलीप अपने रूमाल से उसके आँसू पोंछते हुए कहने लगा—"रोओ मत राधा, जीवन इस तरह खोने की चीज़ नहीं है।"

कुछ क्षणों तक नारी-प्रकृति बराबर क्रंदन करती रही।

अंत में कुछ सँभलकर राधा बोली—"मैं अब तक तुम्हारी ही रही हूँ। मैंने उनके साथ छल किया था ; उन्हें सदा धोखे में रक्खा था। मैं अभागिनी अब तक किसी की न बन सकी। अब मैं तुम्हारी बनूँगी ; किंतु..." और उस 'किंतु' को लेकर राधा फिर सजल-नयन हो उठी। किसी प्रकार यह प्रकट न कर सकी कि अब एकमात्र निर्वाण की ओर वह देखना चाहती है, दूसरी ओर नहीं।

उस रात को राधा के मन-प्राण तक में प्रविष्ट होकर दिलीप ने नए जीवन का अनुभव किया। उसके प्राणों को प्राण मिले, जीवन को जीवन। वह अपने संसार के निर्माण में लीन, चिर-लीन हो गया। बड़े उल्लास के साथ वह घर लौटा।

* * *

किंतु—

कुछ ही दिनों बाद दिलीप एक दिन अनंत आकाश की ओर देखते-देखते विमूढ़ हो उठा। उसके मानस-पट पर एक ओर इस संसार के प्रति चरम उपेक्षा चारो ओर से आकर एकत्र हो उठीं, दूसरी ओर कभी-कभी उसके मुख पर, नाना प्रकार की, अप्रकृत हास्य की अपरूप भंगियाँ झलकने लगीं। विविध प्रकार की मुद्राओं में वह सोचने लगा—

"तो क्या राधा सचमुच कल्पना थी, एक स्वप्न-माला ? क्या स्वतः उसे भी यह नहीं ज्ञात था कि वह कहाँ जा रही है ? क्या उस दिन का वह समर्पण भी एक वाक्छल था ? पति के साथ छल करके जब उसकी संतुष्टि नहीं हुई, तब क्या मेरे साथ भी उसने इसी प्रकार का प्रयोग किया ? तो स्वामी को एक बार खोकर क्या फिर उसने उसे पा लिया था ? और, फिर क्या इसीलिये वह अंतर्धान हो गई ?"

सोचते-सोचते वह थक गया। दिन-भर के उपवास और असीम मानस-मंथन से जब वह अत्यंत श्रांत-ध्वस्त हो गया, तो एक बार उसके मन में आया—कहीं कुछ नहीं है, मैं स्वतः भी कुछ नहीं हूँ। सब धोखा है—इंद्रजाल। तब उसका सारा बुद्धिवाद उस एक राधा के समक्ष क्षुद्र, अतीव क्षुद्र हो उठा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चित्त-चर्चा

(शार्दूलविक्रीड़ित)

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

कैसे व्यंजन-स्वाद जान सकती, क्यों रीझती खा उसे,
तो मीठे फल क्यों विमुग्ध करते, क्यों दुग्धता मोहती,
कैसे तो रस के विभेद खुलते, क्यों ज्ञात होते किसे,
जो होता रस चित्त में न, रसना होती रसज्ञा नहीं ॥ १ ॥

आती है बहुधा विपत्ति, वश क्या, क्यों धी तजे धीरता,
कोई चाल चले, चले; बिचलते क्यों बुद्धिवाले रहें;
बैरी बैर करे, करे; विकल हो क्यों वीर की वीरता,
क्यों निश्चिंत रहे न चित्त नितहू, चिंता चिता-तुल्य है ॥ २ ॥

सोना है करती कुधातु अय को, है सिद्धि सत्तामयी,
होती है उसकी विभूति-बल से पूरी मनोकामना;
जाती है बन दिव्य ज्योति तम में, है मोहती मंजु हो,
है चिंतामणि के समान रुचिरा चिंता चिता है नहीं ॥ ३ ॥

हो पाईं वश में नहीं सबल हो जो वासनाएँ बुरी,
हो-होके कमनीय कांत न बनी जो कामना काम की,
जो आँखें न खुलीं प्रबुद्ध कहला, जो हैं प्रपंची छिपे,
तो क्या चेतनता, अचिंत्य पटुता, क्या चित्त की चतुरी ॥ ४ ॥

खिज़ाब छोड़ो

बाल का पकना रोककर यह तेल हज़ारों का पका बाल जड़ से काला पैदा किया, जो सदा काला रहा। प्रशंसा-पत्र इस सचाई का सबूत है। एकआध बाल पका है, तो ३) ; अधिक पका है, तो ५) ; आधा से अधिक पका है, तो ९) का तेल मँगा लें। निष्फल होने से दूना दाम वापस की शर्त।

पता—बाल काला स्टोर्स, पो० कनसी सिमरो (दरभंगा)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेद कहाँ बने ?

[श्रीयुत बैजनाथ शर्मा सारस्वत]

ह तो अब एक प्रकार से निश्चित-सा हो गया है कि आर्य लोग इस देश के असली निवासी न थे। ये लोग पश्चिमोत्तर की ओर से इस देश में आए, और पंजाब ही में आकर बसे। परंतु आए कहाँ से, इसमें मतभेद है। ऋग्वेद में हम अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, द्वारावती और अवंतिकादि मोक्ष-पुरियों का कहीं पता तक नहीं पाते, किंतु सिंधु (सिंध), गांधार (क़ंधार) और सुवास्तु (स्वात) आदि म्लेच्छ देशों तथा उनके किनारे की नदियों के नाम बराबर पाते हैं।

पहलेपहल ये लोग सिंधु के निकटवर्ती भूमि में बसे, जिसे ऋग्वेद में सप्तसिंधु कहा है* ('वार्याःसप्तसिन्धुषु'—८। २४। २७)। यह सप्तसिंधु और पारसियों के यहाँ का हफ़्तसिंधु एक ही जान पड़ता है। यह सप्तसिंधु देश था कहाँ पर ? यह अभी तक अनिश्चित है। कुछ ऐतिहासिकों का कथन है कि सिंधु-नदी से लेकर सरस्वती-नदी तक की फैली हुई भूमि को सप्त-सिंधु कहते हैं। महाभारत के समय इस भूमि का नाम पंचनद † था, जो मुसलमानों के आने पर पंजाब हो गया।

सिंधु (सिंध) का नाम पाश्चात्य लोगों को बहुत पहले से ज्ञात था, क्योंकि इसी मार्ग से वे आया-जाया करते थे। अपने देश में जाकर वे सिंध को 'हिंद' और यहाँ के निवासियों को 'हिंदी' या 'हिंदू' कहने लगे। जैसे सेना को हेना, मास को माह और सोम को होम। धीरे-धीरे संपूर्ण भरतखंड का नाम हिंद या हिंदुस्तान पड़ गया।

फ़ारस के बादशाह दारा के अधिकार में पंजाब बहुत दिनों तक रहा। संभवतः तभी से उन लोगों को हिंद से जानकारी हुई होगी। मुहम्मद साहब की मृत्यु के पीछे अरब के ख़लीफ़ाओं के आक्रमण इसी देश—सिंधु—पर हुए। यह देश बड़ा ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।

पारसियों के 'वेंदिदाद'-नामक धर्म-ग्रंथ में लिखा है—"आर्य लोगों ने सप्तसिंधु (हफ़्त-सिंधु) अर्थात् पंजाब में बस्तियाँ बसाईं। परंतु इन्हें सताने के लिये शैतान ने बड़ी कड़ाके की धूप और साँप पैदा कर दिए।"

असीरिया देश में एक कपड़े का नाम सिंधु था, संभवतः वह भी इसी देश से गया होगा।

वर्तमान काल में जो खुदाइयाँ सिंधु देश के 'महेंजोदारो' में हुई हैं, उनमें बड़ी प्राचीन वस्तुएँ निकली हैं, जिनका काल भूगर्भ-विद्य

* नद्यः सप्तविभ्रति ऋ० १। १०२। ६।
† तदैव ता भारत पञ्चनद्यः (महाभारत)।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जाननेवालों ने ईसवी शताब्दी के ५,००० वर्ष पूर्व बताया है *।

महाभारत में जयद्रथ-नामक राजा इसी देश का था, जो महाभारत के युद्ध में मारा गया।

भविष्य पुराण में लिखा है कि आर्यावर्त के एक राजा ने म्लेच्छों से युद्ध करके उन्हें सिंधु पार खदेड़ दिया, तभी से सिंधु पार म्लेच्छों का देश हुआ, और सिंधु इस पार आर्यों का।

स्थापिता येन मर्यादा म्लेच्छार्याणाम्पृथक् पृथक्।
सिन्धुस्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्।
म्लेच्छस्थानपरं सिन्धोः कृतं तेन महात्मना।
(भ० पु०)

वसिष्ठ धर्म-सूत्र में सिंधु-नदी का नाम (सिंधुर्विधारिणी) अर्थात् हद बाँधनेवाली नदी कहा है, जो आजकल अटक नाम से प्रख्यात है।

ऐसी दशा में सिंधु (सिंध) देश भारत के प्राचीन देशों में सर्व-प्रथम देश ठहरता है †।

ऋग्वैदिक काल में इस देश में भावयव्य-नामक राजा राज्य करता था। स्वनय-नामक इसका पुत्र था, जिसने अपनी कन्याओं का विवाह दीर्घतमा ऋषि के पुत्र कक्षीवान् के साथ कर दिया। कक्षीवान् स्वयं अपने मुख से और अपने शब्दों में वर्णन करता है—

अमन्दान् स्तोमान् प्रभरे मनीषा सिन्धावधिक्षिपतो भाव्यस्य। यो मे सहस्रममिमीत सवानतूर्तो राजा श्रव इच्छमानः (१)

शतं राज्ञो नाधमानस्य निष्काञ्छतमश्वान् प्रयतान्त सद्य आदम्। शतं कक्षीवाँ असुरस्य गोनां दिवि श्रवो जरमाततान् (२)

उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता बधूमन्तो दश रथासो अस्थुः। षष्टिःसहस्रमनुगव्यमागात् सनत् कक्षीवाँ अभियित्वे अह्नाम् (३)

चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणि नयन्ति। मदच्युतः कुशनावतो अत्यान् कक्षीवन्त उदमृक्षन्त पज्राः (४)

पूर्वामनुप्रयतिमाददे वस्त्रीन्युक्ताँ अष्टावरि धापसो गाः। सुबन्धवो ये विश्पा इव व्राः अनश्वन्तः श्रव एषन्त पज्राः (५)

(ऋ० १२६ सू०, मं० १ से ५)

सुगुरसत् सुहिरण्यः श्वः श्वो बृहदस्मै वय इन्द्रो दधाति। यस्त्वायन्तं वसुना प्रातिरित्वोमुक्षी जयेव पदिमुत्सिनाति (६)

(ऋ० १२५ सू०, मं० २)

अर्थ—सिंधु-निवासी भावयव्य के पुत्र स्वनय के लिये अपने बुद्धि-बल से बहुसंख्यक स्तोत्र संपादन (प्रणयन) करता हूँ। हिंसा-विरहित राजा ने कीर्ति-प्राप्ति की इच्छा से मेरे लिये १००० सोम-यज्ञों का अनुष्ठान किया है (१)

असुर राजा के ग्रहण के लिये मुझसे याचना करने पर मैं (कक्षीवान्) ने उनसे १०० निष्क, १०० घोड़े, १०० बैल ले लिए, स्वर्गलोक में राजा नित्य कीर्ति-विस्तार करेंगे (२)

---

*B. C. ३२५०—२७५० में कोई समय—सर मार्शल; B. C. ४०००—डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी।

† सिंधुद्वीप और सिंधुक्षिति ऋषि इसी देश के होंगे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्वनय राजा द्वारा भूरे रंग के घोड़ेवाले १० रथ मेरे पास आए, जिनमें वधुएँ आरूढ़ थीं। १०६० गाएँ भी पीछे से आईं, मैं(कक्षीवान्)ने ग्रहण करने के बाद सब अपने पिता को दे दीं (३)

१००० गायों के सामने दसों रथों में ४० लाल घोड़े पंक्तिबद्ध हो कर चलने लगे। कक्षीवान् के अनुचर उनके लिये घास आदि जुटाकर मदमंत और स्वर्णाभरण-विशिष्ट एवं सतत गमनशील अश्वों को मलने लगे (४)

बंधुगण, पहले के दान का स्मरण करके तुम्हारे लिये ११ रथ मैंने ग्रहण किए हैं, बहुमूल्य गायों को मैंने लिया है। प्रजाओं की तरह परस्पर अनुराग-संपन्न होकर संकटापन्न अंगिरा लोग कीर्ति प्राप्त करने की चेष्टा करें (५)

उन राजाओं के पास बहुत गोधन हो, उनके पास बहुत सुवर्ण और बहुत घोड़े हों, उन्हें इंद्र बहुत अन्न दे। जैसे लोग रस्सी से पशु-पक्षी आदि को बाँध देते हैं, उसी तरह उन्होंने भी प्रातःकाल पैदल ही आकर आगमन कार्य को धन द्वारा आबद्ध किया (६)*

सायणाचार्य इस मंत्र के भाष्य में लिखते हैं कि रात्रि में घर आते हुए कक्षीवान् ऋषि मार्ग में सो गए। स्वनयराज अनुचरों के साथ घूमते हुए आए, और कक्षीवान् का सौंदर्य देखकर मुग्ध हो गए। राजा उन्हें अपने घर लाए, और अपनी १० कन्याओं के साथ उन्हें ब्याह दिया।

स्वनय राजा के वंश का वर्णन उत्तर काल के ग्रंथों में नहीं मिलता। परंतु अधिक अनुसंधान करने से इतना ही पता चलता है कि यह राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के समकालीन थे; क्योंकि स्वनय राजा ने जो कुछ दान-दहेज दिया था, वह तुरंत अपने पिता दीर्घतमा को समर्पण कर दिया।

ऐतरेय ब्राह्मण में कहा है कि "एतेन ह वा ऐन्द्रेण महाभिषेकेण दीर्घतमा मामतेयो भरत दौष्यन्तिमभिशिषेच" ममता के पुत्र दीर्घतमा ने दुष्यंत के पुत्र भरत को यज्ञ कराया।

चंद्रवंशी भरत की वंशावली महाभारत और पुराणों में मिलती है। उसके अनुसार मनु की कन्या इला बुध को ब्याही थी। बुध के पुरूरवा, पुरूरवा के आयु, आयु के नहुष, नहुष के ययाति और ययाति के पुर हुए। इन छओ राजाओं के नाम ऋग्वेद में मिलते हैं। ययाति के पुत्र पुर से पुरु-वंश चला। पुरु से भरत तक २० पीढ़ियाँ होती हैं, और मनु की कन्या इला से २६। अतएव सिंधु देश के राजा भावयव्य मनु से २६वीं पीढ़ी में हुए होंगे।

इन उपर्युक्त ऋग्वेद के मंत्रों से स्पष्ट सिद्ध है कि वेद पंजाब में बने, और कक्षीवान् आदि ऋषियों ने बनाए। वेदों में कई स्थानों पर कक्षीवान् को स्तोता (मंत्रकर्ता) कहा है। "कक्षीवन्तं स्तोतारम्" (ऋ० वे० १। १२२। ११) स्तोत्र और मंत्र समानार्थक हैं। इसी सूक्त के सातवें मंत्र में स्वनय राजा की स्त्री (लोमशा) अपने पति से कहती है—"सर्वाहमस्मि रोमशा गांधारीणामविका।" मैं गांधारी मेषी की तरह लोम-

* अनुवादित पं० रामगोविंद त्रिवेदी वेदांत-शास्त्री, महोपदेशक सनातनधर्म।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पूर्ण हूँ। गांधार क़ंधार एक ही है। गांधार भी चंद्र-वंश का एक राजा था, जिसके नाम पर इस देश का नाम पड़ा। बुध से १०वीं पीढ़ी में गांधार थे। इनके पिता का नाम आरब्ध या अरुद्ध था। इन्हीं के वंशज सुबल महाभारत के युद्ध में वर्तमान थे। इनकी ही कन्या गांधारी महाराज धृतराष्ट्र को ब्याही थी।

पं० चिंतामणि विनायक वैद्य इसी गांधार से आर्यों का निकास मानते हैं। 'सिंधुपार का गांधार (क़ंधार) देश मुख्य आर्य-निवास था', इस समय इसका मुझे एक नया प्रमाण देख पड़ता है। वह यह कि उपनिषद् में एक जगह गांधार का एक दृष्टांत दिया है—"यदि किसी पुरुष को पकड़कर और उसकी आँखें बाँधकर बाहर दूर देश को ले जाकर छोड़ा जाय, तो वह तलाश करता हुआ गांधार को फिर जाता है।" इससे गांधार आर्यों का मुख्य निवास है।

प्रसिन्धुमच्छा बृहती मनीषा वस्युरद्य कुशिकस्य सूनुः।

(ऋग्वेद ३३ सू०)

निरुक्त में इसका इतिहास इस प्रकार कहा है—कुशिक का पुत्र विश्वामित्र सुदास राजा का पुरोहित बनकर विपाशा (व्यास) और शतद्रु (सतलज) के बीच में गया। उस समय विश्वामित्र ने इस सूक्त से नदियों की स्तुति की, इस कारण यह नदीसूक्त कहलाता है।

ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में हम सरस्वती के तट पर ऋषियों को यज्ञ करते हुए पाते हैं, न कि गंगा के निकट—

ऋषयो वै सरस्वत्यां सत्रमासत ते कवषमपयुप्तं सोमादनयन्।

दास्याः पुत्रो कितवोऽब्राह्मणः कथं नो मध्ये दीक्षिष्ठति .....ते वा ऋषयोऽब्रुवन् विदुर्वा इमं देवा।

(ऐ० ब्रा० द्वि० पं० प्र० तृ० खं० प्र०)

अर्थ—ऋषि लोग सरस्वती नदी के किनारे यज्ञ कर रहे थे। उस समय इलुशा नाम्नी शूद्र-कन्या का पुत्र कवष उनके बीच में आ बैठा। ऋषि लोग बोले, यह दासी का पुत्र जुवारी और अब्राह्मण है, हम लोगों के बीच में बैठकर यहं किस प्रकार दीक्षित हो सकता है। पुनः वे सब लोग बोले कि इसे देवता लोग भी जानते हैं।

यह कवष ऋग्वेद के दशम मंडल के ३० से लेकर ३४ तक के सूक्तों का ऋषि है, जो पंजाब ही का जान पड़ता है। महाभारत में सरस्वती के किनारे का देश सप्तसारस्वत कहलाता था—

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नमस्कृधि।

(ऋ० २। ४१। १६)

अर्थ—मातृगण में श्रेष्ठ, नदियों में श्रेष्ठ, देवों में श्रेष्ठ सरस्वति, हम दरिद्र हैं, हमें धनी करो।

जो मान इस समय गंगा को है, वही मान उस समय पंजाब की नदी सरस्वती को था।

ऋग्वेद के तृतीय मंडल में वसिष्ठ कहते हैं कि सरस्वती के दोनो किनारों पर पुरु लोग रहते थे।

इन्हीं का वंशज राजा पौरश (पुरु) होगा,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जिसका सिकंदर से युद्ध हुआ था। सरस्वती के उद्गम-स्थान को प्लक्ष और जहाँ यह गुप्त होती है, उसे विनशन कहते हैं।

पांडव लोग जब तीर्थ-यात्रा करते हुए सरस्वती के उद्गम-स्थान पर पहुँचे, तब इन्हें सारस्वत मुनि मिले।

श्रीमद्भागवत में लिखा है कि पराशर के पुत्र व्यासजी ने सरस्वती के किनारे बैठकर एक वेद के चार भाग किए, जिससे उनका नाम वेदव्यास पड़ा।

स कदाचित् सरस्वत्या उपस्पृश्य जलं शुचि ;
विविक्तदेश आसीन उदिते रविमण्डले।
चातुर्होत्रं कर्मशुद्धं प्रजानां वीक्ष्य वैदिकम् ;
व्यदधाद्यज्ञसन्तत्यै वेदमेकं चतुर्विधम्।

अर्थ—व्यासजी किसी समय शुद्ध सरस्वती-नदी में आचमन कर एकांत देश (स्थान) में बैठे थे। सूर्योदय हुआ। प्रजाओं के शुद्ध चातुर्होत्र वैदिक कर्म समझकर यज्ञार्थ एक वेद को चार भागों में विभक्त किया।

महाभारत में व्यासजी की जन्म-भूमि यमुना के निकट हस्तिनापुर में बताई गई है, तब यह नहीं समझ में आता कि वह क्यों स्वदेश को छोड़कर इतनी दूर पंजाब में विभाग करने सरस्वती के किनारे आए।

महाभारत-काल में सरस्वती राजपूताना की मरुभूमि में लुप्त हो चुकी थी। पांडवों ने तीर्थ-यात्रा करते समय उसे प्रयाग में नहीं देखा।

भारत

[कुमारी सावित्री श्रीवास्तव]

भाववल्लभ, भव्य भारत !
भूलकर निज ज्ञान - गौरव क्यों बने हो आप आरत ?
वेद, दर्शन, उपनिषद, गीता तुम्हारी संपदा है;
है सभी कुछ प्राप्य तुमको, भाग्य में पर क्या बदा है ?
क्यों विपुल वैभव गँवाकर हो गए हो आज गारत ?
कृष्ण को रटते सभी हैं, पर न उनकी क्रांतियों को,
थी मिली जिनसे विजय संसार में निष्कामियों को।
क्या नहीं है याद तुमको विश्व का वह महाभारत ?
कहाँ तक गिरते रहोगे भ्रांतियों में ही भटककर ;
डूबकर अज्ञान - तम में, रूढ़ियों में ही अटककर ?
चढ़ चलो उन्नति - शिखर पर हो तनिक तमहर प्रभा-रत।
हो परस्पर प्रेम जिससे, जातियों को एक कर दो;
व्यर्थ बंधन तोड़ दें, नर - नारियों में शक्ति भर दो।
कर्म ही से विजय होती, कर्मवादी, चतुर भारत !

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अभिभाषण

[जो महापंडित त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन द्वारा, बलिया-हिंदी-प्रचारिणी सभा के तेरहवें वार्षिकोत्सव पर, ता० १५ दिसंबर, १९३६ को, अध्यक्ष-पद से, दिया गया।]

भाइयो,

सबसे पहले मैं आप लोगों को हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो कि आपने मुझे यह सम्मान दिया। आपका दो-तीन साल पहले ही से इसके लिये आग्रह था। साल के कुछ ही महीने मैं भारत में रहता हूँ। इस अल्प समय में पुस्तकों के छपाने तथा प्रूफ़ आदि देखने का इतना काम सिर पर आ पड़ता है कि अवकाश का समय निकालना मुश्किल हो जाता है। फिर भी यदि बीमार न हुआ होता, तो शायद पिछले ही साल आप लोगों की सेवा में उपस्थित होता। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मैं इस साल आप लोगों की आज्ञा-पालन करने में समर्थ हुआ हूँ।

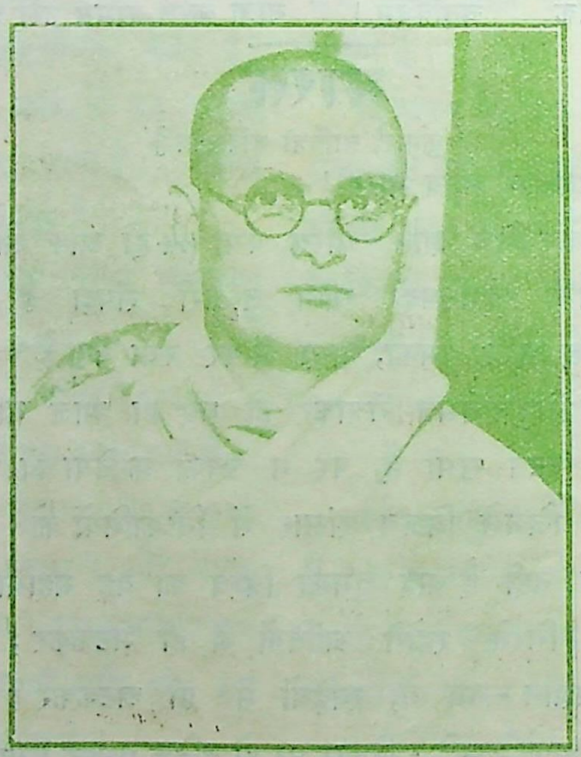

श्रीराहुल सांकृत्यायन

बलिया-ज़िले का जिस भाषा से संबंध है, उसे बोलनेवाली जाति इतिहास में एक बड़ा महत्त्व-पूर्ण स्थान रखती है। बुद्ध के समय इस भाषा की मातृस्थानीया भाषा मल्लों की भाषा थी, जिनका गणतंत्र छपरा, गोरखपुर तथा बलिया-ज़िले के भी कुछ भागों में फैला हुआ था। यद्यपि उस विशाल गणतंत्र की तीन सीमाएँ थीं, तो भी सरयू और गंडक की धाराओं में कुछ परिवर्तन हुआ है, जिससे वह सीमा जहाँ छपरा में कुछ बढ़ गई है, वहाँ बलिया के पूर्वी भाग में कुछ घट गई है, और आज जो आप छोटी सरयू, बड़ी सरयू नाम पाते हैं, वह उसी परिवर्तन को प्रकट करता है।

प्राचीन भारत में बुद्ध के समय और उसके बाद की कई शताब्दियों तक राजतंत्रों के साथ जगह-जगह कितने ही प्रजातंत्र, जिन्हें उस समय की भाषा में गणतंत्र कहा जाता था, स्थापित हुए। राजतंत्रों की अपेक्षा हमारे ये पुराने गणतंत्र वीरता में अधिक बढ़े-चढ़े थे। यद्यपि मौर्य, गुप्त-जैसे शक्तिशाली, सुसंगठित राजतंत्रों के सामने उन्हें झुकना पड़ा, और धीरे-धीरे वे अपने अस्तित्व को भी खो बैठे, तो भी उन गणों की वीरता उनके

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

निवासियों में शताब्दियों बाद क्या, अब तक कुछ अंशों में पाई जाती है। छपरा, बलिया, गोरखपुर-(जिनके सगे-संबंधी गंगा पार कर आरा पहुँचे) ज़िलों में आस-पास के और ज़िलों से लोग अधिक हिम्मतवाले होते हैं। यह बात हरियाना, पूर्वी राजपूताना तथा पंजाब के भी उन सभी भागों में पाई जाती है, जहाँ कभी यौधेय आदि गणतंत्र स्थापित थे। सर जार्ज ग्रियर्सन ने तो भोजपुरी भाषा को, जिसके लिये मैं मल्ली शब्द अधिक उपयुक्त समझता हूँ, बहादुरों की भाषा बतलाया है। आप 'लिंग्विस्टिक सर्वे' में लिखते हैं—

"Bhojpuri is the practical language of an energetic race who are ever ready to accomodate themselves with circumstances. The Bengalis and the Bhojpuris are the two great civilisers of Hindustan, the former with their pen and the latter with their cudgels."

अर्थात् "भोजपुरी एक बलाढ्य जाति की व्यावहारिक भाषा है, जो सदैव अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में तत्पर रहती है। बंगाली और भोजपुरी हिंदोस्तान को सभ्य बनानेवाली दो प्रमुख जातियाँ हैं, जिनमें पहली ने अपनी क़लम से और दूसरी ने अपने लट्ठ से काम लिया है।"

अतएव मल्ली-भाषियों को अधिक उद्योगशील होना आवश्यक है। और, मैं समझता हूँ कि इस प्रदेश के लोगों में उद्योगपरायणता और साहसमय जीवन की भी कमी नहीं है। पिछली शताब्दी से ही दक्षिणी अमेरिका के ब्रिटिश गायना, दक्षिणी आफ्रिका, मारिशस, फ़िजी-जैसे दूर-दूर देशों में बसकर यहाँ के निवासियों ने इसका भली भाँति परिचय दे दिया है। मानसिक योग्यता को भी यदि देखा जाय, तो संस्कृत विद्या के लिये तो उत्तरी भारत में मिथिला और मल्ल ये ही बड़े-बड़े पंडितों को पैदा करने की खानि आज तक हैं। गणित मस्तिष्क-संबंधी योग्यता की कसौटी है, और यदि आप आज भी यहाँ के विद्यार्थियों और अध्यापकों की इस विषय की प्रवीणता पर विचार करेंगे, तो मालूम होगा कि कम-से-कम उत्तरी भारत का तो यही गणित-क्षेत्र है।

मल्ली और काशिका दोनो ही भाषाओं को आधुनिक भाषा-तत्त्वज्ञ भोजपुरी के नाम से पुकारते हैं, और यद्यपि काशिका और मल्लिका के स्वरोच्चारण में कुछ भेद है, तो भी स्वभाव में दोनो ही भाषाओं के बोलनेवाले बहुत समानता रखते हैं। हाँ, आजकल इस भाषा के बोलनेवालों में हमें एक कमी अवश्य दिखलाई देती है, और वह है विशाल दृष्टि का अभाव। इसका एक परिणाम यह हुआ है कि यहाँवाले अपनी स्वाभाविक योग्यता से पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा पाते। साहित्य, दर्शन, विज्ञान, यात्रा, साहसमय कृत्य में यदि हम विशाल दृष्टिकोण को लेकर प्रविष्ट हों, तो बहुत कुछ कार्य कर दिखाएँ।

हिंदी की प्रगति

उन्नति और अवनति सापेक्ष शब्द हैं, अतएव जब हम हिंदी की उन्नति या प्रगति कहते हैं, तो वह किसी विशेष अवस्था की अपेक्षा ही से। चालीस वर्ष पहले हिंदी की जो अवस्था थी, उससे यदि हम आज की हिंदी की तुलना करें, तो उसका साहित्य हमें अधिक समृद्धिशाली दिखलाई पड़ेगा। वर्तमान शताब्दियों की प्रथम डेढ़ दशाब्दियों में हिंदी काफ़ी आगे बढ़ी थी; किंतु गत दो दशाब्दियों से तो उसकी गति और तीव्र रही है। इसका एक परिणाम यह हुआ है कि आज हिंदी-भाषा भारत की अन्य समृद्ध भाषाओं के सामने भी अपना मस्तक कुछ उन्नत कर सकती है। इस उन्नति के एक भाग कहानी और उपन्यास को इतना समृद्ध बनाने में जिस एक आदमी का सबसे अधिक भाग रहा है, अफ़सोस है, वह प्रेमचंद इस साल अपनी लेखनी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को अनंत विश्राम देकर चले गए। इस समय अपने चारो ओर जब हम नज़र दौड़ाते हैं, तो उनकी जगह लेनेवाले की तो बात ही क्या, उनके पास बैठने योग्य भी कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता; किंतु प्रेमचंद हमारे समाज की अंतःप्रेरणा के ही परिणाम थे, और वह अंतःप्रेरणा हमारे अंदर अब भी मौजूद है, जो हमें दूसरा प्रेमचंद देने में समर्थ होगी।

उपन्यास और कहानी-क्षेत्र में चाहे प्रेमचंद के टक्कर का दूसरा आदमी भले ही न हो, किंतु आज हिंदी की ऐसी अवस्था हो गई है कि हम एक दर्जन नामों को आसानी से उँगलियों पर गिन सकते हैं, जिनकी लेखनी में काफ़ी जोर है। इस क्षेत्र के लेखकों में हमें एक चीज़ की कुछ कमी मालूम होती है। वह है देश और काल के संबंध से संसार के आभ्यंतरिक और बाह्य रूप के विस्तृत ज्ञान की कमी। कभी-कभी हमारे ऐतिहासिक कहानी और उपन्यास-लेखक इतिहास के बहुत ही अधूरे ज्ञान से घटनाओं तथा पात्रों का चित्रण करते हैं। इसका एक परिणाम यह होता है कि लोग बड़ी-बड़ी भूलें कर बैठते हैं। किसी समय मैंने एक कहानी पढ़ी थी, जिसमें लेखक ने मौर्यकालीन घटनाओं को लेकर, कहानी लिखते हुए, पाटलिपुत्र के किसी पात्र का गुरु विक्रमशिला के किसी आचार्य को बनाया था। लेखक को इस बात का ख़याल ही न था कि जिस समय के चित्र को वह चित्रित कर रहा था, विक्रमशिला उससे ग्यारह सौ वर्ष बाद अस्तित्व में आई। हमें स्मरण रखना चाहिए कि देश की तरह काल-भेद से भी हमारी वेष-भूषा, खान-पान और बहुत-से सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवहारों में अंतर पड़ जाता है। ऐतिहासिक कहानियों तथा कथाओं में इस तरह की ग़लती लेखक के और सभी गुणों को फीकी कर देती है।

वर्तमान काल की घटनाओं को चित्रित करनेवाले लेखकों को भी देश की विभिन्नताओं तथा भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का ज्ञान आवश्यक है। प्रायः देखा जाता है कि हमारे लेखक, बाहर के देशों को कौन कहे, अपने ही देश के विभिन्न भागों का ठीक चित्रण नहीं कर पाते। यदि आप अँगरेज़ी, फ्रेंच तथा दूसरी भाषाओं की कहानियों को पढ़ें, तो आप देखेंगे कि उनका पात्र केवल इँगलैंड तथा फ्रांस में ही चक्कर नहीं काटता, बल्कि समस्त संसार में भ्रमण करता है। इन कहानियों में केवल प्राकृतिक विशेषताओं एवं दृश्यों का सुंदर चित्र ही नहीं होता, बल्कि विषय को रोचक बनाने के लिये उचित स्थान पर उन भाषाओं के कुछ शब्द भी रख दिए जाते हैं।

कविता

कविता की परख—विशेषकर दो-तीन सौ वर्ष से लेकर आज तक की हिंदी-कविताओं की परख—में मेरी बुद्धि इतनी असमर्थ है कि बाज़ वक़्त तो मुझे विश्वास होने लगता है कि मैंने वह दिल ही नहीं पाया है। हाँ, पुराने अश्वघोष, कालिदास या सरह-जैसे कवियों की कृतियाँ दिल को पसिजा देती हैं, और उस वक़्त यह भी मैं नहीं कह सकता कि मेरा चित्त इस विषय से सर्वथा चेतना-शून्य है। इतना होने पर भी आजकल जिन कविताओं को मैं कभी-कभी चाव से पढ़ा करता हूँ, वे वही हैं, जिन्हें लोग छायावादी कहकर बदनाम किया करते हैं। वे कवि जो पुरानी रूढ़ियों और चिर-बंधनों को तोड़कर कविता का नया प्रवाह बहाना चाहते हैं, मैं उन्हीं से कुछ आशा भी रखता हूँ। कविता में भावों के स्थान पर शब्दों की भरती करना सिर्फ़ छायावादियों का ही अपराध नहीं है। इस विषय में तो रूढ़िवादी उनसे कई क़दम आगे हैं। देश-काल का विशेष ध्यान न रखना कविता-क्षेत्र में भी वैसा ही पाया जाता है, जैसा कथा-क्षेत्र में। मैंने इधर एक ही कविता पढ़ी है, जिसमें एक दूर देश के रीति-रिवाज तथा प्राकृतिक दृश्य को अंकित करने की सफलता-पूर्वक चेष्टा की गई है। मैं पिछले

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साल ही ईरान से लौटा था, और 'नूरजहाँ' में उसका वैसा सुंदर तथा प्रामाणिक वर्णन पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। 'देव-पुरस्कार' के लिये उस समय जितनी पुस्तकें थीं, मैंने उन सबको थोड़ा-थोड़ा देखा था, और मैंने 'नूरजहाँ' को द्वितीय स्थान पर सिर्फ़ इसलिये रक्खा था कि इसमें कवि को जिस संस्कृति को चित्रित करने में इतना अधिक परिश्रम करना पड़ा, वह भारतीय संस्कृति की प्रतियोगिनी समझी जाती है, और स्वभावतः ही वह हिंदी-पाठकों को इस प्रतिकूल मनोभाव के कारण उतना आकृष्ट नहीं कर सकती थी। यदि 'नूरजहाँ' की जगह कवि ने किसी भारतीय नायिका को चुना होता, अथवा चंद्रगुप्त की रानी हेलेन या बप्पा रावल की ईरानी रानी को अपने काव्य का विषय बनाता, तो लोगों के हृदय को वह अधिक ग्राह्य होती।

गद्य-साहित्य में, पिछली दो दशाब्दियों में, जैसी उन्नति हुई है, कविता में वैसी नहीं हुई। तो भी 'दिनकर', 'भक्त', 'प्रसाद' और 'पंत' से हमें आशा ज़रूर हो चली है।

वैज्ञानिक साहित्य

वैज्ञानिक साहित्य में हिंदी अभी बहुत हीनावस्था में है। सच पूछिए, तो केवल हिंदी जाननेवालों को विज्ञान की कुछ बातें मासिक पत्रों ही द्वारा मिलती हैं। छोटी-मोटी कुछ पुस्तकें निकली हैं, लेकिन उनमें अधिकांश लेखक या तो बिना हज़्म किए ही लिखने बैठ गए हैं, अथवा अपने विषय को पाठकों के लिये सुपाठ्य और रोचक नहीं बना सके हैं। हिंदी-भाषा-भाषी अधिकारी विद्वानों का इधर अभी ध्यान नहीं है। डॉ० गोरखप्रसाद-जैसे एकाध विद्वानों को छोड़कर अभी किसी वैसे विद्वान् ने इस काम की ओर ध्यान नहीं दिया है। सर्वसाधारण के समझने लायक़ भाषा और भावों के साथ विज्ञान के हरएक अंग पर पुस्तकों का होना हिंदी में आवश्यक है। हिंदी में कितने ही ऐसे लोग हैं, और आगे भी रहेंगे, जो अँगरेज़ी द्वारा इन विषयों का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते। उनके लिये ऐसी पुस्तकें कितनी उपयोगी हो सकती हैं, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। एक बात और है। हिंदी को हमें समृद्ध और उन्नत बनाना है। विज्ञान आधुनिक जगत् की विशेषता है। वह हमारे जीवन के प्रत्येक अंग को नए साँचे में ढाल रहा है। ऐसी अवस्था में हिंदी का भांडार विज्ञान से अपूर्ण रहे, यह हमारे लिये श्रेयस्कर और उचित नहीं है। मैं पहले भी इस पर एक बार कह चुका हूँ, और फिर निवेदन करता हूँ कि इस त्रुटि को दूर करने के लिये एक अठन्नी या छ आनेवाली विज्ञान-ग्रंथमाला निकाली जाय, जिसमें अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथ ही प्रकाशित किए जायँ।

समाज-शास्त्र

समाज-शास्त्र पर हिंदी में विज्ञान की अपेक्षा अधिक पुस्तकें निकली हैं। इसके अंग—साम्यवाद, अर्थ-शास्त्र, इतिहास—पर कितनी अधिकारी लेखनियों ने काम आरंभ कर दिया है, और इन विषयों के लेखकों की संख्या प्रतिदिन बढ़ भी रही है। इसके संबंध में मैं इतना ही कह सकता हूँ कि इन विषयों के ज्ञान के लिये हमारे पास सामग्री का बिलकुल अभाव नहीं है।

दर्शन-शास्त्र

दर्शन-शास्त्र पर काफ़ी ग्रंथ लिखे गए हैं। प्रायः ये सभी भारतीय दर्शन और उसके भी एक-दो अंगों पर ही हैं। पश्चिमी तथा भारत के भी बौद्ध आदि दर्शनों पर ग्रंथों का एक तरह से अभाव है। फिर भी इस विषय में हम लोगों का अभिमान यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि दर्शन के संबंध में मनुष्य जहाँ तक सोच सकता है, भारत ने सोच लिया है, और अब उसमें आगे बढ़ने की गुंजायश नहीं। पिछली अर्द्ध-शताब्दी में योरप में मनोविज्ञान के विकास और उसके प्रयोगों ने कितने ही पुराने प्रश्नों के नए उत्तर दिए हैं, जिनसे हमारे सहस्रों वर्ष के पुराने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दार्शनिक विचारों में कितनी ही जगह संशोधन और परिवर्तन की आवश्यकता है; किंतु जिस प्रकार हम अपने पंचांग की त्रुटियों को हटाने के लिये आज भी तैयार नहीं हैं, उसी प्रकार इनमें भी हम कोई संशोधन करने के लिये तैयार नहीं हैं।

मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि दर्शन में हमें सबसे पीछे अग्रसर होने का अवसर मिलेगा। इसका कारण स्पष्ट है। बात यह है कि हमारे देश में दर्शन और धर्म से चोली-दामन का संबंध है, और आज भी धर्म हज़ारों मूढ़ विश्वासों तथा रूढ़ियों का सबसे बड़ा पोषक है।

कुछ त्रुटियाँ

हिंदी-साहित्य, विशेषतया आधुनिक साहित्य, अपने बाल्य-काल को छोड़कर यौवन की ओर अग्रसर हो रहा है। इसके प्रेमियों और पाठकों का क्षेत्र भी अब बहुत विस्तृत हो गया है, और उसमें वह समुदाय भी सम्मिलित होने लगा है, जो इसके पास तक आना अपनी शान के ख़िलाफ़ समझता था। ऐसी अवस्था में हमारे साहित्य के निर्माताओं का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। उनमें उच्छृंखलता की जगह संयम, हल्केपन की जगह गंभीरता, असहनशीलता की जगह सहिष्णुता और रूखेपन की जगह स्निग्धता लाने की आवश्यकता है। तीस वर्ष पहले कुछ मज़ाक़ हिंदी-पाठकों को भले ही भद्दे न मालूम होते हों; लेकिन आज उनका दोहराना कभी क्षम्य नहीं हो सकता। यदि हिंदी-साहित्य प्रगतिशील है, जो कि किसी भी जीवित जाति का प्रधान चिह्न है, तो ज़रूर वह ऐसे व्यवहार के प्रति अपना रोष प्रकट करेगा। उस रोष की शक्ति आरंभ में चाहे, क्षीण ही क्यों न हो, वह उत्तरोत्तर बढ़ती ही जायगी और भविष्य की जनता हमारे इस प्रकार के निम्न श्रेणी के भाव को अवश्य ही गर्हित समझेगी। इसमें एक और भी बात ध्यान में रखने की है। तीस वर्ष पहले हमारा साहित्यिक समाज एकांगी था। उसमें केवल पुरुष-ही-पुरुष थे। किंतु अब स्त्रियाँ भी इधर आने लगी हैं, और दिन-पर-दिन उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। ऐसी अवस्था में इस विषय की हमारी जवाबदेही और भी बढ़ जाती है। हमें सदैव अपनी कृतियों में संयम और सुरुचि का ख़याल रखना चाहिए, जिससे हमारा साहित्य समाज के लिये कल्याणकारी हो; किंतु इससे मेरा यह तात्पर्य कदापि नहीं कि साहित्य से 'ज़िंदादिली' निकाल दी जाय, और उसमें केवल मर्सियों ही को स्थान दिया जाय।

हिंदी साहित्य में आजकल स्त्रियों के प्रायः दो तरह के चित्र देखने में आते हैं। कहीं तो उन्हें ऐसा ऊपर चढ़ाया जाता है कि वे इस लोक की वस्तु ही नहीं रह जातीं, और कहीं वे मनुष्य के प्रलोभनों तथा भोग-विलास की सामग्री-मात्र बना दी जाती हैं; किंतु यदि विचार करके देखा जाय, तो उनका स्थान इन दोनो के बीच में है। केवल लिखने-मात्र से ही वे दिव्य लोक की प्राणी नहीं हो सकतीं। वे भी पुरुषों की तरह इसी लोक की जीव हैं। वे पुरुषों के भोग-विलास की सामग्री-मात्र भी नहीं हैं, बल्कि उन्हीं की तरह वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी रखती हैं, और वास्तव में इसी दृष्टि से साहित्य में उनका चित्रण भी होना चाहिए।

किसी समय कथाओं में अलौकिक घटनाओं का रखना आवश्यक था। वास्तविक जगत् से वे जितनी ही दूर होती थीं, उतनी ही वे महत्त्व-पूर्ण समझी जाती थीं; किंतु समय परिवर्तित हो गया है, और आजकल कोई भी कहानी या उपन्यास-प्रेमी ऐसी कथाओं को कभी पसंद नहीं करेगा। पुरुष और स्त्री के पारस्परिक संबंध के विषय में भी अभी हम वास्तविकता से बहुत दूर रहकर उन्हीं अलौकिक घटनाओं के युग में विचर रहे हैं। यह दोष केवल हिंदी में ही नहीं पाया जाता, यह तो संसार-व्यापक दोष है।

हिंदी-उर्दू

हिंदी-उर्दू का झगड़ा पुराना है। बीच में लोग

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसे भूल-से गए थे; लेकिन इस साल से फिर उसकी आवाज़ सुनाई देने लगी है। कुछ लोग इसके लिये बहुत लालायित हैं कि किसी तरह इसे दूर किया जाय। यदि हिंदी-उर्दू का झगड़ा किसी प्रकार दूर हो जाय, तो सबको प्रसन्नता होगी; किंतु इस झगड़े के कारण को अच्छी तरह से जाने बिना इसे शांत करने का प्रयास करना 'नीम हकीम खतरे-जान'-सा ही होगा। वास्तव में हिंदी-उर्दू के झगड़े का मूल कारण है दो संस्कृतियों का पारस्परिक झगड़ा। इनमें से एक भारतीय संस्कृति है, जो हिंदी की हिमायती है, दूसरी विदेशी संस्कृति है, जिसने अपने मूल रूप से बहुत-से अंशों में विकृत हो जाने पर भी, भारतीय संस्कृति से कभी सुलह करने की कोशिश नहीं की। उसने पहले तो भारतीय संस्कृति का नाम और निशान तक मिटा देना चाहा था; किंतु इसमें उसे सफलता न मिली। यह विदेशी संस्कृति असहयोग करके अलग ही रहती, तो उतनी कड़वाहट कभी न पैदा होती; किंतु उसका ध्येय तो हमेशा अपनी प्रतिद्वंद्वी संस्कृति पर प्रहार करने का रहा। जब भारतीय और अरबी संस्कृति का यही भाव गत सात सौ वर्षों से आज तक चला आ रहा है, तो किसी पारस्परिक समझौते की क्या आशा हो सकती है?

उर्दू के हिमायतियों में दो बातें देखी जाती हैं—एक तो अरबी-लिपि दूसरे अरबी-फ़ारसी-शब्दों के प्रयोगों की भरमार। वे इन दोनो में से एक को भी छोड़ने के लिये तैयार नहीं। अरबी-लिपि कितनी दोष-पूर्ण है, इसके कहने की आवश्यकता नहीं। अपनी अयोग्यता के कारण ही इस लिपि को तुर्की से निकलना पड़ा। गत बारह-तेरह सौ वर्षों से ईरान में भी इसी लिपि का बोलबाला है; किंतु जब से नवीन ईरान ने ईरानी ईरान की ओर नज़र फेरी है, तब से उसे भी अपने पूजनीय पुरुषों 'ज़रदुश्त', 'गुश्ताप', 'दारायोश' के नामों को इस लिपि द्वारा शुद्ध-शुद्ध लिखने में कठिनाई मालूम पड़ने लगी है। इसे दूर करने के लिये अभी से टिप्पणियों में रोमन अक्षरों में इन नामों को लिखने का रिवाज जारी हो गया है, और अब वह दिन दूर नहीं, जब इस लिपि को शीघ्र ही ईरान से भी तुर्की की तरह निकलना पड़ेगा। जिन देशों में यह लिपि संस्कृति का अंग मानी जाने लगी थी, उन देशों से भी, अपने दोषों के कारण, जब इसे निकलना पड़ा, तब भारत ऐसी दोष-पूर्ण लिपि को क्यों अपनाए?

भाषा

एक वृद्ध साहित्य-सेवी, जिनका उर्दू-समाज में बहुत ऊँचा दर्जा है, एक बार मुझसे कह रहे थे कि पिछले तीस वर्षों में जितनी अधिक संख्या में अरबी, फ़ारसी के शब्द—खासकर अरबी के शब्द—अधिकता से भरे जाने लगे हैं, उतने पहले न थे। मैंने कई बार उर्दू के अखबारों में आनेवाले शब्दों को गिना है, और कभी-कभी तो मुझे एक दर्जन शब्दों में मुश्किल से दो हिंदोस्तानी शब्द मिले हैं, और वे शब्द हैं विभक्ति और क्रियापद, जिनका हटाया जाना संभव ही न था। कहाँ तो ईरान की राष्ट्रीयता 'बिस्मिल्लाहिर्रहेमानर्रहीम' को पाठशाला की पुस्तकों से हटाकर 'बनाम खुदा बख़शिंदा व मेहर्बान' रख रही है, और कहाँ हमारे उर्दू-प्रेमी चिर काल से प्रयुक्त होनेवाले भारतीय शब्दों को भी अपनी भाषा से चुन-चुनकर निकालते जा रहे हैं। बाज़ वक़्त वे कह उठते हैं, "हमारी भाषा भी तो इसी देश की है।" मानो विभक्तियों और क्रियापदों को—जिन्हें हटाने में वे बिलकुल असमर्थ हैं—न हटाकर वे बड़ा एहसान करते हैं।

अरबी-भाषा की अपेक्षा फ़ारसी के शब्द हिंदी में अधिक आसानी के साथ लिए जा सकते हैं, क्योंकि ये दोनो भाषाएँ एक कुल की हैं। फ़ारसी और संस्कृत में भी संस्कृत ही हमारे अधिक नज़दीक है, अतएव हमें पहले संस्कृत के शब्दों ही की ओर झुकना चाहिए; किंतु यहाँ इससे विपरीत देखने में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आता है। 'खर', 'अंगुश्त'-जैसे सैकड़ों शब्द है, जिन्हें हमारे उर्दू-भक्त लोग बड़े चाव से प्रयुक्त करते हैं ; किंतु उनके ही भारतीय रूप 'खर' और 'अंगुष्ट' को पास तक नहीं फटकने देना चाहते। जब भारतीयता के प्रति उनका यह भाव है, तो हिंदी-उर्दू का झगड़ा किसी ऊपरी समझौते से मिट जायगा, इसकी कौन आशा कर सकता है ?

कुछ भाई अपनी निष्पक्षता दिखलाने के लिये यह भी कहने लगे हैं कि हमें हिंदी को न संस्कृत-शब्दों से भरना चाहिए, और न अरबी-शब्दों से। यह भी भारी भूल है। अरबी भारतीय भाषा नहीं है, और न जिस भाषा-वंश से भारतीय भाषाओं का संबंध है, उससे इसका संबंध ही है। इसके विपरीत संस्कृत हिंदी की जननी है। हिंदी की विभक्तियाँ और क्रियापद तक संस्कृत पर अवलंबित हैं। इस प्रकार यदि विचार करके देखा जाय, तो संस्कृत का यह स्वाभाविक अधिकार है कि वह हिंदी-कोष को अपने शब्द-कोष से भरे। हाँ, इसमें यह खयाल तो ज़रूर ही रखना पड़ेगा कि शब्द उतने ही परिमाण में लिए जायँ, जितने आसानी से हज़म हो सकें। कुछ लोगों का कहना है कि हमें क्या आवश्यकता है शब्दों को संस्कृत से लेने की ? हमें गाँवों की ओर चलना चाहिए। यदि आप तनिक विचार करें, तो यह बात भी हास्यास्पद ही होगी। भला, गाँवों से इस वैज्ञानिक युग के लिये अपेक्षित शब्द कहाँ से मिलेंगे ? किसी समय इसी धुन में मस्त एक पंजाबी सज्जन ने 'छात्रावास' का पर्याय "पढ़ा-कुआं दा कोट्ठा" बनाया था। वास्तविक बात तो यह है कि हमारे आज के प्रयोग के लिये अपेक्षित वैज्ञानिक शब्दों की प्राप्ति के लिये ग्राम की साधारण जनता की बोलचाल की शरण लेना तो वैसा ही है, जैसे मोटर के हलों और बिजली की कलों की शक्ति को बाबा आदम से चले आए हलों में ढूँढ़ना।

मल्ली-भाषा के बृहत् संग्रह की आवश्यकता

जो भाषा सहस्राब्दियों तक किसी जाति के भावों को प्रकट करने के लिये प्रयुक्त हुई है, उस पर उस जाति के इतिहास की भी बड़ी छाप रहती है। भोजपुरी-भाषा की मल्ली-शाखा के भीतर भी उसके बोलनेवालों के इतिहास की अनेक बातें निहित हैं। इस समय हम ऐसी अवस्था में पहुँच गए हैं, जब कि स्थानीय भाषाओं पर हिंदी का प्रभाव बड़े ज़ोर से पड़ रहा है, और वे बड़ी तेज़ी से विकृत होती जा रही हैं। जैसे-जैसे शिक्षा बढ़ती जायगी, वैसे-ही-वैसे इस प्रभाव का वेग भी बढ़ता जायगा, और कालांतर में 'मल्ली' हमारे इतिहास की कितनी ही आवश्यक सामग्री अपने में से खो बैठेगी। इस सामग्री को हमें उसी तरह सुरक्षित कर देना चाहिए, जिस तरह हम पुरातत्त्व और इतिहास की दूसरी सामग्रियों को सुरक्षित रखते हैं। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि मल्ली-भाषा का एक व्याकरण पहले की अपेक्षा अधिक पूर्ण और परिशुद्ध बन गया है। इसके लिये पं० उदयनारायण तिवारी एम्० ए० साहित्यरत्न हमारे धन्यवाद के पात्र हैं; किंतु अभी इसमें और काम करने की ज़रूरत है। हमें मल्ली-गीतों, कहानियों, कहावतों तथा भिन्न-भिन्न पेशों के शब्दों के एक बड़े संग्रह की अत्यंत आवश्यकता है। इसके विषय में विस्तार के साथ मैं एक लेख भी लिख चुका हूँ। यदि स्थानीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड इसमें थोड़ी आर्थिक सहायता और पूरी सहानुभूति प्रदान करे, तो यह काम बड़ी आसानी से हो सकता है। मुझे पूरी आशा है कि स्थानीय बलिया-बोर्ड इस काम को अपने हाथ में लेकर अन्य बोर्डों का पथ-प्रदर्शन करेगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

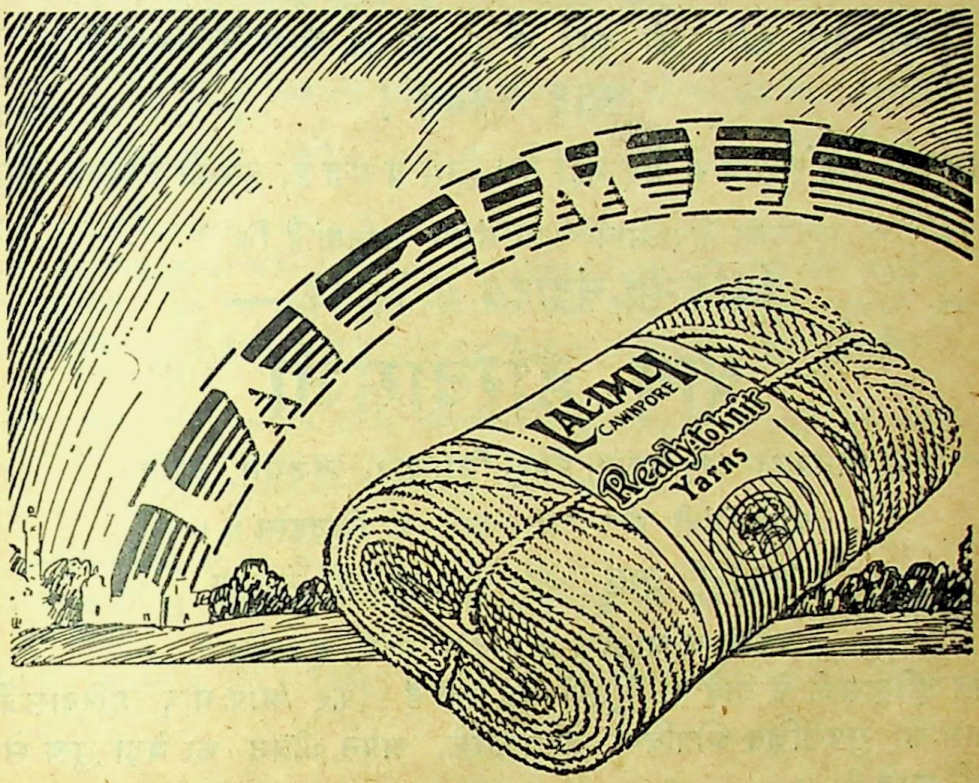

इंद्रधनुष के रंगों में

सब प्रकार की सिलाई की आवश्यकताओं के लिये हर प्रकार के आकर्षक रंगों और नमूनों के लिये लिखें——

TRADE MARK

दि कानपुर ऊलेन मिल्स, कानपुर

B. No 485H

लोकल एजेंट—

मेसर्स स्वदेशी भंडार

२६, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जिस तरह मरी हुई खाल से लोहा भस्म हो जाता है,
उसी तरह ग़रीब की आह से मनुष्य का नाश हो जाता है।

याद रक्खो !

शीघ्रपतन और नपुंसकत्व में भेद नहीं है। जिसे ये मर्ज़ हैं, उसकी ज़िंदगी बेकार है।

सारा हिंदी-भाषा-भाषी संसार जानता है कि

चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक—

बाबू हरिदासजी

शीघ्रपतन, नपुंसकता, प्रमेह, जिरियान, ध्वजभंग आदि
वीर्य-संबंधी रोग नाश करने में सिद्धहस्त हैं।

'बक़ौल' बाबू कामताप्रसादजी साहब
वकील व आनरेरी मैजिस्ट्रेट, बस्ती, यू० पी०

बाबू हरिदासजी के जोड़े का दूसरा वैद्य नहीं है। फिर आप बाबू हरिदासजी की ४० साल की सुपरीक्षित ओषधियाँ सेवन करके, अपने जीवन का बेड़ा सुख से पार क्यों नहीं करते ?

आप झूठे, धर्माधर्म का विचार न रखनेवाले, विज्ञापनबाज़ों की लच्छेदार बातों में फँसकर क्यों अपना धन और शरीर नाश करते हैं ?

तिला नामर्दी नं० १

सैकड़ों तिले बनाए, आज़माए, उन सबमें यही सबसे अच्छा निकला। इसके इस्तेमाल से बचपन की ग़लतियों से पैदा हुई सारी ख़राबियाँ दूर होती हैं। इसमें राई-भर शक नहीं कि यह नामर्दी को मर्द बनाकर संसार का सच्चा सुख दिखाता है।..... में सख़्ती और तेज़ी लाता है। थोड़े बाँकपन को भी दूर करता है। ज़्यादा बाँकपन के लिये दूसरी दवा दी जाती है। लंबाई और मुटाई थोड़ी बढ़ाता है। हर हालत में, पहले यही तिला लगाना चाहिए, ताकि नसों की ख़राबी जाती रहे। असली काम हो जाने पर, बाक़ी रहे काम भी हो जायँगे। कहिए, इतनी सच्ची बातें लिखनेवाले कौन-कौन से विज्ञापनदाता हैं ? सच पर चलना खाँडे की धार पर चलना है।

पूरी क़ीमत १५), पर मार्च तक आधी ७॥)

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

नोटिस सुबूत क़र्ज़ा

बअदालत जनाब मिस्टर शंकरलाल साहब बहादुर जज खक़ीफ़ा मेरठ
मुक़द्दमा नं० ७७ सन् ३६ दीवाला

१—पूरन वल्द शिवलाल
२—शिवलाल वल्द भैरों
व तहसील व ज़िला मेरठ

} अक़वाम खटिक साकिनान सदर बाज़ार कैंप मेरठ मोहल्ला नौनिया परगन

सायलान

बनाम

चूँकि पूरन वग़ैरह सायलान अदालत से ३० ऑक्टोबर १९३६ ई० को दीवालिए क़रार दिए जा चुके हैं लिहाज़ा जुमला कर्ज़ख्वाहान को बज़रिए इशाअत हाज़ा मुत्तिला किया जाता है कि बतारीख़ २५ फ़रवरी सन् १९३७ ई० को बवक्त १० बजे दिन के हाज़िर अदालत हाज़ा होकर अपना कर्ज़ा साबित कराओ। बसूरत अदम हाज़िरी व अदम तामील हुक्म कारवाई एकतरफा अमल में आवेगी और हुक्म मुनासिब सादिर फ़रमाया जावेगा।

आज बतारीख़ २० जनवरी ३७ ई० को मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसरिम

सम्मन वास्ते क़रारदाद उमूर तनक़ीहतलब
(ऑर्डर ५, क़ायदा १, ५)

मुक़द्दमा नं० ३५७ सन् १९३६ ई०

बअदालत जनाब मिस्टर केदारनाथ सिनहा साहब बहादुर डिस्ट्रिक्ट जज भदोही मुक़ाम ग्यानपुर (ज्ञानपुर बनारस स्टेट

लक्ष्मीनारायण उपाध्याय वल्द शिवप्रसाद उपाध्याय साकिन मौज़ा बेला मज़रा मौ० चौथार ज़िला भदोही मुद्दई

बनाम

विश्वनाथ उपाध्याय वल्द द्वारिका उपाध्याय साकिन बेला मज़रा मौ० चौथार ज़िला भदोही मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत दफ़्ल के दायर की है, लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २६ माह फ़रवरी सन् १९३७ ई० बवक्त १० बजे दिन पर असालन या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हाल से करार वाकई वाकिफ किया गया हो, और जो कुल उमूरात अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा क जवाब दे सके, या जिसके साथ कोई और शख्स हो, जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हो औ जवाबदेही दावा मुद्दई मज़कूर की करो, और तुमको हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ात को जिन प तुम बतौर्द अपनी जवाबदेही के इस्तदलाल करना चाहते हो, पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा तुम्हारी गैरहाज़िरी में मसम और फैसल होगा।

आज बतारीख २० माह नवंबर सन् १९३६ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुबरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब मिस्टर महेशचंद्र साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम ज़िला लखनऊ
मुक़द्दमा नं० २२४ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २३—४—३७ ई०

१—सत्यनारायण वल्द प्रयागदीन
२—जैनरायन वल्द सत्यनरायेन नाबालिग़ बविलायत सत्यनारायण पिदर

} साकिनान गोसाईंगंज परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ

सायलान

बनाम

श्यामबिहारी वल्द चंद्रिकाप्रसाद वैश्य साकिन मौज़ा नबीकोट नंदना परगना महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

फ़रीक़सानी

हरगाह कि सायलान मज़कूरेबाला ने दरख़्वास्त ज़ेर दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० गुज़रानी है, लिहाज़ा नोटिस हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट मज़कूर दिया जाता है कि जिस शख्स का क़र्ज़ा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा ज़ात व जायदाद सायल मज़कूरेबाला पर हो, वह अपना बयान तहरीरी तारीख़ मुश्तहरी नोटिस मजट से अंदर तीन माह अदालत हाज़ा में पेश करे। ऐसा न करने पर दरख़्वास्त मज़कूर गैरहाज़िरी में एकतरफा समाअत की जायगी।

CC0. Gurukul Kangri

भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक डॉ० शरच्चंद्र चटर्जी का

शरत्-साहित्य

सस्ते-से-सस्ते मूल्य में प्रचार करने की नई योजना !

चार भाग छपकर प्रकाशित हो चुके

पाँचवाँ और छठा भाग शीघ्र प्रकाशित होगा

छ भागों में १००० पृष्ठों का बिलकुल छोटे टाइप का श्रेष्ठ साहित्य

प्रत्येक भाग का मूल्य सिर्फ़ आठ आना

एक साथ छहों भाग लेनेवाले ग्राहकों के लिये मूल्य सिर्फ़ २॥)

डाक-ख़र्च बारह आने-सहित ३।) भेजिए ।

[चार भागों में सुमति, पथनिर्देश, काशीनाथ, अनुपमा का प्रेम, स्वामी, बैकुंठ का दान-पत्र, अंधकार में आलोक, चंद्रनाथ, तसवीर, दर्पचूर्ण, श्रीकांत (प्रथम पर्व) ये उपन्यास और कहानियाँ निकल चुकी हैं ।]

उर्दू-हिंदी-कोष

देवनगरी अक्षरों में उर्दू और उर्दू में व्यवहार किये जानेवाले फ़ारसी, अरबी, तुर्की, इबरानी, पुर्तगाली आदि भाषाओं के लगभग १२ हज़ार शब्दों का सरल हिंदी में प्रामाणिक और उपयोगी कोष गद्य, कविता, क़ानून और कचेहरी के शब्दों का विशाल संग्रह ; मूल्य बढ़िया जिल्द-सहित पुस्तक का २॥)

स्वर्गीय प्रेमचंदजी की अंतिम रचनाएँ

गोदान (उपन्यास) ४), **मानसरोवर** (प्रथम भाग) २)

मानसरोवर (द्वितीय भाग) २)

बाबू जैनेंद्रकुमारजी की कृतियाँ

परख १), बातायन १॥), एक रात १), सुनीता ३), दो चिड़ियाँ १), फाँसी ॥), स्पर्द्धा ।)

बड़ा सूचीपत्र मँगाइए ।

व्यवस्थापक—हिंदी-ग्रंथरत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग़, गिरगाँव, बंबई

१. वर्तमान नरेशों से

सेवा के हैं कैसे भाव, सेव्य ही बने हुए हो,
प्रेम की है चर्चा कैसी, आँख लगी शासन पै;
देश-द्रोही दानवों के दमन का दम कहाँ,
दम लेते नहीं ध्यान देते दीन-नासन पै।
'नवरत्न' साधु, द्विज, धेनुओं का त्राण कैसा,
प्राण जमता ही नहीं लोकों के त्रासन पै;
कहाते हो अवतार, आते ना उतर नीचे,
कलि के महीपो! चढ़े जाते हो सिंहासन पै।

गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

× × ×

२. गीत

विकल मुरझाती हृदय की कुमुदिनी जब सो रही है
ढाँककर सौंदर्य अपना कुछ अरुण-से आवरण से।
इस तमोमय शर्वरी में
एक लघु विधु-रश्मि बनकर
यह प्रतीक्षाकुल हृदय मम
आज छा लो प्राण! मेरे।
शुभ्र शर-सी सघन तम को चीरती
एक नूतन ज्योति का संचार हो,
पवन-आहत, मंद उद्वेलित, मधुर,
तरल, कोमल, वीचि-शय्या पर सरल
कुमुदिनी के संग करता केलि शशि का प्यार हो—
अंक में मृदु भार सौरभ का लिए।
प्रस्फुटित उर के मदिर से कुसुम का
हृदय-हास-कपोल-चुंबन कर रहा विधु-हास हो;
बनूँ विस्मृत,
दो घड़ी मैं भूलकर संसार को।

'स्नेह-रश्मि'

× × ×

३. 'दास'जी का शृंगार-वर्णन

भिखारीदास का नाम रीति-काल के कवियों में एक विशेष महत्त्व रखता है। आप ह्योंगा-ज़िला प्रतापगढ़ के निवासी थे। आपके पिता का नाम कृपालदास था। कृपालदास जाति के कायस्थ थे। दासजी के बनाए हुए 'काव्य-निर्णय', 'शृंगार-निर्णय' और 'छंदोर्णव' ग्रंथ अधिक प्रसिद्ध हैं।

CC0. Gurukul K... Collection.

भिखारीदास ने रीति के प्रत्येक अंग का वर्णन अपने ग्रंथ 'काव्य-निर्णय' में किया है। इसीलिये वह रीतिशास्त्र के आचार्य कहे जाते हैं। उनके 'काव्य-निर्णय' ग्रंथ से यह स्पष्ट हो गया है कि वह सोम-वंशी राजा हिंदुपति के आश्रित थे।

व्रजभाषा में दासजी का स्थान

दासजी की भाषा शुद्ध साहित्यिक व्रजभाषा है। यद्यपि लोगों का मत है कि बड़े-बड़े विशिष्ट कवियों में दासजी को स्थान नहीं मिल सकता, परंतु इतना तो सभी स्वीकार करते हैं कि रीति की भीति पर चलनेवाले अनेक कवियों में भिखारीदास श्रेष्ठ हैं। उनके 'संयोग-शृंगार' के कतिपय छंदों से यह भली भाँति स्पष्ट हो जाता है कि कवियों के भावों की छाया लेकर वह बड़ी सुंदर रचना कर सकते थे। परंतु उनका अध्ययन इतना विस्तृत न था कि स्वतंत्र भावों की कल्पना आद्यंत निभा सकते। इसीलिये उन्हें काव्य-दृष्टि से सफलता कम मिली है, तो भी उनके कई स्फुट छंद इतने सुंदर हुए हैं कि रसिकों के हृदय में दासजी का एक विशेष स्थान बन गया है।

दासजी का कथन है कि यदि प्रेम करना हो, तो दूध और पानी-जैसा प्रेम कीजिए। वास्तव में प्रेम का अंत तक निर्वाह करना बड़ा कठिन है। दूध और पानी की पारस्परिक संलग्नता को आपने निम्न-लिखित छंद में कितनी खूबी के साथ दिखाया है—

'दास' परस्पर प्रेम लखौ,
गुन छीर को नीर मिले सरसात है;
नीरै बिकावत आपने मोल
जहीं जहँ जायकै छीर बिकात है।
पावक जारन छीर लगै,
तब नीर जरावत आपनो गात है;
नीर की पीर निवारन कारन
छीर घरी-ही-घरी उफनात है।

सबेरा होते देख नायक अपनी नायिका को छोड़-कर जाना चाहता है। नायिका ने कहा—"आप कहाँ जाते हैं? अभी सवेरा नहीं हुआ। आपको धोखा हो रहा है। अभी लेटे रहिए, चिड़ियाँ नहीं बोलीं, ये तो मेरी चूड़ियाँ हैं, जो खनक उठीं।"—

दीपक-जोति मलीन भई नहिं,
भूषन-जोतिं की आतुरियाँ हैं;
'दासजू' कंज-कली न खिली,
यह मेरी गई खुलि आँगुरियाँ हैं।
सीत लगैं मुकता-लर तेऊ
कपूर की धूरि न सो पुरियाँ हैं;
पौढ़े रहौ पट ताने लला,
नहिं बोली अबै चिरियाँ, चुरियाँ हैं।

दासजी अपनी प्रियतमा के उरोजों को देखकर कहते हैं कि यद्यपि ये कमल के संपुट की तरह सुर्ख और सुंदर हैं, परंतु कड़े इतने हैं कि भाले की नोक की तरह गड़ जाते हैं। ये साक्षात् महादेव हैं। विभिन्नता इतनी है कि महादेवजी ने कामदेव का नाश किया है, और ये कामदेव को पैदा करते हैं। यथा—

कंज के संपुट हैं, पै खड़े
हिय में गड़ि जात ज्यों कुंत के कोर हैं;
मेरु हैं, पै हरि हाथ मैं आवत,
चक्रवती पै बड़ेई कठोर हैं।
भावती तेरे उरोजनि मैं गुन
'दास' लखे सब और-ही-और हैं;
संभु हैं, पै उपजावैं मनोज,
सुवृत्त हैं, पै पर-चित्त के चोर हैं।

नायिका अपने नायक से कहती है—"छेड़-खानी न करो, चले जाओ। अभी घर के सभी लोग जग रहे हैं, यदि मेरी झाँझें और चूड़ियाँ खनक उठेंगी, तो कल मेरी हँसी उड़ाई जायगी। अभी तो एक घरी ही रात बीती है, मुझे छोड़ दो, मैं भग-कर कहीं न जाऊँगी।"—

Digitized by eGangotri

झाँझरियाँ झनकैंगी खरी,
खनकैंगी चुरी तन को तन तोरे ;
'दासजू' जागती पास अली,
परिहास करैंगी सबै उठि भोरे।
सौंह तिहारी, हौं भाजि न जाउँगी,
आई हौं लाल तिहारेहि धोरे ;
केलि को रैनि परी है, घरीक
गई करि जाहु दई के निहोरे ।

एक सखी अपनी दासी से कह रही है—"आज तूने बड़ा बुरा किया कि किंवाड़े की ज़ंजीर खटखटा दी। मैं उस समय स्वप्न देख रही थी कि मेरे यहाँ कृष्णजी आए हैं। मैं उनसे मिलने को उठी ही थी कि तूने जगा दिया। क्या बताऊँ, मेरे हाथ से हीरा गिर गया, और मैं जैसी-की-तैसी रह गई। यथा—

मोहन आए इहाँ अपने,
मुसुकात-से खात बिनोद सों बीरो ;
बैठी हुती परजंक मैं हौ हू,
उठी मिलिबे कहँ कै मन धीरो।
ऐसे मैं 'दास' बिसासिनी दासी
जगाई डुलाय किंवार जँजीरो ;
झूँठो भयो मिलिबो ब्रजराज को,
एरी ! गयो गिरि हाथ को हीरो।

भक्त रसखान की तरह दासजी भी अपनी सखी से कहलाते हैं कि हे विधाता, यदि तुम हमें विरहाग्नि के बाण से मारते ही हो, तो इतनी मेरी भी मान लेना कि दूसरे जन्म में किसी प्रकार भी मुझे नंदकिशोर से अलग न करना। दासजी का यह छंद प्रियतम में अत्यधिक अनुराग का उत्कृष्ट उदाहरण है—

ए बिधि ! जौ बिरहागि के बान सौं
मारत हौ, तौ यहै बर माँगौं ;
जौ पसु होउँ, तऊ मरि कैसेहु
पाँवरी ह्वै प्रभु के पद लागौं।
'दास' पखेरुन में करौ मोर, जु
नंदकिसोर - प्रभा - अनुरागौं ;
भूवन कीजिए, तौ बनमालहिं,
जाते गोपाल - हिए महँ लागौं।

गुरुनारायण सुकुल

× × ×

४. निराशा की लहरों में

न होगा अब किसलय से प्रेम, न होऊँगा अब प्रकृति-विभोर ;
न भूलूँगा सुन कोकिल-गीत, न देखूँगा फूलों की ओर।
उषा का मदिर हास अवलोक नहीं होगा अब हृदय अधीर ;
लता - कुंजों में गुंज अबाध जगाएगा न भ्रमर अब पीर।
लुटाती कंचन निधियाँ खोल क्षितिज पर ऊषा आज उदार ;
अरुण की रक्त हँसी की ओट बिहँसता है क्यों यह संसार !
विश्व की चिनगारी उर बीच फूँक-सी रही प्रखरतम ज्वाल ;
हमारे उर के शोले आज रहे छा अंबर नील विशाल।
न फूलों में है यह मकरंद,
अरे, यह विष की भीषण बिंदु ;
उदधि में आँसू का जल क्षार,
गगन में अग्नि-वृंत-सा इंदु !

कपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्'

× × ×

CC0. Gurukul K

५. निरादृत नारी

नारी के निरादर का भयंकर परिणाम होता है। इससे बड़े-बड़े साम्राज्य तक नष्ट हो जाते हैं। इसीलिये प्रत्येक सभ्य-समाज में नारी के सम्मान पर विशेष बल दिया गया है। द्रौपदी के निरादर ने महाभारत और शूर्पणखा के अपमान ने रामायण का युद्ध कराया था। स्त्री तिरस्कृत होने पर कितना भयंकर रूप धारण कर सकती है, इसी का एक उदाहरण मैं आज योरप के इतिहास से देना चाहता हूँ।

फ्रांस देश की बात है। वार्शेल्ज़ के नीचे वन में बालक राजा और कार्डिनल की भतीजी मिली। उस समय चेस्टनट के पेड़ पुष्पों से लद रहे थे। हरे-भरे वृक्षों से जगह-जगह निकुंज बन रहे थे। बालक और बालिका दोनो वहाँ आँख-मिचौनी खेलने लगे। एक अद्भुत जगत् था। उन दोनो को कुछ-कुछ मालूम था कि कार्डिनल मेज़रिन प्रत्येक चीज़ की देख-भाल कर रहा है, फ्रांस को शक्तिशाली और सुदृढ़ बना रहा है, लुई के राजपद पाने का मार्ग साफ़ कर रहा है, और ओलिंपिया के लिये एक ऐसे भविष्य की व्यवस्था कर रहा है, जो उसे एक महान् स्त्री बना देगा। सन् १६५० का फ्रांस उन लोगों के लिये, जो उस पर शासन करते थे, एक बहुत अच्छा देश था।

क्या ही अच्छा होता, यदि बालक राजा न होता, और बालिका कार्डिनल की भतीजी न होती! उस दशा में वे विवाह कर सकते थे। परंतु जैसी अवस्थाएँ थीं, उनसे वे जानते थे कि बुद्धिमान् कार्डिनल ने उन दोनो के लिये कुछ और ही सोच रक्खा है। कभी-कभी लुई मन-ही-मन क्रोध से गुनगुनाता हुआ कहता कि राजपद के दैवी अधिकार से जिसके साथ भी मैं पसंद करूँ, विवाह करने की स्वतंत्रता मुझे प्राप्त है। ओलिंपिया उसे फुसलाकर, झाँसा देकर और सताकर उसकी उदासी दूर करती और प्रतिज्ञा करती कि चाहे जो भी हो, कोई भी चीज़ हमें देर तक एक दूसरे से अलग न रख सकेगी।

ओलिंपिया ने अपना वचन पूरा किया। कार्डिनल ने उसका विवाह कोंपट डी सॉयस्संस के साथ कर दिया। परंतु ज्यों ही विवाह-संस्कार समाप्त हुआ, वह भागकर अपने लुई की बग़ल में चली आई। उधर लुई विवाह का आनंद-मास (हनी मून) बीतते ही ओलिंपिया के साथ दीर्घ काल तक वास करने के लिये पैलेस डी सॉयस्संस में लौट आया।

अब कार्डिनल की मृत्यु हो गई, और लुई, १४वें लुई के नाम से, सब बातों में पूरा-पूर राजा बन गया। ओलिंपिया के प्रसन्नता-प्रसारक प्रभाव से दूर हो जाने के कारण लुई घमंडी, उद्धत और साथ ही दुर्बल हो गया। उसे उसकी कृपा-पात्र बनने की इच्छुक दूसरी सुंदरियों की प्रलोभन-भरी मीठी-मीठी बातों के सामने ठहरना कठिन जान पड़ा।

फिर भी वह कभी ओलिंपिया को छोड़ जाता था, और कभी फिर उसके पास आ जाता था। ओलिंपिया के बच्चे हुए। सभी को उसके पति ने अपना स्वीकार कर लिया। परंतु एक बच्चा ठिगना था, और बाक़ी सबकी अपेक्षा दुर्बल था। उसे यूजीन कहते थे। वह लुई का था। ओलिंपिया ने कभी राजनीतिक प्रभाव की अभिलाषा नहीं की। वह लुई से इसलिये प्रेम नहीं करती थी कि वह राजा है। वह राजा के बजाय कोई घसियारा होता, तो भी वह उससे प्रेम करती। वह ऐसी ही स्त्री थी। फिर भी दूसरी सौतों के सामने उसे अपने अधिकार में रखना ओलिंपिया के लिये दिन-पर-दिन कठिन होने लगा। वह प्रचंड-से-प्रचंड उच्छृंखलताओं से काम लेने लगी। उसने परीक्षा करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिये उसके निमित्त नवीन-नवीन प्रकार के भोजन निकाले। उनमें से एक ज़ेतून का रायता था। एक ज़ेतून लेकर एक बटेर के पेट में भर दिया जाता था, और बटेर को कबूतर के पेट में ठूँस दिया जाता था। फिर कबूतर को चूज़े के पेट में रख दिया जाता था, और चूज़े को सुअर के बच्चे के पेट में। फिर सुअर के बच्चे को भेड़ के पेट में और भेड़ को बैल के पेट में। तब बैल को धीरे-धीरे भूना जाता था, जिससे ज़ेतून सभी मांसों के रसों को चूस लेता था।

केवल ज़ेतून ही खाया जाता था। ऐसे तैयार किए हुए पंद्रह-बीस ज़ेतून लुई को लुभाकर पैलेस डी सॉयस्संस में खींच लाते थे। एक बार वहाँ पहुँच जाने पर ओलिंपिया की चमकती हुई काली आँखें, गोल मुखमंडल और निर्दोष बाहु-पाश उसे और ओलिंपिया दोनो को प्रेम-रस में विभोर कर देता था।

परंतु जब वह चला गया, तो ओलिंपिया समझ गई कि वह मेरे हाथ से निकल गया। इस पर वह अति साहसिक हो गई।

एक दिन उसके सिर में जो पागलपन समाया, तो उसने एक दूसरी रखेल स्त्री के साथ लुई की साँठ-गाँठ का हाल ऐसे अक्षरों में रानी के पास लिख भेजा, जो पहचाने नहीं जाते थे। परंतु लुई ने पहचान लिया कि यह ओलिंपिया ने ही लिखा है। बस, ओलिंपिया का भाग्य फूट गया। ओलिंपिया ने लुई को मूर्ख प्रकट करने की चेष्टा की थी, और लुई को यही बात सबसे अधिक बुरी लगती थी।

उसने ओलिंपिया को दरबार से निकाल दिया। ओलिंपिया ने बहुतेरी मिन्नत की, परंतु उसने एक न सुनी। ओलिंपिया ने अपने को जोखिम में डालकर भी उससे मिलने का यत्न किया। उसे विश्वास था कि यदि वह केवल एक क्षण के लिये भी मेरे साथ बातचीत कर लेगा, तो सब मनोमालिन्य दूर हो जायगा। अंत को वर्सेलाई के नीचे वन में उसने लुई को पकड़ लिया, और अपने हृदय का दबा हुआ सारा उबाल निकालते हुए गिड़गिड़ाकर कहा—"महाराज! मेरी बिनती है। क्या आप व्यर्थ ही मेरे बाहु-पाश में आबद्ध होते रहे और मुझसे उल्लास की माँग करते रहे हैं? क्या व्यर्थ ही मेरी छाती आपको तकिए का काम देती रही है? मैं इतना ही चाहती हूँ कि अतीत की मधुर स्मृति में मुझे आपकी सेवा से वंचित न किया जाय। उस अतीत के सिवा अब मेरे पास और कुछ नहीं रह गया है।"

लुई का हृदय नहीं पसीजा। वह अभी तक क्रुद्ध था। उसका हृदय अभी तक दुःखित था। वह महाराजा होने के घमंड में था। वह बिना बोले ही मुँह फेरकर चला गया। यदि वह उस पर कटु शब्दों की बौछार कर देता, तो उससे ओलिंपिया का हृदय उतना घायल न होता, जितना उसकी रूखी, घृणा-पूर्ण दृष्टि से हो गया। यदि उस घाव से ओलिंपिया का प्रेम मर जाता, तो योरप बाद को अधिक शांति के साथ रह सकता। प्रेम न मरा, वरन् मरोड़ा जाकर, एक भद्दी-सी चीज़ बन गया। ओलिंपिया की अब केवल एक ही आकांक्षा थी, और वह यह कि जैसे भी हो, लुई को हानि पहुँचाई जाय, महाराजा का मान मर्दन कर दिया जाय। निरादृत नारी की प्रचंडता के साथ ओलिंपिया ने बदला लेने का यत्न किया। वह आप तो कुछ न कर सकती थी, परंतु उसके पास उसकी संतान थी। उसकी लड़की यूरेनिया थी, और सबसे बढ़कर यूजीन था, जो उसके पेट से लुई का अपना पुत्र था।

पहली कटु-मधुर विजय अप्रत्याशित रूप से मिल गई। यद्यपि अब वह उससे नहीं मिलता था, परंतु उसकी याद नहीं छोड़ सका था। यूरेनिया

CC0. Gurukul K

जवान हो गई थी। वह उस पर आसक्त हो गया। वह अब विधुर था। उसने उससे रानी बनने की प्रार्थना की। उसे इस बात का कभी विचार तक न आया था कि वह इनकार कर देगी। परंतु उसने इनकार कर दिया। न चापलूसी से और न धमकियों से ही वह राज़ी हुई। योरप के राजे-महाराजे इस पर मुँह दबाकर हँसने लगे। महाराजा को उल्लू बना दिया गया।

राजा का रोष ओलिंपिया पर गिरा। उसने उसकी तुरंत गिरफ़्तारी की आज्ञा दे दी। ओलिंपिया भागकर ब्रुसेल्स चली गई। यूजीन अभी तक फ्रांस में था। वह सिपाही बनना चाहता था। किंतु राजा ने उसे पादरियों के मठ (मॉनस्टरी) में पढ़ने के लिये भेज दिया। तो भी ओलिंपिया ने गुप्त रूप से उसकी सैनिक-शिक्षा दिला दी।

अठारह वर्ष की आयु में यूजीन पादरियों के मठ से भागकर अपनी माता के पास चला आया।

उसने कहा—"मैंने सिपाही बनने का निश्चय कर लिया है।"

माता ने परामर्श दिया—"तो तब राजा से जाकर कहो।"

यूजीन राजा के पास पहुँचा। राजा देर तक तो कुछ बोला ही नहीं, फिर उसने एक रूखी एवं तिरस्कार-पूर्ण दृष्टि अपने ठिगने पुत्र पर डाली, और चपरासियों को आज्ञा दी कि इसे मेरी आँखों से दूर ले जाओ। उसने यूजीन से एक शब्द तक नहीं कहा।

इस पर ओलिंपिया के क्रोध की सीमा न रही। उसने सोच लिया कि अब मुझे क्या करना चाहिए। उसने आस्ट्रिया की सेना में यूजीन को कर्नल का पद दिला दिया। उसका अभी तक प्रबल प्रभाव था। उसके इस प्रभाव के कारण यूजीन को अनुभव और पदोन्नति, दोनो प्राप्त हो गए। इकतीस वर्ष की आयु में वह फ़ील्ड-मार्शल बन गया।

चालीस वर्ष की आयु में यूजीन आस्ट्रिया की सेनाओं का कमांडर नियुक्त हुआ। फ्रांस और आस्ट्रिया में युद्ध छिड़ गया। यूजीन ने निरंतर बहुत-सी लड़ाइयों में विजय प्राप्त की। प्रत्येक लड़ाई के बाद वह उसका समाचार अपनी माता को लिख भेजता था। जब तक वह जीती रही, किसी दूसरी स्त्री का यूजीन के जीवन में प्रवेश नहीं हुआ। माता और पुत्र अपने पत्र-व्यवहार में खुल्लम-खुल्ला हृदय की सब बातें लिख दिया करते थे। एक पत्र में ओलिंपिया ने लिखा था—"मैं उस दिन की आशा में जी रही हूँ, जब फ्रांस का महाराजा तुमसे दया की भिक्षा माँगेगा।"

सचमुच एक दिन ब्रुसेल्स में ओलिंपिया के पास लुई का दूत पहुँचा। उसने उससे वापस चलने को कहा।

अब चाहती, तो ओलिंपिया विजय के उल्लास से फूल सकती थी। महाराजा का सारा गर्व सचमुच खर्व हो चुका था। निरादृत नारी अब विजयी नारी थी। परंतु ओलिंपिया उल्लास से फूली नहीं।

जल्दी ही यूजीन ने इँगलैंड के मार्लबरो के साथ मिलकर फ्रांस की शक्ति को अंतिम रूप से कुचल डाला। अब लुई ने संधि के लिये प्रार्थना की। विजय प्राप्त करते ही यूजीन अपनी माता के पास चला गया। पंद्रह दिन दोनो बड़े सुख से इकट्ठे रहे। इसके बाद ओलिंपिया की मृत्यु हो गई।

मृत्यु से पूर्व निरादृत नारी ने एक बड़े महाराजा से अपने निरादर का बदला ले लिया। सचमुच नारी में प्रतिहिंसा की अनुपम शक्ति है।

संतराम (बी० ए०)

× × ×

६. मेरी

परिचय है संक्षिप्त यही अपनी—हा ! हुई बिरानी का;
यही सार है बस मेरे जीवन की करुण कहानी का।
भय-आपूरित, विकलित जग की व्यथा-कथा सुनते-सुनते,
यौवन के पहले प्रभात में शीश स्वयं धुनते-धुनते,
आशा का उद्यान खिलित था, प्रेम-पुष्प चुनते-चुनते,
मैं आ पहुँचा रश्मि-राशि-मिष अविरल गुण गुनते-गुनते।
आँख उठाई जो ऊपर, तो थी यौवन की दोपहरी;
हृदय और मस्तक में मेरे घूम रही प्रिय - स्मृति - प्रहरी।
मैं अल्हड़ माली, न मुझे था हार गूँथने का कुछ ज्ञान;
कोमल हृदय कुसुम का कैसे बेधूँ, था इसका भी ध्यान।
छिदा हुआ है उर अपना, यह था मुझको अनुभव-आधार;
सोच-सोचकर अस्तु किया नव अश्रु - हार मैंने तैयार।
हुआ इधर संपूर्ण ध्येय, तो था जीवन का सायंकाल;
चुपके-ही-चुपके पग धरता पीछे से आ पहुँचा काल।
मुझे तनिक था ज्ञात नहीं, मैं था निमग्न प्रिय-चिंतन में;
पुष्प और कर की माला पहनाऊँगा आलिंगन में।
था विचार कर रहा इधर प्रिय को माला पहनाने का,
काल कर रहा था प्रबंध पर मुझे शीघ्र ले जाने का।
दृष्टि फिरी, तो मैंने देखी अंतर्ज्वाला फिर भारी;
भड़क उठी थी लगी समय पा अंतस्तल की चिनगारी।
मैं कहता था—"एक बार तो अश्रु - हार पहनाने दे;"
वह कहता था—"भूल-भूल, अब उन बातों को जाने दे।"
बीत गया दिन इस विवाद में, फैली रात सर्वव्यापी;
फिर मैंने भी बेमन से उस जग की पगडंडी नापी।
क्षण-भंगुर जग के अस्थिर जीवन में आशा बड़ी - बड़ी
करते; समय भूल जाता है जन निज अंतिम हाय! घड़ी।
स्नेह-सुधा-सिंचित धारा थी जिसकी वह स्वर्गिक मुसकान,
किया विदेह पूर्ण ही जिसने, वेध दिए थे मेरे प्राण,

उसके कोमल बाहु - पाश में आलिंगन - चुंबन होगा,
सुखकर बातें, रंगरेलियाँ, प्रियतम-प्रिया-मिलन होगा।
जहाँ बह रहा था कल आशा का झरना अविरल, झर-झर,
वहाँ अश्रु टप-टप गिरते रहते हैं निशि - दिन, आठ पहर।
शस्य-श्यामला भू आशा की अब नीरस मरु - भूमि बनी;
भाग्य - विधाता निठुर हुआ है, सूम हुआ है प्रेम धनी।
अंतस्तल के अवशेषों को एकत्रित करता जग आज;
एक 'कहानी' रह जाती है सजती है जो स्मृति का साज।
सुनते - सुनते करुण कहानी जाते हैं—लाचारी है;
कोई कल चल दिया, किसी की आज हुई तैयारी है।
तुम भी आभारी होना, देवी ! 'प्रेमी' आभारी है;
अच्छा, छोड़ कहानी जाता, आई मेरी बारी है।

लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी'
(बी० ए०, विशारद)

× × ×

७. साहित्य में सातवें सवार

गत आषाढ़ की 'सुधा' में 'काव्य में शब्द-प्रयोग की ग़लतियाँ'-शीर्षक मेरा एक नोट निकला था, जिसे देखकर महादेवप्रसादसिंहजी-नामक सज्जन बहुत बिगड़े हैं।

आपने मुझे लक्षणा और व्यंजना समझाने की कृपा की है, और काव्य का मर्म भी समझाया है। एतदर्थ मैं आपका ऋणी हूँ, और जन्म-जन्मांतर रहूँगा। पाठकों से यही निवेदन है कि वे कृपा कर आषाढ़ की 'सुधा' में मेरा वह नोट एक बार फिर पढ़ लें, और उसके बाद महादेवप्रसादसिंहजी का यह मुझे दिया हुआ सदुपदेश भी पढ़ें, जो इसी कार्त्तिक की 'सुधा' के चयन में 'काव्य में शब्द-प्रयोग की ग़लतियाँ'-शीर्षक से ही निकला है। मुझे विश्वास है, पाठकों को अपनी यह धारणा बदलनी पड़ेगी कि हिंदी-क्षेत्र में साहित्य के उच्च कोटि के विद्वानों की कमी है। ऐसे न-जाने कितने रत्न छिपे पड़े हैं ! शतशः प्रणाम, हे साहित्य-शास्त्र के सूर्य !

किशोरीदास वाजपेयी

× × ×

८. लखनऊ-प्रदर्शनी में ललित कला

मालूम होता है, बंगालियों के 'वेजिटेबिल प्रॉडक्ट्स' या 'तरकारी-साग' को ही अब ललित कला कहकर हमारे ऊपर ज़बर्दस्ती लादा जा रहा है। बंगाली-कमेटी और बंगाली मंत्री के हाथ में पड़कर युक्तप्रांतीय सरकार के इस ललित कला-विभाग में भी भिंडी, तोरई, पालक के पत्ते और सेम के बीज या लौकी-कुम्हड़ों के संघात का—जिसे बंगाली लोग बड़े अभिमान से बंगाली स्कूल ऑफ़् आर्ट्स कहकर अभिनंदन करते हैं—बाहुल्य-सा हो गया है। युक्तप्रांतीय चित्रकारों का जान-बूझकर उपेक्षा-बहिष्कार-सा किया गया है। युक्तप्रांतीय चित्रकारों को जो स्थान दिए गए हैं, वे ऐसे ऊट-

अवसर न खोइए !

केवल ३ मास के लिये

५) की पुस्तकें ३) में

चुनिए, छाँटिए और आज ही ऑर्डर भेज दीजिए

१. उपन्यास

कर्म-फल (सचित्र)—मूल-लेखिका, मेरी कॉरेली; अनुवादक, प्रोफ़ेसर बैजनाथ कोठी; मूल्य १॥),२)

कर्म-मार्ग—अनुवादक, श्रीदुर्गाविनायकप्रसाद एम्० ए०, एल्-एल्० बी० मूल्य १॥), २)

कुंडली-चक्र—लेखक, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, ऐडवोकेट; मूल्य १), १॥)

क़ैदी—अनु०, श्रीऋषभचरण जैन; मूल्य १), १॥)

कोतवाल की करामात—लेखक, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, ऐडवोकेट ; मूल्य १), १॥)

गिरिबाला (सचित्र)—लेखक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट; मू० १), १॥)

जुझार तेजा (सचित्र)—लेखक, मेहता लज्जाराम शर्मा ; मूल्य ॥), १)

पतन (सचित्र)—लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य १॥), २)

पवित्र पापी (सचित्र)—अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार ; मूल्य ३), ३॥)

पाप की ओर—अनुवादक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्०बी ; मूल्य १), १॥)

प्रतिमा (सचित्र)—लेखक, श्रीपं० गोविंदवल्लभ पंत ; मूल्य १॥), २)

प्रेम की भेंट—लेखक, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, ऐडवोकेट ; मूल्य १), १॥)

प्रेम-परीक्षा—मूल-लेखिका, मेरी कॉरेली; अनुवादक, श्रीपशुपाल वर्मा; मूल्य ॥=), १=)

बिदा (सचित्र)—लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी०ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य २॥), ३)

भाग्य—लेखक, श्रीऋषभचरण जैन; मूल्य १), १॥)

मदारी (सचित्र)—लेखक, पं० गोविंदवल्लभ पंत; मूल्य १॥), २)

मँगाने का पता—मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

नोट—५) से कम के ऑर्डर पर यह रिआयत न मिलेगी। ऑर्डर पर 'रिआयती, ऑर्डर' अवश्य लिखें।

मृत्युंजय—लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी; मूल्य ।।।), १)
मा—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'; मूल्य ३), ३।)
विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य १), १॥)
विजया (सचित्र)—मूल-लेखक श्रीशरच्चंद्र चट्टोपाध्याय; अनु०, पं०रूपनारायण पांडेय; मू० १।), २)
बिराटा की पद्मिनी (सचित्र)—लेखक, बाबू वृंदावनलालजी वर्मा ऐडवोकेट; मूल्य २॥), ३)
संसार-रहस्य अथवा अधःपतन—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥), २)

२. गल्प और कहानियाँ

अक्षत (सचित्र)—लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री; मूल्य १), १॥)
चित्रशाला (सचित्र, दो भाग)—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' मूल्य ३।), ४)
जासूस की डाली (सचित्र)—लेखक, बाबू गोपालराम गहमरी, जासूस-संपादक; मू० १॥), २)
तूलिका (सचित्र)—लेखक, श्रीविनोदशंकरजी व्यास; मूल्य १।), १॥)
नाट्य-कथाऽमृत (सचित्र)—लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए० एल्० टी०; मूल्य १), १॥)
प्रेम-गंगा (सचित्र)—अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा; संपादक 'हिंदूपंच'; मूल्य १), १॥)
मंजरी (सचित्र)—अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १।), १॥)
वाटिका (सचित्र)—लेखक, पं० अमृतलालजी नागर; मूल्य ।), ॥=)
संध्या-प्रदीप—लेखक, श्रीगोविंदवल्लभ पंत; मूल्य १), १॥)

३. नाटक

आहुति अथवा जयपाल—अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)
उत्सर्ग—लेखक, श्रीचतुरसेनजी शास्त्री; मू० ।=), ।॥)
कर्बला—लेखक, स्व० श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १।), २)
कृष्णकुमारी (सचित्र)—लेखक, पं०रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)
कीचक—लेखक, श्रीभगवन्नारायण भार्गव बी०ए०, एक्स्-एम्० एल्० सी०; मूल्य १।), १॥)
खाँजहाँ (सचित्र)—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १=), १॥=)
पतिव्रता (सचित्र)—अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १।=), १॥।=)
प्रबुद्ध यामुन—ले०, श्रीवियोगी हरि; मू० १), १॥)
शकुंतला—अनु०, राजा लक्ष्मणसिंह, मू० ।॥), १)
समाज या अछूतोद्धार—लेखक, श्रीघनानंद बहुगुणा एम्० ए०; मूल्य ।॥=), १।=)
सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन (सचित्र)—अनुवादक, श्रीठाकुर लक्ष्मणसिंह वकील; मूल्य ॥), १)

४. व्यंग्य, हास्य और प्रहसन

अचलायतन—मूल-लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय; मूल्य ॥), १)
प्रायश्चित्त-प्रहसन—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य =), ।-)
मध्यम व्यायोग—लेखिका, श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल; मूल्य =), ।)
मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, स्वर्गीय पंडित शिवनाथजी शर्मा बी० ए०; मूल्य २॥), ३)
रावबहादुर—मूल-लेखक, मौलियर; अनुवादक, पं० लल्लीप्रसाद पांडेय; मूल्य ।॥), १)
लबड़धोंधों (सचित्र)—लेखक, स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य ।॥), १)
विवाह-विज्ञापन (सचित्र)—ले०, स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य १), १॥)

५. काव्य

आत्मार्पण (सचित्र)—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र'; मूल्य ।॥), १)
उषा (सचित्र)—लेखक, स्व० श्री शिवदास गुप्त 'कुसुम'; मूल्य ॥=), १=)
दुलारे-दोहावली—लेखक, सुधा-संपादक पं०दुलारेलाल भार्गव; मूल्य ॥), १), १॥)
देव-सुधा—लेखक, मिश्रबंधु; मूल्य १), १॥)
पराग (सचित्र)—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥), १)
भारत-गीत—लेखक, कवि-सम्राट् स्व० पं० श्रीधर पाठक; मूल्य ।॥=), १=)
मधुवन—लेखक, श्रीआनंदकुमारजी; मू० १), ।=)
रति-रानी—लेखक, 'सुहृत्त्रय'; मूल्य १।॥), २)
लतिका—लेखक, श्रीगुलाबरत्नवाजपेयी; मू० १), १॥)

Digitized by eGangotri

नोट—५) से कम के ऑर्डर पर यह रिआयत न मिलेगी। ऑर्डर पर 'रिआयती ऑर्डर' अवश्य लिखें।

६. साहित्य

प्रबंध-पद्म—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'; मूल्य १), १॥)

विश्व-साहित्य—लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीयुत दुलारेलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए०; मूल्य १॥), २)

साहित्य-संदर्भ—ले०, आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १॥), २)

सौंदरानंद महाकाव्य—प्रणेता, अध्यापक रामदीन पांडेय एम्० ए०; मूल्य ॥), १)

संभाषण—लेखक, पं० दुलारेलालजी भार्गव; मूल्य ।), ॥)

७. समालोचनाएँ

कवि-कुल-कंठाभरण—लेखक, पं० प्रतापनारायण मिश्र और शुकदेवबिहारी मिश्र; मूल्य ॥), १)

नैषध-चरित-चर्चा—लेखक, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य ।॥), १।)

भवभूति—अनुवादक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० उमादत्त शर्मा; मूल्य ॥=), १=)

८. जीवन-चरित्र

अयोध्यासिंह उपाध्याय मूल्य =), ।-)

केशवचंद्र सेन—ले०, भारतीय हृदय; मू० १), १॥)

द्विजेंद्रलाल राय—लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; मूल्य =), ।-)

देश-हितैषी श्रीकृष्ण—लेखक, स्वर्गीय पं० राधाचरण गोस्वामी; मूल्य -), =)

प्राचीन पंडित और कवि—ले०, आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य ॥=), १।=)

सम्राट् चंद्रगुप्त—ले०, पं० बालमुकुंद वाजपेयी; मूल्य ।), ।=)

९. इतिहास

इँगलैंड का इतिहास (तीन भाग, सचित्र)—ले० डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, पी-एच्० डी०; (उर्दू-हिंदी पृथक्) मूल्य ३॥), ४)

१०. कृषि

उद्यान (सचित्र)—ले०, श्रीशंकरराय जोशी एग्रिकल्चरल ऑफ़िसर; मूल्य १=), १॥=)

गेहूँ की खेती (सचित्र)—लेखक, श्रीबी० एस्० निगम; मूल्य १), १॥)

११. स्वास्थ्य और चिकित्सा

तात्कालिक चिकित्सा (सचित्र)—लेखक, बाबू लालबहादुरलाल; मूल्य १), १॥)

प्राकृतिक स्वास्थ्य—लेखक, श्रीठाकुरदासजी; मूल्य ॥), ॥=)

ब्रह्मचर्य-साधन—लेखक, आचार्य चतुरसेन शास्त्री; मूल्य ॥), १)

स्वास्थ्य की कुंजी (सचित्र)—लेखक, डॉ० बाबूराम गर्ग; मूल्य १), १॥)

१२. वैज्ञानिक

भूकंप—ले०, बाबू रामचंद्र वर्मा; मू० ॥=), १=)

१३. नवयुवकोपयोगी

अछूत-समस्या—ले०, महात्मा गांधी; मू०॥), १)

एशिया में प्रभात—मूल-ले०, पाल रिचर्ड; अनु०, ठा० कल्याणसिंह शेखावत बी० ए०; मूल्य ॥), १)

काम-विज्ञान—लेखक, श्रीदीनानाथ व्यास विशारद; मूल्य १), १॥)

किशोरावस्था (सचित्र)—ले०, गोपालनारायण-सेन-सिंह बी० ए०; मूल्य ॥=), १=)

नीति-रत्नमाला—अनुवादक, श्रीगोपालविट्ठल दुगवेकर; मूल्य ।), ।=)

फिर निराशा क्यों?—ले०, श्रीगुलाबराय एम्० ए०; मूल्य ॥), १)

भिखारी से भगवान्—अनुवादक, ठाकुर बाबू-नंदनसिंह बी० ए०; मूल्य १), १॥)

मुक्ति-मंदिर—अनुवादक, प्रो० बेनीमाधव अग्रवाल; मूल्य ॥=), १=)

सुख तथा सफलता—लेखक, स्व० पं० त्रिलोकनाथ भार्गव बी० ए०; मूल्य ।), ।=)

हिंदू-जीवन का रहस्य—लेखक, देवता-स्वरूप भाई परमानंदजी एम्० ए०; मूल्य ॥=), १=)

१४. योग

जीवन-मरण-रहस्य—ले०, ठाकुर प्रसिद्धनारायण-सिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य ।), १)

प्राणायाम—लेखक, उपर्युक्त; मूल्य ॥=), १=)

राजयोग—लेखक, उपर्युक्त; मूल्य १॥), २)

१५. सुकवि-माधुरी-माला

मिश्रबंधु-विनोद—लेखकगण, मिश्रबंधु; मूल्य द्वितीय खंड ३), तृतीय खंड २), चतुर्थ खंड ४)

CC0. Gurukul K...

१६. विविध

किसान कैसे उठें—ले०, श्रीशीतलासहाय; मू० -)
किसानों का क़र्ज़—ले०, श्रीशीतलासहाय ; मूल्य)॥
बैल—लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त ; मूल्य -)।
पाली-प्रबोध—लेखक, पं० आद्यादत्तजी ठाकुर एम्० ए०, काव्यतीर्थ मूल्य १), १॥)
भारत में बाइबिल—(दो भाग)—ले०, श्रीसंतराम बी० ए० ; मू० प्रत्येक भाग १॥), २)
पुरानी दुनिया—लेखक, श्रीरामचंद्र वर्मा ; मू० १॥), २)

१७. महिलोपयोगी

पत्रांजलि—मूल-लेखक, श्रीसतीशचंद्र चक्रवर्ती ; अनुवादक, पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी; मू० ।-),।=)
भारत में विदुषी नारियाँ—संपादिका, श्रीमती कृष्णकुमारी ; मूल्य ।=), ॥)
नारी-उपदेश—स्व० गिरिजाकुमार घोष; मूल्य ।=), ॥)
कमला-कुसुम—श्रीमती गिरिजादेवी; मूल्य ॥=), १=)
देवी द्रौपदी—कविवर श्रीरामचरित उपाध्याय मूल्य ।=), ॥)
लक्ष्मी—स्व० गिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ।=), ॥)
महिला-मोद—साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ।), ।=)
देवी सती—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥), १)
वनिता-विलास—साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ।=), ॥)
गुप्त संदेश—डॉक्टर युद्धवीरसिंहजी; प्रत्येक भाग ; मूल्य ॥=), १=)
भारतीय स्त्रियाँ—मूल-लेखक, श्रीमती महारानी साहबा बड़ौदा ; अनुवादक, बाबू रामचंद्रजी वर्मा; मूल्य १), १॥)
देवी पार्वती—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=), १=)
नल-दमयंती—मुंशी ज़हूरबख़्शजी हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=), १=)
सती सावित्री—अध्यापक हरिप्रसादजी द्विवेदी 'श्रीहरि' मूल्य ॥), ॥), १)
प्रसूति-तंत्र—डॉ० रामदयाल कपूर एम्० बी०, बी० एस्० ; मूल्य २॥), ३)

१८. बालकोपयोगी

सुघड़ चमेली—स्व० पं० रामजीदास भार्गव मू०-)
बाल-नीति-कथा (प्रथम भाग)—मूल-ले०, श्रीए० बी० ध्रुव, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस-चैंसलर; अनु०, स्व० पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०, प्रो० लखनऊ-युनिवर्सिटी १), १॥)
गधे की कहानी—पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० ॥))
लड़कियों के खेल—श्रीगिरिजाकुमार घोष ।- =)
नटखट पाँड़े—पं० भूपनारायणजी दीक्षित ० ए०, एल्० टी० १), ॥)
कीड़े-मकोड़े—पं० भूपनारायणजी दीक्षित ० ए०, एल्० टी० ।=), ॥।=)
खिलवाड़—पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० १), १॥)
भूकवच—श्री शंकररावजी जोशी ।=), ॥)
विचित्र वीर—हास्यरसावतार पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी ।), १)
हँसी-खेल—श्रीजगमोहन 'विकसित' ।), १)
सुनहरी नदी का राजा—स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसादजी शर्मा ।=), ॥।=)
मर्यादाराम की कहानियाँ—वि० रामनाथ ऐयर बी० ए०, बी० एल् ।=), ॥।=)
भगवान् गौतम बुद्ध स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसादजी शर्मा ।), ।=)
दिलावर सियार—पं० भूपनारायण ी ित एम्० ए०, एल्० टी० =), ॥)
युधिष्ठिर—कृष्णगोपालजी माथुर ॥), १)
कथा-कहानी—वि० रामनाथ ऐयर ब ०, बी० एल्० ।), ॥)
घरेलू कहानियाँ—कुमारी गोपालदे हदी-प्रभाकर -), ॥=)
लोमड़ी रानी—श्रीबाबूलाल भार्गव 'कीर्ति' ।=),॥)

नोट—डाक-खर्च ख़रीदारों को देना होगा। अपना पता स्पष्ट लिखें।

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

Digitized by eGangotri

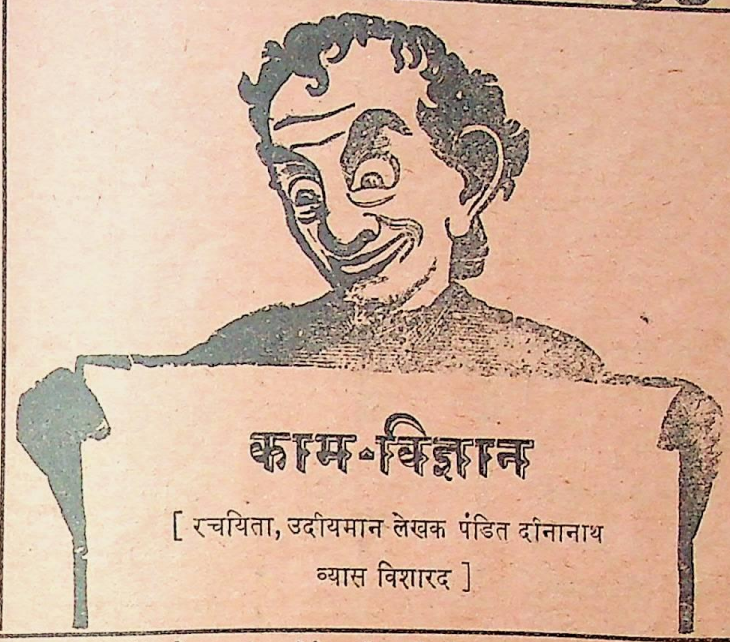

काम-विज्ञान

[रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद]

यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को ख़रीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

विषय-सूची

१. स्त्री का स्थान
२. विवाह क्यों और कब ?
३. वर्तमान परिणीत जीवन
४. वैवाहिक शिक्षण
५. वैषयिक शिक्षा
६. विषय का नैतिक धरातल
७. पति-निर्वाचन
८. जीवन-सहचरी
९. सच्चा वैवाहिक जीवन
१०. दुखी विवाह
११. सुखी विवाह
१२. दांपत्य प्रेम एवं ईर्ष्या
१३. स्त्री और सौंदर्य
१४. वैषयिक उत्कंठा
१५. नव-परिणीता वधू
१६. सहवास पर एक दृष्टि
१७. चुंबन
१८. आलिंगन
१९. सहवास
२०. कुछ महत्व-पूर्ण क्रियाएँ
२१. उपसंहार

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

चित्रावली

उपन्यास

मा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, पं० विश्वंभरनाथजी शर्मा 'कौशिक'। एक ओर तो आप देखेंगे कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे कैसे बिगड़ जाते हैं, और दूसरी ओर देखेंगे कि एक दृढ़-चित्त माता के उपदेशों से ग़रीबी में भी पला हुआ बालक कैसा सच्चरित्र निकला है!

मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

बिदा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, प्रतापनारायण श्रीवास्तव। इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही बिक गया। दूसरा संस्करण बहुत थोड़ा रह गया है। अपनी कापी शीघ्र मँगवा लीजिए, नहीं तो बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य!

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे, और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २७४; मूल्य १॥), सजिल्द २)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमानाबाद-पार्क, लखनऊ

छप रहा है ! शीघ्र प्रकाशित होगा !! अभी से ऑर्डर भेजिए !!!

काम-विज्ञान-साहित्य का अनुपम ग्रंथ-रत्न

विवाहितों की अमर अभिलाषा

सचित्र

दांपत्य जीवन

लेखक—रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०

यदि आप यह चाहते हैं कि

(१) आप यौवन का सच्चा आनंद प्राप्त कर सकें ;
(२) आप जीवन-पर्यंत अपने बल-वीर्य और स्वास्थ्य का सुख भोग सकें ;
(३) आप विवाहित जीवन के कर्तव्यों का भली भाँति पालन कर सकें ;
(४) आप अपनी गृह-देवी को प्रसन्न करके गृह को शांति और आनंद का स्वर्ग बनावें ;
(५) आपका दांपत्य जीवन सफल रहे, और दांपत्य प्रेम नित्यप्रति बढ़ता रहे ;

तो

आपसे हमारा यह अनुरोध है कि आप इस ग्रंथ-रत्न का एक बार अवश्य ही अवलोकन करें। सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक ने 'दांपत्य जीवन' में विवाहित स्त्री-पुरुषों की समस्या के उन सभी पहलुओं पर गंभीरता और स्पष्टता से प्रकाश डाला है, जिन्हें 'गोपनीय' कहा जाता है। विवेचन सर्वथा वैज्ञानिक रीति से किया गया है, और इसमें काम-विज्ञान के सिद्धांत (Theory) और प्रयोग (Practice) का समन्वय इतनी उत्तमता से हुआ है कि पाठक सहजता से उसे ग्रहण कर सकता है। हिंदी-भाषा में, इस विषय पर, ऐसी सुंदर, उपयोगी और वैज्ञानिक रचना आज तक प्रकाशित नहीं हुई। पति-पत्नी के कर्तव्य-कर्मों का निरूपण जितनी स्पष्टता और सचाई के साथ इसमें किया गया है, वैसा आपको हिंदी में कहीं नहीं मिलेगा।

इस अनुपम ग्रंथ की महत्ता का ज्ञान आपको विषय-सूची ही से हो जायगा।

विषय-सूची

१—विवाह—विवाह क्या है ? विवाह-प्रथा, विवाह की रीतियाँ, आदर्श विवाह। २—दांपत्य जीवन में काम। ३—स्त्री-पुरुष की जननेंद्रियाँ। ४—रजोदर्शन। ५—सुहागरात। ६—मैथुन का विवेचन। ७—मैथुन के आसन। ८—गर्भ-विज्ञान—गर्भ के लक्षण, गर्भ में पुत्र या पुत्री, भ्रूण का विकास, गर्भावस्था में मैथुन, गर्भ-रक्षा के उपाय, शिशुचर्या। ९—संतानोत्पत्ति पर नियंत्रण—स्वाभाविक रीति से संतान-निग्रह के उपाय। १०—शीघ्रपतन। ११—दांपत्य स्वास्थ्य।

१५० पृष्ठ, बढ़िया काग़ज़ पर कला-पूर्ण छपाई, चित्ताकर्षक गेट-अप, आवश्यक चित्र भी रहेंगे।

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC0. Gurukul K...

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

लेखक, कविवर पं० गोविंदवल्लभ पंत। नाटककार के रूप में पंतजी का नाम कितना प्रसिद्ध हुआ है, यह आप सभी हिंदी-प्रेमियों पर प्रकट है। पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है।

सुंदर, सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २), सादी का १॥)

प्रत्येक अध्याय विचित्र रहस्य प्रकट करता है।

पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। पाठक पढ़कर ही इसका असली आनंद प्राप्त कर सकेंगे। १२ रेखा-चित्रों-सहित। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ को आज ही पत्र लिखिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पटाँग और अनाकर्षक हैं कि बंगाली-कमेटी की इस बेहूदा हरकत पर क्रोध आता है। कद्दू और बैंगन के-से अंगोंवाले बंगाली चित्र तो ठीक दर्शक की नाक के नीचे, दरवाज़ों के सामने, ठोंक दिए गए हैं, और अच्छे-अच्छे इतर प्रांतीय चित्रों को कोनों में आश्रय मिला है। इसके अतिरिक्त बंगाली स्कूल से भिन्न तैल-चित्रों को ठीक रोशनी की बत्तियों के सामने टाँगकर बीभत्स बनाने का प्रयत्न किया गया है, जिससे उनकी खूबियाँ देखी ही नहीं जा सकतीं। चित्रों के नीचे चित्रकार का नाम अथवा विषय भी नहीं दिया गया, न किसी प्रकार का शिक्षणात्मक चित्र-परिचय ही देखने को मिलता है। मालूम ऐसा होता है कि आप किसी सुंदर पुष्पावकीर्ण जंगल में घूम रहे हों, न कि किसी सुसंगठित उद्यान में।

इसके साथ ही यह भी शिकायत है कि बंगाली स्कूल की तसवीरें इकट्ठा करने का जितना प्रयत्न किया गया है, उतना अन्य स्कूलों के चित्रकारों के चित्र संग्रह करने में नहीं। हमारे प्रसिद्ध चित्रकार रामप्रसाद, हकीम, तेजेंद्रकुमार मित्र, मोतीलाल, समीउज़्ज़मा, प्रभाकर गणेश मोडक, काशीनाथ खातू तथा अन्य सजीव चित्रकारों के चित्रों की कमी बहुत खटकती है। हकीम के केवल दो-तीन चित्र और रामप्रसाद का एक चित्र तथा ईश्वरीप्रसाद वर्मा और उनके स्वर्गीय सुपुत्र श्री-रामेश्वरप्रसाद वर्मा के चित्रों का एकांत अभाव चित्रकला-प्रेमियों के हृदय में झुँझलाहट पैदा करता है। बंगाली लोगों की ही कला यदि यू० पी० के लिये भी आदर्श समझी गई थी, तो भी यू० पी० के चित्रकारों को तो उचित स्थान मिलना ही चाहिए था। किंतु कमेटी ने चुनाव का अत्यंत गर्हित तरीक़ा रखकर यू० पी० तथा पंजाब के चित्रकारों का बहिष्कार-सा ही किया प्रतीत होता है। हमें दुःख है कि कला में भी प्रांतीयता का भाव इन बंगाली लोगों को न छोड़ सका। कला और विद्या सर्व-प्रांतीय हैं, उनमें भी प्रांतीयता का समावेश करने-वाले लोग वास्तव में समाज के निकट निंदा के पात्र हैं।

रहा चित्रों की उत्तमता का प्रश्न, सो हमें तो दो-चार सजीव चित्रों के अतिरिक्त एक भी चित्र उत्कृष्ट श्रेणी का नहीं जँचा। डॉक्टर टैगोर और उनकी शिष्य-मंडली के चित्रों पर विचार करने की आव-श्यकता हम नहीं समझते, क्योंकि उन चित्रों पर यदि कुछ भी लिखने का प्रयास करेंगे, तो बंगालियों और बंगाली ऊटपटाँग के हिमायती 'विशाल-भारत'-संपादक पुंगव चौबेजी चील-झपट्टा करने के लिये तैयार हो उठेंगे। तो भी इतना तो कहे बिना रहा नहीं जाता कि भिंडी की-सी हाथ की उँगलियाँ, सेम के बीज-सी आँखें, पालक के पत्ते-से हाथ-पाँव, लौकी-जैसी टाँगें और बाहें तथा कुम्हड़े-जैसा सिर यदि कला और सुरुचि के नाम पर हमारे सामने पेश किया जाकर आसमान पर चढ़ाया जायगा, तो कोई भी कला-प्रेमी उसे वेद-वाक्य मानने के लिये तैयार न होगा। स्त्रैण और भीरु बंगालियों की ढीलमढाल भावुक प्रकृति को अपील करनेवाले चित्र बंगालियों के लिये सुंदर हो सकते हैं, या वैसे ही स्त्रैण, भावुक और सींक-सलाई शरीरवाले पुरुषों को पसंद आ सकते हैं, किंतु ६ फ़ीट ऊँचे, हट्टे-कट्टे, कर्मण्य और परिश्रमी तथा युद्ध-प्रिय पंजाबियों तथा युक्तप्रांतीय व्यक्तियों के मनोनुकूल नहीं हो सकते। इसलिये कम-से-कम यू० पी० और पंजाब की कला-प्रदर्शनियों में तो इस स्त्रैण आर्ट को प्राधान्य नहीं मिलना चाहिए, बल्कि तत्प्रांतीय आलेख्य और सार्वजनीन चित्रकला को ही प्रश्रय दिया जाना चाहिए। लेकिन मुश्किल तो यह है कि प्रायः सभी प्रांतों के आर्ट-स्कूलों के आचार्यत्व पर डॉक्टर टैगोर की शिष्य-मंडली के बंगाली वंशधर-मात्र का एकाधिपत्य रहने का

CC0. Gurukul Kangri Collection

षड्यंत्र चल रहा है। टैगोर महाशय के इतर प्रांतीय शिष्यों को कहीं भी न घुसने दिए जाने का सतत प्रयत्न होता रहता है। श्रीवेंकट अप्पा, श्रीयुत समीउज़्ज़माखाँ, श्रीयुत हकीम मुहम्मदखाँ, श्रीयुत रूपकिशन तथा अन्य प्रसिद्ध चित्रकार भिन्न-भिन्न प्रांतों में रहते हुए भी सरकार पर ज़ोर डालकर बंगाल के एस्० एल्० गुप्त लाहौर में; एस्० एन्० दे जयपुर में, ए० के० हलदार लखनऊ में और डी० पी० राय चौधुरी मद्रास में आर्ट्स-स्कूल के आचार्य-पद पर चिपकाए गए हैं। लखनऊ में यदि चौधरी समीउज़्ज़माखाँ (जो चौधरी ख़लीकुज़्ज़मा के भाई हैं), मद्रास में श्री-के० वेंकट अप्पा, जयपुर में श्रीईश्वरीप्रसाद और लाहौर में श्रीरूपकिशन नियुक्त होते, तो तत्प्रांतीय ललित कला के सिद्धांत और वहाँ की क़लम की विशेषता सुरक्षित रहती। बंगालियों के इतर प्रांत में बीजारोपण से अब जो क़लमी क़लम या खचर-बैटरी पैदा हो रही है, वह किसी प्रकार भी शोभा या आनंद की वस्तु नहीं। प्राचीन चित्रकला की विशेषताएँ इसीलिये एकदम लुप्त होती जा रही हैं, और यह नवीन स्त्रैण-प्रणाली देश के आदर्शों पर बड़ा ही विनाशकारी प्रभाव डालकर उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर रही है। युक्तप्रांतीय प्रदर्शनी के सर्वेसर्वा श्रीयुत जे० पी० श्रीवास्तव महोदय और उनकी पत्नी श्रीमती कैलासवतीदेवीजी से हमारी प्रार्थना है कि वे ज़रा आँखें खोलकर इस ओर देखें और समझें कि उनके देखते हुए ही उन्हीं के प्रांत में उनके ही आश्रित तथा उनके प्रांत के चित्रकारों की कैसी अवहेलना और कैसा अपमान जान-बूझकर किया गया है। प्रांत के अन्य प्रतिष्ठित पत्रों—'भारत', 'प्रताप' तथा 'सैनिक' आदि—से भी हमारा अनुरोध है कि वे भी इस विषय पर कुछ प्रकाश डालें।

रसिकरंजन रतूड़ी

भारतीय स्त्रियाँ

[श्रीमती महारानी साहबा बरोदा की The Position of Women in Indian Life के आधार पर लिखित]

(लेखक—बाबू रामचंद्र वर्मा)

महारानी साहबा की उक्त पुस्तक के आधार पर हमने यह पुस्तक लिखाई है। स्त्री-समाज के कतिपय जटिल प्रश्नों का महारानी साहबा ने इसमें कैसा निराकरण किया है, यह पुस्तक पढ़ने से पता लगेगा। इसमें निम्न-लिखित विषयों पर योग्यता, सरलता और सफलता-पूर्वक विचार किया गया है—स्त्रियों का आंदोलन, खेती-बारी, घरों की सजावट, कला और शिल्प, परोपकार के अर्थ, गृहप्रबंध, निरीक्षण-कार्य, सहयोग या समवाय-सिद्धांत, महाजनी या लेन-देन, परोपकारिणी संस्थाएँ, मितव्यय, परिश्रम और पारिश्रमिक, उद्धार-कार्य, स्त्रियों के हित और जापान की स्त्रियाँ, गृह तथा देश-संबंधी कार्यों में स्त्रियाँ किस प्रकार और कितना योग दे सकती हैं—फलतः देश में नई जागृति पैदा करने में उनका कितना हाथ है और हो सकता है—आदि बातें भारतवर्ष की प्रत्येक स्त्री को अवश्य जाननी चाहिए। अभी तक हिंदी में ऐसी पुस्तक कोई भी नहीं निकली। इस पुस्तक से एक बड़े अभाव की पूर्ति होती है। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। इसमें महारानी साहबा का चित्र भी है। पुस्तक के कवर पर भी सुंदर रंगीन चित्र है। मूल्य केवल १।।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारतीय शासन-विकास—लेखक, श्रीडॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी एम्० ए०, डी० एस्-सी०, रीडर इलाहाबाद-युनिवर्सिटी; प्रकाशक, इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद; मूल्य १॥) ; पृष्ठ-संख्या २२५

सन् १९३५ ई० के गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया ऐक्ट ने भारतीय शासन-व्यवस्था में पर्याप्त उथल-पुथल कर दी है। कई प्रांतों में दो धारा-सभाओं की स्थापना, उत्तरदायी मंत्रियों की नियुक्ति, कई नए प्रांतों की उत्पत्ति, शासित विषयों में से अधिकांश का हस्तांतरित किया जाना और देशी रियासतों की रईस-मंडली तथा व्यापारिक सत्ताओं के केंद्रीय धारा-सभाओं में प्रतिनिधित्व आदि अनेक आवश्यक तथा महत्त्व-पूर्ण परिवर्तन, फ़रवरी, १९३७ के चुनाव के बाद, देश की शासन-व्यवस्था पर लागू होंगे। ऐसी दशा में उन परिवर्तनों की उपयोगिता, अनुपयोगिता तथा क्रियात्मकता पर विना विचार किए उन्हें कार्य-रूप में अंगीकार कर लेना देश के भावी विधान के लिये अत्यंत घातक सिद्ध हो सकता है। उस विषय की साधारण जनता को पूरी जानकारी देनेवाली कोई भी उपयुक्त पुस्तक हिंदी में न थी। वैसे तो श्रीराधाकृष्ण झा की बहुत बड़ी पुस्तक 'भारतीय शासन-पद्धति' भारतीय शासन-विधान का इतिहास—आदिम काल से १९०९ तक का—बहुत ही सुंदर तथा विशद रूप से वर्णित करती है, और अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक अभी तक मानी गई है। किंतु १९१७ के विधान तथा इस नए विधान का उसमें समावेश न होने के कारण वह अब असामयिक-सी हो गई थी। डॉ० त्रिपाठी ने यह पुस्तिका लिखकर हिंदी की इस कमी को पूरा कर दिया है। यद्यपि इस विषय की अनेकों अँगरेज़ी पुस्तकों के समान विकासात्मक विवरण का इस पुस्तक में अधिक ध्यान नहीं रक्खा गया, और नागरिक अधिकार, वोटर्स की मत-प्रदर्शन-प्रणाली, उनके अधिकार, न्याय-विभाग की स्वतंत्रता, फ़ेडरल असेंबली में देशी प्रजा के प्रतिनिधि आदि आवश्यक विषयों पर भी इसमें प्रकाश नहीं डाला गया, तथापि पुस्तक एकदम अच्छी और उपादेय है। नवीन शासन-विधान का मोटा स्वरूप इसके पढ़ने से सहज ही समझ में आ जाता है। भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों के लिये तो यह परीक्षा का गुरुमंत्र हो सकती है। इस दृष्टि से तथा छपाई-सफ़ाई की नज़र से भी पुस्तक अत्यंत प्रशंसनीय है। दाम लेकिन कसकर चार्ज किए गए हैं। १) काफ़ी होता।

× × ×

हिटलर महान्—लेखक, श्रीचंद्रशेखर शास्त्री; प्रकाशक, भारती-साहित्य-मंदिर, देहली; मूल्य ३) ; पृष्ठ-संख्या ३८२

कुछ दिन हुए, 'फ़ासिज़्म'-नामक पुस्तक की समालोचना करते हुए, फ़ासिज़्म के विषय में हमने जो मत निर्धारित किया था, उससे मिलता-जुलता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हुआ ही मत हम 'नात्सी'-संप्रदाय के विषय में भी रखते हैं। वास्तव में ब्रिटिश शासन की 'डिक्टेटरशिप ऑफ़ दि मैनी' या 'अनेक तंत्र'-प्रणाली प्रजा में रक्त-पात के विना ही बड़े-बड़े परिवर्तन कर सकती है, क्योंकि उसमें अनेकों प्रतिनिधियों की एकत्र सहमति रहती है। अतएव, हमारी राय में, वही एकमात्र सफल जन-तंत्र-शासन-व्यवस्था है। फ़ासिज़्म तथा नात्सीज़्म एकतंत्र-प्रणाली को लेकर चले हैं। अतएव वे मनमाने अत्याचारों, राष्ट्रीय भावनाओं के पद-दलित तथा ऊटपटाँग आदेशों का कारण हुए हैं। इसमें तो संदेह नहीं कि किसी पद-दलित देश को उन्नत करने के लिये एक लौह-पुरुष की आवश्यकता हुआ करती है। और, उसके विना किसी भी देश का आजकल आगे बढ़ना संभव नहीं। किंतु शांति के समय अड़ोस-पड़ोस के देशों के लिये ऐसा महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति बड़ा खतरनाक हो उठता है। हिटलर ने गत २० वर्ष में जर्मनी का अभूतपूर्व विकास किया है। उसने उसे संसार की एक अग्रगण्य शक्ति का रूप देकर साम्राज्य-लोलुप देशों के हृदय में एक हलचल मचा दी है। किंतु स्वयं उसकी साम्राज्य-लिप्सा, जो एकतंत्र शासन की अनिवार्य 'कारोलरी' (अनुगामिनी) है, उसे भी संसार की शांति के लिये एक भयानक विभीषिका बनाए डाल रही है। जर्मनी-जापान-पैक्ट, जो अभी हाल में ही उद्घोषित हुआ है, चीन-जापान-संघर्ष का सूत्रपात करने, चीन की गृह-क्रांति को उकसाने तथा अवश्यंभावी सुदूर पूर्व के उत्पात की उत्पत्ति करने का एकमात्र कारण है। हिटलर की महत्त्वाकांक्षा, चूहे की 'टार्च-बिएरर' होने की महत्त्वाकांक्षा के समान, संसार में संघर्ष की भयानक ज्वाला उत्पन्न किए विना न रहेगी। अतएव ऐसे व्यक्तित्व के विकास का इतिहास सभी के लिये मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद होगा। नवीन जर्मनी तथा हिटलर के विषय में बहुत अच्छे प्रकार यह पुस्तक लिखी गई है। यद्यपि पुस्तक में मनोरंजकता लाने का प्रयत्न नहीं किया गया, तथापि उपादेयता की दृष्टि से ही वह कम संग्रहणीय नहीं है। वास्तव में पं० इंद्र वेदालंकार के 'नेपोलियन बोनापार्ट' के बाद जीवन-चरित्र-संबंधी एक भी पुस्तक हिंदी में सफलतापूर्वक नहीं लिखी गई। अतएव प्रस्तुत पुस्तक की एक पठनीय पुस्तक के रूप में ही हम पाठकों से सिफ़ारिश करते हैं, आदर्श जीवन-चरित्र के रूप में नहीं।

मूल्य के विषय में हमें यहाँ भी शिकायत है। हिंदी-प्रकाशकों के लिये यह महँगी नीति अत्यंत घातक सिद्ध हो रही है। ऐसी छोटी तथा अनाकर्षक, किंतु उपयोगी पुस्तक के लिये बिरले ही ३) ख़र्च करेंगे।

सुधींद्र वर्मा
(एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

प्रभाकर—साप्ताहिक पत्र; संपादक, हरिशंकर शर्मा; मुद्रक और प्रकाशक, भास्कर-प्रेस, २३ ए, सिविल लाइंस, आगरा; आकार २०×३० चौपेजी; पृष्ठ-संख्या २४; वार्षिक मूल्य ३)

'आर्यमित्र', आगरा के भूतपूर्व संपादक कविश्रेष्ठ पं० हरिशंकर शर्मा संपादन-कला के एक अनुभवी कलाकार हैं। आपने १५ वर्षा तक 'आर्यमित्र' का जिस योग्यता से संपादन किया है, वह हिंदी-जगत् से छिपा नहीं है। उन्हीं की टकसाली लेखनी से अब 'प्रभाकर' के कालम सजने लगे हैं। हमारे सामने 'प्रभाकर' की तीसरी किरण है। इसमें १४ मुख्य स्तंभ हैं—यथा संपादकीय, गड़बड़-गोष्ठी, कहानी-कुंज, विचित्र विज्ञान, प्रवासी बंधु, बाल-विनोद, कविता-कलाप, स्वास्थ्य-सुधा, महिला-मंडल, धर्म-विज्ञान, समाज-संस्कार, साहित्य-संसार, स्वदेश-संदेश और विदेश-वार्ता। सभी स्तंभों का मैटर मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और सँवारा हुआ है। पत्र की नीति उदार और सुधारात्मक है। अग्र-लेख 'विधवा-आश्रम' तथा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'धर्म महकमा नहीं है', 'आर्य-संन्यासियों का संघटन' उपयोगी और विचारणीय हैं। ऐसा प्रतीत होता है, 'प्रभाकर' आर्य-संसार ही में नहीं, हिंदी-संसार में भी नवजीवन का संचार करेगा। हिंदी-भाषा-भाषियों को इसे अपनाकर चिरस्थायी बनाना चाहिए। मूल्य भी ३) सस्ता है।

'जिज्ञासु'

× × ×

मेरी कहानी—मूल-लेखक, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू; अनुवादक, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय; प्रकाशक, सस्ता-साहित्य-मंडल, दिल्ली; पृष्ठ-संख्या लगभग ७६० तथा मूल्य ४)

यह पुस्तक हमारे पूज्य तथा मान्य राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरूजी की अँगरेज़ी में लिखित आत्म-कथा का अनुवाद है। मूल पुस्तक इँगलैंड में छपी है, और कहा यह जाता है कि पिछले वर्ष संसार में जितनी पुस्तकें छपी हैं, उनमें इस पुस्तक का स्थान, विक्रय की दृष्टि से, अत्युच्च रहा है। कोई दो लाख प्रतियाँ अब तक बिक चुकी हैं। इसका कारण सुघर तथा उत्तम इँगलिश-भाषा का व्यवहार और नेहरूजी का आत्मत्याग ही नहीं, प्रत्युत हमारी राष्ट्रीय महासभा का विदेशों में अपूर्व सम्मान भी है। इस पुस्तक के विक्रय ने हमारी राष्ट्रीय संस्था का सम्मान पूर्णरूपेण प्रकट कर दिया है।

हिंदी में पुस्तक का अनुवाद श्रीहरिभाऊजी उपाध्याय ने किया है, जो महात्माजी की आत्मकथा का भी अनुवाद कर चुके हैं। उनसे हिंदी-भाषा-भाषी भली भाँति परिचित हैं। भाषा पर आपका अच्छा अधिकार है। 'मेरी कहानी' की भाषा ऐसी सुघर तथा साफ़ है कि केवल उर्दू पढ़ा-लिखा भी इसे समझ सकेगा। भाषा-प्रवाह तथा उसकी मधुरता में कोई संदेह नहीं। पर एक बात मुझे अवश्य खटकी, वह है पुस्तक का नाम—'मेरी कहानी'। कहानी सचाई के परे समझी जाती है। पर यह पुस्तक तो जवाहरलालजी के कथनानुसार "समय-समय पर मेरे अपने मन में उठनेवाले ख़यालात और जज़्बात का और बाहरी वाक़यात का उन पर किस तरह और क्या असर पड़ा, उसका दिग्दर्शन-मात्र है।" यदि पुस्तक का नाम आत्म-कथा होता, तो अधिक ठीक होता।

पूर्ण पुस्तक में ग़ज़ब की सचाई है। आदि से अंत तक पुस्तक पढ़ने से साफ़ ज्ञात होता है कि जवाहरलालजी ने सत्य का पक्ष अपनी समझ के अनुसार कितना लिया है। स्वयं अपने पिता के विपक्ष में इस तरह कहीं-कहीं पर लिखना, बल्कि स्वयं महात्माजी के ख़िलाफ़—जिनके जवाहरलालजी सर्वश्रेष्ठ भक्त रहे हैं—अपने विचार प्रकट करना, और वह भी इस बीसवीं सदी में, एक महात्मा ही का काम है। महात्माजी का यह जवाहर पर असर महात्माजी के ही अनुरूप है।

इस पुस्तक में जवाहरलालजी ने लिबरलों के ऊपर काफ़ी छींटाकशी की है, तथा उनके नेताओं की विवेचना भी। महामान्य शास्त्रीजी के लिये लिखा है कि "श्रीशास्त्रीजी हमेशा लंबे-चौड़े भाषण देते हैं, और वक्ताओं की तरह सुंदर शब्दों के और उनके सुरीले उपयोग का उन्हें शौक़ है। मगर वह अपने उत्साह में बह भी जाते हैं, और शब्दों का जो इंद्रजाल वह खड़ा करते हैं, वह उनका मतलब दूसरों के लिये और शायद खुद उनके लिये भी धुँधला कर देता है।" क्या यह माननीय शास्त्रीजी की एकपक्षीय समालोचना नहीं है? पुनः शास्त्रीजी के लिये यह कहना कि "ब्रिटिश सरकार के फ़ैसले के सामने झुक जाना और उसे मंज़ूर कर लेना उनका धर्म हो गया है", औचित्य की सीमा के बाहर है।

अब ज़रा लिबरल-पार्टी की समालोचना भी सुन लें। "लिबरल-पार्टी नाम से भी धोखा हो सकता है।" "ऐसा मालूम होता है कि उनके न ता कोई

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राजनीतिक या आर्थिक उसूल हैं, न कोई व्यापक दृष्टि है। उनकी राजनीति तो रईसों के दीवानखानों या दरबारों की-सी चीज़ दिखाई देती थी। मानो उनकी यही जानने की इच्छा रहा करती है कि हमारे उच्च अधिकारी क्या करेंगे, या क्या नहीं करेंगे।" जिन्होंने १९२९ में लिबरलों का साइमन कमीशन के खिलाफ़ संगठानात्मक कार्य देखा है, वे इसकी तौल स्वयं कर सकते हैं।

'मेरी कहानी' में पं० जवाहरलालजी के राजनीतिक विचार की समालोचना करना व्यर्थ है। वे दिन-प्रति-दिन समाचार-पत्रों में निकलते ही रहते हैं, और पाठक उन्हें जानते भी हैं। पं० जवाहरलाल-जी के विचार बहुत ही उग्र हैं। पर यह देखकर आश्चर्य होता है कि हमारी कांग्रेस-ऐसी महान् संस्था उन्हें शनैः-शनैः ग्रहण करती जाती है, यद्यपि उसने जवाहरलालजी की साम्यवादी भावना को दबा-सा दिया है। जवाहरलालजी की यह विरोध की मात्रा इस पुस्तक में काफ़ी मात्रा में मौजूद है। पर उनका राजनीति में यह नया दृष्टिकोण कि भारतवर्ष की समस्या विश्व-क्रांति की समस्या से संबद्ध है, भारतीय राजनीतिक आकाश में एक नया नक्षत्र है। और, इस सामयिक चेतावनी के लिये हम अपने राष्ट्रपति के अत्यंत आभारी हैं, क्योंकि यह हो नहीं सकता कि भविष्य में होने-वाले महायुद्ध से भारत बच जाय। उसके लिये हमें अभी से तैयार होना चाहिए। पाठकों को स्मरण होगा कि जवाहरलालजी के लिपि-संबंधी विचार पर हिंदी-समाचार-पत्रों में कितना बावैला मचा था! इस पर जवाहरलालजी ने 'मेरी कहानी' में जो कुछ लिखा है, वह विचार तथा मनन करने योग्य है—"यह घटना मेरे लिये आँख खोलने-वाली थी। उसने बतलाया कि हिंदी के साहित्यिक और संपादक कितने ज़्यादा तुनक-मिज़ाज हैं। मुझे पता लगा कि वे अपने शुभचिंतक मित्र की सद्भावना-पूर्ण आलोचना भी सुनने को तैयार नहीं थे। साफ़ ही यह मालूम होता था कि इस सबकी तह में अपने को छोटा समझने की भावना ही काम कर रही है। आत्मआलोचना की हिंदी में पूरी कमी है, और आलोचना का स्टैंडर्ड बहुत ही नीचा है। लेखक और उसके टीकाकारों के लिये एक दूसरे के व्यक्तित्व पर गाली-गलौज शुरू कर देना हिंदी में कोई असाधारण बात नहीं है। यहाँ का सारा दृष्टिकोण बहुत संकुचित और दरबारी-सा है, और ऐसा मालूम होता है, मानो हिंदी का लेखक और पत्रकार एक दूसरे के लिये और एक बहुत ही छोटे-से दायरे के लिये लिखते हों। उन्हें आम जनता और उसके हितों से मानो कोई सरोकार ही नहीं। हिंदी का क्षेत्र इतना विशाल और आकर्षक है कि उसमें इन त्रुटियों का होना मुझे अत्यंत खेद-जनक और हिंदी-लेखकों की प्रयत्न-शक्ति का अपव्यय-सा जान पड़ा।"

संपूर्ण पुस्तक बहुत ही रोचक तथा विचार-पूर्ण है। भारत की गत २० वर्षों की राजनीतिक उथल-पुथल का इतिहास संक्षिप्त रूप से, बहुत भले प्रकार, इसमें निचोड़ दिया गया है। इस गत इतिहास—खासकर कांग्रेस की प्रगति—को जानना प्रत्येक भारतवासी के लिये आवश्यक है। मेरा तो अनुरोध यही है कि इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक भारतीय के पास होनी चाहिए। हिंदी-साहित्य के लिये यह पुस्तक गौरव की चीज़ है। मूल्य भी कम है, और छपाई-सफ़ाई नयना-भिराम।

ज्योतिलाल भार्गव
(बी० ए०, एल् एल्० बी०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'धन की उत्पत्ति' (अर्थशास्त्र)—लेखक, श्रीदयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १)

(२) 'अपराध-चिकित्सा' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीभगवानदास केला ; मूल्य १॥)

(३) 'निरुपमा' (उपन्यास)—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ; मूल्य १)

(४) 'गीतिका' (काव्य)—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ; मूल्य १॥)

(५) 'आनंद-मार्ग' (धार्मिक)—लेखक, श्रीयुत चौधरी रघुनंदनप्रसादसिंह ; मूल्य ॥-)

(६) 'तत्त्व-विचार' (धार्मिक)—लेखक, श्रीज्वालाप्रसाद कनोड़िया; मूल्य ।=)

(७) 'धूप - दीप' (धार्मिक)—लेखक, श्रीभुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' एम्० ए०; मूल्य ।=)

(८) 'पूजा के फूल' (धार्मिक)—लेखक, श्रीभूपेंद्रनाथदेव शर्मा; मूल्य ॥।-)

(९) 'कल्याण-कुंज (धार्मिक)—लेखक, श्री'शिव'; मूल्य ।)

(१०) 'यौवन के आँसू' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीगणेशदत्त शर्मा 'इंद्र'; मूल्य ४)

(११) 'अवध की नवाबी' (उपन्यास)—लेखक, श्रीगणेश पांडेय; मूल्य २)

(१२) 'पतिता की साधना' (उपन्यास)—लेखक, श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ; मूल्य २)

(१३) 'प्यासी तलवार' (उपन्यास)—लेखक, श्रीपं० सुदर्शनलालजी त्रिवेदी 'चक्र' ; मूल्य १)

(१४) 'देश के दुलारे' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत मुरलीधर बी० ए०; मूल्य १)

(१५) 'भारतेंदु - सुधा' (काव्य)—लेखक, श्रीब्रजरत्नदास; मूल्य १)

(१६) 'रोगों की अचूक चिकित्सा' (स्वास्थ्य)—लेखक, श्रीजानकीशरण वर्मा; मूल्य १॥)

आम - लीची

दरभंगा के प्रसिद्ध आमों और मुज़फ़्फ़रपुर के नामी लीचियों का फल और क़लम, क्रोटन, पाम व अन्यान्य फूलों और फलों का क़लम मेरे यहाँ सस्ते दामों पर मिलेंगे। सूचीपत्र मँगाकर देखें।

पता—बिहार नर्सरी, पो० बिहार नर्सरी (दरभंगा)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[संपादकीय विचार]

१. फ़ैज़पुर की ऊँची आवाज़

फ़ैज़पुर की निराली राष्ट्रीय महासभा समाप्त हो गई। दो लाख नर-नारियों ने इसमें सहयोग दिया, और क़रीब १½ लाख रुपया खर्च हुआ। फ़ैज़पुर-कांग्रेस का यह समारोह—कांग्रेस के गत ५० वर्ष के इतिहास में—बिलकुल निराला है। अगर यह कहा जाय कि फ़ैज़पुर-अधिवेशन के बाद महासभा यथार्थ में ग्रेट ब्रिटेन के लिये भय की वस्तु हो गई, तो अत्युक्ति नहीं। बाहरी तौर पर फ़ैज़पुर में जो कुछ देखा गया, वह अभूतपूर्व था। सावदा-स्टेशन पर स्पेशलों की बाढ़-सी आ गई थी। पूर्व-पश्चिम खानदेश, नासिक और बरार, खंडवा और इंदौर तक के किसान ठठ-के-ठठ पैदल ही पहुँच गए। रात के समय सीधे-सादे और भावुक किसानों को नदी के रेतीले पाट में, चाँदी-सी चाँदनी में, रज़ाई ओढ़े सोते देखकर मन में एक विचित्र उल्लास पैदा होता था। ज्वार की मोटी रोटी प्याज़ के गट्टे के साथ खाकर भी दुनिया की महाशक्ति से टक्कर लेने के हौसले का बीज मन में पैदा होना, यह फ़ैज़पुर-कांग्रेस की विशेषता थी।

कुछ सीन तो ऐसे थे, जो कभी नहीं भुलाए जा सकते, जिनमें सबसे खास बंबई से आनेवाली कांग्रेस-ज्योति-संबंधी था। महाराष्ट्र के कांग्रेसियों की नई सूझ थी कि बंबई की तेजपाल-पाठशाला से, जहाँ अब से ५० वर्ष पहले कांग्रेस-अधिवेशन हुआ था, एक कांग्रेस-ज्योति तिलकनगर लाई जाय। यह ज्योति ३०० मील पैदल चलकर फ़ैज़पुर लाई गई। इसे १-२ मील रोज़ाना चलकर बहुत दिनों में लाया गया। सबेरे के समय शिवाजी-द्वार पर इस ज्योति का स्वागत करनेवालों के अनगिनती सिर नज़र आ रहे थे।

झंडा-अभिवादन का दृश्य भी बिलकुल अनोखा था। उस समय फ़ैज़पुर में जो समारोह हुआ, वैसा अब तक किसी कांग्रेस को नसीब नहीं हुआ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक लाख व्यक्तियों ने नत-मस्तक हो राष्ट्रीय झंडे का अभिवादन किया।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन भी एक खास शान रखता था। देखते-ही-देखते कांग्रेस के खुले अधिवेशन में ६०,००० स्त्री-पुरुष आ जुटे। वह सीन भी देखने क़ाबिल था, जब राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल ने पंडाल में प्रवेश किया। पहले बैंड, फिर स्वयंसेवक, बाद में दो क़तारों में नेता और कार्य-समिति के सदस्य आ रहे थे। सबसे पहले सरदार पटेल और मालवीयजी, उनके पीछे मौलाना अब्दुलकलाम आज़ाद और भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू, फिर राजेंद्र बाबू और खान अब्दुलग़फ़्फ़ारखाँ, उनके पीछे स्वागताध्यक्ष और राष्ट्रपति, इनके पीछे आचार्य कृपलानी अकेले थे।

इसके बाद फिर दो-दो की क़तारों में 'वन्दे मातरम्' के गान से खुले अधिवेशन का कार्य आरंभ हुआ। हिंदी और मराठी का पूरा बोल-बाला रहा। कांग्रेस में कुल २१ प्रस्ताव पास किए गए, जिनमें देश की सब आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला गया। साम्राज्यवाद का विरोध इस कांग्रेस के वातावरण में ओत-प्रोत हो रहा था, और किसानों का प्राधान्य तथा ग्रामीण संस्कृति का एक सुंदर दृश्य तमाम समारोहों में देखने को मिला।

राष्ट्रपति के भाषण में सीधी और तीखी बातें थीं। भाषण बहुत लंबा न था, लेकिन महत्त्व-पूर्ण था। शिष्टाचार के बाद राष्ट्रपति ने दिवंगत साथियों को याद किया। उसके बाद जेलवासी और नज़रबंद भाइयों को खास तौर से याद किया। फिर प्रकृति के उस क्रोध का ज़िक्र किया, जिसने बाढ़ों और सूखों के रूप में लाखों आदमियों को तकलीफ़ दी। इसके बाद उन्होंने चुनाव के प्रश्न की चर्चा की, और बतलाया कि कांग्रेस ने सैकड़ों उम्मीदवार खड़े किए हैं। इसकी चर्चा करते हुए राष्ट्रपति ने बतलाया कि हमारी राष्ट्रीय और सामाजिक आज़ादी का मसला दुनिया के बड़े मसले का हिस्सा है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्थिति की चर्चा करते हुए कहा कि स्थिति गहरी होती चली जा रही है, और हम युद्ध के भयानक खड्ढ की ओर तेज़ी से जा रहे हैं। फ़ासिस्टवाद की सख़्त और तेज़ आवाज़ की चर्चा करते हुए उन्होंने बतलाया कि इसकी कुंजी ब्रिटेन की वैदेशिक नीति में खोजी जा सकती है। उन्होंने बतलाया, ब्रिटेन-जर्मनी की नौ-सेना-संधि ने फ्रांस को इटली का सहारा लेने के लिये मजबूर किया, जिसका नतीजा यह हुआ कि अबीसीनिया कुचल डाला गया। नाज़ी जर्मनी ने अंतरराष्ट्रीय संधि को अपमानित करने और योरपियन व्यवस्था को उलट-पुलट देने में कोई कोर-कसर नहीं रक्खी, तथा ब्रिटेन की गवर्नमेंट उसकी दुम के पीछे चलती रही। स्पेन का विद्रोह भी इन्हीं सब बातों का परिणाम है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की भाषा प्रजातंत्रात्मक और लहज़ा भलमंसाहत का है, लेकिन उसका झुकाव फ़ासिस्टवादियों की तरफ़ है, और इसलिये आज ब्रिटेन की मर्यादा यारप में बहुत कुछ गिर गई है। देश का ज़िक्र करते हुए उन्होंने बतलाया कि पिछले ८ महीनों में मैंने अपने दौरे में देख लिया है कि देश अब दुख के बोझे को ढो नहीं सकता, इस दुःख से छुटकारा पाने के लिये हिंदोस्तान की साम्राज्यवादी ग़ुलामी और आर्थिक शोषण को खत्म कर देना होगा। यह साम्राज्यवाद पूँजीवाद की व्युत्पत्ति है। इसके बाद उन्होंने बतलाया कि कांग्रेस का मौजूदा लक्ष्य हिंदोस्तान के लिये पूर्ण प्रजातंत्र राज्य है, समाज-वाद नहीं। हमारे सामने सबसे ज़रूरी मसला राजनीतिक आज़ादी पाने और प्रजातंत्र राज्य क़ायम करने का है। इसके लिये कांग्रेस को दुनिया की तमाम बढ़ती हुई ताक़तों के साथ रहना चाहिए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उन्होंने बतलाया कि ब्रुशेल्स में जो विश्व-शांति-कान्फ्रेंस हुई थी, उसके साथ हमें अपने को जोड़ देना चाहिए। उन्होंने इस बात की याद दिलाई कि कांग्रेस ने पहले ही यह घोषणा कर दी है कि हम साम्राज्यवादी युद्ध में शरीक न होंगे, और न हिंदोस्तान के जन और धन को ऐसे युद्ध में नष्ट होने देंगे। नए विधान का ज़िक्र करते हुए आपने बतलाया कि यह ग़ुलामी का नया पट्टा है, जो हमारे इन्कार करने पर भी हमारे ऊपर लादा जा रहा है, फिर भी हम इसके अंतर्गत चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। हम व्यवस्थापिका सभाओं में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पुर्ज़ों से सहयोग करने के लिये नहीं जाते, बल्कि नए विधान का मुक़ाबिला करने जाते हैं। परंतु मंत्रिपद ग्रहण करना और जनता के शोषण में हिस्सा बटाना तथा दमन की ज़िम्मेदारी लेना एक ही बात है, इसलिये मंत्रिपद के जाल में हमें न फँसना चाहिए।

भारत को सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि देश की सब शक्तियाँ साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक क़तार में खड़ी हो जायँ। देखने में हम कमज़ोर हैं, पर वास्तव में नहीं। ज्यों-ज्यों शक्तिशाली होंगे, साम्राज्यवाद लुप्त होता जायगा।

यह वह ऊँची आवाज़ है, जो फ़ैज़पुर से लाखों कंठों द्वारा दुनिया के सब हिस्सों में पहुँचा दी गई। देखिए, कांग्रेस का यह नया जीवन देश में कैसा नया जीवन लाता है!

× × ×

२. भारतवर्ष और एकता का प्रश्न

गत १२ नवंबर को कराची के कटरक-हॉल में 'पूर्व और पश्चिम में समाज का महत्त्व'-विषय पर भाषण देते हुए श्रीमती ज़ोज़ेफ़ाइन रैंसन-नामक विलायत की एक विदुषी महिला ने संयुक्त योरप की योजना को असंभव बतलाते हुए भारतवर्ष में एकता के प्रश्न को अत्यंत सुगम और साध्य प्रमाणित किया। उनके विचार में योरप के राष्ट्रों की एकता का आदर्श एक कल्पना-मात्र हो सकता है, किंतु निकट भविष्य में भारतवर्ष की सामूहिक एकता अवश्यंभावी तथा निश्चय है।

योरपीय राष्ट्रों की गति-विधि और परिस्थिति का प्रामाणिक रूप में उल्लेख करते हुए उन्होंने बतलाया—"उदाहरण के लिये फ्रांस को ही लीजिए, जहाँ आर्थिक और व्यावहारिक समस्याओं की जटिलता के अतिरिक्त दो धार्मिक प्रश्न रोमन-कैथोलिक और फ्रीमैसन संप्रदायों के—ही आज तक तय नहीं हो पाए हैं, और न भविष्य में कोई आशा ही है। रहा जर्मनी, सो वह भी पिछले योरपियन महायुद्ध के आघातों से अभी तक नहीं सँभल पाया है। हिटलर के विषय में कोई कैसी भी धारणा रखता हो—मेरी समझ में उसी ने जर्मन-राष्ट्र में आत्मसम्मान की रक्षा का मंत्र फूँक दिया है। इँगलैंड एक संयत राष्ट्र है, और उसकी शक्ति, योजना तथा सफलता उसकी अर्जित वस्तु है, जो उसकी शांति का मूल-रूप मानी जा सकती है। रूस के निवासियों के साथ मेरी पूरी सहानुभूति है, किंतु मैं उनके पारस्परिक अत्याचार और दलबंदी की लड़ाई के पक्ष में नहीं हूँ। इन सब बातों के देखते हुए, मेरी समझ में, भारतवर्ष में ऐसी परिस्थिति की अनुकूलता पाई जाती है, जिससे यह पता चलता है कि पिछले ६०-७० वर्षों में यहाँ की सामाजिक व्यवस्था और विचार कितने बदल गए हैं। भारतवर्ष में आध्यात्मिक भावनाओं का दृढ़ अस्तित्व है, जो उसके राष्ट्र-निर्माण में सहायक हो सकती हैं, किंतु पाश्चात्य देशों में ऐसे विचारों का सर्वथा अभाव है।"

× × ×

३. इटली बनाम ब्रिटेन

इटली को यदि ग्रेट ब्रिटेन की बग़ल की छुरी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कहा जाय, तो अत्युक्ति नहीं। इँगलैंड इटली के वैभव को योरप-भर में सबसे अधिक भय की दृष्टि से देखता है। गत १० वर्षों से इँगलैंड इटली की राजनीतिक प्रगतियों को चौकन्ना होकर देखता रहा है। इधर जब से इटली का साम्राज्य-लिप्सा का स्वप्न सच्चा हुआ, और महाशक्तियों के लाख विरोध करने पर भी मुसोलिनी ने अबीसीनिया को ठोकर मारकर उसके बल पर इटैलियन साम्राज्य का निर्माण करके ग्रेट ब्रिटेन की प्रतिस्पर्द्धा की, तब से ग्रेट ब्रिटेन को इटली के नाम का ज्वर चढ़ा ही रहता है।

इँगलैंड और इटली दोनो परस्पर मित्र बने हुए थे, पर यह मित्रता बिलकुल राजनीतिक थी—अबीसीनिया के युद्ध में दोनो परस्पर विरोधी हो गए। ब्रिटेन ही ने खुल्लमखुल्ला इटली के अबीसीनिया-विजय का विरोध किया। उसे भय हो गया था कि अबीसीनिया पर यदि इटली का अधिकार हो गया, तो ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्वी भाग की सुरक्षा खतरे में पड़ जायगी। इसी कारण उसने आस्ट्रिया और जर्मनी को छोड़कर योरप के सभी राष्ट्रों को इटली के विरुद्ध खड़ा कर दिया था। खासकर भूमध्यसागर में ब्रिटेन ने, अपने स्वार्थों की रक्षा के लिये, भूमध्यसागर की तमाम शक्तियों से इटली-विरोधी संधियाँ कर डाली थीं। इसके जवाब में इटली ने भी मुस्तैदी से ब्रिटेन की विरोधी शक्तियों को संगठित कर लिया था। जर्मनी से इटली-आस्ट्रिया, हंगरी, अलबानिया और जापान की संधियाँ तथा गुटबंदी—यह सब ब्रिटेन और इटली के मनमुटाव का ही परिणाम था। मज़ा यह था कि दोनो देश अपनी पुरानी मित्रता की याद करते और एक दूसरे के स्वार्थों को हानि न पहुँचाने की हास्यास्पद इच्छा प्रकट करते थे। पर दोनो देशों का संघर्ष बढ़ता ही जाता था।

परंतु इटली तो जो कुछ उसे करना था, कर चुका। सुदूर पूर्व में उसने अपना इटैलियन साम्राज्य स्थापित कर लिया। अब वह फिर ग्रेट ब्रिटेन की तरफ़ मित्रता का हाथ बढ़ाता है। ट्राटस्की का कहना है कि जो राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को हड़प लेता है, वह फिर अकस्मात् शांति-प्रिय हो उठता है। अब अबीसीनिया को हड़प लेने के बाद इटली भी शांति-प्रिय हो गया है। हाल ही में उसके साथ जो ब्रिटेन का नया समझौता हुआ है, वही इस बात का प्रमाण है। यद्यपि उस समझौते की अभी तक कोई सरकारी विज्ञप्ति नहीं प्रकट हुई है, पर ऐसी आशा की जाती है कि दोनो देश स्पेन के बलीरिक-द्वीपों के विषय में एक ऐसा समझौता करनेवाले हैं, जिससे दोनो फिर दोस्त बन जायँगे। यह बलीरिक-द्वीप-समूह भूमध्यसागर में, पश्चिमी किनारे पर, स्पेन के नीचे, स्थित है। पहले ब्रिटेन को संदेह था कि स्पेन के विद्रोहियों से इटली ने कुछ ऐसा समझौता कर लिया है कि यदि वे जीत गए, तो बलीरिक-द्वीप इटली के सुपुर्द कर देंगे, और इटली ने यह काम इसी इरादे से किया है कि भूमध्यसागर में ब्रिटेन की शक्ति कमज़ोर हो जाय। पर अब इस नवीन समझौते से ब्रिटेन की वह शंका दूर हो जायगी। इस समझौते में इटली ब्रिटेन को यह विश्वास दिलाएगा कि अब तक हमने स्पेन के विद्रोहियों से ऐसा कोई वादा नहीं किया, और न भविष्य में हम ऐसा करेंगे। इस समझौते के होने पर इटली और ब्रिटेन फिर एक दर्जे तक मित्र हो जायँगे। अब यह देखना है कि इन दोनो देशों की इस नवीन संधि से योरप की राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ता है। संभव है, योरप की राजनीति का रुख ही बदल जाय, जिसमें खास बात यह हो सकती है कि जर्मनी का प्रभाव कुछ कम हो जाय।

× × ×

४. सुलेखाचार्य पं० गौरीशंकर भट्ट

मसवाना(कानपुर)-निवासी सुलेखाचार्य पं०

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गौरीशंकरजी भट्ट से 'सुधा' के पाठक परिचित हैं। आपने नागरी-अक्षर और नागरी-लिपि के सुंदर-से-सुंदर रूप स्थिर करने में आजीवन प्रयत्न किया है। नागरी-लिपि-कला पर आपने कई उत्तमोत्तम पुस्तकें लिखकर प्रकाशित की हैं। इन पुस्तकों में आपने नागरी-अक्षरों के एक-एक जोड़ों को अलग-अलग दिखाकर फिर उन्हें एक में जोड़कर एक सुंदर अक्षर बना देने की प्रक्रिया का बड़ी ही सुबोध शैली से वर्णन किया है। वर्ण, मात्रा और मीलित वर्णों के जोड़ों की विवेचना तक ही आपका प्रयास परिमित नहीं है, आपने विविध-प्रकार-अलंकृत अक्षर (Ornamented and shaded letters), मुद्राअक्षर (Monograms), सांकेतिक अक्षर (Initial signature), चित्रबंध (अरबी और फ़ारसी में जिसे 'ख़ते-तुग़रा' कहा जाता है) आदि लिखने की प्रक्रिया का भी विशद और स्तुत्य विवेचन किया है। आपकी 'अक्षर-तत्त्व'-नामक पुस्तक में वर्णमाला के सभी अक्षरों के अंशों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। अभी हाल में भट्टजी ने 'लिपि-कला' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की है, जिसमें संक्षेप में पूर्वोक्त सभी विषयों का समावेश करने के साथ ही आपने वर्तमान शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत और स्कूलों में प्रचलित ४७ सुलेख-पुस्तकों के दोष-पूर्ण अक्षरों के भद्दे दोष दिखलाए हैं। शिक्षा-विभाग के अधिकारियों को भट्टजी की इस आलोचना की ओर ध्यान देना चाहिए। भट्टजी अब वृद्ध हो गए हैं। आपने समस्त जीवन सुलेख-प्रचार में जो निरंतर श्रम किया है, वह हिंदी की चिर-स्मरणीय सेवा है। आपकी पुस्तकों का पारायण करके सहस्रों सुलेखक बन चुके हैं, और भविष्य में बनेंगे। आपने अपनी लिपि-कला का कौशल दिखाकर अनेक पदक भी प्राप्त किए हैं। हम भट्टजी के दीर्घ जीवन के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं।

सुलेखाचार्य पं० गौरीशंकर भट्ट

× × ×

५. भारतीय अध्ययन-मंदिर

नागपुर-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर, ता० २५ एप्रिल, १९३६ को, सम्मेलन की इतिहास-परिषत् का भी तृतीय अधिवेशन हुआ था। परिषत् के सभापति 'भारतीय इतिहास की रूप-रेखा' ग्रंथ पर सुप्रसिद्ध मंगलाप्रसाद-पारितोषिक प्राप्त करनेवाले श्रीयुत जयचंद्रजी विद्यालंकार महोदय थे। सभापति के आसन से आपने जो विचार-पूर्ण भाषण दिया था, उसकी प्रशंसा में अहमदाबाद के गुजराती सहयोगी 'कुमार' ने अपने वैशाख, १९९३ के अंक में, पृष्ठ २७५ पर, लिखा था—

"इतिहास और पुरातत्त्व के भारतीय विद्वानों में श्रीपं० जयचंद्र विद्यालंकार का नाम अगली

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हरावल (सेना की पहली पंक्ति) में बोला जाता है। आज जवानी की आयु में भी आपके कथन प्रौढ़ विद्वानों में माननीय और आधारभूत माने जाते हैं। 'कुमार' के १४७वें अंक में हमने 'दूषित इतिहास'-शीर्षक एक छोटी टिप्पणी आपके कथन से उद्धृत की थी। विगत एप्रिल में, नागपुर में, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की इतिहास-परिषत् के अध्यक्ष-स्थान से, आपने एक मननीय भाषण दिया है। नमूने के तौर पर उसमें से एक संदर्भ हम यहाँ उतारते हैं। इसमें आपने महाभारत-युद्ध से लेकर २०वीं सदी के प्रभात तक आर्यावर्त द्वारा अनुभव किए हुए इतिहास और संस्कृति की जो संक्षिप्त समीक्षा की है, वैसी संक्षिप्त, वैसी तलस्पर्शी और वैसी व्यापक समीक्षा आज से पहले भाग्य से ही किसी ने देखी होगी। केवल थोड़े-से मिनटों के वाचन में यह भारतवर्ष के समूचे इतिहास की चित्ररेखा को संस्कृति के सुवर्ण-सूत्र के साथ अंकित कर जाती है, और हमें भिन्न-भिन्न युगबलों के प्रभाव की तह में ले जाती है। हमारी सिफ़ारिश है कि कोई भी पाठक इसे पढ़ना न भूलें।"

इस सम्मति से पाठक भाषण की महत्ता का अनुमान कर लेंगे। किंतु हम अपने पाठकों का ध्यान उस प्रस्ताव की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, जिसके द्वारा सभापति महोदय ने एक सर्वांग-पूर्ण भारतीय इतिहास-निर्माण के लिये एक 'भारतीय अध्ययन-मंदिर' स्थापित किए जाने की आवश्यकता प्रकट की है। भाषण के अंत में इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए आपने कहा था—

"देवियो और सज्जनो, हमारे इतिहास का क्या कुछ काम करने को है, सो मैंने आपके सामने रख दिया है। वह कार्य कैसे हो, सो निश्चय करना आपके लिये बाक़ी है। आज बारह बरस हुए, देहरादून में, इसी हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की वेदी से, श्रीयुत बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने प्रस्ताव किया था कि विद्वानों की एक समिति हिंदी में भारतवर्ष का एक प्रामाणिक, पूर्ण इतिहास तैयार करने की योजना बनाए, और उस योजना के अनुसार वह इतिहास लिखा जाय। योजना बनाने के लिये ५,००० और योजना की पूर्ति के लिये एक लाख रुपए के खर्च का उन्होंने अंदाज़ किया था। वह योजना तो मैं जानता हूँ, मैंने आपके सामने रख दी है। आगे की बात आप सोचिए। आज हम उस मंज़िल पर पहुँच गए हैं, जब एक दिन भी इस कार्य को टालना उचित नहीं है।"

आगे चलकर आप कहते हैं—"मेरा तो यह विश्वास है कि आगामी पंद्रह बरस के भीतर हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में हम उस धारा को पूरे प्रवाह से बहता देख सकते हैं, यदि आज दो-तीन दर्जन दृढ़व्रती विद्यार्थी इसी कार्य को अपने जीवन की एकमात्र साध बनाकर इसमें जुट जायँ। राष्ट्र को उस टुकड़ी के लिये रसद, बारूद और हथियारों का प्रबंध करना होगा। इस प्रस्तावित संस्था को मैं 'भारतीय अध्ययन-मंदिर' कहता हूँ। हमारे देश में मिट्टी-पत्थर के मंदिर बनाने के लिये यथेष्ट श्रद्धा है। क्या हम आत्मानुध्यान के लिये सरस्वती का यह मंदिर आज खड़ा नहीं कर सकते? विद्याभिरुचि भी हमारे यहाँ बहुत कुछ चली आती है, और दानवीरों का भी अकाल नहीं है।... यदि आज—हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की इस रजत-जयंती के उत्सव पर—आप इस मंदिर की स्थापना का संकल्प कर लें, तो विश्वास मानिए, आज से पंद्रह बरस के भीतर—भारतेंदु हरिश्चंद्र की जन्म-शताब्दी आने तक—आप अपने हिंदी के क्षेत्र में स्वच्छ और सबल ऐतिहासिक चिंतन की धारा बहती देख सकेंगे, और भारतीय राष्ट्र अपनी विस्मृत आत्मा को फिर पहचानने लगेगा।"

उपर्युक्त अपील पर टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। जो सज्जन इस सदुद्योग से सहानु

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भूति रखते हों, तथा जो दृढ़व्रती विद्यार्थी इस पुनीत कार्य को अपने जीवन की एकमात्र साध बनाने का संकल्प करते हों, वे हमसे पत्र-व्यवहार करें—

सुधा-संपादक
कवि-कुटीर, लखनऊ

× × ×

६. लखनऊ में विराट् कवि-सम्मेलन

अभी उस दिन, १७-१८ जनवरी को, लखनऊ में एक अभूतपूर्व घटना घट गई, एक विराट् कवि-सम्मेलन हो गया। हिंदी-साहित्य के इतिहास में इतना बड़ा कवि-सम्मेलन कभी नहीं हुआ। हिंदी के प्रायः सभी प्रमुख कवि आए थे। महाराजा झालावाड़ मनोनीत सभापति थे, पर बीमारी के कारण न आ सके। इसका अवश्य सबको दुःख रहा। उनकी जगह हिज़ हाइनेस महाराजा सर दिलीपसिंहजी के० सी० आई० ई० सैलाना-नरेश ने इस पद को सुशोभित किया। महाराजा ओरछा भी पधारे थे। राजा साहब ओयल, राजा साहब शिवगढ़, कुँवर राजेंद्रसिंह आदि अवध के प्रमुख ताल्लुक़ेदार भी उपस्थित थे। स्वागताध्यक्ष राव-राजा, रायबहादुर पं० श्यामविहारीजी मिश्र थे, और हमारे सिपुर्द प्रधान मंत्री का कार्य था। हमारे अनुज चिरंजीवि ज्योतिलाल भार्गव ने प्रबंध-मंत्री का भार सँभाल लिया था। कुमारी सावित्री श्रीवास्तव के उद्योग से कवयित्रियों और स्त्रियों की उपस्थिति यथेष्ट थी। शायद इतनी स्त्रियाँ इससे पहले किसी भी सम्मेलन में न आई होंगी। रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र, पं० भगीरथ-प्रसाद दीक्षित, पं० सूर्यनारायणजी चतुर्वेदी, पं० निर्मलचंद्रजी चतुर्वेदी, प्रिंसिपल बालकृष्णजी पांडेय, प्रोफ़ेसर श्रीधरसिंहजी, पं० छंगामलजी मालवीय, श्रीयुत 'सरोज'जी, कुँवर हनुमंतसिंहजी भदौरिया, पं० महेशनाथजी शर्मा, पं० मोतीलाल भार्गव आदि-आदि की सहायता से सम्मेलन खूब सफल रहा। यहाँ हम श्रीयुत एच्० के० माथुर साहब को भी

दुलारे-दोहावली पर नई सम्मति

विद्वद्वर डॉक्टर वेणीशंकर झा, इंस्पेक्टर ऑफ़ स्कूल्स, नागपुर

My dear Bhargava,

In asking me to write an appreciation of your creation (Poetical) you are putting me to a severe test. Appreciation or judgment implies the duality between the judge and the object on which the judgment is directed. This sort of stand-off-ishness does not exist between your Dohawali and me. We are lost in each other, and indistinguishably merged. How can I appreciate what I live in?

With kindest thoughts,

Yours sincerely,
(Sd.) V. S. Jha

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

धन्यवाद देते हैं, जिनका सहयोग हमें सदा प्राप्त रहा। सम्मेलन का विस्तृत, सचित्र विवरण हम आगामी संख्या में देंगे।

× × ×

७. पं० रूपनारायणजी पांडेय की माताजी का स्वर्गवास !

प्रिय पंडित रूपनारायणजी पांडेय हिंदी के प्रसिद्ध

पं० रूपनारायणजी पांडेय की स्वर्गवासिनी माताजी

कवि, लेखक, अनुवादक और संपादक हैं। वह बहुत सुंदर गद्य और पद्य लिखते हैं। उनकी पूज्य जननी का अभी हाल ही में स्वर्गवास हो गया है! ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति दें, और पांडेयजी को धैर्य। पूज्य माताजी का चित्र प्रकाशित किया जा रहा है।

× × ×

८. पं० गणेशविहारीजी मिश्र का शरीरांत !

हिंदी-संसार को यह सुनकर बहुत दुःख होगा कि मिश्रबंधुओं में से ज्येष्ठ, पूज्य पंडित गणेशविहारीजी मिश्र अब इस संसार में नहीं रहे! वह एक वर्ष से हृद्रोग से पीड़ित थे, और गत ३ फ़रवरी की रात के ११$\frac{3}{4}$ बजे उनका शरीरांत हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति दें, और पूज्य मिश्रबंधुद्वय तथा उनके पुत्रों को धैर्य। आपकी जीवनी हम किसी आगामी संख्या में छापेंगे।

हिंदी के प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक पं० अमृतलालजी चक्रवर्ती और कविवर सैयद अमीरअलीजी 'मीर' का भी अभी हाल में देहांत हो गया है, उनकी जीवनी भी सुधा की किसी आगामी संख्या में प्रकाशित की जायगी।

× × ×

९. आगामी हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व के लिये निर्वाचकों से नम्र निवेदन

माननीय महोदय,

भारतीय भूपालों में, हिंदी-हितैषिता की दृष्टि से, ओरछा-नरेश श्रीमान् सवाई महेंद्र महाराजा वीरसिंहदेव का सर्वोच्च स्थान है। उन्होंने हिंदी-हित के लिये अब तक जो कुछ किया है, वैसा किसी भी देशी नरेश ने नहीं किया। भविष्य में हिंदी-हित की उनसे और भी आशा है। इस समय आगामी हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व का प्रश्न हमारे सामने है। राष्ट्रीयता की दृष्टि से, प्रचार की दृष्टि से, महात्मा गांधी और बाबू राजेंद्रप्रसादजी अभी हाल में सभापति का पद सुशोभित कर चुके हैं, इस वर्ष तो साहित्यिक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दृष्टि से ही किसी को सभापति चुनना चाहिए। यदि महाकवि बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त इस पद को सुशोभित करते, तो बहुत अच्छी बात होती। पर वह इस पद को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं हैं, हमने उनसे खुद पूछा था। गत कई वर्षों से हम हमेशा उनका नाम हिंदी-संसार के सम्मुख रखते आए हैं। अस्तु, इस वर्ष महाराजा ओरछा को सम्मेलन का सभापति बनाना चाहिए, और साहित्य, दर्शन, इतिहास एवं विज्ञान-विभागों के सभापति-पद पर क्रमशः हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, आचार्य और विद्वान् बाबू श्यामसुंदरदास, दर्शन के अद्वितीय पंडित डॉक्टर गंगानाथ झा, इतिहास के नए डी० लिट्० युवराज रघुवीरसिंहजी और विज्ञान के श्रेष्ठ विद्वान्, मंगलाप्रसाद-पारितोषिक-विजेता प्रोफ़ेसर गोरखप्रसादजी को प्रतिष्ठित करना चाहिए।

आपके पास सम्मेलन-कार्यालय से अपनी राय देने का फ़ॉर्म आ गया होगा। यदि वह खो गया हो, तो और किसी काग़ज़ पर अपनी सम्मति लिखकर हमारे पास भिजवा दें, या सम्मेलन-कार्यालय को सीधे भेज दें, और हमें भी एक पत्र डालकर सूचना दे दें। १५ फ़रवरी तक सम्मतियाँ आ जानी चाहिए। योग्य सेवा लिखें। कृपा रक्खें।

भवदीय

दुलारेलाल भार्गव

× × ×

१०. हिंदी-लेखकों से नम्र निवेदन

संवत् १९९४ से हम अपना प्रकाशन-प्रोग्राम और द्रुत गति से चलाना चाहते हैं। इस समय हमारे पास २०-२५ ही अच्छी पुस्तकें छापने को रह गई हैं। कृपया अपनी कोई श्रेष्ठ रचना भेजिए, तो हम उसे आगामी वर्ष में प्रकाशित कर दें।

इस वर्ष से स्कूली पुस्तकें भी हम प्रकाशित करना प्रारंभ करना चाहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में ही कोई ३५० साहित्यिक पुस्तकें हमने प्रकाशित कीं, पर हमें इससे कोई विशेष आर्थिक लाभ नहीं हुआ। खैर, आशा है, अब स्कूली पुस्तकें भी आप हमें लिखकर देंगे।

भवदीय

दुलारेलाल भार्गव

रेशमी साड़ी

नए फ़ैशन का फूलदार किनारा, पक्का रंग, अति सुंदर मुलायम, और मज़बूत। हर जगह यह इस क़दर पसंद की गई है कि जहाँ एक पारसल गया, वहाँ से दर्जनों का और ऑर्डर आया। ५ गज़ लंबी, ४४ इंच चौड़ी, मूल्य ६) प्रति जोड़ा मय महसूल डाक। नापसंद हो, तो दाम वापसी की शर्त है। आप भी एक बार अवश्य मँगाकर देखिए।

जगन्नाथ-चानणराम

विभाग ८९, लुधियाना (पंजाब)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

॥ श्री ॥

सामाजिक और साहित्यिक
मासिक पत्रिका

वर्ष १०, खंड १

श्रावण-पौष, ३१४ तुलसी-संवत् (१९९३ वि०)

अगस्त-जनवरी, १९३६-३७ ई०

संपादक

सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(संपादक गंगा-पुस्तकमाला)

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

राजसंस्करण		साधारण संस्करण		सस्ता संस्करण	
वार्षिक मूल्य	१२)	वार्षिक मूल्य	६)	वार्षिक मूल्य	४)
एक प्रति का मूल्य	१)	एक प्रति का मूल्य	॥)	एक प्रति का मूल्य	-।)
विदेश के लिये वार्षिक	१२)	विदेश के लिये	६)	विदेश के लिये वार्षिक	४)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुद्रक तथा प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-
कार्यालय और गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लेख-सूची

१—पद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	कोकिल	श्रीयुत बाबूलाल भार्गव बी० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न	३५४
२.	ग्वाल-बाल	श्रीमैथिलीशरण गुप्त	४
३.	गर्व-गंजन	पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न	४२५
४.	गीत	कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह बी० ए०	१२१
५.	गीत	श्रीयुत 'वचनेश'जी ... ४८, ६७, १६४, २८६ और	४७४
६.	गीत	पं० हृदयनारायण पांडेय 'हृदयेश'	६८
७.	जीवन का शाप	श्रीयुत पद्मकांत मालवीय	११४
८.	दर्शन	कुमारी विद्या भार्गव	६८
९.	निमंत्रण	श्रीयुत कपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्'	४३४
१०.	प्रिय, मैं ही हूँ चिर-रोदन ...	कुमारी विद्या भार्गव	२६४
११.	फूलवाली	श्रीरामकुमार वर्मा एम्० ए०	१६३
१२.	बाल मराली	पं० शिवरत्नजी शुक्ल 'सिरस'	२२४
१३.	भ्रम	श्रीसुमित्रानंदन पंत	४७
१४.	भारत-गीत	श्रीमान् रायबहादुर रावराजा पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०	३८५
१५.	मधु-कलश	श्रीयुत 'बच्चन'	२३८
१६.	मर्म-व्यथा	श्रीपं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'	२९०
१७.	मातृमंदिर	श्रीमैथिलीशरण गुप्त	३१७
१८.	मुक्तक	श्रीयुत रामविलास शर्मा एम्० ए०	२५४
१९.	मृत्यु से	श्रीयुत बालकृष्ण राव	४९८
२०.	रत्न-विलास	श्रीपं० लोचनप्रसाद पांडेय	६२
२१.	विचित्र वसुंधरा	श्रीपं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध' ...	४१७
२२.	स्मृति-सौंदर्य	पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न	१४२
२३.	साधना	श्रीरामकुमार वर्मा एम्० ए०	४७३

२—गद्य

१.	अछूत (कहानी)	श्रीशिवकृष्ण विश्वकर्मा	१४३
२.	अजमेर का राजस्थान-वनिता-आश्रम (परिचय) ...	श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह बी० ए०, एल-एल० बी०	३

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१६.	चीन की संस्कृति और उस पर लाव त्ज़े का प्रभाव	श्रीरामनाथलाल 'सुमन'	५१६
१७.	जल-प्रपात (गद्य-काव्य) ...	प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा एम्० ए०	६१
१८.	जापान के इतिहास के कुछ पृष्ठ (सचित्र)	श्रीयुत परमेश्वरलाल जैन 'सुमन'	२१२
१९.	जोज़फ़ीन (सचित्र, जीवनी) ...	श्रीयुत कुँवर राजेंद्रसिंह	३१८
२०.	ताटका	श्रीयुत कल्याणसिंह वैद्य	१५१
२१.	तुलसीदास की रामोपासना ...	श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्य-शिरोमणि	४८६
२२.	तेरह बरस बाद (कहानी) ...	आचार्य श्रीचतुरसेनजी शास्त्री	३८७
२३.	दस्ताबेज़ (कहानी)	श्रीप्रतापचंद्र 'चंद्र' बी० ए०	२६७
२४.	दसवाँ रस (हास्य) ...	श्रीयुत बद्रीनारायण शुक्ल एम्० ए०	४२७
२५.	नए फूल	८३, १८२, २७८, ३७५, ४५६ और ५५०	
२६.	नंगे क्यों न रहो?	श्रीयुत वंशीधर मिश्र एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	३२५
२७.	पद्माकर की कविता में अर्थ-चमत्कार	श्रीगोपेशकुमार ओझा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	४०१
२८.	परिताप (कहानी)	श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०	३४७
२९.	परीक्षा	श्रीयुत व्रजमोहन तिवारी एम्० ए०, श्रीयुत उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०, (आनर्स), श्रीयुत प्रेमनारायण टंडन, श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह बी०ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत भूपनारायण दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत ग०, श्रीयुत विद्याभूषण बी०ए०, श्रीयुत कल्याणसिंह वैद्य, श्रीयुत शंकरराव जोशी, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीयुत चंद्रिकाप्रसाद 'जिज्ञासु' और श्रीयुत रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ७८, १७७, २७५, ३७१, ४५६ और ५४७	
३०.	पेरिस से पहला विस्तृत पत्र ...	डा० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० ...	४३१
३१.	प्रेमचंदजी के संस्मरण ...	श्रीयुत मंगलदेव शर्मा जर्नलिस्ट	३४०
३२.	व्रज-भारती (आलोचना) ...	श्रीयुत पुरुषोत्तमलाल भार्गव एम्० ए०, शास्त्री ...	३३०
३३.	व्रज-भारती पर एक दृष्टि (आलोचना)	श्रीपं० रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट	५१६
३४.	व्रजभाषा का क्षेत्र क्या सीमित है?	श्रीयुत किशोरीदास वाजपेयी	५०६
३५.	व्रजभाषा-कोष	श्रीपं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी	४७
३६.	बाबू वृंदावनलाल वर्मा (संस्मरण)	श्रींयुत मुंशी ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद	४०६
३७.	बाहर और भीतर (कहानी) ...	आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	१४
३८.	भगवतीचरण वर्मा का 'तीन [illegible] (आलोचना)	श्रीभारतीय एम्० ए०	३६५

CC0. Cu[illegible]

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
३.	अरब के समुद्र से पत्र ...	डॉ० धीरेंद्र वर्मा, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय	६३
४.	आयुर्वेदाचार्य पं० शिवराम द्विवेदी और उनका स्वास्थ्य-सदन (सचित्र)	साहित्यरत्न पं० भगीरथप्रसाद दीक्षित	१२२
५.	आशावाद (आलोचना) ...	श्रीयुत नलिनीमोहन सान्याल एम्० ए०, भाषातत्त्वरत्न ...	१८
६.	आशंका (कहानी)	श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी	५७
७.	इस्तीफ़ा (कहानी)	श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०	६६
८.	इस्लाम के प्रबल प्रवाह को कैसे रोका जाय ?	श्रीयुत संतराम बी० ए०	३३३
९.	उत्पत्ति का आदर्श	प्रोफ़ेसर दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० और अध्यापक भगवानदास केला	३६१
१०.	एकमात्र उपाय	श्रीदुलारेलाल भार्गव	१
११.	अंतरराष्ट्रीय संधियों का मूल्य	श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०	५११
१२.	कलंकिनी कला	साहित्याचार्य श्रीपं० गयाप्रसाद शास्त्री, वैद्य 'श्रीहरि' ...	३०३
१३.	ग्राम्य गीत और कृष्ण ...	श्रीसीता 'प्रभाकर' और श्रीलीला 'भूषण' ...	२४६
१४.	घटना-चक्र (कहानी) ...	श्रीयुत चंद्रराज भंडारी विशारद	२०१
१५.	चयन	श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास 'सूर्य', श्रीयुत 'प्रजाकर', श्रीयुत दुर्गाप्रसाद, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद गुरु, श्रीयुत गुरुप्रकाश गुप्त 'मुकुल' बी० ए०, श्रीयुत मदनमोहन विद्याधर, कुमारी इंदु व्यास, विद्यावाचस्पति श्रीयुत माधवेंद्र शास्त्री, श्रीयुत रामावतार यादव 'शक्र' विशारद, श्रीयुत गंगाप्रसाद पांडेय, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिस्री 'रमा', श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव बी० ए०, ऑनर्स, श्रीयुत अजितप्रसाद जैन एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत रसिकरंजन रतूड़ी, श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरडिया, श्रीयुत गिरिधरप्रसाद, श्रीयुत किशोरीदास वाजपेयी, कुमारी सुमित्रा पसरीचा, श्रीयुत एस्० एल्० दास गुप्ता, एक महिला, श्रीयुत चंद्रशेखर पांडेय 'चंद्रमणि', श्रीमती विद्यावती, श्रीयुत दुलारेलाल भार्गव, श्रीयुत राजेश्वर गुरु, श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव, श्रीयुत बालगोविंदप्रसाद श्रीवास्तव, श्रीयुत महादेवप्रसादसिंह एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत विश्वनाथ मिश्र साहित्याचार्य, श्रीयुत शतंजीव झा बी० ए०, श्रीयुत केशवप्रसाद वर्मा, श्रीयुत 'प्रकाश', कुमारी 'रश्मि' त्रिपाठी विशारद, कुमारी स्वरूपकुमारी काक 'करुणा', श्रीयुत यदुनंदन मिश्र एम्० ए०, श्रीयुत गिरिधरजी शर्मा 'नवरत्न', श्रीयुत लोचनप्रसाद पांडेय, श्रीसुशीलकुमारी मिश्र, कुमारी दमयंती 'प्रभाकर', श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', श्रीयुत मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट' और श्रीयुत लक्ष्मीधर वाजपेयी ...	६६, १६३, २६५, ३५६, ४२५ और ५०१

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१६.	चीन की संस्कृति और उस पर लाव त्ज़े का प्रभाव	श्रीरामनाथलाल 'सुमन'	५१६
१७.	जल-प्रपात (गद्य-काव्य) ...	प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा एम्० ए०	६१
१८.	जापान के इहिास के कुछ पृष्ठ (सचित्र)	श्रीयुत परमेश्वरलाल जैन 'सुमन'	२१२
१९.	जोज़फ़ीन (सचित्र, जीवनी) ...	श्रीयुत कुँवर राजेंद्रसिंह	३१८
२०.	ताटका	श्रीयुत कल्याणसिंह वैद्य	१५१
२१.	तुलसीदास की रामोपासना ...	श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्य-शिरोमणि	४८६
२२.	तेरह बरस बाद (कहानी) ...	आचार्य श्रीचतुरसेनजी शास्त्री	३८७
२३.	दस्ताबेज़ (कहानी)	श्रीप्रतापचंद्र 'चंद्र' बी० ए०	२६७
२४.	दसवाँ रस (हास्य) ...	श्रीयुत बद्रीनारायण शुक्ल एम्० ए०	४२७
२५.	नए फूल		८३, १८२, २७८, ३७५, ४५६ और ५५०
२६.	नंगे क्यों न रहो?	श्रीयुत वंशीधर मिश्र एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	३२५
२७.	पद्माकर की कविता में अर्थ-चमत्कार	श्रीगोपेशकुमार ओझा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	४०१
२८.	परिताप (कहानी)	श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०	३४७
२९.	परीक्षा	श्रीयुत ब्रजमोहन तिवारी एम्० ए०, श्रीयुत उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०, (आनर्स), श्रीयुत प्रेमनारायण टंडन, श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह बी०ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत भूपनारायण दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत ग०, श्रीयुत विद्याभूषण बी०ए०, श्रीयुत कल्याणसिंह वैद्य, श्रीयुत शंकरराव जोशी, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीयुत चंद्रिकाप्रसाद 'जिज्ञासु' और श्रीयुत रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	७८, १७७, २७५, ३७१, ४५६ और ५४७
३०.	पेरिस से पहला विस्तृत पत्र ...	डा० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० ...	४३१
३१.	प्रेमचंदजी के संस्मरण ...	श्रीयुत मंगलदेव शर्मा जर्नलिस्ट	३४०
३२.	ब्रज-भारती (आलोचना) ...	श्रीयुत पुरुषोत्तमलाल भार्गव एम्० ए०, शास्त्री ...	३३०
३३.	ब्रज-भारती पर एक दृष्टि (आलोचना)	श्रीपं० रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट	५१६
३४.	ब्रजभाषा का क्षेत्र क्या सीमित है?	श्रीयुत किशोरीदास वाजपेयी	५०६
३५.	ब्रजभाषा-कोष	श्रीपं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी	४७
३६.	बाबू वृंदावनलाल वर्मा (संस्मरण)...	श्रीयुत मुंशी ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद	४०६
३७.	बाहर और भीतर (कहानी) ...	आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	१४
३८.	भगवतीचरण वर्मा का 'तीन [illegible] (आलोचना)	श्रीमालवीय एम्० ए०	३१५

CCO, Gurukul Kangri [illegible]

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
३६.	भारतीय साहित्य के तीन युग ...	श्रीभागवत शुक्ल 'पाथोद'	२२५
४०.	भूमध्य-सागर से पत्र ...	डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० ...	११०
४१.	भूल (कहानी)	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	२५५
४२.	मध्यप्रांत के मूल-निवासी गोंड (सचित्र)	श्रीपं० प्रयागदत्तजी शुक्ल	४१
४३.	मसूरी-शैल की सैर (सचित्र,यात्रा)	श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास	४२०
४४.	महाराज हेमू विक्रमादित्य (जीवनी)	लेफ़्टिनेंट कर्नेल श्रीमनोहरलाल भार्गव आई० एम्० एस्० ...	७६१
४५.	मिस्र-देश के अमर स्मारकों की करुण कहानी	श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी० ...	१२८
४६.	मेरी जापान-यात्रा और जापानी जीवन पर विहंगम दृष्टि (सचित्र, यात्रा) ...	श्रीयुत सेठ लक्ष्मणप्रसाद बैंकर और रईस	४६१
४७.	मेरी वेलिस्का (जीवनी) ...	श्रीयुत कुँवर राजेंद्रसिंह	४३५
४८.	मोहिनी (कहानी)	श्रीयुत 'गँवार' एम्० ए०, डी० लिट्०	४७५
४९.	यमदूत से साक्षात् (सचित्र, सच्ची कहानी)	श्रीयुत श्रीराम शर्मा	३०६
५०.	योरप से पहला पत्र (यात्रा-विवरण)	डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० ...	३५१
५१.	रसाविर्भाव और आनंदानुभव	श्रीयुत लक्ष्मीधर वाजपेयी ... ७ और	११२
५२.	राजा कौन है ?	श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा	१३१
५३.	लिक्खाड़जी (व्यंग्य चित्र) ...		५३३
५४.	लेडी विद्या बहन	श्रीमती राजकुमारीदेवी मिश्र 'रमा'	१६५
५५.	व्याकरण-विडंबना	हास्यरसावतार, आचार्य पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ...	४१८
५६.	स्वतंत्रता का भूखा फ़िलस्तीन	श्रीरामनाथलाल 'सुमन'...	२२
५७.	समय (कहानी)	श्रीकामेश्वरनाथ भार्गव विशारद	५२२
५८.	सुधा-चित्रावली	१२६, ३५५, ४४१ और	५३३
५९.	सूफ़ी-मत	श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्य-शिरोमणि, हिंदी-रिसर्च स्कालर, पटना-कॉलेज ...	२४१
६०.	सौरभ (सचित्र, संपादकीय विचार)	८४, १८३, २७६, ३७६, ४६० और	५५१

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

क—रंगीन

(आर्ट पेपर पर)

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	कुमारी दमयंती 'प्रभाकर' (एकरंगा)	५०६
२.	कुमारी मीरा मित्रा (एकरंगा) ...	१७
३.	कुमारी विद्या भार्गव (दुरंगा) ...	२००
४.	कुमारी स्वरूपकुमारी काक 'करुणा' (दुरंगा)	४२५
५.	ग्वालियर-नरेश श्रीमान् महाराजा जॉर्ज जीवाजी राव शिंदे (दुरंगा) ...	३४५
६.	पर्वत-नीर (तिरंगा)	३८५
७.	महाराजा श्रीमानसिंहजी साहब (एकरंगा)	३२
८.	महाराजा श्रीहिम्मतसिंहजी साहब (एकरंगा)	३३
९.	महाराजा हेमचंद्र (हेमू) दूसर भार्गव (तिरंगा)	१९३
१०.	माता (तिरंगा)	९७
११.	मीरा की प्रिय वंशी (तिरंगा) ...	४७३
१२.	राजस्थान-वनिता-आश्रम, अजमेर के कुछ पदाधिकारी तथा कर्मचारी (एकरंगा)	८१
१३.	रायबहादुर, राज्यरत्न श्रीजगन्नाथजी साहब भंडारी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० (एकरंगा)	४९
१४.	लेडी विद्यागौरी सर रमणभाई नीलकंठ बी० ए० (दुरंगा)	२०१
१५.	श्रीमान् कुँवर महेंद्रप्रतापसिंहजू (तिरंगा)	२८९
१६.	श्रीयुत पं० रामचंद्र शुक्ल (दुरंगा) ...	४२४
१७.	श्रीसेठ चिन्नूभाई - लल्लूभाई मेहता (एकरंगा)	८०
१८.	स्वर्गीय प्रेमचंदजी (एक ग्रूप में) (दुरंगा)	३४४
१९.	स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीतारामजी का परिवार (एकरंगा)	५०८
२०.	स्वर्गीय श्रीपूरनचंदजी नाहर एम्० ए०, बी० एल्० (एकरंगा)	१६
२१.	स्वर्गीय श्रीसूर्यकरणजी शारदा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ऐडवोकेट (एकरंगा)	४८
२२.	सुदामा का स्वागत (तिरंगा) ...	०

ख—व्यंग्य

१. लिक्खाड़जी ५३२

ग—सादे

१-११. अजमेर की राजस्थान - वनिता-आश्रम-संबंधी ११ चित्र ३५-३७ और ३९-४५

१२-१६. आर्य-कुमार-आश्रम, बड़ौदा - संबंधी ... १६६-१६८

१७. उमरख़य्याम ४४१

१८. एक आदर्श पिता-पुत्री १६२

१९. कविराज बिहारीलाल (बिजावर) ... ५३४

२०. कुछ उन्नतिशीला भारतीय रमणियाँ ... ४४३

संख्या	चित्र	पृष्ठ
२१.	कोबे के निकट रोक्को-पर्वत पर रस्सी का मार्ग	५०१
२२.	जन्मांध बालक रामदास	५३५
२३-३०.	जापान के इतिहास के कुछ पृष्ठ-संबंधी ८ चित्र	२१६-२२२
३१.	जोज़ेफ़ीन	३१६
३२-३३.	डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० (दो चित्र) ...	६४ और ३५२
३४.	प्रकृति की विचित्रता	१५६
३५.	बाबू वृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०	४१२
३६-४१.	मध्यप्रांत के मूल-निवासी गोंड़-संबंधी ६ चित्र	५१-५५
४२-४४.	मसूरी-शैल की सैर-संबंधी ३ चित्र	४२१-४२३
४५.	मिसेज़ सिंपसन	५५२
४६.	मेरठ-निवासी स्वर्गीय श्रीदयास्वरूप दुबलिश	४४४
४७-५०.	यमदूत से साक्षात्-संबंधी ४ चित्र	३११ और ३१३-३१५
५१.	राजपूताने की एक रमणी	५३६
५२.	रोक्को-पर्वत का रस्सी-मार्ग का स्टेशन ...	५०४
५३.	लोचनप्रसाद पांडेय	५३५
५४-५७.	व्यायाम-प्रसारक मंडल-संबंधी ४ चित्र	४६८-४६६
५८.	विद्यावाचस्पति श्रीपं० माधवेंद्र शास्त्री ...	१६४
५९.	श्रीनिर्मलादेवी नाहर	१५६
६०.	श्रीप्रभातकुमार बनर्जी	२७२
६१.	श्रीप्रतापचंद्रजी 'चंद्र' बी० ए० ...	२६७
६२.	श्रीपं० उमाशंकरजी वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०	३५५
६३.	श्रीपं० जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल ...	६५
६४.	श्रीपं० प्रयागदत्तजी शुक्ल	४६
६५.	श्रीपं० लक्ष्मीशंकरजी मिश्र 'अरुण' बी० ए०	२५५
६६.	श्रीपं० श्रुतबंधुजी शास्त्री, वेदतीर्थ ...	१६५
६७.	श्रीबालगोविंदप्रसाद श्रीवास्तव ...	३५८
६८.	श्रीमती 'कमल' हिंदी भूषण ...	४४८
६९.	श्रीमती प्रभा	३५७
७०.	श्रीमती शन्नोदेवी	३५८
७१.	श्रीमती सरला पी० दत्त	१६०
७२.	श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए० ...	३४७
७३.	श्रीयुत नलिनीमोहन सान्याल एम्० ए०, भाषातत्त्वरत्न	१८
७४-७५.	श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी० (दो चित्र) ३३ और	१२६
७६.	श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०	६६
७७.	श्रीयुत ब्रिजलाल बियाणी, अकोला (बरार)	५३३
७८.	श्रीयुत महेशचंद्रजी बी० ए० ...	१६१
७९.	श्रीयुत मुंशी ज़हूरबख्श हिंदीकोविद	४१०
८०.	श्रीयुत राय कृष्णदासजी	३५६
८१.	श्रीयुत लक्ष्मीधर वाजपेयी ...	७
८२.	श्रीयुत वंशीधर मिश्र एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	३२५
८३.	श्रीयुत सम्राट् अष्टम एडवर्ड ...	५५२
८४.	श्रीयुत सूर्यनारायणजी व्यास ...	४२०
८५-८६.	श्रीरामनाथलाल 'सुमन' (दो चित्र) २२ और	५२०
८७.	श्रीलाला श्रीरामजी	३६२
८८.	श्रीलीला 'भूषण'	२४७
८९.	श्रीविश्वनाथजी मिश्र साहित्याचार्य ...	४४५
९०.	श्रीसीता 'प्रभाकर'	२४८
९१.	श्रीसंतराम बी० ए०	३३३
९२.	स्वर्गीय प्रो० विष्णुनारायण भातखंडे ...	२८५
९३.	स्वर्गीय मुं० प्रेमचंदजी	२८७
९४.	स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीतारामजी...	५५९
९५.	स्वर्गीया श्रीमती यशोदादेवीजी ...	१६०
९६.	स्वर्गीया श्रीमती सुखदादेवीजी ...	७२
९७-९९.	स्वास्थ्य-सदन-संबंधी ३ चित्र	१२३-१२५
१००.	सेठ लक्ष्मणप्रसाद, बैंकर और रईस, आगरा	४९९
१०१.	संपादक-सम्मेलन, इंदौर	४४४
१०२.	हिज़ हाइनेस दि महाराजा साहब बहादुर जयपुर	४४३

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'विश्वधर्मांक'

की

एक रूप-रेखा

विशेषांक की अभूतपूर्व योजना

'गीताधर्म' के दूसरे वर्ष का एक बहुत बड़ा विशेषांक होगा 'विश्वधर्मांक'। यह बड़ा अंक क्या संसार-भर के धर्मों का विश्वकोष अर्थात् इनसाइक्लोपेडिया (Encyclopaedea) होगा। इसमें सभी प्रधान धर्मों का दिग्दर्शन कराया जायगा। बड़े-बड़े धर्म-प्रवर्तकों, आचार्यों और उन धर्मों के माननेवाले प्रांत आदि के चित्र देकर इस उपयोगी अंक को और भी उपयोगी तथा सुंदर बनाया जा रहा है। इस अंक का मूल्य होगा तीन रुपए। वर्ष-भर के ग्राहकों के लिये ४) चार रुपए में ही बारहो अंक मिलेंगे, इसका अर्थ यह है कि वर्ष-भर के बाक़ी अंक १) एक ही रुपया में मिलेंगे।

इस अंक की विषय सूची तो पूरे ग्रंथ के लिख जाने पर ही अक्षरानुक्रम के अनुसार बनेगी। पर उसकी एक रूप रेखा हम यहाँ दे रहे हैं—

(१) भूमिका में पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, विश्वधर्मांक का लक्ष्य और धर्म शब्द की ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा भाषा-वैज्ञानिक मीमांसा रहेगी। इसी भाग में धार्मिक शब्दों की एक सूची रहेगी अँगरेज़ी, संस्कृत आदि पर्यायों के साथ।

(२) परिचय-खंड में विश्व के भौगोलिक विभाग के अनुसार अर्थात् आजकल के सभी देशों और प्रांतों के प्रचलित मतों का परिचय दिया जायगा। साथ ही विश्व के इतिहास का ध्यान रखकर कुछ बीते युग के धर्मों का भी परिचय दिया जायगा। अंत में धर्मों तथा धार्मिक संस्थाओं का एक इतिहास रहेगा, जिसमें धर्म के पहले की सत्य भावना और उसके पीछे की विकसित धर्म-भावना दोनो का स्वरूप यथामति दिखाया जायगा।

(३) परिशिष्ट में भिन्न-भिन्न धर्मों पर लिखे हुए भिन्न-भिन्न विशेष पुरुषों के लेख एवं प्राचीन काल के अनेक महापुरुष तथा आधुनिक काल के जीवित विचारकों और नेताओं के धर्म-संबंधी विचारों का संग्रह रहेगा। पश्चात् धर्म पर कुछ सामान्य लेख भी रहेंगे, और सबसे अंत में गीताधर्म और विश्वधर्म के संबध में कुछ चर्चा रहेगी। अनुक्रमणियों से परिशिष्ट समाप्त होगा।

चित्र और मानचित्र आवश्यकतानुसार सभी खंडों में रहेंगे।

प्रार्थना - इस बड़े कार्य में सभी लोगों का सहयोग अपेक्षित है। अर्थवान् अर्थ से और लेखक तथा विद्वान् विद्या से हमारी सहायता कर सकते हैं। हमारी इच्छा है कि इस अंक के द्वारा हमारे सभी भाई विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में फैले हुए एक विश्वधर्म को पहचान सकें। धर्म का दूसरा पर्याय है ईश्वर, पर लोग भिन्न-भिन्न रूपों में ईश्वर को नहीं पहचान पाते, इसलिये भ्रम में पड़ जाते हैं। इससे हमारी इच्छा है कि हम इस विशेषांक द्वारा धर्म अथवा ईश्वर के उन भिन्न-भिन्न रूपों को एक बार देखने और उन पर विचार करने की कोशिश करें। धर्म के इस विश्व-रूप के साक्षात् दर्शन से विश्व की एकता का अनुभव होगा, ऐसी हमें आशा है। अब हमारे भाई हमारे लक्ष्य को समझ गए होंगे, और वे अधिक-से-अधिक ग्राहक बनकर और बनाकर हमारे आर्थिक भार को हलका करेंगे। विद्वान् कुछ बातें सुझावें, तो इस शिक्षा और ऐक्य-प्रचार के कार्य में बड़ा काम हो सकता है।

जो सज्जन अपने धर्म, मत, संप्रदाय, पंथ, धर्म-ग्रंथ अथवा संस्था-विशेष का परिचय देकर हमारी सहायता कर सकते हों, वे अवश्य कृपा करें। सूचना १५ जनवरी, १९३७ के पूर्व ही हमारे कार्यालय में आ जानी चाहिए।

अपने धर्म-संबंधी विशेष विचारों तथा ग्रंथों के नाम आदि भेजकर जो लेखक तथा धर्माचार्य सहायता करने की कृपा करना चाहें, उनकी जानकारी के लिये हम कुछ विषयों के नाम दे देते हैं—

१. हिंदू, २. यहूदी, ३. ईसाई, ४. इस्लाम-धर्म और ५. चारो धर्मों की शाखाएँ, संप्रदाय तथा पंथ।

प्रार्थी—संपादक 'गीताधर्म', साक्षीविनायक, काशी।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सस्ती, सुंदर, शुद्ध छपाई के लिये

भगवानदीन

आर्यभास्कर-प्रेस, आगरा प्रसिद्ध है

यहाँ संस्कृत, हिंदी और उर्दू की पुस्तकें, समाचार-पत्र और विज्ञापन आदि समस्त साहित्य ठीक समय पर, सस्ते दरों पर, छापकर दिए जाते हैं।

आर्यभास्कर-प्रेस आर्य-जगत् का सबसे प्रिय प्रेस है। प्रत्येक आर्य-समाज, आर्य-संस्था और आर्य-सज्जन का यह कर्तव्य है कि अपनी पुस्तकें, व्यावसायिक काग़ज़-पत्र, लेटर-हेडिंग, कार्ड, लिफ़ाफ़े, सूचीपत्र, विज्ञापन, नोटिस आदि समस्त कार्य आर्यभास्कर-प्रेस में ही छपावें। घर बैठे सब काम सुविधा से, उचित रेटों पर, शुद्ध, स्वच्छ रीति से प्राप्त करें।

पत्र-व्यवहार का पता—व्यवस्थापक भगवानदीन, आर्यभास्कर-प्रेस, माईथान, आगरा।

आप आर्य हैं? आर्य-संस्कृति के प्रेमी हैं? अपनी संतानों को भी सच्चा आर्य बनाना चाहते हैं? जगत् में आर्य-संस्कृति का वातावरण उत्पन्न करना चाहते हैं? अनायास वैदिक सिद्धांतों को जानना चाहते हैं?

यदि हाँ, तो आप अति शीघ्र आर्यमित्र के ग्राहक बन जाइए।

क्योंकि—आर्यमित्र—आर्यजगत् की वाणी है।

आर्यमित्र—समस्त आर्य-प्रतिनिधियों और आर्य-संस्थाओं का सम्मानित पत्र है।

आर्यमित्र—किसी भी उच्च कोटि के साप्ताहिक पत्र से किसी बात में कम नहीं।

आर्यमित्र—धार्मिक, सामाजिक और नैतिक उन्नति का संदेश सुनाता है।

आर्यमित्र—वैदिक सभ्यता, वैदिक सिद्धांत, उपनिषदों के शांतिप्रद उपदेश और प्राचीन ऋषियों के विचारों का सर्वोपरि प्रतिनिधि, सर्वश्रेष्ठ प्रचारक और सर्वोत्तम उपदेशक है।

आर्यमित्र—वेदों, दर्शनों, ब्राह्मण-ग्रंथों और स्मृतियों के विद्वानों और पश्चिमी साइंसों के जानने-वाले उत्तमोत्तम विद्वानों के लेखों से भूषित रहता है।

आर्यमित्र—उत्तम, जाग्रत्, लिखित-पठित परिवारों, उच्च कोटि के शिक्षित हज़ारों जन-समुदाय और अग्रसर महिला-जगत् में आदरपूर्वक पढ़ा जाता है।

आर्यमित्र—प्रत्येक नवयुवक और नवयुवतियों एवं किशोर-किशोरियों, बालक-बालिकाओं, सभी के हाथों में बिना शंका के देने योग्य है। वह शुद्ध एवं पवित्र संस्कार उत्पन्न करता है।

आर्यमित्र—धर्म-प्रेम, देश-प्रेम, जाति-प्रेम, समाज-प्रेम और संगठन उत्पन्न करता तथा सामाजिक दोषों की निर्भीक आलोचना करता है।

आर्यमित्र—देश, विदेश, जहाँ-जहाँ हिंदू आर्य-जाति के लोग जा बसे हैं, सर्वत्र जाता है।

आर्यमित्र—आर्य-जगत् में सर्वप्रिय, माननीय पत्रों में से प्रमुख है। आप आर्यमित्र से अपने को सर्वथा वंचित न रखिए। वार्षिक मूल्य केवल ३॥) । नमूना मँगाइए।

पत्र-व्यवहार का पता—**व्यवस्थापक आर्यमित्र, आगरा।**

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

छप रही है !

रानी बिटिया

छप रही है !!

(लेखक—श्रीज़हूरबख़्श 'हिंदी-कोविद')

इस पुस्तक में एक ऐसी लड़की की कहानी लिखी गई है, जो अत्यंत सुशीला और बुद्धिमती थी। जब उस पर विपत्ति पड़ी, तब उसने अपूर्व धैर्य और कष्ट-सहिष्णुता का परिचय दिया, एवं केवल स्वावलंबन का आश्रय लेकर अपने तथा अपने आत्मीयों के अंधकार-पूर्ण दिवस प्रकाशमय कर दिए। कहानी आदि से अंत तक अत्यंत रोचक और हृदय-ग्राही है। पुस्तक की भाषा इतनी सरल है कि उसे अक्षर-ज्ञान-मात्र रखनेवाली बालिकाएँ तथा महिलाएँ बड़ी आसानी से समझ लेंगी। वास्तव में, हिंदी में, बालिकाओं के हितार्थ ऐसी नसीहत-आमेज़ पुस्तकें बहुत ही कम प्रकाशित हुई हैं। यह पुस्तक प्रत्येक पढ़ी-लिखी बालिका के हाथ में देने योग्य है। जो बालिका इसे पाएगी, आदि से अंत तक पढ़े बिना न मानेगी, और पुस्तक-समाप्ति के पश्चात् उसके मन पर जो प्रभाव पड़ेगा, वह बहुत सुंदर होगा। ऐसी उपयोगी पुस्तक का मूल्य लगभग ।।) होगा। चित्र १२। कृपा कर अपनी प्यारी बालिका के लिये एक प्रति ख़रीद दीजिए।

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

बंबई का सर्व-प्रथम

साहित्य-सिनेमा-प्रधान विविध-विषय-विभूषित, सचित्र, साप्ताहिक

वार्षिक मूल्य ४) } **न्यू सिनेमा-संसार** { एक प्रति -)

संपादक—
श्रीनिधि द्विवेदी

संचालिका—
श्रीमती श्यामसरोजदेवी

प्रत्येक अंक में पढ़िए—

सुंदर कहानियाँ, मधुर कविताएँ, सार-गर्भित, साहित्यिक, सिनेमा-विषयक, सामाजिक एवं विविध वैचित्र्य-पूर्ण लेख, आलोचना, समाचार, मनोरंजक हास्य आदि। प्रत्येक अंक में रंगीन एवं सादे अनेकों चित्र। प्रतिवर्ष ४ विशेषांक। नमूने के लिये -) का टिकट भेजिए। विज्ञापनदाता के लिये स्वर्ण-सुयोग।

पत्र-व्यवहार का पता—
मैनेजर
'न्यू सिनेमा-संसार', कालबादेवी रोड, बंबई

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हिंदी-संसार में हलचल

सातो दिन समाचार पढ़िए !

सबसे सस्ता, डबल क्राउन आकार के ८ पृष्ठों का

दैनिक लोकमान्य

एक प्रति १ पैसा, वार्षिक मूल्य १०), छमाही ५॥), तिमाही ३)

—१२ पृष्ठ का—

साप्ताहिक लोकमान्य

एक प्रति २ पैसा वार्षिक मूल्य २)

विज्ञापनदाताओं को ख़ास सुबाता

सर्वत्र एजेंटों की आवश्यकता है

नमूने की प्रति तथा पूर्ण जानकारी के लिये लिखिए—

मैनेजर 'लोकमान्य'

१६० हैरिसन रोड, कलकत्ता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिंदी-संसार में एक नई चीज़ मँगाकर देखिए

क्या आप

भारत का प्राचीन इतिहास
भारत की प्राचीन सभ्यता
भारत का प्राचीन भ्रातृ-प्रेम
भारत-सपूतों का पितृ-आज्ञा-पालन

भारत का प्राचीन विज्ञान
भारत की प्राचीन पवित्रता
भारत की ललनाओं का अपूर्व त्याग
प्राचीन भारत का स्वामी-सेवक-भाव

और

पाप पर पुण्य की विजय
असत्य पर सत्य की विजय
पापी के सर्वनाश की
कथा नहीं जानना चाहते ?

तो
हमारी
२० खंडों में
प्रकाशित
होनेवाली
तुलसी-कृत

रामायण

सटीक और
सचित्र—
पढ़िए

क्यों न हों ?

ऐसी रामायण अब तक कहीं नहीं छपी !

मँगाकर देखें !!

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक बड़ी भारी कमी की पूर्ति

हिंदी-साहित्य-भांडार में रामायण-सी अद्भुत पुस्तक का सुंदर रूप में न होना खटकता है। किसी की टीका बुरी है, तो किसी में क्षेपकों की भरमार है। छपाई और काग़ज़ तो बहुत ही रद्दी होता है। चित्र होते ही नहीं। होते भी हैं, तो बहुत रद्दी। इसकी पूर्ति के लिये हमने रामायण का शुद्ध अनुवाद हिंदी के सुयोग्य विद्वानों द्वारा कराया है। टीका की भाषा बहुत ही सरल है, जिसे कम पढ़ा आदमी भी पूर्णतया समझ सकेगा। थोड़े-से-थोड़ा पढ़े हुए स्त्री और बच्चे भी इसका रसास्वादन कर सकेंगे। चित्र ऐसे सुंदर और मनोमोहक हैं कि देखकर आप यही समझेंगे कि ये चित्र नहीं हैं, वास्तविक घटना हमारी आँखों के सामने हो रही है। अंतर्कथाएँ भी अनेक चित्रों के साथ दी गई हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सचित्र तुलसी-कृत

रामायण

[२० खंडों में]

यह रामायण २० खंडों में प्रकाशित हो रही है। प्रत्येक खंड में ८० पृष्ठ, अनेक सादे और ६-७ रंगीन चित्र रहते हैं। साइज़ सुधा का-सा भव्य है। मूल्य प्रति खंड का १) है, अर्थात् कुल रामायण २५) की होगी। कारण, उसमें १६०० से ऊपर पृष्ठ और सैकड़ों रंगीन और सादे चित्र होंगे।

ग्राहकों को विशेष सुविधा

कृपा कर ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों से भी अनुरोध करें। इस सहायता से हमारे जीवन की एक योजना पूर्ण हो जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा। मूल्य इस प्रकार है—

१. प्रत्येक खंड का मूल्य १) है। डाक-व्यय अलग।

२. प्रथम चार खंडों का मूल्य ५) ही लिया जायगा। किंतु ये ५) एक साथ, आरंभ में ही, भेजने होंगे। डाक-व्यय माफ़ रहेगा।

३. पूरे २० खंडों का रियायती मूल्य २०) होगा। डाक-व्यय कुछ भी न लिया जायगा। २०) पेशगी देने होंगे।

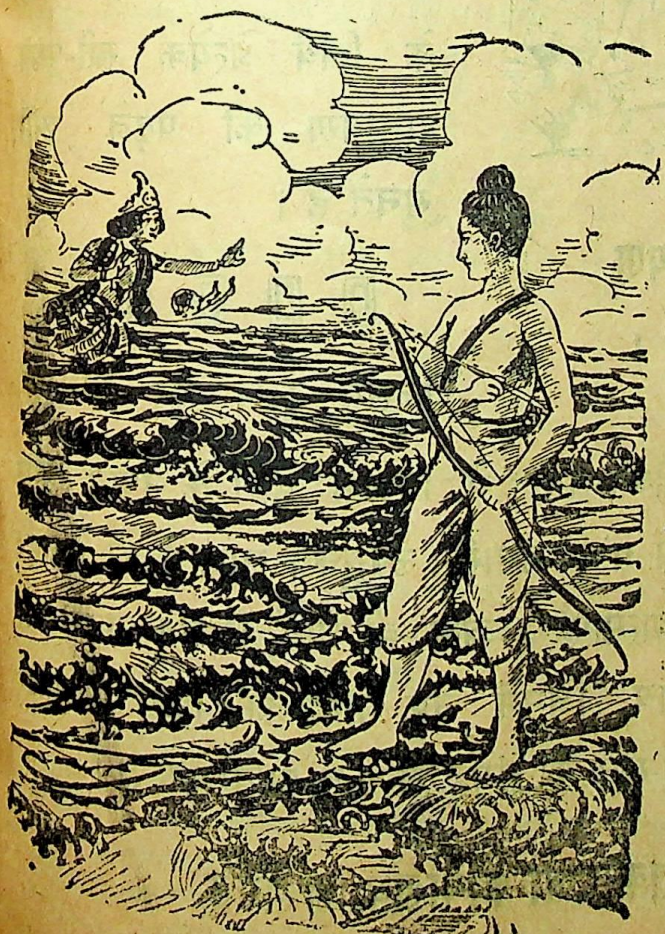

दो खंड

निकल गए !

तीसरा खंड

छप रहा है !!

संचालक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

(रामायण-विभाग)

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रत्येक मनुष्य को रामायण क्यों ख़रीदनी चाहिए !

रामायण हिंदू-जाति की पवित्र पुस्तक है, उत्तम काव्य है। जिस हिंदू के घर में रामायण होगी, वह घर पवित्र समझा जायगा। श्रीराम का पवित्र चरित्र सुनने के लिये, भरत का त्याग जानने के लिये, लक्ष्मण का भ्रातृ-प्रेम देखने के लिये और सीताजी का पतिव्रत प्रेम मनन करने के लिये प्रत्येक स्त्री-पुरुष रामायण को पढ़ते और सुनते हैं।

जिसमें दुःख दूर होने की युक्तियाँ, सुख-प्राप्ति के साधन, जीवन-समर में विजयी होने के उपाय और शिक्षा-प्रद उपदेश भरे पड़े हों, जो ग्रंथ हमारी उपयुक्त साधनों की धरोहर हो, जिसे पढ़कर हमारी मलीन आत्माएँ उज्ज्वल हो जायँ, जिसके पढ़ने से नाना क्लेशों से छुटकारा मिल जाय, जिसमें नष्ट गौरव को फिर से प्राप्त करने का आदर्श हो, ऐसे रामायण-रत्न का संग्रह अत्यंत आवश्यक है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला फ़ैज़ाबाद
मुक़द्दमा नंबर २९ बाबत् सन् १९३६ ई० पेशी ३० मार्च सन् १९३७ ई०
मृत्युंजय वग़ैरह — सायलान

बनाम

सत्यारंजन सरकार — फ़रीक़सानी

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत कर्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल हो, तो अंदर मियाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

मुंदरजा बयान तहरीरी सायल दरख़्वास्तकुनिंदा

१—आराज़ी सायल सीर मौज़ा बसवार

१२७ / ७५	१३६ / १०५
१५० / ११५	३७५ / १३५

४ क़िता २ बीघा

२—मु० मोहनदेवी भावज सायल सीर मौज़ा बसवार

३६२ / १०५	३६८ / १५
३९२ / १५५	३३८ / ६५

४ क़िता २ बीघा

३—शंकरलाल शीशीधर नाबालिग़ सायल मौज़ा बसवार

१५५ / ११५	३३८ / ३५

२ क़िता १४ बिस्वा

४—एक बिता हाता नंबरी १०४/९ सीसामऊ बकरमंडी कानपूर

मुंदरजह दरख़्वास्त क़र्ज़ख़्वाह नं० ३ रामलखन

१—आराज़ी कुल मौज़ा बसवार ज़िला फ़ैज़ाबाद अज़ाँ सायल १०८३/१०५

१५॥-)

२—मु० मोहनदेई मौज़ा बसवार भावज सायल

२४८ / १०५३	२५१ / १५	२५९ / १६५

३ क़िता २ बीघा

३—शंकरजी महराज

११५१ / १	२५९ / १५१०	१०८३ / २ / २५	१०८४ / २ / ५५
११३४ / २ / ४५१५	११४५ / ११५१०	११४७ / २ / ५५	११४८ / १३५

४—शंकरलाल शीशीधर नाबालिग़

२३८ / २ / ६५	२४० / २ / ५५१०	२४४ / २ / ३५	२४८ / १५१०

४ क़िता ११॥-५

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला रायबरेली
मुक़द्दमा नंबर २१ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १—५—३७ ई०

बाबू सत्याचरण वल्द बाबू संतप्रसाद क़ौम कायस्थ साकिन पलिया परगना सुबेहा तहसील हैदरगढ़ ज़िला बाराबंकी हाल वारिद मकान नंबर २१ बाबू वृंदावनबिहारी मोहल्ला दुगावाँ लखनऊ — सायल

बनाम १—बाबू दुर्गाप्रसाद ऐडवोकेट } रिसीवर जायदाद चौधराइन मिट्ठनकुँवरि साकिन खिरौ परगना
२—सेठ राजेश्वरोदयाल } खिरौ ज़िला रायबरेली

३—सज्जादमिरज़ा वल्द उमरावमिरज़ा क़ौम मुग़ल साकिन मोहल्ला मंसूरनगर शहर लखनऊ
४—मु० रुकमिनकुँवरि बेवा ठाकुर जंगबहादुरसिंह } साकिनान मौज़ा खिरौ परगना खिरौ
५—ठाकुर रणविजयबहादुरसिंह } पिसरान ठाकुर शंकरसिंह } ज़िला रायबरेली
६—ठाकुर एकबालबहादुरसिंह

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हरगाह मुसम्मे सत्याचरण ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में ज़रिए जनाब साहब डिप्टी-कमिश्नर साहब बहादुर ज़िला रायबरेली गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी मय तफ़सील क़र्ज़ाजात दाख़िल कर दिया है लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरी शुदा मुतज़क्किरेबाला दरख़्वास्तदेहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने गवर्नमेंट गज़ट मुमालिक मुतहदा मय नोटिस हाज़ा के अरना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़ा के दाख़िल करे। वर्ना कोई उज़ बाद में क़ाबिल समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी क़र्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी। जुमला अग़राज़ व मुक़ाबिले के लिये क़र्ज़ा डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा बमूजिब दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर अदा व बेबाक़ समझा जायगा।

आज बतारीख़ २३—१२—१९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसरिम

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम सीतापूर

मुक़द्दमा नं० २१७ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी बयान तहरीरी ५—४—३७ ई०

तारीख पेशी ७—४—३७ ई०

सय्यद इमदादअली वल्द सय्यद कुदरतअली उर्फ़ इलाहीबख़्श साकिन हाल अहमदपूर जट परगना बाड़ी ज़िला सीतापूर सायल

बनाम

१—रहमानख़ाँ
२—सुलतानख़ाँ } पिसरान नूरख़ाँ साकिन अहमदपूर जट परगना बाड़ी ज़िला सीतापूर

३—लाला श्रीपाल वल्द मुरलीधर क़ौम सराउग साकिन सिधौली परगना बाड़ी ज़िला सीतापूर फ़रीक़सानियान

हर ख़ास व आम को बज़रिए नोटिस हाज़ा इत्तिला दी जाती है कि मुक़द्दमा मुंदर्जे उनवान में मुसम्मे सय्यद इमदादअली सायल ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बज़रिए जनाब साहब कलेक्टर साहब बहादुर सीतापूर गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है। लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़क्किरेबाला दरख़्वास्तदिहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़े के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद में क़ाबिल समाअत न होगा। और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी क़र्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख़ २ जनवरी १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ यू० पी० इनकंबड्र स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब मिस्टर महेशचंद्र साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दायम ज़िला लखनऊ

मुक़द्दमा नंबर १२५ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १६ एप्रिल सन् १९३७ ई०

१—बलभद्रसिंह वल्द शिवराजसिंह
२—रामसिंह नाबालिग़ बविलायत बलभद्रसिंह पिदर ख़ुद } अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा पुलिंदा परगना बिजनौर तहसील व ज़िला लखनऊ हाल मुक़ीम मोहल्ला करनैलगंज शहर कानपुर सायलान

बनाम

दर्शन सुकुल वल्द मिनअगर क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा सय्यदपुर पोरही परगना बिजनौर तहसील व ज़िला लखनऊ फ़रीक़सानी

हरगाह कि सायल मज़कूरबाला ने दरख़्वास्त ज़ेर दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० गुज़रानी है। लिहाज़ा नोटिस हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट मज़कूर दिया जाता है कि जिस शख़्स का क़र्ज़ा डिगरीशुदा ख़्वाह ग़ैरडिगरी शुदा ज़ात व जायदाद सायल मज़कूरेबाला पर हो, वह अपना बयान तहरीरी तारीख़ मुश्तहरी नोटिस गज़ट से अंदर तीन माह अदालत हाज़ा में पेश करे। ऐसा न करने पर दरख़्वास्त मज़कूर ग़ैरहाज़िरी में एकतरफ़ा समाअत की जायगी।

आज बतारीख़ १५ माह जनवरी सन् १९३७ ई० को मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम बहराइच

मुकद्दमा नंबर ४ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ५—२—३७ ई०

१—रामदल
२—नगेश्वर
३—अवधराम नाबालिग बविलायत रामदल बिरादर खुद
} पिसरान रामरतन

४—गोकरन
५—कृपाराम
} पिसरान गंगाप्रसाद नाबालिगान बविलायत रामदल

६—प्रगाश नाबालिग़ वल्द परमेश्वरदीन बविलायत रामदल

} अकवाम ब्राह्मण साकिनान ढेहवाकलाँ परगना हिसामपुर जिला बहराइच सायलान

बनाम

१—मु० रघुबंसा
२—मु० फूलेसरा
} बेवा प० जनार्दनप्रसाद ब्राह्मण साकिन मरौचा पोस्ट करवरपुर जिला बहराइच

३—लालताप्रसाद वल्द गनेश ब्राह्मण साकिन बनियारी पोस्ट करवरपुर जिला बहराइच

४—ब्रह्मादीन वल्द सूरजबली कौम ब्राह्मण साकिन पसनाजीत दाखली गजाधरपुर परगना हिसामपुर जिला बहराइच

५—गंगाप्रसाद वल्द लक्ष्मीनारायण कौम ब्राह्मण साकिन साईं गाँव परगना करवरपुर जिला बहराइच

६—हरखचंद उर्फ छोटेलाल वल्द मानिकचंद कौम सरावगी साकिन मौजा शाखैयापुर जिला बहराइच

फरीकसानियान

हरगाह जायदाद मुसर्रहे जैल दरख्वास्तकुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपना बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ४ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० जाहिर की है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स का कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रहा जैल हो, तो वह अंदर मियाद ३ माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

तफसील जायदाद गैरमनकूला

नं० शुमार	नाम मौजा	नाम मोहाल	खाता खेवट	तादाद हिस्सा	किस्म हकीयत
१	मौजा ढेहवाकलां परगना हिसामपुर तहसील कैसरगंज जिला बहराइच	ढेहवा	१/१	हिस्सा सायल १ लगायत ४ ।-) ४ पाई हिस्सा सायलान ४-५, ।-) ४ पाई हिस्सा सायलान नं० ६, ≡) ४ पाई	आला
२	मौजा ढहवाकलाँ	कोरास पारा	१/१	हिस्सा सायलान १ लगायत ३ ।-) ४ पाई हिस्सा सायलान ४, ५ ।=) ८ पाई हिस्सा सायल नं० ६, ।)	मातहतदारी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम सीतापूर
मुकद्दमा नं० १९३ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी बयान तहरीरी १६—४—३७ ई०
तारीख पेशी २०—४—३७ ई०
शंकरचरन वल्द भगवानदीन कौम ब्राह्मण साकिन गधौली परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापूर
सायल

बनाम

१—मुरलीधर वल्द रामदयाल कौम बक्काल अगरवाल साकिन गंज सिधौली परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापूर
२—फर्म लक्ष्मीनारायण-मन्नालाल बाकै जनरलगंज शहर कानपूर
३—गंगादयाल वल्द गौरीशंकर कौम ब्राह्मण साकिन रहुन्ना परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापूर
४—रामरतन वल्द मातादीन कौम ब्राह्मण साकिन कीरतपुर मशमूलै नीलगाँव परगना मनवाँ तहसील सिधौली ज़िला सीतापूर
फ़रीकसानियान

हर खास व आम को बजरिए नोटिसहाज़ा इत्तिला दी जाती है कि मुकद्दमा मुंदर्जे उनवान में मुसम्मे शंकरचरन सायल ने दरख्वास्त हस्ब निफ़ाज़ दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० इनकंबर्ड स्टेट्स अदालत हाज़ा में बज़रिए जनाब कलेक्टर साहब बहादुर सीतापूर गुजरानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी बतफसील कर्जाजात दाखिल कर दिया है, लिहाजा वह अशखास जिनक कर्ज़ा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा बजिम्मा सायल मुंदर्जा बाला की जात या जायदाद पर हो, अंदर तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट से अपना बयान तहरीरी बनिस्बत अपने कर्ज के दाखिल करें, वरना कोई उज्र किसी शख्स का अगर कानूनन उसको दाखिल करने बयान तहरीरी का हक था, बाकी न रहेगा, बाद में काबिल समाअत न होगा और दरख्वास्त कर्ज़ख़्वाहान मसमू व फैसल होगी।

मुंसरिम
२-१२-३६

सम्मन बग़ारज़ करारदाद उमूर तनकीहतलब

बअदालत जनाब बाबू शीतलप्रसाद राय मुंसिफ़ तरबगंज गोंडा
मुक़द्दमा नं० २८९ सन् १९३६ ई०
बिजलेश्वरीबख़्शसिंह वग़ैरह
मुद्दइयान

बनाम

गजाधर वगैरह
मुद्दआलेहुम

बनाम गजाधर वल्द सध्धू क़ौम चाई साकिन चंदापुर पूरे पहाड़ परगना नवाबगंज ज़िला गोंडा

वाज़ेह हो कि मुद्दइयान ने आपके नाम एक नालिश बाबत हरजा दखलयाबी के दायर की है लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख १२ माह फ़रवरी सन् १९३७ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गयाहो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो, जोकि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदेही दावा की करें, और हरगाह वही तारीख़ जो आपके इहज़ार के लिये मुक़र्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है, पस आपको लाजिम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, उसी रोज़ पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

बसबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ १५ माह जनवरी सन् १९३७ ई० जारी किया

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब पं० ब्रजकृष्ण टोपा साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा अव्वल ज़िला लखनऊ

मुक़द्दमा नंबर ११ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी १२ एप्रिल सन् १९३७ ई०

१—हाफ़िज़ अलीअहमदख़ाँ
२—मुसम्मात आली बेगम
} साकिनान महमूदनगर हेमंतनगर परगना व तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

बनाम १—पंडित रामदत्त वल्द पं० रामदीन
सायलान

२—पं० हरदत्त
३—पं० ब्रह्मदत्त
४—पं० बिशुनदत्त
} पिसरान पं० रामदत्त
५—पं० रामदयाल वल्द रामप्रसाद
६—पं० शिवदयाल वल्द रामदयाल
} साकिनान महमूदनगर तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

७—सकटू वल्द ख़ुशहाली
८—शिवचरण
९—चेतराम
१०—सरजू
} पिसरान ललतू
साकिनान मौज़ा नई बस्ती धनेवाँ तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

११—रामप्रसाद वल्द ललतू क़ौम मुराई साकिन नई बस्ती धनेवाँ तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

१२—मोहम्मदयूनिसख़ाँ वल्द मोहम्मद इसहाक़ख़ाँ साकिन मोहल्ला छितवापुर शहर लखनऊ

१३—अलीहुसेनख़ाँ वल्द मोहम्मदख़ाँ
१४—क़ज़लहुसेनख़ाँ वल्द अलीहुसेनख़ाँ
१५—करामतहुसेनख़ाँ वल्द मोहम्मदहुसेनख़ाँ
} साकिनान मौज़े महमूदनगर रहमतनगर तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

दरगाह मुसम्मियान हाफ़िज़अलीअहमदख़ाँ वग़ैरा ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में बज़रिए जनाब साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर लखनऊ ज़िला लखनऊ गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाख़िल कर दिया है, लिहाज़ा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िक्रेबाला दरख़्वास्तदेहंदा की ज़ात या जायदाद पर हो अगर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट हाज़ा मे अपना बयाना तहरीरी निस्बत अपने क़र्ज़ा के दाख़िल करें, वरना कोई उज्र बाद ३ माह क़ाबिल समाअत न होगा और दरख़्वास्त बअदम हाज़िरी क़र्ज़ख़्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख़ २१ माह दिसंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

बअदालत जनाब बाबू श्रीगोपालसिंह साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

नमूना नं० १६९

मुक़द्दमा नं० ७७५ सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

दरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

सय्यद सईदहसन वल्द सय्यद वहीदहसन क़ौम सय्यद साकिन क़स्बा क़वाल परगना जौली जानसठ ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर सायल

ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् ३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की ज़ात या जायदाद के खिलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मजकूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिये ज़ेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये

नोटिस बनाम मुद्दआलेह नाबालिग़ और वली के
(ऑर्डर ३२ क़ायदा ३)

बअदालत जनाब मिस्टर शंकरलाल साहब बहादुर जज ख़फ़ीफ़ा मेरठ
मुक़द्दमा नं० १६७७ सन् १९३६ ई०

१—मुसम्मात अम्मोबीबी बेवा हकीम महमूदबेग मरहूम
२—हामिदबेग नाबालिग़ वल्द हकीम महमूदबेग बविलायत मु० अम्मोबीबी वालिदा खुद
} अक़्वाम मुग़ल साकिनान क़स्बा हालवर मोहल्ला क़ानूनगोयान ज़िला मेरठ मुद्दइयान सायलान

बनाम

मु० बिलक़ीसबेगम उर्फ़ बिलक़ीसख़ानम वग़ैरा
बनाम १—बिरजिसबेगम उर्फ़ बिरजिसख़ानम उम्र १० साल
२—हाशिमबेग नाबालिग़ उम्र १५ साल
३—असलमबेग नाबालिग़ उम्र १२ साल
} दुख़्तर पिसरान व हकीम महमूदबेग मरहूम बविलायत बाबू गंगाशरण साहब वकील ज़िला मेरठ वली कुदरती मुद्दआलेह नाबालिग़ान मुद्दआलेहुम फरीक़सानियान

हरगाह मुक़द्दमा मु दर्जा उनवान में मुद्दई ने एक दरख़्वास्त गुज़रानी है कि मुद्दआलेह नाबालिग़ का एक वली दौरान मुक़द्दमा मुक़र्रर किया जाय, लिहाज़ा आप नाबालिग़ मज़कूर को और आप बाबू गंगाशरण वकील वली को इसके रू से इत्तिला दी जाती है कि अगर तामील इत्तिलानामा हाज़ा से २७ जनवरी सन् ३७ योम के अंदर एक दरख़्वास्त इस अदालत में निस्बत अपने या किसी दोस्त मुद्दआलेह नाबालिग़ के वली के दौरान मुक़द्दमा मुक़र्रर किए जाने की निस्बत न गुज़रानेंगे, तो अदालत अग़राज़ मुक़द्दमा हाज़ा के लिये किसी और शख़्स को नाबालिग़ मज़कूर का वली मुक़र्रर कर देगी।

आज बतारीख़ १५ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

नोटिस निस्बत क़ायमी बरसाय डिगरीदार मुतवफ्फी
बइजलास बाबू हरनाथप्रसाद साहब अफ़्ठाना मुंसिफ़ बहादुर फ़तेहाबाद ज़िला आगरा
मुक़द्दमा दीवानी नं० ५२ सन् १९३१ ई०

१—महाबीर
२—बुद्धसिंह
३—जुगराजसिंह
} पिसरान बड़ेसिंह
४—मुसम्मात नन्हीकुँवरि बेवा हजारीसिंह
} अक़्वाम ठाकुर साकिनान मौजा रीछापुरा परगना व ज़िला आगरा डिगरीदारान

बनाम

महाबीरसिंह वल्द शिवपालसिंह कौम ठाकुर साकिन मौज़ा रीछापुरा परगना व ज़िला आगरा हाल मुक़ीम मौज़ा हाथीपूर परगना व ज़िला कानपूर मदियून

चूँकि डिगरीदारान सायलान ने दरख़्वास्त इस अदालत में गुज़रानी है कि मुसम्मी बड़ेसिंह असल डिगरीदार फ़ौत हो गया है, और डिगरीदारान सायलान नं० १, २, ३ उसके पिसरान व पसमाँदा ख़ानदान मुतवफ्फी अहलशिनूद के हैं लिहाज़ा सायलान को मुतवफ्फी मज़कूर का क़ायम मुक़र्रर फ़र्माया जावे। आपको इत्तिला दी जाती है कि आप असालतन या माफ़त किसी वकील के जो हालात मुक़द्दमे से बख़ूबी वाक़िफ़ हो बतारीख़ ३० जनवरी सन् १९३७ बवक्त १०½ बजे क़ब्ल दोपहर इस अदालत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त के ख़िलाफ़ उज्र दिखावें। अगर ऐसा न करेंगे; तो दरख़्वास्त मज़कूर आपकी ग़ैरहाज़िरी में एकतरफ़ा समाअत होगी और क़यास किया जायगा कि आप इस मुक़द्दमा दरख़्वास्त सायलान पर रज़ामंद है।

आज बतारीख़ १३ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट (ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जजसाहब बहादुर दर्जा अव्वल ज़िला बहराइच

तारीख़ पेशी १२—३—१९३७ ई०

१—ठाकुर गनेशबख़्शसिंह वल्द ठाकुर गयादीनसिंह
२—भगवतीप्रसादसिंह
३—ठाकुर बिंदेश्वरीप्रसादसिंह
४—ठाकुर चंद्रहरिप्रसादसिंह नाबालिग़ बविलायत गनेशबख़्शसिंह

पैरोकार ठाकुर गनेशबख़्शसिंह

अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा परानापूर दाखली बड़हावली परगना हिसामपूर तहसील कैसरगंज ज़िला बहराइच

सायलान

बनाम

१—ठाकुर महिपालसिंह वल्द सीतलाबख़्शसिंह ताल्लुक़दार इनछरापूर उमरी साकिन नोमदीपर परगना हिसामपूर तहसील कैसरगंज डाकख़ाना गंडारा ज़िला बहराइच

२—सरदार धरमसिंह वल्द लाभगसिंह साकिन मोहल्ला गुदड़ी शहर बहराइच

३—लालबहादुरसिंह वल्द भगवती कौम कुर्मी साकिन डरहीला परगना हिसामपूर तहसील कैसरगंज ज़िला बहराइच

४—बाबू फ़तेहबहादुरसिंह वल्द अयोध्याबख़्शसिंह कौम ठाकुर साकिन नोम जोतीपूर तहसील हरैया पाकीकुल ऐमा ज़िला बस्ती

५—ठाकुर गुरप्रसादसिंह वल्द गयादीनसिंह क़ौम क्षत्री साकिन चतरौनी परगना गुबारिच तहसील तरबगंज डाकख़ाना भंगरवा ज़िला गोंडा

६—शीतलप्रसाद वल्द बलगर कौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा असोहर परगना हिसामपूर तहसील कैसरगंज ज़िला बहराइच

७—उदितनारायणसिंह वल्द ठाकुर महेशबख़्शसिंह क़ौम क्षत्री साकिन पुराना पूरदाः बढौली परगना हिसामपूर डाकख़ाना जरवल ज़िला बहराइच

८—भगनअली वल्द गुलामअली क़ौम शेख़ साकिन बढौली परगना हिसामपूर डाकख़ाना जरवल ज़िला बहराइच

९—सय्यद अबरारहुसेन वल्द सय्यद अलीअब्बास
१०—सय्यद मक़बूलहुसेन वल्द सय्यद अलीअब्बास
११—सय्यद मोहम्मद विलायतहुसेन नाबालिग़ बविलायत सय्यद अबरारहुसेन

पैरोकार सय्यद अबरारहुसेन

अक़वाम सय्यद साकिनान मौज़ा शेखपूर परगना सदरपूर तहसील सिधौली ज़िला सीतापूर

१२—रामलाल शाह वल्द मथुराप्रसाद कौम बक्काल साकिन करनैलगंज तहसील तरबगंज परगना गुबारिच ज़िला गोंडा

फ़रीकसानियान

हरगाह मुसम्मे ठाकुर गनेशबख़्शसिंह वग़ैरह ने दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाजा में जरिए जनाब साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर बहराइच गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी दाखिल कर दिया है, लिहाजा जुमला अशख़ास कि जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा मुतज़िकरेबाला दरख्वास्तदेहंदा की जात या जायदाद पर हो, वह अंदर तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गजट से अपना बयान तहरीरी निस्बत क़र्ज़ा के अदालत हाजा में दाखिल करे, वर्ना बाद को कोई उज्र काबिल समाअत न होगा, और दरख्वास्त बअदम हाज़िरी क़र्ज़ख्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख ११ माह नवंबर सन् १९३६ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेटस ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम लखनऊ

मुक़द्दमा नं० १६७ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी १४—४—३७ ई०

असदअली वल्द वाजिदअली क़ौम शेख़ साकिन जुग्गौर परगना, तहसील व ज़िला लखनऊ सायल

बनाम

फ़ज़लअज़ीम वल्द फ़ज़लकरीम साकिन जुग्गौर परगना, तहसील व ज़िला लखनऊ फ़रीकसानी

हरगाह असदअली सायल मज़कूरा बाला ने दरख्वास्त ज़ेर दफ़ा ४ ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई० बज़रिए डिप्टी-कमिश्नर लखनऊ गुज़रानी है लिहज़ा नोटिस हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट मज़कूर दिया जाता है कि जिस शख़्स का क़र्ज़ा डिगरीशुदा ख़्वाह ग़ैरडिगरीशुदा ज़ात व जायदाद सायल मज़कूराबाला पर हो वह अपना बयान तहरीरी तारीख़ सुरतदरी नोटिस गज़ट से अंदर तीन माह अदालत हाज़ा में पेश करे। ऐसा न करने पर दरख्वास्त मज़कूर ग़ैरहाज़िरी में एकतरफ़ा समाअत की जावेगी।

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब ब्रजकृष्ण टोपा साहब बहादुर दर्जा अव्वल

मुक़द्दमा नं० ८४ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी २१ एप्रिल सन् १९३७ ई०

१—शंभूदयाल वल्द मुंशी सुखनंदनलाल कौम कायस्थ साकिन मोहल्ला चौपटियाँ शहर लखनऊ

२—हरगोबिंददयाल } पिसरान शंभूदयाल अकवाम कायस्थ साकिनान चौपटियाँ शहर
३—ईश्वरीदयाल } लखनऊ सायलान

बनाम

लाला कुंदनलाल वल्द गोपीनाथ कौम अगरवाल साकिन खेतगली शहर लखनऊ फ़रीक़सानी

हरगाह सायलान ने दरख्वास्त हस्ब दफा ९ ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० अदालत हाज़ा में जरिए साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर ज़िला लखनऊ गुज़रानी है और मिनजानिब अपने बयान तहरीरी हाज़ा दाखिल कर दिया है, लिहाज़ा जुमला अशखास को कि जिनका कर्ज़ा डिगरीशुदा व गैरडिगरीशुदा मुतज़िक्करेबाला दरख्वास्त देहंदा की ज़ात व जायदाद पर हो अंदर तीन माह शाया होने नोटिस गजट से अपना बयान तहरीरी निस्बत अपने कर्ज़ा के मय जुमला ज़रूरी काग़ज़ात सुबूत दाखिल करें, वरना कोई उज्र बाद में काबिल समाअत न होगी और दरख्वास्त बअदम हाज़िरी कर्जख्वाहान मसमू और फ़ैसल होगी।

आज बतारीख १३ माह जनवरी सन् १९३७ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

[नमूना काबिल फरोख्त

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुकद्दमा

(ऑर्डर ५ कायदा १ व ५)

बअदालत जनाब मिस्टर शंकरलाल साहब बहादुर जज खफ़ीफा मेरठ

मुकद्दमा नं० १६७७ सन् १९३६ ई०

१—मुसम्मात अम्मो बीबी बेवा हकीम महमूदबेग मरहूम } अकवाम मुगल साकिनान कस्बा
२—हामिदबेग नाबालिग वल्द हकीम महमूदबेग बविलायत मुसम्मात अम्मी बीबी वालिदा हकीकी खुद } हालवर मुहल्ला कानूनगोयान जिला मेरठ

मुद्दइयान

बनाम

१—मु० बिलकीस बेगम उर्फ बिलकीसखानम जौजे काजी हसनरजाबेग } साकिनान कस्बा गाजियाबाद
२—मु० महफूजी बेगम उर्फ महफूजीखानम जौजे रुजुवाँबेग } मोहल्ला मिरजा जान सिहानी दरवाजा गाजियाबाद

३—जुबीदा बेगम उर्फ जुबीदाखानम जौजे फय्याजखाँ टेलर-मास्टर मोहल्ला शीदीपुर देहली

४—मु० बिरजिस बेगम उर्फ बिरजिसखानम नाबालिगा दुख्तर उम्र १० साल } दुख्तर व पिसरान हकीम महमूदबेग
५—हाशिमबेग नाबालिग उम्र १५ साल } अकवाम मुगल
६—असलमबेग नाबालिग उम्र १२ साल

बविलायत बाबू गंगाशरण साहब वकील कचेहरी मेरठ

७—लाला कन्हैयालाल वल्द रघुबीरशरण कौम अगरवाल साकिन कस्बा हालवर मोहल्ला कानूनगोयान जिला मेरठ

मुद्दआलेहुम

हरगाह मुद्दइयान ने आपके नाम एक नालिश बाबत इस्तकरार के दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख २७ माह जनवरी सन् १९३७ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफत वकील के जो मुकद्दमे के हालात से वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिके मुकद्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हो और जवाबदिही दावा की करे। और हरगाह वही तारीख जो आपके इहजार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कतई मुकद्दमा के तजवीज हुई है, पस आपको लाजिम है कि उसी रोज अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर व नीज तमाम दस्तावेजात को जिस पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकद्दमा बगैर हाजिरी आपके मसमू और फैसल होगा।

बमोजब मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख १५ माह जनवरी सन् १९३७ ई० जारी किया गया।

जज

बेअदालत जनाब बाबू गोराजचंद्र सिनहा साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम परतावगढ़
मुक़दमा नं० ४३ सन् १९३६ ई०
पेशी ७ मई सन् १९३७ ई०
नोटिस हस्ब दफ़ा १५ ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०
चौहरजाबख़्शसिंह वल्द जुगराजबख़्शसिंह कौम ठाकुर बैस साकिन पारीपुर परगना मानिकपुर तहसील कुंडा ज़िला परतावगढ़ सायल

हरगाह चौहरजाबख़्शसिंह व नीज़ बाबू रामदीनसिंह व बाबू छत्रपतीसिंह व महाबीरसिंह व मेहरबान ने अपनी बयान तहरीरी में जायदाद मुंदर्जे ज़ैल दिखलाई है। लिहाज़ा हरख़ास व आम को बज़रिए नोटिस इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को जायदाद मुंदर्जे ज़ैल में कोई हक़ मिलकियत या क़िसी किस्म का हो, तो नोटिस हाज़ा की मुश्तहरी से अंदर तीन माह के अपने सब हक़ व हुक़ूक के बाबत बज़रिए दरख़्वास्त उज्र पेश करे, वरना दरख़्वास्त हाज़ा का फ़ैसला आपकी ग़ैरहाज़िरी में समाअत व फ़ैसल होगी, और आयंदा कोई उज्र न सुना जायगा।

फ़ेहरिस्त जायदाद

नंबर शुमार	नाम मवाज़ियात	हक़ीयत	तादाद हिस्स
१—मौज़ा दाहीपूर मोहाल गोरखाहिद	आला	।≡)	७ ३/३ ५/७ ६/५ ३/३ पाई
परगन मानिकपूर तहसील कुंडा ज़िला परतापगढ़			
२—थोक गुलालशाह पट्टी महाबलीसिंह मुंदर्जे खाता खेवट नं० ३९ वाक़े			३ पाई १ किरांट ३ जौ में १/२ हिस्सा
मौज़ा सूची परगना सलवन ज़िला रायबरेली			
३—पटी महाराज कुँवर थोक रामसेवक इंटारा परगना सलवन ज़िला रायबरेली			७ पाई ७ किरांट ६ जौ में १/२ हिस्सा
४—पट्टी बेनीमाधो मौज़ा गोधा परगना व तहसील सलवन ज़िला रायबरेली			१ पाई १२ किरांट में १/२ हिस्सा
५—नंबरान १७९६ सा० १७२२ सा० २०८२ दा० २००७ दा०		मातहतदारी	१/२ हिस्सा
१८०४ सा० १७२१ सा० २०९० दा० २००६ दा०			
६— ,, १६९८ सा० १९७६ दा०		,,	

मौज़ा सत्थाना परगना मौरावाँ तहसील पुरवा ज़िला उन्नाव

फ़ेहरिस्त जायदाद मनकूला

नंबर शुमार				
१—पल्ला केवाड़ा कलाँ बाज़ू लगे हुए	१२	१६—रज़ाई छींट	१
२— ,, ,, साधारण ,, ,, ,,	१३	१७— ,, गादा	१
३—बाज़ू उतरंग	१९	१८—डेलवा	१
४—पलंग बाँस	२	१९—पेटारा	१
५—तख़्त	१	२०—बक्स	१
६—चौकी पुरानी	२	२१—तश्तरी	१
७—बाल्टी लोहा	१	२२—सिल व बट्टा	१
८—लोटा पीतल	१	२३—मूसल	१
९—थाली	१	२४—तराज़ू	१
१०—तवा	१	२५—लालटेन	१
११—कड़ाही	१	२६—होरसा	१
१२—कुर्सी पुरानी	२	२७—चिमटा	१
१३—अलवान	१	२८—चकरी ऊपर का हिस्सा	१
१४—ढोल	१	२९—चौखट खिड़की	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

मुंसिफ़ साहब बहादुर कुंडा ज़िला परतापगढ़ १९२७ इजलासी
मुक़द्दमा २४ सितंबर सन् १९२७ ई०
चौहरजसिंह बनाम बैजनाथसिंह वग़ैरह
तादादी ६७६)
३१—मुबलिग़ १७५०) अलावा सूद के मुसम्मे महावीरसिंह वल्द गयाबख़्शसिंह साकिन हरियापुर तहसील कुंडा ज़िला परतापगढ़
३२—मुबलिग़ ४००) अलावा सूद के मुसम्मे महासुख व मुसम्मात सरस्वती मौज़ा नरी चक परगना व डाकख़ाना मौरावाँ तहसील पुरवा ज़िला उन्नाव
३३—बटलोई
आज बतारीख़ १० जनवरी सन् १९३७ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया। मुंसिम

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम सुलतानपुर
मुक़द्दमा नं० १८० सन् १९३६ ई०
पेशी ३ एप्रिल सन् १९३७ ई०

१—संतबहादुरसिंह उर्फ़ संतप्रसादसिंह
२—अमरेजसिंह
३—मु० खीनकली कुँवर बेवा लाल साहब
४—अंबिकाप्रसादसिंह } पिसरान संतबहादुरसिंह
५—मित्रसेनसिंह }
६—स्वामीदयालसिंह }
७—शेषनाथसिंह }
८—राजवंतसिंह } पिसरान अमरेजसिंह
९—भगवानप्रसादसिंह }
१०—हरिप्रसादसिंह वल्द मित्रसेन सिंह } नाबालिग़ान ब वलायत संतबहादुरसिंह
११—सूरजप्रसादसिंह वल्द शेषनाथसिंह }

साकिनान बराहिमपुर परगना अल्देमऊ ज़िला सुलतानपुर

सायलान

बनाम १—बच्चू तेवारी वल्द ठाकुरदीन तेवारी साकिन बराहिमपुर
२—लखन तेवारी वल्द गंगा साकिन बराहिमपुर
३—अछैवर तेवारी वल्द महेश तेवारी साकिनान महमूदपुर देवकली
४—रामनरेशसिंह वल्द गुलाबसिंह साकिन बराहिमपुर मज़रा नसदपुर
परगना अल्देमऊ ज़िला सुलतानपुर

५—मु० नौरंगी बेवा मिरहू सा० टिकुरी
६—भगौतीशरण वल्द नामालूम साकिन अंतरौड़ा
डाकख़ाना अरसिया बाज़ार परगना अगुली ज़िला जौनपुर

७—सालिकराम उपाध्या वल्द सूप उपाध्या सा० व डाकख़ाना कीदापूर
८—हरिप्रसादसिंह वल्द भैरोंसिंह सा० पौधनरामपूर
परगना अल्देमऊ ज़िला सुलतानपूर

फ़रीक सानियान

हरगाह दरख़्वास्त सायलान हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० बअदालत साहब डिप्टी-कमिश्नर बहादुर सुलतानपुर पेश होकर अदालत हाज़ा में वसूल हुई है, और सायलान ने बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा ८ ऐक्ट मज़कूर दाख़िल अदालत हाज़ा कर दिया है। लिहाज़ा फ़रीकसानियान मज़कूरुलसदर व नीज़ ख़ास व आम को बज़रिए नोटिस हाज़ा मुत्तिला किया जाता है कि जिस शख़्स का कोई क़र्ज़ा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरी शुदा ख़िलाफ़ज़ात व जायदाद सायलान मुतज़िकरा सदर हो, वह क़र्ज़ा मज़कूरा के बाबत तारीख़ अशाअत नोटिस हाजा से तीन माह के अंदर अपना बयान तहरीरी बमूजिब ऐक्ट मज़कूर असालतन ख़ुद या बज़रिए वकील जो कि हालात मुक़द्दमा से बख़ूबी वाक़िफ़ हो दाख़िल अदालत करे व नीज़ जरूरी काग़ज़ात भी ताईद बयान तहरीरी ख़ुद में दाख़िल करे, बाद इनकिज़ाय मीयाद मुद्दत मज़कूर के कोई उज्र मसमूअ न होगा और फ़ैसला दरख़्वास्त मज़कूर एकतरफ़ा बअदमहाजिरी क़र्ज़ख़्वाहान होगा।

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब पं० ठाकुरप्रसाद दुबे साहब बहादुर स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर
नमूना नं० १६९

मुक़द्दमा नं० ११२ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ३०—३—३७ ई०

इश्तिहार
मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

१—ऋछबेरसिंह वल्द जैश्रीसिंह
२—राजासिंह } पिसरान ऋछबेरसिंह
३—भूरीसिंह }
४—रामचरित्रसिंह } पिसरान भूरीसिंह साकिन चिरवरपकरा ज़िला जौनपुर
५—काशीनाथसिंह }

सायलान

सायलान ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् ३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज के क़र्जों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मजकूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिये ज़ेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा। मुंसरिम

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
नमूना नं० १६९

बअदालत जनाब पं० ठाकुरप्रसाद दुबे साहब बहादुर स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर
मुक़द्दमा नं० १०३ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ३०—३—३७ ई०

इश्तिहार
मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

१—हबीबयारख़ाँ खुद व ठेकेदार
हिस्सा मु० फ़रसिया बीबी मुतवफ़्फ़ी
२—हफ़ीज़यारखाँ
३—हबीबयारखाँ
४—मु० नेवाजन बीबी
} साकिनान बादशाहपुर परगना मुंगरा ज़िला जौनपुर

सायलान

सायलान ने इस गरज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् ३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिनके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा खिलाफ़ सायल मजकूर जुमला अगराज़ व मौरक़ाजात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मजकूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

दी ज्वाला बैंक

स्थापित १९२३

हेड ऑफ़िस—ज्वाला बिल्डिंग, दी माल, आगरा।

शाखाएँ—आगरा सिटी, अलीगढ़, इलाहाबाद (चौक), बनारस (बाँस का फाटक), कानपुर (मेस्टन रोड), कलकत्ता (पार्क स्ट्रीट), देहली (कश्मीरी गेट), देहरादून (मसूरी रोड), फ़ीरोज़ाबाद, झाँसी (सिविल लाइंस), कासगंज, लखनऊ (अमीनाबाद-पार्क), मिर्ज़ापुर और शिमला (माशोब्रा)।

व्यापारिक संबंध—दुनिया के तमाम बड़े-बड़े नगरों से।

प्रतिनिधि—न्यूयार्क और लंदन में कई अँगरेज़ी बैंक के हैं।

मैनेजिंग एजेंट्स—दी ज्वाला-इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड। मूलधन दस लाख रुपए, जो १००) प्रति हिस्से से १० हज़ार हिस्सों में विभाजित है। डाइरेक्टर विश्वसनीय, प्रभावशाली और व्यवसायी सज्जन हैं। बिक्री के लिये १०५) रु० प्रति शेयर मिल सकते हैं। मुनाफ़े का कम-से-कम ६ प्रति सैकड़ा का अनुमान लगाया गया है। सब तरह का बीमा किया जाता है।

हिफ़ाज़त—हिसाब मासिक छपता है। शेयर नहीं बेचे जाते। सीमा-रहित ज़िम्मेवारियाँ। बहुत अधिक नक़दी बैलेंस रखते हुए बैंक कई कठिन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुका है!

शेयर व गवर्नमेंट सिक्यूरिटीज़ की ख़रीद व बिक्री—कलकत्ता में एक ब्रांच ऑफ़िस होने से शीघ्र-व्यवस्था, कम ख़र्च और सुविधाओं की गारंटी; प्रोप्राइटर को २७ वर्ष का अनुभव है।

कारबार

चालू खाते—माहवारी कम-से-कम ५००) बक़ाया पर १ प्रतिशत सूद है।

सेविंग बैंक—सप्ताह में एक बार चेक द्वारा अधिक-से-अधिक १०००) एक हज़ार रुपए तक निकाला जा सकता है। माहवारी कम-से-कम बक़ाया पर २॥) प्रतिशत सूद है।

फ़िक्स्ड डिपॉज़िट—२४ मास का ४ प्रतिशत, १२ मास का ३ प्रतिशत, ६ मास का २ प्रतिशत और ६ मास का २ प्रतिशत प्रतिवर्ष

बैंक का एकाउंट ३०—६—३६ को

पूँजी आदि.....६,०,०००) रु० (छ लाख)
ख़ुद ज़मानत पर दिया हुआ धन...७०,०००) रु० (सत्तर हज़ार)
ज़मानत पर दिया हुआ धन.....१५,२३,०००) रु० (पंद्रह लाख तेईस हज़ार)
जमा व हुंडियाँ.....२३,०१,०००) रु० (तेईस लाख एक हज़ार)
नक़द व हुंडियाँ.....६,०६,०००) रु० (नव लाख नव हज़ार)
कुल योग.....५४,०३,०००) रु० (चौवन लाख तीन हज़ार)

मि० डब्ल्यू० बी० डासन मैनेजर, हेड ऑफ़िस, आगरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

लाभदायक सूचना

अमृतधारा के ३६ वें वार्षिकोत्सव की खुशी में

१ मार्च से ३१ मार्च तक, जो सज्जन अपना पत्र संसार के किसी भी डाकखाने में डालेंगे, उनको

कविविनोद, वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्तजी शर्मा वैद्य की तैयार की हुई

अमृतधारा और इसके ५ मिश्रण

तथा स्वर्ण भस्म

$\frac{3}{8}$ मूल्य पर अर्थात् रुपया में चार आने कमी पर और

अन्य औषधियाँ और पुस्तकें

आधे मूल्य पर दी जायँगी

जो सज्जन इस बीच में रुपया जमा करा देंगे, उनको जब तक उनका वह रुपया समाप्त न हो, इसी रियायत का अधिकारी समझा जायगा, चाहे जितनी बार वह औषधियाँ और पुस्तकें मँगवावें।

जिन सज्जनों के पास इस समय तक सूचीपत्र न पहुँचा हो, वह एक कार्ड लिखकर मंगवा सकते हैं। जो सज्जन नियम-पूर्वक निदान करके चिकित्सा कराना चाहें, वे चिकित्सा नियम भी साथ ही मंगा लें। जितना शीघ्र आर्डर आवे, उत्तम है। ऐसा न हो कि अंतिम समय ही बीत जावे। एजेंटों को भी अमृतधारा रियायती मूल्य पर देने को लिखा गया है। अमृतधारा और इसके मिश्रण तो हर घर में वर्तमान ही रहने चाहिए। उनके मूल्य इस प्रकार होंगे—

अमृतधारा	पूरी शीशी	२॥)	के स्थान	१॥।=)
,,	आधी ,,	१।)	,, ,,	॥।=)
,,	नमूना ,,	॥)	,, ,,	।=)
,,	मरहम ,,	१)	,, ,,	॥।)
अमृतधारा	की मीठी टिकियां	।)	के स्थान	=)
,,	लोशन ,,	१)	,, ,,	॥।)
,,	बाम ,,	१)	,, ,,	॥।)
,,	सोप ,,	॥।=)	,, ,,	॥=)॥

कुछ घरेलू औषधियों का वर्णन सूचीपत्र में है।

पत्र-व्यवहार व तार का पता —**अमृतधारा १३, लाहौर**

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

Registered No. A. 1712

मनुष्य-जीवन का समर्थ चित्र

संसार की इन विभीषिकाओं के बीच
क्या जीवन का कुछ अर्थ है ?

पात्र—
पाराशर
नवीन याज्ञिक
फैटी प्रसाद
ज्ञानी
सिमियन
नायम पल्ली

आर्यन पिक्चर्स

के

(PATH OF GLORY)

विजय-मार्ग

में

पात्री—
प्रभा रानी
पुतली बाई
रशीदा बेगम
कांता बाई

उसके उत्तर की प्रतीक्षा कीजिए
आपके ही हृदय-अंतरात्मा का प्रतिबिंब
डाइरेक्टर—निरंजन पी० भारद्वाज

बुकिंग के लिये लिखिए—"आर्यन पिक्चर्स", चंद्रिका भुवन, हिंदू कालोनी दादर, बंबई।

३००) की पुरस्कार-घोषणा

सुधा-पुरस्कार-प्रतियोगिता

अवांतर-पहेली नं० १

आगामी किसी अंक से 'सुधा' में बड़ी ही मनोरंजक शब्द-पहेलियाँ पुरस्कार-प्रतियोगिता के लिये प्रतिमास प्रकाशित होंगी। प्रारंभ से ही ३००) का पुरस्कार घोषित किया जा रहा है। फिर पुरस्कार की रक़म ५००) हो जायगी, और उसके बाद ७५०) का पुरस्कार हम अपने पाठकों के लिये घोषित करेंगे। केवल 'सुधा' में प्रकाशित फ़ार्म पर ही शब्द-पहेली का हल भेजा जा सकेगा। अतएव अभी से 'सुधा' की ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखाना प्रारंभ कीजिए, अथवा अपने स्थानीय एजेंट से उसकी अगली प्रति तुरंत ख़रीदने का प्रबंध कीजिए। शायद भाग्य-लक्ष्मी के आप ही प्रथम वर हों, और ३००) आप ही को मिलें। 'सुधा' के सस्ते संस्करण का मूल्य भी ।) ही हमने कुछ महीने के लिये कर दिया है।

तब फिर इस अवसर को न छोड़िए, आज ही हमें पत्र लिखिए।

मैनेजर 'सुधा'

(पहेली-प्रतियोगिता-विभाग)

लखनऊ

गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Bombay, Behar & Punjab.

भाद्रपद, १९९४
September, 1937

मूल्य ।।)
Price -/8/-

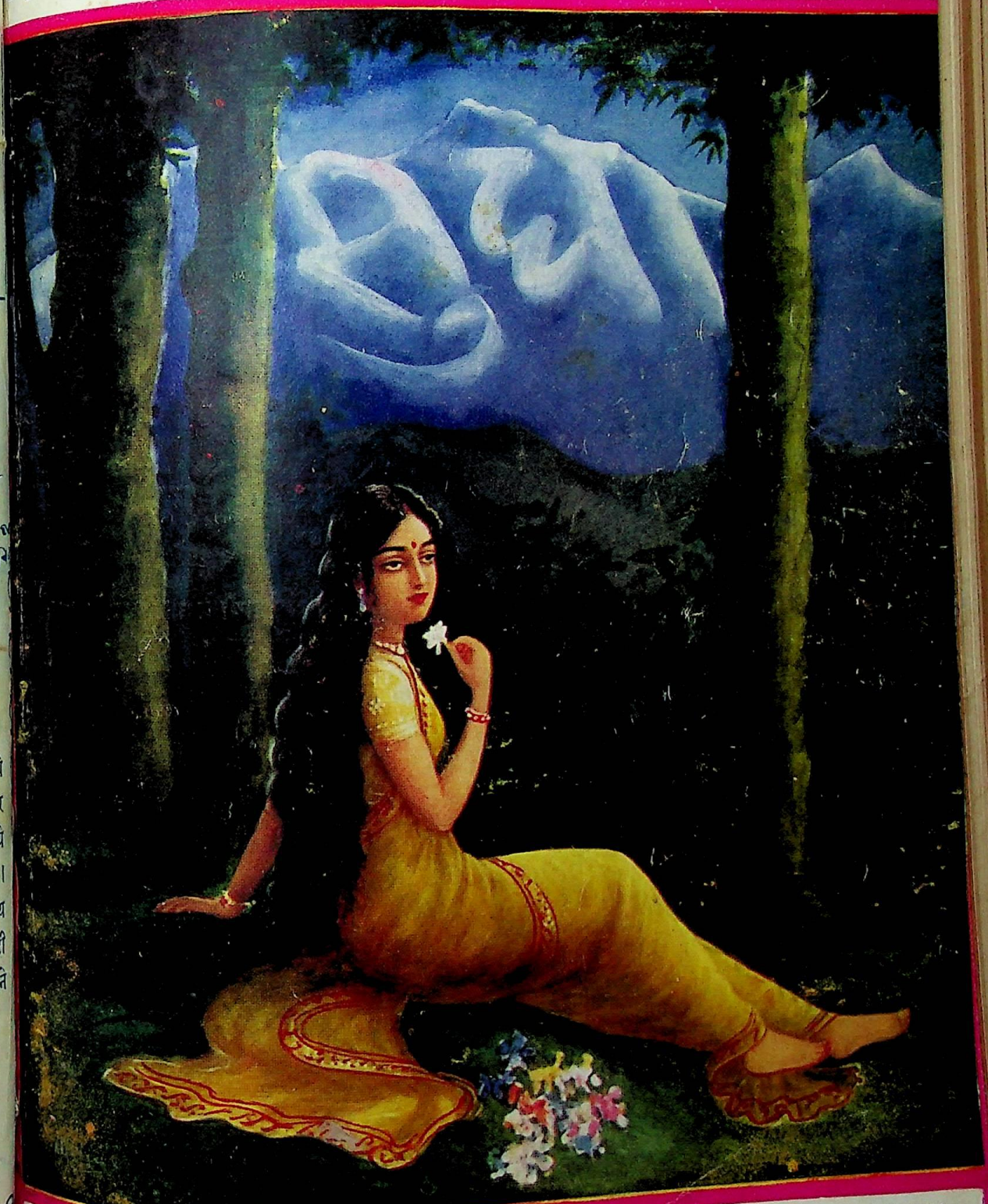

साधारण संस्करण] संपादक—श्रीदुलारेलाल भार्गव [Ordinary Edition

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला

—हरएक घर में रहना चाहिए—

बालकों के पेट के दर्द में

स्थायी लाभ करनेवाला

बिलकुल केफ-रहित

झंडु-बालशूलार्क

बालकोंवाले हरएक
घर में रखना चाहिए

एक शीशी का बारह आने

झंडु-फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

लखनऊ के ,, ,,—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।

शुभ

यदि किसी को अपना मुक़द्दर बनाना हो

लाभ

यदि गई हुई इज़्ज़त और खोया हुआ धन पुनः वापस लेने की इच्छा हो, यदि धन-धान्य, स्त्री-संतान-प्राप्ति का स्वर्गीय आनंद भोगने की उत्सुकता हो, और यदि ऊँचे दरबारों में इज़्ज़त हासिल कर, दुश्मन को परास्त कर, अपनी शान का सिक्का जमाना हो, तो आज ही और अभी शक्तिशाली अद्भुत—

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र

मँगाइए। इसके अलौकिक गुणों की प्रशंसा बड़े-बड़े ज्योतिषी व धुरंधर पंडितों ने ही नहीं, बल्कि शास्त्र-पुराणों तक ने की है। प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने के पचास-पचास हज़ार प्रशंसा-पत्र इस यंत्र की सचाई के पक्के प्रमाण हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या अविश्वास की रत्ती-भर भी गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र वा शास्त्रविधि पर अविश्वास करता है, वह जीवन में कभी सुख को प्राप्त नहीं होता, ऐसा कृष्ण भगवान् ने स्वयं कहा है। देखो गीता १६-२३।

इस नवग्रह यंत्र से रोज़गार में लाभ, इम्तहान में पास, मुक़दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजसम्मान, नौकरी मिलना, संतान-लाभ, तनख़्वाह में तरक्क़ी, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, इच्छानुसार शादी, अचानक आफ़तों से बचना, किसी को वश करना, रेस व लाटरी में धन-प्राप्ति वग़ैरह-वग़ैरह हर काम पूरा होता है। जो पूछोगे, हर बात का जवाब स्वप्न में विधि-सहित बताएगा। आप जिसका ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकलकर उस कार्य को पूरा करेगी।

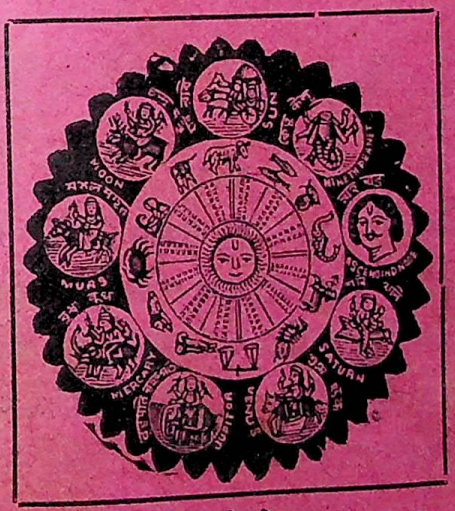

हर मनुष्य विश्वास रक्खे कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, वह इसके चमत्कार को देख वाह-वाह कर उठता है, और बार-बार मँगाता है। बहुतों ने तो छ-छ और आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह यंत्र तक मँगाए हैं। अगर विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अब भी विश्वास न हो, तो ≈) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। लाभ न हो, तो दाम वापस मँगाइए।

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

इतने पर भी अगर विश्वास नहीं हुआ, तो अपनी चमकानेवाली तक़दीर और उदय होनेवाले भाग्य को धक्का पहुँचाने के दोषी आप ही हैं। एक बेयक़ीनी व तुच्छ पैसे के लालचवश यदि चूक गए, तो जीवन-भर पछताना ही हाथ लगेगा। शास्त्र का कहना है कि—

सकल पदारथ हैं जग माहीं ; कर्महीन नर पावत नाहीं।

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये, हर स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक नवग्रह यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह यंत्र मँगावें। पुरुष के लिये दो नीलमणि और स्त्री को दो लालमणि से युक्त यानी कंपलीट। एक नवग्रह यंत्र का मूल्य २) रु०, एक साथ तीन यंत्र लेने से ५॥) रु०, चाँदी का ३) रु०, सोने का ३॥=)

मि० बी० अर्जुनवाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज, सांगली (सतारा)—आपके यहाँ से मुझे बेहद लाभ पहुँचा। मैं इम्तहान में पास हो गया हूँ। एक यंत्र वी० पी० से और भेज दें।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट पटना—आपका यंत्र पहले एक मँगवाया था, उससे मेरा कार्य सिद्ध हो गया है। अब कृपया एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता S.S.L. बंबई नं० ४

Collection, Haridwar. Digitized by

आकस्मिक दुर्घटनाओं से

दो लाख आदमी प्रतिवर्ष मरते हैं

स्वदेशी

उस खतरे से आपके कुटुंब की

रक्षा करेगी

एक बार थोड़ा-सा रुपया

(यथा ३१ साल की उम्र पर २४॥≡) देकर १०००) का)

ज़िंदगी-भर का बीमा कराइए

और

रेलों के लड़ने, जंगली जानवरों के आक्रमण, मकान गिरने, दीवार फटने, खानों के फटने, भूकंप होने, कुएँ में गिरने, नदी में डूबने, पहाड़ या मकान से लुढ़कने, मोटर, रेल, इक्का, गाड़ी, घोड़ा, हाथी, पेड़ वग़ैरह से गिरने, रेल-मोटर आदि के टकराने, आग लगने, अचानक बंदूक़ की गोली लगने, फ़ुटबाल, हाकी पोलो खेलने, बिजली गिरने, मशीन चलाने, जहाज़ या नाव डूब जाने, आँधी-तूफ़ान, बर्फ़, बिजली आदि से होनेवाली

आकस्मिक मृत्यु से

बेखटके हो जाइए

आपका "जीवन बीमा" हो चुका हो, तो भी इस दुर्घटना के बीमे को और करा लीजिए।

एजेंटों की ज़रूरत है--

जो लोग दूसरी कंपनियों में आग, मोटर आदि का बीमा करते हों, वे भी इस विभाग में काम कर सकते हैं।

—श्रीचंद दौनेरिया मैनेजिंग एजेंट

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा

लेख-सूची

पृष्ठ

१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह १४७

२. वर्तमान हिंदी-साहित्य की आवश्यकताएँ—[लेखक, आचार्य गुलाबरायजी एम्० ए० ... ... १४८

३. स्वर्गीय राजर्षि राजा सर रामपालसिंह के० सी० आई० ई० (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीपं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी १५५

४. सुकुल की बीबी (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ... १६३

५. पपीहा (कविता)—[लेखिका, कुमारी स्नेहलता १७४

६. वर्ण-व्यवस्था या मरण-व्यवस्था ?—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए० ... १७५

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, क़ब्ज़ियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्यविद्या' पुस्तक मुफ़्त मँगावें।

मदनमंजरी-फ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—निगम मेडिकल हाल
अमीनाबाद रोड

बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

काशी-विद्यापीठ की पुस्तकें

संसार की समाज-क्रांति

लेखक—डॉ० जी० एस्० खेर पी-एच्० डी०

इसमें लेखक ने इटली, जर्मनी, रूस, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों का अपनी आँखों देखा हाल लिखा है, और वहाँ के सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन में आज जो उथल-पुथल मची हुई है, उसका चित्रण बड़ी ही सुंदरता के साथ किया है। श्रद्धेय श्रीभगवानदासजी के कथनानुसार "पचासों पाश्चात्य पुस्तकों और अख़बारों के परिशीलन से जो ज्ञान प्राप्त हो सकता है, उसका सार इसके अध्ययन से हो जायगा।" मूल्य १॥)

समाजवाद

लेखक—श्रीसंपूर्णानंद

समाज क्या है, उसमें इतना वैषम्य क्यों देख पड़ता है, सुख के साधन थोड़े-से ही लोगों को क्यों प्राप्त हैं, लोकतंत्र या फ़ासिस्टवाद क्यों समाज के रोगों को अच्छा करने में असमर्थ है, इत्यादि प्रश्नों का पेश उत्तर इसमें मिलेगा। समाजवाद-विषयक शंकाओं का समाधान भी किया गया है। मूल्य १॥)

जापान-रहस्य

लेखक—श्रीचमनलाल

अस्सी वर्ष के भीतर ही जापान ने जो आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है, उसका असली रहस्य इस पुस्तक को पढ़ने से विदित होगा। वहाँवालों की गहरी देश-भक्ति, सुदृढ़ अनुशासन, आविष्कारक बुद्धि और जान पर खेल जाने की तत्परता इत्यादि संबंधी बातें पढ़कर आप मुग्ध हो जायँगे, और आपके मन में इस बात का उत्साह उत्पन्न होगा कि हम भी इसी पथ का अनुसरण कर अपने देश को संसार के राष्ट्रों में उपयुक्त स्थान दिलाने का प्रयत्न करें। मूल्य १॥)

हिंदू-भारत का उत्कर्ष ३॥), ट्राट्स्की की जीवनी १॥=), साम्राज्यवाद २॥)

काशी-विद्यापीठ, बनारस छावनी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

७. मिश्रबंधुओं की कविता—[लेखक, एक भक्त १८१
८. निराशा (गद्य काव्य)—[लेखिका, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरडिया ... १८७
९. हा ! मुंशीजी अजमेरी 'प्रेम' (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'रसिकेंद्र' १८८
१०. स्विटज़रलैंड से पत्र (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, आचार्य डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्० ... १८९
११. यशोधरा (आलोचना)—[लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न १९४
१२. बीवी के गुलाम (व्यंग्य चित्र) ... २००
१३. मेरी-रूमाल (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत बदरीनारायण शुक्ल एम्० ए० ... २०१
१४. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' २१०

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक आराम करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० ब० नं० ६८२५

मृत संजीवनी सुधा

सूतिका, पौरुषहीनता, अजीर्ण और ज्वर को दूर करनेवाला

सर्वश्रेष्ठ टॉनिक वाइन

पता—ढाका-आयुर्वेदीय फ़ार्मेसी लिमिटेड

एक पिंट का दो रुपए आठ आने

कार्टर का चार रुपए आठ आने

स्थानीय एजेंटों से बीजिए

या

सीधे हेड ऑफ़िस ढाका (बंगाल) से मँगाइए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पृष्ठ

१५. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' २१०
१६. सुधा-चित्रावली २११
१७. चयन—[लेखकगण, श्रीसीताराम पांडेय एम्० ए०, साहित्यरत्न, श्रीपं० लक्ष्मीधर वाजपेयी, श्रीमती 'नलिनी', श्रीलक्ष्मीप्रसाद मिश्री 'रमा' और श्रीचंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' २१५
१८. परीक्षा—[लेखक, श्री०पं रामदत्त शुक्ल ऐडवोकेट और श्रीकेदारनाथ भट्ट एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २२६
१९. नए फूल २३०
२०. सुधा-पहेली-प्रतियोगिता २३१
२१. सौरभ (संपादकीय विचार) ... २३५

रेशमी कपड़ा

एकदम नई चीज़, अति सुंदर, मुलायम और मज़बूत, धुलने में अच्छा और टिकाऊ ६ गज़ लंबा, ५४ इंच चौड़ा, ६ क़मीज़ों के लिये मूल्य ५॥) रु० । डाक-महसूल माफ़ ।

रेशमी साड़ी—फूलदार पाड़, पक्का रंग, ५ गज़×४४ इंच, मूल्य ६) रु० प्रति जोड़ा । डाक-महसूल माफ़ । नापसंद हो, तो क़ीमत वापस । कृपया एक बार अवश्य आज़माइश करें ।

जगन्नाथ चानणराम (संस्थापित १९२१)

विभाग नं० ८६, लुधियाना (पंजाब)

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी औषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक़्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं ।

यह औषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है । यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है । खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है । ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है । मूल्य १६ दिन के योग्य ३० गोली २), डाक-म० ।=)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें । यह अत्यंत स्तंभन करती है । जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खावेंगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है । अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है, जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे । मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता । जो स्त्रियाँ गर्भधारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी । मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है । शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है । कुछ दिन लगाकर लगाना लाज़िमी है । मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. शिकार—[चित्रकार, हकीम मुहम्मदखाँ १४७

(ख) व्यंग्य

२. बीवी के ग़ुलाम २००

(ग) सादे

३. आचार्य गुलाबरायजी एम्० ए० ... १४८

४. पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी १५६

५. स्वर्गीय राजर्षि राजा सर रामपालसिंह के० सी० आई० ई० ... ... १५७

६. श्रीयुत राजा कृष्णपालसिंह १५९

७. श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ... १६४

८. श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ... १७५

९. कुमारी दिनेशनंदिनी चोरडिया ... १८७

१०-१५. स्विटज़रलैंड से पत्र-संबंधी ६ चित्र १८९-१९३

१६-१८. गुरुकुल काँगड़ी-वार्षिकोत्सव-संबंधी ३ चित्र २११-२१२

१९-२०. पंजाब-कला-प्रदर्शनी के २ चित्र ... २१२

२१. नई मोटर-साइकिल २१३

२२. श्रीमती शकुंतला-गंगाप्रसाद एम्० ए०, बी० टी० ... ... २१३

२३. भँवर जगतसिंह महता २१४

२४. श्रीयुत बदरीनारायण शुक्ल २१४

६५००० बिक चुकी हैं

विवाहित-जीवन के सम्बन्ध में कोई कठिनाई हो, कोई प्रश्न हो

विवाहित-आनन्द और पत्नी पथ प्रदर्शक में

उसका उत्तर आपको अवश्य मिलेगा।

कविराज हरनामदास बी० ए०

लोहारी अड्डा, लाहौर

गर्भ-निवारक प्रयोग

जो स्त्री बच्चा पैदा करते-करते थक गई हो, वह अपने शरीर को सुंदर और सुकोमल तथा सुडौल रखने के लिये गर्भ धारण करना नहीं चाहती, उसके लिये गर्भ-निवारक प्रयोग है। इस प्रयोग को मासिक धर्म (रजस्वला माहवारी) के समय फ़क़त ४ ही दिन कर लेने से न रहेंगे बाँस और न बजैगी बाँसुरी याने आजन्म के लिये वंध्या (बाँझ) रह जावेगी। यदि फिर भी गर्भ धारण करने की इच्छा हो, तो इस प्रयोग को उलटा दीजिए। गर्भ रह जायगा। क़ीमत सिर्फ़ ५) । साथ में एक प्रयोग और दिया जाता है, जिससे मासिक धर्म होना बंद नहीं होता, क्योंकि मासिक धर्म के बंद होने से दूषित ख़ून शरीर में जमा होकर अनेक प्रकार की अन्यान्य व्याधि उत्पन्न कर देता है। अतः यह साथ में ज़रूर मँगाना चाहिए, जिसका दाम ५) पृथक् देना होगा। ऑर्डर देने के वक़्त यह लिख देना होगा कि १०) के दोनो प्रयोग भेजिए। वी० पी० से मँगानेवालों को दोनो मय ख़र्च के ११) में घर बैठे मिलेंगे। १०) अगाड़ी भेज देने से ख़र्चा माफ़। जवाब -) टिकट आने से ही दिया जायगा।

भारत भैषज्य भंडार—नं० १०८, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पृष्ठ

२५. पं० सीताराम पांडेय एम्० ए०, साहित्यरत्न २१६
२६. पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी २१८
२७. श्रीलक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा' ... २२३

मधुवन

लेखक, हिंदी-साहित्य के नवयुवक कवि श्रीआनंदकुमार। कुमारजी हिंदी के परिचित कवि हैं। आपकी कविताएँ हिंदी के पाठकों का मनोरंजन करती रहती हैं। मधुवन में समय-समय पर लिखी हुई आपकी सर्वोत्कृष्ट कविताओं का संग्रह किया गया है। इसकी एक प्रति अवश्य मँगा लीजिए। मूल्य ।), जिल्ददार =)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

रमा संहिता

(योगसागर-फलित खंड भाषा-टीका)

गत ७२ वर्षों का जिनका जन्म है व आगे १० वर्षों में होगा, संसार-भर के सभी देशों के मनुष्यों की जन्म-कुंडलियों का भूत, भविष्य, वर्तमान, तीनों जन्म का हाल, स्त्री-पुत्र, द्रव्य, सुख-दुःख, लाभ-हानि, किस संवत् तक आयु, फिर कहाँ जन्म होगा, इत्यादि साधारण पढ़े-लिखे भी फल कह सकते हैं। फल सुनते ही लोग कहते हैं कि कर्ण-पिशाचिनी सिद्ध है। कई ज्योतिषी सिद्ध बन गए। समाचार-पत्रों ने समालोचना की, और सार्टीफ़िकेट आए हैं। चार मास के लिये रियायती मूल्य ३), पो० ॥); फिर सौ रुपया को न मिलेगा।

भृगुसंहिता-कुंडली-खंड

संवत् १९२० से २००० तक सौ वर्षों के पृथ्वी-भर के मनुष्यों की जन्म-कुंडली इसमें मिलेगी। नष्ट जन्म-पत्री बना लो। मूल्य २), पो० ॥)

मूक प्रश्न-भास्कर—गुप्त प्रश्न बताने का अनूठा ग्रंथ। मूल्य २)

पता—ज्योतिषरत्न पं० अयोध्याप्रसाद मिश्र
ज्योतिषी, झाँसी नं० ४ JHANSI

बवासीर ❋ बवासीर

और भगंदर की अचूक महौषध

"Pilecura" डॉ० घंट का पाइलक्यूरा "Pilecura"

चाहे जैसी कठिन, पुरानी और दुःखदायी, ख़ूनी एवं बादी बवासीर या भगंदर आदि हो, मलहम लगाते ही सब तरह का कष्ट हमेशा के लिये अत्यंत शीघ्र बिलकुल आराम हो जाता है। इसमें पारा या और किसी ज़हरीली वस्तु के मेल का ख़तरा नहीं। मूल्य बड़ी शीशी ३॥), छोटी शीशी १), डाक-ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—दास-ब्रादर्स
केमिस्ट्स ऐंड ड्रगिस्ट्स
११५, धरमतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

For Agency terms apply also to:—
Distributors:—DAS BROTHERS, Chemists & Druggists
115, Dharamtala Street, CALCUTTA

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, D...

स्वास्थ्य और बल पाने के लिये सबसे उत्तम परिवार-भर के पीने योग्य मधुर स्वादिष्ठ पीने का पदार्थ

सुख-संचारक द्राक्षासव

ही है, जो अंगूरी दाखों से बना हुआ सबसे अच्छा पदार्थ है। तभी तो ५८ समाचार-पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। आप भी नमूना मँगाकर देखिए। १२ औंस व २४ औंस की बोतलों में सब दूकानदारों के पास मिलता है, नाम देखकर ख़रीदिए।

पता---सुख-संचारक कंपनी, मथुरा

हमारी कृषि-संबंधी पुस्तकें पढ़कर आप एक-एक बीघे में सहस्रों रुपए कमा सकते हैं

मक्का की खेती (सचित्र)	१)	ज़ीरा	=)
गेहूँ की खेती (,,)	॥=)	पपीता	।-)
कपास की खेती (,,)	३)	मूँगफली	।=)

उक्त पुस्तकें उर्दू-भाषा में भी हैं। सब पुस्तकों के ग्राहकों के लिये डाक-व्यय माफ़।

लेखक व प्रकाशक—

रामप्रसाद सूबा ऐंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट

रिटायर्ड एग्रीकलचरल डिप्लोमिस्ट (लंदन), मुरार छावनी, ग्वालियर

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

❀ रूपविलास ❀

ख़ूबसूरत बनाने के लिये यही प्रसिद्ध दवा है। मुहासा, झाईं, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह बहुत जल्द दूर होकर गोरा गुलाब के फूल-सा खिला गुलाबी छटा मुख पर दमकने लगती है। कैसा ही बदसूरत, बदरौनक़ मनुष्य क्यों न हो, १५ ही रोज़ के लगाने से दूना चेहरा ख़ूबसूरत नज़र न आवे, तो दाम वापस। यह स्त्री-पुरुष, दोनो का दिल ख़ुश करनेवाली मनोमोहिनी ख़ुशबूदार दवा है। क़ीमत फ़ी डिब्बा १॥=) एक रुपया दस आना, डाक-ख़र्च =)

पता—रूपविलास-कंपनी, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, इटावा (यू० पी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Di

शिकार

[चित्रकार—हकीम मुहम्मदखाँ]

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आवश्यकता है

श्रावण, १९९३ की संख्या में हमने 'एकमात्र उपाय'-शीर्षक लेख लिखा था। उसमें हमने इस बात की आवश्यकता बतलाई थी कि देश-कल्याण के लिये भारतवर्ष-भर में प्रधान नगरों से दैनिक या साप्ताहिक पत्र निकाले जायँ।

हिंदी-भाषा-भाषियों को यह जानकर खुशी होगी कि उपर्युक्त स्कीम के अनुसार इंदौर से 'हलचल' और लखनऊ से 'नवदूत' नाम से दो दैनिक पत्र निकालने का आयोजन हो गया है। पत्र शीघ्र निकलेंगे। मैनेजिंग डाइरेक्टर का भार मुझे सौंपा गया है। उनके लिये हमें २ प्रधान संपादक, ८ उप-संपादक, २ मैनेजर, ३०-४० कंपोज़ीटर, ७-८ मशीनमैन तथा ८-१० क्लर्क और भारतवर्ष के प्रत्येक नगर में पत्र के एजेंट चाहिए। उपर्युक्त सेवा करने के अभिलाषी सज्जन हमसे पत्र-व्यवहार करें। वेतन या कमीशन योग्यता और काम के अनुसार मिलेगा। प्रधान संपादकों और मैनेजरों को १००-१५० रुपए तक वेतन मिलेगा।

आगरा, प्रयाग, पटना और नागपुर आदि से पत्र, इन दोनो पत्रों के प्रकाशित हो जाने के बाद, निकाले जायँगे।

कवि-कुटीर
लखनऊ

उलीलाल भार्गव

ज़रूरत है

सुधा के लिये कुछ ऐसे एजेंटों की, जो विभिन्न प्रांतों में घूमकर उसका प्रचार कर सकें। वेतन १५) से ३०) तक। बाक़ी खर्च अलग।

मैनेजर सुधा

[चित्रकार—हकीम मुहम्मदखाँ]

CCO. Gurukul Kangri Collection, H

सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

में आप

निःशुल्क भाग ले सकते हैं !

सूचना—

वर्ग-पूर्तियाँ भेजते समय नीचे दिया कूपन काट-कर लिफ़ाफ़े पर (पते की जगह) चिपका दीजिए।

मैनेजर 'सुधा'
(पहेली-प्रतियोगिता-विभाग)
लखनऊ

कैसे ?

जुलाई या अगस्त-मास की 'सुधा' में प्रकाशित पहेली-प्रतियोगिता-नं० २ में जो सज्जन (अकेले और एक ही नाम से) ३ पूर्तियाँ और उनका प्रवेश-शुल्क १।) नियमानुसार भेज देंगे, वे साथ में इस पृष्ठ पर दिए हुए वर्ग पर एक पूर्ति निःशुल्क भेजने के भी अधिकारी होंगे। ऐसी निःशुल्क भेजी जानेवाली पूर्ति अन्य ३ पूर्तियों-सहित एक ही लिफ़ाफ़े में भेजनी चाहिए।

ध्यान रहे—

भिन्न-भिन्न नामों से भिन्न व्यक्तियों द्वारा (चाहे वे एक ही परिवार के क्यों न हों) भेजी गई पूर्तियों के विषय में उपर्युक्त नियम लागू न होगा, और उनकी भेजी हुई कोई भी पूर्ति निःशुल्क स्वीकार न की जायगी।

इस नियम से लाभ उठाइए। यह किसी भी पत्रिका में नहीं है !

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष ११ खंड १ | भाद्रपद, ३१५ तुलसी-संवत् (१९९४ वि०)— सितंबर, १९३७ | संख्या २ पूर्ण संख्या १३४

गीत

[श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह]

रहोगी नयनों में, मन में।
सुंदरी! प्रति जीवन-क्षण में।

तुम्हारी मुख-सुषमा अवदात
रँगेगी मेरे सायं-प्रात,
मधुरतर चरणों के मंजीर
बजेंगे उर के कंपन में।

तुम्हारी अलकाकुल वातास
बनाऊँगा प्राणों की साँस,
हासमय अंगों का मधु-मास
खिलेगा कानन-कानन में।

CC0. Gurukul Kangri Collection

वर्तमान हिंदी-साहित्य की आवश्यकताएँ

[आचार्य गुलाबरायजी एम्० ए०]

काव्यालापाश्च ये केचिद्गीतिकान्यखिलानि च ;
शब्दमूर्तिधरस्यैते विष्णोरंशा महात्मनः ।

हिंदुओं के देवताओं में विष्णु भगवान् को प्रधानता दी गई है—वह रक्षा के देवता हैं। वह संसार के रक्षक और पालक हैं। रक्षा का कार्य ब्रह्मा और महेश के कार्य से भी बड़ा माना गया है। वर्तमान विज्ञान भी मनुष्य में आत्मरक्षा के भाव को प्रधानता देता है। मनुष्य के प्रायः सभी कार्य आत्मरक्षा के निमित्त होते हैं। साहित्य में ब्रह्मा का सृजन कार्य तो है ही, किंतु रक्षा का कार्य अधिक होने के कारण उसे विष्णु का अंश कहा है। कल्याणकर्ता के रूप से साहित्य में शिव और उनकी शक्ति का भी समावेश है। आत्मरक्षा के जितने साधन हैं, उनमें साहित्य प्रधान है। वैदिक सभ्यता के चिह्न अब अनंत के गर्त में विलीन हो गए हैं, किंतु वैदिक वाङ्मय अब भी अमर है—मंत्रों के द्रष्टा ऋषिगण इस काल भी उन मंत्रों में जीवित हैं। मुग़ल-साम्राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया, किंतु गोस्वामीजी के राज्य की सीमा प्रतिदिन विस्तृत होती जाती है। साहित्य के सभी अंग काव्य और शास्त्र दोनों ही मानव-अनुभव की रक्षा का मानव-जीवन को नियंत्रित कर रहे हैं। विष्णु भगवान् के समान साहित्य ही समाज का रक्षक, पालक और शासक है। साहित्य, जिसे व्यापक अर्थ में वाङ्मय कहते हैं, मानव-समाज के मूल्यतम भावों की ही रक्षा नहीं, वरन् सुरक्षित भावों द्वारा समाज की भी रक्षा करता है।

आचार्य गुलाबरायजी एम्० ए०

साहित्य में काव्य (गद्य-पद्य, उपन्यास, नाटक, जीवनियाँ, निबंध, गद्य-काव्य) आदि और शास्त्र (धर्म, दर्शन, इतिहास, विज्ञान आदि) सभी सम्मिलित हैं, सभी से समाज की रक्षा होती है। यद्यपि साहित्य के उदय में आत्मव्यंजना (वह भी आत्मरक्षा का एक रूप है) प्रधान है, तथापि उसकी गति मानव-समाज की रक्षा की ओर रहती है। साहित्य संकुचित अर्थ में काव्य का पर्यायवाची है। इस अर्थ में वह केवल जीवन की आलोचना ही नहीं करता, वरन् उसे आनंद-पूर्ण रूप में विकसित भी करता है। निर्जीव को भी जीवन देता है। आलोचना-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मात्र एक व्यसन है। आलोचना साध्य नहीं हो सकती, उसका भी कोई लक्ष्य होना चाहिए। वह लक्ष्य है मानव-हित। वही साध्य है। साहित्य में जो आत्मव्यंजना (Self expression) और मूल्य (Value) का जो युद्ध है, वह विचार करने पर इतना विकराल नहीं रहता, जितना दूर से दिखाई पड़ता है। कोई कहते हैं कि अपने भावों की व्यंजना कर देने मात्र में काव्य और कला की इति-कर्तव्यता है, 'कला कला के लिये ही है'। उससे और कोई बाहरी परिमाण (Standard) की आशा रखना इतनी ही मूर्खता है, जितनी अच्छे रसोइए से अंतरराष्ट्रीय नियमों की जानकारी अथवा किसी राजनीतिज्ञ से चारपाई बुनने के ज्ञान की आशा रखना। जो लोग मूल्य (Values) पर ज़ोर देते हैं, वे काव्य की लोक-हित और उपयोगिता के आधार पर परीक्षा करते हैं, वे शिवम् के आगे सुंदरम् की परवा नहीं करते। यद्यपि कहा गया है कि 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः', तथापि वह नितांत अलभ्य नहीं। काव्य को मूल-स्रोत की ओर से देखने से आत्मव्यंजना की बात ठीक बैठती है, और आगे की ओर भविष्य की ओर देखने से लोक-हित की बात समीचीन लगती है। एक चीज़ का भूत और भविष्य, दोनो ही हो सकता है। वृक्ष में जड़ भी होती है, और फूल-फल भी होते हैं। आत्मव्यंजना, जिसमें आनंद है, साहित्य-वृक्ष की जड़ है, और मूल्य अर्थात् लोक-हित उसके फूल-फल हैं। रस (आनंद) जड़ में भी होता है, और फल में भी। फल में आनंद के साथ पुष्टि भी होती है, इसी प्रकार काव्य में आनंद के साथ पुष्टि भी होती है। जो बात काव्य के लिये कही गई है, वह शास्त्र के लिये भी, थोड़े परिवर्तन के साथ, लागू होती है, क्योंकि कोई ज्ञान ऐसा नहीं, जिसमें क्रिया और आनंद न लगा हो। विज्ञान और काव्य का विरोध है, किंतु दोनो में थोड़े बहुत आनंद की मात्रा रहती है; एक में ज़्यादा, तो दूसरे में कम, किंतु आनंद के साथ लोक-हित लगा हुआ है। यद्यपि कवि की भारती को आह्लादैकमयी कहा गया है, तथापि काव्य को बिना प्रयोजन नहीं बतलाया गया है। भारतीय लोग चाहे अव्यावहारिक माने जायँ, पर वे बहुत व्यावहारिक हैं, उनकी दृष्टि अधिकतर उपयोगिता की ओर रही है। न्यायशास्त्र और तर्कशास्त्र का भी अध्ययन निःश्रेयस् मोक्ष (Sumum Bonum) के लिये ही बतलाया गया है। बाबा तुलसीदासजी यद्यपि किन्हीं वादों में नहीं पड़ते थे, तो भी उन्होंने दोनो पक्ष लिए हैं। उन्होंने अपने रामचरितमानस की 'स्वान्तःसुखाय' सृष्टि की—

स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषानिबद्धमतिमंजुलमातनोति।

किंतु उसी के साथ वह मुक्त कंठ से यह भी कहते हैं कि काव्य वही भला है, जिससे सुरसरिता (गंगाजी) की भाँति सबका भला हो—

कीरति भनित भाँति भलि सोई;
सुरसरि-सम सब कहँ हित होई।

यह विषयांतर इसीलिये किया गया कि मालूम हो जाय कि काव्य और साहित्य का लक्ष्य क्या है? लक्ष्य के अनुकूल ही आवश्यकता का अंदाज़ लग सकता है।

इसी कसौटी पर हम वर्तमान काव्य को देखेंगे, और इसी दृष्टि से हम उसकी आवश्यकताओं का निर्णय करेंगे।

वर्तमान हिंदी-काव्य बहुत कुछ स्वान्तःसुखाय हो रहा है, इसमें तो शायद कोई मतभेद न होगा। यदि वर्तमान काव्य में कुछ अनुकरण भी है, तो वह भी स्वान्तःसुखाय ही है। सरस्वती और लक्ष्मीजी के स्वाभाविक वैमनस्य के कारण कवि को वैसे भी अंतःसुख के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। 'कला कला के लिये है,' इस सिद्धांत की वर्तमान साहित्य में पूरी छाप दिखाई पड़ती है। 'नियतिकृत

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नियमरहिताम्' का भी ख़ूब पालन हुआ है। आजकल कविगण ब्रह्मा की सृष्टि से तो ऊँचे जाते ही हैं, उसके नियमों की तो अवहेलना करते ही हैं, किंतु वे कवियों के माने हुए नियमों की भी परवा नहीं करते। इसमें भी कोई बुराई नहीं—

लीक-लीक गाड़ो चलै, कायर और कपूत;
लीक छाँड़ि तीनो चलैं—सायर, सिंह, सपूत।

सिंह और सपूत का साथी होने का गौरव है, अब हम उसको लोक-हित की दृष्टि से देखना चाहते हैं। वर्तमान काव्य में दुःखवाद आहोज़ारी अधिक है। यद्यपि यह संतोष है कि इस आहोज़ारी में बीभत्सता नहीं आई है, लोग सीख के मुर्ग़ा नहीं बनाए जाते, तथापि 'बूँद में बाड़व का दाह' अवश्य दिखाई पड़ता है, आहें भी ख़ूब सुनाई पड़ती हैं, और धकधकाते शोलों की आग से, चाहे उसमें पानी भी क्यों न हो, आँखें चकाचौंध में आ जाती हैं। यह अवश्य मानना पड़ेगा कि दुःख की उपासना मानव-हृदय को पवित्र बनाती है। यूनान के लोगों ने भी ट्रेजिडी (दुःखांत नाटकों) को ही प्रधानता दी थी। भवभूति ने करुण-रस को ही मुख्यता दी है, फिर यदि पंतजी कहते हैं कि 'वियोगी होगा प्रथम कवि' तो कोई बुराई नहीं। देश की परिस्थिति भी ऐसी ही है कि उसमें करुण-रस की प्रधानता हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। यह ठीक है कि साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है, किंतु उसी के साथ समाज भी साहित्य का प्रतिबिंब है। अब देखना यह है कि साहित्य समाज को प्रतिफलित ही करता है, अथवा उस पर कोई नई छाप डालता है। आजकल के काव्य में हमको आशा का संदेश कम सुनाई पड़ता है। यदि आशावाद है भी, तो वह भी निराशा-पूर्ण। दुःखों से बचने के लिये या तो हाला का प्याला हाथ में ले लिया जाता है, और प्याले में हाला का तूफ़ान उठाकर सारे दुःखों को उसमें डुबो दिया जाता है, या प्रलयंकर का आवाहन कर विश्व-भर को प्रलय-पयोधि में डुबोया जाता है। न मर्ज़ ही रहे, और न मरीज़ ही रहे। हालावाद में विदेशी छाप है। हमारे यहाँ के चारवाक भी 'ऋणं कृत्वा सुरां पिबेत्' नहीं कहते, वह 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' ही कहते हैं। हालावाद से हलाहलवाद भारतीय संस्कृति के अनुकूल पड़ता है। महेश हलाहल पीकर ही शिव बने। हलाहल में यही आशा है कि जब सबका नाश होगा, तो दुःख का भी नाश होगा, लेकिन उस सुख को देखेगा कौन? हालावाद में मोहकता, मादकता और संगीत अवश्य है, और लोक-हित भी इतना है कि थोड़ी देर के लिये प्रवाह में पड़कर लोग दुःख को भूल जायँ, किंतु उसका हाला का-सा ही प्रभाव पड़ता है। उससे समाज में कमज़ोरी आती है। निराशावाद भारतवर्ष के लिये पूर्व में भी हानिकारक रहा है, और अब भी हानिकारक होगा। हमें समाज को ऐसे विचार देना चाहिए जिससे उसमें उत्साह और स्फूर्ति आए। दुःखों के साथ अपना भी नाश न हो, दुःखों से भागना भी न सीखें, वरन् हरिश्चंद्र की भाँति उनका सामना करना सीखें। देश के आदर्शों का निर्माण कवियों के हाथ में है, और कवियों को इस संबंध में अपना कर्तव्य निभाना चाहिए, दुःख की अनुभूति अवश्य करें। जो दुःख की जितनी गहरी अनुभूति करता है, वह उतना ही बड़ा है। भगवान् बुद्ध और प्रभु ईसामसीह दुःख की तीव्र अनुभूति के कारण ही जगद्वंदनीय बने, किंतु दुःख की रूढ़ि न बना लेना चाहिए। शृंगार के रूढ़िवाद से दुःख का रूढ़िवाद अच्छा है, किंतु वह रूढ़िवाद ही है, रूढ़िवाद में जीवन नहीं।

रूढ़िवाद यंत्रवाद है। आजकल वैसे ही यंत्रवाद बहुत कुछ चल रहा है। कविता में यंत्रवाद बढ़ाने की आवश्यकता नहीं। वर्तमान कविता का आदर्श मुक्त सरिता का-सा आदर्श है। इस आदर्श का

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

किसी अंश में पालन हुआ है, किंतु अभी कविता में पूर्ण स्फूर्ति का विकास नहीं हुआ (मैं सब कवियों के लिये यह नहीं कहता), कविता में जीवन की-सी स्फूर्ति चाहिए। आजकल के काव्य ने नए क्षेत्र खोले हैं, पुराने काव्य से जी ऊबे हुए लोगों को कुछ तरोताज़गी मिली है। लोगों की कल्पना के लिये भी नए द्वार खुले हैं, जागृति है, किंतु उछल-कूद, उत्साह और आनंद की कमी है।

मैं उन लोगों में से नहीं, जो कहते हैं कि कविता का युग नहीं रहा। कविता होती है, और अच्छी होती है, हमको किसी के आगे सर झुकाने की आवश्यकता नहीं। हमारे यहाँ प्रतिभा की कमी नहीं। नवीन कवियों ने दिखला दिया है कि हिंदी-कवियों में प्रतिभा की कमी नहीं, किंतु प्रतिभा की गति बदलने की आवश्यकता है। आजकल की कविता ऊपर की ओर अधिक जा रही है। उसका जीवन से संपर्क कम है, इतना भी नहीं, जितना हवाई जहाज़ का ज़मीन से। हवाई जहाज़ भी पहले ज़मीन पर चलता है, फिर आसमान में उड़ता है। हमारे कवि, जो आसमान में उड़ते हैं, यदि ज़मीन पर भी दौड़ें, तो उनमें बहुत कुछ स्फूर्ति आ सकती है। संसार भी उनके साथ हर्षोल्लास से नाच सकता है। जीवन के छोटे-से-छोटे व्यापार में महान् के दर्शन हो सकते हैं। जीवन में होकर परमात्मा के जो दर्शन किए जाते हैं, वह झाँकी हृदय पर अपनी गहरी छाप अंकित कर देती है। रवींद्र बाबू की महत्ता इसी में है कि उन्होंने 'अणोरणीयान्' में 'महतो महीयान्' के देखने की कोशिश की है। मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं कि ऐसी कविता का प्रभाव है, किंतु उसका प्राचुर्य न होना खटकता है। यदि जीवन के छोटे दृश्यों में ही महत्ता देखी जाय, तो लोगों की कल्पना कवि की कल्पना के साथ दौड़ने लगती है। वर्तमान काव्य में प्रबंध-काव्य की कमी होने के कारण पाठकों की कल्पना को कम सहारा मिलता है। कवि और पाठक की कल्पना साथ-साथ नहीं दौड़ सकती। यह युग प्रबंध-काव्य की ओर से कुछ उदासीन-सा होता जा रहा है। यह साहित्य के लिये गौरव की बात नहीं है। साधारण जनता की दृष्टि सूर्य और चंद्रमा के तांडवनृत्य की ओर नहीं जाती है। साधारण लोग जीवन के दुःख-सुखमय, जीते-जागते चित्र देखना चाहते हैं।

बहुत गंभीरता भी एक प्रकार का दुर्गुण हो जाता है। हमको अपने काव्य में अकबर आदि उर्दू-कवियों का सुखद हलकंपन भी लाने की ज़रूरत पड़ती है। हम यह नहीं चाहते कि हिंदी के पाठकगण सनक, सनंदन, सनत्कुमार की भाँति सदा बालक ही बने रहें, किंतु चिरवार्धक्य भी अच्छा नहीं। संक्षेप से काव्य में जीवन से संपर्क रखते हुए आशावाद लाने की आवश्यकता है।

नाटक के क्षेत्र में भी बहुत कुछ कार्य हुआ है, किंतु उसका रंगमंच से विच्छेद होने के कारण उसकी यथेष्ट उन्नति नहीं हो सकी। काव्य के अंगों में नाटक में सबसे अधिक जीवन की व्याख्या है। जीवन का चित्र जीवन ही द्वारा खींचा जा सकता है, इसलिये रंगमंच की आवश्यकता रहती है। इसके अतिरिक्त पात्रों द्वारा लेखक अपने पाठकों के संपर्क में आ जाता है, और रचना में जो पाठकों का भी हाथ रहता है, वह पूरी तौर से दिखाई पड़ने लगता है। रंगमंच और दर्शकों द्वारा रचना में कवि और पाठक के आदान-प्रदान (Responsive creation) की समस्या हल हो जाती है। चल चित्रों से रंगमंच का बहुत ह्रास हुआ है, और उसमें पात्रों से दर्शकों के दूर रहने के कारण इस आदान-प्रदान की संभावना नहीं रहती। अच्छे श्रोताओं को पाकर ही वक्ता की प्रतिभा जागरित होती है। चल चित्रों में श्रोता लोग अभिनय करने-वालों से दूर रहते हैं, और उनके द्वारा ऊँचा साहित्य नहीं उत्पन्न होने पाता। नाटकों को अधिक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मनोवैज्ञानिक और स्वाभाविक होने की आवश्यकता है, और उनकी भाषा ऐसी होनी चाहिए, जो सर्व-साधारण की समझ में आ जाय, और जिसके गद्य में स्वाभाविकता के साथ एक आकर्षक गति और प्रवाह हो। बहुत तुकबंदी की भाषा हास्यास्पद हो जाती है।

उपन्यास—साहित्य का विस्तार दिखाई पड़ता है, तो इसी विभाग में। स्वनामधन्य मुंशी प्रेमचंदजी ने तो इस विभाग में हिंदी का सर ऊँचा किया ही है, किंतु और लोगों ने भी इस साहित्य में काफ़ी योग दिया है। हमारे यहाँ के उपन्यासों में कथानक की कमी नहीं। चरित्र-चित्रण भी अच्छा है, किंतु अभी उनमें यथेष्ट रूप से मनोविज्ञान से काम नहीं लिया है। आजकल योरप के उपन्यास-कार मनोविश्लेषण-शास्त्र (Psychoanalysis) से काम लेते हैं, मनोविश्लेषण-शास्त्र कोई आजकल की ही उपज नहीं, नाम शायद आजकल की उपज है। बेचारे बिहारी ने भी मनोविश्लेषण से काम लिया है। यदि उसने आजकल लिखा होता, तो लोग यही कहते कि उसने Psychoanalysis पढ़कर लिखा होगा। साहस और नवीनता-पूर्ण (Adventurous) साहित्य की भी अभी कमी है।

जीवनी—साहित्यिक लोगों के रोचक संस्मरणों की भी कमी है। साहित्यिक लोग मनुष्य भी होते हैं। उनकी मनुष्यता का हम बहुत कम वर्णन पाते हैं। यात्राओं और भ्रमणों के वर्णनों की भी कमी है। निबंध का अभाव अभी खटकता ही है। मासिक पत्रों में तो उच्च कोटि के निबंध निकल रहे हैं, किंतु पुस्तक-रूप में अच्छे निबंधों के संग्रह कम हैं। साहित्यिक निबंधों की पुस्तकें हैं भी, किंतु जीवन की नैतिक और सामाजिक समस्याओं के संबंध में बहुत कम निबंध लिखे गए हैं। निरुद्देश्य हलके निबंध भी अधिक नहीं लिखे गए हैं।

यह तो रही काव्य की बात। शास्त्रों के संबंध में दो-चार शब्द कह देना अनुपयुक्त न होगा। शास्त्रों में पहले धर्म और दर्शन ही लीजिए। हिंदू-धर्म और दर्शनों के बारे में जितना अँगरेज़ी में है, उसका शायद शतांश भी हिंदी में नहीं। भारत-वर्ष को धार्मिक और दार्शनिक इतिहास की आव-श्यकता है। हिंदी में वेदांत के ऊपर तो थोड़ा-बहुत साहित्य है भी, किंतु सांख्य, न्याय, वैशेषिक पर बहुत कम पुस्तकें हैं। डॉक्टर गंगानाथ झा ने न्याय और वैशेषिक पर दो पुस्तकें अवश्य लिखी हैं, किंतु उनसे हमको शिकायत है कि जैसा आपने अँगरेज़ी का भांडार भरा है, वैसा हिंदी का नहीं। योरप के दर्शन और तर्क के संबंध में अवश्य थोड़ा-बहुत लिखा गया है, किंतु वह बहुत अपूर्ण है।

इतिहास में थोड़ा-बहुत कार्य हुआ है। कुछ ग्रंथ ऐसे हैं, जिनसे अँगरेज़ी पढ़े लोग भी लाभ उठा सकते हैं, किंतु इतिहास का जितना व्यापक क्षेत्र है, उसके अनुकूल बहुत कम काम हुआ है।

भिन्न-भिन्न विज्ञानों में कितना और क्या कार्य हुआ है, उसकी सर्वे करना मेरा विषय नहीं। हाँ, यह संतोष के साथ कहा जा सकता है कि हिंदी में किसी प्रांतीय भाषा की अपेक्षा कम कार्य नहीं हुआ, किंतु यह संतोष झूठा संतोष है। निरपेक्ष दृष्टि से देखने पर यह कहना होगा कि बहुत कम काम हुआ। विज्ञान-परिषद् अपने विज्ञान नाम के पत्र से कुछ सेवा कर रही है। उसके लेखों में विज्ञान के गंभीर-से-गंभीर विषय आए हैं, किंतु हिंदी के दुर्भाग्य से उसका पूरा प्रचार नहीं हुआ। अभी लोगों के दिल से यह बात नहीं हटी कि हिंदी में भी कुछ पढ़ने को मिल सकता है। डॉक्टर गोरखप्रसाद की 'फ़ोटोग्राफ़ी', डॉक्टर वर्मा की 'हमारे शरीर की रचना' और रोगों के संबंध में भी उनकी एक किताब है, संपूर्णानंदजी का 'भौतिक विज्ञान' ऐसी किताबें हैं, जिनसे लोग लाभ उठा सकते हैं। होमियोपैथी पर भी हिंदी में किताबें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिखी गई हैं। विज्ञान-संबंधी बाल-साहित्य का भी निर्माण हो रहा है। भाषा-विज्ञान के संबंध में भी हिंदी में अच्छा कार्य हुआ है, और आशा की जाती है कि डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा और भी एक ग्रंथ लिखेंगे, जिसमें वह अपने पेरिस के अध्ययन का लाभ हिंदीवालों को दे सकें। भौतिक विज्ञानों के संबंध में मौलिक ग्रंथ लिखने के लिये बहुत साधन चाहिए, और पढ़नेवाले भी कम हैं। उसके लिये राज्य की सहायता चाहिए। हर्ष की बात है कि हिंदोस्तानी एकेडेमी से 'सौर परिवार' और 'विज्ञान हस्तामलक' नाम की दो अच्छी पुस्तकें निकली हैं। ऐसी बहुत-सी पुस्तकों की ज़रूरत है, और उन्हें लोक-प्रिय बनाने के लिये उनका मूल्य लागत-मात्र रखने की आवश्यकता है। समाज-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, मनोविज्ञान ऐसे विषय हैं, जिनमें केवल निरीक्षण से भी काम चल सकता है। वैसे तो मनोविज्ञान के लिये भी प्रयोगशाला की आवश्यकता है, और समाज-संबंधी प्रयोग भी किए जाते हैं, किंतु ये ऐसे विषय हैं, जिनमें साधारण जनता रुचि ले सकती है। ऐसे साहित्य को भी सस्ता बनाने की बहुत आवश्यकता है, और इसी के साथ विश्वविद्यालयों में कम-से-कम सहायक रूप से उसके प्रवेश कराने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों की और ऐकेडेमी को गंभीर विषयों पर सार्वजनिक व्याख्यान कराना चाहिए। पुस्तक पढ़ने में लोगों को कष्ट होता है, किंतु लोग व्याख्यान सहज में सुन लेते हैं। राम-नाम की भाँति लाभ का जितना भी अंश प्राप्त हो, उतना ही श्रेयस्कर है।

इतिहास, विज्ञान तथा अन्य शास्त्रों के लेखकों से मेरा एक आवश्यक निवेदन है कि वे पुस्तक लिखते समय भारतवर्ष को भूल जाते हैं। योरप के गंभीर-से-गंभीर लेखक अपनी सभ्यता के मूल स्रोतों—यूनान और रोम—को नहीं भूलते। हम यह नहीं कहते कि पुरानी बातों को वेद-वाक्य मानिए, किंतु प्राचीनों ने जो कार्य किया है, उसे ऐतिहासिक दृष्टि से पढ़ा जाय। मनोविज्ञान के ऊपर कई पुस्तकें लिखी गईं, किंतु एक ने भी भारतीय आधार का स्पर्श तक नहीं किया। यह बात नहीं कि प्राचीन लोग मनोविज्ञान से बिलकुल अनभिज्ञ थे। मेरठ-कालेज के डॉक्टर सिनहा ने इंद्रिय-प्रत्यक्ष (Perception) पर एक बहुत अच्छी पुस्तक लिखी है। रिस डेविस ने बौद्धों के मनोविज्ञान पर एक विचार-पूर्ण ग्रंथ लिखा है। हमारे हिंदी-लेखक ऐसी किताबों से लाभ नहीं उठाते। ज्योतिष-शास्त्र पर व्याख्यान देनेवाले न्यूटन, केपलर, गलीलियो का तो नाम लेते हैं, किंतु आर्य भट्ट या वराहमिहिर का नाम नहीं लेते।

तर्क-शास्त्र आदि ऐसे विषय हैं, जिनके लिये प्राचीन ग्रंथों में पर्याप्त सामग्री मिल सकती है, किंतु लोग उससे लाभ नहीं उठाते।

हिंदी में विज्ञान पर लिखनेवाले लोग डॉक्टर ब्रजेंद्रनाथ सील की Positive sciences of the Hindoos से बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं। हम भूत का आधार छोड़कर भविष्य का भव्य भवन बनाना चाहते हैं। यह बात असंभव है। पूर्णता के लिये, सजीवता के लिये, मौलिकता के लिये और जातीय व्यक्तित्व के लिये हमको प्राचीनों के ज्ञान से लाभ उठाना परम आवश्यक है। इसमें कोई लज्जा की बात नहीं कि हमारे पूर्वज थोड़ा जानते थे। बहुत-से विषयों में रोम और यूनान के लोग उनसे भी थोड़ा जानते थे। जो कुछ जानते थे, उसको हमें भी जानना चाहिए, और उनके छोड़े हुए मार्ग पर आगे चलकर भी देखना चाहिए कि उस राह में चलने से क्या मिल सकता है।

अंतिम बात मैं प्रांतीय सहकारिता के बारे में कहना चाहता हूँ। हिंदी और उर्दू की तो विज्ञान में सहकारिता रहनी ही चाहिए, क्योंकि साधारण

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज्ञान की बातें विशेषकर ऐसी भाषा में लिखी जा सकती हैं, जो केवल लिपि बदलने से हिंदी और उर्दू, दोनो में काम आ सकती हैं। हमको बंगाली, गुजराती मराठी आदि की पुस्तकों से लाभ उठाना चाहिए। वे लोग आदि अँगरेज़ी का अनुवाद-मात्र नहीं करते, और भारतीय परिस्थिति के अनुकूल लिखते हैं, तो उनकी पुस्तकें हमारे बहुत कुछ काम आ सकती हैं। अँगरेज़ी के अनुवाद से प्रांतीय भाषाओं का अनुवाद करना अच्छा है। उसमें भारतीयता रहेगी। अँगरेज़ी से अनुवाद किया जाय, किंतु उन्हीं का, जिनमें व्यापक सिद्धांत हों। उनमें भी जहाँ भारतीय परिस्थिति के अनुकूल रद्दोबदल की आवश्यकता हो, वहाँ उसके संबंध में टिप्पणी लगा देना आवश्यक होगा। भारतवासियों के लिये वे ही ग्रंथ हितकारी होंगे, जो भारतवर्ष की परिस्थिति के अनुकूल हों, और जिनमें भारतीय ज्ञान के आधार पर भूत और भविष्य का सुखद समन्वय किया गया हो।

लूटिए ! लूटिए !!

❀ पुरस्कार ❀

कैसा ? कितना ?

१०००) रुपए

किस प्रकार मिलेगा ?

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत पुस्तकों की मदद से।

सैकड़ों तरह के सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक	१)	१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक	॥)
रंग की पुस्तक	१)	वार्निश और पेंट	१)
सुगंधित तेल की पुस्तक	१)	विद्युत्-शास्त्र (Electricity)	॥)
सरल रसायन (Chemistry) १) हिंदी केमिस्ट्री १)	साथ लेने से १॥) में	आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)	
		अयोध्या-गाइड	-)॥
आरोग्य-विद्या (Hygiene)	॥)	तंतु-कला (सूत का हुनर) और माड़ी चढ़ाने की पुस्तक	१)
रिसाला साबुनसाज़ी (उर्दू-संस्करण)	॥)	अनुवाद-कला (Sanskrit-Teacher)	।)
इत्र की पुस्तक	१)	हस्त-रेखा	=)
देशी जड़ी-बूटी और उनके गुण (छप रही है)		चुंबकत्व और फ़ोटोग्राफ़ी (छपनेवाली है)	
तद्धित-प्रयोग-सूची	=)		

नवंबर तक आधे मूल्य में

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए० (इलाहाबाद), एम्० एस्-सी० टेक्० (विक्टोरिया, इँगलैंड), एफ़० सी० एस० (लंदन), ए० एम० एस्० टी० (मैनचेस्टर) इत्यादि (मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्डस ऑफ़् लंदन इंस्टिच्यूट), विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरकंद की गली, बनारस सिटी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिंदी-साहित्य को एक निराली देन

सुधा की युगांतरकारी योजना

की

समाजवाद-संख्या

संपादक

सार्वदेशिक साम्यवादी नेता, सूबा हिंद (संयुक्तप्रांतीय)

कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष. आल इंडिया वर्किंग कमेटी के सदस्य

आचार्य नरेंद्रदेवजी

आज ही मूल्य भेजकर ग्राहक बन जाइए ! मूल्य १)

जनवरी में निकलेगी

उसमें क्या होगा ?

४ तिरंगे चित्र
भाव और कला-पूर्ण, मनोहर

कार्टून
कुरीतियों के द्योतक, हास्योत्पादक, व्यंग्य-पूर्ण

कविताएँ
नई स्फूर्ति और जीवनदायिनी

लेख
धुरंधर विद्वानों के एक-से-एक बढ़कर, अनुपम और चमत्कृत

सुंदर, तिरंगे चित्र तथा सोने-चाँदी की छपाई देखकर तबियत फड़क उठेगी !

विज्ञापन-दाताओं को चूकना न चाहिए !!

मैनेजर सुधा—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

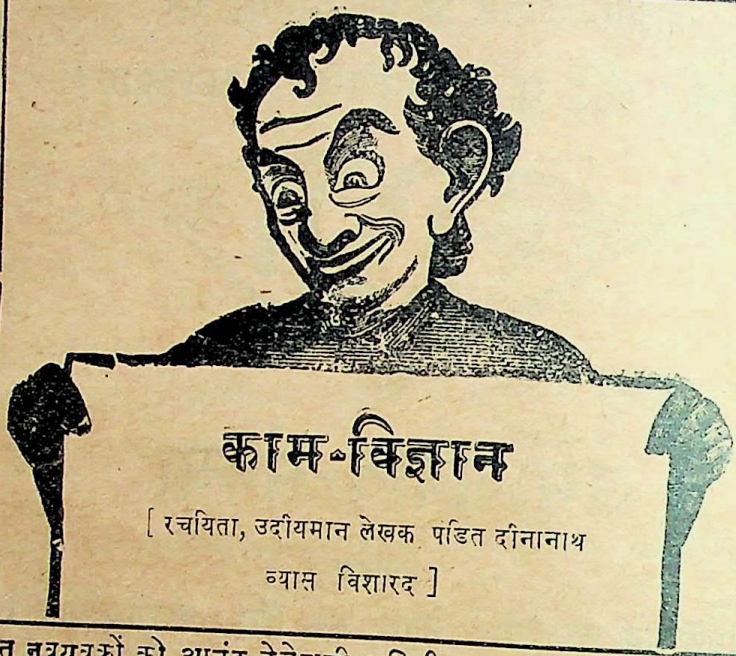

काम-विज्ञान

[रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद]

यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न आलिंगन, चुंबन या सहवास आदि पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को पढ़कर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

विषय-सूची

१. स्त्री का स्थान
२. विवाह क्यों और कब ?
३. वर्तमान परिणीत जीवन
४. वैवाहिक शिक्षण
५. वैषयिक शिक्षा
६. विषय का नैतिक धरातल
७. पति-निर्वाचन
८. जीवन-सहचारी
९. सच्चा वैवाहिक जीवन
१०. दुखी विवाह
११. सुखी विवाह
१२. दांपत्य प्रेम एवं ईर्ष्या
१३. स्त्री और सौंदर्य
१४. वैषयिक उत्कंठा
१५. नव-परिणीता वधू
१६. सहवास पर एक दृष्टि
१७. चुंबन
१८. आलिंगन
१९. सहवास
२०. कुछ महत्व-पूर्ण क्रियाएँ
२१. उपसंहार

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय राजर्षि राजा सर रामपालसिंह के० सी० आई० ई०

[श्रीपं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी]

स्वर्गीय राजर्षि राजा सर रामपालसिंह के० सी० आई० ई० के जीवन का इन कतिपय पंक्तियों में पूर्ण रूप से परिचय कराना लेखक की शक्ति से परे है। गोस्वामी तुलसीदास का यह दोहा सदैव लेखक के अंतस्तल में रहता है—

राम अनंत, अनंत गुन, अमित कथा-बिस्तार;
मुनि आचरज न मानिहहिं, जिनके बिमल बिचार।

हिंदू-जाति के यशस्वी नेता के गुणों का वर्णन, उसके किए हुए सार्वजनिक कार्यों की व्याख्या किसी मासिक पत्रिका के कतिपय कालमों में संभव नहीं। राजा सर रामपालसिंह का जीवन-चरित्र कई लेखकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से लिखा है। इन चरितों की प्रतियाँ स्वर्गीय राजर्षि के सुयोग्य पुत्र और उत्तराधिकारी राजा कृष्णपालसिंह (कुर्रीसुदौली, रायबरेली) को लिखने से प्राप्त हो सकती हैं। जिन्होंने स्वर्गीय राजर्षि का जीवन-चरित न पढ़ा हो, उन्हें उस दिवंगत आत्मा का संक्षिप्त परिचय भी यदि इस छोटे-से लेख द्वारा मिल जाय, तो लेखक का प्रयास सफल हो जायगा।

बचपन

राजर्षि राजा सर रामपालसिंह बैस-क्षत्रियों की नेहस्था-शाखा के मुखिया और कुर्रीसुदौली-राज्य (ज़िला रायबरेली) के अधिपति थे। राजा साहब का जन्म रहवाँ में, ठाकुर विभूतीसिंहजी की सौभाग्यवती धर्मपत्नी की कुक्षि में, श्रावण शुक्ल ८ बुधवार संवत् १९२४ (तदनुसार ७ अगस्त सन् १८६७ ईसवी) को, हुआ था। राजा साहब अपने पिता के तृतीय पुत्र थे। आपके सबसे बड़े भाई ठाकुर जगमोहनसिंह थे, जिनकी मृत्यु ११ जून सन् १९१८ ईसवी को हुई। उनसे छोटे, परंतु राजा साहब से बड़े आपके द्वितीय भ्राता रायबहादुर ठाकुर हनुमानसिंह एम्० एल्० सी० हैं, जो अपने उच्च और निर्भीक विचारों तथा स्पष्टवादिता एवं सचाई के लिये अत्यंत प्रसिद्ध हैं। इन प्रांतों में डिप्टी-कलेक्टर तथा डुमराँव-राज्य के मैनेजर रहकर आपने जो ख्याति अर्जित की है, वह सर्व-साधारण को भली भाँति विदित है। इस समय वह डुमराँव-राज्य के दीवान हैं।

ता० १ ऑक्टोबर सन १८६८ ई० को, जब हमारे चरितनायक बहुत ही छोटे थे, कुर्रीसुदौली के राजा हिंदपालसिंह द्वारा गोद लिए गए। गोद लिए जाने के एक वर्ष पश्चात् राजा हिंदपालसिंह की छोटी रानी ने गर्भ धारण किया। आशा हुई कि पुत्र की उत्पत्ति होगी। दत्तक

CC0, Gurukul Kangri Collection

पुत्र के लिये कठिन समस्या उपस्थित हो गई। फल यह हुआ कि दत्तक पुत्र को अपने घर (रहवाँ) वापस जाना पड़ा। परंतु रानी साहब के कन्या उत्पन्न हुई, और दत्तक पुत्र की आवश्यकता वैसी ही बनी-रही। इसी से राजा हिंदपालसिंह ने चाहा कि दत्तक पुत्र को वापस बुला लें, परंतु कुछ लोगों ने (कहना न होगा कि आजकल रियासतों में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है) रानियों को बहका दिया, और राजा हिंदपाल-सिंह अपने दत्तक पुत्र को सुदौली न बुला सके, तथापि वह अपनी की हुई कार्यवाही पर दृढ़ रहे। ईश्वरेच्छा से राजा हिंदपालसिंह ने २४ दिसंबर सन् १८७२ ईसवी को परलोक-यात्रा की। उनके मरने पर विपक्षियों को विरोध का खासा मौक़ा मिल गया। परंतु अंततोगत्वा, १२ अगस्त सन् १८७३ ईसवी को, हाकिम ज़िला के इजलास से, राजा रामपालसिंहजी कुर्रीसुदौली - राज्य के उत्तराधिकारी घोषित किए गए, और यथासमय उनके नाम इलाक़े का दाख़िल ख़ारिज हो गया।

श्रीरामपाल-साहित्य-निकेतन, कुर्रीसुदौली (रायबरेली) के व्यवस्थापक
पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी

शिक्षा

कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स में इलाक़ा होने के कारण आपकी शिक्षा का सुव्यवस्थित प्रबंध बहुत दिनों तक हो ही न सका। ७ साल की अवस्था तक तो आप एक मुंशी द्वारा हिंदी पढ़ते रहे। उस

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समय भी आपने अपनी तीव्र प्रतिभा के बल से रामायण के किष्किंधाकांड को कंठस्थ कर डाला। ता० १० अगस्त सन् १८७४ को, ७ वर्ष की अवस्था में, आप रायबरेली-हाईस्कूल में भर्ती हुए। [हर्ष का विषय है कि हाईस्कूल की जिस इमारत में बैठकर आपने अँगरेज़ी की प्रारंभिक शिक्षा पाई थी, उसी के विशद हाल में, सन् १९३५ ईसवी के ऑक्टोबर महीने की ३१ तारीख़ को, इन प्रांतों के तत्कालीन गृह-सदस्य आनरेबिल कुँवर सर महराजसिंह नाइट-सी० आई० ई० द्वारा, आपकी प्रस्तर-मूर्ति का उद्घाटन हुआ।] वहाँ आपको उर्दू की भी शिक्षा दी गई। उस समय रायबरेली का कोर्ट ऑफ़् वार्ड्स मिस्टर ब्लेनरहैस्ट के अधीन था, और नवाब मेहँदीहुसैन साहब रायबरेली-तहसील के तहसीलदार थे। यही नवाब मेहँदीहुसैन अपनी योग्यता और नीति-कुशलता के बल से हैदराबाद-राज्य के मंत्री-पद तक पहुँचे।

स्वर्गीय राजर्षि राजा सर रामपालसिंह के० सी० आई० ई०

इन्हीं दोनो महाशयों की सम्मति से, १४ नवंबर सन् १८७८ ईसवी को, शिक्षा-प्राप्ति के लिये आप मोहम्मडन-कॉलेज, अलीगढ़ भेजे गए। अलीगढ़-कॉलेज में आपने एफ़्० ए० तक शिक्षा पाई। एफ़्० ए० पास करते ही आप अपना कॉलेज-जीवन त्याग करने के लिये विवश हो गए। इसी समय आपका इलाक़ा कोर्ट ऑफ़् वार्ड्स ने छोड़ दिया, और आपको राज्य के प्रबंध का भार ग्रहण करना पड़ा। यद्यपि आपकी इच्छा शिक्षा जारी रखने की थी, और आपने यह दरख़्वास्त भी दी कि इलाक़े का प्रबंध कुछ समय के लिये और कोर्ट ऑफ़् वार्ड्स के ही अधीन रहे, जिससे आपकी शिक्षा-प्राप्ति में बाधा न पड़े, परंतु ऐसा न हो सका, और विवश होकर आपको पढ़ना छोड़ देना पड़ा। अलीगढ़-कॉलेज के प्रिंसिपल मिस्टर बेक ने आपको विना माँगे ही एक सर्टीफ़िकेट दिया था। उसका थोड़ा-सा अंश निम्नांकित है—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"There will be few complaints raised against young India, if men like Rampal Singh were leaders of the community"

"अर्थात् यदि समाज के नेता रामपालसिंह-सरीखे हों, तो तरुण भारत के ख़िलाफ़ शिकायतों की संख्या बहुत कम हो जाय।"

बात अक्षरशः सत्य हुई, और राजा सर रामपालसिंह के नेतृत्व में वास्तव में ऐसी शिकायतों के अवसर नहीं आए।

विवाह

आपका विवाह सन् १८८६ ई० में, धनावाँ-राज्य ज़िला गोंडा के ताल्लुक़ेदार ठाकुर जगमोहन-सिंहजी के बड़े भाई ठाकुर दिग्विजयसिंहजी की कन्या से, हुआ। आप जैसे सदाचारी और धर्म-परायण थे, वैसी ही धर्मनिष्ठा, पतिव्रता तथा सुशिक्षिता धर्मपत्नी भी आपको प्राप्त हुई। श्रीमती राजमाता रानी गणेशकुमारी ने अपने गुणों और कर्तव्य-परायणता से स्वर्गीय राजर्षि को सदैव संतुष्ट रक्खा। और, आज भी, राजर्षि के निधन के बाद, उनके सेवकों, आश्रितों तथा राज्य की रियाया का भली भाँति सम्मान करती और उनकी सहायता के लिये प्रस्तुत रहती हैं।

संतान

आपके कोई संतान न होने के कारण आपके मित्रों ने आपको दूसरा विवाह करने के लिये दबी ज़बान से सलाह दी, परंतु आपने साफ़ इनकार किया, और उन लोगों को ऐसे विचारों से दूर रहने का परामर्श दिया। दत्तक पुत्र द्वारा आप पुत्र के अभाव की पूर्ति कर सकते थे, और इसीलिये ३० मई सन् १९२४ को आपने चि० लाल कृष्णपालसिंह (अब राजा कृष्णपालसिंह) को गोद लेकर उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया, और उनकी शिक्षा का समुचित प्रबंध किया। राज कृष्णपालसिंह इस समय प्रयाग-विश्वविद्यालय में विद्याध्ययन कर रहे हैं। आशा है, इस साल वह बी० ए०-परीक्षा पास कर लेंगे।

राज्य-प्रबंध

आपने ६ अगस्त, सन् १८८८ ई० को कोर्ट ऑफ़् वार्ड्स से रियासत के प्रबंध का चार्ज लिया, और उस समय से अपने जीवन की अंतिम घड़ियों तक अपनी प्रजा को संतान-तुल्य मान-कर उसकी रक्षा की। आपने अपने राज्य के जो वसीयतनामे लिखे हैं, उनमें भी आप अपनी रियाया के रक्षा की बात नहीं भूले, और अपने उत्तराधिकारी को प्रजा-रक्षण भी उत्तराधिकार में सौंपा है। सुदौली में आपने कई विशाल भवन और कोठियाँ बनवाईं, एक बहुत बड़ा बाग़ लगवाया, और रायबरेली तथा लखनऊ में कोठियाँ ख़रीदीं तथा बनवाईं, एवं राज्य की प्रत्येक भाँति से उन्नति की। मैंने इन दिनों कई बड़े-बड़े ताल्लुक़ेदारों को यह कहते सुना है कि राजा सर रामपालसिंह के बराबर रियासत का प्रबंध करनेवाला दूसरा नहीं हुआ। राज्य को सभी राजसी बातों से सुसज्जित करते हुए भी आपने कई गाँव ख़रीदकर रियासत की वृद्धि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की है। राज्य की प्रजा को महाजनों के चंगुल से बचाने के लिये आपने रियासत में नाम-मात्र के सूद पर ग़ल्ला और रुपया देने की व्यवस्था की, और सरकारी सहकारी बैंकों की स्थापना करवाई। आपका प्रेम अपनी प्रजा के साथ इतना था कि घर-घर की दशा का आपको ज्ञान था। सर मालकम हेली, सर हैरी हेग आदि प्रांतीय गवर्नर तथा वाइसराय आदि अपने भाषणों द्वारा जमींदारों को अपनी रियाया के अधिक सन्निकट (in close touch) होने की जो शिक्षा दे रहे हैं, और जिस पर आजकल बड़ा ज़ोर दिया जा रहा है, वह शिक्षा आपने पैंफ़लेटों द्वारा आज से २० वर्ष पूर्व ही जमींदारों को दी थी, और उसकी ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया था। आप स्वयं तो इस 'अधिक सन्निकटता' की जीती-जागती प्रतिमूर्ति थे। आपकी रियाया में से हरएक व्यक्ति आपको अपने ख़ानदान और घर का कच्चा चिट्ठा सुनाकर आवश्यकता पड़ने पर आपकी प्राइवेट सलाह ले जाया करता था।

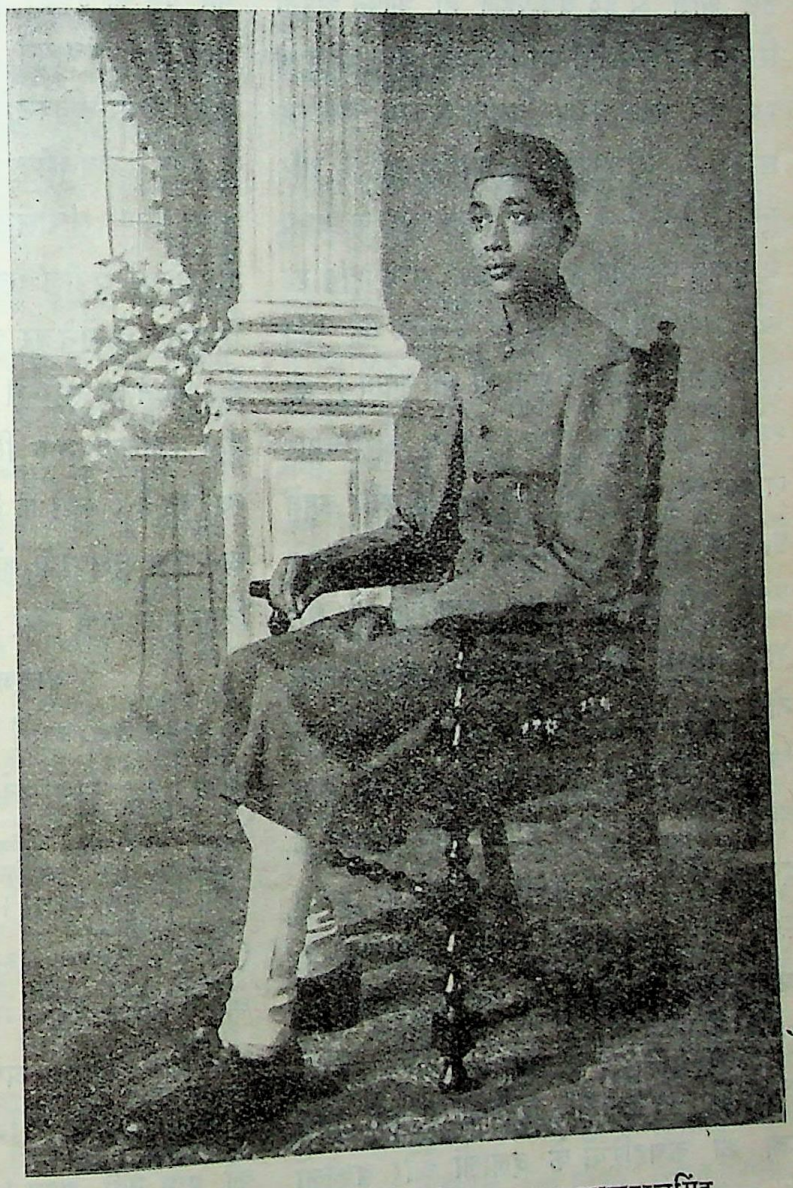

स्वर्गीय राजा सर रामपालसिंह के पुत्र राजा कृष्णपालसिंह

आप किसी की गुप्त बात सुनकर दूसरे से कभी नहीं कहते थे, इसी से आप हरएक प्रकार के लोगों के विश्वास-पात्र थे। उच्च वर्ण-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वालों के अत्याचारों से नीच वर्णवालों को बचाने के लिये आपने सदैव प्रयत्न किया। आज जिस अछूतोद्धार और दलितोद्धार की बड़ी चर्चा है, उसे आज से ३० वर्ष पहले ही आपने अपनी रियासत में चरितार्थ कर दिखाया था। आज से २० वर्ष पहले पुराने विचार के एक वयोवृद्ध सज्जन से, जो आपके राजपंडित भी थे, और सुदौली में रहते थे, आपके राज्य-प्रबंध के विषय में मुझसे बातचीत हुई। उन्होंने राज्य-प्रबंध की अधिकांश प्रशंसा करते हुए हँसकर यह कहा कि "राजा ने सूदों (शूद्रवर्ण के लोगों) को खोपड़ी पर चढ़ा दिया। अब तो कोरी-चमार खटिया पर बैठे चिलम पिया करते हैं, और कहते हैं, राजा रामपाल का राज है।" प्रकृति के सच्चे पुतले उस ब्राह्मण की इस सच्ची बात की मैंने अपने मन में बड़ी सराहना की। साथ-ही-साथ नीचे दर्जी हुई जातियों का उत्थान करने का विचार रखनेवाले के प्रति मेरी भक्ति के भाव बहुत कुछ बढ़ गए। होली और दशहरा के दरबार में हर साल अपनी रियाया को स्पीच द्वारा आप कुछ-न-कुछ उपदेश दिया करते थे, और हज़ारों की संख्या में आपकी रियाया दूर-दूर के गाँवों से उपदेश सुनने के लिये अपनी इच्छा से दौड़-दौड़कर सुदौली पहुँचती थी। प्रजा को कचहरियों के दलालों और वकीलों से बचाने के लिये उस समय, जब प्रांतीय गवर्नमेंट ने विलेज-पंचायत-ऐक्ट नहीं बनाया था, आपने पंचायत-प्रणाली का प्रचार किया, जिसमें रियासत मदद देती थी, और अब भी देती है। ज़िला के तत्कालीन डिप्टी-कमिश्नर साहब ने, असहयोग के ज़माने (१९२०-१९२१) में, इन पंचायतों को थोड़े समय के लिये बंद कर देने की इच्छा प्रकट की, परंतु आपने नहीं माना। ये पंचायतें गवर्नमेंट के तहसीलदारों और डिप्टी-कलेक्टरों द्वारा मनोनीत नहीं हुई हैं, और न गवर्नमेंट के अफ़सरों और अहलकारों द्वारा इनका संचालन ही होता है। इन पंचों के फ़ैसलों की अपील गवर्नमेंट में नहीं होती, बल्कि रियासत के मैनेजर और मालिक के यहाँ होती है। कहने का सारांश यह कि ये पंचायतें बिल्कुल प्रजासत्तात्मक विचारों की बुनियाद पर स्थापित हैं। प्रजा के लिये आपने सुदौली में एक अस्पताल खुलवाया, और बहुत-सा रुपया ओषधि-वितरण में ख़र्च किए जाने की व्यवस्था की।

सार्वजनिक कार्य

सार्वजनिक कार्यों में आपने सदैव बड़ा भाग लिया। कई रियासतों का प्रबंध अपने हाथ में लेकर उन्हें कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स से बचाया, और ऋण से मुक्त किया। ताल्लुक़ेदारों की अंजुमन (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) के आप चार बार प्रेसीडेंट चुने गए, अर्थात् ११-१२ वर्ष तक आप उसके अध्यक्ष रहे। यह सम्मान आपको छोड़कर किसी अन्य ताल्लुक़ेदार को प्राप्त नहीं हुआ। आपके सदुद्योग से कई बार अवध के ताल्लुक़ेदारों और आगरा-प्रांत के ज़मींदारों की संयुक्त कान्फ्रेंसें हुईं, और इस बात पर विचार किया गया कि ज़मींदारों को एकमत होकर देश के उत्थान के कामों में भाग लेना

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चाहिए। ज़मींदारों में Progressive Policy (प्रगतिशील नीति) को स्थान देनेवाले नेताओं में आप प्रमुख थे। आप बहुधा कहा करते थे कि जमाना बदल गया है, और ज़मींदारों को, यदि वे देश में अपना उच्च स्थान रखना चाहते हैं, तो, देशोन्नति के कार्यों में अग्रसर होकर भाग लेना चाहिए। रायबरेली के हिंदू-एजुकेशन-ट्रस्ट से आपको बड़ा प्रेम था। बीस वर्ष से अधिक समय तक आप ही लगातार उसके सभापति निर्वाचित हुए, और जीवन की अंतिम घड़ियों तक इस पद पर रहे। ट्रस्ट के चिरस्थायी होने की ओर आपका विशेष ध्यान था। इस ट्रस्ट के द्वारा रायबरेली में एक हिंदू-हाईस्कूल चलाया जा रहा है, जिसका नाम अब 'राजा सर रामपालसिंह हिंदू-हाईस्कूल' रक्खा गया है। इसी हाईस्कूल के विशद हॉल में, राजर्षि की पवित्र स्मृति चिरस्थायी करने के उद्देश्य से, उनके अनन्य भक्त इन पंक्तियों के लेखक ने आपकी प्रस्तर-मूर्ति की स्थापना की, जिसका उद्घाटन यू० पी०-गवर्नमेंट के तत्कालीन होम-मेंबर कुँवर सर महराजसिंह नाइट, सी०, आई० ई० द्वारा, ३१ ऑक्टोबर सन् १६३५ ईसवी को, राजर्षि की जीवितावस्था में ही, हुआ। सर राजा साहब के चित्र तो भिन्न-भिन्न संस्थाओं द्वारा, भिन्न - भिन्न अवसरों पर, बड़ी- बड़ी विशाल इमारतों में, लगाए गए हैं, परंतु उनकी प्रथम प्रस्तर-मूर्ति स्थापित करने का गौरव, सौभाग्य की बात है, उनकी जन्मभूमि के ज़िले (रायबरेली) को ही प्राप्त हुआ है। अब कई संस्थाओं ने राजर्षि की प्रस्तर-मूर्ति स्थापित करने का निश्चय किया है। इनमें ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन मुख्य है, और उसके द्वारा उपर्युक्त स्टेच्यू क़ैसरबाग़-बारादरी (लखनऊ) के हॉल में स्थापित होगा।

मृत्यु

शोक का विषय है, सर राजा साहब ने ३ एप्रिल सन् १६३७ ई० को, ६ बजकर १० मिनट पर, इस असार संसार का त्याग किया। इन प्रांतों के आकाश का रवि अस्त हो गया, हिंदुओं का सौभाग्य फूट गया, हिंदी का पृष्ठ-पोषक उठ गया, दीनों का सहारा चला गया। १८ एप्रिल सन् १६३७ को, क़ैसरबाग़ की बारादरी में, महाराजा बलरामपुर के अधिपतित्व में, इस प्रांत के नागरिकों की एक बड़ी सभा हुई, जिसमें प्रांत के बड़े-बड़े गण्य-मान्य, सभी विचारों के लोग उपस्थित थे। नवाब साहब छतारी, कुँवर सर महराजसिंह, श्रीमती राज-माता पार्वती कुँवरि (रामनगर धमेड़ी), राजाबहादुर कसमंडा, पं० रासविहारी तिवारी आदि ने अपने भाषणों द्वारा स्वर्गीय आत्मा पर श्रद्धांजलि चढ़ाई। सभी भाषणों का सारांश यही था कि राजा सर रामपालसिंह के दिवंगत होने से इस प्रांत और देश की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है। उसी सभा में सबने खड़े होकर निम्न-लिखित प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास किया—

"इस प्रांत के निवासी एक सार्वजनिक सभा में एकत्र होकर राजा सर रामपालसिंह के० सी० आई० ई० की मृत्यु पर

CCO, Gurukul Kangri Collection

हार्दिक दुःख प्रकट करते हैं। सर राजा साहब विगत अर्द्ध शताब्दी तक इन प्रांतों की तमाम अग्रगामी और लाभदायक कार्यवाहियों में प्रमुख रहे। उन्नतिशील ताल्लुक़ेदार होकर उन्होंने अपने किसानों के स्वत्वों की रक्षा करने और उन्हें आगे बढ़ाने में निरंतर उद्योग किया, तथा उनकी आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा-विषयक उन्नति के लिये अविराम उद्योग किया। अपनी प्रजा को अपना समझने के कारण वह आदर्श भूमिपति माने गए।

ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन ने उन्हें इन प्रांतों के भूस्वामियों का सर्वमान्य नेता मानकर निरंतर कई बार अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। पब्लिक और प्राइवेट, सभी विषयों में सर्व-साधारण जन उनकी सलाह और मदद के इच्छुक रहे। लखनऊ और इन प्रांतों के प्रत्येक उन्नतिशील कार्यों के साथ उनका संबंध रहा, और उनकी सम्मति सदैव सम्मान के साथ मानी जाती थी। यू० पी० लेजिस्लेटिव कौंसिल के (१६१० ईसवी से १६१६ तक), इंपीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल के (१६१६ से १६२० तक) और कौंसिल ऑफ़ स्टेट के (१६२१ से १६३४ तक) मेंबर रहकर आपने सदैव सर्व-साधारण के स्वत्वों की आवाज़ बुलंद की। उनके निधन से लखनऊ और इन प्रांतों की भारी क्षति हुई है।

यह सभा उनके सुपुत्र राजा कृष्णपालसिंह, उनकी विधवा रानी और उनके भाई रायबहादुर ठाकुर हनुमानसिंह तथा उनके अन्य कुटुंबियों के साथ उनके इस महान् दुःख में सहानुभूति प्रकट करती है।"

परमात्मा मृतात्मा को सद्गति और उनके आश्रितों को दुःख-सहन की शक्ति प्रदान करे। ईश्वर करे, उनके उत्तराधिकारी राजा कृष्णपाल-सिंह उत्तराधिकार में अपने स्वर्गीय पिता के सभी गुणों को प्राप्त करें।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥=)
२५ ,, ,, ,, ५=) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुकुल की बीबी

[श्रीयुत सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला']

(१)

बहुत दिनों की बात है। तब मैं लगातार साहित्य-समुद्र-मंथन कर रहा था। पर निकल रहा था केवल गरल। पान करनेवाले अकेले महादेव बाबू ('मतवाला'-संपादक)।—शीघ्र रत्न और रंभा के निकलने की आशा से अविराम मुझे मथते जाने की सलाह दे रहे थे। यद्यपि विष की ज्वाला महादेव बाबू की अपेक्षा मुझे ही अधिक जला रही थी, फिर भी मुझे एक आश्वासन था कि महादेव बाबू को मेरी शक्ति पर मुझसे भी अधिक विश्वास है। इसी पर वेदांत-विषयक नीरस एक सांप्रदायिक पत्र का संपादन-भार छोड़कर मनसा-वाचा-कर्मणा सरस कविता-कुमारी की उपासना में लगा। इस चिरंतन चिंतन का कुछ ही महीने में फल प्रत्यक्ष हुआ: साहित्य-सम्राट् गोस्वामी तुलसीदासजी की मदन-दहन-समयवाली दर्शन-सत्य उक्ति हेच मालूम दी, क्योंकि गोस्वामीजी ने, उस समय, दो ही दंड के लिये, कहा है—'अबला बिलोकहिं पुरुषमय अरु पुरुष सब अबलामयम्।' पर मैं घोर सुषुप्ति के समय को छोड़कर, बाक़ी स्वप्न और जाग्रत् के समस्त दंड, ब्रह्मांड को अबलामय देखता था।

इसी समय दरबान से मेरा नाम लेकर किसी ने पूछा—"हैं ?"

मैंने जैसे वीणा-झंकार सुनी। सारी देह पुलकित हो गई, जैसे प्रसन्न होकर पीयूषवर्षी कंठ से साक्षात् कविता-कुमारी ने पुकारा हो, बड़े अपनाव से मेरा नाम लेकर। एक साथ कालिदास, शेक्सपियर, बंकिमचंद्र और रवींद्रनाथ की नायिकाएँ दृष्टि के सामने उतर आईं। आप ही एक निश्चय बँध गया—यह वही हैं, जिन्हें कल कार्नवालिस-स्क्वायर पर देखा था—टहल रही थीं। मुझे देखकर पलकें झुका ली थीं। कैसी आँखें वे!—उनमें कितनी बातें!—मेरे दिल के साफ़ आईने में उनकी सच्ची तसवीर उतर आई थी, और मैं भी, वायु-वेग से उनकी बग़ल से निकलता हुआ, उन्हें समझा आया था कि मैं एक अत्यंत सुशील, सभ्य, शिक्षित और सच्चरित्र युवक हूँ। बाहर आकर, गेट पर, एक मोटर खड़ी देखी थी। ज़रूर वह उन्हीं की मोटर थी। उन्होंने ड्राइवर से मेरा पीछा करने के लिये कहा होगा। उससे पता मालूम कर, नाम जानकर, मिलने आई हैं। अवश्य यह बेथून-कॉलेज की छात्रा हैं। उसी के सामने मिली थीं। कविता से प्रेम होगा। मेरे छंद की स्वच्छंदता कुछ आई होगी इनकी समझ में, तभी बाक़ी समझने के लिये आई हैं।

उठकर जाना अपमानजनक जान पड़ा। वहीं से दरबान को ले आने की आज्ञा दी।

अपना नंगा बदन याद आया। ढकता, कोई कपड़ा न था। कल्पना में सजने के तरह-तरह के सूट याद आए, पर, वास्तव में, दो मैले कुर्ते थे। बड़ा ग़ुस्सा लगा, प्रकाशकों पर। कहा, नीच हैं, लेखकों की क़द्र नहीं करते। उठकर मुंशीजी के कमरे में गया, उनकी रेशमी चादर उठा लाया। क़ायदे से गले में डालकर देखा, फबती है या नहीं। ज़ीने से आहट नहीं मिल रही थी, देर तक कान लगाए बैठा रहा। बालों की याद आई—उकस न गए हों। जल्द-जल्द आईना उठाया। एक बार मुँह

CCO, Gurukul Kangri Collection

देखा, कई बार आँखें सामने रेल-रेलकर। फिर शीशा बिस्तरे के नीचे दबा दिया। शॉ की 'गेटिंग मैरेड' सामने करके रख दी। डिक्शनरी की सहायता से पढ़ रहा था, डिक्शनरी किताबों के अंदर छिपा दी। फिर तनकर गंभीर मुद्रा से बैठा।

आगंतुका को दूसरी मंज़िल पर आना था। ज़ीना गेट से दूर था।

फिर भी देर हो रही थी। उठकर कुछ क़दम बढ़कर देखा, मेरे बचपन के मित्र मिस्टर सुकुल आ रहे थे।

बड़ा बुरा लगा, यद्यपि कई साल बाद की मुलाक़ात थी। कृत्रिम हँसी से होंठ रँगकर उनका हाथ पकड़ा, और लाकर उन्हें बिस्तरे पर बैठाला।

बैठने के साथ ही सुकुल ने कहा—"श्रीमतीजी आई हुई हैं।"

मेरी रूखी ज़मीन पर आषाढ़ का पहला दौंगरा गिरा। प्रसन्न होकर कहा—"अकेली हैं, रास्ता नहीं जाना हुआ, तुम भी छोड़कर चले आए, बैठो तब तक, मैं लिवा लाऊँ—तुम लोग देवियों की इज़्ज़त करना नहीं जानते।"

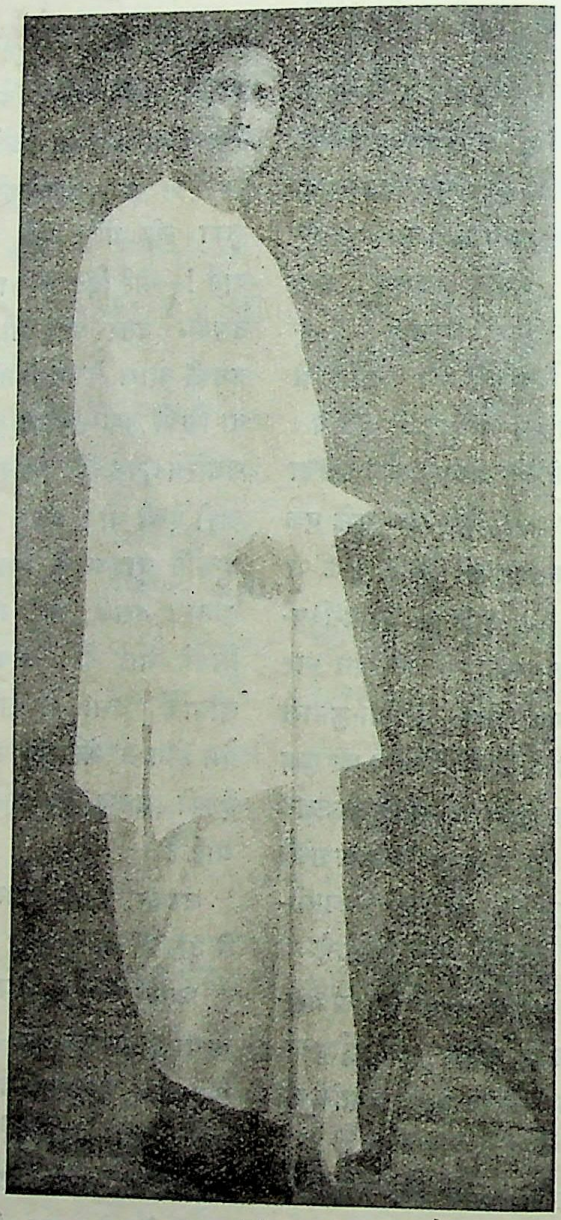

श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सुकुल मुस्किराए, कहा—"रास्ता न मालूम होने पर निकाल लेंगी—ग्रैज्युएट हैं, आँफ़िस में 'मतवाला' की प्रतियाँ ख़रीद रही हैं, तुम्हारी कुछ रचनाएँ पढ़कर—ख़ुश होकर।"

मैं चल न सका। गर्व को दबाकर बैठ गया। मन में सोचा, कवि की कल्पना झूठ नहीं होती। कहा भी है, 'जहाँ न जाय रवि, वहाँ जाय कवि।'

कुछ देर चुपचाप गंभीर बैठा रहा। फिर पूछा—"हिंदी काफ़ी अच्छी होगी इनकी?"

"हाँ," सुकुल ने विश्वास के स्वर से कहा—"ग्रैज्युएट हैं।"

बड़ी श्रद्धा हुई। ऐसी ग्रैज्युएट देवियों से देश का उद्धार हो सकता है, सोचा। निश्चय किया, अच्छी चीज़ का पुरस्कार समय देता है। ऐसी देवीजी के दर्शनों की उतावली बढ़ चली, पर सभ्यता के विचार से बैठा रहा, ध्यान में उनकी अदृष्ट मूर्ति को भिन्न-भिन्न प्रकार से देखता हुआ।

एक बार होश में आया, सुकुल को धन्यवाद दिया!

(२)

सुकुल का परिचय आवश्यक है। सुकुल मेरे

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्कूल के दोस्त हैं, साथ पढ़े । उन लड़कों में थे, जिनका यह सिद्धांत होता है कि सर कट जाय, चोटी न कटे। मेरी समझ में सर और चोटी की तुलना नहीं आई ; मैं सोचता था, पूँछ कट जाने पर जंतु जीता है, पर जंतु कट जाने पर पूँछ नहीं जीती ; पूँछ में फिर भी खाल है, ख़ून है, हाड़ और मांस है, पर चोटी सिर्फ़ बालों की है, बालों के साथ कोई देहात्मबोध नहीं। सुकुल-जैसे चोटी के एकांत उपासकों से चोटी की आध्यात्मिक व्याख्या कई बार सुनी थी, पर सग्रंथि बालों के बल्ब में आध्यात्मिक इलेक्ट्रिसिटी का प्रकाश न मुझे कभी देख पड़ा, न मेरी समझ में आया। फलतः सुकुल की और मेरी अलग-अलग टोलियाँ हुईं। उनकी टोली में वे हिंदू-लड़के थे, जो अपने को धर्म की रक्षा के लिये आया हुआ समझते थे, मेरी में वे लड़के, जो मित्र को धर्म से बड़ा मानते हैं, अतः हिंदू, मुसलमान, क्रिस्तान, सभी। हम लोगों के मैदान भी अलग-अलग थे। सुकुल का खेल अलग होता था, मेरा अलग। कभी-कभी मैं मित्रों के साथ सलाह करके सुकुल की हाकी देखने जाता था, और सहर्ष, सविस्मय, सप्रशंस, सक्लैप (Clap) और सनयनविस्तार देखता था। सुकुल की पार्टी-की-पार्टी की चोटियाँ, स्टिक बनी हुई, प्रतिपद-गति की ताल-ताल पर, सर-सर से हाकी खेलती हैं। वली मुहम्मद कहता था, जब ये लोग हाकी में नाचते हैं, बी चोटियाँ सर पर ठेका लगाती हैं। फ़िलिप कहता था, See, the Hunter of the East has caught the Hindoos' forehead in a noose of hair (देखो, पूरब के शिकारी ने हिंदुओं के सर को बालों के फंदे में फँसा लिया है)। इस तरह शिखा-विस्तार के साथ-साथ सुकुल का शिक्षा-विस्तार होता रहा। किसी से लड़ाई होने पर सुकुल चोटी की ग्रंथि खोलकर, बालों को पकड़कर ऊपर उठाते हुए कहते थे, मैं चाणक्य के वंश का हूँ।

धीरे-धीरे प्रवेशिका-परीक्षा के दिन आए। सुकुल की आँखें रक्त मुकुल हो रही थीं। एक लड़के ने कहा, सुकुल बहुत पढ़ता है ; रात को खूँटी से बँधी हुई एक रस्सी से चोटी बाँध देता है, ऊँघने लगता है, तो झटका लगता है, जगकर फिर पढ़ने लगता है। चोटी की एक उपयोगिता मेरी समझ में आई।

मैं कवि हो चला था। फलतः पढ़ने की आवश्यकता न थी। प्रकृति की शोभा देखता था। कभी-कभी लड़कों को समझाता भी था कि इतनी बड़ी किताब सामने पड़ी है, लड़के पास होने के लिये सर के बल हो रहे हैं, वे उद्भिद्-कोटि के हैं। लड़के अवाक् दृष्टि से मुझे देखते रहते थे, मेरी बात का लोहा मानते हुए।

पर मेरा भाव बहुत दिनों तक नहीं रहा। जब आठ-दस रोज़ इम्तहान के रह गए, एक दिन जैसे नाड़ी छूटने लगी। ख़याल आते ही कि फ़ेल हो जाऊँगा, प्रकृति में कहीं कविता न रह गई ; संसार के प्रिय-मुख विकृत हो गए ; पिताजी की पवित्र मूर्ति प्रेत की-जैसी भयंकर दिखी ; माताजी की स्नेह की वर्षा में अविराम बिजली की कड़क सुनाई देने लगी ; वंश-मर्यादा की रक्षा के लिये विवाह बचपन में हो गया था—नवीन प्रिया की अभिज्ञता की जगह वंकिम दृगों का वैमनस्य - हलाहल चित्त होने लगा ; पुरजनों के प्रगाढ़ परिचय के बदले प्राणों को पार कर जानेवाली अवज्ञा मिलने लगी। इस समय एक दिन देखा, सुकुल के शीर्ण मुख पर अध्यवसाय की प्रसन्नता झलक रही है।

किताब उठाने पर और भय होता था, रख देने पर दूने दबाव से फ़ेल हो जानेवाली चिंता। फलतः कल्पना में पृथ्वी-अंतरिक्ष पार करने लगा। कल्पना की वैसी उड़ान आज तक नहीं उड़ा। वह मसाला

CCO, Gurukul Kangri Collection

ही नहीं मिला। अंत में निश्चय किया, प्रवेशिका के द्वार तक जाऊँगा, धक्का न मारूँगा, सभ्य लड़के की तरह लौट आऊँगा। अस्तु, सबके साथ गया। और-और लड़कों ने पूरी शक्ति लड़ाई थी, इसलिये, परीक्षा-फल के निकलने से पहले, तरह-तरह से हिसाब लगाकर अपने-अपने नंबर निकालते थे, मैं निश्चित, इसलिये निश्चित था; मैं जानता था कि गणित की नीरस कापी को पद्माकर के चुहचुहाते कवित्तों से मैंने सरस कर दिया है; फलतः, परीक्षा-समुद्र-तट से लौटते वक्त, दूसरे तो रिक्त-हस्त लौटे, मैं दो मुट्ठी बालू लेता आया; घर में पिता, माता, पत्नी, परिजन, पुरजन सबके लिये आवश्यकतानुसार उसका उपयोग किया।

मेरे अविचल कंठ से यह सुनकर कि सूबे में पहला स्थान मेरा होगा, अगर ईमानदारी से पर्चे देखे गए, लोग विचलित हो उठे। पिताजी तो गर्व से गर्दन उठाए रहने लगे। पर ज्यों-ज्यों फल के दिन निकट होते आए, मेरी आत्मा की वल्लरी सूखती गई। वह जगह मैंने नहीं रक्खी थी कि पिताजी एक साल के लिये माफ़ कर देते। घर छोड़े बग़ैर निस्तार न देख पड़ा। एक दिन माताजी से मैंने कहा—"जगतपुर के ज़मींदारों ने बारात में चलने के लिये बुलाया है, और ऐसा कहा है, जैसे मेरे गए बग़ैर बारात की शोभा न बन पड़ती हो।" ज़मींदारों के आमंत्रण से माताजी छलक उठीं; पिताजी को पुकारकर कहा—"सुनते हो, तुम्हारे सपूत ज़मींदारों के यहाँ उठने-बैठने लगे हैं, बारात में चलने का न्योता है।" पिताजी प्रसन्नता को दबाकर बोले—"तो चला जाय; जो कहे, कपड़े बनवा दो और ख़र्चा दे दो।" एकांत में पत्नीजी मिलीं, बड़ी तत्परता से बोलीं—"वहाँ नाच देखकर भूल न जाइएगा।" "राम भजो", मैंने कहा—"क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।" "मैं इसका मतलब भी समझूँ?" वह एक क़दम आगे बढ़कर बोलीं, मन में निश्चय कर कि तुलना में मैंने उन्हें श्रेष्ठ बतलाया है। समझकर मैंने कहा—"कहाँ तुम्हारी बाँस-सी कोमल दुबली देह से सूरज का प्रकाश, कहाँ वह ज़हर की भरी मोती रंडी!" "चलो" कहकर वह गर्व-गुरु-गमन से काम को चल दीं।

समय पर कपड़े बने, और ख़र्चा भी मिला। पश्चात्, यथासमय, जगतपुर के ज़मींदारों की बारात के लिये रवाना होकर कुछ दूर से राह काटकर ऐन गाड़ी के वक्त, मैं स्टेशन पहुँचा। वहाँ से ससुराल का टिकट लिया। रास्ते-भर में ख़ासी मुहर्रमी सूरत बना ली। ससुरालवाले देखते ही दंग हो गए। ससुरजी, सासुजी और और लोग घेरकर कुशल पूछने लगे। मैंने उखड़ी आवाज़ में कहा—"गाँव में एक खेत के मामले में फ़ौजदारी हो गई है, दुश्मनों के कई घायल हुए हैं, इसलिये पिताजी की गिरफ़्तारी हो गई है, गिरफ़्तार होते वक्त उन्होंने कहा है, अपने ससुरजी से विवाह के क़रारवाले बाक़ी ३०० रुपए लेकर, दूसरे दिन ज़िले में आकर ज़मानत से छुड़ा लेना।" ससुरजी सन्न हो गए। सासुजी रोने लगीं, और और लोगों को काठ मार गया। ससुरजी के पास रुपए नहीं थे। पर सासुजी घबराईं कि ऐसे मौक़े पर मदद न की जायगी, तो त्रिपाठीजी क़ैद से छूटकर अपने लड़के की दूसरी शादी कर लेंगे। इस विचार से नथ, करधनी, पायज़ेब आदि कुछ गहने रेहन कर १५० रु० मुझे देती हुई बोलीं—'बच्चा, इससे ज़्यादा नहीं हो सका; हम तो तुम्हारे सदा के ऋणी हैं; फिर धीरे-धीरे पूरा कर देंगे, त्रिपाठीजी से हाथ जोड़कर हमारी प्रार्थना है।'

मैंने उन्हें सांत्वना दी कि बाक़ी रुपए लेने मैं उनके घर कभी न जाऊँगा। एक विपत्ति की बात थी, वह इतने से टल जायगी। सासुजी मारे आनंद के रोने लगीं। मैंने बड़ी भक्ति से उनके चरण छुए,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और यथासमय स्टेशन आकर कलकत्ते का टिकट कटाया।

यहाँ से मेरे नए जीवन की नींव पड़ी। अख़बारों में देखा, सुकुल प्रथम श्रेणी में पास हुआ है। चार साल बाद वह बी० ए० हुआ, एम्० ए० हुआ, मैं मालूम करता रहा, अच्छी जगह पाई, अब परीक्षा समाप्त कर परीक्षक है; मैं ज्यों-का-त्यों; एक बार धोखा खाकर बराबर धोखा खाता रहा; एक परीक्षा की तैयारी न करके कभी पास न हो सका।—कितनी परीक्षाएँ दीं।

तब से यह आज सुकुल से मेरी मुलाक़ात है। एक बार सारा इतिहास मेरे मस्तिष्क में चक्कर लगा गया। अब वह पिताजी नहीं, माताजी नहीं, पत्नी नहीं, केवल मैं हूँ, और परीक्षा-भूमि, सामने प्रश्नों की अगणित तरंग-माला!

(३)

मैं विचार में था। जब आँख खुली, साकार सुघरता मेरे सामने थी, अविचल दृष्टि से मुझे देखती हुई। अंजलि बाँधकर नमस्कार किया, ललित अँगरेज़ी से संबर्द्धित करते हुए—"Good morning, Poet of Vers Libre!" मैं उठा। नमस्कार कर सुकुल की नज़दीकवाली कुर्सी पर बैठने के लिये बड़े अदब से हाथ बढ़ाकर बताया।

वह खड़ी थीं। लहराती हुई मंद गति से चलीं। बैठकर मुझे देखकर मुस्किराती हुई बोलीं, "आप ख़ूब लिखते हैं!"

प्यासा मृग मरीचिका के सरोवर का व्यंग्य नहीं समझता। मुझे यह पहली तारीफ़ मिली थी। इच्छा हुई, जाऊँ, महादेव बाबू को भी बुला लाऊँ, कहूँ कि अब अमृत निकलने लगा है, चुल्लू बाँधकर चलिए। लेकिन अभी उतने अमृत से मुझे ही अघाव न हुआ था। बैठा हुआ एकांत भक्त की दृष्टि से देखता रहा।

रक्त अधरों के करारों से अमृत का निर्झर बहा, वह बोलीं—"सुकुल आपकी कविता नहीं समझते, मैं समझाती हूँ।"

सुकुल न रह सके। कहा—"ऐसा समझना वास्तव में कहीं नहीं देखा; असर भी क्या; चाहे कुछ न समझिए, पर सुनने से जी नहीं ऊबता। एम्० ए० क्लास तक किसी प्रोफ़ेसर के लेक्चर में यह असर न था।"

"हाँ-हाँ जनाब", देवीजी मेरमूल सीधा करके बोलीं—"यह एम्० ए० क्लास से आगे की पढ़ाई है; जब पास करके आए थे, हाथ-भर की चोटी थी; समझ में एक वैसी ही मेख।"

सुकुल की चोटी मेरी निगाह में सुकुल से अधिक परिचित थी। पर उनके आने पर मैंने उन्हें ही देखा था। चोटी सही-सलामत है या नहीं, मालूम करने के लिये निगाह उठाई कि देवीजी बोलीं—"अब तो चाँद है। सुकुल को सुकुल बनाते, सच कहती हूँ, मुझे बड़ी मिहनत उठानी पड़ी है।"

उन्हें धन्यवाद दूँ, हिम्मत बाँध रहा था कि बोलीं—"मैं स्वयं सुकुल की सहधर्मिणी नहीं।"

मेरा रंग उड़ गया।

मुझे देखकर, मेरे ज्ञान पर हँसकर जैसे बोलीं—"सुकुल स्वयं मेरे सहधर्मी हैं।"

मैं साहित्यिका को तअज्जुब की निगाह से देखने लगा।

इतने पर उनकी कृपा की दृष्टि मुझ पर पड़ी, बोलीं—"मैं आपको भी सहधर्मी बनाना चाहती हूँ।"

मैं चौंका; सोचा, "क्या यह द्रौपदीवाला धर्म है?"

देवीजी ने कलाईवाली घड़ी देखी और उठकर खड़ी हो गईं। भौंहें चढ़ाकर बोलीं—"बहुत देर हो गई, चलिए, आपको लेने आई थी, टैक्सी खड़ी है।" फिर बढ़कर, मेरे कंधे पर हाथ रखकर

CCO, Gurukul Kangri Collection

बड़े ही मधुर स्वर से पूछा—"आप मुर्ग़ी तो खाते हैं ?"

मैंने सुकुल को देखा। सुकुल सिर्फ़ मुस्किराए। समझकर मैंने कहा—"मेरा तो बहुत पहले से सिद्धांत है।"

वह चलीं। मैं भी उसी तरह चद्दर ओढ़े सुकुल के पीछे चला।

(४)

रास्ते-भर तरह-तरह के विचार लड़ते रहे। समाज में इतनी आज़ादी नहीं। स्त्री के लिये तो बिलकुल नहीं। मुर्ग़ी किसी तरह नहीं चल सकती। मैं खाता हूँ, छिपाकर। क्या यह स्त्री……, पर सुकुल तो सुकुल हैं।

सुकुल का घर आ गया। एक छोटा-सा दुमंज़िला मकान। इधर-उधर बंगालियों की बस्ती। जगह-जगह कूड़े के ढेर, ऊपर मछलियों के सेल्हर, बदबू आती हुई।

हम लोग उतरे। भीतर पैठते दाहने हाथ एक छोटा-सा बैठका। एक डेढ़ साल के बच्चे को दासी खेलाती हुई। श्रीमतीजी को देखकर बच्चा मा-मा कहता हुआ उतावला हो गया; दोनो हाथ फैलाकर मा के पास आने के लिये कूदकर दासी की गोद में लटक रहा। लेकर देवीजी प्यार करने लगीं। सुकुल ने दासी को मकान खोलने के लिये कुंजी दी।

एक सहृदय बात कहना चाहिए, सोचकर मैंने कहा—"भूखा है, शायद दूध पीना चाहता है।"

देवीजी ने पोड़शी के कटाक्ष से देखा। कहा—"दासी पिला देगी।"

मैंने पूछा—"क्या यह आपका बच्चा नहीं है ?"

हँसकर बोलीं—"मेरा ? है क्यों नहीं ? पर दूध मेरे नहीं होता।"

मैंने निश्चय किया, शिक्षित महिला हैं, यौवन है, अभी मातृभाव नहीं आया, इसीलिये दूध नहीं होता। मन में विधाता को धन्यवाद देता रहा।

"चलिए", वह बोलीं—"ऊपर चलें, एकांत में बातें होंगी, सुकुल बाज़ार जायँगे मुर्ग़ी लेने।"

बच्चे को फिर दासी के हवाले कर दिया। मैं उनके पीछे चला, यह सोचता हुआ कि एकांत में सहधर्मी बनाने का प्रस्ताव न हो। चित्त को क़ाबू में न कर सका, वह पुलकित होता रहा।

यह कुछ सजा हुआ शयन-कक्ष था। "बैठिए" कहकर वह स्टोव जलाने लगीं। मैं आईने में उनकी पंप करती तस्वीर देखता रहा।

(५)

चाय, पान और सिगरेट मेज़ पर लगाकर बैठीं। प्लेट पकड़कर मेरा प्याला बढ़ाती हुई मधुर कंठ से बोलीं—"शौक़ कीजिए।"

विनम्र भाव से मैंने दूसरी ओरवाली बाट पकड़ी, और आँखों में ही उन्हें धन्यवाद दिया।

निगाह नीची कर मुस्किराती हुई उन्होंने अपना प्याला होठों से लगाया। आधी चाय चुक जाने पर पूछा—"आप मेरे सहधर्मी हैं तो ?"

पेट में, उतनी ही चाय से, समंदर लहराने लगा। ऊपर तूफ़ान। श्याम तट पर भावों के कितने सजे सुदृढ़ मकान उड़ गए। ऐसी ख़ुशी हुई। कहा—"आप लेकिन सुकुल की……

"बीबी हैं ?—हाँ, हूँ।"

"फिर मैं……

कैसे बीबी बना सकता हूँ ?"

ऐसा धर्म-संकट जीवन में कभी नहीं पड़ा। मेरा सारा समंदर सूख गया, तूफ़ान न-जाने कहाँ उड़ गया, सिर्फ़ रेगिस्तान रह गया, जो इस ताप से और तपने लगा।

मुझे चुपचाप बैठा अनमेल दृष्टि से देखता हुआ देखकर वह बोलीं—"आप बुरा न मानें, मैंने देखा है, मर्दों में एक पैदायशी नासमझी है; वह ख़ास

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तौर से खुलती है जब औरतों से वे बातचीत करते हैं।"

मान लेने में ही बचत मालूम दी। मैंने कहा—"जी हाँ, औरतों के सामने उनकी समझ काम नहीं करती।"

"हाँ," वह बोलीं—"सुकुल को आदमी बनाती-बनाती मैं हार गई। 'बीबी' को ही लीजिए। बीबी तो मैं सुकुल की भी हो सकती हूँ, हूँ ही, आपकी भी हो सकती हूँ।"

मैं सूख तो गया, पर प्रसन्नता फिर आई। मैंने बिना कुछ सोचे एक उद्रेक में कह दिया—"हाँ।"

"आप नहीं समझे", वह बोलीं—"आप साहित्यिक हैं तो क्या, फिर भी सुकुल के दोस्त हैं। बीबी की बहुत व्यापकता है।"

"ज़रूर", मैंने कहा।

उन्होंने कान न दिया। कहती गईं—

"छोटी बहन, भतीजी, लड़की, भयहू (छोटे भाई की स्त्री) सबके लिये बीबी शब्द आता है। आपकी 'हाँ' किस अर्थ के लिये है?"

मैंने डूबकर, कुछ कुत्ले पानी पीकर, जैसे थाह पाई। प्रसन्न होने की चेष्टा करते हुए कहा—"बहन के अर्थ में।"

उन्होंने कहा,—"देखिए, मर्द की बात एक होती है।"

इज़्ज़त बचाने के लिये और ज़ोर देकर मैंने कहा—"हाँ, मुकर जाऊँ, तो मर्द नहीं।"

लजाकर उन्होंने एक बार अपनी आँख बचाई। सँभलकर बोलीं—"हम बड़ी विपत्ति में हैं। साल-भर से छिपे फिरते हैं। मैं बचने के लिये सुकुल से उनके मित्रों का परिचय पूछती रही। सिर्फ़ आपका परिचय मुझे त्राण देनेवाला मालूम दिया। पर पता मालूम न था। साल-भर से लगा रहे हैं।"

मैंने चितवन देखी। आँखें सजल हो आईं। कहा—"मैं तैयार हूँ।"

वह उठ खड़ी हुईं। सामने आ, हाथ पकड़कर कहा—"भाईजी, मेरी रक्षा कीजिए। सुकुल का घर छुटा हुआ है। जिस तरह हो, मुझे अपने कुल में मिलाकर, सुकुल से ब्याह साबित कीजिए।"

उसकी बड़ी-बड़ी आँखें; दो बूँद आँसू कपोलों से बहकर मेरी जाँघ पर टपके। मैं खड़ा हो गया, और अपनी चादर से उसके आँसू पोंछते हुए कहा—"तुम मेरे चाचाजी की लड़की, मेरी छोटी बहन हुईं। मेरे चाचा सस्त्रीक बंगाल में आकर गुज़रे हैं। उनके एक कन्या भी थी, देश से आई थी।"

आनंद से भरकर, वह मेरा हाथ लेकर खेलने लगी। इसी समय सुकुल आए। पूछा—"राम-कहानी हो गई?"

मैंने कहा—"अभी नहीं, कहानी से पहले भूमिका समाप्त हुई है।"

"सुकुल", भरकर उसने कहा,—"कोलंबस को किनारा दिखा।"

सुकुल बड़े प्रसन्न पद-क्षेप से मेरे पास आए, पूछा—"चाय कुछ बची है?"

"सब-की-सब", मैंने कहा—"पर ठंडी हो गई होगी, गरम करा लो।" बीबी की तरफ़ मुड़कर पूछा—"लेकिन तुम्हारा नाम अभी नहीं मालूम कर पाया।"

"जहाँ से आई हूँ," उसने कहा—"वहाँ की पुखराज हूँ, यहाँ की पुष्करकुमारी।"

"कुँवर" मैंने कहा—"जल्दी करो, तुम्हारी मुर्ग़ी स्वादिष्ठ होगी, पर कहानी और स्वाददार हो। दोनों के लिये उतावली है।"

कुँवर चाय बनाने लगी। पंप करते समय सर की साड़ी सरक गई। फिर नहीं सँभाला। सुकुल की आँखें लोभी भौंरे की तरह उसके मुँह से लगी रहीं।

(६)

मैंने वहीं स्नान किया। सुकुल की धोती पहनी! भोजन किया—बिलकुल मुसलमानी खाना। वैसी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ही चपातियाँ, वैसा ही कोरमा। वही चटनी, वही मुरब्बा, वही मिठाई। खाते हुए पूछा—"कुँवर, हिंदू-भोजन भी पका लेती हो या नहीं ?" उसने 'हाँ' कहकर सुकुल की तरफ़ इशारा किया कि इनसे सीखा है।

"किताब छोड़कर खाना पकाते बड़ी परेशानी होती होगी तुम्हें।" मैंने कहा।

"सुकुल के लिये मैं सब कुछ सह सकती हूँ।" उसने जवाब दिया।

भोजन समाप्त हुआ। हम लोग उसी कमरे में गए। सुकुल बच्चे को लिए हुए।

पान खाते-खाते मैंने कहा—"अब देर न करो कुँवर।"

कुँवर एक बार नीचे गई। दासी से कुछ कहकर दुमंज़िले का दरवाज़ा बंद कर आई, और अपनी कुर्सी पर बैठी।

मैंने कहा—"अब शुभस्य शीघ्रम् होना चाहिए।"

कुँवर बोली—"मेरी मा हिंदू हैं। लखनऊ के वाजपेयी खालेवाले घर की। मैं उन्हीं से हूँ।"

"तब तो तुम कुलीन हो"—मैंने कहा, "तुम्हारे पिता का नाम ?"

"उसका नाम कौन ले," कुँवर बोली—"आपके चाचाजी मेरे पिता हैं।"

कुँवर भर गई। रुककर सँभलने लगी। बोली—"वाजपेयीजी को एक ब्याह से संतोष नहीं हुआ। दूसरी शादी की। तब मैं पेट में थी। बेहटा मेरा ननिहाल है। सिर्फ़ नानी थीं। ईश्वर की इच्छा, उनका देहांत हो गया। तब मेरी मा ने ससुर को कई चिट्ठियाँ लिखवाईं। पर उन्होंने ख़बर न ली। घर में किसी तरह गुज़र न हुई, तब, लोटा-थाली बेचकर, उस ख़र्च से मा लखनऊ गईं। घर में पर रखते, ससुर और पति ने तेवर बदले। पति ने कहा, इसके हमल है, हमारा नहीं। ससुर ने कहा, बदचलन है, धरम बिगाड़ने आई है; भली होती, तो चली न आती—वहीं के लोग परवरिश करते। पड़ोसियों की भी राय थी। सौत ने धरती उठा ली। एक रात को पति ने बाँह पकड़कर निकाल दिया। मा रास्तों पर मारी-मारी फिरीं। सुबह जिस आदमी ने उनके आँसू देखे, वह मुसलमान था। उस वक्त मा के दिल में हिंदू, धर्म और भगवान् के लिये कितनी जगह थी, आप सोच सकते हैं। निस्सहाय, अंतःसत्त्वा, अबला केवल आश्रय चाहती थी, सहानुभूति-पूर्ण, मनुष्यता-युक्त; वह एक मुसलमान से प्राप्त हुआ। मुसलमान की बातों में विधर्मीपन न था। एक स्त्री के प्रति पुरुष का जैसा चाहिए, वैसा आश्वासन, विश्वास और पौरुष था। मा आकृष्ट हुईं। वह मा को ले चला। आगे वह, पीछे मा। मा फूल के कड़े-छड़े, धोती पहने हुए, मुसलमान के पीछे चलती साफ़ हिंदू-महिला मालूम दे रही थीं। ऐसे वक्त एक आर्यसमाजी की निगाह पड़ी। उसने पीछा किया। मुसलमान बढ़ता हुआ घर पहुँचा। पर उसे हिंदू का पीछा करना मालूम हो गया था, इसलिये डरा। घर देखकर वह आर्यसमाजी पुलिस को ख़बर देने गया। इधर मुसलमान ने भी पेशबंदी शुरू की। एक दूसरे मुसलमान दोस्त के ताँगे में परदा लगाकर मा को दूसरे मुसलमान के घर कर आया। पुलिस की तहक़ीक़ात जारी हुई, साथ-साथ मा का एक मुसलमान के घर से दूसरे मुसलमान के घर होना। अंत में वह एक ऐसे घर पहुँचीं, जो एक इंस्पेक्टर, पुलिस, का था। इंस्पेक्टर साहब छुट्टी लेकर उस वक्त रह रहे थे। नौकरी पर चलते समय वह मा को भी साथ लेते गए। अकेले थे। मा सुंदरी थीं।"

इच्छा हुई, इंस्पेक्टर साहब का नाम पूछूँ, पर सोचा, वाजपेयीजी के नाम के साथ बाद को मालूम कर लूँगा।

कुँवर कहती गई—"इस तरह इंस्पेक्टर साहब ने एक अबला की रक्षा की। मैं पैदा हुई। मेरे कई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

भाई-बहन और हुए। मैं उर्दू पढ़ती थी; मुसलमान पिताजी का लखनऊ तबादला होने पर, अँगरेज़ी पढ़ने लगी। नाइंथ क्लास में थी, मा से पिताजी की बातचीत हुई, मेरी शादी के बारे में। मैं कमरे के बाहर खड़ी थी। उन्हें मालूम न था। उस रोज़ मुझे कुछ आभास मिला। पहले मा को नाराज़ होने पर जिन शब्दों में अभिहित करते थे, उनकी सचाई समझी। मेरी आँख खुली। बड़ी लज्जा लगी, हिंदू-मुसलमान इन दोनों शब्दों पर किसी की तरफ़दारी के लिये। एक रोज़ मा को रोकर मैंने पकड़ा। जो कुछ सुना और समझा था, कहा, और बाक़ी ब्यौरा समझाने के लिये विनय की। एकांत में मा ने अपना सारा हाल सुनाया, और ईश्वर का स्मरण कर, उनकी इच्छा कहकर ख़ामोश हो गईं। मुझे जातीय गर्व से घृणा हो गई। मैंने कहा, मैं शादी नहीं करूँगी; जी भर पढ़ना चाहती हूँ। बस, यहीं से मेरे विचार बदले। मैट्रीक्युलेशन पढ़कर मैं आई० टी० कॉलेज गई, और दूसरे विषयों के साथ हिंदी ली। एफ़० ए० पास हो बी० ए० में गई। आख़िरी साल सुकुल को देखा।"

"सुकुल को देखा" कहने के साथ कुँवर का जैसे नेह का स्रोत फूट पड़ा। कुछ रस-पान कर मैंने कहा—"कुँवर, यहाँ अच्छी तरह वर्णन करो; हिंदी के कहानी-लेखक और पाठक बहुत प्यासे हैं।"

कुँवर जमकर सीधी हुई। बोली—"सुकुल तब क्रिश्चियन कॉलेज में प्रोफ़ेसर थे। प्रिंसिपल को आश्वासन दिया था कि ईसाई-धर्म को वह संसार का सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते हैं, लेकिन बूढ़े पिताजी का लिहाज़ है, और वह दो-चार साल में चलते हैं, बाद को सुकुल क्रिश्चियन के अलावा दूसरा अस्तित्व नहीं रखते। कुछ निबंध भी प्रमाण के तौर पर लिखे। दूरदर्शी प्रिंसिपल ने तब सिफ़ारिश की, और इन्हें जगह मिली। मेरे मकान के सामने ठहरे थे। बड़ी सँभाल से हैट लगाते थे कि चोटी कहीं से न देख पड़े, पगड़ी के भीतर विभीषण के तिलक की तरह। कभी मिसेज़ सुकुल आती थीं, कभी अकेले ठोंकते खाते थे। मुझे इतना जानते थे कि इस मकान से कोई कॉलेज जाती है। एक दिन की बात। मैं छत पर थी। शाम हो रही थी। सुकुल बराम्दे में बैठे थे। मौसम बरसात का। बादल मदन की वैजयंती बने हुए। ठंडी हवा चल रही थी। पेड़-पौधे लोट-पोट। क्या कहूँ, मैं भी ऐसी हवा से लहराई। बहुत पहले, कुछ ईंटें बाहर देखने के लिये जमा कर रक्खी थीं। उन पर खड़ी हो गई। अवरोध के पार सर उठाकर देखा। सुकुल बैठे थे। कई बार पहले भी देख चुकी थी। सुकुल ने न देखा था। अब के निगाह एक हो ही गई। सुकुल की जनरल की मूछें—बाघ का मुँह—कालिदास की आँखें!—माफ़ कीजिएगा, मैं बकरे को कालिदास कहती हूँ।—टकटकी बँध गई। मुझे किसी ने जैसे गुदगुदा दिया। इतनी बिजली भर गई कि मैंने फ़ौरन् सुकुल को फ़ौजी सलामी दी। होश में आ, लजाकर बैठ गई। फिर कई दिन आँखें नहीं मिलाईं, छिप-छिपकर देखती रही। सुकुल दूसरों की नज़र बचाते कितने बेचैन थे! मुझे लुत्फ़ आने लगा, शिकार की तड़फड़ाहट से शिकारी को जो ख़ुशी होती है। बराम्दे में सुबह-शाम बैठना सुकुल का काम हो गया। कहीं न जाते थे। इधर-उधर देखकर निगाह उसी जगह जमा देते थे। जगह ख़ाली देखकर आह भरते थे। मैं दीवार के छेद से देखती थी। एक रोज़ फिर उसी तरह दर्शन देने की इच्छा हुई। ईंटें बिखेर देती थी। इकट्ठी कीं। खड़ी हुई। सूरज मुँह के सामने था। सुकुल ने देखते ही हाथ जोड़कर प्रणाम किया। मैं काग़ज़ का एक टुकड़ा ले गई थी। उसकी गोली बनाकर उसे नीचे डाल दिया। उस पर सुकुल की जैसी निगाह थी, वैसी नादिरशाह की कोहनूर पर न रही होगी, न अँगरेज़ों की अवध पर।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मारे आकर्षण के मुझसे न रहा गया। पूछा—"क्या लिखा था?"

"कुछ नहीं," कुँवर बोली—"वह कोहनूर की ही तरह सफ़ेद था। सुकुल ने उसे उठाकर बड़े चाव से खोला। और, यद्यपि उसमें कुछ न लिखा था, फिर भी, कुछ लिखा होता, तो सुकुल को इतनी सरसता न मिली होती—उस शून्य पृष्ठ पर विश्व की समस्त प्रेमिकाओं की कविता लिखी थी। सुकुल उसे लेकर बराम्दे में आए, और मुझे दिखाकर हृदय से लगा लिया। मैं मुस्किराकर बिदा हुई। इस ख़ाली के बाद भरी दागने लगी। रोज़ एक गोली चलाती थी, बिहारी, देव, पद्माकर, मतिराम आदि के दोहे और कवित्त लिख-लिखकर। अंत में सुकुल का क़िला तोड़ लिया। एक दिन एक गोली में दाग कर कि मैं तुम्हारे घर आऊँगी—रात-भर दरवाज़ा खुला रखना, गई, और अपने क़िले पर अधिकार कर समझा दिया कि इम्तहान के बाद स्थायी रूप से यहाँ आकर निवास करूँगी। सुकुल अपनी भूलों का बयान करते रहे—कब क्या करते, क्या हो गया। पर मैंने कोई भूल की ही नहीं थी। मिसेज़ सुकुल से शादी करके सुकुल के पिताजी ने और सुकुल ने, मुमकिन है, भूल की हो। मैंने यह ज़रूर सोचा कि मेरे कारण सुकुल की मुसीबतें बढ़ सकती हैं, पर साथ ही यह ख़याल आया कि कोई पहलू उठाइए, सामने मुसीबत है—अब क़दम पीछे नहीं पड़ सकता। जहाँ सुकुल हर चाल पर चूकते थे, वहाँ मैंने पहले ही मात दी—इम्तहान में बैठी, और सुकुल के घर आकर मालूम किया, पास हुई, और रायबहादुर बन्नूलाल-हिंदी-मेडल पाया। और फिर डिगरी लेने नहीं गई। इम्तहान के बाद, जब एक रात को हमेशा के लिये सुकुल के घर आकर बैठी, बड़ा तहलका मचा, कुछ ढूँढ़-तलाश के बाद जब मैं नहीं मिली। निश्चय हुआ कि मेरी मर्ज़ी से किसी ने मुझे भगाया। सुकुल पर शक हुआ। थाने में रिपोर्ट हुई। सुकुल मुझे कहाँ रक्खें—घबराए। दीवार से बनी एक आलमारी थी। आलमारी के नीचे एक तहख़ाना छोटा-सा था। मैं अब जैसी हूँ, तब इससे और दुबली थी।—जगन्नाथजी में, कुछ महीने हुए, कलियुग की मूर्ति देखी—कंधे पर बीवी को बैठाले मियाँ लड़के की उँगली पकड़े बाप को धतकार रहे हैं, मेरी इच्छा हुई, सुकुल कलियुग बनें। सुकुल को कई दफ़े कलियुग बना चुकी हूँ। धतकारने के लिये, कहती थी, सामने समझो हिंदू-पनरूपी तुम्हारा बाप है। सुकुल धतकारते थे। ग़रज़ यह कि उस तहख़ाने में मैं आसानी से आ सकती थी। सुकुल से मैंने कहा, ऊपर कुछ कपड़े डाल दो, साँस लेने की जगह मैं कर लूँगी। आलमारी के ऊपरवाले ताक़ों में चीज़ें पहले से रक्खी थीं। बाहर से आलमारी बंद कराके ताला लगवा देती थी। इस तरह दो-दो, तीन-तीन, चार-चार घंटे दम साधने लगी। जब सुकुल कॉलेज जाते थे, तब बाहर से ताला बंद कर लेते थे। जब लौटते थे, तब बाहर दरवाज़ा बंद कर लेते थे। कोई पुकारता था, तो मैं तहख़ाने में जाती थी, आलमारी का ताला बंद करके सुकुल बाहर निकलते थे। तीसरे दिन सही-सही पुलिस आ गई। सुकुल उसी तरह बाहर निकले। प्रभातकाल था, बल्कि उषः-काल। दारोग़ा मुसलमान। डटकर तलाशी लेने लगा। आलमारी के पास आकर खड़ा हुआ। मैं समझ गई, यह साँस की आहट ले रहा है। मैं मुँह से साँस लेने लगी। फिर आलमारी नहीं खोलवाई। दराज़ों से देख-दाखकर चला गया। सुकुल उसे बिदा कर उसी तरह भीतर आए। मुझे निकाला। मैं खिलखिलाकर हँसी। फिर सुकुल से जल्द मकान बदलने के लिये कहा। तलाशी की ख़बर चारो तरफ़ फैली। सुकुल के गाँव भी पहुँची। अब तक सुकुल ने भी तलाशी का हाल लिखा, पर मकान बदलकर। यह मकान बड़ा था। बग़ल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

बग़ल दो आँगन थे। मेरा ख़याल रखकर लिया गया था। चिट्ठी पा सुकुल के भाई मिसेज़ सुकुल को लेकर आए। हम पहले से सतर्क थे। बड़े मकान में सुकुल रहने लगे। मैं अपना गुप्त जीवन व्यतीत करती रही। मुझे कोई कष्ट न था; पर सुकुल की ड्यूटी बढ़ गई थी। सौभाग्य कहूँ या दुर्भाग्य, ३-४ महीने रहकर मिसेज़ सुकुल बीमार पड़ीं, और ७-८ दिन के बुख़ार में उनका इंतक़ाल हो गया। सुकुल के भाई चले गए थे। इन्होंने फिर किसी को नहीं बुलाया। किसी तरह मित्रों की मदद से उनका अंतिम संस्कार कर दिया। सुकुल से पूछकर मैं तुम्हारा हाल मालूम कर चुकी थी; जानती थी, मुझे ही अपनी नाव खेनी है; पर तुम्हारा पता मालूम न कर सकी, इतनी ही चिंता रह-रहकर होती थी। मिसेज़ सुकुल के रहते मैंने मिस्टर सुकुल को तुम्हारे गाँव भेजा था। तुम्हीं-जैसे मेरे सहारा हो सकते थे। मिसेज़ सुकुल के रहने पर मुझे कोई अड़चन न थी, न अब, न रहने पर, कोई सुविधा है। यह बच्चा मिसेज़ सुकुल का है। बड़ी कठिनाइयों से तुम्हारा पता लगा था। मिसेज़ सुकुल के गुज़रने पर हम लोगों को विवश होकर लापता होना पड़ा। पास इतना धन था कि साल-डेढ़ साल का ख़र्च चल जाय। इतने दिनों बाद हमारी साधना सफल हुई।"

मैंने कुँवर को धन्यवाद दिया। कलकत्ते में ही उसका ब्याह कर दूँगा, यह आश्वासन देकर उससे बिदा ली।

(७)

सेठजी बैठे थे। एकांत में ले जाकर यह हाल उनसे कहा। वह सहमत हो गए। कहा, मगर मुंशी-जी से न कहिएगा, उनके पेट में बात नहीं रहती।

शुभ मुहूर्त में विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। एक दिन आमंत्रित हिंदी-भाषी विभिन्न प्रांतों के साहित्यिकों की उपस्थिति में सुकुल के साथ श्रीला पुष्करकुमारी का ब्याह कर दिया।

प्रीति-भोज में अनेक कनवजिए सम्मिलित थे। देश में यह शुभ संदेश सुकुल के पहुँचने से पहले पहुँचा। कुँवर अब भी है।

कपड़ों की सिलाई तथा कटाई पर अनुपम पुस्तक

दोस्त दर्ज़ियाँ

प्रथम भाग – क़मीज़, पाजामा, सलवार, जंपर, फ्रॉक, पेटीकोट, दराज़, बॉडी, नेकर, कंबीनेशन इत्यादि; ४०० पृष्ठ; मूल्य १॥)

दूसरा भाग—कोट, ओवर कोट, बॉडी कोट, अचकन, पतलून, वास्कट, प्लसफ़ोरस, नेकर और बिर्जिस इत्यादि; मूल्य १॥)

डाक-व्यय हर अवस्था में अलग। प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता से या हमसे मँगा लें।

यू० पी० के मुख्य एजेंट—

भार्गव-पुस्तकालय, गायघाट, बनारस

दर्ज़ी घर, रंगमहल बाज़ार, लाहौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पपीहा

[कुमारी स्नेहलता]

'पी कहाँ' कहाँ है रटता प्रिय! आज पपीहा वन में?
या मेरी ही अंतर्ध्वनि गुंजित होती है मन में?
जो जिसके जी में जमता, वह उसका प्रिय बन जाता;
स्वाती की बूँदों में ही प्रिय-प्रेम पपीहा पाता।
चातक तक रटता 'पी' की जब बोली मधु में घोली;
फिर मैं भी क्यों न रटूँ प्रिय, 'पी कहाँ-कहाँ' की बोली?
चातक की रटन यही है, बादल गरजे या बरसे;
मेरी भी लगन यही है, जग हरषे चाहे करसे।
क्या फिर जीवन-पावस में प्रियतम-वसंत आएगा?
यह तापित तन-मन मेरा कब सरस स्नेह पाएगा?
प्रति वर्षा-ऋतु में चातक सुखकर स्वाती-जल पाते;
हो रही दृगों की वर्षा, मेरे 'पी' किंतु न आते।

शारीरिक संपत्ति के न रहने पर आर्थिक संपत्ति नहीं प्राप्त हो सकती।
अगर किसी भी प्रकार के रोग से निर्बलता आई हुई हो, तो अवश्य
"आतंक-निग्रह गोलियों" का सेवन करें
क़ीमत—३२ गोलियों की एक डिब्बी का १) एक रुपया
विशेष हाल जानने के लिये सूचीपत्र देखें।
आतंक-निग्रह औषधालय, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड को०, चौक

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

वर्ण-व्यवस्था या मरण-व्यवस्था ?

[श्रीयुत संतराम बी० ए०]

मई की 'सुधा' में मैंने 'हिंदू-संगठन के कुछ उपाय' शीर्षक लेख में बताया था कि हिंदू-संगठन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा वर्ण-व्यवस्था है। जब तक इसका विध्वंस नहीं होता, हिंदुओं के लिये किसी प्रकार की उन्नति करना, वरन् आत्मसम्मान-पूर्वक जीना भी बहुत कठिन है। इस पर दर्शन-केसरी प्रोफ़ेसर धर्मदेवजी शास्त्री श्रावण की 'सुधा' में लिखते हैं—

"वर्ण-व्यवस्था हिंदू-सभ्यता की एक बड़ी देन है; इसके लोप का अर्थ है हिंदू-धर्म के सर्वनाश का उपक्रम। शास्त्र-विरोध और वर्ण-व्यवस्था का विरोध हिंदू-धर्म के मूल पर कुठाराघात है। वर्ण-धर्म और जाति-पाँति को एक समझना भ्रम है। वर्ण-धर्म सत्य है, जाति-पाँति सर्वथा कल्पित। हिंदुओं के मूल ग्रंथ वेद में भी, जो उनका ईश्वरीय ज्ञान है, वर्ण-धर्म का प्रतिपादन है। वस्तुतः सामाजिक जीवन को चार ही भागों में मुख्यतया बाँटा जा सकता है—बुद्धि-जीवी, शस्त्र-जीवी, व्यवसाय-जीवी और श्रम-जीवी।"

श्रीधर्मदेवजी दर्शन-केसरी हैं, और उनका "अब तक का सारा जीवन शास्त्रों के अध्ययनाध्यापन में ही बीता है।" संभव है, दार्शनिक दृष्टि से वर्ण-व्यवस्था और जाति-पाँति दो भिन्न-भिन्न चीज़ें हों। परंतु मैं तो संसारी मनुष्य हूँ। दर्शन-शास्त्र का मुझे कोई विशेष ज्ञान नहीं। मैं तो लोक में यही देखता हूँ कि वर्ण-व्यवस्था और जाति-पाँति, दोनो का काम एक है, दोनो ब्याह-शादी और खान-पान पर ही प्रतिबंध लगाती हैं। जाति-पाँति कहती है, अग्रवाल भार्गव से रोटी-बेटी-संबंध नहीं कर सकता। इसी प्रकार वर्ण-व्यवस्था कहती है, विवाह अपने ही वर्ण में होना चाहिए, सूत-पुत्र क्षत्रिय की पुत्री से विवाह नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त इस समय वर्ण-व्यवस्था का और तो कोई काम हमें दिखाई नहीं दे रहा। इसी वर्ण-धर्म की बाधा के कारण एक चमार हलवाई की दूकान नहीं खोल सकता, एक राजपूत

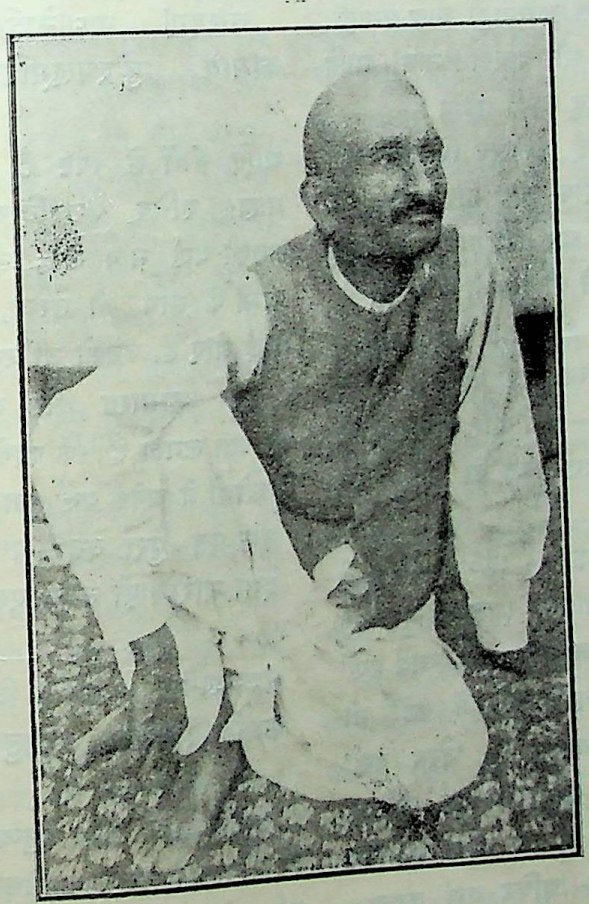

श्रीयुत संतराम बी० ए०

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हल नहीं चला सकता। एक ब्राह्मण लोहार के यहाँ भोजन नहीं कर सकता। वर्ण-भेद हिंदू-समाज का सद्गुण नहीं, उसका कलंक है। फिर यह ख़राबी आज की नहीं, सहस्रों वर्षों की है। एलूश के पुत्र कवष को धूर्त, अब्राह्मण और दासी-पुत्र कहकर ब्राह्मणों का यज्ञ से निकाल देना, निरपराध शूद्रराज शंबूक का रामचंद्र द्वारा वध, द्रौपदी का सूत-पुत्र कर्ण से विवाह करने से इनकार, एक क्षत्रिय के अपराध के कारण सारे क्षत्रिय-वंश का परशुराम द्वारा विध्वंस, ये सब वर्ण-व्यवस्था के ही दुष्परिणाम थे।

वर्ण-व्यवस्था को हिंदू-धर्म का मूल मानना भी ठीक नहीं। ऐसा मानने से देवसमाजी, ब्राह्म-समाजी, राधास्वामी, जैन, सिक्ख और प्रार्थना-समाजी आदि एकाध संप्रदायों को अहिंदू कहना पड़ेगा।

चातुर्वर्ण्य-विभाग कोई ईश्वरीय विधान नहीं। जिस वेद को आप ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं, उसमें कहीं भी वर्णों की संख्या चार नहीं मानी गई। कुछ सिद्धांती आर्यसमाजियों ने धींगामुश्ती से "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्" (यजु० ३१—११) वाले मंत्र से चार वर्ण निकालने की व्यर्थ चेष्टा की है। वेद तो केवल दो वर्ण कहता है—आर्य और दास। केवल इन्हीं दो नामों के साथ 'वर्ण'-शब्द का प्रयोग वेद में मिलता है। जैसे—

यो दासं वर्णमधरं गुहाकः। (ऋ० २-१२-४)
हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत। (ऋ० ३-३४-९)

जैसे इन मंत्रों में 'दास वर्ण' और 'आर्य वर्ण' लिखा मिलता है, वैसे चारो वेदों में कहीं भी 'ब्राह्मण वर्ण', 'क्षत्रिय वर्ण' या 'वैश्य वर्ण' लिखा नहीं मिलता। यदि वेद इनको वर्ण मानता, तो जनता को भूलभुलैयाँ में न डालकर वह स्पष्ट रूप से 'ब्राह्मण वर्ण' और 'क्षत्रिय वर्ण' कहता। इतना ही नहीं, वेद साफ़ कहता है कि वर्ण दो हैं। जैसे—

उभौ वर्णौ वृषिरुग्रः पुपोष (ऋ० १-१७९-६)

यदि वर्ण चार होते, तो दो (उभौ) के स्थान में वेद 'चार' कहता। इससे स्पष्ट है कि चातुर्वर्ण्य की कल्पना मनुष्यों की अपनी है, वेद की नहीं। हाँ, वेद में मनुष्य-समाज को कहीं दो में, कहीं चार में, कहीं पाँच में और कहीं उनसे भी अधिक भागों में बाँटा गया मिलता है। जैसा कि 'पंचजनाः', 'पंचमानवाः' और 'पंचकृष्टयः' आदि शब्दों और

न यो र र आर्यं नाम दस्यवे (ऋ० १०-४९-३)
पश्यामि यश्च शूद्र उतार्यः। (अथर्व ४-२०-५)

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय।
वीरहणं पाप्मनेक्लीबमाक्रयाया अयोगं कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्।
(यजु० ३०-५)

आदि मंत्रों से स्पष्ट है। यदि किसी मंत्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि नाम आ जाने से ही आप उनको वर्ण मान लेंगे, तो ऊपर दिए मंत्र में इन नामों के साथ जो तस्कर, वीरहण, मागध आदि शब्द आए हैं, उनको भी वर्ण मानना पड़ेगा।

फिर महाभारत और भागवत पुराण आदि से भी पता लगता है कि पहले एक ही वर्ण था, पीछे से लोगों ने अनेक वर्ण बना लिए—

एक एव पुरा वेदः प्रणवः सर्ववाङ्मयः;
देवो नारायणो नान्य एकोऽग्निर्वर्ण एव च।
(श्रीमद्भागवत)

एकवर्णमिदं पूर्वं विश्वमासीद्युधिष्ठिर!
कर्मक्रियाविभेदेन चातुर्वर्ण्यं प्रतिष्ठितम्।
(महाभारत)

इसलिये जो चीज़ मनुष्य ने आप बनाई है, जो ईश्वरीय नहीं, उसके हानिकारक प्रमाणित होने पर यदि उसे नष्ट कर दिया जाय, तो इसमें कोई पाप नहीं। फिर एक बात विचारणीय यह भी है कि क्या समस्त संसार के, या भारतवर्ष के ही ३५ करोड़ स्त्री-पुरुषों के गुण, कर्म, स्वभाव की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

सूक्ष्म परीक्षा करके उन पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लेबुल लगाना संभव भी है? महाभारत में युधिष्ठिर कहते हैं—"संकरात्सर्ववर्णानां दुष्परीक्ष्येति मे मतिः।" जब संसार की शेष सब जातियों का काम इन लेबुलों के विना चल रहा है, तो क्या हिंदुओं का नहीं चल सकता?

गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार समाज का विभाग कभी क़ायम नहीं रह सकता। वह जल्दी या देर से जन्म पर हो जाता है। प्राचीन काल में जो दो-एक उदाहरण एक वर्ण से दूसरे वर्ण में जाने के मिलते हैं, वे अपवाद-स्वरूप हैं, जो जन्मना वर्ण के नियम को सिद्ध करते हैं। वर्ण-व्यवस्था आरंभ से ही ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्य का कारण रही है। उपनिषत्काल में हम देखते हैं कि ब्राह्मणों की बढ़ी हुई प्रतिपत्ति और उनके धर्म-धुरंधर होने के घमंड को तोड़ने के लिये क्षत्रियों को उपनिषदों की रचना करनी पड़ी। वहाँ हमें ऐसी कथाएँ मिलती हैं, जिनमें यह बतलाया गया है कि जिन अध्यात्मविद्या-संबंधी प्रश्नों का उत्तर ब्राह्मण ऋषि नहीं दे सकते थे, उनका समाधान जनक-जैसे क्षत्रिय राजा कर देते थे।

वर्ण-व्यवस्था-जनित द्वेष बौद्ध-काल में और भी बढ़ गया था। बुद्ध-मत एक प्रकार से ब्राह्मणों के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह था। बुद्ध क्षत्रिय था। उसने ब्राह्मणों की सत्ता नष्ट करने की पूर्ण चेष्टा की। तित्तर जातक में लिखा है कि एक मर्तबा बुद्ध भगवान् ने पूछा—"हे भिक्षुओ, सबसे अधिक और सबसे पहले किसका सम्मान होना चाहिए?" तो भिक्षुओं ने उत्तर दिया—"खत्तिय कुला पब्बजिते।" अर्थात् क्षत्रिय-कुल में उत्पन्न भिक्षुओं का।

इसी प्रकार यह द्वेषाग्नि जैन-काल में भी प्रज्वलित रही। 'जैन-कल्प-सूत्र' में लिखा है कि महावीर जब जन्म लेने के लिये स्वर्ग से उतरे, तो ऋषभदत्त-नामक ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा के गर्भ में आए, परंतु इसके पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था कि किसी महापुरुष ने ब्राह्मण-कुल में जन्म लिया हो। इसलिये शक्र ने उन्हें देवानंदा के गर्भ से हटाकर रानी त्रिशला के गर्भ में रख दिया (बौद्धकालीन भारत, अ० तीसरा)।

ये कहानियाँ ब्राह्मण और क्षत्रियों के एक दूसरे से ऊँचा कहलाने के झगड़े की द्योतक हैं।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि पहले केवल एक ही वर्ण था। रामायण, उत्तरकांड के अध्याय ७४ में भी यही बात लिखी है कि सत्ययुग में केवल ब्राह्मण ही थे, त्रेता में क्षत्रिय हुए। तब समाज के दोनो वर्णों में झगड़ा बढ़ा। आगे चलकर वैश्य और शूद्र का विभाग हुआ। ब्राह्मणों ने समाज में फूट डालकर लोगों पर शासन करने (Divide & rule) के सिद्धांत पर चलते हुए इन चार वर्णों में रोटी-बेटी-व्यवहार की मनाही कर दी, ताकि ये आपस में मिलकर ब्राह्मणी सत्ता के विरुद्ध सिर न उठा सकें। इसके साथ ही गुण, कर्म, स्वभाव के रोज़ के झगड़े को सदा के लिये मिटा देने के उद्देश से व्यवस्था दे दी—"पूजिय बिप्र सील-गुन-हीना।" तुलसीदास की इस व्यवस्था ने उस झगड़े का अंत कर दिया, जिसके कारण विश्वामित्र को वशिष्ठ के सौ पुत्र मारने पड़े थे, और जिसके कारण ब्राह्मणों को गिरा दिए जाने का भय बना रहता था।

पुराने जन्मना ब्राह्मणों को नीचा दिखाने के लिये आर्य-समाज ने जो नए ब्राह्मण बनाए, खेद से कहना पड़ता है, उनमें भी जन्मना ब्राह्मणों के समान ही अहंकार, स्वार्थपरता, बड़प्पन दिखलाना, अपने को ऊँचा और दूसरों को नीचा समझना, मुफ़्त का दान खाने में संकोच न करना प्रभृति दोष उत्पन्न हो गए हैं। नौमुसलिमों की तरह ये लोग जन्मना ब्राह्मणों से भी अधिक वर्ण-व्यवस्था के पक्ष-पोषक हो रहे हैं। जाति-पाँति का नाम वर्ण-व्यवस्था

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रखकर समाज में ये वही ख़राबी पैदा कर रहे हैं, जो जन्मना ब्राह्मण जन्माभिमान की डफली पीटकर करते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के शब्दों के साथ उच्चता और नीचता के भाव ऐसी बुरी तरह से चिपट चुके हैं कि अब एक को दूसरे से अलग करना कठिन है।

यह कहना ठीक नहीं कि वर्णों में ऊँच-नीच का भाव नहीं। महात्मा गांधी यों ही धींगाधुश्ती से कह रहे हैं कि सब वर्ण बराबर हैं, और उनकी देखा-देखी श्रीधर्मदेवजी ने भी यही बात लिख दी है। मुझे तो शास्त्र और स्मृतियाँ ही नहीं, संस्कृत-साहित्य का एक भी ग्रंथ ऐसा नहीं दिखाई देता, जिसमें ब्राह्मण को ऊँचा और शूद्र को नीचा न कहा गया हो। देखिए—

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ॥ १ ॥

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ॥ २ ॥

इन आपस्तंब-सूत्रों से पता लगता है कि वर्णों में ऊँच-नीच है, और ब्राह्मण अधर्म या पाप करने से क्षत्रिय बन जाता है, और क्षत्रिय अधर्म करने से वैश्य और शूद्र। अर्थात् ब्राह्मण के सिवा सब वर्ण अधर्मी हैं। ऐसी व्यवस्था में शूद्र तो अधर्म का पुंज ठहरता है। जिस समाज-व्यवस्था में श्रम-जीवियों को अधर्मी और जघन्य ठहराकर दुत्कारा जाता है, क्या वह वर्ण-व्यवस्था रक्षा करने योग्य हो सकती है? क्या कारण है कि आज तक किसी भी शूद्र ने वर्ण-व्यवस्था के गुण नहीं गाए? सदा द्विजों को ही क्यों इसकी रक्षा की चिंता रहती है? क्या वर्ण-व्यवस्था के सत्य होने का यही प्रमाण है? स्वामी दयानंद हिंदू-शब्द के विरोधी थे। उन्होंने अपने ग्रंथों में इसका पूरा-पूरा बहिष्कार किया है। परंतु श्रीयुत धर्मदेवजी उसी हिंदू को अपना रहे हैं, और अपने इस कर्म को सिद्धांत-विरुद्ध नहीं समझते। ऐसी अवस्था में यदि वे वर्ण-व्यवस्था-जैसी बेहूदा संस्था को भी नष्ट करने का यत्न करें, तो इसमें कोई सिद्धांत-हानि नहीं होगी। और डॉ० अंबेदकर पर आक्षेप करते हुए पूछते हैं कि यदि ब्राह्मणों का बुद्धि-जीवी-समाज वर्ण-व्यवस्था के नाश के मार्ग में रुकावट है, और वह सुधारकों के साथ मिलने को तैयार नहीं, तो क्या उसका मूलोच्छेदन कर दिया जाय? मेरा उत्तर है कि रोग को दूर करने की आवश्यकता है, रोगी को मार डालने की नहीं। ब्राह्मणों में जो मुफ़्त के बड़प्पन का भाव घुसा हुआ है, उसी को दूर करने—उनकी मनोवृत्ति को बदलने—की आवश्यकता है, और वह तभी संभव है, जब अंतर्वर्णीय विवाह होने लगें। बेटी-बंदी को तोड़ने से बढ़कर इस महारोग के लिये और कोई रामबाण औषध नहीं। यदि ब्राह्मण मुसलमान और ईसाई हो सकता है, तो उसे जाति-पाँति-तोड़क भी बनाया जा सकता है। मेरी धारणा है कि यदि स्वामी दयानंद का जन्म ब्राह्मण के बजाय किसी भंगी-चमार के यहाँ हुआ होता, तो वे डॉ० अंबेदकर से भी बढ़कर वर्ण-भेद और ब्राह्मणी धर्म के विरोधी होते।

श्रीयुत धर्मदेवजी ने शास्त्रों के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा और भक्ति प्रकट की है, और मुझे सचेत किया है कि शास्त्रों के विरुद्ध आंदोलन करके लोगों के हृदयों से उनके प्रति आदर-बुद्धि को दूर करने का "अर्थ होगा आचार-मर्यादा को नष्ट कर देना।" और इसके साथ ही आप कहते हैं—"हिंदुओं में शास्त्रों के प्रति कोई मान नहीं, केवल रीति-रिवाजों की ही वहाँ मान्यता है।" मालूम नहीं, इन दोनों बातों का सामंजस्य आप कैसे करते हैं! आपने ज़रा शास्त्रों की नामावली दी होती, तो फिर मैं बताता कि उनमें कितना ख़ुराफ़ात भरा पड़ा है। महात्मा गांधी और काका कालेलकर की तरह आपका यह कहना कुछ अर्थ नहीं रखता कि जो ग्रंथ युक्ति-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विरुद्ध बात बताता हैं, वह शास्त्र ही नहीं। आप मानते हैं कि शास्त्रों के सिद्धांतों में समयानुसार परिवर्तन होता आया है। और, साथ ही आप डॉ० अंबेदकर के "महावाक्यों को भी शास्त्र का ही एक रूप" कहते हैं। ऐसी दशा में आपको वर्ण-व्यवस्था का नाश करने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। क्योंकि आपके मतानुसार डॉ० अंबेदकर नूतनतम शास्त्रकार ठहरते हैं, और वह वर्ण-व्यवस्था के विध्वंस की आज्ञा देते हैं। शास्त्रों पर श्रद्धा रखने का उपदेश करने के बजाय तो "बुद्धि से काम लो" का उपदेश करना जाति के लिये सहस्रगुना अधिक हितकर सिद्ध होगा। यदि दूसरी जातियाँ और राष्ट्र हिंदू-शास्त्रों की दासता के बिना भी सच्चरित्र, उन्नत, आस्तिक और बुराइयों से रहित हो सकते हैं, तो हिंदुओं को ही इनका ग़ुलाम बनाए रखना क्यों आवश्यक है ?

श्रीयुत धर्मदेवजी कहते हैं—"हिंदू-संगठन का रूप भी वर्ग-युद्ध के आधार पर हो रहा है। वर्ग-युद्ध शुद्ध अहिंसा के सिद्धांत से परे की चीज़ है। अतः वह हिंदू-धर्म के मूल सिद्धांत के अनुकूल नहीं।...मुसलमानों आदि के विरोध में अथवा कुछ आदमियों को एसेंबलियों में भिजवाने के लिये किए गए हिंदू-संगठन को सत्य नहीं कहा जा सकता।"

यद्यपि हिंदू नाम का कोई धर्म नहीं है, वरन् एक संस्कृति है, तो भी श्रीधर्मदेवजी की बात मानकर भी मैं कहता हूँ कि मैं हिंदू-संगठन इसलिये नहीं चाहता कि किसी पर आक्रमण किया जाय। मैं तो इसका इसलिये इच्छुक हूँ कि दूसरा डाकू और लुटेरा समाज हमें पराधीन और दुःखी न बना सके। जिस समय दूसरे लोग हिंदुओं को पादाक्रांत करने और उनकी स्त्रियों का अपहरण करने के लिये संगठित हो रहे हों, उस समय निःसार तत्त्वज्ञान छाँटते हुए असंगठित रहकर जूते खाना मैं भारी पाप समझता हूँ। आत्मरक्षा के लिये, देश के शासन में अपना न्यायोचित भाग प्राप्त करने के लिये एसेंबलियों में जाना या नौकरियाँ लेने का यत्न करना बुरा नहीं कहला सकता। जूते खाते हुए, भूखों मरते हुए, अपनी बहू-बेटियों का अपहरण देखते हुए, अहिंसा की फ़िलासफ़ी छाँटना परले दरजे की बेग़ैरती और कायरता होगी। इस समय संसार का कौन राष्ट्र संगठित होने का यत्न नहीं कर रहा ? फिर आत्मरक्षा के लिये हिंदुओं का संगठन ही क्यों दंडनीय पाप है ? ऐसा तर्क और तत्त्वज्ञान तो राष्ट्र को ले डूबता है। असंगठित सत्य संगठित असत्य द्वारा सदा पादाक्रांत हुआ करता है।

श्रीधर्मदेवजी ने आर्य-समाज का बड़ा कीर्तन किया है, और कहा है कि उसकी मौजूदगी में अलग जाति-पाँति-तोड़क मंडल की कोई आवश्यकता न थी। मेरा उत्तर यह है कि कुछ काल से आर्य-समाज पर आर्याभास ब्राह्मणी धर्मानुयायियों ने क़ब्ज़ा मुख़ालिफ़ाना कर रक्खा है। कहने को वे जाति-पाँति नहीं मानते, परंतु कर्म में वे सनातन-धर्मी ही हैं। यदि वे वर्ण-व्यवस्था या जाति-पाँति से मुक्त होते, तो डॉ० अंबेदकर और दूसरे अछूत कहलानेवाले भाइयों को हिंदुओं से अलग होने की आवश्यकता न होती। वर्ण-व्यवस्था में फँसे होने के कारण ही आज के आर्य-समाजी अछूतों के चैलेंज को स्वीकार नहीं कर सके। मुसलमानों ने, ईसाइयों ने और सिक्खों ने अछूतों से कहा कि हम तुम्हें बंधुता और समता के अधिकार देने को तैयार हैं, परंतु वर्ण-व्यवस्था के ग़ुलामों को ऐसा एक शब्द भी मुँह से निकालने का साहस न हुआ। इतना ही नहीं, जब तक स्वामी श्रद्धानंदजी जीते रहे, आर्य-समाज और गुरुकुल के उत्सवों पर जाति-पाँति-तोड़क के सम्मेलन होते रहे। परंतु जब से वर्ण-व्यवस्था के नाम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पर बेटी-बंदी और रोटी-बंदी तोड़ने के विरोधियों का आर्य-समाज पर क़ब्ज़ा मुख़ालिफ़ाना हुआ, तब से आर्य-समाज के उत्सवों पर जाति-पाँति-तोड़क सम्मेलनों की भी मनाही हो गई। आर्य-समाज के एक बहुत बड़े विभाग—डी० ए० वी० कॉलेज-विभाग—को तो बेटी-बंदी तोड़ने और अपने उत्सवों पर जाति पाँति-तोड़क सम्मेलन करने का आज तक कभी साहस ही नहीं हुआ। वे अब तक भी ब्राह्मण की लड़की के बनिए के लड़के के साथ विवाह को वर्ण-संकरता समझते हैं। दूसरे शब्दों में सनातनधर्मियों ने अपना नाम आर्य-समाजी रख लिया है। ऐसी दशा में जाति-पाँति तोड़ने के लिये अलग मंडल बन जाय, तो इसमें हानि क्या है?

आर्य-समाज का कार्य-क्षेत्र तो परिमित है। जाति-पाँति-तोड़क मंडल सारे हिंदू-समाज के लिये है। देव-समाजी, राधास्वामी, ब्राह्म-समाजी और उदार विचार के सनातनी जाति-पाँति तोड़ने के लिये आर्य-समाज की टाँग के नीचे से नहीं लाँघना चाहते। ऐसी दशा में एक अलग संस्था का बनना आवश्यक था। आर्य-समाज भी हिंदू-समाज से अलग संस्था है। फिर मंडल की अलग सत्ता पर ही क्यों आपत्ति है?

वर्ण-व्यवस्था की महाव्याधि को दूर करना प्रत्येक हिंदू और विशेषत: प्रत्येक सच्चे आर्य-समाजी का परम कर्तव्य होना चाहिए, क्योंकि स्वयं स्वामी दयानंद का मत है कि 'यह वर्ण-व्यवस्था नहीं, आर्यों के लिये मरण-व्यवस्था है। देखें, इस डाकिन से आर्यों का पीछा कब छूटता है।'

पारदर्शित

ग्लीसरीन

खुशनुमा साबुन

नहाने तथा टायलेट के लिये

स्थिरता, पवित्रता तथा

सुगंधि के लिये अनुपमेय

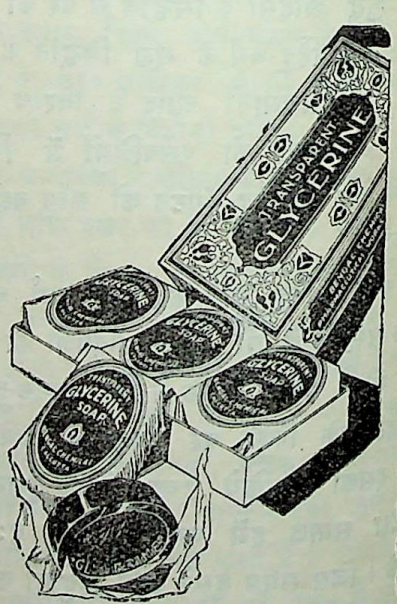

कलकत्ता :: बेंगाल केमिकल :: बंबई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

मिश्रबंधुओं की कविता

[एक भक्त]

हिंदी में पूज्यपाद मिश्रबंधुओं का स्थान अत्यंत महत्त्व का है। उनकी सेवाएँ महान् हैं, तथा उनकी गणना प्रसिद्धतम साहित्यकारों में है। वे उदार, उद्भट समालोचक, उत्कट ऐतिहासिक, उन्नत नाटककार तथा गद्य-लेखक ही नहीं, वरन् व्रजभाषा-पद्य के सर्वप्रथम उन्नायक तथा उसमें नवीनतर प्रांजल भावों के उपस्रष्टा हैं। उनकी कविता में सुंदर-मनोरंजक प्रौढ़ भाव, चमत्कृत शैली, मँजी हुई भाषा, सरल-सुंदर पदावली, स्वाभाविक मधुर-मंजुल शब्द-विन्यास सर्वत्र दृष्टिगोचर होंगे। उन्होंने मानव-जीवन के विभिन्न रूपों के साथ-साथ गंभीर, उच्च, पवित्र विचारों का अद्भुत सम्मिश्रण किया है। काव्य की संजीवनी सुषुमा और मधुर संगीतात्मक छंदध्वनि पद-पद पर पाई जाती है। 'पद्य-पुष्पांजलि' उनकी कविताओं का परमोत्कृष्ट संग्रह है। यह अंजलि आठ पुष्पों से समलंकृत है। पहला पुष्प श्रीकृष्णचंद्रजी के यशःसौरभ से सुवासित है। इस भावमय गीत में महाकवि मिश्रबंधुओं ने कितना ऊर्जस्वल काव्यमय वर्णन श्रीकृष्ण की प्रशंसा में किया है। पाठक स्वयं उसकी कुछ पंक्तियाँ सुनें—

भयउ नहिं भारत में अस आन ;
आठैं असित मास भादौं जस भो जदुपति भगवान।
यहि नरवर में बालापन सों जे बहु सुगुन महान
देखि परे, ते एक पुरुष में सुने न कबहूँ कान।
एक-एक गुन में या जग में भे बहु पुरुष प्रधान ;
कैयो गुनन माहिं कितनेहु नर भए प्रतिष्ठावान।
पै जितने गुन नंदनँदन में लखे पूर्ण सबिधान ;
तितने संग्रह करनहार कोउ सुन्यो न दुतिय सुजान।
गोपिन में मुरली-ध्वनि करि जेहि कियो अलौकिक गान;
जापर वारि डारिए कोटिन तानसेन की तान।
बर्तमान में योरपीय जो बाल-प्रथा को ठान,
गोपिन अपसरान बिच जदुपति ताको दियौ प्रमान।

यह गीत इस प्रकार बहुत दूर तक चला गया है। इसकी एक-एक युक्ति-संगत पंक्ति कितनी सरस तथा सुमधुर है, यह पाठक स्वयं विचार करें।

दूसरे पुष्प में लव-कुश-चरित्र-सार की स्वर्ण-सुरभि सर्वत्र आच्छादित है। लव-कुश-चरित्र मिश्रबंधुओं ने विविध छंदों में लिखा है। काव्य-जगत् की पुरानी परिपाटी को छोड़कर, उन्होंने इस कथा को लिखकर व्रजभाषा में खंड काव्य लिखने की पद्धति पुनः प्रचलित की। यह काव्य सब-का-सब पढ़ने लायक़ है। इसमें वियोग-शृंगार तथा वीर-रस पर जो चमत्कार-पूर्ण सूक्तियाँ मिलेंगी, वे अन्यत्र नहीं। लव-कुश-चरित्र व्रज भाषा-साहित्य की अनूठी कृति है। इसमें कितनी करुणा, कितना ओज है, उसे यहाँ दिग्दर्शन कराना कठिन है, फिर भी नमूने के तौर पर कुछ पद्य उद्धृत किए जाते हैं। पाठक स्वयं रसास्वादन करें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सीताजी को वन में छोड़ने को जाते हुए लक्ष्मण से सीता किस प्रकार उनकी मलिन मुखाकृति देखकर संदेह करती हुई प्रश्न करती हैं। उसका चित्रण कवि ने कितने मार्मिक ढंग से किया है, यह यहाँ द्रष्टव्य है—

लिए हमें कित जात चिंता-युत कीन्हें बदन,
कत बोलत नहिं तात, सजल-नयन इत-उत लखत ?

विदग्धता-पूर्ण वर्णन जिस प्रकार कवि ने किया है, वैसा अन्यत्र विरल है—

सीय-सोक मग पग नहिं परई ;
जिमि अति कृपन दान कहँ डरई।
कछुक दूरि लछमन चलि जाहीं ;
बहुरि पलटि सिय ढिग पछिताहीं।
सिय तजि कतहुँ सकैं नहिं जाई ;
प्रभु - आयसहु न जाय मिटाई।

'दुलारे-दोहावली' पर सम्मति

छंद-शास्त्र के अद्वितीय विद्वान् पं० जगन्नाथप्रसादजी 'भानु' लिखते हैं—

"कवि-सम्राट् श्रीदुलारेलाल भार्गव

सुहृद्वर,

'दुलारे-दोहावली' की प्रति मिली। अनेक धन्यवाद। पुस्तक पढ़कर चित्त अत्यंत प्रसन्न हो गया। इसके पहले भी मैं माधुरी या सुधा में प्रकाशित चित्रों के नीचे छपे आपके बनाए हुए दोहों को पढ़कर आपकी प्रशंसा किया करता था, और मित्रों से कहा करता था कि इन भाव-पूर्ण दोहों को पढ़कर बिहारी कवि का स्मरण हो आता है। सचमुच में जैसे वह कोमल पर मार्मिक, ललित पर अनूठे, सरस और सजीव दोहों के लिखने में समर्थ और सिद्धहस्त थे, जान पड़ता है, वे ही सब बातें माता सरस्वती ने आपकी लेखनी में भी भर दी हैं। ब्रज-भाषा के वर्तमान काल के कवियों में.....सर्वश्रेष्ठ कवि मानता हूँ।

आपने यह बहुत अच्छा किया, जो इन सब दोहों को क्रमबद्ध करके उनका संग्रह, सचित्र और सजावट के साथ, प्रकाशित कर डाला। यह अब हिंदी-साहित्य की बहुमूल्य चीज़ हो गया है।"

आनन जोति - हीन तव देखी
होत हिये संदेह बिसेखी।
डगमग पाँव परत केहि कारन ?
सो कहि करहु सोक मम वारन।
बिबरन भए बचन मम सुनि-सुनि ;
ऊबि उसाँस लेत कत पुनि-पुनि ?

पुनः सीता को वन में छोड़कर लौटते हुए लक्ष्मण की वेदनामय कारुणिक दशा का

इत-उत भ्रमहिं गहे दुख भारी ;
निंदहिं आपुहिं गुनि अघकारी।
तब इक सघन कुंज महँ जाई ;
बैठि रहे चित संभ्रम छाई।
मोकहँ देह-त्याग अब नीका ;
लहेउँ दुखद अधरम कर टीका।

अब युद्ध में रणभूमि का कवि ने जैसा ओजस्वी वर्णन किया है, पाठक उसे भी अव-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

लोकन करें, और कवि की सब रसों में समान भाव से लिखने की पटुता तथा सामर्थ्य का अंदाज़ा लगाएँ—

कटे धनुष कहुँ परे हेम-मनि-जटित सुहाए ;
ध्वज-पताक, सर-सक्ति परे अगनित छबि छाए।
धँसे बिसिख तन मनहुँ पियत सोनित अहि कारे ;
बमत रुधिर बहु परे सुभट जहँ-तहँ अधमारे।
बहु छत्र-मुकुट-कुंडल-कवच परे पुहुमि सोनित नहे ;
मनु यहै सीख सब देत हैं जग अनित्य कत भ्रमि रहे।

मिश्रबंधु कविता के पंडित तो हैं ही, शब्दों के चुनने में उनका कवि-कौशल देखने योग्य है। जैसे गुलाब की कलियाँ सभी सुंदर और सुडौल निकलती हैं, माली उन्हें सँभालने नहीं जाता, इसी प्रकार उनकी रचना में आलंकारिकता, भावुकता, मौलिकता स्वाभाविक रूप से अपने आप उपयुक्त स्थान पर शब्दों से व्यंजित होती है, उन्हें वे कृत्रिमता का रूप नहीं देते।

तीसरे पुष्प में महाकवि कालिदास-कृत मदन-दहन का स्वच्छंद अनुवाद उन्होंने कितना चित्ताकर्षक किया है, उसका भी एक नमूना पाठक देखें—

कंप - बिहीन भए तरु - बृंद,
मलिंदन चंचलता बिसराई ;
मौन बिहंगन धारि लियौ, तिमि
काल कुरंगन हाल बिहाई।
सासन सों हर - बाहन के बन
चित्र - समान परे दरसाई ;
साँझहि कानन बीच सुथंभित
तालन के प्रतिबिंब कि नाई।

चौथे पुष्प के विक्टोरिया-विलाप में करुण-रस का पुट मिलेगा।

पाँचवें पुष्प में कवि के शोकाकुल हृदय की रुधिर-धारा मानो करुण-रस-स्रोतस्विनी होकर बह निकली है। 'हा काशीप्रकाश' एक हृदय-विदारक काव्य है—

सात साल और सात मास ग्यारह दिन घर उजियाला
कर कैसे प्रिय पुत्र, किया तुमने मेरा मुँह काला।

* * *

दशाश्वमेध-घाट पर काशी बीच गंगजल भीतर
पट पसारकर तव माता ने माँगा था तेरा वर।
कौन जानता था उस सुख का अंत महादुखदाई ;
अपने हाथों हाय ! पड़ेगा करना तुहिं महिशाई।
उचित कपाल-क्रिया था मेरी तव हाथों से प्यारे ;
हाय ! हृदय सौ टूक हुआ नहिं गति बिपरीत निहारे।

इस कविता का अधिक उद्धरण देने में लेखनी असमर्थ है। हिंदी-कविता के लिये यह Elegy (शोक-गीत) बिलकुल नवीन वस्तु है। व्रजभाषा में मिश्रबंधुओं ने ऐसी हृदयवेधिनी एलेजी सर्व-प्रथम लिखकर हिंदी का मस्तक ऊँचा किया है। यद्यपि यह आत्मीय रुदन-मात्र है, फिर भी यह विश्वव्याप्त रुदन-गीत में परिणत हो गया है। अँगरेज़ी-साहित्य में 'ग्रे की एलेजी' का बहुत मान है; पाठक इसे पढ़ें, और देखें, यह उससे किस प्रकार कम है। दुःख है कि अभी तक हिंदी के श्रेष्ठ साहित्यिकगण मिश्रबंधुओं की इस सुंदर कृति का आदर नहीं कर सके ! जिसने माता-पिता का हृदय पाया है, वह इसे पढ़कर अवश्य रो पड़ेगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मैं इसे हिंदी-साहित्य की एक निधि समझता हूँ।

छठे पुष्प में रघुसंभव का विभव सुरभि-रूप से व्याप्त है। यह महाकवि कालिदास के रघुवंश के तृतीय सर्ग तक का सफल-स्वच्छंद अनुवाद है। कुछ पंक्तियाँ उदाहरणार्थ लीजिए—

कोमल कोपल-सो तनु लाल,
ललाटहि बंक लसै सित टीकी;
साँझ समै नभ-मंडल मैं मनु
राजत है नवबिंब ससी की।

* * *

छीन सरीर भयो तेहि लागि,
अपूरन भूषन धारन कीन्हे;
आनन में पियराई परी,
मनो राजत चंपक-फूल नवीने।
सुंदर बालक सो निज तेज
सुभाविक पूरि दसौ दिसि माहीं;
मंद किए सब दीपक जे,
अधरात प्रसूति घरै दरसाहीं।
बाल लसै दिन-नायक-लौं,
दिन-दीपक-से निसि-दीप लखाहीं;
चारु प्रदीप चितेरन सों मनु
चित्रित चित्रपटीन सुहाहीं।

देखिए, उपमाओं के झीने आवरण से युक्त भावमयी भाषा में ऊपर का अनुवाद कितना सरस हुआ है।

अब आगे चलकर महाकवि मिश्रबंधुओं के भारत-विनय-सार तथा बूँदीवारीश नाम के सातवें-आठवें पुष्पों के स्वर्ण-मधु-रस का आस्वादन हम मुग्धमना पाठक-मलिंदों को कराएँगे। इन दो पुष्पों में मिश्रबंधुओं की कमनीय काव्य-कला अत्यंत भास्वर रूप में चमक उठी है।

भारत-विनय-सार में मिश्रबंधुओं ने आदि सृष्टि से लेकर आधुनिक काल तक की भारत की दशा का वर्णन किया है। इसमें आपने बड़े परिश्रम के साथ सभी समयों के समाज का, सभ्यता का पता बड़ी कुशलता से लगाकर काव्य रचा है। यह ऐतिहासिक काव्य कहा जा सकता है, और वास्तव में है भी। उन्होंने आदि संतान, वैदिक काल, स्मृति-काल, पौराणिक काल, अवनति-समय, बौद्ध-काल, हिंदू-समाज-पतन, मुसलमान-काल, मुसलमान-पतन-काल, महाराष्ट्र-काल, कंपनी-काल और आधुनिक वर्तमान काल की सामाजिक, धार्मिक तथा सभ्य रीतियों के साथ-साथ अन्य बातों का भी उल्लेख काव्यमय शब्दों में किया है। उन्होंने उसके साथ भारत की खेती, विद्या, लक्ष्मी के अतिरिक्त ब्रह्मचर्य आदि की भी महत्ता काव्य में प्रदर्शित की है।

भारत की ईश्वर के प्रति वंदना का छंद कितना सुंदर है—

रावरी कृपा की कोर लहिकै कछूक गहि
गरब गँभीर पाप-पुंजन कमायों मैं;
देसन को चूर करि सतगुन दूर करि,
क्रूर बनि केवल कुगुंन अपनायों मैं।
सबको समान सत्कार कै उदार ह्वै के
जग-उपकार में कबौं न मन लायों मैं;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आरत है भारत पुकारत है नाथ, अब
पाहि-पाहि रावरी सरन तकि आयों मैं।

भगवान् को आपने प्रेम-भरे शब्दों में कैसी फटकार दी है—

होते जो न ऐसे कूर पतित जहान में, तो
कैसे तुम पतित-पुनीत कहवावते;
करते न ढेर हम पातक-पहार, तौ न
करुनानिधान को बिरद तुम पावते।
दोषन के जूहन को धारि पछिताय जो न
हाहा करि हम दीनताई दरसावते;
कढ़ते तो कोमल तिहारे गुनगन कैसे,
कैसे पुनि भगत सुजस तव गावते।

मिश्रबंधुओं में छुआछूत, बाल-विवाह आदि कुरीतियों के प्रति कितनी घृणा है, और उनके अछूतोद्धार तथा स्त्रियों के सम्मान, स्वदेशी के प्रति कितने उच्च विचार हैं, वे नीचे लिखी पंक्तियों से प्रकट होते हैं—

तज कुलीनता छुआछूत सबको सम जानौ;
भ्राताओं-सम सदा सूद्र को भी सनमानौ।

* * *

कर तरुनी-पद उच्च उन्हें सिच्छा सुभ दीजै;
मिलित कुटुंबों में न निरादर तिय को कीजै।
ठहरौनी तज दुखद चाल परदे की छोड़ो;
सुत-सम तनया भी न समझने में मुँह मोड़ो।
बाल-ब्याह को तजौ, हरौ बिधवा के संकट;
बहु बिवाह तज करौ प्रबल बिद्या-उन्नति झट।
बरधित कर ब्यापार स्वदेसी को चमकावौ;
व्यय संसोधन करौ, समय मत ब्यर्थ नसावौ।

अब बूँदीवारीश-नामक काव्य में मिश्रबंधुओं ने कितनी भक्ति-पूर्ण तथा ओजमयी कविता की है, इसके उदाहरण सहृदय पाठकगणों के लिये यहाँ दिए जाते हैं। भारती की वंदना कितनी वचन-चातुरी-पूर्ण है—

समरथ सुतन पै राखत पिता है प्रेम,
मातु पै कपूतन बिसेखि अपनावती;
देख प्रौढ़ सुत को सुजस मन मोद भरे,
कादर को तबहूँ छिनौ न बिसरावती।
मातु भारती को हौं तो कादर कपूत, मति
याते अंब-चरन-सरन तकि धावती;
अरबिंद नंद-सो न सकति अमंद पाय,
मातु नख-चंद की छटा ही मनभावती।

ईश-वंदना में यह छंद कितना सुंदर बन पड़ा है—

ईस भाँति-भाँतिन सों जीवन के जूह रचे,
देखत में जीन चढ़े अचरज भारी है;
कोऊ नभ डोलत, धरा पै कोऊ बोलत,
कलोलत है कोऊ जल-बीच सुखकारी है।
थावर है कोऊ, कोऊ रेंगत चलत, कोऊ
पगन सों, कोऊ उड़ै नभ को बिहारी है;
खात एक एकन, सुहात एक औरन,
महान डर प्रेम कौ बजार इत जारी है।

अब वीर-रस के दो-एक छंद भी यहाँ उद्धृत किए जाते हैं। युद्ध में वीरों के हृदय में कितना उत्कट उत्साह है, देखें—

मीतन सों भाखत समुद बीर आज, तव
असि को प्रचंड रूप औरई लखात है;
देखि कै प्रताप जासु जगत उजास कर,
खास कर भासकर हूँ लौं दबि जात है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तेग को किरन गन चलत गगन दिसि,
बैरिन को माल जिन्हैं देखि अकुलात है;
साथ तिनही के अरि-प्रानन को जाल
अबही सों सूर-मंडल को बेधत लखात है।

खड्ग-वर्णन भी कितना ओजस्वी हुआ है—

कोऊ कहै नाग सों लखात करवाल, वर
म्यान सों जबहिं रन माहिं निकसत है;
कोऊ कहै सूर के समान है खरग, जाहि
देखि सूर-मुख जो कमल बिगसत है।
कोऊ कहै राजै जमदंड-सों प्रचंड यह
करखत रहै सदा प्रानिन के प्रान को;
भाखत अपर असि चंचला अपर जाहि
लखे मुँदि जात चख कादर के मान को।

युद्ध में हाथियों का वर्णन पिछले कवियों ने भी किया है, लेकिन मिश्रबंधुओं का मतंग-वर्णन सबसे दिव्य है—

भीम बल-सीम ये मतंग मतवारे फिरै,
धावत मही पै मनौं भूधर उमंग में;
चूर करबे को रिपुगन को प्रबल दल
धवल बटोरन सुजस जुरि जंग में।
बूँदी पै बिलोकि दिन मानौं चहुँ कोदन सों
धाए गिरिवर आज नूतनु प्रसंग में;

राज में बसे हैं, तब क्यों न राजभगति के
गरद गनीमन मिलावैं रनरंग में।

ऊपर दिए हुए उद्धरणों से पाठक स्वयं देखेंगे कि महाकवि मिश्रबंधुओं की कविता में किस प्रकार विविध छंदों, रसों, अलंकारों तथा अनुपम भावों का एक स्थान पर सम्मिश्रीकरण हुआ है। कविता-कामिनी के प्राण यदि भाव हैं, तो भाषा शरीर होता है। उच्च कोटि की कविता वही है, जिसमें भाव और भाषा दोनों रमणीय हों। ये दोनों गुण उनकी कविताओं में सर्वत्र दृष्टिगोचर होंगे। मिश्रबंधु अपने युग के सबसे बड़े कवि तथा साहित्यकार हैं। हिंदी-संसार उनकी महान् सेवाओं का सदा ऋणी रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

एक साहित्यिक के नाते यदि मैं उनका सम्मान-पूर्ण अभिनंदन इस षट्पदी द्वारा करूँ, तो यह सर्वथा उचित होगा—

हिंदी के सर्वस्व, काव्य के कल कुसुमाकर,
समालोचना का पथ तुमने किया उजागर।
गद्य-पद्य-इतिहास विविध नाटक रच नागर
भरा नागरी-भाषा के गागर में सागर।
दीप्तिमान तुमसे अब यह साहित्य सुधाकर;
वंदनीय तुम मिश्रबंधु कवि-कमल-दिवाकर।

आम - लीची

दरभंगा के प्रसिद्ध आमों और मुज़फ़्फ़रपुर की नामी लीचियों के फल और क़लम तथा क्रोटन, पाम व अन्यान्य फूलों और फलों के क़लम मेरे यहाँ सस्ते दामों पर मिलेंगे। सूचीपत्र मँगाकर देखें।

पता—बिहार नर्सरी, पो० बिहार नर्सरी (दरभंगा)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

निराशा

[सकसेरिया-पुरस्कार-विजयिनी कुमारी दिनेशनंदिनी चोरडिया]

प्रियतम !

तुझे देखने वाली आँखियाँ आनंद से ओत-प्रोत हैं ! तेरी वाणी सुननेवाले कर्ण धन्य हैं !

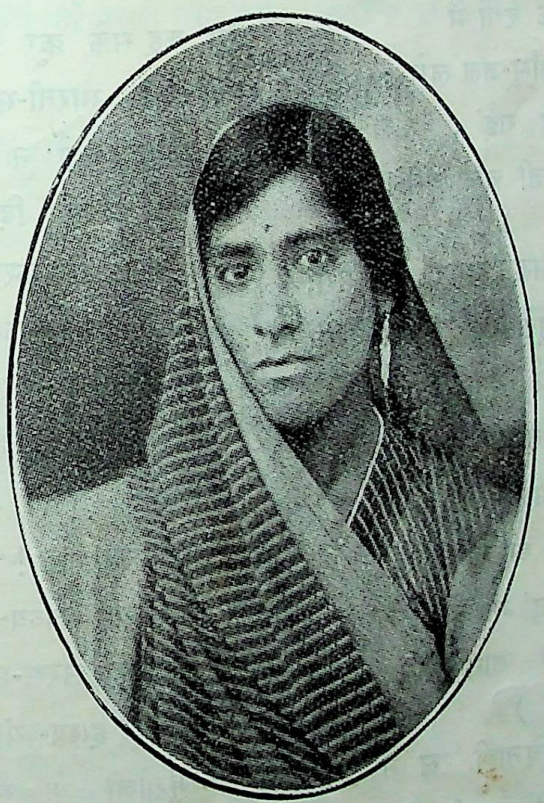

कुमारी दिनेशनंदिनी चोरडिया

क्योंकि—

ऐ मंजुल मधुश्याम !

यह निश्चय है, तेरे सन्निकट रहकर कोई भी ऐसे आनंद से वंचित न रह सकेगा, जिसके घनीभूत आलोक से विश्व जन्मा है—जिसके आभामय यान पर संसार स्थित है, और जिसकी जाज्वल्यमान ज्योति में वसुधा लीन होती है !

परंतु—जीवन-प्राण !

संसार मेरे लिये कितना भयावह और अंधकार-पूर्ण है। क्या मेरी वेदना का कोई प्रतिघोष नहीं; क्या मेरे लवलीन लोचन-वारि के लिये झेलनेवाला कोई अमर अंचल नहीं ?

CCO, Gurukul Kangri Collection, Hari

हा! मुंशीजी अजमेरी 'प्रेम'

[शोकाकुल 'रसिकेंद्र']

(१)

चिर-ग्राम के; अमर - नाम - याचक-चिर-दानी,
'रामचरण-रत' शरण—मैथिली के अभिमानी।
भूल परापर - भेद - भावना भ्रम में सानी—
बने प्रेम रसखान सुना हरि-कथा-कहानी।
प्रिय, सुहृदों के दृगों में
बनकर आँसू-जल लसे ;
शोकांजलियाँ रह गईं ,
हा ! मुंशीजी चल बसे।

(२)

पाई पूर्ण प्रसिद्धि सिद्ध होकर अजमेरी;
चतुराई को बना चुके थे अपनी चेरी।
दर्शन होते ही प्रहर्ष देता था फेरी ;
राजी प्राची के प्रभात-सी रात अँधेरी।
प्रियतम के अभिसार को
सार-वस्तु अनुमान के
'सुख-सिजिया सज' गोर में
सोए लंबी तान के।

(३)

ख़ास बात थी—'बात' विनोदी रस में डूबी
हर दिल में घर करने की रखती थी ख़ूबी।
घंटों सुनते हुए मित्र - मंडली न ऊबी ;
भूलेगा महबूब कौन उसकी महबूबी ?
बात बनाकर लोक में
बात चौगुनी कर गए ;
हाय ! बात - की - बात में
'ज़हरबात' से मर गए।

(४)

कौन कह सके क्रूर काल का न्याय निराला;
सूनी की भारती-भवन की नाटक-शाला।
काम योग्यता-पूर्ण न कुछ भी देखा-भाला,
प्रमुख पात्र को हटा दिया कह 'पचपन-साला'।
निपट निरंकुश काल पर
चल सकता कुछ यत्न जो,
'टीकमगढ़ - दरबार' क्या
जाने देता रत्न तो ?

(५)

कहाँ मिले अब हाय ! 'प्रेम' वह प्रेम-पुजारी ?
कहाँ मिले यह काव्य-कला-रत प्रतिभा-धारी ?
कहाँ मिले वह सरस-मधुर गायक मनहारी ?
कहाँ मिले वह हास्य-व्यंग्य की प्रतिमा प्यारी ?'
मुंशीजी के साथ ही
गुण-गण सुरपुर को गए ;
जा सुरेंद्र - दरबार के
श्रेष्ठ राजकवि हो गए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्विटज़रलैंड से पत्र

[आचार्य डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

मेरा पिछला म्यूनिक (जर्मनी) से लिखा पत्र मिला होगा। पहली अगस्त, ३५ को सुबह ६ बजे हम लोग स्विटज़रलैंड को रवाना हुए थे। म्यूनिक के चारो ओर का प्रदेश बिलकुल समथल था, लेकिन धीरे-धीरे पहाड़ी प्रदेश शुरू हो गया। स्विटज़रलैंड में प्रवेश करने पर हम लोगों को कोई भारी परिवर्तन नहीं दिखलाई दिया, क्योंकि स्विटज़रलैंड का दक्षिणी भाग अधिक पहाड़ी नहीं है, न विशेष सुंदर ही। हम लोगों ने ज़्यूरिच में ठहरने को सोचा था, किंतु ४ बजे के लगभग जब ज़्यूरिच गाड़ी पहुँची, तो चिमनी और ट्रैम-वाली भारी बस्ती को देखकर हम सबकी राय सीधे आगे चल देने की हुई। सभ्यता से ऊबकर हम लोग प्राकृतिक सौंदर्य की खोज में थे। ज़्यूरिच स्विटज़रलैंड का सबसे बड़ा तिजारती शहर है। यहाँ की झील काफ़ी बड़ी है, लेकिन पहाड़ियाँ दूर होने के कारण दृश्य बहुत आकर्षक नहीं है। ज़्यूरिच के आगे प्राकृतिक दृश्य अधिक सुंदर है—ऊँचे पहाड़, नीची घाटियाँ, विशाल झीलें और लंबी सुरंगें। रेल बदलकर घंटे-भर में हम लोग ल्यूसर्न पहुँच गए। स्टेशन से बाहर निकलते ही ऐसा लगा, जैसा नैनीताल में मोटर-स्टैंड के क़रीब

स्विटज़रलैंड का नैनीताल—ल्यूसर्न

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

झील के किनारे आ निकले हों। अंतर केवल इतना था कि यहाँ का दृश्य अधिक बड़े पैमाने पर था, अधिक विशाल झील, चौड़ी घाटी तथा विस्तृत शहर। ल्यूसर्न का मौसम भी बिलकुल नैनीताल की ही तरह था। एक विशेष उत्सव होने के कारण रात को खूब रोशनी, चहल-पहल और रौनक़ थी।

ल्यूसर्न के चारो ओर घूमने को जाने की बहुत-सी जगहें हैं। दूसरे दिन हम लोग यहाँ के चीना पीक - पिलाटुस-पहाड़ की सैर को गए। एक घंटे झील पर स्टीमर में चलना पड़ा, और उसके बाद एक घंटे की चढ़ाई थी। यहाँ एक विशेष प्रकार की रेल चलती है। दोनो पटरियों के बीच में एक तीसरी पटरी काँटेदार है, जिसमें एक तीसरे बीच के पहिए के काँटे हिलगे रहते हैं। रेल का सिर्फ़ एक छोटा-सा डिब्बा रहता है, जिसमें बैठने की जगहें बराबर ऊँची होती जाती हैं। पीछे से एक छोटा-सा एंजिन धक्का देता है। इस लिफ़्टनुमा रेल की रफ़्तार सड़क कूटने के एंजिन की रफ़्तार से ज़्यादा न होगी, लेकिन चढ़ाई असर ४५ डिगरी से भी ज़्यादा होने के कारण इस धीमी रफ़्तार में भी बाज़ लोग घबराते थे। यह रेल यहाँ एक नई चीज़ थी। बादल हो जाने की वजह से ऊपर विशेष आनंद नहीं आया। पिलाटुस-पहाड़ की चोटी ७,००० फ़ीट ऊँची है, लेकिन स्विटज़रलैंड के ७,००० फ़ीट होने की वजह से ठंड यहाँ मंसूरी से भी कहीं अधिक थी। एक-दो जगह तो जाड़े का बर्फ़ अभी तक बाक़ी पड़ा था। शाम को जल्द ही हम लोग ल्यूसर्न वापस चले आए, क्योंकि आतिशबाज़ी का वार्षिक उत्सव था। चारो तरफ़ से हज़ारों आदमी तमाशा देखने आए थे। बूँदाबाँदी होने की वजह से रौनक़ कुछ कम रही। आतिशबाज़ी अच्छी थी, यद्यपि पंद्रह मिनट ही छूटी। इस ज़रा-से तमाशे के लिये लोग मीलों से आए थे, और घंटों खड़े रहे।

पिलाटुस-पहाड़ पर जानेवाली तीन पटरियों की विशेष रेल

इतवार, चौथी तारीख़ को सुबह ८ बजे हम लोग स्विटज़रलैंड की राजधानी बर्न होते हुए जेनेवा को रवाना हुए। १० बजे हम लोग एक गाड़ी से बर्न उतर गए। स्टेशन पर ही असबाब जमा करके शहर का

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

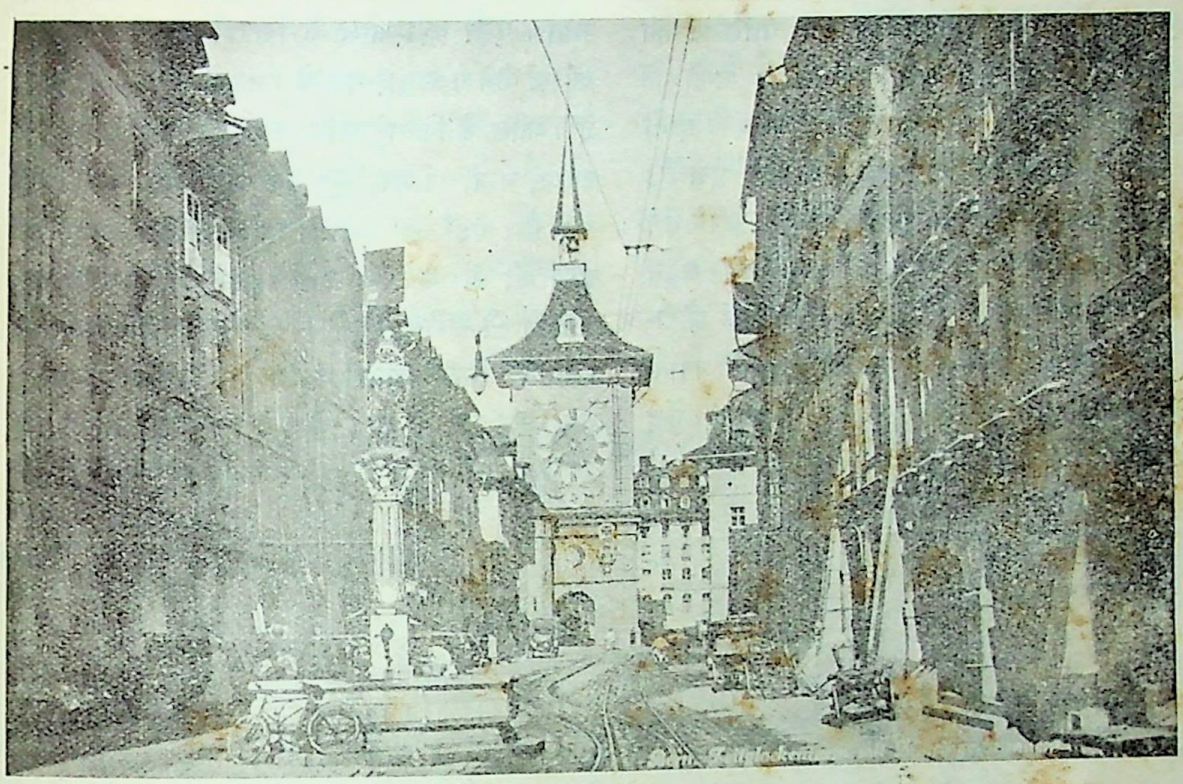

बन की पुरानी बस्ती का बाज़ार

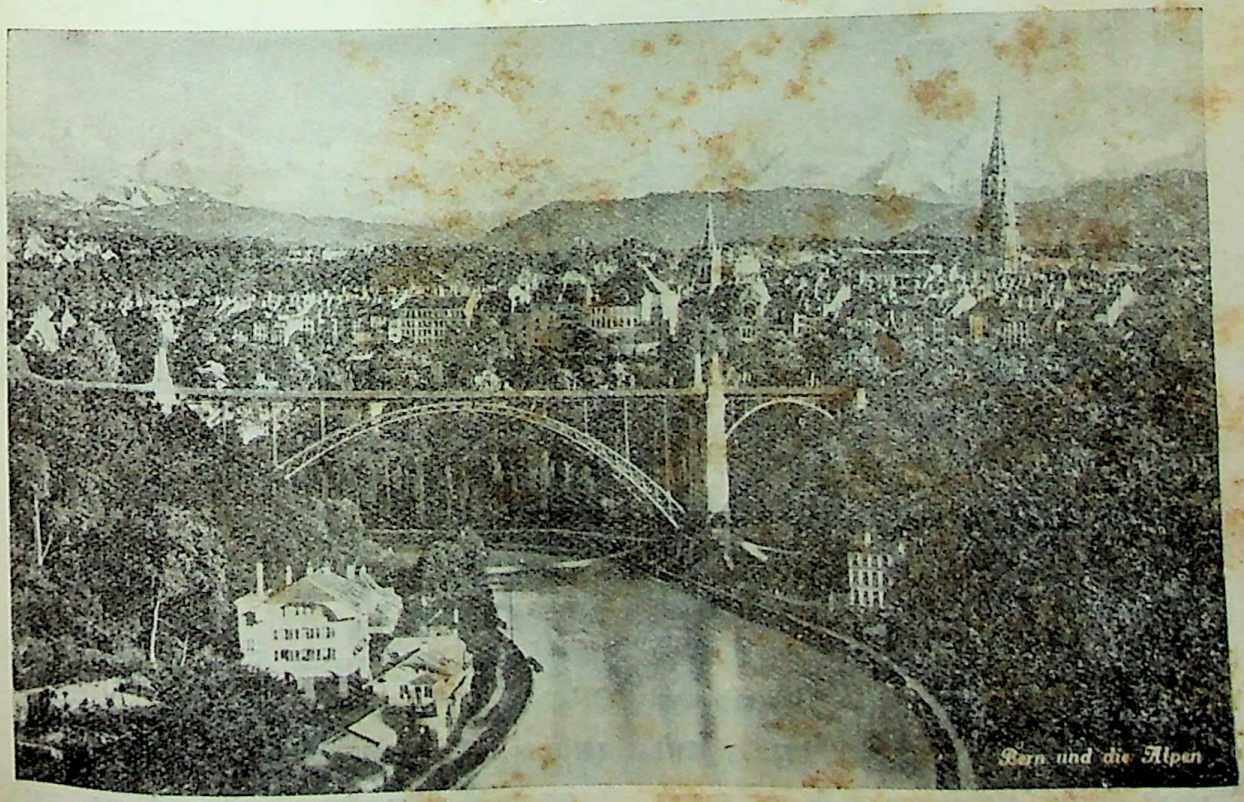

स्विटज़रलैंड की राजधानी—बर्न

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक चक्कर लगाया। स्विटज़रलैंड की पार्लिमेंट की इमारत यहाँ ही है। शहर एक गहरी घाटी के इधर-उधर पहाड़ी पर बसा है। शहर के दोनो हिस्सों को मिलाने के लिये बड़े ऊँचे-ऊँचे पुल हैं। जगह सुथरी है। यहाँ का पुराना बाज़ार अपने ढंग का निराला है। पतली सड़क के दोनो ओर बहुत लंबे-लंबे नीचे बरांडे चले गए हैं। इन्हीं में छोटी-छोटी दूकानें खुलती हैं। २ बजे की गाड़ी से रवाना होकर ५ बजे हम लोग अंतरराष्ट्रीय परिषद् के केंद्र जेनेवा पहुँचे।

अंतरराष्ट्रीय संघ का केंद्र—जेनेवा

जेनेवा इसी नाम की झील के किनारे उस पतले हिस्से पर बसा है, जहाँ से रोन-नदी निकलती है। यह झील बहुत ही बड़ी है। चौड़ी तो इतनी अधिक नहीं है कि दूसरा किनारा न दिखलाई पड़े, लेकिन लंबाई बहुत काफ़ी है। आधी झील से रेल उसके किनारे आ गई थी, किंतु इस आधे हिस्से ही को क्रास करने में एक घंटे से अधिक लग गया। ऐसी बड़ी झील के किनारे पर बसे होने के कारण जेनेवा समुद्र-तट के नगरों के समान लगता है। झील के किनारे लंबी साएदार सड़कें, नहाने के स्थान, नावें, स्टीमर, दूर पर पहाड़ियाँ। शहर काफ़ी बड़ा है। यहाँ की भाषा फ्रांसीसी है। पहला दिन घूमने ही में कट गया। दूसरे दिन सुबह कुछ घड़ियों की ख़रीदारी हुई, तथा तीसरे पहर मि० रघुनाथ राउ से मिलने अंतरराष्ट्रीय मज़दूर-संघ के दफ़्तर गए। मज़दूरों के काम के घंटे घटाने वग़ैरह के लिये यह संघ यत्न कर रहा है। इस दफ़्तर में मि० राउ एकमात्र भारतीय हैं। यह महाराष्ट्र युवक हैं, एक फ्रांसीसी महिला से विवाह कर लिया है, और अब यहाँ के ही हो गए हैं। उनकी स्त्री आजकल पहाड़ गई हुई थीं। इस संघ के निकट ही 'लीग ऑफ़ नेशंस' का भी दफ़्तर है। लीग की नई इमारत इस साल पूरी हो जायगी। वह भी दूर नहीं है।

यह पत्र मैं जेनेवा-झील पर स्टीमर में बैठा पूरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कर रहा हूँ। आज बुधवार, ७ अगस्त को सुबह रामकुमारजी पेरिस के लिये रवाना हो गए। हम लोग ६½ बजे के स्टीमर से झील के दूसरे सिरे वीलनव जा रहे हैं। वहाँ ११½ बजे पहुँचकर, १२ बजे की रेल से चलकर इटली के प्रथम बड़े नगर मिलान शाम के ६ बजे पहुँच जायँगे। जेनेवा से वेनिस का सफ़र बहुत लंबा होने की वजह से मिलान में रात-भर रुक जाने का विचार है। वहाँ का गिरजा-घर बहुत प्रसिद्ध है। कल सुबह अगर समय मिला, तो उसे देखने का भी विचार है। झील का यह चार-पाँच घंटे का सफ़र बहुत आनंद का है। स्टीमर कई सौ आदमियों के बैठने का है। हर १५-२० मिनट पर घाटों पर रुक-रुककर सवारियाँ उतारता-चढ़ाता चलता है। किनारे के गाँवों, खेतों तथा पहाड़ियों का दृश्य ख़ूब निकट से देखने को मिल रहा है। धूप होने की वजह से घमाने का आनंद भी बहुत दिनों बाद मिल रहा है।

स्विटज़रलैंड का विशेष आनंद पहाड़पर बड़ी-बड़ी झीलें होने के कारण है। अगर उदयपुर का मौसम नैनीताल की तरह होता, तो इससे मिलता-जुलता आनंद वहाँ मिल सकता था। फिर सबसे बड़ी बात यहाँ सुविधाओं की है। पहाड़ की बर्फ़ीली चोटियों तक रेलें जाती हैं, होटल हैं, तथा खेलने, घूमने-फिरने का पूरा प्रबंध है। प्राकृतिक सौंदर्य और सुविधाओं के मिश्रण के कारण योर-

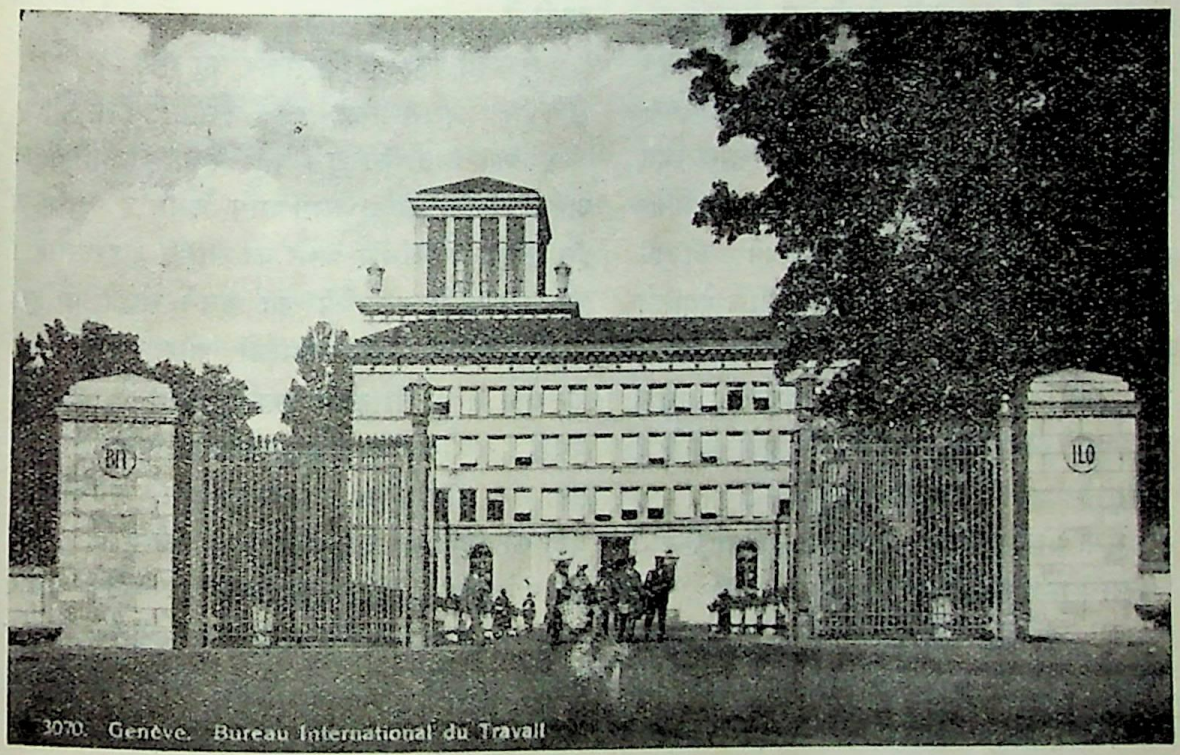

अंतरराष्ट्रीय मज़दूर-संघ कादफ़्तर—जेनेवा

पीय लोग और उनकी नक़ल में भारतीय यहाँ बहुत आते हैं। यहाँ जर्मन, फ्रेंच और इटालियन तीन भाषाएँ चलती हैं। शहरों में दुकानों, होटलों और रेल वग़ैरह के दफ़्तरों में अँगरेज़ी से भी काम निकल जाता है। रेल के डिब्बों में सूचनाएँ वग़ैरह यहाँ की तीनो भाषाओं में लिखी दिखलाई पड़ीं। हम लोग पहाड़ों की चोटियोंवाले भागों में नहीं जा सके। वहाँ जाने के लिये योरप के जाड़ों का सामान साथ में होना चाहिए था।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यशोधरा

(आलोचना)

(गतांक से आगे)

[साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न]

शोधरा-काव्य में यशोधरा केवल पत्नी के ही रूप में नहीं है, वह वात्सल्य-प्रेम-परिपूर्ण हृदय की माता भी है। जब विरहिणी गोपा का लाल रुदन करने लगता है, तब पति-परित्यक्ता, विरहिणी यशोधरा अपने आपको सँभाल नहीं पाती। उसे इस समय खीझ पैदा हो जाती है। वह कहती है—

चुप रह, चुप रह, हाय अभागे!
रोता है, अब किसके आगे?
तुझे देख पाते वे रोता।
मुझे छोड़ जाते क्यों सोता?
अब क्या होगा? तब कुछ होता,
सोकर हम खोकर ही जागे!

यहाँ हम देखते हैं कि यशोधरा यह विचारती है कि कदाचित् राहुल के रोने पर सिद्धार्थ वात्सल्य-प्रेम से प्रभावित हो गृह-त्याग न करते। परंतु माता की ममता में दूसरे ही क्षण उसका रोष बह जाता है, और वह वात्सल्य से प्रेरित हो कह उठती है—

बेटा, मैं तो हूँ रोने को,
तेरे सारे मल धोने को,
हँस, तू है सब कुछ होने को।

इसमें मानो माता की ममता उमड़ पड़ी है। स्थानाभाव से इसकी अधिक विवेचना नहीं की जा सकती। यशोधरा के हृदय में पति-प्रेम और पुत्र-प्रेम का द्वंद्व छिड़ जाता है। इसी से वह कह उठती है—

तुझको क्षीर पिलाकर लूँगी,
नयन-नीर ही उनको दूँगी।

पुत्र को छाती का दूध और पति को आँखों का पानी, कितना श्रेष्ठ समासमय कथन है। सचमुच इन शब्दों में गंभीर अर्थ का सागर लहराता है। पुत्र-प्रेम और पति-प्रेम का इतने संक्षेप में, इस कौशल से ऐसा सच्चा, टकसाली और गंभीर वर्णन कर जाने में गुप्तजी को सफलता मिली है, उस पर बधाई! यशोधरा, राजवधू यशोधरा पति-विरह में पुनः मग्न होती है। उसे रह-रहकर अपनी हीन दशा की स्मृति का दंशन व्याकुल करता है। साथ ही पति और संतान के प्रति कर्तव्य उसे अधीर बनाते हैं। इसी व्याकुलता में उसकी सहानुभूति नारी-जाति से होती है। वह विश्व में नारी-जाति की इसी हीनता पर आँसू बहाती है। यहाँ हम देखते हैं कि यशोधरा का चरित्र महत् से महत्तर हो गया है। जिस समय वह अपनी ओर देखती है, उस समय व्याकुल हो कह उठती है—

चेरी भी वह आज कहाँ, कल थी जो रानी,
दानी प्रभु ने दिया उसे क्यों मन यह मानी।

अभिमानिनी, परित्यक्ता, पतिव्रता यशोधरा का आत्मगौरव और उसका यह विलाप नारीत्व के स्वाभिमान-भरे हृदय का पवित्रतम, तेजोमय रूप विकसित करता है। इसी समय वह विश्व में नारी-जाति की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रेम-बद्ध दयनीय दशा देखती है, और स्वजाति की सहानुभूति में मग्न हो ऐसी बात कह देती है, जो सर्वथा अतुलनीय है। स्त्री-जाति की प्रेममयी विवशता का ऐसा सच्चा वर्णन कदाचित् ही कहीं मिले। कहती है—

अबला-जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी—
आँचल में है दूध, और आँखों में पानी।

इन दो पंक्तियों में काव्य का जो सौंदर्य है, नारी-जीवन की जो व्याख्या है, वह साहित्य-संसार में दुर्लभ है।

एक बार पुत्र-प्रेम और दूसरी बार पति-प्रेम, दोनों को ख़ूब सोच-समझकर एक ही तराज़ू पर तौलते हुए यशोधरा ने जो कुछ कह डाला है, वह सचमुच अद्वितीय ही है। कर्तव्य की निष्ठा से युक्त, प्रेममयी नारी की जीवन-व्याख्या करने में कविवर गुप्तजी ने यशोधरा के मुख की निम्न-लिखित दो पंक्तियों में रस का सागर लहराया है। वह कहती है—

मेरा शिशु-संसार यह
दूध पिए, परिपुष्ट हो,
पानी के ही पात्र तुम
प्रभो, रुष्ट या तुष्ट हो।

इन पंक्तियों में राहुल-जननी यशोधरा का वात्सल्य और अपार पति-प्रेम तो है ही, पर साथ ही पत्नीभाव की अपेक्षा कवि ने मातृभाव को जिस ढंग से श्रेष्ठ ठहराया है, वह सराहनीय है। उसकी झलक में जो स्वर्गीय ज्योति है, वह अत्यंत उज्ज्वल है। वह पुत्र को दूध और पति को प्रेमाश्रु का अधिकारी स्वीकार करती है। इस दूध-पानी में नारी-जाति की कहानी निहित है। इतने पर भी गोपा की विरह-वेदना उसे व्याकुल करती है। राहुल के विषय में वह सोचती है—

भव का यह विभव साथ
थाती भर किंतु हाथ।
ले लें कब लौट नाथ?
सौंप बचे चेरी।

राहुल के "मा-मा" कहकर पुकारने पर वह कहती है—

आ, मेरे अवलंब, बता
क्यों 'अंब-अंब' कहता है?
'पिता-पिता' कह बेटा, जिनसे
घर सूना रहता है।

यहाँ यशोधरा के वात्सल्य पर पति-प्रेम प्रबल हो उठा है। वह पति-विरह की ज्वाला में जलती है, पर राहुल के पालन की अभिलाषा से किसी प्रकार जीवन धारण करती है। इसी से वह स्पष्टतया कहती है—

गोपा गलती है, पर उसका राहुल तो पलता है।
अश्रु-सिक्त आशा का अंकुर देखूँ कब फलता है?
आली, चक्र कहाँ चलता है।

अब यशोधरा और राहुल का संवाद प्रारंभ होता है। इस संवाद में वात्सल्य, प्रेम और विरह का अच्छा वर्णन है। इसके बाद मा यशोधरा पुत्र राहुल के साथ खेलने लगती है। वह राहुल से अपनी विरह-वेदना छिपाती है, पर उसकी आँखों के आँसू उसका रहस्य प्रकट कर देते हैं, और वेदना-गोपन में वह असफल होती है। यहाँ राहुल कहता है—

यहाँ पिता की मूर्ति यही—
मेरे तेरे बीच रही।
तू इसको ही देख वही,
सुध ही शोध बिसार गई!

फिर कहता है—

अब की तू छिप देख कहीं,
पर लेना निःश्वास नहीं;
पकड़ा दें जो तुझे वहीं
बेटा, मैं यह वार गई।

राहुल की एक बात से विरहिणी यशोधरा काँप उठती है। मानो उस समय उसके आत्म-शासन का पोत वेदना के ज्वार में डूब जाता है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राहुल और यशोधरा के संवाद का वह अंश यह है—

राहुल—अंब, तात कब आएँगे ?

यशोधरा—धीरज धर बेटा, अवश्य हम
उन्हें एक दिन पाएँगे।
मुझे भले ही भूल जायँ,
वे तुझे क्यों न अपनाएँगे।
कोई पिता न लाया होगा,
वह पदार्थ वे लाएँगे।

राहुल — माँ तब पिता-पुत्र हम दोनों
संग-संग फिर जाएँगे।
देना तू पाथेय, प्रेम से
विचर-विचरकर खाएँगे।

इसी बात पर यशोधरा चौंकती है। पति चले गए, अब पुत्र भी जानेवाला है, यह विचार यशोधरा को विचलित कर देता है। राहुल स्वयं अपने कथन को विचार, माता यशोधरा के दुःख की कल्पना करके कहता है—

पर अपने दूने सूने दिन तुझको कैसे भाएँगे ?

इस पर यशोधरा का अंतःकरण विचलित हो उठता है। वह काँपकर सोचती और कहती है—

हा राहुल ! क्या वैसे दिन भी
इस धरती पर धाएँगे।
देखूँगी बेटा, मैं जो भी
भाग्य मुझे दिखलाएँगे।

यहाँ फिर कर्तव्यपरायणा, क्षत्रियाणी यशोधरा का आत्मशासन अपने तेजोमय उज्ज्वलतम रूप में प्रकट हो दुर्बलता के अंधकार को चीर देता है। इसी से यशोधरा राहुल के पिता के साथ चले जाने के संकल्प के उत्तर में कहती है—

तो भी तेरे सुख के ऊपर मेरे दुःख न छाएँगे।

राहुल को जब डीठ लगने के डर से यशोधरा डिठौना लगाना चाहती है, तब वह विरहिणी यशोधरा के विरहाधिक्य को बढ़ानेवाले वाक्य बाल-सुलभ भोलेपन में किस प्रकार कहकर उसकी अवस्था का चित्र खींच देता है, यह निम्न-लिखित छंद में दर्शनीय है। कहता है—

कैसी डीठ ? कहाँ का टोना ?
यही डीठ लगने के लच्छन छूटे खाना-पीना,
कभी काँपना, कभी पसीना, जैसे-तैसे जीना ?
डीठ लगी तब स्वयं तुझे ही, तू है सुध-बुध-हीना,
तू ही लगा डिठौना, जिसको काँटा बना बिछौना।

साधारणतया यह देखा जाता है कि लोग संसार में अपने कष्टों को बहुत अधिक समझते और कहते हैं, परंतु दूसरों के कष्टों को उतना नहीं मानते। पर वेदना के विषय में यशोधरा की यह संकुचित वृत्ति नहीं है। जब दासी गंगा उस निरवधि-प्रिय-विरह-पीड़िता से सीतादेवी के विषय में कहती है—"तपस्विनी सीता देवी इसी प्रकार पति-परित्यक्ता होकर आदि कवि के आश्रम में स्वामी का ध्यान करके कुश-लव के लिये जीवन धारण करती होंगी।"—तब यशोधरा कहती है—"सखी, सीतादेवी ने बहुत सहा। संभवतः मैं उतना न झेल सकती।" जब वह शकुंतला आदि की विरह-वेदना का स्मरण दिलाती है, तब यशोधरा कहती है—"अहो ! अभागिनी गोपा ही एक दुःखिनी नहीं है। उसकी पूज्या पूर्वजाओं ने भी बड़े दुःख उठाए हैं। उनके बल से मैं भी किसी प्रकार सह लूँगी, गंगा।" जब गौतमी सिद्धार्थ को निर्दय कहकर पुरुष-जाति पर कटाक्ष करती है, तब उत्तमा पतिव्रता गोपा स्वामी में दोष की भावना को हृदय में स्थान नहीं देती। वह गौतमी से कहती है—"अरी, तू उन्हें निर्दय कैसे कहती है ? वह तो किसी कीट-पतंग का दुःख भी नहीं देख सकते।" इस पर गौतमी कहती है—"तभी न हम लोगों को इतना सुख दे गए हैं ?" इस व्यंग्य के उत्तर में यशोधरा गर्व-पूर्वक कहती है—"नहीं, वह अपने दुःख का भागी बनाकर हमें अपना सच्चा आत्मीय सिद्ध कर गए हैं, और हम सबके सच्चे सुख की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खोज में गए हैं।" यहाँ अपने आदर्श पति पर यशोधरा के गर्व की अभिव्यंजना बड़ी उत्तमता से हुई है। इसके पश्चात् वह राहुल के साथ खेलती है। इसमें उसके मातृहृदय का प्रतिबिंब है। वेदना के ऊपर हँसी का कौतुक और संतान के प्रति ममता तथा कर्तव्य की भावना को अभिव्यक्त करने में गुप्तजी इसमें भी अपने सम्मान के अनुकूल ही लिख सके हैं। एक बार राहुल माता से गाने का आग्रह करता है। पुत्र का आग्रह देख यशोधरा कहती है—"गाती हूँ बेटा! उनके लिये रो रही हूँ, तो तेरे लिये गाऊँगी क्यों नहीं?" इसके बाद वह गाती है। यह गाना विरह-वर्णन में काव्य-कौशल की चरम सीमा को प्राप्त है। मुक्तक काव्य की कला में जिन काव्य-गुणों का होना श्रेष्ठ समझा जाता है, वे सब उत्तमता से रक्खे गए हैं। साथ ही हृदय के भाव की गंभीरतम अभिव्यक्ति बड़ी श्रेष्ठता से हुई है। पाठकों के समक्ष उसे रख देना ही उपयुक्त होगा—

रुदन का हँसना ही तो गान।
गा-गाकर रोती है मेरी हृत्तंत्री की तान।
मींड़-मसक है कसक हमारी, और गमक है हूक,
चातक की हुत-हृदय-हूति जो, सो कोइल की कूक।
राग हैं सब मूर्च्छित आह्वान।
रुदन का हँसना ही तो गान।
छेड़ो न वे लता के छाले, उड़ जावेगी धूल,
हलके हाथों प्रभु के अर्पण कर दो उसके फूल,
गंध है जिनका जीवन-दान।
रुदन का हँसना ही तो गान।
यदि उमंग भरता न अद्रि के ओ तू अंतर्दाह,
तो कल-कलकरकहाँनिकलता निर्मलसलिल-प्रवाह?
सुलभ कर सबको मज्जन-पान।
रुदन का हँसना ही तो गान।
पर गोपा के भाग्य-भाल का उलट गया वह इंदु;
टपकाता है अमृत छोड़कर ये खारी जल-बिंदु।
कौन लेगा इनको भगवान?

इस गीत की श्रेष्ठता के विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है। इसी के बाद यशोधरा के चरित्र का प्रधान पहलू आता है। कविवर गुप्तजी ने यशोधरा के विरह-वर्णन के साथ-साथ एक सिद्धांत-पक्ष भी रक्खा है। वह है कर्म-योग का। लोक-कल्याण के कर्म भगवदर्पण बुद्धि से करना भागवत-धर्म या वैष्णव-धर्म के कर्म-योग में प्रधान रूप से अंगीकृत है। यशोधरा भी भक्ति-पथ स्वीकार कर पति-भक्ति करती है, अतएव वह भी उस निष्काम कर्म-योग के पक्ष में है, जो लोक-कल्याण-कारक है। गुप्तजी ने यशोधरा के द्वारा इस सिद्धांत को अनेक स्थलों में परोक्ष रूप से उठाया है। इसमें यशोधरा का चरित्र और भी समुज्ज्वल हो उठा है। वह अपने पतिदेव के समान संसार को नश्वर समझकर कर्म-संन्यास के पक्ष में नहीं है। वह संसार और मुक्ति के संबंध में विचार करती हुई कहती है—

निज बंधन को संबद्ध सयत्न बनाऊँ,
कह मुक्ति भला किस हेतु तुझे मैं पाऊँ?

संसार परिवर्तनशील भले ही हो, पर यह कर्म-भूमि कर्म-योग की परंपरा-युक्त होने से सर्वथा असार और त्याज्य नहीं है। यशोधरा कहती है—

माना, ये खिलते फूल सभी झड़ते हैं,
जाना, ये दाड़िम, आम सभी सड़ते हैं,
पर क्या यों ही ये सभी टूट पड़ते हैं,
या काँटे ही चिरकाल हमें गड़ते हैं!
मैं विफल तभी, जब बीज-रहित हो जाऊँ।

वह संसार के भोगों से घृणा नहीं करती, वरन् विधान-विहित इंद्रियोपभोग को नियम और शम-दम-पूर्वक भोग्य मानती है। मृत्यु को भी वह भय का कारण नहीं मानती, क्योंकि वह तो रूपांतरित होना-मात्र है। कहती है—

यदि हममें अपना नियम और शम-दम है,
तो लाख व्याधियाँ रहें स्वस्थता सम है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वह जरा एक विश्रांति, जहाँ संयम है;
नव-जीवन-दाता मरण कहाँ निर्मम है?
भव भावे मुझको और उसे मैं भाऊँ।

एवं—भोगें इंद्रिय जो भोग विधान-विहित हैं;
अपने को जीता जहाँ वहीं सब जित हैं।
निज कर्मों ही की कुशल सदैव मनाऊँ।

तात्पर्य यह कि यशोधरा को मोक्ष अथच कर्म-संन्यास की आवश्यकता नहीं जान पड़ती। वह दुःख-विनिवृत्ति के हेतु संसार-त्याग की आवश्यकता भी नहीं मानती। निष्काम कर्म ही दुःख से छूटने का उपाय है, ऐसी धारणा रखती है। वह इसी से जन्म-मरण के चक्र या फेर से भयाकुल नहीं है। वह तो इसी लोक में कल्याणमय भावनाओं को भरने के हेतु, कर्म-योग-रत रहने के हेतु बार-बार जन्म लेने की अभिलाषा भी रखती है। कहती है—

ये चंद्र-सूर्य निर्वाण नहीं पाते हैं;
ओझल हो-होकर हमें दृष्टि आते हैं।
झोंके समीर के झूम-झूम जाते हैं;
जा-जाकर नीरद नया नीर लाते हैं।
तो क्यों जा-जाकर लौट न मैं भी आऊँ,
कह मुक्ति भला किस हेतु तुझे मैं पाऊँ?

इसमें कर्म-योग का सिद्धांत निहित है। वैष्णव-संप्रदाय के गीता-प्रतिपादित श्रेष्ठतम कर्म-योग में भगवान् की प्रतिज्ञा लोक-कल्याण के हेतु निम्न-लिखित रूप में प्रकट हुई है, जो सब भागवतधर्मानुयायी महानुभावों को चिर काल से मान्य है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत!
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्;
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।

गीता-प्रतिपादित इस कर्म-योग से उत्तमा पतिव्रता यशोधरा की उक्त भावना किस प्रकार मिल जाती है, यह द्रष्टव्य है। कर्म-योग के सिद्धांत को कर्म-संन्यास के सिद्धांत से श्रेष्ठ मानकर ही निस्संशया-पन्नहृदया यशोधरा अपने कर्म-संन्यास-प्रेमी मोक्ष-मार्गी, प्रेमाधार पति सिद्धार्थ को लक्ष्य कर कहती है—

आओ, प्रिय! भव में भाव-विभाव भरें हम,
डूबेंगे नहीं कदापि, तरें न तरें हम।
कैवल्य काम भी काम, स्वधर्म धरें हम,
संसार-हेतु शतबार सहर्ष मरें हम।
तुम सुनो क्षेम से, प्रेम-गीत मैं गाऊँ।

इससे सुंदर, मार्मिक वर्णन और क्या हो सकता है? धन्य हो यशोधरा! नारी-जाति का यही पुण्यमय, प्रेम-स्निग्ध रूप लोक-कल्याणकारक है। इस चरित्र की अवतारणा करनेवाले यशस्वी कवि-वर गुप्तजी ने निस्संदेह अक्षय कीर्ति प्राप्त कर ली है। भारतीय नारी की यह श्रेष्ठता कितने बड़े गौरव की वस्तु है! किस देश की नारी इस महान् चरित्र की छाया छू सकती है। सचमुच यशोधरा का चरित्र इतना ऊपर उठ गया है, जिसकी हम कल्पना तो कर सकते हैं, पर छाया नहीं छू सकते।

आगे चलकर हम देखते हैं कि यशोधरा के विमल प्रेम में मोह का लेश भी नहीं है। वह प्रेम की उस उच्चतम भूमिका पर पहुँच चुकी है, जहाँ से अपने उपास्य प्रेम-पात्र की थोड़ी भी मलिनता उसे सह्य नहीं है। इसी से तो वह कहती है—

गए हो, तो यह ज्ञात रहे।
स्वामी, व्यर्थ न दिव्य देह वह
तप-वर्षा-हिम-वात सहे।
बहे उधर गंगा की धारा,
इधर तुम्हारी गिरा अपारा,
प्लावित कर दे अग-जग सारा,
हाँ, युग-युग अवदात रहे।
यशोधरा की बात रहे।

जो स्त्रियाँ मोह-वश अपने पतियों को कर्तव्य-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

च्युत करती हैं, उन्हें यशोधरा के इस कथन पर मनन करना चाहिए। भगवान् फिर से भारत में यशोधरा-जैसे नारीत्व की मंगलमय सृष्टि करें, यही इस चरित्र के चित्रण करनेवाले हमारे राष्ट्रीय कवि श्रीमैथिलीशरण गुप्त की कामना जान पड़ती है।

(आगामी अंक में समाप्य)

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—

'गोनोकिलर'

[रजिस्टर्ड]

GONO REGD ORIGINAL TRADE MARK KILLER

नक़ली से सावधान ! ख़रीदने से पहले मुर्ग़ा-छाप सीलबंद पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, बिट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बीबी के गुलाम

चौकोर सूराख़ में गोल खूँटी !
फ़ैशनेबिल बी० ए०-पास बीवी के दुम-दबाऊ, अनपढ़ पतिदेव !!

अवसर न खोइए ।

आज ही ऑर्डर दीजिए !

'सुधा' के ११वें वर्ष की खुशी में कुछ खास पुस्तकें आधी क़ीमत में !

केवल ऑक्टोबर-मास तक !!

यह अवसर निकल जाने पर फिर हाथ न आएगा !!!

पत्र लिखकर सूची मँगा लें !!!!

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मेरी-रूमाल

[श्रीयुत बदरीनारायण शुक्ल एम्० ए०]

(१)

मिस्टर लामटोंगा उन आदमियों में से हैं, जो अपने को सफ़ाई के चौबीस अवतारों का एकीकरण मानते हैं। कपड़े तो धोबी को हम-आप सभी देते हैं, किंतु थाली-लोटा देते हमने मि० लामटोंगा को ही देखा, त्योहार या शादी-विवाह के उपलक्ष में इनाम-भेंट-स्वरूप नहीं, धोने के लिये। कुछ मित्रों का तो यहाँ तक कहना है कि मि० लामटोंगा को कई बार धोबी के यहाँ जाते उन्होंने स्वयं अपनी आँखों देखा है। हाँ, इतना हमें उन मित्रों से पूछना है कि उन्होंने उन्हें धोबी के यहाँ धुलने के लिये जाते देखा या कुछ धुलाने के लिये। घर के कमरे और फ़रनीचर धोते तो हमने भी कई बार देखा है। इससे आप यह न समझ बैठें कि मि० लामटोंगा कंजूस हैं, राजों का (राजों का नहीं!) पेट मारने के लिये ख़ुद घर पोत लेते हैं या बढ़इयों की बाढ़ रोकने के लिये टेबिल-कुर्सी में पॉलिश-वार्निश स्वयं कर लेते हैं। घर से बेजा दबाव पड़ता हो, सो बात भी नहीं। ऐसा वह स्वेच्छा से, स्वच्छता का नाम स्वच्छ रखने के लिये करते हैं। जूतों के विषय में जोखू नाई कहता है कि जब रात का भोजन कर आप सिगरेट जलाकर आराम-कुर्सी पर पैर तानते हैं, उस समय मि० लामटोंगा किवाड़ भीतर से बंद करते और कोब्रा-पॉलिश की डिब्बी खोलते हैं।

एक दिन मि० लामटोंगा अपनी बाइसिकिल पोंछ रहे थे। बाइसिकिल-शब्द अँगरेज़ी के दो शब्दों से बना है—बाई और सिकिल। बाई यदि हिंदी का शब्द होता, तो मतलब कुछ और ही होता; पर अँगरेज़ी में बाई का भद्दा-सा अर्थ है दो, और सिकिल माने हैं हँसिया। संयुक्त शब्द का अर्थ होता है दो हँसिए। (मुल्ला) दोप्याज़े के-से नाम का आजकल आम रिवाज न होने से लोग उसे बाइसिकिल ही कहने लगे, नहीं जहाँ नॉर्थ को उत्तर, साउथ को दक्षिण, एलेक्ज़ेंडर को अलक्षेंद्र कहते हैं, वहाँ अवश्य ही बाइसिकिल को 'दो हँसिया' या 'हँसियाद्वय'-सा कुछ कहते। मि० लामटोंगा अपने दो हँसिए से ऊदल के 'दोनो हाथ करै तरवारि' की तरह धान काटते हैं या नहीं, यह तो नहीं मालूम, पर रास्ता काटते उन्हें हज़ारों आँखों ने चश्मा और बिना चश्मा के देखा है। उसे वह अक्सर साफ़ भी कर डालते हैं, उस तरह नहीं, जैसे मित्र के घर बैठकर आप तश्तरी में रक्खे पान साफ़ करते हैं। उस दिन 'दो हँसिया' पोंछते समय ही एक सज्जन आ गए। मैं सज्जन ही कहूँगा, आप मोज़ों के एजेंट को चाहे जो कहें। बोले, "आदाब अर्ज़, कहिए, क्या हो रहा है?"

मि० लामटोंगा उन आदमियों में से नहीं, जिन्हें किसी की उपस्थिति का ज्ञान तुरंत हो जाता है। वह किसी के पैरों की ध्वनि, कपड़ों की सड़सड़ाहट, साँस के शब्द से चौंक उठनेवाले जीव नहीं। आपके खाँसने-खखारने की वह उतनी ही परवा करते हैं, जितनी आप बिल्ली के बोलने की। जूते की तड़ातड़ के विषय में तो नहीं कह सकते, पर उनकी खटखट और किसी के बोल उठने का उन पर उसी प्रकार असर नहीं पड़ता, जैसे बिगड़ी मोटर पर प्रार्थना करने का। अपने काम में लगे रहते हैं, आपकी ग़रज़ हो, आइए; घंटों बैठिए,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नहीं चले जाइए। आपसे कोई और चाहे पूछ ले, कैसे आए, कहाँ चले, इत्यादि, मि० लामटोंगा ऐसी ग़लती कभी नहीं करते। उनका कहना है कि लोग मतलब से ही किसी के यहाँ जाते हैं। जल्दी मचाकर उन्हें घबरा देने से क्या फ़ायदा। उनको समय देना चाहिए।

उत्तर न मिलने पर सज्जन फिर बोले —"मैंने कहा, आदाब अर्ज़।"

दूसरा कोई कह उठता—"वाह, ख़ूब कहा आपने! क्या कहने हैं! दुबारा कहिए।" पर मि० लामटोंगा 'दूसरे कोई' नहीं हैं, मि० लामटोंगा हैं।

सज्जन ने इस बार कुछ ज़ोर से कहा—"क्या हो रहा है जनाब? मोज़े देखिएगा? बढ़िया लुधियाना के सॉक्स।"

मि० लामटोंगा उठे। जिस कपड़े से बाइसिकिल पोछ रहे थे, उससे हाथों को साफ़ करते हुए बोले—"आपने आँखें कब से धोबी को नहीं दीं?"

मि० एजेंट हिंदी समझते थे, पर मि० लामटोंगा की हिंदी उनके दिमाग़ से टकराकर वापस आ गई। उसका वह कुछ भी अर्थ न लगा सके। केवल "जी" करके रह गए। उनका जो न प्रश्न-सूचक था, न स्वीकारसूचक, न निषेधवाचक। केवल 'जी' था।

मि० लामटोंगा बोले—"आपकी आँखों पर का मोज़ा मैला है, उसे निकाल फेंकिए, और आँखें धोबी को दीजिए। आपकी आँखें साफ़ नहीं हैं, नहीं आप कभी न पूछते कि मैं क्या कर रहा हूँ। सफ़ाई एक ऐसा गुण है, जिसकी भारतवर्ष को भोजन से भी अधिक आवश्यकता है। न-जाने नेताओं की अक़्ल कहाँ हवा खा रही है, जो देश की गंदगी दूर करने का उद्योग नहीं करते। मेरा मतलब यह नहीं कि सब सफ़ाई के दारोग़ा हो जायँ, पर हाँ, यदि हो भी जायँ, तो देश का लाभ ही हो। स्वास्थ्य, संपत्ति और समुन्नति के लिये सफ़ाई हवा से भी ज़्यादा ज़रूरी है, क्योंकि गंदी हवा में आप भी नाक बंद कर लेते हैं। अगर कभी आप नेता हो सकें, तो मेरी बात ध्यान में रखिएगा। केवल चेहरा साफ़ कर लेना ही सफ़ाई नहीं....."

एकाएक मि० लामटोंगा को चुप हो जाना पड़ा, क्योंकि एजेंट साहब अपना 'आँखों का मोज़ा', जिसे आप चश्मा कहना चाहेंगे, सँभालते वहाँ से खिसक गए थे, और बिना नोटिस दिए ही मि० लामटोंगा को हवा से बातें करने के लिये छोड़ गए थे। किंतु अच्छा ही हुआ कि वह महाशय वहाँ न थे, नहीं मि० लामटोंगा को साइकिल के पोछन से चेहरे पर का पसीना पोछते देख लेते। व्याख्यान की झोंक में वह समझ बैठे थे कि उनके हाथ में रूमाल है।

मि० लामटोंगा का कार्य-क्षेत्र इतना विस्तृत है कि आप उन्हें धोबी, राज, मोची या—या—न-जाने वह कौन शब्द है—नहीं कह सकते। वह एक होकर भी सब कुछ हैं। आपको शब्दों की खोज में इश्तहार न निकालना पड़े, इसलिये मि० लामटोंगा अपने को सफ़ाई के चौबीस अवतारों का एकीकरण मानते हैं।

(२)

चेहरा साफ़ रखने का तो आजकल आम रिवाज है। आप मोटर-ड्राइवर हों, चाहे गवर्नर; चैन की बंसी बजाते हों, चाहे फ़ाक़े-मस्ती में मुब्तिला; जो बात आप नहीं भूलते, वह है सुबह उठते ही दाढ़ी से पूर्वजन्म का बदला निकालना, ज़रा आपको पढ़ा-लिखा-भर होना चाहिए। किंतु यदि आधुनिक फ़ैशन के किसी ग़ुलाम की इस बात में मि० लामटोंगा से आप तुलना करें, तो आपको पहाड़-राई का अंतर देख पड़ेगा। सफ़ाई में यदि मि० लामटोंगा प्रमाण हैं, तो चेहरे की सफ़ाई में आदर्श। दिन में वह कितनी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बार 'शेव' करते हैं, यह कहना तो कठिन है, हाँ, यह मालूम है कि फाँसी पर लटकते व्यक्ति की तरह उनका उस्तरा दीवार पर लगे आईने के पास सदा झूलता ही रहता है। मौक़ा मिलते ही वह चील-झपट्टा मार बैठते हैं। आप मि० लामटोंगा के घर पधारिए, आपके लिये बढ़िया कुरसी तैयार है। फ़ुर्सत मिलने पर मि० लामटोंगा सामने बैठ जायँगे, और आपसे सच्चे मित्र की नाईं प्रेम-पूर्वक बातें करेंगे। आधे घंटे की बातचीत में पाँच बार स्वच्छता पर व्याख्यान दे जायँगे। सारे समय उनका हाथ गार्डरूम के सेंट्री की तरह गाल और दाढ़ी पर चलता रहेगा, मज़े के लिये नहीं, ख़ुफ़िया पुलिस की तरह खूँटी की तलाश में। एक भी बाल कहीं करकराया कि विना वाक्य पूरा किए मि० लामटोंगा कमरे के भीतर घुसकर ग़ायब हो जायँगे। पाँच-ही-सात मिनट आपको राह देखनी पड़ेगी, जब लौटेंगे, तो चेहरा ख़ून से लथ-पथ देख आप पहले डरकर भागना चाहेंगे, उठकर खड़े हो जायँगे। फिर बात समझ में आते ही आप ऐसा भाव प्रकट करेंगे, मानो मि० लामटोंगा के स्वागत के लिये खड़े हुए हैं। बैठते ही छुरे की दुष्टता के लिये आप बरबस दुखी हो उठेंगे। किंतु विश्वास मानिए, जितना आप सोचते हैं, बेचारे छुरे का उतना क़ुसूर नहीं। उसने घबराकर पहले मुक्ति की प्रार्थना की, कई बार हाथ छुड़ाकर भागना चाहा, जब इच्छा-पूर्ति न हो सकी, तब सत्याग्रह ठाना, उस पर भी प्राण न बचे, तो खिसियाकर दाँत चला दिया। मरता क्या न करता! "आरत काह न करै कुकरमु!" तब से वह हो गया है ख़ूनी, विना रक्त चाटे उसकी तृप्ति नहीं होती। लेकिन चाहे सफ़ाई के लिये हो, चाहे छुरे की आत्मा को संतुष्ट रखने के लिये, इस प्रकार ख़ून बहाते-बहाते मि० लामटोंगा का चेहरा कई स्थानों से इस तरह ऊँचा-नीचा हो गया है, जैसे भूकंप के बाद बिहार-प्रांत की भूमि।

मि० लामटोंगा उपदेशक तो हैं, पर पर-उपदेश-कुशल नहीं। अपने सिद्धांतों का मज़बूती से पालन करते हैं। दिन में उतनी ही बार नहाते हैं, जितनी बार एक सच्चा मुसलमान नमाज़ पढ़ता है। शरीर का हरएक अंग—कान, आँख, नाख़ून आदि—साफ़ रखते हैं। नाक तो दिन-भर साफ़ किया करते हैं। उनकी हरएक चीज़ आपको साफ़ ही मिलेगी। अगर कुछ साफ़ न मिलेगा, तो उनका वह रूमाल, जो कोट की ऊपरी जेब से ऐंठ के साथ संसार देखने के लिये बाहर निकलना चाहता है, पर फिर मानो लज्जा से सिकुड़कर अंदर ही दबका रह जाता है। लोग कहते हैं कि इस प्रकार अपनी इच्छा का ख़ून करते उसे बारह साल हो गए। एक युग की तपस्या के बाद भी उसमें यह शक्ति नहीं आ सकी कि कोट का मोह क्षण-भर के लिये भी छोड़ सके। घोर कलजुग है, और क्या। किसी ज़माने में लोग एक बार ईश्वर का नाम लेकर ही, विना पुल बाँधे, विना नाव पर चढ़े संसार-सागर इस तरह लाँघ जाते थे, जैसे मुर्ग़ी का बच्चा कूड़े का ढेर लाँघ जाता है। अब बेचारे इस निर्दोष रूमाल के हाल पर ग़ौर फ़रमाइए। बारह साल दिल्ली में रहकर भाड़ ही झोंकता रहा।

रूमाल का रंग कैसा था, यह तो कहना कठिन है, पर उसकी जो झलक जेब से दिखाई पड़ती है, उससे इस समय उसके पीले होने में अणु-मात्र भी संदेह नहीं। एक-दो माह की क़ैद में ही लोग मुरझाकर पीले पड़ जाते हैं, फिर वह तो बेचारा रूमाल है। अगर बारह साल की क़ैद से उसके चेहरे पर शिकन आ गई, वह पीला पड़ गया, तो हमें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं देख पड़ती। आप भले ही ताज्जुब से दाँत-तले उँगली दबा लें। कैसे वह अभागा मि० लामटोंगा की मुट्ठी में आया या उनके चंगुल में फँसा, इसके विषय में भिन्न-भिन्न मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मि० लामटोंगा एक बार सीलोन गए थे, वहाँ से लौटते समय उन्होंने जहाज़ के डेक पर एक पोटली पड़ी पाई। पोटली में कुछ भुने चने बँधे थे। मि० लामटोंगा उन्हें खा गए, और कपड़ा पसंद आ जाने से जेब में रख लिया। दूसरे लोग कहते हैं, नहीं, जर्मनी से एक सज्जन ने अपने किसी मित्र को बड़े दिन का उपहार भेजा था। पोस्टमैन को एक चवन्नी नज़र करके मि० लामटोंगा बीच में ही उसके मालिक बन बैठे। तीसरे दल का कहना है कि एक बार किसी भोज के मौक़े पर मालिक की नज़र बचाकर उन्होंने उसे अपनी जेब के हवाले कर दिया था, तब से डर के मारे उसे बाहर नहीं निकालते, नज़र-क़ैद रखते हैं। चौथा मत यह है कि वह रूमाल ही उनकी पैत्रिक संपत्ति है, इसलिये मि० लामटोंगा उसे बड़े यत्न से रखते हैं। कहने का मतलब यह कि जितनी जीभें, उतनी बातें। बहुत प्रयत्न करके भी लोग किसी दृढ़ निश्चय पर नहीं पहुँच सके हैं।

एक दिन कुछ मित्रों का एक डेपुटेशन मेरे घर पहुँचा। बड़ी आनाकानी करने और अकाट्य बहाने देने पर भी भले आदमियों ने पिंड न छोड़ा। उनका कहना था कि मैं मि० लामटोंगा के पास 'इंटरव्यू' की दरख़्वास्त भेजूँ, और मंज़ूर होने पर जाकर उस रूमाल की कहानी दरयाफ़्त करूँ। इस कार्य में सैकड़ों कठिनाइयाँ और हज़ारों बाधाएँ थीं, उनका संदूक़ खोलकर मैंने उन्हें उनके सामने बिखेरना चाहा, उन्हें बताना चाहा कि इस महत्कार्य के लिये जितने सत्साहस की आवश्यकता है, उसका शतांश भी मुझमें नहीं; फिर पूछने पर भी मि० लामटोंगा रूमाल का ठीक-ठीक हाल बतला ही देंगे, इसका क्या निश्चय? अगर चोरी का माल है, तो झूठ भी बोलकर टाल सकते हैं। इसके अतिरिक्त उनके पास जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं। कहीं झोंक में आकर मेरी आँख या मेरा मुँह या मुझे ही धोबी को दे बैठे, तो मित्र लोग फिर क्या करेंगे? मान लिया, ऐसा न भी हुआ, तो उनके व्याख्यान का गोला तो है। उसकी दनादन मार के सामने मैं बेहोश तक हो सकता हूँ, फिर भला मित्रों का काम कैसे होगा? बात यों कि मेरी कमज़ोरी है व्याख्यान। मतलब, मैं व्याख्यान से उतना ही डरता हूँ, जितना आप चंदा देने से। मेरी नज़रों में व्याख्यानदाता शेर-चीते से भी भयानक है। इनसे भेंट होने पर बचाव का रास्ता है, क्योंकि बचपन में ही डाँड़ काछी के बग़ीचे के बड़े-से-बड़े पेड़ पर चढ़कर फल चुराने के लिये बदनाम हो चुका हूँ। व्याख्यान के गोले के लिये किस ढाल का प्रयोग करना चाहिए, यह बात अभी तक समझ में नहीं आई, इसीलिये घबराहट को दबोचने का मौक़ा मिल जाता है।

किंतु जिनका निश्चय दृढ़ होता है, उनके सामने दलीलों की दाल नहीं गलती। मेरी सारी प्रार्थना, सारी युक्तियाँ बेकार गईं। 'इंटरव्यू' के बोझ से मेरे कंधों का ही क्यों, मेरा भी कचूमर निकालना तय कर वे लोग चले गए।

(३)

जिन दिनों मैं बेकार था, मुझे ज्योतिषियों से मिलने का ख़ास शौक़ था। सच तो यों है कि ज्योतिषी और बेकार में सुरती-चूने का संबंध है। अगर आप ज्योतिषी हैं, तो बेकारों की तलाश में चक्कर काटते नज़र आएँगे; बेकार हैं, तो ज्योतिषियों के दर्शनेच्छु। आप जानते हैं कि आपकी बेकारी दूर करने में ज्योतिषी आपसे अधिक असमर्थ हैं, फिर भी आशा के ऐसे समुद्र में आपको वह ग़ोते खिलाता है कि उससे अपने अशांत हृदय को क्षणिक शांति देने का लोभ आप संवरण नहीं कर सकते। अपने उस जीवन में मैंने बहुत-से ज्योतिषियों से परिचय प्राप्त किया था। उनमें से कुछ ने तो मुझे किसी राजा का दीवान बनाया था, कुछ ने मैजिस्ट्रेट, कुछ ने बड़ा भारी ताल्लुक़ेदार, और कुछ ने एक धुरंधर वकील। यद्यपि देश के

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दुर्भाग्य से मैं कुछ भी न हो सका, फिर भी मैं उन परोपकारी जंतुओं के आदेशों पर अटल विश्वास रखता हूँ। एक ज्योतिषी ने मुझे बताया था कि मेरे लिये कन्या का चंद्रमा शुभ है। अतः जब मैं कोई बड़ा काम करता हूँ, तब कन्या के चंद्रमा को ज़ोर लगाने के लिये अपने साथ कर लेता हूँ। एक से दो भले। इसीलिये मि० लामटोंगा को 'इंटरव्यू ग्रांट' कर देने पर भी तब तक मेरे दर्शन से वंचित रहना पड़ा, जब तक चंद्रमा कन्या-राशि में इतमीनान से बैठ न गया।

मि० लामटोंगा से घर के बरांडे में ही मुलाक़ात हुई, जैसे इंतज़ार में बैठे हों। तपाक से मिले। "मि० हरूँ!" कहकर हाथ बढ़ाया।

मुझे मालूम था कि मुलाक़ात होने पर मि० लामटोंगा हाथ मिलाते हैं, अतः जहाँ चलते समय लक़दक़ कपड़े पहने थे, वहाँ कारबोलिक सोप से एक बार हाथ भी धो डाले थे। सच कहने में क्या शरम! मैं कारबोलिक सोप की सस्ती, पाँच पैसे-वाली बट्टी इस्तेमाल करता हूँ। इससे सैकड़ों लाभ हैं—सफ़ाई रखती है, शरीर की बदबू दूर करती है, पैसे बचाती है, इत्यादि-इत्यादि।

मैंने भी मिलाने के लिये अपना दाहना हाथ फैलाया। मालूम हुआ, जैसे मि० लामटोंगा उसे अपने हाथ में लेकर ख़ूब प्रेम से झकझोरेंगे। पर एकाएक वह रुक गए। एक तीक्ष्ण दृष्टि मेरे हाथ पर पड़ी, आँखें फैलीं, नथने ऊपर उठकर गिरे, और दूसरे क्षण मि० लामटोंगा सामने से ग़ायब थे। मैं हाथ फैलाए इस आशा में खड़ा ही रह गया कि कोई उसे अपने हाथ में लेकर पहले नीचे, फिर ऊपर, फिर नीचे, फिर ऊपर करे। कैसी अच्छी प्रथा है यह! नमस्कार से लाख दरजे अच्छी। उसमें दो हाथों का ख़र्च होता है, इसमें एक से ही काम चल जाता है। उसमें इस प्रकार हाथ जोड़ते हैं, जैसे लट्ठ तानने का इरादा ज़ाहिर कर रहे हों, इसमें प्रेम से दूसरे की शक्ति अपने में खींच लेते हैं। सहसा मेरी नींद टूटी। देखा, तो हाथ पर सफ़ेद-सफ़ेद कुछ रक्खा था, और कहीं से उस पर पानी गिर रहा था। सामने मि० लामटोंगा हथेली पर रक्खे साबुन पर पानी डाल रहे थे, साथ ही कह रहे थे—"स्याही का दाग़ इस तरह नहीं छूटता, पत्थर पर हाथ रगड़िए, पत्थर पर।"

मुझे तो काठ मार गया। इतना धोने पर भी स्याही का वह हलका-सा दाग़ कैसे लगा रह गया, समझ में न आया। उस दिन स्याही के प्रति मेरे जो भाव हुए, उन्हें मन की व्यथा के समान मन में ही रखना अच्छा। साथ ही उन लोगों के प्रति ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हुआ, जो 'डेबरचा' हैं, यानी बाएँ हाथ से क़लम की कपाल-क्रिया करते हैं, और मिलाते समय दाहना हाथ पसार देते हैं। कुछ भी हो, अपनी ग़लती से मैंने वह अवसर प्रस्तुत कर लिया था, जिसके डर से हृदय घर से पैर बाहर धरते ही धक्-धक् करने लगा था। मैगज़ीन खुल चुकी थी, सामान तैयार था, बैठते ही दनादन गोले छूटने लगे। हाथ की सफ़ाई से दिमाग़ की सफ़ाई होने लगी।

मि० लामटोंगा कहने लगे—'सफ़ाई-से ईश्वरीय गुण की क्यों आप लोग इतनी अवहेलना करते हैं, समझ में नहीं आता। आपने कभी यह भी सोचा है कि आपके हाथ गंदे रहने से क्या परिणाम हो सकता है? हमेशा छोटी-सी बात को भी ख़ूब ध्यान से इस प्रकार बड़े रूप में देखना चाहिए, जैसे वैज्ञानिक लोग सूक्ष्मवीक्षण-यंत्र से प्लेग के कीड़े देखते हैं। आपके इन गंदे हाथों के कारण आपको तथा आपके संपर्क में आनेवाले आपके मित्रों और कुटुंबियों को हैज़ा यानी कॉलरा हो सकता है, जो उनसे उनके मित्रों, उन मित्रों से उनके मित्रों में होते-होते सारे संसार में फैलकर दुनिया के नाश का कारण हो सकता है। वैसे तो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विद्वानों के कथनानुसार संसार एक दिन नष्ट होगा ही, पर आप क्यों दूसरे का काम अपने हाथ में लेकर दूसरे की रोज़ी में दख़ल देना चाहते हैं? यह बेकारी का ज़माना है, बेकार बे..."

और न-जाने वह क्या-क्या कहते गए, मुझे याद नहीं। मैं तो बैठा अपने को सँभालने में पड़ा था। मेरी हिम्मत अपनी मोटर स्टार्ट कर चुकी थी, होश ने पंख फैला लिए थे, दिल की धड़कन इस्तीफ़ा लिखने बैठ गई थी कि सहसा मि० लामटोंगा की दाढ़ी के एक बाल ने मुझे बाल-बाल बचा लिया। मैंने जितने लोगों से भेंट की है, सबको ही एक स्वर से दाढ़ी की निंदा करते, उसके ख़िलाफ़ कुछ-न-कुछ कहते पाया है। लोग उसे व्यर्थ, कष्टप्रद, जंजाल आदि नामों से पुकारते ज़रा भी नहीं शरमाते। किंतु ये लोग वे हैं, जिनकी मि० लामटोंगा से कभी मुलाक़ात नहीं हुई है। अगर एक बार ये उनके सामने से होकर निकल जायँ, तो सौ बार माफ़ी माँग-कर दाढ़ी को जंजाल की जगह जीवन-दायिनी न कहें, तो जो चोर की सज़ा, सो मेरी।

मुँह के साथ मि० लामटोंगा का हाथ भी चल रहा था। लेक्चर झाड़ते जाते थे, और दाहने हाथ से इस तरह दाढ़ी सहलाते जाते थे, जैसे माता बच्चे का सिर सहलाती है। अचानक एक झटके के साथ हाथ रुक गया। साथ ही जीभ इस तरह रुक गई, जैसे मैटर न होने पर क़लम रुक जाती है। आधा वाक्य मुँह से बाहर आकर अपने शेषांश की राह देखता खड़ा रहा, पर उस बेचारे को सूर्य का प्रकाश देखना न बदा था। जीभ तक आए शब्द पेट में लौट गए या दिमाग़ में, यह बात सिवा दाढ़ी महारानी के और कौन जान सकता है! मि० लामटोंगा की आँखें कुछ फैलीं, शरीर काँपा, फिर हिला, और दूसरे ही क्षण वह इस तरह ग़ायब हो गए थे, जैसे हवा में रक्खी मैथीलेटेड स्पिरिट।

अगर वायु-मंडल पूरी तरह प्रशांत हो, तो अपने को सँभालने के लिये पाँच मिनट बहुत हैं। अतः उस समय तक मैं काफ़ी स्वस्थ-चित्त हो गया था, जब कहीं से आवाज़ आई—"माफ़ करना, मैं अभी आया।" सिर घुमाकर देखा, तो दरवाज़े पर खड़े चेहरे की सफ़ेदी के अंदर से मि० लामटोंगा कह रहे थे। मेरी निगाह पड़ते ही वह झाग वहाँ से ग़ायब हो गया।

पाँच मिनट और बीते। उस समय तक हिम्मत की वह भगोड़ी मोटर फ़ेल हो चुकी थी, अतः जाने का कोई इंतज़ाम न देख उसने अपना सामान उतार लिया था, और थके, हताश यात्री की तरह बिस्तर बिछाने का स्थान ढूँढ़ रही थी। होश के पंख चिपक गए थे, जो अब तानने पर भी न खुलते थे, और स्याही ख़त्म हो जाने के कारण धड़कन का इस्तीफ़ा अधलिखा ही रह गया था, जिसे बेकार जान अब वह रद्दी की टोकरी में डाल देने की सोच रही थी। जब मि० लामटोंगा सफ़ाई-घर से निकले, उस समय मुझमें इतनी हिम्मत थी कि मैं मुस्किरा रहा था।

मि० लामटोंगा का चेहरा इस समय साफ़ था। झाग का नामोनिशान न था। किंतु गाल से दो स्थानों से ख़ून इस तरह धीरे-धीरे बह रहा था, जैसे आफ़्रिका के घने जंगलों में रबर के पेड़ से तरल रबर बहता है। घावों पर वह कुछ नमक-सा मल रहे थे।

मैंने कहा—"मि० लामटोंगा, आप ताज़ा ख़ून बेचने का रोज़गार क्यों नहीं कर लेते? बहुत-से डॉक्टर ख़रीदार मिल जायँगे, आए दिन उन्हें ताज़े ख़ून की ज़रूरत पड़ा करती है।"

मि० लामटोंगा मुस्किराए। उनकी मुस्किराहट कुछ अजीब-सी है। नहीं जानता, आप समझे या नहीं। मेरा मतलब यह कि क्या कभी बिल्ली को मुस्किराते देखा है आपने? यदि हाँ, तो मि० लामटोंगा का मुस्किराना आप समझ सकेंगे, अन्यथा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नहीं। बोले—"सलाह के लिये धन्यवाद। यही बात अमेरिका से एक पत्र-संपादक ने मुझे लिखी थी। जापान और रशिया से भी इसी आशय के कई पत्र आ चुके, पर सच तो यह है मि० खर्रू या घर्रू, जो कुछ भी आपका नाम हो, मैं ख़ून का व्यापार नहीं करना चाहता। अपना देश अभी इतना उन्नतिशील नहीं हुआ है, लोग न-जाने क्या कहेंगे। यही देखिए, जब वे सफ़ाई-से साधारण विषय....."

मैंने जल्दी से कहा—"आप तो जापान में ही पैदा हुए थे?"

मि० लामटोंगा इतने अकचकाए कि कुरसी से गिरते-गिरते बचे। उस आश्चर्य की लपेट में क्या कह रहे थे, सो भूल गए। विस्फारित नेत्रों द्वारा आस-पास आश्चर्य बिखेरते हुए बोले—"यह आपसे किसने कहा? मैं चीन-जापान-तुर्किस्तान में क्यों पैदा होने चला? यहीं उत्पन्न हुआ था हिंदुस्थान में, इसी भारतवर्ष में। जाबालिपत्तन उर्फ़ जबलपुर मेरी जन्म-भूमि है। मेरे माता-पिता यहीं रहते थे। मालूम नहीं, आपके मन में मेरे जापान में पैदा होने का विचार कैसेआया! कदाचित् मेरे नाम से आपको कुछ धोका हुआ है! मेरे ख़ानदान का नाम लामटोंगा कैसे पड़ा, यह भी जान लीजिए। मेरे पूर्वज टोंक के रहनेवाले थे, जहाँ से वे लाम पर जाया करते थे। लाम का अर्थ आप न जानते होंगे। लाम माने लड़ाई। इन्हीं दो बातों की याद अमर रखने के लिये उन्होंने लामटोंक शब्द बनाया, जो कालांतर में लामटोंगा होकर हमारा नाम हो गया। क्या आपसे किसी ने कहा है कि मैं जापान में पैदा हुआ था?"

"जी नहीं, कहा-वहा किसी ने नहीं। कौन कहेगा भला? आपके रूमाल रखने के ढंग से ही मैंने अंदाज़ लगाया।" मैंने कहा। चंद्रमा कन्या-राशि में हो, तो क्या? कब तक बेचारा ज़ोर मारेगा? जल्दी-से-जल्दी अपना मतलब पूरा करके मुझे खिसकना चाहिए।

"कैसा रूमाल? कैसा रूमाल? मैं रूमाल कैसे रखता हूँ? यह तो आधुनिक फ़ैशन है, सभी सभ्य पुरुष इस प्रकार कोट की जेब में रूमाल रखते हैं।" मि० लामटोंगा ने कोट की ऊपरी जेब में हाथ डालकर मानो रूमाल निकालना चाहा, पर तुरत उन्हें याद आया कि कोट नहीं पहने। हाथ बीच में रुककर एक अनुपस्थित तिनके को सीने पर से भगाने में लग गया।

मैंने कहा—"आपका रूमाल कुछ विशेष प्रकार का है। देखूँ, तो बता सकता हूँ।"

मि० लामटोंगा दो मिनट तक बैठे सोचते रहे, फिर उठकर अंदर चले गए। शीघ्र ही वह लौटे। मुट्ठी में एक मैली-सी काली चीज़ लिए थे। बैठकर उन्होंने उसे खोला; रूमाल था। सचमुच वह विशेष प्रकार का रूमाल था। १८ इंच लंबा-चौड़ा, मालूम नहीं, किस कपड़े का बना, पर अब पीला पड़ गया, वह रूमाल मामूली होने पर भी विचित्र था। उसके प्रत्येक इंच में एक कौआ कढ़ा था, जो अपनी चोंच में रोटी का एक टुकड़ा दबाए था, जैसे घर की मालकिन की आँखों में धूल डालकर रसोईघर से वह रोटी लेकर उड़ा जा रहा हो।

मेरे देख लेने पर मि० लामटोंगा ने उसे होशियारी से झाड़ा, मानो मेरी दृष्टि से उस पर जो धूल बैठ गई थी, उसे दूर किया। सतर्कता से धीरे-धीरे उसे तह किया, और तब मुट्ठी में दबा लिया, मानो उन्हें डर था कि रोटी के टुकड़े की तरह कोई कौआ उस रूमाल को भी न ले भागे। उस समय उनका चेहरा बड़ा शांत, पवित्र और उसी प्रकार के भावों से पूर्ण था, जो मंदिर में जाते समय श्रद्धालु भक्तों के मन में उठकर चेहरे पर फूट पड़ते हैं। मुट्ठी से झलकते एक कौए पर उनकी आँखें जमी थीं,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और वह धीरे-धीरे कुछ गुनगुना रहे थे। मैंने ध्यान देकर सुना, गा रहे थे—

A form more fair, a face more sweet
Ne'er hath it been my lot to meet.

कौआ सुंदर होता है, या बदसूरत, इस विषय पर मेरी बहस करने की इच्छा न थी, न मेरा विचार उनके भावों की साँकल तोड़ने का था, फिर भी तोप के गोलों का डर जल्द खिसकने पर मजबूर किए था। इसलिये मैंने कहा—"माफ़ कीजिए, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह रूमाल आपको कैसे मिला?"

छलछलाती आँखों से उस कुरूप कौए को घूरते हुए मि० लामटोंगा ने कहा—"यह? ओह! आह! यह? यह मेरी-रूमाल है। इसे मैं बारह साल से अपने हृदय के समान अपने हृदय पर ही रक्खे हूँ।" कहकर उन्होंने उस कौए को हृदय से लगा लिया।

जब बारह साल से उनके पास है, तब क़ानूनन वह उनकी संपत्ति है, उस पर उनका पूरा अधिकार है, हृदय पर रक्खें, चाहे कान में खोंसें। फिर मैं उसे लेने थोड़े आया हूँ, जो इस तरह बच्चों के समान मिनमिनाने लगे। मैंने कहा—"जी, डरिए नहीं। लूँगा नहीं। केवल पूछना चाहता हूँ कि यह आपको कहाँ मिला। बात यह है कि यद्यपि मैं किसी की चीज़ लेता नहीं फिरता, न मुझे आपके समान कौओं से विशेष प्रेम ही है—इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इसके लिये मैं आपको कुछ बुरा कहता हूँ, इससे तो और आपकी उदारता, विशाल-हृदयता प्रकट होती है। "आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।" फिर भी उत्सुकता का घोड़ा जब भड़क जाता है, तब कभी-कभी किसी वस्तु के विषय में ...."

मि० लामटोंगा ने टोककर कहा—"आप हिंदी जानते हैं?"

यह विषय था मेरे मन का। मैंने ऐंठकर कहा—"ख़ूब, ख़ूब अच्छी तरह। हिंदी तो मेरी मातृभाषा है। आप शौक़ से अपनी कहानी हिंदी में कहिए। इतमीनान रखिए, हिंदी का मैं विद्वान् हूँ।"

"कहाँ तक पढ़े हैं आप?"

यह प्रश्न ज़रा कड़ा था। जल्दी में कोई उत्तर न बन पड़ा। मैंने कहा—"जी, यहीं तो पढ़ा हूँ मैं, क्या—नाम—है—देखिए—उस—स्कूल में। हाँ, क्या कह रहा था? जी, तो आप कृपया यह बतलाने का कष्ट कर रहे थे कि यह सुंदर रूमाल कैसे आपके हाथ लगा। आप यह भी....."

"आपकी शिक्षा अधूरी है। आप हिंदी नहीं जानते, नहीं तो मेरी-रूमाल का मतलब समझ जाते।" मेरे चेहरे पर आँख गड़ाकर मुझे बरबस घबराहट की ओर ढकेलते हुए मि० लामटोंगा ने कहा—"मेरी-रूमाल में तत्पुरुष-समास है—मेरी का रूमाल। बारह साल हुए, जब मेरी ने मुझे दिया था, या यों कहिए, मेरी ने मेरे पास भिजवाया था।"

मुझे कुछ कहते न बनता, सो बात नहीं, मैं चुप रह ही गया। कुछ देर ठहरकर वह फिर बोले—"आप सोचते होंगे, यह मेरी कौन थी! मैं बतला देता हूँ। वह थी स्वर्ग की देवी, चंद्रमा की उज्ज्वला ज्योति, प्रातःकाल की कोमलता, ओस की सुंदरता। उसने कभी मुझे प्यार किया था। हम दोनों एक न हो सके, तो क्या हुआ। उस देवी ने मुझे प्यार किया था, यह विचार ही मुझे संतुष्ट करने के लिये काफ़ी है।"

कुछ देर शांति रही। मि० लामटोंगा अपने पूर्व-जीवन के मनश्चित्र में लीन थे, मैं अपने वर्तमान में मग्न था। एक दिल कह रहा था, अरे चला, जाने दो, ये सब उड़ने की बात हैं। चोरी छिपाने के लिये तुम्हें सीधा समझकर यों बहकाया जा रहा है। इनकी बातें मानने के पहले एक बार सोच लेना, सोच।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तुरंत दूसरा विचार धावा कर बैठता—छिः क्यों एक शरीफ़ आदमी पर नाहक़ शक कर रहे हो। सचाई देखो, उसके चेहरे से टपकती है। अगर ऐसा न होता, तो यह रूमाल मेरी-रूमाल न होकर मेरा रूमाल भी तो हो सकता था। फिर कौओं को इतना प्यार करने का तो अन्य कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता। मैं कौओं को प्यार क्यों नहीं करता? आप कौआ.....।

सहसा मि० लामटोंगा ने कहा—"आप सिगरेट पीते हैं?"

राम-राम, ऐसे सज्जन को मैं झूठा और चोर समझ रहा था। मन में बड़ी ग्लानि हुई। मैंने कहा—"ना-ना-ना, कष्ट न करिए। हाँ, अगर अतिथि-सत्कार का कर्तव्य बाध्य ही करता हो, तो थोड़ी सुरती और चूना आने दीजिए, मैं मिला लूँगा।" पहले मुफ़्त की सिगरेट ले लेने की इच्छा हुई थी, पर ब्राह्मणत्व ने पैर अड़ा दिया।

मि० लामटोंगा तनकर कुरसी पर बैठ गए। मेरी धोती की ओर इशारा करके बोले—"फिर वह काला दाग़ वहाँ कैसे आया? आप लोग कपड़े चाहे साफ़ पहन लें, पर सफ़ाई पर ध्यान नहीं देते। पहले सफ़ाई का मतलब समझिए। सफ़ाई वह न्यामत है.....।"

इस बार दाढ़ी द्वारा रक्षा होने की संभावना न थी। अतः तमाखू घर में ही फाँकने का निश्चय कर मैंने अपनी छड़ी सँभाली, और बिना 'जै रामजी की' किए वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

दुनिया में हलचल मचा देनेवाली अद्भुत पुस्तक

(आसामी, बंगाली तिलस्मी राज़ या ख़ज़ाना करामात)

यह वही अद्भुत पुस्तक है, जिसने भारत के कोने-कोने में हलचल मचा दी है, और जिसका पहला संस्करण हज़ारों की तादाद में, ५) मूल्य होते हुए भी, हाथोहाथ ख़त्म हो गया। पहले एडीशन पर हज़ारों आदमियों का यह कहना है कि यह पुस्तक नहीं, बल्कि नामर्दों को मर्द, बाँझों को संतान, रोगियों को नीरोग और हज़ारों प्राणियों को प्रतिवर्ष काल के मुख से बचानेवाली भारत के पूज्य महात्माओं की अद्भुत शक्ति का सचमुच भंडार (ख़ज़ाना चमत्कार) ही है। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश (आसाम), बंगाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण विद्या की अद्भुत लीलाएँ, जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं, बल्कि एक अद्भुत शक्ति का भंडार हाथ लगेगा, और इस विद्या की सचाई शीशे की तरह प्रकट हो जायगी। पुस्तक के बारे में हमारी गारंटी है। यदि किसी तरह आपको नापसंद हो, तो ३ दिन देखकर वापस कर सकते हैं। हम तुरंत मूल्य लौटा देंगे। इससे बढ़कर और क्या सचाई होगी? अब नए संस्करण में दसो अद्भुत वशीकरण आदि के परीक्षित, कभी न फ़ेल होनेवाले, प्रयोग बढ़ाए गए हैं। पृष्ठ-संख्या पहले से अधिक लगभग ६००। मूल्य वही ५), सजिल्द ।।।) अधिक, और डाक-महसूल ।।।) अलग है। परंतु ऑर्डर के साथ पेशगी रुपया भेजनेवालों को महसूल माफ़ होता है।

नोट—अब की बार पुस्तक का सस्ता एडीशन भी निकाला गया है। मूल्य ३॥), सजिल्द ४॥); महसूल अलग है। ऑर्डर में सजिल्द व सस्ता एडीशन के बारे में स्पष्ट लिखें, जिसमें भूल न हो।

पता—मैनेजर इंडियन स्टोर्स (१६) जेनरल मर्चेंट ऐंड बैंकर्स

शीलांग (आसाम)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गीत

[श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल']

सावन-घन गरजे-बरसे री।
श्यामल, सजल गगन घिर आए,
सुख-सुखमा सरसे री।

बूँदों के मिस आई पीड़ा,
अंतर-तर में करती क्रीड़ा,
फूट-फूट अग-जग में छाया
नवयौवन हरषे री।
सावन-घन गरजे-बरसे री।

प्रकृति पुलकिता स्नेह-सुधा सन,
रसिया-रस-उन्मद उन्मन मन;
आई तरुणाई प्रियतम-हित
यह जीवन तरसे री।
सावन-घन गरजे-बरसे री।

गीत

[श्रीयुत 'वचनेश']

अब तक मैंने तुझे न पाया;
तेरे प्रेम-नेम में फँसकर इतना समय बिताया!
दे सुवास सुमनों में तूने मुझको भ्रमर बनाया;
इधर-उधर रस लेता डोला, पर संतोष न आया।
खोजा, तो लोगों ने तुझको स्वाति-बुंद बतलाया;
मिलन-आस निर्जल रहकर मैं 'पिया-पिया' रट लाया।
चंद्र बना अब दरस रहा तू, मैं चकोर रट लाया;
परस-परसकर शीतल कर से क्यों इतना तरसाया?
आजीवन प्रज्वलित ज्योति प्रिय त्याग सकल छल-माया—
बन पतंग 'वचनेश' समाऊँ छोड़ द्वैतकर काया।

ख़िजाब छोड़ो
इस तेल से पका बाल काला पैदा होकर यदि सदा काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त।
थोड़ा पका बाल का ५), आधा से अधिक का ९) रु०।
बाल काला स्टोर्स, पो० कंसी सिमरी (दरभंगा)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुधा-चित्रावली

गुरुकुल काँगड़ी-वार्षिकोत्सव (१)
[गुरुकुल के छात्रों का व्यायाम-प्रदर्शन]

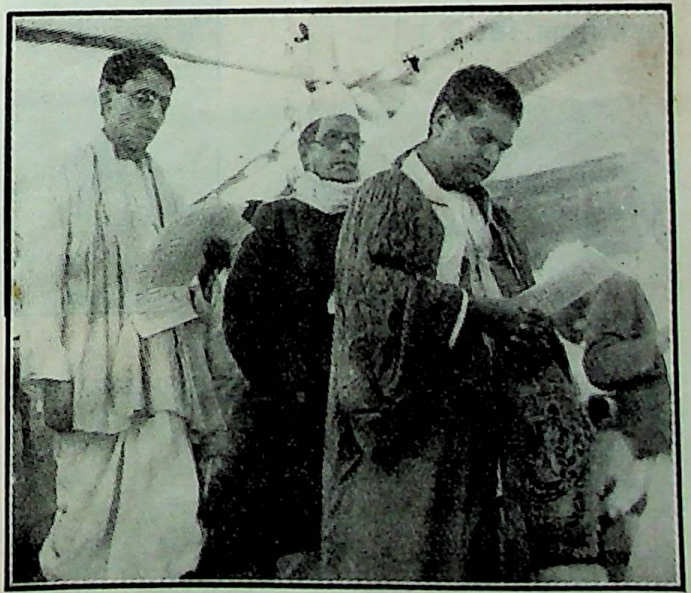

गुरुकुल काँगड़ी-वार्षिकोत्सव (२)
[दाहनी ओर से—पं० बुद्धदेव, श्रीयुत सत्यमूर्ति एम्० एल्० ए० और प्रोफ़ेसर सत्यव्रत उपाधि-वितरणोत्सव के अवसर पर मंत्र-पाठ कर रहे हैं।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

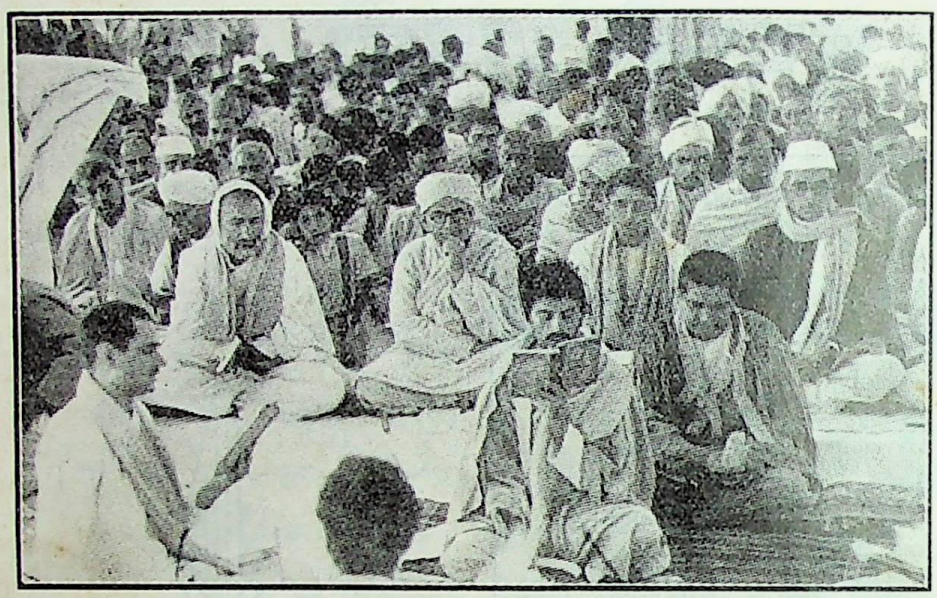

गुरुकुल काँगड़ी-वार्षिकोत्सव (३)

[उपाधि-वितरणोत्सव। बाँई ओर खान अब्दुलग़फ़्फ़ारखाँ, स्वामी सत्यानंद, प्रोफ़ेसर सत्यव्रत (मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल) और श्रीयुत सत्यमूर्ति एम्० एल्० ए०। दाहनी ओर से दूसरे, पुस्तक लिए श्रीयुत देव शर्मा (आचार्य गुरुकुल)]

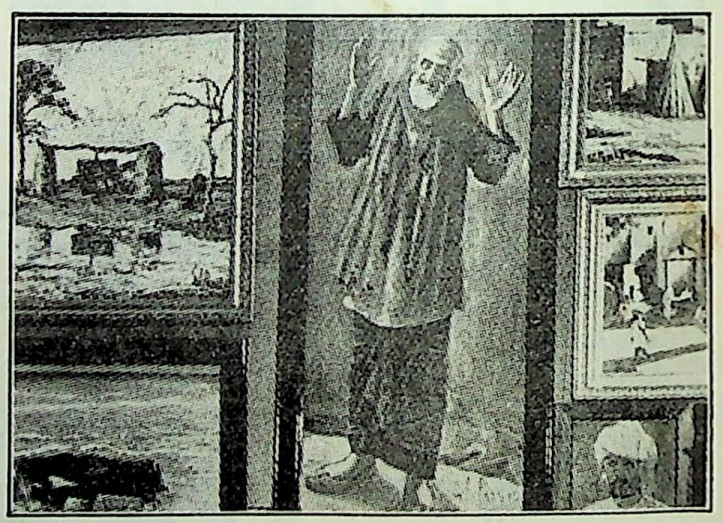

पंजाब-कला-प्रदर्शनी के चित्र (१)

[बीच में श्रीयुत एस्० एल्० पाराशर द्वारा अंकित 'पथ का उपदेशक'-नामक चित्र है।]

पंजाब-कला-प्रदर्शनी के चित्र (२)

[बाईं ओर के चित्र 'अनंत आनंद' के चित्रकार श्रीव्रजलाल को किसी भी माध्यम में चित्र बनाने के लिये गवर्नर द्वारा प्रदत्त १००) का पारितोषिक मिला है।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

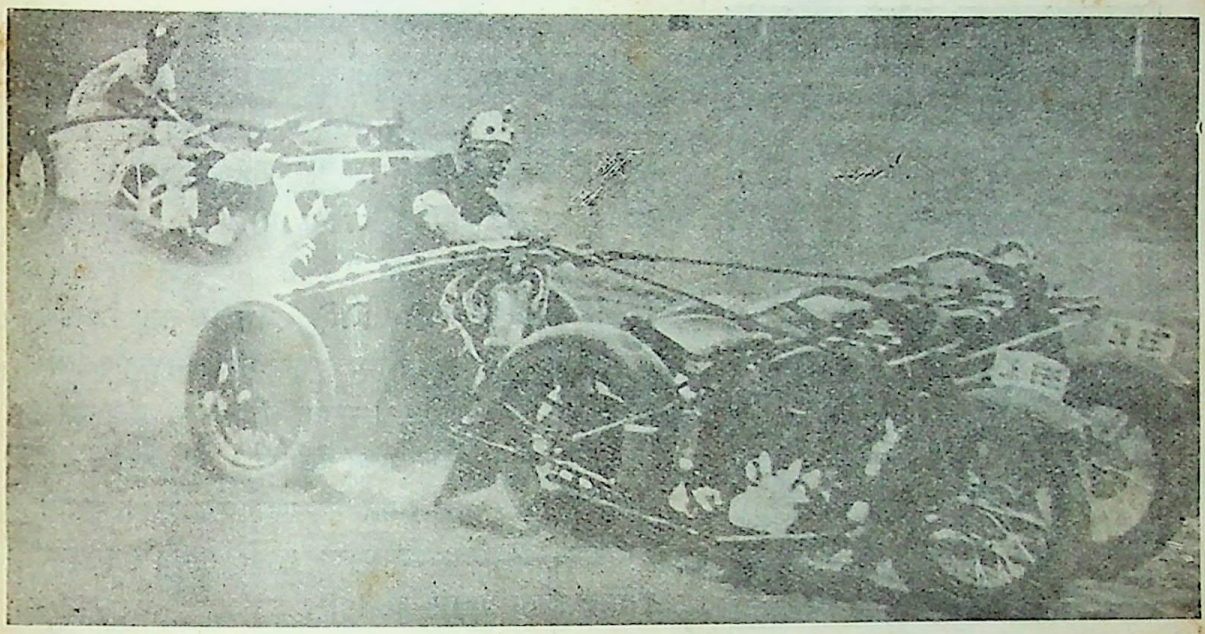

नई मोटर-साइकिल

[यह जर्मनी का नव आविष्कार है। इसकी रफ़्तार २०० मील फ़ी घंटे से ज़्यादा है।]

श्रीमती शकुतला-गंगाप्रसाद एम्० ए०, बी० टी०

[आपने पंजाब-विश्वविद्यालय से इस वर्ष अर्थ-शास्त्र में एम्० ए० पास किया है। कला-परीक्षार्थियों में आप प्रथम उत्तीर्ण हुईं, और प्रांत-भर में तृतीय।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भँवर जगतसिंह महता

[आपकी उम्र १४ वर्ष की है । इसी साल आपने हाईस्कूल-परीक्षा राजपूताना-बोर्ड से उत्तीर्ण की है, और शीघ्र ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने इँगलैंड जा रहे हैं। आप डॉक्टर मोहनसिंह महता एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, पी-एच्० डी०, बार-एट-ला, मिनिस्टर बाँसवाड़ा-स्टेट, कमिश्नर सेवा-समिति, बनारस तथा प्रवर्तक विद्या-भवन, उदयपुर के पुत्र एवं नीति-निपुण-कर्तव्य-परायण कुँवर तेजसिंहजी महता बी० ए०, एल्-एल्० बी०, मिनिस्टर उदयपुर (मेवाड़) के भतीजे हैं। भारत की ओसवाल-जाति में यही एक व्यक्ति हैं, जो इस उम्र में इँगलैंड विद्याध्ययन करने जा रहे हैं। ईश्वर इन्हें सफलता प्रदान करें ।]

श्रीयुत बदरीनारायण शुक्ल

[आप सुधा के सुपरिचित हास्य-रस-लेखक हैं । आपकी 'मेरी-रूमाल' - शीर्षक कहानी पृष्ठ २०१ पर पढ़िए। आपकी कहानियों को हम शीघ्र ही पुस्तकाकार निकालेंगे ।]

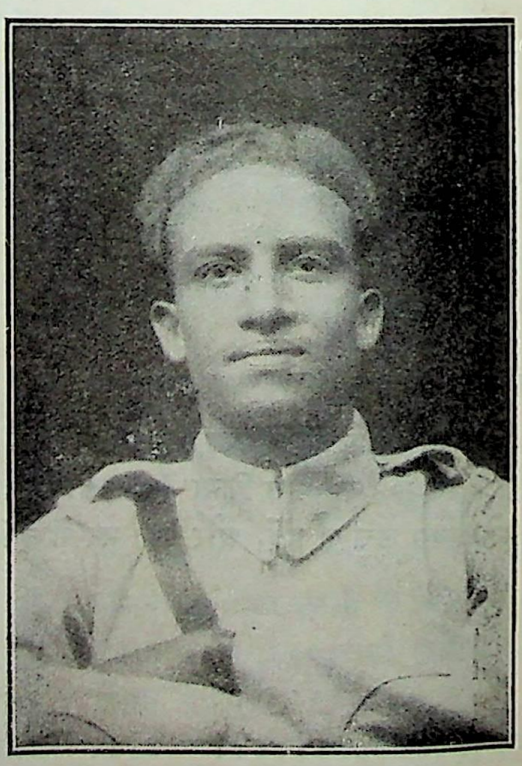

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

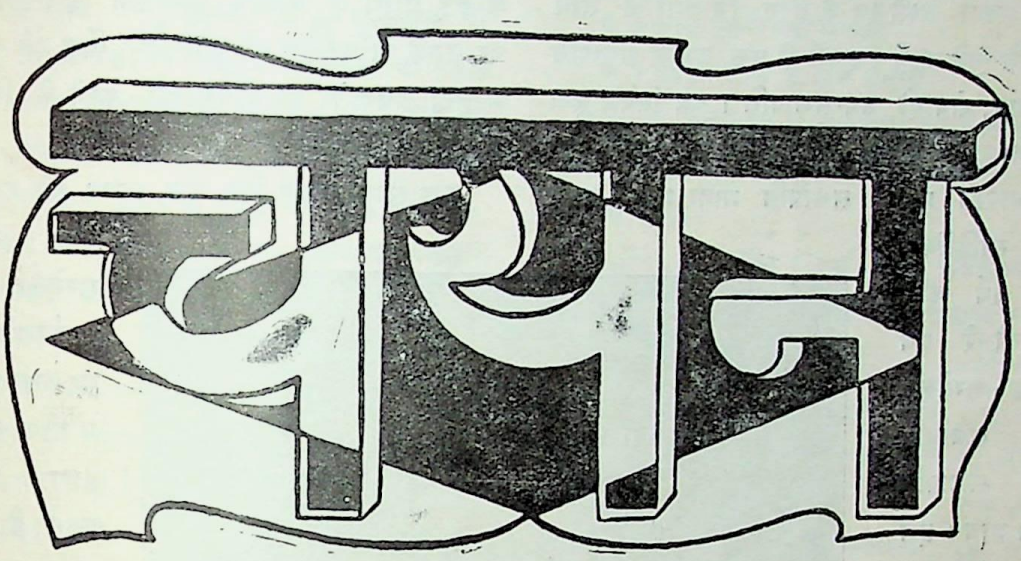

१. सम्मेलन की नियमावली में संशोधन

सम्मेलन की नियमावली पर विचार करने का अर्थ सम्मेलन के पूर्ण विधान पर विचार करना है। इसलिये सम्मेलन-विधान की वर्तमान त्रुटियों पर विचार करने के बाद नियमावली में संशोधन करना उचित है।

सम्मेलन-विधान की त्रुटियों पर विचार करने से सबसे पहले वह आंतरिक कलह ही हमारे सामने आता है, जिसने गत सम्मेलन के सभापति के चुनाव के समय सम्मेलन के सदस्यों में तीक्ष्ण मतभेद पैदा कर दिया था, जिसके कारण हिंदी-संसार में कुछ कटुता उत्पन्न हो गई थी।

हिंदी-सेवियों के दो दल हैं—एक साहित्यिक और दूसरा प्रचारक। साहित्यिकों का उद्देश साहित्य की वृद्धि और प्रचारकों का उद्देश भाषा तथा लिपि का प्रचार है। साहित्यिक चाहते हैं कि हिंदी में उच्च कोटि के ग्रंथ लिखे जायँ, प्रचारक चाहते हैं कि अन्य भाषा-भाषी भी हिंदी सीखें। ये दोनो दल हिंदी की सेवा करना चाहते हैं, किंतु दोनो के दृष्टिकोण भिन्न हैं। एक का उद्देश है शुद्ध साहित्यिक, दूसरे का राष्ट्रीय। इतना होने पर भी दोनो को एक दूसरे के साहाय्य की आवश्यकता है—साहित्य की वृद्धि के लिये भाषा-प्रचार की आवश्यकता है, और भाषा-प्रचार के लिये साहित्य-वृद्धि की।

सम्मेलन का विधान इस प्रकार होना चाहिए, जिससे दोनो को उचित रीति से सेवा करने का अवसर प्राप्त हो। इस संबंध में मैं अपने मित्र पं० भगीरथप्रसादजी दीक्षित की योजना का स्वागत करता हूँ। सम्मेलन के साथ कवि-सम्मेलन के अतिरिक्त प्रचार-सम्मेलन की योजना की जाय। उसके साथ की अन्य सभी परिषदें बंद कर दी जायँ। प्रचारक-सम्मेलन का सभापति कोई धनी सेठ, ज़मींदार, राजा, महाराजा या कोई राजनीतिक पुरुष बनाया जाय। साहित्य-सम्मेलन का सभापति कोई साहित्यिक गद्य-लेखक और कवि-सम्मेलन का सभापति कोई कवि बनाया जाय। कवि-सम्मेलन में कविता-पाठ ही न होकर उसके विषय, शैली आदि का भी विवेचन हुआ करे। प्रस्तावों द्वारा कवियों को मार्ग प्रदर्शित कर नवीन हिंदी-पद्य-साहित्य को सर्वांग-पूर्ण बनाने का प्रयत्न किया जाय।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस प्रकार सम्मेलन के तीन विभागों के तीन सभापति चुने जायँ। इनमें से एक प्रधान सभापति चुना जाय, शेष दो उप-सभापति। यह नियम बना दिया जाय कि प्रत्येक वर्ष क्रमशः एक-एक विभाग का सभापति प्रधान सभापति माना जाय। प्रथम वर्ष साहित्यिक, दूसरे वर्ष कवि तथा तीसरे वर्ष प्रचारक-सम्मेलन का सभापति प्रधान सभापति बनाया जाय। इस प्रकार सम्मेलन की सर्वतोमुखी उन्नति होने के साथ-साथ उसका गृह-कलह भी बंद हो जायगा।

पं० सीताराम पांडेय एम्० ए०, साहित्यरत्न

उपर्युक्त दो उप-सभापतियों के अतिरिक्त एक प्रयाग-निवासी भी सम्मेलन का उप-सभापति बनाया जाय। वह सम्मेलन के कार्यालय की देख-रेख करे।

कार्यालयाध्यक्ष का चुनाव स्थायी समिति की प्रथम बैठक में हो।

अब सम्मेलन के संगठन को लीजिए। वर्तमान संगठन का सबसे बड़ा दोष यह है कि उसमें प्रांतीय सम्मेलनों का उचित स्थान नहीं है। हमारे देश के कई प्रांतों में प्रांतीय सम्मेलन हैं। समय-समय पर उनके अधिवेशन भी होते हैं, किंतु बड़े सम्मेलन ने इन्हें अपनाने या प्रोत्साहित करने के लिये कुछ भी नहीं किया।

कुछ समय पहले मैंने एक सज्जन को यह कहते सुना था कि सम्मेलन के कुछ कार्यकर्ताओं की यह धारणा है कि प्रांतीय सम्मेलनों द्वारा प्रांतीयता बढ़ती है, इसलिये उनका न होना ही अच्छा है। किंतु मेरी समझ में यह भ्रम है। यदि प्रांतीय साहित्य-सम्मेलन अखिल भारतीय साहित्य-सम्मेलन के अंग बना दिए जायँगे, तो उनकी प्रांतीयता राष्ट्रीयता में परिणत हो जायगी। सम्मेलन का कार्य अधिक व्यापक और वेगवान् होगा। प्रत्येक प्रांत की परिस्थिति भिन्न है। प्रत्येक की आवश्यकताएँ समान नहीं है। प्रांतीय संस्थाएँ ही प्रांत की विशेष स्थिति समझ सकती और उसके अनुसार कार्य कर सकती हैं। इसलिये प्रांतीय सम्मेलनों को सुदृढ़

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बनाना सम्मेलन का कर्तव्य है । सम्मेलन की वर्तमान नियमावली में प्रांतीय सम्मेलनों का स्थान स्थानीय संबद्ध संस्थाओं के समान ही है । इसलिये वर्तमान स्थिति में कोई प्रांतीय सम्मेलन अखिल भारतीय सम्मेलन का अंग होना पसंद न करेगा ।

सम्मेलन की समितियों का संगठन वर्तमान कांग्रेस-संगठन के आधार पर हो, तो अच्छा हो । अभी तीन समितियाँ रहें—महासमिति, प्रांतीय समिति और स्थानीय समिति ।

सम्मेलन का साधारण सदस्य वह हो, जो साल में चार आना चंदा दे, तथा सम्मेलन के उद्देश-पत्र पर हस्ताक्षर करे । इन सदस्यों में से स्थानीय समिति के सदस्य चुने जायँ । स्थानीय समितियाँ प्रांतीय समिति का और प्रांतीय समितियाँ महा-समिति का चुनाव करें । सम्मेलन के सभापति का चुनाव भी प्रांतीय समितियों द्वारा करवाया जाय ।

महासमिति (स्थायी समिति) का चुनाव

(१) पिछले अधिवेशनों के सभापति तथा स्वागताध्यक्ष

(२) प्रांतीय समितियों द्वारा चुने हुए २०० सदस्य

(३) सम्मानित सदस्य

(४) स्थायी सदस्यों का $\frac{१}{५}$

(५) संबद्ध संस्थाओं के एक-एक प्रतिनिधि

(६) रजिस्टर्ड उपाधिधारियों द्वारा चुने हुए सदस्य (कुल संख्या का $\frac{१}{१०}$)

सम्मेलन के प्रतिनिधि इस प्रकार रक्खे जायँ—

(१) प्रांतीय समिति द्वारा चुने ५०० सदस्य

(२) संबद्ध संस्थाओं द्वारा चुने हुए एक-एक प्रतिनिधि

(३) सभी सम्मेलन के उपाधिधारी

(४) सभी पुरस्कार-प्राप्त विद्वान्

(५) सभी सम्मानित और स्थायी सदस्य

(६) सभी पुराने पदाधिकारी

(७) महासमिति के सब सदस्य

आशा है, सम्मेलन के कार्यकर्ता मेरे प्रस्तावों पर विचार करके सम्मेलन की नियमावली में उचित संशोधन करेंगे ।

सीताराम पांडेय (एम्० ए०, साहित्यरत्न)

(स्थायी समिति का एक सदस्य)

× × ×

२. 'हिंदी' या 'हिंदुस्तानी'

नागपुर के हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में, महात्मा गांधी की अध्यक्षता में, गत वर्ष एक अखिल भारत-वर्षीय साहित्य-परिषद् की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य यह रक्खा गया कि भारतवर्ष की सब भाषाओं के साहित्य के विचारों का परस्पर विनिमय हो, और सब भाषाओं के साहित्यिक मिलकर एक राष्ट्रीय भाषा भी मान लें, और उसके द्वारा तथा नागरी अक्षरों के द्वारा राष्ट्रीय विचार प्रकट करें । यदि इस संस्था का यही उद्देश्य है, तो मैं हृदय से इसका स्वागत करता हूँ ; पर इसके साथ ही उसी परिषद् में 'हिंदी या हिंदुस्तानी' का एक प्रश्न भी उठाया गया । शायद इसका यह अभिप्राय था कि भाषा के संबंध से 'हिंदी' नाम मुसलमान भाइयों को सर्वराष्ट्रीय दृष्टि से आपत्तिजनक है । एक आध मुसलमान सज्जन उक्त परिषद् में बैठे भी थे । उन्हीं का ख़याल रखकर, अथवा और किसी कारण से, महात्माजी के सभापतित्व में, यह 'हिंदी या हिंदुस्तानी' का प्रश्न वहाँ छिड़ गया । किसी ने कहा—हिंदी का नाम हिंदुस्तानी बदलकर रख दिया जाय, किसी ने कहा—नहीं साहब, हिंदी ही रहना चाहिए । इसी प्रकार बहुत वाद-विवाद के बाद अध्यक्ष ने ही निर्णय कराया कि नाम 'हिंदी या हिंदुस्तानी' रहे । अभिप्राय यह कि हिंदी नाम से अगर मुसलमान भाइयों को आपत्ति है, तो हम सब मिलकर इसे हिंदी या हिंदुस्तानी कहें, तो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुसलमान भाई भी शायद इसे पसंद कर लेंगे। वे अपनी 'उर्दू' का आग्रह न करेंगे। यही अभिप्राय रहा होगा, या और कुछ रहा हो।

कई लोग कहा करते हैं कि भाई, नाम के पीछे क्यों झगड़ते हो। नाम कोई भी रहे, काम होना चाहिए। पर मेरा तो ऐसा दृढ़ विश्वास है कि 'नाम' पहले है, फिर उसका 'रूप'—नाम और रूप के निर्धारण हुए बिना आगे कोई काम चल ही नहीं सकता। मैं इस बात को नहीं समझ सका कि 'हिंदी' को 'हिंदुस्तानी' या 'हिंदी या हिंदुस्तानी' कहकर पुकारने की क्या ज़रूरत है। अगर यह कहा जाय कि मुसलमान भाई इसे इस तरह से स्वीकार कर लेंगे, इसलिये हम अपना नाम बदल डालें, तो यह हमारी समझ में नहीं आता। 'हिंदी' नाम हमारी भाषा का कुछ आजकल का रक्खा हुआ नहीं है। यह लगभग हज़ार वर्ष का पुराना नाम है। और, जहाँ तक पता लगता है, प्रारंभिक काल में मुसलमान लेखकों ने ही यह नाम रक्खा है, और उन्हीं ने इसे प्रचारित किया है। उस समय 'उर्दू' नाम की किसी भाषा का इस देश में अस्तित्व भी नहीं था। उर्दू नाम तो पीछे बाज़ारू भाषा का पड़ा, जिसे मुसलमान भाइयों ने पकड़ लिया, और उसमें अरबी-फ़ारसी के शब्दों की विपुलता से भरती करके अब उसे वर्तमान स्वरूप प्राप्त हुआ है।

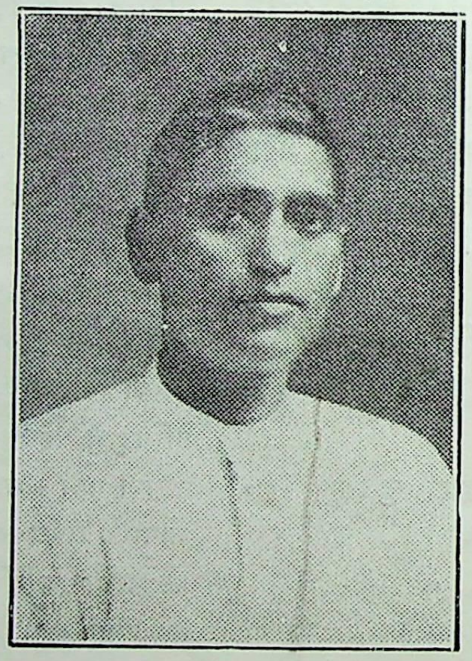

पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी

'हिंदी' शब्द 'हिंदवी' से बना है, और सैकड़ों वर्ष पहले इस शब्द को मुसलमान लेखकों ने ही हिंद की भाषा 'हिंदवी' करके ग्रहण किया। फिर आगे चलकर निर्विवाद रूप से यह नाम अब तक चला आ रहा है। आर्य-समाज के संस्थापक स्वामी दयानंदजी ने इस नाम को बदलने की कोशिश की थी। उन्होंने 'हिंदू'-शब्द के लिये जब 'आर्य'-शब्द चलाया, तब हिंदुओं की भाषा 'हिंदी' का नाम 'आर्य-भाषा' रक्खा। स्वामीजी का रक्खा हुआ यह नाम बहुत दिन तक आर्य-समाज के क्षेत्र में चलता रहा; पर अब शायद क्वचित् ही आर्य-समाजी हिंदी को आर्य-भाषा कहते होंगे। इसी तरह प्रारंभिक काल में कुछ अँगरेज़ सिविलियन लोगों ने हिंदी को 'हिंदुस्तानी' कहना शुरू किया था, और सरकारी अफ़सर शायद कहीं-कहीं अब तक 'हिंदुस्तानी' - शब्द का प्रयोग करते हैं। हमारे प्रांतों में 'हिंदुस्तानी एकेडमी' नाम की एक सरकारी संस्था भी है, जिसमें 'हिंदुस्तानी'-शब्द न-मालूम किस अभिप्राय से जोड़ा गया है, यद्यपि इस संस्था के अंदर 'हिंदी' और 'उर्दू' दोनो शब्द अलग-अलग चल रहे हैं।

सारांश यह कि हमारी भाषा का हिंदी - नाम बहुत प्राचीन और भारत की सर्व-साधारण जनता में पर्याप्त रूप से प्रचलित है। केवल कुछ मुसलमान भाइयों को मिलाने के मोह से ही हम अपने नाम में कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। और, फिर यदि हम देखें कि हमारे नाम-परिवर्तन से हिंदू-मुसलिम-एकता हो जायगी, तो हम देश-हित के लिये वैसा भी कर सकते हैं; पर इसका यह क्रियात्मक स्वरूप नहीं है, केवल मोह है।

अब हिंदी-भाषा के स्वरूप को लीजिए। हिंदी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भाषा विशेष रूप से हिंदुओं की और सारे हिंद की भाषा है। 'हिंद'-शब्द से ही 'हिंदी'-शब्द सिद्ध होता है। हिंद के रहनेवाले 'हिंदी' और उनकी भाषा 'हिंदी'। इसमें कोई विवाद अथवा समझौते की ज़रूरत नहीं। हिंद के रहनेवालों में हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सभी धर्मवाले आ जाते हैं। फिर भी बहुजन-समाज हिंदुओं का ही है। 'बहुत में थोड़े का लय' हो जाना सिद्धांत है। लेकिन दुर्भाग्य से भारतवर्ष में भिन्न धर्मों और संस्कृतियों का संघर्षण सैकड़ों वर्षों से चला ही आ रहा है, और इस संघर्ष से लाभ उठानेवाले भला कब चूक सकते हैं!

अस्तु। हिंदी का स्वरूप प्रारंभ से ही ऐसा चला आता है, जिसे हिंदुस्तान की अधिकांश जनता भली भाँति समझ सकती है, यहाँ तक कि प्रारंभिक काल में जिन मुसलमान लेखकों—जैसे अमीर ख़ुसरो, इंशाअल्लाख़ाँ—ने 'हिंदवी' लिखी है, उन्होंने हिंदी-भाषा में संस्कृत के ही तत्सम और तद्भव शब्दों का बहुलांशत से प्रयोग किया है। अरबी-फ़ारसी के जो शब्द कहीं-कहीं आ गए हैं, वे ऐसे हैं, जिन्हें हिंदुस्तान की जनता ने अपनी भाषा में मिला लिया है; और जिनका प्रयोग जनता प्रतिदिन के बोलचाल में करती रहती है। हिंदी-गद्य का इतिहास देखने से तो स्पष्ट पता चलता है कि सैयद इंशाअल्लाख़ाँ उस भाषा को 'हिंदवी' या 'हिंदी' मानने को तैयार ही नहीं, जिसमें अरबी-फ़ारसी या किसी भी विदेशी भाषा का कोई भी शब्द मिश्रित हो। इसीलिये उन्होंने प्रतिज्ञा करके ऐसी हिंदी लिखी है, "जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोल की पुट न मिले।" अर्थात् हिंदी को छोड़कर और किसी (अरबी-फ़ारसी इत्यादि विदेशी) शब्द का आभास भी न मिले। इंशा कहते हैं, जब मैं ऐसा करके दिखलाऊँ, "तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप खिले।"

मतलब यह कि हिंदी के प्रारंभिक मुसलमान लेखकों तक ने हिंदी का स्वरूप वही निश्चित किया है, जिसमें संस्कृत के ही तत्सम और तद्भव शब्द हों। पर आगे चलकर मुसलमानों और उनके साथ कुछ हिंदू लेखकों ने भी 'उर्दू'-भाषा को जाकर पकड़ा, तभी से अरबी-फ़ारसी के शब्दों की अधिकाधिक मिलावट शुरू हुई, जिसे हिंदू जनता तो क्या, मुसलमान ग्रामीण जनता भी किसी तरह समझ नहीं सकती। अगर हम किसी भाषा को जनता का स्वरूप देना चाहते हैं, तो हमें यह देखना चाहिए कि ग्रामीण जनता—हिंदू और मुसलमान किसान भाई—किस भाषा को समझ सकेगी। हम अपने अनुभव से कह सकते हैं कि ग्रामीण मुसलमान भी आजकल उर्दू-ए-मुअल्ला की अपेक्षा पंडिताऊ हिंदी को विशेष समझ सकते हैं; क्योंकि गाँवों के मुसलमान किसानों पर हिंदू-संस्कृति का ही विशेष प्रभाव है। इसका कारण यह है कि उनकी तादाद बहुत थोड़ी है, और हिंदुओं के बीच में हिली-मिली हुई है।

इससे साफ़ मालूम होता है कि हिंदी या उर्दू-भाषा में अरबी-फ़ारसी के कठिन शब्दों का मिलाना सर्व-साधारण हिंदू या मुसलमान जनता के लिये बहुत ही हानिकारक है। यह ध्यान में रखना चाहिए कि हम जो कुछ लिखते हैं, वह शहर के ही हिंदू-मुसलमानों के लिये नहीं लिखते, बल्कि हमारा उद्देश्य यह भी है कि हमारा संदेश ग्रामीण जनता तक पहुँचे। और, ऐसी दशा में हमें यह देखना चाहिए कि गाँवों की जनता की बोलचाल की भाषा में अरबी-फ़ारसी के तत्सम शब्द अधिक रहते हैं, या संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों से वह बनी होती है। हम अपने प्रत्यक्ष अनुभव से कहते हैं कि गाँवों के मुसलमान भाई भी अरबी-फ़ारसी के शब्द नहीं बोलते; बल्कि संस्कृत के प्रचलित तद्भव शब्दों से ही बनी हुई उनकी भाषा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होती है । अतएव हिंदी में उर्दू के नाम पर अप्रचलित अरबी-फ़ारसी के शब्दों को अब फिर से घुसेड़ना कहाँ तक उपयुक्त होगा, यह विचारणीय है ।

महात्मा गांधी की प्रेरणा से कुछ राजनीतिक काम करनेवाले तथा उनके अनुयायी किंवा अंधभक्त हिंदी लेखक और प्रचारक आजकल हिंदी-हिंदुस्तानी' के नाम पर कुछ इसी प्रकार की भाषा जान-बूझकर बना रहे हैं, जिसमें उर्दू-फ़ारसी के कई अप्रचलित शब्द जान-बूझकर घुसेड़ने की चेष्टा की जाती है । अब यह बात व्याख्यानों, लेखों और अख़बारों तक ही नहीं रह गई है, बल्कि एक आध ग्रंथ-लेखक ने भी ऐसा ही प्रयत्न किया है । उदाहरणार्थ पं० हरिभाऊ उपाध्याय ने अँगरेज़ी से पंडित जवाहरलालजी नेहरू का आत्मचरित इसी प्रकार की अस्वाभाविक और खिचड़ी भाषा में अनुवादित किया है । इस ग्रंथ में कम-से-कम पचीस फ़ीसदी ऐसे-ऐसे अरबी-फ़ारसी-शब्द मिलेंगे, जिन्हें गाँवों के हिंदू तो क्या, मुसलमान भी नहीं समझ सकते । हमारी समझ में तो जवाहरलालजी की आत्मकहानी इतनी सर्वप्रिय होनी चाहिए कि गाँवों की हिंदू-मुसलमान जनता भी उसे भली भाँति हृदयंगम कर सके । क्या उसकी खिचड़ी भाषा के विषय में ऐसा कहा जा सकता है ?

और लीजिए । एक राजनीतिक प्रचारक महोदय, जो महात्मा गांधी के विशेष रूप से अनुयायी हैं, पंजाब की महिलाओं की एक सभा में व्याख्यान देते हुए बोल उठे—"बहनो, आप लोग रोज़ चर्खा चलाकर देश की बड़ी सेवा करती हैं । आपका काम देखकर मैं आशिक़ हो गया हूँ ।" पंजाबी बहनें वहाँ आशिक़ शब्द सुनकर बहुत चकराईं । वक्ता का अभिप्राय शुद्ध है, पर शब्द ठौर-कुठौर पड़ गया है । इन प्रचारक महोदय की मातृभाषा शायद दक्षिणी है । अब 'हिंदी-हिंदुस्तानी' का का अभ्यास आप कर रहे हैं । परंतु 'हिंदी' को 'हिंदुस्तानी' बनाने का इस प्रकार का प्रयत्न उपहासास्पद ही होगा । हम उर्दू-फ़ारसी के शब्द हिंदी-भाषा में लाने के विरोधी नहीं हैं; पर विशेष रूप से, किसी आग्रह या दुराग्रह-वश, यदि हिंदी में हम उन्हें घुसेड़ने लग जायँगे, तो भाषा और उसकी शैली में कृत्रिमता आए बिना न रहेगी । उसकी स्वाभाविकता और सजीवता नष्ट हो जायगी ।

फिर एक बात और भी है । किसी भी भाषा के शब्दों के साथ उसका प्राचीन संस्कृति का स्वाभाविक संबंध अवश्य रहता है । शब्दों की वही शक्ति हृदय पर प्रभाव डालती है, जिसका राष्ट्र के अधिकांश मानव-समाज से परंपरागत संबंध होता है, और जिसका उपयोग उस राष्ट्र के पूर्वज सदा से करते आ रहे हैं । भारतवर्ष के लिये तो यह सिद्धांत और भी अधिक लागू है; क्योंकि यहाँ की मूल सभ्यता और संस्कृति अनेक प्रतिक्रियाओं से ठोकर लेती हुई अब तक जाग्रत् और जीवित है । इसकी भित्ति ऐसी ही दृढ़ चट्टान पर यहाँ के पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने रक्खी है । इसीलिये अपनी संस्कृति की उपेक्षा हम किसी तरह नहीं कर सकते । रह गया मुसलमान भाइयों का सवाल, सो हम पहले ही कह चुके हैं कि भारतवर्ष की अधिकांश मुसलिम जनता, जो देहातों में रहती है, सिर्फ़ नाम-मात्र को मुसलमान है, हिंदू-संस्कृति का काफ़ी प्रभाव उस पर है; और अरब तथा टर्की की अपेक्षा भारतीय सभ्यता और संस्कृति से ही उसका घनिष्ठ संपर्क है । इस बात का भी ध्यान हमारे राष्ट्रीय नेताओं को अवश्य रखना चाहिए ।

महात्मा गांधीजी ने 'हरिजनसेवक' में अभी हाल में एक लेख 'हिंदी-साहित्य-सम्मेलन राजनीतिक संस्था है ?'-शीर्षक से लिखा है । उसमें आपने इंदौर सम्मेलन का ज़िक्र करते हुए यों लिखा है—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"यह चीज़ भी ध्यान में रखने के क़ाबिल है कि इंदौर के पिछले अधिवेशन में सम्मेलन ने हिंदी की व्याख्या यह की थी कि हिंदी वह भाषा है, जिसे उत्तर हिंदुस्तान के हिंदू और मुसलमान बोलते हैं, तथा जो नागरी में या फ़ारसी-लिपि में लिखी जाती है।"

इंदौर के पिछले अधिवेशन में हिंदी की जो व्याख्या सम्मेलन ने की, वह किस प्रकार से, कैसे और किस वायुमंडल में की, इसका पूरा-पूरा पता हिंदीवालों को नहीं है। इंदौर का पिछला अधिवेशन, सच पूछिए तो, 'साहित्य-सम्मेलन' था ही नहीं—वह 'हुकुमचंद-नगर' में एक 'हुल्लड़बाजी-सम्मेलन' था। सम्मेलन में इंदौर और उसके आस-पास की साधारण जनता - स्त्री-पुरुष—गांधीजी का दर्शन करने के लिये उमड़ी हुई थी। पंडाल में हुल्लड़-बाज़ी में किसी को मालूम ही नहीं होता था कि कहाँ क्या प्रस्ताव पास हो रहा है। फिर एक दिन तो अधिवेशन के समय ऐसा आँधी-पानी आया कि एक अजीब हुल्लड़बाज़ी का दृश्य दिखाई दिया। पंडाल के नीचे कीचड़-ही-कीचड़ भर गया। बेचारे स्वर्गीय श्रीकाशीप्रसादजी जायसवाल को पार्क के एक छोटे-से 'बैंडस्टैंड' के, टीन से छाए हुए, मँड़वे में अपनी 'इतिहास-परिषद्' करनी पड़ी, जहाँ सिर्फ़ २०-२५ आदमी मुश्किल से खड़े हुए थे, और सारा सम्मेलन भीगता हुआ इधर-उधर मँड़रा रहा था। विषय-निर्धारिणी समिति का भी बड़ा विचित्र हाल था। आज इस भवन में हो रही है, तो कल मीलों दूर किसी दूसरे हॉल में हो रही है। प्रति-निधिगण मीलों दूर धर्मशालाओं में ठहरे हुए थे, जो प्रायः पहुँच नहीं पाते थे। गांधीजी और उनके कुछ साथी नेताओं के लिये राज्य की ओर से मोटर-कारें लगी रहती थीं, जिससे लोग अपने समय पर पहुँचकर मनमाने प्रस्ताव इत्यादि पास कर लिया करते थे। प्रतिनिधियों का तो समय पर सभा में पहुँचना ही टेढ़ी खीर हो रहा था। ऐसी हुल्लड़बाज़ी में कोई भी प्रस्ताव पास कर लिया जाय, तो उसका क्या महत्त्व?

फिर सम्मेलन के बाद हिंदी-पत्रों में उक्त प्रस्ताव के उत्तरार्द्ध का घोर विरोध हिंदी के प्रतिष्ठित लेखकों ने किया ही था, जिसका शायद महात्माजी को पता नहीं लगा होगा। हिंदी-भाषा को फ़ारसी-लिपि में क्या, आप चाहे जिस लिपि में लिख लीजिए, वह आपको मना नहीं करेगी कि आप अमुक एक लिपि में उसे न लिखिए। पर प्रश्न लिखने का नहीं, पढ़ने का है। फ़ारसी या अरबी-लिपि में जब हिंदी-भाषा लिखी जाती है, तब पढ़ते समय उसके अनेक शब्दों का कैसा अर्थ का अनर्थ हो जाता है, यह बात शायद महात्माजी को मालूम नहीं। इसके अनेक क़िस्से कचहरियों में तथा अन्यत्र बड़े मनोरंजक रूप में सुने जाते हैं। इसीलिये हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में फ़ारसी-लिपि सर्वथा त्याज्य समझकर बाल-बोध नागरी-लिपि का ही सार्वत्रिक और सार्वजनिक प्रचार अभीष्ट उद्देश्य माना गया है। रही हिंदू-मुसलमानों के बोलने की बात, सो अवश्य ही देहातों में हिंदू-मुसलमान एक ही हिंदी-भाषा बोलते हैं। शहरों में, कचहरियों में, मुसलमान भाई यद्यपि कुछ-कुछ फ़ारसी-अरबी-मिश्रित उर्दू या हिंदी बोलते हैं; पर अपने घरों में सब ठेठ हिंदी ही शहरों में भी बोलते हैं, जिसमें अरबी-फ़ारसी-शब्द शायद बिलकुल ही नहीं। या कुछ-कुछ होते हैं। शहरों के पढ़े-लिखे या नेता हिंदू-मुसलमानों के लिये ही हमें अपनी राष्ट्रीय भाषा का स्वरूप या व्याख्या निर्धा-रित न करनी चाहिए; बल्कि अधिकांश ग्रामीण, संस्कृत के तद्भव, शब्दों से मिश्रित हिंदी-भाषा को ही अपना आदर्श रखना चाहिए। राष्ट्रीय भाषा के रूप में भी प्रत्येक प्रांत में ऐसी ही भाषा का स्वाभाविक प्रचार होगा, जिसके शब्दों

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में अधिकांश जनता की पूर्वपरंपरा और उसकी सभ्यता तथा संस्कृति अपने निजी रूप में सजीव बोलती हो। अरबी-फ़ारसी के शब्दों से मिश्रित हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रचलित करना हिंदी-भाषा के प्रति घोर अन्याय है, और राष्ट्रीय भाषा हिंदी का एक प्रकार से अपमान। हिंदू-संस्कृति के अभिमानी देशभक्त इसे कैसे सहन कर सकेंगे ?

लक्ष्मीधर वाजपेयी

× × ×

३. गीत

विस्तृत वसुंधरा का कण-कण
अलि ! कौन सजा देता क्षण-क्षण ?
किसके इंगित पर हो प्रभात मूर्च्छित जग को करता चंचल
कल कनक-किरण की तूली से रँग प्राची का निरभ्र अंचल ?
ऊषा की मीठी चितवन से घायल कर नभ का वक्षःस्थल
हो जाता अंतर्द्धान कहाँ चित-चोर चितेरा चारु, चपल ?

* * *

माधवी निशा की अलकों में गुंफित झिलमिल मणि तारों का,
दूर्वादल के वक्षःस्थल पर बिखरे हिम-हीरक-हारों का
ऐश्वर्य-दान देकर समृद्धिशाली करता यह विश्व निधन !
वह कौन प्रकृति को पहनाता अलि ! सतरंगा कौशेय वसन ?
जिसके कौशल का जग चित्रण,
वह होगा कितना भाव-प्रवण ?
आरूढ़ मलय-स्यंदन पर अलि ! कोई मृदु-मृदु है डोल रहा ;
वन, उपवन, जग के मुरझाए प्राणों में अमृत घोल रहा !
किसकी सुन चंपक-चरण-चाप कोकिल की मौन-समाधि भंग
हो गई, हुआ है हृदय हरा केकी का लख अनुराग-रंग !
किस कवि की कृति का मधुर चरण
शुचि शस्य-श्यामला का कण-कण ?

'नलिनी'

× × ×

४. सुकुमारता

प्राचीन कवियों के काव्य का असल भाव समझना, उनके अभिप्राय को पहुँचना और उनके छंदों की टीका मर्यादा के भीतर करना बहुत कठिन काम है। उनके काव्य में प्रकृति का निरीक्षण, भाषा की प्रौढ़ता, भाव की गंभीरता, स्वाभाविक वर्णन, अतिशयोक्ति की परा काष्ठा और मानुषीय प्रकृति का सच्चा, स्वाभाविक, हृदयग्राही चित्र

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खिचा है। उनकी कल्पना-शक्ति और विचार-शक्ति से परमोत्तम भाव प्रसूत हुए हैं। उनका काव्य उद्दीपन, कटाक्ष, रोमांच आदि विषयों से भरा पड़ा है, और उत्प्रेक्षा, उपमा, श्लेष, रूपक से अलंकृत है। इस प्रबंध में हम उनके काव्य का कुछ आलोचनात्मक रीति से विवेचन करते हैं—

दुरिहै क्यों भूषन-बसन दुति जोबन की,
देह ही की जोति होति द्यौस-ऐसी राति है;
नाह को सुबास लागै ह्वै है कैसी 'केसव', सु
अंग ही की बास भौंर-भीर फारें खाति है।
देखि तेरी सूरति की मूरति बिसूरति हौं,
लालन के दृग देखिबे को ललचाति है;
चलिहै क्यों चंद्रमुखी कुचन के भार भए,
कचन के भार तो लचकि लंक जाति है।

नायक की दूती नायिका से कहती है—"हे सुंदरि! तेरे भूषण-वसन और यौवन की प्रभा कैसे छिपेगी? देह की ज्योति ही से तो रात्रि का दिन हो जाता है, और वहाँ नाह (प्रीतम) के अंग की सुवास लगने से तेरा क्या हाल होगा। इधर तो तेरे ही अंग की सुवास से तुझे भौंरों की भीर फारे डालती है, दिन में तुझे घर से बाहर निकलना कठिन है। इस समय तेरी माधुरी-सी मूरति देखकर मुझे बड़ा तरस आता है कि तू लालन (प्रियतम) के दृग देखने के लिये उत्सुक हो रही है। हे चंद्रमुखि! तू वहाँ कैसे चल सकेगी? तेरे ये उरोज तो भार-रूप हो रहे हैं, और केशों (बालों) के भार से तेरी कमर लचक जाती है, ऐसी दशा में मैं तुझे वहाँ ले चलने से विवश हूँ।"

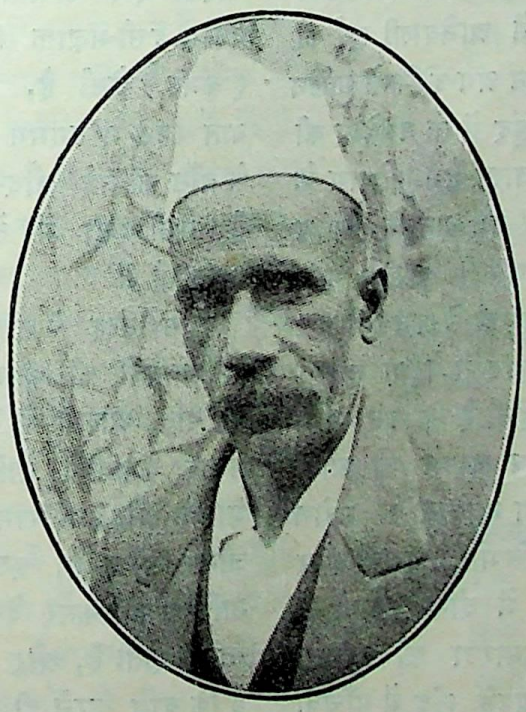

श्रीलक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा'

केशवदासजी के इस छंद में नायक की दूती नायिका के अंगों की बड़ी विलक्षणता से प्रशंसा करती है, मानो नायिका बिलकुल अचल ही हो। असल में यह दूती आई तो नायिका को लेने के लिये है, किंतु नायिका से कैसी चिकनी-चुपड़ी बातें कहती है कि सुंदरि, तू वहाँ चलेगी कैसे? तेरे भूषण-वसन की द्युति छिपती नहीं, अंग की सुवास से तुझे भौंरे चीथे डालते हैं, उरोज तेरे भार-रूप हो रहे हैं, और कचों के भार से कमर लचक जाती है।

जिस नायिका की देह-द्युति से रात्रि का दिन हो जाता है, और अंग की सुवास से उसे भौंर-भीर फारे खाती है, या उरोज और केशों के भार से जिसकी कमर लचक जाती है, उसकी सुकुमारता कैसी होगी? केशव के इस छंद में यह कल्पना की बात है और इसी से इसमें असिद्धास्पद हेतूत्प्रेक्षालंकार की परा काष्ठा है।

चरन धरै न भूमि,
बिहरै जहाँ-ही-तहाँ,
फूले फूल फूलन
बिछाय परयंक है;
भारहि के डर
सुकुमार चारु अंगन में
अंग न लगावै
राजकेसर को पंक है।
कबि 'मतिराम' देखि
बातायन बीच आयो
आतप मलीन होत बदन-मयंक है;
कैसे सुकुमार वह बाहर बिजन आवै,
बिजन-बयार लागैं लचकति लंक है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नायिका की दूती नायक से कहती है—"हे लाल! वह धरती पर तो पैर नहीं रखती, और खड़ी-खड़ी जहाँ-की-तहाँ ही घूमती है। पर्यंक पर फूले हुए (कली नहीं) फूल बिछाकर सोती है, और शरीर का भार बढ़ जाने के डर से वह अपने कोमल अंगों में राजकेशर का पंक अर्थात् कुमकुम का लेप नहीं लगाती, और सूर्य की किरणें झरोखे से जब उसके भवन के भीतर (जहाँ वह रहती है) पड़ती हैं, तो उनकी प्रभा मयंक-समान देह-द्युति से मलिन हो जाती है। ऐसी दशा में वह सुकुमार बाहर वन में कैसे आ सकती है, और मैं उसे ला भी कैसे सकती हूँ? घर ही में पंखे की हवा से उसकी कमर लचकती है।"

मतिरामजी के इस छंद में केशव के छंद से कुछ विशेषता नहीं जान पड़ती। जिस भवन में नायिका रहती है, उसकी खिड़कियों में आनेवाली सूर्य की रश्मियाँ नायिका की मयंक-समान अंग-दीप्ति से मलिन पड़ जाती हैं, मगर केशव के छंद में तो नायिका की देह-द्युति से रात्रि का दिन हो जाता है। मतिराम के छंद में नायिका शरीर का भार बढ़ जाने के कारण अपने अंग में केशर का अंगराग नहीं लगाती, और उसकी कमर बिजना की बयार ही से लचकती है। केशव के छंद में नायिका के अंग से, विना लगाए ही, इतनी सुगंध प्रवाहित होती है कि उसे भौंरों की भीर फाड़े डालती है, सुगंध लगाने की आवश्यकता ही नहीं। इसके सिवा नायिका के उरोज भार-रूप हो रहे हैं, और बालों के भार से उसकी कमर लचक जाती है। इन छंदों में दोनो कवियों की अच्छी टक्करें हुई हैं। सुकुमारता की बहुलता दोनो में है। मतिराम ने अपने छंद में पाँचवाँ विभावनालंकार बाँधा है, और इसके सिवा छंद के चौथे चरण में यमक की झलक है।

पहिरें कुसुंभी सारी सादी सेत आँगी आँग,
छाती छबि चाहि फेरि छाँह ही चहति है;
चूड़ा पायँ फेरि करि बेसर सुधार धरि,
कंकनि कानि फिरि मन उमगति है।
कहि कबि 'आलम' चलति, फिरि ठाड़ी होत,
आलिन के साथ अलबेल्यो ही करति है;
अलग लगो सो लाँकु बोले डग डोले ऐसे
डगनि भरति जनु लग-सी लफति है।

नायक की दूती नायिका से कहती है—"हे सुंदरि! तू कुसुंभी सारी पहने हुए, सादी सफ़ेद रंग की कंचुकी अंग में कसे, छाती की छवि बदलती हुई छाया ही चाहती है। केश-पाश बाँधकर, पाँवों को स्वच्छ कर, नासिका की बेसरि सुधारकर अब हाथों के कंकन भी बदलने को तेरा मन चाहता है। तू कैसी चलती-सी है, फिर कुछ खड़ी सी हो जाती है। तेरे ऐसे ढंगों से ज्ञात होता है कि तू कहीं जाना चाहती है। सखियों के साथ भी तू हमेशा इसी प्रकार हँसी-मज़ाक़ किया करती है। तेरी लंक (कमर) ऐसी है, जैसे अलग लगी हुई हो। तू बात कहने में डगमग डोलती है, और डग पसारने से बाँस की नई लौंद-सी अर्थात् लग-सी लफ जाती है। ऐसी दशा में तेरा कहीं आना-जाना कैसे हो सकता है?"

जिस तरह केशव और मतिराम ने नायिका के अवयवों की कोमलता का दिग्दर्शन कराया है, वह बात आलम के छंद में नहीं है। हाँ, जिस प्रकार केशव ने नायिका की कमर को बालों के भार से और मतिराम ने पंखे की बयार से लचक जाना लिखा है, इसी तरह आलम के छंद में नायिका की कमर देखने में अलग लगी हुई-सी मालूम होती है, और नायिका इतनी नाज़ुकबदन है कि बात करने ही में डगमग डोलती है, तथा डग पसारने से बाँस की लग (लबोदर) के समान लफ जाती है। आलम कवि ने भी अपने इस छंद में सुकुमारता का वर्णन अच्छा किया है। छंद में उत्प्रेक्षालंकार है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भूषन-बसन सँभारि है क्यों यह तन सुकुमार ?
सूधे पाँय न धरत धर सोभा ही के भार।

सखी नायिका से कहती है—"हे सुंदरि ! तेरा यह सुकुमार शरीर आभूषणों का बोझा कैसे सँभाल सकेगा, तेरे पाँव तो सिर्फ़ शोभा ही के भार से धरा पर सीधे नहीं पड़ते।"

केशव के छंद में नायिका भूषण-वसन पहने हुए है। उसकी कमर लचकने का कारण सिर के बालों का भार है, और मतिराम की नायिका की कमर पंखे की हवा से लचकती है, और आलम की नायिका डग पसारने से ही बाँस की लग के समान लफ जाती है। इधर बिहारी के दोहे में नायिका की सुकुमारता इतनी बढ़ी-चढ़ी हुई है कि उसे भूषण-वसन सँभालना मुश्किल हो रहा है।

कहते हैं, कभी-कभी कवि लोग अपनी उड़ानों से प्रकृति की सीमा का उल्लंघन कर जाते हैं। प्रकृति की सीमा का उल्लंघन कर जाना कवि की कल्पना में अनौचित्य उपजा देता है, क्योंकि अतिशयोक्ति किसी भी विषय में अच्छी नहीं होती। यही दशा हमें बिहारी के इस दोहे की जान पड़ती है, क्योंकि शोभा जो कोई वज़नदार वस्तु नहीं, और नायिका के तन में तरुणावस्था आने से खिल उठी है, उसी के भार को बिहारी ने अपनी कल्पना-शक्ति से वज़ या एक बड़ा भारी पहाड़ बना रक्खा है, जिसके भार से बेचारी नायिका को भूषण-वसन तक का बोझ सँभालना दुश्वार हो रहा है, और उसी शोभा के भार से धरा पर उसके सीधे पाँव ही नहीं पड़ते। बिहारी की इस उक्ति में अति-शयोक्ति है। नायिका की सुकुमारता केशव, मतिराम और आलम की कल्पनाओं को नीचा दिखाती हुई लोक-सीमा का उल्लंघन कर गई है।

लक्ष्मीप्रसाद मिश्री 'रमा'

× × ×

५. बिदा !

क्षण-भर पहले हम मिले, किंतु
क्षण बाद चला मैं तो आली !

(१)

मैं स्वयं न जाने का इच्छुक,
पर नियति कर रही मनमानी;
मैं विकल बना, तुम विकल बनीं,
उमड़ा है आँखों में पानी।
मैं रुक न सका, मैं पी न सका,
तुम लिए रहीं मधु की प्याली।

(२)

मैं चला, बीच में अब अपने
पर्वत, नदियाँ, तरुवर होंगे;
मैं वहाँ और तुम यहाँ, बीच में
झरने भी झर-झर होंगे।
तुम मुझे याद कर रो लेना,
जब बोले कोयल मतवाली।

(३)

क्षण-भंगुर अपना परिचय था,
क्षण-भर की अपनी मस्ती थी;
हम भाग्य पलट डालें अपना,
ऐसी न हमारी हस्ती थी।
मैं कहीं चला, तुम यहाँ रहीं,
हा ! प्रीति बिछुड़ने को पाली।

(४)

संध्या होगी, जीवन-पथ पर
थक जाऊँगा चलता-चलता;
कुछ आगे और बढ़ा देगा
स्मृति का सूरज ढलता-ढलता।
फिर यहाँ, वहाँ, सब ओर प्रिये !
होगी रजनी काली-काली।

चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र'

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

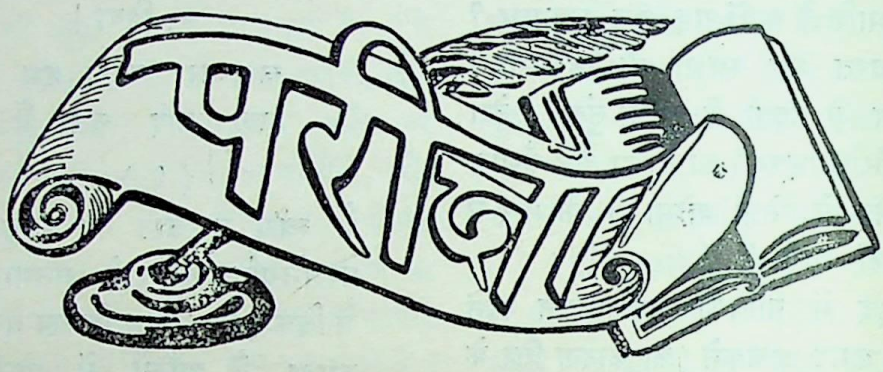

भक्तियोग—लेखक, चौधरी रघुनंदनप्रसादसिंह; भूमिका-लेखक, श्रीपं० जीवनशंकरजी याज्ञिक हिंदू-विश्व-विद्यालय, काशी ; मुद्रक तथा प्रकाशक, गीता-प्रेस, गोरखपुर (१९९३ वि०); पृष्ठ-संख्या ६९६ ; मूल्य १=) अजिल्द ; काग़ज़, छपाई संतोषप्रद ।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय उसके नाम से ही प्रकट हो जाता है, तथापि इस पुस्तक की विशेषता और उपादेयता इसी विषय पर लिखी गई अन्यान्य साधारण पुस्तकों से अनेक अंशों में अधिक महत्त्व-पूर्ण है । "रुचीनां वैचित्र्यादृजु-कुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पय-सामर्णव इव ।" श्रीपुष्पदंत की इस प्रसिद्ध उक्ति के अनुसार भक्ति, ज्ञान, कर्म आदि अनेक सिद्धि के मार्ग हैं, जिनमें से किसी पर शुद्ध चित्त होकर, अनन्यमनस्कता के साथ विधिवत् चलकर साधक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ होता है । भूतकाल में अनेक ज्ञानी, भक्त और कर्मयोगी सिद्धि-संपन्न हुए, ऐसा वर्णन अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है । रुचि-भेद और सामर्थ्य-भेद से विभिन्न स्वभाव-युक्त व्यक्तियों के लिये मार्गों का भी तदनु-कूल वर्णन किया जाना स्वभावोक्ति-मात्र है । मध्यकाल में संप्रदायाचार्यों ने देश-काल-जनित परिस्थिति के अनुसार विशेष आग्रह-पूर्वक विभिन्न मार्गों का प्रतिपादन किया । और, उनकी व्यति-रेकी (Exclusive) वर्णन-शैली से प्रभावित होकर तत्तत्संप्रदाय-प्रचारकों ने अपने स्वीकृत मार्ग की उत्कृष्टता प्रदर्शित करते हुए अन्य मार्गों की कठोर और कटु आलोचना करना भी अपना आवश्यक कर्तव्य समझा । निदान अनेक आचार्यों, उनके प्रतिपादित संप्रदायों और संप्रदायांतर्गत नाना प्रकार के ग्रंथों की सृष्टि हुई । वर्तमान समय में ऐसी पुस्तकों की कमी नहीं, जिनमें भक्ति-योग की सर्वश्रेष्ठता और ज्ञान-कर्म की निम्नता, ज्ञान-योग की परमोत्कृष्टता और भक्ति-कर्म की हेयता अथवा कर्म-योग की सर्वोत्तमता एवं भक्ति-ज्ञान की निकृष्टता का विशद वर्णन किया गया हो ।

किंतु वस्तुतः इन तीनो में भेद-बुद्धि अथवा किसी को ऊँच-नीच समझना बड़ी भूल है । अधि-कारी और रुचि-भेद से तीनो ही उत्तम और उपा-देय हैं, क्योंकि आवश्यकतानुसार विचार करना (ज्ञान), अनुभव करना (भक्ति) और क्रिया करना (कर्म), ये तीनो प्रकार की शक्तियाँ हमारे जीवन के सहज अंग हैं । अस्तु ।

प्रस्तुत पुस्तक के स्वाध्यायशील रचयिता स्वयं उच्च कोटि के भक्त थे, इस कारण उनकी पुस्तक में अनेक ग्रंथों के प्रमाणों का ही संकलन नहीं है, अपितु अपने अनुभव से भी उन्होंने अनेक महत्त्व-पूर्ण ज्ञातव्य विषयों का अधिकार-पूर्वक प्रतिपादन किया है । नवधा भक्ति, उसके साधनोपाय, साधक की योग्यता, विघ्न-बाधाओं का निराकरण करते हुए भक्ति-योग का विधिवत् अनुष्ठान, उपास्य, उपासक, उपासना का स्वरूप, भेद, अनुष्ठानादि-विधि इत्यादि प्रायः समस्त उपादेय विषयों का सजीव

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भाषा और आकर्षक शैली में वर्णन किया गया है। संभव है, इस दीर्घकाय पुस्तक में प्रतिपादित भक्ति-योग-संबंधी सिद्धांतों के विषय में किसी का मतभेद भी हो, तथपि पुस्तक सर्वथा संग्रह-णीय है।

× × ×

ऐतरेयोपनिषद् (सानुवाद शांकर भाष्य-सहित)—मुद्रक एवं प्रकाशक, गीता-प्रेस, गोरखपुर; काग़ज तथा छपाई उत्तम; पृष्ठ-संख्या ९३ ; मूल्य ।=)

यों तो गीता-प्रेस ने अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकों को मुद्रित और प्रकाशित करके स्वल्प मूल्य में सर्व-साधारण के हितार्थ सर्वत्र प्रचारित किया है, किंतु अब कुछ समय से औपनिषदिक साहित्य-प्रकाशन की ओर भी प्रेस का ध्यान आकृष्ट हुआ है। यह शुभ प्रयास सर्वथा सराहनीय है।

"जो समाचार-पत्र नहीं पढ़ता, वह इस संसार से प्रायः अपरिचित रहता है, और जो उपनिषद् नहीं जानता, वह परलोक-ज्ञान से सर्वथा वंचित रहता है।" इस कथन में बहुत कुछ यथार्थता है। करोड़ों पुस्तकों की विद्यमानता में उपनिषदों की तुलना के ग्रंथ अब तक असुलभ हैं। उनमें ब्रह्मविद्या का जैसा व्यापक प्रतिपादन प्राप्त होता है, वैसा अन्यत्र मिलना असंभव है। इसमें अति-शयोक्ति का लेश भी नहीं। भगवान् श्रीकृष्ण के परम पावन गीता-माहात्म्य में "सर्वोपनिषदो गावः" कहकर उपनिषदों को गौ और गीता-ज्ञान को अमृत दुग्ध कहा गया है।

गौ के स्वास्थ्य, सुखमय जीवन, पवित्र निवास, शुद्ध सात्त्विक आहार और सर्वथा दोष-रहित विहार के अनुरूप ही उसका दुग्ध होता है। इसके विपरीत दुग्ध विष-तुल्य होता है, और अनेक प्रकार से भोक्ता को हानि पहुँचाता है। "गौर्वा इदं सर्वं बिभर्त्ति" शतपथ ब्राह्मण के इस अमूल्य मंत्र-वाक्य की व्यापक महिमा को प्रायः भूलकर हम उपनिषद्-रूपी गौओं से असहयोग कर बैठे हैं। तभी तो आज देश में अनेक ग्रंथों का स्वाध्याय, पठन-पाठन तो पाया जाता है, और उनकी कथाएँ भी समय-समय पर होती हैं, किंतु उपनिषदों को कौन पूछता है? उनका कौन स्वाध्याय करता है?

मानव-जाति के कल्याणार्थ तपोधन ऋषियों ने अध्यात्मविद्या-रूपी महार्णव को संक्षिप्त, किंतु सूक्ष्म रूप से उपनिषदों में निबद्ध किया। ब्रह्मज्ञान-गंगा में मानव-जाति अनवरत अवगाहन करके अपने अनेक मलों, आवरणों और विक्षेपों को प्रक्षा-लित कर, शुद्धांतःकरण होकर अमृत लाभ कर सके, इस प्रयोजन की सुचारु सिद्धि के हेतु उपनिषद्-साहित्य का निर्माण हुआ। देश और विदेश के अनेक यशस्वी, मनीषी विद्वानों ने अपनी-अपनी गति-मति और विद्या-बुद्धि के अनुसार उपनिषदों के भाष्य, टीका, अनुवाद, व्याख्याएँ कीं, और अनेक स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे, किंतु सांप्रदायिक संकी-र्णता के प्रभाव से भारतवर्ष में उपनिषद्-साहित्य का यथोचित प्रचार न हो सका। यह वस्तुतः विषाद की बात है!

भाष्यकारों में भगवान् श्रीशंकराचार्य का स्थान प्रमुख है। आचार्य ने प्रस्थानत्रयी (उपनिषद्, वेदांतदर्शन और गीता) पर विशद भाष्य किया। शांकर भाष्य अद्वैत ब्रह्मवादात्मक होने के कारण ज्ञान-योग-प्रधान है, इसमें संदेह नहीं। अन्यान्य आचार्यों ने इन्हीं ग्रंथों का भाष्य दूसरे ढंग से किया है। अस्तु।

प्रस्तुत ऐतरेय उपनिषद् शांकर भाष्य और भाषानुवाद - सहित प्रकाशित किया गया है। ऋग्वेदीय ऐतरेयारण्यकांतर्गत द्वितीय आरण्यक के अध्याय ४, ५ और ६ का नाम ही ऐतरेय उप-निषद् है। आचार्य ने भाष्य के आरंभ में ही प्रतिपाद्य विषय को सुस्पष्ट करते हुए एक सुंदर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उपोद्घात दिया है। इसमें ज्ञान को ही मोक्ष का एकमात्र साधन सिद्ध करने का उद्योग किया है। इस उपनिषद् में सृष्टि-रचना, अनेक देवताओं, पुरुष, इंद्रियों, लोकपालों आदि की उत्पत्ति, शरीर में आत्मा का प्रवेश, अन्न की रचना, उसकी प्राप्ति, पुरुष के तीन जन्म, वामदेव की उक्ति, आत्मज्ञान, प्रज्ञान के अनेक नाम और अमृतत्व की प्राप्ति आदि आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है। भाष्य का अनुवाद भी सर्व-साधारण के लिये सर्वथा उपयोगी और सरल किया गया है। उपनिषद् उपादेय है।

× × ×

तैत्तिरीय उपनिषद् (शांकर भाष्य-भाषानुवाद-सहित)—मुद्रक तथा प्रकाशक, गीता-प्रेस, गोरखपुर; पृष्ठ-संख्या २३६; छपाई और काग़ज़ उत्तम; मूल्य ॥।-)

प्रस्तुत उपनिषद् कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के तैत्तिरीयारण्यक प्रपाठक ७, ८ और ९ से बना है। ७वें प्रपाठक को शिक्षावल्ली अथवा सांहितोपनिषद् और ८वें तथा ९वें प्रपाठक को ब्रह्मानंदवल्ली एवं भृगुवल्ली या वारुणी उपनिषद् कहते हैं।

ब्रह्म-ज्ञान-प्राप्ति के लिये साधक को अपने अंदर जिन-जिन गुणों को धारण करने के लिये आचार्य-कुल में रहकर आवश्यक शिक्षा, दीक्षा, व्रतचर्यादि अनुष्ठान जिस-जिस विधि से करना चाहिए, उसका विस्तृत वर्णन शिक्षावल्ली में दिया गया है। शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् जिन-जिन कर्तव्य कर्मों का निर्देश नवीन स्नातक के लिये अत्यंत आवश्यक है, उन-उनका आचार्य निर्देश करता है। उपासना के रहस्य-पूर्ण महत्त्व को भी इस भाग में दर्शाया गया है।

ब्रह्मानंदवल्ली में मुख्यतः ब्रह्मविद्या का वर्णन है। आरंभ में ही "ब्रह्मविदाप्नोति परम्" इस वाक्य से विषय का उपक्रम किया है, और शेष उपनिषद्-भाग में इसी तत्त्व को विशद रूप में प्रतिपादित किया गया है। 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह ब्रह्म का स्वल्पतम शब्दों में उत्कृष्ट लक्षण है। आगे चलकर अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनंदमय, इन पाँच कोशों के स्वरूप का वर्णन किया गया है। कोश-विज्ञान का लक्ष्य भी रस-आनंद की उपलब्धि-योग्य साधक को बनाना ही है। यही चरम उद्देश्य है। मनुष्य, गंधर्व, देवगण, पितृगण, आजानन्तदेव, कर्मदेव, देव, इंद्र, बृहस्पति, प्रजापति और ब्रह्मा के आनंदों को उत्तरोत्तर शतगुण दर्शाते हुए कहा है कि निष्काम ब्रह्मवेत्ता को वे सब आनंद सुलभ हैं। इसी प्रकरण के साथ हृदय-पुंडरीकस्थ पुरुष का और आदित्य-मंडलस्थ पुरुष का अभेद दिखाया गया है।

भृगुवल्लरी में ब्रह्मविद्या-प्राप्ति के मुख्य साधन पंचकोश-विवेक के दर्शाने के लिये वरुण और भृगु का रोचक आख्यान दिया गया है। अध्यात्मविद्या का जिज्ञासु भृगु अपने पिता वरुण के समीप जाकर पूछता है कि जिससे सब भूत उत्पन्न होते हैं, जिससे उत्पन्न होकर जीवित रहते हैं, और जिसमें अंत में लीन हो जाते हैं, उस तत्त्व का मुझे उपदेश कीजिए। उत्तर में वरुण ने अन्न, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, मन और वाणी, इन ६ को ब्रह्मोपलब्धि के मार्ग बतलाते हुए उससे तप करने को कहा। यथाविधि और यथाक्रम भृगु ने निर्दिष्ट तप का अनुष्ठान करके अंत में आनंद को ही ब्रह्म अनुभव किया। इस प्रकार ब्रह्मज्ञान-क्रम में अन्न का प्रथम स्थान है, और क्रमशः उसके व्यापक अर्थ और प्रभाव को जानकर अंत में अपने आत्मा का अनुभव होने पर अत्यंत मग्न होकर साधक "अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् , अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः। अहꣳ श्लोककृदहꣳ श्लोककृदहꣳ श्लोककृत्" इत्यादि उद्गार निकालने लगता है।

तैत्तिरीय उपनिषद् की भाषा अत्यंत ओज-पूर्ण

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है, और विषय भी मुख्यतः ब्रह्मविद्या है। आचार्य शंकर का भाष्य तो आचार्योचित ही है, किंतु अनुवादक महोदय ने भी बड़े परिश्रम से इस रहस्य-विज्ञानमय उपनिषद् को सर्व-साधारण के लिये बुद्धिगम्य बनाने में सराहनीय प्रयास किया है। हमारा आग्रह है कि रुचि रखनेवाले स्वाध्यायशील महानुभाव इस उपनिषद् को अवश्य संग्रह कर उद्दिष्ट लाभ उठावें।

रामदत्त शुक्ल (ऐडवोकेट)

× × ×

विद्यानंद-विनोद—लेखक, लोकसंग्रही स्वामी विद्यानंद; प्रकाशक, विद्यानंद-ग्रंथमाला, साक्षी विनायक, बनारस; पृष्ठ-संख्या १४४; मूल्य ॥)

यह लोकसंग्रही श्री १०८ स्वामी विद्यानंदजी महाराज की अनूठी आत्मकथा है। एक रंगीन और कई सादे चित्रों से विभूषित यह पुस्तक बड़ी साफ़ और सुंदर छपी है। इसमें स्वामीजी ने अपनी क्रमागत आध्यात्मिक उन्नति का वर्णन बड़े मनो रंजक ढंग से किया है। एक बार पढ़ना शुरू करने पर पुस्तक समाप्त किए विना नहीं छोड़ी जा सकती। इसके पढ़ने से साधकों और भक्तों को बड़ा आनंद मिल सकता है। जो लोग संसार में धर्म-अधर्म, सत्य और मिथ्या में रात-दिन लिप्त रहते हैं, उनकी भी, इसके पारायण से, कुछ काल के लिये, अवश्य ही आत्मिक स्थिति बदल सकती है, और उन्हें भी इस बात की अनुभूति हो सकती है कि उनका ढोंग और विविध प्रकार का छल-कपट अंत में न तो सुखदायी हो सकता है, और न नरक जाने से बचा सकता है। हरएक सद्भावुक से हमारा आग्रह है कि इसका पाठ अवश्य करे।

× × ×

अरविंद—मुद्रक तथा प्रकाशक, श्रीपद्मनारायण आचार्य एम्० ए०, गीता-धर्म-प्रेस, बनारस।

इस चौबीस पृष्ठ की पुस्तिका में योगी श्रीअरविंद घोष की जीवन तथा साधना-संबंधी मुख्य-मुख्य बातें हैं। श्रीअरविंद के विचार जानने को अनेक भारतवासी उत्सुक हैं, और इसके पढ़ने से किसी अंश में उनके कौतूहल की शांति हो सकती है। योगिराज श्रीअरविंद का एक सुंदर चित्र भी है। मूल्य कुछ लिखा नहीं।

× × ×

हरिस्तुतिः—अनुवादक, श्रीमधुसूदनप्रसाद मिश्र 'मधुर' व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ; मुद्रक तथा प्रकाशक, पं० पद्म-नारायण आचार्य एम्० ए०, संपादक विद्यानंद-ग्रंथमाला, गीता-धर्म-प्रेस, साक्षी विनायक, बनारस।

श्रीमच्छंकराचार्य-विरचित हरिस्तुति हिंदी-अनुवाद-सहित है।

× × ×

पूजा के फूल—लेखक, भूपेंद्रनाथदेव शर्मा; प्रकाशक, गीता-प्रेस, गोरखपुर; पृष्ठ-संख्या ४१४। मूल्य ॥।८)

श्रीभूपेंद्रनाथ सान्याल महोदय के बँगला-लेखों का अनुवाद है। लेखक के विषय में श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार की राय है—"सम्मान्य श्रीसान्याल महोदय वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध ऊँचे साधक हैं। उनके जीवन में पवित्रता है, शब्दों में अनुभव है, और रचना में कला का मधुर विकास है।" गीता-प्रेस की अन्य पुस्तकों की भाँति छपाई सुंदर और मूल्य कम है। भक्ति की साधना करने-वालों के लिये उपादेय है।

केदारनाथ भट्ट (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'इनकमटैक्स गाइड अर्थात् आय-कर-विधान-प्रदीपिका' (क़ानून)—लेखक, बाबू बैजनाथप्रसाद अग्रवाल ; मूल्य १)

(२) 'सर्वेइंग और लेवलिंग' (कृषि)—लेखक, स्व० पं० श्रीनिहालचंद्र गौड़ ; मूल्य १)

(३) 'सिविल इंजीनियरिंग' (कृषि)—लेखक, स्व० पं० श्रीनिहालचंद्र गौड़ ; मूल्य १।)

(४) 'कवि और काव्य' (आलोचना)—लेखक, श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी ; मूल्य १)

(५) 'सत्यनाम तीसा-जंत्र' (भजन) ; मूल्य)॥

(६) 'सत्यनाम गुरु-महिमा' (भजन)—लेखक, महंत श्रीवल्लभदासजी ; मूल्य ।=)

(७) 'सदुपदेश-मणिमाला' (भजन) ; मूल्य)॥

(८) 'सद्गुरु कबीर साहब' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीमोतीदास 'चैतन्य' ; मूल्य ॥)

(९) 'ज्ञानस्वरोदय' (योग)—संपादक, दीवान श्रीबालकदासजी गुरु और श्रीवल्लभदासजी ; मूल्य ।-)॥

(१०) 'शंका-समाधान-मयंक' (समालोचना)—लेखक, श्रीपं० रामखिलावन गोस्वामी ; मूल्य १)

(११) 'साखी-ग्रंथ' (काव्य)—टीकाकार, श्रीविचारदासजी शास्त्री ; मूल्य ३) सजिल्द

(१२) 'झलक' (कहानी)—लेखक, श्रीअवध-नारायण ; मूल्य ।=)

(१३) 'गुन-गुन' (काव्य)—लेखक, प्रो० मनोरंजन एम्० ए० ; मूल्य ॥)

(१४) 'प्रतापादित्य' (जीवनी)—लेखक, श्रीपरमानंददत्त 'परमार्थी' ; मूल्य ।)

(१५) 'बालकों का योरप' (भ्रमण)—लेखक, प्रो० कृपानाथ मिश्र एम्० ए० ; मूल्य ।=)

(१६) 'विमोचन' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीराजगोपालाचार्य ; मूल्य ॥)

(१७) 'संत नंदनार' (जीवनी)—लेखक, श्रीपं० हृषीकेश शर्मा ; मूल्य ।)

(१८) 'मोतियों का हार' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीपं० व्रजनंदन शर्मा ; मूल्य ।=)

(१९) 'हज़रत मुहम्मद' (जीवनी)—लेखक, श्रीसुंदरलालजी ; मूल्य ॥)

(२०) 'बालकृष्ण' (जीवनी)—लेखक, श्रीअवधनंदनजी ; मूल्य ।=)

(२१) 'तामिल स्वयं शिक्षक' (विविध)—लेखक, एस्० महालिंगम् बी० ए० ; मूल्य १)

(२२) 'कालिंदी' (काव्य)—लेखक, श्री-प्रणयेश शुक्ल ; मूल्य ॥=)

(२३) 'मौक्तिक माल' (गद्य-काव्य) - लेखिका, कुमारी दिनेशनंदिनी चौरडिया ; मूल्य १।)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पंजाब का सुप्रसिद्ध, सर्वप्रशंसित, हिंदी में
एकमात्र ग्रामोपयोगी राष्ट्रीय मासिक पत्र

दीपक

वार्षिक मूल्य २॥)
पृष्ठ संख्या ६ सौ

लाहौर का प्रमुख दैनिक 'हिंदी मिलाप' लिखता है—"दीपक वास्तव में 'यथा नाम तथा गुणः' के अनुसार दीपक ही है, जो अज्ञानांधकारावृत ग्रामों में प्रकाश की छटा फैलाने के पवित्र उद्देश्य से निकाला गया है। इसमें ग्राम-सुधार, राष्ट्र-भाषा-प्रचार, पशु-पालन, देहाती साहित्य, उद्योग-धंधों तथा शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्याओं पर उत्तमोत्तम तथा सार-गर्भित लेख रहते हैं। भाषा प्रायः सरल तथा शैली रोचक होती है, जिससे साधारण योग्यतावाले ग्रामीण भी उससे लाभ उठा सकते हैं। बालविनोद तथा मातृमंडल-संबंधी लेख पत्र को और भी अधिक महत्त्वपूर्ण तथा मनोरंजक बना देते हैं। ग्राम-सेवकों के लिये यह पत्र बहुत ही लाभदायक है।"

उत्कृष्ट पाठ्य-सामग्री के कारण 'दीपक' संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत व जोधपुर राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा अपने स्कूल व पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत किया गया है।

नए ग्राहकों को भारी रियायत

दिवाली पर प्रकाशित होनेवाले 'नववर्षांक' से नए ग्राहक बननेवालों को कई विशेष रियायतें दी जावेंगी। पूरी जानकारी के लिये पत्र-व्यवहार करें।

मैनेजर 'दीपक'
साहित्य-सदन, अबोहार (पंजाब)

साहित्य-सदन द्वारा प्रकाशित
सरल, सस्ती, उपयोगी

पुस्तकें

१—विश्वधाय

३० वर्ष तक गवर्नमेंट-डेयरी-फार्मों पर मैनेजर के रूप में रह गोपालन-संबंधी प्रत्यक्ष अनुभव-प्राप्त श्रीबाबू भगवानदास वर्मा ने गौओं की नसल-सुधार, दूध बढ़ाना, आहार, दूध, दही, लस्सी आदि के गुण आदि ३२ विषयों का वर्णन किया है। सादे व तिरंगे गौओं-साँडों के ७ चित्र, सौ के लगभग पृष्ठ, मूल्य ।) मात्र।

२—ग्राम-सुधार नाटक

देहातियों, ग्राम-सेवकों के लिये परमोपयोगी ग्रंथ। 'बिहार-सहयोग' पत्र लिखता है—"इसमें लेखक ने 'ग्राम-सुधार' की सभी आवश्यक और ज्ञातव्य बातें बड़ी खूबी के साथ दर्शाई हैं। पुस्तक सरल भाषा में लिखी गई है।" 'लेखक' प्रयाग—"पुस्तक राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत है।" मूल्य ॥)

३—बालोपदेश

"बालकों के रोजमर्रा काम में आनेवाली बातों को इस छोटी-सी पुस्तक में सुंदर व सरल गीतों में वर्णित किया है। भाषा खूब चटकीली, सरस है। छपाई-सफ़ाई भी बच्चों के लिये आकर्षक व मनोरंजक है।" 'वाणी' पत्रिका। पृष्ठ-संख्या ४२, मूल्य =)॥

४—ईसप-नीति-निकुंज

नीति-शास्त्र के आचार्य महर्षि ईसप की उपदेश-प्रद, दिलचस्प ६२ कहानियों का सजीव, सरल व रोचक पद्यानुवाद। अनूठे भावों से युक्त पुस्तक का मूल्य ॥) मात्र।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुधा का

११वाँ वर्ष शुरू हो गया !

श्रावण (अगस्त) की संख्या के रूप में

प्रवेशांक निकल गया !!

सुधा ने उर्दू बीबी की क्रीड़ा-स्थली लखनऊ को हिंदी-साहित्य से सराबोर किया है। आज लखनऊ के बाज़ार में धारावाही हिंदी बोली जाती है। हमने सदा सुधा के दो ध्येय रक्खे—एक उसे सस्ते-से-सस्ते मूल्य में आप तक पहुँचाने का, दूसरे उसके साथ हिंदी के उदीयमान, प्रसिद्ध नए-पुराने कलाकारों का आपसे परिचय कराने का। अब हम सुधा को हिंदी की एक अनोखी वस्तु बनाना चाहते हैं। सुधा के इस विशेषांक को देखकर आप तृप्त हो जायँगे !

सिर्फ़ १००० प्रतियाँ अधिक छपी हैं। विशेषांक का मूल्य इस प्रकार है—

राजसंस्करण २), साधारण संस्करण १), सस्ता संस्करण ॥)

जो ११वें नए वर्ष से ग्राहकों में नाम लिखाएँगे,

उन्हें यह अंक मुफ़्त मिलेगा।

शीघ्रता करें।

सुधा का साधारणतया मूल्य इस प्रकार है—

राजसंस्करण वार्षिक मूल्य १२)	विदेशों के लिये १२)
प्रति संख्या १)	
साधारण संस्करण ,, ,, ६)	,, ,, ६)
प्रति संख्या ॥)	
सस्ता संस्करण ,, ,, ४)	,, ,, ४)
प्रति संख्या ।=)	

पत्र-व्यवहार का पता—मैनेजर सुधा, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सुधा के ११वें वर्ष की ख़ुशी में

कुछ ख़ास पुस्तकें आधी क़ीमत में !

केवल ऑक्टोबर-मास तक !!

कम-से-कम २) की पुस्तकें ख़रीदना ज़रूरी है।

यह अवसर निकल जाने पर फिर हाथ न आएगा !!!

गंगा-पुस्तकमाला (लखनऊ) की सर्वोत्कृष्ट और सचित्र पुस्तकें

१. उपन्यास

कर्म-फल (सचित्र)—मूल-लेखिका, मेरी कॉरेली ; अनुवादक, प्रोफ़ेसर बैजनाथ कोटी; मूल्य १।),२)

कर्म-मार्ग—अनुवादक, श्रीदुर्गाविनायकप्रसाद एम्० ए०, एल्-एल० बी० ; मूल्य १।), २)

क़ैदी—अनुवादक, श्रीऋषभचरण जैन; मूल्य ।।),१)

कोतवाल की करामात लेखक, बाबू वृंदावन-लाल वर्मा ऐडवोकेट ; मूल्य १), १॥)

गिरिबाला (सचित्र)—लेखक, पं० ब्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० ऐडवोकेट; मूल्य १) १॥)

जब सूर्योदय होगा (सचित्र)—अनुवादक, पं० गोपीवल्लभ-शालग्राम उपाध्याय ; मूल्य १), १॥)

पतन (सचित्र)—लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल० बी०; मूल्य १॥), २)

पवित्र पापी (सचित्र)—अनुवादक, पं० ब्रज-कृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल० बी० और कविराय विद्याधर विद्यालंकार ; मूल्य ३), ३॥)

पाप की ओर—अनुवादक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल० बी०; मूल्य १), १॥)

प्रेम-परीक्षा—मूल-लेखिका, मेरी कॉरेली; अनुवादक, श्रीपशुपाल वर्मा ; मूल्य ।॥=), १=)

मृत्युंजय—लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी ; मूल्य ।), १)

विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल० बी० ; मूल्य १), १।)

संसार-रहस्य अथवा अधःपतन—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य १॥), २)

२. गल्प और कहानियाँ

जासूस की डाली (सचित्र)—लेखक, बाबू गोपाल-राम गहमरी, जासूस-संपादक ; मूल्य १॥), २)

तूलिका (सचित्र)—लेखक, श्रीविनोदशंकर व्यास ; मूल्य १), १॥)

नाट्य-कथामृत (सचित्र)—लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०; मूल्य १), १॥)

प्रेम-गंगा (सचित्र)—अनुवादक स्व० पं० ईश्वरी-प्रसाद शर्मा संपादक 'हिंदूपंच'; मूल्य १), १॥)

संध्या-प्रदीप—ले०, श्रीगोविंदवल्लभपंत; मू० १), १॥)

३. नाटक

आहुति अथवा जयपाल—अनुवादक, पं० रूप-नारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १), १॥)

कृष्णकुमारी (सचित्र)—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १), १॥)

कीचक—लेखक, श्रीभगवन्नारायण भार्गव बी० ए०; एक्स-एम्० एल्० सी० ; मूल्य १), १॥)

खाँजहाँ (सचित्र)—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य १=), १॥=)

प्रबुद्ध यामुन—लेखक, श्रीवियोगी हरि ; मूल्य १), १॥)

समाज या अछूतोद्धार—लेखक, श्रीघनानंद बहु-गुणा एम्० ए० ; मूल्य ॥।=), १।=)

सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन (सचित्र)—अनु-वादक, श्री ठाकुर लक्ष्मणसिंह वकील; मूल्य ॥), १)

४. व्यंग्य, हास्य और प्रहसन

अचलायतन—मूल लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर ; अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय; मू० ॥), १)

प्रायश्चित्त-प्रहसन—लेखक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य =), ।—)

मध्यम व्यायोग—लेखिका, श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल ; मूल्य =), ।)

मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, स्वर्गीय पंडित शिवनाथजी शर्मा बी० ए० ; मूल्य २॥), ३)

रावबहादुर—मूल-लेखक, मौलियर ; अनुवादक, पं० लक्ष्मीप्रसाद पांडेय ; मूल्य ।॥), १।)

इनमें से अधिकांश पुस्तकें शिक्षा-विभागों द्वारा इनाम में देने और लाइब्रेरियों के लिये मंजूर हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

लबड़धोंधों (सचित्र)—लेखक, स्व० पं बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ; मूल्य ।।), १।)

५. काव्य

आत्मार्पण (सचित्र)—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र'; मूल्य ।।।), १।)

उषा (सचित्र)—लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त 'कुसुम' ; मूल्य ।।=), १=)

भारत-गीत – लेखक, कवि-सम्राट् स्व० पं० श्रीधर पाठक ; मूल्य ।।।=), १।=)

मधुवन – लेखक, श्रीआनंदकुमारजी; मूल्य ।), ।=)

रति-रानी—लेखक, 'सुहृत्त्रय'; मूल्य १।।), २।)

लतिका—लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी; मूल्य १), १॥)

६. साहित्य

सौंदरानंद-महाकाव्य—प्रणेता, अध्यापक रामदीन पांडेय एम्० ए० ; मूल्य ।।), १)

संभाषण—लेखक, पं० दुलारेलालजी भार्गव ; मूल्य १), ।)

७. समालोचनाएँ

भवभूति—अनुवादक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ज्वालादत्त शर्मा ; मूल्य ।।=), १=)

८. जीवन-चरित्र

अयोध्यासिंह उपाध्याय— मूल्य ≡), ।-)

द्विजेंद्रलाल राय—लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ; मूल्य ≡), ।-)

देशहितैषी श्रीकृष्ण – लेखक, स्वर्गीय पं० राधाचरण गोस्वामी ; मूल्य -),=)

प्राचीन पंडित और कवि—लेखक, आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ।।।=), १।=)

सम्राट् चंद्रगुप्त—लेखक, पं० बालमुकुंद वाजपेयी; मूल्य १), ।=)

९. इतिहास

इँगलैंड का इतिहास (तीन भाग, सचित्र)—ले०, डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, पी-एच्० डी० (उर्दू-हिंदी पृथक्) मूल्य ३॥), ४।)

जापान का इतिहास—लेखक पं० श्यामबिहारी मिश्र एम्० ए० और पं० शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ।।=), १।=)

१०. कृषि

उद्यान (सचित्र)—लेखक, श्रीशंकरराव जोशी एग्रिकल्चरल ऑफ़िसर ; मूल्य १=), १॥=)

किसानों की कामधेनु (सचित्र)—लेखक, पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ; मूल्य ।=), ॥)

११. स्वास्थ्य और चिकित्सा

तात्कालिक चिकित्सा (सचित्र)—लेखक, बाबू लालबहादुरलाल ; मूल्य १), १॥)

प्रसूति-तंत्र—लेखक, श्रीडॉ० रामदयाल कपूर एम्० बी०, बी० एस्० ; मूल्य २॥), ३)

प्राकृतिक स्वास्थ्य—लेखक, श्रीठाकुरदासजी ; मूल्य ॥=)

स्वास्थ्य की कुंजी (सचित्र)—लेखक, डॉ० बाबूराम गर्ग ; मूल्य १), १॥)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा (सचित्र)—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य ; मूल्य ॥=), ।॥)

१२. वैज्ञानिक

भूकंप—लेखक, बाबू रामचंद्र वर्मा ; मूल्य ॥।=) १।=)

१३. नवयुवकोपयोगी

एशिया में प्रभात—मूल ले०, पाल रिचर्ड; अनु०, ठा० कल्याणसिंह शेखावत बी० ए०; मूल्य ॥), १)

किशोरावस्था (सचित्र)—ले०, गोपालनारायण-सेन-सिंह बी० ए०; मूल्य ॥=), १=)

मुक्ति-मंदिर—अनुवादक, प्रो० बेनीमाधव अग्रवाल ; मूल्य ॥।=), १।=)

हिंदू-जीवन का रहस्य—लेखक, देवता-स्वरूप भाई परमानंदजी एम्० ए० ; मूल्य ॥=), १।=)

१४. योग

राजयोग—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १॥), २)

१५. विविध

किसान कैसे उठें ?—लेखक, श्रीशीतलासहाय, मूल्य -)

किसानों का क़र्ज़—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ।)

बैल—लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त ; मूल्य -)॥

भार्गव-चित्रावली (पहला भाग)—मूल्य २, २॥)

भार्गव-चित्रावली (दूसरा भाग)—मूल्य २), २॥)

भारत में बाइबिल (दो भाग)—लेखक, श्रीसंतराम बी० ए० ; मूल्य प्रत्येक भाग १॥), २)

पुरानी दुनिया—लेखक, श्रीरामचंद्र वर्मा; मूल्य १॥), २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

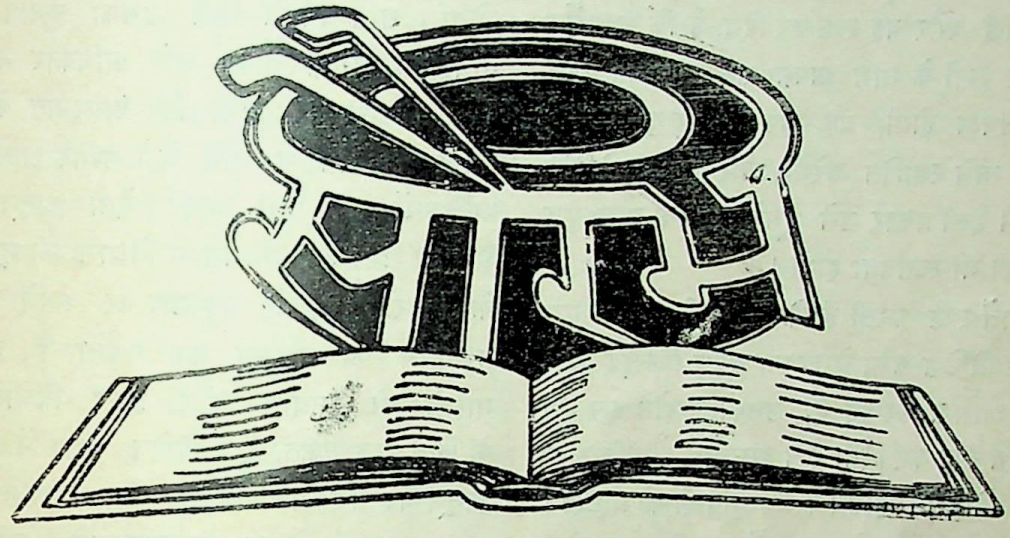

[संपादकीय विचार]

१. आयर्लैंड का नया शासन-विधान

शताब्दियों तक ब्रिटिश पार्लियामेंट के साथ स्वतंत्रता का युद्ध करके दिसंबर सन् १६२१ ई० में आयर्लैंड ने अपनी स्वाधीनता प्राप्त की। उस समय आयर्लैंड के साथ पार्लियामेंट की जो संधि हुई थी, उसमें लिखा गया था कि "ब्रिटिश-साम्राज्य के अंतर्गत जो पद दूसरे उपनिवेशों—कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और दक्षिण-आफ्रिका की यूनियन—को प्राप्त है, वही आयर्लैंड को प्राप्त होगा। देश में शांति, व्यवस्था और अच्छी सरकार क़ायम रखने के लिये एक पार्लियामेंट होगी, और उसकी एक कार्यकारिणी कौंसिल होगी, जो पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी होगी। आयर्लैंड को आयरिश फ्री स्टेट कहा जायगा।" इस संधि के शब्दों से प्रकट होता है कि आयर्लैंड का पद अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों के समान ही रक्खा गया था, और औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करने में वह अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों से कहीं पीछे था। किंतु इसके पश्चात् मि० डी० वेलेरा के शासन में आयर्लैंड ने जो वैधानिक उन्नति की, उससे अन्य ब्रिटिश उपनिवेश बहुत पीछे रह गए, और आज आयर्लैंड अपने लिये जो शासन-विधान बना रहा है, उसमें उसने अपनी पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर दी है। सन् १६२६ ई० की साम्राज्य-परिषद् में औपनिवेशिक स्वराज्य-प्राप्त देशों को ब्रिटिश शासन-विधान के अंदर ही एक प्रकार से स्वतंत्र राज्यों के-से अधिकार मिल गए थे, किंतु वे सब इँगलैंड के सम्राट् के शासन-सूत्र में बँधे हुए हैं। अभी सम्राट् की ताजपोशी के अवसर पर भी एक साम्राज्य-परिषद् हुई, और उस समय परिषद् के अध्यक्ष, प्रधान मंत्री मि० बाल्डविन ने यही बात दुहराई कि ब्रिटिश शासन के अंतर्गत जितने प्रदेश हैं, वे एक सम्राट् के नाम पर आपस में सूत्रबद्ध हो रहे हैं। लेकिन आयर्लैंड ने अपना जो नया शासन-विधान तैयार किया है, उसमें उसने इस प्रकार की बंदिश को भी तोड़ दिया है। उसमें ब्रिटेन, कॉमन-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेल्थ अथवा सम्राट् के साथ प्रत्यक्ष संबंध की चर्चा तक नहीं है, और यह स्पष्ट कर दिया है कि आयर्लैंड को दूसरे देशों के साथ अपना संबंध स्थापित करने की स्वतंत्रता होगी, वह अपने इच्छानुसार दूसरे देशों से संधि स्थापित करेगा, और अपने प्रतिनिधि भेजेगा। इसी प्रकार उसे दूसरे देशों के साथ युद्ध छेड़ने की भी स्वतंत्रता होगी।

ये बातें स्पष्ट करती हैं कि मि० डी० वेलेरा एक मुद्दत से ब्रिटिश सत्ता से अपना संबंध विच्छेद करने की जो कोशिश कर रहे हैं, उसको उन्होंने इस नए विधान में स्पष्ट कर दिया है। आयर्लैंड कैथोलिक है, जब कि ब्रिटिश सिंहासन पर बैठनेवाले को प्रोटेस्टेंट होना ज़रूरी है। दूसरे, आयर्लैंड कृषि-प्रधान देश है, और इँगलैंड उद्योग-धंधों का। ब्रिटेन से अपना संबंध अलग करने के लिये मि० डी० वेलेरा यही दलील किया करते हैं। पहले उन्होंने बादशाह के नाम पर ली जानेवाली शपथ को तोड़ दिया। फिर ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा नियुक्त गवर्नर जनरल को इस्तीफ़ा देने के लिये मजबूर किया। और, दिसंबर सन् १९३६ में, जब सम्राट् एडवर्ड अष्टम ने सिंहासन छोड़ा, उन्होंने एक नया विधान तैयार करके गवर्नर जनरल के पद को ही उड़ा दिया, और विधान से सम्राट् शब्द को भी पृथक् कर दिया।

नए विधान के अनुसार आयर्लैंड 'आयरिश फ्री स्टेट' न रहकर अपने मौलिक नाम 'ऐरे' या 'आयर्लैंड' के नाम से बोला जायगा, और आयर्लैंड की भाषा ही राजभाषा होगी। गवर्नर जनरल की जगह पर अब प्रेसीडेंट का चुनाव हुआ करेगा, और उसके लिये अमेरिका के प्रेसीडेंट के चुनाव की तरह समस्त देश के प्रत्यक्ष वोटों द्वारा चुनाव होगा। प्रेसीडेंट के अधिकार न तो इतने विस्तृत रक्खे हैं, जिससे वह अमेरिका के प्रेसीडेंट की तरह एक डिक्टेटर बन जाय, और न फ्रांस के प्रेसीडेंट की तरह मंत्रिमंडल के हाथ का खिलौना ही रहेगा। सात वर्ष के लिये उसका चुनाव होगा। मंत्रिमंडल भंग करने का उसे अधिकार न होगा, पर उसे अधिकार होगा कि अल्प-मत के मंत्रि-मंडल को भंग न होने दे। अगर आयर्लैंड की पार्लियामेंट (Dail) कोर्ट ऐसा क़ानून बनाती है, जो प्रेसीडेंट के मत में विधान की मूल बातों के विपरीत है, तो वह उस पर अपने हस्ताक्षर न करने की घोषणा कर सकता है, और उस मामले को सुप्रीम कोर्ट द्वारा विचार करने के लिये भेज सकता है। विशेष दशा में वह किसी क़ानून पर सर्व-साधारण का मत जानने के लिये नए चुनाव की घोषणा कर सकता है। प्रधान मंत्री प्रेसीडेंट के प्रति उत्तरदायी न होकर 'डेल' के प्रति ज़िम्मेवार होगा। वह प्रेसीडेंट से कहकर पार्लियामेंट को भंग करा सकता है। पर प्रधान मंत्री पार्लियामेंट को बुलाने में असमर्थ हो, तो प्रेसीडेंट उसे बुला सकता है, तथा प्रधान मंत्री की पराजय पर प्रेसीडेंट को उसे बरख़ास्त कर देने का भी अधिकार है।

व्यवस्थापिका सभा के दो भाग होंगे—एक बड़ी सभा, जो सीनेट कहलाएगी, और दूसरी छोटी सभा, जिसका नाम 'डेल' होगा। बड़ी सभा के प्रतिनिधि कुछ नामज़द होंगे, और कुछ का समय नियत होगा। छोटी सभा के सदस्यों का चुनाव सर्व-साधारण द्वारा होगा, पर बड़ी सभा को आर्थिक मामलों में कुछ भी अधिकार नहीं होगा, तथा 'डेल' के साधारण क़ानून में ही वह नाममात्र के संशोधन पेश कर सकेगी। इस प्रकार नए विधान से आयर्लैंड की राजनीतिक स्थिति बिलकुल स्वतंत्र देशों की-सी हो जायगी। इस विधान को जन-साधारण का मत जानकर स्वीकार किया जायगा। भारतवर्ष की स्थिति से जब आयर्लैंड की स्थिति का मिलान करते हैं,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तो कैसा ज़मीन-आसमान का-सा अंतर मालूम पड़ता है !

× × ×

२. रेडियो-शक्तिवाले मनुष्य

ज़ेकोस्लोवेकिया के प्रदेश मोरेविया - औस्ट्राउ से यह ख़बर आई है कि वहाँ के दो कारीगरों, फ्रांज़ साइकोरा और रूडल्फ़ बोल्टाफ़ेस्की, ने अपनी रेडियो-शक्ति का अद्भुत और आश्चर्य-जनक परिचय दिया है। हाल में प्राग के दो विश्रुत प्रोफ़ेसरों ने इन दोनो कारीगरों के कथन की पूरी जाँच की, और उनका कहना है कि कथन झूठा नहीं, सत्य है; हाँ, रहस्य का पता नहीं लगा। इन दोनो प्रोफ़ेसरों में से एक थे डॉक्टर अर्नेस्ट, जो ज़ेकोस्लोवेकिया के रेडियो सुननेवालों की सोसाइटी के प्रधान हैं, और दूसरे थे डॉक्टर शाफ़ानेक्, जो कार्ल-विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान के आचार्य हैं। इन दोनो ने पहले फ्रांज साइकोरा और रूडल्फ़ बोल्टाफ़ेस्की की अंग-परीक्षा की, और तलाशी भी ली, पर कोई वस्तु ऐसी न मिली, जो संदेह-जनक कही जा सके। उपरांत उनसे रेडियो-शक्ति का प्रदर्शन करने के लिये कहा गया। उन्होंने लगभग २० मिनट तक गहरी साँसें लीं, और फिर लाउड-स्पीकर को हाथों में लिया। कुछ ही क्षणों में एक निकटवर्ती स्टेशन का प्रोग्राम उनके ज़रिए सुनाई देने लगा। ज्यों-ज्यों साँसें गहरी ली गईं, त्यों-त्यों आवाज़ और साफ़ सुनाई दी। कहा यहाँ तक जाता है कि ये दो कारीगर लगभग दस रेडियो-स्टेशनों की ख़बरें पा सकते और उन तक भेज भी सकते हैं। अभी तक जिन स्टेशनों से ये अपना संबंध स्थापित कर सके हैं, उनमें पेरिस, लंदन, बूडापेस्ट और ब्रेसलाड भी शामिल हैं। सुनते हैं, ये दोनो कारीगर प्राग-विश्वविद्यालय में अपनी इस आश्चर्य-कारिणी शक्ति का प्रदर्शन करनेवाले हैं।

यदि यह समाचार सत्य है, और इन दो कारीगरों ने रेडियो-शक्ति का प्रदर्शन कर दिया है, तो यह मानना पड़ेगा कि मनुष्य को दूर की बातें सुनने के लिये किसी यंत्र-विशेष की आवश्यकता नहीं। जो बात दूर की वार्ता के बारे में कही जा सकती है, वही दूर की चीज़ें देखने के बारे में भी सही मानी जा सकती है। योरप के विज्ञान-वेत्ता आज तक दूर-दर्शन और दूर-श्रवण को कपोल-कल्पना मानते हैं, पर भारतवर्ष में पहले से ही यह माना जाता है कि यदि मनुष्य ठीक नियमों का पालन करे, और योग का पर्याप्त अभ्यास किया करे, तो दूर-दर्शन और दूर-श्रवण की शक्तियाँ उसे प्राप्त हो सकती हैं।

दूर-दर्शन और दूर-श्रवण केवल सैद्धांतिक पद-मात्र नहीं। हमारे धर्म-ग्रंथों में कई स्थलों पर ऐसी विभूतियों का वर्णन आया है। महाभारत में ही लीजिए—संजय को दूर-दर्शक और दूर-श्रवण की शक्तियाँ प्राप्त थीं। इनके ही बल से उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध का विशद वर्णन धृतराष्ट्र को सुनाया। युद्ध-स्थल में जो कुछ होता था, जो वार्ताएँ होती थीं, उन्हें संजय देख और सुन सकते थे। यह तो हुई पुराण-काल की बात। इस युग में भी, हमारे इसी भारतवर्ष में, ऐसे कई योगी और सिद्ध उपस्थित हैं, जिन्हें ये दोनो सिद्धियाँ प्राप्त हैं। अमेरिका के सुप्रसिद्ध डॉक्टर अलेक्सिस् केरौल ने अपनी पुस्तक 'मनुष्य की अज्ञात शक्तियाँ' में यौगिक सिद्धियों का प्रचुर वर्णन किया है। डॉक्टर साहब को तिब्बती साधुओं के अनेक चमत्कार देखने को मिले हैं। इन पंक्तियों के लेखक के एक मित्र*, जो अमेरिकन हैं, यह कहते

* इनका नाम है डॉक्टर इवांज़वेंज़, यह तिब्बती-भाषा के पारदर्शी विद्वान् हैं। इन्होंने तिब्बती योग पर कई प्रामाणिक पुस्तकें लिखी हैं, जो ऑक्सफ़र्ड-युनिवार्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित की गई हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

थे कि उनके गुरु लामा क़ाज़ी सामदिप ने उन्हें यौगिक चमत्कारों के कई दृष्टांत दिए थे। तिब्बत के विख्यात योगी मिलरेपा को ये विभूतियाँ प्राप्त थीं।

इन बातों पर विचार करने से यही नतीजा निकलता है कि जहाँ योरप ने बाह्य विचार पर अधिक ज़ोर दिया है, वहाँ भारत ने अंतर्विचार पर अधिक प्रयोग किए थे। योरपियन चमत्कार यंत्राधीन हैं, किंतु भारत के योगियों के चमत्कार किसी यांत्रिक आधार के वश नहीं। भारत का योगी अपने को उस विश्वस्रष्टा का ही रूप या प्रतिकृति मानता है, जो चराचर में व्याप्त है, और रमण करता है। ईश्वर पूर्णत्व की सीमा है, मनुष्य में ऐसी शक्ति उपस्थित है, जिसके सहारे उसमें भी ईश्वरत्व का प्रादुर्भाव हो सकता है। अतः यदि उसमें, ईश्वरानुसंधान करते-करते, सार्वलौकिक ज्ञान की उत्पत्ति हो जाय, तो आश्चर्य ही क्या ? दूर-श्रवण और दूर-दर्शन योगी, असली योगी, के लिये मामूली शक्तियाँ हैं। वह इन लौकिक शक्तियों के झमेले में न पड़ पारलौकिक और शुद्ध आध्यात्मिक विषयों के चिंतन में ही व्यस्त रहता है।

जो भी हो, मोरेविया के इन कारीगरों ने कम-से-कम योरप को यह दिखा दिया है कि भारतीय ग्रंथों में वर्णित शक्तियाँ कोरी कल्पनाएँ ही नहीं। देखें, आगे चलकर योरप में इस दिशा में अधिक प्रयोग होते हैं या नहीं। यह विषय रोचक तो है ही, गहन भी है। अतः संभव है, कोई वैज्ञानिक इस ओर आकर्षित हो इस विषय की अन्य गूढ़ बातों का पता लगाने का प्रयत्न करे।

× × ×

३. पुस्तकों पर कमीशन

यह राष्ट्र-भाषा की विजय के लक्षण हैं कि हिंदी का प्रकाशन दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा है। भारतवर्ष के कोने-कोने से नित्य नए हिंदी-प्रकाशन-मंदिर का नाम सुनने में आ रहा है। परंतु प्रकाशन-संस्थाएँ इस समय इतनी आवश्यक नहीं, जितनी ज़रूरत है हिंदी-पाठकों की संख्या-वृद्धि करने की। पाठकों की भी कमी नहीं है, लेकिन उनकी एक बुरी आदत है—वे पुस्तक ख़रीदकर नहीं, माँगकर पढ़ते हैं। मराठी, बँगला आदि हिंदी की भाषा-सहेलियाँ हैं। उनके पाठकों की संख्या हिंदी की अपेक्षा बहुत ही कम है। पर उनके ग्राहकों की संख्या पर विचार करने से हमें लज्जा मालूम होनी चाहिए कि जिस भाषा को लेकर हम भारतवर्ष में नए राष्ट्र को नवजीवन देना चाहते हैं, जिसे उसके शीर्षासन में स्थापन करने की इच्छा रखते हैं, उसकी हमने उपेक्षा कर रक्खी है! हमारी अच्छी-से-अच्छी पुस्तक स्टॉक में पड़ी-पड़ी धूमिल हो रही है, और हमारे अच्छे-से-अच्छे लेखक एक वक़्त की रोटियों के लिये चिंतित हैं !!

हम शृंगार की कृत्रिमता के लिये बहुत कुछ खर्च करने को तैयार रहते हैं। हम होटलों और विश्रांति-गृहों के लंबे-लंबे बिलों को अदा करने में आनाकानी नहीं करते। हम प्रतिदिन रद्दी-से-रद्दी चित्रपट देखने ज़रूर जायँगे, लेकिन मातृभाषा के मंदिर से महीने में एक भी अच्छी पुस्तक ख़रीदकर अपने साथ न ले जायँगे कि वह दुख और सुख में, एक सच्चे मित्र की भाँति, अपने जीवन-पर्यंत हमारा साथ दे।

कुछ अपराध प्रकाशकों का भी ज़रूर है। जिसे देखो, वही प्रकाशक बन बैठा है। सस्ते के फेर में पड़कर अन्य भाषाओं की तृतीय श्रेणी के उपन्यासों का रद्दी अनुवाद, एक तिरंगे चित्र के आवरण में छिपाकर, बाज़ार में रख दिया जाता है। पुस्तक का प्रकाशन कुछ कठिन बात नहीं है, कठिनता है उसकी खपत की। इन नवीन प्रकाशकों की पुस्तकें जब स्टॉक में पड़ी-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पड़ी खराब होने लगती हैं, तो वे ५० और ६० प्रतिशत कमीशन काटना आरंभ कर देते हैं। इस बढ़ते हुए कमीशन की दर ने मार्केट को बिलकुल ख़राब कर दिया है। अच्छे-से-अच्छा ग्राहक भी लेखक और पुस्तक की उपयोगिता पर कुछ भी विचार नहीं करता। वह टूट पड़ता है प्रतिशत कमीशन पर! अधिक प्रतिशत कमीशन पर बिकनेवाली पुस्तकों में एक बात और भी ध्यान देने योग्य है। ग्राहकों को आकर्षित करने के लिये वे जो अधिक कमीशन देते हैं, उसकी आनुपातिक वृद्धि वह पुस्तक के मूल्य में पहले ही से कर देते हैं।

अधिक कमीशन पर मिलनेवाली पुस्तक कभी अच्छी पुस्तक नहीं हो सकती। उसमें हमारे मस्तिष्क के लिये सुंदर और स्वास्थ्य-प्रद भोजन नहीं मिल सकता। वह हमारी सच्ची सहचरी नहीं हो सकती, हमारे मन को संस्कृत नहीं कर सकती, हमारी सुरुचि का संवर्धन नहीं कर सकती। ऐसी सस्ती और रद्दी एक सौ पुस्तकों के स्थान में केवल एक ही अच्छी पुस्तक से हमारे पुस्तकालय की शोभा है! अतएव पुस्तकों के चुनाव में सावधान होने की ज़रूरत है!!

× × ×

४. रूस की शिक्षा-प्रगति

रूस की साम्यवादी सरकार ने जहाँ अपने बीस साल के समय में समाज के भिन्न-भिन्न भागों में असाधारण उन्नति की है, वहाँ शिक्षा पर ख़ास ज़ोर दिया है। इतना ही नहीं कि उसने अपने यहाँ से निरक्षरता का नाम मिटा दिया है, बल्कि मध्यम और उच्च श्रेणी की शिक्षा का विस्तार भी खूब किया है। इसी वर्ष के बजट में वहाँ के ६,००,००० अध्यापकों के वेतन में वृद्धि करने के लिये सरकार ने १,०२,२६,००००० रूबल्स (रूसी सिक्का) मंज़ूर किए हैं। इससे प्राथमिक और माध्यमिक श्रेणी के शिक्षकों के वेतन में पहले से ६० प्रतिशत से लेकर १०० प्रतिशत तक तरक्की हो जायगी। सोवियट शासन में भिन्न-भिन्न श्रेणी के राजकर्मचारियों के वेतन में विशेष अंतर नहीं रक्खा जाता है, इसलिये इस तरक्की के देने का अभिप्राय यह बतलाया गया है कि वहाँ के लोगों का रहन-सहन (Standard of Living) इतना ऊँचा हो गया है कि उसके अनुसार अध्यापकों के वेतन में इतनी तरक्की करना आवश्यक जान पड़ा। गत वर्ष डॉक्टर लोगों के वेतन में इसी प्रकार तरक्की की गई थी। वैसे रूस में प्रतिदिन के व्यवहार में आनेवाली चीज़ों के मूल्य में भी कमी हो गई है, इस कारण इस तरक्की का मूल्य और भी बढ़ जाता है। इसी साल ४३०० नए स्कूल और बढ़ाए गए हैं।

गत पाँच-छ वर्षों में ही रूस ने शिक्षा की उन्नति के लिये कितना व्यय किया है, इसका पता इन अंकों से लग सकता है—

सन्	शिक्षा का ख़र्च	
१६३१	३,१२,५०,०००००	रूबल
१६३२	४,५३,६०,०००००	,,
१६३३	५,५१,६०,०००००	,,
१६३४	६,२६,३०,०००००	,,
१६३५	८,३१,००००००	,,

सन् १६३६ के व्यय में गत वर्ष की अपेक्षा दस लाख और अधिक व्यय हुआ है। प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिये प्रति छात्र पर सरकार ६३ रूबल से लेकर १५६ रूबल तक ख़र्च करती है। यह व्यय उच्च माध्यमिक शिक्षा-काल में २६१ रूबल हो जाता है। इस पर विशेष बात यह है कि स्कूलों में शिक्षा के लिये फ़ीस बिलकुल नहीं ली जाती।

कला और दस्तकारी की शिक्षा के लिये इससे कईगुना ख़र्च किया जाता है। ७½ लाख विद्यार्थियों के लिये, जो दस्तकारी की शिक्षा प्राप्त करते हैं,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सरकार की तरफ़ से प्रति विद्यार्थी ६३० रूबल खर्च किए जाते हैं, तथा कॉलेजकी शिक्षा के लिये यह खर्च १६६७ रूबल से लेकर २,३२३ रूबल तक होता है।

हाईस्कूल, कॉलेज और शिल्प तथा उद्योग-धंधों के शिक्षालयों में गत तीन वर्ष में विद्यार्थियों की तादाद में जो तरक्की होती गई है, उसका पता इस प्रकार लगता है—

सन् १६३१	२,६५,५००	विद्यार्थी
,, १६३३-३४	४, ६५,०००	,,
,, १६३४-३५	५,१३,८००	,,

रूस-सरकार का यह दावा है कि सन् १६४१ ई० तक रूस में कॉलेज और दस्तकारी के हाई स्कूल के छात्रों की संख्या सत्तर लाख से कम न होगी, तथा कोई भी बालिग़ बिना माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हुए न रहेगा। रूस के इन शिक्षा-संबंधी अंकों का मुक़ाबिला भारत से किया जाय, तो दोनो की अवस्था में कितना महान् अंतर दिखाई देता है!

× × ×

५. शराब पर रोक

शराब की हानियाँ प्रत्यक्ष हैं। नैतिक दृष्टि से शराब व्यक्ति और समाज के लिये महाकोढ़ का काम देती है, धार्मिक दृष्टि से यह सभी धर्मों में त्याज्य वस्तु मानी गई है, और आर्थिक दृष्टि से भी इसका परिणाम महाभयंकर होता है। पश्चिम के देशों में तो शराब का प्रचलन इतना बढ़ा हुआ है कि वहाँ वह भोजन की खास वस्तु बन गई है। हमारे देश में भी जहाँ पश्चिमीय बातों की नक़ल की जाती है, वहाँ शराब का महत्त्व वैसा ही बढ़ता जाता है। जिस देश में शराब की जितनी अधिक खपत होगी, और जहाँ के लोग जितनी अधिक मात्रा में शराब पीते होंगे, वह राष्ट्र उतना ही कमज़ोर होगा। कौन नहीं जानता कि अफ़ीम के नशे ने चीन को नष्ट कर दिया। शराब का नशा अफ़ीम से भी उग्र है। अमेरिका आदि देशों को इसीलिये अपने यहाँ शराब पर पाबंदी (Prohibition) का क़ानून बनाना पड़ा, और सरकार की शक्ति के बल पर वहाँ से शराब रोकी गई। भारतवर्ष में जब से कांग्रेस का आंदोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में चला, तभी से राष्ट्रीय महासभा के कार्य-क्रम का एक अंग शराब की रोक भी रहा है। इसका अर्थ केवल राजनीति में महात्मा गांधी का अध्यात्मवाद या धार्मिक प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि इसमें राष्ट्र के हित और ग़रीब लोगों की मुक्ति का हेतु शामिल है। अपील, प्रार्थना, पिकेटिंग आदि से लोगों ने शराब पीना बंद नहीं किया, इसलिये अब जिन प्रांतों में कांग्रेस की हुकूमत क़ायम हुई है, उनमें क़ानून बनाकर शराबख़ोरी बंद की जायगी। इसके लिये कांग्रेस-कार्य-समिति ने छहो प्रांतों की सरकारों को तीन साल के अंदर शराब की बिक्री पूर्ण रूप से बंद कर देने का आदेश दिया है। यह ज़रूरी बात है कि इससे सरकार की आमदनी पर बड़ा असर पड़ेगा। केंद्रीय सरकार को साल-भर में दो करोड़ रुपए की आमदनी महकमा आबकारी से होती है, और जिन प्रांतों में शराब-खोरी बंद करने के क़ानून बनेंगे, उनमें भी शराब के द्वारा होनेवाली आमदनी कम नहीं है। मदरास-सरकार की एक चौथाई आमदनी महकमा आबकारी से होती है। यदि मदरास की सरकार अपने यहाँ शराब की बिक्री क़तई रोक दे, तो उसकी आमदनी पौने पाँच करोड़ रुपया कम हो जायगी। दो करोड़ की आमदनी तो वहाँ केवल ताड़ी से होती है। बंबई में यह आमदनी क़रीब साढ़े तीन करोड़, युक्तप्रांत में एक करोड़ तीस लाख छब्बीस हज़ार, बिहार-उड़ीसा में एक करोड़ सत्ताईस हज़ार और मध्यप्रांत में साढ़े सत्तावन लाख रुपए है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इससे यह प्रकट है कि अपने यहाँ शराब पर पाबंदी लगाने में कांग्रेस-सरकारों को भारी त्याग करना पड़ेगा। पर लोगों की आर्थिक क्षति और उनकी नैतिक गिरावट से रक्षा करने के लिये कांग्रेस-सरकारों को यह कड़ुवा घूँट पीना ही पड़ेगा; क्योंकि शराब के टैक्स से सरकार को जो आमदनी होती है, वह रुपया शराब की बिक्री से आता है, और जो लोग शराब खरीदते हैं, वे अपनी आमदनी को उसमें लुटाते हैं, जिससे नैतिक गिरावट के साथ-साथ उन्हें आर्थिक हानि भी उठानी पड़ती है। इस तरह शराब की आमदनी से सरकार की आय में जो कमी होगी, उसका अर्थ लोगों की आय में वृद्धि करना होगा। उदाहरण के लिये मदरास-प्रांत के सलेम-ज़िले को ले लीजिए, जहाँ मदरास-सरकार ने सबसे पहले शराब पर रोक लगाने का प्रयत्न किया है। इस ज़िले की कुल आबादी तीस लाख है, और यहाँ वर्ष-भर में शराब से पंद्रह लाख रुपए की आमदनी सरकार को होती है। यदि यहाँ शराब पर पूरी रोक-थाम लगा दी गई, तो पंद्रह लाख सालाना सरकार की आमदनी कम हो जायगी, और लोगों की आमदनी में इतने की वृद्धि सिर्फ़ सरकार को कर न चुकाने की मद में हो जायगी, क्योंकि औसत से प्रत्येक व्यक्ति शराब पर आठ आने का टैक्स सरकार को अदा करता है। जिस बिक्री पर आठ आने का टैक्स सरकार को अदा किया जाता है, वह कम-से-कम चारगुनी होगी। इसका अर्थ यह कि प्रत्येक व्यक्ति औसत से दो रुपए की शराब पीता है। शराब की और सब हानियाँ न सोची जायँ, तब भी औसत से प्रत्येक व्यक्ति की दो रुपए वार्षिक आय बढ़ती है, लेकिन शराब पीनेवाले सभी लोग तो नहीं होते। तीस लाख में से आधी तादाद बच्चे और स्त्रियों की समझ ली जाय, और शेष पंद्रह लाख में से पाँच लाख शराब पीनेवाले हों, तब तीस लाख व्यक्तियों की प्रति व्यक्ति दो रुपए वार्षिक आय से साठ लाख रुपए की आय अथवा उनके फ़ज़ूल खर्च में कमी होती है। इन रुपयों को पाँच लाख आदमियों में बाँट देने से प्रत्येक व्यक्ति को साल-भर में बारह रुपए की यानी प्रतिमास एक रुपया आमदनी बढ़ जाती है। जिस देश के प्रत्येक व्यक्ति की आमदनी औसत में छ पैसा रोज़ हो, उसे केवल शराब बंद कर देने में दो पैसे रोज़ की और आमदनी होने लगे, तो शराब की रोक से होनेवाली यह आर्थिक बचत कम महत्त्व की चीज़ नहीं। इसलिये शराब पर रोक लगाने की आयोजना सभी दृष्टि से आवश्यकीय है।

× × ×

६. चीन भी स्पेन बनता जा रहा है

अब तक पश्चिमी संसार युद्ध का क्षेत्र बन रहा था, अब पूर्व में भी युद्ध शुरू हो गया। अबीसीनिया की आग ठंडी होते-न होते स्पेन में ज्वाला भभक उठी, और अब वह धू-धू करती हुई चीन में आ पहुँची। इन सबका एक ही कारण है, और वह है सबल राष्ट्रों का निर्बल राष्ट्रों को हड़प कर जानेवाली नीति। अबीसीनिया कमज़ोर था, इटली उसे हज़म कर गया। इसका प्रभाव जापान पर होना स्वाभाविक था, क्योंकि जापान एक मुद्दत से चीन को अपने साम्राज्य का एक अंग बनाने की कोशिश में है। किंतु इसके लिये अंतरराष्ट्रीय प्रबल लोक-मत का सामना करते हुए उसने धीरे-धीरे क़दम बढ़ाया है। पहले उसने कोरिया पर अपना अधिकार किया, फिर मंचूरिया को अपनाया, और अब कितने ही दिनों से उत्तरी चीन की तरफ़ वह ललचाई हुई दृष्टि से देख रहा है। इसी के लिये उसने राष्ट्र-संघ से इस्तीफ़ा दे दिया, और योरप के राष्ट्रों द्वारा विरोध किए जाने पर भी उसने चीन की गर्दन पर से अपना फ़ौलादी पंजा नहीं उठाया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जब अंतरराष्ट्रीय शांति-रक्षा की चर्चा अधिक ज़ोरों से होने लगी, तब कुछ दिन के लिये उसने संसार की गति-विधि का निरीक्षण करते हुए चुपकी साध ली। पर जैसे ही इटली-अबीसीनिया की लड़ाई समाप्त हुई, वैसे ही उसके हथियार फिर खनखना उठे। उसने समझ लिया कि इटली के अबीसीनिया पर आक्रमण करने का राष्ट्र-संघ ने विरोध किया, इसके लिये इटली के माल का बॉयकाट भी किया गया, पर यह सब चर्चा टायँ-टायँ फिस हो गई। इटली अबीसीनिया को हड़प गया, और आज उसी इटली से इँगलैंड और फ्रांस दोस्ती का भाव बनाए रखने में ही अपना कल्याण समझते हैं। इसलिये 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस'वाली कहावत के अनुसार जापान ने भी अपने चिर काल के इरादे और चिरकालीन युद्ध की तैयारियां को उपयोग में लाने का उचित अवसर पा लिया, और चीन के साथ युद्ध छेड़ दिया। जापान की सेनाएँ उसी क्रूरता और बर्बरता के साथ चीन के प्रांगण में उतर आई हैं, जैसे इटली की सेनाएँ अबीसीनिया में उतरी थीं। इटली और जापान की स्थिति भी एक-सी है, पर इसमें संदेह है कि जापान को चीन में इतनी सुलभ विजय प्राप्त हो सके, जितनी इटली को अबीसीनिया में प्राप्त हो गई। चीन की सेनाओं का संचालन उसके पुराने और प्रसिद्ध जनरल च्यांगकाईशेक के हाथ में आने से दोनो ओर की शक्तियों का संतुलन हो गया है, इसलिये जब तक कोई तीसरी शक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध में भाग नहीं लेती, तब तक युद्ध का पलड़ा शीघ्र ही किसी एक ओर को झुकता नज़र नहीं आता।

किंतु यह कौन कह सकता है कि इस युद्ध में कोई तीसरी शक्ति भाग न लेगी, या अब तक अप्रत्यक्ष रूप में भाग नहीं ले रही है। जापान के वैदेशिक मंत्री के कथनानुसार तो जर्मनी उसका साथी है, क्योंकि वह साम्यवाद का विरोध करने के लिये जापान के साथ मित्रता स्थापित कर चुका है। इधर जापान खुले रूप में फ़ैसिस्टवाद की ओर झुकता जा रहा है। तब जर्मनी की ही नहीं, इटली की भी जापान के साथ सहानुभूति होगी, इसलिये हाल में इँगलैंड, अमेरिका, इटली और जर्मनी ने चीन तथा जापान के पास अपना यह संयुक्त मत भेजा है कि वे दोनो आपसमें सुलह कर लें। इसका मतलब यह है कि इँगलैंड और अमेरिका इस लड़ाई में फिर अपना तटस्थता का राग अलापते रहेंगे, और दोनो फ़ैसिस्टवादी राष्ट्रों की शक्तियाँ जापान के साथ उसी नीतिका पालन करेंगी, जो उन्होंने स्पेन में विद्रोही-दल के साथ किया है। तब इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता कि एशिया का चीन-देश योरप का स्पेन बनता जा रहा है।

× × ×

७. अंडमन के बंदी

अंडमन के बंदियों की भूख-हड़ताल ने बड़ा ही भीषण रूप धारण किया, और इससे राष्ट्रीय तथा सरकारी क्षेत्र में बड़ी हलचल मच गई। अंडमन के सवा दो सौ बंदियों के साथ देवली-कैंप-जेल तथा अन्य जेलों के बंदियों ने भी अनशन प्रारंभ कर दिया, और भूख-हड़ताल करनेवालों की संख्या क़रीब ६ सौ हो गई। आयर्लैंड में एक मेक्स्वनी और भारतवर्ष में एक यतींद्रनाथदास के मरण-पर्यंत अनशन ने दोनो देशों में वह स्थिति पैदा कर दी थी कि दोनो देशों की सरकारों को राजबंदियों को जेलों में बंद रखने के अपने सरकारी नियमों में परिवर्तन करने को मजबूर होना पड़ा। यदि अंडमन और भारत की जेलों के बंदियों की यह हड़ताल और कुछ दिन चलती रहती, तो उसका अवश्यंभावी परिणाम न-जाने कितने मेक्स्वनी और यतींद्रनाथ पैदा कर देता। कांग्रेस-कार्य-समिति ने इन बंदियों से भूख-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हड़ताल तोड़ने की अपील करके एक ओर जहाँ अपने देश के इन अभागे बंदियों के प्रति अपनी स्वाभाविक ममता और सहानुभूति का परिचय दिया है, वहाँ दूसरी ओर सरकार को भी एक विकट परीक्षा और संकटमय स्थिति में डाल देने से बचाया है। अस्तु। कांग्रेस-कार्य-समिति, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीसुभाषचंद्र बोस और बंगाल-प्रांत के समस्त कांग्रेस-नेताओं की अपील तथा महात्मा गांधी और कवींद्र रवींद्रनाथ ठाकुर-जैसी आत्माओं की चिंता को महसूस कर समस्त अनशनकारी लोगों ने अपना अनशन समाप्त कर दिया। अब आगे सरकार का कर्तव्य रह जाता है, और हिंदोस्तान के लोग फिर सरकार की तरफ़ इस दृष्टि से देख रहे हैं कि देखें वह बंदियों की माँगों को पूरा करने की कहाँ तक कोशिश करती है। इस संबंध में बंगाल-सरकार की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, पर उससे कम भारत-सरकार की नहीं। बंगाल-सरकार ने अब तक जो रवैया दिखलाया है, उससे उसकी काफ़ी बदनामी हो चुकी है। अंडमन के राजबंदियों में तीन चौथाई के लगभग बंगाल-प्रांत के हैं, इसलिये बंगाल के प्रधान मंत्री मि० फ़ज़लुलहक़ और स्वराष्ट्र सचिव सर निज़ामुद्दीन अपने वायदों को पूरा करके अपनी मिनिस्ट्री का भविष्य सुधार सकते और एक देशव्यापी हलचल से अपने को बचा सकते हैं। बाबू मोहनलाल सकसेना के पत्र का जो उत्तर वायसराय लिलिथगो ने दिया है, उससे इन बंदियों के प्रति वायसराय के सहानुभूति-पूर्ण रुख का परिचय मिलता है, यद्यपि बंदियों की माँगों को मंज़ूर करने में बहुत ही सभ्यता-पूर्ण ढंग

बाँसुरी की तान !

इसकी जादू-भरी तान सुनकर मित्रों ने मुझे घेर लिया। यह 'मोहिनी बाँसुरी नं० ५१' पीतल और काली पाइप से जोड़कर बनाई गई है, तभी तो इसकी आवाज़ मधुर और सुरीली है। प्रत्येक बाजे के साथ मिल जाती है, क्योंकि ट्यूंड की हुई है। स्कूल और कॉलेजों में इसके बैंड तैयार हो रहे हैं। सीधी बजती है, इसके २ टुकड़े करके पॉकेट में भी रख सकते हैं। मूल्य १।), डाक-ख़र्च २ तक ।≡), ३ मँगाने से ख़र्चा माफ़। 'हार-मोनियम-तबला-बाँसुरी-मास्टर' पुस्तक १)।

नाच और गाने

की महफ़िल में आपकी ख़ुशामद कोई क्यों करेगा ? जब कि आप एक गाना तक नहीं गा सकते ! इस कमी की पूर्ति के लिये मासिक पत्र 'संगीत' निकला है। इससे आपको घर बैठे संगीत-शिक्षा मिलेगी। २०० पृष्ठ के विशेषांक (विष्णुदिगंबर-अंक)-सहित वार्षिक मूल्य २) है। नमूना मुफ़्त मँगा देखिए। 'म्यूज़िक-मास्टर' पुस्तक भी सातवीं बार छप गई है। इसमें एक नए ढंग से हारमोनियम, तबला, बाँसुरी बजाना बताया गया है, तभी तो थोड़े समय में १२००० बिक चुकी है ! मूल्य १)

पता—गर्ग एंड कंपनी, संगीतशाला, १७ हाथरस (यू० पी०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

से उन्होंने मना किया है। सरकार की प्रतिष्ठा का ही सवाल है, तो इन बंदियों द्वारा अनशन स्थगित किए जाने पर वह भी पूरा हो गया है। भारत की जेलें यद्यपि मृत्युलोक का नरक हैं, पर भारतीय राजबंदी सर हेनरी क्रेक के स्वर्ग की अपेक्षा अपने देश के नरक में रहना ही अधिक पसंद करेंगे। इसलिये अंडमन के बंदियों की सबसे आवश्यकीय यह माँग पूरी की जानी चाहिए कि उन्हें अंडमन से वापस बुलाकर भारतीय जेलों में रक्खा जाय।

STAR TRADE S.K.B. MARK (REGD.)
स्टार ट्रेड मार्क

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि०

५० वर्ष से अधिक का सुप्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेंट दवाओं का बृहत् भारतीय कार्यालय

विभाग नं० (४६) पोस्टबॉक्स ५५४, कलकत्ता

वह बड़ी खुश हुई, जब उसने इसे खोलकर देखा।

उसकी एक सहेली ने भेंट में उसे यही दिया था।

नैवेद्य (Regd.)

(उपहार में देने का शृंगारदान)

वर्ष-गाँठ, विवाह आदि शुभ कार्यों में भेंट देने के लिये यह बनाया गया है। यह बॉक्स सुंदर बना हुआ है, और इस पर सुनहरे अक्षर लिखे हैं। यह देखने में मनोहर है। इसमें चुनी हुई निम्न-लिखित नौ शृंगार-सामग्रियों की पूरी शीशियाँ सजी हुई हैं, जिससे इसे खोलते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है। (१) केशराज, (२) केशधूना, (३) निहारिन स्नो, (४) दंतमुक्ता, (५) ओटोनिहारिन, (६) डाबर-मस्क-लवेंडर, (७) अलोका, (८) निहारिन पाउडर, (९) हील एक साबुन।

नोट – दवाएँ सब जगह मिलती हैं। ख़रीदते समय स्टार ट्रेड मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

लखनऊ शहर के सोल एजेंट:—किंग मेडिकल हॉल, २५ अमीनाबाद-पार्क

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२०००) का देव-पुरस्कार प्राप्त करनेवाला ग्रंथ, श्रीरामपाल-साहित्य-निकेतन-ग्रंथमाला
कुर्रीसुदौली-ज़िला रायबरेली का प्रथम सुमन

सजिल्द २॥) # श्रीरामचन्द्रोदय-काव्य विना जिल्द २)

यदि आधुनिक युग में भी तुलसी, केशव और भूषण के काव्य की छटा देखनी हो, तो 'रामचंद्रोदय-काव्य' पढ़िए। यह ब्रजभाषा-काव्य का नवीन, सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। इसके रचयिता हैं अयोध्या के राजकवि विद्याभूषण पं० रामनाथजी 'ज्योतिषी'। इसे पढ़कर आप पुलकित हो उठेंगे, और आपको रोमांच हो आएगा। भक्ति-भावना से आप गद्गद हो जाएँगे। श्रीरामपाल-साहित्य-निकेतन-ग्रथमाला, कुर्रीसुदौली, ज़िला रायबरेली के संस्थापक पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी द्वारा इसका प्रकाशन हुआ है। गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस में, सुंदर काग़ज़ पर, छपा है। बहुत-सी प्रतियाँ बिक गई हैं, शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करना होगा। देखिए, इसके विषय में विद्वान् लोग क्या कहते हैं—

श्रीरामचंद्रोदय-काव्य ब्रजभाषा का एक उत्कृष्ट एवं अद्भुत काव्य है। इस ग्रंथ की प्रत्येक पंक्ति में एक रस-सिद्ध कवि का हृदय निवास करता है।.....ब्रजभाषा अभी जीवित है, और उसमें अब भी मधुर-से-मधुर रचना हो सकती है, मेरे इस कथन के लिये ज्योतिषीजी का केवल यही एक ग्रंथ प्रमाणीभूत होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

—रामनरेश त्रिपाठी

(कविता-कौमुदी के रचयिता और ब्रजभाषा-काव्य के मर्मज्ञ)

श्रीरामचंद्रोदय-काव्य पढ़ने में कभी-कभी प्रस्फुरण और रोमांच हो आता है, जिससे वह आनंद याद आ जाता है, जो तुलसी, केशव और भूषण के काव्यों में मिलता है।

—डॉक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी

(प्रयाग-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर)

ब्रजभाषा-साहित्य में प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों में मैंने रामचंद्रोदय-काव्य को एक श्रेष्ठ ग्रंथ पाया। उसमें मुझे वैसा ही पांडित्य और काव्योत्कर्ष मिला, जैसा महाकवि केशव की रामचंद्रिका में मिलता है। रामचंद्रोदय-काव्य साहित्य की निधि है। मुझे आशा है, कवि की यह रचना साहित्य में अमर होगी।

—रामकुमार वर्मा

(प्रयाग-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर, तृतीय देव-पुरस्कार-विजेता)

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय पत्र-साहित्य में नई चीज़ !

'सचित्र दरबार'

का

ग्वा लि य र-अंक

पिछले पाँच महीने से 'सचित्र दरबार' का प्रत्येक अंक एक हलचल बनकर आता रहा है। जिसने कोई भी प्रति कहीं देख ली, चौंककर रह गया, और सभी ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया कि 'सचित्र दरबार' अपने ढंग का अद्वितीय हिंदोस्तानी पत्र है, जो इतनी शान-शौकत से नियम-पूर्वक निकल रहा हो। यों हिंदी में अनेक अच्छे-अच्छे पत्र प्रकाशित हो रहे हैं, लेकिन भारतवर्ष की आठ करोड़ जनता के प्रतिनिधित्व का दावा करनेवाले पत्र का जन्म देने का अभी तक किसी को साहस नहीं हुआ। 'सचित्र दरबार' को सभी लोग एक दुस्साहस कहते रहे हैं, और धीरे-धीरे वे इस दुस्साहस की प्रशंसा करने लगे हैं। 'ग्वालियर-अंक' का प्रकाशन एक अतिरिक्त साहस है, जिस पर आज तक किसी देशी राज्य-संबंधी पत्र ने दृष्टि-निक्षेप नहीं किया।

ग्वालियर-महाराज्य

प्रतापी सिंधिया-वंश की धवल कीर्ति का स्तंभ है, और भारतवर्ष का प्रत्येक बच्चा उसके ऐश्वर्य पर गर्व कर सकता है। हिंदोस्तान के किसी पत्र ने आज तक इस गौरवशाली महाराज्य पर ऐसा साहित्य प्रकाशित नहीं किया, जिससे ब्रिटिश भारत का पठित समाज ग्वालियर के यथार्थ महत्त्व से परिचित हो सके। इसलिये हम आगामी १ दिसंबर, १९३७ को 'सचित्र दरबार' का पहला विशेषांक

ग्वालियर-अंक

प्रकाशित कर रहे हैं। १८×२२ के चौथाई साइज़ के ३०० से अधिक पृष्ठ, ५० के लगभग आर्टप्लेट्स और १०० लेख (जिसमें ४ कहानियाँ, एक छोटा नाटक और २ छोटे काव्य भी सम्मिलित हैं) रहेंगे। भारतवर्ष और अनेक विदेशी विद्वानों को इस अंक के लिये लेख भेजने का आमंत्रण दिया गया है,

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

और हमें विश्वास है कि यह भारतीय पत्र-जगत् की अद्वितीय विभूति सिद्ध होगा। इस अंक के दो संस्करण प्रकाशित किए जायँगे। साधारण अंक का मूल्य ३) होगा, और राज-संस्करण का १०); परंतु वार्षिक ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट किया जायगा।

नीचे हम इस अंक में प्रकाशित होनेवाले कुछ लेखों की सूची दे रहे हैं। इनके अतिरिक्त ६५ लेख और रहेंगे, जिनकी सूची शीघ्र प्रकाशित की जायगी।

संयुक्त संपादक—

'सचित्र दरबार'

सिविल लाइंस, दिल्ली

'ग्वालियर-अंक' में जानेवाले कुछ लेखों की सूची—

१—अग्र-लेख।
२—ग्वालियर-महाराज्य का इतिहास।
३—प्रतापी पेशवा।
४—महादजी सिंधिया।
५—सिंधिया रक्त।
६—१७८१ का युद्ध।
७—कर्नल मूर।
८—ग्वालियर-महाराज्य और ब्रिटिश-सरकार की विभिन्न संधियाँ।
९—ग्वालियर के नव-रत्न।
१०—ताँतिया टोपी।
११—कौंसिल ऑफ़ रीजेंसी।
१२—ग्वालियर के समीपवर्ती राज्य।
१३—ग्वालियर-सरकार की धार्मिक नीति।
१४—शिवपुरी।
१५—ग्वालियर का शासन तन्त्र।
१६—ग्वालियर के उद्योग-धंधे।
१७—ग्वालियर-महाराज्य की सामाजिक प्रगति।
१८—पिंडारी-युद्ध।
१९—महारानी बैजाबाई का शासन।
२०—ग्वालियर-महाराज्य की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति।
२१—ग्वालियर के अभाव।
२२—राजधानी और ग्वालियर।
२३—वर्तमान महाराज और उनके पिताश्री।
२४—ग्वालियर की महारानियाँ।
२५—ग्वालियर और अन्य महाराज्यों की संधियाँ।
२६—सलामी।
२७—ग्वालियर-सरकार के ख़िताब।
२८—ग्वालियर और हिंदी।
२९—वियोगिनी झाँसी।
३०—ग्वालियर का क़िला।
३१—ग्वालियर के संबंध में कुछ ज्ञातव्य बातें।
३२—वर्तमान ग्वालियर।
३३—चंचला चंबल।
३४—ग्वालियर के करद राज्य।
३५—कर्नल हक्सर। आदि-आदि

पता—

'सचित्र दरबार' सिविल लाइंस, दिल्ली।

तार का पता—'दरबार' टेलीफोन नं०—६४५२.

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तैयारियाँ शुरू हो गईं

सबसे सस्ते और श्रेष्ठ

दैनिक तथा साप्ताहिक

लोकमान्य

के

'वाणिज्य-व्यवसाय'

विशेषांक की

—**—

— दुर्गा पूजा में —

बड़ी सजधज से प्रकाशित होगा

ज़रा उनकी ओर भी ध्यान दीजिए—

जिन्होंने १९३६ के विशेषांक को

देखकर कहा है—

.....अब तक किसी पत्र के किसी अंक में व्यापार पर इतनी व्यापक दृष्टि नहीं डाली गई। —विश्वबंधु (लाहौर)

.....अंक के समस्त लेख उत्तम और जानकारी प्राप्त करानेवाले हैं। —सकाल (पूना)

.....उद्योग-व्यवसाय के लेख उपयोगी हैं, और उनके संपादन में विशेष परिश्रम किया गया है। —सैनिक (आगरा)

.....वाणिज्य-व्यवसाय विशेषांक के लेख व्यापारियों और साधारण जनता के लिये उपयोगी हैं। —स्वराज्य (खांडवा)

.....इसे हम हिंदी की सर्वप्रथम उद्योग-संबंधी डाइरेक्टरी कह सकते हैं। —अर्जुन (दिल्ली)

.....सहयोगी का यह विशेषांक सराहनीय है। —चाँद (इलाहाबाद)

इसमें व्यापारियों, विद्यार्थियों और साधारण जनता के लिये

अनेक ज्ञातव्य बातें रहेंगी।

आप अपनी प्रति के लिये आज ही लिखिए।

विज्ञापन के लिये शीघ्र ही पत्र-व्यवहार कीजिए

मैनेजर—लोकमान्य

१६०, हैरिसन रोड, कलकत्ता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १०८ सन् १९३६ ई०

मु० इसतियकुलनिसा जौजे शेख मुशताकअली कौम शेख साकिन सैदनपुर परगना दरियाबाद तहसील रामसनेहीघाट ज़िला बाराबंकी क़र्ज़दार सायल

चूँकि मु० इसतियाकुलनिसा जौजे मुशताकअली साकिन सैदनपुर ज़िला बाराबंकी ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतालिकक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व सुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल बिरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बरसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिटर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वातदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	निस्फ़ हिस्सा मिन० मुसल्लम मुहाल १६ आ०	मौ० बकौली मु० शेख आबिदअली ख़ा० खे० नं० १	आला			
२	,,	हि० ≈) मि० हि० १६ आ० मुसल्लम मुहाल	मौ० सैदनपुर मु० शेख इकरामअली ख़ा० खे० नं० १ पर० दरियाबाद मजकूर	,,			
३	,,	,,	मौ० अकबरपुर मुहाल सैदनपुर ख़ा० नं० १ पर० दरियाबाद मजकूर	,,			
४	,,	,,	मौ० पियारेपुर मु० सैदनपुर पर० दरियाबाद मजकूर	,,			
५	,,	हि० ।) मिन० हि० ॥) मुहाल आबिदअली	मौ० औरेला मुहाल शेख आबिदअली ख़ा० खे० नं० १ पट्टी आबिदअली बारह पर० दरियाबाद मजकूर	,,			

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

६	बाराबंकी	१/७ हि० मिन० मुहाल १६ आना मौसूमे आबिदअली	मौ० पंडराँवाँ मु० शेख आबिदअली खा० खे० नं० १ परगना दरियाबाद	आला			

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज तारीख २ अगस्त १९३७ ई० जारी हुआ मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा अव्वल ज़िला सीतापुर

मुकद्दमा नं० ३४ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी २२—१०—३७ ई०

१—राना उमाशंकरबख्शसिंह वल्द लाला शिवदयालसिंह क़ौम ठाकुर तालुकदार राजपुर किवटाना परगना सायल ज़िला सीतापुर

बनाम

१—रायबहादुर साह हरप्रसाद वल्द साह मँगरेराम
२—ठा० रामरघुबीर } नाबालिगान
३—ठा० जोतीस्वरूप
४—राजा राधारमन } नाबालिगान पिसरान राजा लालताप्रसाद
५—ठा० हरिश्चंद्र
६—ठा० किशनचंद्र
} बविलायत रायबहादुर साह हरप्रसाद } अकवाम अग्रवाल रईस शहर पीलीभीत
७—मथुराप्रसाद } नाबालिगान पिसरान रामनाथ बविलायत मु० पार्वती मादर खुद अकवाम ब्राह्मण साकिन थानगाँव परगना कुँडरी ज़िला सीतापुर
८—श्यामप्रसाद
९—कुन्दनलाल वल्द नामालूम क़ौम अग्रवाल सा० खेतगली शहर लखनऊ
१०—सेठ महेश्वरदयाल वल्द सेठ रामेश्वरदयाल क़ौम खत्री सा० व तालुक़दार कुटरा परगना बिसवाँ ज़िला सीतापुर
११—लाला गजाधरप्रसाद वल्द लाला सीताराम क़ौम खत्री साकिन मुहल्ला महेंदरु टोला परगना खैराबाद ज़िला सीतापुर
१२—मोहम्मदहुसेन वल्द हाफ़िज़ अहमदअलीखाँ क़ौम पठान सा० मुहल्ला क़ाज़ीटोला ज़िला बरेली
१३—शेख़ गुलामक़ादिर मालिक फर्म शेख गुलामक़ादिर गुलामनबी सौदागर अमृतसर हालवारिद तामसेनगंज ज़िला सीतापुर
१४—अबुलहसनखाँ वल्द अब्दुलमजीदखाँ कौम पठान जनरल मरचैंट तामसेनगंज ज़िला सीतापुर
१५—अजोध्याप्रसाद वल्द पं० बलदेवप्रसाद
१६—परतापशंकर
१७—मूलचंद } नाबालिगान पिसरान रघुबर बविलायत मु० महराजी मादर खुद
१८—गोपीकृष्ण
१९—छोटे लल्ला
२०—गंगाचरन वल्द लक्ष्मीनारायण
२१—तेजशंकर
२२—गिरजाशंकर } पिसरान पं० परमात्मादीन
२३—चंद्रशंकर
} अकवाम ब्राह्मण सा० व जिमीदारान मौजा सीपतपुर परगना कुँडरी तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर
२४—बद्रीदत्त वल्द बैजनाथ कौम ब्राह्मण साकिन मौजा बिलहा दरयाना परगना कुँडरी ज़िला सीतापुर फरीकसानियान

हरगाह जायदाद मुसर्रहे जैल दरख़्वास्तकुनिंदा क़र्ज़ख़्वाह ने अपने बयान तहरीरी दरख़्वास्त सराहत कर्ज़ में हस्ब दफा ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ में जाहिर किया है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी को हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे जैल हासिल हो, तो अंदर मियाद ३ माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे, बाद इनकिजाय मियाद कोई उज्र मसमू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तफ़सील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हकीयत	माल-गुजारी	लोकल रेट
१—	रामीपुर प० कुँडरी शुमाली ज़ि० सीतापुर		१६ आना	ज़मींदारी		
२—	बछवरया ,, ,,		१६ आना	,,		
३—	बैजवारी ,, ,,		१६ आना	,,		
४—	लड़लापुर ,, ,,		१६ आना	,,		
५—	लड़लापुर मातहती ,,		५/३	,,		
६—	रनडा ,, ,,		१६ आना	,,		
७—	मुजहंना ,, ,,		१६ आना	,,		
८—	राजपुर किबटारा ,, ,,		१६ आना	,,		
९—	भैंसी ,, ,,		१६ आना	,,		
१०—	बेला परगना कुँडरी जनूबी ,,		१६ आना	,,		
११—	बरियारपूर ,, ,,		१६ आना	,,		
१२—	राजापूर अपरौली ,, ,,		२० बिस्वा	,,		
१३—	हेठी ,, ,,		२० बिस्वा	,,		
१४—	तिरवा मनकापूर ,, ,,		२० बिस्वा	,,		
१५—	पारा रमनगरा ,, ,,		१६ आना	,,		
१६—	देहजा दौरहार ,, ,,		२० बिस्वा	,,		
१७—	कुदही मातहती ,, ,,		५/३	,,		
१८—	कैथौरा परगना कुँडरी शुमाली ,,		१६ आना	,,		
१९—	शंकरपूर ,, ,,		१६ आना	,,		

२०—प्रक किता मकान मसकूना वाकै राजपूर किबटारा परगाना बिसवाँ ज़िला सीतापुर करज़ा याफतनी सायल जिम्मय असामियान तादादी ३६२१)

२१—फीलमादा	बैलगाड़ी	अद्धा	मोटरकार	ऊँट	पालकी
१ ज़ंजीर	२ मंजिल	४ मंजिल	१	१ रास	१
मियाना	बैल	गाय	भैंस	भैंसा	घोड़ी	घोड़ा
२	१६	३०	२०	४	२	४

मुंसरिम

नमूना नंबर १६९

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़

इश्तिहार

मुकद्दमा नंबर ७५७ सन् १९३६ ई० मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है।

शिवलाल वल्द भूपसिंह व टोडर वल्द चेता कौम जाट साकिन कीलपुर ज़िला अलीगढ़ ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। जिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायल मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरी किए हुए और विना डिगर किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मजकूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिये जेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर बाजाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सनू १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम लखनऊ

मुक़द्दमा नं० ९९ सनू १९३७ ई०

तारीख पेशी ८—११—३७ ई०

१—श्रीपालसिंह वल्द शमशेरसिंह
२—भगवतीबख़्शसिंह वल्द श्रीपालसिंह } अक़वाम ठाकुर साकिनान खजौली परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ सायलान

बनाम

१—शिवरामसिंह वल्द रामचरन क़ौम ब्राह्मण सा० मौज़ा हैदर
२—जोगेंद्रबख़्शसिंह वल्द लाल मुनेश्वरबख़्शसिंह तालुक़दार गोपालखेड़ा
३—सूरजप्रसाद वल्द दुर्गाप्रसाद
४—ब्रजमोहन वल्द रामसेवक } अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा हैदर
५—केदारनाथ
६—बदरीप्रसाद } पिसरान रामसहाय साकिन गोसाईंगंज

परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ

फ़रीक़सानियान

चूँकि जोगेंद्रबख़्शसिंह साकिन गोपालखेड़ा ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व महाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौज़ूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	फ़ीसदी
१	लखनऊ	ज़मींदारी	मु० श्रीपालसिंह वल्द शमशेरसिंह मौ०खजौली प० व त० मोहनलालगंज	मौरूसी	हिस्सा ७½ पाई बराबर ॥) बंदोबस्त हाल	६०)	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२	लखनऊ	जमींदारी	मु० हंसराजसिंह मौजा खजौली प० व तह० मोहनलालगंज	मौरूसी	हिस्सा० ५ पाई ११ किराट २$\frac{1}{3}$ डि०	७)
३	,,	,,	मु० मुनेसरबख्शसिंह मौ० खजौली प० तह० मोहनलालगंज	,,	आराजी नं० १८२१,१८०६	५)

जायदाद कर्ज कर्दा शिवराम व सूरजप्रसाद, ब्रजमोहन हिस्सा १८ किरांट हि० मु० शिवनरायनसिंह साकिन खजौली जो श्रीपालसिंह ने ख़रीदा है।

फेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तहदेहंदा	कैफियत

चारपाई ४ अदद, गाय २ अदद, बटुई १ अदद, थाली ४ अदद, लोटा ३ अदद, बैल १ रास, बछड़ा गाय २ रास

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ९ जुलाई सन् १९३७ जारी हुआ

मुंसरिम

नमूना नंबर १६९

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

इजलासी ठा० रनधीरसिंह साहब स्पेशल जज बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़

नं० मुक़द्दमा ७१२ सन् १९३६ ई०

दरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

साहबसिंह वल्द करनसिंह व जदुवीरसिंह राजवीरसिंह जगदीश्वरसिंह और नरायनसिंह नाबालिग़ान बरिफाकत साहबसिंह पिदर खुद कौम जाट साकिन सपहेरा भानपुर पर० त० कोल जि० अलीगढ़ सायलान

ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई०, जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिये हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर एक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अराज़ी व मौरूसाजात के लिये ज़ैर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नंबर १६९

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला बुलंदशहर

मुकद्दमा न० ७४२ सन् १९३६ ई० इनकमटैक्स स्टेट

इश्तिहार

मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

गोपालसिंह वल्द दौलतराम रामसिंह व महेंद्रसिंह नाबालिगान बविलायत गोपालसिंह पिदर खुद अकवाम राजपूत साकिनान धरावन जिला बुलंदशहर

ने इस गरज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायल मजकूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और न ऐसा करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मजकूर जुमला अगराज़ व मौरकाजात के लिये ज़ेर दफा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा। मुंसरिम

नमूना नंबर १६९

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला अलीगढ़

मुकद्दमा नंबर ७९९ सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है ।

कांतिचंद्र बालिग रोशनलाल पिसर व श्रीकृष्ण व रोशनलाल बालिगान व डालचंद नाबालिग पिसरान कुँअरजी नाबालिग बविलायत श्रीकृष्ण बिरादर खुद कौम ब्राह्मण साकिन देभा परगना अकराबाद जिला अलीगढ़ सायलान

ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायल मजकूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और न ऐसा करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा ख़िलाफ सायल मजकूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिये जेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर बाजाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा। मुंसरिम

नमूना नंबर १६९

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत मि० हरप्रसाद गुप्ता साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम इलाहाबाद

मुकद्दमा नंबर ३६८

इश्तिहार

मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

सय्यद मुज़फ्फरहुसेन साकिन मुहल्ला मंझनपुर इलाहाबाद सायल

बनाम

लाला जगन्नाथप्रसाद फरीकसानी

ने इस ग़रज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस लगाये जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायल मज़कूर की जात या जायदाद के खिलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और विना डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे ग़ज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर एक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ सायल मज़कूर जुमला अगराज़ व मौरकाजात के लिये जेर दफा १३ ऐक्ट मज़कूर बाजाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा। मुंसरिम

नमूना नंबर १६६

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़

मुकद्दमा नं० ६४९ सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

मिहीलाल व डोरीलाल पिसरान नेनराम कौम ब्राह्मण साकिन महमूदपूर बिरहमनान परगना मुरसान तहसील हाथरस ज़िला अलीगढ़

ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदाद मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरी किए हुए और विना डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मजकूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिये जेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर बाजाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा। मुंसरिम

नमूना नंबर १६६

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़

नंबर मुकद्दमा ५१४ सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफर्रिका

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है।

ठा० हरदनसिंह पिसर ठा० टीकमसिंह व नेकपालसिंह नाबालिग बरिफाकत हरदनसिंह पिदर खुद कौम ठाकुर सायलान

सा० चँदौली परगना तहसील अतरौली ज़िला अलीगढ़

ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ हर दो डिगरी किए हुए और विना डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन माह के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या गैरडिगरीशुदा ख़िलाफ सायल मज़कूर जुमला अगराज़ व मौरकाजात के लिये ज़ेर दफा

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नमूना नं० १६९

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़

मुक़द्दमा नं० ४८० सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है।

हरीसिंह वल्द ज्योतीराम व सीताराम वल्द हरीसिंह कौम जाट साकिन पायंदापुर ज़िला अलीगढ़ ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और विना डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैर डिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अगराज व मौरक़ाजात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

नमूना नंबर १६९

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जजसाहब बहादुर दरजा दोयम बुलंदशहर

मुक़द्दमा नं० ११४३ सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफर्रिक़ा

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

धारामल व खज़ान व रामलाल पिसरान भोलाराम, हरकेस व भगवती नाबालिगान पिसरान धारामल बरिफाकत धारामल पिदर खुद कौम ब्राह्मण साकिन मौजा भाईपुर परगना जेवर जिला बुलंदशहर ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की ज़ात या जायदाद के खिलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और विना डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मज़कूर जुमला अगराज व मौरकाजात के लिए ज़ेर दफा १३ ऐक्ट मजकूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

नमूना नं० १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्त-प्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज दर्जा अव्वल साहब बहुक्म पंडित रघुनाथप्रसाद त्रिवेदी स्पेशल जज गोरखपूर

मुकद्दमा नं० ३८ सन् १९३६ ई०

हरगाह बाबू उदैनरायनसिंह उर्फ साहबजादासिंह वल्द बाबू दुनियाप्रसादसिंह व बाबू शुभकरनसिंह उर्फ घनश्यामनरायनसिंह व बाबू महेंद्रनरायनसिंह उर्फ बाबू राधेश्यामनरायनसिंह पिसरान बाबू उदैनरायनसिंह मरहूम कायम साकिनान मौजा रजवल तप्पा कटहरा परगना हवेली तहसील महराजगंज जिला गोरखपूर की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश हुई है

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो सायलान से जो इश्तिहार के संयुक्त-प्रांत के गजट में छपने की तारीख है, तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

कर्जदार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

फिहरिस्त जायदाद सायलान

नंबर सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदो-बस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकियत पर मौजूदा तखमीस मालगुजारी
१	गोरखपूर	जमींदारी	खे०खा० नं०३ मौजा रजवल तप्पा कटहरा प० हवेली त० महराजगंज गोरखपूर	काबिल नीलाम	हिस्सा ।)	मालगुजारी ५०)
२	,,	,,	खेवट खाता नं० ४ मौजा बेलवा त० पर० मजकूर	,,	।)	८०)
३	,,	,,	खे० खा० नं० ४ मौजा नरायनपूर त० प० मजकूर	,,	▪)	३२)
४	,,	,,	खे० खा० नं० १ मुहाल ४ मौजा नंदना तप्पा प्र० मजकूर	,,	१)	१८१)
५	,,	,,	खे० खा० नं० १ मोहाल नं ०४ मौजा अमरुतिया तप्पा व प्र० मजकूर	,,	१)	१५५।।)
६ क	,,	,,	शामिलात खे० खा० नं० २ मोहाल ४ मौजा अमरुतिया तप्पा व परगना मजकूर	३ एकड़ कसरे जायद	,,	

CC0. Gurukul Kangri Coll...

६	गोरखपूर	ज़मींदारी	खे० खा० नं० २ मौजा भिसवा तप्पा व परगना मजकूर	क़ाबिल नीलाम	।)	९८॥)
६ क	,,	,,	शामिलात खे० नं० ५ मौज़ा भिसवा त० मजकूर	,,	८ एकड़ ५२ डि० कसरे जायद	,,
७	,,	,,	खे० नं० १ मोहाल नं० १ मौज़ा मथनिया तप्पा व परगना मजकूर	,,	—) १ पाई १ सुलस	१७।—)८
८	,,	,,	खेवट खाता नं० ३ मौजा मुड़ेरा कलाँ त० मजकूर	,,	।)	२७॥)
८ क	,,	,,	खे० खाता नं० १ मौज़ा मुड़ेरा त० मजकूर	,,	=)	१३७॥=)
८ ख	,,	,,	शामिलात खे० खा० नं० ४ मौज़ा मुड़ेरा	,,	१२ एकड़ २१ डिसमिल	
९	,,	,,	खे० नं० १ मौज़ा मिसरौलिया तप्पा सोनवारी पर० लिलपूर ज़ि० गोरखपूर	,,	।)	५७॥)
१०	,,	,,	खे० खा० नं० ३ मौजा भगवानपूर उर्फ धूंधरा तपा खास परगना मजकूर	,,	=) १ सुलस	९८॥) १ पाई
११	,,	,,	खे० पट्टी नं० १ पू० मौज़ा लछमीपूर खुर्द तप्पा डोमाखंड परगना मजकूर	,,	६ पाई १५ दंत	माफी
१२	,,	,,	खे० खा० नं० १ पू० मौज़ा लछमीपूर कलाँ तप्पा व पर० मजकूर	,,	६ पाई १५ दंत	माफी

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)

फिहरिस्त या हस्ब बयान तहरीरी तफसील जायदाद मनकूला सायलान जो क़ाबिल नीलाम व क़ुरोक़ सायलान नं० १ हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी क़ाबिल नीलाम है बजुज़ हस्ब ज़ैल मकान सकूनती सायलान वाक़े मौज़ा मुँड़ेरा मय तमाम माल व अस्बाब जिसको कि सायलान नीलाम करने से रोकना चाहता है—

तफसील जायदाद सायलान जो क़ाबिल कुर्क़ व नीलाम है—

१—प्रोनोट व रसीद नविश्ता नगेसर केवट मौसूमा सायल नं० १ मुवर्रिखे ४ अप्रैल सन् ३५ मु० ३५)
२— ,, ,, श्रीपाल चमार ,, ,, ,, ,, २१ अप्रैल ,, ३४ ,, २२।—)
३— ,, ,, बद्री चमार ,, ,, ,, ,, ५ अगस्त ,, ३५ ,, २३—)
४— ,, ,, बिहारी चमार ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, २९)
५— ,, ,, चुरगी चमार ,, ,, ,, ,, ६ ,, ,, ३६ ,, ६०॥)६
६— ,, ,, बेनीमाधोदास ,, ,, ,, ,, ४ ,, ,, ३५ ,, ८३॥)
७— ,, ,, उग्रह अहीर ,, ,, ,, ,, ४ ,, ,, ,, ,, २५)
८—डिगरी नंबरी ३८८२ सन् २५ ई० अदालत खफीफा देवनरायनसिंह मुद्दई बनाम रघुबीर मु० १३६)
९— ,, ,, ३८८० ,, ,, ,, ,, ,, ,, बनाम सीता तेली वग़ैरह ,, १३६)
१०— ,, ,, ३८८१ ,, ,, ,, ,, ,, ,, महाबीरराय ,, ,, ७२।)
११— ,, ,, ३००२ ,, २६ ,, ,, ,, ,, ,, बंसी दो साधू ,, ,, २३५)
१२— ,, ,, ४०८ ,, २४ ,, ,, ,, ,, ,, गोकुलवासी ,, ,, २८)६
निज़ी खर्च मुतफर्क़ा ३३॥=)३
१३— ,, ,, २९५२ ,, २९ ,, ,, सिवराज बहादुर खफीफा ,, रघुनंदन तेली ,, ,, २११॥)
१४— ,, ,, २३२५ ,, २९ ,, ,, अडिशनल सबजज बहादुर खफीफा ,, इंदर कहार ,, २०५)
१५— ,, ,, ८४७ ,, २५ ,, ,, आनरेरी मुंसिफी मोहनापूर सायल बनाम छाँगुर कहार,, ९८॥)
१६— ,, ,, २३५० ,, २९ ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, जंगी अहीर ,, ८२।—)
१७— ,, ,, २३४९ ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, मंगली अहीर ,, ६२)
१८— ,, ,, २३५२ ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, सुभग तेली ,, १७५)
१९— ,, ,, २३४८ ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, नरायन लोनिया १६॥।=)
२०—बाग नंबरी १५१ व १५२ वाक़ै मौजा रजवल तप्पा कटहरा परगना हवेली तहसील महराजगंज ज़िला गोरखपूर
२१— ,, ,, २६ वाक़ै मौज़ा मज़कूर
२२—प्रोनोट व रसीद नविश्ता पलकधारी व तिलकधारीदास मौसूमा सायल नं० १ मुवर्रिखा ९ जुलाई सन् ३६ तादादी मु० ४६)
२३— ,, ,, ,, कुमार अहीर मौसूमा सायल ता० ८ जुलाई ३४ ई० मु० ८१।=) तख़मीनन
२४— ,, ,, ,, बिहारी चमार ,, ,, ,, ३१ ,, ,, ,, ,, १९।=) ,,
२५— ,, ,, ,, गंगादीन ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, १०॥।—) ,,
२६— ,, ,, ,, मनोहर चमार ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ४१) ,,
२७— ,, ,, ,, मनराज पासी ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ११) ,,
२८— ,, ,, ,, मधई चमार ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ५१॥) ,,
२९— ,, ,, ,, खदेरन चमार ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ७१—)६ ,,
३०— ,, ,, ,, तिरबेनीमल ,, ,, ,, २ अगस्त ३४ ,, २०=)६ ,,
३१— ,, ,, ,, कँधई चमार ,, ,, ,, ४ जुलाई ३४ ,, ४६—)६ ,,
३२— ,, ,, ,, सुभगदास ,, ,, ,, ९ ,, ,, ,, ३०४॥=) ,,
मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर

मु० नं० ५४ सन् १९३६ ई० तारीख मुक़र्ररा २—१०—३७

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

हरगाह कैलासचंद्र वगैरह बल्द रामगोपालसिंह साकिन पिलकिछा परगना उगली जिला जौनपुर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ज़िम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका, ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलात मज़कूरा की जायदाद बताया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौखूल
१	२	३	४	५	६	७
१	जौनपुर	ज़मींदारी	उदयपुर पट्टी राम-गोपाल प० उगली	) ७ पाई	) ७ पाई	
२	,,	,,	डिहिया	ऐ०	ऐ०	
३	,,	,,	पिलकिछा	ऐ०	ऐ०	
४	,,	,,	ओइन मो० बेचूराम	ऐ०	ऐ०	
५	,,	,,	उसरौली	) ७ पाई	ऐ०	
६	,,	,,	रुस्तमपुर	ऐ०	ऐ०	
७	,,	,,	शहाबुद्दीनपुर	ऐ०	ऐ०	

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत की वस्ताअत (विस्तार)
१	२	३ २
१	आराजयात शरह मोअय्यन वाक़ै मौजा डिहिया परगना उगली जिला जौनपुर ६२ गाटा के $\frac{1}{12}$ हिस्सा सायलान १५—४८	
२	आराजयात शरह मोअय्यन वाक़ै मौजा पिलकिछा परगना उगली जिला जौनपुर ३६ गाटा लगानी २१।) ३ एकरेज ॥≡) ६. $\frac{1}{12}$ हिस्सा सायलान जुमला २२) ७—२१	
३	आराजी मोअय्यन वाकय मौजा पिलकिछा परगना उगली जिला जौनपुर ६२३ —१३, ६२४ --१६ २ गाटा १—१२ २ हिस्सा सायल	
४	बाग़ मौजा पिलकिछा परगना उगली जिला जौनपुर २३१ १-६७, २३५ ४-२७, १८५ १५३, ४०१५ २--१५, ३६२४ --१६, ३६२५ --६५, ३८३८ - ७५, ७ गाटा ११--११ हिस्सा सायलान २३०३ —३, २३०६ २--३३, २ गाटा --३३ निस्फ हिस्सा सायलान	

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला लखनऊ

मुक़द्दमा नं० १३० सन् १९३६ ई०

पेशी ७—९—३७ ई०

मु० अहमदुलन्निसाँ बेवा मौलवी ज़कीउद्दीन क़ौम शेख़ साकिन काकोरी तहसील व ज़िला लखनऊ

सायल

बनाम

१—क़ाज़ी मक़बूलउद्दीन वल्द इक़बालउद्दीन क़ौम शेख़ साकिन काकोरी

२—मौलवी इसलामउद्दीन वल्द क़ियामउद्दीन साकिन काकोरी ज़िला लखनऊ फ़रीकसानियान

चूँकि सायल ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानियान ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बतलाया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर जंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तहिक़ क़ाबिल ज़िरासत व क़ाबिल इंतक़ाल इक़ीयत की तसरीह	वसाक़त इक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की इक़ीयत पर मौजूदा तश्ख़ीस माबगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मींदारी	मौ० दिबिया प० काकोरी मो० क़ियामउद्दीन	मिलकियत आज़ा	१—हि० ।)४ पाई १२ कि० मुंदरजे खाता खेवट नंबर २—हि०।)६ पाई मुन दरजेखाताखेवटनंबर २	३०१॥) २ पाई ३४)	खेवट शामिल है
२	,,	चकदारी	मौ०व प०काकोरी १—मौ०राशिद-अलीख़ाँ २—मौ० निसार अहमदख़ाँ ३—ज़कीअलीख़ाँ ४—मो० समी-अलीख़ाँ	न० ६५१ मि० १॥) न० ११५५ मि० १॥) नं० २२५६ मि० १॥)१ नं०२५८६मि०२॥)३	हिस्सा ।) हिस्सा ५ पाई ६ कि० हिस्सा ।) हिस्सा ।)	बिला लगान ,, ,, ,,	
३	,,	मकान मौसुमय बदहार	मौ० मु० काकोरी	इक़ीयत मालिकाना	हिस्सा सरहे मौरूसी	,,	नंबर३४४मकान मसकूना सायलह

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

४	लखनऊ	कोठी मौसूमे हकीगउ-घीनखाँ	मौ०मु०काकोरी	हक़ीयत मालिकाना	हि०सरहे मौरूसी	बिला लगान
५	,,	मकान जनाना व मरदाना मौसूमे होदा वाला	मु०होदा काकोरी	,,	,,	,,
६	,,	लखताआ राज़ीउफ्तादा वाके अत-राफ मसजिद होदा मय मकानातव दुकानात रिआया	,,	,,	,,	,,
७	,,	मकान मौसूमे बारादरी	मो०मु०काकोरी	,,	,,	,,
८	,,	मकान मौसुमे नई हवेली	,,	,,	,,	,,
९	,,	किता अराजी उफ्तादा वाके शुमाल मसजिद होदातालाब	मु०होदाकाकोरी	,,	,,	,,

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहैस्तनाय हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिला	नवइयत जायदाद	वसाअत हकीयत दरख़्वात-दिहंदा	कैफियत
	मनक़ूला		
१	पलँग मुशतअमल ४ अदद		
२	तख्त चोबी मुशतअमल २ अदद		
३	लोटा मस्सी २ अदद		
४	गिलास बिरंजी १ अदद		
५	दरी मुशतअमल १ अदद		
६	पतीली मस्सी २ अदद		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख ५ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी किया गया।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू बिशंभरनाथ चौधरी स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर २२ सन् १९३७ ई०

तारीख पेशी १०—११—१९३७ ई०

१—संभरसिंह } पिसरान बूधरसिंह
२—केशवसिंह }
३—मु० फूलकुँवरिदेवी बेवा ठा० बूधरसिंह
४—मितानसिंह वल्द केशवसिंह
५—डिगंबरसिंह } नाबालिगान पिसरान
६—चंद्रसिंह } संभरसिंह बरिफाकत
७—छोटकौनूसिंह } पिदर खुद
} ठाकुरान मौजा पूरा बहादुर प० गोपामऊ त०जि० हरदोई

सायलान

बनाम

१—परागनरायण } पिसरान अनंतराय
२—हृदयनरायण }
३—विजयबाबू } नाबालिगान पिसरान बिशुननारायण
४—बृजनंदन } बविलायत हृदयनारायण चचा हकीकी
} ब्राह्मण मौजा हरियावाँ परगना शरह जनूबी तहसील जिला हरदोई

५—कान्हकुमार } ... ...
६—श्रीराम }
७—जगदीशनारायण नाबालिग बविलायत कान्हकुमार बिरादर हकीकी
} पिसरान अवधबिहारी मौजा कुरसठ बुजुर्ग पर० मल्लावाँ तहसील बिलग्राम जिला हरदोई

८—सरजूप्रसाद वल्द कालीचरण } कलवार मौजा हरदोई परगना बंगर तह० जि० हरदोई
९—भोलानाथ वल्द पैकरमादीन }
१०—गजराजसिंह वल्द मनसिंह ... ...
११—भगवानबख्शसिंह } नाबालिगान पिसरान छोटासिंह
१२—रामबख्शसिंह } बविलायत मु० ठाकुरा
} ठाकुरान मौजा पूरा बहादुर प० गोपामऊ त० व जिला हरदोई

१३—केदारसिंह वल्द शिवबख्शसिंह ... ...
१४—परमेश्वरबख्शसिंह } नाबालिगान पिसरान माधौसिंह
१५—संतबख्शसिंह }
१६—भगवानबख्शसिंह } नाबालिगान पिसरान केशवसिंह
१७—अर्जुनसिंह }
} बविलायत केदारसिंह ठाकुरान साकिन मौजा पाटकुवाँ परगना शरह जनूबी तहसील व जिला हरदोई

१८—रामसिंह वल्द छत्तरसिंह ठाकुर मौजा पूरा बहादुर प० गोपामऊ
१९—मूलचंद वल्द मथुराप्रसाद ब्राह्मण मौजा नयागाँव हबीबपुर प० गोपामऊ
२०—रोहनसिंह वल्द भूपालसिंह ठाकुर मौजा पूरा बहादुर प० गोपामऊ
२१—सुमेर वल्द केशव ब्राह्मण पंडित पुरवा मजरा पूरा बहादुर प० गोपामऊ
२२—हरदयाल वल्द केशव ब्राह्मण मौजा बह्मनाखेड़ा प० बंगर
२३—मु० रामदेवी जौजे जैचंद ब्राह्मण नयागाँव हबीबपुर प० गोपामऊ
२४—मु० आनंदी बेवा भभूती ब्राह्मण मौजा पंडितपुरवा मजरा पूरा बहादुर प० गोपामऊ

चूँकि एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जिसकी तरमीम अज़रूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है सायलान मज़कूर ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ३ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है इत्तिला दी जाती है कि जुमला अशख़ास जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरीशुदा व गैरडिगरीशुदा ख़ानगी कर्ज़ाज़ात के मुतालिक दावा रखते हों, वह गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने दावों के मुतालिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दर्ज है। वरना अदम तामील में हर-एक दावा उसके ख़िलाफ़ रवाह डिगरीशुदा हो या गैरडिगरीशुदा तरमीम अग़राज़ और मौकों के लिये इस ऐक्ट की दफ़ा १३ की रू से बाज़ाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख १७ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३७ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम सीतापुर
मुकद्दमा नं० ८५ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ८—११—३७ ई०

१—गोकरनसिंह वल्द ठा० अर्जुनसिंह
२—मु० विलासकुँवरि ज़ौजे गोकरनसिंह
} अकवाम ठाकुर साकिनान मौजा सेलूमऊ परगना हरगाम ज़िला सीतापुर — सायलान

बनाम

१—मु० रामजानकी वाकै खैराबाद बसर बराहकारी राममनोरथलाल चेला महंत रामाधीन ब्राह्मण साकिन खैराबाद मोहल्ला माखूपुर परगना खैराबाद ज़िला सीतापुर
२—देवकीनंदन वल्द रामभजन कौम ब्राह्मण साकिन बेलामऊ कलाँ
३—रनजीतसिंह वल्द केदारसिंह
४—गजराजसिंह वल्द बलदेवसिंह
५—जंगूसिंह वल्द भूपतिसिंह
} अकवाम ठाकुर सा० मौजा सेलूमऊ — पर० हरगाम त० व ज़िला सीतापुर

फरीकसानियान

हरगाह जायदाद मुसर्रहे जैल दरख्वास्तकुनिंदा क़र्ज़ख्वाह ने अपने बयान तहरीरी दरख्वास्त सराहत कर्ज़ा में हस्ब दफ़ा ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३७ में ज़ाहिर किया है, लिहाज़ा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी को हक निस्बत जायदाद मुसर्रहे जैल हासिल हो, तो अंदर मियाद ३ माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालतहाजा में पेश करे, बाद इनकिनाय मियाद कोई उज्र मसमू न होगा।

तफ़सील जायदाद

मुंदरजा बयान तहरीरी सायल दरख्वास्तकुनिंदा

नंबर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत इकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	सेलूमऊ परगना हरगाम	निबलसिंह	हिस्सा ½ खाता नं० ३	मालिकाना	६४=)	
२	,, ,, ,,	दिलावलसिंह	½ खाता नं० २४	मालिकाना	५॥-)॥।	
		,,	½ ,, ,, २४			
		,,	हि० खाता नं० २९	मालिकाना	७॥=)११	
		,,	½ ,, ,, २९			
३	सेलूमऊ हरगना हरगाम	पोहकरसिंह	½ ,, ,, ११			
		,,	½ ,, ,, ११	मालिकाना	॥॥=)॥।	
		,,	½ खाता नं० १८			
		,,	½ ,, ,, १८	मालिकाना	≡)।	
४	शुकलनपुर पर० हरगाम		मातहती हिस्सा ½			
५	सेलूमऊ परगना हरगाम		मकान खाम			

६—प्रोनोट नविश्ते मंगलसिंह बनाम गोकरनसिंह तादादी ५६०) मुवरिखे ३ जुलाई सन् ३५ ई०

भैंस	गाय	तख्त	लोटा	थाली	चारपाई
१ रास	१ रास	१	४	३	३

जायदाद जो महाजनों ने अपने बयान तहरीरी में दिखलाई है
कुछ नहीं

मुंसरिम

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल आजमगढ़

बहजलास बाबू बनवारीलाल माथुर साहब बहादुर

मुकद्दमा नं० २० सन् १९३६ ई०

१. बारीताल
२. एहतमान
३. सैयद मुहम्मदवहीद
४. सैयद मुहम्मदज़की
५. सयद मुहम्मदक़ाज़िम
६. सैयद मुहम्मदसईद
७. सैयद मुहम्मदकासिम
८. सैयद मुहम्मदहुसेन
९. सैयद मुहम्मदइबराहीम

पिसरान सैयद मुहम्मदज़वाद

पिसरान नाबालिगान सैयद मुहम्मदवहीद बविलायत सैयद मुहम्मदवहीद पिदरखुद

साकिन कस्बा सरायमीर परगना निज़ामबाद जिला आजमगढ

दरगाह सायलान की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ज़िम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिज विरासत और काबिज इंतकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का बिस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौज़ूदा तसाखीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	आजमगढ़	जमींदारी	ओहदपुर खाता ३	)		१९२॥)
२	,,	,,	,, खाता ८	)		११२॥)
३	,,	,,	चकमाली खाता १	)		१२४)
४	,,	,,	गदाईपुर खाता ३	≡) ५ गु. ३ कौ. ३ द. जिसमें निस्फ मौकूफ और निस्फ गैर मौकूफा		८४॥≡)८
५	,,	,,	मखदूमपुर खा० नं० १	)		४०७)
६	,,	,,	जहीरपुर खाता १	)		२८६)
७	,,	,,	फरीदूपुर खाता ३	॥=)१३ ग. १ कौ. ५ द.		२२०)
८	,,	,,	रसावाँ खाता १	)		१४३०)
९	,,	,,	[illegible] खाता १	)		१२१)
१०	,,	,,	[illegible]			

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

९	आज़मगढ़	ज़मींदारी	सदरपुर खाता १	१)	१७६)
१०	,,	,,	मकरवा खाता १	१)	८२॥)
११	,,	,,	सिकंदरपुर खाता १	॥)	१०४॥)
१२	,,	,,	कनधछा खाता १	॥)	९३॥)
१३	,,	,,	कटका खाता ३	≡) २ पा. २ बट	१४॥)९
१४	,,	,,	खुद काश्त खाता ६	६ग०१ कौ० ७२ द०	२४≡)
१५	,,	,,	खदरा खाता ३	६ पाई २ चट	१।≡)६
१६	,,	,,	हसनपुर खाता ४	१५ ग० १२ कौ० २ दंत $\frac{४४}{६०३}$ कन	५॥)
१७	,,	,,	अरजुन पट्टी खाता १	११ पाई ३½ द०	॥।-)३
१८	,,	,,	चक हवेली खाता १	,,	३-)६
१९	,,	,,	चक कोट खाता १	,,	३।≡)
२०	,,	,,	पूरेलाटपुर खाता ४	४-१४५	२≡)२
२१	,,	,,	रामरावपुर खाता १	१ आना ४ पाई	४१)९
२२	,,	,,	इबरहीमपुर खाता १	≈) ५ १७/२ पाई	२४।≈)३
२३	,,	,,	कोरौलीबुज़रुग खा० ८	-)४ पाई	२०।)६
२४	,,	,,	कमालपुर खाता १	४-७११	११॥-)१०
२५	,,	,,	,, खाता ११	४२-१९ का ⅛	१८॥≡)
२६	,,	,,	परतरीदा खाता ५	॥)	१०४।)
२७	,,	,,	गंगापुर खाता १	॥)	१२१॥≡)
२८	,,	,,	अहमदाबाद खाता १	११ १७/२ पाई	११।-)५
२९	,,	,,	कटघरजारनाल ख० १	३—८०३	५≡)६

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद जो भूमि संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत की बसाअत (विस्तार)
१	२	३
१	एक किता मकान मसकूना कस्बा सरायमीर—उत्तर—मकान सैयद मेंहदीहसन, दक्खिन—रास्ता, पूरब—परती, पच्छिम—इमामबाड़ाजनाना सैयद मेंहदीहसन	
२	एक किता मकान छावनी मौजा रसावाँ उत्तर—खोरि व रास्ता, दक्खिन—रास्ता, पूरब—परती कदीम, पच्छिम—गढ़ई	
३	एक किता मकान छावनी मौ० शाहपूर उत्तर—सहन दरवाजा बाग़, दक्खिन—परती वा रास्ता, पूरब—चाह पुखता, पच्छिम—आराजी सीर	
४	एक किता मकान छावनी मौजा ओहदपूर उत्तर—चाह पुखता व परती, दक्खिन—कोलहारा, पूरब—रास्ता, पच्छिम—मकान फागू कोहार	
५	२० पलंग—२ मसेहरी—८ तखत १२ कुरसी—४ मेज, ज़रूफ मिसलेमियस चीनी वगैरह की० २००)	

आज बतारीख २१ माह मई सन् १९३७ को बसन्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

نمونہ نمبر ۱۶۹

فارم اطلاعنامہ حسب دفعہ ۹ ایکٹ جائداد ہائے مقروضہ ممالک متحدہ

بعدالت جناب مولوي محمد مختارحسین صاحب بہادر اسپشل جج سیکنڈ گریڈ الہ آباد

نمبر مقدمہ ۱ سنہ ۱۹۳۷ع

ہرگاہ ایک درخواست حسب دفعہ ۴ ایکٹ جائداد ہائے مقروضہ ممالک متحدہ سنہ ۱۹۳۴ع (ایکٹ ۲۵ سنہ ۱۹۳۴ع) جیسا کہ بہ روے ایکٹ ۴ سنہ ۱۹۳۵ع ترمیم ہوا ہی۔

۱—فضل رب ولد چودھری مدرعلی
۲—عزیزالرب
۳—حبیب الرب
۴—سعیدالرب
۵—خلیل الرب پسر نابالغ فضل رب بولایت عزیزالرب
۶—شمش الاسلام پسر نابالغ زین العابدین بولایت فضل رب ولی سند یافتہ

(۲ و ۳ و ۴ پسران فضل رب)

ساکنان موضع رنگواعوں پرگنہ چاندپور تحصیل کاشتھگاؤں ضلع الہ آباد حال ساکنان

بنام

۱—حبیب احمد ولد عبدالرحیم ساکن موضع منھگانون پرگنہ چایل ضلع الہ آباد حال ملازم انسپکٹر حلقہ پولیس معینہ ضلع فیض آباد بذریعہ سپرنٹنڈنٹ صاحب بہادر ضلع فیض آباد۔

۲—کلیان چندر ولد چھیدی لال قوم عصار ساکن موضع سہاپ پور مزرعہ شاہا عرف پیپل گانون پرگنہ چایل ضلع الہ آباد۔

۳—رام گوپال ولد بالک رام قوم کرمي ساکن موضع کٹھالگی پرگنہ چایل ضلع الہ آباد۔

۴—رام ناتھہ
۵—گیادین
(پسران رادھین قوم عصار ساکنان موضع ربھی پرگنہ چایل ضلع الہ آباد۔)

فریق سانیان

نے اس غرض سے پیش کی ہی کہ ایکٹ جائداد ہائے مقروضہ ممالک متحدہ کے احکام اُس سے متعلق کئے جائیں *

لہذا اس تحریر کی روسے حسب دفعہ ۹ (۱) ایکٹ جائداد ہاے مقروضہ ممالک متحدہ سنہ ۱۹۳۴ع جیسا کہ بدروے ایکٹ ۴ سنہ ۱۹۳۵ع ترمیم ہوا ہے—اطلاع دیجاتی ہے کہ جملہ اشخاص جو سائلان مذکور کی ذات یا جائداد کے خلاف ہردو دگری شدہ و غیر دگری شدہ خانگی قرضہ جات کے متعلق دعوے رکھتے ہوں وے گزٹ میں اس اشتہار کے شایع ہونے کی تاریخ سے تین ماہ کے اندر اپنے دعوں کے متعلق تحریری بیانات اُس حاکم کے روبرو پیش کریں جس کے دستخط ذیل میں ثبت ہیں—اور بہ صورت خلاف ورزی اِس کے ہرایک دعوی دگری شدہ یا غیر دگری شدہ خلاف سائل مذکور جملہ اغراض و مورقہ جات کے لئے زیر دفعہ ۱۳ ایکٹ مذکور با ضابطہ بپیاق متصور ہوگا۔

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बगरज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत सैयद अख्तरअहसन स्पेशल जज साहब बहादुर रायबरेली दरजा दोयम मुकाम रायबरेली
मुकद्दमा नंबरी नंबर ६८ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १९—११—१९३७ ई०

१—गंगादीन वल्द मातादीन कौम ब्राह्मण साकिन चक सुदामा मजरे मौजा चिलौली परगना इन्हौना जिला रायबरेली
२—बाबूलाल वल्द गंगादीन कौम ब्राह्मण साकिन चक सुदामा मजरे मौजा चिलौली परगना इन्हौना जिला रायबरेली वारिद हाल मुलाजिम रेलवे मोटर ड्राइवर मुकाम आलमबाग शहर लखनऊ
३—चंद्रपाल वल्द गंगादीन कौम ब्राह्मण साकिन चक सुदामा मजरे मौजा चिलौली परगना इन्हौना जिला रायबरेली वारिद हाल मुलाजिम जेल जिला लखीमपुर
४—माताप्रसाद वल्द गंगादीन कौम ब्राह्मण साकिन चक सुदामा मजरे मौजा चिलौली परगना इन्हौना जिला रायबरेली हाल मुलाजिम रेलवे रेनिंगशेड लोको क्लोनर शहर लखनऊ
५—रामजस वल्द गंगादीन कौम ब्राह्मण साकिन चक सुदामा मजरे मौजा चिलौली परगना इन्हौना जिला रायबरेली

कर्ज़दार सायल

बनाम

मु० सुभद्रा दुख्तर पं० जानकीप्रसाद जौजे पंडित जगन्नाथप्रसाद उपाध्याय वकील मुहल्ला रकाबगंज शहर फैजाबाद

कर्ज़ख्वाह फरीकसानी

चूँकि १—गंगादीन वल्द मातादीन
२—बाबूलाल
३—चंद्रपाल
४—माताप्रसाद
५—रामजस
} वल्द गंगादीन साकिन चक सुदामा मजरे मौजा चिलौली जिला रायबरेली की

जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	इश्तहारदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	रायबरेली	मिलकियत आला	चक सुदामा मजरे मौजा चिलौली पट्टी गंगादीन	मौरूसी	३ आना ८ पाई	माल० १५।—) अबवाब १॥)।	मिलकियत सायलान नं० १ लगायत ५ है

२	रायबरेली	मिलिकियत आला	मौजा कोटवा पट्टी मुहकमखाँ ३००० व ३००२ ॥५२ ॥५२.१२ व ३००३ व ३२४० १५२.५ १५.१४ व ३२५७ व १५३.१६ ३२३७ व ३२३८ १५.४ ५३.१ व ३२३९ व ३२२९ १५.१६ ३४ १५१ जुमला ४५१.८ मौजा कोटवा ३२७४ १॥५१.२	मौरूसी	मिनजुमला १६आनाहिस्सा के नंबरान मुतफर्रिक	४।)	इस आराजी का दाखिल खारिज बनाम बाबूलाल व चंद्रपाल सायलान नं० २ व ३ है, लेकिन सायलान नं० १ लगायत ५ मालिक हैं
३	,,	,,		,,	,,	०	इस आराजी का दाखिल खारिज मुरतहिनान बनाम बाबूलाल व चंद्रपाल सायलान नं० २ व ३ है, लेकिन सायलान नं० १ लगायत ५ काबिज हैं
४	,,	,,	मौजा कोटवा ३२७२ २।५२.४	,,	,,	॥)	इस आराजी का दाखिल खारिज मुरतहिनान बनाम सायल नं० २बाबूलाल है, लेकिन सायलान नं० १ लगायत ५काबिज हैं
५	,,	,,	मौजा कोटवा २७१७ व २७१५ १५.१९ १५.१९	,,	,,	१)	यह आराजी रेहन बाकब्जा बनाम बाबूलाल सायल नं० २ है, लेकिन सायलान नं० १ लगायत ५ काबिज हैं
६	,,	,,	मौजा सातनपुरवा २४६९ ॥५	,,	,,	॥)	यह आराजी रेहन बाकब्जा बनाम गंगादीन सायल नं० १ है लेकिन सायलान नं० १ लगायत ५ काबिज हैं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नं० सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	घोड़ी	१ रास	
२	पड़िया	२ रास	
३	थाली पीतल	२ अदद	
४	बटुई पीतल	१ अदद	
५	बालटी टीन	१ अदद	
६	चारपाई चोबी	२ अदद	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतरीख़ ३० जुलाई सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नमूना नं० १९९

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब बाबू सुरेशचंद्र साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा अव्वल ज़िला इटावा

मुक़द्दमा नं० ६३ सन् १९३७ ई०

तारीख पेशी ९—११—३७ ई०

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ७ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

तुलसाकुँवरि बेवा हरदेवसिंह क़ौम ब्राह्मण साकिन भैसौंज परगना बिधूना ज़िला इटावा सायल

बनाम

१—लाला बिशंभरनाथ पिसर मुत्तवन्ना लाला मथुराप्रसाद क़ौम खत्री साकिन मुहल्ला साबितगंज ज़िला इटावा

२—मुन्नीसिंह वल्द खुमानसिंह क़ौम ठाकुर साकिन जुहीका परगना औरैया ज़िला इटावा

३—लाला जुगुलकिशोर वल्द नंदकिशोर क़ौम खत्री सा० व रईस मुहल्ला लगाईटोला ज़िला इटावा

४—मु० त्रिवेनीकुँवरि बेवा दीनदयाल क़ौम ब्राह्मण सा० किनयेसाल परगना बिधूना ज़िला इटावा

५—बाबू रघुबरदयाल कौम कायस्थ साकिन बदायूँ

६—गुरचरनलाल क़ौम कायस्थ सा० कानपुर मुहल्ला आनंद बाग़

७—मुंशी मंगूलाल वल्द शिवदयाल कायस्थ साकिन शहर इटावा मुहल्ला आलमपुरा पेशा आरायज़नवीसी फ़रीकसोनियान

सायलान ने इस गरज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के खिलाफ़ हर दो डिगरी क़िए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा खिलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अराज़ व मौरकाजात के लिये जेर दफा १३ ऐक्ट मज़कूर बाजाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब दाताराम मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम लखनऊ

मुकद्दमा नंबरी नंबर १०१ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी २२—९—३७ ई०

स० इरशादअहमद वल्द स० आलअहमद सा० नगराम, परगना मोहनलालगंज जिला लखनऊ कर्जदार सायल

बनाम

१—मु० सुरैयाखातून नाबालिग़ा बविलायत शेख तवक्कुलहुसेन दुख्तर मु० साबिरा ख़ातून विन्त तफ़ज्जुलहुसेन
२—शेख तफ़ज्जुलहुसेन वल्द शेख जवादअली किदवाई
} सा० रसौली जि० बाराबंकी

३—सरजू
४—रामदीन वल्द काशी
} अकवाम कुरमी सा० कटरा नगराम परगना मोहनलालगंज जि० लखनऊ

५—इकबालअहमद
६—अनीसअहमद
७—शरीफअहमद
८—वकीलअहमद
} पिसरान चौधरी खलीलअहमद सा० थलवारा तहसील हैदरगढ़ जि० बाराबंकी

९—सय्यद अमजादहुसेन
१०—सय्यद बाकरहुसेन
११—सय्यद मेंहदीहुसेन
१२—सय्यद सरदारहुसेन
} पिसरान सय्यद अब्बासहुसेन

१३—हुसेनअब्बास
१४—आबिदअब्बास
} पिसरान अनसारहुसेन

१५—संतबख्श कुर्मी
} सा० कटरा नगराम परगना मोहनलालगंज जिला लखनऊ

१६—जा० रामजीलाल वल्द मंगतराय क़ौम अगरवाल सा० नाका हिंडोला शहर लखनऊ

१७—मि० डब्लू० क्रकमैन सा० हजरतगंज लखनऊ कर्जख्वाहान फरीकसानी

चूँकि इरशादअहमद वल्द आलअहमद साकिन नगराम जिला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० इरशादअहमद मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मींदारी	मौजा नगराम मुहाल आलअहमद पर० मोहनलालगंज	हिस्सा २ आना ८ पाई	हक़ आला		
२	"	"	" मुहाल धनी	हिस्सा १ आना	"		

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जायदाद मुजहिरा रामजीलाल

१	लखनऊ	ज़मींदारी	नगराम पट्टी अब्दुलसमद	हिस्सा १ आना ८ पाई	हक़ आबा		

२ एक क़िता मकान पुख़्ता व ग्राम वाक़ै नगराम पर० मोहनलालगंज लखनऊ

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख २० अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

इत्तिलानामा बनाम क़र्ज़ख़्वाहान दरख़्वास्त पेश करने अपने दावों के हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब बाबू कालीचरण स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला फ़ैज़ाबाद

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३८० सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १६—१०—१९३७ ई०

१—संकठाप्रसाद वल्द नंदकिशोरलाल

२—कन्हैयालाल } पिसरान संकठाप्रसाद

३—रामसहायलाल }

४—रामस्वरूपलाल } नाबालिग़ान पिसरान कन्हैयालाल

५—कृष्णस्वरूप }

साकिनान नरायनपुर परगना मिझौंड़ा तहसील अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद

सायलान

बनाम

१—सीतलासहाय वल्द मु० ब्रजमोहनलाल साकिन मौज़ा नरायनपुर परगना मिझौंड़ा तहसील अकबरपुर हाल वारिद मुहर्रिर बाबू हरध्यानचंद्र साहब ऐडवोकेट मुहल्ला पीर जलील रोड लखनऊ

२—रामबहादुरलाल वल्द मु० जसोदानंद साकिन मौज़ा नरायनपुर परगना मिझौंड़ा हाल वारिद मुहर्रिर पं० जैजैराम तेवारी साहब ऐडवोकेट ज़िला फ़ैज़ाबाद

३—ठाकुरप्रसाद वल्द भगवानप्रसाद साकिन मौज़ा नरायनपुर परगना मिझौंड़ा तहसील अकबरपुर

४—अयोध्यासिंह वल्द हरगोबिंदसिंह साकिन मौज़ा रैमलपुर परगना मिझौंड़ा तहसील अकबरपुर वारिद हाल मुहर्रिर बाबू जगदीशपालसिंह साहब वकील

फ़रीकसानियान

चूँकि एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जिसकी तरमीम अज़रूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, सायल मज़कूरा बाला ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग, जो सायल मज़कूर की ज़ात जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर एक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अग़राज़ व मौरकाज़ात के लिये जेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ७ जुलाई १९३७ ई० जारी हुआ।

मंसरिम

इत्तिलानामा बवारज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर बाराबंकी दरजा दोयम मुक़ाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर $\frac{१६}{३६४}$ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २२ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई०

मुहम्मदनजीरखाँ वल्द मुबारकअली कौम भट्टी साकिन मौजा रसूलपुर परगना बसौढ़ी तहसील रामसनेहीघाट ज़िला बाराबंकी

क़र्ज़दार सायल

बनाम

जुमला कर्ज़ख्वाहान

क़र्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि मुहम्मदनजीरखाँ वल्द मुबारकअली साकिन रसूलपुर जिला बाराबंकी की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ७ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इत्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अ)

क़र्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व महाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व क़ाबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तश्कीस माबगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	६ कि० ५ जौ २ तिल मिनजुमला मुस्तल्लम मौजा ।।।।)	मौजा बेलपुर खाता खेवट नं० २६ मुहाल बेलपुर	आला			
२	,,	२ पाई १३ कि० २ जौ ४ तिल मिनजुमला मुसल्लम ।।।)	मौजा ढेमा मुहाल ढेमा खाता खेवट नं० १० पट्टी नसरतजंगखाँ	,,			
३	,,	१ पाई ६ कि० ५ जौ २ तिल मिनजुमला मुसल्लम ।।।)	मौजा अशरफपुर मुहाल अशरफपुर खाता खेवट नं० २५	,,			
४	,,	१३ कि० २ जौ ४ तिल मिनजुमला मुसल्लम ।।।)	मौ० पाराहाजी मुहाल पाराहाजी खाता खेवट नं० १८ पट्टी फ़रहतजंगखाँ	,,			
५	,,	$\frac{१}{३}$ हिस्सा मिनजुमला २ मुसल्लम मौजा	बरौली मुहाल बरौली खाता खेवट नं० ६	,,			
६	,,	६ पाई ४ कि० ५ जौ २ तिल मिनजुमला मुसल्लम मौजा ।।।)	रसूलपुर मुहाल रसूलपुर खाता खेवट नं० १३	,,			

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

७	बाराबंकी	१३ कि० २ जौ ४ तिल मिनजुमला मुसल्लम मौजा ॥॥)	सरवाहा मुहाल सरवाहा खाता खेवट नं० १८	आना		
८	,,	१३ कि० २ जौ ४ तिल मिनजुमला मुसल्लम मौजा ॥॥)	सरवनटिकठा मुहाल सरवनटिकठा खाता खेवट नं० १७	,,		
९	,,	१० पाई १८ कि० ५ जौ १ तिल मिनजुमला मुहाल मजकूर	मौ० मवई मुहाल फरहतजंगखाँ खाता खेवट नं० २ पट्टी मुसम्मात सायरा	,,		
१०	,,	१७ कि० ६ जौ १½ तिल मिनजुमला मुसल्लम मुहाल मजकूर	मौजा अलानगर मुहाल मंझोली खाता खेवट नं० १५	,,		
११	,,	१२ कि० जौ ४ तिल मिनजुमला मुसल्लम मुहाल मौजा मजकूर	संडवामेलु मुहाल संडवामेलु खाता खेवट नं०४२ पट्टी मनसूरखाँ	,,		
१२	,,	हिस्सा १ पाई ६ कि० ५ जौ १ तिल हिस्सा ८ पाई	मौजा सिंहजना मुहाल सिंहजना खाता खेवट नं० ९	,,		
१३	,,	हिस्सा १आना ६पाई १७ कि० ५ जौ ४ तिल मिनजुमला मुसल्लम मुहाल मज़कूर	मौजा संडवा मुहाल तजम्मुलहुसैन खाता खेवट नं० ७ पट्टी मुबारकअलीखाँ	,,		
१४	,,	हिस्सा ६ पाई मिनजुमला मुसल्लम मुहाल मज़कूर	मौ० रजनपुर मुहाल रजनपुर खाता खेवट नं० २३ पट्टी मुबारकअलीखाँ	,,		
१५	,,	हिस्सा ⅕ हिस्सा मिनजुमला २ आना मुसल्लम मौजा मजकूर	मौजा शहबाज़ चक मुहाल शहबाज़ चक खाता खेवट नं० १७ पट्टी खुदायारखाँ	,,		
१६	,,	हिस्सा ३ पाई मिनजुमला १ आना मुसल्लम मौजा मजकूर	मौजा होलुपुर मुहाल होलुपुर खाता खेवट नं० २४ पट्टी खुदायारखाँ	,,		
१७	,,	हिस्सा ⅛ मिनजुमला ८ पाई मुसल्लम मौजा मजकूर	मौजा कोंडरा मुहाल कोंडरा खाता खेवट नं० १३ पट्टी खुदायारखाँ	,,		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसिफ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापुर
मुक़द्दमा नं० १६६ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ६—१०—१९३७ ई०

१—द्विगपालसिंह वल्द गुलाबसिंह क़ौम ठाकुर साकिन जलालपुर परगना हरगाम ज़िला सीतापुर
२—सीतलाबख़्शसिंह } बिसरान गुलाबसिंह अक़्वाम ठाकुर सा० मुमताज़पुर परगना हरगाम ज़िला
३—गुरबख़्शसिंह } सीतापुर सायलान

बनाम

१—शिवराजसिंह
२—मुनेश्वर बख़्शसिंह } बिसरान चंद्रिकासिंह } अक़्वाम ठाकुर सा० मुमताजपुर पर० हरगाम ज़िला सीतापुर
३—पीतमसिंह वल्द तिलकसिंह
४—बाबू विशंभरनाथ वल्द भानामल } क़ौम खत्री साकिन तामसेनगंज परगना ख़ैराबाद ज़िला सीतापुर
५—हरनारायन वल्द जगन्नाथ
६—देवकीनंदन वल्द रामभजन क़ौम ब्राह्मण साकिन बेलामऊ परगना हरगाम ज़िला सीतापुर
फ़रीक़सानियान

हरगाह जायदाद मुसर्रहे जैल दरख़्वास्तकुनिंदा कर्ज़ख़्वाह ने अपने बयान तहरीरी दरख़्वास्त सराहत कर्ज़ा में हस्ब दफ़ा ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ में ज़ाहिर किया है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी को हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे जैल हासिल हो, तो अंदर मियाद ३ माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे, बाद इनक़िज़ाय मियाद कोई उज्र मसमूअ न होगा।

तफ़सील जायदाद

मुंदरजह बयान तहरीरी सायल दरख़्वास्तकुनिंदा

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हक़ीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	मौजा मुमताजपुर परगना हरगाम तहसील व ज़िला सीतापुर	नरपतसिंह	खाता खेवट नंबर २ नंबर हिस्सा ३ बिस्वा १६ बि० १३$\frac{1}{3}$ कच० मिन० २० बिस्वा व खाता खेवट नंबर ५ शामिलात मुहाल हस्ब हिस्सा खेवट	मालिकाना	१८)	२)
२	मौजे उमरी सुलेमपुर परगना हरगाम जिला सीतापुर	सलेमपुर	खाता खेवट नंबर ६८ मिनजुमला खाता नं० ४ तादादी २ बिस्वा १० बि० मिन० बिस्त बि०	,,	३०॥≡)	३-)
३	पगरोई परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर	मुहाल ख़ास	खाता खेवट नं० १ हिस्सा १० $\frac{3}{3}\frac{1}{2}$ क्रांत मिन० ८ बिस्वांसी १३$\frac{1}{2}$ क्रांत	,,	१३) मालगुजारी मय अबवाब	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

४	मौजा निगुहान परगना हरगाम जिला सीतापुर	खाता खेवट नंबर २ हिस्सा ८/१ मिनजुमला १५ बिस्वांसी १५/१ क० व हिस्सा ५/१ ५/१ ५/१ मि० व १ बि० ८/१ क० खाता नं० ३ व हिस्सा २/१ १/१ मिन० ३ बि० १ बि० ८/१ क० कच० खाता नं० ६ व शामिलात खाता नं० ७

५—जायदाद जो हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी काबिल कुर्क व नीलाम है

बागात २ किता भैंस १, गाड़ी १, चारपाई ५, पलँग १, कुरसी १, बड़ुई २, थाली २, कटोरा २

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल अलीगढ़

मुक़द्दमा नंबर ३१ सन् १९३६ ई०

छत्तरपालसिंह व रामदयालसिंह पिसरान उमरावसिंह व बिजेंद्रपालसिंह व नेत्रपालसिंह व सुरेंद्रपालसिंह पिसरान छत्तरपालसिंह व सूरजपालसिंह वल्द रामदयालसिंह ठाकुर जादौ साकिन नबीपुर परगना व तहसील कोल ज़िला अलीगढ़ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िमनी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायक मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो तारीख़ मुश्तहरी से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के अंदर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व महाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा लगानी मालगुजारी
१	अलीगढ़	हकीयत ज़मींदारी	मौजा नबीपुर प० तहसील सिकंदरा-मऊ ज़िला अलीगढ़ मुहाल उमरावसिंह	रकबा ३२५ बीघा खाता नं० १ बिस्त बि० जमई मय अबवाब ५२९।।=)४		५२९।।=)४

मुंसरिम

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब जी० सी० अगरवाल स्पेशल जज दरजा दोयम बस्ती
मुक़द्दमा नं० ३३७ सन् १९३६ ई०

हरगाह महंत मथुरादास वल्द महंत रामपदारथदास साकिन बांकी तप्पा हाटा परगना बाँसी पूरब जिला बस्ती ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख से तीन माह के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुरतकिल व काबिल इंतकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तश-ख़ीस माबगुजारी
१	२	३	४	५	६	७
१	बस्ती	मौरूसी जमींदारी	बांकी तप्पा हाटा परगना बाँसी पूरब जिला बस्ती	काबिल इंतकाल	।-) ४ पाई	३००)
२	,,	,,	लछनपुर मुहाल अकाल तप्पा उंटापार परगना बाँसी पूरब ज़िला बस्ती	,,	=) ७ पाई ७ तसा १२ जौ १६० खसखस १७६ तिल	१२-)६ मय अबवाब
३	,,	,,	जगदेई तप्पा कुदारन प० बाँसी पूरब जिला बस्ती	,,	।-) ४ पाई	२७)
४	,,	,,	डुमरिया खुर्द तप्पा हाटा परगना बाँसी पूरब जिला बस्ती	,,	-) १ पाई १ सुलुस हक मुरतहिनी	३८)

जमीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)
१	२	३
१	बैलगाड़ी २ अदद	६०)
२	बैल गाड़ीवान ४ अदद	२५०)
३	बैल हलया १२ रास	२००)
४	भैंस १२ रास	२४०)

CC0, Gurukul Kangri Collection

५	घोड़ी १ रास	२०)
६	गाएँ २६ रास	२५०)
७	पलँग १६ अदद	१६)
८	कुरसी ४ अदद	१६)
९	बच १ अदद	५)
१०	मेज़ १ अदद	१०)
११	तखता ४ अदद	१२)
१२	बाग अंबा लछनपुर २० दरख्तान	२००)
	,, शीशम ८ दरख्तान	१६०)
१३	बाग अंबा मौ० जगदेई ८ दरख्तान	८०)
	अंबा १ दरख़्त	२०)
	इमली १ दरखत	१०)
१४	बाग़ अंबा बाँकी ३९ दरख़्तान	३९०)
	बबूल २०० दरख्त	६००)
	शीशम १ दरख्त	२०)
	नीम ३ दरख्तान	१५)
१५	डुमरिया खुर्द अंबा ९ दरख्तान	९०)
१६	गल्ला ४०० गोन	४०००)

मुंसरिम

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

स्पेशल जज दर्जा दोयम अलीगढ़

इश्तिहार

मुतफ़र्क़ा ८६५ सन् १९३७ ई०

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त-प्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है।

धनीराम, लक्ष्मनसिंह, चन्द्रपालसिंह, जंगबीरसिंह, महेन्द्र पिसरान रामप्रसाद, राजेन्द्रपाल, इन्द्रपाल नाबालिगान पिसरान धनीराम, बिजेन्द्रसिंह पिसर जंगबीरसिंह कौम ठाकुर साकिन नयाबास प० त० हाथरस ज़िला अलीगढ़ की ओर से इस ग़रज़ से पेश हुई है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त-प्रांत के अहकाम उस पर लगाये जाँय।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त-प्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिग्री किये हुए और बिना डिग्री किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम दावे रखते हों वे गज़ट में इस के सामने पेश करें जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिग्रीशुदा या ग़ैर डिग्रीशुदा ख़िलाफ़ सायल जुमला अराज़ व मौरूसाजात के लिये ज़ेर दफ़ा १२ ऐक्ट बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

स्पेशल जज

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० दाताराम मिश्रा साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला लखनऊ
मुक़द्दमा नंबर २२३ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी ९—११—१९३७ ई०
गंगाबख़्शसिंह वल्द देवीबख़्शसिंह क़ौम ठाकुर साकिन परहटा परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ
बनाम
सायल

१—बलदेवदास वल्द दामोदरदास
२—मदनमुरारी वल्द गोवरधनदास
} अक्रवाम रस्तोगी साकिनान बाज़ार राजा लखनऊ
३—मुसम्मात किशना ज़ौजे रामचंद्र
४—रामचंद्र वल्द चंद्रिका
५—राजा समद अहमदअलीख़ाँ साहब ताल्लुक़दार सलीमपुर हाल क़ैसरबाग़ लखनऊ

चूँकि गंगाबख़्शसिंह वल्द देवीसिंह साकिन परहटा ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो आज की तारीख़ से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं ।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेश करदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह
हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
फेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदिहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त-देहंदा मुंदरजाडिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौज़ूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मीदारी १० पाई १३१/४ कि० ७ जौ हक़ीयत मुतफ़र्रिक़ा बाशात	परहटा मुहाल देवीसिंह परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ	मौरूसी हक़ीयत आला		५४)	
२	,,		२२१—२ बिस्वा ९ बि० २३०—२ ,, १२½ ,, ३५०ब—३ ,, ४ ,, ३५४ब—२ ,, ६ ,, ४४७—४ ,, ८½ ,, ४६५ब—१ बी० १७ ,, ४७३—२ बिस्वा १९ ,, ५०३—४ ,, ८ ,, मीजान २ बी० ३ बि० ४ बि०	हक़ीयतमुतफ़र्रिक़ा			

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ९-८-३७ ई० जारी हुआ ।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, H

नमूना नं० १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब रनधीरनरायन मेहरा स्पेशल जज दरजा दोयम जिला बस्ती

मुकदमा नं० ६११ सन् १९३६ ई०

१—गुलाब २—जैनाथ	पिसरान गुदुन	साकिनान लोहरामै पीपरा खुर्द बज़रूग तप्पा करही परगना रसूलपुर तहसील उमरियागंज ज़िला बस्ती
३—ललन ४—अनजुर ५—रामसुमेर	नाबालिगान बविलायत जैनाथ पिसरान अछवर	
६—गोली ७—सोमई	नदेसरी मुतवफ़्फ़ी	
८—जोराखन ९—सहदेव	नाबालिगान बविलायत जैनाथ पिदर खुद	
१०—झिनकू ११—मूरत १२—कल्लू	नाबालिगान	

फरीकसानियान

चूँकि सायलान ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बतलाया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदरजा दफा ८ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब

तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	बस्ती	जमींदारी	लोहरामै पीपर खुर्द बुजुर्ग	-) हिस्सा	-) हिस्सा	३८।।।-)५	

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब डपेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा अव्वल मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ५३ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ७ ऑक्टोबर १९३७ ई०

१—मौलवी सुलतानअहमद
२—लुक़मानअहमद
३—इमरानअहमद
} पिसरान मुंशी क़ुरबानअहमद साकिन बिलग्राम जिला हरदोई क़र्ज़दार सायल

बनाम

परागदास वग़ैरह क़र्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि सायलान बाला ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उन जायदाद को, जिनकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंदर्जा में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने हस्तहक़ूक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अ)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराजी

नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदी-बस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व ग़ैरक़ाबिल इंतक़ाल हक़ी-यत की तसरीह	वसाइत हक़ीयत दर-ख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तश-ख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१ हरदोई	हक़ीयत मालकाना	मौजे बेलहरा कमाल-नगर खाता खेवट नं० १ मुहाल इंदलसिंह परगना बिलग्राम	३ बि० १७ बिस्वांपी ७ कच० ६ ३ ० ७ ७ ६ ३ ० ७ ७	कुल	७७)	
२ ,,	,,	,,	१ बि० ४ बि० १ ० ३ ४ ० ६ ३ ० ७ ०	,,	२४॥=)	
३ ,,	,,	मौजा बेलहरा कमाल-नगर खाता नंबर १ मुहाल क़ुरबानअहमद	१६ बि० १३ बि० ७ कच ३ १ ३ ० ७ २ ० ६ ४	,,	६४४॥=)	
४ ,,	,,	मौजा बिलहर खाता नं० १ परगना बिलग्राम	१० बिस्वा	,,	३२८)	
५ ,,	,,	मौजा क़ुहलूपुर मुहाल उत्तर खाता नं० १	२० बिस्वा	,,	२२३॥)	
६ ,,	,,	बिलग्राम खास खाता नं० १११	१ बीघा १६ बिस्वा	,,	५)	

CC0. Gurukul Kangri Coll

सराहत जायदाद ग़ैरमनकूला जो महाजनान १ व २ ने अपने बयान तहरीरी में दिखलाई है—

१—कोठी वाके हरदोई खास मम्लूका व मकबूजा मौलवी सुलतानअहमद साहब परगना बंगर मय अमला आराज़ी व दरख़्तान महदूदा जैल शुमाली बाग़ रायबहादुर बिशुनस्वरूप जनूबी कोठी पं० ब्रजमोहन-नरायन उर्फ़ भास्कर शरकी बाग मुंशी ऐनाज़रसूल गरबी बाग रायबहादुर बिशुनस्वरूप

२—मकानात पुख्ता व खाम मय अमला व आराजी वाके आबादी कस्बा बिलग्राम मु० मैदानपुरा नंबर अहाता नंबर मकान ५३३/५०५, ५३४/५०६, ५३५/५०७, ५३६, ५४६/५१५, ५५०/५१६, ५६२/५२५, ५६१, ५६२/५२४०, ५१३/४६७, ५५५/५२१ ५५६, ५५८/५१८, ५५१/५१७

३—हकीयत मालकाना वाके बिलग्राम खास खाता नं० ६७ मिनजुमला उसके रकबा तादादी २ बीघा ३ बिस्वा पुख्ता निज़्द इमरानअहमद सायल नं० २ रहन दखली है, हालाँकि असल रहननामा तादादी १८००) बहक मादर मुतवक्की सायलान है

४—हकीयत मालकाना मौजा ककराखेड़ा मुहाल बेनीमाधौ खाता नं० ५ आराज़ी नं० २७ तादादी ४ बीघा १६ बिस्वा पुख्ता मय आराजी व दरख़्तान

५—हकीयत मालकाना वाके मौजा अटौली खाता नं० १० परगना बिलग्राम मिनजुमला उसके रकबा तादादी १ बीघा १४ बिस्वा पुख्ता निज़्द इमरानअहमद सायल नं० २ रहन दखली, हालाँकि असल रहननामा तादादी १६००) बहक मादर मुतवक्की सायलान है

सराहत जायदाद ग़ैरमनकूला जो महाजन नंबरी २ ने अपने बयान तहरीरी में लिखलाई है

१—चन्द किता खेत व २ किता बागात जिनके नम्बरान बाद में दिए जायँगे वाके कस्बा बिलग्राम

२—मुग़लोंवाला बाग़ वाके बकराखेड़ा परगना बिलग्राम

३—कोठी मसकूना हरदोई खास

फेहरिस्त (ब)

कर्ज़दार की जायदाद जो बइस्तसनाय हुकूक मालिकाना मुतालिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नं० सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	कुर्सी	६	सराहत जायदाद मनकूला सायल नं० १
२	मेज़	२	
३	आराम कुर्सी	२	
४	ताँग घोड़ा	१	
५	पलँग	८	
६	तख्त	२	
७	बेंच	२	
१	कुर्सी	४	सराहत जायदाद मनकूला महलूला सायल नं० २
२	मेज़	१	
३	पलँग	२	
१	कुर्सी	६	सराहत जायदाद मनकूला महलूला नं० ३
२	मेज़	२	
३	पलँग	४	
४	तख्त	२	

सराहत जायदाद मनकूला व महलूला सायलान बमूजिब बयान तहरीरी महाजनान नंबर १ ता ३
१—आयल एंजिन मय चक्की जुमला सामान पिसाई वग़ैरह बमुकाम पिहानी जिला हरदोई ममलूका इमरानअहमद सायल नं० २ है
२—कुतुबखाय कानूनी ममलूका व बकबूजा मिस्टर सुलतानअहमद बैरिस्टर सायल नं० १ कीमत १०००) है
३—बंदूकहाय व दीगर असलाजात जिनका लाइसेंस बनाम हरसेह सायलान है कीमती ६००) हैं
सराहत जायदाद मनकूला सायलान बमूजिब बयान तहरीरी महाजन नंबर २
१—एक किता रहननामा तादादी २०००) नबिश्ता मुस्तफाहुसैन
२—फ्लोर मील (चक्की आटा) वाके कस्बा पिहानी
३—मवेशियान
४—गल्ला जिन्स फार्म जिरायत
५—कुतुबखाय कानूनी
६—मोटरसायकिल
७—क़र्जा याफ्तनी सायलान जिसकी सराहत बाद में दी जावेगी
मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख २८ जुलाई सन् १९३७ ई० जारी हुआ । मुंसरिम

इत्तिलानामा बवारज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)
बअदालत जनाब कप्तेन्स जन साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर २४१ सन् १९३६ ई०

बलदेवसिंह, मुंशीसिंह, जोगराजसिंह } पिसरान भूधरसिंह
निरंकालसिंह नाबालिग बविलायत बलदेवसिंह

} अकवाम ठाकुर साकिन मरई परगना शाहजनूबी कर्ज़दार सायल

बनाम

ठा० उजागरसिंह वग़ैरह क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वातदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे ।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई		मौजा मरई खाता २ पट्टी खांजादेसिंह	मालिकाना	२ बिस्वा १४ बिस्वांसी १ कचवांसी	१६१॥≡)	
२	,,		मौजा मरई खाता ५	,,	३ बिस्वांसी १५ क० १० ननवांसी	१२।=)॥।	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

३	हरदोई	मौजा मरई खाता १०	मालिकाना	२५१	
४	,,	,, ,, ,, १९	,,	॥५१: ५	
५	,,	,, ,, ,, २५	,,	४॥॥५१	
६	,,	,, ,, ,, २८	,,	३ क० १९ ब० १२½ अ०	॥)।
७	,,	,, ,, ,, ३३	,,	॥५४: १० १५४:८	
८	,,	,, ,, ,, ३५	,,	२७४॥५ शामिलात	
९	,,	मौजा जतली पट्टी ६ भूधरसिंह	,,	२ बि० १९ बि० १० कचवांसी	६२।-)७
१०	,,	मौजा जतली पट्टी ७	,,	५४: १३	
११	,,	,, ,, ,, ८	,,	५३: ६	
१२	,,	,, ,, ,, ९	,,	१ बि० ४ कच० १० ब०	॥-)॥
१३	,,	,, ,, ,, ११	,,	५३: ४: ५	
१४	,,	,, ,, ,, १४	,,	२०१: १८	
१५	,,	,, ,, ,, १५	,,	२१५: ५	
१६	,,	,, ,, ,, २०	,,	९५।५ २ शामिलात	

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तियनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नं० सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाबत हकीयत दर-ख्वात देहंदा	कैफ़ियत
१	गाय ३		
२	बैल गाड़ी १		
३	लहड़ू १		
४	चारपाई ६		
५	तमस्सुक नविस्ते विशेश्वर वगैरह बहक बलदेवसिंह तादादी १२०) ता० १८ फाग्वरी सन् १९३३ ई०		
६	तमस्सुक नविस्ते गिरधारी बहक बलदेवसिंह तादादी ५०) ता० ५ फरवरी १९३३ ई०		
७	प्रोनोट नविस्ते बद्री बहक बलदेवसिंह तादादी १० ता० ५—१०—३३ ई०		

जायदाद बमूजिब दफा १०

१—भैंस १ रास २—बैल ६ रास ३—भैंसा १ ४—गेहूँ १००५ ५—उर्द २५५ ६—धान २५
७—जेवर जुकरई व तिलाई ५००)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतरीख़ २१ जुलाई सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बतारज़ ऐलान व इश्राअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब लालाराम मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ९२ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १३ नवंबर सन् १९३७ ई०
श्रीपालसिंह वल्द महिपालसिंह मौज़ा हरौनी ज़िला लखनऊ — क़र्ज़दार सायल

बनाम

लाला बालगोविंद वल्द नामालूम मुहल्ला जोशीटोला शहर लखनऊ — क़र्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि श्रीपालसिंह वल्द महिपालसिंह साकिन हरौनी ज़िला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूरा इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंदर्जिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० श्रीपालसिंह मज़कूर को जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)
क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल क़ब्ज़ा व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाइत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदराजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौज़ूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	श्रीपालसिंह	दाराबनगर	क़ाबिल इंतक़ाल	६ बि० ३ बि० ६पा०	०।८।०	१/४ हिस्सा
२	प.बिजनौर	ज़िमींदार	मुहाल जानकीसिंह		१६ क्रांट १० डि०		
	,,	मौ०हरौनी	हक़ीयत मुतफ़र्रिक़ा	,,	१ बी० १५ बिस्वासी	१।४।०	सायल
		जि०लखनऊ					
३	उन्नाव	पर० कुंडर	बिलहऊमऊ मुहाल	,,	१६बी०१बि०२½बि.	१२।१।३	तनहा
			महिपालसिंह		११ बि० १२ बि०		मालिक
					१३ अन० ५ कच०		
४	लखनऊ	पर०बिजनौर	चकौली मुहाल	,,	१८ बी० १० बि०	२१।११।२	,,
			महिपालसिंह		६ पाई ८ क्रांट		
५	,,	,,	नेवा मुहाल	,,	१६बी०४बि०१०बि.	२१।४।६	,,
			मीराबरौली		६ पाई १४ डे० ८जौ		
६	,,	,,	धावापुर	,,	१ बी० १६ बि०	१।११।४	,,
					५ पाई		
७	,,	,,	पहारपुर	,,	१५ बि० १ बिस्वा-	१।८।५	,,
					सी ७½ क्रांट		
८	,,	,,	बनी	,,	१बी०१६बि०१४बि०	३।२।३	,,
					१बि० ११¼ कच०		

९	लखनऊ	पर० बिजनौर	खांडेदेव	काबिल इंतकाल	४२ बी० १२ बि० ३पाई १६ क्रां० ६ डे०	३८।५।५	तनहा मालिक
१०	,,	,,	हरौनी मुहाल महिपालसिंह	,,	६० बी० १२ बि० ६ बि० २ आ० १ पाई १२ क्रां०	६५।५।४ ०	१/४ हिस्से दार
११	,,	,,	रामदासपुर	,,	६८बी०१३बि०२वि. २कच० २आ० ९पाई १८ क्रां० १४ डे०	४८।९।८	१/४ ,,
१२	,,	,,	भटगाँव खा० ६	,,	३ बी० १० बि० २ बि० १पाई ७ क्र०	४।७।२	१/४ ,,
१३	,,	,,	सैरपुर पुरहाई पट्टी नं० अनंतसिंह खा० १	,,	६बी०१२बि० ६बि० १पाई १९ क्रां० ५डे०	—।५।९	१/४ ,,
१४	,,	,,	पुरहाई पट्टी जीत-बहादुरसिंह खा० ५	,,	४ बि० ६बि० १क्रां० ४ डे० १२½ जौ	—.४।६	१/४ ,,
१५	,,	,,	पुरहाई पट्टी महि-पालसिंह खा० २०	,,	६१ बीघा १४ बि० ४बि०१आ० २पाई १२ क्रां० १४ डे०	६६।११।१०	१/४ ,,
१६	,,	,,	पुरहाई प०ललिता-सिंह खा० २१	,,	१बी०८बि० १९बि० ८क्र० १० डे० ५ जौ	१।१०।९	१/४ ,,
१७	,,	,,	सराय शहज़ादी	,,	२आ० १पाई १२ क्रां १बि० १७ बि० नं० ४२० २ बि० १८ बि० नं० ४४९ २ बि० १३ बि० नं० ४६९ १ बिस्वा नं० ४७० ४ बिस्वा नं० ५०८	१।९।—	सब में १/४ हिस्सा सायल
१८	,,	,,	मौजा सहजनपुर पर० बिजनौर	,,	१२ बि० ६ बि० १०६७/९ १ बी० १३ बि०		

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाथ हुक़ूक़ मालिकाना मुतालिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	बरतन		
२	जानवर	,,	४ लोटा, २ थाली, ४ चारपाइयाँ
३	सवारी	,,	२ गाय, २ बैल, १ ऊँट
		,,	१ रथ्रा

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख १३ जुलाई १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुकद्दमा नंबरी नंबर ४६ सन् १९३६ ई०

१—लेक्खासिंह वल्द गिरवरसिंह
२—अनरुधसिंह } पिसरान बलदेवसिंह
३—जंगूसिंह

} अकवाम ठाकुरान साकिनान मौज़ा गोबरधनपुर परगना गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई } कर्ज़दार सायल

बनाम

झाऊलाल वग़ैरह कर्ज़ख़्वाह फ़रीकसानी

चूँकि सायलान मज़कूरा बाला ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
			तशरीह जायदाद बमोजिब दफ़ा ८				
१	हरदोई		गोबरधनपुर मुहाल लालपुर पट्टी अनरुधसिंह	मालिकाना	१६ बिस्वांसी १३ कचवांसी ६ $\frac{२}{३}$ ननवांसी मिन० इसके सायलान का हिस्सा $\frac{११}{१८}$ है	४७।≡)१०	
२	,,		गोबरधनपुर मुहाल बलदेवसिंह		६ बिस्वा १३ बिस्वांसी ६ $\frac{५}{३}$ ननवांसी	१२॥।-)	
३	,,		गोबरधनपुर मुहाल मुन्नूसिंह		१८ बिस्वांसी २ कचवांसी १८ ननवांसी १४ $\frac{२}{३}$ अधवांसी	१३-)	
४	,,		बाज़ीदपुर मुहाल बलदेवसिंह		१० बिस्वा मिनजुमला पूरा मुहाल	४०॥।=)	
५	,,		बाज़ीदपुर मुहाल अल्लादादपुर पट्टी बलदेवसिंह		१ बिस्वा ५ बिस्वांसी ४ $\frac{१}{२}$ अधवांसी का आधा	१३-)	
६	,,		संदाना		१६ बिस्वांसी १३ कचवांसी ६ $\frac{५}{३}$ ननवांसी	४९।॥=)६	

तशरीह जायदाद बमोजिब दफा १० मिनजानिब फ़रीकपानियान १, २, ४, ५, ६, ७, १४, १५

१	सीतापुर	हरौनी	मालिकाना	१ आना १०$\frac{४}{५}$ पाई मिनजुमला १६ आना
२	,,	भीटगोर मुहाल सरदा		२ बिस्वा १० बिस्वांसी मिनजुमला बिस्त बिस्वा में $\frac{१}{४५}$
३	,,	भीटगोर मुहाल फकीरापूर		४ बिस्वा १३$\frac{१}{९}$ ननवांसी मिनजुमला बिस्त बिस्वा में १३$\frac{१}{३}$ बिस्वांसी
४	हरदोई	संदाना		११ बिस्वांसी कसरे जायद
५	,,	गोबरधनपूर मुहाल लालपूर		११ बिस्वा कसरे जायद
६	,,	गोबरधनपूर मुहाल बलदेवसिंह		१० बिस्वा कसरे जायद
७	,,	बाज़ीदपूर मुहाल बलदेवसिंह		७ बिस्वा कसरे जायद

तशरीह जायदाद बमोजिब दफा १० मिनजानिब फ़रीकसानी १०

१	हरदोई	संदाना		११ बिस्वांसी २ कचवांसी ४$\frac{४}{९}$ ननवांसी
२	,,	गोबरधनपूर मुहाल लालपूर		११ बिस्वांसी २ कचवांसी ४$\frac{४}{९}$ ननवांसी
३	,,	गोबरधनपूर खास		११ बिस्वांसी २ कचवांसी ४$\frac{४}{९}$ ननवांसी
४	,,	बाज़ीदपूर मुहाल बलदेवसिंह		३ बिस्वा ६ बिस्वांसी १३$\frac{१}{३}$ कचवांसी
५	,,	मुहाल अफ़्ज़ादादपूर पट्टी बलदेवसिंह		१ बिस्वांसी कसरे जायद
६	,,	मुहाल मुन्नूसिंह दखिली गोबरधनपूर		१२ बिस्वांसी कसरे जायद

तशरीह जायदाद बमोजिब दफा १० मिनजानिब फरीकसानियान १९,२०

१	हरदोई	गोबरधनपूर मुहाल बलदेवसिंह मुंदरजा खाता खेवट १ का	बकदर निस्फ
२	,,	गोबरधनपूर मुहाल लालपूर मुंदरजा खाता खेवट १ का	बकदर १ सुदस
३	,,	बाजीदपूर मुहाल अफ़्लादादपूर मुंदरजा खाता खेवट ४ का	बकदर १ सुदस
४	,,	बाजीदपूर मुहाल बलदेवसिंह मुंदरजा खेवट १ का	बकदर १ सुदस
५	,,	संदाना मुंदरजा खाता खेवट १ का	बकदर १ सुदस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत वरखवास्तहदेहंदा	कैफियत
१	गोबरधनपूर मुहाल बालपूर पट्टी केसरीसिंह	१६ बिस्वांसी १३ कच-वांसी ६⅔ ननवांसी	
२	बाजीदपूर मुहाल अबला-दादपूर पट्टी डालूसिंह	१२ बिस्वांसी ९ कच-वांसी १९ ननवांसी १८ अधवांसी	
३	बाजीदपूर मुहाल फतेहसिंह	२ बिस्वा २ बिस्वांसी ७ कचवांसी	
४	लहरू	१ मंज़िल	
५	लहरी	१ मंज़िल	
६	भैंस	१ रास	
७	गाय	५ रास	
८	पड़िया	१ रास	
९	बछड़ा	२ रास	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ३१ मार्च सन् १९३७ ई० को जारी हुआ।

मुंसरिम

सम्मन बिताबर इनफिसाल मुकद्दमा

(ऑर्डर ५—कायदा १, ५)

नं० मुकद्दमा १९२ सन् १९३७ ई०

बअदालत जनाब अडीशनल मुंसिफ साहब बहादुर आगरा

म्युनिसिपल बोर्ड आगरा बजरिए एक्ज़िक्युटिव ऑफ़िसर, म्युनिसिपल बोर्ड, आगरा मुद्दई

बनाम

१—मु० सलीमा बीबी जौजे मुहम्मदइलियास कौम शेख सा० गालिबपुर कलां आगरा

२—मुहम्मदइदरीस नाबालिग वल्द मुहम्मदइलियास बवित्तायत मु० सलीमा बीबी मुद्दाअलेह नं० १

मुद्दाअलेहुम

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत ५३॥=)७ पाई के दायर की है, लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख १६ माह सितंबर सन् १९३७ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मार्फत वकील के जो मुकद्दमे के हालत से वाकई वाकिफ किया गया हो, और जो कुल अमूर अहम मुताल्लिक़ै मुकद्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाजिर हों और जवाबदिही दावा की करें, और हरगाह वही तारीख़ जो आपके हाजिर के लिये मुकर्रर है, वास्ते इनफिसाल कतई मुकद्दमा के तजवीज हुई है। पस आपको लाजिम है कि उसी रोज अपने जुमला गवाहों को, जिनकी शहादत पर व निज तमाम दस्तावेजात को जिन पर आप अपनी जवाबदिही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे, तो मुकद्दमा बगैरहाजिरी आपके मसमूअ और फैसल होगा।

आज बतारीख ४—९—१९३७ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू दाताराम साहब मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ८२ तारीख पेशी ११ नवंबर १९३७ ई०

मुसम्मात शहज़ादुन्निसा ज़ौजे सय्यद ज़ियाउलहसन साकिन कटरा नगराम परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ

कर्ज़दार सायल

बनाम

मुसम्मात जनाका वग़ैरा क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

१—शेख महमदबशीर वल्द हुसेनअली वकफ़ साकिन बड़ागाँव ज़िला लखनऊ

२—सरजू वल्द बिसराम
३—बंदीदीन वल्द रामलाल
४—संतबख्श वल्द सेवक
५—गया
६—मुसम्मात सुखदाना बेवा दीनदयाल
७—रामरतन वल्द जानकी
८—मथुरा वल्द चरनजू

} अकवाम कुरमी साकिन कटरा नगराम तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ

९—रामभरोसे वल्द सधारी तेली साकिन आँबुवा मुरतज़ापुर परगना व तहसील मोहनलालगंज जि० लखनऊ

१०—परमेशुर
११—सरजू
१२—राजबहादुर
} वल्द बली कुरमी

१३—गयादीन
१४—रामसेवक
१५—रामअवतार
} वल्द हुबलाल कुरमी

१६—रामअवतार वल्द शिवशंकर ब्राह्मण
१७—छबीले लोध
१८—मुसम्मात जनाका बेवा बली कुरमी

} साकिन मौजा करस्वा परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ

१९—भाईलाल ब्राह्मण वारिद हाल मौजा समेसी परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ

२०—सय्यद अमजादहुसैन
२१— ,, महदीहुसैन
२२— ,, सरदारहुसैन
२३— ,, नासिरहुसैन
} वल्द सय्यद अब्बासहुसैन

२४— ,, आबिदअब्बास
२५— ,, जाफ़रअब्बास
} वल्द अनसारहुसैन

२६—सकीना बानो दुख़्तर अनसारहुसैन
२७—कनीज़ ख़ातून बेवा अनसार हुसैन
२८—आलिया बानो ज़ौजे सय्यद मुसतफ़ाहुसैन
२९—सामलाल कुरमी

} साकिन कटरा नगराम परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ

चूँकि मुसम्मात शहज़ादुन्निसा बित सैयद फ़ज़लहुसैन साकिन कटरा नगराम ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्त देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar, Digitized by eGangotri

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़े हरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व महाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हकीयत की तसरीह	बसाबत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तश्ख़ीस मालगुजारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	हकीयत जमींदारी ८पाई १८ किरांत १५ डिसमिल ॥≡) २ पाई १६ किरांत १२ डिसमिल २ जौ	मौज़ा कटरा नगराम प० व त० मोहनलालगंज लखनऊ पट्टी गैर मनकूला ४ ॥≡) २पाई १६ किरांत १२ डिसमिल २ जौ	हकीयत आला		५७७।) मालगुजारी सेवाय ५७॥।)॥	
२	,,	हकीयत जमींदारी ।) ५ पाई १२ किरांत १० डि० मिनजुमला १)	मुहाल तफ़ज्जुलहुसेन १) वाकै मौजा अमवा मुरतज़ापुर प० व तह० मो० जि० ल०	,,		मालगुजारी १६८।) अबवाब १६॥।)	
३	,,	हकीयत जमींदारी ।)५ पाई १२ किरांत १० डि० मिनजुमला १)	मु० तफज्जुलहुसैन वाकै मौजा करोरा प० व त० मोहनलालगंज लखनऊ	,,		मालगुजारी १७५) सेवाय १७॥)	
४	,,	नंबरान मातहत दारी मै रकबा मुताल्लिक बंदोबस्त साबिक़ जल में है	मुहाल वलीमुहम्मद वाकै दक्खिन नगराम प० व तह० मोहनलालगंज लखनऊ	,,			
		२६४३ १बी०१०बि० २७३४ ७ बीघा	२६४४ ३ बी० १ बिस्वा	२७५८ ४ बी० १५बिस्वा	हर से नंबरान के १/४ में मिनजुमला ३२ सेवाय १५/१६ सेवाय सायलान की मिलकियत है।		

१—लखनऊ नंबरान हाल मातहतदारी सीर पट्टी अब्बासहुसैन नंबर १ ≡)८ पाई मातहतदारी मौजा

(अ) फजीलतफातमा $\frac{३४०}{६}$ ब ४ बिस्वा १० बिस्वांसी, $\frac{३४०}{६}$ ज १ बिस्वा, $\frac{३८२}{२}$ ब १ बिस्वा, ३४० अ ११ बिस्वा, ३८२ अ १९ बिस्वा, मीजान १ बीघा १६ बिस्वा १० बिस्वांसी

(ब) लखनऊ नंबरान हाल मातहतदारी फातमाउन्ननिसाँ जिसमें सायला का कब्जा बकदर ८ पाई १८ किरांत १५ डिसमिल मिनजुमला ९ पाई के है $\frac{३२९ \text{ ब}}{१२ \text{ बि० } १० \text{ बि०}}$ $\frac{३२९ \text{ ज}}{११ \text{ बि०}}$ $\frac{३२६}{३ \text{ बि० } १७ \text{ बि०}}$ $\frac{३८२ \text{ ब}}{२}$ १८ बिस्वा। मीजान २ बीघा ५ बिस्वा ७ बि०

(ज) नंबरान हाल मातहतदारी जिसमें शहज़ादीउन्ननिसाँ $\frac{२३१ \text{ ब}}{९ \text{ बिस्वा } १० \text{ बिस्वांसी}}$ $\frac{३४३२ \text{ अलिफ}}{१० \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{१९० \text{ ब}}{१४ \text{ बि० } १० \text{ बि०}}$ $\frac{२२८ \text{ ब}}{८ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{३३९ \text{ ब}}{९ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{९८ \text{ ब}}{१४ \text{ बि०}}$ $\frac{२८८}{१५ \text{ बि०}}$ $\frac{३२५ \text{ ब}}{११ \text{ बि०}}$ $\frac{३२८ \text{ ब}}{१५ \text{ बि० } १० \text{ बि०}}$ $\frac{२६४ \text{ ब}}{१५ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{३४०}{२}$ $\frac{}{१५ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ मीजान ५ बीघा १८ बिस्वा

(द) मातहतदारी सीर पट्टी फातरूलनिसाँ मकबूजात हयात कनीज कुबरा बेवा बादशाहहुसैन बिला हकूक इंतकाल जिसमें शहिजादउन्ननिसाँ का कबजा बकदर निस्फ है $\frac{३२५ \text{ अलिफ}}{१ \text{ बी० } ३ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{३९२}{३ \text{ बि० } १० \text{ बि०}}$ १० कचवांसी मीजान १ बी० ७ बिस्वा ७ बिस्वांसी १० कचवांसी

(ह) मातहतदारी मातरुलनिसाँ मकबूजा ताहयात बतौर गुजारा कनीज़ कुबरा बेवा बादशाहहुसैन बिला हकूक इंतकाल जिसमें सायला शहिजादउन्ननिसाँ का हिस्सा बकदर निस्फ है $\frac{९८ \text{ अलिफ}}{१४ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{१९० \text{ अ}}{१४ \text{ बि० } १० \text{ बि०}}$ $\frac{२२८ \text{ अ}}{८ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{२३१ \text{ अ}}{९ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{२९४}{१५ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{२८८}{१५ \text{ बि०}}$ $\frac{३२५}{११ \text{ बि०}}$ $\frac{३२८}{५ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{३३६}{९ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{३४३२}{१० \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ मीजान ५ बि० १२ बिस्वा १० बिसवांसी मीजान कुल मातहतदारी २ आना ८ पाई कटरा नगराम १६ बी० १९ बिस्वा १५ बिस्वांसी मालगुजारी साबिक ३०)

(।।।) मातहतदारी सीर मुहाल तफजुलहुसैन मौज़ा अमवा मुरतिजापुर परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ हस्ब जैल है

६—लखनऊ मातहतदारी सीर मुहाल तफ़ज़्ज़ुलहुसैन मिलकियत फजीलतफातमा वाकै मौज़ा

(अ) अमवा मुरतिज़ापूर परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ $\frac{२९१}{१ \text{ बी० } १७ \text{ बि० } १७ \text{ कच०}}$

(ब) ,, मातहतदारी सीर मुहाल तफ़ज़ुल हुसैन मौज़ा अमवा मुरतिजापूर जिसमें शहजादीउन्ननिसाँ व सायला का हिस्सा मिनजुमला १४ आना ५ पाई १२ किरांत १० डि० मै ५ पाई १२ किरांत १० डि० के बकदर है $\frac{२४०\text{ब, ज}}{१५ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{२४४ \text{ ब, ज}}{११ \text{ बि० } १० \text{ बि०}}$ $\frac{२८५ \text{ ज}}{६ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{३२१\text{ब, ज}}{१७ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{३९२ \text{ अ, ब}}{१ \text{ बी० } ६ \text{ बि० } ६ \text{ बि०}}$ $\frac{५३१ \text{ ज}}{१० \text{ बिस्वा}}$ $\frac{५३१ \text{ ब०}}{५ \text{ बिस्वा}}$

(ज) ,, मातहतदारी सीर मुहाल तफज़्ज़ुलहुसैन मौज़ा अमवा मुरतिजापूर मकबूजा ताहयात बतौर गुज़ारा कनीज़ कुबरा बादशाहहुसैन बिला हकूक इंतकाल, जिसमें सायल शहजादीउन्ननिसाँ का हिस्सा बकदर निस्क है $\frac{२४० \text{ अ}}{१२ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{२४४}{११ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{२८५ \text{ ज}}{६ \text{ बिस्वा } १० \text{ बि०}}$ $\frac{३२१ \text{ अ}}{१७ \text{ बिस्वा}}$ $\frac{२९१ \text{ ब}}{५ \text{ बि० } ५ \text{ बि० } ३ \text{ कच०}}$ $\frac{५३१६ \text{ अ}}{}$

CC-0. Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

७—लखनऊ १६ आना मातहतदारी सीर मुहाल तफज्जुलहुसैन मौजा करोरा परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ हस्ब जैल है

(अ) ,, मातहतदारी सीर मुहाल तफज्जुलहुसैन मिलकियत फज़ीलतफातमा १८३ अ / १६ बि० ५ बि० १० कच०

(ब) ,, मातहतदारी सीर जिसमें शहजादउलनिसाँ सायला का हिस्सा मिनजुमला १४ आना ५ पाई १२ किरांत १० डिसमिल के ४ आना ५ पाई १० डिसमिल के बकदर है २४४ ब, ज / १५ बिस्वा ४४७ अ, ब / १६ बिस्वा १२ बि०

६१० स, द / १ बिस्वा १८३ ब, ज / १५ बिस्वा १० बि० ४२६ ब, ज / १६ बिस्वा १५७ / १५ बिस्वा १० बि०

(ज) मातहतदारी सीर मकबूजा ताहयात बतौर गुज़ारा कनीज कुबरा बेवा बादशाहहुसैन बिला हकूक इंतकाल जिसमें सायला शहजादउलनिसाँ का हिस्सा बकदर निस्फ है २४४ अलिफ / १५ बिस्वा ४४६ / १६ बिस्वा १३ बि०

३१० स / १ बिस्वा १५७ अलिफ / ५ बिस्वा १० बि० १८३ अलिफ / ४ बि० १० क० ४२६ / १६ बि०

८—मकान मसकूना वाकै मुहल्ला बंगला मौसूमान

(अ) मकान सैयद तफज्जुलहुसैन वाकै मोहाल कटरा नगराम तहसील मोहनलालगंज लखनऊ मकान तनहा मिलकियत मकबूजा सायल है

(ब) ,, इमाम बाड़ा मीर तफज्जुलहुसैन वाकै बँगला कटरा नगराम तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ इमाम बाड़ा में सायला बहैसियत हिस्सेदार मालिक व काबिज है

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २२ मई सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बनाम अशखास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला बहराइच

मुकद्दमा नं० ७९ सन् १९३७ ई०

तारीख़ पेशी १०—११—३७ ई०

श्रीनिवास वग़ैरा — सायलान

बनाम

रामऔतार वग़ैरा — फरीकसानियान

चूँकि श्रीनिवास वगैरा सायलान मजकूर साकिन कुरसहा ज़िला बहराइच की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, इस तो इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इश्तिहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ९ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल साहब माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर सीतापुर दरजा अव्वल मुक़ाम सीतापुर

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ५८ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी ३०—११—१९३७ ई०

मिर्ज़ा हसनशाह वल्द मिर्ज़ा हैदरअलीबेग क़ौम मुग़ल साकिन कुतुबनगर प० व त० मिसरिख जिला सीतापुर क़र्ज़दार सायल

बनाम—दधीचसिंह वग़ैरा क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि मिर्ज़ा हसनशाह वल्द मिर्ज़ा हैदरअलीबेग साकिन कुतुबनगर परगना मिसरिख ज़िला सीतापुर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंदर्जिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

इजलास जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल सीतापुर
मिर्ज़ा हसनशाह सायल
तफ़सील जायदाद

नं० शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौइयत हक़ीयत	मालगुज़ारी	लोकल रेट
१	मौ० तौलेपुर परगना व तहसील मिसरिख ज़ि० सीतापुर		२० बिसुवा	जमींदारी हक़ आला मौरूसी	५६।॥=)	५॥=)
२	मौ० गुलरिया प० व त० मिसरिख ज़िला सीतापुर		हिस्सा ४/२१	,,	७६=)	७॥=)१०पाई
३	मौ० बलहिया प० व तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर		२० बिसुवा	,,	५००)	५०)
४	मौ० देवगवाँ प० व तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर		रकबा डि० ए० ११—१६	सीरसाकितुल मिलकियत जिमन १		
५	मौ० सतनापुर प० व तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर		२० बिसुवा	जमींदारी हक़ आला मौरूसी	४८०)	४८)
६	मौ० करीमनगर प० गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई		१० बिसुवा	,,	१९०)	१९=)॥।
७	मौ० हसनापुर प० गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई		५ बिसुवा	,,	५६)	
८	मौ० जिगिनिया प० गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई		१० बिसुवा	,,	८०)	
९	मौ० शादीपुर प० गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई		१५ बिसुवा	,,	४५)	
१०	मौ० जमुनियाँ प० गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई		१५१ बी० ७ बि०	,,	१५॥=)	
११	मौ० बिजौली प० व तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर		हिस्सा =)॥	,,	१५३)	१५)॥।
					१४५॥।-)४	

मीजान १६८२॥।=)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(फ़र्द ज) जायदाद मनकूला

१—कुर्सियाँ ४ अदद ६)
२—तख्त चोबी १ ,, २)
३—अद्धा १ ,, १५)
४—भैंस १ रास २०)
५—बैल २ रास ४०)
मीलान ८३)

फेहरिस्त जायदाद मुंदरजा बयान तहरीरी महाजनान जोकि सायल को तसलीम नहीं है

जगमोहनसिंह महाजन

१—एक किता बाग़ किला आराज़ी महदूदा तहत नं० ६ व ७ व $\frac{८}{१}$ व ९ व १० व ११ व $\frac{१३}{१}$ व १३ व १४ व १५ व १६ व १७ व १८ व १९ व २० व $\frac{२१}{१}$ व ३४ व ३५ व ३६ व ३७ व ३८ व ३९ व ४० व ४१ व ५८ तादादी २५ बीघा १९ बि०

पूरब	पच्छिम	उत्तर	दक्खिन
सड़क	बाग़ गिरजादयाल व जोखेलाल	गलियारा	बाग़ व चाह पुख़्ता

२—एक किता बाग़ मय आराजी दरख्तान नंबरी २१२ व $\frac{२१३}{२}$ व २१४ व २१५ व $\frac{३१८}{२}$ तादादी ४ बीघा ६ बि०

पूरब	पच्छिम	उत्तर	दक्खिन
गलियारा व बाग़ मंगली	बाग़ मुहम्मदमेंहदी	गलियारा व बाग़ बालकिशन	खेत मजरूआ

३—एक किता बाग़ मय आराजी दरख्तान नं० ४५४ व ४५५ व ४५६ व $\frac{४५७}{१}$ व ४६१

पूरब	पच्छिम	उत्तर	दक्खिन
फुलवाड़ी सैयद अहमदहुसेन	सड़क	गलियारा	कालिदी बाग़ रिआया

४—मकान वाकै कुतबनगर महदूदा तहत

पूरब	पच्छिम	उत्तर	दक्खिन
मकान हुसेनअली	बाग़ जाकिरहुसेन वगैरह	फुलवाड़ी वसीअली	मकान आजमशाह व रास्ता

५—मशीन शकर बनानेवाली ४००) मशीन गन्ना पेरनेवाली २००) कढ़ाव आहनी राब बनानेवाले ५ अदद ४००)

आटा चक्की १५०) इंजन २०००)

महाजन नं० २३—मशीन शकर बनानेवाली ४००) मशीन गन्ना पेरनेवाली ५००) कढ़ाव आहनी राब बनानेवाले ५ अदद ४००)

आटा चक्की १५०) इंजन २०००

महाजन नं० २०—४ किता बाग़ात व एक इंजन शकर की मशीन चलाने का व १५ बीघा आराजी मातहती वाकै कुतुबनगर व दो किता मकान वाकै कुतुबनगर

महाजन नं० २१ व २२—४ किता बाग़ अंबा कलमी व तुख्मी वाकै मवाजियात कुतुबनगर व नेवलपुर व बलहिया व दो किता मकान वाकै कुतुबनगर व १५ बीघा आराजी मातहती कुतुबनगर

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख २९ जुलाई सन् १९३७ ई० जारी हुआ

मुंसरिम

सम्मन बवारज़ इनफ़िसाल मुकद्दमा
(ऑर्डर ५, कायदा १, ५ मजमूआ ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८)

नं० मुकदमा ३३८ खफीफा सन् १९३७ ई०
बअदालत जनाब मिस्टर केदारनाथ सिनहा डिस्ट्रिक्ट जज साहब बहादुर ज्ञानपुर ज़िला भदोही
बिश्वनाथ पांडे वल्द गुनन पांडे साकिन दलपतपुर मुतालिका इनानों ज़िला भदोही मुद्दई

बनाम

१—गौरीशंकर तेवारी वल्द शिवमूरति तेवारी साकिन मौज़ा बजी का पुरा
२—रामप्रताप चौबे वल्द रामऔतार चौबे साकिन मौज़ा चंदापुर
} मुतालिका कुंडा ज़िला भदोही

मुद्दाअलेहुम

वाज़ेह हो कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ८००) के दायर की है, लिहाजा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख ३० माह सितंबर सन् १९३७ ई० बवक्त १० बजे दिन पर असालतन या मार्फ़त वकील के जो मुकद्दमे के हाल से करार वाकई वाकिफ किया गया हो, और जो कुल उमूरात अहम मुतअल्लिकै मुकद्दमा का जवाब दे सके, या जिसके साथ कोई और शख्स हो, जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हो और जवाबदेही दावा मुद्दई मजकूर की करो, और तुमको हिदायत की जाती है कि तुमका दस्तावेज़ात को जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदेही के इस्तदलाल करना चाहते हो, पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मजकूर तुम हाजिर न होगे, तो मकद्दमा तुम्हारी गैरहाजिरी में मसमू और फैसल होगा।

आज बतारीख़ १० माह अगस्त सन् १९३७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

بعدالت جناب اسپیشل جج صاحب بہادر سکنڈ گریڈ مقام و ضلع شاھجہانپور—

نمبر مقدمہ ۱۰ سنہ ۱۹۳۷ع

اجلاس جناب بابو مہراجہ بہادرلال صاحب بہادر اسپیشل جج سکنڈ گریڈ شاھجہانپور—

تاریخ پیشی ۱۱-۱۱-۳۷ع

ھری سنگھ و جگناتھہ سنگھ پسران تال سنگھ و رام نراین سنگھ پسر نابالغ مسماۃ نتھی کنور زوجہ لال سنگھ نابالغ بولایت نتھی کنور مادر خود و چھترپال سنگھ و کھگر سنگھ و پسران نابالغان ھری سنگھ بولایت پدر خود اقوام ٹھاکر ساکن موضع کواپا کلان ساؤلان

بنام

منشی راجہ بہادر ولد منشی پیارے لال و بشنبھر ناتھہ ولد پیارے لال قوم کایستھہ ساکن شاھجہانپور محلہ چوکی و لال من ولد جگناتھہ سنگھ قوم برھمن ساکن موضع پرلیا پرگنہ جیور ضلع شاھجہانپور و کپتان سنگھ ولد بھیما سنگھ قوم ٹھاکر ساکنان موضع بانس کھیڑا پرگنہ کانت ضلع شاھجہانپور— فریق ثانی

ھرگاہ مسمی ھری سنگھ و سائل نے درخواست حسب دفعہ ۴ ایکٹ نمبر ۲۵ سنہ ۱۹۳۴ع عدالت ھذا میں بذریعہ جناب صاحب کلکٹر بہادر شاھجہانپور گذرانی ھے—اور منجانب اپنے بیان تحریری داخل کر دیا ھے—لہذا جملہ اشخاص کہ جن کا قرضہ دگری شدہ و غیر دگری شدہ متذکرہ بالا درخواست دھندہ کی ذات یا جائداد پر ھو اندر تین ماہ تاریخ شائع ھونے نوٹس و گزٹ سے اپنا بیان تحریری نسبت اپنے قرضہ کے داخل کریں—ورنہ کوئی عذر بعد میں قابل سماعت نہ ھوگا—اور درخواست بعدم حاضری قرضخواھان مسموع اور فیصل ھوگی—

بتاریخ ۱۷-۸ سنہ ۱۹۳۷ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا—.

منصرم

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Bombay, Behar & Punjab.

कार्त्तिक, १९९४
November, 1937

मूल्य ॥)
Price -/8/-

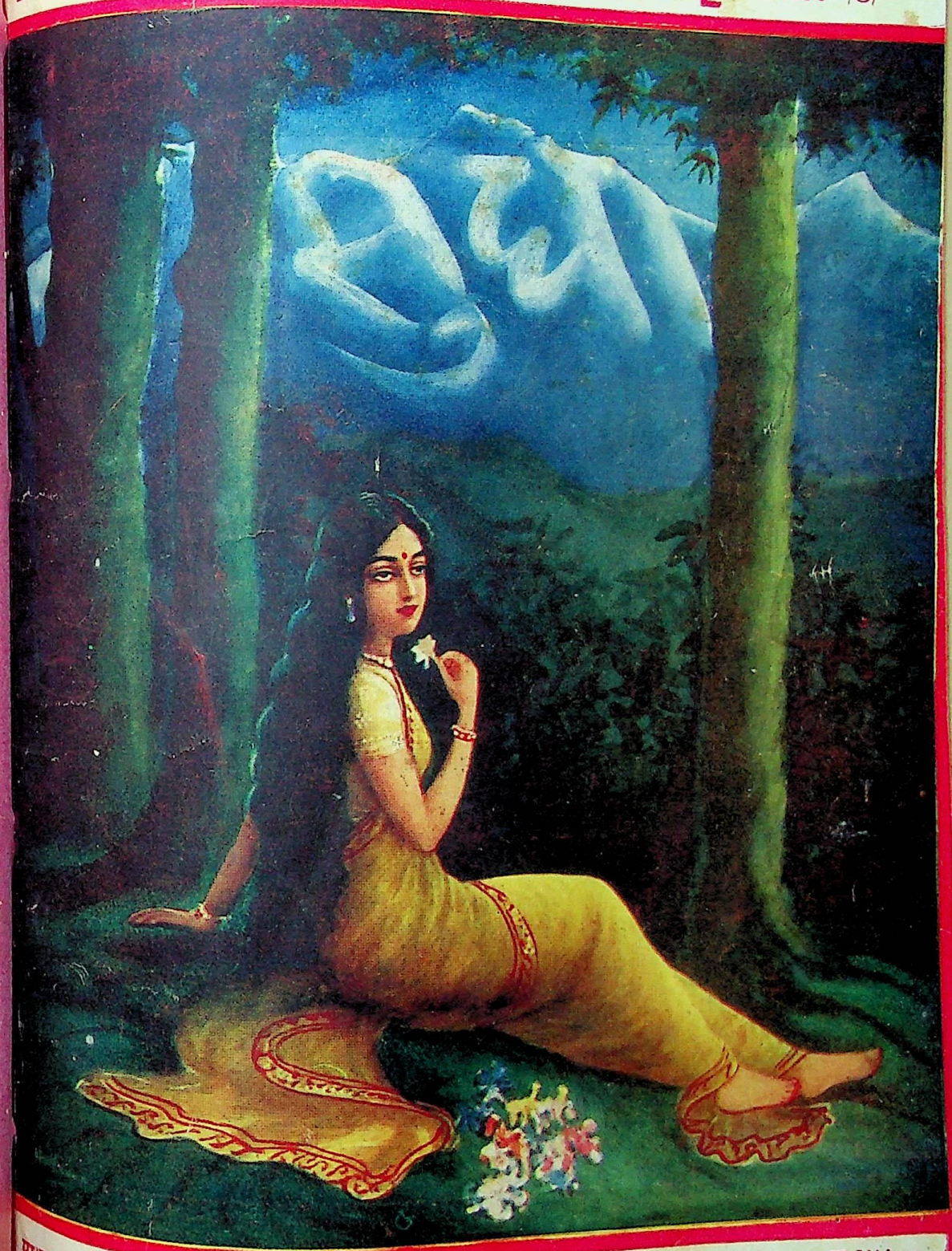

साधारण संस्करण] संपादक—श्रीदुलारेलाल भार्गव [Ordinary Edition

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

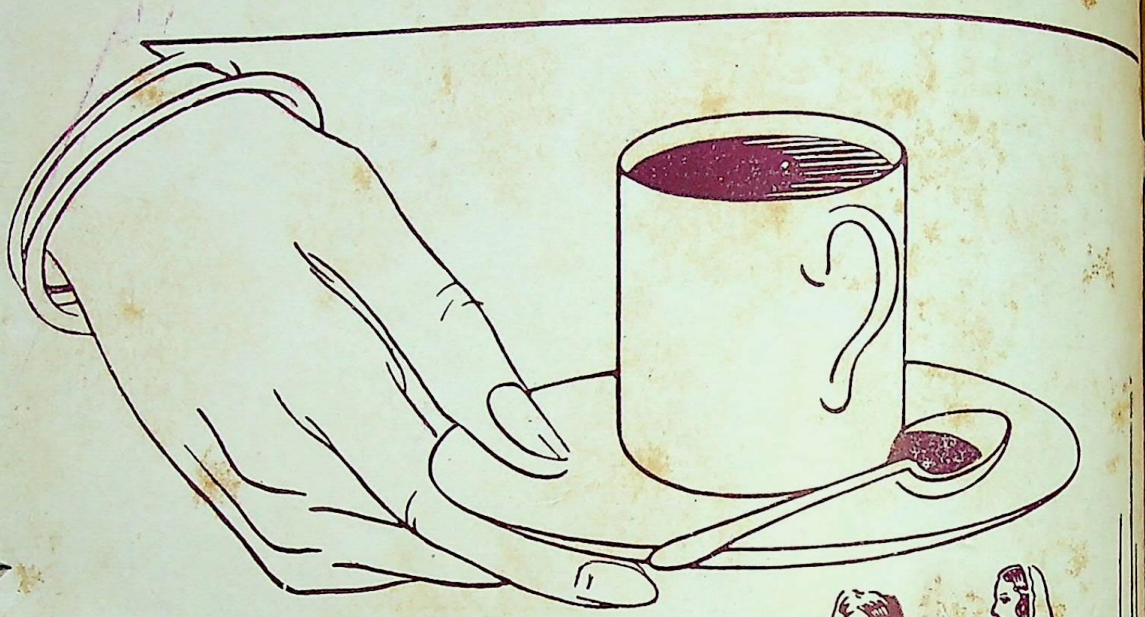

बुद्धिमती गृहिणी चाय पीने को उत्साहित करती है

हम समझते हैं कि परिवार के लोगों को चाय पीने के लिये उत्साहित कर आप बुद्धिमत्ता का काम करते हैं। बच्चे और बड़े सबको ही इसकी स्फूर्तिदायक शक्ति और स्वास्थ्य-पूर्ण उत्साह की जरूरत रहती है। अपने घर और परिवार में यह चाय की प्रथा चला कर आप उचित प्रथापर ही उन्हें चला रहे हैं।

चाय तैयार करनेका तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर डाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सोझने दीजिये। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइये।

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

IK55

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शुभ

यदि किसी को अपना मुक़द्दर बनाना हो

लाभ

यदि गई हुई इज़्ज़त और खोया हुआ धन पुनः वापस लेने की इच्छा हो, यदि धन-धान्य, स्त्री-संतान-प्राप्ति का स्वर्गीय आनंद भोगने की उत्सुकता हो, और यदि ऊँचे दरबारों में इज़्ज़त हासिल कर, दुश्मन को परास्त कर, अपनी शान का सिक्का जमाना हो, तो आज ही और अभी शक्तिशाली अद्भुत—

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र

मँगाइए। इसके अलौकिक गुणों की प्रशंसा बड़े-बड़े ज्योतिषी व धुरंधर पंडितों ने ही नहीं, बल्कि शास्त्र-पुराणों तक ने की है। प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने के पचास-पचास हज़ार प्रशंसा-पत्र इस यंत्र की सचाई के पक्के प्रमाण हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या अविश्वास की रत्ती-भर की गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र वा शास्त्रविधि पर अविश्वास करता है, वह जीवन में कभी सुख को प्राप्त नहीं होता, ऐसा कृष्ण भगवान् ने स्वयं कहा है। देखो गीता १६-२३।

इस नवग्रह यंत्र से रोज़गार में लाभ, इम्तहान में पास, मुक़दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजसम्मान, नौकरी मिलना, संतान-लाभ, तनख़्वाह में तरक्क़ी, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, इच्छानुसार शादी, अचानक आफ़तों से बचना, किसी को वश करना, रेस व लाटरी में धन-प्राप्ति वग़ैरह-वग़ैरह हर काम पूरा होता है। जो पूछोगे, हर बात का जवाब स्वप्न में विधि-सहित बताएगा। आप जिसका ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकलकर उस कार्य को पूरा करेगी।

हर मनुष्य विश्वास रक्खे कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, वह इसके चमत्कार को देख वाह-वाह कर उठता है, और बार-बार मँगाता है। बहुतों ने तो छ-छ और आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह यंत्र तक मँगाए हैं। अगर विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अब भी विश्वास न हो, तो ⁻/ का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। लाभ न हो, तो दाम वापस मँगाइए।

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

इतने पर भी अगर विश्वास नहीं हुआ, तो अपनी चमकानेवाली तक़दीर और उदय होनेवाले भाग्य को धक्का पहुँचाने के दोषी आप ही हैं। एक बेयक़ीनी व तुच्छ पैसे के लालच-वश यदि चूक गए, तो जीवन-भर पछताना ही हाथ लगेगा। शास्त्र का कहना है कि—

सकल पदारथ हैं जग माहीं ; कर्महीन नर पावत नाहीं।

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक नवग्रह यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह यंत्र मँगावें। पुरुष के लिये दो नीलमणि और स्त्री को दो लालमणि से युक्त यानी कंपलीट। एक नवग्रह यंत्र का मूल्य २), एक साथ तीन यंत्र लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ६॥-)

मि० बी० अर्जुनवाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज, सांगली (सतारा)—आपके यहाँ से मुझे बेहद लाभ पहुँचा। मैं इम्तहान में पास हो गया हूँ। एक यंत्र वी० पी० से और भेज दें।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—आपका यंत्र पहले एक मँगवाया था, उससे मेरा कार्य सिद्ध हो गया है। अब कृपया एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता S. S. L. बंबई नं० ४

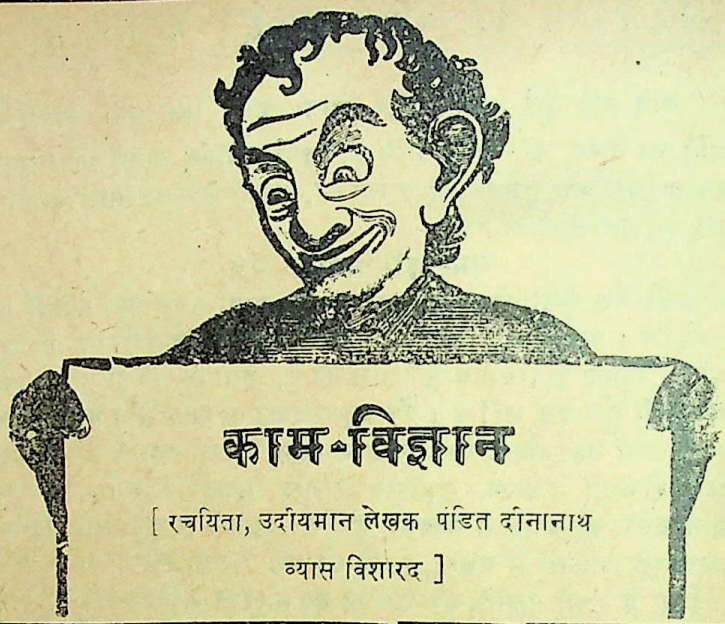

काम-विज्ञान

[रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद]

यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

विषय-सूची

१. स्त्री का स्थान
२. विवाह क्यों और कब ?
३. वर्तमान परिणीत जीवन
४. वैवाहिक शिक्षण
५. वैषयिक शिक्षा
६. विषय का नैतिक धरातल
७. पति-निर्वाचन
८. जीवन-सहचरी
९. सच्चा वैवाहिक जीवन
१०. दुखी विवाह
११. सुखी विवाह
१२. दांपत्य प्रेम एवं ईर्ष्या
१३. स्त्री और सौंदर्य
१४. वैषयिक उत्कंठा
१५. नव-परिणीता वधू
१६. सहवास पर एक दृष्टि
१७. चुंबन
१८. आलिंगन
१९. सहवास
२०. कुछ महत्व-पूर्ण क्रियाएँ
२१. उपसंहार

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लेख-सूची

		पृष्ठ
१.	प्रेम-मार्ग (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश'जी	३३७
२.	नागरी-लिपि में सुधार—[लेखक, श्रीयुत प्रोफ़ेसर धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी	३३८
३.	एक सच्ची कहानी (कहानी)—[लेखक, प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए०	३४३
४.	महाकवि कालिदास तथा गोस्वामी तुलसीदास का शृंगार - वर्णन—[लेखक, श्रीयुत ब्योहार राजेंद्रसिंह एम्० एल्० ए०	३४६
५.	विपर्यय (कविता)—[लेखक, श्रीयुत पं० गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' ...	३५८
६.	शुद्ध तथा उत्तम दूध की आवश्यकता और प्राप्ति के साधन—[लेखक, श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी० ...	३५६
७.	छाया की बात (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत इंद्राशंकर मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०	३६७

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉ० नं० ६८२५

बवासीर ❋ बवासीर

और भगंदर की अचूक महौषध

"Pilecura" डॉ० घंट का पाइलक्यूरा "Pilecura"

चाहे जैसी कठिन, पुरानी और दुःखदायी, ख़ूनी एवं बादी बवासीर या भगंदर आदि हो, मजहम लगाते ही सब तरह का कष्ट हमेशा के लिये अत्यंत शीघ्र बिलकुल आराम हो जाता है। इसमें पारा या और किसी ज़हरीली वस्तु के मेल का ख़तरा नहीं। मूल्य बड़ी शीशी ३॥), छोटी शीशी १), डाक-ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—दास-ब्रादर्स

केमिस्ट्स ऐंड ड्रगिस्ट्स

११५, धरमतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

For Agency terms apply also to:—

Distributors:—DAS BROTHERS, Chemists & Druggists

115, Dharamtala Street, CALCUTTA

CCO, Gurukul Kangri Coll...

पृष्ठ

८. भ्रष्ट-चरित्र नात्सी-नेताओं के अत्याचार—[लेखक, श्रीयुत इलाचंद्र जोशी ३७६

९. तुम और मैं (कविता)—[लेखक, श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत' ... ३८०

१०. इटली से दूसरा पत्र (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, आचार्य डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्० ... ... ३८२

११. समर्पण (गद्य-काव्य)—[लेखिका, कुमारी विद्या भार्गव ३८७

१२. इससे तुझको क्या मतलब है ? (व्यंग्य-चित्र) ३८८

१३. सुधा-चित्रावली ३८९

१४. चयन—[लेखकगण, कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक', श्रीहरिमोहनलाल वर्मा और श्रीमंगलदेव शर्मा ३९३

१५. परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत 'ग' और श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए०, एल्० टी० ... ... ४०१

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, क़ब्ज़ियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्यविद्या' पुस्तक मुफ़्त मँगावें।

मदनमंजरी-फ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—निगम मेडिकल हाल
अमीनाबाद रोड

बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

काशी-विद्यापीठ की पुस्तकें

संसार की समाज-क्रांति

लेखक—डॉ० जी० एस्० खरे पी-एच्० डी०

इसमें लेखक ने इटली, जर्मनी, रूस, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों का अपनी आँखों देखा हाल लिखा है, और वहाँ के सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन में आज जो उथल-पुथल मची हुई है, उसका चित्रण बड़ी ही सुंदरता के साथ किया है। श्रद्धेय श्रीभगवानदासजी के कथनानुसार "पचासों पाश्चात्य पुस्तकों और अख़बारों के परिशीलन से जो ज्ञान प्राप्त हो सकता है, उसका सार इसके अध्ययन से हो जायगा।" मूल्य १॥)

समाजवाद

लेखक—श्रीसंपूर्णानंद

समाज क्या है, उसमें इतना वैषम्य क्यों देख पड़ता है, सुख के साधन थोड़े-से ही लोगों को क्यों प्राप्त हैं, लोकतंत्र या फ़ासिस्टवाद क्यों समाज के रोगों को अच्छा करने में असमर्थ है, इत्यादि प्रश्नों का उत्तर इसमें मिलेगा। समाजवाद-विषयक शंकाओं का समाधान भी किया गया है। मूल्य १॥)

जापान-रहस्य

लेखक—श्रीचमनलाल

अस्सी वर्ष के भीतर ही जापान ने जो आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है, उसका असली रहस्य इस पुस्तक को पढ़ने से विदित होगा। वहाँवालों की गहरी देश-भक्ति, सुदृढ़ अनुशासन, आविष्कारक बुद्धि और जान पर खेल जाने की तत्परता इत्यादि संबंधी बातें पढ़कर आप मुग्ध हो जायँगे, और आपके मन में इस बात का उत्साह उत्पन्न होगा कि हम भी इसी पथ का अनुसरण कर अपने देश को संसार के राष्ट्रों में उपयुक्त स्थान दिलाने का प्रयत्न करें। मूल्य १॥)

हिंदू-भारत का उत्कर्ष ३॥), टाल्स्टॉय की जीवनी १॥=), साम्राज्यवाद २॥)

काशी-विद्यापीठ, बनारस छावनी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

		पृष्ठ
१६.	हमारी डाक	४०४
१७.	पहेली-पूर्तिकारों के पत्र	४०५
१८.	तृतीय सुधा-पहेली-प्रतियोगिता ...	४०७
१९.	नए फूल	४११
२०.	सौरभ (संपादकीय विचार) ...	४१२

सर्वत्र विजय

योगेंद्र कवच

योगेंद्र कवच के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन कामों में सफलता मिलती है, यानी इसके चमत्कारी प्रभाव से पुत्र, धन, नौकरी की प्राप्ति, तरक़्क़ी, मुक़द्दमे में जीत, मनचाही स्त्री या पुरुष के ऊपर वशीकरण, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, नवग्रहों तथा कठिन-से-कठिन रोगों से मुक्ति, लॉटरी तथा घोड़दौड़ में जीत होकर भाग्योदय होता है। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम। मूल्य प्रति यंत्र २), चाँदी का ३), सोने का १२॥)

पता—श्रीमहाशक्ति आश्रम नं० १५
पो० परवलपुर (पटना)

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक़्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह ओषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।=)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ४)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

CC0. Gurukul Kangri Coll...

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. तांडव नृत्य—[चित्रकार, श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू ३३७

(ख) दुरंगे

२. मंत्रिमंडल यू० पी० ... ... ३३७

३. राजा जगदंबिकाप्रतापसिंह ... ३६०

४. शहर की ओर—[चित्रकार, श्री पं० शंभुनाथ मिश्र, अध्यक्ष कला-विभाग, प्रयाग-महिला विद्यापीठ ३६१

(ग) व्यंग्य

५. इससे तुझको क्या मतलब है ? ... ३८८

(घ) सादे

६. प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए० ३४३

७. श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी० ... ... ३५६

डॉ० कैंट, फैरिंगटन, बोरिक प्रभृति के जोड़ का ग्रंथ

होमियोपैथिक

कंपैरेटिव मेटिरिया-मेडिका

यह उसी विख्यात होमियोपैथिक मेटिरिया-मेडिका का हिंदी-भाषांतर है, जिसके बँगला में ६ संस्करण और २५००० प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मेटिरिया-मेडिका-संबंधी समस्त विषय और तुलना के साथ चिकित्सा इस उत्तमता से बताई है कि किसी भी रोगी के पास बैठकर दो-तीन मिनटों में ही ठीक दवा चुन लीजिए। एक साथ मेटिरिया-मेडिका, थेराप्युटिक्स, रेपर्टरी प्रभृति से संपन्न ऐसा दूसरा होमियो-ग्रंथ किसी भाषा में नहीं है। एक इसे, अपने पास रखने पर किसी दूसरे की ज़रूरत नहीं है। १४४६ पृष्ठों की सुंदर सजिल्द पुस्तक का मूल्य ६॥), डाक-ख़र्च ॥।=)

कलकत्ते के प्रसिद्ध होमियोपैथिक औषध और पुस्तक-विक्रेता—

प्रकाशक—हैनिमैन पब्लिशिंग कंपनी

१६५, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता

गर्भ-निवारक प्रयोग

जो स्त्री बच्चा पैदा करते-करते थक गई हो, वह अपने शरीर को सुंदर और सुकोमल तथा सुडौल रखने के लिये गर्भ धारण करना नहीं चाहती, उसके लिये गर्भ-निवारक प्रयोग है। इस प्रयोग को मासिक धर्म (रजस्वला, माहवारी) के समय फ़क़त ४ ही दिन कर लेने से न रहेंगे बाँस और न बजेगी बाँसुरी याने आजन्म के लिये वंध्या (बाँझ) रह जावेगी। यदि फिर भी गर्भ धारण करने की इच्छा हो, तो इस प्रयोग को उलटा दीजिए। गर्भ रह जायगा। क़ीमत सिर्फ़ ५)। साथ में एक प्रयोग और दिया जाता है, जिससे मासिक धर्म होना बंद नहीं होता, क्योंकि मासिक धर्म के बंद होने से दूषित ख़ून शरीर में जमा होकर अनेक प्रकार की अन्यान्य व्याधि उत्पन्न कर देता है। अतः यह साथ में ज़रूर मँगाना चाहिए, जिसका दाम ५) पृथक् देना होगा। ऑर्डर देने के वक्त यह लिख देना होगा कि १०) के दोनो प्रयोग भेजिए। वी० पी० से मँगानेवालों को दोनो मय ख़र्च के ११) में घर बैठे मिलेंगे। १०) अगाड़ी भेज देने से ख़र्चा माफ़। जवाब -) का टिकट आने से ही दिया जायगा।

भारत-भैषज्य-भंडार—नं० १०८, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

हमारी कृषि-संबंधी पुस्तकें पढ़कर आप एक-एक बीघे में सहस्रों रुपए कमा सकते हैं

मक्का की खेती (सचित्र)..... १)
गेहूँ की खेती (,,)..... ॥=)
कपास की खेती (,,)..... ३)
ज़ीरा..... =)
पपीता..... ।-)
मूँगफली..... ।=)

उक्त पुस्तकें उर्दू-भाषा में भी हैं। सब पुस्तकों के ग्राहकों के लिये डाक-व्यय माफ़।

लेखक व प्रकाशक—

रामप्रसाद सूबा ऐंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट

रिटायर्ड एग्रीकल्चरल डिप्लोमिस्ट (लंदन), मुरार छावनी, ग्वालियर

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

८. श्रीयुत इंद्रा एस० मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ३६७
९. श्रीयुत इलाचंद्र जोशी ३७६
१०-१५. इटली से दूसरा पत्र-संबंधी ६ चित्र ... ३८२-३८३ और ३८५-३८६
१६. वज़ीरुद्दौला सर सिरेमलजी बापना नाइट, सी० आई० ई०, प्रधान मंत्री, होल्कर-स्टेट (इंदौर) ३८९
१७. मशीरबहादुर श्रीमान् श्यामराव-विट्ठलराव क़ानूनगा एम्० ए० ... ३९०
१८. श्रीपं० कालिकाप्रसादजी दीक्षित 'कुसुमाकर' ३९१
१९. श्रीयुत प्रो० धर्मदेवजी शास्त्री, दर्शनकेसरी ३९१
२०. मुहब्बत का जादू ३९२
२१. स्वर्गीय ठाकुर महेंद्रपालसिंहजी ... ३९७
२२. स्व० पं० शिवग़लामप्रसादजी दीक्षित ४२२

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ॥)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

हमारे सर्वसिद्ध अनुभूत प्रयोग

५००) रु० इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत वनौषधि। तीन दिन में पूरा आराम। यदि आप सेकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर थक गए हों, तो इसे लगावें। बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, —) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

कामप्रभाकर

धातु-क्षीणता, नामर्दी, कमज़ोरी, सुस्ती, स्वप्नदोष आदि को बहुत शीघ्र दूर कर एक शीशी व्यवहार करते-करते ग़ज़ब की शक्ति पैदा करती है। बंधेज-शक्ति बढ़ाने में अद्भुत गुणशाली है। मूल्य १५ दिन सेवन योग्य ३० गोली का १॥) रुपया।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोरराम (सुधा), पोस्ट कतरीसराय (गया)

CCO, Gurukul Kangri Collection

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

❀ रूपविलास ❀

ख़ूबसूरत बनाने के लिये यही प्रसिद्ध दवा है। मुहासा, झाईं, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह बहुत जल्द दूर होकर गोरा गुलाब के फूल-सा खिला गुलाबी छटा मुख पर दमकने लगती है। कैसा ही बदसूरत, बदरौनक़ मनुष्य क्यों न हो, १५ ही रोज़ के लगाने से दूना चेहरा ख़ूबसूरत नज़र न आवे, तो दाम वापस। यह स्त्री-पुरुष, दोनो का दिल ख़ुश करनेवाली मनोमोहिनी ख़ुशबूदार दवा है।

क़ीमत फ़ी डिब्बा १॥=) एक रुपया दस आना, डाक-ख़र्च =)

पता—रूपविलास-कंपनी, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, इटावा (यू० पी०)

आप भी नोट कर लीजिए—

आयुर्वैदिक औषधियों का सबसे बड़ा व विश्वस्त कारख़ाना

गुरुकुल आयुर्वैदिक फार्मेसी का

भीमसेनी सुरमा

आँखों को सुंदर तथा स्वस्थ रखने के लिये अक्सीर है। आँखों के तमाम रोगों को दूर कर ज्योति बढ़ाता है।

मूल्य ३) तोला

ब्राह्मी हेयर आयल

दिमाग़ को गरमी तथा कमज़ोरी को दूर कर ठंडक व ताक़त देता है, और चित्त को प्रसन्न रखता है।

मूल्य ॥) शीशी

पता—आयुर्वैदिक फार्मेसी, गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

गंगा-पुस्तकमाला की प्रसिद्ध पुस्तकें पढ़िए!

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष ११ | खंड १ | कार्त्तिक, ३१५ तुलसी-संवत् (१९९४ वि०)— नवंबर, १९३७ | संख्या ४ | पूर्ण संख्या १३६

प्रेम-मार्ग

[श्रीयुत 'बचनेश' जी]

सुगम मम प्रेम-कुंज की राह ;
ठौर - ठौर रस - सरस सरोवर, पग - पग सीतल छाँह।
नहिं चाहिए कोई पथ - दरसक, नहिं संबल की चाह ;
मुकुट - छत्र करि लिए जात मोहिं पीतम दै गलबाँह।
छाय रह्यो घनस्याम दृगन, मन मगन मिलन - उतसाह ;
यहाँ ताप - स्रम कहाँ, मिलन की छन-छन अधिक उमाह।
कोसन को मग लगत पैग - भरि, नहिं मंजिल - परवाह ;
का 'बचनेस' नियत थल, चिंता, उनके हाथ निबाह।

CCO, Gurukul Kangri Collection

नागरी-लिपि में सुधार

[श्रीयुत प्रोफ़ेसर धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी]

नागरी-लिपि के संबंध में मुख्यतया तीन विचार-धाराएँ इस समय हैं—

१. नागरी-लिपि सर्वथा वैज्ञानिक है, उसमें परिवर्तन की कोई भी आवश्यकता नहीं। वर्तमान यंत्र-युग में भी इसमें परिवर्तन किए विना ही इसका प्रयोग हो सकता है।

२. वर्तमान वैज्ञानिक युग में छापे आदि की सुविधा की दृष्टि से तथा सुगम और अंतरराष्ट्रीय लिपि होने के कारण रोमन लिपि को ही अपने राष्ट्र की राष्ट्र-लिपि बनाना ठीक है। ऐसा करने से हिंदी-उर्दू का झगड़ा भी न रहेगा। नागरी-लिपि वैज्ञानिक नहीं।

३. नागरी लिपि न तो सर्वथा वैज्ञानिक है, और न सर्वथा अवैज्ञानिक, आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन-सुधार-मात्र कर देने से यही राष्ट्र-लिपि होने के योग्य है। लिपि में पहले भी परिवर्तन होते आए हैं, अतः वर्तमान यंत्र-युग में हम इसमें यदि थोड़ा-सा परिवर्तन करें, तो इसकी उपादेयता बढ़ जायगी। नई लिपि अथवा रोमन लिपि को राष्ट्र-लिपि बनाना ठीक नहीं।

अंतिम विचार लिपि-सुधार-समिति का है। इन तीनो विचारों पर हिंदी की पत्रिकाओं में विद्वानों के लेख प्रकाशित होते रहे हैं। मैं इनमें से तीसरे विचार का समर्थक हूँ।

तीसरे विचार के प्रचारकों और समर्थकों में श्री-काका कालेलकर मुख्य हैं। वही लिपि-सुधार-समिति के संयोजक भी हैं। सुधार-समिति की योजना के विरुद्ध तथा पक्ष में भी कई विद्वानों ने लिखा है। इसके विरोध में लिखे गए एक लेख का उत्तर देना प्रस्तुत लेख का विषय है।

मेरे सम्मुख वैशाख की 'सुधा' है। इसमें श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंहजी का 'मदरास-साहित्य-सम्मेलन के कुछ संस्मरण'-शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। उस पर विचार करने से पूर्व इतना लिखना आवश्यक है कि संभवतः लेख शीघ्रता से लिखा गया है, इसलिये छोटे-से लेख में भी कुछ विरुद्धोक्तियाँ पाठकों को प्रतीत होंगी। ठाकुर साहब प्रथम ही पृष्ठ पर लिखते हैं—"उत्तर-भारतीयों को उत्साहित करने के लिये मैंने एक कविता भी लिखनी प्रारंभ की। और, जब उसकी प्रथम पंक्ति मैंने लिखी, तब मुझे जान पड़ा कि मेरी यह कविता पढ़ते ही उत्तर-भारतीय इतनी संख्या में वहाँ पहुँचेंगे कि स्वागत-समिति को प्रबंध करना मुश्किल हो जायगा। परंतु जब कविता की आगे की पंक्तियाँ अनायास मेरे सामने आईं, तब मैंने क़लम रख दी, और मेरा दिल बैठ गया। वह कविता इस प्रकार आरंभ हुई थी—

मदरास चलो, मदरास चलो;
हिंदी का करने ह्रास चलो।
लिपि का करने उपहास चलो;
व्याकरण का करने नाश चलो।"

कविता की भाषा कैसी है? छंद कौन-सा है? इस पर तो विज्ञ महानुभाव ही विचार करें। मैं तो परस्पर विरोध को दिखलाने बैठा हूँ। पाठक देखेंगे, विद्वान् लेखक ने यहाँ दैवी प्रेरणा से उद्भूत कविता उद्धृत की है। परंतु थोड़ा आगे लिखते हैं—

"किसी देवी-देवता में मेरा विश्वास नहीं। और, प्राचीन संतों एवं कवियों की भाँति मैं यह भी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नहीं मानता कि ईश्वर के अदृश्य हाथ कवि की क़लम पकड़कर उससे जो चाहें लिखवा लेते हैं। कवि दैवी प्रेरणा से लिखता है, और भविष्य-वाणी कर सकता है, यह भी मैं नहीं मानता।"

पिछली कविता यदि खुदा के हाथ की करामात नहीं, तो शैतान की ही करतूत होगी। फिर भी किसी-न-किसी देव की प्रेरणा तो हुई ही। (फ़ारसी में 'देव' का अर्थ शैतान होता है।)

इसी प्रकार ठाकुर साहब एक स्थान पर लिखते हैं—"लिपि-सुधार के मामले में मामूली सुधार ही नहीं, मैं और आगे जाना चाहता हूँ। हम रोमन लिपि को अपनाकर इस झगड़े का सदा के लिये अंत कर दें।"

परंतु इसी लेख में लेखक अन्यत्र लिखते हैं—

"टाइप और प्रिंटिंग का थोड़ा-सा अनुभव मुझे भी है। और, अपने अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि जो परिवर्तन काका साहब ने छपाई की सुविधा के लिहाज़ से किए हैं, वे अनावश्यक हैं। ऐसे परिवर्तन न करके भी हम सुंदर और सब प्रकार की सुविधा-जनक छपाई कर सकते हैं। सिर्फ़ टाइप ढालने की बात है।"

आख़िर हम ठाकुर साहब से पूछते हैं कि काका साहब टाइप और टाइप राइटर की दृष्टि से ही नागरी-लिपि में सुधार करना चाहते हैं। यह सब यदि इसी लिपि में ही हो सकता है, तो नागरी-लिपि में कौन-सा दोष है, जो रोमन लिपि को अपनाने की ज़रूरत है। रोमन लिपि को अंतःप्रांतीय लिपि बनाने का विचार भी दैवी प्रेरणा का फल प्रतीत होता है।

अपने लेख में लिपि-सुधार-समिति की सुधार-योजना के संबंध में ठाकुर साहब लिखते हैं—

"मदरास में स्थायी समिति की जो बैठक हुई, उसमें लिपि का प्रश्न, जहाँ तक सम्मेलन का प्रश्न है, तय हो गया है। हिंदी-अक्षरों से शिरो-रेखाएँ हटा देने और बहुत कुछ गुजराती-अक्षरों का प्रचलित स्वरूप अपना लेने का सम्मेलन ने निश्चय किया है। लिपि-सुधार-समिति के संयोजक श्रीकाका कालेलकर आज अपनी विजय पर गर्व कर सकते हैं। यह कौन देखता है कि १० या १३ सदस्यों की उपस्थिति में ये सब प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं! स्थायी समिति ने उसे पास किया, और जो कुछ हुआ, नियमानुसार। यह काका साहब के संतोष के लिये बहुत है। परंतु जब तक काका साहब इस परिवर्तन की आवश्यकता और उप-योगिता को प्रमाणित नहीं करेंगे, ये प्रस्ताव कोरे प्रस्ताव ही रहेंगे।"

लिपि-सुधार-समिति पर इस प्रकार आलोचना करते हुए लेखक ने मुख्यतया दो आक्षेप किए हैं—

१. वर्तमान शिरोरेखाओं को हटाकर अक्षम्य अपराध किया गया है।

२. गुजराती-अक्षरों का वर्तमान रूप मान लिया है। इन दोनो आक्षेपों के संबंध में विचार करना आवश्यक है। जहाँ तक शिरोरेखा का संबंध है, वह नागरी-अक्षरों का मुख्य भाग नहीं, वह संसार की किसी भी वैज्ञानिकाभास लिपि का भाग नहीं हो सकती। आज भी अनेक व्यक्ति शिरोरेखा के बिना लिखते हैं, परतु उससे लिपि में कोई सदोषता नहीं आ जाती। जहाँ तक मुझे ब्राह्मी लिपि के परिवर्तन-क्रम का ज्ञान है, शिरोरेखा का उसमें कोई भी भाग नहीं। शिरोरेखा का प्रचलन तो सीधी लाइन में लिखने की सुविधा से हुआ है। बहीखातों में तो अब तक भी लिखने से पहले सीधी लाइन खींचकर लाइन के साथ-साथ लिखने का क्रम चलता है। अनभ्यस्त व्यक्ति के ही लिये यह आवश्यक है कि किसी लिपि के सर पर इसे किस प्रकार मढ़ा जा सकता है। जिस व्यक्ति को बिना लाइन के लिखने का अभ्यास हो, उसके

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिये शिरोरेखा आवश्यक कैसे हो सकती है। पहले वर्ण लिखकर पुनः उन पर शिरोरेखा डालना कितना अवैज्ञानिक और आयासप्रद है, इसे विज्ञ पुरुष जान सकते हैं। शिरोरेखा से नागरी-लिपि का सौंदर्य बढ़ता है, यह भी केवल प्रज्ञावाद तथा चक्षुर्दोष है। फिर भी सुधार-समिति ने अपने शिरोरेखा-संबंधी प्रस्ताव में बहुत गुंजाइश रक्खी है। प्रस्ताव इस प्रकार है—

"यह समिति निश्चय करती है कि लिखने में शिरोरेखा लगाना आवश्यक नहीं। छपाई में साधारणतया शिरोरेखा रखना ही नियम रहे, किंतु विशेष स्थानों के अक्षरों की भिन्नता प्रकट करने के हेतु शिरोरेखा-विहीन अक्षर भी प्रयुक्त हो सकते हैं। इस समिति की सिफ़ारिश है कि विशेषकर छोटे अक्षरों में, जहाँ शिरोरेखा देने से छपाई की स्पष्टता में कमी आ जाती हो, शिरोरेखा-विहीन अक्षरों का प्रयोग करना अच्छा होगा।"

प्रस्ताव स्पष्ट है।

शिरोरेखा हटा देने के साथ कुछ लोग नागरी-लिपि-मंदिर की छत उड़ा देने की उपमा देते हैं। हमारा उनसे निवेदन है कि केवल दृष्टांत से साध्य की सिद्धि तो हो नहीं सकती। शिरोरेखा छत है अथवा व्यर्थ का बोझ, इसमें कौन-सा सत्य है, इसका निर्णय भिन्न दृष्टि से ही होगा। और, फिर जो लोग इसे छत ही समझते हैं, उन्हें इसके प्रयोग का अधिकार भी समिति ने उपर्युक्त प्रस्ताव में दिया है। नागरी-लिपि-युवती का सौभाग्य केवल शिरोरेखा से ही सुरक्षित न रहेगा। वर्तमान स्वतंत्रता के युग में हम लिपि-सुंदरी को शिरोरेखा के घूँघट में बंद रखने के विरोधी हैं।

लिपि-सुधार-समिति पर दूसरा आरोप है गुजराती-लिपि का पक्षपात। हमने लिपि-सुधार समिति के सदस्यों की नामावली देखी, तो यह भ्रम भी निराधार प्रतीत हुआ।

प्रयाग में हुई ता० ४, ५ एप्रिल, १९३६ की बैठक में ही समिति ने लिपि-सुधार-संबंधी योजना स्वीकार की है। उस बैठक में सदस्य तथा विशेष रूप से निमंत्रित व्यक्ति निम्न लिखित प्रकार से थे—

१. श्रीकाका कालेलकर (महाराष्ट्र)
२. डॉ० बाबूराम सकसेना (इलाहाबाद)
३. श्रीशंकरराव दाते (पूना)
४. श्रीयशवंतराव दाते (पूना)
५. डॉ० लक्ष्मणस्वरूप (लाहौर)
६. प्रो० रघुवीरजी (लाहौर)
७. बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन (प्रयाग)

विशेष निमंत्रित—

१. श्रीमुकुंददास गुप्त प्रभाकर (बनारस)
२. बैरिस्टर रणजीत पंडित (प्रयाग)
३. श्रीकेदारनाथजी (बनारस)
४. श्रीबाबा राघवदासजी (बरहज)

संयोग वश उपर्युक्त महानुभावों में एक भी गुजराती सज्जन नहीं। इसका यह अर्थ नहीं कि यदि कोई गुजराती सदस्य होते, तो वे अवश्य गुजराती-लिपि का पक्षपात करते। हमें किसी भी राष्ट्रीय कार्यकर्ता की नीयत पर संदेह करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार का अविश्वास और संकीर्ण दृष्टि जब तक देश में रहेगी, तब तक देश का कल्याण न होगा।

श्रीठाकुर साहब ने लिपि-समिति से असंतुष्ट होकर उपर्युक्त शब्द लिखे हैं, अतः भाषा में भी कुछ कटुता आ गई है। देखना चाहिए कि सुधार-समिति ने जो योजना बनाई है, और जिसे अब हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति ने भी स्वीकार कर लिया है, उसका उद्देश्य क्या है? सुधार की रूप-रेखा क्या है? मुख्य परिवर्तन किस प्रकार के किए गए हैं? लिपि-सुधार-समिति के संयोजक श्रीकाका साहब के साथ मेरा पत्र-व्यवहार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होता रहा है। मौखिक बातचीत भी हुई है। मुझे समिति की योजना मुख्यतया पसंद है। लिपि-सुधार का उद्देश्य क्या है? इसका स्पष्टीकरण श्रीकाका साहब के २५।६।३६ को मुझे लिखे पत्र के निम्न-लिखित शब्दों से होता है—

"लिपि-सुधार में एक उद्देश्य यह है कि लिपि पठन-सुलभ और लेखन-सुलभ तथा वैज्ञानिक होने के उपरांत मुद्रण-सुलभ तथा मुद्रा-लेखन (Typewriting)-सुलभ भी हो। और भी—

"भारत की सब देशी भाषाएँ जिन उच्चारणों को काम में लाती हैं, उनकी व्यवस्था करना और उनके नागरी रूप निश्चित कर देना, यही लिपि-समिति का क्षेत्र है। तो भी हमें स्थूल रूप बताकर ही संतोष मान लेना चाहिए। सूक्ष्म वैज्ञानिकता तक जाने के लिये जनता तैयार नहीं। शायद उसकी आवश्यकता भी नहीं।"

नागरी-लिपि वैज्ञानिक है, अतः इसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता नहीं, ऐसा बहुत कहा जाता है। मैं मानता हूँ, यह बहुत हद तक ठीक है; परंतु सर्वथा ठीक नहीं। नागरी में व्यंजन से पूर्व जो ह्रस्व इकार 'ि' की मात्रा लिखी जाती है, वह उच्चारण के विरुद्ध है, अवैज्ञानिक है। 'जिस', 'किस' आदि पदों में उच्चारण के क्रम से 'ज', 'क' आदि की ध्वनि प्रथम और इकार की ध्वनि पश्चात् होती है, परतु लिपि में इसके विपरीत इकार का द्योतक चिह्न 'ि' प्रथम ही लिखा जाता है। ध्वनि-शास्त्र के सिद्धांतानुसार इसका उच्चारण 'इज्स', 'इक्स' इस प्रकार होना चाहिए। मुझसे तो एक बार एक बहन ने नागरी-लिपि सीखते हुए ऐसा प्रश्न किया था। मैं उसका समाधान करने में अशक्त था। समिति ने इस संबंध में प्रस्ताव किया है—

प्रस्ताव नं० २—ह्रस्व इ की मात्रा वर्ण के उपरांत लिखी जाय, और उसका स्वरूप 'ि' इस प्रकार हो। इसी प्रस्ताव में और वर्णों को भी उच्चारण-क्रम से लिखने का समर्थन किया है।

नागरी-लिपि के वर्तमान रूप में एक और भी मुख्य परिवर्तन समिति ने किया है। वह है 'अ' के बाद सब स्वरों की मात्राएँ लगाने का। समिति का प्रस्ताव यों है—

"स्वरों और मात्राओं में सामंजस्य स्थापित करने के लिये इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ के वर्तमान रूप छोड़कर केवल 'अ' में ही इन स्वरों की मात्राएँ लगाकर इन स्वरों के मूल-स्वरूप का बोध कराया जाय। 'अ' की बाराखड़ी की जाय, जैसे अि अी अु अू अृ अे अै ओ औ।"

इस प्रस्ताव पर भी नाराज़ होने की गुंजाइश नहीं। वर्तमान लिपि में भी इस सिद्धांत को 'ओ' और 'औ' में स्वीकार किया ही हुआ है। आज भी हम 'अ' के बाद 'ो' यह ओकार का चिह्न लगाकर और 'अ' के बाद 'ौ' यह औकार का चिह्न लगाकर 'ओ' और 'औ' के रूप बनाते ही हैं, तब और स्वरों में इसके प्रयोग करने में नूतनता कैसी?

मेरे मित्र श्रीनरदेवजी शास्त्री ने एक दिन मुझसे कहा—"यदि अब 'अ' के पीछे 'इ' का चिह्न लगाने से 'अि' रूप बनेगा, तब तो संस्कृत-व्याकरण के नियमानुसार 'अ' और 'इ' को मिलकर 'ए' हो जाना चाहिए।" मैंने उनको यह उत्तर दिया—"इस प्रकार तो 'ओ' और 'औ' के रूप भी ठीक नहीं, क्योंकि आपके कथनानुसार 'अ' और 'ओ' मिलकर 'औ' हो जाना चाहिए।" इस प्रकार विचार करने से प्रतीत होगा कि इसमें कोई नूतनता नहीं, आराम बहुत है। यदि हमें अपनी लिपि को राष्ट्र-लिपि बनाना है, तो उसे सुगम बनाना होगा। इ ई उ ऊ ऋ के सीखने में बच्चे को कितना कष्ट होता है, इसका अनु-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भव पढ़ने-पढ़ानेवाले सभी को होता है। सुधरी लिपि में अब उनको केवल 'अ' का लिखना ही सीखना पर्याप्त है।

नागरी-लिपि में इस समय संयुक्ताक्षरों के लिखने का भी एक रूप नहीं। नागरी-लिपि की कठिनता के कारणों में यह भी एक है। समिति ने इस संबंध में निश्चय किया है कि जिन अक्षरों में पाई है, उनकी पाई हटा देने से संयुक्त रूप समझा जाय—जैसे तप्त। दूसरे अक्षरों में भी ⌣ इस संयोजक चिह्न द्वारा यह कार्य लिया जाय। इस प्रस्ताव में नूतनता कुछ भी नहीं, केवल सामंजस्य करना अभिप्रेत है।

कुछ वर्ण विभिन्न-रूप से लिखे जाते हैं—जैसे 'ञ' 'झ' 'ल' 'ल' 'अ' 'अ' आदि। इनका भी एक स्वरूप समिति ने निश्चित कर दिया है, इसमें विप्रतिपत्ति किसी को भी नहीं हो सकती। आखिर लिपि का एक रूप तो होना ही चाहिए। आज बंबइया और कलकतिया दो टाइप चलते हैं, कल कोई तीसरा और भेद चल पड़े। नई लिपि सीखनेवाले के लिये तो यह बोझ असह्य है। अंकों के रूप भी इसी प्रकार समिति ने निश्चित कर दिए हैं।

वर्तमान नागरी-लिपि में रेफ के अनेक रूप चलते हैं। 'प्रचार' में रेफ़ का एक रूप है, 'घर' में और। 'धर्म' में वह ऊपर चढ़ जाता है। समिति ने रेफ का 'र' यही रूप सर्वत्र प्रयुक्त करने की सिफ़ारिश की है। संयुक्तावस्था में संयोजक चिह्न द्वारा और वर्णों की तरह कार्य लिया जायगा।

समिति ने 'क्ष' 'त्र' के वर्तमान रूप उड़ा दिए हैं, 'क्ष' 'त्र' इस प्रकार संयुक्ताक्षर के रूप में ही लिखने की सिफ़ारिश की है। 'ज्ञ' का उच्चारण विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार से होता है, अतः इसका प्रचलित रूप ही रहने दिया है।

शिरोरेखा हटा देने के कारण 'घ ध भ म' में भेद करने के लिये ध भ को सिरे पर मोड़कर लिखने की सिफ़ारिश की है।

ख और र व में भेद ज्ञात कराने के लिये समिति ने 'ख' के दो रूपों की सिफ़ारिश की है—प के बीच में उल्टी पाई डाल देने की, 'ष'। अथवा गुजराती 'थ्य' का रूप स्वीकार कर लेने की।

संक्षेप से यही सुधार-समिति की योजना है।

ठाकुर साहब के एक आक्षेप का समाधान करके मैं लेख समाप्त करूँगा। अपने लेख में श्रीनाथसिंहजी ठाकुर साहब लिखते हैं—

"काका साहब ने जो लिपि तैयार की है, वह भी कितनी अपूर्ण है, इसका पता इसी एक बात से चलता है कि लेडी रमन ने तेलगू का एक शब्द कहा और उन्हें चैलेंज दिया कि वह उसे अपनी लिपि में लिख दें। कहना न होगा कि काका साहब निरुत्तर थे।"

एक तो ठाकुर साहब ऊपर नागरी लिपि की प्रशंसा करते हैं, और उसमें थोड़ा भी परिवर्तन करने के विरोधी हैं, और दूसरी ओर उसकी अपूर्णता द्योतित करते हैं। काका साहब ने तो केवल थोड़ा-सा लिखने-भर में परिवर्तन किया है, लिपि तो वही है। ठाकुर साहब ने वह शब्द लिखा नहीं। वह अपनी ही मानी हुई लिपि में उसे लिख देते। संसार की भाषाओं में विभिन्न देशों में जो उच्चारणों के भेद हैं, उनको किसी भी लिपि में पूरी तरह से नहीं लिखा जा सकता। मुल्तान-प्रांत में वर्ग के तीसरे अक्षरों के उच्चारण का जो क्रम है, उसे कोई भी लिपि व्यक्त नहीं कर सकती। देखना यह है कि नागरी-लिपि आवश्यक ध्वनियों को व्यक्त कर सकती है या नहीं। मेरा विचार है, सुधार-समिति द्वारा प्रस्तावित लिपि में यह गुण है। यदि ठाकुर साहब समिति की योजना को उसके उद्देश्य के प्रकाश में देखेंगे, तो वह भी इसका विरोध न करेंगे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक सच्ची कहानी

[प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए०]

(१)

बड़े दिनों की छुट्टियों में मुझे एक शक्कर-फ़ैक्टरी देखने का आमंत्रण मिला। मेरे एक निकट-संबंधी फ़ैक्टरी के एक उच्च पदाधिकारी हैं। नगर के कोलाहल और भड़भड़ाहट के स्थान में मशीनों की सीटी और घड़घड़ाहट का विनिमय बड़े दिनों के छोटे दिनों को काटने के लिये सहसा स्वीकार करने की वस्तु न थी। मैं गाँवों की उड़सी हुई बस्ती और प्रोषित आवासों को देखना चाहता था। अभिभावकों से वंचित बड़े-बड़े मकान, रहने-वालों से सूनी ऊँची-ऊँची अट्टा-लिकाएँ, किसानों से सूने खेत, पशुओं से सूने घोष तथा पक्षियों से तिरस्कृत बसेरे मुझे बहुत कुछ सिखाया करते हैं। भारतीय गाँवों का यह इतिहास चितना और

प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए०

भावना एक साथ उत्पन्न कर देता है। फ़ैक्टरी भी एक गाँव में ही है, अतएव वहाँ जाने के विचार ने भी परोक्ष स्वीकृति प्राप्त कर ली। मिटने पर भी स्वाभिमानी व्यक्तियों के आचरण की भाँति खँडहरों में तनी हुई कच्ची दीवारें थोड़ी वृष्टि के संसर्ग से कैसी सोंधी-सोंधी सुगंध फैलाती हैं, यह मेरी नाक तक पहुँचने लगा। निसर्ग की लजीली महक ने मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया। फ़ैक्टरी पहुँचकर एक पक्के बँगले में रहना पड़ा। गाँव यहाँ से काफ़ी दूर था। सौंरे और रस की मोटी सड़ाइँध ने एक मील की दूरी से फ़ैक्टरी को घेर रक्खा था। सोंधी महक का कहीं पता भी न था।

नगर का कोलाहल रात को सोने का प्रयास करता है; फ़ैक्टरी का भीषण रव रात्रि को और वेग से सुन पड़ता है। नगर के तुमुल में विभिन्नता का स्वाद है, फ़ैक्टरी के घोष में एक-सी ही

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आवृत्ति की थकावट । समय काटना दूभर हो गया। रेलगाड़ी में लोग समाचार-पत्रों के विज्ञापन तक चाट जाते हैं। मैंने भी छोटी-छोटी साधारण वस्तुओं को खूब बढ़ा-बढ़ाकर देखा। फ़ैक्टरी का निरीक्षण वास्तव में उलझा लेनेवाला था।

संपूर्ण फ़ैक्टरी यंत्र प्रलय-यंत्र का सांग रूपक था। गाड़ीवान साक्षात् यमदूत थे। गन्नों को प्राणियों की भाँति लाद-लादकर महामृत्यु के मुख में पहुँचाते थे। बीस गज़ से गन्ने स्वतः खिंचे चले आते थे। सैकड़ों लगी हुई आवर्तनशील छुरियाँ पहले गन्नों को काट-काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देती थीं। आगे चलकर एक के बाद एक को, तीन बेलनों में पिसकर, निर्जीव हो जाना पड़ता था। छिन्न-भिन्न शरीर एक मार्ग से होकर अग्नि के अर्पण होता था, और दूसरे मार्ग से सरस आत्मा तपश्चर्या के विभिन्न सोपानों पर बलि होती हुई असली रूप प्राप्त करती थी। फ़ैक्टरी के सारे यंत्रों को एक ही केंद्र से प्राण मिलते हैं, एक ही शक्ति रस को दौड़ाती है, ट्रिपुल या क्वाड्रुपुल को चलाती है, पैन में रस को पकाती है, सीरे को गाढ़ा करती है, दानों में सफ़ेदी लाती है, उन्हें सुखाती और शक्कर-गोदाम पहुँचाती है। बड़े बड़े, लंबे-लंबे पहिए सूर्य और चंद्रमा की तरह चक्कर लगाते हैं। छोटी-छोटी रीलें न-मालूम कितनी संख्या में, आकाश के नक्षत्रों की भाँति, अपने स्थानों पर आवर्तन किया करती हैं। थोड़ी सी भी असावधानी फ़ैक्टरी को जाम कर देती है। एक अजीब कोलाहल रहता है। कहीं लोग भाप की कमी की शिकायत करते हैं, कहीं अधिक चूना मिलाने पर गंधक-निरीक्षक डाटा जाता है, कभी आधी रात को प्रधान इंजीनियर बुलाया जाता है, और कभी ३ बजे के कड़कड़ाते हुए जाड़े में शुगर-टेकनॉलोनिस्ट तलब किए जाते हैं। मिल-मालिकों का ध्यान चौबीसो घंटे धनोपार्जन पर रहता है, और अधिकारियों का ध्यान अपने नाम की ओर। वैसे सब वेतन-भोगियों का एक ही ध्यान है, एक ही तत्परता है, और एक ही लगाव है। मशीनें भी चलती हैं, और लोग भी चलते हैं। मशीनें निर्जीव होती हुई भी सजीव हैं, और कर्मचारी सजीव होते हुए भी निर्जीव। इस व्यापार में केवल मेरा ही मन अनासक्त था। एक-दो दिन के लिये मैंने आसक्ति पैदा की, परंतु फिर अखरने लगा।

(२)

एक विचित्र बात थी। सवेरा हुआ नहीं, अरुण-शिखा के बोलने के पूर्व ही, गाने की बड़ी मधुर और करुणा-भरी टीप स्वप्नों को भुलाती हुई मुझे सजग कर देती थी। गाने का पहला ही पद समझ में आता था। उसका पहला शब्द कई परिवर्तनों में सुनाई पड़ता था —

'सजनि ! मोर साईं कहाँ गए ?' 'राम ! मोर साईं कहाँ गए ?' 'माई ! मोर साईं कहाँ गए ?'

फ़ैक्टरी के कुछ पुराने निवास-स्थान थे, उनकी छतें गिर गई थीं ; परंतु दीवारें अब भी खड़ी थीं। उन्हीं में से एक कोठरी में एक अधेड़ युवती रात में आकर रहा करती थी। उसके पास ओढ़ने को पर्याप्त न था, परंतु वह इसी खुले स्थान पर अर्ध-नग्ना पड़ी रहती थी। वह विक्षिप्त थी, और वायु की भाँति उसकी गति-विधि अनिश्चित थी।

प्रातःकाल हुआ नहीं कि उसने यह टीप अलापी। मुझे इस रमणी का इतिहास जानने की बलवती इच्छा हुई। मैंने दो दिन उसका गाना सुना होगा। तीसरे दिन मैं देखने के लिये निकला। मुझे देखकर वह थोड़ा तनकर खड़ी हो गई। उसके नेत्रों में बड़ा उन्माद था। उसने झट से पृथ्वी पर सिर टेका, और सजल नेत्रों से फिर एक बार गा उठी—'मैया ! मोर साईं कहाँ गए ?' आँसू झरने लगे। मैं सामने खड़ा हूँ, यह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वह भूल गई। फिर वह दौड़कर हहराते हुए पीपल के वृक्ष से चिपक गई। 'रूख ! मोर बाबू कहाँ गए ?' मैं चकित-सा रह गया। वह वेग से रो रही थी। हिचकियाँ बँधी थीं। थोड़ी ही देर बाद किसी झटके से वह वहाँ से एकदम भागी, और बहुत दूर तक भागती ही चली गई। मैं वहीं खड़ा रह गया।

लोगों से इस असाधारण स्त्री के विषय में पूछ-ताछ की ; परंतु हरएक की कहानी अलग-अलग थी। किसी से मुझे परितोष न मिला। अंत में एक इंजीनियर साहब एक दिन पकड़ आए। उन्होंने पहले तो मेरी जिज्ञासा की हँसी उड़ाई, और फिर सोचते, भूलते और स्मरण करते हुए कुछ कहने लगे। किसी एक अकेली परिस्थिति की झलक को तथ्य के स्वरूपों में लिखना—उसके आस-पास के विवरण के अभाव में उसे अभिव्यक्त करना—उसे इंद्रलोक बना देना और रहस्यवाद लिखने का प्रयास करना है। नीचे की उनकी कही हुई कहानी थोड़ी-बहुत उसी प्रकार की है। उन्होंने कहना आरंभ किया—

"महेश और मैं एक ही साथ पढ़ता था। मैं निर्धन था, और महेश धनी। परंतु लक्ष्मी उसके पिता के सिर पर कलियुग बनकर रहने का साहस कभी न कर सकी, वह पैर के पास जूती बनी थी। उन्होंने धन की कोई परवा न की। वह दान देकर, दूसरों को धनी बनाकर स्वयं रिक्त हो गए। उनके पास केवल ख्याति रह गई, लक्ष्मी चली गई, उनके गौरव का बोझ उनके उन्नत भाल पर काँटे के ताज की भाँति उनका उपहास करता था।

"पिता मर गए, घर में धनाभाव होने के कारण महेश भागा। मैं भी उसी के साथ भागा। हम दोनो ने इसी फ़ैक्टरी में क़ुली बनकर अपना जीवन आरंभ किया। महेश का कार्य-समय रात्रि का था, और मेरा दिन का। मिल में मजूरी करते समय ही महेश की और इस स्त्री की भेंट हुई थी। इस पगली स्त्री का नाम बल्लो था।

"बड़ी ठिठुरन थी। फ़ैक्टरी के भीतर पसीना चलता था, और बाहर हड्डियाँ गली जाती थीं। भीतरी सेवकों को मशीनें गरम करती थीं। बाहरी सेवक अपने परिश्रम से अपने को गरम करने का प्रयास कर रहे थे। महेश और बल्लो इसी सिकुड़न में गन्ने के बोझ उठा-उठाकर मशीन के चलते-फिरते डोंगे पर रखते थे। गन्ने उठाते समय बल्लो के हाथों में महेश का हाथ पड़ जाता था। उसमें बड़ी गरमी थी। वह उसे बड़ी देर तक पकड़े रहती थी। पहले एक-दो बार बोझ शीघ्रता से फेंक दिए जाते थे ; फिर हाथ मिले रहें, इससे बोझ पहुँचाने में देर हो जाने लगी। परंतु यह देर बल्लो की ओर से होती थी। महेश पर कोई विशेष प्रभाव न पड़ता था।

"लोग यह प्रतिदिन देखते थे कि बल्लो बोझा ढोने के लिये महेश को ही अपना साथी बताती थी। बल्लो का पति भी क़ुली था। उसे कभी-कभी यह बात पसंद न आती थी। परंतु एक सुंदर, गोरे मनुष्य से, जिससे मिल-मालिकों का विशेष अनुराग था, और जिससे वे अँगरेज़ी में भी कभी-कभी बातें किया करते थे, ग़रीब मजूर कैसे झगड़ा पैदा करने का साहस कर सकता। अकेले में दबी ज़बान से बल्लो को समझाने का यत्न करता था। बीस वर्ष की अल्हड़ युवती रोने लगती, सब मामला दब जाता।

"बल्लो के मन में प्रतिदिन के व्यापार का विकार पैर में मैल की भाँति जमता गया। उसकी मति जब उसे धिक्कारती, पैर का मैल रगड़ जाता था। परंतु रगड़कर साफ़ किए हुए स्थान पर ही मैल शीघ्रता से फिर जमता है। महेश के प्रति चिक-नाहट फिर एकत्र होने लगती थी। महेश निर्दोष था, उसे इस युवती के लिये कोई विशेष लगाव

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

न था। बल्लो वैसे तो मूर्ख थी, परंतु स्त्रियों की सहज कमज़ोरियाँ उसमें सब उपस्थित थीं। महेश में वह प्रत्युत्तरशील तथ्य ढूँढ़ती थी, परंतु उसके चिपकाव को हिलगाने के लिये कोई आलंबन न था, हाथों के मेल के आगे महेश की ओर से कुछ भी न बढ़ा। बल्लो बहुत आगे बढ़ गई।

"एक दिन बल्लो का पति गन्ने लेने गाँव गया। बल्लो अवकाश ढूँढ़कर महेश की कोठरी में चली आई। महेश कुछ समझ न सका। उसने बल्लो से कहा—'काहे री बलुय्या, कैसे आई?'

"बल्लो चुप थी। हाथ मिलने की परिस्थिति न थी। आँख मिलाने का बल्लो में साहस न था। वह थोड़ी देर बाद चल दी।

"महेश ने मादकता देख ली थी। उसमें भी जवानी ने झनझनाहट पैदा की। अब रात में हाथ मिलने के व्यापार में वह भी सहयोग करता था, और गन्नों के गट्ठे पहुँचाने में उसकी ओर से भी देर होती थी।

"बल्लो के पति ने एक दिन बल्लो और महेश के व्यापार में कोई अनधिकार आवेग देखा। उसने इसका काफ़ी विज्ञापन किया। महेश ने अपमानित अनुभव किया, और बल्लो की वायु तक से बचने का प्रण किया। अवकाश पाकर उसने बल्लो से भी कह दिया—'देख, तेरा आदमी मुझे बदनाम करता है। जब तक वह मौजूद है, मैं तुझसे नहीं बोल सकता।'

"बल्लो फूट-फूटकर रोने लगी।"

कथा का इतना भाग कहने पर वक्ता मेरे मुँह की ओर देखने लगा। मेरी जिज्ञासा और तीव्र थी। मुझे तत्परता थी कि बिना नमक-मिर्च लगाए कथा समाप्त कर दी जाय। इस अधीरता को समझकर इंजीनियर बाबू ने कथा फिर आरंभ कर दी—

"फ़ैक्टरी में एक दिन बड़ा कोलाहल था। बल्लो को पुलिस पकड़े हुए थी। वह फूट-फूटकर रो रही थी। पास उसके पति की लाश थी। पुलिस का जत्था जिस समय महेश की कोठरी की ओर से निकला, बल्लो विस्फारित नेत्र से कुछ घूरती हुई, सिसकती चली जा रही थी। लोग पति की हत्या करनेवाली को अपशब्द बक रहे थे। स्त्रियों के चरित्र की आलोचना हो रही थी। महेश काँपता हुआ भीतर पड़ा था। वह पुलिस की प्रतीक्षा कर रहा था।

"बल्लो ने जिस वीरता से घृणित हत्या की थी, उससे अधिक साहस से उसने पुलिस के अत्याचारों का मुक़ाबिला किया। हत्या का दोष स्वीकार करने पर भी उसने हत्या का रहस्य छिपा रक्खा। जज के समक्ष कोई विशेष कठिनाई न हुई। बल्लो को फाँसी का दंड दिया गया। अपराध स्वीकार था। महेश बच जाने पर प्रसन्न था। किसी बयान में उसकी चर्चा तक न आई। बल्लो के प्रति रहा-सहा स्नेह भी समाप्त हो गया। परंतु उसे अपने कमज़ोर हृदय पर यह विश्वास न था कि बल्लो की फाँसी के समय वह धक्के को सँभाल सकेगा। जहाँ वह एक ओर बखेड़ा पैदा करने के कारण पहले बल्लो से बड़ा रुष्ट था, और उसकी फाँसी के समाचार से संतुष्ट था कि हत्यारी स्त्री से हमेशा का संबंध छूटा, वहाँ दूसरी ओर उसके साहस और अपने को साफ़ बचा देने की शक्ति के कारण उसकी ओर आकृष्ट भी था।

"फाँसी के समाचार में सहसा परिवर्तन सुनाई दिया। हाईकोर्ट द्वारा किसी सबूत की किसी कमी के कारण फाँसी की आज्ञा रद्द करके दस वर्ष सपरिश्रम कारावास में परिवर्तित कर दी गई। कहते हैं, बल्लो इससे प्रसन्न न थी। अवधि बिताने के लिये वह बनारस-सेंट्रल जेल भेज दी गई।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"धीरे-धीरे पाँच वर्ष कट गए। बल्लो केवल एक ही रूप को जगाए रही। उसने कई चिट्ठियाँ महेश बाबू को जेल से लिखीं। उन सबमें भेंट करने की बलवती आकांक्षा थी। महेश ने कोई उत्तर न दिया, और न भेंट करने ही गए। चिट्ठियाँ बंद हो गईं।

"अब महेश का ताप बढ़ा। अग्नि सुलगी और बढ़ने लगी। 'उसने यह सब मेरे लिये किया। अब भी उसका इतना दृढ़ प्रेम! मैं चिट्ठी भी नहीं भेजता। भेंट कर लेने में मेरी हानि ही क्या है?' इत्यादि भावनाएँ अब महेश को स्पष्ट सताने लगीं। वह अब क़ुली न था। इतने अरसे में वह क़ुली से मेट, मेट से सुपरवाइज़र, सुपरवाइज़र से पैनमैन और पैनमैन से केमिस्ट हो गया था। मैं भी इंजीनियर बन गया था। दो छोटे-से बँगलों में हम आमने-सामने रहते थे। महेश अब प्रतिदिन बल्लो के ही विषय में मुझसे बातचीत करता था। मेरा विश्वास दृढ़ हो गया कि महेश का अनुराग बल्लो की ओर बहुत बढ़ता जा रहा है। उसकी बातों में अब यह विवाद रहा करता था कि बल्लो से प्रेम करना पाप तो नहीं है। मुझे आश्चर्य होता था कि प्रेम का अंकुर निकलते-निकलते महेश इतना गंभीर, इतना ज्ञानी और तर्कशील, इतना सच्चा और ईमानदार तथा इतना महान् कैसे हो गया है। मैं अपने और उसमें महान् अंतर देखता था।"

(३)

कथा काफ़ी बढ़ गई। बाबू का व्यक्तित्व उसमें अधिक सनता चला जाता था। उसके कहने में उसी प्रकार वेग और प्रवाह बढ़ता जाता था। उसने एक नोटबुक निकाली। मैंने समझा, कोई भूली हुई बात उसमें देखेगा, अथवा महेश या बल्लो के चित्र दिखावेगा। नोटबुक खोलने में देर हुई। इतने में अधीर होकर पूछने लगा—

"क्यों भाई, अब महेश कहाँ है?"

"'थोड़ा शांत रहिए, आपको अभी सब मालूम हो जायगा।' बाबू ने उत्तर दिया। बाबू इतना कहकर प्रसंग को आगे बढ़ाने लगा—

"एक दिन प्रातःकाल ही महेश ने मुझे बुला भेजा। उत्तम पुरुष की अधिकार-पूर्ण शैली में प्रेम पर महेश ने मुझे व्याख्यान देना आरंभ कर दिया। मैं तो मंत्र-मुग्ध-सा रह गया। उसकी आकृति में बड़ी आध्यात्मिकता थी। अपने घर आकर उसके व्याख्यान के कुछ वाक्य स्मरण करके लिखे थे।"

ऐसा कहकर नोटबुक से बाबू कुछ पढ़ने लगा।

"शरीर की रग-रग जिसके लिये मचले; प्रत्येक अवयव में जिसके लिये ऐंठन उत्पन्न हो जाय; व्याकुलता अधीरता की मीड़ पर खड़ी होकर मोहिनी शिथिलता का आलिंगन करे; विह्वलता चेतना को क्षण क्षण मसला करे, यह सब जिसके लिये हो, वही तो सच्चा आराध्य है, वही सच्चा स्वामी और वही सच्ची प्रियतमा है। समूचे शरीर-प्रासाद का ज्वालामुखी-प्रकंपन उसी के लिये होता है। यह विचार पवित्र है! पवित्र है!! पवित्र है!!!

"यही प्रेम दैवाभिमुखी है। यही दैवी है।

हक़ीक़त खुल गई, इश्क़े-
मजाज़ी जब किया हमने;
उसी को वस्ले-हक़ होगा,
जिसे वस्ले - बुताँ होगा।

प्रेम में अपवित्रता है ही नहीं। जो मानवीय प्रेम का रहस्य नहीं जानता, वह आध्यात्मिक प्रेम का अधिकारी नहीं। जो निकट के स्फुलिंग को फूँककर तापना नहीं जानता, वह महान् अग्नि के असीम रूप के निकट बैठकर तापने का अधिकारी नहीं। मानव-प्रेम की भूमिका के बिना आध्यात्मिक प्रेम केवल मन बहलाने की वस्तु है।"

नोटबुक में कुछ और भी लिखा था, परंतु बाबू उसे पढ़ न सका। मुझे इस व्याख्यान के स्थान में कथा सुनने की अधिक रुचि थी। मैंने पूछा, फिर क्या हुआ? बाबू कहने लगा—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"मुझे दूसरे रोज़ पता चला कि महेश तीन दिन की छुट्टी लेकर काशी गया है। मैं समझ गया कि कदाचित् वह बल्लो से भेंट करने गया होगा। आने पर पता चला कि वह इसीलिये गया था।

"वह नई अधीरता, नया वेग और नया उन्माद लेकर आया। रात दिन बल्लो की ही बात करता था। प्रत्येक तीसरे महीने वह भेंट करने जाता था। बल्लो भी अपने प्राणधन के लिये उत्सर्ग थी। वह उस क्षण के लिये स्वप्निल थी, जब वह सुख-पूर्वक महेश के साथ जीवन व्यतीत करेगी।

"वह भी दिन आया। केमिस्ट महेश का आवास चार दिनों से साफ़ हो रहा था। किसी को कोई रहस्य ज्ञात न था। अंतिम दिन आया। सफ़ाई कुछ धीमी पड़ गई थी। महेश को सवेरे से हैज़ा हो गया था। फ़ैक्टरी-डॉक्टर की सहायता के लिये निकट के नगर से भी डॉक्टर आए थे। बड़ी औषधियाँ हुईं। सुइयों ने हैज़े को नाथकर निकालना चाहा, परंतु हैज़ा प्राणों को साथ लेकर निकला।

"बहती हुई सई-नदी के किनारे चिता लगी। बूढ़ी माता भी रोने के लिये आ गई थीं। साहबी टोपी उतारे हुए मिल के साहब एकत्र थे। सब लोग महेश के मृदुल स्वभाव की प्रशंसा कर रहे थे। उतने में बाईं ओर कगार से झम्म से गिरती हुई किसी वस्तु का शब्द सुन पड़ा। थोड़ी दूर बहती और डूबती हुई एक रमणी के बाल दिखाई दिए। कुछ लोगों ने कहा, कदाचित् यह महेश की बहन है। क्वार्टर से अभी दौड़ती हुई उसे पूछती आ रही थी। जलते हुए भाई को देखकर वह नदी में कूद पड़ी। किसी ने कहा, नहीं, उसका पैर कगार से फिसल गया है। परंतु कुछ निश्चय न हुआ कि वह कौन है। सब लोगों में उसे उबारने की तत्परता हुई। तैराक कूदे, और थोड़ी देर में फटे-सिरवाली, रक्त से लथ-पथ एक रमणी किनारे लाकर रख दी गई। डॉक्टरों ने पानी निकालकर मरहम-पट्टी की। जिनकी सुइयाँ सफल न हुई थीं, उनकी मरहम-पट्टी सफल हो गई। रमणी को होश आया। फटी थैली चोर से छिन आई, और वह सिलकर फिर ठीक कर ली गई, परंतु उसका धन पहले ही ग़ायब हो चुका था।

"'तुम कौन हो?' एक साहब ने पूछा। उसने आँखें खोलकर दर्द-भरी दृष्टि इधर-उधर फेंकी। नेत्र बंद कर लिए। किसी ने फिर पूछा—'तुम कौन हो?' उसने फिर देखा। वह एक बार धीरे से बोली—'मुझे जाननेवाला यहाँ एक ही था, और उसे तुमने मुझसे बिना पूछे जला दिया। हत्यारो, हट जाओ।'

"मुझे ऐसा ज्ञान हुआ कि मैं उसे पहचान गया। परंतु उसके इतिहास को किससे बताता। रमणी अच्छी हो गई, परंतु उसके मस्तिष्क की व्यवस्था न लौटी।

"इधर कई वर्ष हो गए हैं। अब महेश का क्वार्टर भी गिर गया है। बल्लो दिन-भर चाहे जहाँ रहे, और माँगे-खाए, परंतु रात को उसी में सोती है। उसकी चीख़ में यही गान निकलता है। यदि वह पागल न हो गई होती, तो कदाचित् इतनी गहरी ठेस सँभाल न सकती।"

इस कारुणिक कहानी को सुनकर अजीब हालत हो गई।

चलते-चलते बाबू ने फिर कहा—"पंडितजी, यह आज तक पता न लगा कि बल्लो का पैर फिसल गया था, या वह नदी में स्वयं कूदी थी, और वह सिर की चोट से पागल हो गई अथवा दिल की।"

इतने में बल्लो के गाने की टीप सुनाई दी। मैं खड़ा हो गया। कहानी सच्ची थी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

महाकवि कालिदास तथा गोस्वामी तुलसीदास का शृंगार-वर्णन

[श्रीयुत व्योहार राजेंद्रसिंह एम्० एल्० ए०]

महाकवि कालिदास के प्रत्येक ग्रंथ में शृंगार-रस की प्रधानता है। प्रत्येक अवसर पर कवि को सदा शृंगार-वर्णन की सूझती है, किसी भी वर्णन में वह अपनी रसिकता का प्रयोग किए बिना नहीं रहते। क्या युद्ध-वर्णन में, क्या सौंदर्य-वर्णन में, सभी जगह वह अपनी प्राकृतिक शृंगार-प्रियता का परिचय देते हैं। कालिदास ने ऐसे समय में जन्म लिया था, जब देश में चारो ओर विलासिता फैली हुई थी। ऐसे समय में विलासिता तथा रसिकता का कवि की कल्पना पर असर पड़ना कोई आश्चर्य-जनक बात नहीं।

उदाहरणार्थ रघु की विजय-यात्रा के समय—

असह्य विक्रमः सह्यं दूरान्मुक्तमुदन्वता ;
नितम्बमिव मेदिन्याःस्रस्तांशुकमलङ्घयत्।
(रघु०, ४-४२)

स सैन्यपरिभोगेण गजदान सुगन्धिना ;
कावेरीं सरितां पत्युः शङ्कनीयमिवाकरोत्।
(रघु०, ४-४५)

चुम्बने विपरिवर्त्तिताधरं
हस्तरोधिरशना विघट्टने ;
विघ्नतेच्छमपि तस्य सर्वतो
मन्मथेन्धनमभूद्बधूरतम्।
(रघु०, १६वाँ सर्ग)

शूलिनः करतलद्वयेन सा
संनिरुद्धयनयहृतां शुका ;
तस्य पश्यति ललाटलोचने
मोघयत्न विधुरा रहस्यभूत।
(कुमारसंभव)

मध्येश्यामः स्तनइव भुवः शेष विस्तारपाण्डुः।
(मेघ०, १८)

कहाँ तक कहें, कालिदास ने शैव होकर तथा शिव-पार्वती को जगत् के माता-पिता (जगतः पितरौ) मानकर भी उनका ऐसा शृंगार वर्णन किया है, जो सभ्यता की दृष्टि से अश्लीलता की भी सीमा लाँघ गया है। इनमें कवित्व पूर्ण-रूप से भरा हुआ है ; परंतु केवल कवित्व ही मनुष्य का आदर्श नहीं है।

कुमारसंभव के आठवें सर्ग में कालिदास ने शंकर-पार्वती का शृंगार वर्णन किया है, इसके पढ़ने से ज्ञात हो जायगा कि रसिक कवि अपने इष्टदेव को भी नहीं छोड़ता। इस स्थल पर इतनी अधिक विलासिता देखकर ही शायद ईश्वरचंद विद्यासागर का यह मत है कि सर्ग कालिदास-रचित नहीं हो सकता। परंतु हम इसके कालिदास-रचित न होने का कोई भी कारण नहीं देखते। लोग कहते हैं शिव-पार्वती के इस शृंगार-वर्णन ही के कारण कालिदास कोढ़ी हो गए थे, और रघुवंश रचकर इन्होंने इसका प्रायश्चित्त किया। चाहे यह जन-श्रुति झूठ हो, पर इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लोगों की दृष्टि में अपने पूज्यों का शृंगार वर्णन करना कितना निंदनीय है।

इस चित्र से तुलसीदास की तुलना कीजिए। वह शृंगार-वर्णन को घृणा की दृष्टि से देखते थे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उन्होंने शृंगार वर्णन के अवसरों को ही छोड़ दिया है। बात यह थी कि उनके चरित्र-नायक उनके इष्टदेव थे, और वह पूज्यों के शृंगार-वर्णनों की धृष्टता न कर सकते थे। शृंगार वर्णन करने का उन्होंने यही कारण बताया है—

जगत मातु-पितु शंभु-भवानी,
तेहि शृंगार न कह्यो बखानी।

सीताराम के विषय में भी उन्होंने यही नीति अवलंबन की है।

दोनो महाकवियों के दृष्टि-कोण में बड़ा अंतर है। तुलसीदास जिस वस्तु को भक्ति की दृष्टि से देखते हैं, कालिदास उसे शृंगारिक दृष्टि से देखते हैं। एक उदाहरण लीजिए। "जयंत ने सीताजी के चोंच मारी" इस पर कालिदास का कथन है—

ऐन्द्रि किलनखैस्तस्याः विददार स्तनौ द्विजः ;
प्रियोपभोगचिह्नेषु पौरो भाग्यमिवाचरन्।

इसी भाव को तुलसीदास गुप्त रूप से कह गए हैं कि—"सीता-चरण चोंच हति भागा।" भक्त कवि की दृष्टि चरणों पर ही जाती है।

अपने समग्र ग्रंथों में एक-दो जगह गुसाईंजी ने स्त्री-रूप वर्णन किया है, सो भी कालिदास के समान अश्लील और खुल्लमखुल्ला रीति से नहीं। उन्होंने इस रीति से वर्णन किया है, जिसमें भक्ति-भाव में अंतर भी न पड़े, और साथ-ही-साथ महा-काव्य शृंगार रस से नितांत रहित भी न रह जाय। सीता-हरण के पश्चात् भगवान् रामजी सीता को संबोधन कर कहते हैं—

खंजन सुक कपोत मृग मीना ;
मधुप-निकर कोकिला प्रबीना।
कुंद-कली दाड़िम सुदामिनी ;
कमल-सरद-ससि अहि-भामिनी।
श्रीफल कनक कदलि हर्षाहीं ;
नेकु न संक सकुच मन माहीं।
सुनु जानकी, तोहि बिनु आजू—
हरषे सकल पाय जनु राजू।

उक्त चौपाइयों में महाकवि ने किस युक्ति से काम लिया है कि प्रकट रूप से शृंगार-वर्णन भी न हुआ, और यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो सब अंगों का वर्णन आ गया।

सिय-मुख-समता पाव किमि चंद बापुरो रंक।
प्रिया-हीन डरपत मन मोरा।

आदि छंदों में यत्र-तत्र शृंगार की झलक आ गई है, पर वह सब विशुद्ध प्रेम का परिचायक है। गुसाँईजी का निम्न-लिखित वर्णन—

खंजन मंजु तिरीछे नयननि,
निज पति तिनहिं कह्यो सिय सैननि।

श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त को अच्छा न लगा, और उन्होंने उसे अपने नवीन काव्य और 'साकेत' में परिवर्तन करना उचित समझा है—

"शुभे, तुम्हारे कौन उभय ये श्रेष्ठ हैं?"
"गोरे देवर, श्याम उन्हीं के ज्येष्ठ हैं।"

दोनो कवियों के शृंगार-वर्णनों में प्रधान अंतर यही है कि एक तो तुलसीदास ने कालिदास के समान अश्लील तथा विस्तृत शृंगार कहा ही नहीं, और जहाँ कहीं उस ओर लक्ष्य किया भी है, वहाँ केवल विशुद्ध प्रेम का दिग्दर्शन कराया है। कालिदास के शृंगार-वर्णन में एकदम सांसारिकता, शुद्ध विलासिता तथा इंद्रिय-तृप्ति की भावना भरी हुई है, और पवित्रता का बिलकुल लोप हो गया है। उधर भक्तराज तुलसी के वर्णन में क्षुद्र इंद्रिय-तृप्ति की झलक तक नहीं। वहाँ तो केवल विशुद्ध गंभीर दांपत्य-प्रेम का अथाह समुद्र लहरा रहा है, जिसमें विलासिता की गति ही नहीं, और जो भक्ति का एक साधन-मात्र है।

शृंगार-शब्द आजकल स्त्री-रूप-वर्णन के अर्थ में लिया जाता है, परंतु शृंगार की सीमा इतनी संकुचित करना ठीक नहीं। स्त्री-रूप के साथ पुरुष-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सौंदर्य-वर्णन भी शृंगार की परिभाषा में आना चाहिए। यदि शृंगार की यह परिभाषा मान्य हो, तो तुलसीदास को बड़ा भारी शृंगार-प्रिय कवि कहना पड़ेगा, क्योंकि उन्होंने अपने ग्रंथों में हर जगह राम-रूप का अत्यंत मनोहर वर्णन किया है।

किंतु कालिदास ने स्त्री-रूप-वर्णन से ही छुट्टी नहीं पाई। उन्होंने एक-आध स्थान के सिवा कहीं पुरुष-रूप-वर्णन नहीं किया। अतः कहना होगा कि कालिदास का क्षेत्र स्त्री-शृंगार-वर्णन था। अपने-अपने क्षेत्र में दोनो ही कवि अद्वितीय हैं। न कालिदास पुरुष-रूप-वर्णन में तुलसीदास की बराबरी कर सकते, और न तुलसीदास नारी-रूप-वर्णन में कालिदास की।

तुलसीदास का पुष्प-वाटिका में राम-सीता का प्रथम दर्शन तथा कालिदास का दुष्यंत-शकुंतला का प्रथम मिलन, दोनो में बहुत कुछ सादृश्य है। यदि गुसाईंजी ने कहीं शृंगार-रस का विस्तृत वर्णन किया है, तो इसी स्थल पर।

उपवन (पुष्प-वाटिका) में राम-सीता का प्रथम मिलन होता है, और तपोवन में दुष्यंत-शकुंतला का। राम गुरु की पूजा के लिये पुष्प लेने गए हैं—

समय जानि मुनि आयसु पाई;
लेन प्रसून चले दोउ भाई।

वहाँ सीताजी भी—"गिरिजा-पूजन जननि पठाई।" दोनो ही धार्मिक कार्यों में गुरुजनों द्वारा नियुक्त हैं।

किंतु दुष्यंत मृगया के लिये और शकुंतला वृक्षों को सींचने के लिये निकली है। राम के साथ लक्ष्मण हैं, और दुष्यंत के साथ उनका सखा सारथी। सीता तथा शकुंतला, दोनो के साथ उनकी सखियाँ हैं। "दोनो पूजा के पवित्र संकल्प की पूर्ति के लिये जा रहे हैं, इसलिये शृंगार-रस के लिये पर्याप्त रुकावट है कि सभ्यता की परिधि के बाहर पैर न रक्खा जा सके, और गुप्त भेंट की बूत(?) न लगने पावे।" राम फूलों की खोज में इधर-उधर घूमते हैं, और दुष्यंत मृग की राम। धर्म की मर्यादा में स्थित हैं—

चहुँ दिसि चितै, पूछ मालीगन;
लगे लेन दल-फूल मुदित मन।

किंतु दुष्यंत आश्रम-मृग पर भी बाण चलाने में नहीं चूकते, और मुनि-शिष्यों को रोकना पड़ता है—

राजन्! आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्या।

अब प्रथम दर्शन किस प्रकार होता है, सो देखिए। हरिण खोजते हुए दुष्यंत की दृष्टि आश्रम-हरिणी पर पड़ जाती है, और उसे बाण-विद्ध करने के बदले वह स्वयं ही बाण-विद्ध हो जाते हैं। राजा को शकुंतला का प्रथम परिचय तपस्वी कुमार से मिलता है, और "आकारांत स्त्रीलिंग" शब्द सुनते ही उसे प्रत्यक्ष देखने की उत्कंठा बढ़ जाती है। दक्षिण बाहु के फड़कने से आगामी घटना की सूचना मिल जाती है।

यहाँ रामजी को सीता का समाचार नहीं मिलता, बल्कि सीताजी ही को एक सखी द्वारा सूचना मिलती है—

देखन बाग कुँवर दोउ आए;
बय किसोर सब भाँति सुहाए।

सीताजी राम का मुनि के संग आना पहले ही सुन चुकी थीं, इसी से—

एक कहइ नृप-सुत तेइ आली!
सुने जे मुनि-सँग आए काली।

यह सुनकर "सिय-हिय अति उतकंठा जानी।" एक सखी उनकी रूप-माधुरी का वर्णन कर कहती है—"अवसि देखिए, देखन जोगू।"

इस प्रकार प्रस्ताव का अनुमोदन तथा समर्थन हो जाने पर सीताजी के—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दरस लागि लोचन ललचाने।

यहाँ गुसाईंजी ने सीताजी की 'पुरातन प्रीति' तथा 'नारद-वचन' की ओर इशारा कर उनकी 'पुनीति प्रीति' का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत कर दिया है। इस चित्र में कामुकता नहीं, किंतु आरंभ से अंत तक पवित्र प्रेम का प्रदर्शन है। राम ने भी पहले से सीता का समाचार सुन रक्खा है—

तात, जनक-तनया यह सोई।

इस प्रकार पूर्व-परिचय के कारण दोनो में एक दूसरे के दर्शनों की उत्सुकता बढ़ाकर गुसाईंजी प्रत्यक्ष परिचय कराने का उपक्रम करते हैं।

वहाँ दुष्यंत ने केवल अभी शकुंतला का नाम-मात्र सुना है। शकुंतला ने दुष्यंत का नाम तक नहीं सुना। अब प्रथम दर्शन का समय आता है।

राम का ध्यान नूपुर की ध्वनि सुनकर सीता की ओर आकर्षित होता है, और उस प्रथम 'मदन-दुंदुभी' से उनकी मनसा-विश्व की पूर्ण विजय हो जाती है। यहाँ सखियों का वार्तालाप सुनकर दुष्यंत का ध्यान उस ओर जाता है, वह तपस्वियों की कन्याओं पर एकदम मुग्ध हो जाता है, और तुरंत उनकी तुलना रनिवास की स्त्रियों से करने लगता है—

"शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।" (इन वन-युवतियों की छवि रनिवास की स्त्रियों में मिलना दुलभ है।)

इससे स्पष्ट है कि पहले से ही रनिवास में अनेक स्त्रियों के होते हुए भी मनचले राजा साहब सदा उसमें अधिकाधिक सुंदरियों को भरती करने की तलाश में रहते थे। वह तपस्विकन्याओं पर भी मन चलाना अनुचित नहीं समझते। फिर एक-दो की नहीं, सभी की चितवन से वह विद्ध हो जाते और चोरी से उनकी बातें सुनने लगते हैं। ये सभी बातें राजाओं के योग्य नहीं।

वहाँ राम का क्या हाल है? उनके नेत्र सीता-मुख-चंद्र के चकोर बनकर एकटक रह जाते हैं—

अस कहि फिर चितए तेहि ओरा;
सिय-मुख-ससि भे नयन चकोरा।
भए बिलोचन चारु अचंचल;
मनहु सकुचि निमि तजेउ दृगंचल।

शकुंतला से सखियों की बात सुनकर दुष्यंत समझ जाते हैं कि—"कण्व की बेटी शकुंतला यही है।" किंतु राम देखते ही पहचान लेते हैं, और कहते हैं—

तात! जनक-तनया यह सोई,
धनुष-यज्ञ जेहि कारन होई।

शकुंतला को देखते ही उनका मन उसकी सुकुमारता की ओर जाता है—

इदं किलाव्याजमनोहरं वपु-
स्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति;
ध्रुवं सनीलोत्पलपत्र धारया
समिल्लतां छेत्तुमृषिव्यवस्यति।

कण्व की बेटी शकुंतला यही है। उस ऋषि का हृदय बड़ा कठोर होगा, जिसने ऐसी कुमारी को ऐसा कठिन काम सौंपा है, और वृक्षों की छाल के वस्त्र पहराए हैं। इस सुंदरी को, जिसे देखते ही मन हाथ से निकल जाता है, तपस्विनी बनाना ऐसा है, जैसे नील-कमल की पँखुरी से सूखा छोंकर काटना।

तुलसीदास ने इस प्रकार के भाव पार्वती की तपस्या तथा रामद्वारा धनुष-भंग के समय प्रकट किए हैं—

सिरस-सुमन बेधिय किमि हीरा।

इत्यादि।

इसके बाद दुष्यंत शकुंतला की शोभा को मन-ही-मन सराहने लगते हैं—

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपिहिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति;
इयमधिकमनोज्ञा वल्कले नापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।

वल्कल इस रमणी के शरीर के योग्य न होने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पर भी उसके द्वारा इसके शरीर की शोभा ही हो रही है, क्योंकि कमल-पुष्प सेवार से घिरा होने पर भी रमणीय होता है, और चंद्र-मंडल का चिह्न काला होने पर भी उस मंडल की शोभा बढ़ाता है। वैसे ही यह सुंदरी वल्कल से भी अधिक मनोहर हो रही है। मधुर आकृतिवालों के लिये सभी चीजें अलंकार हो जाती हैं।

अधरः किसलयरागः
कोमल विटपानुकारिणौ बाहू;
कुसुममिव लोभनीयं
यौवनमङ्गेषु संनद्धम्।

(शकुंतला के अधर ही लता के नवीन पल्लव हैं, भुजा ही बेलि हैं, और नवयौवन ही विकसित फूल हैं।)

तुलसीदास के राम सीता का रूप मन-ही-मन सराहते हैं, किंतु उसके वर्णन के लिये शब्द नहीं मिलते—

हृदय सराहत बचन न आवा।

क्योंकि—"गिरा अनयन, नयन बिनु बानी।" वह केवल इतना ही कहते हैं—

"जनु बिरंचि सब निज निपुनाई
बिरचि बिश्व कहँ प्रगट दिखाई।"

किंतु शकुंतला के रूप वर्णन करते हुए कालिदास इसी भाव को इस प्रकार कहते हैं—

चित्रे निवेश्य परिकल्पित सत्त्वयोगा
रूपोच्चयेन मनसा विधिना कृता नु;
स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे
धातुर्विभुत्व मनुचिंत्य वपुश्च तस्याः।

ब्रह्मा का संसार के रूप-समुच्चय को लेकर मन के द्वारा शकुंतला-रूपी स्त्री-रत्न की अपरा सृष्टि करना सचमुच ऊँची कल्पना है—पार्वती का रूप वर्णन करते हुए कालिदास ने इसी प्रकार का भाव प्रकट किया है—

सर्वोपमा द्रव्यसमुच्चयेन
यथा प्रदेशं विनिवेशितेन;
समर्पिता विश्वसृजा प्रयत्ना-
देकस्थसौंदर्य दिदृक्षयेव।

नागरी-प्रचारिणी पत्रिका में श्रीमोहनवल्लभ पंत इसकी आलोचना करते हुए लिखते हैं—

"चौपाई में सीताजी के अकथनीय सौंदर्य का वर्णन करने में असमर्थ होकर रामचंद्रजी अपने हृदय में केवल अनुभव ही कर सके हैं। श्लोक में ब्रह्मा संसार की सारी उपमा योग्य सुंदर सामग्रियों को एकत्र देखने के लिये—यह जाँचने के लिये कि समस्त सुंदर पदार्थों के सम्मीकरण से रची हुई पार्वतीजी की सुषमा कैसी होगी—उत्सुक हैं। किंतु चौपाई के ब्रह्मा अपने समस्त रचना-कौशल के व्यय से सीताजी की अपूर्व प्रतिमा रचकर दिखलाने के लिये उत्कंठित हैं। सारांश यह कि कालिदास की उत्प्रेक्षा में प्रथम प्रयास है, और तुलसीदास की उत्प्रेक्षा में उसी एकत्र सौंदर्य की परिपाक अवस्था का ब्रह्माजी द्वारा विश्व में प्रदर्शन। नौसिखिए शिल्पकार की प्रारंभिक रचना में और सिद्धहस्त कला-कोविद् की कृति में जो विभेद हो सकता है, वही इन दोनो उत्प्रेक्षाओं में भी है।"

आगे चलकर तुलसीदास सीताजी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं—

सुंदरता कहँ सुंदर करई;
छबि-गृह दीप-सिखा जनु बरई।

छवि के गृह में दीप-शिखा का जलना एक ऊँची कल्पना है।

कालिदास ने भी इंदुमती के वर्णन में उसे दीप-शिखा से उपमा दी है—

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ।

पंतजी के अनुसार यदि कालिदास की दीप-शिखा स्वर्ण है, तो तुलसीदास की कुंदन।

कालिदास का वर्णन भी कितना सजीव है—

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम्।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अखण्डं पुण्यानां फलमिव चतद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्था स्यतिविधि ॥

सचमुच कालिदास का यह वर्णन अनाघ्रात-पुष्प, अलूलू-किसलय, अनाविद्ध रत्न तथा अनास्वादित मधु-रस के समान है।

कालिदास को तो शकुंतला की तुलना के लिये विना सूँघा फूल, विना वेधा रत्न आदि मिल जाता है, किंतु तुलसीदासजी को सीताजी की कोई उपमा नहीं मिलती, क्योंकि सभी उपमाएँ कविगण जूठी कर चुके हैं—

सब उपमा कवि रहे जुठारी ;
केहि पटतरिय विदेह-कुमारी।

पार्वती, रति, लक्ष्मी आदि किसी को गुसाईंजी सीताजी से उपमा देने योग्य नहीं समझते—

हाँ, यदि इस प्रकार की लक्ष्मी उत्पन्न हो, तब कहीं बड़े संकोच के साथ वह सीताजी के समान कही जा सकती है—

जो छबि-सुधा पयोनिधि होई ;
परम रूपमय कच्छप सोई।
सोभा रजु मंदिर सिंगारू ;
मथै पानि-पंकज निज मारू।
इहि बिधि उपजै लच्छिम जब सुंदरता-सुख-मूल ;
तदपि सकोच-समेत कबि कहहिं सीय सम तूल।

कालिदास ने नारी-रूप के वर्णन में जैसी कुशलता दिखलाई है, वैसी ही या उससे भी अधिक निपुणता तुलसीदास ने पुरुष-रूप के वर्णन में दिखलाई है। उनका राम-रूप-वर्णन देखिए—

लता-भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ;
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद-पटल बिलगाइ।
सोभा-सींव सुभग दोउ बीरा ;
नील-पीत-जल जात-सरीरा।
मोर-पंख सिर सोहत नीके ;
गुच्छा बिच-बिच कुसुम-कली के।
भाल तिलक स्रम-बिंदु सुहाए ;
स्रवन सुभग भूषन-छबि छाए।
बिकट भृकुटि, कच घूँघरवारे ;
नव-सरोज-लोचन रतनारे।
चारु चिबुक नासिका कपोला ;
हास-बिलास लेत मन मोला।
मुख-छबि कहि न जात मोहिं पाहीं ;
जो बिलोकि बहु काम लजाहीं।
उर मनिमाल, कंबुकल ग्रीवाँ ;
काम-कलभ-कर भुज बलसींवाँ।
सुमन-समेत बाम कर दोना ;
साँवर कुँअर सखी सुठि लोना।
केहरि-कटि पट पीतधर सुखमा-सील-निधान ;
देखि भानु-कुल-भूषनहिं बिसरा सखिन्ह अपान।

इस प्रकार सीताजी की शोभा मन में सराहने के बाद राम अपनी दशा को विचारकर पवित्र मन से लक्ष्मण से कहते हैं—

"बोले सुचि मन अनुज सन"

इसमें शुचि मन शब्द ध्यान देने योग्य है—

तात, जनक-तनया यह सोई ;
धनुष-यज्ञ जिहि कारन होई।

इससे लक्ष्मण को सीता का परिचय कराकर वह अपने मन का हाल भी लक्ष्मण से प्रकट कर अपनी पवित्रता और निश्छलता का परिचय देते हैं—

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा ;
सहज पुनीत मोर मन छोभा।
सो सब कारन जान बिधाता ;
फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता।
रघुबंसिन कर सहज सुभाऊ ;
मनु कुपंथ पग धरै न काऊ।
मोहिं अतिसय प्रतीति मन केरी ;
जेहिं सपनेहु पर-नारि न हेरी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दुष्यंत भी अपने मन को समझाने के लिये इसी प्रकार की बात कहते हैं—

असंशयक्षत्रपरिग्रहक्षमा
यदार्य मस्यामभिलाषि मे मनः ;
सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु
प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः ।

निश्चय यह ऋषि की बेटी सजातीय स्त्री से तो नहीं है, पर यह संदेह वृथा है, क्योंकि इस पर जो मेरा चित्त ऐसा लगा है, तो अवश्य यह क्षत्रिय के ब्याहने योग्य होगी, क्योंकि सज्जनों के हृदय में जो कभी कुछ संभ्रम उपजता है, तुरंत ही वह अंतःकरण की भावना से मिट जाता है। मेरा मन इसके वश हुआ, इसलिये निश्चय यह ब्राह्मण की बेटी नहीं है, जो मेरे ब्याहने योग्य न हो।

राम के हृदय की पवित्रता तो आरंभ से अंत तक प्रकट को है, परंतु दुष्यंत का ऐसा कहना बहाना-सरीखा जान पड़ता है, क्योंकि उनका पहले का तथा बाद का आचरण इसके विरुद्ध है। अस्तु।

अब सीता के हृदय की दशा देखिए। रामजी कुछ देर लता-ओट में हो जाते हैं, इस पर उनकी उत्सुकता का वर्णन कवि करता है—

चितवत चकित चहूँ दिस सीता ;
कहँ गए नृप-किसोर मन-चोता।
जहँ बिलोकि मृग-सावक-नैनी ;
जनु तहँ बरसि कमल सित स्रेनी।

"जनु शिशु मृगी सभीत" की उत्प्रेक्षा का निर्वाह अभी तक हो रहा है। इस पर सखियाँ उन्हें लता की ओट में दिखाती हैं, तब—

देखि रूप लोचन ललचाने ;
हरषे जनु निज निधि पहिचाने।
थके नयन रघुपति - छबि देखी ;
पलकन हूँ परिहरीं निमेषी।
अधिक सनेह देह भइ भोरी ;
सरद-ससिहि जनु चितव चकोरी।
लोचन-मग रामहिं उर आनी ;
दीन्हे पलक - कपाट सयानी।

इसमें प्रेम का कितना सजीव वर्णन किया गया है। राम के रूप को हृदय में धारण कर, पलक-कपाटों को बंद कर लेना कितनी उपयुक्त उपासना है। रामजी लता-भवन से प्रकट हो जाते हैं, किंतु प्रेम-मुग्ध सीता के पलक-कपाट बंद ही रहते हैं। उन्हें खोलने के लिये सखी को व्यंग्य-वचन से काम लेना पड़ता है—

बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू ;
भूप-किसोर देखि किन्ह लेहू।

तब संकोच के साथ वह नेत्र खोलती हैं, और जिनकी मूर्ति के दर्शन हृदय में कर रही थीं, उन्हीं को अपने सम्मुख पाती हैं। इधर राम की मंजुल मूर्ति, उधर पिता का कठोर प्रण! दोनों का स्मरण कर उनके मन में द्वंद्व उत्पन्न हो जाता है। धर्म और स्नेह, दोनों की खींचातानी चलती है, किंतु अंत में विजय धर्म ही की होती है। स्नेह की प्रबलता धर्म-मर्यादा के बंधन को नहीं तोड़ सकता—

नख-सिख देखि राम की सोभा ;
सुमिरि पिता-प्रन मन अति छोभा।
धरि बड़ि धीर राम उर आने ;
फिर आपन पो पितु-बस जाने।

सीताजी की इस अवस्था को सखियाँ समझ जाती हैं, और अवसर को सँभालने के लिये—

"पुनि आवहु एहि बिरियाँ काली"

आदि गूढ़ गिरा कहकर उनसे घर चलने का इशारा करती हैं। इस पर सीताजी श्यामल मूर्ति को हृदय में धारण कर तथा धनुष की कठोरता का सोच करती हुई आगे चल देती हैं। स्नेह की अधिकता से फिर-फिर पीछे फिरकर देखना स्वाभाविक मनोवृत्ति तथा हृदय की स्थिति को प्रकट करता है—

देखन मिस मृग बिहँग तरु फिरइ बहोरि-बहोरि ;
निरखि-निरखि रघुबीर-छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अब शकुंतला की ओर आइए। सखियों के साथ वह स्त्री-सुलभ वार्तालाप कर रही है, जिससे उसका लता-वृक्षों पर अनुराग प्रकट होता है। अंत में एक भौंरे से रक्षा पाने के बहाने सखियाँ उसे दुष्यंत का परिचय करा देती हैं—"हम छुड़ानेवाली कौन हैं, राजा दुष्यंत छुड़ावेगा, जो सब तपोवन का रखवाला है।"

"का वअं परित्तादुं। दुस्सन्दं अक्कन्द। राअरक्खि दव्वाइं तवोवणाइं णाम।"

एक भौंरा से पीछा छुड़ाने के लिये दुष्यंत रूपी दूसरा भौंरा आकर मड़राने लगता है। राजा दुष्यंत इसी समय को अपने प्रकट होने का अच्छा अवसर जानकर सामने आता है, किंतु तब भी अपना यथार्थ परिचय न देकर एक परदेशी और राजकर्मचारी होना प्रकट करता है। अपना परिचय छिपाकर भी वह बात-ही-बात में सखियों से शकुंतला का पूरा परिचय ले लेता है, और अपने को न रोक सकने के कारण उसके विवाह की बात तक पूछ बैठता है—

"वैखानसं किमनया व्रतमा प्रदाना-
द्व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम्;
अत्यन्तमेव मदिरेक्षण वल्लभाभि-
राहो निवत्स्य त समं हरिणाङ्गनाभिः।

(मैं यह पूछता हूँ कि शृंगार-रस के वैरी इस वानप्रस्थ नियम में तुम्हारी सखी ब्याह ही तक रहेगी, या सदा अपनी-सी आँखोंवाली हरिणियों के संग खेलगी?)

प्रथम परिचय ही में यह प्रश्न पूछना राजा की कामुकता का द्योतक है।

उत्तर में प्रियंवदा कहती है—"हमारी सखी परवश है, और इसके बड़ों का यह संकल्प है कि इसी के समान वर मिले, तो दें।"

राजा मन-ही-मन अपने को शकुंतला के योग्य वर समझ लेता है, और कहता है—

भव हृदय! साभिलाषं संप्रति संदेहनिर्णयो जातः;
आशङ्क से यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्।

(अरे मन! अब तू इसके मिलने की चाह कर, तेरे संदेह का निवारण हो गया। जिसे तूने जलती आग समझा था, सो तो गले का हार बनाने योग्य रत्न निकला।)

किंतु क्या हम पूछ सकते हैं कि आपने इसे 'जलती हुई आग' कब समझा था? आप तो शुरू ही से इसे अपने गले के हार का रत्न बनाने के इच्छुक रहे हैं—जिस हार में पहले ही से अनेक रानियाँ-रूपी रत्न गुँथे हुए थे, उसी में इस आश्रम की मणि को भी गूँथना चाहते रहे हैं।

जब विवाह की बात सुनकर शकुंतला उठकर जाना चाहती है, तब दुष्यंत अपने को न सँभालकर उसे रोकने की चेष्टा करने लगता है, किंतु सँभलकर कहता है—

अनुयास्यन्मुनि तनयां सहसा विनयेन वारित-
प्रसरः;
स्थानादनुच्चलन्नपि गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः।

(कामी मनुष्यों की कैसी मति भंग हो जाती है। देखो, मैंने तपस्वी की कन्या को चलने से रोकना चाहा, और आसन से खड़ा भी हो गया। कदाचित् धर्म न सँभालता, तो वैसा होता।)

अंत में प्रियंवदा को पुरस्कार-स्वरूप अँगूठी देने लगता है। शकुंतला को जाते देखकर अपने आप कहता है—

"वाचं न मिश्रयति यद्यपि मद्वचोभिः
कर्णं ददात्यभिमुखं मयि भाषमणे;
कामं न तिष्ठति मदाननसम्मुखीनां
भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः।

(जैसा मेरा मन इस पद्मिनी से उलझा है, वैसा ही इसका भी मुझसे अटका दिखाई देता है। यही मनोरथ पूरा होने के उत्साह का कारण है। यद्यपि यह मेरी बात में बात नहीं मिलाती, तो भी जब

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मैं कुछ कहता हूँ, बड़े चाव से कान लगाकर सुनती है। मेरी ओर निधड़क खड़ी नहीं होती, तो भी उसकी दृष्टि दूसरी ओर नहीं जाती।)

इतने में तपोवन से एक मस्त हाथी के उपद्रव की चिल्लाहट सुनकर इस रंग में भंग हो जाता है। हाथी के डर से सब चली जाती हैं, और दुष्यंत भी मन मारकर यह कहते हुए जाता है—

गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतंचेतः;
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य।

(हाय! ये तो सब गईं, अब मैं कहाँ जाऊँ? हे दैव, प्यारी शकुंतला से कुछ काल और भेंट क्यों न रही। अब मुझसे नगर की ओर तो चला नहीं जाता, इससे साथवालों को बिदा करके कहीं वन के समीप डेरा करूँगा। शकुंतला के हाव-भाव देखने की लालसा मेरे हृदय से कैसे जायगी। शरीर तो आगे को चलता भी है, परंतु मन पीछे हो रहा जाता है, जैसे पवन के सम्मुख चलती पताका पीछे ही को उड़ती है।)

अब इस चित्र से तुलसीदास के चित्र का मिलान कीजिए। कहाँ उनकी धर्म-मर्यादा और कहाँ दुष्यंत की कामुकता और उच्छृंखलता। वहाँ हाथी रंग में भंग करता है, किंतु यहाँ माता और गुरु का भय ही राम-सीता को अपने स्नेह की धर्म-मर्यादा द्वारा दबाकर वहाँ से जाने के लिये बाध्य करता है—

"भइ बड़ि बार मातु भय मानी।" आदि।

जाते समय दोनो का भाव देखिए—

प्रभु जब जात जानकी जानी;
सुख-सनेह सोभा-गुन-खानी।
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्हीं;
चारु चित्त-भीतो लिख लीन्हीं।

गुसाईंजी-सरीखे कुशल चितेरे ने प्रेम की मसि से चित्त-पटल पर यह अमिट चित्र अंकित कर दिया है।

जानकीजी भी श्याम मूर्ति को हृदय में धारण कर, अपने मनोरथ की पूर्ति के लिये, फिर गिरिजा के मंदिर में जाती हैं, तथा उनसे अपने हृदयगत भावों को केवल इतना ही कहकर जतलाती हैं—

मोर मनोरथ जानेहु नीके;
बसहु सदा उर-पुर सबही के।
कीन्हेउ प्रगट न कारण तेही;
असि कहि चरन गहेउ बैदेही।

पार्वती भी प्रसन्न होकर आशीष देती हैं—

मन जाहि राँच्यो, मिलहि सो बर सहज सुंदर साँवरो।

उधर रामजी भी गुरु के पास जाकर सब वृत्तांत कह देते हैं, क्योंकि—

सरल सुभाव छुवा छल नाहीं।

इससे उनकी निष्कपटता तथा पवित्रता समझकर गुरु आशीर्वाद देते हैं—

सुफल मनोरथ होहिं तुम्हारे।

पाठक इन दोनो कवियों के वर्णनों से स्पष्ट देखेंगे कि जहाँ एक ओर रूप-लालसा, कामुकता तथा उच्छृंखलता का राज्य है, वहाँ दूसरी ओर विशुद्ध प्रेम, उच्चादर्श तथा मर्यादा का साम्राज्य।

"सौंदर्य और प्रेम का कैसा पवित्र और पूर्वीय जीवन से भरा हुआ दृश्य है! इसका अन्य उदाहरण संसार की सभ्यता की चित्रशाला में मिलना कठिन है। तुलसीदास के अतिरिक्त और कौन कवि इस सफलता के साथ शृंगार और आचार को एकत्र कर सका है?"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विपर्यय

[पंडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न']

तब थे हरते सबके तम को,
मिटते अपने भी नहीं तम हैं;
तब विश्रुत थे महिमंडल में,
अब गेह की घूँस से क्या कम हैं!
तब नेही अनन्य सभी जन थे,
अब हो रहे निर्दय, निर्मम हैं;
यह हाय! विपर्यय कैसा हुआ!
तब भी हम थे, अब भी हम हैं!

निज सीना उभारे हुए चले वे,
कटि-बीच हमारे पड़े खम हैं;
परिपूर्ण उछाह-भरे सब वे,
हमसे नहीं होते ज़रा श्रम हैं।
जल, भू, नभ में वे विहार करें,
उठते ही यहाँ उठते दम हैं;
सब भाँति स्वतंत्रता भोगते वे,
परतंत्रता भोग रहे हम हैं!

सूतिका, पौरुषहीनता, अजीर्ण और ज्वर को दूर करनेवाला

सर्वश्रेष्ठ टॉनिक वाइन

पता—ढाका आयुर्वेदीय फ़ार्मेसी लिमिटेड

एक पिंट का दो रुपए आठ आने
क्वार्टर का चार रुपए आठ आने
स्थानीय एजेंटों से बीजिए
या
सीधे हेड ऑफ़िस ढाका (बंगाल) से मँगाइए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शुद्ध तथा उत्तम दूध की आवश्यकता और प्राप्ति के साधन

[श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी०, आर्गनाइज़र इंडियन डेरी कॉरपोरेशन]

मेरिका के प्रसिद्ध नगर न्यूयार्क में, क्वार्ट नामी विख्यात डॉक्टर और विज्ञानवेत्ता की अध्यक्षता में, बालकों का एक अस्पताल है, जहाँ कोई दवा आदि न दी जाकर केवल दूध द्वारा ही बहुत-से रोगों की चिकित्सा की जाती है। साधारण रूप में इस प्रकार के रोगी बच्चों की मृत्यु-संख्या २५० से ३०० प्रति हज़ार हुआ करती थी। परंतु उपर्युक्त अस्पताल में, उन्हें बढ़िया और उत्तम दूध दिए जाने पर, केवल २७ प्रति हज़ार ही रह गई। अर्थात् पहले की अपेक्षा अब दस बच्चों के स्थान पर एक ही बच्चा मरता है।

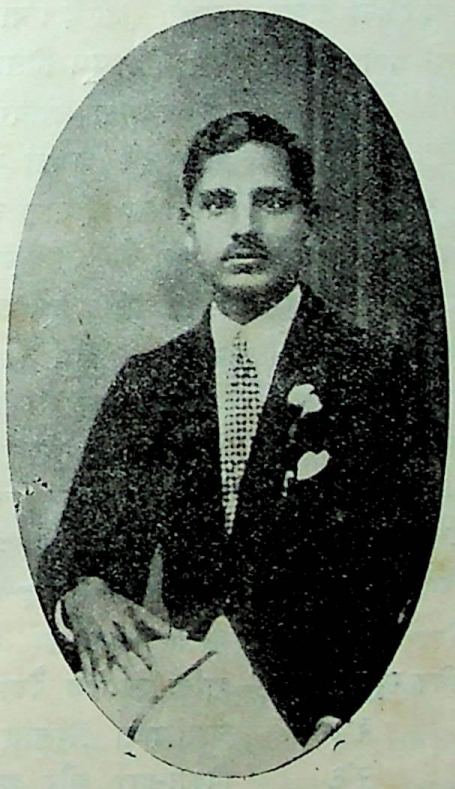

श्रीयुत एम्० पी० केदार
आई० डी० डी०

पाठक इस एक बात से ही उत्तम दूध की आवश्यकता भली भाँति समझ सकते हैं। यथार्थ में सब प्रकार का दूध सेवन करने योग्य नहीं होता। जहाँ उत्तम दूध परम हितकारी और सब प्रकार से लाभ पहुँचानेवाला होता है, वहाँ निकृष्ट और दोष-युक्त दूध से न केवल लाभ ही नहीं पहुँचता, वरन् उसके सेवन से हानि होने की संभावना रहती है। दूध के जो गुण वर्णन किए जाते हैं, वे अच्छे दूध में ही विद्यमान होते हैं। अच्छा दूध बहुत-सी बीमारियों के आक्रमण को रोकने की शक्ति प्रदान करता और अनेक रोगों की निवृत्ति में सहायक होता है। परंतु ख़राब दूध से कई प्रकार के विकार और रोग उत्पन्न होते तथा सर्व-साधारण में फैलते हैं। क्षय, टाइफ़ायड, विसूचिका, संग्रहणी और गले की बीमारियों के फैलाने में दूध मुख्य हेतु माना गया है। बच्चों में Summer Diarrhoea की शिकायत अधिकतर खराब दूध के कारण ही पैदा होती है। यदि रोग उत्पन्न न भी हों, तब भी ख़राब दूध के व्यवहार से स्वास्थ्य के ऊपर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। मुखमंडल सौंदर्य-हीन हो जाता है, आँखों की चमक और देखने की शक्ति जाती रहती है, और शरीर के सब अवयव ढीले पड़ जाते हैं। मनुष्य एक प्रकार से सब फ़ुरती और जीवन-शक्ति खो बैठता है।

योरप और अमेरिका आदि देशों में, जहाँ दूध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की उत्पत्ति में आश्चर्य-जनक वृद्धि हो रही है, उसे सब प्रकार से दोष-रहित और उत्तम बनाने के लिये भी भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। वैज्ञानिक छान-बीन के परिणाम-स्वरूप इस संबंध में वहाँ बहुत-से कड़े नियमों का पालन होता है। इसी कारण उन देशों में अब उत्तम दूध बड़ी सुगमता से और भारत की अपेक्षा कहीं सस्ता उपलब्ध होने लगा है। इस तरह के उत्तम दूध के प्रचार से वहाँ के लोगों के स्वास्थ्य में निश्चय ही बड़ी उन्नति हुई है, और साथ ही मृत्यु-संख्या भी बहुत घट गई है।

कौन कौन बातें दूध के अच्छे-बुरे होने पर प्रभाव डालती हैं, अथवा उत्तम दूध उत्पन्न करने के लिये किन-किन बातों का ध्यान रखना उचित है, इस विषय पर अब संक्षेप से प्रकाश डाला जाता है।

विशुद्धता

इस संबंध में सबसे पहली चीज़ विशुद्धता (Chemical Purity) है। यह तो प्रकट ही है कि सब प्रकार के पशुओं के दूध में गाय का दूध ही सर्वोत्तम माना गया है। परंतु सब गायों का सब अवस्थाओं में एक-सा दूध नहीं होता।

गायों की भिन्न-भिन्न जाति ही उनके दूध में घी की मात्रा और अन्य तत्त्वों के परिमाण में भारी भेद डाल देती है। नीचे की कुंडली में भारतवर्ष की कुछ मुख्य जाति की गायों और भैंसों के दूध में घी की प्रतिशत मात्रा दी गई है—

नाम जाति	अधिक-से-अधिक	न्यून-से-न्यून
गीर-जाति की गाय	९·०	३·४
सिंधी गाय	८·८	२·६
मिंटगुमरी की गाय	५·५	३·३
सूर्ती भैंस	१२·६	२·५
मुर्रा भैंस	१०·०	४·७

इस तालिका से पता चलेगा कि सब जाति की गाय-भैंस एक-जैसा घीवाला दूध पैदा नहीं करतीं। इसलिये गाढ़े, पतले जैसे दूध की आवश्यकता हो, वह उसी प्रकार के दूध देनेवाले पशु से प्राप्त करना चाहिए। साधारण तौर पर पीने—विशेष कर बच्चों को देने—के लिये चार-पाँच प्रतिशत घृतवाला दूध ही अच्छा होता है। यह हमेशा याद रखना चाहिए कि पानी मिला या मलाई निकला भैंस का दूध कदापि इसका स्थानापन्न नहीं हो सकता।

ऊपर के आँकड़ों से यह भी प्रकट होता है कि एक ही जाति के पशुओं के दूध में भी घी की मात्रा में बड़ा अंतर रहता है। कोई-कोई गाय-भैंस बहुत पतला और कोई-कोई बहुत गाढ़ा दूध देनेवाली होती हैं। यदि एक ही जाति के बहुत-से पशुओं का दूध मिला लिया जाय, तो उसमें औसत घी की मात्रा बराबर बैठ जाती है। गाय आदि मोल लेने अथवा दूध खरीदने के समय घी की मात्रा का परिमाण जानना आवश्यक है।

पशु को जो कुछ खिलाया-पिलाया जाता है, उसका उसके दूध पर भी प्रभाव पड़ता है। आहार-रस से ही दूध तैयार होता है। इसलिये जो कुछ गाय के उदर में जाता है, वही अच्छे-बुरे दूध के रूप में हमारे सामने आता है। वन में चरने और हरा चारा खानेवाली गाय का दूध लघु और अत्यंत स्वास्थ्यप्रद होता है। रोगियों को विशेष रूप से यह लाभ करता है। अन्न खानेवाली गाय का दूध भारी, कफकारक और शक्ति एवं तेज पैदा करता है। निकृष्ट और गंदा चारा-दाना खिलाए जाने पर गाय का दूध भी विकार-पूर्ण और अस्वादिष्ठ हो जाता है। शहरों में प्रायः गाय पालनेवाले गला-सड़ा चारा, बासी-सूखी रोटियाँ, चावल का छिलका और कहीं-कहीं घोड़े की लीद और मैला तक खिलाने से परहेज़ नहीं करते। ऐसे पशुओं का दूध कदापि स्वास्थ्य-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

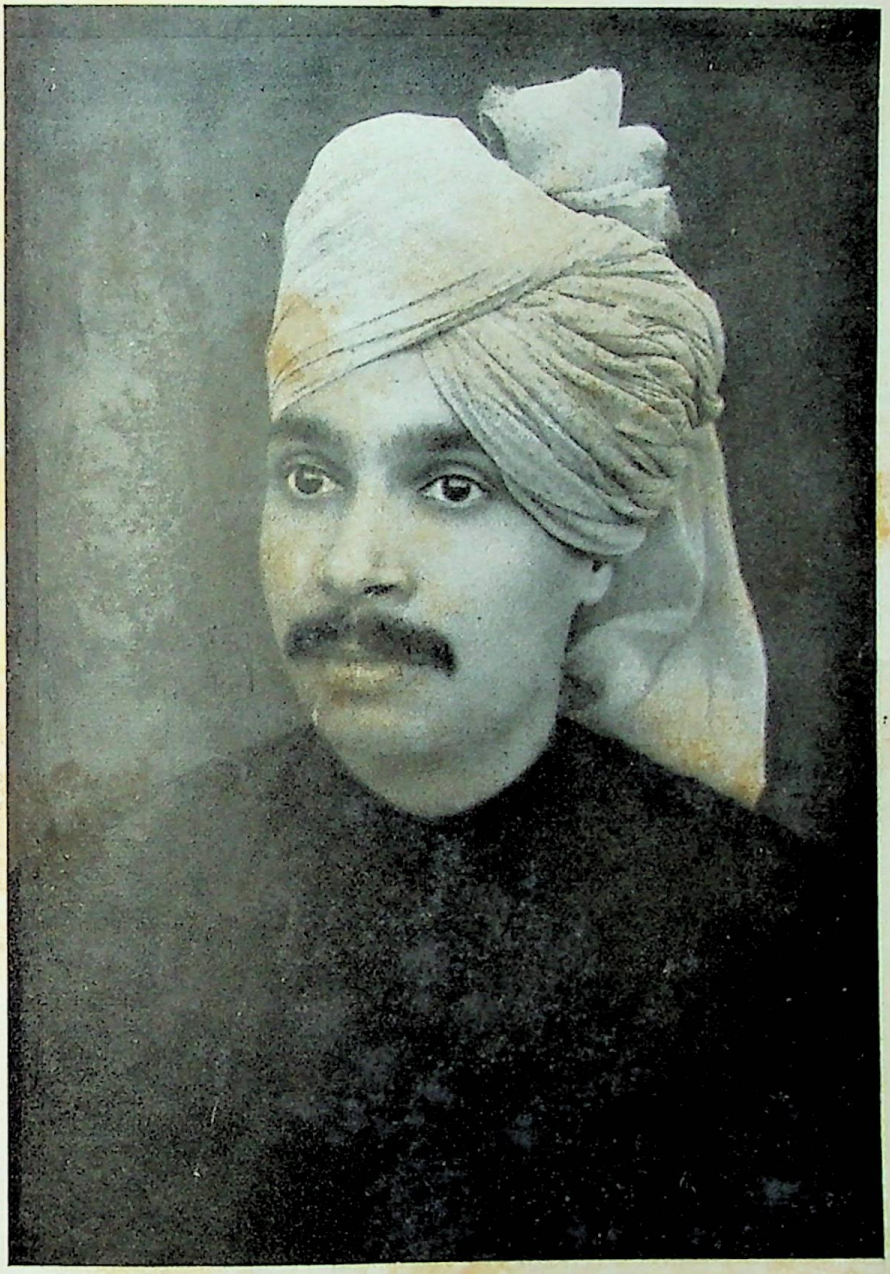

अयोध्या-नरेश
राजा जगदंबिकाप्रतापसिंह

[आप उदार विचार के व्यक्ति हैं। अयोध्या-राज्य और उसके अधिपतियों का हिंदी-प्रेम प्रसिद्ध ही है। आपके बाबा कविवर सरकोब सरकशान, राजैराजगान, महाराज सर मानसिंह बहादुर 'द्विजदेव' क़ायमजंग, के० सी० एस्० आई० और आपके पिता द्विजराज-सूर्योद्भव, ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन के यावज्जीवन सभापति, महामहोपाध्याय, विद्वद्वर महाराज सर प्रतापनारायणसिंह बहादुर के० सी० आई० ई० इसी राज्य के अधिपति थे। आपकी मातेश्वरी श्रीमती महारानी जगदंबादेवी एम्० एल्० ए० गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस के १०,०००) के शेयर खरीदकर उसकी संरक्षिका बनी हैं। यही प्रेस सुधा को मुद्रित और प्रकाशित करता और शीघ्र ही एक बृहत् कंपनी के रूप में परिणत हो रहा है।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शहर की ओर

[चित्रकार—श्रीपं० शंभुनाथ मिश्र, अध्यक्ष कला-विभाग,
प्रयाग-महिला-विद्यापीठ]

मन-मलीन, तन-छीन, सहि घन-प्रहार घनघोर,
असन - बसन हू हीन ह्वै चले सहर की ओर।

(दुलारेलाल भार्गव)

गंगा-फ्राइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रद और गुणकारी नहीं होता। शास्त्रों में कहा है—

अजा गावो महिष्यश्च अमेध्यं भक्षयन्ति याः ;
दुग्धं हव्ये च कव्ये च गोमयं न विलेपयेत्।

अर्थात् जो बकरी, गाय और भैंस अपवित्र चारा-दाना खाती हैं, उनका दूध कदापि व्यवहार में न लाना चाहिए, और न उनके गोबर से चौका देना चाहिए।

चारे-दाने के प्रभाव से दूध में घी की मात्रा भी घट-बढ़ जाती है। चना और बिनौले खिलाने से घी अधिक निकलता है। केवल चारा खानेवाली गाय के दूध में घी की मात्रा कम रहती है। परंतु गाय के लिये हरे चारे का प्रबंध इस दृष्टि से अति आवश्यक है कि उससे दूध जहाँ स्वादिष्ठ होता है, वहाँ विटेमिन-जसे स्वास्थ्य-वर्द्धक पदार्थों की भी उसमें वृद्धि होती है।

यदि गाय स्वयं रोग-ग्रस्त है, तो उससे किसी प्रकार भी उत्तम और गुणकारी दूध की आशा नहीं की जा सकती। अस्वस्थ गाय का दूध कभी उपयोग में न लाना चाहिए। जैसे माता के रुग्ण होने पर उसका दूध पान करने से शिशु को भी वही रोग हो जाता है, इसी प्रकार रोगी गाय का दूध पीने से मनुष्य का स्वास्थ्य भी खतरे में पड़ जाता है। गाय की आयु में छ-सात वर्ष पीछे जैसे-जैसे वृद्धि होती है, वैसे-वैसे उसके दूध में मलाई की मात्रा भी कम होने लगती है। परंतु मलाई की इस कमी को ध्यान में लाने की इतनी आवश्यकता नहीं, जितनी इस बात की कि वृद्ध गाय का दूध अधिक पोषक और बलप्रद नहीं होता। और, रोगों को रोकने की भी वह पूरी सामर्थ्य नहीं रखता। युवकों को, जहाँ तक संभव हो, ऐसा दूध पान नहीं करना चाहिए। भूखी, प्यासी और निर्बल गाय का दूध भी पीने के लिये उत्तम नहीं होता। बहुत देर या तुरंत की ब्याई हुई गाय का दूध बालकों, विशेष कर नवजात शिशुओं के लिये व्यवहार में नहीं लाना चाहिए। जो गाय ब्याने के समय निर्बल और अस्वस्थ रही हो, उसका दूध भी पुष्टिकर नहीं होता।

एकदम ऋतु-परिवर्तन होने, आँधी-पानी आने और चारा-दाना बदलने से दूध में घी की मात्रा कम हो जाती है। गरमियों के दिनों में वैसे भी घी की मात्रा कम रहती है। सायंकाल के दुहे दूध में प्रातःकाल के दुहे दूध की अपेक्षा चिकनाई कुछ अधिक होती है। दूध काढ़ने में अधिक समय छोड़ने से चिकनाई की मात्रा कम होने लगती है।

दुहे गए दूध के पहले और पीछे के भाग में भी घी का बड़ा अंतर रहता है, यहाँ तक कि पहले भाग में कभी-कभी एक प्रतिशत भी घी की मात्रा नहीं होती, और पिछले भाग में १२ प्रतिशत तक देखने में आती है। इस तरह दूध का पहला भाग लेनेवाला व्यक्ति बड़े घाटे में रहता है। कई शहरों में एक ही गाय को कई ग्राहकों के घर पर ले जाकर थोड़ा-थोड़ा, आवश्यकतानुसार, दूध दुहने का रिवाज पाया जाता है, जो वांछनीय नहीं।

गाय समझदार और स्नेहमय प्राणी है। यदि उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाय, तो वह अपने अधिक और उत्तम दूध द्वारा उसका स्वागत करती है। कहावत है—'गाय को एक बार प्रेम से पुचकारना उसे पाव-भर घी पिला देने के बराबर है।' ऐसी गाय का दूध निःसंदेह बड़ा स्वादिष्ठ और गुणकारी होता है। परंतु इसके विपरीत यदि उसके साथ दुर्व्यवहार और उस पर क्रोध किया जाय, तो वह भी अपने असंतोष को खराब और पतले दूध के रूप में प्रकट करती है। दूध दुहने के समय तो इस

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि गाय को किसी प्रकार की कटुता का आभास न होने पावे।

अज्ञान-वश अनेक घोसी और ग्वाले दूध के लोभ में गाय के साथ अमानुषिक क्रियाएँ तक करने लगते हैं। इस प्रकार प्राप्त किया हुआ दूध अत्यंत दूषित और विकार उत्पन्न करनेवाला होता है, उसे भूलकर भी न छूना चाहिए।

गाय यदि सर्वोत्तम प्रकार का दूध शुद्ध रूप में उत्पन्न भी करती है, तो मनुष्य अनेक प्रकार से, बाहरी मिलावट द्वारा, उसे स्वयं अशुद्ध बनाने की मूर्खता करता है। दूध में पानी मिलाकर बेचना तो साधारण बात है। शहरों में उत्पन्न होनेवाले दूध में चतुर ग्वाले किसी-न-किसी उपाय द्वारा थोड़ा-बहुत पानी अवश्य मिला देते हैं। जो दूध देहातों से आता है, उसमें ८० प्रतिशत से ऊपर पानी की मिलावट रहती है। और, पानी का परिमाण भी प्रायः ५ से १०० प्रतिशत तक देखने में आता है। यह दूध जब दूकानदारों के यहाँ पहुँचता है, तो पानी की मात्रा १५० प्रतिशत तक पहुँच जाती है। और, घर पर गरम करने से पूर्व उसमें थोड़ा-सा पानी इस विचार से और डाल दिया जाता है कि कहीं दूध जल न जाय। इस प्रकार का दूध निश्चित रूप से अशुद्ध है। पानी मिलाने से प्रायः सभी रासायनिक तत्त्व, जिनसे शरीर की पुष्टि और वृद्धि होती है, दूध में अल्प मात्रा में रह जाते हैं।

पानी न मिलाकर आजकल मिलावट का एक और उपाय भी उपयोग में लाया जाता है। वह है मशीन द्वारा कच्चे दूध से मलाई निकाल लेना। ऐसी मशीनें अब प्रत्येक नगर और ग्राम में देखने में आती हैं। मलाई निकाल लेने पर भी दूध के साधारण रंग-रूप में कोई अंतर नहीं आता। परंतु चिकनाई, जो दूध का एक प्रकार से सार है, निकल जाने से दूध में पोषण-शक्ति कम हो जाती है। इसलिये ऐसा दूध भी यथार्थ में शुद्ध नहीं समझा जा सकता।

निर्मलता

दूध के विषय में दूसरी ध्यान देने योग्य बात उसकी निर्मलता (Physical Purity) है। निर्मल दूध देखने में पीत वर्ण, साफ़, सूँघने में दुर्गंधि-रहित, चखने में मीठा और स्निग्ध होता है। इसके विपरीत होने पर दूध में अवश्य कोई-न-कोई विकार समझना चाहिए। निम्न-लिखित कारणों से दूध में मलीनता उत्पन्न होती है—

गाय के गंदे रहने और गोबर से लथ-पथ होने पर दूध दुहने के समय उसके शरीर से बहुत-सी धूल और गोबर झड़कर दूध में गिरते हैं, जिससे वह दूषित हो जाता है। गाय को सदा साफ़-सुथरा रखना उचित है। उसे गरमियों में रोज़ और जाड़े में सप्ताह में एक बार नहलाना चाहिए, और प्रतिदिन ब्रश से साफ़ करते रहना चाहिए।

गाय का स्थान भी ऐसा हो, जिसमें प्रकाश और हवा का प्रवेश अच्छी तरह हो सके। यदि किसी तंग कोठरी में बहुत-से पशुओं को एक साथ भर दिया जाय, तो उससे जहाँ उनके स्वास्थ्य को बड़ी हानि पहुँचती है, वहाँ उनके शरीर भी गोबर-पेशाब से लथपथ रहते हैं। स्थान पक्का और साफ़-सुथरा होना चाहिए। आस-पास कहीं गंदगी न पड़ी रहनी चाहिए। दूध निकालते समय किसी प्रकार की दुर्गंध और धूल उड़कर न आनी चाहिए। दूध दुहने से कुछ समय पहले मूली, शलगम, पियाज़ आदि कोई तेज़ गंधवाली चीज़ न खिलाई जानी चाहिए, क्योंकि वैसी दुर्गंध दूध से भी आने लगती है।

जिन बरतनों में दूध निकाला और रक्खा जाता है, वे यदि गंदे होंगे, तो दूध अवश्य मलीन हो जायगा। गंदे कपड़े से बरतन पोछने अथवा ढकने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

से भी दूध में बहुत कुछ मलीनता आ जाती है। ताँबे और पीतल के बिना क़लई किए और गिल्ट के बरतनों में रखने से दूध बिगड़ जाता है, और बहुत देर तक ऐसे बरतनों में पड़ा रहने से विषैला तक होने लगता है। मिट्टी के बरतन में रखने से मिट्टी की गंध भी दूध में प्रविष्ट हो जाती है। लोहे के पात्रों में दूध कम बिगड़ता है। परंतु वे अच्छी तरह न माँजे जायँ, तो दूध रक्त वर्ण और मलाई का रंग काला हो जाता है। लोहे के क़लई किए हुए बरतन दूध रखने के लिये सबसे अच्छे हैं। काँच और चीनी के या लोहे पर चीनी चढ़े हुए बरतनों में दूध बिलकुल सुरक्षित रहता है। जिन बरतनों में दूध पिया जाय, वे भी अत्यंत साफ़ होने चाहिए। दूध को खुला कभी न रहने दिया जाय, अन्यथा हवा में उड़ते हुए धूल के परमाणु मिलकर उसे दूषित कर देंगे।

मनुष्य प्रायः अपने गंदे हाथों से दूध दुहने अथवा बरतनों से दूध निकालने के द्वारा भी दूध को मलिन बनाता है। कई बार दूध में छोटे-छोटे बाल तक मिलते हैं, जो दूध निकालनेवाले के सिर आदि से गिरकर मिल जाते हैं। दूध के पास खड़े होकर धूलवाले वस्त्र झाड़ना, नहाना-धोना, तंबाकू पीना आदि सब काम दूध को मलिन करनेवाले हैं।

दूध में कई वस्तुओं की मिलावट की जाती है, जैसे सिंघाड़े तथा चावल का आटा आदि। इन सबके मेल से दूध निर्मल नहीं रहता। पानी भी प्रायः दूध में मिलाया जाता है, तो उसकी निर्मलता का विशेष ध्यान न रखने के कारण दूध में अनेक दोष आ जाते हैं। छोटे बच्चों के लिये तो ऐसा मिलावटी दूध विशेष रूप से अहितकर होता है।

साधारणतः दूध को बारीक मलमल की तीन-चार तह से छान लेने के पश्चात् उपयोग में लाना चाहिए।

स्वच्छता

अब तीसरी बात स्वच्छता (Bacterial Purity) के संबंध में कुछ वर्णन किया जाता है। दूध शुद्ध और निर्मल हो, इतना ही पर्याप्त नहीं। अधिक मलाईवाले और मिलावट तथा धूल-रहित दूध में भी यदि किसी प्रकार के हानिकारक कीटाणुओं का प्रवेश हो चुका हो, तो वह दूध उस अवस्था में पीने-योग्य नहीं होता। इस बात को भली भाँति ध्यान में रखना चाहिए कि दूध जहाँ मनुष्य और अन्य प्राणियों के लिये उत्तम भोजन है, वहाँ अनेक प्रकार के कीटाणुओं के लिये भी आदर्श पदार्थ है। अनेक प्रकार के कीटाणु, जिनमें से कई भयानक रोग उत्पन्न करने का कारण होते हैं, दूध में प्रवेश कर अनुकूल अवस्था में बड़ी शीघ्रता से वृद्धि करते हैं। एक कीटाणु से बारह घंटे में १,६७,७७,२१६ की वृद्धि की संभावना की जा सकती है। ये कीटाणु इतने सूक्ष्म होते हैं कि एक बूँद दूध में करोड़ों की संख्या में एक साथ समा सकते हैं। साधारण आँख द्वारा इन्हें देखना असंभव होता है। और, दूध में किस प्रकार के कीटाणु विद्यमान हैं, इसका भी सब अवस्थाओं में आसानी से पता नहीं चलता।

दूध में सभी कीटाणु हानि पहुँचानेवाले हों, सो बात नहीं। दूध को दही बनानेवाले कीटाणु (lactic acid bacteria) एक प्रकार से मनुष्य के परम हितकारी हैं, परंतु दूध को कई प्रकार के कीटाणु बिगाड़ भी देते हैं। दही के अच्छी तरह न जमने, उसमें पानी अलग रहने, छिद्रों-वाले, कड़ुए अथवा कसैले दही का कारण ये अन्य प्रकार के कीटाणु ही होते हैं। इसके अतिरिक्त क्षय, टाइफ़ायड, विसूचिका आदि अनेक भयानक रोगों के कीटाणु भी दूध में प्रवेश कर बड़ी शीघ्रता से बढ़ते हैं, और पीछे वे दूध पान

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

करनेवालों के शरीर में उन रोगों की उत्पत्ति का कारण बनते हैं।

यह तो नहीं कहा जा सकता कि गाय के थनों से दूध सर्वथा कीटाणु-रहित पैदा होता है, परंतु गाय बिलकुल स्वस्थ हो, उसे उत्तम चारा-दाना दिया जाय, तथा खुली हवा और सूर्य के प्रकाश में घूमने-फिरने का अवसर प्राप्त रहे, तो उसके दूध में बहुत कम कीटाणुओं की संभावना रह जाती है। यदि गाय विना बच्चे को पिलाए दुही जाती हो, तो पहली कुछ धारें निकालकर अलग फेक देनी चाहिए, क्योंकि उनमें कीटाणुओं की संख्या अधिक रहती है। बहुत-से कीटाणु प्रायः बाहर से दूध में प्रवेश कर उसे अस्वच्छ और दूषित बनाते हैं। यदि उचित प्रयत्न किया जाय, तो कीटाणुओं के इस बाहरी प्रवेश को बहुत कुछ रोका जा सकता है।

गंदगी और कीटाणुओं का चोली-दामन का साथ है। यदि तनिक-सी गंदगी को भी दूध के संपर्क में आने का अवसर प्राप्त होगा, तो उसके कीटाणु अवश्य दूध में प्रवेश कर जायँगे। गाय के शरीर पर गोबर रहने से दूध दुहते समय उसका कुछ अंश अवश्य दूध के बरतन में गिरेगा, और गोबर के छोटे-से छोटे परमाणु के साथ भी हज़ारों कीटाणु चिपके रहते हैं। इसलिये यह अत्यंत आवश्यक है कि दूध दुहने से पहले गाय को, विशेष कर उसके पिछले भाग को, अच्छी तरह धोकर साफ़ कर लिया जाय। दूध दुहने के बतरन भी बहुत चौड़े मुँह के न होने चाहिए। गाय का स्थान जितना खुला, हवादार और सूर्य की किरणों की पहुँच के अंदर होगा, उतना ही सब प्रकार के कीटाणुओं के कम वृद्धि पाने का अवकाश रहेगा। रहने के स्थान के आस-पास कहीं गंदगी एकत्र न होने देनी चाहिए, और स्थान प्रतिदिन भली भाँति साफ़ होना चाहिए।

कीटाणुओं की दृष्टि से मनुष्य का संसर्ग भी दूध को कई प्रकार से दूषित करता है। बहुत-से व्यक्ति स्वयं प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में अनेक रोगों में ग्रस्त रहते हैं। वे दूध के निकट आने से अपने वस्त्र, श्वास, चर्म, थूक आदि के द्वारा ऐसे कीटाणुओं का प्रवेश दूध में भी कर देते हैं। इसलिये यह नितांत आवश्यक है कि दूध दुहने अथवा दूध का काम करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति रोग-रहित और स्वस्थ हो। दूध दुहने के समय के वस्त्र भी अलग और साफ़ होने चाहिए। दूध दुहने से पहले हाथ अच्छी तरह साबुन से धो लेने चाहिए। हाथों को थूक आदि से गीला करके दूध निकालने की प्रथा बड़ी खराब है। यदि हाथों को नरम ही करना हो, तो थोड़ी वैसलीन लगा लेनी चाहिए।

बरतन दूध की स्वच्छता बिगाड़ने का मुख्य साधन होते हैं। यह तो उल्लेख हो ही चुका है कि दूध के लिये कैसे बरतन हों। जहाँ तक हो सके, बरतन कम जोड़ों और कोनोंवाले होने चाहिए। साधारण रूप से उन्हें पानी से धो डालना पर्याप्त नहीं होता। पहले ठंडे जल, फिर उबलते हुए सोडा मिले जल और फिर ठंडे जल से धोकर गरम भाप देनी चाहिए, अथवा सूर्य की तेज़ धूप में कुछ घंटे पड़ा रहने दिया जाय। धोने के लिये साफ़ पानी और ब्रश का प्रयोग होना चाहिए। कपड़े से किसी हालत में भी बरतनों को पोछना ठीक नहीं होता। अच्छे प्रकार से स्वच्छ बरतन में दूध रखने से जहाँ प्रति बूँद ५ से १०० तक कीटाणुओं की वृद्धि होती है, वहाँ अस्वच्छ बरतन में रखने से एक बूँद में लाखों और करोड़ों तक की संख्या बढ़ जाती है।

दूध ऐसी सूक्ष्म वस्तु है कि थोड़ी-सी असावधानी से भी उसमें दोष आ जाता है। आप दूध के निकट कुछ सुगंधित फूल, मिट्टी का तेल,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अथवा पियाज़ आदि रक्खें, तो थोड़ी देर बाद वैसी ही गंध दूध से भी आने लगेगी। इसलिये दूध की विशेष सँभाल करना उचित है। वह कभी गंदे स्थान पर न रक्खा जाय, न कभी खुला रहने पावे, और न अधिक देर तक पड़ा ही रहने दिय जाय। ध्यान रहे, ६० से १०० डिगरी टेंपरेचर (फ़ारनहीट) कीटाणुओं की वृद्धि के लिये बहुत अनुकूल होता है। पचास से कम टेंपरेचर पर उनकी वृद्धि रुकी रहती है, इसी कारण बर्फ़ में रखने से दूध कई दिन तक नहीं बिगड़ता। दूध के संबंध में एक सुनहरी नियम है कि उसे सदा साफ़, ठंडा और ढककर रखना चाहिए। गरमियों में दूध अँधेरे और ठंडे पानी में रक्खा जाय। जिस कपड़े से एक बार दूध छान लिया जाय, उसे बिना उबलते पानी से धोए दूसरी बार दूध छानने के काम में न लाना चाहिए।

दूध में प्रायः जितने प्रकार के कीटाणु होते हैं, तेज़ आँच पर उनमें से बहुसंख्या की मृत्यु हो जाती है। १५० डिगरी फ़ारनहीट टेंपरेचर पर आध घंटा दूध रखने से प्रायः सब प्रकार के रोग उत्पन्न करनेवाले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इसलिये दूध की स्वच्छता में तनिक भी संदेह होने पर उसे गरम कर लेना चाहिए। अधिक देर तक रखने के लिये भी दूध को गरम करके ठंडा कर लेना उचित है, परंतु बहुत तेज़ आँच पर बहुत-से उबाल देना ठीक नहीं। ऐसा करने से उसके विटेमिन और रासायनिक तत्त्वों का कुछ अंश जलकर दूध की पोषण-शक्ति कम हो जाती है। सबसे उत्तम यह है कि एक बड़े बरतन में पानी भरकर उसके अंदर एक दूसरे बरतन में दूध रख दिया जाय। तब नीचे इतनी आँच दी जाय कि दूध की टेंपरेचर १४५ से १५० डिगरी फ़ा० तक पहुँच जाय (पानी उबलने का टेंपरेचर २१२ डिगरी होता है)। इस टेंपरेचर पर आध घंटा दूध गरम होने दिया जाय, तब उसे एकदम उतारकर ठंडा कर लिया जाय। इस प्रकार गरम किया हुआ दूध पैस्च्राइज़्ड कहलाता है, और पीने के लिये सब प्रकार से सुरक्षित होता है। इस दूध में उसके रासायनिक तत्त्व और विटेमिन भी बहुत कम नष्ट होते हैं। ऐसा दूध ठंडे स्थान पर रखने से २४ घंटे तक बिलकुल ठीक रहता है।

प्रारंभ में ही कहा जा चका है कि योरप और अमेरिका में उत्तम प्रकार का दूध पैदा करने के लिये विशेष प्रयत्न किया जाता है। उन देशों में दूध की शुद्धता, निर्मलता और स्वच्छता पर पूरा-पूरा ध्यान रहता है। सरकार द्वारा दूध के कई ग्रेड नियत हैं। सबसे उत्तम दूध की परिभाषा नीचे दी जाती है—

"ऐसा दूध—जो क्षय-रोग से रहित क्षय-रोग के टूस्ट द्वारा जाँच किए गए और वर्ष में तीन बार वैट्टीनरी सरजन द्वारा परीक्षा किए जानेवाले पशुओं का हो, लोकल अधिकारियों की पाबंदियों के अनुसार पैदा किया गया हो, और तुरंत ठंडा करके फ़ार्म के ऊपर ही बोतलों में भरा गया हो (बोतलें विशेष तौर पर मोहरबंद और लेबल लगी हुई हों), जिसमें कीटाणुओं की संख्या ३०,००० प्रति क्यूबिक सेंटीमीटर (२० बूँद के बराबर) से अधिक न हो, और कोली फ़ार्म (अँतड़ियों में पाए जानेवाले) कीटाणु क्यूबिक सेंटीमीटर के दसवें भाग में बिलकुल विद्यमान न हों, जिसमें चिकनाई की मात्रा ३·५ प्रतिशत से किसी प्रकार कम न हो।" — सर्टीफ़ाइड कहलाता है, मारकेट में इसका मूल्य सबसे अधिक बैठता है।

भारतवर्ष में दुर्भाग्य से इन सब बातों की ओर किसी का भी कुछ ध्यान नहीं। सरकार और म्युनिसिपल-कमेटियाँ भी कार्य-रूप में इस संबंध में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुछ विशेष नहीं कर रही हैं। दूध की स्वच्छता और निर्मलता का तो कहना ही क्या, विशुद्ध, बिना पानी मिला, दूध मिल जाना भी इस देश में बड़ी ग़नीमत समझना चाहिए। दूध के नाम पर आज यहाँ के शहरों में जो कुछ बिक रहा है, उसकी जाँच करने पर दूध पीने से ही घृणा होने लगती है। ऐसी दशा में दूध ख़रीदने अथवा पान करनेवालों का ही कर्तव्य हो जाता है कि वे इस बात का ध्यान रक्खें कि जो कुछ वे ले और पी रहे हैं, वह उनके लिये किसी प्रकार भी हानिकर न होकर स्वस्थ और जीवन देनेवाला पदार्थ हो।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—

'गोनोकिलर'

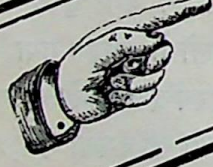

[रजिस्टर्ड]

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता।

डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

छाया की बात

[श्रीयुत इंद्रा एस्० मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(१)

मुझे लोग कहते थे छाया—कुमारी छाया। मैं अपने जीवन के सोलह बसंत पार कर चुकी थी। सत्रहवाँ लगा था। इसी साल मैंने सेकेंड क्लास में आई० ए० पास करके विद्यालय में बी० ए० ज्वाइन किया था। कहना न होगा, मैं बहुत सुंदर थी। चंपई रंग, पतले होंठ, रेशमी बाल, लड़कों के शब्दों में 'ग़ज़ब की आँखें', माथे पर एक छोटी - सी बिंदी—यौवन का उल्लास, अल्हड़-पन, चंचलता। युनिवर्सिटी में आते ही मेरी शोहरत हो गई। रेस्टराँ में, होस्टल के कमरों में, फ़ील्ड में अक्सर मेरी ही चर्चा छिड़ी रहती।

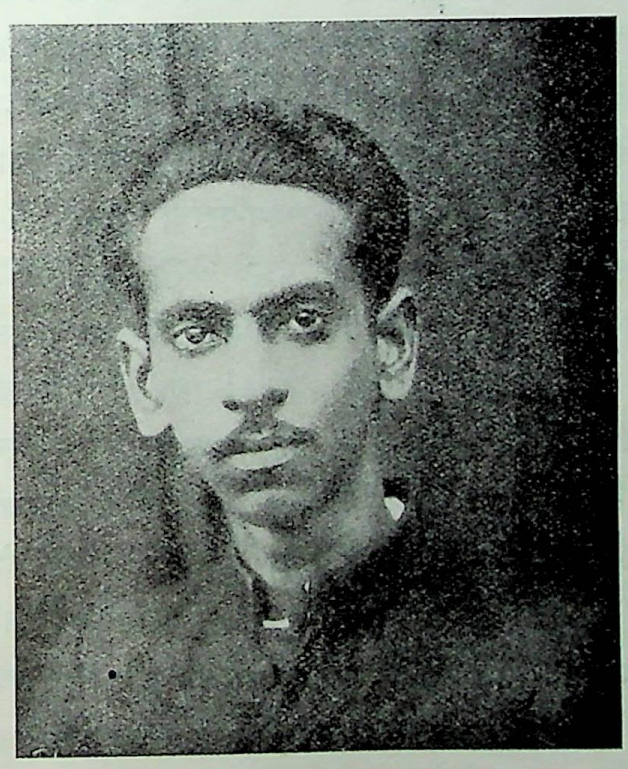

श्रीयुत इंद्रा एस्० मिश्र बी० ए० एल्-एल्० बी०

मैं रोज़ नई क़िस्म की साड़ियाँ बदलती। जो साड़ी पहनकर आज युनिवर्सिटी जाती, वह कहीं दो महीने बाद 'रिपीट' होती। पैरों में कभी पाँच नंबर का ज़नाना बाटा, कभी मख़मली चप्पल, कभी कामदार नागरा और कभी ऊँची एँड़ी का 'लेडीज़ शू'। जब मैं प्याज़ी रंग की बनारसी साड़ी और उसी से 'मैच' करता हुआ रेशमी जंपर पहनकर कार पर युनिवर्सिटी पढ़ने जाती, सब लड़के मेरी तरफ़ देखते, मैं मन-ही-मन बड़ी ख़ुश होती। कभी 'सीरियस' बनी हुई त्योरियाँ चढ़ाए रहती, कभी यों ही किसी की तरफ़ तिरछे देखकर मुस्किरा देती। लोग कहते, छाया बड़ी शोख़ लड़की है। मुझे बड़ा 'नाज़' था अपने ऊपर।

जब मैं पुस्तकालय जाती, तो कितने मनचले लड़के सिर्फ़ मुझे देखने के लिये लाइब्रेरी जाते, मुझे 'फ़ालो' करते। विद्यालय में भाषण, वाद-विवाद या और कोई उत्सव होता, जिसमें लड़कियों की और ख़ासकर मेरे आने की संभा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बना होती, उस दिन बड़ा 'रश' होता। मेरी वहाँ की उपस्थिति लेक्चर के आकर्षण से कहीं बढ़कर थी। अगर मैं किसी दिन रिजेंट सिनेमा देखने जाती, और इत्तिफ़ाक़ से विद्यालय के मेरे चाहनेवाले भी वहाँ उपस्थित रहते, तो वे मेरे ही क्लास का टिकट ख़रीदकर मेरे पास अग़ल-बग़ल बैठने का प्रयत्न करते। मैं मन-ही-मन उन लोगों की हरकतों पर हँसती। यूनियन का इलेक्शन होता, तो कितने 'कनवेसिंग' करने के बहाने ही मुझसे मिलने की कोशिश करते; और कुछ नहीं, तो सिर्फ़ एक बुकमार्क या पैंफ़लेट ही थमाकर चले जाते। क्लास में लड़के मेरे सामने ही वाली 'सीट' पर बैठना चाहते। मैंने ख़ास तौर पर मार्क किया था कि वे ख़ूब टिपटाप रहते। मैं ऊपर से तो कुछ खिंची रहती, उन लोगों की तरफ़ न देखती, लेकिन कनखियों से सब बातों का पता रखती। क्लास में मैं स्थिर भी न रह सकती। रह-रहकर बैठने का 'पोज़' बदला करती। अक्सर साड़ी सिर से खिसक जाती, पैर हिलते रहते, कभी अपनी उँगलियाँ फोड़ती, प्रोफ़ेसर साहब लेक्चर देते रहते, और अगर मेरी तबियत 'नोट्स' लिखने में न लगती, तो बग़लवाली साथी को उँगलियों से गोदती।

क्या जीवन था!

(२)

जब मैं ४-५ साल की थी, तभी मेरी का देहांत हुआ। मेरे पापा ममी के विषय में दुखी होकर कहते—"ईश्वर की मर्ज़ी थी, कोई क्या कर सकता था। ख़ैर, मेरे लिये तो छाया ही बहुत है।" पापा मुझे बहुत चाहते थे—बेहद। मुझे किसी बात की कमी न थी, न परवा। हाँ, कभी-कभी मुझे अपने जीवन में एक अभाव-सा प्रतीत होता। मैं काफ़ी सयानी हो चुकी थी। मैंने सुना, मेरी शादी ठीक हो रही है। शादी?... मुझे बड़ा कुतूहल हुआ। प्रत्येक अविवाहित युवती की इच्छा होती है कि उसे अपने 'मनलायक़' जीवन-साथी मिले। मैं सोचती—'वह' न-मालूम कैसे होंगे? शादी हो जाने के बाद मैं सुश्री से श्रीमती हो जाऊँगी। मेरे भी बच्चे होंगे। मैं मा कहलाऊँगी।...लड़का होगा, तो उसका नाम रक्खूँगी 'प्रेम'..., और अगर लड़की हुई, तो उसका नाम 'आशा'। अगर 'वह' दूसरा नाम रखना चाहेंगे, तो ज़िद करके अपनी ही चाली करूँगी।...फिर तो अपने 'उनके' लिये भी 'मफ़लर' और 'पुलओवर' बुनूँगी, बच्चों के लिये 'मोज़ा' और 'गुलूबंद'।...शी शी हैंअ... क्या सोच रही हूँ! मैं स्वयं झेंप जाती।

दिसंबर का महीना था। युनिवर्सिटी क्रिसमस की छुट्टियों में बंद हो चुकी थी। पापा ने मुझसे कहा—"मेरे मित्र का लड़का यहाँ 'पी० सी० एस्०' के लिये आनेवाला है। लखनऊ-युनिवर्सिटी का फ़र्स्ट क्लास एम्० ए० है। वहाँ 'लॉ' में पढ़ता है। हमारे ही यहाँ ठहरेगा।" मुझे कुछ दिलचस्पी हुई। मैंने सोचा, चलो अच्छा है, एक शग़ल रहेगा, उनसे कुछ बातें होंगी। मैं उत्सुकता से उनकी राह देखने लगी। पहली को, दस बजे दिन, वह आए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पापा ने उनका स्वागत किया। ड्राइंग-रूम में बैठकर कुछ देर बातें होती रहीं। पापा ने मुझे बुलाया। मैं सफ़ेद, बूटेदार साड़ी पहने 'लेडीज़ होस्टल' जाने को तैयार थी। मेरी सहेलियों ने मुझे नए साल के उपलक्ष में खाना खाने के लिये निमंत्रित किया था। पापा ने उनका मुझसे परिचय कराया। कुमार उनका नाम था। लखनऊ में उनके पिता सब-जज थे। मैंने उनकी तरफ़ देखा। उन्होंने मुझे देखकर नमस्ते किया, आँखें चार हुईं। मुझे देर हो रही थी, मैंने जाने के लिये क्षमा माँगी। शोफ़र कार लिए तैयार था। मैं कार पर बैठकर चल दी। मैं बैठी-बैठी सोचने लगी, बेकार के लिये जा रही हूँ। अच्छा तो यह होता कि कोई बहाना कर देती। तबियत में आई कि मोटर घर के लिये घुमवा दूँ। फिर सोचा, पापा से क्या कहूँगी? ख़ैर। अभी तो वह कुछ दिन रहेंगे। जल्दी क्या है। लौटकर आने पर बातें होंगी। मैं सोचने लगी, वह काफ़ी अच्छे हैं। दोहरा-सा बदन, बड़ी आँखें, 'क्लीन शेव्ड', 'ग्रे पैंट' और उस पर 'चेक' का रोलदार कोट, मुस्किराता हुआ चेहरा····। वह मुझे बहुत पसंद आए·····। मैं सोचनें लगी, नहीं, इन्हीं से मेरी···। मैं 'ब्लश' कर गई। इतने में 'लेडीज़ होस्टल' आ गया। मैंने शोफ़र से तीन बजे कार लाने के लिये कहा।

मुझमें न-मालूम क्यों सुस्ती आ गई। मेरी स्वाभाविक चंचलता, रोज़ की मुस्कान, लड़कियों को बरबस छेड़ने की आदत आज न-मालूम कहाँ चली गई। मैं सहेलियों से बातें तो ज़रूर कर रही थी, लेकिन मेरा ध्यान कुमार की तरफ़ था। खाना बहुत अच्छा था। कई प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बने थे—पापड़ का हलुवा, टमाटर की पकौड़ी, पित्तपापड़े की चटनी। बहुत 'वेराइटी' थी, पर मैंने थोड़ा ही खाया।

लोगों ने मुझसे गाना गाने और वीणा बजाने के लिये आग्रह किया। मैंने कहा—"मेरा बिलकुल 'मूड' ही नहीं है।" उन्होंने न माना। कहा—"छाया, देखो, ये नख़रे किसी दूसरे से करना। गाना न गाओ, तो कम-से-कम वीणा तो बजाओ।" लाचारी थी, मेरी वीणा, उसके बाद कुमारी आर० देशिया का संगीत, लता का वायलीन और सरला का हारमोनियम हुआ। फिर विद्यालय के लड़कों की आलोचना में समय व्यतीत हुआ। तीन बजे, मैं चल पड़ी। लोगों ने रोका। कहा—"ऐसी जल्दी क्या है? बैडमिटन खेलकर साढ़े पाँच तक जाना।" मैंने कहा—"नहीं, पापा मेरा 'टी' के लिये इंतिज़ार करेंगे।"

मैं कार ख़ुद 'ड्राइव' करती हुई 'बैंगलो' पहुँची। कुमार बाहर के कमरे में लेटे हुए अख़बार देख रहे थे। मोटर की आवाज़ होने से वह बाहर देखने लगे। कार से उतरते समय मेरी साड़ी सिर से खिसक गई। मैंने उनकी तरफ़ देखा। मेरे होठों पर अपने आप मुस्किराहट आ गई। उन्होंने भी मुझे देखकर मुस्किरा दिया। मैं सीधे अपने कमरे में चली गई। पापा सो रहे थे। मैंने सबके पहले जाकर अपने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कपड़े बदले। मेरी तबियत नहीं लग रही थी। यौवन की चंचलता ! मन कर रहा था कि कुमार से जाकर मिलूँ, उनसे कुछ बातें करूँ। मैंने अपने को बहुत रोका। कुछ उलझन-सी मालूम हो रही थी। उपन्यास ले पढ़ने बैठी। तबियत ही न लगी। किसी तरह चार बजने को हुए। पापा सोकर उठे। चाय पीने के लिये बुलाया। कुमार का भी बुलाया। पापा और कुमार बेकारी की समस्या और 'सोशलिज्म' पर बातें करने लगे। मैं चुपचाप बैठी सुन रही थी। कभी-कभी कनखियों से कुमार की तरफ़ देख लेती। बीच में सिर्फ़ एक दफ़ा कुमार से उनके प्याले में चाय डालने के पहले पूछा—"आप चाय में कै स्पून सूगर पीते हैं?" "टू ऐंड हाफ़।"

'टी' के बाद पापा टेनिस खेलने क्लब चले गए। कुमार से मुझसे बातें होने लगीं। उन्होंने मेरा 'कामबिनेशन' पूछा। बी० ए० में क्या-क्या मैंने 'ऑफ़र' किया है? किन बातों की मुझे 'हॉबी' है? क्रासवेट और इलाहाबाद-युनिवर्सिटी की 'लाइफ़' कैसी है? मैंने भा उनसे कैनिंग कालेज और इज़ाबेला थॉबर्न कॉलेज के बारे में तरह-तरह की बातें पूछा। पी० सी० एस्० की तैयारी कैसी है? इसके बाद मैंने उन्हें अपनी लाइब्रेरी दिखलाई। बड़ी देर तक पुस्तकें देखते रहे। कुछ इधर-उधर की बातें होती रहीं। वह मुझे इस समय बहुत अच्छे लगा रहे थे। ढीली मोहरी का पाजामा, आधी बहाँ की सिल्क की क़मीज़, और उस पर काश्मीरी दुशाला उन्हें बहुत जँच रहा था।

दूसरे दिन हमारी युनिवर्सिटी खुली। उनका भी पहला 'ऐसे' का 'पेपर' था। मैं युनिवर्सिटी तो गई, लेकिन मेरी तबियत नहीं लग रही थी, क्यों?.....प्रोफ़ेसर लेक्चर दे रहे थे, मैं कुमार के बारे में सोच रही थी। मेरी सहेलियों ने मुझे टोका भी—"छाया, तुम आज इतनी चुप क्यों हो? बात क्या है? तुम्हारे में आज कुछ 'चेंज' मालूम पड़ रहा है।" मैंने बात बनाई, कहा—"कुछ नहीं, यों ही तबियत ठीक नहीं है।" युनिवर्सिटी के बाद मैंने 'म्युज़िक क्लास' भी नहीं 'अटेंड' किया। घर चली आई। कुमार अभी तक नहीं लौटे थे। कार उन्हें लाने के लिये गई। मैं उनका इंतिज़ार करने लगी। इतने में साढ़े पाँच बजे। मेरे म्यूज़िक-मास्टर आए। सिर-दर्द का बहाना करके इन्हें धता बताई। पापा क्लब गए हुए थे। ६ बजे कुमार आए। मैंने पूछा—"आपने परचा कैसा किया?" "'ऐसे' और 'जेनरल नॉलेज' अच्छा हो गया, उम्मीद है, ६५% मिल जायगा।" 'टी' वी पीने के बाद बहुत देर तक बैठे हुए बातें करते रहे।

तीन ही चार रोज़ में हम लोग काफ़ी हिल-मिल गए, जैसे वर्षों की मुलाक़ात हो। उस दिन शाम को उन्होंने मुझसे वीणा बजाने को कहा। यद्यपि मेरी तबियत वीणा बजाने को कह रही थी, किंतु मैंने कहा—"कल आपका 'पेपर' है, आपको पढ़ना चाहिए।" उन्होंने उत्तर दिया—"भला शाम भी कोई पढ़ने का समय है, इसके अलावा पेपर-वेपर तो होता ही रहता है।" उन्होंने दीवार पर से टँगी हुई वीणा उतारी,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसकी खोली निकाली, और वीणा मेरे हाथों में थमा दी। मैंने बड़ी नफ़ासत के साथ वीणा बजाना शुरू किया। मैं सोफ़े पर बैठी थी, वह मेरे सामने कुर्सी पर बैठे थे। मेरी आँखें उन्हें देख रही थीं। मेरे हाथ वीणा के तारों पर चल रहे थे। वह भी मेरी तरफ़ एकटक देखते रहे। मैं स्वयं न समझ सकी कि मैं हर रोज़ से कहीं अच्छा वीणा क्यों बजा रही हूँ। मैं पूरे आध घंटे तक वीणा बजाती रही। फिर मैंने वीणा रख दी।

उन्होंने कहा—"सुंदर, बहुत सुंदर। छाया, तुमने तो कमाल कर दिया। तुम्हारी वीणा की झंकार सुनकर मैं तो दूसरे ही संसार की कल्पना कर रहा था। मैं तो अपने को जैसे भूल-सा गया।" वह कुर्सी से उठकर, सोफ़े पर आकर मेरी बग़ल में बैठ गए। मेरे कोमल हाथों को अपने दोनो हाथों में लेकर दबाते हुए, मेरी तरफ़ दृष्टि गड़ाकर, उन्होंने कहा—"छाया, तुम कितनी सुंदर हो, यह कदाचित् तुम नहीं जानतीं!"

स्त्री के लिये उसके सौंदर्य की प्रशंसा! कितनी बड़ी जीत है। उनकी आँखों में एक अजीब 'नशा' था, बोली में मादकता। मेरे शरीर में जैसे बिजली दौड़ गई। मैं मदहोश थी..... ...।

(३)

उस दिन रात-भर मुझे नींद न आई। इधर-उधर करवटें बदलती रही। रह-रहकर शाम की बात, वीणा की झंकार और कुमार याद आते। मैं तरह-तरह की बातें सोचती। मैं क्या थी, क्या से क्या हो गई! मेरा सारा घमंड कहाँ गया? मेरी सुंदरता! उफ़्! अगर मैं सुंदर न होती, तो अच्छा था; अगर मुझे वीणा बजाना न आता, तो कितना अच्छा था! मुझे बड़ा दुःख हो रहा था। भीतर जैसे एक ज्वाला जल रही हो। मैं और मेरा इतना अधःपतन! एक दिन में—कुछ मिनटों में। पापा का मेरे ऊपर कितना विश्वास था! मैंने अपने से अपने को धोखा दिया। मैं अपने को कहाँ से समझाऊँ? मेरे हृदय में उथल-पुथल मचा था। मैं मारे शर्म के, लज्जा के दबी जा रही थी। मैंने कितनी उच्छृंखलता की!

सब लोग सो रहे थे। मैं सिसक-सिसककर रो रही थी। मुझे कुमार के ऊपर क्रोध आ रहा था। उन्होंने मेरे जीवन की शांति भंग कर दी। लेकिन उनका क्या दोष था? दोष तो अपना ही था। मैंने ही तो उनसे संपर्क बढ़ाया।

दूसरे दिन मैं बहुत शर्माई हुई थी। सुबह बहाना करके पापा के साथ चाय न पी। कुमार ने भी नाश्ता अपने कमरे ही में मँगवाया। मैं युनिवर्सिटी पहुँची, तो मुझे सब बातें नई मालूम हो रही थीं। हर समय 'सेल्फ़-कॉनशस् फ़ील' कर रही थी। मुझमें कितना परिवर्तन था!

कुमार मुझसे मिलने की कोशिश करते, लेकिन मैं न मिलती। न-जाने क्यों मुझे अब उनसे मिलने में हिचक मालूम होती। मैं कुछ झेंपती। एक दिन, दो दिन ऐसे ही चलता रहा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तीसरे दिन उनका 'पेपर' था, लेकिन वह न गए। जब मैं विद्यालय से लौटकर आई, मैंने देखा, उनकी हालत अजीब है। उन्होंने मेरा नाम लेकर पुकारा। मैंने उत्तर ही न दिया। पापा ने शाम को मुझे बतलाया—"कल कुमार के दो परचे बिगड़ गए थे, इसीलिये आज वह परीक्षा देने नहीं गया। मैंने कितना समझाया। कहने लगा, बैठना बेकार है। आज रात को लखनऊ वापस जा रहा है। उसके आने की बड़ी उम्मीद थी। बड़ा 'ब्रिलिएंट कैरियर' था। हमेशा 'फ़र्स्ट क्लास'...।"

उस दिन रात को वह सचमुच चले गए। मुझे अपने कमरे में कुमार का पत्र मिला। उन्होंने लिखा था—

"...मैंने तुमसे प्रेम करके बड़ी भारी ग़लती की। स्त्रियों का कभी विश्वास न करना चाहिए। तुम इतनी कठोर निकलोगी, इसकी मुझे स्वप्न में भी आशंका न थी। जो छाया मुझसे बातें करने में अपना सौभाग्य समझती थी, उसी की तरफ़ से आज इतनी उपेक्षा, इतनी उदासीनता! मैं इस कठोर सत्य पर विश्वास नहीं करना चाहता, फिर भी करना ही पड़ता है। तुम मेरे लिये एक विचित्र पहेली हो। तुमने मुझे एक सबक़ सिखलाया, जो मैं अपने जीवन में कभी नहीं भूल सकता। बस।"

पत्र पढ़ा। मैं उन्हें कोस रही थी। वह उल्टे मुझे दोषी बना रहे थे। दोषी कौन था? वह या मैं? या दोनों। शायद...।

मेरी तबियत किसी बात में न लगती। बेकार बातें सोचा करती। मैं करती कुछ, लेकिन मेरा ध्यान दूसरी तरफ़ रहता। सिर में अक्सर दर्द रहता। मेरी चंचलता बिलकुल लोप हो गई थी। अब मैं गंभीर रहती—अधिकतर मौन। कम बोलती, मेरी तबियत ठीक नहीं रहा करती। कुमार के बारे में सोचा करती। मैं दिन-पर-दिन दुबली होती जा रही थी। खाना कम खाती। वह भी बिना मन के। पापा पूछते—"तुम्हारी तबियत कैसी है छाया?" मैं कहती—"मैं बिलकुल अच्छी हूँ।" मेरी सहेलियाँ पूछतीं—"तुम्हें क्या हो गया है छाया?" मैं जवाब देती—"मुझे हुआ क्या है? अच्छी तो हूँ।" वे खोद-खोदकर पूछतीं। मैं डाँट देती। वे चुप हो जातीं। मेरी हालत धीरे-धीरे चिंता-जनक होने लगी। मीठा-सा 'टेंपरेचर' रहता—'नाइंटी नाइन'। पापा ने मुझे सिविल सर्जन को दिखलाया। पता नहीं, उसने क्या कहा। पापा मेरा इलाज कराने लखनऊ ले गए। चिकित्सा होने लगी। डॉक्टर लोग यह न बता सके कि मेरी बीमारी क्या थी। ज्यों-ज्यों दवा देते गए, मर्ज़ बढ़ता गया।

(४)

मैंने सोचा, कुमार ने ज़रूर सुना होगा कि मैं यहाँ हूँ, बीमार हूँ, लेकिन इतने दिन हो गए, वह मुझे देखने के लिये आए नहीं। उनके पिता सब-जज साहब तो आए थे। मैंने सुना, वह इँगलैंड जा रहे हैं—डॉक्टरेट के लिये। मुझसे मतलब। वह मेरे कौन? आजकल मुझे

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ममी की बहुत याद आती। उनका चित्र मेरे सामने खिंच जाता। मैं अजीब तरह के सपने देखती। मुझे उन्माद-सा हो गया था। मैं अक्सर प्रलाप किया करती। कभी ऐसा मालूम होता, मेरे जीवन का अंतिम समय क़रीब आ गया है। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है। पापा बेचारे सिर पर हाथ रक्खे रो रहे हैं। मैं इस संसार से चलने की तैयारी कर रही हूँ। मैं कहती, पापा, आप रो क्यों रहे हैं। मेरे लिये मत रोइए, मत रोइए। मैं तो ममी के यहाँ जा रही हूँ। मुझे जाने दीजिए, वह मुझे बहुत चाहती थीं। अपने यहाँ बुला रही हैं। न हो, आप भी चलिए। हम लोग साथ ही चलेंगे। ...नर्स, तुम मेरी तरफ़ इस तरह मत देखो। मैं तुम्हारी दया और सहानुभूति नहीं चाहती। मुझे डर नहीं लगेगा। मैं अकेली चली जाऊँगी। मेरी आँखें खुलतीं, तो मुझे कमरे के चारो तरफ़ कुमार-ही-कुमार दिखलाई देते। उनके मुख पर व्यंग्य की हँसी रहती, फिर एकदम अट्टहास होता, कमरा गूँज जाता। मैं नर्स से पूछती। देखो, कैसी आवाज़ आ रही है। तुम्हें सुनाई नहीं दे रहा है। कैसे सुनाई देगा। अरे, मैं तो बिलकुल भूल गई। तुम तो बहरी हो न।...पापा बेकार मुझे इतने डॉक्टरों को दिखलाते हैं। ये सब डॉक्टर बुड्ढे, .खुर्राट हैं, सिर्फ़ फ़ीस लेना जानते हैं। पापा तो व्यर्थ रुपया ख़र्च कर रहे हैं। मैं जिस दिन चाहूँगी, एकदम अच्छी हो जाऊँगी।...पापा से सब धीरे-धीरे बातें करते हैं। मैं सब समझती हूँ। वे पापा से कहते हैं, इसे 'थाइसिस' हुई है। पहाड़ पर ले जाइए। समुद्र के किनारे ले जाइए। मुझसे छिपाना चाहते हैं। लेकिन मैं जानती हूँ कि मुझे 'थाइसिस' नहीं है।...चश्मावाला डॉक्टर अँगरेज़ी में फुस-फुस बातें करता है। कहता है, मुझे मानसिक 'एक्साइटमेंट' हो गया है। 'डेलीरियम' का 'केस' है। शायद दिमाग़ ख़राब हो जाय। मैं मन में उसकी बेवक़ूफ़ी पर हँसती हूँ। मेरा इलाज करने चला है। कहता है, मेरा दिमाग़ ख़राब हो जायगा। दिमाग़ ख़राब हो उसके बाप-दादों का। पहले अपना तो इलाज कर ले!...इतने दिनों से मैं युनिवर्सिटी नहीं गई। मेरी सहेलियों से मुलाक़ात नहीं हुई। वे मुझे ज़रूर याद करती होंगी। ख़ासकर बैडमिंटन खेलने के समय कि छाया होती, तो अच्छा होता...। मैंने इतने दिनों से वीणा भी नहीं बजाई। मैं अपनी वीणा तो छोड़ आई हूँ। पापा से कहूँगी, मेरी वीणा मँगवा दें। मैं वीणा बजाऊँगी। लेकिन क्या मेरी उँगलियाँ वीणा के तारों पर चल सकेंगी। कोशिश करूँगी।... मेरे 'क्लास-फ़ेलो' भी मुझे याद करते होंगे। प्रोफ़ेसर साहब रोज़ क्लास में हाज़िरी लेते होंगे, और मैं रोज़ ग़ायब, ख़ूब 'ऐबसेंट' लगता होगा।...सबमें सरला ही मुझे बहुत चाहती थी। वह मुझे ज़रूर याद करती होगी, तभी न कभी-कभी हिचकी आती है। उसने मेरे पास एक पत्र भी तो नहीं लिखा। लिखती कैसे? उसे मेरा लखनऊ का पता भी तो नहीं मालूम। लड़के बेचारे रोज़ मेरी 'कार' की इंतिज़ारी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

करते होंगे, लेकिन उन्हें रोज़ निराश होना पड़ता होगा। वह बेचारा मोटर - साइकिलवाला तो मेरे लिये तबाह था। इसीलिये लड़के उसे बहुत बनाते। मेरे सामने उसके ऊपर जुमले कसते...। उसकी शादी तो हो गई है। उसकी 'वाइफ़' मुझसे कहीं खूबसूरत है, लेकिन न-मालूम क्यों मैं उसे बहुत अच्छी लगी। तभी तो...मैं इम्तिहान देने लायक़ नहीं हूँ। कितनी कमज़ोर हो गई हूँ। छमाही में नंबर तो अच्छे मिले थे। पापा से कल ज़रूर कह दूँगी कि डॉक्टर का 'सर्टिफ़िकेट' भेज दीजिए। शायद 'प्रोमोशन' मिल जाय।...मेरी नर्स बड़ी अच्छी है। बेचारी मेरे लिये कहती थी कि पापा ने मेरी शादी कोई सब-जज साहब के साहबज़ादे हैं, उन्हीं से ठीक की थी। बीमारी की वजह से न हो सकी। कहने लगी, आप जल्दी से अच्छी हो जायँ, तो आपकी शादी होगी। मुझे भी अपनी शादी में बुलाइएगा। मैं ज़रूर आऊँगी। कितनी पगली है वह—भोली।.....पापा मेरी शादी ठीक करते,...वह भी साहबज़ादे से...और मुझे पता न चलता।...मैं तो शादी करूँगी ही नहीं। शादी करके क्या होगा। बेकार है।...और, अब मुझे ज़्यादा दिन रहना भी तो नहीं है। कुछ दिनों की और मेहमान हूँ।....क्या सचमुच मेरा अंत हो जायगा ? इतनी जल्दी....तब तो मेरा नाम भी क्लास के 'रजिस्टर' से कट जायगा ··। 'लीडर' में निकलेगा—रायसाहब का एक-मात्र लड़की कुमारी छाया का, जो स्थानीय विद्यालय में पढ़ती थी, देहांत हो गया ! सब लोगों को मालूम हो जायगा।....मेरे लिये कम-से-कम सरला तो ज़रूर रोएगी। लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। अभी मेरी उम्र ही क्या है।··· मैंने सरला से वादा किया था कि मैं उसे वीणा बजाना सिखला दूँगी। उसकी कुछ किताबें मेरे पास हैं। उन्हें लौटाना है। दूसरे साल वह 'ड्रामा' के 'सेक्रेटरीशिप' के लिये खड़ी होगी। मुझे उसे 'वोट' देना होगा। वह कहती थी, छाया, मैं तुम्हें ही 'मेन रोल' दूँगी। तुम तो ग़ज़ब का अभिनय करोगी। सब-की-सब यही कहती थीं। उन सबों को क्या मालूम कि मैं जीवन में सच्चा अभिनय कर रही हूँ। .....नर्स ! नर्स !! क्या है ? कौन है ? कोई मिलना चाहता है। मुझसे ? कह दो, मैं नहीं मिलूँगी। मेरा इस विश्व में है ही कौन ? क्या ? क्या कहा—वह मुझे जानते हैं। जानते होंगे। जानने के लिये तो मुझे कितने जानते हैं, पर मैं तो उन्हें नहीं जानती।...बड़े भलेमानुस हैं ! होंगे अपने घर के लिये, मैं नहीं किसी से मिलूँगी।...पापा, डॉक्टर आ रहे हैं। आने दो। ये लोग मेरी जान नहीं छोड़नेवाले। डॉक्टर साहब मुझे देख सकते हैं, लेकिन मैं उनकी दवा नहीं पिऊँगी।.....गरमी में बिजली का पंखा मना कर दिया, यह कहाँ की अक़्लमंदी है। मुझे बड़ा अनकुस मालूम होता है। सबने सुई कोंच-कोंचकर मेरी हालत ख़राब कर दी।.....हैं ...और वह कौन है, उन लोगों के साथ ? इसका चेहरा तो कुछ परिचित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मालूम पड़ता है। इसे मैंने कहीं देखा है। याद नहीं आ रहा है, कहाँ।...हैं। य—यह तो मेरा नाम ले रहा है। क्या कह रहा है? "तुम कैसी हो? तुम्हारी तबियत कैसी है?" मेरी तबियत कैसी भी हो, उससे मतलब?..... मेरे सिरहाने बैठ गया। मेरे माथे को सुहलाने लगा,...और मैं कुछ न बोली। कह रहा है, "छाया, छाया, तुम मुझे नहीं पहचानतीं?" डॉक्टर साहब मेरी तरफ़ इस तरह देख क्यों रहे हैं? मैं सब बातें समझकर भी नहीं समझ रही हूँ। मुझे हो क्या गया है?...मेरी आँखों से न-जाने क्यों टपटप आँसू टपक रहे हैं। मेरे आँसू पोंछने के लिये शायद वह अपनी जेब से रूमाल निकाल रहा है। हाँ, सचमुच वह मेरे आँसू पोंछने लगा।.....रूमाल के किनारे लाल अक्षरों में क्या लिखा है?...आई—जे—के ... 'के' ... 'के!'...क्या कुमार?... "हाँ, छाया, तुम रो रही हो।"...तुम आ गए..."मैं आ गया छाया"...म जानती थी, तुम ज़रूर आओगे।..."मैं भी जानता था, तुम मुझे नहीं भूल सकतीं। छाया, मुझे.....जाने दो बीती बातों को.....।"

(५)

वह एक सच्चा स्वप्न था। जब मेरी आँखें खुलीं, तो मैंने देखा—पापा और डॉक्टर खड़े हुए हैं। नर्स पंखा झल रही है, और कुमार मुझसे कह रहे थे—"तुम सो रही थीं। हम लोग कितनी देर से तुम्हारा इंतिज़ार कर रहे हैं। मैं कब से तुम्हें पुकार रहा हूँ। क्या तुम कोई स्वप्न देख रही थीं.....?"

उस समय मेरी आँखों में मुस्किराहट थी।

उसके बाद कुमार रोज़ आते। धीरे-धीरे मैं अच्छी होने लगी। बिलकुल चंगी हो जाने पर मैं हवा बदलने के लिये कुमार के साथ स्विट्ज़रलैंड जा रही थी। फिर वहाँ से हम लोग विलायत जायँगे। कुमार वहीं पर 'डॉक्टरेट' के लिये 'रिसर्च' करेंगे, और मैं उनके 'रिसर्च' में सहयोग दूँगी।

अब भी मुझे अक्सर युनिवर्सिटी की बातें, लड़के-लड़कियों का 'रोमांस' और अपनी सहेलियाँ याद आ जाती हैं। लेकिन अब मैं वह पहली-जैसी विद्यालय की चहकती हुई कुमारी छाया नहीं हूँ, अब तो मुझे लोग कहते हैं श्रीमती छायादेवी।

पतन

लेखक, श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०। लखनऊ के अंतिम नवाब वाजिदअली शाह की काम-पिपासा और प्रेम-लीला का अद्भुत दिग्दर्शन। मूल्य १॥), २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भ्रष्ट-चरित्र नात्सी-नेताओं के अत्याचार

[श्रीयुत इलाचंद्र जोशी]

संसार के इतिहास में यह बात प्राचीन काल से देखी गई है कि जो नेता अपने देशवासियों को असहनशीलता का पाठ पढ़ाते हैं, और उनके आगे संकीर्ण राजनीतिक आदर्श रखते हैं, उनके चरित्रों में भी नाना प्रकार की विकृतियाँ पाई जाती हैं। जर्मनी का नात्सीवाद संकीर्ण राष्ट्रीयता का पृष्ठ-पोषक है, और उसने असहनशीलता का आदर्श जर्मनों के सामने रक्खा है। इस संकुचित राजनीतिक मतवाद के जो आचार्यगण इधर कुछ समय से योरप में विजय-पताका फहराए हुए हैं, और उन्मत्त दांभिकता के डंके की चोट से योरपवालों के कानों के पर्दे फाड़ रहे हैं, उनका यह क्षणिक उल्लास केवल उनके भ्रष्ट मनोविकार का परिणाम है।

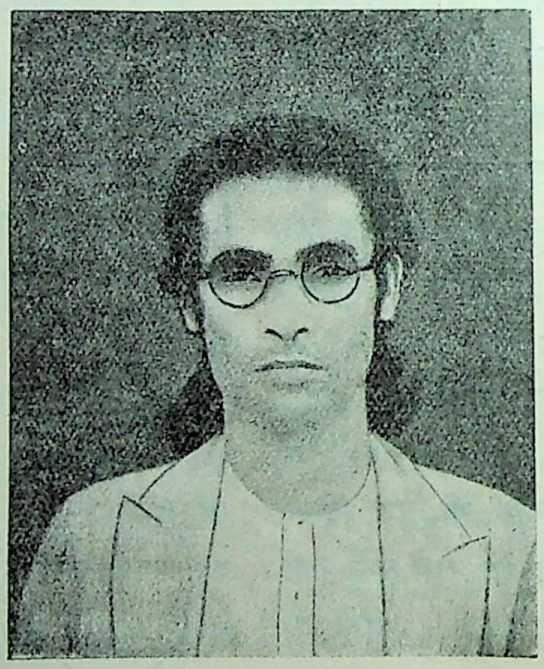

श्रीयुत इलाचंद्र जोशी

हिटलर-पंथी छल, बल तथा कुकौशल से जर्मन-शासन की बागडोर इस समय अपने हाथों में लिए हुए हैं। एक भी नात्सी-नेता आपको ऐसा न मिलेगा, जिसका आचरण प्रारंभ से ही भ्रष्ट न रहा हो, और जो गिरगिट की तरह समय-समय पर रंग न बदलता हो। निःस्वार्थ भाव से किसी एक सिद्धांत पर दृढ़ रहना नात्सी-नेताओं ने सीखा ही नहीं।

हिटलर आज यहूदियों का जानी दुश्मन बना हुआ है। पर एक ज़माना था, जब यहूदियों की दुनिया ही उसकी दुनिया थी, और यहूदियों का कृपाभिलाषी रहकर वह अपने को कृतार्थ समझा करता था। यहूदी सेठों का ऐश्वर्य-विलास तथा यहूदी रमणियों का भुवन-मोहन रूप उसे माया-मंत्र की तरह मुग्ध किए हुए था, और वह सुंदरी यहूदिनों के पैरों के तलवे चाटकर अपने को परम भाग्यशाली मानता था। धनपतियों की परम लाड़ली बेटियाँ, वे मनोमोहिनी, अलबेली यहूदी युवतियाँ उसकी खिल्ली उड़ाया करती थीं, और बंदर की तरह उसे नाच नचाती थीं। पर भ्रष्टाचारी, काम-कीट हिटलर इन बातों से भी अपने को धन्य मानता था। वह इस प्राकृतिक सिद्धांत से अपना मन समझा लेता था कि मधु-मक्खियों में जहाँ शहद होता है, वहाँ डंक भी होता है। पर दीर्घ काल तक जब रूपसी यहूदिनों के समाज में वह तिरस्कृत तथा अपमानित होता रहा, तो धीरे-धीरे उसका मन भी उसके प्रति विद्रोही होने लगा। उसके इस विद्रोह की चरम परिणति तब

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चार नए रत्न

१—फूलों की सेज

[लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०]

इस अपूर्व पुस्तक में युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक और वज्ञानिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक नई तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। अश्लीलता का लेश-मात्र नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

२—ब्रज-भारती

[लेखक, कविवर पं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०]

ब्रजभाषा-साहित्य में युगांतर करनेवाला परमोत्कृष्ट ग्रंथ है। ब्रजभाषा में नवीन शैली के छंदों और आधुनिक ढंग के विषयों का सुंदर समावेश करने का सुंदर साधन। इस काव्य ने यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा में जो लोच और लचक है, वह आधुनिक काल की उष्णता और भार को सहन कर सकती है। जो लोग ब्रजभाषा के प्रेमी हैं, वे यह प्रमाणित करने के लिये कि ब्रजभाषा अब भी जीवित-जाग्रत् तथा शक्तिशाली है, लेखक के चिर-कृतज्ञ रहेंगे। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

३—अतीत के चित्र

[लेखिका, श्रीकुमारी सुशीला आगा बी० ए०]

कुमारी सुशीला आगा बी० ए० हिंदी की प्रसिद्ध कहानी-लेखिका हैं। इस पुस्तक में आपकी ६ कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर और भाव-पूर्ण हैं। भाषा बड़ी ही सुंदर, सरस और हृदय-स्पर्शी है। घटना-क्रम और हृदय की आंतरिक वृत्तियों का ऐसा मार्मिक चित्रण हुआ है कि पढ़ना आरंभ करने पर समाप्त किए विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। नारी-सुलभ सौंदर्य एक-एक पद से विकसित हो रहा है। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

४—बिहारी-दर्शन

[लेखक, साहित्याचार्य पं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी, साहित्यरत्न]

इसमें एक सर्वथा नूतन और अत्यंत रोचक शैली से हिंदी-भाषा के पीयूषवर्षी महाकवि श्रीविहारीलाल-जी की कविता पर प्रकाश डाला गया है। इस एक ही ग्रंथ में सरसता का सागर, पांडित्य का पीयूष, काव्य की कलित कौमुदी, भाषा की भव्यता, समालोचना का सौष्ठव, मनोभावों की मनोरमता, प्रकृति-वर्णन में पूर्ण पर्यवेक्षण, भक्ति, नीति, गणित, दर्शन, ज्योतिष, राजनीति और मनोविज्ञान की मनोहर मीमांसा का जमघट देखकर आप इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा किए विना रह ही नहीं सकते। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उषा

६ सुंदर चित्रों
से सुशोभित
म नो ह र
खं ड का व्य
लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त
'कुसुम'

बाण-नंदिनी उषा और
कृष्णचंद्र के पौत्र अनि-
रुद्ध के प्रणय-परिणय
की पौराणिक कथा।

तुकांतहीन
नई शैली
चारु चरित्र-चित्रण
भव्य, ओजस्वी वर्णन।
मूल्य
॥=), १=)

लतिका

लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी
'गुलाब'

चुनी हुई
उ त्कृ ष्ट
ए क
से ए
क
अ नू ठी
मनोहर और
भाव-पूर्ण
कविताएँ।
अवश्य पढ़िए।
मूल्य
१), १॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार
३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'वीणा' क्यों पढ़ना चाहिए?

क्योंकि संत निहालसिंह लिखते हैं—

"I like the copy of the magazine .... The articles are well-written and deal with topics that greatly interest me. I congratulate your Samiti on the production."

'वीणा' मध्यभारत, राजपूताना और मध्यप्रदेश की एकमात्र उच्च कोटि की साहित्यिक सचित्र मासिक पत्रिका है। ग़रीबों की झोपड़ियों से लेकर राजा-महाराजाओं के महलों तक जाती है।

वीणा में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए

वार्षिक मूल्य ४) एक प्रति का ≡)॥

नमूने का अंक मुफ़्त नहीं भेजा जाता।

व्यवस्थापक 'वीणा', वीणा-बिल्डिंग्स, इंदौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

महाभारत-महिमा

[लेखक, पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न]

भारतीय साहित्य में महाभारत सबसे प्राचीन ग्रंथ है। हिंदुओं की आदर्श सभ्यता और संस्कृति इसी में छिपी पड़ी है।

छोटे-छोटे विद्यार्थियों में प्राचीन साहित्य की ओर अभिरुचि पैदा करने के लिये हमने ये महाभारत की कहानियाँ लिखाने की चेष्टा की है। इनके पाठ से पाठकों का जहाँ मनोरंजन होगा, वहाँ उन्हें शिक्षा भी ख़ूब मिलेगी, तथा वे प्राचीन पूज्य पुरुषों की गुण-गरिमा को समझ सकेंगे, और उनके सद्गुणों को अपने आचरण के साँचे में ढाल सकेंगे। बड़े होने पर उन्हें आदर्श और साहित्य पर श्रद्धा होगी, और वे भारतीयता को अपने जीवन का एक लक्ष्य बना सकेंगे।

मूल्य २६० पृष्ठ की पक्की जिल्द का १)

मैनेजर

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अप्राप्य पुस्तकों के नए संस्करण

आपके बच्चों के लिये

परियों का दरबार

लेखक, श्रीबाबूलाल भार्गव बी० ए०। परियों की रोचक कहानियाँ। रंगीन मुख-पृष्ठ। मूल्य ॥), ॥=)

साहसी बालक

लेखक, श्रीगुरुराम विश्वकर्मा विशारद। सरल, रोचक, वीरता-भरी कथा। मूल्य ।), ।=)

सुघड़ चमेली

लेखक, स्व० पं० रामजीदास भार्गव। बालिकाओं को सुघड़ बनाने के लिये अनुपम पुस्तक। मूल्य -), =)

परोपकारी हातिम

लेखक, श्रीज़हूरबख्श हिंदी-कोविद। हातिम की ऐतिहासिक कथा। ६-७ सादे-रंगीन चित्र। मूल्य १), १॥)

क्यों और कैसे ?

लेखक, श्रीनारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए०। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान-वृद्धि। मूल्य ।), ।=)

बाल-विलास

लेखक, श्रीगुरुराम विश्वकर्मा विशारद। सरल, विनोद-पूर्ण कविताएँ। ४० से अधिक चित्र। मूल्य ।=), राजसंस्करण ॥=)

आपकी महिलाओं के लिये

देवी शकुंतला

लेखक, अध्यापक हरिप्रसाद द्विवेदी 'श्रीहरि'। सती-धर्म और विश्व-प्रेम का जीता-जागता चित्र। कई रंगीन चित्र। मूल्य ॥), रंगीन जिल्द ॥), सजिल्द १)

मैनेजर

गंगा-ग्रंथागार

अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खेलने-योग्य नाटक और प्रहसन

आहुति या जयपाल

देश-प्रेम के भावों से ओत प्रोत ऐतिहासिक नाटक। अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। मूल्य १), १॥)

कीचक

लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०। पांडवों के अज्ञातवास का कथानक, हास्य-रस की पुट-सहित। मूल्य १), १॥)

पतिव्रता

अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। स्त्री-पुरुषों के देखने और पढ़ने-योग्य सामाजिक नाटक। दो रंगीन और दो सादे चित्र। मूल्य १।=), १॥।=)

प्रबुद्ध यामुन

लेखक, श्रीवियोगी हरि। अहिंसा, दीन-वत्सलता और भगवद्भक्त-भरा नाटक। मूल्य १), १॥)

अचलायतन

मूल-लेखक, कवींद्र रवींद्र। हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की पोल खोलनेवाला प्रहसन। मूल्य ॥), ॥=)

रावबहादुर

मूल-लेखक, मोलियर। उपाधि-व्याधि-ग्रस्त घरफूँक बहादुर का खासा खाका। मूल्य ॥।), १)

मैनेजर

गंगा-ग्रंथागार, ३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुछ नई पुस्तकें

चंद हसीनों के ख़ुतूत

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

उग्रजी की लेखनी से हिंदी-संसार काफ़ी परिचित है। यह उन्हीं की उग्र लेखनी द्वारा लिखी पुस्तक है। यह मनचले पाठकों के मनोरंजन के लिये एक तोहफ़ा है। ख़त क्या हैं सजीव चुलबुलाती घटनाओं का वर्णन है। भाषा इतनी मज़ेदार है कि पढ़ते ही बनता है। मूल्य १)

प्रेम-निकुंज

[लेखक—पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय]

यह सामाजिक उपन्यास है। इसमें समाज के पतित और उन्नत, दोनो प्रकार के जीवनों का हृदयग्राही वर्णन है। पतित मनुष्य समाज का कितना अनिष्ट कर सकता है, और उन्नत विचारों का व्यक्ति समाज का किस प्रकार हित कर सकता है, यही इस पुस्तक का मूल विषय है। मूल्य १)

घंटा

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

यह उग्रजी की नई कृति और सूझ है। फड़कती भाषा और मज़ेदार कहानियों का मज़ा लूटना हो, तो इस पुस्तक को मँगाकर एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)

जागृति

(सामाजिक नाटक)

[मूल-लेखिका—श्रीमती अनुरूपादेवी]

यह नाटक बँगला-स्टेज और स्क्रीन पर अपूर्व सफलता प्राप्त कर चुका है। हिंदी-रूपांतर में बँगलापन नहीं आने दिया गया है, और स्टेज पर खेले जाने के लिये ही लिखा गया है। प्लाट (कथानक) सामाजिक, भाषा ज़ोरदार और गाने भाव-पूर्ण हैं। मूल्य १)

गंगा-ग्रंथागार, ३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फिर छपकर तैयार हैं

हृदय-तरंग

जेम्स एलन की मशहूर पुस्तक। अनुवादक, कविवर पं० दुलारेलाल भार्गव। मन और हृदय की उन्नति का साधन। विद्यार्थी-समुदाय के पढ़ने-योग्य। पाँचवीं आवृत्ति। मूल्य ।), ॥)

सुकवि-संकीर्तन

ले०, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी। सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रयदाताओं के संबंध में परिचयात्मक लेख। सुंदर, सरल, सरस और प्रौढ़ गद्य का चमत्कार। सचित्र। मूल्य १॥), २)

मनोविज्ञान

ले०, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०। मनोविकारों, मानसिक वृत्तियों, मनोभावों तथा मनोवेगों का सूक्ष्म परिचय अतीव सरल एवं साधु भाषा में स्पष्टता-पूर्वक लिखा गया है। पुस्तक मनोरंजन और शिक्षा, दोनो का उत्तम साधन है। मूल्य ।॥), १)

देव और विहारी

ले०, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस ग्रंथ में देव और विहारी दोनो कवियों की तुलनात्मक समालोचना की गई है। अनेकों शिक्षा-संस्थाओं में स्वीकृत। भाषा बड़ी सजीव और लेखन-प्रणाली परम मनोरंजिनी। मूल्य १॥), २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हुई, जब वह एक नवयौवना यहूदी ललना के प्रेम-पाश में बुरी तरह फँस गया, और उस लड़की के माता-पिता ने यह कहकर अपनी लड़की को हिटलर से किसी प्रकार का भी संबंध स्थापित करने के लिये निषेध कर दिया कि उसकी कोई सामाजिक सत्ता नहीं है, तथा वह कुल, शील तथा वैभव में उनकी लड़की के अयोग्य है। इस अंतिम घटना से हिटलर के मन में ऐसी चोट पहुँची कि तब से इस समय तक वह उस घाव को नहीं भूला। तब से वह यहूदियों का कट्टर शत्रु बन बैठा, और उनसे उसने बदला लेने की ठान ली।

जो लोग कहते हैं कि हिटलर विशाल जर्मनी राष्ट्र के सुसंगठन तथा ऐक्य की भावना से प्रेरित होकर और यहूदियों की अंतरराष्ट्रीय मनोवृत्ति देख-कर उनका विद्रोही बना, वे बड़ी भूल करते हैं। जैसा हम पहले कह चुके हैं, हिटलर प्रारंभ में यहूदियों का कट्टर अनुरक्त था, और अंत तक वैसा ही बना रहता, यदि पूर्वोक्त घटना से उसे धक्का न पहुँचा होता। हिटलर यहूदियों का कितना बड़ा पृष्ठ-पोषक था, इस बात का पता वर्त-मान नात्सीवाद की गुंडा राजनीति के अन्यतम सर-दार तथा हिटलर के दाहने हाथ स्ट्राइखर की तत्कालीन (१९२१) उक्ति से भली भाँति लग सकता है। स्ट्राइखर उन दिनों नात्सियों का सर्वश्रेष्ठ नेता था। उसने तथा ड्रेसलर ने पैंफ़लेट के रूप में एक घोषणा-पत्र निकाला था, जिसमें कहा गया था—"अहम्मन्यता, दांभिकता तथा स्वार्थ-पूर्ण महत्त्वाकांक्षा की प्रबलता के कारण मिस्टर (हर) हिटलर वर्तमान स्थिति को पहुँचा है, वरना उसमें योग्यता नाम को नहीं। अपने पृष्ठ-पोषकों (यहूदी सेठों) की आज्ञा का पालन करता हुआ वह हम लोगों के बीच में फूट के बीज बो रहा है। वह यहूदियों तथा उनके समर्थकों के हाथ की कठपुतली बना हुआ है। उसकी राज-नीतिक चालबाज़ियाँ एकदम यहूदी-रंग में रँगी हुई हैं। हिटलर अपनी लेक्चरबाज़ी से जर्मन लोगों को धोखे में डाल रहा है।"

ये पैंफ़लेट म्यूनिच तथा न्यूरेंबर्ग में कुछ बाँटे जा चुके थे, और बाक़ी बाँटे जा रहे थे। हिटलर उस समय नात्सी-प्रकाशन-विभाग का मंत्री था। उसने तत्काल उसका प्रचार बंद करवा दिया। नाना घृणित कूट-चक्र काम में लाकर उसने ड्रेसलर को अपने दल से निकलवा बाहर किया, और स्वयं दलपति बन बैठा। स्ट्राइखर को हिटलर की यह बात बहुत नापसंद आई। उसे प्रसन्न करने में हिटलर को पूरे दो वर्ष लगे। स्ट्राइखर के बिना हिटलर का काम नहीं चल सकता था, क्योंकि वह उजड्ड और नंगा आदमी था (और इस समय भी वैसा ही है)। जब यहूदी रमणी द्वारा ठुकराए जाने के कारण हिटलर कट्टर यहूदी-विद्वेषी बन बैठा, तो स्ट्राइखर के साथ उसकी पूर्ण मित्रता हो गई, और स्ट्राइखर उसे आगे बढ़ाने के लिये कमर कसकर खड़ा हो गया।

वर्तमान हिटलरी शासन-तंत्र के युग में स्ट्राइखर ने अपने नंगेपन से जनता पर ऐसा आतंक जमा दिया कि सब उससे डरने और उसकी इज़्ज़त करने लगे। वह अद्भुत पराक्रमशील नेता तथा उद्भट मनीषी माना जाने लगा। पर वास्तव में वह एक नंगे गुंडे के अतिरिक्त न कभी कुछ था, न है। उसके पूर्व-इतिहास से बहुत कम लोग परिचित हैं। विगत महायुद्ध के समय वह बेलजियम में जर्मनों की तरफ़ से मिलिटरी अफ़सर बनकर गया हुआ था। उस अवसर पर उसने वहाँ की निस्सहाय अबलाओं पर जो अत्याचार किए, वे वर्णनातीत हैं। घोर पशु भी उस प्रकार के जघन्य कर्मों से मुँह मोड़ लेगा, यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। वह कहा करता था कि जर्मन लोग विशुद्ध आर्य-जाति के हैं, और सारे योरप पर मनमाना राज्य करना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है; वे पाप-पुण्य के परे हैं, और विजितों को दलित, निपीड़ित तथा धर्षित करने का उन्हें पूरा हक़ है। वह अकेले अपने पाशविक आचरण से संतुष्ट नहीं था। अपने साथ वह अन्यान्य अफ़सरों तथा सिपाहियों को भी नग्ननृत्य द्वारा अबलाओं को धर्षित करने, अर्थात् बलात्कार द्वारा उनका चरित्र भ्रष्ट करने, उनके घर लूटकर उनके बाल-बच्चों को अनाथ अवस्था में कुत्ते की मौत मरने को छोड़ देने के लिये उकसाया करता था। शायद पाठकों को यह संदेह हो सकता है कि यह बात हिटलर-विरोधियों ने नात्सियों को झूठमूठ बदनाम करने के लिये फैलाई है। हम यह सूचित कर देना चाहते हैं कि स्वयं स्ट्राइखर के दलवालों ने उसके इन पैशाचिक पापों का उल्लेख करके उनकी तीव्र निंदा की है। पर जर्मन लोगों की मनोवृत्ति इस समय ठीक उसी रूप में विकृत हो उठी है, जिस प्रकार विगत महायुद्ध के अवसर पर हुई थी। वे स्ट्राइखर को उसके इन दोषों के लिये निंदनीय ठहराने के बजाय उसके प्रति प्रशंसा के भाव से पुलकित हो रहे हैं। उन लोगों का कहना है कि विपक्षी राष्ट्र के आबाल-वृद्ध-वनिता के प्रति निर्मम-से-निर्मम अत्याचार करना ही उचित तथा सराहनीय है।

स्ट्राइखर स्टुर्मर - नामक जिस पत्र को संपादित तथा संचालित किया करता है, उसमें वह नात्सी-विरोधियों, कम्यूनिस्टों तथा यहूदियों को अत्यंत निर्लज्जता के साथ बेधड़क ऐसी अश्लील गालियाँ सुनाता है कि पढ़नेवालों को लज्जा से अपना सिर झुका लेना पड़ता है। हिटलर यद्यपि श्लीलता तथा सुरुचि के प्रचार का ढोंग रचता और अश्लील पुस्तकों को ज़ब्त करने का स्वाँग भरता है, तथापि स्ट्राइखर की बेहूदा बातों का खुले आम प्रचार होते देखकर भी वह एक शब्द उसके खिलाफ़ नहीं कहता, यहाँ तक कि वह अपनी आपस की बातचीत में स्ट्राइखर की अश्लील तथा उग्र गालियों पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए पकड़ा गया है। स्ट्राइखर को सिर्फ़ एक बार 'स्टुर्मर' में छपी हुई गालियों के संबंध में अदालत में हाज़िर होना पड़ा। पर चूँकि अदालत उसके पक्ष में थी, इसलिये उसे सहज में रिहाई मिल गई। उसने एक यहूदी का नाम लेकर उसके संबंध में यह लिख मारा था कि वह भले घरानों की जर्मन 'आर्य'-महिलाओं पर बलात्कार किया करता है। उक्त यहूदी ने स्ट्राइखर पर मामला क्या चलाया कि बेचारा स्वयं आफ़त में फँस गया। स्ट्राइखर ने दो-चार (ग़ैर-यहूदी) वेश्याओं को भले घरों की बहू-बेटियों के रूप में सजाकर उक्त यहूदी के विरुद्ध अदालत में खड़ा कर दिया, और शिकायत की कि उसने वास्तव में बल-पूर्वक उनका चरित्र नष्ट किया है! चूँकि प्रतिवादी एक यहूदी था, इसलिये नात्सियों के अंधेर राज्य में उसके विरुद्ध इस विषय के किसी और पक्के प्रमाण की आवश्यकता नहीं समझी गई, और उसे वह सज़ा दी गई, जिसकी तुलना में कालापानी वास्तव में स्वर्गीय सुख है।

स्ट्राइखर की लोक-प्रियता का सबसे बड़ा कारण यह था कि वह बेलाग और बेखौफ़ नंगी बातें कह जाता था, और बड़े-बड़े प्रतिष्ठित तथा समृद्धिशाली यहूदियों के पारिवारिक रहस्यों का भंडाफोड़ करने के लिये हर घड़ी तैयार रहता था। केवल यहूदियों ही नहीं, जो कोई भी जर्मन-नेता नात्सियों के विरोध में एक शब्द भी कहने का दुस्साहस करता, उसकी वह ऐसी छीछालेदर करता कि बेचारा अपना-सा मुँह लेकर रह जाता! हिटलर को अपनी आँधी का वेग सर्वत्र फैलाने के लिये ऐसे व्यक्ति की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सख़्त ज़रूरत थी, और उसने कभी उसे अपने हाथ से नहीं जाने दिया।

इससे यह न समझना चाहिए कि हिटलर अपने सहकारियों तथा सहयोगियों पर सदा इसी प्रकार की उदारता दिखाया करता है। स्ट्राइख़र को छोड़कर अन्य किसी भी सहकर्मी की ज़रा-सी भी उद्धतता वह सहन नहीं करता। उदाहरण के लिये एस्सेर को उसने उसकी साधारण-सी विरोधी मनोवृत्ति के कारण अपने दल से अलग कर दिया। एस्सेर नात्सी-दल के सृष्टि-कर्ताओं में से अन्यतम था। जब तक वह हिटलर का अंध-अनुकरण करता रहा, तब तक उसके जघन्य-से-जघन्य नैतिक आचरण के प्रति वह 'उदारता'-पूर्वक अवज्ञा प्रकट करता रहा। एस्सेर वास्तव में चरित्र-भ्रष्टता की दृष्टि से बहुत गिरा हुआ था। केवल स्त्रियों से ही उसका अनैतिक संबंध नहीं रहता था, बल्कि वह जालसाज़ी और ग़बन के मामलों में भी सिद्धहस्त था। पर हिटलर को इन बातों की कोई परवा न थी, इसलिये जब वह १६२४ में अपनी दुर्नीति के कारण दल से निकाल दिया गया, तो हिटलर ने फिर उसे ग्रहण कर लिया। जर्मनी में नात्सी तंत्र स्थापित होने पर एस्सेर बैवेरिया के राष्ट्र-मंत्री के पद पर नियुक्त किया गया। पद-वृद्धि से उसका आचरण सुधरने के बजाय और खराब हो गया। लोगों का कहना है कि उसका मकान एक खासा चकला बन गया। उसके यहाँ व्यभिचार, शराबख़ोरी और जुआ-चोरी का नंगा नाच होने लगा। हिटलर ने तब भी उससे कुछ नहीं कहा। पर अपनी मस्ती में जब एस्सेर ने हिटलर की दो-एक बातों का विरोध करना शुरू कर दिया, तो हिटलर ने उसे तत्काल पद से हटा-कर बाहर कर दिया; पर बहाना यही बताया गया कि उसका आचरण भ्रष्ट है।

स्ट्राइख़र का नैतिक आचरण एस्सेर से किसी क़दर कम भ्रष्ट न होने पर भी हिटलर उसका बाल बाँका न कर सका। इसके कई कारण हैं। एक तो वही, जो पहले कहा जा चुका है, अर्थात् हिटलर को उसकी तरह एक उजड्ड, मुँह-फट तथा नंगे आदमी की बड़ी आवश्यकता है। दूसरा यह कि स्ट्राइख़र को हिटलर की बहुत-सी ऐसी भेद-भरी बातों की पोल मालूम है, जिनके खुल जाने से हिटलर के जर्मन लोगों की दृष्टि में गिर जाने की आशंका है। हिटलर की चरित्र-भ्रष्टता की साधारण-सी बातें तो सभी को मालूम हैं, और जो बहुत-सी बातें आज तक मालूम न थीं, उन्हें उसके प्रतिपक्षी भेदिया लोग धीरे-धीरे प्रकाश में ला रहे हैं। उदाहरण के लिये एक फ्रेंच पत्र ने कुछ समय पहले इस बात पर प्रकाश डाला था कि हिटलर अविवाहित इसलिये है कि उसे अपनी असंख्य प्रेमिकाओं से छुट्टी नहीं मिलती। उक्त पत्र ने उसकी प्रेमिकाओं के नाम चित्र-सहित छापे थे। पर स्ट्राइ-ख़र को इससे भी गूढ़ रहस्यों का भेद मालूम है, जिनका प्रकाशन हिटलर के लिये घातक सिद्ध होगा।

स्ट्राइख़र इस समय जर्मनी के फ्रैंकोनिया-प्रांत का राजा बना हुआ है। उसके पास हवाई जहाज़ हैं, बढ़िया मोटरें है, शानदार कोठियाँ हैं, अपरि-मित धन है, नौकर-चाकर, सेवक-अनुचर, परि-चारिकाएँ, रँगीली, अलबेली रमणियाँ आदि भोगैश्वर्य का सभी सामान, पूर्ण मात्रा में, मौजद है। यह सब उसे नात्सियों के अंधेर राज में ऊधम और लूट-मार मचाने के फल-स्वरूप प्राप्त हुआ है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तुम और मैं

[श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत']

मैं तुमसे भिन्न न कभी देव, तुम तिमिर - श्याम, मैं हूँ अँजोर ;
मैं वसुधा हूँ, तुम विशद व्योम, है जिसे सँभाले क्षितिज - छोर।
तुम कुंभकार, मैं सरस धूलि,
तुम चित्रकार, मैं रुचिर तूलि ,
मैं हूँ सुरंग नभ का पतंग, जिसमें कि बँधी तेरी सु-डोर।
तुम प्याला, मैं रंजित हाला,
तुम कलित कंठ, मैं प्रिय माला,
तुम नील - नयन नयनाभिराम, मैं प्रेम - उल्लसित कृपा - कोर।
तुम मणि-दीपक, मैं सरस स्नेह,
तुम प्राण और मैं निपट देह ,
तुम वंशीधर, मैं वंशीवर, तुम वंशी हो, मैं राग - रोर।
तुम महानंद, मैं दुःख - मूल,
तुम हृदय और मैं प्रेम - शूल,
तुम भानु नित्र मैं विधु पवित्र, तुम विधु हो, मैं भूला चकोर।
मन हो तुम, मैं उसका विचार,
तुम उपवन, मैं उसकी बहार,
तुम अंबर, मैं घनश्याम चित्र, तुम घनश्याम, मैं मुग्ध मोर।
तुम वनिता हो, मैं अलंकार,
तुम कविता हो, मैं भाव - सार,
तुम महादेव, मैं हूँ विभूति, तुम हो विभूति, मैं लुब्ध चोर।
तुम भारत, मैं अध्यात्म पूत,
तुम काशी, मैं शिव - धर्म - दूत,
तुम निखिल सृष्टि, मैं कविता वर, तुम सरिता, मैं चंचल हिलोर।
मैं कल कलंक, तुम विमल इंदु,
तुम भाल और मैं लाल बिंदु,
तुम गणित और मैं परम शून्य, तुम परम शून्य, मैं स्वर-अँजोर।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तुम बीज परम, मैं उत्तम द्रुम,
तुम द्रुम हो, मैं हूँ सफल कुसुम,
तुम कुसुम और मैं हूँ पराग, तुम हो पराग, मैं अलि - किशोर।
तुम तत्त्व और मैं तत्त्व-मूर्ति,
तुम आशा हो, मैं मधुर पूर्ति,
मैं लुटा हुआ हूँ, व्याकुल हूँ, तुम हृदय-भूति के चतुर चोर।
मैं क्या हूँ, मुझको नहीं ज्ञान,
तुम मम सुजान, फिर भी अजान,
है ज्ञात यही, मैं हूँ अभक्त, त्यों भक्त दीन तुव हित-विभोर।

दुनिया में हलचल मचा देनेवाली

अद्भुत पुस्तक

(आसामी, बंगाली तिलस्मी राज़ या ख़ज़ाना करामात)

यह वही अद्भुत पुस्तक है, जिसने भारत के कोने-कोने में हलचल मचा दी है, और जिसका पहला संस्करण हज़ारों की तादाद में, ५) मूल्य होते हुए भी, हाथोहाथ ख़त्म हो गया था। पहले एडीशन पर हज़ारों आदमियों का यह कहना है कि यह पुस्तक नहीं, बल्कि नामर्दों का मर्द, बाँझों को संतान, रोगियों को नीरोग और हज़ारों प्राणियों को प्रतिवर्ष काल के मुख से बचानेवाली भारत के पूज्य महात्माओं की अद्भुत शक्ति का भंडार सचमुच (ख़ज़ाना करामात) ही है। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश (आसाम), बंगाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण विद्या की अद्भुत लीलाएँ, जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं, बल्कि एक अद्भुत शक्ति का भंडार हाथ लगेगा, और इन विद्याओं की सचाई शीशे की तरह प्रकट हो जायगी। पुस्तक के बारे में हमारी गारंटी है। यदि किसी तरह आपको नापसंद हो, तो ३ दिन देखकर वापस कर सकते हैं। हम तुरंत मूल्य लौटा देंगे। इससे बढ़कर और क्या सचाई होगी! अब नए संस्करण में दसो अद्भुत वशीकरण आदि के परीक्षित, कभी न फ़ेल होनेवाले, प्रयोग बढ़ाए गए हैं। पृष्ठ-संख्या भी पहले से अधिक लगभग ६५० हो गई है। परंतु मूल्य वही ५), सजिल्द ५।।) और डाक-महसूल ।।) अलग है। परंतु ऑर्डर के साथ पेशगी रुपया भेजनेवालों को महसूल माफ़ होता है।

नोट—अब की बार पुस्तक का सस्ता एडीशन भी निकाला गया है। मूल्य ३।), सजिल्द ४); महसूल अलग है। ऑर्डर में सजिल्द व सस्ता एडीशन के बारे में स्पष्ट लिखें, जिसमें भूल न हो।

पता—मैनेजर इंडियन स्टोर्स (१६), जेनरल मर्चेंट ऐंड बैंकर्स, शीलांग (आसाम)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इटली से दूसरा पत्र

[डा० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

रेंस से मैं एक पत्र भेज चुका हूँ। मैं १३ अगस्त सन् १९३५ को पेरूज़िया पहुँच गया था। दूसरे दिन डॉ० दस्तूर भी आ गए थे, और अगले दिन श्रीगोविंद लंदन से पेरिस होते हुए पहुँच गए थे। प्राफ़ेसर लोग पैसे के लोभ में फिर से विद्यार्थी हुए हैं।

बस्ती पुरानी है, और योरप के शहरों के हिसाब से छोटी। मनोरंजन या घूमने-फिरने की विशेष सुविधा नहीं। हाँ, गरमी ज़रूर नहीं है। ज़्यादा दिन ठहरने के लिये मुझे जगह पसंद नहीं आई।

डॉ० दस्तूर और उनकी स्त्री ने एक घर ले लिया था, तथा श्रीगोविंद शीघ्र होस्टेल में कमरा मिल जाने की उम्मीद में थे। अभी वह सिंयोरा तिवेरी (Signora Tiberi) के घर में ही ठहरे थे, और मैं

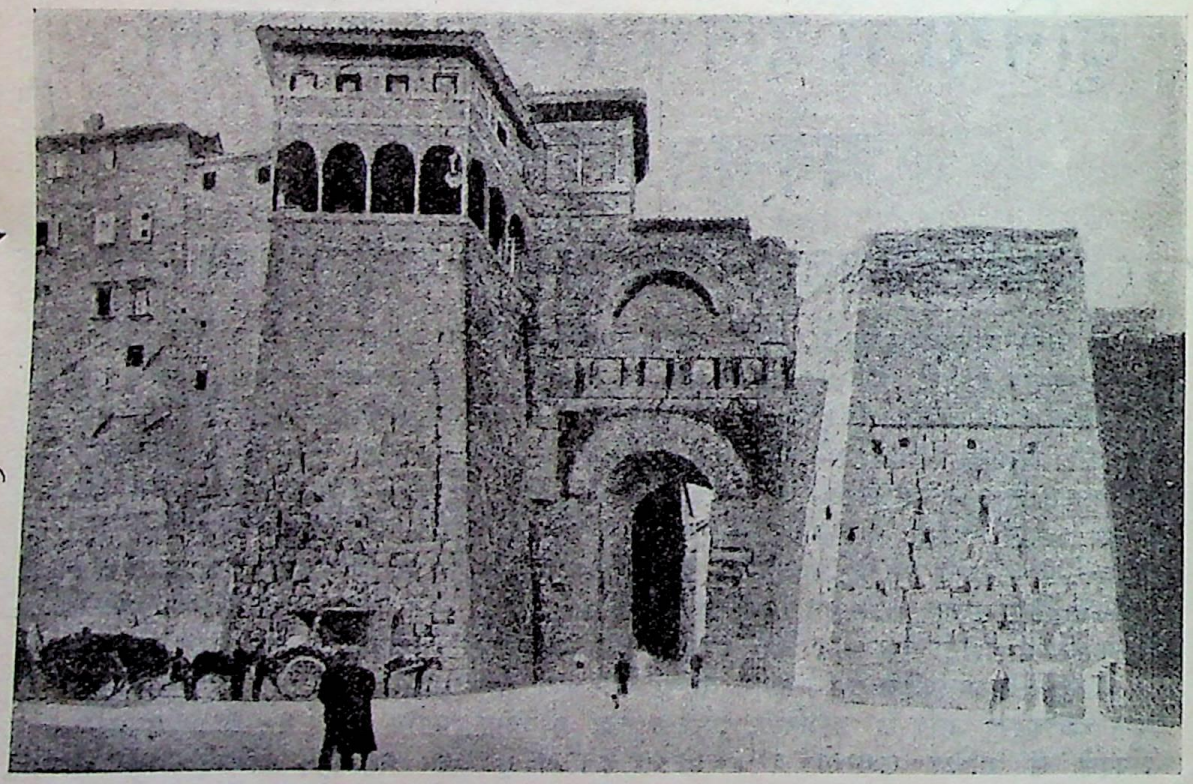

पेरूज़िया की बस्ती का एक फाटक

पेरूज़िया बहुत कुछ अलमोड़े से मिलती-जुलती पहाड़ी जगह है। एक पहाड़ी की चोटी पर बसी है, इस वजह से चारो तरफ़ की खुली घाटियों का दृश्य मंसूरी या चित्तौड़ की तरह स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

एक दूसरे मकान में था, क्योंकि श्रीगोविंदवाले मकान में ज़्यादा जगह न थी। यह नाम श्रीगोविंद ने अपना नहीं बदला है, बल्कि उनकी घरवाली का है। घरों की सूची में देखते हुए नाम मिलता-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जुलता दिखलाई पड़ने की वजह से आपने इस घर में ठहरने को सोचा था। सिंयोरा इटैलियन में श्रीमती को कहते हैं। पेरूज़िया की असली बस्ती अलमोड़े की तरह ही बड़ी गंदी-सी है। फिर हर जगह चढ़ाई-उतराई। रेल पहाड़ी के नीचे से निकलती है, और वहाँ से पेरूज़िया तक ट्रैम चलती है। छोटी जगह होने की वजह से यहाँ फ़ांसीसी से भी काम नहीं चलता था। गूँगे आदमियों की तरह काम निकालना पड़ता था। पहाड़ी जगहों की तरह पानी यहाँ जब-तब बरस जाता है। कम-से-कम जब तक मैं था, तब तक तो ऐसा ही होता रहा। पुराने शहर के बाहर दूर तक नई बँगलियाँ बन रही हैं, वे अच्छी थीं।

रविवार १८ अगस्त, ३५ को १०½ बजे पेरूज़िया से चलकर शाम ४½ बजे मैं रोम पहुँच गया था। बीच में एक जगह रेल बदलनी पड़ी थी, इसके सिवा पैसेंजर गाड़ी थी, इसलिये इतना वक़्त लगा। रास्ता कुछ विशेष आकर्षक नहीं था—वही पहाड़ी प्रदेश, किसानों के घर। इस हिस्से में हलों में बराबर बैल जुते दिखाई पड़े। घोड़े उत्तर-योरप की ही चीज़ हैं।

रोम काफ़ी बड़ा शहर है, लेकिन चहल-पहल में पेरिस, बर्लिन या लंदन से फीका है। रोम एक तरह से

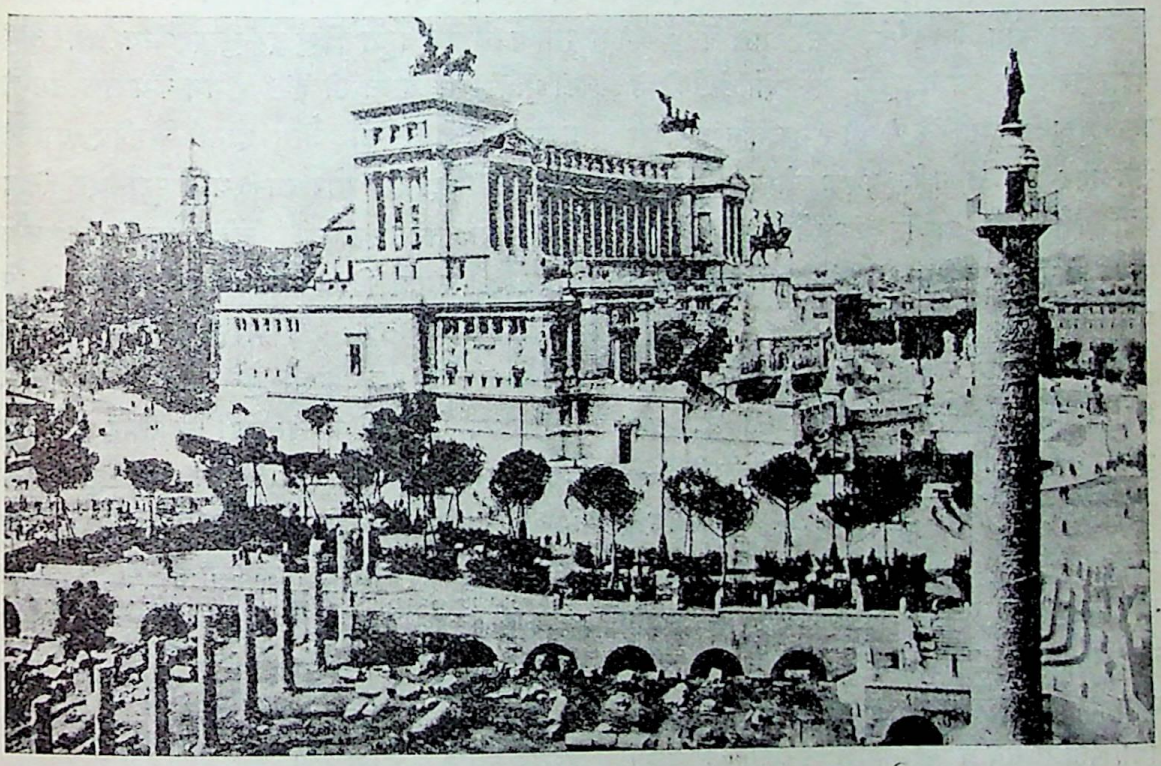

खँडहरों के बीच एक नवीन स्मारक—रोम

तीन-चार हैं। १९वीं-२०वीं शताब्दी का रोम योरप के अन्य बड़े शहरों या कलकत्ता-बंबई की तरह समझिए। १७वीं-१८वीं शताब्दी का रोम वेनिस, फ़्लारेंस या पुराने लखनऊ या दिल्ली की तरह पतली, गंदी गलियोंवाला है, जिसमें ग़रीब रहते हैं। तीसरा रोम उन खँडहरोंवाला है, जो प्राचीन रोम-साम्राज्यों के स्मारक-स्वरूप हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रोम में लगभग मौर्य-काल के समय पंचायती राज्य (Republic) था, और कनिष्क-काल के समय साम्राज्य स्थापित हुआ, जिसका आधिपत्य मेडिट्रेनियन समुद्र के किनारे के सब देशों—फ्रांस, स्पेन, उत्तर-आफ्रिका, मिस्र, टर्की, ग्रीस आदि—पर फैल गया था। ईसा की पहली-दूसरी शताब्दी में इस साम्राज्य का स्वर्णयुग था। गुप्त-काल में पहुँचकर यह साम्राज्य नष्ट हो गया। कुछ पंचायती काल के और विशेषतया साम्राज्य-काल के बहुत-से खँडहर रोम शहर के उत्तर-भाग में हैं—चहारदीवारी के अंश, कुछ दरवाज़ों के हिस्से और कुछ इमारतों के भाग। यह तीसरा केवल रोम-नगर की ही नहीं, बल्कि योरप की सबसे बड़ी बपौती है। प्राचीन इमारतें छोटी ईंट या पत्थर की थीं। इस रोम को अपने यहाँ का पाटलिपुत्र समझिए।

रोम की सबसे बड़ी विशेषता विशालता है। यह प्राचीन खँडहरों में भी पाई जाती है, और उसकी छाप आधुनिक इमारतों में भी मिलती है—चौड़ी दीवारें, ऊँचे मकान, लंबे खंभे, बड़े बरांडे। कला का शौक़ यहाँ की दूसरी विशेषता है। यह भी अब तक चल रही है। लेकिन यहाँ की कला मर्दानी तथा प्रकृति की ओर झुकती हुई है—फ्रांस की तरह स्त्रैण और भावुक नहीं। मज़दूरी तथा खेती से संबंध रखनेवाले इटली के वज़ीर की इमारत के दरवाज़े पर इन पेशों से संबंध रखनेवाले सुंदर-सुंदर चित्र किवाड़ों पर ताँबे के ढले लगे हैं। इस छोटी-सी बात से ही इन लोगों की मानसिक प्रवृत्ति का अंदाज़ किया जा सकता है।

पंचायती तथा साम्राज्यकालीन रोम ईसाई नहीं था। साम्राज्य के अंतिम दिनों में यहाँ ईसाई-धर्म विशेष फैला, और तब से अब तक रोम किसी साम्राज्य का केंद्र न होकर रोमन-कैथलिक धर्म का सबसे बड़ा केंद्र रहा है। रोम का यह दयाल-बाग़ (Vaticon) शहर के दक्षिण में है। यहाँ सेंट पीटर का प्रसिद्ध गिरजाघर है। पोप रहते हैं। धार्मिक अजायब-घर है, बस्ती है। अलग रेल का स्टेशन है। सेंट पीटर का गिरजा वास्तव में बहुत विशाल और सुंदर है। बाहर से तो बहुत आकर्षक नहीं, किंतु अंदर से भव्य और सुसज्जित है। छत और दीवारें कारीगरी से पूर्ण हैं। दीवारों पर बड़े-बड़े प्रसिद्ध धार्मिक चित्र हैं, जिनकी लोग पूजा करते हैं। बहुत ही सुंदर-सुंदर पत्थर और ताँबे की मूर्तियाँ भी बहुत-सी हैं। रोमन-कैथलिक धर्म के प्रधान गिरजाघर को जैसा होना चाहिए, वास्तव में यह वैसा ही है। पोप का स्थान पूरा एक क़िला है—चारो तरफ़ ऊँची चहारदीवारी है, और अंदर की जगह दिल्ली या आगरे के क़िले से भी बड़ी है, जिसके एक भाग में रोमन-कैथलिक धर्म से संबंध रखनेवाली पुस्तकों, चित्रों, मूर्तियों तथा अन्य ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह है, और दूसरे भाग में प्राचीन रोम, ग्रीस तथा कुछ अन्य प्राचीन सभ्यताओं के इतिहास से संबंध रखनेवाली सामग्री का संग्रह है। यह अजायब-घर भी वास्तव में बहुत ही बड़ा है। इसके बरांडे सचमुच एक फ़र्लांग से कम लंबे न होंगे। और, ऐसे बरांडों की तीन मंज़िलें हैं। फिर कुछ कमरे अलग हैं। रोम की हरएक चीज़ विशाल है।

रोम के इस भाग में पोप का पूर्ण आधिपत्य है। धार्मिक प्रभाव के कारण यों तो समस्त इटली में, लेकिन विशेषतया रोम में, बीसों गिरजाघर हैं, गली-गली में चोग़ा पहने ईसाई भिक्षुणी और भिक्षु दिखलाई पड़ते हैं, जगह-जगह ईसा मसीह या उनकी माता की मूर्तियाँ या तसवीरें बनी हैं, जिन पर फूल चढ़े रहते हैं, और किन्हीं-किन्हीं पर तो आधुनिक भक्तों ने दिन-रात जलते रहनेवाले बिजली के बल्ब लगवा दिए हैं। यह रोम योरप की काशी है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सेंट पीटर का गिरजाघर

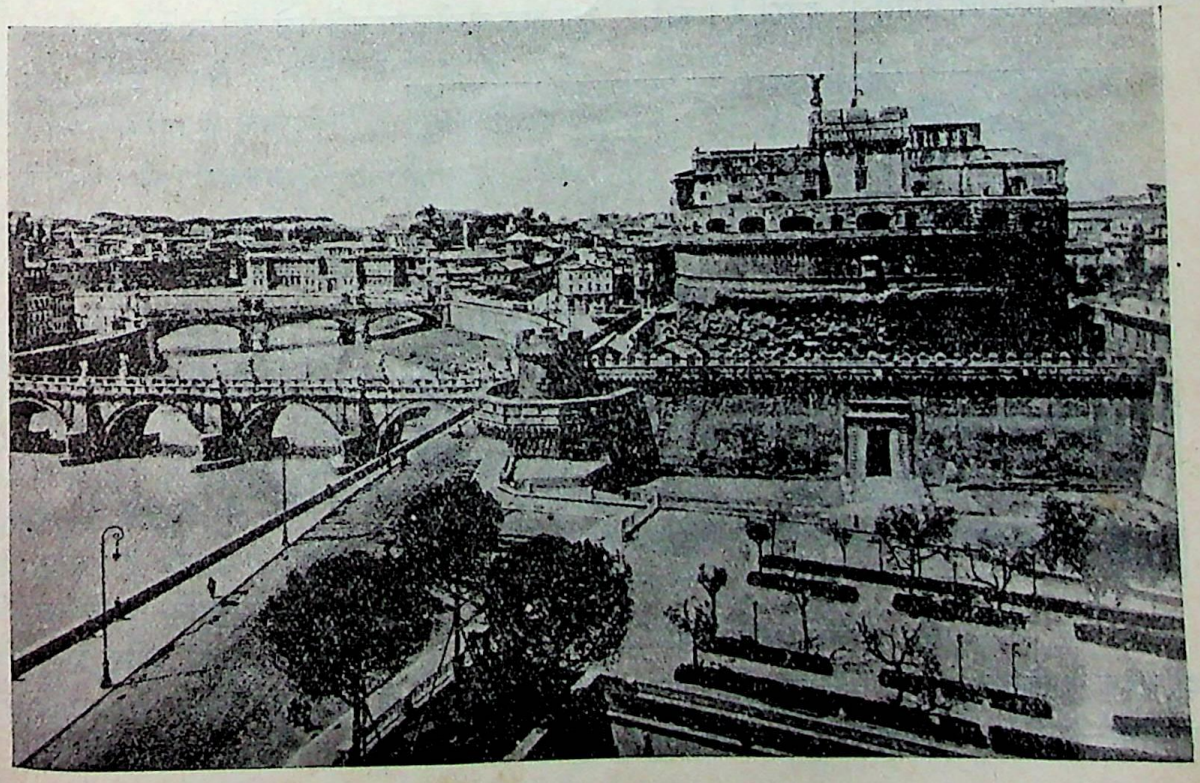

टाइबर-नदी तथा प्राचीन गढ़—रोम

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इटली में बाहर के यात्री बहुत आते हैं, इसलिये झूठ बोलनेवाले सौदागरों की भी कमी नहीं। मैंने आज सुबह रास्ते में रोम पर एक किताब खरीदी, जो १५ लिरा (४ लिरा = १) की कहकर बेचनेवाले ने ८ लिरा में दी। समझता हूँ, इसमें मैं बहुत ठग गया, क्योंकि एक तसवीरों का पैकेट लिया, तो उसकी क़ीमत १० लिरा से शुरू होकर २ लिरा ही रह गई। इस बात में लोग दिल्ली या लखनऊ को बेकार ही बदनाम करते हैं। इटली की इस राजधानी में भी आदमी बदस्तूर नफ़ासत-पसंद, शौक़ीन और आरामतलब हैं। इस शहर की एक विशेष संस्था जूते साफ़ करनेवाले चमारों की दूकानें हैं। जहाँ-तहाँ सड़क के किनारे दो कुर्सियाँ—एक ऊँची और एक नीची—पड़ी रहती हैं, और एक बक्स रक्खा रहता है। जूता साफ़ करानेवाले रोम के शौक़ीन नागरिक ऊँची कुर्सी पर बैठ जाते हैं, और

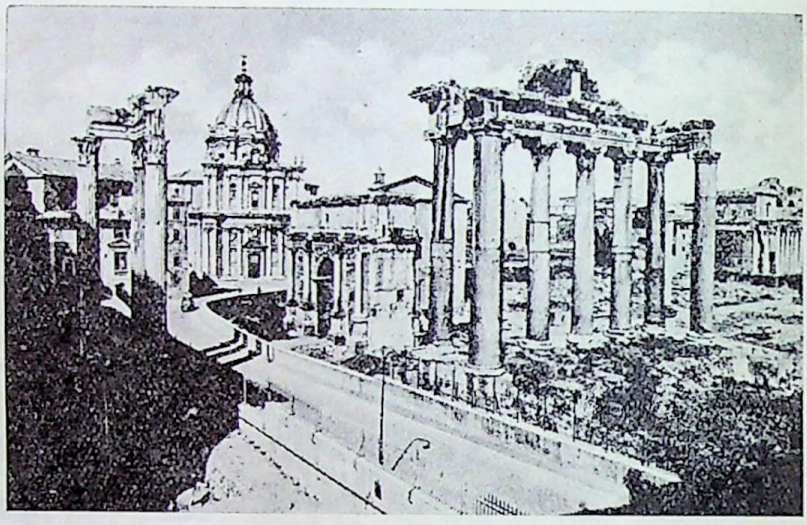

साम्राज्यकालीन भग्नावशेष—रोम

इतमीनान से सड़क का तमाशा देखते या अख़बार पढ़ते हैं, और नीची कुर्सी पर बैठकर जूता साफ़ करनेवाला मज़े-मज़े जूते पर स्याही लगाता और फिर उसे खूब चमकाता है। पुलिस वग़ैरा के अफ़सरों की पोशाकें यहाँ निहायत उम्दा हैं, और वे लोग भी उन्हें देख-देखकर संतुष्ट होते हुए चलते मालूम पड़ते हैं। अगर गर्द लग जाय, तो किस नफ़ासत से खड़े होकर उँगली से झाड़ते हैं कि देखते ही बनता है। तरह-तरह का खाना खाने का यहाँ लोगों को शौक़ है—सिमहमें तो इन लोगों को बहुत ही प्रिय हैं। शायद दोनो वक्त खाते और तरह-तरह की शक्लों की

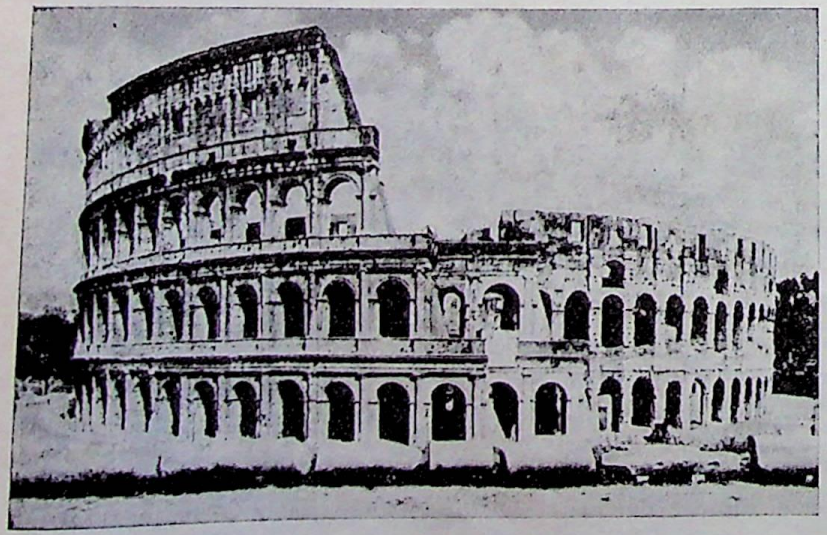

साम्राज्यकालीन भग्नावशेष—रोम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बनाते हैं। फल धोकर और छीलकर खाते हैं। खाने की मेज़ पर कालीमिर्च रहती है। गरमी की वजह से सड़े फल और सूखी तरकारियाँ बाज़ार में अक्सर दिखलाई पड़ती हैं।

जैसे बहुत खाद चाहनेवाली चीज़ की खेती के बाद ज़मीन बहुत दिनों के लिये कम उपजाऊ हो जाती है, मुझे तो ऐसा लगता है कि ठीक ऐसे ही साम्राज्य स्थापित करने और क़ायम रखने के असाधारण और अस्वाभाविक परिश्रम के बाद राष्ट्र की मींग-सी निकल जाती है, और वह फिर बहुत दिन तक नहीं पनप पाता। इटली और अपने भारतवर्ष में मध्यदेश इस बात में एक ही श्रेणी में रक्खे जा सकते हैं। दोनो देशों में प्राचीन वैभव के क़िस्से-मात्र रह गए हैं, उन्हीं पर लोग जान देते हैं। चेहरों पर अच्छे दिनों की झलक ज़रूर दिखलाई देती है, और दिलों में अब भी दरियादिली समाई हुई है। यों तो फ़ाक़ेमस्त हैं, तो भी हम लोगों की संस्कृति की परा काष्ठा को इटैलियन नहीं पहुँच सकते। हम लोगों की हाँडी भी तो बहुत बड़ी थी, फिर खुरचन भी बहुत होनी ही चाहिए।

समर्पण

[कुमारी विद्या भार्गव]

ऋतु का प्रथम पुष्प तुम्हें समर्पण कर रही हूँ। क्या तुम इसे लोगी ?

तुमने हँसकर मेरे तीनो फूल स्वीकृत कर लिए। मैंने कहा—मा ! अब और प्रतिमाओं के लिये चौथा फूल तो रहा ही नहीं !

तुमने मानो गंभीर रूप धारण कर कहा—फूल की तीनो अवस्था तो तुमने मुझे एक-एक फूल में भेंट कर दी। अब उसका चौथापन कहाँ ?

वास्तव में शैशव, युवा और वृद्धावस्था, ये ही तीन पन हुआ करते हैं। सो मैंने फूल के तीनो पन एक-एक फूल में दे दिए।

फिर अब चौथापन कहाँ ?

शारीरिक संपत्ति के न रहने पर आर्थिक संपत्ति नहीं प्राप्त हो सकती।
अगर किसी भी प्रकार के रोग से निर्बलता आई हुई हो, तो अवश्य
"आतंक-निग्रह गोलियों" का सेवन करें
क़ीमत—३२ गोलियों की एक डिब्बी का १) एक रुपया
विशेष हाल जानने के लिये सूचीपत्र देखें।
आतंक-निग्रह औषधालय, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड को०, चौक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इससे तुझको क्या मतलब है ?

[हिंदुस्थान-टाइम्स से

इससे तुझको क्या मतलब है,
होगा किससे तेरा ब्याह ?
मेरी ही मर्ज़ी से तुझको
चलनी है जीवन की राह !
जिससे तेरा मन मिलता है,
वह न मुझे है ज़रा पसंद ;
मुँह रख बंद, न मुझे चाहिए
इसमें तेरी नेक सलाह !

वसंतकुमार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुधा-चित्रावली

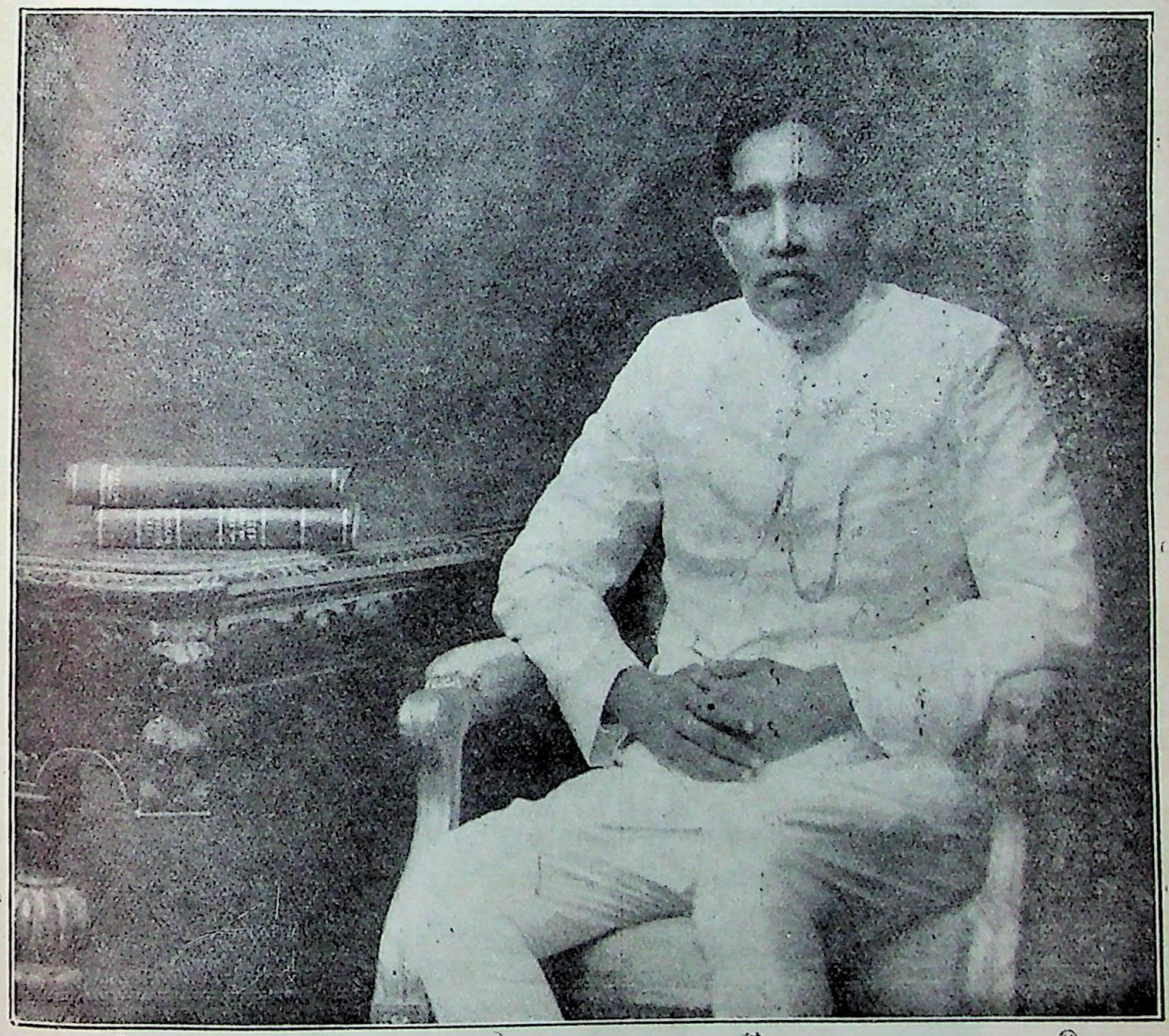

वज़ीरुद्दौला सर सिरेमलजी बापना नाइट, सी० आई० ई०, प्रधान मंत्री, होल्कर-स्टेट (इंदौर)

[सर बापना साहब लोक-प्रियता एवं व्यवहार-कुशलता के लिये प्रसिद्ध हैं। इंदौर-रियासत का शासन आप कई वर्षों से बड़ी सफलता-पूर्वक चला रहे हैं। आपके प्रधान मंत्रित्व-काल में इंदौर-रियासत की सर्वांगीण उन्नति हुई और हो रही है। आप सहृदय और मिलनसार हैं। हिंदी की उन्नति के संबंध में आप सदा प्रयत्नशील रहते हैं।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मशीरबहदुर श्रीमान् श्यामराव-बिट्ठलराव क़ानूनगो एम्० ए०

[आप इंदौर-स्टेट में फ़ाइनेंस मेंबर का कार्य बड़ी योग्यता और दूरदर्शिता से कर रहे हैं। आप बड़े ही हिंदी-प्रेमी, सरल-प्रकृति, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं उदार-हृदय हैं। आप साधारण स्थिति से बढ़कर इस उच्च पद पर पहुँचे हैं, यही आपकी असाधारण योग्यता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आपके समय में स्टेट की आशातीत आर्थिक उन्नति हुई है। आप टेनिस, शतरंज, ब्रिज आदि के अच्छे खिलाड़ी हैं। आप महामना मालवीयजी के संबंधियों में से हैं।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

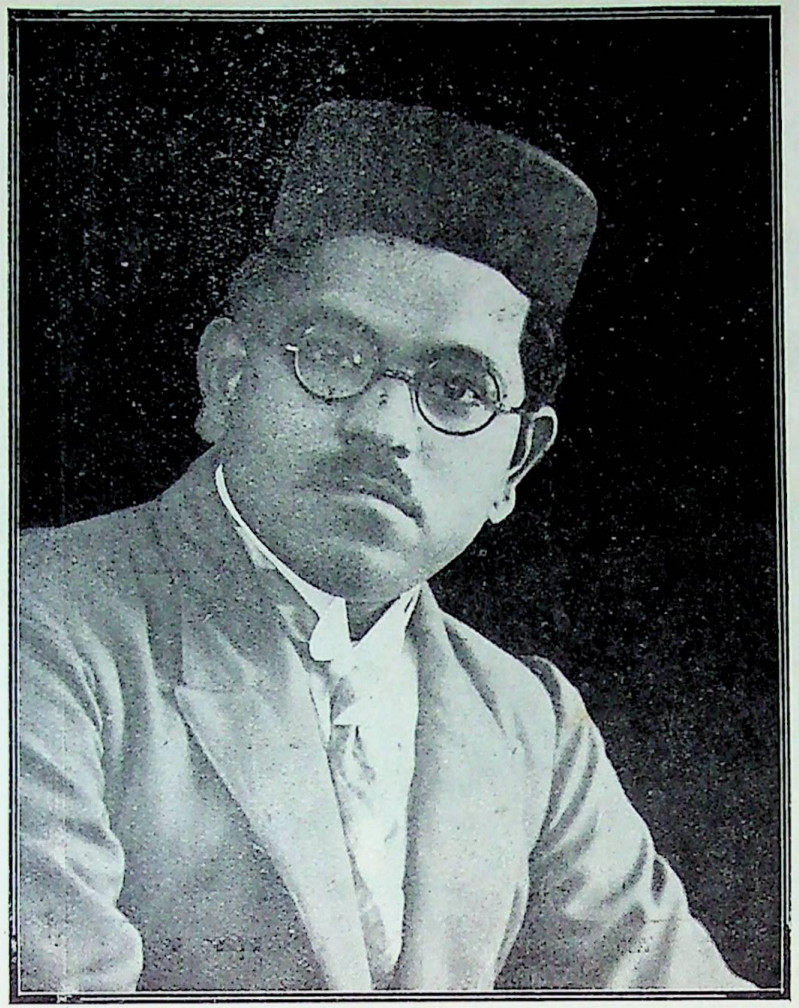

हिंदी के श्रेष्ठ लेखक और कवि
श्रीपं० कालिकाप्रसादजी दीक्षित 'कुसुमाकर'
[आप 'वीणा' के यशस्वी संपादक हैं ।]

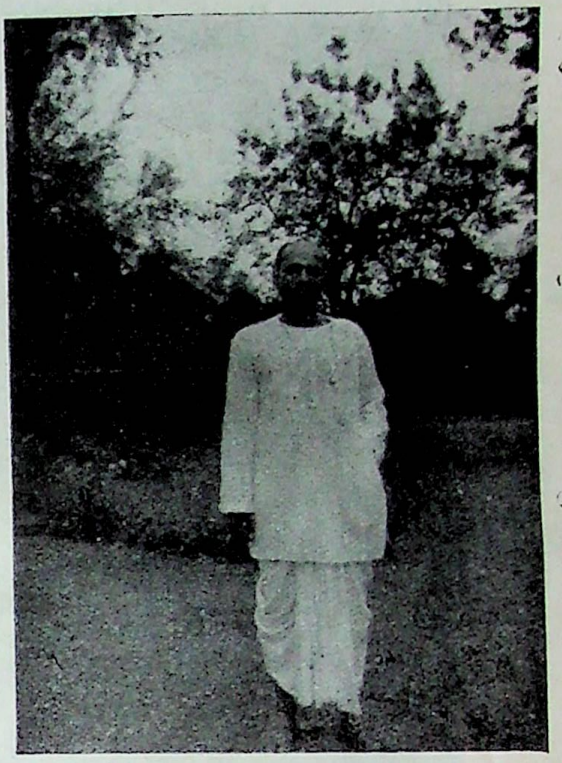

श्रीयुत प्रो० धर्मदेवजी शास्त्री, दर्शनकेसरी
[आपका 'नागरी-लिपि में सुधार'-शीर्षक लेख ३३८ पृष्ठ पर प्रकाशित है ।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुहब्बत का जादू

१. परिचय

किसी अभागिन के मानस की मैं हूँ करुणामयी पुकार;
सुख न मिला हो जिसे भूलकर, मैं हूँ उसके दुख का सार।

विफल प्रणयिनी का अभाग्य हूँ, टूटे हुए हृदय का प्यार;
वियोगिनी के तृषित नेत्र हूँ, कितने ही जीवन का भार!

विरत पथिक का त्यक्त मार्ग हूँ, तरुवर का मुरझाया फूल;
विपत-काल की भीषण छाया, निज प्रेमी के उर का शूल।

किसी निराश हृदय-तंत्री की हूँ मैं अति आतुर झंकार;
दो प्रेमी की व्यथित आह हूँ, जले हुए शव का अंगार।

सतत धधकती प्रेम-चिता की हूँ मैं अति प्रचंड ज्वाला;
भिखारिनी की अंतिम भिक्षा, उनसे ठुकराई बाला।

जीवन की अंतिम घड़ियों में
होगा मन को सुख अतिशय;
ले लेना फिर एक बार ही
पगली का पागल परिचय।

(कुमारी) निवेदिता मित्रा 'कनक'

× × ×

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२. भारत में ग्राम-सुधार

ग्राम और नगर का अन्योन्याश्रय संबंध है। ग्रामों में उत्पन्न की जानेवाली वस्तुओं की खपत नगर में होती है, और नगर अपनी इच्छित सामग्री पाने के लिये ग्रामों का मुँह ताकते हैं। नागरिकों की सुख-संपदा का कारण ग्रामीणों के गाढ़े पसीने की कमाई है, और ग्रामीणों का जीवन नागरिकों से पाई हुई मज़दूरी के कुछ पैसों पर अवलंबित है। श्रम की दृष्टि से ग्रामों का अपना महत्त्व है, और पूँजी के नाते नगर अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इस पारस्परिक कार्य-कलाप को सुचारु रूप से चलाने के लिये दोनो में एक निकटस्थ आत्मीयता की आवश्यकता रहती है। यदि नागरिक अपने ग्रामीणों की सुविधाओं की ओर ध्यान देंगे, तो उत्पादन में सुगमता और प्रचुरता की ही आशा है, जिससे नागरिकों की अपनी सुविधाएँ ही बढ़ सकती हैं।

यही कारण है कि जब-जब अपने ही स्वार्थ में रत रहनेवाले कुछ पूँजीपतियों की आत्मलिप्सा का शिकार बनकर ग्रामीणों की दशा बिगड़ी है, तब-तब उन्हें नगरवासियों के बीच एक ऐसी संख्या की सहानुभूति अवश्य प्राप्त हुई है, जो उत्पादक की दृष्टि से उनके श्रम को पूँजी की अपेक्षा अधिक महत्त्व देती है। फ्रांस में पूँजीपतियों द्वारा अधिक दबाए जाने पर जब ग्रामीणों में असंतोष की एक लहर चल गई, तो विरोध में सिर उठाने के लिये उन्हें नगर के बीच कुछ समर्थक मिल ही गए। तभी उन्होंने एक आश्चर्यजनक राजक्रांति कर दिखाई।

तत्काल हो या कालांतर में, किंतु सफलता बराबर ग्राम-सुधार के प्रयत्नों का अभिषेक करती आई है। इँगलैंड में, वाटरलू की लड़ाई के उपरांत, जब पीड़ित ग्रामीणों ने सुधार की माँग की, तो थोड़े-से पूँजीपति अधिकारी उनके स्वत्वों की रक्षा का प्रश्न अधिक दिनों तक नहीं टाल सके। रूस की वर्तमान उन्नति भी ग्रामीणों के दुःख दूर करने के ही फल-स्वरूप दिखाई दी है।

भारत के ग्राम एक काल से समय के थपेड़े सहन करते आ रहे हैं, किंतु इस समय पूँजीपतियों की विलासिता के कारण, उन्हें जिस कष्ट का सामना करना पड़ा है, वह पहले कभी न था। ग्रामों से बना हुआ होने पर भी भारतवर्ष अब तक ग्राम-सुधार की ओर उपेक्षा की दृष्टि से देखता आया है, किंतु अब जब देशव्यापी अशांति और असंतोष फैल जाने से निर्धनता के कारण ढूँढ़ने का प्रयत्न किया गया, तो लोगों की दृष्टि ग्राम-सुधार की ओर गई। इस दिशा में अब तक जो थोड़ा कार्य किया गया है, उससे ग्रामों में होनेवाला अज्ञान और अविद्या, अशांति और असंतोष तथा दुःख और दरिद्रता का अकांड तांडव बहुत कुछ अंशों में कम अवश्य हुआ है, तथापि यह कहना पड़ेगा कि अभी पूर्णरूपेण प्रयत्न की आवश्यकता है।

जहाँ विदेशी शासन-व्यवस्था हो, वहाँ के लोगों का दुखी होना स्वभाव-सिद्ध है, क्योंकि शासक-जाति के हित की ओर ही सर्व-प्रथम ध्यान दिया जाता है। सोने की चिड़िया भारत में तो नौकर-शाही के द्वारा देशी लोगों के स्वत्वों को एकदम ठुकराया ही जाता है। शासन-व्यवस्था पर जो आवश्यकता से अधिक व्यय किया जाता है, वह भारी भूमि कर से ही आता है। 'टैरिफ़' के कठोर नियम और रुपए की घटी हुई दर भी ग्रामीणों के लिये एक बाधा है। परंतु सभी दोष सरकार का नहीं, ग्रामवासी स्वयं भी तो शिक्षा के अभाव में अपने उन कर्तव्यों के पालन से वंचित रह जाते हैं, जिन्हें वे सुगमता एवं स्वाधीनता से पूरा कर सकते हैं।

निर्धनता सबसे बड़ी व्याधि है, किंतु उसके साथ यदि शिक्षा का भी अभाव है, तब तो बुरी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आ बीतती है। ज्ञान की ज्योति जहाँ नहीं जगती, वहाँ सब अंधकार में हैं; सभी प्रकार के रोग-दोष वहाँ डेरा जमाते हैं। वर्तमान काल के वैज्ञानिक आविष्कार, जो कृषि-कार्य में सुगमता उपस्थित कर देते हैं, भारतीय किसान उपयोग में नहीं ला सकते। वे यह भी नहीं जानते कि संसार के अन्य देशों के किसान किस प्रकार की खाद डालकर अधिकाधिक पैदावार कर रहे हैं। घर और पड़ोस की सफ़ाई की भी उनमें अच्छी भावना नहीं, जिससे ज्वरादि रोग उन्हें सदा ही घेरे रहते हैं। मंडी के बाज़ार-भाव से भी अपरिचित रहने के कारण वे धोखा खाते हैं।

आज ग्रामवासियों को जो शिक्षा दी जाती है, वह थोड़ी है, और अपने उद्देश्य में अपर्ण रह जाती है। ग्रामवासियों को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं, जो नगरवासियों के ज्ञान के भार से उन्हें पीस डालती है। उन्हें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो उनके व्यवसाय में सहायता पहुँचाकर जीवन में सफलता प्रदान करती है। निरंतर व्याघात सहन करते हुए ग्रामीणों ने आत्मविश्वास खो दिया है। वे अपने भाग्य को बहुत अधिक कोसते हैं। कर्मवाद की शिक्षा, जो उनमें अधिक आत्मविश्वास उत्पन्न कर सके, उनके अंध-विश्वासों को दूर कर सके, परिस्थिति के अनुकूल है। भारत के शिक्षित बेकार यद्यपि स्वयं कृषकोपयोगी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं, तथापि यदि दिल खोलकर इस कार्य में प्रवृत्त हों, तो सुधार और सेवा के साथ ही अपना पेट भी भर सकते हैं। 'ब्रॉडकास्टिंग' तथा 'मैजिक लैंटर्न' की सहायता से ग्रामवासियों का ज्ञान-कोष बढ़ाने का प्रयत्न हो रहा है, किंतु अभी इनसे देश को समुचित मात्रा में लाभ नहीं पहुँच रहा है। अतः सस्ते दामों में अच्छे ब्रॉडकास्टिंग स्टेशनों को प्रोत्साहन देना अपेक्षित है।

सामाजिक कुरीतियों का बाहिष्कार ही ग्रामसुधार को स्थायित्व प्रदान कर सकता है। बाल-विवाह, अनमेल विवाह आदि दोषों के निराकरण के लिये तात्कालिक व्यवस्था आवश्यक है। भारत के देहाती विवाह आदि अवसरों पर ब्राह्मण-पूजा में बहुत अधिक व्यय कर देते हैं, यह उचित नहीं। आचरण की शिक्षा भी उनके लिये परमावश्यक है। वैवाहिक जीवन में इंद्रिय-संयम की विशेषता ठहराने से बढ़ती हुई संतति पर नियंत्रण रक्खा जा सकता है।

भारत का किसान क़र्ज़ में प्रवेश करता है, क़र्ज़ में पलता है, और क़र्ज़ में ही अपने जीवन को समाप्त कर देता है। अतएव कम सूद पर रुपया देनेवाली सहकारी संस्थाओं के अधिकाधिक प्रचार की आवश्यकता है। कृषक के पीने के लिये अच्छा पानी, जो उसके आरोग्य को बनाए रहे, बोने के लिये अच्छा बीज, जो कीड़ों और बीमारियों से बचा रहे, जोतने के लिये बैलों की अच्छी नस्ल आदि सुविधाएँ भी उपस्थित करना होंगी। अधिकाधिक माल ले जानेवाली गाड़ियों और समय बचानेवाली सड़कों की भी बहुत आवश्यकता है। कुछ घरेलू दस्तकारी का काम भी उसे सिखाना चाहिए, जिससे वह कृषि से अवकाश पाकर दस्तकारी का सहारा ले सके। बग़ीचे का काम भी उसके लिये उपयोगी हो सकता है।

कहा जाता है, सरकार कुछ कारणों से ऐसी अविश्वस्त बन गई है कि ग्रामों के सुधार की ओर उसके प्रयत्न पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। बात तो यह है कि सरकार अपने खोए हुए विश्वास को पुनः प्राप्त करने के लिये प्रयत्न ही नहीं करती। विगत चुनाव में भारतीय किसानों ने जो उत्साह दिखाया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अपनी दलित दशा को समझकर वे अपने अधिकारों के लिये लड़ना सीख रहे हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐसी स्थिति में देश का भविष्य साम्यवाद से प्रभावित होता दिखाई पड़ता है।

मनुष्य-सेवा ही सच्ची ईश्वर-सेवा है, और दलित का उद्धार उससे भी बढ़कर है – इस बात को ध्यान में रखते हुए देश से संबंध रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति से ग्रामीणों के हित और अदम्य उत्साह के साथ कार्य करने की आशा की जाती है, जिससे ग्रामीणों के हित की रक्षा करते हुए नागरिकों के अपने हित की भी रक्षा हो सके।

श्रीहरिमोहनलाल वर्मा

× × ×

३. स्व० ठा० महेंद्रपालसिंहजी की स्मृतियाँ

यह विश्व एक विचित्र चित्रशाला है। अनेकानेक प्रकार के मानव-चित्र यहाँ परस्पर देखने और समझने को मिलते हैं। किंतु चतुर चितेरे के किसी-किसी चित्र की ओर बालक भी आकर्षित हो जाते हैं, और दूसरे अनेक चित्र, संसार की दृष्टि में आते हुए भी, अपने सौंदर्य से कला-पारखियों को आकर्षित नहीं कर पाते। मानव-प्राणी भी एक सजीव चल-चित्र है, जो अपने जीवन-अभिनय द्वारा विश्व के अन्य मानवों को मोहित और खिन्न करता है। अखिल विश्व की इस महती रंगस्थली पर नायक यदि अपनी भूमिका का निर्वाह कर ले जाने के कारण प्रशंसित और प्रतिष्ठित होता है, तो नाटक के अन्य नगण्य आनुषंगिक चरित्रों में भी कोई-कोई अभिनेता अपना नाम अमर कर जाते हैं। जीवन-कला के ऐसे अभिनेताओं के प्रशंसकों में से मैं एक हूँ।

स्वर्गीय ठाकुर महेंद्रपालसिंहजी में भी कुछ ऐसी ही विशेषताएँ थीं। मानव-समाज की वर्तमान विषमताओं ने व्यक्तियों के बीच एक गहरी खाई खोद रक्खी है। सत्तावादियों, पूँजीपतियों, अनुशासकों का समाज अलग है, और पद-दलितों, कष्ट-पीड़ितों, तथा दासों का अलग। समस्त संसार के मानव-समाज को यह विषम-बेलि अमरबेल बनकर खा रही है। भारत में तो इसके अनेक रूप हैं। ज़मींदारी-प्रथा भी उसका एक रूप है। स्वर्गीय ठाकुर महेंद्रपालसिंहजी एक बड़े ज़मींदार-घराने में उत्पन्न हुए थे, किंतु यह उनके जीवन की महत्ता थी कि उनमें इस कृत्रिम कुलीनता के कारण मानव-सुलभ सद्गुणों का ह्रास नहीं हो गया था। वह मेरे गाँव (कोटला) के प्रतापी ज़मींदार ठा० उमरावसिंहजी के पुत्र और राजाबहादुर श्रीकुशलपालसिंहजी के छोटे भाई थे। किंतु मैं अपने बचपन से उन्हें देखता आ रहा था कि उनमें सत्ताधारियों से बिलकुल विपरीत, मानवोचित गुणों का विकास हुआ था। मैं जब बालक था, तब वह आगरा-कॉलेज के विद्यार्थी थे। अपने प्राथमिक जीवन से उनमें ज़मींदार के बेटे की-सी उच्छृंखलता, उद्दंडता, अनुशासन-हीनता न थी। न वह अपने गाँव के साधारण व्यक्तियों को तुच्छ दृष्टि से देखते थे। गंभीरता, प्रेम-पूर्ण व्यवहार, समता का भाव उनमें ओत-प्रोत था। हम लोग कभी-कभी रियासत के बाग़ में उनके छोटे भाइयों के साथ क्रिकेट खेलने चले जाते, तो महेंद्रपालसिंहजी अक्सर हम गाँव के बालकों के साथ मिलकर खूब खेलते-खिलाते।

बंग-भंग के कारण उत्पन्न हुई राष्ट्रीयता की एक हलकी-सी लहर, सार्वदेशिक रूप से, भारत में व्याप्त हो गई थी। भारत की मिलों का बना हुआ स्वदेशी कपड़ा पहनना उन दिनों की राष्ट्रीयता की चरम सीमा थी। कुँवर महेंद्रपालसिंह इस राष्ट्रीयता के व्यावहारिक समर्थक थे। उनके अन्य चार भाई बढ़िया विदेशी कपड़ा पहनते थे, पर वह केवल स्वदेशी कपड़ा ही पहनते थे। साहित्यिक दृष्टि से वह द्विवेदी-युग था। 'सरस्वती' की तूती बोलती थी, और 'मर्यादा' ने भारतेंदु तथा द्विवेदी-युगों का समन्वय कर साहित्यिक राष्ट्रीय मर्यादा स्थापित की थी। संयुक्त प्रदेश में साहित्यिक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जागरण का भी यह प्रारंभिक काल था। कुँवर महेंद्रपालसिंहजी के देश-भक्ति-पूर्ण हृदय में साहित्य-सेवा और हिंदी-प्रेम का अंकुर उत्पन्न हुआ। अध्यापक रामरत्नजी उन दिनों कोटला के तहसीली स्कूल में पढ़ाते थे, और उस युग की राजनीति और साहित्य-सेवा--'स्वदेशी' और 'हिंदी-प्रेम'—के परम उपासक थे। स्वदेशी के प्रचारक वह ऐसे थे कि ज़िले-भर के अध्यापक - मंडल में उनका नाम ही 'स्वदेशी' पंडित पड़ गया था। कुँवर महेंद्रपालसिंहजी पर उस युग की इन दोनो प्रगतियों का प्रभाव था। उस युग में केवल नगरों के संपर्क में रहनेवाले गिने - चुने व्यक्तियों पर इन प्रगतियों का प्रभाव पड़ा था। गाँवों में अगर कुछ प्रभाव था, तो केवल आर्य-समाज अथवा सनातन धर्म - सभा और गोरक्षा-आंदोलनों द्वारा उत्पन्न हुई प्रगति का। ग्रामीण जनता इन सामाजिक आंदोलनों को समझती थी, और इनमें रुचि रखती थी। मेरे गाँव (कोटला) में भी यह लहर पहुँची थी। गाँव में अक्सर सभाएँ हुआ करती थीं, जिनमें सामाजिक विषयों पर व्याख्यान हुआ करते थे। अध्यापक रामरत्नजी और स्वर्गीय कुँवर महेंद्रपालसिंहजी उन सभाओं में विशेष रूप से भाग लिया करते थे। कुँवर महेंद्रपालसिंह ने इन्हीं दिनों अपने हिंदी-प्रेम का परिचय गाँव में एक पुस्तकालय स्थापित करके दिया था। इस पुस्तकालय से पूर्व गाँव में दो-तीन जगह 'वंगवासी', 'वेंकटेश्वर-समाचार' और 'जैन-मित्र' पत्र आते थे। उक्त

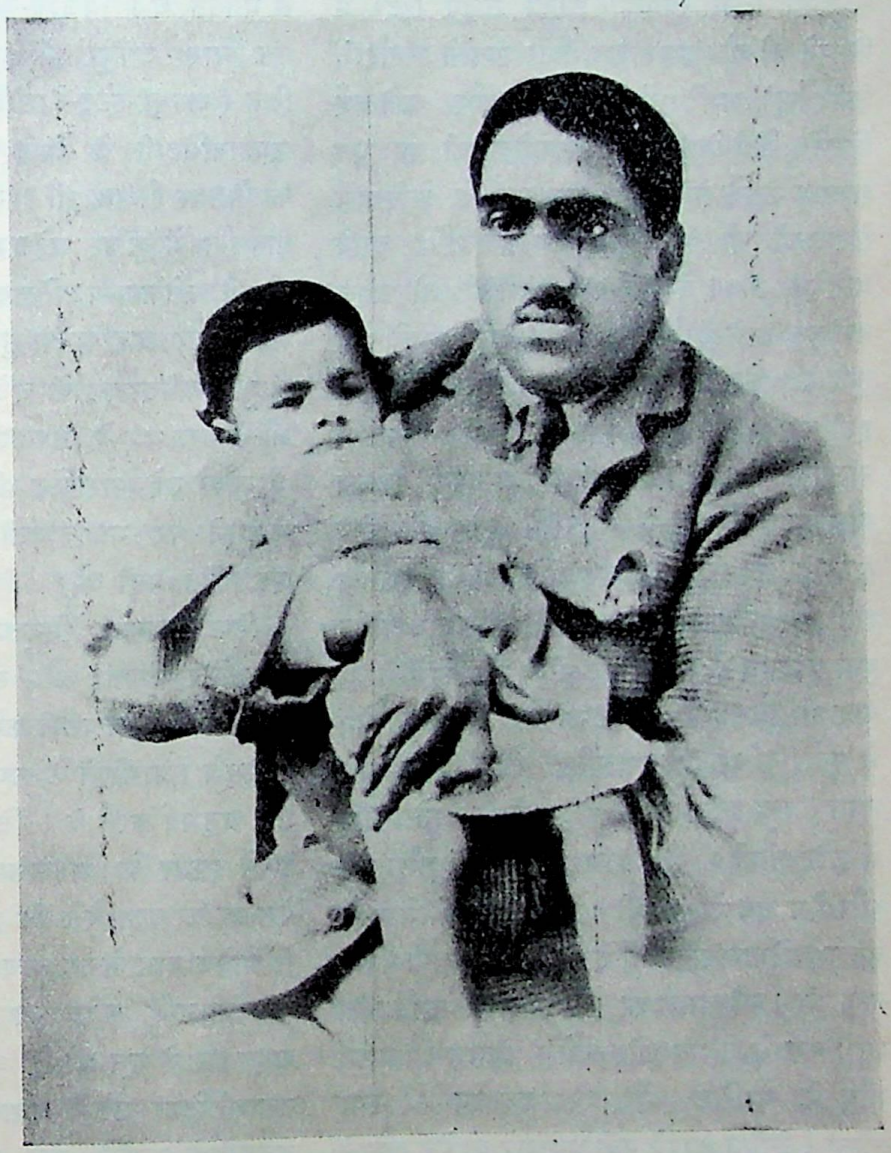

स्वर्गीय ठाकुर महेंद्रपालसिंहजी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुस्तकालय में सभी सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं, और गाँववाले इन्हें रुचि से पढ़ते थे। अपने पिता के नाम पर स्थापित किए हुए इस पुस्तकालय के प्रबंध-परिचालन में कुँवर महेंद्रपालसिंह खूब दिलचस्पी लेते थे।

इन्हीं दिनों स्वर्गीय ठाकुर साहब हिंदी में लिखने की ओर प्रवृत्त हुए, और उन्होंने 'मर्यादा', 'स्त्रीदर्पण' आदि में कई लेख और कविताएँ लिखीं। हिंदी-प्रेम और साहित्य-सेवा की यह धुन आजन्म उनके साथ रही। आजकल के अधिकांश रईसज़ादों की तरह कुँवर महेंद्रपालसिंह अपने प्रारंभिक जीवन में उपन्यास पढ़ने की ओर प्रवृत्त नहीं हुए। उन्होंने पढ़ा उन्नायक और सुरुचि-पूर्ण साहित्य। वीर-साहित्य पढ़ने के वह अनन्य प्रेमी थे। इसी कारण, प्रारंभिक काल से, उनके जीवन में राजपूती धज थी। प्रतिवर्ष विजया दशमी पर जब पाँचो भाई रियासत के मंदिरों में पूजन के लिये आते थे, तब कुँवर महेंद्रपालसिंह की धज दर्शनीय होती थी—जैसे कोई राजपूताने का पुरातनकालीन युवा राजपूत हो। बी० एस्-सी० पास कर लेने के बाद ही, १६१४ ई० में, डिप्टी-कलेक्टर नियुक्त होने से पूर्व, कुँवर महेंद्रपालसिंह को पतंग का शौक़ लगा। खूब पतंग उड़ाते, दिन-भर उड़ाते। गाँव में और लोगों को भी पतंग उड़ाने का शौक़ था, और पेच लड़ाने का भी। इन पतंगबाज़ों में नबी-बख़्श भटियारा बहुत होशियार और नामी पतंग-बाज़ था। गाँववालों को कुँवर महेंद्रपालसिंह की पतंग फँसाने में भय और संकोच होता था। भला, गाँव के मालिक और एक प्रजाजन की क्या समता? लेकिन आपने नबी भटियारे को पेच लड़ाने के लिये उत्साहित किया, और पतंगबाज़ी में उसे अपना उस्ताद बनाया। दोनो की खूब पतंगें लड़तीं? जब आपकी कनकैया कटती और देखनेवाले बालक 'लू-लू' पीटते, तो आप खूब खुश होते। इन पंक्तियों के लेखक को भी पतंगबाज़ी का शौक़ था। हम लोगों के भी पेच लड़ते।

कॉलेज-जीवन में कुँवर महेंद्रपालसिंह इने-गिने देश-भक्त विद्यार्थियों में थे। भारत के राजनीति-गगन पर उन दिनों पूज्य मालवीयजी सोलहो कला से भासित थे। पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय एक बार जयपुर में कुँवर महेंद्रपालसिंह के पिता (जयपुर-स्टेट-काउंसिल के सदस्य) ठाकुर उमरावसिंहजी के बँगले पर ठहरे थे, तब से दोनो की मित्रता हो गई थी। मुझे खूब याद है, अपनी बातचीत में कुँवर महेंद्रपालसिंहजी महामना मालवीयजी, लोकमान्य तिलक और पंजाब-केसरी का भक्ति और श्रद्धा-पूर्वक गुण-गान किया करते थे। हिंदू-विश्वविद्यालय के चंदे के लिये जब मालवीयजी आगरा गए थे, तब उनकी गाड़ी खींचनेवालों में कुँवर महेंद्रपालसिंह भी थे, और आगरा-कॉलेज में आने पर मालवीयजी के अभिनंदन में उन्होने एक कविता पढ़ी थी।

डिप्टी-कलक्टर नियुक्त हो जाने पर भी उनके हृदय से राष्ट्रीयता और साहित्य-सेवा का लोप नहीं हुआ। डिप्टी-कलक्टरी करते हुए भी वह देश को नहीं भूले। ग्रामीणों के कष्ट को वह जानते थे, और उसे अनुभव करते थे। जिस ज़िले में पहुँचते, वहीं अपने दफ़्तर के अहलकारों और ख़ासकर अपने पेशकार को बता देते कि तुम अपनी जेब में इतने से अधिक दाम लेकर कचहरी न आओगे। अगर ज़रा भी उन्हें संदेह हो जाता कि उनके किसी अहलकार ने घूस ली है, तो तत्काल उसकी जामा-तलाशी लेकर उससे जवाब तलब करते। अपनी कचहरी से उन्होंने, इस प्रकार, रिश्वत का अंत कर दिया था। तक़ावी बाँटते समय ग़रीब किसान को दर असल कितना मिल पाता है, इसे सभी जानते हैं। ठाकुर महेंद्रपालसिंहजी भी जानते थे कि तक़ावी तक़सीम करनेवाले नायब तहसीलदार,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

क़ानूनगो वग़ैरा सभी अपना हिस्सा किसान की तक़ावी से काट लेते हैं । लिहाज़ा ठाकुर साहब अपनी सख़्त देख-रेख में तक़ावी तक़सीम कराते थे । मजाल, जो एक कौड़ी भी इधर-से-उधर हो जाय । स्त्री-संबंधी फ़ौजदारी मामलात में शायद ही कोई अभियुक्त उनकी अदालत से बेदाग़ छूटा हो । डाकुओं के जानी दुश्मन थे । उन्हें पकड़ने में व्यक्तिगत दिलचस्पी लेते थे । उन्होंने स्वयं कई ख़ूँख़ार डाकुओं को पकड़ा । उनकी तत्परता के कारण पुलिस भी मुस्तैदी दिखाती थी । इन सब कारणों से उनके मातहत इलाक़ों में सदैव अमन और संतोष बना रहता था । यही कारण था कि कांग्रेसवादी उनकी अदालत से सज़ा सुनकर मुस्किराते हुए निकलते थे । अदालती मामलात में सिफ़ारिश या सरकारी प्रभाव उन पर काम न कर पाता था, सरकार को ख़श करने की बात का तो प्रश्न ही क्या । मेरठ-षड्यंत्र-केस के फ़ैसले से ठाकुर साहब की इस विशेषता का पूर्ण परिचय मिलता है । इस केस में फँसे हुए सभी विद्यार्थी आपकी अदालत से बेदाग़ छूटे, और पुलिस को अपील करने की हिम्मत न हुई । उनके सभी फ़ैसले ऐसे ही अकाट्य होते थे, शायद ही कभी कोई फ़ैसला अपील में बदला हो ।

न्याय और शासन-विभागों के सम्मिलित रहने के कारण हमारे देश की न्याय-व्यवस्था में अनेक दुराचारों का समावेश हो गया है । इसी कारण इन दोनो विभागों के पृथक्करण की माँग जनता एक ज़माने से करती आ रही है । शासन-व्यवस्था के इसी दोष के कारण, जाननेवाले जानते हैं, बहुतेरे एस्० डी० ओ० पुलिस के इशारों पर चलते हैं । उनका मातहत होता हुआ भी ज़िले का सुपरिंटेंडेंट पुलिस डिप्टी-कलक्टरों से मनमानी करा लेता है । प्रोसीक्यूटिंग इंस्पेक्टर जैसा चाहता है, फ़ैसला लिखा लेता है । यहाँ तक देखा गया है कि मैजिस्ट्रेट की अदालत से रिहा हो जाने पर भी, पुलिस की मनमानी के कारण, अभियुक्तों को नहीं छोड़ा गया है । ऐसा ही एक मामला आपके साथ गुज़रा । पुलिस-सुपरिंटेंडेंट साहब हिंदोस्तानी थे । ठाकुर साहब ने जब पुलिस से जवाब तलब किया, तो कप्तान-पुलिस हिमायत लेकर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के पास दौड़े । कलक्टर ने मामले को ऑफ़िसर क्लब में ही तय कर देना चाहा, लेकिन ठाकुर साहब ने ठोककर कह दिया कि सुपरिंटेंडेंट को मेरी अदालत में हाज़िर होकर मुआफ़ी माँगनी पड़ेगी, और उसने बावर्दी अदालत में आकर आपसे माफ़ी माँगी ।

सरकारी काम से बचा हुआ अपना सारा समय साहित्य-सेवा और रामायण-पाठ में लगाते थे । रामायण पर आपकी अटल आस्था थी । रामायण को कर्म और धर्म की पथ-निर्देशिका, पूर्ण पोथी मानते थे । बात-बात में रामायण की चौपाइयों का हवाला दिया करते थे । पिछले कुछ वर्षों से तो हरि-कीर्तन की ओर उनकी बहुत प्रवृत्ति हुई थी । अपने बँगले पर, सार्वजनिक रूप से, हरि-नाम-संकीर्तन कराया करते थे । संकीर्तन को हिंदू-समाज के अनेक दोषों का निवारक बताया करते थे । कहा करते थे कि हिंदुओं के एकीकरण के लिये ऐसे संकीर्तन बहुत आवश्यक हैं । छुट्टी पर कभी अपनी ज़मींदारी के गाँव में आते, तो गाँव के मंदिर में कीर्तन कराते, और सच्चे वैष्णव की भाँति सातो जातियों को उसमें इकट्ठा करते । पत्रों में लेख लिखकर, साहित्यिक खोज करके, अप्रकाशित ग्रंथों का संग्रह कर अपनी साहित्यिक अभिरुचि की तृप्ति आजीवन करते रहे । 'विशाल भारत' में उनके बहुत-से लेख छपे हैं । धार्मिक विषय में बहुत उदार थे । जब वह हमीरपुर-ज़िले में डिप्टी-कलक्टर थे, तो वहाँ के एक गाँव में रहनेवाले फ़्रेंच साधु, (पसाना) के भक्त बन गए, और उनके संबंध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में 'विशाल-भारत' में लेख लिखा। कविवर मैथिली-शरण गुप्त के वह 'भारत-भारती'-काल से ही प्रशंसक थे, और हमीरपुर में रहने की अवस्था में तो सदैव के लिये उनके मित्र बन गए थे। गुप्तजी के 'साकेत' पर उन्होंने ये पंक्तियाँ उनको लिखी थीं —

"सिया-राम-लक्ष्मण-भरत इनके चरित सिहाय
गूँथे तुलसीदास ने रामायण में लाय।
विमल उर्मिला-चरित उन छोड़्यो औरनु हेत,
तुम सुकवी साँचे भए बरनि ताहि साकेत।"

कविता लिखने की रुचि थी, किंतु उसे प्रकाशित नहीं कराया। अभी, अपने शरीरांत से एक वर्ष पूर्व, अपनी कुछ रचनाओं का संग्रह 'वनमाला' नाम से प्रकाशित कराया था, सो भी मित्रों के अनुरोध करने पर। जिस ज़िले में पहुँचते, हस्त-लिखित और अप्रकाशित ग्रंथों की खोज करते। ऐसा एक बहुत बड़ा संग्रह वह छोड़ गए हैं। इस संग्रह में महोबा के ज्ञानीजू, कंपिल के तोषनिधि तथा अनेक अज्ञात-नाम कवियों की बड़ी-बड़ी रचनाएँ हैं। विजयपाल-रासो और न-जाने क्या-क्या, ठाकुर साहब के असामयिक अवसान के कारण, प्रकाश में आए विना पड़ा है। यह सब सामग्री आपके भाइयों के पास संगृहीत है। स्वर्गीय ठाकुर साहब का विचार इस समस्त सामग्री को संपादित और प्रकाशित कराने का था।

स्वभाव के बड़े कोमल और प्रेमी। नौकरों के प्रति कभी कठोरता का व्यवहार नहीं किया, यहाँ तक कि यदि कोई नौकर बीमार पड़ जाय, तो उसकी तीमारदारी भी अपने हाथों करते। गाँव का एक फ़क़ीर अमीरा उनके पास नौकर था। अमीरा आपके बचपन में रियासत में चाबुक-सवार था, और उसने डिप्टी साहब को लड़कपन में घुड़सवारी सिखाई थी। वह बीमार पड़ा। उसे डबल न्यूमोनिया हो गया। आपने अपने हाथों उसकी सब प्रकार से सुश्रूषा की।

आपकी राष्ट्रीयता भी दिनोदिन दृढ़तर होती गई। वंग-भंग के स्वदेशी प्रेमी कुँवर महेंद्रपालसिंह, सन् १९२१ के बाद, पूर्ण खादी-भक्त बन गए थे। गांधी-जयंती पर प्रति वर्ष १००) की खादी नियमित रूप से ख़रीदा करते थे। अपनी प्रतिभा और कर्त्तव्यशीलता के कारण सरकार भी आपका आदर करती थी। जयपुर-राज्य के ठिकानेदारों के अधिकारों की जाँच के लिये, मि० विल्स आई० सी० एस्० की अध्यक्षता में, भारत-सरकार ने जो कमेटी नियुक्त की थी, उसके आप सदस्य नियुक्त हुए थे।

गत वर्ष आज़मगढ़ से रिफ़ार्म-ऑफ़िसर नियुक्त होकर इटावा आए। पेट की शिकायत आपको आज़मगढ़ से हुई। रोग निरंतर बढ़ रहा था, किंतु एक सच्चे कर्तव्य-परायण अफ़सर की भाँति आपने इटावा-ज़िले की ऊबड़-खाबड़ भूमि में ऊँट और घोड़े पर घूम-घूमकर अपना काम पूरा किया। पीछे स्थानापन्न ज़िला-मैजिस्ट्रेट का काम आपको सौंपा गया। इस समय जलोदर हो चुका था। गत २९ जनवरी को जैसे-तैसे आगरा लाए गए। लेकिन इस अवस्था में भी २८ जनवरी की शाम तक बराबर अपना काम पूरा किया। पिछले चुनाव के समय आपने अहलकारों के नाम रोबकार जारी कर दिया था कि कोई सरकारी कर्मचारी चुनाव के मामले में हस्तक्षेप न करे। इसका पूर्ण रूप से ठीक-ठीक पालन होना चाहिए।

दुःख है, गत मई-मास में, जलोदर के कारण, केवल ४७ वर्ष की अवस्था में, आपका शरीरांत हो गया! अंतिम श्वास तक आप संन्यासी बाबा से गीता सुनते रहे। इन बाबा की आयु १५० वर्ष से ऊपर बताई जाती है। डिप्टी साहब से इनका बड़ा प्रेम था। आपके असामयिक अवसान से ऐतिहासिक कोटला-गाँव का एक रत्न खो गया।

मंगलदेव शर्मा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

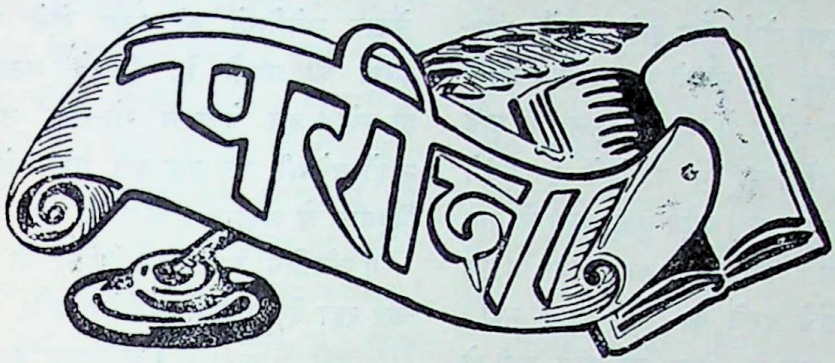

मोतियों के बंदनवार—लेखिकाएँ, कुमारी शीला मेहता और कुमारी लीला मेहता ; प्रकाशक, श्रीयुत बी० ए० मेहता, ११, एल्गिन रोड, इलाहाबाद ; पृष्ठ-संख्या १३६ ; मूल्य सजिल्द १)

रंग-बिरंगे मोतियों और सलाइयों से भाँति-भाँति के चित्र और अक्षरों के बंदनवार बनाए जाते हैं। गुजरात, बंबई आदि प्रांतों की महिलाएँ इन बंदनवारों तथा तोरणों से द्वार और खिड़कियों को सुसज्जित करती हैं। इन प्रांतों की महिलाओं की उस प्रवृत्ति को सहायता पहुँचाने के लिये लेखिकाओं का यह प्रयास स्तुत्य है। प्रस्तुत पुस्तक में बीस प्रकार के तोरण बनाने की विधियाँ दी गई हैं। साथ ही मोती और सलाइयों के प्रकार, मूल्य और उनके मिलने का पता भी दिया गया है। केवल श्री-संपन्न ही नहीं, साधारण गृहस्थों के उपयोग में भी यह कला आ सके, इसकी चेष्टा की गई है। पुस्तक सुंदर और संग्रह-योग्य है।

× × ×

महापुरुषों की प्रेम-कहानियाँ—लेखक, श्रीगिरीशचंद्र त्रिपाठी बी० ए० ; प्रकाशक, हिंदी-भवन, सलकिया, हवड़ा; पृष्ठ-संख्या १६३ ; मूल्य १)

पुस्तक में देशी और विदेशी इतिहास के कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों की प्रेम-कहानियाँ हैं। भाषा बोल-चाल की है, और वर्णन-शैली रोचक। छपाई-सफ़ाई अच्छी है। पुस्तक में एक रंग में छपे हुए सात चित्र भी हैं।

× × ×

श्रीरामचरित-मानस (मूल)—संपादक, रामचरित-मानस के अनुपम प्रवक्ता पं० विजयानंद त्रिपाठी ; प्रकाशक, भारती-भंडार ; विक्रेता, लीडर प्रेस, इलाहाबाद ; पृष्ठ-संख्या १०+१२+३३+६५८ ; मूल्य सजिल्द ४)

गोस्वामी तुलसीदासजी की अमर कृति का यह नवीन संस्करण श्रावण-कुंज, अयोध्या की प्रति (संवत् १६६१), राजापुर की प्रति, काशिराज के यहाँ की संवत् १७०४ की प्रति, भागवतदासजी की संवत् १७२१ की प्रति और कोदवरामजी की प्रति (जो गोस्वामीजी की हस्त-लिखित प्रति की चौथी प्रतिलिपि कही जाती है) के अतिरिक्त और भी कई प्रामाणिक प्रतियों से मिलान कर प्रकाशित किया गया है। जहाँ कहीं पाठ-भेद है, वह फ़ुट-नोट में दे दिया गया है कि एक ही पुस्तक में सब प्रतियों के पाठ सम्मिलित हो जायँ। मूल-पाठ में कारण-वश जहाँ भी परिवर्तन किया है, उसका कारण भी लिख दिया गया है। पुस्तक विद्वान् संपादक के दीर्घकालिक परिश्रम का फल है। आरंभ में तुलसीदासजी की संक्षिप्त जीवनी भी दे दी गई है। पुस्तक में गोस्वामीजी, भगवान् रामचंद्रजी, लक्ष्मणजी, सीताजी और हनुमानजी के तिरंगे चित्रों के अतिरिक्त दो सादे चित्र भी हैं। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई सुंदर है।

'ग'

× × ×

भारतीय अर्थ-शास्त्र—लेखक, श्रीयुत भगवानदास केला ; प्रकाशक, भारतीय ग्रंथमाला, वृंदावन ; मूल्य २॥)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुछ समय हुआ बोर्ड ऑफ़ हाईस्कूल ऐंड इंटरमीजिएट एजुकेशन के सामने यह प्रस्ताव आया कि इंटरमीजिएट-परीक्षा में भी हाईस्कूल की तरह परीक्षार्थियों को हिंदी-उर्दू में प्रश्नों के उत्तर देने का अधिकार दिया जाय। बहुत कुछ बहस के बाद प्रस्ताव गिर गया। विरोधियों का कहना था कि हिंदी-उर्दू में ऊँचे दरजे का साहित्य ही नहीं। ठीक है, पैरना जल के विना आ जाय, तभी तो कमाल है। बड़े हर्ष की बात है, किसी प्रकार प्रोत्साहन न होते हुए भी भारतवर्षीय हिंदी-अर्थ-शास्त्र परिषद्-नाम्नी संस्था साहित्य के इस अंग की पूर्ति का अविकल प्रयत्न कर रही है। पुस्तक के लेखक अपने विषय के चिर-परिचित विद्वान् हैं, और जिस लगन के साथ आपने इस विषय के विभिन्न अंगों पर साहित्य-रचना की है, वह सराहनीय है। अर्थ-शास्त्र पर इतना साहित्य होते हुए इंटरमीजिएट-बोर्ड को कम-से-कम इस विषय के संबंध में तो परीक्षार्थियों को हिंदी के माध्यम में उत्तर देने का अधिकार दे देना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक अर्थ-शास्त्र की कोरी पाठ्य पुस्तक नहीं है। इसमें उन आर्थिक समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है, जो भारतीय नेताओं के सामने बड़े गहन रूप में हैं। मतभेद होना आवश्यक है, उससे पुस्तक के महत्त्व में कोई कमी नहीं आती। स्थानाभाव से एक-दो विषयों पर ही यह मतभेद प्रकट करना है।

केलाजी ने गो-वंश के ह्रास के जो कारण बताए हैं, उनमें उन्होंने यह नहीं बताया कि क्यों उन देशों में गो-वंश वृद्धि कर रहा है, जहाँ लोगों को गो-मांस से कोई परहेज़ नहीं। यहाँ धर्म की बात नहीं, अर्थ की है। क्या गऊ के विषय में जो अंध-भक्ति हिंदुओं में है, वह इस ह्रास का कारण नहीं? अर्थ-शास्त्र का यह विषय तो आप जानते ही हैं कि बुरा सिक्का अच्छे सिक्के को भगा देता है। इसी प्रकार गो-रक्षा और गोशाला के कारण कमज़ोर, बेकार मवेशियों की रक्षा ऐसे पशुओं का हर्ज करके की जाती है, जिनसे नस्ल की उन्नति हो सके। इस देश में गो-रक्षा उस समय तक न हो सकेगी, जब तक इस प्रश्न को हम धार्मिक विश्वास से अलग न करेंगे।

पूँजीपतियों और श्रमजीवियों के बीच जो संघर्ष चल रहा है, उसमें सहयोग और मुनाफ़ा बाँटने (Profit Sharing) के नियम कहाँ तक सहायक हो सकते हैं, इस पर कदाचित् केलाजी ने यथेष्ट प्रकाश नहीं डाला। इसकी आवश्यकता थी।

केलाजी ने साम्यवाद की जो व्याख्या की है, उससे मैं सहमत नहीं। कम्यूनिज़्म और सोशलिज़्म में बहुत कुछ भेद है। सोशलिज़्म का अनुवाद साम्यवाद ही हो सकता है। इस साम्यवाद का इस समय सर्वत्र प्रचार है। यहाँ भी होगा। कम्यूनिज़्म, जिसका स्रोत रूस से बहता है, और चीज़ है। इस पर बहुत मतभेद है। हमें विश्वास है, आगे चलकर केलाजी इस पर भी प्रकाश डालेंगे। हिंदी-साहित्य को केलाजी से बहुत कुछ आशा है।

× × ×

राजपूताने का इतिहास (जिल्द ३, भाग १)—लेखक, महामहोपाध्याय, रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा ; विक्रेता, व्यास ऐंडसंस अजमेर ; मूल्य ४)

हिंदी में उच्च कोटि के मौलिक इतिहास-ग्रंथों के लिखने का श्रेय ओझाजी को ही है। अभी तक राजपूताने के इतिहास का एकमात्र आधार टाड-कृत राजस्थान-नामक ग्रंथ ही था। टाड ने यह ग्रंथ लिखकर राजपूताने के ऐतिहासिक वीरों की अनन्य सेवा की है। परंतु यह ग्रंथ जिन गाथाओं के आधार पर लिखा गया था, उनसे बहुत कुछ में कल्पना और दंतकथा की मात्रा बहुत थी। इसलिये 'राजस्थान' में इतिहास की दृष्टि से बहुत कुछ कमी थी। इस कमी को ओझाजी ने राजपूताने का बृहत् इतिहास प्रारंभ कर परा करने का बीड़ा उठाया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

डूँगरपुर उदयपुर-राज्य के दक्षिण में १,४६० वर्गमील का एक छोटा-सा राज्य है। भूमि पहाड़ी है। जलवायु बहुत अच्छी नहीं; आवागमन में भी कठिनाइयाँ हैं। परंतु भारत के इस छोटे-से भाग में भी इतनी ऐतिहासिक सामग्री है कि उस पर सवा दो सौ पृष्ठ का ग्रंथ लिखा जा सका।

ओझाजी का राजपूताने के इतिहास का सेवा-कार्य अभी पूर्ण नहीं हुआ है। आप अब वयो-वृद्ध भी हैं। परंतु, हमें विश्वास है, आपने इस गुरुतर कार्य के पूर्ण किए जाने की आयोजना कर दी होगी। अभी नहीं, ग्रंथ पूर्ण होने पर इसकी खोज के आधार पर साधारण पाठक के योग्य राजपूताने का एक नवीन इतिहास लिखने की आवश्यकता पड़ेगी। आशा है, वह समय शीघ्र आवेगा।

कालिदास कपूर (एम्० ए०, एल्० टी०)

लूटिए ! लूटिए !!

❀ पुरस्कार ❀

कैसा ? कितना ?

१०००) रुपए

किस प्रकार मिलेगा ?

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत पुस्तकों की मदद से।

सैकड़ों तरह के सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक	१)	१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक	।।)
रंग की पुस्तक	१)	वार्निश और पेंट	१)
सुगंधित तेल की पुस्तक	१)	विद्युत्-शास्त्र (Electricity)	।।)
सरल रसायन (Chemistry)	१) साथ लेने से १।।) में	आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)	
हिंदी-केमिस्ट्री	१)	अयोध्या-गाइड	-)।।
आरोग्य-विद्या (Hygiene)	।।)	तंतु-कला (सूत का हुनर) और माड़ी चढ़ाने की पुस्तक	१)
रिसाला साबुनसाज़ी (उर्दू-संस्करण)	।।)	अनुवाद-कला (Sanskrit Teacher)	।)
इत्र की पुस्तक	१)	हस्त-रेखा	=)
देशी जड़ी-बूटी और उनके गुण (छप रही है)		चुंबकत्व और फ़ोटोग्राफ़ी (छपनेवाली है)	
तद्धित-प्रयोग-सूची	=)		

नवंबर तक आधे मूल्य में

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए० (इलाहाबाद), एम्० एस्-सी० टेक्० (विक्टोरिया, इँगलैंड), एफ़्० सी० ए० (लंदन), एस्० एम० एस्० टी० (मैनचेस्टर) इत्यादि (मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्डस ऑफ़् लंदन इंस्टिच्यूट), विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरकंद की गली, बनारस सिटी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्री

प्रार्थना

यों पर पुरुष तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। मैं उर्दू-स्कूल में अध्यापिका थी। मुझे हिंदी-भाषा से प्रेम हो गया, और कुछ राष्ट्रीय कामों में मैं कुछ भाग लेने लगी। कट्टर मुसलिम-समाज की दृष्टि में खटक गई, और स्कूल से अलग हो गई। पति ने भी तलाक़ दे दिया। पिता का देहांत हो गया। अब बहन-भाई और मा का पालन-पोषण थोड़ी खेती पर ही है। मैं ट्यूशन करके सहायक होती हूँ। ख़ुशी की बात है कि हिंदी पढ़ाने को कुछ लड़कियाँ मिल गई हैं। मैं तो मुसलिम लड़कियों को हिंदी विशेष पढ़ाना चाहती हूँ, परंतु कोई सहायता नहीं मिलती। मैं सुन्नी मुसलमान हूँ। मेरी उमर २१ साल के लगभग होगी। अब मैं लिखने-पढ़ने का काम करना चाहती हूँ। मैंने एक पुस्तक दर्ज़ीगिरी और दूसरी सलाइयों से बुनने पर लिखी है। ये दोनो स्कूलों में भी टेक्स्टबुक हो जायँगी। यदि कोई इन्हें छपवा दे, और ख़रीद ले, तो मैं उस पैसे से हिंदी-मुसलिम-पुत्री-पाठशाला चलाऊँ। मैं इनकी क़ीमत १००) रक्खे हूँ। ये सचित्र हैं। अगर कोई लेख या किताब लिखवाने आदि का काम दे सकें, तो मैं एहसान-मंद होऊँ। मेरे पास पोस्टेज-ख़र्च भी नहीं कि कई जगह लिखूँ! क्या कोई दयालु सज्जन ध्यान देकर मेरा कष्ट दूर करेंगे।

प्रार्थिनी—
हाजरा बेगम
द्वारा अली-बुकडिपो, नरसिंहपुर (सी० पी०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहेली-पूर्तिकारों के पत्र

सुधा की पहेलियाँ अत्यंत सरल हैं !

महाशयजी,

आपका २४) का भेजा हुआ पारितोषिक मिला। पुरस्कार-प्रतियोगिता-पहेलियाँ सुधा की अपनी वस्तु हैं। यों तो अनेकानेक पहेलियाँ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ करती हैं, किंतु उन सबमें साधारण जन-समुदाय की रुचि का ध्यान नहीं रक्खा जाता। एक ही स्थान पर कई शब्दों की पूर्ति करने का संदेह रखकर उनको बहुत गूढ़ बना दिया जाता है, और उनकी पूर्ति करना मानो जुआ खेलना होता है। आपकी पहेलियों में इन सबके लिये कहीं कोई भी स्थान नहीं—वे अत्यंत सरल हैं। निर्णायक का निर्णय न्याय-संगत है। उपर्युक्त पहेली के शुद्ध रूप पर ध्यान देने से मालूम होता है कि यदि मैं कुछ और ध्यान देकर और उसे एक-आध बार दुहराकर भेजता, तो मुझे प्रथम पुरस्कार मिलने में कोई संदेह न होता।

प्रयाग } सत्यप्रकाश श्रीवास्तव (एम्० ए०)

उन्नाव
२०—८—३७

प्रिय महाशय,

अपना नाम भी पुरस्कार-विजेताओं की श्रेणी में देखकर अतीव हर्ष हुआ। यद्यपि यह सुधा की प्रथम प्रतियोगिता थी, तो भी उसमें ऐसे व्यावहारिक शब्दों का समावेश था, और संकेत इस क़दर स्पष्ट थे कि वर्ग-पूर्तिकार हताश नहीं हो सकते थे। आशा है, आप प्रतियोगिता में इसी प्रकार के व्यावहारिक शब्दों को स्थान देकर सुधा-प्रचार और प्रतियोगिता-साफल्य की ओर अग्रसर होंगे।

भवदीय
रामनाथ मिश्र

काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय
१५—८—३७

पूज्य संपादकजी,

सादर प्रणाम।

सुधा वर्ग-नंबर १ की पूर्ति के साढ़े चार-चार रुपयों तथा आपकी बधाई के लिये जो मुझे तथा श्रीराजेंद्र जैन को पुरस्कार-स्वरूप मिले हैं, आपको अनेकों धन्यवाद! हम लोग फिर से पहेली का उत्तर तथा प्रवेश-शुल्क-पत्रों को भरकर आपकी सेवा में भेज देंगे। कष्ट के लिये क्षमा।

भवदीय
नरेंद्र जैन

कौन शब्द क्यों ठीक है ?

कौन शब्द क्यों ठीक है, इसका एक पूर्तिकार महानुभाव ने अच्छा विवेचन किया है। आशा है, ऐसे ही तर्क करके और पूर्तिकार भी पूर्ति भेजेंगे —

'विष'

संकेत में दिया हुआ है—"कठिनाई में पड़कर कुछ लोग इसका आश्रय लेते हैं।" यहाँ 'विष' और 'विध' इन दो शब्दों में से चुनाव करना है। विष उत्तर ही ठीक है ; क्योंकि कठिनाई में पड़कर विध (विधि) का सहारा तो सभी लेते हैं ; ऐसा कौन है, जो दुःख में परमात्मा का स्मरण न करता हो, किंतु विष का सहारा कुछ ही लोग लेते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'लड़का'

संकेत है—"इससे घर में उजाला होता है।" दो शब्द 'लड़का' तथा 'तड़का' बनते हैं। संकेत में 'घर में' शब्द उपयुक्त उत्तर के लिये कुंजी के समान है। तड़के से तो सब जगह ही उजाला होता है, चाहे घर हो या वन, किंतु घर में उजाला लड़के से ही होना मानते हैं। इसलिये लड़का ही ठीक उत्तर होगा।

'अरुण'

"यह देवता नियत समय पर ही अपनी कला दिखाते हैं।" संकेत इस प्रकार है। यहाँ 'अरुण' और 'वरुण' दो में से एक को लेना है। इनमें 'अरुण' शब्द ज़्यादा मौज़ूँ है। अरुण का अर्थ है सूर्य और सूर्य को भी देवता माना जाता है। सूर्य देवता ही निश्चित समय पर अपनी कला दिखाते हैं, न कि वरुण। अतः यही उपयुक्त उत्तर है।

'गरल'

संकेत में दिया हुआ है—"वैद्य लोग इसे सँभालकर रखते हैं।" 'गरल' तथा 'खरल' दोनो ही सँभालकर रक्खे जाते हैं, किंतु जितना सँभालकर 'गरल' रक्खा जाता है, उतना 'खरल' नहीं। दूसरे सँभालकर न रखने के कारण जितनी हानि की सँभावना 'गरल' से है, उतनी 'खरल' से नहीं। इसलिये 'गरल' ही ठीक होना चाहिए।

'बाल'

संकेत है—"इसे.....बनाना आसान है।" यहाँ 'बाल' और 'बात' इन दो शब्दों में से देखना है कि कौन-सा शब्द बेहतर है। बात बनानी आसान भी है, और कठिन भी। चतुर और वाक्पटु के लिये बात बनानी जितनी आसान है, मूर्ख और नासमझ के लिये उतनी ही कठिन। 'बाल' ही शब्द ठीक ज्ञात होता है, क्योंकि करनेवाले के लिये यह काम भी कठिन नहीं। दूसरे, 'लड़का' और 'तड़का' में 'लड़का' शब्द उपयुक्त ठहरने के कारण भी 'बाल' शब्द ही आता है।

'सदन'

"इसे साफ़ रखना चाहिए।" इस प्रकार का संकेत है। 'बदन' तथा 'सदन' इन दो शब्दों में से एक का निर्णय करना है। 'सदन' अधिक उपयुक्त जँचता है। कारण, 'बदन' की तरफ़ 'सदन' की अपेक्षा तवज्जेह ज़्यादा है। मौजूदा ज़माने में बहुत कम ऐसे मिलेंगे, जो इस ओर ध्यान न देते हों, वरन् कुछ तो खूब बनाव-शृंगार करते हैं। दूसरे, बदन साफ़ रहते हुए सदन साफ़ नहीं भी रहता। किंतु जो 'सदन' साफ़ रक्खेगा, 'बदन' भी रक्खेगा ही। तीसरे, बदन न साफ़ रखने के कारण स्वयं को नुक़सान पहुँचने की संभावना है, और घर साफ़ न रखने से कुल कुल को।

'हवन' तथा 'नर'

संकेत है—"कामना-पूर्ति के लिये ताप सहकर भी इसे करते हैं।" तथा "इसमें पानी न रहने पर कोई इसके पास नहीं फटकता।" पहले संकेत के उत्तर में दो शब्द सामने आते हैं—एक 'हवन' और दूसरा 'हवस'। साफ़ प्रकट है कि इसका यथार्थ उत्तर 'हवन' ही हो सकता है। दूसरे संकेत के उत्तर में 'नर' तथा 'सर' बनते हैं। उपयुक्त उत्तर सर ही होना चाहिए। यह सत्य है कि 'नर' में पानी (आब) न रहने पर उसकी बेक़द्री हो जाती है। संभव हो सकता है कि कोई व्यक्ति उसके पास जाना न पसंद करे। किंतु 'कोई न' फटके, इसके उत्तर के लिये उपयुक्त नहीं है, क्योंकि 'कोई' में मनुष्य के अतिरिक्त पशु-पक्षी भी आ जाते हैं। किंतु 'सर' के ठीक रखने से पहले संकेत के उत्तर में 'हवस' मंद हो जाता है, वह भी ठीक नहीं होता, इसलिये नर ही लिखा गया है।

रामनाथ, काशीपुर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'तुलसी-पथ-प्रदर्शक' (समालोचना)—लेखक, श्रीअंबिकाचरण शर्मा और पं० शिवशंकर शर्मा ; मूल्य १।)

(२) 'पुण्य स्मृतियाँ' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीमहात्मा गांधीजी ; मूल्य ।।।)

(३) 'वेदांत-रहस्य' (दर्शन)—अनुवादक, श्रीलल्लीप्रसाद पांडेय ; मूल्य १।।)

(४) 'मणि-माला' (गद्य काव्य)—लेखक, श्रीनोखेलाल शर्मा ; मूल्य ।।।)

(५) 'पिपासा' (उपन्यास)—लेखक, श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ; मूल्य १।)

(६) 'आज़ारे-हिंद' (उपन्यास)—लेखक, श्रीऐडवर्ड श्रीपाल ; मूल्य १।)

(७) 'कुमारी' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत शिक्षार्थी ; मूल्य १।।)

(८) 'दुराचार के अड्डे' (उपन्यास)—लेखक, श्रीऋषभचरण जैन ; मूल्य १)

(९) 'बुर्दाफ़रोश' (उपन्यास)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १)

(१०) 'चाँदनी रात' (उपन्यास)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १)

(११) 'चंपाकली' (उपन्यास)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १)

(१२) 'तिलस्मी जासूस' (उपन्यास)—लेखक, श्रीहरिश्चंद्र ; मूल्य १)

(१३) 'मधु-कलश' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत 'बच्चनजी', मूल्य १)

(१४) 'गुप्तजी की कला' (समालोचना)—लेखक, प्रो० गौरीशंकर 'सत्येंद्र' ; मूल्य ।।।)

(१५) 'मुक्ति-यज्ञ' (नाटक)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १)

(१६) 'तीरे-नज़र' (काव्य)—लेखक, कविवर 'बिस्मिल' ; मूल्य १।=)

(१७) 'शिवा-साधना' (नाटक)—लेखक, श्रीहरिकृष्ण 'प्रेमी' ; मूल्य १।)

(१८) 'सोंठ व हल्दी' (कृषकोपयोगी)—लेखक, श्रीगयादत्त त्रिपाठी बी० ए० ; मूल्य =)

(१९) 'तेल' (उपन्यास)—लेखक, श्रीछविनाथ पांडेय ; मूल्य १।)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[संपादकीय विचार]

१. देशी चिकित्सा-पद्धति

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि हमारे नेता देशी चिकित्सा-पद्धति को प्रोत्साहित कर रहे हैं, और बंबई की व्यवस्थापिका सभा में इस संबंध में एक 'बिल' भी पास किया जानेवाला है। हम एलोपैथिक पद्धति के विरोधी नहीं; एलोपैथिक की शल्य-विद्या उसकी अपनी चीज़ है। इसके प्रचार से लाखों का उपकार हुआ है, और होगा, पर ओषधि-प्रकरण में आयुर्वेद के मुक़ाबिले यह हल्की पड़ जाती है। एलोपैथिक पद्धति के अनुसार चिकित्सा करानेवाले को रुपयों का अधिक व्यय करना पड़ता है। भारत ग़रीब देश है, यहाँ की औसत आमदनी कुछ ही पैसे रोज़ है। ऐसी दशा में सर्व-साधारण के लिये एलोपैथिक चिकित्सा कराना सुलभ नहीं।

जब तक जातीय शक्ति सुधारने का क्रम ठीक नहीं किया जाता, तब तक रोगों का बाहुल्य होना सहज है। भारतवर्ष रोगों का घर है, यह बड़े दुःख की बात है। इस स्थिति को दूर करना आवश्यक है, अतः यह चेष्टा होनी चाहिए कि सर्व-सुलभ ओषधियों का प्रचार किया जाय। और, उन वैद्यों तथा हकीमों को हर प्रकार प्रोत्साहित करना चाहिए, जो एलोपैथिक के इस ज़माने में भी ग़रीबों की सेवा कर उनके रोग दूर करने का प्रयास कर रहे हैं।

इस संबंध में यह बतलाना अनावश्यक न होगा कि विदेशी एलोपैथिक पद्धति में जिन भेषजों का प्रयोग होता है, उनमें से अधिक भारतीय ही हैं (लगभग १५० ऐसी ओषधियों में १०० एतद्देशीय हैं)। भेद इन ओषधियों के तैयार करने में यह है कि एलोपैथी में 'टिंचरों' का प्रचार है, और आयुर्वेद में अरिष्ट आसव, लेह, चूर्ण आदि का। विदेशों में तैयार होने के कारण या प्रक्रिया में अधिक खर्च पड़ने से एलोपैथिक ओषधियाँ सस्ती नहीं पड़तीं। छ खूराक दवा छ आने में पड़ती है, यह सस्ती का उदाहरण है। महँगी दवा का कहना

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ही क्या ! इसके विपरीत देशी दवाएँ पैसे ख़ूराक से भी सस्ती पड़ जाती हैं। यह सब जानते हुए भी सरकार ने आज तक देशी चिकित्सा-प्रणाली को खुले दिल से प्रोत्साहित नहीं किया, यह बड़ा ताज्जुब है।

डॉक्टरी चिकित्सा अमीरों की चिकित्सा है। ग़रीब को तो रोग के घेरने पर वैद्य या हकीम का ही आश्रय है। हम जहाँ यह कहते हैं कि डॉक्टरी चिकित्सा कराने में व्यय अधिक होता है, वहाँ यह भी कह देते हैं कि कई देशी वैद्य और हकीम भी सार्वजनिक सेवा-भाव को दूर रख, खोटी-खरी की समुचित परख न कर, यों ही ओषधियाँ दे देते हैं, जिनसे लाभ के स्थान में हानि अधिक होती है, और आयुर्वेद बदनाम मुफ़्त में होता है। एलोपैथी-वाले चिकित्सक आयुर्वेद के चिकित्सकों को इसी दुर्वृत्ति के कारण 'ठग'-विद्या के विधायक तक कहने का साहस करते हैं।

हम यह सब देखते हुए यह कहना चाहते हैं कि एक तो देशी पद्धति का सरकार में पूरा आदर हो; ऐसा होने से वह उपेक्षा उड़ जायगी, जो आज दिन प्रत्यक्ष है। दूसरे यह हो कि वैद्यों का काम करनेवालों पर पूरा-पूरा नियंत्रण रहे। जिस प्रकार स्कूलों के इंस्पेक्टर होते हैं, उसी प्रकार वैद्यक का धंधा करनेवालों की पूरी-पूरी परख हो। जो ओषधियाँ बिक्री के लिये हों, उनकी जाँच हो। काष्ठादि दवाएँ अधिक काल तक रहने से खराब हो जाती हैं, पर बहुत-से वैद्य ग़रीबों को यही दे देते हैं। इस तरह की बातें सर्वथा बंद ही होनी चाहिए। इनके अलावा एलोपैथिक की शल्य-चिकित्सा सीखने के लिये ये वैद्य प्रोत्साहित किए जाने चाहिए। मेडिकल कॉलेजों में देशी वैद्यों को एलोपैथिक पद्धति का परिचय देने के लिये अति-रिक्त कक्षाएँ यदि खोली जा सकें, तो अच्छा हो। कम-से-कम ६ महीने प्रत्येक वैद्य को इन कक्षाओं में रहकर पाश्चात्य चिकित्सा-पद्धति के स्थूल रूप का परिचय प्राप्त करना चाहिए।

इसी प्रकार प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में देशी दवाओं के बारे में समुचित शिक्षा दी जानी चाहिए, और प्रत्येक विद्यार्थी को यह भली भाँति समझा देना चाहिए कि आयुर्वेद में भी चिकित्सा की पूरी-पूरी व्यवस्था है—यह कोरी ठग-विद्या नहीं, जैसा इसे विदेशी चिकित्सक समझे बैठे हैं। इस प्रकार यदि चिकित्सा-शिक्षा दी जाय, तो यह पूरी आशा की जा सकती है कि देशी वैद्य, हकीम तथा डॉक्टरों में जो एक प्रकार का मनोमालिन्य है, वह दूर हो जायगा, और देशी ओषधियों का प्रचुर व्यवहार होगा। ऐसा होना इस दृष्टि से भी उपयोगी कहा जा सकता है कि देश का रुपया बाहर न जा यहीं रहेगा, और समुचित प्रोत्साहन मिलने से देशी ओषधियों के बारे में भी अच्छी खोज की जा सकेगी।

क्या बंबई के समान भारत के अन्य प्रांतों में भी इस दिशा में प्रयत्न किया जायगा? हम तो यही चाहते हैं कि इस ओर सरकार को पूरी-पूरी दिलचस्पी लेनी चाहिए। हम युक्त-प्रांत के प्रधान मंत्री माननीय पं० गोविंदवल्लभजी पंत का ध्यान इस ओर विशेष रूप से आकर्षित करते हैं।

× × ×

२. वैदेशिक अनभिज्ञता

यों तो समय-समय पर ऐसे दृष्टांत मिलते ही रहते हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि भारत के विषय में विदेशी कितने अनभिज्ञ हैं। किंतु हाल में जो समाचार मिले हैं, उन्हें पढ़कर यह ज्ञात हो जाता है कि विदेशों में भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता-विषयक प्रचार कितना आवश्यक है।

भारतीय स्काउटों का एक दल, मिस्टर धावन की अध्यक्षता में, कुछ महीनों पूर्व, हालैंड के ब्लोमेंडाल-नामक स्थान में पहुँचा था। उस स्थल

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पर ३० देशों के स्काउट एकत्र हुए थे, और सब मिलाकर लगभग २८,००० स्काउट 'जांबोरी' मना रहे थे। भारतीय दल से देश-विदेशों के स्काउट नाना प्रकार के प्रश्न पूछा करते थे, मगर एक प्रश्न ऐसा था, जो विचित्र कहा जा सकता है। अधिकतर यही प्रश्न पूछा जाता था कि भारतीय घरों में रहते हैं या गुफाओं में? गोया भारतीय एकदम जंगली और पशुओं की भाँति गिरि-गह्वरों में रहने के अभ्यस्त हैं।

ऐसे ही एक बार एक हालैंड-निवासी मि० धावन को एक टेलीफ़ोन-यंत्र के पास ले जाकर पूछने लगा—"क्या आपने कभी यह चीज़ देखी है?"

इन अज्ञान के उदाहरणों से यह भली भाँति मालूम होता है कि विदेशी भारतीयों को कैसा समझते हैं। यह तो एक पुरानी कथा है कि यह अज्ञान दूर करने के स्थान में विदेशी मिशनरियों ने इसे कितना व्यापक बना दिया है, और जंगली भारतीयों को 'सभ्य' बनाने की दृष्टि से कितना धन एकत्र किया है, और कर रहे हैं! इन मिशनरियों के अलावा और भी कई ऐसे दल हैं, जिनकी करनी भारतीयों से छिपी नहीं, पर जिनके कृत्यों को रोकने के लिये उनके पास पर्याप्त साधन नहीं। जब कभी विदेशियों द्वारा गर्हित प्रचार की कथा भारत तक पहुँचती है, तो थोड़े दिनों भले ही उसकी निंदा की जाय, मगर उस प्रचार के विरुद्ध कोई आंदोलन स्थायी रूप से चालित नहीं रहता। भारत के विषय में विदेशी पढ़े-लिखे समाज के किसी विशिष्ट अंश में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति भले ही कुछ आदर के भाव हों, पर अधिकांश जनता भारत का नाम-मात्र जानती हो, तो जानती हो, अधिक नहीं जानती।

इस वैदेशिक अज्ञान का निवारण करना, जितना भी बन पड़े, अत्यंत आवश्यक है। हर्ष का विषय है कि भारत के कई नेताओं का ध्यान इस प्रश्न की ओर आकर्षित हुआ है, और भारत के प्राण पंडित जवाहरलालजी ने एक वैदेशिक विभाग की सृष्टि भी कर दी है। हमारा अपना विचार यह है कि देश की समस्त राजनीतिक और धार्मिक संस्थाओं को यह वैदेशिक अनभिज्ञता दूर करने के उपाय करने चाहिए। यदि ऐसा क्रम रक्खा जाय कि भारत-संबंधी सच्चा ज्ञान देनेवालों का विदेशों में तार न टूटे, तो बहुत कुछ लाभ हो सकता है। श्रीरवींद्रनाथ, श्रीमती सरोजिनी नायडू, पं० जवाहरलालजी, श्री-सुभाष बोस आदि की वैदेशिक यात्राओं से भारत-विषयक बहुत कुछ अज्ञान दूर हुआ है। किंतु भारत के ऐसे राजनीतिक नेताओं और स्वामी विवेकानंद तथा स्वामी रामतीर्थ-से धार्मिक और सांस्कृतिक दूतों का आवागमन निरंतर न होने से वह स्थायी लाभ नहीं हो पाया, जो अभीष्ट है।

देश-दूतों के अतिरिक्त समाचार-पत्रों, सिनेमाओं, रेडियो आदि द्वारा भी विदेशों में भारत-विषयक आंदोलन किया जाना चाहिए। यदि भारतीय कला और संस्कृति के उदाहरणों का समुचित प्रदर्शन किया जाय, और विदेशों के विभिन्न नगरों में इस दृष्टि से प्रचार किया जा सके, तो, हमारा ख़याल है, आर्थिक लाभ भी अच्छा हो, और भारत का सांस्कृतिक संदेश भी दूर-दूर तक पहुँचाया जा सके।

यह वास्तव में बड़े ही शोक का विषय है कि जो भारत कभी सभ्य-संसार का मुकुट-मणि प्रख्यात था, वही आज हर प्रकार गया-बीता ही नहीं, 'जंगलियों' का आवास समझा जाता है, और यह पूछा जाता है कि वहाँ के मनुष्य मकानों में रहते हैं या गुफाओं में! यह स्थिति जहाँ विदेशियों के अज्ञान का प्रदर्शन करती है, वहाँ हमारी एतद्विषयक उपेक्षा का भी समुचित दिग्दर्शन कराती है। इस उपेक्षा का क्या नतीजा हुआ है, यह मिस मेओ आदि की पुस्तकें प्रमाणित करती हैं। यह सब

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देखते हुए भी चुप रहना किसी भी दशा में समुचित नहीं।

हमें यही कहना है कि विदेशों का यह अंधकार दूर करना हर भारत-हितैषी का कर्तव्य है, और सरकार को भी चाहिए कि इस ओर चुप न बैठे, प्रगतिशील हो। इसी में हित है।

× × ×

३. रेडियो का प्रश्न

यद्यपि पाश्चात्य देशों के मुक़ाबिले भारत में अभी रेडियो का प्रचार बहुत ही कम है, परंतु यह देखा जा रहा है कि प्रतिवर्ष इस दिशा में उन्नति हो रही है, और रेडियो-स्टेशन भी नए-नए बनाए जा रहे हैं। रेडियो भी मनुष्य के मनोरंजन का एक साधन है। अभी तक इसके यंत्रों की क़ीमत ऐसी है, जिससे इसका प्रवेश अमीरों तक ही परिमित है। पर चेष्टा इस बात की की जा रही है कि वे यंत्र सस्ते दामों में प्राप्त किए जा सकें। सुनते थे, देहली के रेडियो-दफ़्तर में ऐसे सस्ते सेट तैयार भी किए जा चुके हैं। पता नहीं, इनका प्रचार क्यों नहीं हुआ।

भारत में रेडियो के बारे में सब जगह से यही शिकायत सुनने में आती है कि यहाँ का प्रोग्राम उतना सुंदर नहीं होता, जितना विदेशों का। यहाँ के कई शौक़ीन भारतीय प्रोग्राम से ऊब नित्यप्रति विदेशी प्रोग्रामों को ही सुनते हैं। पूछने पर यही मालूम होता है कि यहाँ के संचालक प्रोग्राम के महत्त्व पर ध्यान नहीं देते, वरन् जैसा कुछ बन पड़ा, उसे ही प्रस्तुत कर देते हैं। लेक्चर, वार्ता, गीत आदि सामग्री अधिकतर हल्के ढंग की होती है।

अभी हाल में रेडियो के कंट्रोलर से पत्र-प्रतिनिधि की इसी संबंध में बातचीत हुई थी। कंट्रोलर साहब ने जो उत्तर दिए हैं, उनसे पता चलता है कि भारत में रेडियो से होनेवाली आमदनी इतनी काफ़ी नहीं कि भले-भले आचार्यों को रेडियो द्वारा भाषण आदि देने के लिये निमंत्रित किया जा सके। अतः हारकर उन्हें ही बुलाया जाता है, जो उतनी फ़ीस में काम करने को तैयार हों। प्रोग्रामों के हल्के होने का यही कारण है। दूसरे यह भी है कि योरप के सदृश अवैतनिकरूपेण काम करनेवाले यहाँ नहीं मिलते। जो अपने विषय के अधिकारी हैं, उन्हें या तो रेडियो से कहने का अवकाश नहीं, या वे मुफ़्त में कहना ही पसंद नहीं करते। कई तो रेडियो को उपयुक्त माध्यम ही नहीं समझते, और इसीलिये अपनी कला का प्रदर्शन करना उपयुक्त नहीं समझते। इसके विपरीत कई मनुष्य ऐसे भी हैं, जो रेडियो द्वारा अपना संदेश देश को सुनाना चाहते हैं, पर रेडियो के सर्वेसर्वा या तो उनके मत से सहमत नहीं, या वे ऐसी बातें कहना चाहते हैं, जो जनता के कानों में पहुँचाई जाने के योग्य नहीं। ऐसी स्थिति में रेडियो से वह हित नहीं हो रहा है, जो होना चाहिए।

रेडियो मनोरंजन का साधन तो है ही, साथ ही लोक-शिक्षा का भी सुलभ ढंग है। इसके द्वारा देश में सहज ही सद्भावनाओं का प्रचार किया जा सकता है। विदेशों में राष्ट्र-निर्माण के कई कामों में रेडियो की सहायता ली जाती है। भारत में तब तक रेडियो से उतना लाभ नहीं हो सकता, जब तक मनुष्यों के पास सस्ते 'रिसीविंग सेट' न हों। सस्ते इसलिये कि महँगे ख़रीदने के लिये मामूली हैसियत के भारतीय के पास दाम नहीं। अतः रेडियो की उपयोगिता बढ़ाने के लिये यह आवश्यक है कि रेडियो-सेट सुलभ कर दिए जायँ। जब तक ऐसा नहीं किया जाता, हम समझते हैं, नए-नए स्टेशन खोलने की कोई आवश्यकता नहीं। इस समय जो स्टेशन हैं, उनमें ही रद्दोबदल कर काम निकालना चाहिए। अभी रेडियो पर जो ख़र्च होता है, वही बड़ी मुश्किल से पूरा पड़ता है। नए स्टेशनों के

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होने से ख़र्च तो बढ़ ही जायगा, पर आमदनी उस लायक़ न होगी।

इस संबंध में यह भी सुनते हैं कि भविष्य में रेडियो-स्टेशनों से प्रांतीय भाषा के प्रोग्राम भेजे जायँगे। यथा बंबई से गुजराती, पूने से मराठी, कलकत्ते से बंगाली, दिल्ली से उर्दू और मदरास से तामिल आदि। यदि यह ख़बर सही है, तो इससे भी भारतीय भाषाओं का प्रश्न न सुलझेगा। यदि यही क्रम निर्धारित किया जा चुका हो, तो हम पूछते हैं कि बेचारी हिंदी ने ही, जिसे राष्ट्र-भाषा कहलाने का गौरव प्राप्त हो चुका है, क्या बिगाड़ा है कि उसे कोई भी स्टेशन नहीं मिला। उर्दू के प्रोग्राम कभी-कभी इतने जटिल होते हैं कि अच्छे-अच्छे उर्दूदाँ भी एक बार झिझक उठते हैं, फिर बेचारे हिंदी-मात्र समझनेवालों की तो बात ही क्या! क्या हिंदी-प्रेमी अधिकारी रेडियो-संचालकों का ध्यान राष्ट्र-भाषा की ओर आकर्षित करेंगे? यदि लखनऊ का स्टेशन हिंदी के लिये नियत कर दिया जाय, तो बड़ा अच्छा हो। हम तो यह भी चाहते हैं कि लखनऊ ही क्या, हर रेडियो-स्टेशन से अँगरेज़ी की भाँति हिंदी का भी प्रोग्राम रोज़ रहा करे। हिंदी का यह हक़ है, इसका आदर होना चाहिए। क्या रेडियो के कंट्रोलर इस ओर ध्यान देंगे?

× × ×

स्त्रियों के समस्त रोगों में—

यह अचूक गुणकारी है।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

बिभाग नं० ४६ पोष्टबक्स नं० ५५४ कलकत्ता

सब जगह मिलता है।

लखनऊ शहर के सोल एजेंट:—किंग मेडिकल हॉल, २५ अमीनाबाद-पार्क

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

४. क्षय-रोग का प्रसार

क्षय-रोग का नाम सुनते ही कँपकँपी होने लगती है। कोई भी देश ऐसा नहीं, जहाँ इस रोग के मरीज़ न हों। इसके कीटाणु जिस पर आक्रमण कर बैठें, वह आज यदि न भी गया, तो कल अवश्य ही गया समझिए। इसके आक्रमण को रोकने की कई तरकीबें सोची तो जा चुकी हैं, पर उनका प्रभाव अभी तक नगण्य है, और यह रोग घटने के स्थान में दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक़्क़ी कर रहा है। भारतवर्ष में भी इसका कार्य-क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है। आज तक इस रोग से अधिकतर शहर में रहनेवालों की ही अधिक क्षति होती थी, पर अब धीरे-धीरे, किंतु पुख़्ता तौर से, यह राजरोग राजों, रईसों और वैभवशालियों का गर्व शमन करता हुआ ग़रीब प्रजा की कुटिया तक भी पहुँच चुका है। और, यह निश्चित है कि यदि अभी से इसके प्रसार में बाधाएँ न डाली जायँगी, तो अनतिदूर भविष्य में यह ग्राम-के-ग्राम चौपट कर डालेगा।

क्षय कई प्रकार का होता है। शरीर का कोई भी अवयव ऐसा नहीं, जहाँ इसके कीटाणु प्रविष्ट न हो सकें। किंतु अधिकतर यह देखा जाता है कि फुप्फुस के बिगड़ने से ही रोगियों की मृत्यु होती है। इस फुप्फुसी क्षय की भारत में बहुत ही वृद्धि हो रही है, और देहातों में भी इसका प्रसार होने लगा है। कारण यह बतलाया जाता है कि यह रोग संस्पर्शज है। रोगी के साथ उठने-बैठने और सेवा-सुश्रूषा करनेवाले यदि समुचित प्रतिकरण न करें, तो उन्हें भी इस रोग के कीटाणु आक्रांत कर सकते हैं। देहातों के बहुत-से मनुष्य आज दिन औद्योगिक नगरों में श्रमजीवी हैं, रात-दिन मिलों की दूषित वायु का सेवन करने, तंग और गंदे मकानों में रहने तथा समुचित भोजन प्राप्त न होने से इन ग़रीब मज़दूरों का स्वास्थ्य धीरे-धीरे गिरता

लक्ष्मीचंद ने कहा--
"रुक्मिणी ! मैं तुम्हारे बिना जीवित रहूँ, यह हो सकता है, पर वह जीवन व्यर्थ होगा, निर्जीव होगा।"
× × ×
राजा साहब ने पूछा—
"रुक्मिणी ! यह पद्मा सेठ लक्ष्मीचंद की कौन है ?"
"कोई नहीं, उनके फ़ार्म में कार्य करती है।"
"सेठजी इस पर बहुत मुग्ध हैं !"
"शायद।"
× × ×
राजा साहब ने कुछ आश्चर्य के साथ रुक्मिणी को देखा, उन्होंने कहा—
"रुक्मिणी ! मैं जो कहना चाहता हूँ, मुझे मौक़ा दो कि मैं कहूँ। मैं तुम्हें प्यार करता .."

—घटनाचक्र में—

पड़कर लक्ष्मीचंद, रुक्मिणी, पद्मा और राजा साहब ने क्या किया ?
जानना चाहते हैं, तो 'जा ग र ण' उपन्यास की प्रति मँगाइए। मूल्य २)

पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जाता है, और क्षय के कीटाणु इन पर अपना आक्रमण कर देते हैं। हालत अधिक ख़राब होने पर बेचारे अपने गाँव लौटते हैं, और वहाँ समुचित प्रबंध न होने से मृत्यु की गोद में चले जाते हैं। इस प्रकार क्षय-रोग के कीटाणु शहरों से चलकर अनायास ही देहातों में प्रविष्ट हो रहे हैं।

यह स्थिति देखते हुए हमें यह कहना पड़ता है कि हमारे देश में अभी लोगों में इतनी फ़िक्र पैदा नहीं हुई कि जो इस रोग के दूरीकरण के लिये पर्याप्त समझी जाय। पर यह विषय ऐसा नहीं, जो कुछ दिनों के लिये टाला जा सके। देश का भविष्य ग्रामवासियों के स्वास्थ्य पर ही निर्भर है। शहरों में जहाँ-तहाँ अस्पताल और सेनेटोरियम हैं, जहाँ धनी क्षय-रोगी प्रविष्ट हो सकते हैं, और जहाँ समुचित चिकित्सा और सुश्रूषा का प्रबंध किया जा सकता है। यद्यपि इनकी भी संख्या उतनी नहीं, जितनी अभीष्ट है; पर न होने से कुछ होना भी अच्छा है, किंतु गाँवों का तो भगवान् ही मालिक है। क्षय-रोग तो क्षय-रोग, वहाँ साधारण रोगों की चिकित्सा के लिये भी कोई प्रबंध नहीं। सरकारी अस्पताल भी दूर-दूर पर हैं, उनके द्वारा समय पर और समुचित सहायता नहीं पहुँचाई जा सकती, क्योंकि आने-जाने में ही बहुत समय नष्ट हो जाता है, और रोगी की वह चिकित्सा भी नहीं हो सकती, जो ज़रूरी है। अतः हम चाहते हैं कि कम-से-कम हर म्युनिसिपैलिटी और हर नोटिफ़ाइड एरिया के अलावा हर ग्राम में, यदि संभव हो, एक छोटा-सा अस्पताल अवश्य हो, जहाँ पहुँचने पर किसी भी रोगी की चिकित्सा की जा सके, और क्षयी को विशेषतः सहायता पहुँचाने का प्रबंध हो। इसके अलावा यह भी ज़रूरी है कि गाँव के मुखिए, लंबरदार, स्कूलों के पंडित आदि पढ़े लिखे व्यक्तियों को इस बात के लिये प्रोत्साहित किया जाय कि वे इस क्षय रोग के कारणों को भली भाँति समझें, और गाँववालों को समझाने की ही चेष्टा न करें, वरन् यह भी देखें कि उनके उपदेशों का पालन भी किया जा रहा है या नहीं। सरकार की ओर से ग्राम-सुधार की जो योजना हो रही है, उसमें स्वास्थ्य-सुधार का विशेष स्थान होना चाहिए, और क्षय, मलेरिया, हैज़ा, प्लेग, पीला बुख़ार आदि संक्रामक रोगों से बचने और हो जाने पर इनसे मुक्ति पाने के उपायों का देशव्यापी प्रचार होना आवश्यक है।

विदेशों में क्षय आदि रोगों के निवारण के लिये

केसाविन

प्रत्येक अवस्था के दमे के लिये इलाज
विशेषतया व्यावहारिक

खाँसी, ज़ुकाम, अतीव उत्कट पेचिश, न्यूमोनिया, उखड़ा हुआ दमा, और हर प्रकार के श्वास की बीमारी के लिये।

इसमें ज़हरीली वस्तु नहीं है;
बच्चे इसे पसंद करते हैं।

बेंगल केमिकल
कलकत्ता : : बंबई

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय आंदोलन किए जा रहे हैं। क्या हम आशा करें कि हमारे देश-हितैषी नेता भी राष्ट्र के स्वास्थ्य की समस्या को प्रमुख मानकर उसे हल करने की चेष्टा करेंगे? भारतवर्ष का हृदय ग्रामों में है, उसी हृदय की शुद्ध गति पर ही राष्ट्रीय जीवन निर्भर है। यदि वहीं रोग ने डेरा डाल दिया, तो भविष्य में क्या होगा? यह सभी समझ सकते हैं कि क्षय का आतंक बड़ा ही भयावह है। इसे मिटाने में क्या राजा, क्या रंक, सबको सम्मिलित होना चाहिए, अन्यथा देश में बल-हीन ही दिखाई देंगे, और बल-हीन कर ही क्या सकते हैं? क्या हम आशा करें कि हमारे विचारों की ओर अधिकारिवर्ग का ध्यान आकृष्ट होगा?

× × ×

५. अपर्याप्त पोषण

भारत-सरकार के पब्लिक हेल्थ-कमिश्नर की रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि भारतीय जनता में अपर्याप्त पोषण के कारण कई रोग—मलेरिया, कुष्ठ, क्षय आदि—सहज ही प्रविष्ट हो जाते हैं। उनका कहना है कि जब तक पर्याप्त पोषण की सुव्यवस्था नहीं की जा सकती, उपर्युक्त रोगों के निवारण करने के प्रयास पूर्णतया सफल ही नहीं हो सकते।

यह तो निर्विवाद है कि रोग-निवारण के लिये स्वस्थ शरीर होना आवश्यक है। यदि शरीर सबल है, तो रोग आक्रमण ही न कर पावेंगे; यदि दैवात् कर भी सकें, तो शरीर के जैवाणु उन्हें मार भगावेंगे। इसके विपरीत सहज ही रोगों का आधिपत्य हो सकता है। शरीर तभी सबल बन सकता है, जब उसका समुचित पोषण किया जाय, अतः शरीर के पर्याप्त पोषण की महत्ता स्पष्ट हो जाती है।

मलेरिया, कुष्ठ, क्षय आदि विनाशकारी रोग सबल शरीर में बलात् नहीं हो पाते; इन रोगों के आधुनिक इलाज में शरीर का बल बढ़ाने का ही प्रयत्न किया जाता है। भारतवर्ष में हज़ारों मनुष्य इन भयंकर रोगों की भेंट होते हैं, अतः इस वार्षिक दंड के निवारण का उपाय सोचना सभी देश-प्रेमियों का कर्तव्य है। हम ऊपर कह आए हैं कि यदि मनुष्य बलशाली है, तो उस पर ये रोग सहज ही आक्रमण नहीं कर सकते। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि जनता सबल बनाई जा सके, अर्थात्

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।)

डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥-) ५=)
२५ ,, ,, ,, } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यदि उसके पर्याप्त पोषण की सुव्यवस्था की जाय, तो इन रोगों से बहुत कुछ मुक्ति मिल सकती है।

पुष्टि करनेवाले पदार्थों की खोज करना और उन्हें इतना सुलभ बना देना कि साधारण श्रेणी के व्यक्ति भी उनसे फ़ायदा उठा सकें, विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों का कार्य है। विदेशों में राष्ट्रीय पोषण के लिये कई कमेटियाँ बनी हुई हैं। इन कमेटियों के सदस्य एक ओर कृषि-विभाग से संबद्ध रहते हैं, दूसरी ओर वैज्ञानिकों से। इनकी अपनी भी प्रयोग-शालाएँ रहती हैं, जहाँ पोषण-संबंधी नई-नई खोजों की पूर्ण जाँच की जाती है, और समुचित ज्ञात होने पर वे नए पदार्थ राष्ट्र के सामने रक्खे जाते हैं। इस तरह राष्ट्र के स्वास्थ्य का सदा ध्यान रखने से विदेशों में उपयुक्त रोगों का उतना बाहुल्य नहीं, जितना हमारे इस देश में।

हमारे कृषि-विभागों का ध्यान पैदावार की ओर ही अधिक रहता है, कृषि और पोषण का जो अभिन्न संबंध है, उसकी ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। सेर-भर नाज के स्थान में १½ सेर अनाज पैदा करने की ही फ़िक्र अधिक है। यह ठीक है, पर साथ ही यदि पोषण का ध्यान रख पुष्टिकर अन्न की ही खेती की जाती, तो और भी अच्छा होता।

अन्न के साथ पोषक शाक और पुष्टिकर पेयों का भी प्रश्न है। विटामिन-युक्त समुचित अन्न खाने से जिस प्रकार थोड़े ही समय में कई रोगों से मुक्ति हो सकती है, उसी प्रकार विटामिन-युक्त शाकों का सेवन भी बड़ा ही हितप्रद है। पेयों में सबसे उत्तम दुग्ध है। दुग्ध में वे सभी विटामिन प्राप्त होते हैं, जिनकी पोषण के लिये आवश्यकता होती है। पाश्चात्य देशों में इस समय भोजन के पदार्थों की उपयुक्तता और पोषण-संबंधी अन्वेषण पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा है। कई विशेषज्ञों का कहना है कि भोजन की सामग्री में अन्न, शाक, पेय और फलों का सन्निपात होना चाहिए; क्योंकि ऐसा होने से शरीर को वे सभी पदार्थ प्राप्त हो सकते हैं, जिनकी उसे आवश्यकता है, और जो उसके समुचित पोषण के लिये समुपयुक्त हैं।

बाँसुरी की तान !

इसकी जादू-भरी तान सुनकर मित्रों ने मुझे घेर लिया। यह 'मोहिनी बाँसुरी नं० ५१' पीतल और काली पाइप से जोड़कर बनाई गई है, तभी तो इसकी आवाज़ मधुर और सुरीली है। प्रत्येक बाजे के साथ मिल जाती है, क्योंकि ट्यूंड की हुई है। स्कूल और कॉलेजों में इसके बैंड तैयार हो रहे हैं। सीधी बजती है, इसके २ टुकड़े करके पॉकेट में भी रख सकते हैं। मूल्य १।), डाक-खर्च २ तक ।=), ३ मँगाने से खर्चा माफ़। 'हारमोनियम-तबला-बाँसुरी-मास्टर' पुस्तक १)।

नाच और गाने

की महफ़िल में आपकी ख़ुशामद कोई क्यों करेगा ? जब कि आप एक गाना तक नहीं गा सकते ! इस कमी की पूर्ति के लिये मासिक पत्र 'संगीत' निकला है। इससे आपको घर बैठे संगीत-शिक्षा मिलेगी। २०० पृष्ठ के विशेषांक(विष्णुदिगंबर-अंक)-सहित वार्षिक मूल्य २) है। नमूना मुफ़्त मँगा देखिए। 'म्यूज़िक-मास्टर' पुस्तक भी सातवीं बार छप गई है। इसमें एक नए ढंग से हारमोनियम, तबला, बाँसुरी बजाना बताया गया है, तभी तो थोड़े समय में १२००० बिक चुकी है ! मूल्य १)

पता—गर्ग एंड कंपनी, संगीतशाला, १७ हाथरस (यू० पी०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुराने ज़माने में हमारे यहाँ फल और दूध का प्रयोग लगभग सबके यहाँ होता था। ऋषि-मुनियों में इनके अलावा कंद और मूलों का भी व्यवहार होता था, अन्न का प्रयोग तो होता ही था। इस प्रकार वैदेशिक विशेषज्ञों की जो राय आज है, उसी के अनुरूप प्रयोग हमारे देश में हुआ करता था, और इसीलिये यहाँ शतायु होना एक मामूली बात थी, और घर-घर में हृष्ट-पुष्ट स्त्री-पुरुष दिखाई देते थे। आज दिन कई कारणों से बहुतों को दिन में एक बार भी भोजन मिलना कठिन हो गया है, अतः रोगों का प्रसार भी बढ़ता जा रहा है। यह दशा बड़ी चिंता-जनक है। प्रजा के पोषण का प्रश्न बड़े ही महत्त्व का प्रश्न है। हमारे देशवासी जहाँ कई अन्य बातों में विदेशियों का अंधानुकरण करते हैं, वहाँ उनके स्वास्थ्य के अनुरूप अपने को बनाने का प्रयत्न नहीं करते। यह धनी-मानियों का हाल है, ग़रीबों का तो कहना ही क्या।

हमारे प्रांत में भी यदि पोषण-विषयक अन्वेषण को प्रोत्साहित किया जाय, तो आज दिन जो रोग की अभिवृद्धि हो रही है, उसे रोकने में बड़ी सहायता मिलेगी, इसमें संदेह नहीं।

× × ×

कवि-विनोद, वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य आविष्कारक अमृतधारा द्वारा निर्मित

सौंदर्य-संबंधी कुछ औषधियाँ

चित्त-मोहिनी—(रजिस्टर्ड) इस उबटन को स्नान के समय मलने से चेहरे के कील, झाइयाँ इत्यादि दूर हो जाती हैं। चेहरे की कांति दिन-प्रति-दिन निखरती जाती है। मू० १), नमूना ।)

दिलसुंदरी—(रजिस्टर्ड) इस तैल को स्नान के बाद मलते हैं, जो चेहरे को चमकाता है, और दाग़ व कील आदि को दूर करता है। स्नान के पहले चित्तमोहिनी और स्नान के बाद दिलसुंदरी लगावें, तो फिर क्या कहना है। मू० १), नमूना ।=)

बाग़फूल तैल—(रजिस्टर्ड) यह बालों के समस्त तेलों का राजा है। बालों को नर्म और मुलायम बनाता है और बढ़ाता है, सिर को ठंडा रखता है। केवल सुगंधित ही नहीं, मस्तिष्क के लिये भी गुणकारी है। मू० ।॥)

बाल उड़ाने की अद्वितीय औषधि—इस दवाई को पानी में घोलकर लगाने से एक मिनट के अंदर कोमल-से-कोमल स्थान के बाल साफ़ हो जाते हैं। जिसने मँगवाया, उसी ने गुण गाया। मू० ।=), नमूना —)॥

प्राण-सुख—(रजिस्टर्ड) छाती को ढलकने से बचाता है, और ढलकते हुए को असली दशा में लाता है। स्त्रियों के बहुत ही काम की दवा है। मू० ४), नमूना १)

पान की गोली—वे लोग जो पान का बड़ा पत्ता मुँह में डाले बिना ही पान का आनंद लेना चाहें, वे इन गोलियों को खाएँ, एक गोली खाने से पान का स्वाद भी आएगा, और रंग भी; और शेष गुण पान के मासाला-जैसे हैं। मू० ६० गोली १) नमूना =)

पत्र-व्यवहार करने का पता—अमृतधारा, १२ लाहौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

६. स्वर्गीय पं० शिवगुलामप्रसादजी दीक्षित

आप श्रेष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आपके आचार-विचार प्राचीन प्रणाली के होते हुए भी आप नवीन विचार-धारा के विरोधी नहीं थे। आपका जन्म संवत् १९३० में हुआ था। आपका स्वर्गवास ता० १७ अगस्त सन् १९३७ को देवास में हुआ। आप कानपुर के रहनेवाले थे। आपके दो पुत्र और एक पुत्री है। बड़े पुत्र इंदौर से निकलनेवाली हिंदी मासिक पत्रिका 'वीणा' के संपादक, सुप्रसिद्ध पत्रकार और कवि पं० कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' हैं, तथा छोटे पुत्र पं० पूर्णचंद्र शर्मा देवास-राज्य (जू० ब्रा०) से प्रकाशित होनेवाले हिंदी साप्ताहिक 'मार्तंड' के संपादक हैं। आपके दीर्घ जीवन का रहस्य यही है कि आप सदाचार एवं नियम-पूर्वक रहते थे। इतनी उम्र में भी आप चने तक चबा सकते थे। इधर कुछ दिनों से आप पक्षाघात से पीड़ित थे।

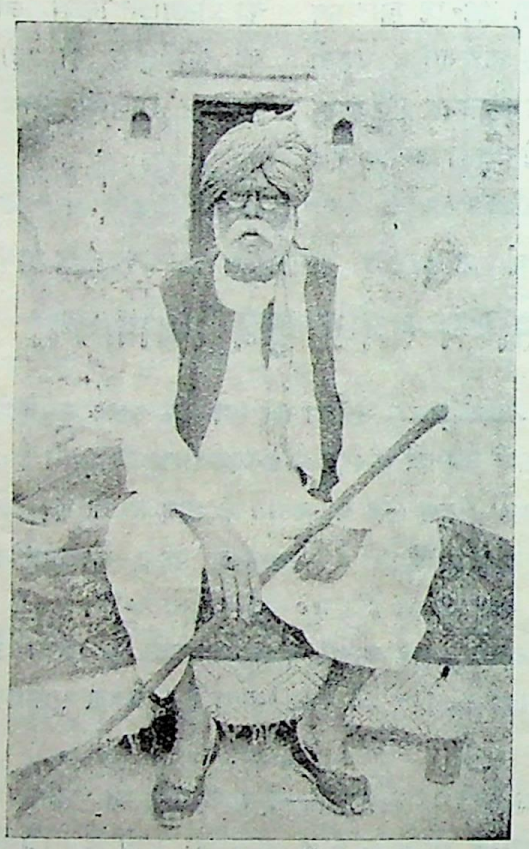

स्व० पं० शिवगुलामप्रसादजी दीक्षित

× × ×

७. मधु-मक्षिका-पालन

मधु या शहद ऐसी वस्तु है, जिसका हमारे यहाँ प्रचुर प्रयोग होता है; पर आश्चर्य है कि मधु-मक्षिका-पालन के सभी साधन सुलभ होते हुए भी हमारे इस देश में इस उद्योग की उपेक्षा ही की जाती है! योरप और अमेरिका में आजकल सैकड़ों मनुष्य यही धंधा किया करते हैं, और इसकी बदौलत अच्छी रक़में पैदा कर लेते हैं।

यह ऐसा धंधा है, जिसमें २०-२५ रुपए लगाने से अच्छी आमदनी हो सकती है। ऐसा भी कहा जाता है कि यदि इसी को बढ़ाकर काम किया जाय, तो साल ही भर में अच्छी-खासी रक़म वसूल हो सकती है। कहनेवाले तो यहाँ तक कहते हैं कि गो-पालन के मुक़ाबिले यह धंधा अधिक सरल और धनद है। इस बेकारी के युग में अगर हमारे नवयुवक खाली बैठे रहने के स्थान में इसी काम को उठा लें, तो उन्हें लाभ ही हो। इस काम के लिये यह भी आवश्यक नहीं कि और व्यवसाय में हाथ न डालें। आप इसे अतिरिक्त कार्य के रूप में सँभाल सकते हैं। अमेरिका में इस काम को बहुत करने लगे हैं। और, सुनते हैं, वहाँ मधु निकालने में वे इतने दक्ष हो गए हैं कि सुनकर तअज्जुब होता है। एक छत्ते से वे वर्ष-भर में कई मन शहद निकाल लेते हैं। कूलू में पंजाब-गवर्नमेंट ने जो सरकारी मक्षिका-गृह (एपिएरी) चालू किया है, वहाँ प्रत्येक छत्ते से औसतन् ३० सेर शहद प्राप्त होता है। माना कि रुपए सेर ही शहद बिका (शहद का भाव सवा रुपए से तीन-चार रुपए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तक रहता है), तो ३०) की आमदनी प्रति छत्ते से हो सकती है। ऐसी स्थिति में जब भारतीयों की औसत आमदनी पाँच-छ पैसे रोज़ हो, क्या ३०) प्रति छत्ते की रक़म कम है ?

दक्षिण-भारत में इस धंधे की ओर कुछ ध्यान आकृष्ट हुआ है, पर उत्तर-भारत में इसकी चर्चा भी नहीं हुई। इधर सुनने में आ रहा है कि उड़ीसा की सरकार इस ओर कुछ प्रयोग करना चाहती है। हम प्रांतीय सरकार से भी अनुरोध करते हैं कि वह भी इस ओर आगे बढ़े। सरकारी साहाय्य से बहुत लोग इस धंधे को सीख सकते हैं, और १५-२० रुपए की छोटी रक़म लगाकर भी साल-दो साल में अच्छा मुनाफ़ा उठा सकते हैं। अभी इस उद्योग में प्रतियोगिता भी नहीं, अतः हर तरह लाभ-ही-लाभ है। हम तो यह समझते हैं कि ऐसे लाभ-प्रद धंधे हमारे प्रांत के लोगों को अवश्य अपनाने चाहिए।

× × ×

८. जिन्ना और वज़ीरहसन

जब से कांग्रेस ने मुसलमानों में अपना प्रचार-कार्य बढ़ाया है, तब से मुसलिम लीग के प्रधान मि० मुहम्मदअली जिन्ना दिनोदिन अधिकाधिक सांप्रदायिक होते जा रहे हैं। जिस प्रकार राष्ट्रीय भावनाओं को लोक-प्रिय गीतों द्वारा चालित करनेवाले इक़बाल आज दिन राष्ट्रीयता से कोसों दूर हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीयता के नाम पर क़समें खानेवाले मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना भी आज हर क़दम पर सांप्रदायिकता का ही दम भर रहे हैं। वक़्त की बात है, सन् १९१६ में, लीग-कांग्रेस-पैक्ट के समय, जो 'वंदे मातरम्' की ध्वनि सबको प्रिय थी, आज वही मुसलमानों को खटकती है, और उसके विरुद्ध यह आंदोलन किया जा रहा है कि यह गीत 'इस-लाम' की भावना के विरुद्ध है, होगा। पर यह खोज २१ वर्ष बाद हुई है। जानें आज तक ये भावनाएँ क्यों नहीं उठीं, और इसी समय इन पर इतना ज़ोर क्यों दिया जा रहा है ?

मिस्टर जिन्ना कहते हैं कि कांग्रेस हिंदू-संस्था है, और इससे मुसलिम हितों की रक्षा होना संभव नहीं। इसलिये आप चाहते हैं कि मुसलमान इससे दूर रहकर अपने को संगठित करें, इसी में उनकी भलाई है। हाल में लखनऊ में जो लीग का अधि-वेशन हुआ है, उसमें मिस्टर जिन्ना ने लुक-छिप की नीति से काम नहीं लिया, वरन् खुले खज़ाने कांग्रेस के विरुद्ध कहा है, और उन मुसलमानों को लीग से हटा दिया है, जिन्होंने साहस-पूर्वक कांग्रेस का साथ दिया है, और दे रहे हैं। ऐसे व्यक्तियों में सर वज़ीरहसन भी हैं।

लीग-कांग्रेस-पैक्ट के समय सर वज़ीरहसन ने जो कार्य किया, वह सभी जानते हैं। यदि मिस्टर जिन्ना मुसलमानों के हिताहित को समझते हैं, तो सर वज़ीरहसन भी उससे भली भाँति परिचित हैं। यह भी लीग के सेक्रेटरी और एक अधिवेशन के सभापति रह चुके हैं। यदि मिस्टर जिन्ना मुसलमानों के लीडर कहे जा सकते हैं, तो सर वज़ीरहसन भी। अतः हमारी दृष्टि में उनकी वाणी उतनी ही आदरणीय है, जितनी मिस्टर जिन्ना की। सर वज़ीर कहते हैं कि ज़माना बदल गया है, और मुसलमानों को इस बदलाव को समझना ही नहीं, बल्कि उसके अनुकूल चलना भी चाहिए। कांग्रेस देश की सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था है, यह न हिंदू-संस्था कही जा सकती है, न इतर। यह राष्ट्रीय है, और समस्त देश के हिताहित का इसे ख़याल है। संसार में धार्मिक प्रश्नों पर कभी भले ही ज़ोर दिया गया हो, पर इस समय धार्मिक या सांप्रदायिक विभिन्नता का उतना प्राधान्य नहीं, जितना आर्थिक बलाबल का।

आर्थिक दृष्टि से देखने पर भारतवर्ष के हिंदू और मुसलमानों के कष्ट एक-से प्रतीत होते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अतः जहाँ कष्ट-निवारण करना हो, वहाँ व्यर्थ धार्मिक विभिन्नता पर ज़ोर देकर सांप्रदायिक दृष्टिकोण को प्राधान्य देना समुचित नहीं। इससे दोनो प्रकार की हानियाँ हो सकती हैं। एक तो राष्ट्र वह उन्नति नहीं कर सकता, जो अभीष्ट है। दूसरे, सांप्रदायिकता की भावना उग्र रूप में उपस्थित रहने से पारस्परिक वैमनस्य के सर्वदा अहित करने की संभावना बनी रहती है। सर वज़ीर भली भाँति समझते हैं कि सांप्रदायिकता का विष कैसा हानिकर सिद्ध हुआ है। अतः वह पिछली भूलों से सबक़ लेकर आगे के लिये मुसलमानों को राय देते हैं कि वे इस विषमय मार्ग का अनुसरण न करें, बल्कि देश के सुख-दुःख, हानि-लाभ को अपना समझ देश की उन्नति में पर्याप्त भाग लें।

यह तो निश्चित है कि कभी-न-कभी मुसलमानों को अपनी भूल और सर वज़ीर की दूरदर्शिता ज्ञात होगी, पर उस समय तक न-जाने पारस्परिक विद्वेषाग्नि कहाँ तक हानि कर चुकेगी। मिस्टर जिन्ना भी समझते हैं कि सांप्रदायिकता बुरी है, पर वह इस पर ज़ोर दे हिंदुओं से अधिकाधिक स्वत्व प्राप्त करना चाहते हैं। महात्मा गांधी कहते हैं कि मुसलमानों को ब्लैंक चेक देनी चाहिए, पर देश के कई नेता उनकी उदारवृत्ति से सहमत नहीं। वे कहते हैं कि मुसलमानों की प्यास ऐसा होने से बढ़ती जायगी, अतः मुसलमानों को मुसलमान समझकर अधिकार नहीं देने चाहिए, बल्कि हिंदू और मुसलमानों को एक ही राष्ट्र के अंग होने के नाते समानाधिकार मिलने चाहिए। यह नहीं कि वे संप्रदाय-विशेष के अनुयायी होने से अधिकाधिक अधिकार पाने के हक़दार हों।

देश की स्थिति यों ही विषम है, इस समय आवश्यकता इस बात की है कि शांति का वातावरण तैयार किया जाय, न कि विद्वेष का। सर वज़ीर ने इसी हेतु प्रयत्न किया है, और हम उनके भाव की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। क्या देश के मुसलमान-नेता ठंडे दिमाग़ से काम लेकर सर वज़ीर की अपील पर ध्यान देंगे?

यह फ़ार्म छपते-छपते खबर लगी है कि बिजनौर के चुनाव में माननीय हाफ़िज़ मुहम्मद इब्राहीम की विजय हुई है। इससे प्रकट है कि सर वज़ीर-जैसे मुस्लिम नेता की बातों का अच्छा असर हो रहा है।

टर्की का मुस्तफ़ा कमाल पाशा

रचयिता, हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत शिवनारायण टंडन। इस पुस्तक में शाहों और सुलतानों के राजत्व-काल में टर्की की दुर्दशा, गत योरपीय महायुद्ध में टर्की को जर्मनी का साथ क्यों देना पड़ा, इसका रोमांचकारी वर्णन, कमाल पाशा ने अपनी मातृभूमि टर्की को घर और बाहर के शत्रुओं से कैसे बचाया, कमाल पाशा का पूरा जीवन-चरित्र, कमाल पाशा डिक्टेटर कैसे बना, उसने अकेले टर्की-से टूटे-फूटे साम्राज्य को किस तरह उठाकर एक उन्नतिशील, बलवान् राष्ट्र बना दिया, पुनर्निर्माण में वर्तमान उन्नतिशील टर्की का जीता-जागता चित्र, राष्ट्रीय भावना, आर्थिक उन्नति, सामाजिक क्रांति, पर्दे का दूर होना, शिक्षा का प्रचार, स्त्रियों को समानता के अधिकार आदि-आदि सभी बातों का बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद वर्णन है।

इस पुस्तक को पढ़कर आप घर बैठे कमाल पाशा और टर्की के बारे में सारी ज्ञातव्य बातें जान सकते हैं। पढ़ने में बिलकुल उपन्यास का-सा मज़ा आता है। बढ़िया काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य १॥), सजिल्द २)

प्रबंधक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुधा के नियम

मूल्य

सुधा के तीन संस्करण निकलते हैं, और उनका डाक-व्यय-सहित मूल्य इस प्रकार है—

राजसंस्करण

वार्षिक मूल्य	१२)
एक प्रति का	१)

साधारण संस्करण

वार्षिक मूल्य	६)
एक प्रति का	॥)

सस्ता संस्करण

वार्षिक मूल्य	४)
एक प्रति का	।-)

वी० पी० से मँगाने में ।) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। वर्षारंभ अगस्त (श्रावण) से होता है, और प्रतिमास के अंत में पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। ग्राहक चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं। विदेशों के लिये भी वही मूल्य है, जो भारतवर्ष के लिये। सुधा में यह ख़ास बात है।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो १० दिन के अंदर कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन १० दिन के बाद सूचना मिलने से ध्यान नहीं दिया जायगा, और वह संख्या ग्राहक टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १० दिन पेश्तर उसकी सूचना हमें देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनो का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

पं० दुलारेलाल भार्गव
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण	१	पृष्ठ	या	२	कालम	की	छपाई १८) प्रति मास
,,	१/२	,,	या	१	,,	,,	१०) ,, ,,
,,	१/४	,,	या	१/२	,,	,,	६) ,, ,,
,,	१/८	,,	या	१/४	,,	,,	४) ,, ,,

विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। सबसे सस्ती, सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार भी ख़ूब है, और उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए!

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुकवि-माधुरी-माला

१. बिहारी-रत्नाकर

भाष्यकार

ब्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी विद्वान् बाबू जगन्नाथ-दास 'रत्नाकर' बी० ए०

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

हिंदी-संसार के ब्रजभाषा-साहित्य में युगांतर-कारी बृहद् ग्रंथ। मूल्य ५)

गंगा पुस्तक माला
लखनऊ
कार्यालय

२. मतिराम-ग्रंथावली

महाकवि मतिराम हिंदी के नवरत्नों में से हैं। उनकी यह ग्रंथावली हिंदी-संसार में अद्वितीय चीज़ है। टिप्पणियाँ, शब्दार्थ, नोट और आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका के साथ। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

३. मिश्रबंधु-विनोद

हिंदी-साहित्य का अप-टु-डेट इतिहास तथा कवि-कीर्तन।

हिंदी के सुप्रसिद्ध

सिद्धहस्त और

मार्मिक लेखक

मिश्रबंधुओं

के दीर्घकालिक परिश्रम का फल। चार भाग निकल चुके हैं।

प्रथम भाग—२।)
द्वितीय भाग—३।)
तृतीय भाग—२)
चतुर्थ भाग—४)

सजिल्द के ।।) अधिक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अभी-अभी प्रकाशित हुई हैं! शीघ्र मँगाइए।

१. साहित्य-सागर

(नया रीति-ग्रंथ)

लेखक, श्रीमन्महाराजाधिराज काशीश्वर ग्रहनिवार पंचम विंध्येलवंशावतंस श्रीमत्सवाई महाराजा साहब भारत-धर्मेंदु सर सावंतसिंहजू देव बहादुर के० सी० आई० ई० बिजावर-नरेश के राजकवि ब्रह्मभट्टवंशोद्भव कविभूषण, कविराज पं० बिहारीलालजी।

कविराजजी ने कई नरेशों के दरबारों में अपनी काव्य-प्रतिभा का चमत्कार दिखलाकर सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किया है। अनेक कवि-सम्मेलनों और कवि-समाजों ने पुरस्कार तथा पदक देकर आपका आदर किया है। लोग आपको कवि मानते हैं, कविता ही आपका धंधा है। कहने का मतलब यह कि दिन-रात, तीस दिन, बारहो महीने काव्य के ही रंग में रहा करते हैं। लगातार अनेक वर्षों तक इनकी योग्यता का प्रमाण प्राप्त करने के अनंतर काव्य-मर्मज्ञ श्रीमान् बिजावर-नरेश ने इन्हें 'साहित्य-सागर'-नामक यह रीति-ग्रंथ लिखने की आज्ञा दी, और साधन जुटा दिए। लेखक ने तीन वर्ष के लगातार अथक परिश्रम से इस ग्रंथ को लिखा है। यह लगभग २००० छंदों में पूर्ण और लगभग ३०० पृष्ठों का विशालकाय रीति-ग्रंथ है, जो अनेक तरंगों में पूर्ण है, जिनमें षट् प्रत्यय, मात्रिक और गण-छंद, नायिका-भेद, रस एवं अलंकार आदि काव्य के विविध अंगों के लक्षणों का विवेचन उदाहरणों-सहित किया गया है। कवि और कविता-प्रेमियों के काम की चीज़ है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

२. विजय

(उपन्यास)

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। बिना-उपन्यास लिखकर श्रीवास्तवजी ने जो ख्याति प्राप्त की है, वह अवर्णनीय है। जिसने उसे पढ़ा, वही मुग्ध होकर रहा। सभी के हृदय से वाह-वाह की आवाज़ गूँज उठी। यह नवीन उपन्यास बिलकुल अप-टु-डेट, शिक्षाप्रद, मौलिक और सामाजिक है। कथा-प्रसंग इतना मनोरंजक है कि एक बार पुस्तक हाथ में लेने से फिर बिना समाप्त किए जी नहीं मानता, और पढ़कर भी पुनः पढ़ने की लालसा बनी रहती है। मनोभावों की व्यंजना में लेखक कितना सफल हुआ है, यह पुस्तक पढ़ने पर ही ज्ञात होगा! मूल्य २), सजिल्द २॥)

३. चंद्र-किरण

(काव्य)

लेखक, देव-पुरस्कार के द्वितीय विजेता, हिंदी के चिर-परिचित कवि प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा एम्० ए०। चंद्र-किरण में कवि की चित्र-रेखा के बाद की स्फुट कविताओं का संग्रह है। इनमें भावना की जितनी स्वतंत्रता है, उतनी उनके अन्य गीतों में संभवतः न हो। उल्लास और करुणा इनमें अपनी चरम सीमा पर पहुँचने का उपक्रम कर रही हैं, क्योंकि वहाँ प्रयास और अध्ययनशीलता की उपेक्षा है। वन-प्रांत के किसी एकांत स्थान में एक पक्षी जैसे चहक उठा है, यही कवि के हृदय की भावना है। मूल्य ।=), सजिल्द ॥=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अभी-अभी प्रकाशित हुई हैं ! शीघ्र मँगाइए।

४. अंगूर की बेटी

(नाटक)

लेखक, पं० गोविंदवल्लभजी पंत। पंतजी केवल उपन्यासकार और कहानीकार ही नहीं, वरन् कुशल और सफल नाट्यकार भी हैं। वरमाला और राजमुकुट लिखकर काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। राजमुकुट को जनता और शिक्षा-संस्थाओं ने इतना अपनाया कि दो वर्ष में ही पुस्तक के चार संस्करण हो गए। यह उनकी शुभ लेखनी का ज्वलंत प्रमाण है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं की चमत्कार-पूर्ण लेखनी से लिखा हुआ रोचक और सामाजिक नाटक है। कई भिन्न प्रकार के चरित्र लेकर योग्य कलाकार ने अपनी नाटकीय सामाजिक कला का प्रदर्शन किया है। पात्रों के चित्रण, बोलचाल, गीत और परिणाम को पढ़कर, समझकर निःसंदेह आप यथार्थ नाटकीय रस का आनंद और स्वाद पाएँगे। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ॥।=), सजिल्द १।=)

५. दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थ-स्थान

(भ्रमण)

लेखक, श्रीकेसरीमल अग्रवाल। भारत में तीर्थ-यात्रा की प्रथा बड़ी प्राचीन है। जब यहाँ रेल, मोटर आदि का आविष्कार नहीं हुआ था, तब लोग प्रायः पैदल यात्रा करते थे, या बैलगाड़ी आदि पर। यही सब तब प्रधान साधन थे, पर इनमें समय और धन, दोनों का व्यय अधिक था। कष्ट भी अनेक होते थे, फिर भी जनता इसकी लेश-मात्र भी चिंता नहीं करती थी।

यद्यपि रेल और मोटरों की सुविधा के कारण यात्रियों की संख्या तो बढ़ गई है, परंतु वे तीर्थ-यात्रा से पूरा लाभ नहीं उठा पाते। कारण है यात्रियों को तीर्थ-स्थानों का यथेष्ट ज्ञान न होना। यह पुस्तक इसी उद्देश की पूर्ति करती है। तीर्थ-संबंधी सभी ज्ञातव्य बातों का समावेश है। तीर्थ-यात्रियों के लिये पुस्तक पथ-प्रदर्शक का काम करेगी। एक रंगीन तथा ३६ सादे चित्रों से अलंकृत पुस्तक का मूल्य ॥।), सजिल्द १।)

६. रेलदूत

(राष्ट्रीयता से भरा काव्य)

लेखक, पींजरे की पंछी। प्रस्तुत पुस्तिका लेखक ने पटना-जेल में लिखी थी। रचना ब्रजभाषा में की गई है। कालिदासजी ने मेघ को संबोधन कर अपना काव्य लिखा था, यह रेलगाड़ी को संबोधित कर लिखा गया है। बा० राजेंद्रप्रसादजी ने, इसे पटना-जेल में सुनकर, लिखा है—

"एक नवयुवक-हृदय के उद्गार इसमें देखने में आते हैं, और उस देश-प्रेम की झलक भी मिलती है, जो दूत भेजने का कारण हुआ है। पटना-कैंप-जेल रेलवे-लाइन के पास ही था, और....जी वहाँ बैठे-बैठे अपनी भावुकता को पदों में नियंत्रित कर रहे थे।"

काव्य-प्रेमियों को इस पुस्तिका को अवश्य पढ़ना चाहिए। १६ पृष्ठ की पुस्तिका का मूल्य केवल =)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिंदी-संसार में एक नई चीज़

सचित्र-सटीक
तुलसी-कृत

रा मा य ण

यह रामायण २० खंडों में प्रकाशित हो रही है। प्रत्येक खंड में ८० पृष्ठ, अनेक सादे और ६-७ रंगीन चित्र रहते हैं। साइज़ सुधा का-सा भव्य है। मूल्य प्रतिखंड १।), कुल रामायण २५) की होगी। कारण, उसमें १६०० से अधिक पृष्ठ और सैकड़ों रंगीन और सादे चित्र होंगे।

स्थायी ग्राहकों को विशेष सुविधा

१. प्रथम चार खंडों का मूल्य ५) ही लिया जायगा। किंतु ये ५) एक साथ, आरंभ में ही, भेजने होंगे। डाक-व्यय माफ़ रहेगा।

२. पूरे २० खंडों का रियायती मूल्य २०) होगा। डाक-व्यय कुछ भी न लिया जायगा। २०) पेशगी देने होंगे।

पहला खंड
समाप्तप्राय
है!

*

दूसरा खंड
भी निकल
गया!

*

तीसरा खंड
छ
प
र
हा
है!

* * *

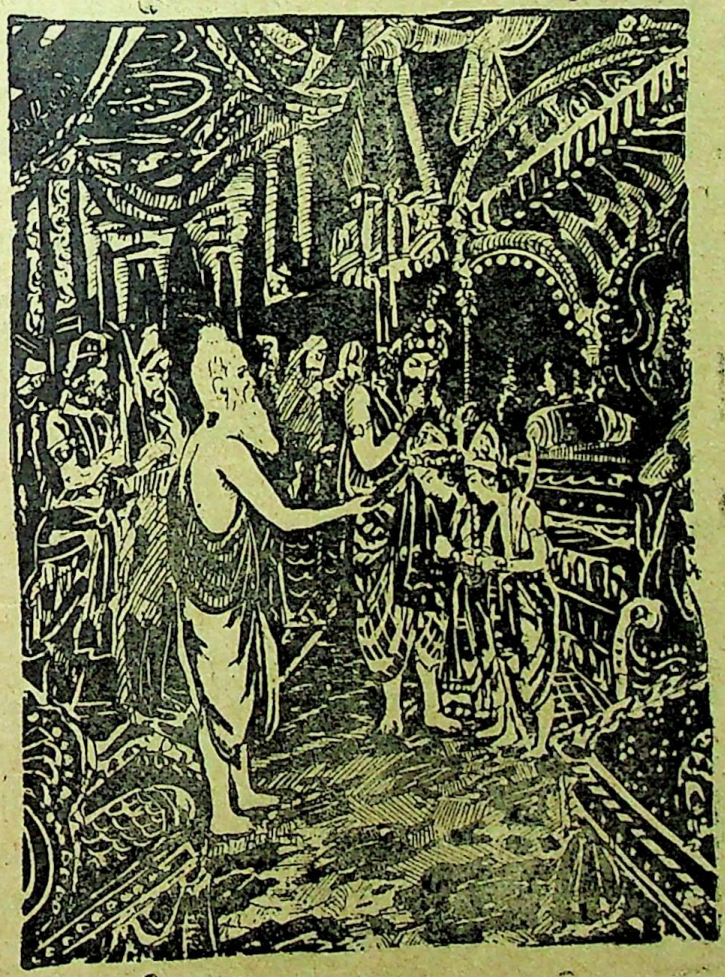

कृपा कर ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों से भी अनुरोध करें। इससे हमारी एक योजना पूर्ण होगी

और

आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा।

* * *

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, (रामायण-विभाग), लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चित्रावली ग्रंथावली

उपन्यास

बिदा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव। इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही बिक गया। दूसरा संस्करण बहुत थोड़ा रह गया है। अपनी कापी शीघ्र मँगवा लीजिए, नहीं तो बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

मा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, पं० विश्वंभरनाथजी शर्मा 'कौशिक'। एक ओर तो आप देखेंगे कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे कैसे बिगड़ जाते हैं, और दूसरी ओर देखेंगे कि एक दृढ़-चित्त माता के उपदेशों से ग़रीबी में भी पला हुआ बालक कैसा सच्चरित्र निकला है!

मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य!

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे, और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २७४; मूल्य १॥), सजिल्द २)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अन्य भाषाओं का
श्रेष्ठ कथा-साहित्य **हिंदी में !**

पवित्र पापी

[रशन से]

सुप्रसिद्ध 'क्राइम ऐंड पनिशमेंट' का अनुवाद। अनुवादक, पं० ब्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार। रूस की दरिद्रता, विलास और राजनीतिक जीवन का जागता उपन्यास। मूल्य ३), ३॥)

प्रेम-गंगा

[अँगरेज़ी से]

अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा। प्रेम और पुरुषार्थ की रसीली और बिजली से भरी अनुपम कहानियाँ। कई रंगीन और सादे चित्र! मूल्य १), १॥)

क़ैदी

[फ्रेंच से]

अमर उपन्यासकार अलेक्ज़ेंडर ड्यूमा के 'ब्लैक ट्यूलिप' का अनुवाद। अनुवादक, श्रीऋषभचरण जैन। मुग्ध प्रेम और अद्भुत घटना-क्रम से भरा उपन्यास। मूल्य ॥), १), १॥)

कर्म-मार्ग

[उर्दू से]

स्व० मौलाना नज़ीरअहमद साहब की सर्वमान्य पुस्तक 'तोबसुन्नसूह' का अनुवाद। अनुवादक, श्रीदुर्गाविनायकप्रसाद एम्० ए०, एल्-एल्० बी०। राष्ट्रीय और धार्मिक भावों से भरा हुआ उपन्यास। मूल्य १॥), २)

मैनेजर

गंगा-ग्रंथागार

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

लेखक, कविवर पं० गोविंदवल्लभ पंत। नाटककार के रूप में पंतजी का नाम कितना प्रसिद्ध हुआ है, यह आप सभी हिंदी-प्रेमियों पर प्रकट है। पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है।

सुंदर, सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २), सादी का १॥)

प्रत्येक अध्याय विचित्र रहस्य प्रकट करता है।

पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। पाठक पढ़कर ही इसका असली आनंद प्राप्त कर सकेंगे। १२ रेखा-चित्रों सहित। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ को आज ही पत्र लिखिए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

SUMMONS FOR DISPOSAL OF SUIT.

SUIT NO. 231 OF 1937.

IN THE COURT OF THE CIVIL JUDGE, UNAO

Sitarey Hakim s/o Daya Shankar, caste Brahman, at present living at Pirzadi Garhi, Pargana and Tahsil Purwa, Dt. Unao *Plaintiff,*

versus

Seeta Ram s/o Jia, caste Tamboli of V. Daon, Dt. Unao *Defendant.*

To

Name. Seeta Ram s/o Jia, caste Tamboli at present at the house of Lachhman Tamboli at Chaundala Station, Dt. Dhar, Rampur city, C. P.

WHEREAS the above-named plaintiff has instituted a suit against you for Rs. 376/8/0 on a bond you are hereby summoned to appear in this Court in person, or by a pleader, duly instructed and able to answer all material questions relating to the suit, or who shall be accompanied by some person able to answer all such questions, on the 1st day of November 1937, at 10 o'clock in the forenoon, to answer the claim, and as the day fixed for your appearance is appointed for the final disposal of the suit, you must be prepared to produce on that day all the witnesses upon whose evidence and all the documents upon which you intend to rely in support of your defence. Take notice that, in default of your appearance on the day before mentioned, the suit will be heard and determined in your absence.

Given under my hand and the seal of the Court, this 18th day of October 1937.

Judge.

नमूना नंबर १६९

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़

मुक़द्दमा नंबर ७८८ सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

दरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है

गनेशसिंह व सोहनपालसिंह कौम ठाकुर साकिन सकरना परगना व तहसील कोल ज़िला अलीगढ़

ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई०, जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तरमीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अग़राज़ व मौरूसात के लिये ज़ेर दफ़ा १२ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

फ़ा० १

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी बंबर १३५/१२६/६४७ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी १६—१२—१९३७ ई०

सईदअहमद वल्द अब्दुलहमीद कौम शेख जमींदार मौजा टिकरा उसमा जिला बाराबंकी

कर्जदार सायल

बनाम

कर्जख्वाह फरीकसानी

मुमल्ला कर्जख्वाहान

चूँकि सईदअहमद वल्द अब्दुलहमीद साकिन टिकरा उसमा ज़िला बाराबंकी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुतालिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हकीयत की तसरीह	वसायत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तश्खीस मालगुजारी	कैफियत
१	बाराबंकी	हकीयत आला	टिकरा उसमा परगना सतरिख मुहाल पीरबख्श	मिलकियत आला	११ पाई ३ किरांट १जौ २तिल का १/२		रक़बा १९४-१३½
२	,,	,, अदना	चंदौजी परगना परतावगंज	मिलकियत अदना खाता नं० ४	११॥५	१८६॥≡)	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[बवस्त अवाम फ़रोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब मिस्टर हरिप्रसाद गुप्ता स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम इलाहाबाद

नंबर मुक़द्दमा १६२ सन् १९३६ ई०

हरगाह बाबू बलदेवनरायन वल्द बाबू किशनप्रसाद साकिन मुहल्ला गनेशगंज शहर लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है लिहाज़ा इस तहरीर की रू से

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हस्ब दफ़ा जिम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतालिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व महाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल हस्तांतरण हक़ीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीस मालगुज़ारी
१	इलाहाबाद	जमींदारी	हुसैनमऊ ४१ आना हिस्सा सायल			१२०)
२	,,	मकान नं० ५७०	मुहल्ला यहियापुर इलाहाबाद			

जमीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद जो भूमि संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख्वास्त देनेवाले को हक़ीयत की वसाअत (विस्तार)
१	क़िता मकान वाक़े यहियापुर शहर इलाहाबाद	

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ४७७ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १५ दिसंबर सन् १९३७ ई०

१—परमेश्वरदीन
२—गंगाप्रसाद
३—विशंभरनाथ नाबालिग़ वल्द परमेश्वरदीन बरिफ़ाक़त पिदर ख़ुद
} पिसरान सुखनंदनलाल
} बनाम
अक़वाम ब्राह्मण साकिन मौजा बिरौली परगना व तहसील संदीला जिला हरदोई
क़र्ज़दार सायलान

बंदीदीन वग़ैरह
क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि सायलान ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त-देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तश्ख़ीस मालगुज़ारी	फ़ैसलियत
१	हरदोई		बिरौली	मालिकाना	१६ बिस्वांसी १३ कववांसी ६$\frac{3}{3}$ ननवांसी	५३)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ७—१०—१९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[क़ाबिल फरोख़्त

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर बहराइच दरजा अव्वल मुक़ाम बहराइच

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ११ सन् १९३७ ई०

तारीख़ पेशी २३—११—१९३७ ई०

भैया देवराजसिंह वग़ैरह

कर्जदार सायल

बनाम

पतराजकुँवरि वग़ैरह

कर्ज़ख्वाह फरीकसानी

चूँकि भैया देवराजसिंह वग़ैरह साकिन भिनगा ज़िला बहराइच ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, जिसका हस्ब दफ़ा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुतालिक आराजी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिज़ चिरायत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१—	बहराइच	×	सचौली हदबस्त नं० ४०१ परगना भिनगा	हकूक मातहतदारी	आराजी मवाजी ४५९. ३७९ एकड़ मुंदरजे खाता नं० ३ खेवट मातहतदारान	×	

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो बदस्तिपनाय हकूक मालिकाना मुतालिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१—	एक दुकान दुमंजिला पुख्ता वाकै कस्बा भिनगा ज़िला बहराइच	कुल मालिकाना	तखमीनी कीमत ६०००)
२—	घोड़ा एक		२५)
३—	दो घोड़ियाँ मय दो बच्चे		२५)
४—	दस गाएँ मय दो बछिया		७०)
५—	पाँच बछवा		३०)
६—	८ भैंसें		१००)

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २४ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३३३ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ११ दिसंबर सन् १९३७ ई०

सूरजबलीसिंह वल्द बहादुरसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा बहुती परगना कल्यानमल तहसील संदीला ज़िला हरदोई कर्जदार सायल

बनाम

राजा बहादुर राजा सूरजबख्शसिंह वगैरह कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि सूरजबलीसिंह वल्द बहादुरसिंह साकिन मौजा बहुती परगना कल्यानमल ज़िला हरदोई ने एक

CCO, Gurukul Kangri Coll

दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त-देहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ६ माह के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ९ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तखमीनी मालगुजारी	कैफियत
१	,,		नेवादा	मालिकाना	५ बिस्वा १ बिस्वांसी ६ कचवांसी १८/१०० ननवांसी	३५०॥)	
२	,,		दलेलपुर	,,	३ बिस्वा १ बिस्वांसी ६ कचवांसी १८/१०० ननवांसी	,,	
३	,,		ठाकुरगंज	,,	५ बिस्वा १४ बि० १६ कचवांसी ५२/८५ ननवांसी		
४	,,		रामनगर	,,	२ बिस्वा १७ बि० २ कचवांसी ४/१०० ननवांसी		
५	,,		देवदास	,,	१५ बीघा १७ बिस्वा		
६	,,		बहुतीखास-	,,	७४ बीघा १ बिस्वा		
७	,,		गोलागंज	,,	४१ बीघा ४ बिस्वा		

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो बहैसियतसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	जहद	१ मंजिल	
२	मैंस मय पड़िया	१ रास	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ५ अक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बशरज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ११७/५८/५५४ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १६—१२—सन् १९३७ ई०

भगौतीबख़्शसिंह, बिजैबहादुरसिंह } पिसरान देबीबख़्शसिंह कौम ठाकुर सा० पतुलकी परगना दरियाबाद ज़िला बाराबंकी

कर्ज़दार सायल

बनाम—जुमला क़र्ज़ख़्वाहान कर्ज़ख़्वान मरीक़सानी

चूँकि १—भगौतीबख़्शसिंह २—बिजैबहादुरसिंह वल्द देबीबख़्शसिंह सा० पतुलकी ज़िला बाराबंकी की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंदर्जा में दर्ज है, दरख़्वास्त-देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख़्वाह
हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बसाख़्त हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तरुखीस मालगुज़ारी
१	बाराबंकी	...	मौज़ा पतुलकी परगना दरियाबाद त० रामसनेहीघाट खाता नं० ३ पट्टी देवीबख़्शसिंह	हक़ीयत आला	हिस्सा ।/ ४ पाई मि० ।-/ ४ पाई	
२	,,	...	मौज़ा पतुलकी पर० दरियाबाद त० रामसनेहीघाट खा० नं० ३ जमीमा २ पट्टी देवीबख़्शसिंह	हक़ीयत मुतफ़र्रिक़ा आला	१९ बिस्वा १७ बिस्वांसी	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ८ ऑक्टोबर सन् १९३६ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल अलीगढ़

मुक़द्दमा नंबर ५० सन् १९३६ ई०

ठाकुर गनेशसिंह वल्द शिवासिंह
कुँवर किशनपालसिंह व जोगेंद्रसिंह वल्द गनेशसिंह } अकवाम ठाकुर साकिन बरानदी प० व त० कोल ज़िला अलीगढ़

ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमामों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांत के गजट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क) कर्जदार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तखखास मालगुजारी
१—	अलीगढ़	हकीयत ज़मीदारी	विरुखनपुर खाता खे० नं० २ मुहाल बाकीमादेह	मुंदर्जा खाता नं० ६	८७४ बी० ७ बि०	जमई ११९१)
२—	बुलंदशहर	,,	भोपतपुर खे० नं० १ मु० अब्दुल-शकूर	,,	१४३ बी० ३ बि० ६ बि०	,, ४६०)
३—	,,	,,	भोपतपुर खे० नं० १ मुहाल बाकीमा-देह	,,	१४२ बी० २ बि० १५ बि० मिजुमला १४२ बी० १३ बि० १२ बि०	,, ५१७)

नोट—हकीयत जमींदारी जो कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी में खिलाफ सायल जाहिर किया है—जमई १७३ मवाजी ८० बीघा ६ बिस्वा पुख्ता मौजा मीरअहमदी तहसील कोल खेवट नं० ७ पट्टी गनेशसिंह

जमींमा (ख)

कर्जदार की जायदाद जो भूमि संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)
१—	दो रास बल काश्त	
२—	एक रास भैंस	

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सैयद अख़तरअहसन स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम रायबरेली
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६४ सन् १९३५ ई०
तारीख़ पेशी २२—१२—१९३७ ई०
रामेश्वरसिंह

क़र्ज़दार सायल

बनाम

१—लालताप्रसाद वल्द परसन
२—मथुराप्रसाद वल्द कामताप्रसाद
३—रामेशुर } वल्द भगवानदीन
४—श्रीगोपाल }
५—चंद्रभान वल्द श्रीभान
६—मु० जगदेई बेवा जंगबहादुर
} अक़वाम ब्राह्मण साकिनान फ़तेहपुर

७—रज्जूसिंह
८—महेशसिंह
९—शिवबहादुरसिंह
} पिसरान सीतलाबख़्शसिंह } अकवाम ठाकुर साकिन भानीपुर
१०—मु० गजराजकुँवरि बेवा हरीसिंह
११—शिवनारायन क़ौम मुराई साकिन साहीपुर मजरा सातनपुरवा
१२—शिवपालसिंह वल्द देवीसिंह साकिन पुरा रैमल मजरा भानीपुर

} परगना इन्हौना ज़िला रायबरेली

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानीयान

चूँकि रामेश्वरसिंह वल्द रामसहायसिंह साकिन भानीपुर परगना इन्हौना ज़िला रायबरेली ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका से दर्ज़ है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ याफ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताता है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल काबिल विरासत व काबिल इंतक़ाल हकीयत की तसरीह	बसाअत हकीयत दरख़्वास्त देहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	रायबरेली	हकीयत ज़मींदारी	भानीपुर प० इन्हौना पट्टी रामसहायसिंह	हिस्सा ५ बिस्वा १२ बिस्वांसी १२ कच० रकबा २४० बीघा १९-१२ खाता खेवट नं० ४/१	आला	मालगुज़ारी २३४।=) बादहु २३६।।।=) अबवाब २३=)।
२	"	मसकूना मकान	"	...		...

CCO, Gurukul Kangri ...

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुक्कूक मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद			वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	बटुई फूल	१	१)		
२	बटुई पीतल	१	।।)		
३	लोटा ,,	२	।।।)		
४	थाली फूल	१	१)		
५	थाली पीतल	२	१)		
६	कटोरा ,,	३	।।।)		
७	चिमचा ,,	१	।=)		
८	करछुल लोह	१	-)		
९	तवा ,,	१	≡)		
१०	चिमटा ,,	१	)।।		
११	चारपाई	४	२)		
१२	कठैली	३	।≈)		
१३	बेंच लकड़ी	१	१)		
१४	तख्त ,,	१	२)		
१५	चना ३ऽ		३।।।)		
१६	गेहूँ १ऽ		१)		
१७	धान ५ऽ		३)		
१८	गाड़ी १		१०)		
१९	डोल लोह	१	≡)		
२०	संदूक ,,		।।।)		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १३—९—१९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बइजलास जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बुलंदशहर

मुक़द्दमा नंबर ८०९ सन् १९३६ ई०

(१) पं० दौलतराम उर्फ़ लल्लूजी पिसर पं० कुँवरसेन (२) ओ३मप्रकाश बालिग़ (३) सूरजप्रकाश नाबालिग़ बरिफ़ाक़त मु० गोपी मादर खुद पिसरान बाबूलाल (४) चंद्रभान पिसर ओ३मप्रकाश नाबालिग़ बविलायत गोपी मज़कूर अकवाम ब्राह्मण साकिन मौजा गोधा परगना मोरथल तहसील कोल ज़िला अलीगढ़ हाल सायबान

ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की ह से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायबान मज़कूर की जायदाद बताया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह उस तारीख से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हकीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	बुलंदशहर	जमींदारी	मौजा खुरयावली परगना खुर्जा खाता खेवट नंबर १/१ मुहाल कलियान सिंह	म० ४४० बीघा १३ बिस्वा १६ बिस्वांसी जमई ८४३) का निस्फ़	२२० बीघा ६ बिस्वा १८बिस्वांसी	४२१॥)
२	,,	,,	मौजा खुरयावली परगना खुर्जा खा० खे० ४/१ मुहाल बाकी मादा पट्टी कुँवरसेन	म० ३१ बीघा १५ बिस्वा १० बिस्वांसी जमई ५०)	१० बीघा ६ बिस्वा	१६≡) ४ पाई
३	अलीगढ़	दखीलकारी	मौजा गोधा परगना मोरथल ज़िला अलीगढ़	३५ बीघा तखमीनन पुख्ता आराजी	तखमीनन ३५ बीघा पुख्ता आराज़ी	

ज़मीमा (ख)

कर्जदार की जायदाद जो भूमि संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)
१	२	३
१	डिगरीयात	डिगरीयात बकाया लगान जुमगी काश्तकारन मौज़ा खुरयावली परगना खुर्जा ज़िला बुलंदशहर बक़दर तखमीनन ५००)

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Coll...

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब मिस्टर हरिप्रसाद गुप्ता स्पेशल जज साहब सेकेंड ग्रेड इलाहाबाद

नंबर मुक़द्दमा २२६ सन् १९३६ ई०

हरगाह शेख इब्नअली वल्द गौहरअली साकिन मौजा शेखपुर परगना चाइल ज़िला इलाहाबाद सायल ने एक दरख़्वास्त हब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदाद हायमक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने को तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़ दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले को मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा बशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	इलाहाबाद	जमींदारी	मौज़ा भरेठा परगना चाइल खाता खेवट नं० १	जमींदारी	-) ५ जौ ११ रवा १ ७/१३ तिल	४०॥≡)
२	,,	,,	मौज़ा मोहाउद्दीनपुर भरेठा मुहाल साहअली पट्टी इब्नअली	,,	-) ९ पा० १६ के० ३ जौ ३ गड़० ३रवा ५ तिल	३६।)९
३	,,	,,	खाता खेवट नं० १० ,, पट्टी इब्नअली खाता खेवट ३/२	,,	-) ४ पाई ९ के० ६ जौ	२७।-)९
४	,,	,,	,, पट्टी गयाप्रसाद खाता खेवट ३/१	,,	-) ४ पाई ९ के० ६ जौ	२७।-)९
५	,,	,,	,, पट्टी मसहाउद्दीन खाता खेवट ७	,,	-)१२ के० १ गड़० ५रवा ६ तिल	२०।≡) ७½
६	,,	,,	इब्राहीमपुर बग्रौला पट्टी अहमदहसन खाता खेवट नं० ६	,,	२ पाई ८ के० ३ जौ	८)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

७	इलाहाबाद	जमींदारी	इब्राहीमपुर बरहौला पट्टी बलदेवनरायन खाता खेवट ३	,,	) १ पाई ५ के०	१०॥=)
८	,,	,,	,, पट्टी जमल्लउद्दीन खाता खे० ७	,,	२ पाई १८ के०	५॥=)६

नोटिस दफ़्अ दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल ज़िला सीतापुर

मुक़द्दमा नंबर १०७ सन १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १८—१२—१९३७ ई०

रनविजयसिंह वल्द ठाकुर बिंद्राबख़्शसिंह साकिन व जमींदार बनियामऊ परगना मछरेहटा तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर

बनाम

अ—रामनरायन वल्द माताप्रसाद सैगल साकिन खैराबाद महेंद्रो टोला परगना खैराबाद तहसील व ज़िला सीतापुर

ब—भारथसिंह वल्द ठाकुर रघुनंदनसिंह साकिन कोरौना तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

ज—ठाकुर अवधबख़्शसिंह वल्द अनरुद्धसिंह ठाकुर सा० जैरामपुर परगना पीरनगर तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर

द—बिसेसुरनाथ खत्री साकिन व दुकानदार तामसेनगंज
ह—मक़्सूदअली वल्द काजी वज़ीरअली साकिन खैराबाद } परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख्वास्तकुर्निंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रह ज़ैल हासिल हो, तो वह अंदर मियाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़्सील जायदाद

मुंदरजा बयान तहरीरी सायल दरख्वास्त कुर्निंदा

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवैयत हकीयत
१	मौजा बनियामऊ प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता नं० ५ व ६ बकदर निस्फ	जमींदारी
२	मौजा पहाड़पुर प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता नं० १ बकदर निस्फ मिनजुमला १६ आना	,,
३	मौजा सेनपुर प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० १ बकदर निस्फ	,,
४	मौजा ससेडी प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० ४ बकदर निस्फ	,,
५	मौजा निवादा कलां मजरे घिसौली परगना मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० १ मिनजुमला हिस्सा ४ आना बकदर निस्फ बतौर मुरतहनी	,,
६	मौजा मसूरी प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० ३ मिनजुमलादि =) बकदर निस्फ बतौर मुरतहनी खाता खेवट नं० २ बकदर निस्फ	,,
७	मौजा इटौवा प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० १ मिनजुमला हिस्सा $\frac{1}{2}$ बकदर निस्फ	,,
८	मौजा भेटौरा प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर			

CCO, Gurukul Kangri Coll

९	मौजा फतेहपुर परगना मछरेहटा त० मिसरिख ज़िला सीतापुर		½ हिस्सा बकदर निस्फ खाता खेवट नं० १ बकदर निस्फ	जमींदारी
१०	मौजा गढ़ी परगना मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० ४ बकदर निस्फ	,,
११	मौजा राजागाँव परगना मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० ४ बकदर निस्फ	,,
१२	मौजा मिरचौड़ी परगना मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		खाता खेवट नं० १ बकदर निस्फ	,,
१३	मौजा भूड़ा खालसा प० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		बकदर निस्फ	,,

फेहरिस्त जीम

घोड़ा	गाय	गाड़ी	अड्डा	पालकी	छोलदारी	भैंस	बैल	
एक	चार	एक मंजिला	एक	एक	एक	एक	४ रास	मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेटस ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापुर

मुक़दमा नबर २०७ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी २४—११ सन् १९३७ ई०

महंत सूरतदास चेला नंदकिशोरदास कौम ब्राह्मण श्रीवैष्णव साकिन मँढिया रामधाम पर० रामकोट तहसील व ज़िला सीतापुर सायल

बनाम

१—राधेलाल वल्द जवाहरलाल कौम हलवाई साकिन सीतापुर मुहल्ला आलमनगर परगना खैराबाद डा० ज़िला सीतापुर

२—श्रीराम
३—मथुराप्रसाद
} पिसरान बालचंद कौम खत्री साकिन सीतापुर मुहल्ला तामसेनगंज पर० खैराबाद डा० ज़िला सीतापुर

४—गोपालदास
५—राधाकिशुन
} पिसरान नामालूम कौम रस्तोगी साकिन मुहल्ला अशरफाबाद शहर लखनऊ

हरगाह कि जायदाद मुंदर्जा ज़ैल दरख्वास्तकुंनिदा व क़र्ज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुंदर्जा ज़ैल हासिल हो, तो वह अंदर मिआद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

मुंदरजा बयान तहरीरी सायल दरख्वास्तकुंनिदा

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौयत हकीयत	मालगुज़ारी	लोकल रेट
१	मौजा सिकटया पर० रामकोट तहसील व ज़िला सीतापुर	बलदेवबख्श	ए० डि० २१—२१ आराज़ी खाता नं १	मातहतदारी	५४॥—)६	+

दीगर जायदाद सायल

गाय	दरख्त आम मुतफर्रिक़		तख्त	चौकी	पलँग	बान	गगरा पीतल	गगरा ताँबा	बरतन पीतल वगैरह	जुमला
१	२		१	१	२		२			५७॥)
२५)	१०)		२)	१॥)	५)		४)		१०)	

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १६६

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ६ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम एटा इजलासी जनाब मि० ओ३मप्रकाश साहब एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

मुकद्दमा नं० ४०८ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १३—१२—१९३७ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिका

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जैसा कि बरुय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

यूसुफअली व यूनिसअली वल्द अहमदअली शेख साकिन चिरौला परगना पटियाली जिला एटा

ने इस गरज से पेश की हैं कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ, लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ६ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरुय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के कर्जों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर एक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा खिलाफ सायल मज़कूर जुम्ला अगराज़ व मौरकाजात के लिये जेर दफा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

समन बग़रज़ करादाद तनकीह तलब

बअदालत जनाब पंडित प्यारेलाल भार्गव अडीशनल सिविल जज साहब बहादुर सीतापुर

मुकद्दमा नं० ३४ सन् १९३७ ई०

बयान तहरीरी १७—११—३७ ई० व तनकिया २३—११—३७ ई०

ठाकुर लालताबख्शसिंह एम० ए० तालुकदार नीलगाँव परगना मनवाँ तहसील सिधौली जिला सीतापुर मुद्दई

बनाम मुद्दाअलेह

अजोध्याप्रसाद पांडे

बनाम—अजोध्याप्रसाद वल्द लाडिलीप्रसाद कौम ब्राह्मण ठेकेदार गोविंद टाकीज सीतापुर साकिन तामसेनगंज परगना खैराबाद जिला सीतापुर

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत बकाया ज़र ठेका के दायर की है, लिहाजा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २३ माह नवंबर सन् १९३७ ई० बवक्त १० बजे पर असालतन या मारफत वकील के जो मुकद्दमे के हाल से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुछ उमूर अहम मुतआल्लिके मुकद्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो, जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाजिर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मजकूर की करो और तुमको हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेजात को जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो, पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मजकूर तुम हाजिर न होगे, तो मुकद्दमा तुम्हारी ग़ैर हाजिरी में मसमू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख १८ माह ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Coll...

नमूना नंबर १७०

फ्रामं इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुजलास जनाब बाबू मिट्ठनलाल साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुकाम उरई ज़िला जालौन

मुकद्दमा नंबर ११० सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १६—१२—१९३७ ई०

बदरीप्रसाद बनाम सेठ वृंदावन वगैरह

१—बदरीप्रसाद वल्द मदारीलाल
२—रघुवीरसिंह बालिग
३—बुद्धसिंह } नाबालिगान बविलायत रघुबीरसिंह } पिसरान मनराखनलाल उर्फ राखन } अकवाम कुर्मी साकिनान मौज़ा चमरसेना परगना कोंच जिला जालौन सायलान
४—रामनरायन } बिरादर हकीकी खुद
५—मु० रानी बहू बेवा कालकाप्रसाद

ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० बदरीप्रसाद वगैरा मज़कूर का जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, वह तो ११—९—१९३७ से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तख़्मीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	जालौन	हक़ीयत जमींदारी	मौज़ा चमरसेना मुहाल वृजलाल नंबर शुमार खेवट ३ परगना कोंच ज़िला जालौन	हक़ीयत जमींदारी तादादी ४ आना ४ १५/१५ पाई रकबा १८ एकड़ ७८ डिसमिल	तादादी ६८ एकड़ ७८ डिसमिल	अबवाब १४/- ६ पाई जमई १४१।=/
२	,,	,,	मौज़ा चाँदनी परगना कोंच मुहाल गिरिधारी ज़िला जालौन नंबर शुमार खेवट १	हक़ीयत जमींदारी २ आना ८ पाई रकबा १९ एकड़ ५६ डिसमिल	तादादी १९ एकड़ ५६ डिसमिल	अबवाब २/- ४ पाई जमई २०॥/- ९ पाई

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १८० सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ७—१२—१९३७ ई०

१—दरशनसिंह वल्द गुलाबसिंह
२—सीतलसिंह
३—राजासिंह
४—महेशुरसिंह
५—ननकूसिंह
} नाबालिगान बविलायत दरशनसिंह पिदर खुद } अकवाम ठाकुर साकिन हरख्या परगना कल्यानमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई

सायलान

बनाम

रघुराजसिंह वग़ैरा

कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मुतजिक्करेबाला ज़िला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल क़ाश्त व क़ाबिल हुंतकाल हक़ीयत की तसरीह	बसाख़्त हक़ीयत दर-ख़्वास्तदेहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	...	बहरया दाखली हरैया परगना कल्यानमल त० संडीला खा० ३	२ बिस्वा १० बिस्वांसी	मालिकाना	१५=)।	
२	,,	...	,, ,,	,, ,,	,,	१५=)।	कब्जा मु० रामकली जुओएनडेटर पट्टी शामिलात
३	,,	...	,, खाता ५	५ बी० २ बि० १० बि० आराजी	,,	...	
४	,,	...	अमरया दाखली हरैया प० कल्यानमल त० संडीला खाता ३	२ बिस्वा १० बि०	,,	२६॥-)॥।	

फा० ३

५	हरदोई	...	अमरयादाखिलीहरैया पर०कल्यानमल त० संदीला खाता नं०३	२ बिस्वा १० बि०	मालिकाना	२६॥।-)।।।	कब्जा मु० रामकली मुओएनदेह पट्टीशामिलात
६	,,	...	,, खाता ५	२६ बीघा ११ बि० आराजी	,,	...	
७	,,	...	मु०पूरब हरैया खास प० कल्यानमल त० संडीला खाता ५	१ बिस्वा ५ बि०	,,	२२)	
८	,,	...	,, ,,	,, ,,	,,	२२)	कब्जा मु० रामकली मुओएनदेह पट्टीशामिलात
९	,,	...	,, ,,	१५ बि० ५ बि० आराजी	,,	...	

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	गाड़ी १		
२	बैल २		
३	भैंस १		
४	गाय १		
५	अनाज ३० मन खाम		
६	असबाब खानादारी ५०)		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १८ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बज़ारज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुकदमा नंबर १०८/३४२ सन् १९३६ ई० ता० पेशी २१—१२—१९३७ ई०

१—शिवप्रसाद वल्द नारायणदीन
२—गौरीशंकर वल्द लियालाल
३—सरजूप्रसाद वल्द नारायणदास

अकवाम कायस्थ निगम साकिनान मौजा परतावगंज प० परतावगंज तहसील नवाबगंज जिला बाराबंकी

कर्ज़दार सावन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बनाम

श्यामसुंदरलाल वग़ैरा व जुमला क़र्ज़ख़्वाहान

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि शिवप्रसाद वल्द नारायणदीन क़ौम कायस्थ साकिन परताबगंज परगना परताबगंज ज़िला बाराबंकी वग़ैरा की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व काबिल विरासत और काबिल इंतक़ाल हकीयत की तसरीह	वसायत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	ग़ैरमनकूला	परताबगंज प० परताबगंज मुहाल गुलामसमद	हकीयत आला	हकीयत आला ।।।।) मुंदरजे खाता खे० नं० १ वाक़ै मुहाल गुलामसमद	३८।≡)	
२	,,	,,	मौ० परताबगंज	बागात बिला जमीन	बागात बिला जमीन नं० ख० र० पु० ८ ॥ऽ२-१० २९५ व ऽ-१८ १६१ ॥ऽ४ २९३ ।ऽ१ १३३ ।ऽ२	नंबरी जैल नाम मुहाल निवाजिसअली ,, ,, ,, ,,	
३	,,	,,	मौ० शहाबपुर प० नवाबगंज	आराज़ी माफ़ी दुआमी	आराज़ी माफ़ी दुआमी तादादी ३१ऽ१-१ पुख़्ता मुंदरजे खाता खेवट नं० २	बिला मालगुज़ारी	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १३ सितंबर १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

CC0. Gurukul K... eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा अव्वल ज़िला सीतापुर
मुकद्दमा नंबर ९२ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ६। १२। १९३७ ई०

१—कुबेरसिंह
२—लालताबख्शसिंह
३—उमरावसिंह
४—शिवराजसिंह
} पिसरान खुशहालसिंह साकिनान मौजा बीहटगौर प० व त० मिसरिख जिला सीतापुर

५—मु० राजरानी जौजे शिवराजसिंह
६—शंकरबख्शसिंह
७—संतबख्शसिंह
८—जैपालसिंह नाबालिग वल्द रामेश्वरबख्शसिंह बविलायत शंकरबख्शसिंह चचा हकीकी } सायलान

बनाम

रमापति वगैरह फरीकसानियान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह जैल दरख्वास्तकुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रह जैल हासिल हो, तो वह अंदर मीयाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

तफसील जायदाद

तफसील जायदाद गैरमनकूला अज किस्म जमींदारी जो मकबूजा जुमला सायलान की है

नंबर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व जिला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौइयत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	मौजा गजरपुर प०त० मिसरिख जि० सीतापुर नं०हद० ५१६	उजागरपुर	हिस्सा ।।) मिन-जुमला ।।।)	जमींदारी	१००)	१०)
२	मौजा गूजरपुर पर० तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	रघुबरपुर	हिस्सा ।।) मि०।।।।)	,,	२०)	२)
३	मौजा गूजरपुर पर० तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	बूधरपुर	मुस० मु० २० बि०	,,	६५)	६।)
४	बीहटगौर प० त० मिसरिख जिला सीतापुर हदबस्त १२२	मदारीपुर	हिस्सा ५ बि० मिन-जुमला २० बिस्वा	,,	६७=)	६।।) ४पाई
५	बीहटगौर हदबस्त १२२	मुहाल हथिया	हिस्सा १/४ मिन० ।-) ४पाई मु० ।।।।)	,,	१०)	१)
६	बीहटगौर हदबस्त १२२	मुहाल भान बीहट	हिस्सा ।) मि०।।।।)	,,	६२।)	६)
७	सरोसा प० तह० मिसरिख जिला सीतापुर	मुहाल कल्लूसिंह पट्टी कुबेरसिं०	आराजी तादादी ६६ एकड़ ५७ डि०	,,	३६।।)	३।।=/८पाई
८	ऊदेपुर नं० हदबस्त ४१		हिस्सा ।=) मिन० ।।।।) वाकै मु० थोक उजागरसिंह	,,	१८।।)	२)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

९	तेंदुवा पर० तह० मिसरिख जिला सीतापुर	हि०।) मिनजुमला ।।।।) पट्टी पहलवान सिंह थोक मदारीसिंह	जमींदारी	६।।।=) ६पाई	१)
१०	तेंदुवा जिला सीतापुर	हिस्सा ।) मि० ।।।।) पट्टी धरमगजसिंह थोक मदारीसिंह	,,	१९।।।=)	२)
११	मौजा आबी प० त०मिसरिख जिला सीतापुर हदबस्त ३६	हिस्सा ५ बिस्वा मिन० २० बिस्वा	,,	५४।।)	५।।)

फेहरिस्त जायदाद गैरमनकूला मकबूजा हथिया उमरावसिंह व लालताबख्शसिंह सायलान

१२ जमीदारी मौजा आबी प० त० मिसरिख जिला सीतापुर मुहाल भूधरपुर हिस्सा $\frac{1}{2}$ मि० ।।।) मुसल्लम मुहाल मालगुजारी ७१।।।) लोकल रेट ७=)

फ़ेहरिस्त जायदाद ग़ैरमनकूला अज़ क़िस्म बाग़ात मक़बूजा जुम्ला सायलान

		एकड़ डि०	
१. बाग़ नं० १८२२ (अ)	रकबा	२—४८	बिला आराज़ी वाक़े बीहटगौर प० त० मिसरिख ज़िला सीतापुर
२. बाग़ नं० १८२३ (ज)	,,	०—६१	
३. बाग़ नं० १८२३ (ब)	,,	१—६०	
४. बाग़ नं० १८२३ (अ)	,,	२—४८	
५. बाग़ नं० १७४१	,,	५—६४	

फेहरिस्त जायदाद मनकूला मिलकियत सायल नं० १ कुबेरसिंह

भैंस	पड़वा	गाय
१ रास	१ रास	१ रास

फ़ेहरिस्त जायदाद मनकूला मिलकियत सायल नं० ६ लगायत ८ यानी शंकरबख्शसिंह व संतबख्शसिंह व जैपालसिंह

गाय मय बछिया	पड़वा	भैंस
२ रास	१ रास	१ रास

फेहरिस्त जायदाद मनकूला मिलकियत सायल नं० ४ व ५ यानी शिवराजसिंह व मु० राजरानी

भैंस	गाय मय बछिया	बछड़ा
१ रास	१ रास	१ रास

फेहरिस्त जायदाद मनकूला मिलकियत उमरावसिंह सायल नं० ३

भैंस मय पड़िया	गाय मय बछड़ा	गाड़ी
१ रास	१ रास	एक मंज़िल

फेहरिस्त जायदाद मनकूला मिलकियत सायल नं० २ यानी लालताबख्शसिंह

भैंस	गाय	बछड़ा	गाड़ी
१ रास	१ रास	१ रास	एक मंजिल

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल ज़िला सीतापुर

मुक़द्दमा नंबर ६२ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १३ दिसंबर सन् १९३७ ई०

१—कोमलसिंह } वल्द भीखमसिंह अक़वाम ठाकुर साकिनान ठावा मुत्तसिल बेला परगना खुटार
२—कालिकासिंह } तहसील पुवायाँ ज़िला शाहजहाँपुर

३—छोटईसिंह } वल्द भारतसिंह अक़वाम ठाकुर साकिनान बरगाँवाँ परगना चड़रा तहसील मिसरिख
४—मुन्नूसिंह } ज़िला सीतापुर

५—मुसम्मात जैदेवीकुँवरि बेवा मुंशी खुशबख्तबहादुर अक़वाम कायस्थ साकिन मुहल्ला तामसेनगंज ज़िला सीतापुर

६—मदनलाल उर्फ़ मदनमोहन वल्द मुंशी इंद्रबहादुर क़ौम कायस्थ साकिन मछरेहटा वारिद हाल बटगंज सीतापुर

सायलान

बनाम

१—कुँवर रूपसिंह वल्द टीकमसिंह
२—कुँवर शिवराजबहादुर वल्द कुँवर बलभद्रसिंह
३—गोविंद प्रतापनारायणसिंह नाबालिग़ बविलायत कुँवर दृगपालसिंह बाबा खुद
४—कुँवर लोनेसिंह
५—कुँवर भोजपालसिंह } पिसरान रतनसिंह
६—कुँवर मिलापसिंह
७—दिग्विजेसिंह
८—कुँवर ब्रजराजसिंह } पिसरान जवाहिरसिंह
९—जंगबहादुरसिंह नाबालिग़ बविलायत ब्रजराजसिंह बिरादर हक़ीक़ी
१०—कुँवर गंगाबख्शसिंह नाबालिग़ बविलायत धीरेंद्रबहादुरसिंह

अक़वाम ठाकुर साकिनान बरगाँवाँ परगना चड़रा तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर

११—मु० बेवा छोटेलाल कौम ठाकुर साकिन हिया परगना बेहँदर ज़िला हरदोई
१२—बलदेवप्रसाद } पिसरान लालताप्रसाद अकवाम ब्राह्मण साकिनान बेनियापुर परगना चड़रा
१३—रामरतन } तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर
१४—रघुबरदयाल वल्द रामप्रसाद
१५—त्रिभुवन उर्फ़ ललई वल्द भजनलाल
१६—चंद्रिका } पिसरान लालबिहारी
१७—मंगलाचरन }
१८—रामलोटन } नाबालिग़ान बविलायत चंद्रिका पिसरान लालबिहारी
१९—रामभरोसे }
२०—रामदत्त वल्द नामालूम
२१—मु० टिकोना जोजे मानसिंह कौम ठाकुर साकिन उमरिया परगना व तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई
२२—गोपालनारायण वल्द बुद्धनलाल
२३—पुरुषोत्तमदास उर्फ़ भोंदू वल्द ए० सी० } अकवाम खत्री साकिन तामसेनगंज परगना खैराबाद ज़िला सीतापुर

अक़वाम ब्राह्मण साकिनान व परगना चड़रा तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर

मद्दाजनान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह ज़ैल दरख्वास्तकुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रह जैल हासिल हो, तो वह अंदर मीआद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तफसील जायदाद
मुंदरजा बयान तहरीरी सायल दरख्वास्तकुनिंदा

नंबर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व जिला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवैयत हकीयत	माली-गुजारी	लोकल रेट
१	जलाईपुर परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	लगानी पट्टी	।) आना मिनजुमला सोलह आना	जमींदारी	३५०)	३५)
२	महम्मदापुर परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	,,	हिस्सा ।) आना मिन-जुमला मुसल्लम मौज़ा महमदापुर	,,	१४७॥)	१४॥)
३	मौजा भितिया पर०चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	,,	हिस्सा ।॥) बारह आना मुसल्लम मौज़ा भितिया	,,	१५०)	१५)
४	मौजा रमुवापुर परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	,,	हिस्सा ।) आना मिन-जुमला मुसल्लम मौज़ा रमुवापुर	,,	५०)	५)
५	हिम्मतनगर परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	,,	हिस्सा ।) आना मिन-जुमला मुसल्लम मौजा हिम्मतनगर	,,	३५)	३॥)
६	मौजा बेनियापुर परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	,,	१ बिस्वा ३ बिस्वांसी १३⅓ कचवांसी मिनजुमला मुसल्लम बेनियापुर	,,	१७॥।—)	१॥।)६पाई
७	मौजा चड़रा पर० चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	थोक बरगाँवा	मुसल्लम	,,	२३५)	२३॥—)
८	मुड़ा कलाँ परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	पट्टी अवधूतसिंह	हिस्सा ।) चार आना मिनजुमला मुसल्लम पट्टी अवधूतसिंह मौ०मुड़ाकलाँ	,,	१४)६पाई	१।=)५पाई
९	मुड़ा खुर्द परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	पट्टी अवधूसिंह	हिस्सा ।) आना मिन-जुमला मुसल्लम पट्टी अवधूतसिंह	,,	५१।॥=)	५=)६पाई
१०	बरगाँवाँ परगना चड़रा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	पट्टी अवधूतसिंह व बलदेवसिंह	हिस्सा ।) मिनजुमला सोलह आना पट्टी अवधूतसिंह व बलदेवसिंह	,,	२२४।—)	२२॥=)

जायदाद जो महाजनान ने कुँवर रूपसिंह व दिग्विजयसिंह व ब्रजराजसिंह व जंगबहादुरसिंह व शिवराज-बहादुरसिंह ने दिखाई है, हस्ब जैल है—

(१) मौजा जलाईपुर हिस्सा ।=)८ पाई

जायदाद जो कि प्राननाथ ने दिखाई है—

(१) हकीयत जमीदारी हिस्सा ¼ मिनजुमले पट्टी अवधूतसिंह साकिन बरगाँवा परगना चड़रा

(२) पट्टी नंबर ९ हिस्सा ।=) २ पाई

मुंसरिम

CCO. Gurukul Kangri Coll...

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सुरेंद्रविक्रमसिंह स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल लखनऊ
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६ सन् १९३७ ई०
तारीख पेशी २९—१२—१९३७ ई०
लाल चंद्रप्रतापसिंह वग़ैरा — कर्ज़दार सायलान

बनाम
इलाहाबाद बैंक वग़ैरा

बनाम—
१—लाला गिरिधारीलाल दामोदरदास रस्तोगी टोला लखनऊ
२—लाला बसंतराय वग़ैरा रस्तोगी राजा बाज़ार शहर लखनऊ
३—मि० भगवानदास अमीनाबाद लखनऊ
४—मु० भौमदेवी इंपरीयल होटल लखनऊ
५—इलाहाबाद-बैंक लखनऊ
६—मु० नहमा बेगम
७—ठा० शिवरतनसिंह
८—पियारेलाल मिरजामंडी
९—देवीदयाल
१०—राजा बरखंडी महेशप्रतापनारायणसिंह
११—रंजीतसिंह
१२—मि० फीरोजशाह
१३—सुखनंदनप्रसाद
१४—बिसुनसिंह
१५—रायबहादुर रामप्रसाद
१६—श्रीराम — कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ई०) जिसकी तरमीम अज़रूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, लाल चंद्रप्रतापसिंह वल्द लाल राजराजेश्वरीप्रसादसिंह साकिन रौनी ज़िला बराबंकी ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम अज़रुय ऐक्ट४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि जुमला अशखास जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा खानगी कर्ज़ाजात के मुताल्लिक दावा रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दर्ज हैं। वरना अदम तामील में हरएक दावा उसके खिलाफ ख्वाह डिगरीशुदा हो या ग़ैरडिगरीशुदा तरमीम अग़राज और मौकों के लिये इस ऐक्ट की दफा १३ की रू से बाजाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २४ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

بدست عوام فروخت کے لئے]

فارم اِطلاع نامہ حسب دفعہ ۱۱ ایکٹ جائدادھاے مقروضہ ممالک متحدہ

بعدالت مستر ہرپرساد گپتا صاحب بہادر اسپیشل جج سکنڈ گریڈ الہ آباد

مقدمہ نمبر ۲۲۹ سنہ ۱۹۳۶ع نمونہ نمبر ۱۷۰

ہرگاہ لچھمی پرساد خلف دیبی دین قوم برہمن ساکن کٹیا پرگنا کٹرا ضلع الہ آباد نے ایک درخواست حسب دفعہ ۳ ایکٹ جائدادھاے مقروضہ پیش کی ھے

لہذا اس تحریر کی رو سے حسب دفعہ ضمنی ۱ دفعہ ۱۱ ایکٹ مذکور اطلاع دیجاتی ھے کہ اُس جائداد کو جس کی تفصیل ضمیمہ ھاے منسلکہ میں درج ھے درخواست دھندہ نے حسب دفعہ ۸ یا حقداران نے حسب دفعہ ۱۰ مذکور کی جائداد بتایا ھے

اگر کوئی شخص جائداد مذکور پر کوئی دعوی رکھتا ھو تو وہ اِس اِشتہار کے گزٹ ممالک متحدہ میں شائع ھونے کی تاریخ سے تین ماہ کے اندر اپنے اِستحقاق کے بارہ میں اُس حاکم کے روبرو اپنی عرضی پیش کرے جس کے دستخط ذیل میں ثبت ھیں—

ضمیمہ (الف)

قرضدار کے اِستحقاق مالکانہ متعلق اراضی

نمبر سلسلہ وار	نام موضع اور پرگنہ	نام محال یا پٹی	نمبر کھاتہ	تعداد حصہ	روپیہ	مالگزاری
						پائی-آنہ-روپیہ
۱	موضع کٹیا پرگنہ کٹرا ضلع الہ آباد	محال شودین پٹی منتررام	۲۱	۱۳ گنڈہ ۲ کوری ۱۵/۴ دنت	۵۳ بیگہ ۹ بسوا ۲ ۱/۲ بسوانسی	
۲	" " "	پٹی رگھبیر پرساد	۳۸	۱۱ گنڈہ ۳ کوری	۴۵ بیگہ ۱۹ بسوہ	۴۸-۵-۴
۳	" " "	پٹی لچھمی پرساد	۸	۱ دنت ۱۱ گنڈہ ۲۵ کوری	۳ بسوانسی ۴۲ بیگہ ۷ بسوہ	۴۲-۱۱-۰
۴ ۵	" " "	پٹی غیر خوھاندگان	۱۱	۶ دنت ۴ دنت	۳بسوانسی ۷ بسوہ	۰-۶-۰
۵	" " "	پٹی بھگواندین	۴۸	۸ گنڈہ	۱۰بسوانسی ۳۱ بیگہ ۳ بسوا	۳۰-۱۴-۰
۶	" " "	محال ابن الادین	۵	"	۱۸ بسوانسی ۱ بیگہ	۱-۰-۰
۷	" " "	محال رسول صاحب	۲	"	۸ بسوا ۱۸۰ بیگہ ۸ بسوا	۳-۳-۰

CCO, Gurukul Kangri Collection

८	موضع مدنپور ککوڑھا پرگنہ کڑا ضلع الہ آباد	محال گوری پرساد پتی مہابیر پرساد	۳	۶ آنہ ۴ پائی	۶ بیگہ ۱۴ بسوا — ۶-۱۳-۵۱
۹	نورنہاکر پٹھئی	محال چندل بیبی پتی گورپرساد	۲	۱۶ کرانت ۴ جو ۶ تل ۹ روا	۹ بیگہ ۷ بسوا ۲ بسوانسی — ۷-۱۱-۸
۱۰	موضع چوریا پرگنہ کڑا	محال شودین	۱	۱ آنہ ۱۰ پائی	۰ — ۶-۲-۱۷
۱۱	,, ,,	محال ابن الہ دین سال گر	۲	۰	۱۸ بسوا ۵ بسوانسی — ۶-۱۵-۰
۱۲	,, ,,	ارسول صاحب بشیسر پرساد	۳	۰	۱۷ بسوا ۷ بسوانسی — ۴-۴۰-۱
					۲۶۵-۶-۱۰

ضمیمہ (ب)

قرضدار کی جائداد جو بہ استثناء حقوق مالکانہ متعلق اراضی حسب دفعہ ۶۰ ضابطہ دیوانی سنہ ۱۹۰۸ ع قرق اور نیلام ہو سکتی ہے —

نمبر سلسلہ وار	نوعیت جائداد	وسعت حقیقیت و درخواست دہندہ
۱	۲	۳
۱—	بھینس ایک راس	قیمت تخمیناً ۳۰ روپیہ
۲—	گائے دو راس	,, ۳۰ روپیہ
۳—	ماما ایک راس	,, ۱۰ روپیہ
۴—	قطعہ مکان موسومہ بیٹھک	,, ۱۲۵ روپیہ
۵—	دو دھانہ چاہ پختہ دامدہ موضع کٹیا	,, ۴۰۰ روپیہ
۶—	قطع دگری نمبری ۶۷ سنہ ۳۱ منصفی غربی الہ آباد موی لچھمی پرساد بنام کیدارناتھہ منفیصلہ ۲۷ اپریل سنہ ۱۹۳۳ ع علاوہ خرچہ	

منصرم

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर $\frac{३०}{२७७}$ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २१—१२—१९३७ ई०

मु० सईदुन्निसा बेवा काजी रवनकअली मरहूम साकिन हाल कस्बा देवा परगना खुद जिला बाराबंकी

कर्जदार सायला

बनाम

हरदुवारीप्रसाद वग़ैरह

कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि मु० सईदुन्निसा बेवा काजी रवनकअली साकिन देवा जिला बाराबंकी $\frac{\text{ने}}{\text{की जानिब से}}$ एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा $\frac{\text{पेश की}}{\text{पेश हुई}}$ है, लिहाजा हस्ब दफा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायला मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नं० बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहंदा की हकीयत पर मौजूदा तख्मीस मालगुज़ारी	कैफियत
१	बाराबंकी	ग़ैरमनकूला	मौजा खेरिया परगना फतेपुर मुहाल बाकर-हुसेन	हकीयत आला	हिस्सा $\frac{१}{२}$ मिनजुमला हिस्सा ३ आना ८ पाई १८$\frac{१}{२}$ किरांत मुंदरजे खाता खेवट नं० ६	२६॥=)॥	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २० सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल ज़िला सीतापुर

मुक़द्दमा नंबर ६८ सन १९३७ ई०

तारीख़ पेशी १०-१२ सन् १९३७ ई०

नवाब बेगम नौशादहुसेनखाँ साहब मरहूम साकिन मुहल्ला बावरची टोला परगना व तहसील व जिला सायला लखनऊ

बनाम

१—चंद्रिकाप्रसद
२—राजराजेश्वरीप्रसाद
३—महेश्वरीप्रसाद

पिसरान बलदेवसाह साकिनान मुहल्ला माखूपुर परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर

फरीकसानियान

CCO, Gurukul Kangri Coll

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह जैल दरख्वास्तकुनिंदह व क़र्ज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाजा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रह ज़ैल हासिल हो, तो अंदर मीआद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

मुंदरजा बयान तहरीरी सायल दरख्वास्तकुनिंदा

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौइयत हकीयत	मालगुज़ारी	लोकल रेट
१	खिलौना परगना खैराबाद जिला सीतापुर	नवाब सकम	११ आना २ ३/५ पाई	मालिकाना	२१८)	१८॥)
२	सुलतानापुर खमचा परगना खैराबाद जिला सीतापुर	शिवबख्श	१ बिस्वांसी १९ १५/२७ ५/६ कचवांसी			
३	मुडेहरा परगना खैराबाद जिला सीतापुर		९ बिस्वांसी ५ १८/१०८ कचवांसी			
४	किशुनापुर परगना खैराबाद जिला सीतापुर		९ बिस्वांसी ८५/१०८ कचवांसी			

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल जिला सीतापुर

मुक़दमा नं० ८१ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १७—१२—३७ ई०

चौधरी सैयद मेहँदीहुसेन वल्द चौधरी वज़ीरअली क़ौम सैयद साकिन मिसरिख मुहल्ला दौलतपुर परगना व तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर

सायल

बनाम

ठाकुर लालजी वगैरह

फरीकसानी

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह जैल दरख्वास्तकुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रह जैल हासिल हो, तो वह अंदर मियाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट अदालत हाजा में पेश करे।

फेहरिस्त जायदाद मकबूजा सायल

(१) मुसल्लम मौजा बहूती परगना व तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

(२) ।॥–) ४ पाई मिनजुमला १६ आना मुसल्लम मौजा अजीजपुर परगना औरंगाबाद तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

(३) हिस्सा ।–)४ पाई मिनजुमला १६ आना मुसल्लम मौजा सहसयामऊ मशमुले लकड़यामऊ परगना औरंगाबाद तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

(४) आराजी ३ एकड़ ५९ डिसमिल मातहती वाकै मौजा नीमसार परगना औरंगाबाद तहसील मिसरिख जिला सीतापुर बिला मालगुजारी

(५) ३ बिस्वा मिनजुमला बिस्तबिसवा मुहाल दौलतपुर मशमुले मिसरिख परगना व तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत पं० ब्रजनाथ जुत्शी स्पेशल जज साहब बहादुर जिला खीरी दरजा दोयम मुक़ाम लखीमपुर
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १३६ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १५-१२-१९३७ ई०

१—पोहपराम वल्द उमराव
२—गजराजसिंह
३—भूपसिंह
४—ज्वालासिंह
५—हज़ारीसिंह
} पिसरान पोहपराम } कौम अहीर साकिन मौजा ककरहा परगना औरंगाबाद ज़िला खीरी सायलान

बनाम

१—रामनरायन वल्द पंचम
२—गयाप्रसाद वल्द रामदीन
३—बिहारी वल्द बच्चू
४—नन्हू वल्द जीतराम
५—अलबेले नाबालिग़ वल्द माधव बविलायत मु० बिलासा मादर खुद
} अकवाम अहीर साकिनान मौजा ककरहा परगना औरंगाबाद ज़िला खीरी

६—देवदत्त वल्द द्वारकाप्रसाद कौम ब्राह्मण
७—जदुनंदनप्रसाद
८—गयाप्रसाद
} पिसरान गुरुदयाल कौम ब्राह्मण } साकिनान पैलाकेसा परगना महौली ज़िला सीतापुर

९—देवी
१०—छोटकऊ
} पिसरान तिलक क़ौम चमार साकिन बटाऊ मज़रा लल्हौवा परगना कस्ता ज़िला खीरी

चूँकि पोहपराम वल्द उमराव व गजराजसिंह, भूपसिंह, ज्वालासिंह, हजारीसिंह वल्द पोहपराम कौम अहीर साकिन मौजा ककरहा जिला खीरी की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० पोहपराम वग़ैरा सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़्क़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	फ़ैसलियत
१	खीरी	ज़मीदारी	मौज़े ककरहा मुहाल ज़ालिमपुर परगना औरंगाबाद ज़िला खीरी	हक़ आला	१० बिसुवा	११२॥) मा० ११) अबवाब	

CCO, Gurukul Kangri Coll

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	भैंस	४ रास	
२	अद्धा	१ मंज़िल	
३	घोड़ी खुर्द	१ रास	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ४ सितंबर १९३७ ई० जारी हुआं। मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३४१७/६ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी २३—१२—१९३७ ई०

भगवानदीन वगैरह — कर्जदार सायल

बनाम

१—महम्मदज़हीर
२—अब्दुलरशीद बाबालिग बविलायत महम्मदजहंर बिरादर हक़ीक़ी खुद

} पिसरान महम्मदइश्हाक अक्वाम शेख साकिन महमूदाबाद परगना दरियाबाद ज़िला बाराबंकी — कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि महम्मदज़हीर व अब्दुलरशीद पिसरान महम्मदइश्हाक साकिन महमूदाबाद परगना दरियाबाद ज़िला बाराबंकी की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से तीन माह के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ) कर्जदार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिज बिरासत व काबिज इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्ज रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तरवीज मालगुजारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	गरमनकूला	मौज़ा महमूदाबाद मुहाल हड़हा खाता १	मातहतदारी	१०॥।५३-१६	मालगुजारी १६॥)३	
२	,,	,,	मौज़ा महमूदाबाद खाता ४ मुहाल हड़हा	,,	१५-१४	१॥)६	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २१ एप्रिल सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इश्आअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब दाताराम मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६५ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी २६—१०—१९३७ ई०
वसीउद्दीन उर्फ नवाब मुन्ने वल्द मसीउद्दीन कौम शेख साकिन कस्बा अमेठी जिमींदार सल्लाहीमऊ परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ
क़र्ज़दार सायल

बनाम

रामप्रसाद वल्द गोपाली कौम बक्काल साकिन मौज़ा गोशाईंगंज परगना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ
क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि वसीउद्दीन उर्फ नवाब मुन्ने वल्द मसीउद्दीन साकिन कस्बा अमेठी ज़िला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने हक़तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

सिडूल जायदाद कर्ज़दार हस्ब दफ़ा ८ तहरीर किया है और कर्ज़दारों ने हस्ब दफ़ा १० यू० पी० इनकमबर्डन स्टेट्स ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई० तहरीर किया है, जो नोटिस हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर के साथ शामिल किया जायगा।

सिडूल १ बिस्वा
कर्ज़दार के जमींदार हक़्क़ आराजी

नंबर शुमार	नाम ज़िला	नाम रियासत	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व सुदाल	तफ़सील हक़्क़ सायल मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल हैंतक़ाल की	तादाद हक़ सायल जैसा कि दफ़्तर ज़िला के रजिस्टर में दर्ज है।	मालगुज़ारी व हक़ीयत हाल और हक़्क़ सायल के	फ़ैसिलत
१	लखनऊ	जमींदारी	मौज़ा सल्लाहीमऊ परगना व तहसील मोहनलालगंज	हिस्सेदार	हिस्सा ।।) दुरुस्त १६ आने पट्टी मसीहउद्दीन खाता खेवट नंबर २	मु० २००) मालगुज़ारी	

नोट—बाद ५ साल के मालगुज़ारी मु० २३०) रु० जायगी

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ६ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।
मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला फतेहपुर
मुक़द्दमा नंबर २२ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी १४ दिसंबर सन् १९३७ ई०
मन्नालाल वल्द भगवानदीन व बैजनाथ बालिग व श्रीनाथ व देवनाथ व सिद्धनाथ व लोकनाथ व बिशुनाथ व अमरनाथ नाबालिगान पिसरान मन्नालाल व मु० गजरानीकुँवरि बेवा रामदुलारे कौम ब्राह्मण सा० मौज़ा बुधेड़ा परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर
की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा जिम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा

CCO, Gurukul Kangri

नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदो-बस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तखमीनी मालगुजारी
१	२	३	४	५	६	७
१	फतेहपुर	जमींदारी	बुधेड़ा मु० भगवानदीन परगना हथगाम	१)	सायलान मालिक व काबिज बाकई है और हर तरह के अख्तियारात निस्बत इंतकल जायदाद हासिल हैं	१४०)

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत की वसअत (विस्तार)
१	२	३
१	एक किता मकान वाकै मौजा बुधेड़ा परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर	मुताल्लिक़ काश्तकारी हुए काबिल कुर्क व नीलाम नहीं हैं
२	एक किता बगर वाकै मौजा बुधेड़ा परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर बैल ५ भैंस १ बच्चा भैंस १ गाय ४ बछिया ३ बछवा १ पड़वा १ घोड़ी १ भैंसा २ गाय २ गाड़ी १ बाग़ २ पेड़ अम्बा व महुवा १५	

आज बतारीख ११—८—३७ ई० को दस्तखत मेरे व मुहर अदालत से जारी हुआ।

मु० सरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुकद्दमा नंबरी नंबर १२४/२०२/५६२ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २०—१२—१९३७ ई०

१—मुस्तफाअलीखाँ } पिसरान खुदादादखाँ साकिन कस्बा रुदौली परगना खुद ज़िला बाराबंकी
२—मुजतबाअलीखाँ }

कर्जदार सायलान

बनाम

जुमला कर्जख्वाहान

कर्जख्वाहान फरीकसानी

चूँकि मुस्तफाअलीखाँ व मुजतबाअलीखाँ वल्द खुदादादखाँ साकिन रुदौली जिला बाराबंकी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त-देहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गजट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	बाराबंकी	गैरमनकूला	दिलसराय प० रुदौली मु० दिलसराय	हकीयत आला	।)॥ मिन-जुमला ।=)॥	१५५)	
२	,,	,,	इबराहिमपुर परगना रुदौली मु० जाकिरहुसेन	,,	≡) २ पाई ८ किराट	३०।।।)२ पाई	
३	,,	,,	रुदौली परगना खुद मु० खल्लीलुरहमान	,,	१ बीघा १५ बिस्वा	५-)५ पाई	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख १७ सितबर सन १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ७१ सन् १९३७ ई०

तारीख पेशी १३ नवंबर सन् १९३७ ई०

फ़ा० ५

CCO, Gurukul Kangri Coll...

१—भारथसिंह वल्द हुलाससिंह
२—रोहनसिंह
३—दुल्लमसिंह
४—शिवमंलसिंह
५—जोगेंदरपालसिंह
नाबालिग़ान बविलायत भारतसिंह पिदर खुद
६—दूलेलसिंह
७—तारासिंह
८—रघुनाथसिंह
९—सिरीपालसिंह
पिसरान नरपतिसिंह
अकवाम ठाकुर साकिनान मौजा सैदपुर परगना शरह शुमाली जिला हरदोई डाकखाना बेहटागोकुल क़र्ज़दार सायलान

बनाम

१—कुँवर कालिकाबख़शसिंह
२—कुँवर जदुनाथसिंह
पिसरान कुँवर तारासिंह ठाकुर साकिन मौजा कोंडरा सरैयाँ
३—भूपसिंह वल्द बुद्धीसिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौजा सैदपुर
परगना शरह शुमाली ज़िला हरदोई डाकखाना बेहटागोकुल

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जिसकी तरमीम अज़रुय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, भारतसिंह वग़ैरह साकिन सैदपुर ज़िला हरदोई की तरफ़ से इस गरज़ से पेश हुई है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम अज़रूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि जुमला अशख़ास जो सायलान मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरीशुदा व ग़ैर डिगरीशुदा क़र्ज़जात के मुताल्लिक दावे रखते हों, वह गज़ट में इस इश्तिहार के छपने को तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दर्ज हैं। वरना अदम तामील में हर एक दावा उसके ख़िलाफ़ ख्वाह डिगरीशुदा हो या ग़ैरडिगरीशुदा तरमीम अग़राज़ और मौक़ों के लिये इस ऐक्ट की दफ़ा १३ की रू से बाज़ाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ३१ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)
बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर ज़िला बाराबंकी दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नबरी नंबर $\frac{१५}{३३}$ $\frac{}{५७९}$ तारीख़ पेशी २२—१२—१९३७ ई०

मुसम्मात जमीलतुन्निसाँ दुख़्तर शेख़ अलताफ़हुसेन ज़ौजे मुहम्मदनसीम कौम शेख़ साकिन मुहल्ला दुगावाँ शहर लखनऊ
क़र्ज़दार सायल

बनाम

१—हरचरनलाल वल्द लछमनप्रसाद
२—हरदुवारीप्रसाद
३—अंबरप्रसाद
पिसरान बद्रीप्रसाद
४—रामदत्त नाबालिग वल्द गयाप्रसाद बविलायत अंबरप्रसाद चचा हक़ीको
अक्वाम कुर्मी साकिनान मौजा खपरवा खास पुर परगना व तहसील फ़तेहपुर ज़िला बाराबंकी

कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि मु० जमीलतुन्निसाँ वल्द शेख़ अलताफ़हुसेन कौम शेख़ साकिनान मुहल्ला दुगावाँ शहर लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद का, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मु० जमीलतुन्निसा मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूक़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराजी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़ास्तदेहंदा की मुस्तकिल क़ाबिल क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह		वसायत हक़ीयत दरख़ास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला		दरख़ास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तश्ख़ीस माल्यांजारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	मातहत दारी	खपरवा खानपुर नं० खाता खेवट मातहतदारी (१) परगना फतेहपुर	नंबर खसरा	रक़बा पुख्ता	७४॥)२-५ पुख्ता		७६॥)	
			नंबर ख़सरा / रक़बा पुख्ता			नंबर खसरा	रक़बा पुख्ता		
			२ ॥)-१४	३३	१)४-१७	२२६	॥)४-८		
			३ १)२	३७	१)-५	२२७	१)३		
			४ १)३	३८	॥)४-२	२२८	॥)२		
			५ १)१	३९	२)३	२२९	॥)		
			६ १)१	४०	१॥)-१५	२३०	॥)४		
			७ १॥))	४१	॥)२	२३१	१)		
			८ १)-९	४२	॥)२	२३२	॥)१		
			९ १)१-१४	४३	॥)	२३३	॥)२		
			११ ॥)-२	४७	१)४	२३४	१)१		
			१२ ४)१-१३	५०	१)१	२३५	)४		
			१३ १॥)	१९७	१)१	२३६	॥)२		
			१४ १॥)४	२०५अ	१)	२३७	१)३		
			१५ ३)२	२०६अ	१)	२४१	॥)१-१७		
			१६ १)२	२१०	)४-१४	२४२	॥)१-१९		
			१७ २)३	२११	॥)-८	२४३	॥)१		
			२० १)४	२१२	)-१४	२८३	॥)२-७		
			२१ १॥)४	२१३	)-६	२८४	)२		
			२२)४	२१४	॥)२	२८५	)१-१५		
			२३ १)१-१२	२१५	३)१	२८६	)४		
			२८ १)-८	२१६	१॥॥)२	२८७	)२-१७		
			२९ १)१-९	२१७	॥)	२८९	१॥)-४		
			३० १॥)-८	२१८	)३	२९०	१)२-८		
			३१ ॥)	२१९	)१	२९१	॥)२-१२		
			३२ ॥)१-१	२२०	॥)	२९२	॥)४-३		
				२२१	)४	२९३	१)२		
				२२२	॥)	७४॥)२-५	७९ किता		
				२२३	)४				
				२२४	॥)-४				
				२०५	॥)-४				

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख ८ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[क़ाबिल फ़रोख्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सयक्त प्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १२३/१६१/६७३ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २०—१२—१९३७ ई०

१. रामसरनसिंह
२. देवसरनसिंह
३. रामप्रसादसिंह

पिसरान जैसिंह अकवाम ठाकुर साकिनान लोधौरा परगना रुदौली तहसील रामसनेहीघाट जिला बाराबंकी

क़र्ज़दार सायल

बनाम

जुमला क़र्ज़ख्वाहन

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मज़कूरे बाला की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्जिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने को तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)
क़र्ज़दार के हकूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतकाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख्वीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	हिस्सा ८ पाई साबिक़ २ आना १० किरांत १ जौ ४ तिल ९ ७/४७ खशखश	मौजा लोधौरा परगना रुदौली मुहाल महादेवसिंह पट्टी रामसरनसिंह	हक आला क़ाबिल विरासत	हिस्सा मंदर्जा खाता खेवट नं० ५	२३।।।-) माल० २।-) सेवाय २६=)	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १८ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट १५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पंडित द्वारिकाप्रसाद शुक्ल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबर ९२ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी २१ दिसंबर सन् १९३७ ई०

१—झम्मासिंह
२—जंगूसिंह
३—कुँवरसिंह } पिसरान डारूसिंह
४—विशेश्वरसिंह
५—नरायनसिंह
६—हरपालसिंह } नाबालिगान पिसरान नरायनसिंह
७—मुलायमसिंह } बविलायत पिदर खुद
८—जदुनाथसिंह } नाबालिगान पिसरान केवलसिंह
९—श्रीपालसिंह } बविलायत झम्मासिंह चचा इकीकी खुद

साकिनान मौजा मंगोलापुर परगना गोपामऊ तहसील व जिला हरदोई

सायलान

बनाम

उमरावलाल वगैरह

क़र्ज़ख्वाह फरीकसानी

चूँकि झम्मासिंह वगैरह साकिन मंगोलापुर जिला हरदोई ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० इनकमबर्ड स्टेटस ऐक्ट सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तथक्षीस मालगुजारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	× १	दानमंडी पर० बंगर पट्टी महासिंह खाता नं० ५	८ बिस्वांसी ६ कचवांसी १३$\frac{1}{3}$ ननवांसी	८ बिस्वांसी ६ कचवांसी १३$\frac{1}{3}$ ननवांसी	७२४=)$\frac{1}{2}$ ताबकुल नंबरान १ ता १३	

CCO, Gurukul Kan

२	हरदोई	×	२	भीडा महासिंह परगना गोपामऊ पट्टी महासिंह खाता नं० १	२ बिस्वा ८ बिस्वांसी १२ ननवांसी १२½ अधवांसी	२ बिस्वा ८ बिस्वांसी १२ ननवांसी १२½ अधवांसी
३	,,		२/१	पट्टी डारूसिंह खाता नं० ४	१५ बिस्वांसी १२ कचवांसी १० ननवांसी	१५ बिस्वांसी १२ कचवांसी १० ननवांसी
४	,,		५/२	पट्टी जयसिंह खाता नं० ३	१० बिस्वांसी	१० बिस्वांसी
५	,,		३	मौजा मंगोलापुर प० गोपामऊ त०जि० हरदोई पट्टी हीरासिंह हेमंचलसिंह खा० नं० ४७, ४८/२	६ बिस्वांसी ७ कचवांसी १७ ननवांसी १० अधवांसी	६ बिस्वांसी ७ कचवांसी १७ ननवांसी १० अधवांसी
६	,,		३/१	पट्टी हेमंचल-सिंह खाता नं० ४८/२	२५ बीघा ५ बिस्वांसी	२५ बीघा ५ बिस्वांसी
७				पट्टी नरपतिसिंह खाता नं० ४८/१	२२ बीघा १ बिस्वा १ बिस्वांसी	२२ बीघा १ बिस्वा १ बिस्वांसी
८	,,		३/३	पट्टी महासिंह खाता नं० १७	६ बिस्वांसी ५ कचवांसी	६ बिस्वांसी ५ कचवांसी
९	,,		३/४	पट्टी थोक महा खाता नं० २९	९ बिस्वांसी ८ कचवांसी २ न० १० अधवांसी	९ बिस्वांसी ८ कचवांसी २ न० १० अधवांसी
१०	,,		५/७	पट्टी महासिंह खाता नं० ३३	३ बिस्वांसी ६ क० ५ ननवांसी	३ बिस्वांसी ६ क० ५ ननवांसी
११	,,		३/८	पट्टी रोमनसिंह खाता नं० ३७	१ बिस्वा १ बि० १ कचवांसी ७ ननवांसी १० अधवांसी	१ बिस्वा १ बि० १ कचवांसी ७ ननवांसी १० अधवांसी
१२	,,		३/७	शामिलात खा० ३७ व २९ पट्टी नं० ३८	२५ बीघा	२५ बीघा
१३	,,		३/८	शामिलात पट्टी डारूसिंह खा० नं० ४८/४	७९ बीघा ६ बिस्वा १८ बिस्वांसी	७९ बीघा ६ बिस्वा १८ बिस्वांसी

१४ एक किता बाग व चार मकानात मसकूना वाक मौजा मंगोलापुर परगना गोपामऊ जिला हरदोई

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	किस्त जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	हुक़ूक़ मुरतहनी	१ बिस्वा ५ बिस्वांसी वाक़ै मौज़ा भीडा पट्टी महासिंह परगना गोपामऊ	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२	हुकूक मुरतहनी	१२ बिस्वांसी १० कचवांसी मौजा मंगोलापुर पट्टी केशोसिंह खाता नंबर १	
३	,,	६ बिस्वांसी ५ कचवांसी पट्टी हीरासिंह खाता नंबर ४५ मौजा मंगोलापुर	
४	तमस्सुक सादा नविश्ते पुलन्दरसिंह बहक केवलसिंह १००) ता० २६ जुलाई २६ ई०		
५	डिगरी तादादी ८५।।।≡) नंबरी ३५० नं० ३२ सबजजी हरदोई विशेश्वरसिंह बनाम केशोसिंह		
६	पुरोनोट ता० १०—८—३४ नविश्ते केशोसिंह बहक विशेश्वरसिंह तादादी ५०)		
७	सादा तम्स्सुक नविश्ते देवसिंह बहक कुँवरसिंह तादादी५०)		
८	अद्धा	२	कीमत तखमीनी ५०)
९	गाड़ी	१	,, ,, ३०)
१०	बैल	१०	,, ,, ३००)
११	भैंसा	३	,, ,, २५)
१२	भैंस	३	,, ,, ५०)
१३	गाय	२	,, ,, १२)

मेरे दस्तखत और अदलत की मुहर से आज़ बतारीख़ २९ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुकाम लखनऊ
मुकद्दमा नंबरी नंबर १० सन् १९३७ ई०
तारीख पेशी १२—११—१९३७ ई०
सैयद नासिरमेहँदी वग़ैरा — क़र्ज़दार सायल

बनाम

१—अनवारहुसेन वल्द चौधरी नादिरहुसेन साकिन नगराम हाल मुलाज़िम कानूनगो तहसील नानपारा ज़िला बहराइच
२—सुबेदारख़ाँ साकिन शहर रायबरेली
३—महाबीरप्रसाद साकिन समेसी डाकखाना नगराम ज़िला लखनऊ
४—लाजबहादुर साकिन तमनपूर डाकखाना शिवगढ़ ज़िला रायबरेली

चूँकि एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जिसकी तरमीम अज़रूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, सैयद नासिरमेहँदी वल्द सै० फ़िदाहुसेन साकिन नगराम ज़िला लखनऊ ने इस गरज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम अजरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि जुमला अश्खास जो सैयद नासिरमेहँदी वग़ैरा मज़कूर की जात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा खानगी वग़ैरा के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वह गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने दावों तामील में हरएक दावा उसके ख़िलाफ़ ख़्वाह डिगरीशुदा हो या ग़ैरडिगरीशुदा तरमीम अग़राज़ और मौकों के लिये इस ऐक्ट की दफ़ा १३ की रू से बाजाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ५ अॉक्टोबर सन् १९३७ जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri C...

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सैयद अख़तरअहसन स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम रायबरेली
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ९७ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १७—१२—१९३७ ई०
संतबख़्शसिंह वग़ैरा अकवाम ठाकुर चौहान साकिन मौज़ा सुलतानपुर जाला परगना डलमऊ जिला रायबरेली

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

शिवरतनसिंह वग़ैरह

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि संतबख़्शसिंह वल्द सीतलबख़्शसिंह वग़ैरह साकिन सुलतानपुर जाला परगना डलमऊ जिला रायबरेली ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	रायबरेली	जमींदारी	सुलतानपुर जाला परगना डलमऊ जिला रायबरेली	आराजी मातहती ४५ऽ४—१९	मातहती	मालगुजारी मयअबवाब ५९≡)	

फेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफियत
१—	१ भैंस	१	
२—	२ गाय	२	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[क़ाबिल फ़रोख्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३९२ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १० दिसंबर सन् १९३७ ई०

१—तिलकसिंह } पिसरान लच्छासिंह
२—खुमानसिंह }

३—महिपालसिंह } नाबालिगान पिसरान खुमानसिंह
४—निर्भयसिंह } बरिफाकत पिदर खुद

५—हेतमसिंह } पिसरान गयासिंह
६—पीतमसिंह }

७—हरीसिंह वल्द रतनसिंह

८—शिवमंगलसिंह नाबालिग वल्द हरीसिंह पिदर खद

अकवाम ठाकुर साकिन मौजा सर्रा परगना बंगर तहसील व जिला हरदोई

सायलान

बनाम

बदरीसिंह वग़ैरह

फरीकसानियान

चूँकि सायलान मनकूरे बाला जिला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमनी (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर व दोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल बिरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाअत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तश्खीस मालगुजारी	क़ैफ़ियत
१	हरदोई	०	मौजा सर्रा मुहाल खंजनसिंह	मालिकाना	२ बिस्वा ४ बि० $\frac{३}{४}\frac{६}{५}\frac{४}{६}$ कचवांसी	७६)	ममलूका तिलकसिंह महिपाल-सिंह व निर्भयसिंह
२	,,	०	मौजा सर्रा मुहाल हुलाससिंह	,,	१८ बिस्वांसी १० कचवांसी ८ ननवांसी		
३	,,	०	मौरूसी अखनापुर	,,	१७ कच० $\frac{१५}{६}$ नन०		

CCO, Gurukul Kangri C...

४	हरदोई	०	गुर्रा	मालिकाना	१ बिस्वांसी १३ कचवांसी ५ $\frac{५}{६}$ $\frac{१}{६}$ ननवांसी	
१	,,	०	सर्रा मुहाल खंजनसिंह	,,	१ बिस्वा ६ बि० ३ $\frac{१}{३}$ कच०	ममलूका हेतमसिंह व पीतमसिंह
२	,,	०	सर्रा मुहाल हुलाससिंह	,,	१ बिस्वा २ बि० ४ कचवांसी ९ नन०	
३	,,	०	सथरा	,,	७ बीघा आराजी	
४	,,	०	अखनापुर	,,	१७ कचवांसी १६ $\frac{८}{६}$ ननवांसी	
५	,,	०	गुर्रा	,,	२बिस्वांसी ६ कच० १ ० $\frac{५}{४}$ $\frac{७}{०}$ ननवांसी	
१	,,	०	सर्रा मुहाल खंजनसिंह	,,	१ बिस्वा २बिस्वांसी ४ $\frac{८}{८}$ कचवांसी	ममलूका हरीसिंह व शिव-मंगलसिंह
२	,,	०	सर्रा मुहाल हुलाससिंह	,,	७ बिस्वासी ८कच०	
३	,,	०	अखनापुर	,,	८कच० १७ $\frac{१}{२}$ $\frac{०}{७}$नन०	

कर्जदार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

फेहरिस्त (बे)

नंबर सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	भैंस	१ रास	बकब्जा तिलकसिंह व खुमानसिंह
२	पड़िया	१ रास	
३	लहड़ू	१ मंजिल	
१	भस	१ रास	बकब्जा हेतमसिंह व पीतमसिंह
२	घोड़ा	१ रास	
३	लहड़ू	१ मंजिल	
१	लहड़	१ मंजिल	बकब्जा हरीसिंह

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २२ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बनाम अशखास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम सुल्तानपुर

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १५६ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १६—१२—१९३७ ई०

१—मुहम्मदइसमाइलखाँ } पिसरान बाबू मुल्लूखाँ कौम भालेसुल्तान साकिन पूरे औलाद मज़रे रस्तामऊ
२—मुहम्मदशेरखाँ } परगना जगदीशपुर तहसील मुसाफ़िरखाना ज़िला सुल्तानपुर

कर्जदार सायल

बनाम

१—सूरजनारायन वल्द कमखिया उमर ५० वर्ष }
२—सतई वल्द सरजू उमर २२ वर्ष } साकिन रस्तामऊ } डाकखाना सथिनी ज़िला सुल्तानपुर
३—अहमदखाँ वल्द जाफ़रखाँ उमर ४५ वर्ष साकिन अकरा }

४—दरगाहीखाँ वल्द वाहिदअलीखाँ उमर ४० वर्ष साकिन कासिमपुर मज़रे रस्तामऊ परगना जगदीशपुर ज़िला सुल्तानपुर

५—मु० मेड़ा जौज़े रघुनाथ उमर ४० वर्ष साकिन रस्तामऊ
६—शुबराती वल्द मौला साकिन मँगरौली
७—मु० ऐसा बीबी जौज़े मुहम्मदसद्दीक़ साकिन पूरे ग़लामहुसेन मजरे रस्तामऊ } डाकखाना सथिनी जिला सुल्तानपुर
८—रामअनंद वल्द शिवनंदन उमर ४० वर्ष साकिन हसनपुर तेवारी
९—महेशरदयाल वल्द काशीनाथ साकिन मँगरौली
१०—हितकारी वल्द बेचई साकिन पूरे मीर साहब मजरे रस्तामऊ

११—लक्ष्मनप्रसाद वल्द नामालूम साकिन व डा० निहालगढ़
१२—राजबहादुर वल्द ठाकुरप्रसाद सा० सिकरी डा० हलियापुर
१३—सैयद शमशादअली वल्द सयद मासूमअली सा० बाग़पीरा डा० सथिन
१४—जगन्नाथप्रसाद वल्द पुरानचंद साकिन व डाकखाना निहालगढ़
१५—मु० असगरी तवायफ़ साकिन व डाकखाना निहालगढ़
१६—बाबू निसारअहमदखाँ वल्द मुहम्मदअलीखाँ साकिन पूरे थानी डाकखाना सथिनी
१७—मीर अब्दुलहलीम वल्द रमजानअली सा० महू औलादहुसेन डाकखाना सथिनी } जिला सुल्तानपुर
१८—राजा यासीनअलीखाँ वल्द राजा मुस्तफ़ाअलीखाँ साकिन व डाकखाना देवगाँव
१९—मनोहरलाल वल्द रामचरन साकिन व डाकखाना निहालगढ़ } कर्ज़ख्वाह फरीकसानियान

चूँकि सायलान मज़कूरे बाला ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, और चूँकि जायदाद जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीक़सानी हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

लिहाजा हस्ब दफा ११ (१) ऐक्ट मज़कूर तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मज़कूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्तप्रांतीय गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ ३ मास के अंदर एक दरख्वास्त अदालत हाज़ा में असालतन या बज़रिए मुख्तार मज़ाज़ पेश करो।

CCO, Gurukul Kangri Coll

(क़ाबिल नालाम हस्ब दफ़ा ११)

फेहरिस्त जायदादहाय मक़रूज़ा मुंदर्जे हस्ब दफ़ा ६,१६ इनकमर्ड स्टेट्स ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४

फेहरिस्त (अ)

जायदाद व जमींदारी मक़रूजा

नंबर शुमार	नाम ज़िला	नाम मौजा	मौजा बंदोबस्त मय नंबर मुहाल	जायदाद सायलान क़ाबिल इंतिकाल	हिस्सा सायलान मुंदर्जे रजिस्टर ज़िला	तादाद मालगुज़ारी सायलान	कैफ़ियत
१	सुल्तान-पुर	रस्तामऊ परगना जगदीश-पुर	मुहाल फ़कीरबक्श-खाँ खाता नंबर १	क़ाबिल इंतिकाल	रक़बा ४०६।५१:७	मालगुजारी सायलान ४३६=) अ०४३।-)॥	जैसा कि सायलान ने बयान तहरीरी में जाहिर किया है
२	,,	सहाबगढ़ परगना जगदीश-पुर	,,	,,	२५।॥।५३:३	×	जैसा कि सायलान ने बयान तहरीरी में जाहिर किया है

फेहरिस्त (ब)

जायदाद मकरूजा जो कि हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी क़ाबिल कुर्की व नीलाम के हो सकती है

नंबर शुमार	नवैयत जायदाद	तादाद हिस्सा सायलान	कैफ़ियत
		जैसा कि सायलान ने बयान तहरीरी में जाहिर किया है काबिल नीलाम नहीं है	

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख १२ एप्रिल सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[काबिल फ़रोख्त

इत्तिलानामा बगरज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत बाबू भगौतीप्रसाद स्पेशल जज साहब बहादुर उन्नाव दरजा अव्वल उन्नाव

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ४९ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी २०—१२—१९३७ ई०

शिवप्रसाद वगैरा पिसरान पं० रघुबरदयाल कौम ब्राह्मण साकिन मौजा शिवगंज मजरे साढ़ेमऊ हाल लालमनखेड़ा मजरे टेड़वा बभना परगना मौरावाँ जिला उन्नाव

कर्जदार सायल

बनाम

बाबू जुगुलकिशोर वगैरा

कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि शिवप्रसाद वगैरा वल्द पं० रघुबरदयाल साकिन शिवगंज मजरे साढ़ेमऊ हाल लालमनखेड़ा मजरे टेड़वा बभना जिला उन्नाव ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्त-हाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गजट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

जमीमा (क)

कर्जदार के इस्तहकाक मालकाना मुतालिक आराजी

नं० सिलसिला	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुंतकिल व काबिल व रायज व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी
१	२	३	४	५	६	७
१	उन्नाव	हिस्सा जमींदारी	(हिस्सा अव्वल) मौजा पाली परगना घाटमपुर तादादी -) ३ पाई १७किरांट मिनजुमला मुसल्लम मुहाल जबरसिंह मै हकीयत मुतफर्रिका २ बीघा ९ बिस्वा ४½ बिस्वांसी			२७)
२	,,	,,	मौजा पाली तादादी -) ८ पाई १० किरांट मिन-जमला मुसल्लम मुहाल बलभद्रसिंह परगना घाटमपुर			७)

CC0. Gurukul Kan...

३	उन्नाव	हि० ज०	मौजा पाली तादादी —)१ पाई ३ कि० ७ जौ मिनजुमला मुसल्लम मुहाल जालिमसिंह परगना घाटमपुर			१६)
४	,,	,,	मौजा पाली तादादी —)८ पाई १० कि०मिनजुमला मुसल्लम मुहाल लालमन परगना घाटमपुर			६)
५	,,	,,	मौजा पाली तादादी ३ पाई १६ कि० ७ जौ १०½ तिल वाकै पट्टी उजागरसिंह मुहाल विश्वनाथ परगना घाटमपुर मय हकीयत मुतफर्रिका १ बीघा ४ बिस्वा १५⅗ बिस्वांसी			३१)
६	,,	,,	मौजा साढ़ेमऊ तादादी ३ पाई १७ कि० ५ जौ ६½ तिल मय हकीयत मुतफर्रिका वाकै पट्टी ईश्वरदीन परगना घाटमपुर			५।=)३
७	,,	,,	मौजा साढ़ेमऊ तादादी १ पाई २ कि० २ जौ २ तिल मय हकीयत मुतफर्रिका वाकै पट्टी लाल-बिहारी परगना घाटमपुर			१॥=)३
८	,,	,,	मौजा रुथनी बालाखेड़ा तादादी —)८ पाई १० कि० पट्टी वाकै मुहाल अवधबिहारीलाल मिनजुमला मुसल्लम मुहाल लालबिहारी परगना घाटमपुर			२—)
९	,,	,,	मौजा रुथनी बालाखेड़ा तादादी —)६ पाई १० कि० पट्टी मुहाल छमीलाल परगना घाटमपुर (जायदाद नानहाली)			१८)
१०	,,	,,	मौजा तखरा भमना तादादी ४ आना ६ पाई मि० मुसल्लम मौजा मय पट्टियात परगना मौरावाँ			५६०॥=)
११	,,	,,	मौजा सरवन तादादी १ आना ३ पाई हिस्सा बरूय खाता खेवट ।—)४ पाई मि० मुसल्लम मुहाल महेशचरन परगना मौरावाँ			२५९)
१२	,,	,,	मौजा सरवन तादादी २ आना ८ पाई मि० मुहाल व पट्टी सीताराम परगना मौरावाँ			३१)
१३	,,	,,	मौजा सरवरा तादादी १६ आना मुसल्लम मुहाल गंगादीन परगना मौरावाँ			३२१)
१४	,,	हि० ज० हकमुरत०	मौजा सरवन मुहाल सीताराम पट्टियात तादादी ४॥।४ व ७।३ व २।५ व आराजी मातहतदारी मौजा खहरू परगना मौरावाँ		२।।४	४॥।=)
१५	,,	पट्टियात	मौजा पठकपुर मुहाल नौनिहालसिंह पट्टी		५।५	६।=)
१६	,,	मालकिन	शिवप्रसाद मुहाल पट्टी शिवप्रसाद वग़ैरा (हिस्सा दोम)		१०॥।१	२४)
१७	पतरा सूबा बंगाल	हि० ज०	मौजा कोरुचर परगना मोहबतपुर नोजी नंबर २०९९			२७॥=)
१८	,,	,,	मौजा कोरुचर नंबर १७२ नोजी नंबर ४०६			५०)
१९	,,	,,	इस्टेट आफ़ अवधबिहारी सुकुल परगना महार नोजी नंबर ३३३७			२८)
२०	,,	,,	,, ,, ,, ,, ३४०९			३७५)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२१	पतरा	हि० ज०	मौजा चरकायम कोरूचर के पास दरियाय मेघना परगना मोहबतपुर नाजी नंबर २५२२			१५)
२२	,,	,,	डेरा तालुका कामताप्रसाद सुकुल वगैरा परगना मोहबतपुर नोजी नंबर २७४९			३०)
२३	,,	,,	अवधबिहारी सुकुल परगना जोराखनपुर नोजी नं० ३२७१			१७१)
२४	,,	,,	डेरा चरेनडियर परगना किंतापुर और मोहबत-पुर नोजी नं० ४२१०			२८)
२५	,,	,,	डेरा सिकमी तलुका हिस्सा	-) ८½	पाई	
२६	,,	,,	किनारा सिकमी तालुका हिस्सा		पाई	
२७	,,	,,	शहरवार खत तालुका हिस्सा	,,	पाई	
२८	,,	,,	कालकामल सिकमी तालुका हिस्सा	,,	पाई	
२९	,,	,,	हवलदान पुत्ना तालुका हिस्सा	,,	पाई	
३०	,,	,,	एक सरिया औसा तालुका हिस्सा	,,	पाई	
३१	,,	,,	सहर नीरा सिकमी तालुका हिस्सा	,,	पाई	
३२	,,	,,	उनसाली सिकमी तालुका हिस्सा	,,	पाई	
३३	,,	,,	उनसाली औसा तालुका हिस्सा	,,	पाई	
३४	,,	,,	कुरसनेतों तालुका हिस्सा	,,	पाई	
३५	,,	,,	सुखेरा तालुका हिस्सा	,,	पाई	
३६	,,	,,	भोगीसुबर तालुक हिस्सा	।)		
३७	,,	,,	खेनला सिकमी तालुका हिस्सा	।)		
३८	,,	,,	सेनला औस्त तालुका हिस्सा	।)		
३९	,,	,,	चवबासा तालुका हिस्सा	।)		
४०	,,	,,	कनकखला ≥)६ पाई गेंद्रा हिस्सा	।)		
४१	,,	,,	कनकखला ।) ६½ पाई गेंद्रा हिस्सा	।)		
४२	,,	,,	अयावत कोटा औसा तालुका हिस्सा	।)		
४३	,,	,,	मोलावी स्टीन वस्ता तालुका हिस्सा	।)		
४४	,,	,,	गोपीनाथपुर तालुका हिस्सा	।)		
४५	,,	,,	बुनशहर, पमव पट्टी तादादी नकद	-)८½	पाई	
४६	,,	,,	बेचु इजारी तालुका	,,	पाई	
४७	,,	,,	सोनसरी तालुका	,,	पाई	
४८	,,	,,	नातिम बाडी विजे	,,	पाई	
४९	,,	,,	कायमी बांसा	,,	पाई	
५०	,,	,,	दीवान का चकवस्ता तालुका	,,	पाई	
५१	,,	,,	खतीताल गीट	,,	पाई	
५२	,,	,,	दीवान का बाँसा	,,	पाई	
५३	,,	,,	सरपा सिकमी तालुका	,,	पाई	
५४	,,	,,	मुस्सी गुल्हा सिकमी तालुका	,,	पाई	
५५	,,	,,	कामता सिकमी तालुका	,,	पाई	
५६	,,	,,	शिवसहाय गोमतीमनोहरपुर को मल्ला	,,	पाई	
५७	उन्नाव	मकान मसकना	मकान वाकै जगन्नाथगंज उन्नाव बकदर ½ हिस्सा नं० चौहद्दी पूरब सड़क लखनऊ टू कानपुर, उत्तर सड़क स्टेशन, दक्खिन मकान सीतल नाई, पच्छिम होली मकान कृष्णकुमारी मालियत १०००)			

CCO, Gurukul Kan

जमीमा (ख)

कर्जदार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हकक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

जायदाद मनकूला

गाड़ी चोबी	१	१५)
भैंस एक रास		१५)
रथ	१	२०)
	जोड़	५०)

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ३० अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

[क़ाबिल फरोख्त

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा १ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्र विक्रमसिंह ,पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १०० सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २ दिसंबर सन् १९३७ ई०

शेख मोहम्मदअलीखाँ वल्द शेख इनायतहैदर तालुक़दार गौरिया साकिन मौजा गौरिया परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ

बनाम

नवाब मिरजा रजाअलीखाँ वगैरह

बनाम

१—नवाब मिरजा रजाहुसेनखाँ
२—नवाब सज्जादअलीखाँ
३— ,, मिरजा मुहम्मदसयदअलीखाँ
४—खानबहादुर मिरजा मुहम्मदहुसेनअलीखाँ
५—नवाब आलमआरा बेगम
} साकिनान शीशमहल शहर लखनऊ

६—राजा बरखंडी महेशपरताबनरायनसिंह तालुक़दार शिवगढ़

७—नवाब सरदारअलीखाँ शहर लखनऊ

८—लाला द्वारकानाथ तालुक़दार मौरावाँ जिला उन्नाव

९—गयाप्रसाद
१०—नन्हेलाल
} पिसरान राधेलाल गोशाईगंज

११—दुरगाप्रसाद निगम साकिन मुहल्ला हुसेनगंज लखनऊ

१२—गिरधारीलाल
१३—दमोदरदास
} साकिनान राजा बाजार शहर लखनऊ

१४—मुसम्मात कनीरफातमा बेवा दिलावरअली साकिन फतेहगंज लखनऊ कर्जख्वाह फरीकसानियात

चूँकि एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन १९३४ ई०) जिसकी तरमीम अजरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है शेख मोहम्मदअली वल्द शेख इनायत-हैदर साकिन गौरिया जिला लखनऊ ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा के अहकाम उस पर लगाए जावें।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ६ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम अजरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि जुमला अशखास जो शेख मोहम्मदअली मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरीशुदा व गैरडिगरीशुदा खानगी कर्जजात के मुताल्लिक दावे रखते हों, वह गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दर्ज हैं। वरना अदम तामील में हरएक दावा उसके खिलाफ ख्वाह डिगरीशुदा हो या गैरडिगरीशुदा तरमीम अगराज और मौकों के लिये इस ऐक्ट की दफा १६ की रू से बाजाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ३ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेटस ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल ज़िला सीतापुर

मुकद्दमा नंबर १३१ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी ८ दिसंबर सन् १९३७ ई०

कुँवर हरिहरबख्शसिंह पिसर मुतबन्ना राजा दीपसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा सवायजपुर परगना पाली तहसील शाहाबाद जिला हरदोई

सायल

१—भगवानदीन
२—रघुबर } पिसरान जगन
३—पुत्तूलाल

४—रामदीन
५—स्वामीदयाल } पिसरान मंगल
६—रामसुख
७—परमेश्वरदीन
८—गंगादीन वल्द शंकर

बनाम

अक्वाम कलवार साकिनान मौज़ा दुगाना परगना तंबौर तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

९—राजाबहादुर राजा उदयप्रतापसिंह वल्द राजाबहादुर राजा अकमांगदसिंह मुतवफ्फी वल्द कुँवर स्वयंवरसिंह ठाकुर तालुकेदार साकिन मौजा खैरुद्दीनपुर परगना कटयारी ज़िला हरदोई

१०—कालिकासिंह } पिसरान ठाकुर तारासिंह साकिन व ज़मीदार मौजा कुँडरा सरय्याँ परगना व
११—जदुनाथसिंह } तहसील शाहाबाद जिला हरदोई फरीकसानियान

हरगाह जायदाद मुसर्रह ज़ैल दरख्वास्तकुनिंदा व कज़ंख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाजा हरखास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत, जायदाद मुसर्रह ज़ैल हासिल हो, तो वह अंदर मीआद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाजा में पेश करें।

फेहरिस्त (अल्फ) जायदाद मकबूजा सायल				तादाद हिस्सा मुसल्लम
१—मौजा तारपारा	परगना तंबौर	तहसील बिसवाँ	जिला सीतापुर	
२—मौजा प्यारेपुर	,,	,,	,,	,,
३—मौजा पल्लौली	,,	,,	,,	,,
४—मौजा मदनापुर	,,	,,	,,	,,
५—मौजा उमरा खुर्द	,,	,,	,,	,,
६—मौजा उमरा कलाँ	,,	,,	,,	,,
७—मौजा दुगाना	,,	,,	,,	,,
८—मौजा अटवा	,,	,,	,,	,,
९—मौजा चहेलिया	,,	,,	,,	,,
१०—मकान नंबरी ९० वाकै मुहल्ला बोर्डिंग हाउस हरदोई				,,
११—मौजा उहरवा परगना पाली तहसील शाहाबाद जिला हरदोई				,,
१२—मौजा उधनापुर	,,	,,	,,	,,
१३—मौजा मेंहदीयारपुर	,,	,,	,,	,,
१४—मौजा नगरा पहलादपुर	,,	,,	,,	,,
१५—मौजा संघापुर	,,	,,	,,	,,
१६—मौजा चौडराय	,,	,,	,,	,,
१७—मौजा मदनापुर	,,	,,	,,	,,
१८—मौजा कैथा	,,	,,	,,	,,
१९—मौजा पांडेपुर	,,	,,	,,	,,
२०—मौजा रामपुर खमरिया	,,	,,	,,	,,
२१—मौजा खंडरवा	,,	,,	,,	,,
२२—मुहाल मिरजापुर खंडरवा मिरजापुर		,,	,,	,,
२३—मौजा बहेलामऊ यानी मुहाल पंजसाला व सैसाला		,,	,,	,,
२४—मौजा खरईन कटवाई	,,	,,	,,	,,

२५—मौजा सराय राघौ ,, ,, ,,
२६—मौजा समरिया परगना पाली तहसील शाहाबाद जिला हरदोई ,,
२७—मौजा बेलिया ,, ,, ,, ,,
२८—मौजा नाऊखेरा ,, ,, ,, ,,
२९—मौजा मुडेर ,, ,, ,, ,,
३०—मौजा सुराजपुर परगना पाली तहसील शाहाबाद जिला हरदोई ,,
३१—पट्टी गुरखेरा यानी मुहाल मानसिंह ,, ,, ,,
३२—पट्टी खनौली मुहाल मानसिंह ,, ,, हक मुरतहनी हिस्सा मिनजुमले ३/३ मुहाल मानसिंह

३३—पट्टी कंनहरी यानी मुहाल दिग्विजेसिंह ,, मुसल्लम
३४—पट्टी करघना यानी मुहाल उमेदसिंह ,, ,,
३५—मौजा ओहदपुर परगना कटियारी तहसील बिलगराम जिला हरदोई ,,
३६—मौजा ककरवा ,, ,, ,, ,,
३७—मौजा नजारा ,, ,, ,, ,,
३८—मौजा मरगवाँ ,, ,, ,, ,,
३९—पट्टी महुवा मौजा महुवा कोली यानी निस्फ़ मौज़ा महुवा कोली ॥) मुसल्लम
४०—पट्टी मुबारकपुर ,, ,,
४१—पट्टी शहाबउद्दीनपुर ,, ,, ११ बिस्वांसी २ क० ४½ ननवांसी
४२—पट्टी मधौल मुहाल कालिकासिंह परगना जलालाबाद जिला शाहजहानपुर
४३—मकान वाकै मुहल्ला बटगंज सीतापुर नंबरी १५८७ परगना खैराबाद ज़िला सीतापुर

अलमरकूम ६ जनवरी सन् १९३७ ई० मुंसरिम

इत्तिलानामा बनाम अशखास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम बहराइच
मुक़द्दमा नंबरी नंबर २७ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १५ नवंबर सन् १९३७ ई०
ठाकुर राजबहादुरसिंह वग़ैरह साकिन कुडासर ज़िला बहराइच क़र्ज़दार सायल

बनाम

जगन्नाथसिंह वग़ैरह क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान ने एक दरख्वास्त दफ़ा ४ ऐक्ट जायदाद हाय मक़रूज़ा पेशकी है और चूँकि जायदाद मिफ़सला तफ़सील फ़िहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त-देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० इनकमबर्ड स्टेटस ऐक्ट सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ (१) ऐक्ट मज़कूर तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मज़कूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्तप्रांतीय गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर एक दरख्वास्त अदालत हाज़ा में असालतन या बज़रिए मुख्तार मजाज़ पेश करो।

तफसील जायदाद

(१) मौजा कुडासर परगना हिसामपुर जमींदारी हक़ आला ५८ एकड़ ९४ डि०, २ एकड़ ५५ डि०
(२) मौजा बैरीसालपुर परगना हिसामपुर जमींदारी हक आला २८ एकड़ ४२ डि०
जायदाद ज़ाहिरकरदा हरनामसिंह सरबजीत व जगन्नाथसिंह महाजन
(१) एक किता मकान खाम सिफालापोश वाकै कुडासर परगना हिसामपुर
(२) दो किता बागात वाकै कुडासर परगना हिसामपुर
(३) एक किता बाग़ वाकै बैरीसालपुर परगना हिसामपुर

मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से आज बतारीख़ २१ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० व्रजनाथ जुतशी स्पेशल जज साहब बहादुर खीरी दरजा दोयम मुकाम लखीमपुर

मुकद्दमा नंबरी नंबर १३१ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २०—१२—१९३७ ई०

भगवानदीन वल्द भज्जूलाल कौम वैश्य साकिन मैगलगंज परगना औरंगाबाद जिला खीरी सायल

बनाम

महाजनान

१—सरजूप्रसाद वल्द उमरावलाल
२—गुरुसहाय वल्द भूधरप्रसाद
३—रामनरायन वल्द रामलाल
} अकवाम ब्राह्मण साकिनान खखरा परगना औरंगाबाद जिला खीरी

४—हरनरायनलाल वल्द बिशुनदयाल कौम कायस्थ साकिन नादन परगना चंदरा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

५—छोटेलाल वल्द हरीराम कौम ब्राह्मण साकिन दतेली कलाँ परगना कस्ता जिला खीरी

६—कँधईलाल
७—हुसुरीप्रसाद
} पिसरान उजासाह कौम वैश्य साकिन मितौली परगना कस्ता जिला खीरी

८—मूलचंद वल्द मुन्नूलाल
९—ठाकुरप्रसाद बालिग
१०—जगदीशचंद्र नाबालिग बजिलायत ठाकुरप्रसाद बिरादर खुद
} पिसरान कुंजबिहारी कौम वैश्य साकिन मैगलगंज परगना औरंगाबाद जिला खीरी

चूँकि भगवानदीन वल्द भज्जूलाल वैश्य साकिन मैगलगंज जिला खीरी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंतलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या शरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तहिक व काबिल विरासत और काबिल इंतक़ाल हकीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तसद्दीक माल गुज़ारी
१	खीरी	हकीयत आज़ा	सिकटारा मुहाल हज़ारीगंज	काबिल इंतक़ाल	१३ बिस्वा ६ बिस्वांसी १३½ कचवांसी का ⅓	६६॥=)८ पाई ६) अबवाब
२	,,	,,	ओसरी मुहाल भगवानदीन परगना औरंगाबाद	,,	२० बिस्वा का ⅓ बरूयखेवट	८२) ८) अबवाब

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

३	खीरी	हकीयत आज़ा	बड़ेहा जोरावर पट्टी नं० ६ भगवानदीन	काबिल इंतकाल	४ बिस्वा २ बिस्वांसी १२ कचवांसी का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	२१।)८ पाई
४	,,	,,	खखरा मुहाल भूधरपुर	,,	८ बिस्वा ६ बिस्वांसी १३$\frac{1}{3}$ कचवांसी का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	२१।=)
५	,,	,,	खखरा मुहाल ललतूपुर	,,	१३ बिस्वा ६ बिस्वांसी १३$\frac{1}{3}$ कचवांसी का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	३१॥–) ३) अबवाब
६	,,	,,	नवागाँव मुहाल बख़्तावरसिंह पट्टी भगवानदीन	,,	१ बिस्वा १ बिस्वांसी ८कचवांसी १३अनवांसी $\frac{5}{8}$ ननवांसी का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	५=)
७	,,	,,	नवागाँव मुहाल राघूसिंह रंगसब्ज पट्टी भगवानदीन	,,	४ बिस्वा ११ बिस्वांसी ११$\frac{1}{3}$ कचवांसी का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	११)
८	,,	,,	जमुनिया शहबाज़ मुहाल चाँदराय पट्टी भगवानदीन	,,	१४ बिस्वांसी १३$\frac{1}{3}$ कचवांसी का $\frac{1}{3}$ वरूय खेवट	२।=)
९	,,	,,	अब्बासपुर मुहाल भगवानदीन	,,	२० बिस्वा का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	३१) ३=) अबवाब
१०	,,	,,	अब्बासपुर मुहाल हजारीलाल	,,	७$\frac{1}{2}$ बिस्वा का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	१३) १।) अबवाब
११	,,	,,	मौजा चंदला मशमूले सहौना मुहाल हरचंदसिंह	,,	२० बिस्वा में $\frac{1}{3}$ बरूये खेवट	८।–)। ४॥) अबवाब
१२	,,	,,	सदरपुर मुहाल सदरपुर	,,	१४ बिस्वांसी ११ कचवांसी का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	४)
१३	,,	,,	चौखड़िया मुहाल तोखनपुर पट्टी भगवानदीन	,,	१३$\frac{1}{3}$ बिस्वा का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	१२।=) १=) अबवाब
१४	,,	,,	जमुनिया कढ़ले पट्टी नं० १ भगवानदीन	,,	११ बिस्वांसी २ कचवांसी ४ अनवांसी ८$\frac{1}{2}$ ननवांसी का $\frac{1}{3}$ बरूय खेवट	३॥=) १–) अबवाब
१५	,,	मातहती	सेमरा जानीपुर	,,	$\frac{2}{3}$ का $\frac{1}{3}$	
१६	,,	,,	बसारा मुहाल भोलानाथ परगना पसगवाँ	,,	१२ डिसमिल मिनजुमला ५३ डिसमिल	
१७	,,	,,	बसारा मुहाल गुलजारखाँ	,,	५० डिसमिल मिनजमला २ एकड़ १७ डिसमिल	

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुकूक़ मालिकाना मुतालिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबरसिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअ़त हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	एक किता मकान मय खाम सहदरी वाक़ै मैगलगंज परगना औरंगाबाद जिला खीरी	एक	
२	बैल	७ रास	
३	कुर्सी	२ अदद	
४	मोढ़ा	२ अदद	
५	गाड़ी	एक मंज़िल	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १३ सितंबर १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बज़ारज़ ऐलान व इशाअ़त हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ४३ २२१ ४०३ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी २३—१२—१९३७ ई०

१—शाह इक़बालअहमद वल्द रऊफ़अहमद } अक़वाम सैयद साकिनान क़स्बा सिद्धौर तहसील हैदरगढ़
२—मुसम्मात गौहरी बेगम बेवा रऊफ़अहमद } जिला बाराबंकी — कर्ज़दार सायलान

बनाम

१—परमेशरीदयाल वल्द अयोध्याप्रसाद कौम कायस्थ } साकिनान मौजे अलीगढ़ परगना सिद्धौर तहसील
२—चौहान वल्द नामालूम कौम कुर्मी } हैदरगढ़ जिला बाराबंकी
३—हशमत वल्द वशीरअली कौम शैख } साकिनान क़स्बा सिद्धौर परगना सिद्धौर तहसील हैदरगढ़
४—संकटाप्रसाद वल्द महाबीर ब्राह्मण } जिला बाराबंकी
५—बिशनाथ वल्द गनेशी कौम कुर्मी साकिन मौजा मुहम्मदपुर परगना व तहसील व जिला मज़कूर
६—क़ासिमअली } पिसरान गुलामहुसेन कौम शैख साकिनान दरियाबाद परगना खुद तहसील
७—नाजिमअली } रामसनेहीघाट जिला बाराबंकी
८—राजबहादुर वल्द मथुराप्रसाद कौम कायस्थ साकिन सिद्धौर तहसील हैदरगढ़ जिला बाराबंकी — कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि शाह इक़बालअहमद वग़ैरा सायलान साकिन क़स्बा सिद्धौर ज़िला बाराबंकी ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका से दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताता है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eG

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूक़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तमिल क़ाबिल क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बसाग़त हक़ीयत दरख़्वास्त देहंदा मुंदरजे रजिस्टर कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौज़ूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
बाराबंकी	गैरमनक़ूला	मौ० गढ़ी आराज़ी मु०इक़बालअहमद प० सिद्धौर त० हैदरगढ़	इक़ीयतआला	हिस्सा १६ आने मु० इक़बालअहमद २० ६१ बीघा १२ बि० १७ बि०	१३६।-)	इक़बाल-अहमद ।।।=) गौहरी बेगम =)
,,	,,	मौज़ा सिद्धौर मु० मुहम्मदतय्यब परगना सिद्धौर तहसील हैदरगढ़	,,	हिस्सा ।)।। मिन० १६ आने खाता नं० ३ तादादी ५ बी० १० बि० १ बि०	३।=)१पाई	इक़बाल-अहमद =)॥ मु० गौहरी बेगम -)
,,	,,	,,	मातहतदारी	हिस्सा ।)॥ मिन० आराज़ी नं०१२६७ म० ५ बिस्वा	बिला लगान	,,
,,	,,	मौज़ा सिद्धौर मु० परमेशरीदयाल प० सिद्धौर त० हैदरगढ़	,,	हिस्सा ।)॥ मिन० आराज़ी नं २२६८ अ ३ बि० ६ बि० २२६८ ब११ बि०	,,	,,
,,	,,	मौज़ा सिद्धौर म० रामअधीन व ग़यादीन वग़ैरा		हिस्सा ।।-) मिन० १ बीघा १८ बि० जमीमा नं० १ मुतालिक खातानं०२		इक़बाल-अहमद =) मु० गौहरी बेगम =)
,,	,,	मौज़ा सिद्धौर मु० रामअधीन पट्टी मु० महदेई	,,	हिस्सा ।)।। मिन० हिस्सा २५ नं० खाता ५	२।-)११पाई	इक़बाल-अहमद =)॥ मु० गौहरी बेगम -)
,,	,,	मौज़ा सिद्धौर मु० पियारेलाल	मातहतदारी	हिस्सा ।।-) मिन० १ बीघा १ बि० ८ बि० खाता खेवट नं० ५८	बिला लगान	इक़बाल-अहमद =) मु० गौहरी बेगम =)
,,	,,	मौज़ा सिद्धौर मु० रामअधीन परगना सिद्धौर त० हैदरगढ़	,,	हिस्सा ।)॥ मिन० नं० २१६१ मवाज़ी ४ बि० १ बि० खाता नं० ८	,,	इक़बाल-अहमद =)॥ मु० गौहरी बेगम -)

CC-0. Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

९	बाराबंकी	गैरमनकूला	मौजा सिद्धौर मु० रामअधीन पर० सिद्धौर तह० हैदरगढ़	मातहतदारी	हिस्सा ।)॥ मिन० नं० २१८९ म० ७ बि० १३ बि० २१९० म० ३ बि० १२ बि० २६९२ ब म० १ बि० ४ बि० खाता नं० २८	बिला लगान	इकबालअहमद ⅓॥ मु० गौहरी बेगम ⅓
१०	,,	,,	,,	,,	हिस्सा ॥⅓ मिन० नं० २१८८ म० २ बि० ८ बि० खाता नं० २९	,,	इकबाल-अहमद ⅓ मु० गौहरी बेगम ⅓
११	,,	,,	,,	,,	हिस्सा ।)॥ मिन० नं० १२९२ अ म०१ बि० ४ बि० खाता नं० ३१	,,	इकबालअहमद ⅓॥ मु० गौहरी बेगम ⅓
१२	गोंडा	,,	मौजा चाँदनपुर पट्टी इकबालअहमद प० मनकापुर त० उतरौला	हकीयतआना	हिस्सा ।) मिन० १६ आना	१६।)	इकबाल-अहमद ।)
१३	,,	,,	मौजा नकई वनकट पट्टी एकबालअहमद प० मनकापुर त० उतरौली	,,	,,	,,	,,

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २० अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

बअदालत اسپیشل جج صاحب بہادر درجہ دویم شاهجهانپور

نمبر مقدمہ ۲۵۷ سنہ ۱۹۳۶ع

تاریخ پیشی ۱۳ دسمبر سنہ ۱۹۳۷ع

مسماۃ نایاب بیگم زوجہ عزیزالدخاں
مسماۃ فریدی بیگم زوجہ قاسم بیگ } قوم مغل ساکن قصبہ کرہ پرگنہ میرانپور کرہ ضلع شاهجهانپور

مدعیان

بنام

۱-بدری پرساد } پسران کنجن رام
۲-بیجناتھہ
۳-مسماۃ روکمنی زوجہ کونجن رام
۴-سکھئی ولد هزاری
۵— رمدیئی ولد هزاری } قوم کسان ساکن و موضع راگھوپور پرگنہ کرہ ضلع شاهجهانپور

مدعا علیہ

هرگاہ کہ جائداد مندرجہ ذیل میں درخواست کنندہ و قرض خواهان نے اپنی بیان تحریری و درخواست صراحت قرضہ میں حسب دفعات ۸ و ۱۰ یعنی ایکٹ سنہ ۱۹۳۴ع ظاہر کی ہے-لہذا هر خاص و عام کو اطلاع دیجاتی ہے کہ اگر کسی کو کوئی حق نسبت جائداد مندرجہ ذیل حاصل هو تو وہ اندر میعاد ۳ ماہ تاریخ شایع هونے نوٹس گورنمنٹ گزٹ کے عدالت هذا میں اپنی درخواست پیش کرے—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

تفصیل جائداد

نام موضع	نمبر کھاتہ	رقبہ	حال	ابواب	مفصل حصہ سایلان
		روپیہ آنہ پائی	روپیہ آنہ پائی		
کٹرہ محال دویم	۱۸	۲۸-۷۰	۶۰—۱۳—۳	۲ —۱— ۶	منجملہ ۵ سہام کے ۳۲ سہام
کٹرہ محال دویم	۱۹	۳۶-۱۲	۸۰—۰—۰	۰ —۲— ۸	" ۱۶۳ سہام کے ۶۸۶ ½ "
بریہٹا محال دویم	۲	۱۰-۳۸	۱۱—۰—۰	۰ —۲— ۱	کل
راگھوپور	۴	۱۴-۹۷	۱۱—۱—۰	۰ —۲— ۱	"
بے لہا پٹی سیر	۲	۸۳-۴½	۷۹—۱۳—۷	۰ —۰— ۸	"
بہٹہ خاص	۱	۸۲-۸۱	۷۵—۰—۰	۰ —۸— ۷	کل کا نصف
کھجوریا محال	۴	۱۲۶-۴۷	۸-۴۲۸—۰	۰ —۲— ۴۳	کل

ایک قطعہ باغ محدودہ ذیل واقع قصبہ کٹرہ ضلع شاھجہانپور

پورب	پچھم	اوتر	دکھن
کھیت قاسم بیگ	کھیت ناظم بیگ	کھیت ناظم بیگ	باغ قاسم بیگ

ایک قطہ باغ محدودہ ذیل واقہ قصبہ کٹرہ ضلع شاھجہانپور

پورب	پچھم	اوتر	دکھن
باغ قاسم بیگ	باغ قاسم بیگ	کھیت ناظم بیگ	کھیت اکبر بیگ صاحب

ایک قطعہ مکان واقعہ قصبہ کٹرہ محدودہ ذیل ضلع شاھجہانپور

پورب	پچھم	اوتر	دکھن
مکان عباس بیگ	کونچہ	مکان قاسم بیگ	کھنڈھر

ایک قطعہ مکان واقعہ قصبہ کٹرہ محدودہ ذیل ضلع شاھجہانپور

پورب	پچھم	دکھن	اوتر
مکان عباس بیگ	کونچہ	مکان کالیدین	مکان سائلان مسماۃ فایاب بیگم

مکان ھرچند سنگھہ

تفصیل جائداد جو قرض خواہ نے اپنے بیان تحریری میں دکھلائی مندرجہ ذیل ھے—

حقییت زمیداری موضع راگھوپور پٹی رنگ سفید کھاتہ کھیوٹ نمبری ۴ تعدادی ۲ بسوا ۹ بسوانسی ۳ کچھوانسی رقبئی ۱۵ ایکڑ—۱۰ تسمل جمعی ۲۱ روپیہ ۱ آنہ پرگنہ میرانپور کٹرہ تحصیل تلھر ضلع شاھجہانپور—

حقییت باربافت موضع میرانپور کٹرہ محال دویم پرگنہ میرانپور کٹرہ منجملہ رقبہ ۲۹ ایکڑ ۱۴ تسمل جمعی ۶۲ روپیہ کھاتہ کھیوٹ نمبری ۱۵ منقسم ۲۵۲ سہام کے ۴ سہام—

منجملہ رقبہ ۳۶ ایکڑ ۱۲ تسمل جمعی ۸۰ روپیہ کھاتہ کھیوٹ نمبری ۱۷ آمنتقم پر ۱۱۶۳ حصہ کے ۸۷۷ حصہ—

منصرم

CC-0. Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इश्आअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत पंडित द्वारकाप्रसाद शुक्ला स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल मुकाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नवर ५४ सन् १९३६ ई० पे तारीख़ ८—०१२—१९३७ ई०
चौधराइन महारानीकुँवरि बेवा चौधरी फतेहसिंह ब्राह्मण साकिन मौजा अतरजी परगना व तहसील बिलग्राम जिला हरदोई सायल

बनाम

लाला भोलानाथ वग़ैरा कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि चौ० महारानीकुँवरि बेवा चौधरी फतेहसिंह साकिन अतरजी ज़िला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंदर्जिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायला मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ) कर्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

१ मौजा ददेवरा मुहाल पंजसाला दाखिली अतरजी जिला हरदोई हिस्सा ५/० रकबा २ बिस्वा १० बिस्वांसी
२ ,, ददेवरा मुहाल सेसाला दाखिली अतरजी ,, हिस्सा ५/० रकबा २ ,, १० ,,
३ ,, अतरजी ,, हिस्सा २० बिस्वा
४ ,, मैरापुर मुहाल फतेसिंह ,, ,, २० ,,
५ ,, मुहम्दापुर मुहाल महारानीकुँवरि ,, ,, २० ,,
६ ,, खोजगांपुर ,, ,, २० ,,
७ ,, रामापुर मिश्र ,, ,, २० ,,
८ ,, गोलकामऊ मुहाल सेसाला ,, ,, १० ,,
९ ,, कुंजपुर ,, ,, २० ,,
१० ,, गोलकामऊ मुहाल पंजसाला ,, ,, १० ,,
११ ,, अमृता जिला हरदोई २ बिस्वा ४ बि० ८ कच० १७ ननवांसी किरान जायदाद
१२ ,, असमधा ,, १६ बिस्वा ४ बि० १० कच०
१३ ,, गौरा मुहाल उदयपुर जिला हरदोई हिस्सा २० बि० ४ बिस्वा ३ बि० ६ कचवांसी १३½ ननवांसी
१४ ,, अदमपुर ,, ५ ,,
१५ ,, खारकोला मुहाल खास ,, २० ,,
१६ ,, भाईउद्दीनपुर परगना पाली ,, २० ,,
१७ ,, गोरधरू ,, २० ,,
१८ ,, रामारामपुर मुहाल ख़ास ,, २० ,,
१९ ,, गंगापुरलाल ,, २० ,,
२० ,, मियाँपुरा मुहाल ख़ास ,, २० ,,
२१ ,, किशुनपुर मुहाल फतेसिंह ,, २ ,, १० बिस्वांसी
२२ ,, भरखनी मुहाल सदवापुर ,, २ ,, १० ,,
२३ ,, ,, ,, टीकमसिंह ,, २० ,,
२४ ,, गढ़वापुर ,, इनायतपुर ,, २० ,,
२५ ,, भजनपुर
२६ ,, एतमादपुर पंडवरिया मुहाल गजाधरप्रसाद परगना व तहसील जलालाबाद जिला शहजहाँपुर ६/७ हिस्सा मिनजुमला बिस्तबिस्वा

२७—मकान नं० १ लगायत ६ हक़ अहाता नं० ५८६ मुहल्ला मुकर्रम पुरवा महमूला हरदोई परगना बंगर
२८—मकान नंबरी २१६ व दूकानात नंबरी २१७ से २२२ मकान मुतअल्लिका मज़कूर वाक़े रेलवेगंज हरदोई

तफ़सील जायदाद बमूजिब बयान तहरीरी फ़रीक़सानी नं० १

१—हरदोई बिसामपुर सैदा मुहाल पहलवानसिंह परगना पाली खाता नं० ११ बिस्वा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२—,, मौजा जनौरा मुहाल फतेहसिंह परगना बिछहा खाता नं० २ २ बिस्वा
३—,, असमधा परगना पाली खाता नं० ५ १६ बिस्वा २ बिस्वांसी १० कचवांसी
४—,, मौजा बुरादा पजसाजा पाली खाता नं० ६ १ बिस्वा २ बिस्वांसी
५—,, मौज़ा बुरादा सेहसाजा परगना पाली नं० ६ ८ बिस्वा १७$\frac{७}{१०}$ बि०
६—,, मुहमदापुर मुहाल प्रभूदयाल मुरतहनी २० बिस्वा में $\frac{१}{२}$ हक़ मुरतहनी
७—,, ख़्वाजगीपुर नं० ७७—१६ बिस्वा नं० १७—२बीघा १६ बि० $\frac{४६}{२}$, $\frac{४३}{२}$ हक मुरतहनी
८—,, धरमपुर मुहाल लक्ष्मीनारायण २ बीघा ७ बिस्वा ५ मातहती
९—,, बाग़ ३ बीघा पुख्ता मौज़ा वाकै अतरजी व मेघराजपुर परगना शाहाबाद नं० ५१८
१०—,, नीका अकबरपुर नं० ८८ ४ बीघा १५ बिस्वा पुख्ता मातहती
११—,, नंबरान मकानात टाउन एरिया पाली विक्टोरिगंज मद्दुए १२,१३,२५,२६, ३१, ३२, ३३,१४, ११
१२—,, नंबर मकानात पाली—नंबर अहाता २७४, २७५, २७६, २७७, २६४, २७१, २७२ नंबर मकानात पाली २१९, २२०, सहन २२१, २३९, २१७, २१८
१३—,, मकानात शाहाबाद मुहल्ला बटोई कलाँ महदूदा जैल पूरब सड़क पुख्ता पश्चिम
१४—,, मकान मौजा अतरजी परगना शाहाबाद पूरब बाग़ पच्छिम आबादी व नीज़ उत्तर

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो बहैसियत हुकूक मालिकाना मुतालिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हुई है।

नंबर सिलसिलेवार	नवैयत जायदाद	वसीअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	बैल	४	
२	भैंस	२	
३	तख़्त	२	
४	लहड़	१	
५	चारपाई	५	
६	लोटा	५	बतफ़सील जाय०बमूजिब बयान तह०फ़रीकसानी नं०१
७	बैल	८	
८	भैंस	४	
९	बकरी	१२	
१०	लहड़	३	
११	चारपाई	२०	
१२	शामियाना	२	
१३	तंबू	२	
१४	रावटी	२	
१५	जेवर नुकरई व तलाई	१०००)	
१६	घोड़ी कलाँ	२ रास	
१७	घोड़ी खुर्द	१	
१८	सामान महफिल	५००)	
१९	कालीन	५	
२०	दरी कलाँ	४	
२१	दरी खुर्द	८	
२२	कुर्सी	१२	
२३	मेज	६	
२४	अलमारी चोबी	८	
२५	पालकी	२	
२६	सामान रामलीला	३००)	
२७	हौदा व झूल हाथी	५००)	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २२ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CC-0. J Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम फतेहपुर

नं० मुकदमा २६ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १७ दिसंबर १६३७ ई०

जगमोहनसिंह वल्द महिपालसिंह व राजासिंह व रामनंदसिंह नाबालिगान बविलायत मुसम्मात ननकी मादर खुद वलिया अकवाम खत साकिन एकडला परगना एकडला जिला फतेहपुर

हरगाह सायलान की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश हुई है। लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर दावा रखता हो, तो वह जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराजी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर व हदूद-बस्त व महाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतकाल हकियत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाला की हकीयत पर मौजूदा तथ्यबीस मालगुज़ारी
					=)	७॥)
१	फतेहपुर	ज़मीदारी	बनीहार मुहाल जियालाल परगना एकडला		=)	७॥)
२	,,	,,	रानीपुर कटरा		४ पाई ६ किरांत	२४।≫)
३	,,	,,	रामपुर भसरौल परगना एकडला		२ जौ ८ टून २८ रैन	
४	,,	,,	मुहाल हरसहाय पट्टी डींगुरसिंह खरीरावतपुर मुहाल उम्मीदअली पट्टी डींगुरसिंह परगना एकडला		=) ६ पाई १० किरांत ६ जौ ११ टून १ रैन	२९)
५	,,	,,	एकडला मु०जियालाल		)=	८)=
६	,,	,,	,,		)=	८)=

आज बतारीख २०—८—३७ ई० को दस्तखत मेरे व मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पंजाब का सुप्रसिद्ध, सर्वप्रशंसित, हिंदी में
एकमात्र ग्रामोपयोगी राष्ट्रीय मासिक पत्र

दीपक

वार्षिक मूल्य २॥)
पृष्ठ-संख्या ६ सौ

लाहौर का प्रमुख दैनिक 'हिंदी मिलाप' लिखता है—"दीपक वास्तव में 'यथा नाम तथा गुणः' के अनुसार दीपक ही है, जो अज्ञानांधकारावृत ग्रामों में प्रकाश की छटा फैलाने के पवित्र उद्देश्य से निकाला गया है। इसमें ग्राम-सुधार, राष्ट्र-भाषा-प्रचार, पशु-पालन, देहाती साहित्य, उद्योग-धंधों तथा शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्याओं पर उत्तमोत्तम तथा सार-गर्भित लेख रहते हैं। भाषा प्रायः सरल तथा शैली रोचक होती है, जिससे साधारण योग्यतावाले ग्रामीण भी उससे लाभ उठा सकते हैं। बालविनोद तथा मातृमंडल-संबंधी लेख पत्र को और भी अधिक महत्त्वपूर्ण तथा मनोरंजक बना देते हैं। ग्राम-सेवकों के लिये यह पत्र बहुत ही लाभदायक है।"

उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री के कारण 'दीपक' संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत व जोधपुर-राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा अपने स्कूल व पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत किया गया है।

नए ग्राहकों को भारी रियायत

दिवाली पर प्रकाशित होनेवाले 'नववर्षांक' से नए ग्राहक बननेवालों को कई विशेष रियायतें दी जावेंगी। पूरी जानकारी के लिये पत्र-व्यवहार करें।

मैनेजर 'दीपक'
साहित्य-सदन, अबोहार (पंजाब)

साहित्य-सदन द्वारा प्रकाशित
सरल, सस्ती, उपयोगी

पुस्तकें

१—विश्वधाय

३० वर्ष तक गवर्नमेंट-डेयरी-फ़ार्मों पर मैनेजर के रूप में रह गोपालन-संबंधी प्रत्यक्ष अनुभव-प्राप्त श्रीबाबू भगवानदास वर्मा ने गौओं की नसल-सुधार, दूध बढ़ाना, आहार, दूध, दही, लस्सी आदि के गुण आदि ३२ विषयों का वर्णन किया है। सादे व तिरंगे गौओं-साँडों के ७ चित्र, सौ के लगभग पृष्ठ, मूल्य ।) मात्र।

२—ग्राम-सुधार नाटक

देहातियों, ग्राम-सेवकों के लिये परमोपयोगी ग्रंथ। 'बिहार-सहयोग' पत्र लिखता है—"इसमें लेखक ने 'ग्राम-सुधार' की सभी आवश्यक और ज्ञातव्य बातें बड़ी खूबी के साथ दर्शाई हैं। पुस्तक सरल भाषा में लिखी गई है।" 'लेखक' प्रयाग—"पुस्तक राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत है।" मूल्य ॥)

३—बालोपदेश

"बालकों के रोज़मर्रा काम में आनेवाली बातों को इस छोटी-सी पुस्तक में सुंदर व सरल गीतों में वर्णित किया है। भाषा खूब चटकीली, सरस है। छपाई-सफ़ाई भी बच्चों के लिये आकर्षक व मनोरंजक है।" 'वाणी' पत्रिका। पृष्ठ-संख्या ४२, मूल्य -)॥

४—ईसप-नीति-निकुंज

नीति-शास्त्र के आचार्य महर्षि ईसप की उपदेश-प्रद, दिलचस्प ६२ कहानियों का सजीव, सरल व रोचक पद्यानुवाद। अनूठे भावों से युक्त पुस्तक का मूल्य ।) मात्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तैयारियाँ शुरू हो गईं

सबसे सस्ते और श्रेष्ठ

दैनिक तथा साप्ताहिक

लोकमान्य

के

'वाणिज्य-व्यवसाय'

विशेषांक की

—**—

— दीपावली पूजा में —

बड़ी सजधज से प्रकाशित होगा

ज़रा उनकी ओर भी ध्यान दीजिए — जिन्होंने १९३६ के विशेषांक को देखकर कहा है—

.....अब तक किसी पत्र के किसी अंक में व्यापार पर इतनी व्यापक दृष्टि नहीं डाली गई। —विश्वबंधु (लाहौर)

.....अंक के समस्त लेख उत्तम और जानकारी प्राप्त करानेवाले हैं। —सकाल (पूना)

.....उद्योग-व्यवसाय के लेख उपयोगी हैं, और उनके संपादन में विशेष परिश्रम किया गया है। —सैनिक (आगरा)

.....वाणिज्य-व्यवसाय विशेषांक के लेख व्यापारियों और साधारण जनता के लिये उपयोगी हैं। —स्वराज्य (खांडवा)

.....इसे हम हिंदी की सर्वप्रथम उद्योग-संबंधी डाइरेक्टरी कह सकते हैं। —अर्जुन (दिल्ली)

.....सहयोगी का यह विशेषांक सराहनीय है। —चाँद (इलाहाबाद)

इसमें व्यापारियों, विद्यार्थियों और साधारण जनता के लिये अनेक ज्ञातव्य बातें रहेंगी।

आप अपनी प्रति के लिये आज ही लिखिए।

विज्ञापन के लिये शीघ्र ही पत्र-व्यवहार कीजिए

मैनेजर—लोकमान्य

१६०, हैरिसन रोड, कलकत्ता

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

देशी राज्यों की मूक प्रजा का सच्चा प्रतिनिधि

भारतीय नरेशों की नीति का निष्पक्ष समालोचक

एवं

नवयुग का संदेश-वाहक

'सचित्र दरबार'

(देशी राज्य-संबंधी एक-मात्र सचित्र साप्ताहिक)

अभी से उसके ग्राहक बन जाइए, अन्यथा पिछले अंक

आपको किसी भी मूल्य पर प्राप्त न हो सकेंगे !

साधारण संस्करण का वार्षिक मूल्य ७), आजीवन २५१),
एक कॉपी ≡), राज-संस्करण का वार्षिक मूल्य २०),
आजीवन का ५०१)

तार का पता —'दरबार' टेलीफ़ोन नं० ६४५२

व्यवस्थापक—**'सचित्र दरबार' सिविल लाइंस, दिल्ली**

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रतापी सिंधिया-वंश के वैभव की रोमांचकारी कहानी

'सचित्र दरबार' के

ग्वालियर-अंक

में

पढ़ने को मिलेगी।

'ग्वालियर-अंक' की घोषणा के साथ ही हमारे कार्यालय में बधाई के पत्रों, लेखों, परामर्शों और ऑर्डरों का ताँता लग गया है। हर रोज़ हमें ऐसी सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि 'ग्वालियर-अंक' के प्रकाशन के समाचार ने सभी संबद्ध और असंबद्ध व्यक्तियों को एक आनंदपूर्ण कौतूहल में डाल दिया है।

हिंदी-साहित्य-संसार में

इतने विशाल विशेषांक की घोषणा आजतक किसी भी भाषा के देशी पत्र ने नहीं की, और 'सचित्र दरबार' के शुभचिंतकों का कथन है कि हमें अपने प्रयास में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त होगी।

कार्यं वा साधयेतं शरीरं वा पातयेयम्

यही हमारे समस्त जीवन का मूल-मंत्र रहा है, और रहेगा। इसी सिद्धांत के बल पर हम जीवित हैं, और जीवित रहेंगे। 'ग्वालियर-अंक' हमारे परिश्रम और हमारी सचाई की नीति का एक उत्तम उदाहरण होगा, और हमें विश्वास है कि हम उसे १९३७ का सर्वोत्तम हिंदी-प्रकाशन बनाकर उपस्थित कर सकेंगे।

आधे से अधिक छप चुका

'ग्वालियर-अंक' इन पंक्तियों के लिखने तक आधे से अधिक छप चुका है, और १ दिसंबर को प्रातःकाल ४ बजे निश्चित रूप से प्रकाशित हो जायगा। इस अंक में कुल मिलाकर ३०० से अधिक पृष्ठ, ५० के लगभग आर्ट-प्लेट्स और पचासों उत्कृष्ट लेख रहेंगे। इस अंक के दो संस्करण छापे जायेंगे, जिनमें से साधारण संस्करण का मूल्य ३) रुपया और राज-संस्करण का १०) रुपया होगा। वार्षिक ग्राहकों को यह अंक मुफ़्त भेंट किया जायगा।

विज्ञापन

इस अंक में छपनेवाले विज्ञापन १५ नवंबर तक स्वीकार किये जायेंगे, लेकिन जिन विज्ञापनों का प्रूफ़ मँगाना अभीष्ट हो, उन्हें जितना शीघ्र भेज दिया जाय, अच्छा है।

एजेंट

जिन एजेंटों ने इस अंक की प्रतियाँ अभी तक रिज़र्व नहीं कराई, उन्हें शीघ्रता करनी चाहिए; क्योंकि हम दोबारा ऑर्डर प्राप्त होने पर यह अंक सप्लाई करने की गारंटी नहीं कर सकते।

समस्त पत्र-व्यवहार इस पते पर—

जनरल मैनेजर, 'सचित्र दरबार'

सिविल लाइंस, दिल्ली।

तार का पता 'दरबार'

टेलीफ़ोन ६४५२

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

श्रीविद्यानंद-ग्रंथमाला और गीताधर्म-प्रेस से प्रकाशित

पुस्तकों और चित्रों की सूची

१ विद्यानंद-विनोद हिंदी	॥)	९ व्यास	॥)
२ ,, गुजराती	॥)	१० कृष्ण-जन्मभूमि	)
३ विद्यानंद भजनावली	)	११ श्रीमद्भगवत्गीता विष्णुसहस्रनामसहित	-)॥
४ हरिस्तुति श्रीमच्छंकराचार्य-विरचित	)	१२ कला में कृष्ण की अभिव्यक्ति	=)
५ विंध्यवासिनीस्तोत्र	)	१३ आदर्श और यथार्थ	॥)
६ अरविंद	)	१४ गीताधर्म के प्रथम वर्ष की फ़ाइल सजिल्द	४)
७ कुलपति मालवीय	)	१५ विश्वधर्मांक	२॥)
८ हिलोर	॥)		

तिरंगे चित्रों की सूची

१ सरस्वतीजी	।)	१८×२३	१६ भक्तों के हृदय कमल में भगवान् कृष्ण	,,	
२ हनुमान्जी	।)	,,	१७ कारागार में कृष्णजन्म	,,	,,
३ गीताधर्म	।)	१२×२३	१८ यशोदा कृष्ण	,,	,,
४ सरस्वतीजी	)॥	७॥×१०	१९ जनकपुर की फुलवारी	,,	,,
५ गंगाजी	,,	,,	२० गीता का उपदेश देते हुए भगवान् कृष्ण	,,	
६ योगेश्वर कृष्ण	,,	,,	२१ राधाकृष्ण	,,	,,
७ गीताधर्म	,,	,,	२२ कमलीवाले राधेकृष्ण	,,	,,
८ काशी विश्वनाथ	,,	,,	२३ गणेशजी	,,	,,
९ स्वामी विद्यानंदजी	,,	,,	२४ प्रपत्ति	,,	,,
१० लक्ष्मीनारायण	,,	,,	२५ भगवान् वेदव्यास	,,	,,
११ हनुमान्जी	,,	,,	२६ बाबा विश्वनाथ	,,	,,
१२ गोस्वामी तुलसीदास	,,	,,	२७ जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	,,	,,
१३ रामचंद्रजी	,,	,,	२८ उषा और संध्या	,,	,,
१४ लक्ष्मणजी	,,	,,	२९ दूध पीते हुए गोपाल	,,	,,
१५ सीताजी	,,	,,			

एकरंगे चित्रों की सूची

१ जगत् के माता-पिता	)।=	७॥×१०	६ भगवान् बुद्धदेव	)।=	७॥×१०
२ गंगाजी	,,	,,	७ स्वामी विद्यानंदजी	,,	,,
३ नर्मदादेवी	,,	,,	८ श्रीरामकृष्ण परमहंस	,,	,,
४ बद्रीश पंचायतन	,,	,,	९ स्वामी विद्यानंदजी की कथा अहमदाबाद	,,	
५ महात्मा गांधी	,,	,,	१० स्वामी विद्यानंदजी की कथा कलकत्ता	,,	

हिंदी-संस्कृत आदि की किसी भी पुस्तक के लिये गीताधर्म - बुकडिपो को लिखिए। एजेंसी के लिये पत्र-व्यवहार कीजिए। व्यापारियों को भरपूर कमीशन दिया जायगा।

पता—गीताधर्म-कार्यालय, काशी

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए ।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला

—हरएक घर में रहना चाहिए—

(जूड़ी ज्वर)

म ले रि या का म हा न् श त्रु

झंडु-मलेरिया मिक्श्चर

से व न क र के
म ले रि या की ज ड़ को
ने स्त ना बू द क र दी जि ए।

झंडु-फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

लखनऊ के ,, ,, —माताबदल पंसारी, अमीनाबाद ।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

छप गया !

ऑर्डर दीजिए !!

आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ

नवयुग-काव्य-विमर्ष

हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्यों का

मार्मिक विवेचन तथा आलोचन

रचयिता

हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक

पंडित ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

(भूतपूर्व सं० 'मनोरमा' और 'भारत')

हिंदी के वर्तमान आलोचना-साहित्य में यह एक अपूर्व ग्रंथ है। छायावादी या रहस्यवादी कवियों के साधारण परिचय के साथ उनके समस्त काव्य का मननशील और मार्मिक विवेचन किया गया है। काव्य की भाषा, भाव, अलंकार, रस, गुण और दोष का आकर्षक प्रतिपादन हुआ है। पुस्तक तीन खंडों में विभाजित की गई है—

प्रथम खंड (भाव-प्रधान कवि)—पं० माखनलाल चतुर्वेदी, राय कृष्णदास, बा० सियारामशरण गुप्त, पं० बालकृष्ण शर्मा, बाबू भगवतीचरण वर्मा और श्रीजगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद'।

द्वितीय खंड (कल्पना-प्रधान कवि)—बाबू जयशंकर 'प्रसाद', पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', पं० सुमित्रानंदन पंत, श्रीमती महादेवी वर्मा, प्रो० रामकुमार वर्मा और पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी'।

तृतीय खंड—सर्वश्री द्विज, प्रेमी, दिनकर, बच्चन और नरेंद्र आदि वर्तमान हिंदी के कई उदीयमान कवियों की कविताओं पर प्रकाश डाला गया है।

इस ग्रंथ में प्रकाशित कविताओं के चुनाव में यह विशेषता है कि उनका चुनाव उन्हीं कवियों द्वारा कराया गया है। यह ग्रंथ वर्तमान हिंदी-साहित्य में अपूर्व है, और इससे ऐसी आलोचनात्मक रचना की पूर्ति होती है, जिसका हिंदी में बिलकुल अभाव था। इसके द्वारा छायावादी कवियों की भाव पूर्ण मनोरम रचनाओं के मनन करने के एक सुंदर साधन की पूर्ति होगी।

विवेचना-पूर्ण भूमिका

पुस्तक के प्रारंभ में हिंदी के वर्तमान काव्य-साहित्य का काफ़ी विस्तृत और विद्वत्ता-पूर्ण विवेचन हुआ है। रहस्यवाद क्या है, संसार की अन्य भाषाओं में उसका क्या स्थान है, हिंदी-साहित्य में रहस्यवाद या छायावाद का क्या स्थान है, और वर्तमान छायावादी कवियों से हिंदी की क्या गौरव-वृद्धि हुई है, इस संबंध में पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक बड़ी आकर्षक, रोचक और विद्वत्ता-पूर्ण रीति से लिखी गई है। प्रत्येक हिंदी-प्रेमी का यह कर्तव्य है कि ऐसी उपादेय पुस्तक की एक प्रति अपने पास रक्खे। मूल्य २)

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीकृष्ण द्वारा मुद्रित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Bombay, Behar & Punjab.

मार्गशीर्ष, १९९४] [मूल्य ॥)
December, 1937] [Price -/8/-

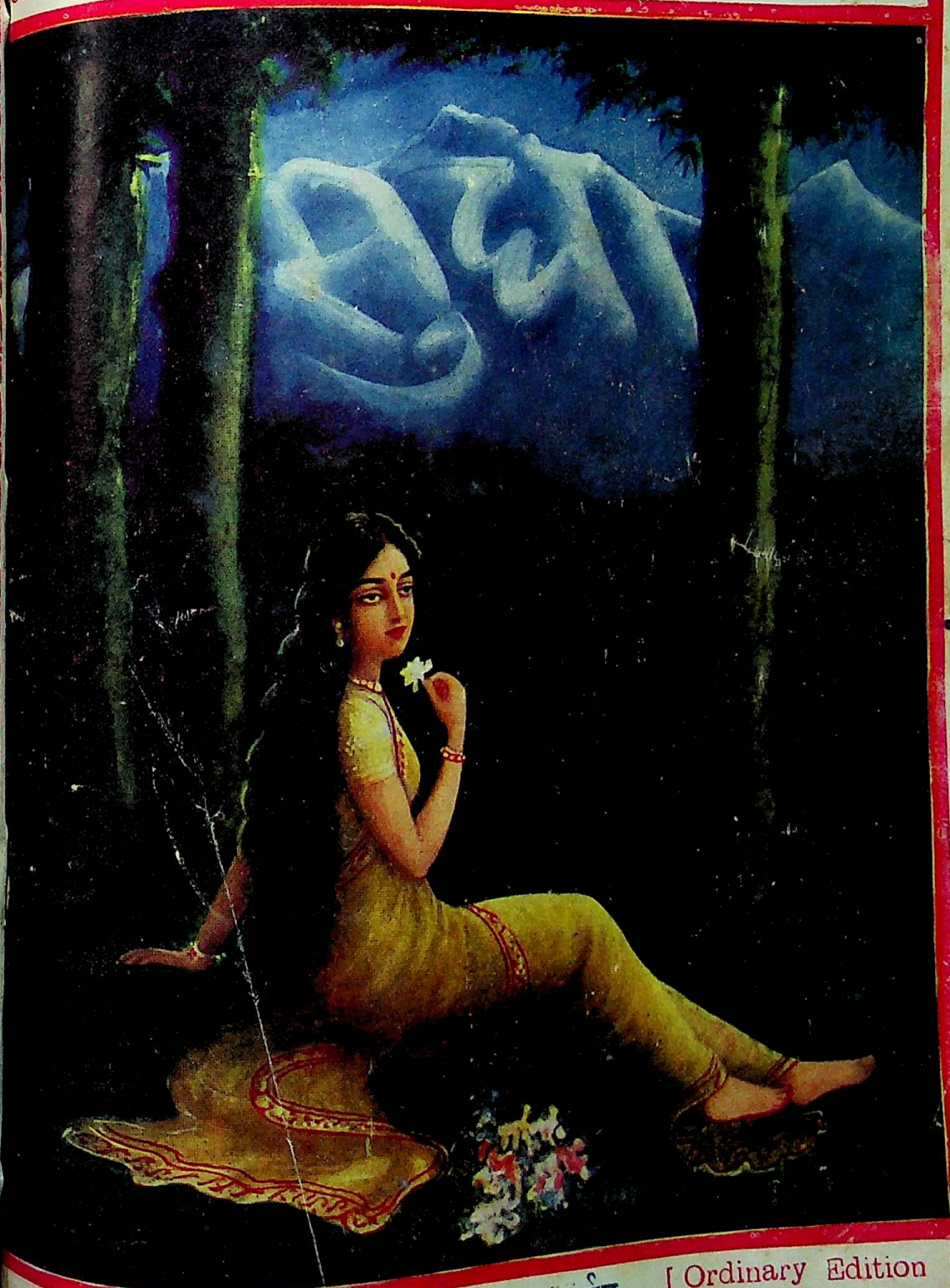

साधारण संस्करण] संपादक—श्रीदुलारेलाल भार्गव [Ordinary Edition

पालना झुलानेवाला हाथ ही चाय बनाता है

बढ़िया चाय बनाकर पिलाने में जिन स्त्रियों को आनंद आता है, वे इसे स्वयं बनाने में आनंद अनुभव करती हैं। सुघड़ता से चाय बनाना सुदक्ष लालन-पालन के समान ही किसी भी स्त्री में ये दोनों ही गुण रहते हैं—जरूरत है इन्हें सिर्फ़ उन्नत कर लेने की। हमें अपने परिवार के लिये अपने ही हाथों और ठीक-ठीक तरीक़े से चाय बनाइये।

चाय तैयार करनेका तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन जरा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइये।

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शुभ

यदि किसी को अपना मुक़द्दर बनाना हो

लाभ

यदि गई हुई इज़्ज़त और खोया हुआ धन पुनः वापस लेने की इच्छा हो, यदि धन-धान्य, स्त्री-संतान-प्राप्ति का स्वर्गीय आनंद भोगने की उत्सुकता हो, और यदि ऊँचे दरबारों में इज़्ज़त हासिल कर, दुश्मन को परास्त कर, अपनी शान का सिक्का जमाना हो, तो आज ही और अभी शक्तिशाली अद्भुत—

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र

मँगाइए। इसके अलौकिक गुणों की प्रशंसा बड़े-बड़े ज्योतिषी व धुरंधर पंडितों ने ही नहीं, बल्कि शास्त्र-पुराणों तक ने की है। प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने के पचास-पचास हज़ार प्रशंसा-पत्र इस यंत्र की सचाई के पक्के प्रमाण हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या अविश्वास की रत्ती-भर की गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र वा शास्त्रविधि पर अविश्वास करता है, वह जीवन में कभी सुख को प्राप्त नहीं होता, ऐसा कृष्ण भगवान् ने स्वयं कहा है। देखो गीता १६-२३।

इस नवग्रह यंत्र से रोज़गार में लाभ, इम्तहान में पास, मुक़दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजसम्मान, नौकरी मिलना, संतान-लाभ, तनख़्वाह में तरक़्क़ी, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, इच्छानुसार शादी, अचानक आफ़तों से बचना, किसी को वश करना, रेस व लाटरी में धन-प्राप्ति वग़ैरह-वग़ैरह हर काम पूरा होता है। जो पूछोगे, हर बात का जवाब स्वप्न में विधि-सहित बताएगा। आप जिसका ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकलकर उस कार्य को पूरा करेगी।

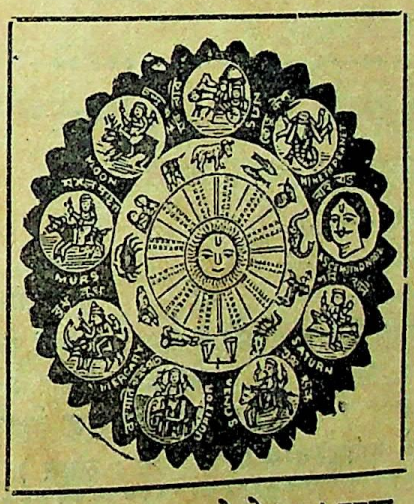

हर मनुष्य विश्वास रक्खे कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, वह इसके चमत्कार को देख वाह-वाह कर उठता है, और बार-बार मँगाता है। बहुतों ने तो छः-छः और आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह यंत्र तक मँगाए हैं। अगर विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अब भी विश्वास न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। लाभ न हो, तो दाम वापस मँगाइए।

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

इतने पर भी अगर विश्वास नहीं हुआ, तो अपनी चमकानेवाली तक़दीर और उदय होनेवाले भाग्य को धक्का पहुँचाने के दोषी आप ही हैं। एक बेयक़ीनी व तुच्छ पैसे के लालच-वश यदि चूक गए, तो जीवन-भर पछताना ही हाथ लगेगा। शास्त्र का कहना है कि—

सकल पदारथ हैं जग माहीं ; कर्महीन नर पावत नाहीं।

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री - पुरुष, बच्चे - बूढ़े को एक नवग्रह यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह यंत्र मँगावें। पुरुष के लिये दो नीलमणि और स्त्री को दो लालमणि से युक्त यानी कंपलीट। एक नवग्रह यंत्र का मूल्य ३), एक साथ तीन यंत्र लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ६॥-)

मि० बी० अर्जुनवाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज, सांगली (सतारा)—आपके यहाँ से मुझे बेहद लाभ पहुँचा। मैं इम्तहान में पास हो गया हूँ। एक यंत्र वी० पी० से और भेज दें।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—आपका यंत्र पहले एक मँगवाया था, उससे मेरा कार्य सिद्ध हो गया है। अब कृपया एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता S. S. L. बंबई नं० ४

बुद्धि बढ़ानेवाली गोलियाँ

मध्यभारतीय वैद्य-सम्मेलन, इंदौर
द्वारा प्रशंसा-पत्र प्राप्त
आयुर्वेद की दिग्विजय !

इसको सेवन करने से 'त्रिभिर्दिनैः श्लोकसहस्रधारिणम्' अर्थात् तीन दिन में हजार श्लोक स्मरण रखने की अद्भुत शक्ति आ जाती है। यह आयुर्वेद की प्रतिज्ञा है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध को ये गोलियाँ शीघ्र मँगाकर इस दिव्यौषधि का गुण-प्रभाव अवश्य देखना चाहिए। जो कोई यह सिद्ध करेगा कि ये आयुर्वेद-प्रणीत नहीं हैं, उसे १००) इनाम मिलेगा। ५० गोलियों के दाम सिर्फ १।), आज ही ऑर्डर दीजिए, या अपने शहर के एजेंट से ले लीजिए।

व्यवस्थापक
प्राच्यदिव्यौषधि-संशोधन-कार्यालय
१३ इमली बाज़ार, इंदौर सिटी (होलकर स्टेट)

हमारी कृषि-संबंधी पुस्तकें पढ़कर आप एक-एक बीघे में सहस्रों रुपए कमा सकते हैं

मक्का की खेती (सचित्र).....	१)	ज़ीरा	=)
गेहूँ की खेती (,,).....	॥=)	पपीता.....	।-)
कपास की खती (,,).....	३)	मूँगफली.....	।=)

उक्त पुस्तकें उर्दू-भाषा में भी हैं। सब पुस्तकों के ग्राहकों के लिये डाक-व्यय माफ़।

लेखक व प्रकाशक—
रामप्रसाद सूबा ऐंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
रिटायर्ड एग्रीकल्चरल डिप्लोमिस्ट (लंदन). मुरार छावनी, ग्वालियर

❀ श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों ❀

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सब बने (३) दिन में पूरा लाभ। यदि अनेक दवा लगाकर आप निराश हो चुके हैं, तो एक बार इसे लगाकर नीरोग होवें। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस। जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १॥)

पता—राजवैद्य परमेश्वरदयालजी
नं० १०२, पो० कतरीसराय (गया)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लेख-सूची

		पृष्ठ
१.	गीत (कविता) —[लेखक, श्रीयुत बचनेश	४२५
२.	कुंदमाला-नाटक की समालोचना— [लेखक, प्रो० कैलासनाथ भटनागर एम्० ए०, सनातन धर्म-कॉलेज, लाहौर ...	४२६
३.	काश्मीर का सबसे सुंदर और रमणीक प्रदेश (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, श्रीयुत शिवनारायण टंडन ...	४३१
४.	वर्नाक्यूलर-शब्द—[लेखक, श्रीयुत डॉ० सत्यप्रकाशजी डी० एस्-सी० ...	४३५
५.	जीत की हार (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ...	४४२
६.	अपनी कविता से (कविता)—[लेखक, श्रीयुत कपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्' ...	४५०
७.	कविवर पो० कुमारमणि शास्त्री (जीवनी)— [लेखक, पो० कंठमणि शास्त्री, विशारद, संचालक विद्या-विभाग, कांकरोली ...	४५१

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, क़ब्ज़ियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्यविद्या' पुस्तक मुफ़्त मँगावें।

मदनमंजरी-फ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—निगम मेडिकल हाल
अमीनाबाद रोड

बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

काशी-विद्यापीठ की पुस्तकें

संसार की समाज-क्रांति

लेखक—डॉ० जी० एस्० खरे पी-एच्० डी०

इसमें लेखक ने इटली, जर्मनी, रूस, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों का अपनी आँखों देखा हाल लिखा है, और वहाँ के सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन में आज जो उथल-पुथल मची हुई है, उसका चित्रण बड़ी ही सुंदरता के साथ किया है। श्रद्धेय श्रीभगवानदासजी के कथनानुसार "पचासों पाश्चात्य पुस्तकों और अख़बारों के परिशीलन से जो ज्ञान प्राप्त हो सकता है, उसका सार इसके अध्ययन से हो जायगा।" मूल्य १॥)

समाजवाद

लेखक—श्रीसंपूर्णानंद

समाज क्या है, उसमें इतना वैषम्य क्यों देख पड़ता है, सुख के साधन थोड़े-से ही लोगों को क्यों प्राप्त हैं, लोकतंत्र या फ़ासिस्टवाद क्यों समाज के रोगों को अच्छा करने में असमर्थ है, इत्यादि प्रश्नों का उत्तर इसमें मिलेगा। समाजवाद-विषयक शंकाओं का समाधान भी किया गया है। मूल्य १॥)

जापान-रहस्य

लेखक—श्रीचमनलाल

अस्सी वर्ष के भीतर ही जापान ने जो आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है, उसका असली रहस्य इस पुस्तक को पढ़ने से विदित होगा। वहाँवालों की गहरी देश-भक्ति, सुदृढ़ अनुशासन, आविष्कारक बुद्धि और जान पर खेल जाने की तत्परता इत्यादि संबंधी बातें पढ़कर आप मुग्ध हो जायँगे, और आपके मन में इस बात का उत्साह उत्पन्न होगा कि हम भी इसी पथ का अनुसरण कर अपने देश को संसार के राष्ट्रों में उपयुक्त स्थान दिलाने का प्रयत्न करें। मूल्य १॥)

हिंदू-भारत का उत्कर्ष ३॥), टाटस्की की जीवनी १॥=), साम्राज्यवाद २॥)

काशी-विद्यापीठ, बनारस छावनी

८. दक्षिण-फ्रांस से पत्र (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए० डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्व-विद्यालय ४५६
९. ग़रीब की लड़की (कहानी)—[लेखिका, श्रीमती रत्नकुमारी एम्० ए० ... ४६४
१०. सुंदरि ! कुछ तो बोला ! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत नीलकंठ तिवारी 'ज़ख्मी' बी० ए०, साहित्यरत्न ४६६
११. हा गौड़जी !—[लेखक, श्रीयुत गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर' ४७१
१२. सुना है कि उनके कमर ही नहा है ! (व्यंग्य-चित्र) ४८२
१३. सुधा-चित्रावली ४८३

सर्वत्र विजय
योगेंद्र कवच
योगेंद्र कवच के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन कामों में सफलता मिलती है, यानी इसके चमत्कारी प्रभाव से पुत्र धन, नौकरी की प्राप्ति, तरक्क़ी, मुक़द्दमे में जीत, मनचाही स्त्री या पुरुष के ऊपर वशीकरण, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, नवग्रहों तथा कठिन-से-कठिन रोगों से मुक्ति, लॉटरी तथा घुड़दौड़ में जीत होकर भाग्योदय होता है। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम। मूल्य प्रति यंत्र २), चाँदी का ३), सोने का १२॥)
पता—श्रीमहाशक्ति आश्रम नं० १५
पो० परबलपुर (पटना)

पेलिकेन
हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन
Pelican
इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।
इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।
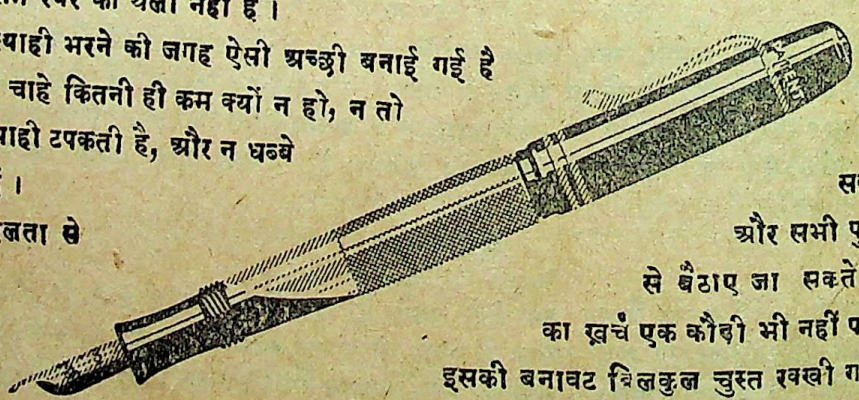
यह सरलता से खोली जा सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है।
कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है। साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है। स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—
गौथेर वागनेर हानोवर
Pelican
सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।
पारदर्शक
लोकल स्टॉकिस्ट—कौशला जनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

१४. चयन—[लेखकगण, श्रीमती किशोरीदेवी चतुर्वेदन, श्रीकेतकीदेवी गौड़ 'रश्मि', दीवान श्रीयुत गणेशचंद्र कपूर, श्रीदेवर्षि सनाढ्य 'सुमन' शास्त्री, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरडिया और श्रीयुत लक्ष्मीनारायण-दीनदयाल अवस्थी ... ४८७

१५. तृतीय सुधा-पहेली-प्रतियोगिता ... ४९५

१६. पहेली-पूर्तिकारों के पत्र ४९९

१७. हमारी डाक ५०१

१८. नए फूल ५०३

१९. सौरभ (संपादकीय-विचार) ... ५०४

बवासीर की दवा

चाहे जैसी खूनी-बादी, नई-पुरानी बवासीर हो, 'अर्शोहर' को खाने से दर्द, सूजन एक दिन में आराम हो जाती है। यही खावें, और जल में घिसकर लगावें। धर्मार्थ मूल्य ॥–), पोस्टल ऑर्डर या डाक के टिकटों से पेशगी भेजिए।

औरतों के बाँझपन की दवा ३) शीशी।

योगेंद्र-फ़ार्मेसी (Regd.)

अमृतसर

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह ओषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।=)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

चित्र-सूची

(क) तिरंगा

		पृष्ठ
१. देवी अहल्याबाई होल्कर ...	...	

(ख) दुरंगे

२. श्रीविश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव	...	४६४
३. एक आदर्श विवाह	... ...	४६५
४. श्रीयुत सद्गोपालजी एम्० एस्-सी० और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला बी० ए०	... ...	४८८
५. श्रीशंकरदेवजी विद्यालंकार	...	४८६

(ग) व्यंग्य

६. सुना है कि उनके कमर ही नहीं है !— [चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	...	४८२

(घ) सादे

७. पहलगाम का मनोहर दृश्य	...	४३२
८. पहलगाम का एक दृश्य ...	...	४३३
९. श्रीयुत डॉ० सत्यप्रकाशजी डी० एस्-सी०		४३५

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉ० नं० ६८२५

बवासीर ❋ बवासीर

और भगंदर की अचूक महौषध

"Pilecura" डॉ० घंट का पाइलक्यूरा "Pilecura"

चाहे जैसी कठिन, पुरानी और दुःखदायी, ख़ूनी एवं बादी बवासीर या भगंदर आदि हो, मलहम लगाते ही सब तरह का कष्ट हमेशा के लिये अत्यंत शीघ्र बिलकुल आराम हो जाता है। इसमें पारा या और किसी ज़हरीली वस्तु के मेल का ख़तरा नहीं। मूल्य बड़ी शीशी ३॥), छोटी शीशी १), डाक-ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—दास-ब्रादर्स

केमिस्ट्स ऐंड ड्रगिस्ट्स

११५, धरमतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

For Agency terms apply also to:—

Distributors:—DAS BROTHERS, Chemists & Druggists

115, Dharamtala Street, CALCUTTA

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पृष्ठ

१०. श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ... ४४२
११-१६. दक्षिण-फ्रांस से पत्र-संबंधी ६ चित्र ४५६-४६२
१७. कविवर श्रीयुत नीलकंठ तिवारी 'ज़ख्मी' बी० ए०, साहित्यरत्न ४६६
१८. श्रीयुत गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर' ... ४७१
१९. मिस प्रोफ़ीलिया स्टेक अपनी कुछ शिष्याओं को व्यायाम करा रही हैं ... ४८३
२०. मिस स्टेक की शिष्याएँ खुले मैदान में ४८४
२१. भुजाओं को लंबा बनाने का व्यायाम ४८४

❀ खिजाब को छोड़ो ❀

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो २॥), इससे अधिक पका हो, तो ४) या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगवा लें!

पता—बालकाला डिपो नं० १०१
पो० कतरीसराय (गया)

हमारे सर्वसिद्ध अनुभूत प्रयोग

५००) रु० इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत वनौषधि। तीन दिन में पूरा आराम। यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर थक गए हों, तो इसे लगावें। बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, —) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

कामप्रभाकर

धातु-क्षीणता, नामर्दी, कमज़ोरी, सुस्ती, स्वप्नदोष आदि को बहुत शीघ्र दूर कर एक शीशी व्यवहार करते-करते ग़ज़ब की शक्ति पैदा करती है। बंधेज-शक्ति बढ़ाने में अद्भुत गुणशाली है। मूल्य १५ दिन सेवन योग्य ३० गोली का १॥) रुपया।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोरराम (सुधा), पोस्ट कतरीसराय (गया)

स्थापित १९२३ ई०

"दमा-नाशक" (रजिस्टर्ड)

सबसे बढ़कर, अचूक महौषध दमा और तपेदिक़ प्रथम व दूसरी अवस्थावाले रोगियों के लिये है।

मूल्य केवल १) प्रति शीशी, जिसमें ३२ ख़ूराक होती हैं।

पता—ईश्वर मेडिकल हाल
बिल्डिंग शिवदत्तराम, अमृतसर, (पंजाब)

प्रमाणपत्र—मुझको दमा-रोग ने २२ साल से पीड़ित कर रक्खा था, और जिसकी चिकित्सा के हेतु मैंने हज़ारों रुपए व्यय कर दिए, किंतु सब व्यर्थ हुए, और आपकी ७ शीशियों ने मुझे पूर्ण आरोग्य कर दिया।

हस्ताक्षर पं० नारसिंहदास
टांगडिनज्य, बरमा

पृष्ठ

२२. जोड़ों की सख्ती दूर करने के लिये परों का व्यायाम ४८५
२३. शारीरिक सुडौलपन ४८५
२४. कमर का व्यायाम ४८६
२५. मोढ़ों की मज़बूती के लिये कसरत ... ४८६
२६. श्रीदेवर्षि सनाढ्य 'सुमन' शास्त्री ... ४९२
२७. श्रीरामकुमारजी वर्मा एम्० ए० ... ५१८
२८. बाबू गोपीनाथ श्रीवास्तव ५२०

दैवी शक्तियों का साक्षात् प्रभाव दिखलानेवाला

राजों, महाराजों तथा सिटी मैजिस्टे ट साहब बहादुर लखनऊ द्वारा परीक्षित

जगत्-विख्यात

चिंता-हरण सिद्ध यंत्र 'रजिस्टर्ड'

प्रत्येक मनोरथों को पूरा करनेवाला, धन, धान्य, रोज़ी, पुत्र-सुख, वशीकरण, मुक़द्दमा, परीक्षा, तरक्क़ी, तब्दीली, घुड़दौड़, लाटरी आदि में उत्तीर्ण करानेवाला। केवल २) में मँगाकर लाभ उठावें।

गारंटी हम बजरंगबली को साक्षी देकर लिखते हैं, यदि हमारे लेखानुसार आपका मनोरथ पूरा न हो, तो दूना मूल्य वापस करेंगे।

पता—मैनेजर रमलाचार्य आश्रम (सु)

पोस्ट कमलापुर, ज़िला सीतापुर [यू० पी०]

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ॥)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

डॉ० कैंट, फैरिंगटन, बोरिक प्रभृति के जोड़ का ग्रंथ

होमियोपैथिक

कॉम्पैरेटिव मेटिरिया-मेडिका

यह उसी विख्यात होमियोपैथिक मेटिरिया-मेडिका का हिंदी-भाषांतर है, जिसके बँगला में ६ संस्करण और २५००० प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मेटिरिया-मेडिका-संबंधी समस्त विषय और तुलना के साथ चिकित्सा इस उत्तमता से बताई है कि किसी भी रोगी के पास बैठकर दो-तीन मिनटों में ही ठीक दवा चुन लीजिए। एक साथ मेटिरिया-मेडिका, थेराप्युटिक्स, रेपर्टरी प्रभृति से संपन्न ऐसा दूसरा होमियो-ग्रंथ किसी भाषा में नहीं है। एक इसे अपने पास रखने पर किसी दूसरे की ज़रूरत नहीं है। १४४६ पृष्ठों की सुंदर सजिल्द पुस्तक का मूल्य ६॥), डाक-ख़र्च ॥=)

कलकत्ते के प्रसिद्ध होमियोपैथिक औषध और पुस्तक-विक्रेता—

प्रकाशक—हैनिमैन पब्लिशिंग कंपनी

१६५, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गोविंदवल्लभ पंत

के

तीन नाटक

नवीन संस्करण तैयार है

वरमाला

अनेक स्थानों में सफलता-पूर्वक अभिनीत। यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में भी हो चुका है। हिंदी-विश्वविद्यालय में बी० ए० और प्रयाग-विश्वविद्यालय में एम्० ए० में पढ़ाया जाता है। अनेक रंगीन और सादे चारु चित्रों से सुसज्जित।

दूसरा संशोधित संस्करण। मूल्य ॥=), १=)

राजमुकुट

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। लेखक का दृष्टिकोण उसकी कृति की सफलता का प्रथम कारण है। विषय-निर्वाह और कथानक का विकास सराहनीय है। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब किसी नाटककार ने रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है।

चौथा संस्करण। तीन चित्र। मूल्य ॥), १)

अंगूर की बेटी

लेखक, पं० गोविंदवल्लभजी पंत। पंतजी वरमाला और राजमुकुट लिखकर काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। राजमुकुट को जनता और शिक्षा-संस्थाओं ने इतना अपनाया कि दो वर्ष में ही पुस्तक के पाँच संस्करण हो गए। यह उनकी शुभ लेखिनी का ज्वलंत प्रमाण है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं की चमत्कार-पूर्ण लेखनी से लिखा हुआ रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

पुरानी दुनिया

(सचित्र)

[लेखक—काशीप्रसादजी जायसवाल; अनुवादक—बाबू रामचंद्र वर्मा]

क्या आप जानते हैं कि आज से तीन-चार हज़ार वर्ष पहले संसार में कौन-कौन-सी जातियाँ बसती थीं, उनकी सभ्यता और संस्कृति कैसी थी, उनका कैसे और कहाँ से उत्थान हुआ था, उनकी शक्ति कितनी और कैसी थी, उनके राज्य अथवा साम्राज्य का विस्तार कहाँ तक था, और किस प्रकार उनका पराभव या अंत हुआ ? यदि आप ये सब बातें जानना चाहते हों, तो हमारे यहाँ की प्रकाशित 'पुरानी दुनिया' मँगाकर पढ़िए। मूल्य १॥), सजिल्द २)

आशीर्वाद

लेखक, श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। श्रीवास्तवजी अपने लिखे 'बिदा' उपन्यास से हिंदी-संसार में बहुत अधिक प्रसिद्ध हो चुके हैं। 'आशीर्वाद' आप ही की आठ श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह है। श्रीवास्तवजी की कहानियाँ अपने ढंग की अनूठी होती हैं। इन्हें पढ़ते ही पाठकों के हृदय में एक गुद-गुदी हो उठेगी। मनोभावों की व्यंजना में लेखक कितना सफल हुआ है, यह पुस्तक देखने पर ही मालूम हो सकता है। कहानियों में सभी श्रेणी के पात्र हैं, और उनका चित्रण भी बहुत ही स्वाभाविक हुआ है। हमारा अनुरोध है कि आप इस संग्रह को अवश्य पढ़ें। मूल्य १), सजिल्द १॥)

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

लेखक, कविवर पं० गोविंदवल्लभ पंत। नाटककार के रूप में पंतजी का नाम कितना प्रसिद्ध हुआ है, यह आप सभी हिंदी-प्रेमियों पर प्रकट है। पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। पाठक पढ़कर ही इसका असली आनंद प्राप्त कर सकेंगे। १२ रेखा-चित्रों-सहित। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमारी सर्वांगसुंदर और सर्वप्रशंसित साहित्यिक पुस्तकें

काव्य-ग्रंथ—
१ विद्यापति की पदावली (सजिल्द) २)
२ बिहारी-सतसई (सटीक) ,, १॥)
३ तुलसी-सतसई (सटीक) ,, १॥)
४ गोविंद-गीतावली ,, १।॥)
५ रसकलस } श्रीहरिऔध ,, ४)
६ पद्य-प्रसून } श्रीहरिऔध ,, १॥)
७ नवीन वीन (स्व० 'बीन') ,, २)
८ निर्माल्य ('वियोगी') ,, १)
९ एकतारा (,,) ,, १)
१० सौरभ (श्री 'समीर' एम्० ए०) १)
११ मोती के दाने ।=), ॥)
१२ अंतर्जगत् (पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, बी०ए०) ।)
१३ विपंची (श्रीरामनाथ 'सुमन') ।)
१४ कानन-कुसुम (श्रीजयशंकर 'प्रसाद') १)
१५ रेणुका, राजसंस्करण ३), साधारण संस्करण २॥)
१६ पार्वती-मंगल (सटीक) ।)
१७ गुनगुन (प्रोफ़ेसर मनोरंजन, एम्० ए०) ।॥)

नाटक—
१ कामना (श्रीजयशंकरप्रसाद) (सजिल्द) १॥)
२ अशोक (पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, बी०ए०) १॥)
३ सोने की गाड़ी (श्री० 'समीर', एम्० ए०) ॥)
४ मणिगोस्वामी (प्रो०कृपानाथ मिश्र, एम्०ए०) ॥)
५ सत्यहरिश्चंद्र (भारतेन्दु) ।=)
६ मान-मर्दन (स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा) ॥=)

उपन्यास—
१ देहातो दुनिया (शिवपूजनसहाय) (सजिल्द) १॥)
२ प्रेमिका (स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा), २॥)
३ प्रेम-पथ (पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी) ,, २)
४ विमाता (श्रीअवधनारायण) ,, २)
५ अशान्त (पं० विनोदशंकर व्यास) ॥)
६ जयमाल ।=)
७ कंगाल की बेटी ॥)

कहानी—
१ पुरुष-परीक्षा (महाकवि विद्यापति)(सजिल्द) १)
२ विभूति (शिवपूजनसहाय) ,, २)
३ नवपल्लव (पं० विनोदशंकर व्यास), १॥)
४ छाया (श्री 'प्रसाद'जी) ,, १॥)
५ किसलय (श्री 'द्विज' एम्० ए०) ,, १)
६ यूथिका (श्रीगोपाल नेवटिया) ।=)

आलोचनात्मक—
१ बिहार का साहित्य (सजिल्द) १।॥)
२ वारिविलास (आचार्य द्विवेदीजी) ,, १॥)

नवयुवकोपयोगी—
१ मधुसंचय (श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी) ।=)
२ मैत्री-धर्म (श्रीगुलाबराय, एम्० ए०) ।)
३ प्रेम ।=)
४ तीर्थरेणु } (श्रीबख़्शीजी, बी० ए०) ।)
५ मकरंदबिंदु } ।=)
६ गद्यचंद्रोदय } (श्रीमाँवलिया बिहारीलाल
७ गद्यचंद्रिका } वर्मा एम्०ए०, बी०एल्०) ।॥)
८ भारतेंदु-साहित्य (सजिल्द) १)
९ अलंकार-चंद्रिका ॥)
१० छंदः-चंद्रिका ।=)
११ कैलास-दर्शन (सजिल्द, सचित्र) १॥)
१२ उत्तराखंड के पथ पर (४२ चित्र, सजिल्द) २)
१३ साहित्यिक प्रबंध-संग्रह (सजिल्द) १)

जीवनचरित—
१ दुर्गादत्त परमहंस (सजिल्द) १॥)
२ सम्राट् पंचम जार्ज (७५ चित्र) १)
३ आदर्श रघुवंश (सचित्र) १॥)
४ भगवान् बुद्ध (सजिल्द) १)
५ छत्रपति प्रताप (सचित्र) १)
६ गुरु गोविंदसिंह ,, १)
७ शेरशाह ,, १)
८ शिवाजी ,, १)

महिलोपयोगी—
१ दुलहिन १)
२ सावित्री १)
३ अहल्याबाई (सचित्र) १)

बालोपयोगी—
१ बड़ों का बचपन (५२ चित्र, सजिल्द) १।)
२ आविष्कार और आविष्कारक (सचित्र) ॥)
३ संसार के पहलवान ,, ॥)
४ सियार पांडे ,, ॥)
५ बगुला भगत ,, ॥)
६ बिलाई मौसी ,, ॥)
७ हीरामन तोता ,, ॥)
८ एकलव्य ,, ॥)
९ माइकेल मधुसूदन ,, ॥)
१० प्रतापादित्य ,, ॥)
११ अंतिम पाठ ,, ॥)
१२ बाल-चोरटा ,, ॥)
१३ तीरंदाज़ ,, ॥)
१४ बालकों का योरप ।=)
१५ त्यागी भरत ।=)
१६ विद्यापति ।=)
१७ बाल-गुलिस्ताँ ।=)
१८ बाल-अभिनय (नाटक) ।)
१९ प्रह्लाद ,,

मिलने का पता—पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय (बिहार-प्रांत)

हिंदी-संसार की एक अनुपम काव्य-कृति

निर्झरिणी

लेखिका—श्रीमती सूर्यदेवी दीक्षित विदुषी 'उषा'

प्राक्कथन-लेखक—

समालोचक-प्रवर पं० रामचंद्रजी शुक्ल

(हिंदी-युनिवर्सिटी, बनारस)

निर्झरिणी अल्प काल में ही हिंदी के प्रमुख विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर चुकी है। इसकी एक-एक कविता में सहज स्वाभाविक काव्य-प्रवाह, सरल अनुभूतियों की मनोरमता एवं 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की पूर्ण अभिव्यक्ति है।

मूल्य १६२ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का १) एक रुपया।

दो अमूल्य सम्मतियाँ—

आचार्य-प्रवर श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं—

"निर्झरिणी की कविताओं को यत्र-तत्र सैर करके मुझे परमानंद हुआ। रचना सरस, सुंदर और भाव-भरी है। भाषा भी परिमार्जित है। उषादेवी को बधाई!"

म० प्र० द्विवेदी

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं—

"आपकी रचना आपके योग्य ही है निर्झरिणी में प्रवाह है, सरलता है, किंतु कुटिलता नहीं। प्रभु की कृपा है।"

मैथिलीशरण

प्रकाशक—रविशंकर दीक्षित, डिप्टी का पड़ाव, कानपुर।

स्थानीय विक्रेता—रामदयाल प्रकाशचंद, चौक, कानपुर।

हिंदी-संसार में एकदम नई चीज़

हमारे प्रकाशित 'भयंकर पतन नाटक' के अंदर आपको हिंदू-जाति का भीषण ह्रास, भयंकर अधःपतन, आपस की फूट, हरिजनों पर मनमाने अत्याचार, विधर्मियों के गुरु, षड्यंत्रों का भंडाफोड़, हिंदू-संगठन और दलितोद्धार का सच्चा स्वरूप पढ़ने को मिलेगा। नाटक बिलकुल नया, शिक्षाप्रद और समयानुसार है। चारो ओर से प्रशंसा-पत्रों के ढेर लग गए हैं। ८ रंग-बिरंग चित्रों के अतिरिक्त देश के गण्य-मान्य नेताओं के संदेश भी हैं। मूल्य १), डाक-व्यय पृथक। 'सुधा' के ग्राहकों को एक दूसरा धार्मिक नाटक मुफ्त मिलेगा। नापसंद आने पर वापसी की शर्त है। हमारे जगत्प्रसिद्ध बहीखातों ने भी बेकारी की जटिल समस्या को अधिकांश में हल किया है। कृपया आप भी मँगाएँ।

प्रियतम-पुस्तक-भंडार, पिलानी (राजस्थान)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

❀ रूपविलास ❀

ख़ूबसूरत बनाने के लिये यही प्रसिद्ध दवा है। मुहासा, झाईं, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह बहुत जल्द दूर होकर गोरा गुलाब के फूल-सा खिला गुलाबी छटा मुख पर दमकने लगती है। कैसा ही बदसूरत, बदरौनक़ मनुष्य क्यों न हो, १५ ही रोज़ के लगाने से दूना चेहरा ख़ूबसूरत नज़र न आवे, तो दाम वापस। यह स्त्री-पुरुष, दोनो का दिल ख़ुश करनेवाली मनोमोहिनी ख़ुशबूदार दवा है। क़ीमत फ़ी डिब्बा १॥=) एक रुपया दस आना, डाक-ख़र्च =)

पता—रूपविलास-कंपनी, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, इटावा (यू० पी०)

आयुर्वैदिक फ़ार्मेसी गुरुकुल कांगड़ी की

कुछ मशहूर ओषधियाँ

भीमसेनी सुरमा—खुजली, कुकरे, फोला, सुर्ख़ी और आँखों से पानी बहना आदि सब रोगों पर जादू का असर करता है। मूल्य ३) तोला

च्यवनप्राश—हर मौसम में सेवन करने योग्य उत्तम रसायन है। पुरानी खाँसी, नज़ला, दिल की धड़कन आदि को जड़ से खो देता है। मूल्य ४) सेर

भीमसेनी मकरध्वज—स्वर्णभस्म, कस्तूरी, भीमसेनी कर्पूर आदि के योग से तैयार की गई मकरध्वज की ये गोलियाँ नाताक़ती के लिये अक्सीर हैं। कुछ ही दिन के इस्तेमाल से शरीर में नवजीवन और स्फूर्ति का सचार होता है। मूल्य १२) तोला

भीमसेनी मंजन—मसूढ़े का फूलना, दाँतों से ख़ून व पीप का आना आदि रोगों के लिये बहुत लाभदायक है। मूल्य ॥) शीशी

सूर्यतापी सत शिलाजीत—लगातार दो मास तक खाने से सब प्रकार के प्रमेह, वीर्य-दोष, सुस्ती, कमज़ोरी आदि को दूर कर नया ख़ून व नया जोश पैदा करता है। मूल्य ॥।) तोला

ब्राह्मी तैल—सिर पर लगाने के लिये ब्राह्मी का यह तैल बहुत उत्तम है। इससे दिमाग़ को ठंडक तथा तरावट पहुँचती है, और आँखों की ज्योति बढ़ती है। हिस्टीरिया, सिर-दर्द के लिये भी बहुत फ़ायदेमंद है। मूल्य ॥) शीशी

अध्यक्ष आयुर्वैदिक फ़ार्मेसी, पो० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नं० १६५ सन् १९३६ ई०

ता० पेशी १८ दिसंबर सन् १९३७ ई०

अतहरअली वल्द अजहरअली उम्र ३५ साल साकिन क़स्बा काकोरी तहसील व ज़िला लखनऊ

क़र्ज़दार सायल

बनाम

१—लाला जगन्नाथप्रसाद वल्द मंगल साह साकिन क़स्बा काकोरी तहसील व ज़िला लखनऊ

२—द्वारकाप्रसाद वल्द सुरेखा ब्राह्मण साकिन रेवरी तहसील व ज़िला लखनऊ

३—तिरबेनीसिंह वल्द चाँदकासिंह साकिन मौज़ा आदमपुर उर्फ़ इंदरबारा परगना काकोरी ज़िला लखनऊ

४—दरियावसिंह वल्द सर्वजीतसिंह नाबालिग़ ज़िला सिंहभूमि डाकख़ाना जमशेदपुर सुनारी बालू चक कुम्हारपाड़ा सर्वजीतसिंह फ़िटर टाटा कंपनी पाइपलेन आपरेशन

५—सागरसिंह वल्द सर्वजीतसिंह नाबालिग़ ज़िला सिंहभूमि जमशेदपुर सुनारी बालू चक कुम्हारपाड़ा मारफ़त बाबू सर्वजीतसिंह फ़िटर टाटा कंपनी पाइपलेन आपरेशन

चूँकि अतहरअली वल्द अजहरअली साकिन काकोरी ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़्कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० अतहरअली मज़कूर की जायदाद बतलाया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़्कूर के मुतअल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल बिरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदहंदा मुंदराजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदहंदा की हक़ीयत पर मौज़ूदा तश्ख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मींदारा	बिगहू पट्टी इर्शादअली		हिस्सा १ आना २ पाई	१२२।)	
२	,,	,,	आदमपुर उर्फ़ इंद्रबारी तह० व० जि० लखनऊ मुहाल ईसादुन्निसा बेगम		हिस्सा ॥)		

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराजी हस्ब दफ़ा ९० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नं० सिल० सिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	चौकी चोबी पुरानी	१	
२	न्यामतखाना	१	
३	कुर्सी पुरानी	२	
४	चिक पुरानी	२	
५	छतरी	१	
६	,,	१	
७	कलमदान	१	
८	जानिमाज	१	
९	परदा टाट पुराना	१	
१०	स्टील बक्स पुराना आहनी	१	

मेरे दस्तख़त और अदालत का मुहर से आज बतारीख़ २३ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम बहराइच

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १२ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १० दिसंबर सन् १९३७ ई०

ठाकुर बलदेवसिंह वगैरह — क़र्ज़दार सायल

बनाम

बच्चूसिंह वगैरह — क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि ठाकुर बलदेवसिंह वगैरह साकिन महेवापुर ज़िला बहराइच की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ शिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तश्ख़ीस माल गुज़ारी	कैफ़ियत
१	बहराइच	—	घोपियादा भैंसहा मुहाल बेदौरा	नाम हिस्सादारान बल- देवसिंह व शिवरामसिंह पिसरान रामप्रसादसिंह बहिस्सा मसावी -)॥।	हिस्सा सायलान १०$\frac{1}{2}$ पाई		
२	,,	—	बेदौरा	,,	१०$\frac{1}{2}$ पाई		
३	,,	—	मदेवापूर	,,	१०$\frac{1}{2}$ पाई		
४	परतापगढ़	पुख्तेदारी	अंतामऊ मुहाल मातापलट नं० २ परगना मानिकपुर तहसील कुंडा				
५	,,	,,	,, ,,	नं० ४	,, ,, ,,		
६	,,	,,	,,	जुगलकिशोर पट्टी रानी राधादेवी	,, ,,		
७	,,	,,	,,	,, पट्टी शिवचरन	,, ,, ,,		
८	,,	,,	,,	राजा अवधेशसिंह	,, ,, ,,		
९	,,	,,		गिरगदवा मुहाल सैय्यद नाज़िमहुसेन	,, ,, ,,		

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा १० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	भैंस	१ रास	२५)
२	गाय	२ रास	१०)
३	घोड़ी बछेड़ी	३ रास	२०)
४	पड़वा	१ रास	२)
५	बैल	२ रास	४०)
६	बछवा	४ रास	२०)
७	सामान खानगी मय ज़ेवरात वग़ैरह		१००)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

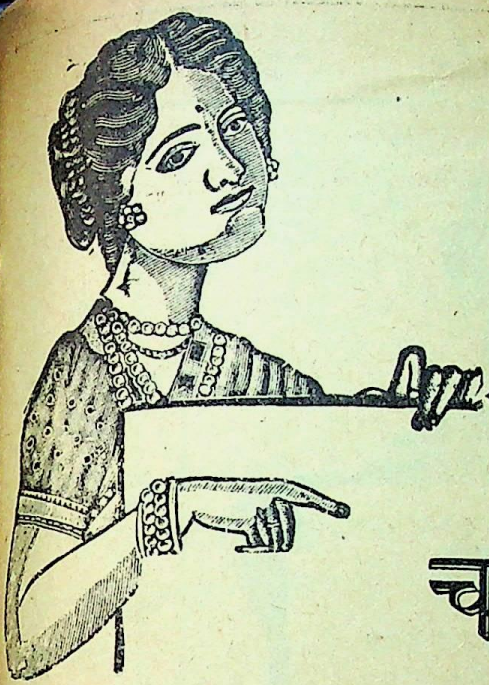

चार नए रत्न

१—फूलों की सेज

[लेखक, श्रीविजयब्रहादुरसिंह बी० ए०]

इस अपूर्व पुस्तक में युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक और वैज्ञानिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक नई तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। अश्लीलता का लेश-मात्र नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

२—ब्रज-भारती

[लेखक, कविवर पं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०]

ब्रजभाषा-साहित्य में युगांतर करनेवाला परमोत्कृष्ट ग्रंथ है। ब्रजभाषा में नवीन शैली के छंदों और आधुनिक ढंग के विषयों का सुंदर समावेश करने का सुंदर साधन। इस काव्य ने यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा में जो लोच और लचक है, वह आधुनिक काल की उष्णता और भार को सहन कर सकती है। जो लोग ब्रजभाषा के प्रेमी हैं, वे यह प्रमाणित करने के लिये कि ब्रजभाषा अब भी जीवित-जाग्रत् तथा शक्तिशाली है, लेखक के चिर-कृतज्ञ रहेंगे। मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १)

३—अतीत के चित्र

[लेखिका, श्रीकुमारी सुशीला आगा बी० ए०]

कुमारी सुशीला आगा बी० ए० हिंदी की प्रसिद्ध कहानी-लेखिका हैं। इस पुस्तक में आपकी ६ कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर और भाव-पूर्ण हैं। भाषा बड़ी ही सुंदर, सरस और हृदय-स्पर्शी है। घटना-क्रम और हृदय की आंतरिक वृत्तियों का ऐसा मार्मिक चित्रण हुआ है कि पढ़ना आरंभ करने पर समाप्त किए विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। नारी-सुलभ सौंदर्य एक-एक पद से विकसित हो रहा है। मूल्य सादी ॥=), सल्लिद १=)

४—बिहारी-दर्शन

[लेखक, साहित्याचार्य पं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी, साहित्यरत्न]

इसमें एक सर्वथा नूतन और अत्यंत रोचक शैली से हिंदी-भाषा के पीयूषवर्षी महाकवि श्रीबिहारीलाल-जी की कविता पर प्रकाश डाला गया है। इस एक ही ग्रंथ में सरसता का सागर, पांडित्य का पीयूष, काव्य की कलित कौमुदी, भाषा की भव्यता, समालोचना का सौष्ठव, मनोभावों की मनोरमता, प्रकृति-वर्णन में पूर्ण पर्यवेक्षण, भक्ति, नीति, गणित, दर्शन, ज्योतिष, राजनीति और मनोविज्ञान की मनोहर मीमांसा का जमघट देखकर आप इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा किए विना रह ही नहीं सकते। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

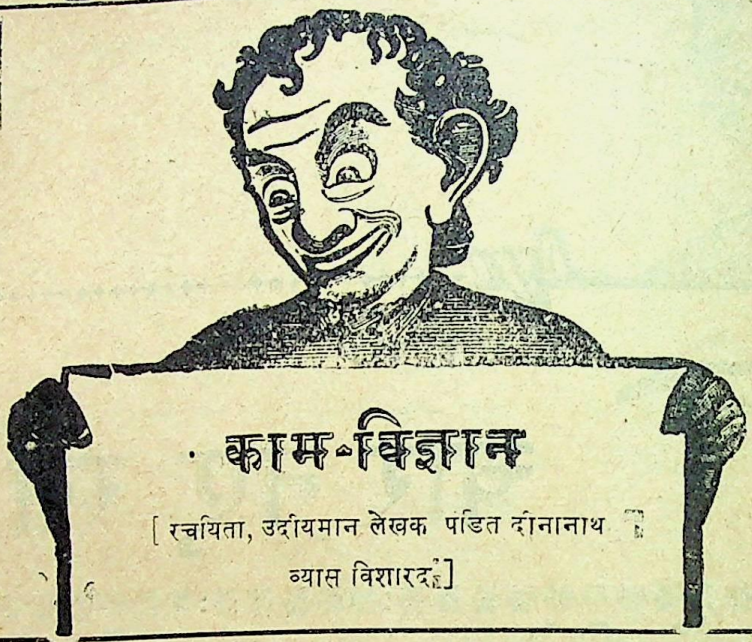

काम-विज्ञान

[रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद]

यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

विषय-सूची

१. स्त्री का स्थान
२. विवाह क्यों और कब ?
३. वर्तमान परिणीत जीवन
४. वैवाहिक शिक्षण
५. वैषयिक शिक्षा
६. विषय का नैतिक धरातल
७. पति-निर्वाचन
८. जीवन-सहचरी
९. सच्चा वैवाहिक जीवन
१०. दुखी विवाह
११. सुखी विवाह
१२. दांपत्य प्रेम एवं ईर्ष्या
१३. स्त्री और सौंदर्य
१४. वैषयिक उत्कंठा
१५. नव-परिणीता वधू
१६. सहवास पर एक दृष्टि
१७. चुंबन
१८. आलिंगन
१९. सहवास
२०. कुछ महत्व-पूर्ण क्रियाएँ
२१. उपसंहार

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुछ नई पुस्तकें

चंद हसीनों के ख़तूत

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

उग्रजी की लेखनी से हिंदी-संसार काफ़ी परिचित है। यह उन्हीं की उग्र लेखनी द्वारा लिखी पुस्तक है। यह मनचले पाठकों के मनोरंजन के लिये एक तोहफ़ा है। ख़त क्या हैं, सजीव चुलबुलाती घटनाओं का वर्णन है। भाषा इतनी मज़ेदार है कि पढ़ते ही बनता है। मूल्य १)

प्रेम-निकुंज

[लेखक—पं० कार्तिकेयचरण मुखोपाध्याय]

यह सामाजिक उपन्यास है। इसमें समाज के पतित और उन्नत, दोनो प्रकार के जीवनों का हृदयग्राही वर्णन है। पतित मनुष्य समाज का कितना अनिष्ट कर सकता है, और उन्नत विचारों का व्यक्ति समाज का किस प्रकार हित कर सकता है, यही इस पुस्तक का मूल विषय है। मूल्य १।)

घंटा

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

यह उग्रजी की नई कृति और सूझ है। फड़कती भाषा और मज़ेदार कहानियों का मज़ा लूटना हो, तो इस पुस्तक को मँगाकर एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)

जागृति

(सामाजिक नाटक)

[मूल-लेखिका—श्रीमती अनुरूपादेवी]

यह नाटक बँगला-स्टेज और स्क्रीन पर अपूर्व सफलता प्राप्त कर चुका है। हिंदी-रूपांतर में बँगलापन नहीं आने दिया गया है, और स्टेज पर खेले जाने के लिये ही लिखा गया है। प्लाट (कथानक) सामाजिक, भाषा ज़ोरदार और गाने भाव-पूर्ण हैं। मूल्य १)

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

छप रहा है ! (स्त्रियों के पढ़ने योग्य) छप रहा है !!

सुघर गँवारिन

(नए ढंग का नवीन, मौलिक उपन्यास)

लेखक—हिंदी के प्रसिद्ध लेखक ताजिरुल-मुल्क लाला रामजीदास वैश्य (ग्वालियर)

आपने सैकड़ों अच्छे-अच्छे उपन्यास और कहानियाँ पढ़ी होंगी, पर इस पुस्तक को पढ़कर आप कल्पना-सौंदर्य की रोचकता से प्रसन्न हो जायँगे, और इसके जासूसी वर्णन आपको चकित कर देंगे। इसमें चित्रित आजकल का सामाजिक जीवन आपकी आँखों के सामने एक अबला का जीता-जागता चित्र खींचकर रख देगा। मनोरंजकता के साथ सदाचार की शिक्षाएँ भी मिलेंगी। इसमें भेड़ के रूप में भेड़ियों के चरित्रों का चित्रण बड़ी सुंदरता से दिखाई पड़ेगा।

डॉक्टरों की लीला, ज़मींदारों और उनके कारिंदों की करतूत, दीन-दुखियों का सरल हृदय, गाँववालों का मेल-जोल, यह सब बातें इस पुस्तक में हैं।

आप इसे सामाजिक उपन्यास कह सकते हैं। आप इसे जासूसी उपन्यास भी कह सकते हैं। आप इसे कल्पना-साम्राज्य से संबंध रखनेवाला अनूठा उपन्यास भी कह सकते हैं, और सबसे अंत में आप इसे हिंदू-संस्कृति के अनुकूल आदर्श स्त्री का चरित्र सामने रखनेवाला, स्त्रियोपयोगी, शिक्षा-प्रद उपन्यास भी कह सकते हैं।

आप पढ़कर ही कह सकेंगे कि कैसी उपयोगी एवं अनूठी पुस्तक है।

हिंदी के सब बड़े-बड़े पत्रों ने इसकी खूब प्रशंसा की है। दाम लगभग २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़रूरत है

कमीशन पर काम करनेवाले ट्रैवलिंग एजेंटों की

नियम

(१) एजेंटों को अद्वितीय गंगा-पुस्तकमाला लखनऊ की सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों का और सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका सुधा का हर तरह से प्रचार बढ़ाने का पूर्ण प्रयत्न करना पड़ेगा। हमारे ट्रैवलिंग एजेंट बनने में उनका यही मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

(२) माला की पुस्तकों पर % और महिलोपयोगी तथा बालकोपयोगी सस्ती पुस्तकों पर भी % कमीशन एजेंटों को दिया जायगा। इनमें से कोर्स की पुस्तकों पर % ही। माल हिंदुस्थान-भर में पहुँचता हुआ दिया जायगा।

(३) ५०) मासिक की पुस्तकें खपानेवाले एजेंट ही ऊपर लिखे कमीशन के अधिकारी होंगे। प्रत्येक नई पुस्तक की ५-५ प्रतियाँ बेचने की चेष्टा करनी चाहिए।

(४) अधिक पुस्तक का बोझ अपने साथ रखना एजेंटों के लिये असुविधा-जनक है। अतएव उन्हें पुस्तकों के ऑर्डर लेकर भेजने में ही सुविधा होगी। हमारी पुस्तकों के जो ऑर्डर उनके द्वारा प्राप्त होंगे, उन पर उन्हें ऊपर (पैरा २ में) लिखे अनुसार कमीशन * दिया जायगा, और बाहरी पुस्तकों के ऑर्डरों पर हमारी कमीशन सूची के अनुसार।

(५) एजेंटों से बाहरी पुस्तकें बिकवाना हमारा उद्देश्य नहीं है। इसलिये जिन पुस्तकों में हमें रुपया लगाना पड़ता है, उन्हें नक़द ही एजेंटों को मँगाना होगा।

(६) २५) जमा हो जाने पर एजेंटों को उन्हें फ़ौरन् कार्यालय को भेज देना पड़ेगा। हिसाब प्रति तीसरे मास करना होगा।

(७) प्रत्येक एजेंट को अपना १५ दिन का प्रोग्राम पहले ही से भेजना होगा, और हर तीसरे दिन अपने समाचार देने होंगे। प्रति सप्ताह बिकी हुई पुस्तकों का हिसाब भी भेजना होगा।

(८) एजेंटों को, ज़मानत के तौर पर, कम-से-कम १००) नक़द जमा करने होंगे। कार्यालय में एजेंटों का जो रुपया ज़मानत के तौर पर जमा रहेगा, उस पर उन्हें ॥) सैकड़ा मासिक के हिसाब से ब्याज भी मिलेगा। १००) नक़द जमा न कर सकने पर २००) की लिखित ज़मानत किसी ऐसे प्रतिष्ठित सज्जन से दिलाई जा सकती है, जिसे कार्यालय स्वीकार कर सके।

(९) जिस एजेंट का जितना अधिक रुपया कार्यालय में जमा रहेगा, उसे उतने ही अधिक मूल्य की पुस्तकें दी जा सकेंगी। आगे चलकर ईमानदारी से काम करने पर, यदि कार्यालय का उन पर विश्वास हो जायगा, तो उन्हें ज़मानत से ज़्यादा की पुस्तकें भी दी जा सकेंगी।

(१०) एजेंट उस समय तक किसी दूसरे का काम नहीं कर सकेंगे, जब तक उनका संबंध इस कार्यालय से रहेगा।

(११) माला के स्थायी ग्राहक बनाने पर प्रति ग्राहक के हिसाब से दिया जायगा।

(१२) सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका सुधा के ग्राहक बनाने पर फ़िलहाल इस प्रकार कमीशन दिया जायगा—

	मूल्य	कमीशन
सुधा राजसंस्करण	वार्षिक	१२)
,, साधारण	वार्षिक	६)
,, सस्ता	वार्षिक	४)
सुधा प्रतिअंक		।)

(१३) जो पुस्तकें न बिकेंगी, वे तीन मास के भीतर ही अच्छी दशा में लौटाए जाने पर वापस ले ली जायँगी; पर तु उनके लौटाने का ख़र्च एजेंटों के ज़िम्मे रहेगा।

(१४) एजेंटों द्वारा प्राप्त ऑर्डरों की वी० पी० वापस हो जाने पर उनका डाक-ख़र्च और रेल-भाड़ा एजेंटों को देना पड़ेगा।

* इसमें वह कमीशन की रक़म सम्मिलित रहेंगी, जो वे ग्राहकों को देंगे।

(१५) जी लगाकर अच्छा काम करके जो एजंट एक वर्ष में हमारी क्लास—अर्थात् कार्यालय द्वारा प्रकाशित—पुस्तकें १०००) की बेचेंगे, गंगा-पुस्तकमाला के ५० स्थायी ग्राहक तथा सुधा के भी ५० ग्राहक बनावेंगे, और गंगा-पुस्तकमाला या सुधा को लाभ पहुँचानेवाला अन्य कोई कार्य करेंगे, उन्हें उपर्युक्त कमीशन और पारिश्रमिक के अलावा एक भारी रक़म, इनाम के रूप में, दी जायगी, जो ५०) से लेकर २००) तक की होगी।

(१६) कमीशन के निर्धारित रेट में कमी-बेशी करने तथा इन नियमों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने का अधिकार कार्यालय को रहेगा।

ऊपर लिखे सब नियम मैंने पढ़कर समझ लिए हैं, और वे मुझे स्वीकार हैं। रुपए १००) (सौ) ता० .....को भेजे हैं। जमा कीजिएगा। साथ लगे ऑर्डर के अनुसार पुस्तकें फ़िलहाल भिजवा दीजिए। मेरा परिचय इसके दूसरी ओर है।

स्थान.....
ता०.....

एजेंट के हस्ताक्षर

प्राकृतिक चिकित्सा-विज्ञान

[लेखक, श्रीनर्मदाप्रसाद श्रीवास्तव]

जल-चिकित्सा पर एक सरल, अलौकिक और प्रमाणिक ग्रंथ। वर्षों के कठिन परिश्रम का परिणाम। चिकित्सकों और समाचार-पत्रों द्वारा प्रशंसित। काग़ज़ ३२ पौंड ऐंटिक। पृष्ठ १६८ + ८ = १७६। दाम १ रु० १२ आने; डाक-महसूल ७ आने। चार प्रतियाँ एक साथ लेने पर डाक-व्यय माफ़। आज ही ऑर्डर भेजिए। सभी पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्त।

पता—मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

योरप में सात मास

लेखक—श्रीधर्मचंद सरावगी

लेखक महोदय स्वाभाविक जिज्ञासुओं में हैं, इसलिये इन्होंने काफ़ी छान-बीन करके अनेकों जाननेवाली बातों को खोज निकाला है, और साथ में मुख्य-मुख्य स्थानों के चित्र भी लेते गए हैं, जिससे पुस्तक और भी उपयोगी बन गई है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको ऐसा ज्ञात होगा, मानो आप इस समय योरप भ्रमण कर रहे हैं। ३२४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २॥)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहेली-पूर्तिकार ध्यान दें

सुधा के पुराने अंक

चौथाई मूल्य में

अक्सर देखा गया है कि पहेली भरनेवालों को पहेलियों के कूपनों के लिये सुधा के प्रत्येक अंक की तीन-तीन, चार-चार, आठ-आठ प्रतियाँ खरीदनी पड़ती हैं, पर वे पहेली भरने के बाद बेकार हो जाती हैं, क्योंकि उन सबमें एक ही लेख और चित्र रहते हैं। उनकी सहूलियत के लिये हमने सुधा के नीचे लिखे अंकों में भी यही तृतीय पहेली लगा दी है। अब जो चाहें, नवीन अंक की कई प्रतियाँ ।)-।) में न खरीदकर इस सूची में से जो पिछले अंक पसंद करें, वह =), =) आने में मँगा लें। पहेली भरनेवालों से इनका मूल्य केवल =) ही लिया जायगा, यद्यपि ।।)-॥=) है, आगा है। ग्राहक इससे लाभ उठाएँगे, और मनमाने अंक खरीदेंगे। इस तरह गत १० वर्षों की सुधा का सुंदर सेट भी, उनके पास, उनके और उनकी स्त्री-बच्चों के लाभ के लिये, धीरे-धीरे तैयार हो जायगा।

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली पहेली-पूर्ति-दाम	कारों से	पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली पहेली-पूर्ति-दाम	कारों से
१	अगस्त	१९२७	॥=)	=)	२५	अगस्त	१९२९	॥=)	=)
२	सितंबर	,,	,,	,,	१६	सितंबर	,,	,,	,,
३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,	२७	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
४	नवंबर	,,	,,	,,	२८	नवंबर	,,	,,	,,
६	जनवरी	१९२८	,,	,,	३१	फ़रवरी	१९३०	,,	,,
७	फ़रवरी	,,	,,	,,	३२	मार्च	,,	,,	,,
८	मार्च	,,	,,	,,	३३	एप्रिल	,,	,,	,,
९	एप्रिल	,,	,,	,,	३४	मई	,,	,,	,,
१०	मई	,,	,,	,,	३५	जून	,,	,,	,,
११	जून	,,	,,	,,	४२	जनवरी	१९३१	,,	,,
१२	जुलाई	,,	,,	,,	४३	फ़रवरी	,,	,,	,,
१४	सितंबर	,,	।।।)	=)	४४	मार्च	,,	,,	,,
१५	ऑक्टोबर	,,	॥=)	=)	४५	एप्रिल	,,	,,	,,
१६	नवंबर	,,	,,	,,	४७	जून	,,	,,	,,
१७	दिसंबर	,,	,,	,,	४८	जुलाई	,,	,,	,,
१८	जनवरी	१९२९	,,	,,	५१	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
१९	फ़रवरी	,,	,,	,,	५२	नवंबर	,,	,,	,,
२०	मार्च	,,	,,	,,	५३	दिसंबर	,,	,,	,,
२१	एप्रिल	,,	,,	,,	५५	फ़रवरी	१९३२	,,	,,
२२	मई	,,	,,	,,	५९	जून	,,	,,	,,
२३	जून	,,	,,	,,	६०	जुलाई	,,	,,	,,
२४	जुलाई	,,	,,	,,	६१	अगस्त	,,	,,	,,

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्तिकारों से
६२	सितंबर	१९३२	॥=)	=)
६३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
६४	नवंबर	,,	,,	,,
६५	दिसंबर	,,	१॥)	॥)
६६	जनवरी	१९३३	॥=)	=)
६७	फ़रवरी	,,	,,	,,
६८	मार्च	,,	,,	,,
६९	एप्रिल	,,	,,	,,
७०	मई	,,	,,	,,
७१	जून	,,	,,	,,
७२	जुलाई	,,	,,	,,
७३	अगस्त १	,,	,,	,,
७४	अगस्त १६	,,	,,	,,
७५	सितंबर १६	,,	,,	,,
७७	ऑक्टोबर १	,,	,,	,,
७८	ऑक्टोबर १६	,,	।॥), ।=)	≡)
७९	नवंबर १	,,	।)	–)॥
८०	,, १६	,,	,,	,,
८१	दिसंबर १	,,	,,	,,
८२	दिसंबर १६	,,	,,	,,
८३	जनवरी १	३४	,,	,,
८४	,, १६	,,	,,	,,
८५	फ़रवरी १	,,	≡)	,,
८६	,, १६	,,	,,	,,
८७	मार्च १	,,	,,	,,
८८	,, १६	,,	,,	,,
८९	एप्रिल १	,,	,,	,,
९०	,, १६	,,	,,	,,
९१	मई १	,,	,,	,,
९२	,, १६	,,	,,	,,
९३	जून १	,,	,,	,,
९४	,, १६	,,	,,	,,
९५	जुलाई १	,,	,,	,,
९६	,, १६	,,	,,	,,
९७	अगस्त	,,	।)	,,

पूर्ण सं०	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्तिकारों से
९८	अगस्त १६	३४	।)	–)॥
९९	सितंबर १	,,	,,	,,
१००	नवंबर	,,	,,	,,
१०१	दिसंबर	,,	,,	,,
१०२	जनवरी	१९३५	,,	,,
१०३	फ़रवरी	,,	,,	,,
१०४	मार्च	,,	,,	,,
१०५	एप्रिल	,,	,,	,,
१०६	मई	,,	,,	,,
१०७	जून	,,	,,	,,
१०८	जुलाई	,,	,,	,,
१०९	अगस्त	,,	॥=)	=)
११०	सितंबर	,,	।=)	,,
१११	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
११२	नवंबर	,,	,,	,,
११३	दिसंबर	,,	,,	,,
११४	जनवरी	१९३६	॥)	,,
११५	फ़रवरी	,,	,,	,,
११६	मार्च	,,	।–)	,,
११७	एप्रिल	,,	,,	,,
११८	मई	,,	,,	,,
११९	जून	,,	,,	,,
१२०	जुलाई	,,	,,	,,
१२१	अगस्त	,,	,,	,,
१२२	सितंबर	,,	,,	,,
१२३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
१२४	नवंबर	,,	,,	,,
१२५	दिसंबर	,,	,,	,,
१२६	जनवरी	१९३७	,,	,,
१२७	फ़रवरी	,,	,,	,,
१२८	मार्च	,,	,,	,,
१३०	मई	,,	,,	,,
१३१	जून	,,	,,	॥)
१३३	अगस्त	,,	२)	

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै सभै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष ११ खंड १	मार्गशीर्ष, ३१५, तुलसी-संवत् (१९९४ वि०)— दिसंबर, १९३७	संख्या ५ पूर्ण संख्या १३७

गति

[श्रीयुत वचनेश]

प्यारे! तुम काया, हम छाया;
कुछ भी करो, नहीं छुट सकते, चलेगी एक न माया।
मान लिया, तुम दिव्य रूप हो, हमने तम-तन पाया,
पर अछूत हम नहीं, न जावे तुमसे चरण छुड़ाया।
कर्म, भाव सब सत्त्व तुम्हारा, जो कछु हममें आया;
कुछ भी नहीं, किंतु हम दरसे, तुमने ही दरसाया।
खीज रहे, तो छिपो न हमसे, प्रकटो ज्योति-निकाया:
चरणों में 'वचनेश' विलय हो रहे न तम नतु काया।

कुंदमाला-नाटक की समालोचना

[प्रो० कैलासनाथ भटनागर एम्० ए०, सनातन धर्म-कॉलेज, लाहौर]

[इस लेख में लेखक ने कुंदमाला-नाटक के गुण-दोषों का निरूपण किया है। नाटक की विस्तार-पूर्वक कथा लेखक की 'नाट्यसुधा' (इंडियन प्रेस द्वारा प्रकाशित) पुस्तक में दी गई है। इस नाटक का गद्य-पद्यमय हिंदी-अनुवाद भी छप चुका है। संस्कृत नाटक आगरा-युनिवर्सिटी की बी० ए० और पंजाब की एफ़्० ए०-परीक्षाओं के लिये नियत है। हिंदी-अनुवाद पंजाब की भूषण-परीक्षा में पाठ्य पुस्तक है।—संपादक]

कुंदमाला - नाटक का नाटककार दिङ्नाग है। कई विद्वानों का मत है कि दिङ्नाग कालिदास के पश्चात् हुआ। पहले कुछ विद्वान् मानते थे कि यह कालिदास का समकालीन है। कुछ विद्वान् इस मत के विरुद्ध हैं (ए० बी० कीथ)। कुछ विद्वान् कहते हैं कि यह सातवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी में हुआ था (डॉ० ए० सी० बुलनर-कृत कुंदमाला का अँगरेज़ी-अनुवाद)। अस्तु। हमें यहाँ नाटककार के काल से प्रयोजन नहीं, बल्कि हम कुंदमाला-नाटक के गुण-दोषों पर, संक्षेप रूप में, विवेचन करना चाहते हैं।

कुंदमाला-नाटक की कथा का आधार रामायण का उत्तर-कांड है। नाटककार ने मूल-कथा में कई परिवर्तन किए हैं। इनसे हम नाटककार की बुद्धि परख सकते हैं। पहले हम उन परिवर्तनों पर लिखते हैं, जो इस नाटक के गुण हैं—

(१)

मूल-कथा में लक्ष्मण सीता से कहते हैं—"आपने महाराज से यह वर माँगा था, और राजा (राम) ने आपसे प्रतिज्ञा की थी, अतएव उन्होंने मुझे आपको आश्रम ले जाने के लिये आज्ञा दी है।" (रा०, उ०, ४६ - ७) इस उद्धरण से यह स्पष्ट नहीं होता कि सीता गर्भवती हैं, उनकी दोहद-पूर्ति के लिये राम ने उन्हें लक्ष्मण से आश्रम ले जाने के लिये कहा है। इससे पूर्व राम ने लक्ष्मण से कहा है—"कल प्रातःकाल सुमंत्र द्वारा संचालित रथ पर सीता को बैठाकर देश से बाहर छोड़ दो। गंगा के पार तमसा-तीर पर महात्मा वाल्मीकि का आश्रम है। वहाँ निर्जन स्थान पर लक्ष्मण, सीता को छोड़कर शीघ्र लौट आओ। मेरी आज्ञा मानो। ·· मुझसे सीता ने पहले कहा था कि गंगा-तीर पर मुझे आश्रम देखने की इच्छा है, अतएव उसका यह मनोरथ पूर्ण करो।" (रा०, उ०, ४५—१६-१८, २३)

इस उद्धरण में राम ने यह कहीं भी उल्लेख नहीं किया कि सीता ने आश्रम देखने की दोहद-इच्छा प्रकट की है। अतएव इस बहाने से तुम उसे वहाँ ले जाओ। केवल इच्छा का उल्लेख है। संभव है, सीता को गर्भवती हुए थोड़े ही दिन हुए हों, और लक्ष्मण को इस बात की सूचना अभी न मिली हो। और, लज्जा-वश राम ने भी इस विषय पर कुछ कहना उचित न समझा हो। हम इस विचार की पुष्टि के लिये सीता के वचन उद्धृत करते हैं—"तुम मुझे देखकर जाओ, मेरा ऋतु-काल बंद हो चुका है, अर्थात् मैं गर्भवती हूँ।" इस पर दुखी हो लक्ष्मण ने पृथ्वी पर सिर झुकाकर सीता को प्रणाम किया, परंतु कुछ बोल न सके। रोते हुए ही उनकी प्रदक्षिणा करके और क्षण-भर विचार-कर बोले—"शोभने ! निष्पापे ! मैंने पहले आपका रूप नहीं देखा, चरण देखे हैं। सो मैं यहाँ राम से रहित तुम्हें वन में क्योंकर देखूँ ?" (रा०, उ०, ४८—१६-२१)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सीता यहाँ "तुम मुझे देखकर जाओ……" इसलिये कहती हैं कि कहीं बाद में कोई और कलंक न लग जाय ; कलंक यह कि मैं वन में गर्भवती कैसे हुई ?

सीता को राम ने अभी दो दिन पहले ही गर्भ के लक्षणों से युक्त जाना था, और तब बाद में वह मित्रों के साथ मध्य भवन में चले गए। और किसी को सीता के गर्भवती होने का पता ही न था। (रा०, उ०, ४२—३०-३६) यहाँ मध्य भवन में दुर्मुख नाम का दूत राम को सूचना देता है कि सीता के रावण-गृह में निवास के कारण जनता में लोकापवाद फैल रहा है। तत्काल रामचंद्र भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न को बुलाकर इस लोकापवाद की सूचना देते और लक्ष्मण को आज्ञा देते हैं कि कल प्रातःकाल सीता को महात्मा वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आओ। इस क्रम से यह विदित होता है कि गृह के अन्य जनों को सीता की गर्भावस्था ज्ञात न थी। तभी तो सीता कहती हैं—"तुम मुझे देखकर जाओ।"

अस्तु। नाटककार ने कुंदमाला-नाटक में इस झगड़े को ही समाप्त कर दिया है। उसने पहले ही सूत्रधार द्वारा कहलवा दिया है—"यह बहुत कारुणिक है। लक्ष्मण गर्भ से भारी हो रही सीता को वन के लिये लिए जा रहा है……।" नाटककार ने दर्शक जनों का हृदय द्रवीभूत करने के लिये सीता से "अधिक दिनों के गर्भ-भार को उठाने से मेरे पैर असमर्थ हो रहे हैं।" ऐसा कहलवाया है। नाटककार ने इस प्रकार सीता के "तुम मुझे देखकर जाओ।" इत्यादि वचन कहने का अवसर ही हटा दिया है।

(२)

मूल-कथा में राम लक्ष्मण द्वारा सीता को कोई संदेश नहीं भेजते। नाटककार ने यहाँ परिवर्तन किया है। संदेश यह है—

"मैं जानता हूँ कि तुम कुल में मेरे तुल्य हो, तुम गुणवती हो, सौंदर्य आदि गुणों की खान हो, दुःख-सुख में चिरकाल से संगिनी हो। (परंतु) सीता ! मैं तुम्हें लोकापवाद के भय से त्यागता हूँ, न कि किसी दोष के कारण।" (कु०, १—१२)

और "तुम देवी ! मेरा मन-मंदिर हो, गृह की देवी हो; तुम ही सुतनों में आनेवाली मेरी शयन-सहचरी हो। किसी अन्य पत्नी के लाने के लिये मेरी इच्छा नहीं है। यज्ञ में तुम्हारी मूर्ति मेरी धर्म-पत्नी होगी।" (कु०, १—१४)

इस परिवर्तन के द्वारा नाटककार ने अच्छी चतुराई दिखाई है। संदेश के दूसरे भाग से सीता के हृदय को तनिक शांत किया है, तभी तो सीता संदेश सुनकर कहती हैं—"इस प्रकार संदेश देकर महाराज ने मेरे त्याग देने से मुझे घेर रहे दुःख को सर्वथा हर लिया है।"

संदेश का पहला भाग सुनकर सीता दुखी होती और कहती हैं—"किंतु क्या उसी निठुर के समान निठुर संतान की मुझे रक्षा नहीं करनी चाहिए, अपवाद-रूपी काँटों से बिधा हुआ जीवन रक्षा करती हूँ।" यहाँ सीता राम को 'निठुर' कहती हैं, परंतु नाटककार ने राम द्वारा "तुम देवि !…" कहलवाकर राम की निठुरता को न्यून करने का प्रयत्न किया है। सीता भी राम के इन वचनों पर मुग्ध हो जाती हैं। मूल-कथा में सीता 'निठुर'-जैसे शब्द राम के लिये नहीं कहतीं। सीता ने यहाँ नाटक में 'निठुर' कहकर पुकारा है, अतएव "तुम देवि !…" की आवश्यकता हुई। इस संबोधन से सीता को धैर्य ही न बँधा, वरंच राम का चरित्र भी उच्च हो गया।

(३)

सीता द्वारा राम को 'निठुर' कहलवाकर नाटककार ने सीता से उसका प्रतिशोध करवाया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जब लक्ष्मण कहते हैं कि इस संदेश से राम को असह्य क्लेश होगा, तब सीता का नारीत्व जाग्रत् हो जाता है। वह कहती हैं—"अति महान् राज्य होने पर भी वह कैसे रहेंगे, स्त्रियाँ दुख की साथिनी होती हैं। अब मेरे बिना तुम अकेले ही उनका ध्यान रखना। तुम भाई के शरीर की सावधानी रखना।"

इस वचन की प्रशंसा लक्ष्मण भी करते हैं। वह कह उठते हैं—"यह वचन आपकी उदारता के अनुकूल है।"

ऐसा करने से सीता का चरित्र उच्च हो गया है। इन परिवर्तनों द्वारा नाटककार ने कथा को रोचक भी बना दिया है।

(४)

मूल कथा में संदेश सुनाकर सीता जब लक्ष्मण को "आज मुझे देखकर जाओ, मेरा ऋतुकाल ..." कहती हैं, और लक्ष्मण भी उपर्युक्त उत्तर देते हैं, तब लक्ष्मण स्वयं सीता को प्रणाम करके, नाव पर चढ़कर वापस चले जाते हैं। इस प्रकार लक्ष्मण के चरित्र पर बट्टा लगता है। क्या लक्ष्मण इतने निर्मोही थे, इतने जल्दबाज़ थे कि झट से लौटने की ठानी? नाटककार ने लक्ष्मण को सीता द्वारा अनुमति देकर लौटाया है। और, जाने से पहले लक्ष्मण सीता से प्राण धारण किए रहने की प्रार्थना करते हैं, अपने अपराध की क्षमा माँगते हैं, और लोकपाल, भागीरथी तथा देवताओं से सीता की रक्षा के लिये अनुरोध करते हुए वापस चले जाते हैं। ऐसा परिवर्तन करने से नाटककार ने लक्ष्मण का चरित्र भी उच्च बना दिया है।

(५)

मूल-कथा में वाल्मीकि जब सीता के रोने की सूचना पाते हैं, तभी वह अपने तपोबल से सब वार्ता जान लेते हैं। तब वह सीता के पास आकर उन्हें अपने साथ आश्रम ले जाते हैं। नाटकीय कथा में वाल्मीकि वन-कुमारों के कथन-मात्र से ही इधर आ निकलते हैं कि देखूँ, कौन दुखिया है। उन्हें यह विदित नहीं होता कि यह सीता हैं या और कोई स्त्री। न वाल्मीकि ही अपना परिचय देते हैं, जिससे सीता समझ लें कि आगंतुक कौन है? मूल-कथा में वाल्मीकि अपना नाम पहले ही बतला देते हैं, जिससे सीता को आगंतुक का भय जाता रहे। पर नाटककार ने इस प्रकार कुछ काल तक रहस्य रखकर कथा में रोचकता बढ़ा दी है।

(६)

दूसरे अंक से लेकर चौथे अंक तक नाटककार ने सब अपनी कल्पना-शक्ति से काम लिया है। दूसरे अंक में सखी वेदवती भी नाटककार की सूझ का परिणाम है। वेदवती द्वारा नाटककार ने दिखाया है कि निर्वासित हो जाने पर भी सीता राम के लिये कैसी प्रेम-रत हैं, तथा उनके अटूट अनुराग की दृढ़ आशा में बँध रही हैं। सीता का आदर्श, जो रामायण में सीता ने कहा, "पति ही स्त्रियों का देवता है, पति बंधु है, और गुरु है।" वह नाटककार ने प्रत्यक्ष दिखा दिया है।

जब वेदवती कहती है कि अश्वमेध-यज्ञ के लिये राम को शीघ्र ही पाणि-ग्रहण करना पड़ेगा, तब सीता का उत्तर अत्यंत सुंदर है। वह कहती हैं—"आर्यपुत्र के हृदय पर मेरा प्रभाव है, न कि हाथ पर।" अर्थात् यद्यपि वह विवाह कर लेंगे, तथापि हृदय की अधिष्ठात्री मैं ही रहूँगी।

इस अंक में नाटककार ने यह भले प्रकार दिखा दिया है कि पति द्वारा निर्वासित पत्नी की—सीता-सदृश साध्वी रमणी की—कैसी दशा होती है। संतान-मोह स्त्री के लिये अमोघ बाण है। परंतु सीता के लिये यह भी व्यर्थ प्रमाणित होता है। सीता की यह स्थिति देखकर वेदवती कहती है—"आह! यह कितनी तीव्र नृशंसता है कि बाल-बच्चों-वाली सीता की यह दशा हो रही है!"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस अंक के लिखने में नाटककार सर्वथा सफल हुआ है। पति द्वारा निर्वासित होकर भी स्त्री पति-प्रेम में कैसे रत रहती है, यह दिखाकर हिंदू-नारी का नारीत्व खूब चमक उठा है।

(७)

तीसरा अंक भी नाटककार की अपनी कल्पना-शक्ति का परिणाम है। मूल-कथा में इसका कुछ आधार नहीं। पहले अंक के अंत में नाटककार ने सीता से यह कहलवाया है कि सकुशल प्रसव होने पर भगवती भागीरथी को प्रतिदिन सुंदर गूँथी हुई कुंद-पुष्पों की माला चढ़ाया करूँगी। उस बीज का फल इस अंक में दिखाया गया है। राम गोमती-नदी में बहती हुई कुंद-पुष्पों की माला के गूँथन को देखकर अनुमान करते हैं कि यह सीता की गूँथी हुई माला है। परंतु सीता जीवित हैं या नहीं, यह शंका उन्हें घेर लेती है। तब भी राम-लक्ष्मण दोनो उस कुंदमाला के उद्गम-स्थान की ओर नदी के ऊपर जाते हैं। वहाँ रेते में पद-चिह्न देखकर राम कहते हैं कि ये सीतादेवी के पद-चिह्न हैं। "पैरों की अवस्थिति एक समान है, रचना गहरी (अथवा अत्यंत) सुंदर है, उसके पैर की रेखाओं से बना कमल वैसा ही सुंदर तिलक है। जैसे इसे देखकर मुझ शोक संतप्त का हृदय खिचता है, वैसे ही इस स्थान पर महारानी ने अभी-अभी पद-पंक्ति रक्खी है।" (कुं०, ३ — ११)

दूसरे अंक में नाटककार ने राम के वियोग में राम द्वारा निर्वासित सीता की दशा का वर्णन किया है। तीसरे अंक में नाटककार ने सीता के वियोग में सीता को निर्वासित करनेवाले राम की दशा दिखाई है। अंक के अंत में एक ही स्थल पर दोनो की दशा वर्णन की है। राम को देखकर सीता की जो दशा होती है, उसे नाटककार ने बड़ी निपुणता से कहा है—

"सीता—(देखकर) अहो! देख लिया है, इसलिये तृप्ति है; चिरप्रवास देने के कारण क्रोध है; यह दुबले हो रहे हैं, इसलिये व्याकुलता है; निर्दय हैं, इसलिये अभिमान है; चिरकाल से परिचित हैं, इसलिये अनुराग है; सुंदर हैं, इसलिये दर्शन की लालसा है; मेरे स्वामी हैं, इसलिये मान है; कुश-लव के पिता हैं, इसलिये गृहिणी भाव हैं; मुझे अपराध लगाया है, इसलिये मुझे लज्जा होती है। मैं नहीं जानती कि आर्यपुत्र के दर्शन से मैं किस अवस्था का अनुभव कर रही हूँ।"

यह वर्णन अति सुंदर है, और नाटककार की रचना का उत्कृष्ट उदाहरण। राम की असह्य वेदना द्वारा नाटककार ने भली भाँति दिखा दिया है कि उन्हें सीता का वियोग कितना असह्य था, परंतु प्रजानुरंजन के कारण ऐसी प्रिया का भी त्याग करना पड़ा। राम के आंतरिक भावों से परिचित होकर सीता कह उठती है—"आर्यपुत्र! ऐसा मत कहिए। वह व्यक्ति शोचनीय नहीं, जो अपने प्रियजन द्वारा इस प्रकार स्मरण किया जाता है।"

(८)

पाँचवें अंक में नाटककार ने राम का सीता के प्रति प्रेम वर्णन किया है। नाटककार ने दिखाया है कि राम सीता के प्रति प्रेम को किस प्रकार गुप्त रक्खे हुए हैं। राम कहते हैं—"मैं बाहर से कठोर हूँ, परंतु (सीता के प्रति) मेरा अनुराग कमलनाल के गुप्त तंतुओं के समान कोमल है।"

नाटककार ने यह उपमा देकर बड़ी चतुराई से राम का सीता के प्रति प्रेम प्रकट किया है।

(९)

मूल-कथा में लिखा है कि कुश-लव दोनो तापस-कुमारों को देखकर मुनि तथा पराक्रमी राजा लोग उन्हें बारंबार देखने लगे, मानो वे उन्हें पी रहे हों। वे सब आपस में कहने लगे कि ये दोनो राम के सदृश हैं। बिंब-प्रतिबिंब के समान

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हैं। यदि ये जटाधारी और वल्कलधारी न हों, तो रामचद्र और इन गायकों में हमें कोई अंतर दिखाई न पड़े। (रा०, उ०, ९४—१२-१४) परंतु राम के विषय में कुछ नहीं कहा। कुछ समय के पश्चात् जब कई दिनों तक वे गान सुनते रहे, तब उन्हें विदित हुआ कि ये दोनो गानेवाले सीता के पुत्र हैं। (रा०, उ०, ९५—१-२)

नाटककार ने नाट्यकला का ध्यान रखते हुए अच्छा किया है कि इस रहस्य का आभास यत्र-तत्र दे दिया है। इसी कारण इस अंक में भी नाट्यकार ने राम और कौशिक के हृदय में यह भाव उत्पन्न कर दिया है कि ये दोनो तापस-कुमार सीता की संतान हैं। तभी तो राम पूछते हैं—"(कौशिक को देखकर) क्या तुम्हें स्मरण है कि सीता को निर्वासित किए कितने वर्ष व्यतीत हो गए ?" और जब कौशिक कहता है कि यह दसवाँ वर्ष है, तो राम कहते हैं—"यदि प्रसव सकुशल हुआ हो, और वह संतान बच रही हो, तो इतने समय में ऐसी अवस्था को प्राप्त हुई होगी।"

कुश-लव द्वारा उनका वर्ण, आश्रम तथा अन्य बातें सुनकर राम की शंका सबल होती है। वह कुश-लव से उनकी माता का नाम पूछने को बाध्य होते हैं, किंतु पर-स्त्री के संबंध में प्रश्न करना उचित न समझकर चुप रहते हैं, और कौशिक यह प्रश्न पूछता है। सब घटना-क्रम सुनकर उन्हें यह विश्वास-सा होने लगता है कि इनका वृत्तांत हमारे कुटुंब के वृत्तांत से मेल खाता है, परंतु कुछ न्यूनता रह जाती है। जब कौशिक पूछता है—"क्या आपका यह अभिप्राय है कि ये कुमार सीता की संतान हैं ?" तब राम की हिम्मत नहीं पड़ती कि 'हाँ' कहूँ। वह कहते हैं—"नहीं, ऐसे मत कहो। हाय ! शोक है, तपोवनवासिनी से मैं ऐसा संबंध कैसे लगा सकता हूँ ?" परंतु तब भी वह इतना कह ही जाते हैं कि "आयु से, वंश से, श्याम वर्ण, उन्नत शरीर और ऐसी विपद् के कारण ये दोनो कुमार मुझे पुत्रवती सीता की अवस्था का स्मरण करा रहे हैं, और मैं अधिक अधीर हो रहा हूँ।" (कुं०, ५—१५)

(१०)

इस अंक के अंत में नाटककार ने मूल-कथा में पुनः परिवर्तन किया है। मूल-कथा में सीता पृथ्वी में समा जाती हैं। नाटककार ने अंत में दुःखदायी घटना न हो, इस कारण सीता को जीवित रक्खा है। पृथ्वी की साक्षी दिलवाकर सीता और राम का पुनर्मिलन करा दिया है। ऐसा करने से नाटकीय नियमों का उल्लंघन नहीं हुआ।

(११)

मूल-कथा के आधार पर राम जब समझ जाते हैं कि ये दोनो तापस-कुमार सीता के पुत्र हैं, तब वह शुद्धाचारी दूतों को बुलाकर बोले—भगवन् वाल्मीकि के पास जाओ, और मेरी ओर से कहो, यदि सीता शुद्ध आचार की हैं, यदि वह निष्पाप हैं, तो महामुनि की अनुमति लेकर अपनी पवित्रता का प्रमाण दें। (पवित्रता के प्रति) विश्वास दिलाने की इच्छा से मुनि की क्या इच्छा है, और सीता का क्या विचार है, यह जानकर मुझसे शीघ्र कहो। कल प्रातःकाल सीता सभा के बीच अपने और मेरे प्रतिशोध के लिये शपथ ले। (रा०, उ०, ९५-२-६)

नाटककार ने यह अंश दूसरे दिन न रखकर साथ ही मिला दिया है, और यह अच्छा ही किया है। हर्ष के अवसर के लिये भला विलंब कैसा ?

(आगामी संख्या में समाप्य)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

काश्मीर का सबसे सुंदर और रमणीक प्रदेश

(पहलगाम का स्वप्नलोक)

[श्रीयुत शिवनारायण टंडन]

प्राकृतिक शोभा की खान पहलगाम का वह पहला, अकेला प्रातःकाल। हाहाकार करती हुई लीयर और आस की वह अपार जल-राशि। पहलगाम या पहलगाँव के चारो ओर घेरा डाले हुई वह गगनचुंबी पर्वत-राशि। हरित गिरि-शृंगों के बीच-बीच में जड़ी हुई, शीशे-सी उज्ज्वल वह स्फटिक हिम-राशि और शबनम के बेशुमार अनमोल मोतियों से पिरोई हुई हरी-भरी दूब की वे फुनगियाँ, ओस के भार को न सँभाल सकनेवाली वे कोमल, कमसिन कलियाँ और हाँ, खिले हुए, हँसते हुए, सुगंध उड़ाते हुए, ख़ुशनुमा फूलों पर मड़राती रहनेवाली वे प्यारी-प्यारी तितलियाँ भला क्या बखान की जा सकने की चीज़ें हैं।

प्रातःकाल—उस आनंदमय प्रातःकाल में, जब चीड़ों की भीनी-भीनी ख़ुशबू सारे वातावरण में छाई हुई थी, देवदार की पतली-पतली पत्तियाँ मोरपंखियों के समान उड़-उड़कर रफ़्ता-रफ़्ता धरती पर गिर रही थीं सूर्य की इक्का दुक्का किरणें पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों को चूम रही थीं, सूर्य उदयाचल से उदित हो शनैः-शनैः सर्वोच्च शिखर पर विराजमान हो गया। जैसे कोई दिग्विजयी सम्राट् महल के सबसे ऊँचे झरोखे से जन-मानवों को दर्शन दे रहा हो, या जैसे कोई स्वामी अपने सेवकों की विशाल फ़ौज के कार्य-कलापों का, स्थिर और अस्थिर होकर, निरीक्षण और परीक्षण कर रहा हो। सूर्यदेव के स्वर्ण-सिंहासन के चारो ओर नीला वितान तना था। जीवन की उस उजियाली बेला में बादलों के टुकड़े, बाल-प्रहरियों की तरह अंबर के प्रांगण में खेल रहे थे। जैसे-जैसे सूर्य की किरणों के रंग क्षण-प्रति-क्षण बदलते थे, वैसे-वैसे वे बाल-सुलभ चांचल्य से अपनी वेश-भूषा में परिवर्तन कर लेते थे। कभी लाल, कभी नारंगी, कभी पीले और कभी इंद्र-धनुषी वसनों में कैसे सुंदर दिखाई देते थे, वे देखते-देखते बाल-रवि की ताँबे-जैसी लाली गुलाबी रंग में रँग गई, और फिर वह रंगीन किरणावली दूध से धोई हुई चाँदनी की शक्ल में परिवर्तित हो पहलगाँव के सारे संसार पर बिखर गई। आस-पास की धूमिल पहाड़ियाँ, जो भोर के गर्भकाल तक काला बुरक़ा ओढ़े थीं, रौनक़ से उजागर हो गईं। उनमें गरमाहट आ गई।

निशा का अवसान हुआ जान घोसलों में दुबके हुए सुंदर सलोने पखेरू फट फटाकर उठ बैठे, और अपने सुरीले कंठों से प्रभाती गान गाने लगे। कैसे रंग-बिरंगे थे वे, कैसा मधुर था उनका कलरव, और कैसी मिश्री घुली हुई थी उनकी वाणी। उनके बच्चे, कोमल किशलय-से नन्हे-नन्हे छौने, रात-भर की भूख-प्यास के मारे, चहचहा-चहचहाकर जतलाने लगे कि "हमें बड़ी भूख लगी है।" मा-बाप, हमारी दुनिया के वे अनबोल, असभ्य पक्षी, अपने बच्चों की तोतली बोली पर न्यौछावर हो गए। प्यारी अम्मी ने सबकी बारी-बारी से चुम्मी ली, और अब्बा ने अपनी चोंच से सहला-सहलाकर उन्हें ज़रा-सा सब्र रखने की सीख

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दी। थोड़ी ही दूर पर तरह-तरह के मेवों का सरकारी बाग़ लगा था। पक्षीगण अपनी ऊँची अटारियों से उतरकर उसी बाग़ में घुस गए; ऐसे बेखटके, बे-पूछे घुस गए, मानो उन्हीं का अपना बाग़ हो। और, जब वहाँ से लौटे, तब आड़ू और सेब के गूदे उनके मुँहों में भरे थे। बच्चे उधर ही टकटकी लगाए बैठे थे। वे ज़रा-ज़रा आगे खिसकने और हो-हल्ला मचा-मचाकर कहने लगे कि "हम पहले खायँगे", "हम पहले खायँगे।" पेट भरने के बाद वे आबाल-वृद्ध-वनिता स्वर-में-स्वर मिलाकर गायन-वादन में मशग़ूल हो गए, मानो वे मानव नामधारी प्राणी से गा-गाकर कह रहे थे कि उठो, अब भोर हो चुका है—"जो सोवत है, सो खोवत है; जो जागत है, सो पावत है।" पक्षी आपस में बातें करते थे कि हम जैसे सुखी हैं, हम जैसे गाते हैं, और हम जैसे भोर ही उठ जाते हैं, वैसे ये सभ्यता और बड़प्पन के अभिमानी मनुष्य क्यों नहीं सुख उठाते, क्यों नहीं गाते-बजाते और सूर्य की किरणें प्रस्फुटित होने से पहले उठकर क्यों नहीं गोविंदजी के गीत गाते। वे बेचारे अबोध पक्षी क्या जानें कि मनुष्य के भाग्य में सुख और संतोष बदा ही नहीं। संसार के कंटकाकीर्ण पथ में चलते-चलते उसके पैरों में इतने काँटे चुभ गए हैं, और कलेजे में इतने घाव हो गए हैं कि उनकी मरहम-पट्टी करने, सुखाने और सुहलाने ही में उसके जीवन के महत्त्व-पूर्ण अंश बीत जाते हैं।

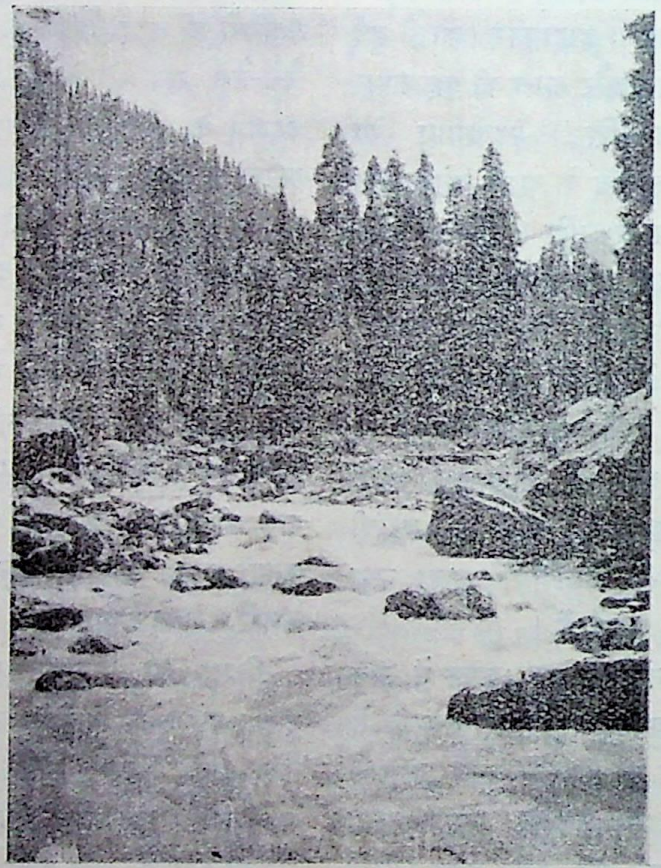

पहलगाम का मनोहर दृश्य

पहलगाँव से चंदनवाड़ी को जो रास्ता जाता है, उसके दृश्य अद्भुत और अनुपम हैं। कँकरीला-पथरीला वह टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता जितना ही ऊँचा-नीचा है, उतना ही हरा-भरा और प्राकृतिक दृश्यों से ओत-प्रोत। यह स्थान पहलगाम से कोई आठ-नौ मील दूर है, और इसी इलाक़े के अंतर्गत है। हम अपने साथी-संगियों के साथ कोई ८ बजे सुबह इस यात्रा के लिये चल पड़े थे। पहाड़ी टट्टुओं पर आरूढ़ हो हमारा क़ाफ़िला ऐसे चला, जैसे कोई फ़ौज युद्ध-विजय के लिये निकली हो। बाएँ हाथ में रास तथा काठी और दाहने में बल्लम-दार डंडे इस बात की पूरी सूचना दे रहे थे कि हम सब पक्के सवार हैं। पर थोड़ी ही दूर जाने पर एक साथी, रकाब से पैरों के निकल जाने के कारण, घोड़े की पीठ से नीचे ज़मीन पर आ रहा। दूसरे के घोड़े ने आगे बढ़ना ही नामंज़ूर कर दिया। तीसरा इतना तेज़ भागा था कि उसकी पीठ पर हम-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सरीखे नौसिखियों के लिये जमा रहना दुश्वार था। इसी तरह एक-एक करके सभी घोड़ों को हमने छोड़ दिया, और बटालियन बनाकर पैदल का रास्ता पकड़ा।

उस दिन सौभाग्य से बदली छट चुकी थी, और धूप खिली हुई थी। हम लोग समुद्र की सतह से ९,००० फ़ीट की उँचाई पर थे। आस-पास जंगल-ही-जंगल था। घने-घने झुरमुटों से ढके हुए ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे, जिनमें भालू, भेड़िए और चीते रहते हैं। हिंसक जंतुओं के घर इस जंगल में जितनी सुखद शांति देखी, उतनी तो मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों में भी नहीं पाई। प्रकृति के निकट रहने-वाले पशु भी जितने सुख-सौरभ का उपभोग करते हैं, उसका शतांश भी हम मस्तिष्क-धारी नहीं प्राप्त कर पाते। संसार में इतना सुख और आनंद भरा पड़ा है, और हम उससे वंचित हैं! 'पानी में भी मीन पियासी'—लहराते हुए अथाह सुख-सागर में पैठने के बजाय हम दुख-दर्द और मानाभिमान की ताल-तलैयों में डुबकी लगाते फिरते हैं! झींगुर झनझन की झनकारों से मस्ती उत्पन्न करते हैं, चिड़ियाँ गाना गाने में खुश हैं, परिंदे उड़-उड़कर ऊँची-से-ऊँची उड़ानें भरते हैं, फूल खिलते हैं, मुस्किराते हैं, और हँसते हैं। फिर हमी उदासीन क्यों हैं—हमीं ग़मगीन क्यों हैं। आखिर जिस कर्ता की वे कृति हैं, उसी सर्जन-हार की हम भी सृष्टि हैं।

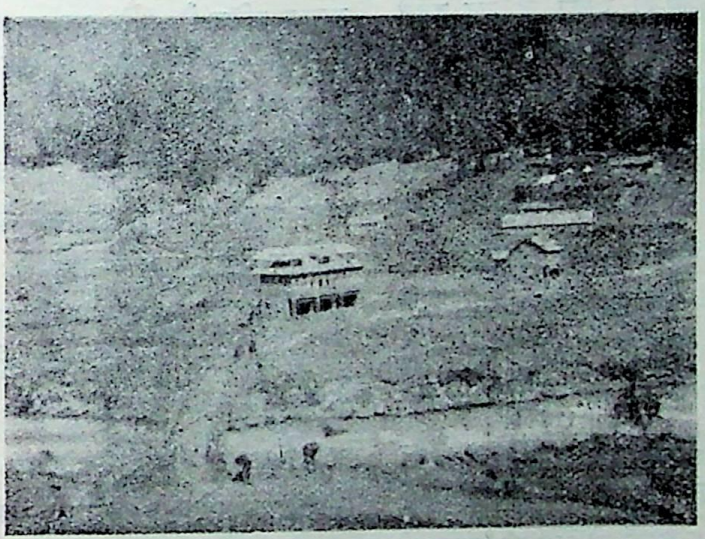

पहलगाम का एक दृश्य

इस घने, हरे-भरे, हिंसक जंतुओं के जंगल में पदार्पण करते ही हम आत्मानंद से विभोर हो जाते हैं, जैसे अपने दुःख-दारिद्र्य का ओवरकोट उतारकर सुख-सौरभ की कमली ओढ़ लिए हों। नेत्रों के सामने ग़ज़ब के नज़्ज़ारे हैं। एक पहाड़ की चोटी से दो झरने झर रहे हैं, जो चाँदी की धार की तरह बहते-बहते नीचे नदी में आ मिले हैं। दूसरे पहाड़ के मस्तक पर बर्फ़ के शिला-खंड जमे हैं, जो मणि-माणिक की तरह दमक-दमककर देखने वाले का मन मोह लेते हैं। जगह-जगह से चश्मे निकल रहे हैं, जिनके किनारे, हरी-हरी दूबों के मैदानों में, गरड़िए अपनी भेड़ों के समूहों को चरा रहे हैं। भेड़ों और बकरों के लंबे-लंबे बाल ज़मीन छूने की कोशिश करते हैं, पर गर्द लग जाने के भय से ऊपर ही उठ जाते हैं। ये सीधे-सादे जानवर पहाड़ी लोगों के लिये एकदम नियामत हैं। इनके ऊन से ये लोग पश्मीना बनाते हैं, तूस बीनते, कम्मल काढ़ते, रस्सियाँ बटते और जाड़ों से बचने के कपड़े बनाते हैं। यात्रा के वक्त इनकी पीठों पर बोझा ढोते हैं। भूख लगने पर भेड़ों को मारकर उनका मांस खा जाते हैं, और खाल के बोरे बना लेते हैं, जिनमें बारिश के वक्त ये लोग

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जिंस भरते हैं। ये भेड़ें इतनी सीधी और ग़ुलाम हैं, जैसे दक़ियानूसी हिंदू-घरों की स्त्रियाँ, जो बग़ैर कान-पूछ हिलाए अपने मालिक की आँख के इशारे पर चलते रहना अपना धर्म समझती हैं। राह के किनारे-किनारे बराबर नदी बह रही है, जिसका तूफ़ानी जल कई जगह प्रपातों का रूप धारण करके बहता है। एक जगह तीन प्रपात वज्र-घोष करते हुए साथ-ही-साथ गिरे हैं। ज्यों-ज्यों चंदनबाड़ी नज़दीक आती जाती है, त्यों-त्यों दृश्य दर्शनीय होते जाते हैं। और, वह चंदनबाड़ी के निकट का बर्फ़ का पुल तो सब दृश्यों में श्रेष्ठ और शोभनीय है। यह पहला ही मौक़ा है, जब इतने बड़े-बड़े हिम-खंडों को मैंने आँखों से देखा, हाथों से छुआ और गालों से रगड़ा है। यहाँ बिलकुल बर्फ़ की गुफाएँ बनी हुई हैं, जिनकी शीतलतामय छाया में निष्कलंक धवलता और आडंबर-हीन सरलता है। जैसे जावा की दानेदार शक्कर होती है, ठीक वैसे ही क़तरों ने मिल-जुलकर एक गुफा बना ली है। हमने आज ही देखा कि मिल्लत में कितनी बड़ी ताक़त है। यदि ये छोटे-छोटे कण ऐक्य-सूत्र में आबद्ध होकर इतना बड़ा गुफा-मंदिर बना सकते हैं, तो क्या हम इतने बड़े-बड़े ३५ कोटि मनुष्य अपने भेद-भावों को भूलकर आज़ादी के अज़ीमुश्शान मंदिर का निर्माण नहीं कर सकते। यहीं, पास ही में, बर्फ़ का वह पुल है, जो हमारी इस बात की पुनः-पुनः पुष्टि कर रहा है कि बर्फ़ का हरएक ज़र्रा एक दूसरे में इतना तन्मय है कि वह अपनी हस्ती भूलकर, प्रत्येक कण अपने को ही पुल समझता है। कुछ कण पुल की छाती बन गए हैं, तो कुछ उसके मज़बूत खंभे, और कुछ बाच-डाग बनकर आगे-पीछे बड़े-बड़े हिम-खंडों के रूप में खड़े हैं। उनका एक क़तरा भी मार्ग का कंटक नहीं। प्रत्येक की यह चेष्टा है कि मैं इस पुल के बोझ को उठाने का सहारा बन जाऊँ; यदि इतनी दूर तक न जा सकूँ, तो दूर ही से यथाशक्ति 'पत्रं पुष्पं फलं तोयम्' अपनी हैसियत के अनुसार अर्घ चढ़ा दूँ, और यदि यह भी न हो सके, तो जल में मिलकर इस संसार से ही लोप हो जाऊँ। पर किसी हैसियत में भी मार्ग का, उस अकेले उन्नति और मिल्लत के अवलंबन का, अवरोध न करूँ। तभी तो वह धवलातिधवल पुल पवित्रता के समान पवित्र है, और उसका क़तरा-क़तरा स्वाभिमान के रंग में रँगा 'सोऽहं ब्रह्म' है। हमारी आज़ादी समंदर पार चली गई है, उसे हासिल करने के लिये दादाभाई नौरोज़ी, गोखले, तिलक, गांधीजी और जवाहरलालजी ने कांग्रेस का अज़ीमुश्शान पवित्र पुल बनाया है, और ये सब स्वयं उसके मज़बूत खंभे बन गए हैं। आज़ादी के दीवाने लाखों नौनिहालों की फ़ौज इस पर चलकर उस पार जा रही है, और खोई हुई स्वतंत्रता की तलाश कर रही है। कोई इस पुल को खोजने की कोशिश न करे। कोई इसमें धक्का न मारे। कोई बग़ली घूँसे भी न मारे। जिससे जो हो सके, इस पल की इबादत में पान-फूल चढ़ा दे, और उन कंधों की आरती उतार ले, जो इसका बोझ वहन किए खड़े हैं। यदि यह भी न हो सके, तो रास्ते से अलग हटकर खड़ा हो जाय। प्रत्येक भारतीय अपने को उस बर्फ़ के पुल का एक क़तरा समझ ले।

पहलगाँव के पास का यह बर्फ़ का पुल मेरे लिये पहलगाँव का यही स्वप्नलोक है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्नाक्यूलर-शब्द

[श्रीयुत डॉ० सत्यप्रकाशजी डी० एस्-सी०]

लैटिन-भाषा में एक शब्द है 'वर्ना' (Verna), जिसका अर्थ है 'अपने स्वामी के घर में उत्पन्न एक दास'। इस शब्द का प्रयोग बाद में गँवार या नेटिव की भावना में होने लगा। इसी से वर्नाक्यूलर-शब्द बना, जिसके अर्थ 'घरेलू' (Domestic या indigenous) लिए जाने लगे। धीरे-धीरे यह शब्द उस भाषा के लिये भी प्रयोग में आने लगा, जिसके बोलने का अभ्यास हमको स्वभावतः हो जाता है। इसे बोलचाल या मुहावरे की भाषा और अंततोगत्वा मातृभाषा का पर्याय समझा जाने लगा।

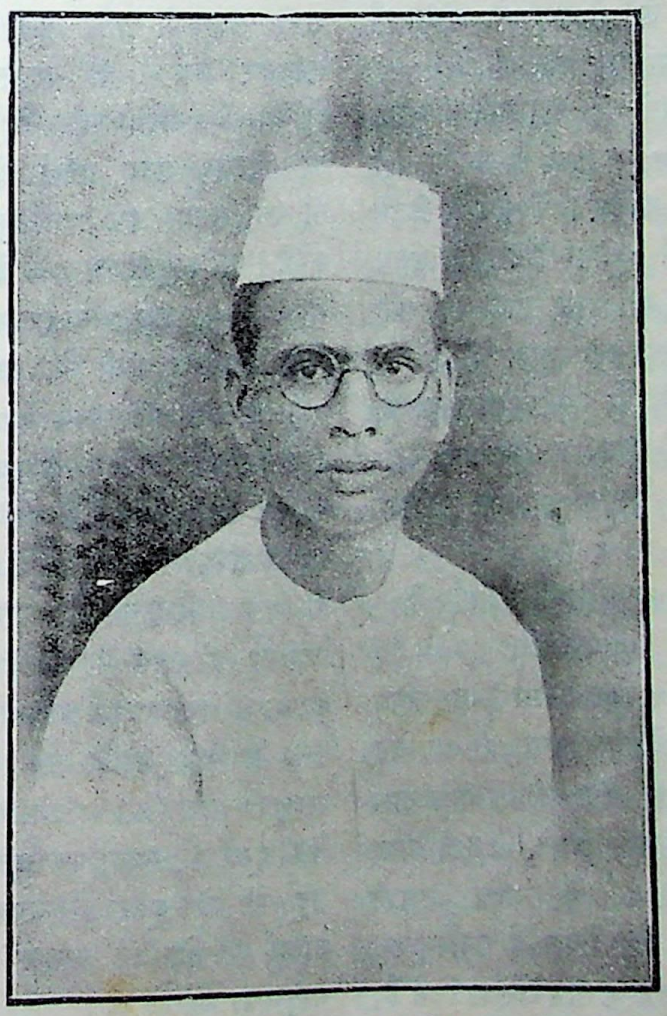

श्रीयुत डॉ० सत्यप्रकाशजी डी० एस्-सी०

वर्नाक्यूलर-शब्द का यह संक्षिप्त इतिहास कितना मनोरंजक है कि दास-भाषा का मूल-द्योतक होते हुए भी 'मातृभाषा' के समान यह शब्द आज गौरवान्वित हो रहा है।

हमारे प्रांत का प्रत्येक विद्यार्थी इस शब्द से आरंभ से ही परिचित है। हमें यह शब्द कई प्रकार से सिखाया गया है—

१. हमारे यहाँ की परीक्षाओं का नाम है वर्नाक्यूलर मिडिल (लोअर या अपर)।

२. हमारे स्कूलों के नाम हैं वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल।

३. हमें स्कूल में भाषा पढ़ाई जाती है वर्नाक्यूलर, जिसके दो फ़ॉर्म हैं, फ़र्स्ट फ़ॉर्म और सेकंड फ़ॉर्म।

४. हमारी शिक्षा का माध्यम पहले अँगरेज़ी था, और अब कुछ सीमा तक हो गया है वर्नाक्यूलर।

५. हमारे यहाँ कुछ अध्यापन-कला - शिक्षित अध्यापक हैं, जिन्होंने प्राप्त किया है 'वर्नाक्यूलर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

टीचर्स सर्टीफ़िकेट' और जिन्हें संक्षिप्त रूप से वी० टी० सी० कहा जाता है।

हमारे पड़ोस में ही और प्रांतवाले भाई हैं, जो पढ़ते हैं गुजराती, मराठी या बंगाली-भाषा। उनके स्कूलों के नाम हैं बंगाली या ऐंग्लो-बंगाली स्कूल आदि। उनका प्रयत्न है कि उनकी उच्चतम शिक्षा का माध्यम हो जाय बंगाली, मराठी आदि। इस वर्नाक्यूलर-शब्द का प्रयोग उनके यहाँ इतना प्रिय नहीं, जितना हमारे प्रांत में। यदि हमारे प्रांत में दास-भाषा, मातृभाषा, बोलचाल की भाषा या ग्रामीण भाषा का कोई अभिप्राय है, तो उन प्रांतों में भी तो किसी ऐसे ही शब्द के प्रयोग की आवश्यकता पड़ेगी। पर ऐसा क्यों नहीं है?

हमारे भारतीय प्रांतों की बात जाने दीजिए। जिन लोगों के यहाँ का यह शब्द है, उनके यहाँ भी कुछ देख लेना चाहिए। इँगलैंड में कितने ऐसे स्कूल हैं, जिनमें जूनियर कैंब्रिज या उससे नीचे की कक्षा तक की पढ़ाई होती हो, और उन्हें वर्नाक्यूलर स्कूल कहा जाता हो। वहाँ 'इँगलिश-स्कूल' तो हैं, पर वर्नाक्यूलर-स्कूल का अभाव है। वे अपनी शिक्षा का माध्यम वर्नाक्यूलर नहीं मानते, प्रत्युत इँगलिश स्वीकार करते हैं।

जर्मन-भाषा में वर्नाक्यूलर-शब्द के पर्याय हैं—Mutter-sprache, Gebrauchs-sprache या Landes-sprache, जिसके अर्थ हैं मातृभाषा, बोलचाल की भाषा या देश की भाषा। पर कदाचित् ही कोई बड़ा स्कूल या परीक्षा हो, जिनके साथ इन शब्दों का संयोग किया गया हो। उनकी भाषा डॉउश (Deutsch) है। यही भाषा उनकी शिक्षा का माध्यम है। तात्पर्य यह कि वर्नाक्यूलर-शब्द के प्रयोग का जैसा प्राधान्य हमारे प्रांत में है, वैसा तो इसके जन्मदाता देशों में भी नहीं। हरएक स्वाभिमानी व्यक्ति ने अपने देश या प्रांत के नाम पर अपनी भाषा का नाम रख छोड़ा है, अथवा कहीं-कहीं तो यह कहना उचित होगा कि बहुतों के देशों का नाम उनकी भाषा पर ही पड़ा है। भाषा और प्रांत के नाम का एकीकरण राष्ट्रीय भावनाओं के लिये बड़ा ही आवश्यक है। राजनीतिक राष्ट्र की अपेक्षा भाषा के आधार पर बना राष्ट्र अधिक स्थायी है। इस भाषा के आधार पर ही एक बार भ्रष्ट किया गया राष्ट्र फिर संगठित किया जा सकता है।

हमारे इस प्रांत में वर्नाक्यूलर-शब्द का जो अर्थ लिया जाता है, वह विलक्षण है। इस अर्थ में यह शब्द संसार में और कहीं प्रयुक्त नहीं होता। एक नए अर्थ में ही यह शब्द हमारे यहाँ रूढ़ि हो गया है। हिंदी और उर्दू, इन दोनो भाषाओं को यदि एक शब्द द्वारा हम प्रकट करना चाहें, तो उस समय हम वर्नाक्यूलर-शब्द का प्रयोग करेंगे। वर्नाक्यूलर का अर्थ है हिंदी और उर्दू का समन्वय। पर इस समन्वय का अर्थ यह नहीं कि हिंदी और उर्दू दोनो के पारस्परिक सहयोग से दोनो के बीच की समान भाषा। अर्थ यह है कि दोनो भाषाएँ रहें तो पृथक्-पृथक्, पर जब कभी वक्ता का इन दोनो भाषाओं से तात्पर्य हो, तो वह वर्नाक्यूलर-शब्द का प्रयोग कर दे। दो समानांतर शब्दों के लिये समष्टि-सूचक यह एक शब्द है। जब हम कहते हैं कि स्कूल में यह घंटा वर्नाक्यूलर पढ़ाने का है, तो हमारा यह अभिप्राय होता है कि समस्त कक्षा के कुछ लड़के एक पृथक् स्थान पर पृथक् अध्यापक द्वारा हिंदी का पाठ पढ़ें, और शेष लड़के किसी दूसरे ही स्थान पर दूसरे ही अध्यापक द्वारा उर्दू का कोई दूसरा ही सबक़ सीखें। हमारा यह तात्पर्य नहीं होता कि समस्त बालक कोई एक ही मातृभाषा पढ़ रहे हों।

हमारे स्कूलों में 'कॉमन लैंग्वेज'-शब्द का प्रयोग तो बाद में हुआ। यह शब्द दो भिन्न लिपियों में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिखी गई एक समान भाषा का द्योतक है, पर वर्नाक्यूलर-शब्द इस समानता का द्योतक नहीं। वर्नाक्यूलर-शब्द में दोनो भाषाओं की विषमता स्वीकार की गई है।

हमारे प्रांत में वर्नाक्यूलर-शब्द बोल-चाल की भाषा का भी द्योतक नहीं। हम कह चुके हैं कि जब कोई योरपियन इस शब्द का प्रयोग अपने यहाँ करेगा, तो उसका अभिप्राय अधिकतर असाहित्यिक बोल-चाल की भाषा से होगा। साहित्यिक भाषा और सामान्य लोगों की घरेलू काम-काज की भाषा में जब उसे भेद करना होगा, तभी वह इस शब्द का प्रयोग करेगा, अन्यथा नहीं। शेक्सपियर, मिल्टन, टेनीसन, बेकन, स्कॉट आदि गद्य-पद्य-लेखकों की तो गिनती साहित्यिक भाषा के लेखकों में की जाती है। यह बात दूसरी है कि प्रसंगानुसार उनके लेखों में यत्र-तत्र बोल-चाल की भाषा का भी प्रयोग किया गया हो। पर हमारी हाईस्कूल-परीक्षा तक स्वीकृत पाठ्य पुस्तकों को देखने से पता चल जाता है कि हम अपने यहाँ इस शब्द का प्रयोग 'बोल-चाल की भाषा' के अर्थ में कभी नहीं करते, और न ऐसा करना हमारा अभीष्ट ही होता है। साहित्यिक हिंदी और साहित्यिक उर्दू, दोनो ही हमारे यहाँ पढ़ाई जाती हैं। अतः यह बिलकुल स्पष्ट है कि वर्नाक्यूलर-शब्द ने हमारे यहाँ एक विशेष अर्थ स्वीकार कर रक्खा है। हिंदी और उर्दू दोनो में एक ही विषय का दो भिन्न लिपियों और भाषाओं में प्रकाशित ग्रंथ वर्नाक्यूलर ग्रंथ कहा जाता है। जिस स्कूल में कुछ लड़के हिंदी पढ़ते हों और कुछ उर्दू, उस स्कूल का नाम वर्नाक्यूलर स्कूल है। जिस स्कूल में कुछ लड़कों की शिक्षा का माध्यम हिंदी हो, और कुछ का उर्दू, उस स्कूल के लिये कहा जायगा कि वहाँ की शिक्षा का माध्यम वर्नाक्यूलर है। जिस परीक्षा के कुछ परीक्षार्थी प्रश्न-पत्र का उत्तर हिंदी में दें, और कुछ उर्दू में, और दोनो के लिये अलग-अलग भाषाओं में प्रश्न-पत्र दिए जायँ, वह परीक्षा हिंदी-परीक्षा या उर्दू-परीक्षा न कहलाकर वर्नाक्यूलर-परीक्षा कही जायगी। यह याद रखना चाहिए कि वर्नाक्यूलर कोई वह प्रतिमा नहीं, जिसके एक पेट होते हुए दो मुख हों। यह तो साक्षात् दो पृथक् प्रतिमाओं को एक में बाँध दिया गया बंडल है।

इतने दिनों तक वर्नाक्यूलर-शब्द के अंतर्गत हिंदी और उर्दू दोनो भाषाओं का पार्थक्य स्वीकृत होता रहा है। एक नाम होने पर भी दोनो एक दूसरे के निकट आती प्रतीत नहीं होतीं। उपन्यास और गल्प की भाषाओं में तो दोनो का कुछ समन्वय होना प्रतीत होता है, काव्य में इसकी अपेक्षा और कुछ कम (हिंदी में तो बहुतों ने उर्दू-बहरों को अपनाया भी, पर कितने उर्दू-कवियों ने उर्दू में हिंदी-छंदों को अपनाने का प्रयत्न किया?), पर अन्य साहित्यिक अंगों में दोनो भाषाओं की पृथक्ता और भी अधिक होती जा रही है। अतः यह स्वप्न कि दोनो भाषाओं की कालांतर में एक रूप-रेखा हो जायगी, इस समय संभव होता नहीं दिखाई देता। दोनो के साहित्यों की अभिवृद्धि अब तो अपने-ही-अपने ढंग पर हो सकती है। अच्छा इसी में है कि दोनो अपने अलग-अलग मार्ग में, एक दूसरे पर बिना आघात-प्रत्याघात किए, बढ़ती चलें।

हमें उर्दू से वैर नहीं, और न हम उसका बुरा ही चाहते हैं। उर्दू-भाषा की एक विशेष उपयोगिता रहेगी। इसके द्वारा हम अपने पड़ोसी देशों से कुछ संबंध कर सकेंगे। हमारे राष्ट्र का अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस, अरब और तुर्क-देश से सदा अच्छा संबंध रहा है—व्यापार और संस्कृति दोनो का। इधर दो शताब्दियों से, जब से हमने अपना गौरव खो दिया, हमारा यह संबंध कुछ ढीला हो गया है। पर ज्यों-ज्यों हमारी राजनीतिक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

परिस्थितियाँ अनुकूल होती जायँगी, यह संबंध फिर दृढ़ होता जायगा। उस समय हमें उर्दू से सहायता मिलेगी, और बहुत संभव है, वह भारत तथा सीमोत्तरी राष्ट्रों के बीच में भाषा-संबंधी माध्यम बन जाय। हम चाहते हैं कि जिस प्रकार समस्त भारतीय संस्कृत-मूलक भाषाओं के पारिभाषिक शब्द एक हो जायँ, उसी प्रकार ईरान, फ़ारस, अरब, तुर्क, अफ़ग़ानिस्तान, मिस्र और हब्श देश की पारिभाषिक शब्दावली भी एक हो जाय। उर्दूवालों को (विशेषकर मुसलमानों को, जिन्हें ये देश अपने ख़ून और धर्म के कारण प्रिय हैं) यह चाहिए कि इन देशों की पारिभाषिक शब्दावली अपनावें। समस्त एशिया का साहित्यिक संगठन तीन पद्धतियों पर होगा—(१) सेमेटिक[1] पद्धति, जिसमें अरब, तुर्क, मिस्र आदि देश होंगे (फ़ारसी तो आर्य-भाषा है, पर इसके बोलनेवालों की संस्कृति सेमेटिक हो गई है, अतः फ़ारस वाले भी इसी पद्धति को अपना सकते हैं)। (२) मंगोलियन[2] पद्धति, जिसमें चीन, जापान, स्याम, कोचीन और बर्मा एक हो सकते हैं। (३) आर्य[3]-पद्धति, जिसमें समस्त भारतीय भाषाएँ एकीकृत हो सकती हैं। अंतर्एशियाटिक संबंध करनेवालों को तीनो पद्धतियाँ जाननी होंगी। इन तीनो के स्थान में किसी एक को आरोपित करने का प्रयास कभी सफल न हो सकेगा।

अतः हम चाहेंगे कि सेमेटिक देशों से हमारा संबंध हो, और उर्दू-भाषा उसमें हमारी सहायता करे। आसामी और बर्मी-भाषा बौद्ध-देशों से हमारा संबंध करावे गी। इस दृष्टि से हम उर्दू का भला ही चाहते हैं, और उससे प्रतियोगिता भी हमें नहीं करनी।

हम हिंदी और उर्दू के इस पार्थक्य-भाव को बुरा नहीं समझते। कम-से-कम हमें यह आशा नहीं कि सांस्कृतिक भिन्नता होते हुए दोनो एक हो सकेंगी। ज्यों-ज्यों दोनो का साहित्य बढ़ता जायगा, यह पार्थक्य और भी अधिक हो जायगा। अब यह आवश्यक नहीं कि हम पूर्व की भाँति वर्नाक्यूलर के अंतर्गत दोनों भाषाओं का अभिप्राय समष्टि-भाव में लें।

जिस समय ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल आरंभ में खुले थे, शिक्षा का माध्यम तो अँगरेज़ी था, केवल हिंदी और उर्दू के साहित्य की शिक्षा दी जाती थी। पर अब परिस्थिति दूसरी हो गई है। अब तो वर्नाक्यूलर अर्थात् हिंदी और उर्दू दोनो ही शिक्षा-माध्यम हैं। अतः इस समय की कठिनाइयाँ बिलकुल दूसरी हैं।

हमारा यह विश्वास है कि जब से स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिंदी या उर्दू हो गया है, तब से दोनो भाषाओं पर एक नई बिपदा आ गई है, और इस बिपदा से दोनो को सचेत रहना चाहिए। इस बिपदा का कारण यह है कि मान लीजिए, किसी कक्षा में हिंदी और उर्दू, दोनो के विद्यार्थी हैं, और उन्हें साइंस पढ़ाई जा रही है। इस विषय का पढ़ानेवाला अध्यापक या तो हिंदी विशेष रूप से जानता है, या उर्दू। यह संभव नहीं कि वह अपने भाषण में सर्वदा दोनो भाषाओं के पर्यायों का प्रयोग करता रहे। सबसे बड़ी कठिनाई तो तब आती है, जब उसे ब्लैकबोर्ड पर कुछ लिखना होता है। वह एक ही लिपि का व्यवहार कर सकता है। अगर रेखागणित की कोई आकृति ब्लैकबोर्ड पर लिखी गई, तो उसमें त्रिभुज का नाम क-ख-ग या अलिफ़-बे-पे दोनो लिखना और उपपाद्यों की सिद्धि के समय दोनो का प्रयोग करना उसके लिये संभव नहीं। ऐसी परिस्थिति में वह क्या कर सकता है? यदि वह हिंदी अपनाता है, तो उर्दूवाले सचमुच बिपदा में पड़ जाते हैं, और यदि उर्दू अपनाता है, तो हिंदीवालों को कठिनाई होती है। फल-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्वरूप अध्यापक अपनी कठिनाई इस रूप में दूर करता है—

१. जितनी संज्ञाएँ हैं, वे (और कुछ विशेषण भी) अधिकांशतः अँगरेज़ी की प्रयोग की जाती हैं।

२. वर्णमाला (रेखागणित, विज्ञान आदि में) अँगरेज़ी की व्यवहार में आती है।

३. अंकगणित में गिनती भी अँगरेज़ी में लिखी जाती है।

४. भाषण में कुछ बड़े-बड़े पद-समूह या वाक्यांश अँगरेज़ी के प्रयोग किए जाते हैं।

५. जिन अध्यापकों से इतना भी नहीं हो सकता, वे पूरी तरह अँगरेज़ी का ही व्यवहार करते हैं।

६. परीक्षाओं में प्रश्न-पत्र दो लिपियों में, पर दोनो में ही अँगरेज़ी-शब्द, अँगरेज़ी-लिपि में ही बीच-बीच में, घुसा दिए जाते हैं। परीक्षार्थी अपना उत्तर भी इसी प्रकार की वर्णसंकर-लिपि में देते हैं।

७. एकाध मनचले पुस्तक-रचयिताओं ने भी ऐसी ही वर्णसंकर-लिपि और भाषा का प्रयोग अपनी पुस्तकों में किया है।

अँगरेज़ी की सहायता से हिंदी और उर्दू, दोनो का इस प्रकार समझौता किया जा रहा है। ऐसा होना न तो हिंदी के हित में है, और न उर्दू के हित में। दोनो को ही इस नई भाषा के निर्माण से कुछ सचेत हो जाना चाहिए। हमारा यह तात्पर्य नहीं कि अपनी भाषा में कुछ अँगरेज़ी शब्दों का ग्रहण न किया जाय, पर इसका तात्पर्य यह भी तो नहीं कि अपने सब शब्द बहिष्कृत कर दिए जायँ। शब्द-भांडार बढ़ाना दूसरी बात है, और अपने शब्दों का बहिष्कार करके दूसरे के शब्द अपना लेना दूसरी बात।

शिक्षा के माध्यम की इस कठिनाई के कारण जो नई भाषा बन रही है, उसका एक नमूना इस प्रकार है। यह नमूना एक प्रकाशित और स्वीकृत पाठ्यपुस्तक से दिया जाता है—

"दो बराबर वालूम(Volume)वाली वस्तुओं का अनुपात बिलकुल प्राकृतिक है, चाहे उन वस्तुओं की तौल British system of units में की जावे, या Metric system of units में, लेकिन उनकी तौल का अनुपात सदैव एक-सा होगा।

"Density ज्ञात करने के लिये चूँकि हम लोग Unit volume का mass ज्ञात करते हैं, इसलिये भिन्न System of units में एक ही वस्तु की Density के लिये भिन्न संख्या हुआ करती है; जैसे पानी की डेनसिटी (Density) one grm. per c. c. है, और 0·6 oz per cu. in. भी है।"

एक दूसरे स्थल पर इसी पुस्तक में—"और यह भी ज्ञात है कि तौल की कमी (Loss of weight) बराबर है हटाए हुए तरल पदार्थ की तौल के, इसलिये इस तैरनेवाली वस्तु (Floating body) की तौल इस तरल पदार्थ की तौल के बराबर है, जो कि इस Floating body के डूबे हुए भाग से हटा है।

"That is weight of the F. Body= weight of liquid displaced by the portion under liquid.

"अब इस फल की, जो Archimedes' Principle की सहायता से ज्ञात किया गया है, Experiment की सहायता से जाँच सहज में हो सकती है।"

इसी प्रकार की भाषा उर्दू-संस्करण में भी है। जब अध्यापक इसी बात को पढ़ाने बैठता है, तो वह थोड़ी-सी वर्णसंकरता अपनी ओर से और कर देता है। वह ऊपर के अवतरण को इस प्रकार आरंभ करेगा—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"दो Equal volume वाली bodies का Ratio बिलकुल natural है ··· इत्यादि।"

इस भाषा को उर्दू और हिंदी दोनो के छात्र आसानी से समझ लेंगे। इस नई भाषा का निर्माण वर्नाक्यूलर-माध्यम के फल-स्वरूप आज हमारे स्कूलों में हो रहा है। रेखागणित का अध्यापक अपना पाठ निम्न-लिखित प्रकार से आरंभ करता है—

A B C एक Triangle है, जिसकी side B C का middle point D है। A को D से join कर दो। A D line को P point पर bisect करो... इत्यादि।

इस भाषा का नाम है कॉमन लैंग्वेज या वर्नाक्यूलर। क्या ऐसा होना हिंदी और उर्दू, दोनो के लिये श्रेयस्कर है? वर्नाक्यूलर-माध्यम द्वारा जो शिक्षा दी जानी चाहिए, उसका उद्देश्य इस प्रकार की भाषा से पूरा हो रहा है? मैं तो समझता हूँ कि इस प्रकार की शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों के मस्तिष्क में यह बात और प्रबलता से जमाई जा रही है कि हिंदी और उर्दू, दोनो ही भाषाएँ शिक्षा का माध्यम बनने योग्य नहीं। जब स्कूली-शिक्षा की यह परिस्थिति है, तो आगे कॉलेज की शिक्षा का प्रश्न तो दूर रहा। हिंदी और उर्दू, दोनो के प्रेमियों को इससे सचेत रहना चाहिए।

पर इस बीमारी का उपचार क्या है? मेरा तो यह विश्वास है कि वर्नाक्यूलर-प्रवृत्ति ही इस बीमारी का कारण है। इसका कारण यही है कि एक स्कूल में हिंदी और उर्दू, दोनो माध्यम बनाए जा रहे हैं; फलतः न हिंदी ही माध्यम बन पाती है, और न उर्दू ही। न एक अध्यापक दो माध्यमों द्वारा पढ़ा सकता है, और न एक विद्यार्थी दो माध्यमों द्वारा पढ़ाया जा सकता है। फलतः माध्यम हो जाते हैं तीन, और परतंत्र देश में विजेता की भाषा अथवा सरकार की भाषा ही प्रभुत्व पा लेती है।

हिंदी और उर्दू, दोनो के हित के लिये इस समय यह परमावश्यक है कि वर्नाक्यूलर का बहिष्कार किया जाय। हमें कुछ परिवर्तन इस प्रकार करने चाहिए—

यदि एक नगर में कई स्कूल हों, तो कुछ का नाम हो ऐंग्लो-हिंदी-स्कूल और कुछ का नाम ऐंग्लो-उर्दू-स्कूल। एक स्कूल में आर्थिक कठिनाइयों के डर से दोनो माध्यमों का पृथक्-पृथक् प्रबंध होना आसान नहीं। ऐंग्लो-हिंदी स्कूलों में हिंदी माध्यम हो, और ऐंग्लो-उर्दू-स्कूलों में उर्दू। 'ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर-स्कूल' यह नाम परिवर्तित हो जाय।

कुछ लोगों का विचार हो सकता है कि ऐसा करने से स्कूल को क्षति पहुँचेगी, पर मेरा विचार है कि ऐंग्लो-हिंदी और ऐंग्लो-उर्दू-स्कूल अलग-अलग कर देने से क्षति नहीं, प्रत्युत लाभ ही होगा। आजकल पहले की-सी अवस्था नहीं। जिन स्कूलों में पहले दो सौ विद्यार्थी कठिनता से थे, वहाँ अब चार सौ हैं। जिस नगर में एक स्कूल था, वहाँ अब कई हाईस्कूल हैं। निकट-भविष्य में यह संख्या और बढ़ जायगी। लड़कों की संख्या की दृष्टि से किसी स्कूल को कोई घाटा न रहेगा। यदि एक स्कूल से कुछ उर्दू-लड़के निकल जायँगे, तो दूसरे स्कूल से हिंदी-लड़के उसमें आ भी जायँगे।

अध्यापकों की कमी हो जायगी। आजकल १५-२० लड़कों को पढ़ाने के लिये और कहीं-कहीं ७-८ विद्यार्थियों की कक्षा के लिये ही एक पूरा अध्यापक रखना पड़ता है, जो ३०-३५ विद्यार्थियों को पढ़ा सकता है। हिंदी-स्कूल में उर्दू, फ़ारसी और अरबी के अध्यापक रखने की आवश्यकता न होगी, और उर्दू-स्कूल में हिंदी और संस्कृत का अध्यापक न रखना पड़ेगा (ऐसा बहुत ही कम होता है कि उर्दूवाला संस्कृत या हिंदीवाला फ़ारसी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पढ़े। एकाध ही ऐसे अपवाद पाए गए हैं)। इस प्रकार स्कूलों के अध्यापकों की संख्या कम हो जायगी, और आर्थिक दृष्टि से स्कूल के प्रबंधकों को लाभ ही होगा, हानि नहीं।

आजकल तो प्रत्येक स्कूल में लगभग सभी कक्षाओं में दो-दो 'सेक्शन' हैं। यदि किसी नगर में एक ही स्कूल हो, और वहाँ एक कक्षा में दो सेक्शन हों, तो सेक्शनों का यह विभाग हिंदी और उर्दू के आधार पर किया जाय। इससे भी शिक्षा देने में सुविधा होगी। पर आदर्श बात तो यही होगी कि अब हिंदी-स्कूल और उर्दू-स्कूल अलग-अलग कर दिए जायँ। आजकल भी बड़े नगरों में ऐंग्लो-बंगाली स्कूल अलग हैं। मध्य-प्रांत में ऐंग्लो-मराठी और ऐंग्लो-हिंदी-स्कूल अलग-अलग हो सकते हैं। उर्दू-भाषा को वह सम्मान या स्थान दे देना चाहिए, जो किसी प्रांतीय भाषा को मिलता है। दोनो के अलग-अलग स्कूल होने पर ही हिंदी और उर्दू-भाषाएँ शिक्षा का माध्यम बन सकती हैं, और ये दोनो भाषाएँ अँगरेज़ी के शब्दों के अनुचित प्रभुत्व से बच सकती हैं। ऐसा करने से अध्यापकों को सरलता होगी। आजकल तो अध्यापक न हिंदी में पढ़ा सकते हैं, और न उर्दू में। उनका इन भाषाओं का ज्ञान बहुत ही कच्चा होता है। दोनो भाषाओं के साथ अँगरेज़ी की खिचड़ी मिलाकर वे चलतू काम करते हैं। आठ-आठ, दस-दस बरस पढ़ा लेने पर भी उनकी भाषा-संबंधी योग्यता अच्छी नहीं हो पाती। इस दृष्टि से यह नितांत आवश्यक है कि ऐंग्लो-हिंदी-स्कूल और ऐंग्लो-उर्दू-स्कूल अलग-अलग हो जायँ। ऐसा होने से वर्नाक्यूलर-शब्द का वह विलक्षण दुरुपयोग भी न हो सकेगा, जो इस समय हो रहा है। विद्यार्थियों, अध्यापकों, परीक्षार्थियों, परीक्षकों, पुस्तक-लेखकों और हिंदी-उर्दू, दोनो के साहित्यों का इसमें भला है।

बाँसुरी की तान !

इसकी जादू-भरी तान सुनकर मित्रों ने मुझे घेर लिया। यह 'मोहिनी बाँसुरी नं० ५१' पीतल और काली पाइप से जोड़कर बनाई गई है, तभी तो इसकी आवाज़ मधुर और सुरीली है। प्रत्येक बाजे के साथ मिल जाती है, क्योंकि ट्यूंड की हुई है। स्कूल और कॉलेजों में इसके बैंड तैयार हो रहे हैं। सीधी बजती है, इसके २ टुकड़े करके पॉकेट में भी रख सकते हैं। मूल्य १।), डाक-खर्च २ तक ।≡), ३ मँगाने से खर्चा माफ़। 'हारमोनियम-तबला-बाँसुरी-मास्टर' पुस्तक १)।

नाच और गाने

की महफ़िल में आपकी ख़ुशामद कोई क्यों करेगा ? जब कि आप एक गाना तक नहीं गा सकते ! इस कमी की पूर्ति के लिये मासिक पत्र 'संगीत' निकला है। इससे आपको घर बैठे संगीत-शिक्षा मिलेगी। २०० पृष्ठ के विशेषांक(विष्णुदिगंबर-अंक)-सहित वार्षिक मूल्य २) है। नमूना मुफ़्त मँगा देखिए। 'म्यूज़िक-मास्टर' पुस्तक भी सातवीं बार छप गई है। इसमें एक नए ढंग से हारमोनियम, तबला, बाँसुरी बजाना बताया गया है, तभी तो थोड़े समय में १२००० बिक चुकी है ! मूल्य १)

पता—गर्ग एंड कंपनी, संगीतशाला, १७ हाथरस (यू० पी०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जीत की हार

[श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी]

अगाध जल में एक बार डूबकर, फिर प्रवाह के ऊपर आकर जब कोई बह चलता है, तो संसार उसे किसी-न-किसी प्रकार कहीं देख तो पाता है। माना, वह बहते-बहते जीवन से दूर, जगत् से भी दूर जा पड़ता है ; किंतु जलचर, नभचर और भूला - भटका कोई मानव-प्राणी उसका परिचय तो प्राप्त कर लेता है । किंतु त्रिवेणी अपने आपको उस निर्जीव शव से भी हीन और क्षुद्र देख रहा है। प्रायः वह संसार की ओर देखता हुआ भी उससे बिलग होकर अपनी आँखें फेर लेता है। वह सोचता है, एक बार डूबा हुआ व्यक्ति भी शव होकर कभी-न-कभी किनारे लग जाता है। किंतु दो बार डूबकर भी जो उस पार न पहुँच सका, उसका कर्म-भोग कितना प्रबल है! और, फिर यह कितनी विचित्र बात है, यह त्रिवेणी न जीवित है, न मृत। जीवन रखते हुए भी वह निर्जीव है, और निर्जीव होते हुए भी जीवित।

श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी

तमोली के यहाँ से पान खाकर, ऊपर से सिगरेट का एक कश लेकर त्रिवेणी अपने घर की ओर लौट पड़ा । उसने चाहा, जल्दी चले, किंतु धीरे-धीरे, इतमीनान के साथ, चलता रहा। वह घर नहीं पहुँच पाया था, क्योंकि तमोली की दूकान से वह थोड़े फ़ासले पर पड़ता था। उसके रास्ते में एक मंदिर और पार्क भी मिलता था। वह अभी पार्क के कोने तक ही पहुँच पाया था कि उसे सुन पड़ा—"बाबूजी, ओ बाबूजी !"

त्रिवेणी खड़ा हो गया। उसने देखा, पुकारनेवाला वही बालक है, बिलकुल वही, जिसे सड़क पर आता देख वह घूम पड़ा था। नंगे पैर, बदन पर एक मैला, फटा कुरता और नीली ज़ीन का पुराना नेकर।

किंतु त्रिवेणी को दूर से ही देखकर, क्षण-भर में ही, बालक का भाव बदल गया। उसके मुख पर सरल हास खेलने लगा।

और त्रिवेणी ?

वह उसे इतना प्रसन्न देखकर भी अपने में तुरंत कोई परिवर्तन न पा सका।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बालक जब बिलकुल त्रिवेणी के पास, उससे लगकर, खड़ा हो गया, तो त्रिवेणी जैसे भीतर से बाहर आकर, चकित भाषा में, बोल उठा—"अरे, तू इधर कैसे आ निकला !"

"मिस्त्री ने दो कढ़ाइयाँ एक बाबू के पास रख आने को भेजा था। लौटते हुए जो तुम्हें तमोली की दूकान से वापस जाते देखा, तो मैं इधर ही, पीछे-पीछे, चला आया।"

त्रिवेणी कुछ बोला नहीं। हाँ, उसे अपने बदन से चिपकाकर उसके सिर पर हाथ अवश्य फेरने लगा।

तब बालक ने धीरे-धीरे, जैसे लजाते-लजाते, साहस करके, कह दिया—"दो पैसे दे दो बाबू !"

"क्या करेगा पैसे लेकर ?" कहकर त्रिवेणी ने उसकी ठुड्ढी पकड़कर ज़रा ऊपर को उचका दी।

"पान खायँगे, और सिगरेट पिएँगे।" उत्तर के साथ उत्फुल्ल बालक की दंत-पंक्ति झलक उठी।

त्रिवेणी ने एक चवन्नी उसके हाथ पर रख दी।

बालक तुरंत अत्यधिक उत्साहित, अकल्पित अनुप्राणित होकर चलने लगा, तो त्रिवेणी ने कहा—"मिठाई भी खा लेना गोपाल, भला !"

* * *

इस बालक से संबंध रखनेवाली त्रिवेणी के जीवन की एक कथा है।

त्रिवेणी उस समय विधुर था। उसकी स्त्री का स्वर्गवास हुए दो वर्ष व्यतीत हो चुके थे। उसने सोचा था, अब, दूसरा विवाह नहीं करेगा ; क्योंकि स्त्री विधवा हो जाती है, तो हिंदू-समाज उसे दांपत्य-सुख से सदा के लिये वंचित कर देता है, और पुरुष जब विधुर हो जाय, तो उसके लिये भी तो इसी प्रकार का कोई बंधन होना चाहिए।

किंतु यह उत्तर केवल मित्रों के आग्रह का समाधान करने के लिये होता था। असल बात और थी, और चाहे न भी हो, पर उसके सोचने का ढंग ज़रूर दूसरा था। वह सोचता था—जब नंदिनी चली गई, तो अब दूसरा विवाह करके फिर से एक नवीन संसार वह कैसे बनाए ?

दिन चल रहे थे। दिन तो चल रहे थे, पर त्रिवेणी जीवन से उत्तरोत्तर विरक्त होता जा रहा था। घर पर उसे कोई काम नहीं करना पड़ता था। पिता नगर के सूत-बाज़ार के प्रतिष्ठित दलाल थे। उनकी आय निर्वाह-भर के लिये यथेष्ट होती थी। यह दारुण आघात त्रिवेणी की आत्मा पर इतनी गहराई से अंकित हो चुका था कि संसार की किसी भी वस्तु से उसका कोई संबंध नहीं रह गया था। उसकी मा जब बहुत आग्रह करती, तो भोजन कर लेता। उसका सूखा, मुरझाया और पिचका हुआ मुख देखकर उससे आधी बात करने का भी किसी को साहस न होता था। कभी-कभी कई दिन तक वह घर के बाहर रहता। कभी पार्क में सो रहा, तो कभी किसी मित्र के यहाँ। किसी ने खिला दिया, तो खा लिया, अन्यथा पूरा उपवास कर गया। लेटा है, तो दस-दस, बारह-बारह घंटे लेटा ही है। कोई कुछ पूछता, तो उत्तर दे देता, पर अपनी ओर से किसी से बात न करता था।

लेकिन मनुष्य इस तरह कितने दिन रह सकता है ? इस तरह का व्यक्ति या तो महाप्रस्थान की ओर बढ़ जायगा, या किसी-न-किसी दिन प्रतिक्रिया के प्रणय-पाश में पड़कर कुछ-का-कुछ हो बैठेगा। जीवन रहते नवल भावनाओं के मृदुल दोलन से अपने आपको सर्वथा अक्षुण्ण रख कैसे सकेगा ?

* * *

संयोग की बात, एक दिन त्रिवेणी केदार के घर जा पहुँचा। उसके साथ उसका दूर का नाता था। उसकी नवभार्या नंदिनी की चचेरी बहन थी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसका नाम था रामकली। त्रिवेणी उससे परिचित था। ससुराल में भी वह कली कहकर ही उसे पुकारता आया था ; क्योंकि उन दिनों वह एक अबोध बच्ची थी।

पर कली अब वह कली न रह गई थी। वह अब खिल चुकी थी। तो भी उसके लिये नाम तो उसका कली ही था। त्रिवेणी ने अनेक वर्षों बाद जो उसे देखा, तो चकित हो उठा! बोला— "अरे! मैं तो समझा बैठा था कि तू वही, उसी तरह की नन्ही-सी कली होगी। पर....."

इसके बाद उसकी वाणी अटक गई। आगे की बात जैसे पर लगाकर उड़ गई।

केदार बोला—"अहो भाग्य! आपने मेरी इस झोपड़ी में आने की कृपा तो की।" और, कली पहले थोड़ी शरमाई, ज़रा झिझकी, किंतु उसके अधर-पल्लव वांछा-हीन होते हुए भी उन्मीलित हो ही गए। आदर-पूर्वक उसने त्रिवेणी को आसन दिया, और कहा—"कहाँ भूल पड़े जीजा?"

त्रिवेणी कली की ओर एकटक देखता रह गया। वह कोई उत्तर न दे सका।

कली उस पर पंखा झलने लगी।

केदार और कली, दोनो ने सुन रक्खा था, त्रिवेणी पत्नी के वियोग में विरक्त हो गया है, यहाँ तक कि उसके जीवन का क्रम टूट चुका है। अतएव अनायास उसे सामने पाकर दोनो ने आत्मीयता के साथ स्वागत किया।

केदार उसके लिये मिष्टान्न ले आया। कली ने तश्तरी में क़ायदे से सजाकर, शीशे के गिलास में बरफ़ के ठंडे पानी के साथ, सामने रखते हुए विनय-पूर्वक कहा—"हम आपके स्वागत-सत्कार के योग्य नहीं। फिर भी जो कुछ है, विदुर का-सा मानकर कृपया स्वीकार कीजिए।"

केदार बोला—"मैं क्या जानता नहीं कि आप क्या-से-क्या हो गए हैं! चाचाजी से रत्ती-रत्ती समाचार मिलता रहता है। लेकिन किया क्या जाय, आपके उस दुःख की पूर्ति तो अब संभव नहीं। जैसे बने, अपने को धैर्य के सहारे फुसला-फुसलाकर रखना है। फिर अभी आपकी उम्र ही क्या है!"

कली दामिनी-सी धवल दंत-पंक्ति झलकाकर, साड़ी का छोर भाल-बिंदु तक खिसकाती हुई, मदिर हास के झकोर में, मंद स्वर से बोली—"इन्हें बात करने का भी शऊर नहीं है जीजा! देखो, क्या-से-क्या कहने लगे!....खैर, तुम जल-पान करो जीजा, इनकी बातों में न पड़ो।"

केदार ने, जान पड़ता है, कली की बात सुन ली, इसलिये हँसता हुआ बोल उठा—"देखा आपने? यह हमें इसी तरह पागल बनाया करती है। कहती है—तुम्हें शऊर नहीं। भला, आप ही बतलाइए, आप तो पढ़े-लिखे, होशियार व्यक्ति हैं, अभी हमने आपसे ऐसी कौन-सी बात कह दी, जो बेजा हो।"

"तुम शुरू करो जीजा। हाँ-हाँ, इनकी बातों में मत पड़ो।" उसी प्रकार अतिशय मंद स्वर में, हौले-हौले हसँती हुई, कली बोली।

त्रिवेणी की जैसे आँखें खुल गईं। जैसे अभी तक वह सोता ही रहा हो, और उसे यह बोध ही न हो सका हो कि संसार कितना विस्तृत है। आज उसे प्रतीत हुआ कि एक-न-एक अभाव प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में है। वह अपने ही अभाव के लिये रोता है, किंतु जिधर भी उसकी दृष्टि जाती है, उधर उसे प्रत्येक का अभाव अलग-अलग स्पष्ट झलकता हुआ प्रतीत होता है। कली ने केदार को पाकर जो कुछ भी पाया है, उसके सामने है। किंतु सब कुछ पाकर भी जो कुछ वह उसमें नहीं पा सकी, उसे भुलाकर वह रह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नहीं सकती। हँसती-हँसती उसे कह डालती है, क्योंकि इस रंध्र को उसे अपने निभृत निलय में पालकर, सुलाकर नहीं रखना है। तभी तो वह ख़ुद ही कह डालती है—"इन्हें बात करने का भी शऊर नहीं है जीजा! देखो, क्या-से-क्या कहने लगे।" क्योंकि वह जानती है कि जो पत्नी-वियोग से व्यथित है, विदग्ध है, उससे यह बात नहीं कहनी चाहिए कि अभी उसकी उम्र ही क्या है! और तमाशा यह कि केदार बनता चतुर है, और फलतः भार्या की उपर्युक्त बात पर चिढ़ता भी नहीं है, तो भी वह इतना भी नहीं जानता कि उसकी बात में असंगति क्या है।

त्रिवेणी यही सोचता हुआ जल-पान करता रहा। न तो उसने केदार की बातों का समर्थन किया, न कली के विचार का अनुमोदन। हाँ, अपलक दृष्टि से वह कली की मुद्रा में उसके अंतस्तल का प्रतिबिंब अवश्य देखता रहा।

थोड़ी देर में त्रिवेणी जब दूसरे कमरे में चला गया, तो उसने देखा, केदार कुछ गंभीर हो गया है। तब उसके मन में आया कि वह उससे कुछ बात करे।

उधर केदार घूम-फिरकर बारंबार यही सोचने लग जाता कि त्रिवेणी जो आज यहाँ टिक गया, तो!

वह उस प्रकार का व्यक्ति है, जो आज को उस कल की तराज़ू से तौला करते हैं, जो भविष्य—निकट भविष्य—का है। शिष्टाचार और आतिथ्य की मर्यादा वह समझता है। अवसर आने पर बर्तन बेचकर भी वह आगत का स्वागत-सत्कार करने में कभी चूक नहीं सकता। और, इसीलिये सोचने का खाता लिखते समय वह रोकड़ बाक़ी तक लिखकर ही दम लेता है। वह मानता है कि समक्ष को देखना ही यथेष्ट नहीं, वह तो अपूर्ण देखना हुआ। अरे भाई, जब देखना ही है, तो देखते क्षण हमें पृष्ठ भाग भी देख लेना चाहिए।

एक ज़माना था, जब ज़िम्मेदारी के जीवन में पैर रखते ही उसे एक आश्रयस्थल मिल गया था। वह इनकमटैक्स के दफ़्तर में साठ रुपए महीने की नौकरी पा गया था। उस समय किसी प्रकार उसका निर्वाह हो जाता था। बचाने के संबंध में कभी उसने गहराई के साथ विचार नहीं किया, क्योंकि वह मानता था कि मध्यम श्रेणी का नागरिक सौ रुपए महीने से कम की आय में कुछ संग्रह कर सकने का स्वप्न नहीं देख सकता। अतएव नौकरी छूटने के बाद वह बराबर घर की ही पूँजी का उपयोग करके काम चलाता रहा। तभी तो आज उसे सोचना पड़ा कि त्रिवेणी अगर आज उसके घर ठहर गया, तो!

त्रिवेणी ने कमरे में पहुँचकर, पलँग पर बैठते ही पूछ दिया—"आजकल क्या करते हो केदार भाई?"

अलमारी की एक पुस्तक उठाकर उसे फिर उसी स्थान पर रखते हुए केदार ने उत्तर दिया—"क्या करूँ, क्या न करूँ, यही सोचा करता हूँ।"

"तो काम कैसे चलता है?"

"कैसे बताऊँ!"

त्रिवेणी अब तक जैसे सोता रहा हो। वह इससे पहले यह जान ही न सका कि जीवन-संघर्ष भी कोई वस्तु है। मानो यही समझता आया हो कि प्रत्येक व्यक्ति इतना समर्थ और सौभाग्यशाली होता है कि उसके यौवन-काल में भी पिता या भाई ही रुपया-पैसा पैदा करते हैं, और तब तक वह सर्वथा स्वतंत्र रह सकता है, जब तक आप-ही-आप उसके समक्ष यह समस्या उपस्थित नहीं हो जाती कि अब तो हमें कुछ करना ही पड़ेगा।

केदार कभी त्रिवेणी के पास बैठता, और कभी अंदर जाकर भार्या से बातें करने लगता। वह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खुद भूखा भी रह सकता था, किंतु ऐसे संभ्रांत अतिथि को भूखा कैसे रखता? जब वह और देर तक अपने संकल्प-विकल्प को कली से छिपाकर न रख सका, तो उससे पूछ ही बैठा—'यह अगर आज रह गए, तो?"

विवर्ण होकर कली ने कह दिया—"आज का काम चल जायगा।" किंतु उसके इस उत्तर का केदार के मुख पर जो उत्फुल्ल भाव झलक उठा, कली ने ज्यों ही उसे ग्रहण कर पाया, त्यों ही उसने कह दिया—"किंतु कल भी अगर उन्होंने रहना चाहा, तो?"

"कल भी अगर उन्होंने रहना चाहा, तो?" मन-ही-मन केदार उसकी यह बात दोहराकर अग्नि की चिनगारी से जैसे चहक गया हो! किंतु वह क्षण मूक रहकर सोचने का न था, इसलिये तुरंत उसने कह दिया—"तो आगे का प्रबंध आज ही कर लेना चाहिए।"

कली ने अँगूठी उतारकर उसके हाथ पर रख दी। वह बोल न सकी। उसे प्रतीत हुआ, जैसे उसके भीतर हृत्पिंड से लेकर कंठ तक एक पाषाण-शिला अटक गई है। कारण, यह उसका अंतिम स्वर्णाभरण था।

केदार अँगूठी जेब में डालकर घर से बाहर हो गया।

* * *

त्रिवेणी के जीवनव्यापी अंधकार को एक बार फिर आलोक ने पराजित कर पाया है। वह सदा उल्लसित, उत्साहित देख पड़ता है। केदार के सहयोग में वह स्त्री-बच्चों के सिले-सिलाए अलंकृत कपड़ों का व्यवसाय करता है।

कली सिलाई, कटाई और क़सीदे का काम बहुत अच्छा जानती है। कुछ कारीगर नौकर रख लिए गए हैं। बूटे काढ़ने और सिलाई करने की तीन मशीनें उसके घर सोलह-सोलह घंटे चला करती हैं।

त्रिवेणी अब कई-कई दिन तक अपने घर नहीं जाता। घर जाने की उसे फ़ुरसत ही नहीं मिलती, जाय कैसे? उसके माता-पिता भी यह जानकर निश्चिंत रहते हैं कि वह किसी तरह प्रसन्न तो रहता है। माना, वह विवाह नहीं करना चाहता, लेकिन इससे क्या? अपना-अपना विचार और भाव ठहरा। जब वह किसी प्रकार इस बात पर राज़ी ही नहीं होता, तो किया क्या जाय? इस संबंध में उसके साथ ज़बरदस्ती भी तो नहीं की जा सकती!

केदार छाया की भाँति त्रिवेणी का साथ देता है। उसने अनुभव किया है कि किसी के साथ आत्मीयता हो, तो ऐसी—उज्ज्वल और स्वार्थ-हीन। देखो तो, इस व्यक्ति ने उसके वैसे संकुचित और क्षुद्र जीवन को कहाँ लाकर पहुँचा दिया। कली के वे आभूषण, जिनको बंधक-जीवन से छुटकारा मिलना कभी संभव न था, फिर लौट आए। किराए का मकान तक अपना हो गया। यह सुख, संतोषमय जीवन एक त्रिवेणी ही के द्वारा तो उसे प्राप्त हुआ।

उधर कली के जीवन में एक नया अध्याय आ गया है। किसी काम के लिये जब वह त्रिवेणी से कुछ कहती है, तो वह तत्काल, सबसे पहले, कर डालता है। कली सोचती रह जाती है कि यह त्रिवेणी कितना ऊँचा व्यक्ति है! अः मनुष्य में इतना सौहार्द भी संभव है!

आश्विन-मास के दिन थे। केदार कहीं बाहर गया हुआ था। कई दिन के ज्वर के बाद त्रिवेणी उस दिन कुछ स्वस्थ हो पाया था। उस समय उसके सिर में थोड़ा दर्द था। कली अपनी ही तबियत से उसके सिर में तैल मलने लगी।

इस अस्वस्थता में त्रिवेणी को एकांत वास का जो अवसर मिला, वह उसके लिये विष बन गया। कभी-कभी अवसर निकालकर वह सोती हुई कली

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के निकट जाकर खड़ा हो जाता। देर तक उसके अभिराम रूप को, उसके अप्रतिम अंग-सौष्ठव को एक ओर खड़ा चुपचाप देखता रहता, किंतु आत्मविस्मृत होना तो दूर, कभी न ज़रा आगे बढ़ता, न उस प्रकार का कोई शब्द मुँह से बाहर आने देता।

संयोग की बात, उसके जीवन में यह सोने का क्षण भी आ गया। कली का कोमल अंगुलि-स्पर्श पाकर वह कृतार्थ हो गया। थोड़ी देर बाद, करवट बदलकर, वह कली की ओर अपलक दृष्टि से देखने लगा।

उसी क्षण कली ने पूछ दिया—"सिर का दर्द अब कुछ कम हुआ?"

त्रिवेणी अपने ऊपर के अधिकार से, आप-ही-आप, अनपेक्षित, अवश रूप से खिसक पड़ा। बोला—"सिर का दर्द तो अच्छा हो गया।"

कली कुछ विस्मित हो उठी। बोली—"तो क्या और भी कहीं दर्द है? तुम इतना संकोच क्यों करते हो? मुझे तुम्हारे हाथ-पैर दाबने में भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती।"

जिह्वा को दंत-पंक्तियों के बीच दबाकर त्रिवेणी बोला—"तुम यह कहती क्या हो कली! छिः! छिः!!"

"तो?"

"जाने दो उस बात को; मैं बिलकुल अच्छा हूँ। कहीं कोई भी दर्द-वर्द नहीं।"

मदिर हास के झकोर में कली बोली—"अब समझी। तुमने पागलपन की बात सोच डाली। राम-राम! ऐसा भी कोई सोचता है? मैं तुम्हें देवता की तरह पूजनीय मानती हूँ।"

पराजित त्रिवेणी ने तब झट से उठकर कली के चरण छू लिए। बोला—"मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ कली! सचमुच मेरे मन में दूसरा भाव आ गया। तुम्हारी इस मनोहर रूप-माधुरी और इन कमल-नाल-सी कोमल उँगलियों के अकल्पित स्पर्श ने मेरे भीतर एक ज्वालामुखी धधका दिया।"

"तुमने मुझे मार डाला! मैं तो तुम्हें वंदनीय मानती थी। मैं नहीं जानती थी, तुम्हारी इस पवित्र आत्मा के भीतर ऐसा भयानक विषधर सो रहा है! तुमने यह न सोचा कि मैं हिंदू नारी हूँ, स्वामी ही मेरा सब कुछ है। दूसरे की ओर आँख उठाकर देखना भी मेरे लिये मृत्यु है। .... तुम अपनी इस सारी संपत्ति को ले जाओ जीजा! मुझे एक पाई न चाहिए।" कहकर अतिशय उत्तेजित होकर कली वहाँ से उठकर चल दी।

त्रिवेणी बहुत अशक्त हो गया था। उठकर वह कहीं जा नहीं सकता था। तो भी उसने चल देने की दृढ़ चेष्टा की। किसी तरह वह सीढ़ी से नीचे उतर आया, किंतु द्वार से आगे न बढ़ सका, लड़खड़ाकर गिर ही पड़ा।

नौकरानी ने कुछ गिरने के शब्द के साथ जो त्रिवेणी के कराहने का शब्द सुना, तो देखा, बड़े बाबू गिरे पड़े हैं। वह चिल्ला उठी—"अरे बहूजी, देखो तो, बड़े बाबू यहाँ गिरे पड़े कराह रहे हैं!"

कली दौड़ती हुई तुरंत नीचे आई। नौकरानी ने भी सहारा दिया, तब कहीं दोनो मिलकर बड़ी कठिनाई से त्रिवेणी को ऊपर ला सकीं।

त्रिवेणी की साँस फूल आई थी। चाहते हुए भी वह कुछ कह न सका। किंतु वह समर्थ होता, तो इतना ज़रूर कहता—मुझे उठाओ मत कली, यहीं पड़े-पड़े मर जाने दो। मैं तुम्हारी सहानुभूति नहीं चाहता, मैं तो एकमात्र तुम्हारी घृणा का ही पात्र हूँ।"

त्रिवेणी का घुटना छिल गया, उसकी कमर में भी चोट आ गई। कली ने डॉक्टर बुलवाकर उसे दिखलाया, खुद दवा बाँधी, सेंका, और यथा विधि उसका उपचार किया। अधिकार-पूर्वक उसने उसे भरसक आराम दिया। कई दिन तक रात-दिन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसके पास बैठी रही। पचासों प्रकार की बातें उसने उससे कीं। घुमा-फिराकर उसकी पराजित आत्मा को भी उसने उल्लसित किया, यहाँ तक कि त्रिवेणी उस आघात को भी भूल-सा गया। उसने अंत में यह भी कह डाला—"तुमने मुझे क्षमा कर दिया कली! चलो, यह बहुत अच्छा हुआ। मैं तो जैसे जी गया।"

कली बोली—"तुम सोचते हो, तुम एकमात्र अपने ही हो। किंतु तुम यह क्यों नहीं सोचते कि जितने तुम अपने हो, उससे कुछ कम या अधिक, थोड़े बहुत मेरे भी तो हो। तुम अपने ऊपर अन्य सभी प्रकार का अन्याय और अत्याचार कर सकते हो, किंतु पतन की ओर नहीं जा सकते जीजा! तुम मेरी आशाओं के बंदी हो। तुम चल सकते हो, दौड़ भी सकते हो, किंतु तुम गिरने नहीं दिए जा सकते। तुम तो आगे रहनेवाले व्यक्ति हो। बीच में तुम्हारे लिये स्थान कहाँ है?"

प्रतिहत, पराजित और द्रवीभूत त्रिवेणी बोला—"अपने इस विवेक में से थोड़ा मुझे भी दे दो, कली!"

"उलटी बात मत कहो जीजा! कली तो त्रिवेणी की सलिल-राशि पर ही तैरती रहती है। उसने जो कुछ भी पाया है, उसी संगम का तो है। उसका अपना क्या है?"

"तुम देवी हो कली! देवता ही तुम्हें पा सकते हैं। मनुष्य की गति से तुम सर्वथा परे हो।"

"यह तुम्हारा भ्रम है जीजा!" कहकर फ़र्श कुरेदती, अन्यमनस्क कली "पनडब्बा ले आऊँ" कहती हुई वहाँ से उठकर अपने आवास की ओर चली गई।

* * *

चौक में केदारनाथ-त्रिवेणीनाथ के नाम से एक दूकान कई वर्ष से चल रही थी। किंतु उस पर बैठता केदारनाथ ही था। बहुत कम ऐसा अवसर आता था कि त्रिवेणी को वहाँ बैठने के लिये विवश होना पड़ता हो। उस दिन, संयोग की बात, वह बहुत सबेरे वहाँ जा पहुँचा, जब दूकान पर बैठने-वाला नौकर जगदीश दूकान खोल ही रहा था। अनायास उसे कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ गई थी। सबेरे-सबेरे जब वह सिगरेट पी लेता, तब उसका कार्य-क्रम शुरू होता था। इधर बारह वर्षों से उसकी इस आदत में कोई अंतर न पड़ा था। संयोग से उस दिन वह बनियाइन पहनकर ही घर से बाहर निकल पड़ा! रुपए-पैसे क़मीज़ की जेब में छूट गए। पर इस बात का ख़याल उसे तब आया, जब वह पान की दूकान पर जा पहुँचा। उस समय वह बिना तमोली को पैसा दिए पान-सिगरेट नहीं लेना चाहता था। वह सोचता था कि ऐसा न हो, तमोली की खोंटी हो जाय! तत्काल उसे खयाल आ गया कि अपनी दूकान तो खुल ही गई है, वहीं चलकर पैसा ले लूँ। यही सोचकर वह तेज़ी से अपनी दूकान पर आ गया। किंतु पैसा माँगने पर दूकान पर बैठनेवाले नौकर ने कहा—"बाबू, पैसे तो नहीं हैं।"

त्रिवेणी ने क्रोधित होकर कह दिया—"बेवक़ूफ़! पैसे नहीं हैं, तो पैसे भुनाकर नहीं ला सकता! गधा कहीं का!!"

नौकर त्रिवेणी के इस व्यवहार को सहन न कर सका। वह दूकान बंद कर केदार के पास दौड़ा चला गया। तब तक घूमकर त्रिवेणी भी वहाँ जा पहुँचा। कली के सामने जो सारी बातें स्पष्ट हुईं, तो उसने कह दिया - "जीजाजी, यदि आप बुरा न मानें, तो मैं कुछ कहूँ।"

त्रिवेणी बोला—"कहो।"

कली ने कहा—"सबेरे-सबेरे दूकान खोलकर, बिना बोहनी किए, नोट तुड़ाकर पैसे ख़र्च न करने की बात दूकानदारी के विचार से सर्वथा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उचित ही है। यों दूकान आपकी, नौकर आपका। आप इसे चाहे जो सज़ा दीजिए।"

त्रिवेणी यह अपमान सहन न कर सका। आंदोलित होकर बोला—"यह तुम्हारी क्षुद्रता है कली! तुम रूढ़ियों की दासी हो, तुम न तो मनुष्य को पहचानती हो, न उसके प्रकृत अधिकार को। जाओ, आज से मैं इस सारी दौलत को लात मारता हूँ। आज से मैं इस घर में पैर न रक्खूँगा।"

यह कहकर त्रिवेणी वहाँ से चला आया। केदार ने बहुत समझाया, किंतु किसी भी प्रकार अब वह उसके साथ सहयोग करने को तैयार न हो सका।

(आगामी अंक में समाप्य)

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-

विख्यात—

'गोनोकिलर'

[रजिस्टर्ड]

नक़ली से सावधान!
खरीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता।

डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, बिट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अपनी कविता से

[श्रीयुत कपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्']

(१)

गान, ओ मेरे कोमल गान!
उमड़ते आँसू से दिन - रात
छलक छलकाते गीली आह,
न रुकते, ढुलक - ढुलककर मौन
भरोगे कौन समुद्र अथाह,
आँसुओं से अविरल अनजान?
गान, ओ मेरे कोमल गान!

(२)

तड़प फिर खग - सा पंख पसार,
विकल रह - रह उड़ते अविराम,
कभी अति ऊँच, कभी अति क्षीण,
करुण! हे अतिशय करुण ललाम,
फैल जाओगे कहाँ अजान?
गान, ओ मेरे कोमल गान!

(३)

बिखर जाओ सावन के घोर,
सजल बादल - सा सघन अपार,
समीरण से मिल तान वितान,
सिहर सिहराते सब संसार,
आज बरसोगे कहाँ अजान?
गान, ओ मेरे कोमल गान!

(४)

छोड़ते कभी विमल मुसकान
सरल सुमनों - सी अति सुकुमार,
श्रांत करते पथिकों के प्राण
वायु में भर - भर पुलक अपार,
खिलोगे किस वन में अनजान?
गान, ओ मेरे कोमल गान!

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कविवर पो० कुमारमणि शास्त्री*

[पो० कंठमणि शास्त्री, विशारद, संचालक विद्या-विभाग, कांकरोली]

पूर्व-पुरुष

कुमारमणि शास्त्री के पिता का नाम शास्त्री हरिवल्लभ भट्ट था। यह श्रीवत्सगोत्री, ऋग्वेदीय, आंध्रजातीय ब्राह्मण थे। इनका उपाह्व 'पोतकूर्चि' था।

कविवर कुमारमणि के पिता पं० हरिवल्लभ शास्त्री माधव पंडितराज के वंशज पं० कंठमणि शास्त्री के द्वितीय पुत्र थे। इनका निवास-स्थान सागर-ज़िले का 'गढ़पहरा'-नामक स्थान था। उक्त हरिवल्लभ शास्त्री प्रसिद्ध पौराणिक, धर्मशास्त्रज्ञ एवं हिंदी-भाषा के प्रकांड कवि थे। इनके (१) भगवद्गीता पद्यानुवाद, (२) संगीतदर्पण तथा संस्कृत में धर्मशास्त्र और (३) हरिवल्लभ सुधोदय-नामक ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। इनके पूर्व-पुरुष दक्षिणभारत से मध्य-प्रांत में आकर बसे थे। महाराजा जयसिंहदेव ने इनकी विद्वत्ता से प्रसन्न होकर 'धर्मसी' आदि ग्राम आजीविकार्थ प्रदान किए थे, जो अब भी इस लेख के लेखक को वंश-परंपरा से गवर्नमेंट द्वारा माफ़ी-रूप में प्राप्त हैं।

जन्म-काल

यद्यपि कवि कुमारमणि के जन्म-संवत् का पता नहीं लगा, तथापि अनुमानतः संवत् १७२० से १७२५ के लगभग मानना चाहिए। 'शिवसिंह-सरोज' के आधार पर 'मिश्रबंधु-विनोद' में इनको 'दासकाल' (सं० १७९१ से १८१०) का कवि माना गया था, पर वह मेरे संशोधन उपस्थित करने पर दूसरे संस्करण में सुधार दिया गया है। इसी प्रकार नागरी-प्रचारिणी सभा के विवरण में भी त्रुटि हो गई है।

अध्ययन एवं पांडित्य

पं० कुमारमणि का शास्त्राध्ययन वाजपेयी उपनामक भारद्वाजगोत्री मंडन कवि के पुत्र पं० जयगोविंदजी तथा पं० पुरुषोत्तमजी के पास हुआ था। 'रसिकरसाल' एवं 'रसिकरंजन' के परिशीलन से यह सहज ही ज्ञात हो जाता है कि कुमारमणि का पांडित्य दोनो भाषाओं में समान रूप से प्रकाशमान था। स्वार्थ-हस्तलिखित, आकर ग्रंथों के दर्शन से उनके अन्यविषयक प्रकांड पांडित्य का भी परिचय मिलता है। पौराणिक वृत्ति इनकी वंश-परंपरागत थी। उभय भाषा-पांडित्य के साथ-साथ काव्य-कला की प्रवीणता उनके लिये 'सोना-सुगंध' की कहावत चरितार्थ करती थी। कुमारमणि की प्रतिभा, उनकी अनोखी सूझ, उनका विशाल वैदुष्य तथा कव्युचित सरसहृदयता आदि उनके ऐसे गुण थे, जिनसे हम उन्हें एक 'पायदार' साहित्यिक व्यक्ति कह सकते हैं। इस व्यक्तित्व में उनकी एक विशेषता थी।

हिंदी-भाषा-विषयक साहित्य के रीति-ग्रंथ-निर्माण से हम उन्हें भाषा का आचार्य कह सकते हैं। इस पद पर अभी तक हिंदी-साहित्य के ख्यातनामा व्यक्तियों ने उन्हें समासीन नहीं समझा है। इसका एकमात्र कारण उनके ग्रंथ 'रसिकरसाल'† का तादृश प्रचाराभाव ही कहा जा सकता है। पर वह दिन दूर नहीं, जब इस ग्रंथ के प्रकाशित होकर साहित्य-जगत् के सम्मुख आते ही कवि को उक्त पद सहर्ष एवं सादर प्रदान किया जायगा।

* अप्रकाशित 'आंध्र जातीय हिंदी-कवि'-नामक ग्रंथ से।

† अब प्रकाशित हो गया है।—सुधा-संपादक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

परिवार

कवि कुमारमणि के लघु भ्राता का नाम पं० वासुदेव शास्त्री था। आप अच्छे पौराणिक एवं साहित्यज्ञ होने के साथ ही कवि भी थे। आपका स्वर्गवास अल्प वय में ही हो गया था।

आपके स्वर्गत हो जाने पर कवि कुमारमणि ने 'रसिकरंजन' का संग्रह किया है, जो स्मारक ग्रंथ माना जा सकता है।

पं० कुमारमणि को अपने लघु भ्राता के वियोग के समान स्वकीय प्रिय धर्मपत्नी का भी काल-वश वियोग सहना पड़ा है। कवि के भोजराज और कृष्णदेव-नामक दो पुत्र हुए, जिनका वंश अब भी विद्यमान है।

कुमारमणि ने 'रसिकरंजन' में 'मातुल जनार्दन' की आर्याओं का संग्रह किया है। अतः कहना पड़ेगा कि तन्नामधेय कवि के एक मामा थे, जो प्रतिष्ठित कवि थे। उत्तर-भारतीय आंध्र-जाति में तत्कालीन जनार्दन-नामक दो कवि हुए हैं, जिनमें एक पद्माकर कवि के पितामह जनार्दन तथा दूसरे गोस्वामी जनार्दन (बीकानेर) थे, जिनका जन्म-समय सं० १७१८ से २० के लगभग निर्धारित किया गया है।

कुमारमणि कवि के क्षेमनिधि-नामक एक शिष्य थे, जो पद्माकर के पितृक एवं मोहन भट्ट के लघु भ्राता थे।

राज्याश्रय

हम यह पहले कह चुके हैं कि कुमारमणि का पांडित्य सर्व शास्त्रव्यापी था। जिस प्रकार वह काव्य कला के मर्मज्ञ, सिद्धहस्त कवि थे, उसी प्रकार संस्कृत-भाषा के प्रत्येक शास्त्र में उनकी अबाध प्रतिभा चमकती थी। पौराणिक वृत्ति के वंश-परंपरागत होने से इनके यत्र-तत्र परिभ्रमण तथा तदुद्भूत लोक-परिचय एवं स्वकीय काव्य-कला की विदग्धता से यदि यह तत्कालीन राजा-महाराजों के यहाँ आदरणीय होते हों, तो अधिकांश संभव है।

पं० कुमारमणि शास्त्री अपनी पौराणिक वृत्ति, पांडित्य एवं वंश-परंपरा से प्राप्त भूमि की आजीविका से अपना योगक्षेम चलाने में परमुखापेक्षी नहीं थे। इस कारण यदि उन्हें किसी नृपति-विशेष के आश्रय की आवश्यकता न भी हुई हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। उन्होंने अपना जीवन काव्यमय बनाया था, और वह उसकी स्थायी स्थापना कर अपना नश्वर शरीर छोड़ते हुए भी अजर-अमर बन गए थे।

अंतिम समय

कुमारमणि ने अपनी पांचभौतिक देह कब छोड़ी, इसका निश्चित समय अज्ञात है। हाँ, सं० १७७६ की उनकी हस्त-लिखित 'किरणावली' पुस्तक के उपलब्ध होने से इसके बाद का समय उनका अंतिम समय माना जायगा। इस प्रकार कम-से-कम ३-४ वर्ष और भी उनकी उपस्थिति रहने से यह प्रायः निश्चित होता है कि कविवर ने ६०-६५ वर्ष की अवस्था में अपनी इहलीला संवरण की होगी।

कवि के पूर्ववर्ती कुछ कवि

कुमारमणि-कृत 'रसिकरसाल' के दोष-प्रकरण में कुछ हिंदी-कवियों के काव्य-उदाहरण दिए गए हैं। यद्यपि वे प्रायः पूर्ण पद्य नहीं हैं, तथापि उनमें निर्माताओं की नामावली आ जाने से यह मानना पड़ेगा कि वे कवि या तो पूर्ववर्ती थे, या समकालीन होते हुए भी प्रसिद्ध थे।

यह प्रथम ही कहा जा चुका है कि 'रसिकरसाल' की पूर्ति सं० १७७६ में हुई है। अतः आपाततः यह सिद्ध होता है कि जिन कवियों का उल्लेख हुआ है, वे इसके पूर्व विद्यमान थे, अथवा ग्रंथ-पूर्ति तक उनकी यथेष्ट प्रसिद्धि हो चुकी थी। निम्न-लिखित कवियों के समय-निर्धार के विषय में हम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मिश्रबंधु-विनोद' के आधार पर उनका समय देते हैं, जिसमें कुछ कवियों का समय 'रसिकरसाल' की पूर्ति के बाद आता है। परंतु जहाँ तक मेरी धारणा है, 'रसिकरसाल' में नामोल्लेख होने के कारण 'विनोद'-प्रदत्त समय का सुधार होना चाहिए। यह एक ऐसा विषय है, जिसका स्पष्टीकरण साहित्यज्ञ ऐतिहासिकों का कर्तव्य है।

उक्त कवियों की नामावली एवं 'विनोद'कार का दिया हुआ समय इस प्रकार है—

(१) जगदीश—रचना-काल सं० १८६२।

(२) केशवदास—जन्म-काल सं० १६१८।

(३) 'बेनी'—प्रथम सं० १६६० के लगभग, द्वितीय का रचना-काल सं० १७५५।

(४) गंग—प्रथम सं० १५६० से १६१०। द्वितीय १६२७।

(५) सविता—जन्म-काल सं० १८०३। कविता-काल १८३० (झारखंड के कृष्णसाहि के यहाँ)

(६) 'ब्रह्म'—सं० १८०३।

(७) मुरलीधर—ज० सं० १७४०, क० का० १७७०।

(८) कासीराम—ज० सं० १७१५, क० का० १७४०।

(६) गदाधर—सं० १७७५ के लगभग।

(१०) मतिराम—सं० १७१६ के लगभग।

(११) केसवराय—प्रथम बघेलखंडी सं० १७५४, द्वितीय बुंदेलखंडी सं० १७५१ (छत्रसाल के)

(१२) मनिकंठ—सं० १७५४ के पूर्व।

जिस प्रकार कुमारमणि के 'रसिकरसाल' से हिंदी-कवियों की पृष्ठ-लिखित नामावली ली गई है, उसी प्रकार उनके 'रसिकरंजन'-नामक संस्कृत-आर्या-सप्तशती-संग्रह से भी संस्कृत-साहित्य के निम्न-लिखित कवियों का पता लगता है, और उनकी काव्य-सुधा चखने का सौभाग्य प्राप्त होता है। यभदुर्ग यह है कि अभी तक एतन्नामधारी कवियों का न तो साहित्य-जगत् को पता ही था, न उनके ग्रंथों की उपलब्धि ही।

'रसिकरंजन' के द्वारा जिनके नाम एवं कुछ ग्रंथों का स्वतंत्र रूप से परिज्ञान हुआ है, वे इस प्रकार हैं—

(१) कुमारमणि—'रसिकरसाल' (हिंदी), 'रसिकरंजन' (संस्कृत-आर्या-संग्रह ग्रंथ), स्वतंत्र सप्तशती, जिसे कवि ने 'मदीय सप्तशती' नाम से उल्लिखित किया है।

(२) गोवर्धनाचार्य—सप्तशती (संस्कृत) प्रसिद्ध है।

(३) चिंतामणि दीक्षित—कोई ग्रंथ ज्ञात नहीं हुआ।

(४) मातुल जनार्दन—कोई ग्रंथ ज्ञात नहीं हुआ।

(५) जयगोविंद वाजपेयी—'कवि-कल्पद्रुम' (संस्कृत-हिंदी), 'कवि-सर्वस्व' (हिंदी-साहित्य-रीति-ग्रंथ), 'रसोदय काव्य-कौस्तुभ' (हिंदी)

(६) बालकृष्ण भट्ट—कोई ग्रंथ ज्ञात नहीं हुआ।

(७) बाण भट्ट—प्रसिद्ध है।

(८) वासुदेव—'अनुज-सप्तशती' नाम से कवि कुमारमणि ने इनके एक ग्रंथ का नाम लिखा है।

(६) मधुसूदन कवि-पंडित—कोई ग्रंथ ज्ञात नहीं हुआ।

(१०) लीलावतीकार—प्रसिद्ध हैं।

(११) प्रांचः (केचन)—अप्रसिद्ध।

(१२) नव्यः (कश्चित्)— ,,

(१३) कश्चित्— ,,

उपरि-लिखित सभी कवि प्रतिभावान्, विद्वान् एवंच रससिद्ध महापुरुष थे, और ये सब आंध्र-जातीय (तैलंग) ब्राह्मण थे। क्योंकि 'रसिकरंजन' में तज्जातीय कवियों की ही आर्याओं का संग्रह है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुमारमणि-कृत ग्रंथ

(१) 'रसिकरंजन'—कवि कुमारमणि शास्त्री का सर्वप्रथम उपलब्ध ग्रंथ 'रसिकरंजन' है, जिसमें साहित्य के २१ विषयों पर सुंदर, सरस संस्कृत-आर्याओं का संग्रह किया गया है। इसे 'सप्तशती' शब्द से स्वयं कवि ने संबोधित किया है। खेद है, उक्त ग्रंथ का कुछ मध्यम एवं अंतिम भाग उपलब्ध नहीं हुआ! ग्रंथ के विषय-निदर्शनार्थ कवि ने स्वयं प्रारंभ में इस प्रकार लिखा है—

काव्यं कृष्णस्तुतिरथ संयोगवियोगनायिकाभेदाः;
उद्दीपनरसचेष्टा शिक्षोपालम्भनं प्रेम।
सापत्न्यमानभङ्गं हास्यंग्रामे गुणास्तथान्योक्तिः;
सदसज्जनदुःखनयाश्चित्र मिहोक्तिकैकविंशतिप्रमिकैः।

अर्थात् 'रसिकरंजन' में काव्य, कृष्ण-स्तुति, संयोग, वियोग, नायिका-भेद, उद्दीपन, रस, चेष्टा, शिक्षा, उपालंभ, प्रेम, सापत्न्यमान, अंग (वर्णन), हास्य, ग्रामगुण, अन्योक्ति, सज्जन, असज्जन, दुःख, नय तथा चित्रकाव्य, इन २१ विषयों पर आर्याओं का संग्रह किया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में कवि कुमारमणि-रचित कितनी ही आर्याएँ हैं, जिन्हें उन्होंने अपनी स्वतंत्र सप्त-शती से उद्धृत किया है। इसी प्रकार अन्य कवियों की (जिनके नाम प्रथम लिखे जा चुके हैं) आर्याओं का इतना सुंदर संग्रह अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं होता। (१) मधुसूदन सप्तशती, (२) कुमार-सप्तशती, (३) वासुदेव अनुज)-सप्त-शती। इन तीन सप्तशतियों का स्वतंत्र नाम क्या था, कुछ पता नहीं; पर कुमारमणि ने इसी नाम से इनका स्मरण किया है। मधुसूदनजी को कवि-पंडित की उपाधि थी, और यह कुमारमणि के पूर्वज थे। इनकी आर्याएँ इतनी सुंदर, सरस, भाव एवं ओज से परिपूर्ण हैं कि उन्हें एक समर्थ कवि कहा जाना चाहिए।

हम लेख-विस्तार-भय से 'रसिकरंजन' की कुछ अर्थाएँ यहाँ उद्धृत नहीं कर सकते। हाँ, अन्य किसी लेख में इस पर प्रकाश डाला जायगा।

प्रस्तुत 'रसिकरंजन' की पूर्ति सं० १७६५ में हुई है। इसका निर्माण कवि कुमारमणि ने अपने अनुज के स्मारक-रूप में किया है। सौभाग्य है कि यह ग्रंथ कवि के हाथ का लिखा हुआ, परंपरागत मेरे पुस्तक-संग्रह में, उपलब्ध हो गया है। मध्य तथा अंत में कुछ अंश खंडितप्राय है, जो चंद्रमा में कलंक-समान ज्ञात होता है।

(२) 'कुमार-सप्तशती'—यह कुमारमणि की स्वतंत्र आर्या-सप्तशती थी, जो अद्यावधि उपलब्ध नहीं हुई। 'रसिकरंजन' में स्वकीय आर्याओं को लिखते हुए उनके साथ 'मम, मदीयाः-मदीय सप्तशत्याः' इन शब्दों से उसे संकेतित किया है। इसकी रचना 'रसिकरंजन' से पूर्वकालिक है। 'रसिकरंजन' में उद्धृत इसकी आर्याओं के आलोचन, भाव-गांभीर्य, शब्द-सौष्ठव एवं चामत्कार-पूर्ण वर्णन से यह सहज ही ज्ञात हो सकता है कि यदि यह ग्रंथ प्राप्त होता, तो इसे 'गोवर्द्धन-सप्तशती' की प्रतिद्वंद्विता में अवश्य स्थान मिलता।

(३) 'रसिकरसाल'—कवि कुमारमणि की अंतिम उपलब्ध, किंतु सर्वप्रथम भाषा-काव्य-रचना का नाम 'रसिकरसाल' है। इसकी पूर्ति सं० १७७६ में हुई है। ग्रंथकार ने ग्रंथ के आदि-अंत में इस प्रकार लिखा है—

काव्य-प्रकाश विचार कछु भाषा में रचि हाल;
पंडित सुकवि 'कुमारमणि' कीन्हों रसिकरसाल।
रस सागर रवि-तुरग-विधु संवत मधुर वसंत;
विकस्यौर सिकरसाल लखि विलसत सुहृद बसंत।

'रसिकरसाल' ग्रंथ के विषय में इस लेख में कुछ कहना पत्रिका के कलेवर को बढ़ाना है। प्रस्तुत विषय उसकी भूमिका में बहुत कुछ लिखा गया है।

'रसिकरसाल' एक प्रकार से 'काव्य-प्रकाश' का

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिंदी-अनुवाद है। प्रस्तुत ग्रंथ को हम छायानुवाद कह सकते हैं। इसकी भाषा परिमार्जित, शैली उत्तम, भाव-गांभीर्य मननीय एवं कवि की प्रतिभा दर्शनीय है। कहने को यह कवि के शब्दों में 'काव्य-प्रकाश-विचार भाषा में' रचा गया है, पर अधिकांश स्वतंत्र है। इसमें काव्य-स्वरूप के परिज्ञानार्थ तत्तल्लक्षणों का संग्रह कवि ने अपनी भाषा में किया है। उदाहरण जहाँ उत्तम जँचे हैं, कवि ने संस्कृत-श्लोकों के अनुवाद-स्वरूप रक्खे हैं। जहाँ आवश्यकता हुई है, स्वतंत्र उदाहरण दिए हैं। परंतु अधिकतर 'कुमारमणि' के स्वतंत्र रचित पद्य ही उदाहरण-स्वरूप उपलब्ध होते हैं। यों तो "व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वं" अथवा "बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वं" की उक्तियों से कोई भी स्वतंत्र उक्ति नहीं बचती, तथापि पद्य के पठन समय में रंच-मात्र भी उनकी मौलिकता की हानि भासित नहीं होती।

कुमारमणि और पद्माकर

कुमारमणि के क्षेमनिधि-नामक एक शिष्य थे, जो कवि पद्माकर के पितृव्य थे। अतः संभव है, पद्माकर के पिता एवं क्षेमनिधि के ज्येष्ठ भ्राता मोहन भट्ट ने भी कुमारमणि के समीप ही साहित्य-शास्त्र का अध्ययन किया हो।

'रसिकरसाल' 'काव्य-प्रकाश' का प्रायः अनुवाद-ग्रंथ है! इस कारण पद्माकर का पाठ्य ग्रंथ 'रसिकरसाल' भी हो सकता है, एवमेव अपने पितृचरण की काव्य-शैली के गुरु कुमारमणि के होने के कारण पद्माकर की कविता पर कुमारमणि का अधिक प्रभाव पड़ा प्रतीत होता है। इस कथन की पुष्टि 'जगद्विनोद' एवं 'पद्माभरण' देखने से सहज ही हो सकती है। उदाहरण के लिये कुछ पद्य देखिए—

'रसिकरसाल'—

दोऊ ढिंग है बाल इक आँखिन नाँखि गुलाल ;
अंकपाल दूजी लई चूमि कपोलन लाल।

'जगद्विनोद'—

मूँदे तहाँ एक अलबेली के अनोखे दृग
सुदृगमिचावनी के ख्यालनि चितै-हितै ;
नैसुक नवाइ ग्रीवा धन्य-धन्य दूसरी को
औचक अचूक मुख चूमत चितै-चितै।

उक्त दोनो पद्य ज्येष्ठा-कनिष्ठा नायिका के उदाहरण-स्वरूप हैं, जिनमें कवियों ने अपने कल्पना-कौशल का परिचय दिया है। दोनो ने ज्येष्ठा-कनिष्ठा नायिका के लक्षण पृथक-पृथक् लिखे हैं, जो एक दूसरे से विभिन्न हैं। इन लक्षणों की छान-बीन हमें यहाँ नहीं करनी। हमें तो केवल यह कहना है कि कुमारमणि की उक्त भाव-मूर्ति पर पद्माकर ने कुछ अपना रंग-रोग़न चढ़ाया है। पद्माकर के पक्षपाती कवि यद्यपि "सुदृगमिचावनी के ख्याल" में आकर "नैसुक नवाइ ग्रीवा" से उनकी वाहवाही के "औचक अचूक" पुल बाँध सकते हैं, पर रसिकरसाल-कर्ता की "आँखिन नाँखि गुलाल" की कृति से अनुरक्त हुए विना नहीं रह सकते। तात्कालिक प्रेम-प्रदर्शन और पर-वंचनार्थ नायक की सूझ ही अनुपम ढंग से कवि ने छोटे-से दोहे में कह डाली है। इधर पद्माकरजी आधे कवित्त में उसकी भूमिका बाँधते ही उलझ जाते हैं। हम इसे भावापहरण कह सकते हैं।

कुछ पाठक इसे एक प्रकार की धाँधली या बलात् दोषारोपण कह सकते हैं। अस्तु। लीजिए दूसरा उदाहरण—

'रसिकरसाल'—

खौर को राग छुट्यौ कुच को,
मिटिगौ अधरारस, देख्यौ प्रकासहिं ;
अंजन गौ दृग - कंजन तें,
तनु कंपत तेरो रुमंच हुलासहिं।
नैकु हितू जन को हित चीन्हौ न
कीन्हौ अरी ! मन मेरो निरासहिं ;
बावरी ! बावरी न्हान गई,
कै बहान गई उहि पीव के पासहिं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'जगद्विनोद—

धोइ गई केसरि कपोल कुच गोलन की,
पीक-लीक अधर अमोलनि सुहाई है;
कहैं 'पद्माकर' त्यों नैनहू निरंजन भै,
तजत न कंप देह पुलकनि छाई है।
बाद मति ठानै झूठ बादिन भई री अब,
दूतिपनो छोड़ि धूतिपन में सुहाई है;
आई तोहिं पीर न पराई, महापापिन तू,
पापी लौं गई न कहूँ बापी न्हाइ आई है।

उक्त सवैया और कवित्त में क्रमशः अर्थ का मिलान करते-करते अर्धांश तक भावानुवाद का परिज्ञान हो जाता है। आगे चलकर यद्यपि कुछ अभिप्राय बदल गया है, पर अंतिम चरणों में तो केवल शब्दों का ही हेर-फेर रह गया है। क्या यह भावापहरण नहीं? क्या 'जगद्विनोद' के पद्य पर 'रसिकरसाल' के उक्त सवैया की छाया स्पष्ट नहीं झलकती? कहना पड़ेगा कि पद्माकर ने कुमारमणि की सूझ से काम लेकर अपना नाम कमाया और काम बनाया है।

हाँ, स्मरण होता है, कई सहृदय व्यक्ति इसे अनुचित पक्षपात कह सकते हैं, और तदर्थ एक संस्कृत का श्लोक उपस्थित कर सकते हैं, जिसके ये दोनो पद्य अनुवाद-स्वरूप हैं। वह श्लोक इस प्रकार है—

निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो
नेत्रे दूरमनञ्जने पुलकिता तन्वीतवेयं तनुः;
मिथ्यावादिनि दूति! बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे
वापीस्नानुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्।

हमें इस कथन के मानने में कोई आपत्ति नहीं, और इसका कारण स्पष्ट है कि उक्त दोनो कवियों की सूझ मौलिक नहीं। परंतु कुमारमणि ने इसे 'ध्वनि-प्रकरण' के उदाहरण में लिखा है, जैसा 'रसिकरसाल' के लिये काव्य-प्रकाश का अनुवाद होने के कारण आवश्यक था, पर पद्माकर ने इसे अन्यसुरतिदुःखिता नायिका के उदाहरण में लिखा है, और उसे 'रसिकरसाल' से लेकर परिवर्तित रूप में ला रक्खा है। अनुवाद का तरतम भाव भी दोनो स्थलों में विचारणीय है।

यद्यपि कवित्त को उक्त श्लोक का पूरा अनुवाद कहकर पद्माकर की पीठ ठोंकी जा सकती है, परंतु हम यह निःसंकोच कह सकते हैं कि ध्वनि-प्रकरण का उदाहरण होने से कुमारमणि का सवैया कवित्त और मूल-श्लोक, दोनो से ही बढ़-चढ़ गया है। "मिथ्यावादिनि दूति! बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे" इस वाक्य और उसके अनुवाद—"बाद मति ठानै झूठ बादिन भई री अब, दूतिपनो छोड़ि धूतिपन में सुहाई है"—की अपेक्षा "नैकु हितु जन का हित चीन्हौ न, कीन्हौ अरी! मन मेरो निरासहि" इस कुमारमणि के पद्यांश में कितनी मधुरता एवं ध्वनि है, जो काव्य को अतिशय चमत्कृत कर रही है। अस्तु। भावापहरण के दो उदाहरण और उपस्थित किए जाते हैं, जिनका अपलाप नहीं किया जा सकता—

'रसिकरसाल'—

"रूप सौं बिचित्र कान्ह मित्र को बिलोकि चित्र
चित्रिनि भई तू चित्र पूतरी सुभाई है।

'जगद्विनोद'—

मोहन मित्र को चित्र लखे
भई चित्र ही-सी तो बिचित्र कहा है।

पद्माकर के इस शब्द और भाव के अपहरण को कोई कहाँ तक छिपा सकेगा? 'जगद्विनोद' के पद्य के शब्द उच्चैर्घोष से अपने असली स्थान का पता दे रहे हैं। कवि ने कुछ शब्दों में परिवर्तन कर किस प्रकार 'रसिकरसाल' के माल को उदरसात् कर लिया है। उक्त उदाहरण 'चित्रदर्शन' के हैं, अतः कहना पड़ेगा कि पद्माकर ने निःसंकोच होकर इस सुंदर भाव-पूर्ण 'कान्ह के चित्र' को चुराया है, इसकी माधुरी पर लट्ट

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होकर वह अपने लोभ को संवरण नहीं कर सके।

प्रस्तुत भावापहरण के प्रकरण में एक उदाहरण और दिया जाकर यह विषय समाप्त किया जायगा। देखिए—

'रसिकरसाल'—

फूल बहार के भार भरी
इक डार है नद-कुमार नवाई।

'जगद्विनोद'—

निज निज मन के चुनि सबै फूल लेहु इक बार;
यहि कहि कान्ह कदंब की हरषि हिलाई डार।

दिन-दहाड़े की इस चोरी के लिये और क्या प्रमाण चाहिए? कदंब की डाल पर चढ़कर अपनी प्रियतमाओं को पक्षपात-हीन होकर प्रसन्न करने के लिये नायक के दक्षिणता की सुंदर भावोत्पत्ति कुमारमणि के मस्तिष्क से ही हो सकती है। उसे चराकर पद्माकर ने अपने लिये धन्यवाद का गट्ठर तैयार कराया है! इन्हीं कारणों से कहना पड़ता है कि पद्माकर ने कुमारमणि के सुंदर भावों का अपहरण किया और उससे ख्याति प्राप्त की है।

अब हम विज्ञ पाठकों के सम्मुख कुछ और निदर्शन रखकर यह बतलाना चाहते हैं कि पद्माकर ने कुमारमणि के शब्दों को यथावत् अपने काव्य में स्थान ही नहीं दिया, प्रत्युत उनके द्वारा अपने छंदों की पूर्ति भी की है। प्रथम एक उदाहरण अर्थापहरण का दे देना भी अप्रासंगिक न होगा—

'रसिकरसाल'—

रचि बनाउ जो प्रेमबस तिय पहुँचे पिय पास।
निज पास पिय को बुलावै, सोऊ अभिसारिका कहत है।

'जगद्विनोद'—

बोलि पठावै पियहि कै पिय पै आपुहि जाय।

'रसिकरसाल' के उक्त पद्य और गद्य-भाग को मिलाकर पद्माकर ने अपने दोहे का कलेवर बनाया है, जो पद्य के आवरण से आवृत्त होने पर भी अपनी वर्ण-संकरता को छिपा नहीं सका। अस्तु। शब्दापहरण की झाँकी देखिए—

नायक के उदाहरण में पद्माकर का यह कवित्त प्रसिद्ध है—

ठौर ठकुराई को ठाकुर ठसकदार—
नंद को कन्हाई सो सुनंद को कन्हाई है।
(जग० २८०)

क्या इस पद्य के रेखांकित पद का अनुमान पाठक कर सकते हैं कि वह कहाँ का है? क्या यह पद्माकर का मौलिक शब्द है? नहीं। कुमारमणि 'रसिकरसाल' में नायक के उदाहरण में ही इसे इस प्रकार लिख चुके हैं—

कुँवर कन्हैया लोक ठाकुर ठसक को।

'ठाकुर ठसक' के नगीने को चुराकर पद्माकर ने अपने कवित्त के आभरण में उसे यद्यपि फ़िट बैठा दिया है, और 'ठकार' की ठन-ठन में छिपाकर उसे अपनाने की कोशिश की है, पर 'रसिकरसाल' के अवलोकन से यह प्रकट हो जाता है कि यह 'ठाकुर ठसक' का संयोग कुमारमणि-कृत है।

अब एक दूसरा उदाहरण लीजिए—

'रसिकरसाल'—

है उपमेय परसपरहिं, सोई है उपमान।

'पद्माभरण'—

उपमेयोपम परसपर उपमेयहु उपमान।

दोनो के रेखांकित पदों पर ध्यान देने से विदित हो जायगा कि 'रसिकरसाल' के लक्षण में ही कुछ हेरफार कर पद्माभरण का लक्षण बना लिया गया है।

एक अन्य उदाहरण दिया जाता है, जिसमें एक-आध शब्द ही क्या, दोहा का अर्धांश तक उड़ा लिया गया है—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'रसिकरसाल'—

रति रस सों पिय संग सों जाके कछु परतीति ;
सो बिस्रब्ध नवोढ़ तिय बरनत कबिता-रीति ।

'जगद्विनोद'—

पति की कछु परतीति उर धरै नवोढ़ा नारि ;
सो बिस्रब्ध नवोढ़ तिय बरनत बिबुध बिचारि ।

'रसिकरसाल' के 'कछु परतीति' से लेकर 'बरनत' तक पद्यांश पद्माकर ने साफ़ उड़ा लिया है । इस चोरी के समय उन्हें पुनरुक्ति-दोष का भी ध्यान नहीं रहा है । 'नवोढ़ा नारि' और 'नवोढ़ तिय' ये दोनो शब्द एक ही पद्य में दो बार आ गए हैं ।

इन प्रत्यक्ष उदाहरणों के सम्यगालोचन के बाद कौन साहित्यज्ञ समालोचक इससे 'नकार' कर सकता है कि पद्माकर के काव्य पर कुमारमणि की छाया नहीं पड़ी ? स्थानाभाव से यहाँ बहुत कम उदाहरण दिए गए हैं । 'रसिकरसाल' का अवलोकन करके पाठक दोनो का मिलान करते हुए स्वयं इस उक्ति की पुष्टि कर लेंगे ।

उक्त उदाहरणों के अर्थ, भाव और शब्द, सभी इस प्रकार का संकेत करते हैं कि पद्माकर की सूझ या वर्णन-शैली स्वतंत्र न होकर अधिकांश परतंत्र है । वह मौलिक नहीं, वह कहीं से ला-लाकर रक्खी गई है । पद्माकर के ऐसा करने अथवा उनसे ऐसा हो जाने का भी कारण है, वह है उनके पाठ्य ग्रंथों में 'रसिकरसाल' की संभवता । कुमारमणि ने साहित्य-जगत् में उतनी अधिक प्रसिद्धि नहीं पाई, जितनी पद्माकर ने । वर्तमान साहित्य-पारखियों ने तो साहित्य में कोई स्थान कुमारमणि का निश्चित ही नहीं किया ! इधर पद्माकर अपना विशेष आसन दबाए बैठे हैं । पद्माकर की विशेष ख्याति उनके अनेक देशाटन, राजसम्मान तथा काव्यात्मक आजीविका के कारण हुई है । इधर कुमारमणि के 'रसिकरसाल' की अनुपलब्धि और उनकी पौराणिक वृत्ति उन्हें विस्मृति के पट में छिपाए रही है । 'रसिकरसाल' के अतिरिक्त भाषा-काव्य का अन्य ग्रंथ भी कुमारमणि-कृत उपलब्ध नहीं होता । इन सब अंगों और उपांगों से पद्माकर के 'करतब' छिपे रह गए हैं—वह खूब प्रसिद्ध हो गए, और कवि कुमारमणि जहाँ-के तहाँ ही रह गए । यही कारण है कि साहित्य में उचित स्थान न देने का अन्याय कुमारमणि के साथ साहित्यज्ञों के हाथों हो गया ! अस्तु । अब वह समय शीघ्र ही आनेवाला है, जब 'रसिकरसाल' अपनी सुरभि गंध, मधुर आस्वाद तथा लोकोत्तर काव्य-चमत्कार से विद्वानों को मोहित करेगा, और तब कवि कुमारमणि साहित्य-सभा में समुचित पद पर आसीन होकर हमें दर्शन देंगे । यह सब श्रेय विद्यारसिक गो० श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोली-नरेश को प्राप्त होगा, जो अपने विद्या-विभागांतर्गत श्रीद्वारकेश कवि-मंडल, कांकरोली से इसे प्रकाशित कर रहे हैं ।

किसी आगामी लेख में कुमारमणि की कविता उपस्थित करने का वचन देकर हम अब पाठकों से बिदा लेते हैं ।

सुसमाचार

हिंदोस्तान-भर की प्रसिद्ध, समस्त हिंदी-पुस्तकें हमसे मँगाइए । इधर-उधर न भटकिए । आपको समय तथा रुपए, दोनो की किफ़ायत होगी । सूचीपत्र मुफ़्त मँगाएँ ।

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दक्षिण-फ्रांस से पत्र

[डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

रोम से मैं पिछला पत्र लिख चुका हूँ। मंगल २० अगस्त, ३५ को १२ बजे रोम से चलकर ५½ बजे शाम को पिसा रुक गया था। पिसा साधारण शहर है। वहाँ की प्रसिद्ध झुकी हुई मीनार देखने गया था। तसवीरों से वह जितनी ऊँची मालूम होती है, उतनी ऊँची वह है नहीं। परसों बुध २१ को सुबह ६ बजे पिसा से चलकर शाम को ५ बजे यहाँ पहुँचा।

यह सफ़र वास्तव में इतना लंबा नहीं, जितना वक़्त लगा। इटली - फ्रांस की सरहद पर रेल बदलने में क़रीब दो घंटे खराब हुए। जेनेवा में भी रेल बदलनी पड़ी। इसके सिवा पिसा से नीस तक बराबर दो-दो, तीन-तीन मील पर स्टेशन हैं, इसलिये वक़्त बहुत लगता है। रोम से पिसा तक तो सफ़र विशेष मनोरंजक नहीं था। कभी-कभी रेल समुद्र के निकट आ जाती थी, लेकिन ज़्यादातर काफ़ी हटकर चलती थी। पिसा से नीस तक रेल की पटरी बिलकुल समुद्र के किनारे-किनारे है। समुद्र का किनारा पहाड़ी और टेढ़ा-मेढ़ा है। रेल की पटरी सीधी डाली गई है, इसलिये अनगिनती सुरंगें बनानी पड़ी हैं। यह डेढ़-दो सौ मील का क़रीब-क़रीब आधा सफ़र खुले में और आधा सुरंगों में होता है। हर वक़्त आँखमिचौनी-सी होती रहती है—कभी अँधेरी सुरंग और कभी समुद्र के किनारे का सुंदर दृश्य। रेल की पटरी समुद्र के निकट ऐसी मालूम होती है, मानो प्रयाग में क़िले से बलुआ घाट तक की जमुना के किनारे की सड़क पर रेल चलती हो। इस हिस्से में सब जगह किनारे तक खूब हरे पहाड़ हैं, और समुद्र का तट चट्टानी न होकर रेतीला और खुला है। इसी-लिये समस्त योरप और अमेरिका से लोग यहाँ समुद्र में नहाने और धूप में घमाने आते हैं। पिसा से नीस तक समुद्र के किनारे-किनारे बराबर बस्ती चली गई है। कहीं बड़ी और सुंदर और कहीं सादा। यही योरप का प्रसिद्ध रिवेरिया का समुद्र-तट है, और मांट कार्लो वग़ैरह फ़ैशनेबिल जगहें यहाँ ही हैं।

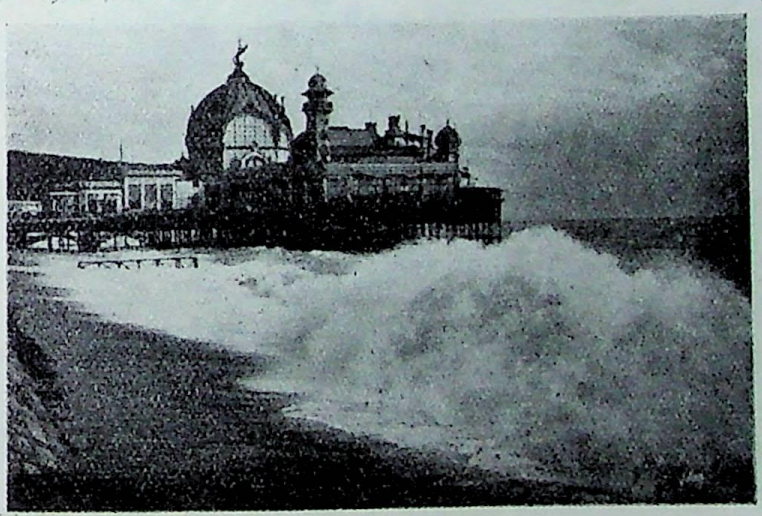

समुद्र की लहरों का एक दृश्य—नीस

यहाँ नीस में, जहाँ मैं ठहरा हूँ, यह जगह एक पहाड़ी पर खुले में है। दूर नीचे नीस की बस्ती और समुद्र दिखलाई पड़ता है, जो लगभग दो मील

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की दूरी पर होंगे। यह प्रकृतिवादियों का एक आश्रम है--चार-पाँच बँगले हैं, खेत और बाग़ हैं। सभ्यता-पूर्ण शहरों की ज़िंदगी से ऊबकर कुछ वहमी फ़्रांसीसी प्रकृतिवादी यहाँ आकर छुट्टी बिताते हैं। प्रायः लोग परिवार-सहित यहाँ के बँगलों या कॉटेजों में रहते हैं। खाने का अपना प्रबंध न करनेवालों के लिये एक महिला अपने यहाँ प्रबंध कर देती है। मैं इन्हीं के यहाँ खाना खाता हूँ। और भी छ-सात लोग खानेवाले हैं। खाने के साथ फ़्रांसीसी

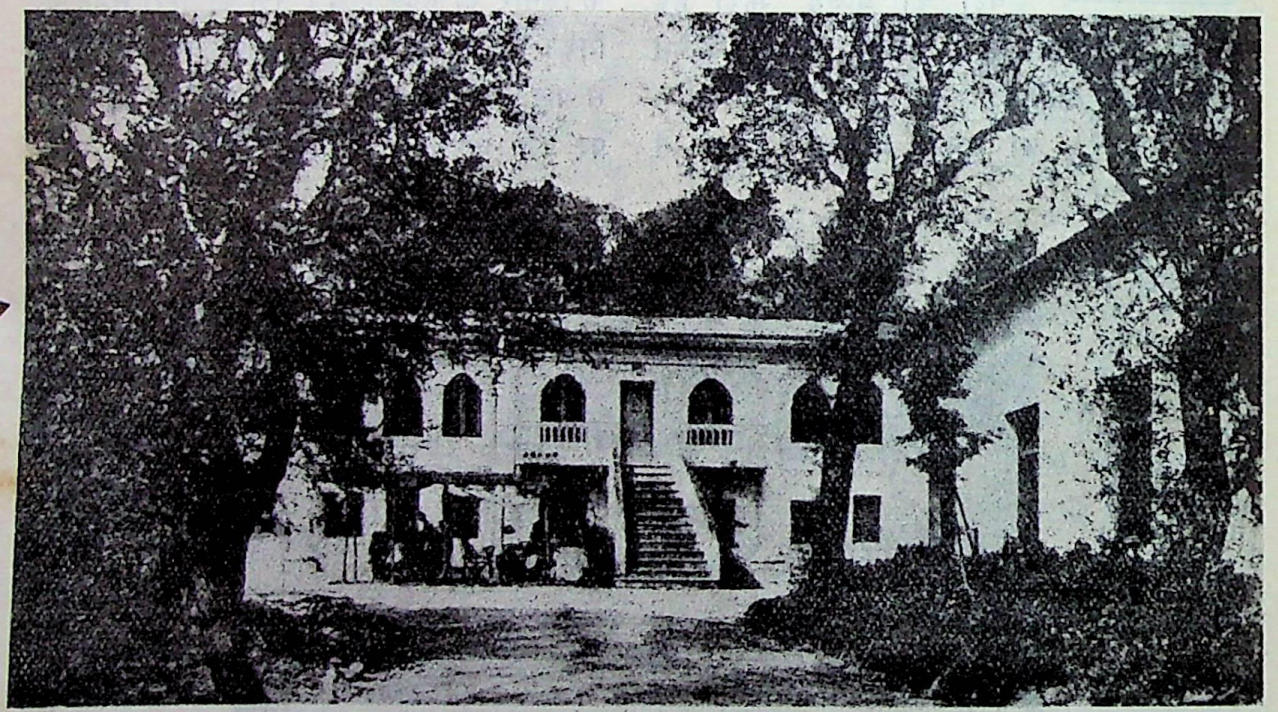

प्रकृतिवादियों का आश्रम—नीस

का अभ्यास भी होता है। जगह शांत और स्वच्छ है। महीने-भर रेल, ट्राम और मोटर की घड़घड़ तथा दौड़-धूप के बाद यहाँ बहुत आराम मालूम हो रहा है। आश्रम में विशेष कपड़े पहनने का भी कोई बंधन नहीं। मैं धोती, क़मीज़ पहनकर घूम-फिर सकता हूँ। यह भी एक आराम है। आश्रम में केवल शाकाहार होता है, जिसमें यहाँ सब जगह अंडे तो शामिल रहते ही हैं। आश्रम के संचालक और उनकी स्त्री भले स्वभाव की मालूम होती हैं। यहाँ रहनेवाले साधारणतया अपना काम अपने हाथ से ही करते हैं। मौसम इलाहाबाद के ऑक्टोबर-नवंबर का-सा है।

यहाँ भी आजकल इटली-अबीसीनिया की चर्चा बराबर रहती है। परिस्थिति बड़ी विचित्र है। हर-एक योरपियन राष्ट्र केवल स्वार्थ के अनुसार अपनी नीति बनाता है। अँगरेज़ और फ़्रांसीसी इटली का अबीसीनिया पर क़ब्ज़ा बिलकुल पसंद नहीं करते, विशेषतया अँगरेज़, क्योंकि उन्हें मिस्र के सिवा भारत के मार्ग में भविष्य में बाधा पड़ सकने का सबसे बड़ा भय है। यों भी कोई राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र की शक्ति का बढ़ना नहीं देख सकता। जर्मनी ज़रूर चुप है, और अपना कुछ हर्ज नहीं समझता, बल्कि अगर एक बार इटली अबीसीनेया पर क़ब्ज़ा कर ले, तो वह अपने उपनिवेशों को वापस पाने की माँग ज़ोरों से उठा सकता है। सबसे

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समुद्र-स्नान – नीस

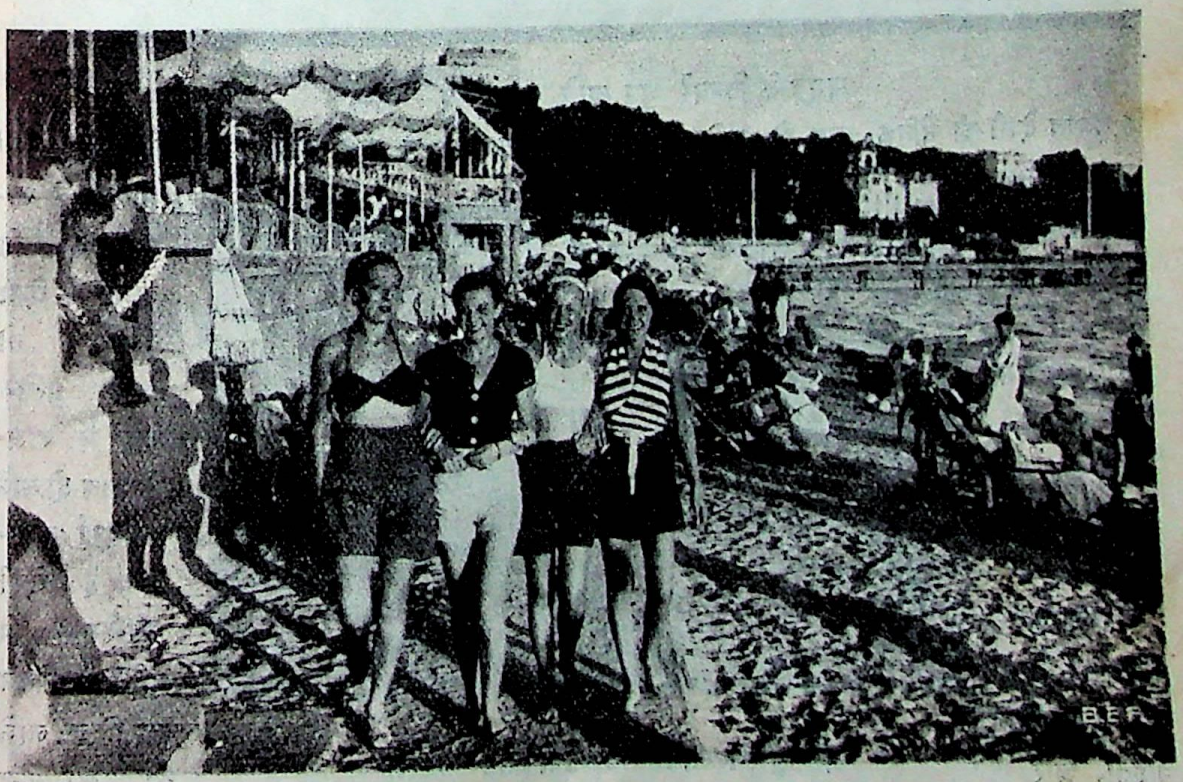

समुद्र-स्नान से लौटती हुई रमणियाँ—नीस

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अधिक नापसंद लोग इटली की इस खुली डकैती के ढंग को करते हैं। इससे संसार की नज़र में योरप

युद्ध की मुसीबतों को भुला नहीं पाई है, न आर्थिक परिस्थिति ही ठीक हो पाई है। राजनीतिज्ञों का वश

समुद्र के किनारे धूप खाने का दृश्य—नीस

के समस्त देशों की नैतिक धाक को अंतिम भारी धक्का लगेगा, यह सब अनुभव करते हैं। अँगरेज़ विशेष रूप से इस ढंग पर नाराज़ हैं।

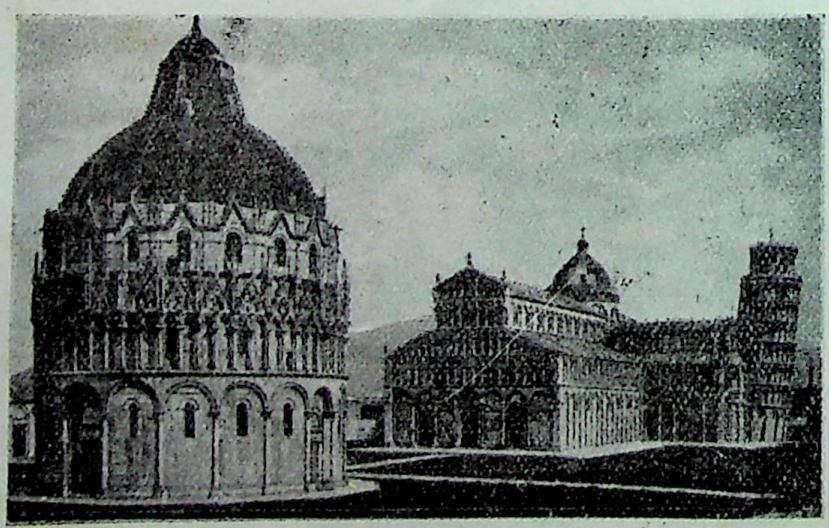

प्रसिद्ध गिरजाघर तथा टेढ़ी लाट—पिसा

लेकिन यह सब होते हुए भी कोई भी योरपियन देश इस समय योरपियन युद्ध नहीं चाहता, और उसका मुख्य कारण यह है कि जनता अभी पिछले चले, तब तो वे इस पल लड़ने को तैयार हैं। लेकिन वे जानते हैं कि अगर वे ऐसा करेंगे, तो प्रायः प्रत्येक देश में राज-विप्लव हो जाने की पूर्ण संभावना है। ऐसी परिस्थिति में शीघ्र योरपियन युद्ध छिड़ जाने की संभावना मुझे नहीं मालूम होती।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुसोलिनी और उनके सैनिक इस समय क़ैसर की तरह अपनी सफलता निश्चित समझ रहे हैं। अबीसीनिया पर क़ब्ज़ा करना आसान भी है, और कठिन भी। अगर कहीं रूस-जापान के युद्ध की तरह अनहोनी बात हुई, और अबीसीनिया न हारा, तो जैसे उस युद्ध ने एशिया के देशों को आत्मनिर्भरता का संदेश दिया था, उसी तरह आफ्रिका की जातियों के बहुत दिनों बाद दिन फिरेंगे। इटली अबीसीनिया का युद्ध निश्चित-सा मालूम होता है, अगर डरकर अबीसीनिया ने पहले ही आत्मसमर्पण न कर दिया, या अन्य योरपियन देशों ने उसे धोके में डालकर किसी तरह का झूठा समझौता न करवा दिया। अगर युद्ध हुआ भी, तो अन्य योरपियन देश उसकी बिलकुल हार नहीं चाहते, क्योंकि ऐसा होने से उस पर इटली का पूरा सैनिक क़ब्ज़ा हो जायगा। इसलिये वे उसे अच्छी तरह लड़ावेंगे। इसमें तिजारती फ़ायदा भी है, और साथ ही दूसरी ओर यह यत्न करेंगे कि आग घर में न आ जाय—आफ्रिका के उस किनारे तक ही सीमित रहे। इस महीने में भविष्य की परिस्थिति अधिक स्पष्ट हो जायगी। १५-२० सितंबर के लगभग अबीसीनिया में बरसात समाप्त हो जाती है, तब तक जेनेवा के राजनीतिज्ञों के दाँव-पेंच भी समाप्त हो जायँगे। इस समय जो होना होगा, सो होगा।

एक बात मैं लिखना भूल गया था। जब मैं इटली में था, तो किताबों की दूकानों पर पूर्वी आफ्रिका के नए नक़्शे अक्सर टँगे दिखलाई पड़ते थे। उनमें इटली की कालोनियों में अबीसीनिया की तरफ़ की सरहद ही हटा दी गई थी।

यहाँ ख़ाली समय में यहाँ की लाइब्रेरी से लेकर मैंने कई किताबें पढ़ीं—बाइबिल के अतिरिक्त। फ्रांस का एक इतिहास, भाई परमानंद की जीवनी और कुछ बच्चों की शिक्षा-संबंधी पुस्तकें तथा आधुनिक जापान का एक वर्णन। बाइबिल के अध्ययन से मैंने विशेष और स्थायी लाभ उठाया है।

महात्माजी के 'इंडियन होम रूल' को यहाँ योरप के वातावरण में पढ़कर मैंने और भी अधिक रोचक पाया।

केसाविन

प्रत्येक अवस्था के दमे के लिये इलाज
विशेषतया व्यावहारिक

खाँसी, ज़ुकाम, अतीव उत्कट पेचिश, न्यूमोनिया, उखड़ा हुआ दमा और हर प्रकार के श्वास की बीमारी के लिये।

इसमें ज़हरीली वस्तु नहीं है ;
बच्चे इसे पसंद करते हैं।

बेंगल केमिकल
कलकत्ता : : बंबई

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ग़रीब की लड़की

[श्रीमती रत्नकुमारी एम्० ए०]

करुणा की आयु माता-पिता की चिंता के साथ-साथ बढ़ती जाती थी। उसके पिता साधारण श्रेणी के मनुष्य थे। आय इतनी ही थी कि पुत्र, पुत्री, पत्नी और स्वयं का निर्वाह साधारण रूप से हो जाता था। उनमें इतनी सामर्थ्य न थी कि दस-पाँच हज़ार रुपए लगाकर कन्या के लिये वर ख़रीद लाते। पुत्र का विवाह वह विना कुछ लिए ही कर लाए थे। परंतु बहू का आदर इस कारण कुछ भी कम न था। बहुत दौड़-धूप के बाद जिस दिन एक तहसीलदार साहब के बी० ए०-पास पुत्र के साथ विवाह ठीक कर आए, उस दिन उन्होंने अपने को धन्य माना। वर के पिता ने सोचा, अकेली लड़की है, भाई-बाप दोनो कमाते हैं, बहुत कुछ यों ही मिल जायगा, माँगकर मुँह क्यों ख़राब करूँ। क्या जाने, जितना मैं माँगूँ, उससे अधिक ही मिल जाय। करुणा के पिता को तिलक पर ही ज्ञात हो गया था कि जितनी आसानी से विवाह का हो जाना वह समझते आ रहे थे, उतनी आसानी से वह हो न सकेगा।

जैसे-जैसे विवाह का मुहूर्त पास आता जाता था, वैसे-वसे करुणा के घरवालों में भय और आशंका बढ़ती जा रही थी। परंतु विवाह सकुशल समाप्त हो गया। माता-पिता ने संतोष की साँस ली। विदा के दिन सुबह से ही तैयारियाँ होने लगीं। दहेज़ का सब सामान बाहर के दालान में सजाकर रक्खा गया। सब बराती आकर उसे देखने लगे। पिता ने पुत्री को देने में कुछ उठा नहीं रक्खा था, परंतु समधी के नेत्रों के आगे कुछ भी नहीं आया। उन्होंने पूछा—

"बस, यही है ? या और कुछ ?"

"लड़की के गहने हैं, पर वह पहने है। यह लिस्ट देख लीजिए।"

समधीजी ने हाथ बढ़ाकर लिस्ट ले ली। दो आभूषण हाथ के, दो गले के, एक पैर का, दो इयरिंग, तीन-चार अँगूठी, यही उसमें लिखा था। तहसीलदार साहब का मुख क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने लिस्ट फेककर कहा—"हुँह! इसी की लिस्ट बनी है। चार गहने पहनाकर लड़की मेरे घर भेज रहे हैं। मैं लोगों को क्या मुँह दिखाऊँगा!"

करुणा के पिता कृष्णदत्त ने कहा—"मैंने तो अपनी शक्ति के अनुसार बहुत दिया है।"

"यही बहुत है! इतना तो मेरे किसी क्लर्क के यहाँ विवाह में देते, तो भी यह उसके लिये कम ही रहता। तहसीलदार के घर संबंध होना क्या सहज है ?"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

माननीय श्रीविश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव

[आप लखनऊ के प्रसिद्ध ऐडवोकेट हैं, और अनेक वर्ष तक अवध चीफ़कोर्ट के माननीय जज के उच्च आसन पर आसीन रहकर गत २२ ऑक्टोबर को स्थायी चीफ़ जज के प्रतिष्ठित पद पर प्रतिष्ठित हुए हैं। आजकल आप अस्वस्थ हैं। गत सप्ताह में तो एक बार आपकी अवस्था चिंताजनक हो गई थी। पर अब कुछ-कुछ सुधर गई है। ईश्वर आपको शीघ्र स्वस्थ करें।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

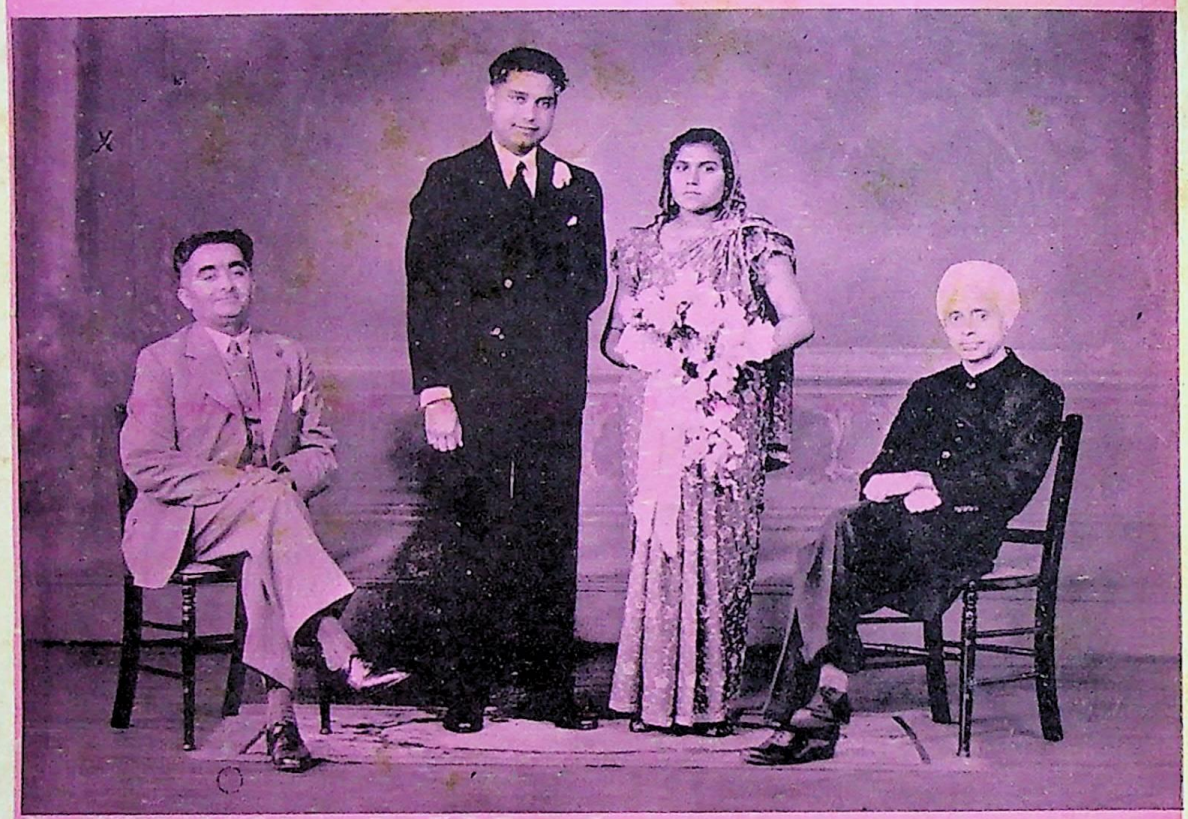

एक आदर्श विवाह

[बाईं ओर से—(१) श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी (प्रधान मंत्री साउथ आफ्रिकन इंडियन कांग्रेस), (२) वर और वधू—श्रीमगनलाल और श्रीमती गायत्रीदेवी, जिनका विवाहोत्सव डरबन के सिटी-हॉल में, माननीय मेयर की अध्यक्षता में, मनाया गया, और (३) श्रीभवानीदयाल संन्यासी। (इस संबंध में एक नोट सौरभ में गया है।)]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"अच्छा, आज्ञा कीजिए, किस बात की कमी है।"

"एक-दो चीज़ों की कमी हो, तो बताऊँ। ये बर्तन, ये कपड़े, सभी थोड़े और घटिया हैं। मेरी नज़र के लिये कम-से-कम पाँच सौ रुपए चाहिए, आप चले हैं इक्यावन लेकर! दो हज़ार और लाइए, तब मैं लड़की को ले जाऊँगा।"

बाहर यह झगड़ा हो ही रहा था कि इतने में किसी ने भीतर संवाद पहुँचा दिया। दो-तीन स्त्रियाँ दौड़ती हुई वहाँ जा पहुँचीं, जहाँ करुणा साज-सज्जा कर मा और भाभी के पास बैठी रो रही थी।

द्वार पर से ही एक ने शीघ्रता से कहा—"अरे बुआ, रोती क्या हो, ग़ज़ब हो गया!"

करुणा की मा ने घबराकर कहा—"क्या हुआ पुष्पा?"

"बुआ, करुणा के ससुर तो रुपए के लिये झगड़ा कर रहे हैं।"

बुआ को मानो काठ मार गया। काटो, तो लहू नहीं। करुणा की सिसकी भी रुक गई, वह माता की ओर देखती ही रह गई। माता अनेक देवी-देवता मनाने लगी। "हे भगवान्, रक्षा करो!" कहती हुई वह उठकर बाहर की ओर चलीं। उसी समय मलिन मुँह किए, हाँफते हुए, कृष्णदत्त आ पहुँचे। स्त्री की ओर देखकर बोले—"आख़ीर में सब बिगड़ना चाहता है।"

"क्या हुआ?"

"वे लोग दो हज़ार और माँगते हैं, नहीं तो बिदा न कराएँगे।"

"हाय भगवान! यह क्या। घर में तो दो सौ रुपए भी नहीं हैं, दो हज़ार तो बहुत हैं।"

"क्या बताऊँ, इसी दिन के लिये कन्या बुरी लगती है।"

करुणा ने दोनो हाथों में मुँह छिपा लिया। उसके उच्छ्वसित रुदन से उसकी देह फूल-फूल उठने लगी। उसी समय उसका भाई प्रमोद आकर द्वार पर खड़ा हो गया। वह बहन को स्टेशन पहुँचाने के लिये तैयार हो रहा था। उसे यह सब ज्ञात ही न था। वह आते ही बोल उठा—"बाबूजी, जल्दी करिए, नहीं तो गाड़ी छुट जायगी।"

"अरे कैसी देर, कैसी गाड़ी, यहाँ तो बिदा होती ही नहीं दिखाई देती। न-जाने यह लड़की अपने फूटे भाग्य में क्या लिखाकर लाई है।" मा ने कहा।

प्रमोद ने सब मामला सुनकर बहन की ओर देखा। उसके नेत्रों में असीम वेदना नाच उठी। वह करुणा के मनोभावों को जानना चाहता था। यदि करुणा की इच्छा हो, तो वह रुपए देने का विरोध करे। बहन को वह जन्म-भर सिर पर चढ़ाकर रक्खेगा।

"बोलो प्रमोद, क्या किया जाय? कहीं से उधार लाओ।" करुणा के पिता ने कहा।

करुणा ने मुँह उठाया। रोते-रोते बोली—"बाबूजी! नहीं।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रमोद को आश्वासन मिल गया। वह बोला—"उधार किससे लाऊँ ?"

"तो फिर मकान बेच डालो, या गिरवी रख दो।"

"न बाबूजी, तुम इस तरह रुपया दोगे, तो मैं जाऊँगी ही नहीं।"

"चुप रह। फूटे भाग्य लेकर आई है, ऊपर से बढ़-बढ़कर बोलती है। न-जाने कौन-सी जगह जाकर रहेगी, अगर वहाँ न जायगी। अभागिनी तो···"

"बस, अम्मा, चुप रहो।" गरजकर प्रमोद ने कहा—"उन कुत्तों की नीचता तो देखतीं नहीं, उसका भाग्य बखानती हो। क्या उसे रहने को कोई जगह नहीं, जो वह अपमान होने पर भी वहीं जाय।"

"न जायगी, तो बदनामी ही होगी प्रमोद ! तुम बाप-बेटों का सिर नीचा हो जायगा।"

करुणा के मुँह से आह निकल गई। प्रमोद ने बहन को छाती से लगाकर कहा—"मेरा सिर क्यों नीचा होने लगा अम्मा ! मेरी बहन का मूल्य क्या रुपयों से आँका जा सकता है ? उसमें कौन-सा दुर्गुण है, कौन-सा पाप है, जो उसे रुपया लेकर बिदा कराएँगे। मेरा सिर तो तभी नीचा होगा। बाबूजी, तुम जाकर कह दो, हम रुपया नहीं देंगे।"

"प्रमोद, सोचकर काम करो। ऐसा न हो, पछताना पड़े।"

"सोच लिया है। अच्छा, तुम न जाओ, मैं ही जाता हूँ। चल तो करुणा, तुझे देखकर भी न मानेंगे, तब तो उन्हें भगा दूँगा।"

बहन का हाथ पकड़कर, घसीटता हुआ प्रमोद दौड़ पड़ा। सब लोग 'हाँ-हाँ' करते ही रह गए।

करुणा को खींचकर अपने आगे खड़ा करके प्रमोद साँस लेने लगा। बरामदे में उपस्थित सब लोगों की दृष्टि उस पर पड़ी। वर रामेश्वर ने देखा, नव-परिणीता वधू की श्री से मंडित करुणा खड़ी है। लाल लहँगे पर चौड़े गोटे का, हल्का पीला डुपट्टा ओढ़े है। हल्के, सुंदर इयरिंग कान में झूल रहे हैं। सिंदूर से माँग भरी है, नीचे गोल टीका लगा है। वह मुग्ध हो गया। इतने में ही प्रमोद बोला—"रामेश्वर, बोलो, तुम्हें भी रुपया चाहिए ?"

रामेश्वर क्या बोले—वह तो एकदम मुग्ध हो उठा था। बूढ़े तहसीलदार ने देखा, मामला चला। लड़का बड़ा चंट है, यह परी-सी बहू देखकर भला रामेश्वर रुपया माँगेगा। वह तुरंत बोल उठे—"रामेश्वर आजकल के लड़कों के समान नहीं। वह मेरी आज्ञा में चलता है।"

"आप चुप रहें। बोलो रामेश्वर, तुम्हें धन चाहिए या मेरी बहन ?"

रामेश्वर चुप। करुणा का रूप उसे खींच रहा था। उधर पिता की की हुई तारीफ़ भी झूठी करते नहीं बनती थी। पिता ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर कहा—"बोलो बेटा, शरमाओ नहीं।"

"जो पिताजी कहते हैं, वही मेरी भी राय

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है।" रामेश्वर ने कहा। परंतु उस समय उसे ज्ञात हो रहा था, मानो फाँसी पर टँगने जा रहा है।

"अच्छी बात है, तो जाओ, जहाँ रुपया मिले। मैं एक पाई भी नहीं दूँगा। बी० ए० होकर जूतियाँ चटकाते ही घूमोगे, कोई नवाब तो बन न जाओगे।"

"चलो बेटा, ग़रीब की लड़की की हमारे घर ज़रूरत नहीं।"

और बक-झक होकर बरात लौट गई। करुणा पिता के ही घर रह गई। पहले ही के समान उसके दिन बीतने लगे।

करुणा के विवाह को तीन वर्ष हो गए थे। उसके दिन मजे में बीतते जा रहे थे। उसने पढ़ना आरंभ कर दिया था। सोचती थी, पढ़कर नौकरी कर लूँगी, किसी पर भार होकर नहीं रहूँगी। विवाह की घटना की याद कभी-कभी उसे दुखी कर देती थी, पर वह भूलने की चेष्टा करती थी। एक दिन दोपहर की जलती गरमी में वह चुपचाप बैठकर पुस्तक पढ़ने की चेष्टा कर रही थी। पास ही चटाई पर मा छोटे पोते को लिटाकर पंखा कर रही थी, बहू सिलाई कर रही थी। उसी समय प्रमोद आया। हाथ में एक पत्र था। द्वार पर से ही बोला—"अम्मा, जान पड़ता है, करुणा के भाग्य जाग रहे हैं।"

उसकी बात में विद्रूप और व्यंग्य की ध्वनि थी। मा ने पूछा—"क्या हुआ है?"

"करुणा की सास का पत्र आया है।"

मा पंखा फेककर चट से उठकर बैठ गई। बहू सुई चलाना भूल गई। करुणा ने यथा-साध्य चेष्टा करके उद्वेग को रोका। मा ने पूछा—"क्या लिखा है, सुना तो।"

"वह करुणा को लेन आनेवाली हैं।"

"क्यों, वह बहू कहाँ गई?" मा ने उत्सुकता से पूछा।

"अरे, जहाँ पहली गई थी, वहीं दूसरी गई। काली, अमीर बहू ससुरजी को पसंद थी, पतिजी को नापसंद। जैसे-तैसे इतने दिन कटे, आख़िर में मायके छोड़ दी गई। अब सुंदर, ग़रीब बहू पर कृपा हुई है। क्यों री करुणा, जायगी?"

"जायगी क्यों नहीं।" मा ने बीच ही में कहा।

"मैं नहीं जाऊँगी भैया!"

"तो मैं उन्हें मना कर दूँ?"

"तुम लोग चुप रहो, उन्हें आने दो।" मा ने कहा। उन्हें आशा थी, तब तक शायद करुणा अपना विचार बदल दे।

नियत दिवस करुणा की सास आ पहुँचीं। उनके स्वागत-सत्कार में कमी नहीं हुई। सब लोग उनके आगमन से प्रसन्न थे। परंतु करुणा का मुख अत्यंत गंभीर हो उठा था। चलने का प्रश्न उठने पर उसने दृढ़ता-पूर्वक कहा—"मैं नहीं जाऊँगी।"

"क्यों बहू, हम लोग तुम्हें परम आदर से सिर पर चढ़ाकर रक्खेंगे।"

"ठीक है, पर मैं नहीं जाऊँगी। उस दिन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुझमें कौन-सी बुराई आ गई थी, जो हज़ारों में मेरा सिर नीचा करके वे लोग चले गए थे।"

"वह उनकी ग़लती थी, अब उसे भूल जाओ बेटी !"

"भूल जाती, अगर फिर दूसरी ग़लती न की जाती। विवाह में की हुई प्रतिज्ञा का जिसे तनिक भी ध्यान नहीं, जो कभी धन, कभी रूप के लिये उन पवित्र प्रतिज्ञाओं को भूल जाता है, उसके साथ मेरा निर्वाह नहीं हो सकता। आप लौट जाइए। मैं ग़रीब हूँ, पर मुझे आत्मसम्मान का ध्यान है। मैं नहीं जाऊँगी।"

"करुणा, क्या कहती है !" मा ने कहा।

"चुप रहो अम्मा, जिस बहू को छोड़ दिया, उसके आगे-पीछे कोई नहीं है। पिता के जीवन तक तो कुछ नहीं, फिर उसका कोई भी ठिकाना नहीं। सरला कहती थी, वह पढ़ी भी नहीं है। मैं इतने अन्याय-पूर्वक प्राप्त किए हुए स्थान को ग्रहण नहीं कर सकती। आप लोग जायँ, मैं नहीं जाऊँगी। मैं ग़रीब हूँ, सदा ग़रीब ही रहूँगी।"

अंत में सब चुप रह गए। सास के दिए समस्त प्रलोभनों को ठुकराकर करुणा अपने विचार पर ही दृढ़ रही। हताश होकर सास लौट गईं। करुणा के इस आचरण से प्रमोद को अत्यंत प्रसन्नता हुई। करुणा अब भी उसके आदर और प्यार की पात्री थी।

आधुनिक काल की आश्चर्यजनक ईजाद !

आप विना पुत्र क्यों रहें ?

ज़रा उन लोगों की अवस्था का विचार करें, जिनके पुत्र नहीं है। औषधि-विज्ञान की यह आधुनिक ईजाद है, जिससे पुत्र निस्संदेह प्राप्त होगा। इसका व्यवहार बहुत सरल है। दो महीने के गर्भ के बाद 'मैनोपी' का व्यवहार पूर्ण संतोष प्रदायक है। यहाँ पर हम एक आए हुए पत्र का आशय देते हैं—

"मेरी शादी हुए १५ वर्ष हो गए, और पिछले वर्ष तक मेरी स्त्री के ५ लड़कियाँ हुईं, जिनमें २ ज़िंदा हैं। पर विना पुत्र के हमारी गृहस्थी दुःखमय थी। पर 'मैनोपी' की कृपा से हमारा दुःख सुखमय हो गया है। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि १२ ऑक्टोबर, १९३७ को मैं एक पुत्र का पिता हो गया हूँ।

आर० एल्० सरगोधा"

"मैनोपी" पूरी व्यवस्था। मूल्य ८), डाक-व्यय अलग।

हाइजीन रिसर्च इंस्टीच्यूट, 'कारोनेशन बिल्डिंग', फ़ोर्ट, बंबई।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुंदरि ! कुछ तो बोलो !

[श्रीयुत नीलकंठ तिवारी 'ज़ख़्मी' बी० ए०, साहित्यरत्न]

सुंदरि ! कुछ तो बोलो !
अपनी मृदु मुसकान-तुला पर खारे आँसू तो तोलो।
अपने नयन डुबोकर नापो मेरी दुखिया आँखों को तो ;
शून्य प्रतीक्षामय पलकों की प्यार-भरी इन पाँखों को तो।
कितने नभ हैं डूबे इनमें, उर-पौरों से गिन तो लो।
सुंदरि ! कुछ तो बोलो !

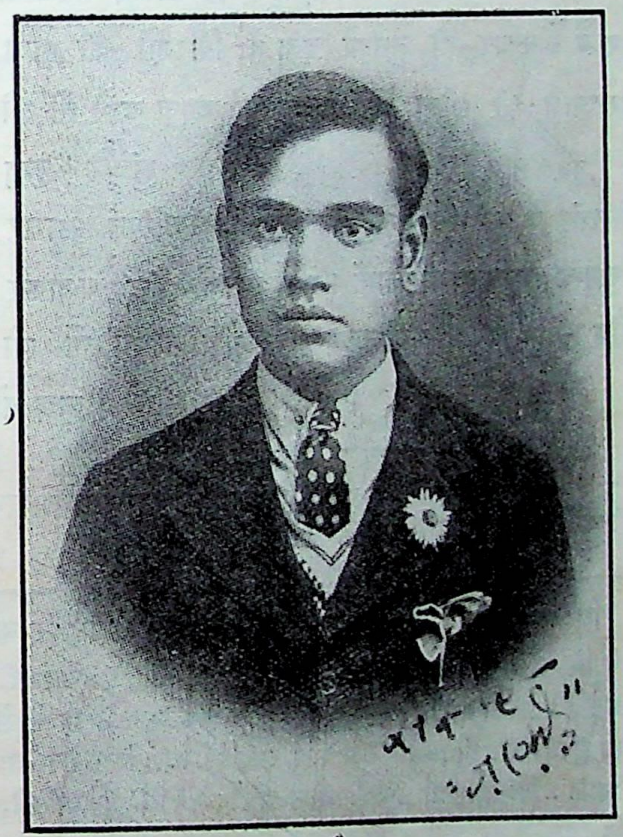

कविवर
श्रीयुत नीलकंठ तिवारी 'ज़ख़्मी' बी० ए०, साहित्यरत्न

चाहो, तो तुम आग लगा दो मेरे तन में, मन में, रानी,
चाहो, तो आँखों में भर दो सात समुद्रों का ही पानी।
पर हे मेरी कोकिल बाले ! कुहू-कुहू कर कुछ बोलो।
सुंदरि ! कुछ तो बोलो !

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यौवन का कर्पूर रहा जल आज प्रणय की ज्वाल लपेटे ;
आज पपीहा प्राण जगा है स्वयं प्यास की प्यास समेटे।
प्रेम-भरी चितवन से सुंदरि ! मेरी ज्वाला पी तो लो।
सुंदरि ! कुछ तो बोलो !

कुलबुल कर लें इस जग-तरु पर, हम दो पक्षी हैं अनजाने ;
नियति-पंख पर उड़ जाएँगे-कौन देश फिर, हम क्या जाने ?
दृग के वृंदावन में बाले ! राधा बनकर तो डोलो !
सुंदरि ! कुछ तो बोलो !

माना, तुम प्रकाश अति उज्ज्वल, सूर्य-चंद्र की भी परिभाषा ;
पर मैं अंधकार ही तुमको देता हूँ किरणों की भाषा।
उर-प्याले की सीमा में तुम मुझको आज डुबो तो लो।
सुंदरि ! कुछ तो बोलो !

नीलकंठ हूँ, लाओ, पी लूँ कालकूट के अगणित सागर ;
इंदुमुखी, मस्तक पर धारूँ पर मैं तुमको इंदु बनाकर।
यौवन-मधु में बोल-बोलकर बीज प्रेम के तो बो लो।
सुंदरि ! कुछ तो बोलो* !

---

* शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले कविता-संग्रह 'इंद्र-धनुष' से।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥-) २५ ,, ,, ,, ५=) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हा गौड़जी!

[श्रीयुत गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर']

[१]

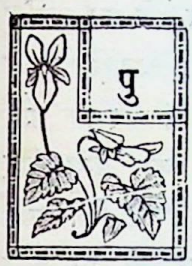

एय-श्लोक प्रो० रामदासजी गौड़ एम्० ए० के साकेतवास हो जाने के ठीक दूसरे दिन जब मुझे अपने एक संबंधी द्वारा उसकी दुःखद सूचना मिली, तो सहसा मुझे अपने कानों पर ही विश्वास न होता था। दौड़ा हुआ ह्वीलर-बुक-स्टाल पर उस दिन के ताज़े समाचार-पत्रों की खोज में गया। हा हंत! वहाँ वह हृदय-विदारक सूचना सत्य निकली। हृदय टूक-टूक हो गया। दिल रो उठा। आँसुओं की झड़ी लग गई। मैं कभी न रोता था, लेकिन उस दिन रोया। दूसरे दिन काशी से मेरी अभागिनी भाभी (स्व० गौड़जी की पत्नी) का शोक-पत्र भी आ पहुँचा। पढ़कर अधीर हो गया। उसी क्षण काशी जाने के लिये उद्यत हुआ, फिर कुछ सोचकर ठहर गया। सोचा, हा! इन नेत्रों से भावज को वैधव्य के बाने में कैसे देख सकूँगा? क्या कहकर और कैसे उन्हें सांत्वना दूँगा? ना, मुझसे वह दृश्य देखा न जायगा। उस दिन काशी का जाना किसी प्रकार न हो सका। किंतु उसके दूसरे ही दिन, किसी अनियंत्रित शक्ति द्वारा संचालित होते हुए, एक यंत्र की भाँति चल-कर, मैंने अपने को, काशी में, गौड़जी के घर की चौखट के पास खड़ा पाया। अंदर जाने के लिये पैर सौ-सौ मन के हो रहे थे। आख़िर जी कड़ा करके भीतर पहुँचा। सामने, दरवाज़े पर, गौड़जी का एकमात्र अष्टवर्षीय पुत्र गोविंद, दाह-संस्कार-व्रती के रूप में, दृष्टिगोचर हुआ। 'चाचा-चाचा' कहकर चिमटना चाहा। उस समय बड़ी मुश्किल से उसे उसके कठोर व्रत के नियमों का ज्ञान कराकर मैं अपने को उससे बचाए रख सका। वह केवल इतना ही कह पाया था—"चाचा! बाबूजी चले गए।" और मैं रो पड़ा। आँगन में प्रवेश करते ही जिस दृश्य से मैं बचना चाहता था, वही सामने आ उपस्थित हुआ, अर्थात् गौड़जी की विधवा पत्नी या मेरी भाग्य-हीना भावज मूर्तिमती करुणा-सी बनी आकर मेरे काँपते हुए चरणों पर कटे रूख की भाँति गिर पड़ीं, और सिसकियाँ लेने लगीं। मैंने देखा, उनके खिन्न और क्लांत शरीर पर खद्दर की एक

श्रीयुत गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर'

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मैली साड़ी है, केश बिखरे हुए और रुक्ष हैं। इसके आगे मैं कुछ न देख सका, क्योंकि उस वक़्त तक मेरी आँखें काफ़ी भीग चुकी थीं। कैसा करुण दृश्य था! उस समय मेरी स्थिति जड़वत्, मूक तथा किंकर्तव्य-विमूढ़-सी हो रही थी। मुझे कुछ सूझ न रहा था कि क्या करूँ। भावावेश में इसके आगे का हाल अब लिखा नहीं जाता। कृपालु पाठक तथा पाठिकाएँ उसे अपने अनुभव तथा अनुमान से ही जान लेने की कृपा करें।

[२]

गौड़जी के विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, लिखा जा रहा है, और भविष्य में भी लिखा जायगा। किंतु उनकी स्मृति में जितनी भी श्रद्धांजलियाँ चढ़ाई जायँ, थोड़ी हैं। मुझे उनके फुफेरे भाई होने का गर्व और सौभाग्य प्राप्त है, साथ-ही-साथ वह मेरे साहित्य-गुरु भी थे। यह जो मैं हिंदी-भाषा में 'ऊँ-आँ' कर लेता हूँ, अथवा काग़ज़ पर कुछ लकीरें खींच लेता हूँ, उन्हीं के आशीर्वाद का प्रताप तथा संसर्ग का फल है। अस्तु।

यद्यपि एक छोटे भाई का अपने बड़े भाई के संबंध में कुछ चर्चा करना घर की-सी बात जान पड़ती है, किंतु मैं इस स्थल पर गौड़जी की जीवनी तथा उनकी कला-समीक्षा लिखने नहीं बैठा हूँ, और न मैं अपने को इस काम के योग्य ही पाता हूँ। यह काम तो महान् साहित्य-समीक्षकों का है, क्योंकि गौड़जी महान् थे, महापुरुष थे, और थे हिंदीसाहित्य के महारथियों में से एक महारथी। फिर भी गौड़जी के व्यक्तित्व को जैसा मैंने पाया है, उनके संबंध में जो कुछ मुझे ज्ञात है, उसे संस्मरण-रूप में लिपि-बद्ध करके अपनी लेखनी पवित्र कर लेने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता। संभव है, गौड़जी के कतिपय भक्तों का इससे कुछ लाभ हो जाय।

गौड़जी के पितामह फ़ैज़ाबाद-ज़िले के अंतर्गत बिड़हर-गाँव के निवासी थे। वहाँ उनके नाम पहले कुछ ज़मींदारी भी थी, किंतु संवत् १८६७ के लगभग वे लोग सब छोड़-छाड़कर काशी आ बसे थे। तब से अब तक इस परिवार का निवास-स्थान काशी ही है। पिता का नाम मुंशी ललिताप्रसाद था। वह पुराने ज़माने का इन्ट्रेंस पास थे। फ़ारसी और संस्कृत में भी अच्छी योग्यता रखते थे। गौड़जी ने शुरू-शुरू में संस्कृत और फ़ारसी उन्हीं से पढ़ी थी। गौड़जी का जन्म संवत् १९३८ में, जौनपुर शहर में, जहाँ उनके पिता जजी में वकालत करते थे, हुआ था। उनकी मा और नानी नित्य रामायण का पाठ किया करती थीं, जिसके परिणाम स्वरूप गौड़जी का चार-पाँच वर्ष की उम्र से ही रामायण पर अटूट विश्वास और अगाध प्रेम हो गया था, जो अंत तक बना रहा। हिंदी-भाषा और कविता की ओर तो उनकी बाल्यकाल से ही प्रवृत्ति और रुचि थी।

गौड़जी ने जौनपुर ही में इन्ट्रेंस की परीक्षा पास कर ली थी, और सन् १९०१ ई० में, बनारस के सेंट्रल हिंदू-कॉलेज से एफ़्० ए० पास कर चुकने के बाद, उन्होंने एकाउंटेंट जेनरल्स ऑफ़िस, इलाहाबाद में कार्य करना आरंभ किया था। किंतु, कुछ ही दिनों पश्चात्, वहाँ की नौकरी छोड़कर फिर विद्याध्ययन करना आरंभ कर दिया, और १९०३ ई० में इलाहाबाद के म्योर सेंट्रल कॉलेज से केमेस्ट्री लेकर, बी० ए० की डिग्री प्राप्त करके वकालत के 'लेक्चर्स' 'अटेंड' करने लगे। वकालत पढ़ते ढाई महीने बीते थे कि मिर्ज़ापुर से बड़े भाई के सख्त बीमार होने की खबर आई, जिससे वह अपनी वकालत की पढ़ाई छोड़ वहाँ जा उपस्थित हुए, और कुछ काल तक वहीं रहे। आखिर बेकार कब तक बैठे रहते; इलाहाबाद पुनः लौट आए, और आर० एम्० एस्० डिपार्टमेंट में ४०) मासिक वेतन पर नौकरी कर ली,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साथ-ही-साथ एम्० ए० की परीक्षा के लिये तैयारी भी करने लगे। इसी बीच गौड़जी के पिता का देहांत हो गया, जिससे उनके कोमल कंधों पर गृहस्थी का भारी बोझ आ पड़ने से अध्ययन में बाधा उपस्थित होने लगी। वे दिन गौड़जी के बड़े कष्ट के थे। खर्च अँटता न था। फ़ाक़ों तक की नौबत पहुँच जाती थी। तेल मोल लेने तक के लिये पैसे पास न होने से उन्हें सड़क पर, म्युनिसिपैलिटी की लालटेनों की मदद से, एम्० ए० का कोर्स तैयार करना पड़ा था। उस समय गौड़जी की प्रतिभा और लगन पर मुग्ध होकर वर्तमान राष्ट्रपति पं० जवाहरलालजी नेहरू के तत्कालीन विद्वान् प्राइवेट ट्यूटर मि० एफ़्० टी० ब्रुक्स ने उनकी बड़ी सहायता की थी। उन्हीं ब्रुक्स महोदय के ही अनुरोध से गौड़जी ने 'दि ग्रेट इल्युज़न'-नामक विख्यात पुस्तक का शुद्ध हिंदी-अनुवाद 'भारी भ्रम' के नाम से किया था।

निरंतर परिश्रम करते रहने से गौड़जी ने, संवत् १९६५ में, प्रयाग के म्योर सेंट्रल कॉलेज से, रसायन-शास्त्र में एम्० ए० भी पास कर लिया, और कायस्थ-पाठशाला में साइंस के अध्यापक नियुक्त हो गए। कुछ दिनों तक वहाँ अध्यापकी करने के बाद म्योर सेंट्रल कॉलेज में 'डिमांस्ट्रेटर' हो गए। फिर महामना मालवीयजी के अनुरोध से काशी चले आए, और संवत् १९७५ में, हिंदू-विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या-विभाग में, रसायन-शास्त्र के अध्यापक नियुक्त हुए। वहाँ वह 'सेनेट' और 'कोर्ट' की सभाओं में विज्ञान और प्राच्य विद्या-विभाग के प्रतिनिधि भी थे। संवत् १९७७ में, असहयोग की लड़ाई छिड़ जाने पर, गौड़जी ने विश्वविद्यालय की नौकरी त्याग दी, और देश-सेवा का कठोर व्रत ले लिया, जिसके फल-स्वरूप उन्हें आगरा-जेल में अठारह मास तक रहना भी पड़ा था। इसके उपरांत उस समय घर की रही-सही संपत्ति भी सरकारी कुर्की में स्वाहा हो गई। जेल से छूटने के कुछ ही दिनों बाद उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापकी कर ली थी। बाद को बिहार-विद्यापीठ में कुछ समय के लिये चले गए थे। गौड़जी ने कुछ दिनों तक काशीनगर के म्युनिसिपल-शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष-पद को भी सुशोभित किया था। सारांश यह कि गौड़जी ने अध्यापन, राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक, चारो क्षेत्रों में समान तत्परता के साथ कार्य करके अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया। किंतु अंत समय में सब कुछ तजकर केवल राम-भजन में लीन रहने लगे थे। पूजा-पाठ से जो समय बच रहता, उसमें किताबें और लेखादि लिखकर अपना तथा अपने कुटुंब का भरण-पोषण किया करते थे।

[३]

गौड़जी अत्यंत स्वतंत्र प्रकृति के तथा स्वाभिमानी व्यक्ति थे। यही कारण था कि वह अपने जीवन-काल में किसी प्रकार के बंधन में रहकर कोई भी नौकरी, स्थिरता के साथ, स्थायी रूप से न कर सके। अथवा यों कहिए कि पराधीन रहना उनकी प्रकृति के विरुद्ध था। वह सादा और अतीव सरल कौटुंबिक जीवन व्यतीत करते थे। वह एक गृहस्थ-संत थे। सादा खाते थे, सादा पहनते थे, और आडंबर से कोसों दूर रहते थे। सत्याग्रही और देश-भक्त भी वह परले सिरे के थे। यद्यपि जेल से छूटने के बाद से गौड़जी प्रत्यक्षतः कांग्रेसी न रहे थे, पर मरते दम तक वह एक आदर्श असहयोगी सिपाही अवश्य बने रहे। चरखा कातना और खद्दर पहनना तो उनके परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का एक स्वाभाविक नियम ही बन गया है।

गौड़जी अपने सिद्धांत के बड़े पक्के और दृढ़ थे। जिस बात को वह सत्य समझ लेते, फिर उसी को और लोगों से मनवाने के लिये अपने प्राणों की बाज़ी तक लगा देते थे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गौड़जी हिंदी और अँगरेज़ी के एक माने हुए विद्वान्, साहित्यकार तथा निर्भीक और तेजस्वी सुलेखक थे। उनकी विद्वत्ता अथाह थी। जिस विषय पर उनसे बातचीत कीजिए, ऐसा लगता था, जैसे वह उसी एक विषय के पूर्ण पंडित हों! उनकी विद्वत्ता सर्वतोमुखी थी। इँगलिश, संस्कृत, जर्मन, हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, गुजराती, मराठी, तेलगू तथा बँगला, इन दस भाषाओं के तो पंडित थे ही, इसके अतिरिक्त नेचुरोपैथी, होमियोपैथी, एलोपैथी, वैद्यक और ज्योतिष आदि विद्याओं में भी काफ़ी दखल रखते थे। एक विचित्रता उनमें यह भी थी कि अँगरेज़ी-भाषा के पूर्ण विद्वान् होते हुए भी उनका सारा कार्य हिंदी में ही होता था। जिस किसी को पत्र लिखना होता, संभवतः हिंदी में ही लिखते। लिफ़ाफ़े पर पता तक हिंदी में लिखा करते थे। हिंदी बोलते समय बीच-बीच में अँगरेज़ी-शब्द घुसेड़ देना, जैसा आजकल के अधकचरे पढ़े-लिखे लोगों का फ़ैशन है, उन्हें बिलकुल नापसंद था।

इधर कुछ दिनों से उन्होंने पाश्चात्य देश के सुविख्यात विद्वान् सर ऑलिवर लॉज की 'लाइन' पर, किंतु सर्वथा मौलिक ढंग से, परलोक-विद्या का अनुसंधान करना आरंभ किया था। बहुत कुछ सफलीभूत भी हुए थे। इस कार्य में उन्हें जनता का सहयोग और सराहना के बदले, इस सूक्ष्मतम विषय को न समझ सकने के कारण, चुटकियाँ और फबतियाँ ही अधिक मिलीं, जिनकी वह रंच-मात्र भी परवा न करके अपने सिद्धांत पर अटल रहे। इतना ही नहीं, इस प्रेत-विद्या से उन्होंने अपना तथा अपने अन्य कतिपय शुभचिंतकों का कल्याण भी किया है, जो अब भी उनके भक्त और आभारी बने हुए हैं।

गौड़जी रामायण और गीता के बड़े प्रेमी तथा मर्मज्ञ थे। विद्वत्ता-पूर्ण भूमिका-सहित 'रामचरितमानस' का शुद्ध, सुंदर संस्करण, जो उन्होंने मरने के कुछ दिन पहले प्रकाशित कराया था, इस बात का स्वतः प्रमाण है। वह अपने घर पर ही लोगों को गीता की शिक्षा निःशुल्क दिया करते थे। एक गीता-क्लास खोल रक्खा था, जिसमें दूर-दूर से गीता-प्रेमी, गीता के गूढ़ रहस्यों को समझने के लिये, आकर सम्मिलित होते और ज्ञान प्राप्त करते थे। अंत समय में गौड़जी की इच्छा रामायण की एक सर्वोपयोगी, सर्वोत्तम तथा सर्वप्रकार से शुद्ध टीका करने की थी, किंतु उनकी यह शुभाकांक्षा पूरी न होकर उनके साथ ही गई। वह व्रजभाषा के अच्छे कवि भी थे।

गौड़जी ने हिंदी में अनेक विद्वत्ता-पूर्ण वैज्ञानिक ग्रंथ लिखे हैं। प्रयाग का विज्ञान-परिषद् और उसका मुखपत्र 'विज्ञान' गौड़जी के ही उद्योग के फल हैं। 'विज्ञान' के तो वह मरते दम तक अवैतनिक प्रधान संपादक ही थे। साथ-ही-साथ एक और जातीय पत्र 'गौड़-हितकारी' का भी संपादन उन्होंने आजन्म किया। हिंदी में बालक-बालिकाओं के उपयुक्त, राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, कुछ रीडरें भी उन्होंने लिखी थीं, जो बाद को सरकार द्वारा ज़ब्त कर ली गईं।

वैसे तो गौड़जी के लिखे हुए 'योरप का इतिहास', 'भुनगा-पुराण,' 'विज्ञान-प्रवेशिका', 'वैज्ञानिक अद्वैतवाद', 'तज़किर-ए-सुचारुवंशी' आदि अनेक ग्रंथ साहित्य-संसार में काफ़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं, किंतु उनके अंतिम समय की दो महत्त्वपूर्ण कृतियाँ बेजोड़ हुई हैं। पहली कृति 'विज्ञान-हस्तामलक' है, जिससे बढ़कर वैज्ञानिक ग्रंथ, भारत की किसी भी भाषा में, नहीं मिलता, और जिस पर इसी वर्ष गौड़जी को मंगलाप्रसाद-पारितोषिक के १२००) ससम्मान प्राप्त हो चुके हैं। दूसरी 'हिंदुत्व,' जो पूरे ७०० पृष्ठों और २५ भागों में, अभी हाल में, उनके स्वर्गवासी होने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के कुछ ही दिन पूर्व संपूर्ण हुई थी, हिंदी-साहित्य को गौड़जी की एक बड़ी भारी देन है। 'हिंदुत्व' हिंदू-संस्कृति का सम्यक् परिचय देनेवाला अद्वितीय ग्रंथ है। संसार में अपने ढंग की यह एक ही पुस्तक है।

गौड़जी इस बीसवीं सदी के वैज्ञानिक थे सही, किंतु आधुनिक युग की पश्चिमी वैज्ञानिक प्रवृत्ति से उनकी अपनी वैज्ञानिक प्रवृत्ति मेल न खाती थी। उनका विज्ञान प्राचीन पुराणवाद तथा आजकल की अर्वाचीन वैज्ञानिक सभ्यता का एक विचित्र समन्वय है। हिंदुओं की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप तथा एक कट्टर सनातनधर्मी की भाँति, साधारण बुद्धि से परे, पौराणिक कथाओं को अक्षरशः सत्य प्रमाणित करते हुए इस कथित वैज्ञानिक युग में, जहाँ पद-पद पर प्रत्यक्ष प्रमाण माँगे जाते हैं, उनका विज्ञानाचार्य-पद ग्रहण करना कुछ मानी रखता है।

गौड़जी उन विशेष प्रकार के आधुनिक साहित्यिकों में से नहीं थे, जो विचित्र-विचित्र स्वाँग और पोशाक में यत्र तत्र दृष्टिगोचर होते हैं, तथा पार्टी-बंदी के हामी हैं। इसके सर्वथा विपरीत वह एक ऐसे ठोस और मँजे हुए साहित्य-सेवी थे, जिनका लोहा सभी विचारशील साहित्यिकों को बिना मनाए मानना पड़ता था। उन्होंने आत्मविज्ञापन कभी और किसी रूप में भी न होने दिया। इस बात से उनको खास चिढ़ थी। साहित्यिक 'प्रोपेगैंडा' को उन्होंने कभी प्रोत्साहन नहीं दिया। उनका कहता था कि गुट-बंदी, चाहे वह किसी विषय के संबंध में क्यों न हो, प्राचीन भारत-संस्कृति के सर्वथा विरुद्ध है। अपने जीवन-काल में गौड़जी ने किसी की कुछ भी परवा न की। वह प्रायः कहा करते थे—"अजी, झख मारेंगे, लोग मेरे सिद्धांतों को मानेंगे, समय तो आने दो।" सत्य है—"कहीं छिपता है 'अकबर' फूल पत्तों में निहाँ होकर।" उनके परलोक-सिद्धांत को ही ले लीजिए। इसके चलते लोगों ने उन पर कम कीचड़ नहीं उछाले। स्वयं इन पंक्तियों का लेखक, कुछ अंशों में, उनके प्रेत संबंधी विचारों से असहमत था। किंतु वह थे कि आरंभ से अंत तक अपने सिद्धांत पर हिमालय की भाँति अटल रहे।

यह असत्य नहीं कि गौड़जी-जैसे धुरंधर विद्वान् की क़द्र उनके समाजवालों, उनके सगे-संबंधियों तथा हिंदी-साहित्य-संसार ने उतनी नहीं की, जितनी के वह योग्य थे। यह कम शोक की बात नहीं कि आज हिंदी-साहित्य-संसार ऐसा व्यावसायिक हो गया है कि इस हिमाचल-सरीखे साहित्य-सेवी की महत्ता को भी समझ न सका। किंतु 'क़द्र मर्दुम बाद मुर्दन' के अनुसार आज हम गौड़जी की खूबियों को याद करके आँसू बहा रहे हैं। मैं तो कहूँगा, आज केवल मेरी पूज्या भाभीजी ही विधवा नहीं हुईं, वरन् राष्ट्र-भाषा भी एक अनिश्चित काल के लिये विधवा हो गई है। कौन जानता है कि भविष्य में अब कोई रामदास बनने का हौसला करेगा?

[४]

जिसको 'अत्यंत मनोरंजक ढंग से बातचीत करने की कला' कहते हैं, गौड़जी उसमें सिद्धहस्त थे। गहन-से-गहन विषय को बातों में समझा देने की असाधारण क्षमता उनमें विद्यमान थी। 'विज्ञान-हस्तामलक इस बात का जीताजागता सबूत है। जिससे मिलते, खुलकर मिलते, और घंटों बातों का ताँता न टूटता। बातें करते समय अपना आवश्यक कार्य भी किए जाते। ध्यान बँटने का उनके यहाँ प्रश्न ही नहीं था। वह जिस कमरे में बैठे लिख-पढ़ रहे होते, उसी में उनके बच्चे धमाचौकड़ी मचाते रहते। कभी बच्चे, उनके ऊपर गिर पड़ते, कभी गले से लिपट जाते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मगर क्या मजाल जो गौड़जी के काम में किसी प्रकार की भी बाधा उपस्थित होती रही हो। उनका काम, उस दशा में भी, एक रफ़्तार से अनवरत जारी रहता था। इसे कहते हैं संलग्नता और एकाग्रता।

गौड़जी के पास सदैव कामों का इतना जमघट रहा करता था कि आवश्यक पत्रों का उत्तर उनसे जल्दी मिलना कठिन हो जाता था। मैं तो उनके मुँह लगा ही हुआ था। अपने एक पत्र में पत्रोत्तर न आने के संबंध में एक बार शिकायत भी कर दी। उत्तर आया। किंतु उसे पढ़कर मैं तो जैसे कट-सा गया। स्वयं को बार-बार धिक्कारने लगा कि नाहक़ मुझसे वे शिकायतवाली पंक्तियाँ उनके प्रति लिखते बन पड़ीं। उत्तर की प्रति ज्यों-की-त्यों नीचे दी जाती है—

"बड़ी पियरी, बनारस शहर
सौर [तिथि मिट गई है] १९३३

प्रियवर गंगाप्रसादजी !

शुभाशी०

तुम्हारा सुंदर लेख और सभी पत्र मिले। आधा लेख इसी मास के 'विज्ञान' में जा रहा है, बाक़ी आगामी अंक में निकल जायगा। क्या करूँ, कार्याधिक्य के कारण सर उठाने की फ़ुर्सत नहीं है। चुप्पी साधने का दोषी मैं ज़रूर हूँ। किंतु जो झगड़ पड़ेंगे, उनके पत्रों का जवाब तो दे देता हूँ, और जिन्हें जानता हूँ कि मेरी चुप्पी बरदाश्त कर लेंगे, और शिकायत न करेंगे, उन्हीं के पत्रों को मुल्तवी कर देता हूँ। इन्हीं में मैंने तुम्हें भी रक्खा कि मेरे इस अगतितः अपराध को क्षमा करेंगे।... मंगला०-पारितोषिक आधा ही लेने से मैंने इनकार कर दिया। अब देखना है, क्या होता है। राजेंद्र बाबू ने तो पुनर्विचार की आज्ञा दी है। दिल्ली की कुमारी शांतिदेवी की कथा तो 'विज्ञान' में भी छपी थी। मैं तो उसे ठीक ही समझता हूँ। परंतु न माननेवाले तो ईश्वर को ही धता बताते हैं, पुनर्जन्म क्या चीज़ है। यदि उनके बाप भी साक्षात् आकर गवाही दें, तो उनका विश्वास न करें। ऐसे लोगों को समझाने की कोशिश बेकार है। "ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति।"

मैं 'विज्ञान' में एक पुस्तिका के संबंध में एक नोट देनेवाला हूँ। उसे देखना। अब तुम्हारी आँखों का क्या हाल है ? दिल्ली के पं० अग्रवाल के व्यायाम करो। अवश्य लाभ होगा। दुलहिन के स्वास्थ्य का क्या हाल है ? चि० बालेश्वर-प्रसाद की दुलहिन तो हैदराबाद गईं, मुझे मालूम है। मुझे इन दिनों Diabetes नहीं है। तुम्हारी भाभी आशी० और बच्चे प्रणाम कहते हैं। बूढ़ाजी आजकल कैथौली हैं।

सप्रेम रामदास गौड़"

साहित्यिक पत्रों के उत्तर देने का ढंग भी गौड़जी का अजीब और निराला था। वह प्रायः समयाभाव के कारण पत्र-प्रेषक का पत्र ही, उसी के मार्जिन पर संक्षेप में उत्तर लिखकर, लौटा देते थे। उत्तर वह इस ख़ूबी से लिखते थे कि पढ़कर पूरे तौर से तुष्टि हो जाती थी।

इस प्रकार के एक पत्र और उस पर दिए गए गौड़जी के उत्तर का नमूना द्रष्टव्य है।

नीचे जो पत्र दिया जाता है, वह मेरा है। किंतु पत्रोत्तर-स्वरूप रेखाएँ और मार्जिन पर के अक्षर गौड़जी के हैं।

श्रीहरि

"श्रद्धेय गौड़जी। सोनपुर
सप्रेम प्रणाम, १४—१०—३६

पत्र मिला। कष्ट के लिये क्षमा। 'आयुर्विज्ञान' जाने में इसलिये देर हुई कि मैं समझे हुए था कि नवंबर के मैटर की अभी आपको इतनी जल्दी न होगी। कृपया बतला दीजिए, प्रतिमास किस तिथि तक 'आयुर्विज्ञान' आपके पास भेज दिया

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जाया करे। दूसरी बातें जो मुझे आपसे जाननी हैं, वे हैं नोट्स - संबंधी, जिनके विषय में बनारस से प्रस्थान करते समय, पूरे तौर से, आपसे न पूछ सका था।

आपने तीन सुर्ख़ियों पर लिखने की मुझे आज्ञा दी है—

१—ग़रीबों के लिये व्यावहारिक चिकित्सा और स्वास्थ्य प्रद प्रयोग।

२—नई ईजादें।

३—प्रश्नोत्तर।

उत्तर रेखांकित है।

जिनमें से नं० १ के बारे में मुझे यह जानना है कि प्रतिमास एक साथ कई प्रयोगों और व्यावहारिक चिकित्साओं पर नोट्स भेजे जायँ, या एक अंक के लिये केवल एक ही? नं० २ में सभी वैज्ञानिक ईजादों पर नोट्स चाहिए, या केवल स्वास्थ्य-संबंधी? नं० ३ में केवल स्वास्थ्य-संबंधी ही प्रश्नोत्तर रहें, या अन्यान्य वैज्ञानिक Type के सवाल-जवाब भी दिए जा सकते हैं?

बहुत अच्छे हैं।

प्रस्तुत नोट्स डरते-डरते भेज रहा हूँ, संभव है, जैसा आप चाहते हों, वैसा यह न बन पाया हो, इसलिये उचित निर्देश अवश्य लिख भेजिए, ताकि भविष्य में मैं अपनी भूलों को सुधार लूँ।

आज्ञानुसार लिखने योग्य Rejected papers का बंदोबस्त कर रहा हूँ। कुछ हो भी गया है। बा० ब्रजबिहारीलाल के यहाँ आने पर, उनके द्वारा वा स्वयं किसी दिन छुट्टी लेकर जब काशी आऊँगा, तो लेता आऊँगा।

योग्य आदेश का इच्छुक।

विनम्र गंगाप्रसाद गौड़ नाहर"

उपर्युक्त पत्र के मार्जिन पर संक्षेप में लिखा था—

"प्रियवर गंगाप्रसादजी,

शुभाशी०।

लेख मिला। धन्यवाद। सुभीते के लिये इसी पर उत्तर दे देता हूँ। जिस मास में निकलना है, उसके डेढ़ मास पहले मुझे लेख मिलना चाहिए। दिसंबर का अंक पहली दिसंबर को प्रकाशित होना चाहिए, अतः मुझे उसके लिये १५ ऑक्टोबर को लेख मिले, तो अच्छा हो। नवंबर का अंक छप रहा है। अतः इसे उचित स्थान न मिल सकेगा। दिसंबर के लिये भी शीघ्र ही भेजिए।

रा० गौड़

३१।६'

गौड़जी कट्टर समाज-सेवक तथा देश-भक्त थे। गौड़ों में जो थोड़ा-बहुत अपने देश के प्रति प्रेम तथा जागृति देखने में आती है, यह उन्हीं के उद्योग और निःस्वार्थ सेवा का फल है। सबसे बड़ी बात जो गौड़जी में थी, वह आत्मसम्मान तथा स्वावलंबन की रक्षा थी। वह बहुत कम किसी के यहाँ आते-जाते थे। उनके जीवन में ऐसा कई बार हुआ है कि घर में दो-दो फ़ाक़े हो गए हैं, मगर क्या मजाल कि किसी घनिष्ठ-से-घनिष्ठ मित्र के सामने भी हाथ पसारना तो बड़ी बात, उससे अपने ग़म का कभी इज़हार भी किया हो। परिस्थितियों से जीवन-भर उनका पिंड नहीं छूटा। गौड़जी ने उनसे अपना पिंड छुड़ाने का कभी प्रयत्न भी नहीं किया। चाहते, तो कर सकते थे, किंतु सारी उम्र उनसे जूझते ही रहे। कठिनाइयों और विपत्तियों का सामना करने में उन्हें डर न लगता था। कर्तव्य से कतराते न थे। बस, सच्चे कर्मठ की भाँति डटे ही रहते थे। सत्य के लिये अपमान से डरना तो उन्होंने सीखा ही न था। इन्हीं बातों का उपदेश वह कभी-कभी अपने प्रिय पात्रों को भी दिया करते थे, जो उनके संपर्क में आते थे। उनके स्वर्गारोहण के कुछ ही दिन पहले मैंने, कुछ सामाजिक अड़चनों

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

से ऊबकर, उन्हें एक लंबा पत्र लिखा था, जिसके उत्तर में उन्होंने जो नपे-तुले संकेत-शब्द मुझे लिखे थे, वे आज मेरा जीवन मंत्र बने हुए हैं। उनका उत्तर था —

"चि० श्रीगंगाप्रसादजी'

सप्रेम वंदे।

मंगला० पारतोषिक १ अगस्त को मिला। भगवान् को धन्यवाद है। आपका पत्र पहले भी आया था। × × × × मेरे आने से कोई बाधा पड़ती, यह मालूम करके न जाने की मुझे खुशी हुई। आप न-जाने क्यों दुखी हुए। विश्वास मानिए, मैं सच कहने में भगवान् से भी नहीं डरता और अपमान का मुझे बहुत कम दुख होता है। चिर-सौभाग्यवती शांता के विवाह के समाचार से इतनी खुशी हुई कि तथोक्त अपमान तो कल्पना के पास भी नहीं फटका। आपका एक लेख अभी मौजूद है, जब छप लेगा, तब माँगूँगा। हाँ, काग़ज़ तो नहीं भेजा। जब हो सके, ज़रूर भेजो।

शुभाशी०।

सप्रेम रामदास गौड़।"

[५]

गौड़जी राम के परम भक्त थे, और अपने उपास्य देव को 'मालिक' के नाम से संबोधन करते थे। जीवन का छोटे-से-छोटा काम भी यदि करना होता था, तो मालिक की आज्ञा लेकर ही करते थे और ऐसा कहा जाता है कि उन्हें आज्ञा मिलती थी। मालिक से प्रत्येक बात के लिये आज्ञा माँगने का भार गौड़जी ने अपनी स्त्री को सौंपा था, और भगवत्कृपा से भाभीजी को मालिक की आज्ञाओं की अनुभूति होती थी। अब भी होती है। एक दृष्टांत देकर इस रहस्यमय प्रसंग को स्पष्ट करूँगा।

उनके जीवन में अंतिम बार, कृष्ण-जन्माष्टमी के एक दिन पहले, जब मैं उनके दर्शनों को काशी पहुँचा, तो सोनपुर से हाजीपुर के थोड़े सुप्रसिद्ध केले, कृष्ण-जन्मोत्सव के अवसर के लिये, लेता गया था। किंतु सोनपुर से काशी का सफ़र काफ़ी लंबा होने के कारण वे केले वहाँ पहुँचते-पहुँचते आवश्यकता से अधिक पक गए थे, और शायद दूसरे दिन तक न ठहरते। अब इस दशा में गौड़जी को मालिक की आज्ञा की आवश्यकता हुई। भाभीजी तलब हुईं, उनसे कहा गया—"मालिक से पूछो, ये केले कल बालभोग के लिये रख लिए जायँ, या आज ही इनको काम में लाया जाय।" भाभीजी ने अपना हाथ दीवार पर रक्खा। वहाँ तुरत लिख गया—'इनको काम में अभी लाया जा सकता है।" अतः केले उसी दम काम में लाए गए। इसी तरह गौड़जी सारी बातें मालिक से पूछ-पूछकर किया करते थे।

एक बार उनके किसी विद्वान् मित्र ने बातों-बातों में उनसे प्रश्न किया था कि यह जो आप मालिक से सभी बातें पूछा करते हैं, और आपको तदनुसार उनका तुरत उत्तर भी मिल जाया करता है, क्या आपने अपनी मृत्यु तथा पुनर्जन्म की बाबत भी उनसे कभी पूछा है? मुझे बताया गया है कि इस प्रश्न के उत्तर में गौड़जी ने उक्त मित्र से कहा था कि उन्होंने इस संबंध में भी, जो कुछ जानना चाहा था, जान लिया है, जिसे वह लिपि-बद्ध करके, एक लाल कपड़े के बस्ते में बाँधकर, अपनी लाइब्रेरी में कहीं रख गए हैं। इन पंक्तियों को लिखते समय तक वह बस्ता मिला नहीं है। खोज हो रही है। कदाचित् भविष्य में इस रहस्य का उद्घाटन हो। गौड़जी के संबंध में यह एक ऐसी विचित्र बात है, जिसे साधारण बुद्धि स्वीकार नहीं करती। किंतु सैकड़ों मनुष्यों की आँखों देखी बात है।

इसमें तो कोई शक नहीं कि गौड़जी आदर्श राम-भक्त ही नहीं, पहुँचे हुए संत भी थे। किंतु स्वाँग रचकर अपने तत्संबंधी ज्ञान का प्रदर्शन करना उन्हें पसंद न था। उनकी ईश्वर-भक्ति परम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गोपनीय तथा अंतर्मुखी थी। उन्होंने राम-मंदिर की स्थापना अपने घर में ही की थी, जो अब भी मौजूद है। और, यद्यपि उसके लिये एक पुजारी अलग से नियुक्त है, तथापि कभी कभी वह स्वयं राम-लक्ष्मण-सीता की शृंगार-पूजा अपने हाथों किया करते थे। आह ! उस समय की वह झाँकी, वह पूजा का ढंग, वह भगवदर्चना में तल्लीनता देखने ही योग्य होती थी। उस समय आरंभ से लेकर अंत तक उनके मुख से संस्कृत में प्रार्थना के अनगिनती श्लोक धाराप्रवाह की भाँति निकलते रहते थे।

भगवत्सेवा में वह इतने लीन हो जाते थे कि उनका बाह्य ज्ञान ही विलुप्तप्राय हो जाता था। घुटनों के ऊपर तक केवल ढाई गज़ खद्दर की धोती लपेटे जब वह हरि-कीर्तन वा आरती के लिये खड़े होते, तो हरि-प्रेम में इतने विह्वल हो जाते कि तन-बदन की सुध नहीं रहती। भाव-विभोर हो जाते, और नाचने लगते। कभी-कभी तो भाव में इतने मस्त हो जाते कि नेत्रों से आँसुओं की अविरल धारा बह निकलती। उस समय की उनकी विलक्षण दशा देखकर कौन कह सकता था कि वह आधुनिक साइंस-जैसे नीरस, धर्म-शून्य तथा नास्तिकता-पूर्ण विद्या के अग्रगण्य प्रोफ़ेसर भी कभी रह चुके हैं। ऐसे थे विज्ञान के सुविख्यात आचार्य पंडित रामदासजी गौड़ एम्० ए०, जिनके नाम के प्रथम स्वर्गीय शब्द जोड़ते कलेजा मुँह को आता और लेखनी थर्राती है।

गौड़जी यद्यपि औरों को स्वास्थ्य-संबंधी उपदेश दिया करते थे, और तत्संबंधी अनेकों लेख तथा पुस्तकें भी लिखीं, किंतु स्वयं अपने स्वास्थ्य की चिंता उन्होंने कभी नहीं की। भोजन के लिये समय पर जो मिला, खा लेना, अधिक काम आ जाने पर रात-रात-भर जागते रहना तथा अस्वस्थावस्था में भी काम किए जाना आदि अनियम से यदि वह शुरू ही से बचते रहते, तो शायद अभी कुछ दिन और जीते। मरने के कुछ दिन पहले वह खाने-पीने के संबंध में किसी क़दर नियम बद्ध हुए थे। किंतु बहुत देर से। मैं उनके खाने-पीने के संबंध में बहुधा समय-समय पर पूज्या भाभीजी को सतर्क रहने के लिये टोका करता था। कहता था—"वह जो दिन-रात काम में व्यस्त रहकर अपना अमूल्य स्वास्थ्य निछावर किए दे रहे हैं, इसका उत्तर-दायित्व आप पर है।" कहना न होगा कि भाभीजी अपना दायित्व अनुभव करती थीं, यत्न भी करती थीं। किंतु गौड़जी को बाध्य तो न कर सकती थीं, क्योंकि गौड़जी-जैसे हठी व्यक्ति को किसी बात के लिये बाध्य करना बड़े-बड़ों के लिये टेढ़ी खीर थी।

गौड़जी को डाइबिटीज़ की शिकायत बहुत पहले से थी। लेकिन मरने के कुछ दिन पूर्व वह शिकायत दूर हो गई थी, परंतु शरीर तो उसी बीमारी से काफ़ी जर्जर हो चुका था, जो बाद के बेरी-बेरी रोग के आक्रमण को सह न सका, और फलतः मृत्यु का कारण बना।

[६]

मृत्यु के कुछ दिन पहले

ऐसा प्रतीत होता है कि गौड़जी को यदि अपने मरने की ठीक-ठीक तिथि न मालूम थी, तो भी उन्हें यह अवश्य ज्ञात था कि अब उनको यह शरीर शीघ्र ही छोड़ना है। बाद को इसके कई प्रमाण मिले हैं, जिससे यह प्रतीति सत्य का रूप ग्रहण कर लेती है।

मरने के कुछ दिनों पहले जो पत्र उन्होंने लोगों के पास भेजे हैं, लगभग उन सबों में "यदि यह चोला रहा, तो" इस एक वाक्य का ज़रूर समावेश रहता था। किंतु इससे पहले के उनके लिखे पत्रों में उपर्युक्त वाक्य कहीं भी नहीं मिलता।

दूसरा प्रमाण जो मिला है, वह है मरने के कुछ ही दिन पूर्व अपने स्थायी और अस्थायी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

संपत्ति-संबंधी काग़ज़-पत्रों का अपने पुत्र गोविंद के नाम उचित प्रबंध कर देने की उतावली।

तीसरा प्रमाण। राम-मंदिर पहले कच्चा ही था, मरने के कुल दस-पंद्रह दिन पहले रातोंरात स्वयं खड़े रहकर, और राज-मिस्त्रियों को दूनी-चौगुनी मज़दूरी देकर, एक अलग पक्का मंदिर बनवाना आरंभ कर दिया। अभी मंदिर पूरा बन भी न पाया था कि उन्होंने भगवान् की मूर्तियों को अपने हाथों नूतन मंदिर-प्रवेश कराके ही दम लिया। हम सब हैरत में थे कि आख़िर इतनी जल्दी क्या पड़ी थी। उस वक़्त क्या पता था कि महाप्रयाण के प्रथम वह अपने इस जन्म के अधूरे काया को पूरा करने में व्यस्त हैं।

चौथा प्रमाण। गौड़जी 'विज्ञान' के अवैतनिक संपादक उसकी जन्मावस्था से ही थे, जिसके संबंध में बीच-बीच में बहुत-सी कठिनाइयाँ पड़ीं। कुछ लोग 'विज्ञान' की नीति-रीति और प्रणाली के संबंध में अकारण असंतुष्ट और रुष्ट भी हुए। किंतु गौड़जी ने पत्र को किसी भी सूरत में छोड़ना गँवारा न किया। कलेजे से चिपकाए ही रहे। किंतु उसी अपने प्राण से प्यारे 'विज्ञान' के संबंध का एक-एक पुरज़ा 'विज्ञान परिषद्', प्रयाग के नाम मरने के कुल एक सप्ताह प्रथम भेजकर उस काम से स्वयं छुट्टी ले ली।

मृत्यु के दिन

८ भाद्रपद शुक्लपक्ष, सं० १९९४, रविवार को, ५६ वर्ष की अवस्था में, गौड़जी ने इहलीला समाप्त की। उस दिन कोई खास बात न थी। हाथों पैरों पर नाम-मात्र का आमास अवश्य आ गया था, किंतु वह बीमार बिलकुल नहीं मालूम होते थे। उस समय का उन्हें देखनेवाला व्यक्ति कभी विश्वास न कर सकता था कि वह घंटे-दो घंटे में ही शरीर छोड़नेवाले हैं। अंत समय तक उनकी शक्तियाँ पूर्णतः बनी रहीं। उसी दिन उन्होंने 'जयाजी प्रताप' के लिये एक लेख लिखकर उसका पैकेट स्वयं तैयार किया, किंतु शाम हो जाने के कारण वह उस दिन उसे डाकखाने भेज न सके। वही पैकेट, उनके देहांत के बाद, दूसरे दिन, उनकी मृत्यु-समाचार के साथ, उक्त पत्र के संपादक के पास भेज दिया गया। यह लेख उनके जीवन की अंतिम कृति थी।

उस दिन भी, और दिनों की भाँति, गौड़जी ने सायंकाल संध्या की, फिर सपरिवार रात का भोजन करके, रोज़ की तरह, किताबों और समाचार-पत्रों का एक गट्ठर लेकर चारपाई पर पहुँचे। यहाँ यह बता देना अप्रासंगिक न होगा कि गौड़जी की यह आदत थी कि रात को जब तक उन्हें अपने-से नींद न आने लगती थी, वह कुछ-न-कुछ काम किया ही करते थे; और न होता, तो ताज़े पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने ही उलटा करते थे। किंतु उस दिन चारपाई पर पहुँचते ही किसी गंभीर लेख के संबंध में Encyclopaedia देखने में लग गए। लगभग ८-९ बजे रात को उन्हें असाधारण रूप से शौच की हाजत महसूस हुई। शौच गए। किंतु पत्नी से कहते गए—"देखो, मैं शौच जाता हूँ, मगर देखना, तुम मेरी तरफ़ से बेखबर न हो जाना, और यदि मुझे निकलने में देर हो जाय, तो तुम निःसंकोच मुझे देखने शौचगृह में चली आना।" खैर, पिछली समस्या उपस्थित होने की नौबत आने से प्रथम ही गौड़जी शौच से निपट कर बाहर आ गए। नित्य की भाँति हाथ-पैरों को मिट्टी से सात-सात बार मलकर धोया, फिर धोती बदली, और गीले कपड़े से सारा बदन अँगोछा। सहसा, एकबारगी उन्हें असह्य गरमी मालूम होने लगी, और साथ-ही-साथ ज़ोरों की खाँसी भी आने लगी। किसी तरह वह अपने बिस्तरे पर आए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने इस असाधारण स्वास्थ्य-परिवर्तन के विषय में विशेष

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

लेखक, कविवर पं० गोविंदवल्लभ पंत। नाटककार के रूप में पंतजी का नाम कितना प्रसिद्ध हुआ है, यह आप सभी हिंदी-प्रेमियों पर प्रकट है। पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है।

सुंदर, सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २), सादी का १॥)

प्रत्येक अध्याय विचित्र रहस्य प्रकट करता है।

पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। पाठक पढ़कर ही इसका असली आनंद प्राप्त कर सकेंगे। १२ रेखा-चित्रों-सहित। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ को आज ही पत्र लिखिए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चित्राकर्षक

उपन्यास

मा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, पं० विश्वंभरनाथजी शर्मा 'कौशिक'। एक ओर तो आप देखेंगे कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे कैसे बिगड़ जाते हैं, और दूसरी ओर देखेंगे कि एक दृढ़-चित्त माता के उपदेशों से ग़रीबी में भी पला हुआ बालक कैसा सच्चरित्र निकला है

मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

बिदा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव। इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही बिक गया। दूसरा संस्करण बहुत थोड़ा रह गया है। अपनी कापी शीघ्र मँगवा लीजिए, नहीं तो बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य !

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे, और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २७४; मूल्य १॥), सजिल्द २)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अन्य भाषाओं का
श्रेष्ठ कथा-साहित्य **हिंदी में !**

पवित्र पापी

[रशन से]

सुप्रसिद्ध 'क्राइम ऐंड पनिशमेंट' का अनुवाद। अनुवादक, पं० ब्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल-एल० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार। रूस की दरिद्रता, विलास और राजनीतिक जीवन का जागता उपन्यास। मूल्य ३), ३॥)

क़ैदी

[फ्रेंच से]

अमर उपन्यासकार अलेक्ज़ेंडर ड्यूमा के 'ब्लैक टूलिप' का अनुवाद। अनुवादक, श्रीऋषभचरण जैन। मुग्ध प्रेम और अद्भुत घटना-क्रम से भरा उपन्यास। मूल्य १), १॥)

प्रेम गंगा

[अँगरेज़ी से]

अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा। प्रेम और पुरुषार्थ की रसीली और बिजली से भरी अनुपम कहानियाँ। कई रंगीन और सादे चित्र। मूल्य १), १॥)

कर्म-मार्ग

[उर्दू से]

स्व० मौलाना नज़ीरअहमद साहब की सर्वमन्य पुस्तक 'तोबसुन्नसूह' का अनुवाद। अनुवादक, श्रीदुर्गाविनायकप्रसाद एम्० ए०, एल-एल० बी०। राष्ट्रीय और धार्मिक भावों से भरा हुआ उपन्यास। मूल्य १॥), २)

मैनेजर—गंगा-ग्रंथागार

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

खेलने-योग्य नाटक और प्रहसन

आहुत या जयपाल

देश-प्रेम के भावों से ओत-प्रोत ऐतिहासिक नाटक। अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। मूल्य १), १॥)

कीचक

लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०। पांडवों के अज्ञातवास का कथानक, हास्य-रस की पुट-सहित। मूल्य १), १॥)

पतिव्रता

अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। स्त्री-पुरुषों के देखने और पढ़ने-योग्य सामाजिक नाटक। दो रंगीन और दो सादे चित्र। मूल्य १।=), १॥।=)

प्रबुद्ध यामुन

लेखक, श्रीवियोगी हरि। अहिंसा, दीन-वत्सलता और भगवद्भक्ति-भरा नाटक। मूल्य १), १॥)

अचलायतन

मूल-लेखक, कवींद्र रवींद्र। हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की पोल खोलनेवाला प्रहसन। मूल्य ॥), ॥=)

रावबहादुर

मूल-लेखक, मोलियर। उपाधि-व्याधि-ग्रस्त घरफूँक बहादुर का खासा खाका। मूल्य ॥), १)

मैनेजर

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

उषा

६ सुंदर चित्रों
से सुशोभित
म नो ह र
खं ड का व्य
लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त
'कुसुम'

बाण-नंदिनी उषा और
कृष्णचंद्र के पौत्र अनि-
रुद्ध के प्रणय-परिणय
की पौराणिक कथा ।

तुकांतहीन
नई शैली
चारु चरित्र-चित्रण
भव्य, ओजस्वी वर्णन ।
मूल्य
॥=), १=)

शैलिका

लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी
'गुलाब'

चुनी हुई
उ त्कृ ष्ट
ए
क
से
ए
क
अ नू ठी
मनोहर और
भाव-पूर्ण
कविताएँ ।
अवश्य पढ़िए ।
मूल्य
१), १॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फिर छपकर तैयार हैं

हृदय-तरंग

जेम्स एलन की मशहूर पुस्तक। अनुवादक, कविवर पं० दुलारेलाल भार्गव। मन और हृदय की उन्नति का साधन। विद्यार्थी-समुदाय के पढ़ने-योग्य। पाँचवीं आवृत्ति। मूल्य ।), ॥)

सुकवि-संकीर्तन

ले०, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी। सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रयदाताओं के संबंध में परिचयात्मक लेख। सुंदर, सरल, सरस और प्रौढ़ गद्य का चमत्कार। सचित्र। मूल्य १॥), २)

मनोविज्ञान

ले०, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०। मनोविकारों, मानसिक वृत्तियों, मनोभावों तथा मनोवेगों का सूक्ष्म परिचय अतीव सरल एवं साधु भाषा में स्पष्टता-पूर्वक लिखा गया है। पुस्तक मनोरंजन और शिक्षा, दोनो का उत्तम साधन है। मूल्य ॥), १)

देव और बिहारी

ले०, पं० कृष्णबिहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस ग्रंथ में देव और बिहारी दोनो कवियों की तुलनात्मक समालोचना की गई है। अनेकों शिक्षा-संस्थाओं में स्वीकृत। भाषा बड़ी सजीव और लेखन-प्रणाली परम मनोरंजिनी। मूल्य १॥), २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

व्यर्थ समय न खोइए ! पैसे की बचत कीजिए !!

सुप्रसिद्ध

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

का

नया और बड़ा

सूचीपत्र*

काव्य, समालोचना, कोष, व्यंग, हास्य इत्यादि

राष्ट्रीय
धार्मिक
इतिहास
विज्ञान
कृषि

सभी प्रकार की हिंदी पुस्तकें
हमसे मँगाइए

नाटक
कहानी
उपन्यास
प्रहसन
मनोरंजक

सभी प्रकाशकों की पुस्तक हमसे मँगाइए !

हिंदी की सभी विषयों की पुस्तकें हमारे यहाँ मिलेंगी !!

५) जमा करके स्थानीय एजेंट बनिए !

॥) प्रवेश-फ़ी देकर स्थानीय ग्राहक बनिए !!

पुस्तक-विक्रेताओं

को

हमारे स्थानीय एजेंट बनने पर पूरा कमीशन दिया जाता है ।

—:o:—

स्थायी ग्राहकों को माला की प्रकाशित पुस्तकों पर पच्चीस रुपए सैकड़े और अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों पर एक आना रुपया कमीशन दिया जाता है ।

हमारा पता नोट कर लीजिए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

* यह सूचीपत्र एक आना का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिंदी-साहित्य का एक अनूठा रत्न

सनाढ्य-संसार में युगांतरकारी ग्रंथ

❀ खोज-पूर्ण जीवन-चरित्रों, सुंदर कविताओं, टिप्पणियों और चित्रों-सहित ❀

सुकवि-सरोज

(दो भाग)

संपादक—पं० गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'

इसमें अनेक ज्ञातव्य बातों के अतिरिक्त सर्वश्री महाकवि गोस्वामी तुलसीदासजी, नंददासजी, हरीराम शुक्ल, स्वामी हरिदासजी, गोविंद स्वामीजी, विट्ठलविपुलजी, कल्याणजी मिश्र, रसिकदेवजी, हरिसेवकजी मिश्र, कृष्ण सनाढ्य, बोधा, कवि चंद, ईश्वरजी दीक्षित, देवीप्रसाद थापक, सहजराम, अड़कूलाल वैद्य, श्यामाचरणजी व्यास, अयोध्यानाथजी घटिकाशतक, राधालालजी गोस्वामी, रामरतन गुबरेले 'रत्नेश', अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध', संतूलालजी बिल्थरे, दशरथजी दुबे, दिवाकरदत्तजी शास्त्री, देवकीनंदन मिश्र, कविरत्न अखिलानंदजी, रघुवरदयालजी चाचोंदिया, विद्यावाचस्पति श्रीशालग्रामजी शास्त्री, गणेशप्रसादजी चौबे, रामगोपालजी मिश्र बी० एस्-सी०, गोकुलचंद्र शर्मा एम्० ए०, ब्रह्मदेव मिश्र शास्त्री, साहित्यरत्न बाबूरामजी बित्थरिया, चतुर्भुजजी पाराशर, कविकुमार भद्रदत्तजी त्रिवेदी, मुकुंदहरिजी शास्त्री आदि कवियों के खोज-पूर्ण जीवन-चरित्र आदि संगृहीत हैं।

यह ग्रंथ सुंदर, सुस्पष्ट अक्षरों में, बढ़िया-चिकने काग़ज़ पर, छापा गया है। मुख्य-मुख्य विशेषताएँ ये हैं—

(१) कविताएँ सटिप्पण दी गई हैं, (२) कविताओं में आए हुए कठिन शब्दों का अर्थ दिया गया है, और (३) बढ़िया छपाई और ऐंटिक पेपर लगाकर सुंदर जिल्द बाँधने की व्यवस्था की गई है।

फिर भी प्रायः ५०० पृष्ठों के ग्रंथ का मूल्य केवल ३।), सजिल्द का ४।) लागत-मात्र ही रक्खा गया है। प्रत्येक हिंदी-भाषा-भाषी और सनाढ्य-मात्र के तो घर-घर में इस ग्रंथ का रहना अति आवश्यक है।

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जानने के लिये होमियोपैथी की पुस्तकें देखना स्वयं आरंभ किया। किंतु कुछ स्थिर न कर सकते थे, और इधर उनकी हालत क्षण-प्रति-क्षण बिगड़ती जाती थी। उस समय रात के बारह बज चुके थे। अतएव आधी रात के समय किसी डॉक्टर आदि का बुलाना भी इतना शीघ्र संभव न था। फिर भी पड़ोस के एक प्रसिद्ध होमियोपैथ डॉक्टर को बुलाने के लिये आदमी दौड़ाया गया।

मृत्यु के समय

डॉक्टर आया। उससे और गौड़जी से परिस्थिति के संबंध में विचार-विनिमय हुआ। किंतु दवा लेने की नौबत भी न आई थी कि गौड़जी की साँस ज़ोरों से फूलने लगी। स्त्री-बच्चे रोने-पीटने लगे। किंतु गाड़जी आखीर दम तक सबको सांत्वना देते रहे। स्त्री के यह कहने पर कि यदि तुम्हें कुछ हो गया, तो मेरी कच्ची गृहस्थी, मेरे छोटे गोविंद तथा मेरा क्या हाल होगा, गौड़जी ने अपनी पत्नी को समझाया था—"देखो, इस समय माया-जाल को छोड़ो, और राम का नाम लो। वही राम, जो अब तक देखते आए हैं, अब भी देखेंगे। रहा गोविंद, सो गोविंद के छोटेपन से हताश मत होना। मैं आज तुम्हारे चारो तरफ़, भारत के कोने-कोने में, अनगिनित बड़े बड़े गोविंद (गौड़जी का मतलब उनके शिष्यों से था।) छोड़े जाता हूँ, जो तुम्हें माता कहकर संबोधन करते कभी न अघाएँगे।" यह कहकर वह स्वयं 'राम-राम' कहने लगे, और सब लोगों को, जो वहाँ उपस्थित थे, 'राम-राम' ज़ोरों से कहते रहने के लिये संकेत किया। इसी बीच एक हल्की-सी हिचकी आई, और वह मौत के साथ अंतिम समय तक दृढ़ता के साथ लड़नेवाला अपूर्व योद्धा सदा के लिये शांत हो गया।

आज गौड़जी के निधन से सारा राष्ट्र संतप्त है, पर उससे कोटिगुणा संतप्त मैं अपने को पा रहा हूँ। उनके आशीर्वाद के सुखद वातावरण में मैं पनप रहा था। अब वह वरद हस्त मेरे ऊपर से उठा लिया गया, जिससे समस्त संसार मुझे सूना-सूना लग रहा है। गौड़जी, जिन्हें मैं भैया कहता न अघाता था, मेरी यह क्षुद्र श्रद्धांजलि स्वीकार करें।

शारीरिक संपत्ति के न रहने पर आर्थिक संपत्ति नहीं प्राप्त हो सकती।
अगर किसी भी प्रकार के रोग से निर्बलता आई हुई हो, तो अवश्य
"आतंक-निग्रह गोलियों" का सेवन करें
क़ीमत—३२ गोलियों की एक डिब्बी का १) एक रुपया
विशेष हाल जानने के लिये सूचीपत्र देखें।
आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड को०, चौक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुना है कि उनके कमर ही नहीं है!

[चित्रकार—श्रीयुत शित्तार्थी]

छायावाद की एक कविता का रूप

[विवरण—कल्पना-केश = १० सेर । क्लिष्ट शब्दावली-शरीर = ३५ सेर । अलंकार = ५ सेर । योग = ५० सेर, जिसमें कटि-रूपी अर्थ = केवल ३ छटाँक !]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुधा-चित्रावली

मिस प्रोफीलिया स्टेक अपनी कुछ शिष्याओं को व्यायाम करा रही हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

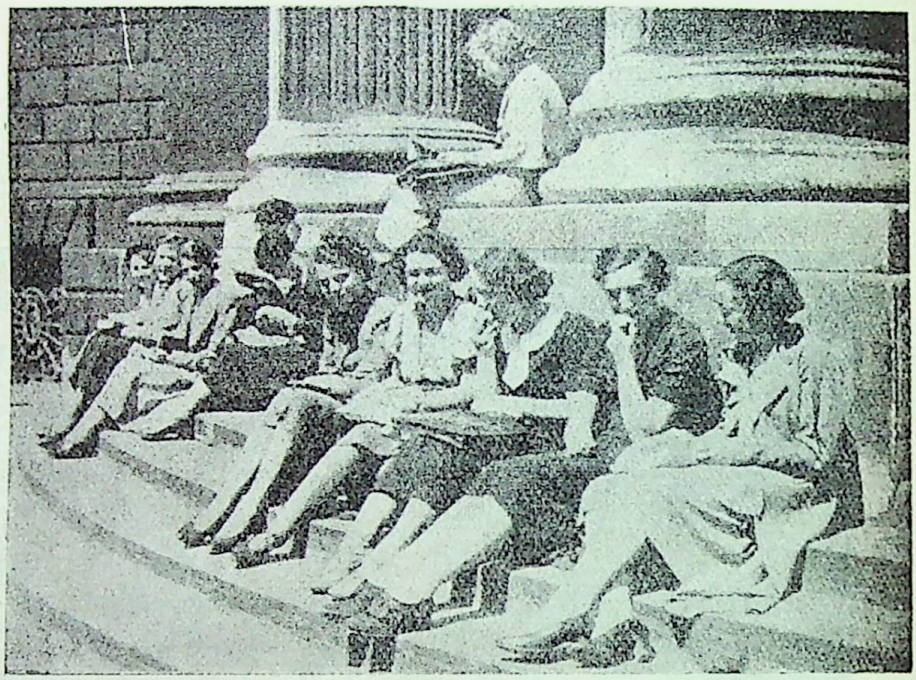

मिस हैस्टेक की शिष्याएँ खुले मैदान में ।

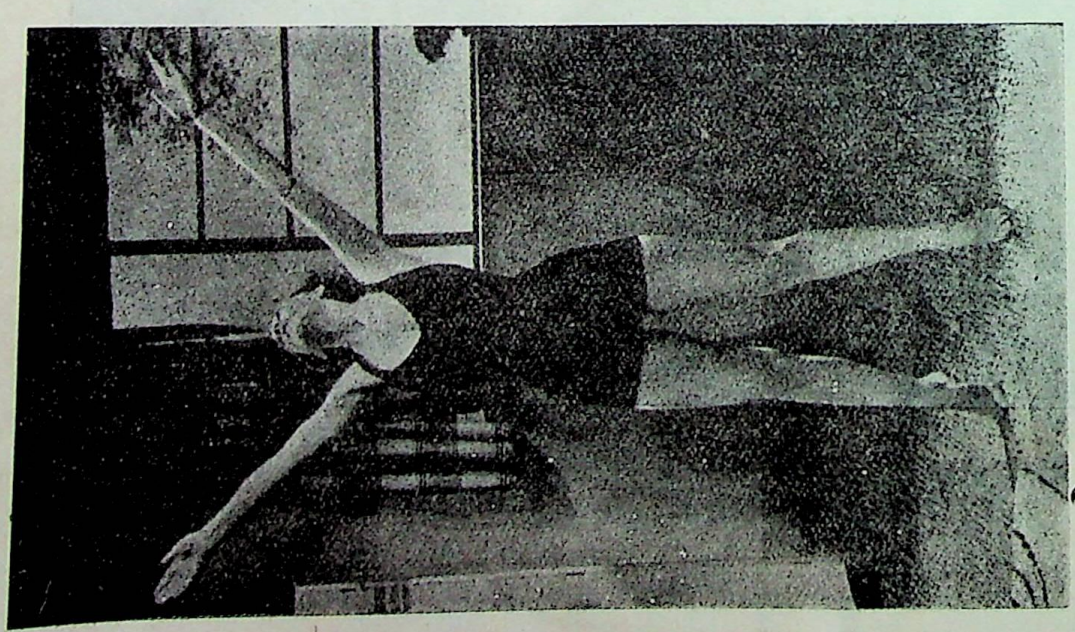

भुजाओं का लंबा बनाने का व्यायाम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जोड़ों की सख़्ती दूर करने के
लिये पैरों का व्यायाम

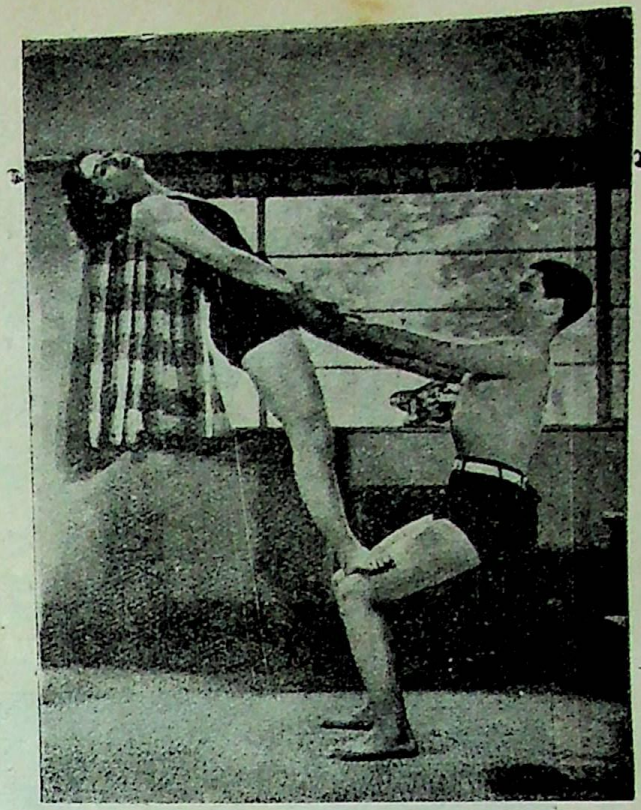

शारीरिक सुडौलपन

[मिस स्टेक की 'स्वास्थ्य तथा सौंदर्य' के शिक्षालय का एक प्रोफ़ेसर अपनी ख़ूबसूरत शिष्या को शरीर सुडौल बनाने की शिक्षा दे रहा है।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

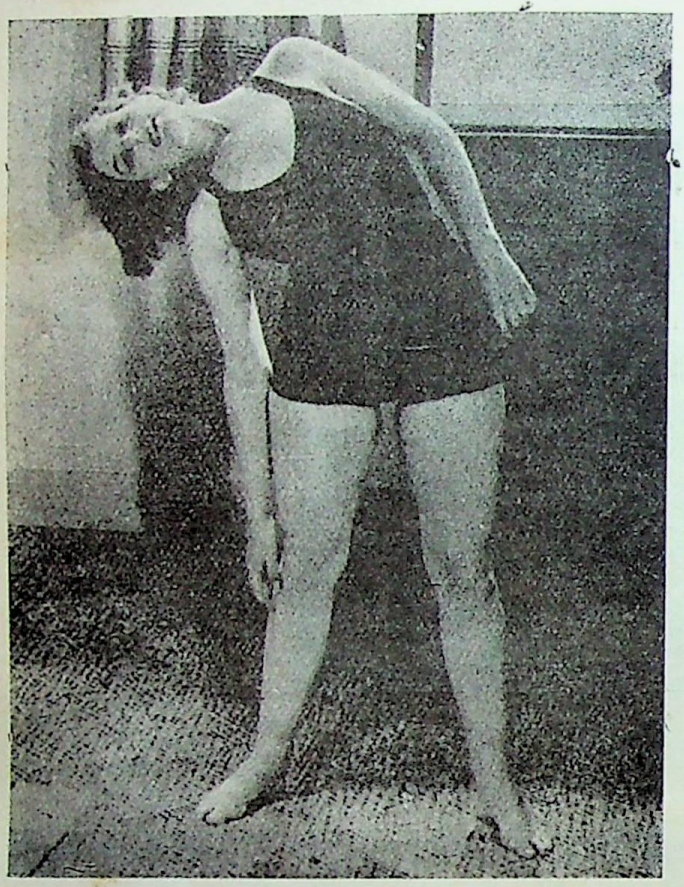

कमर का व्यायाम

मोढ़ों की मज़बूती के लिये कसरत

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

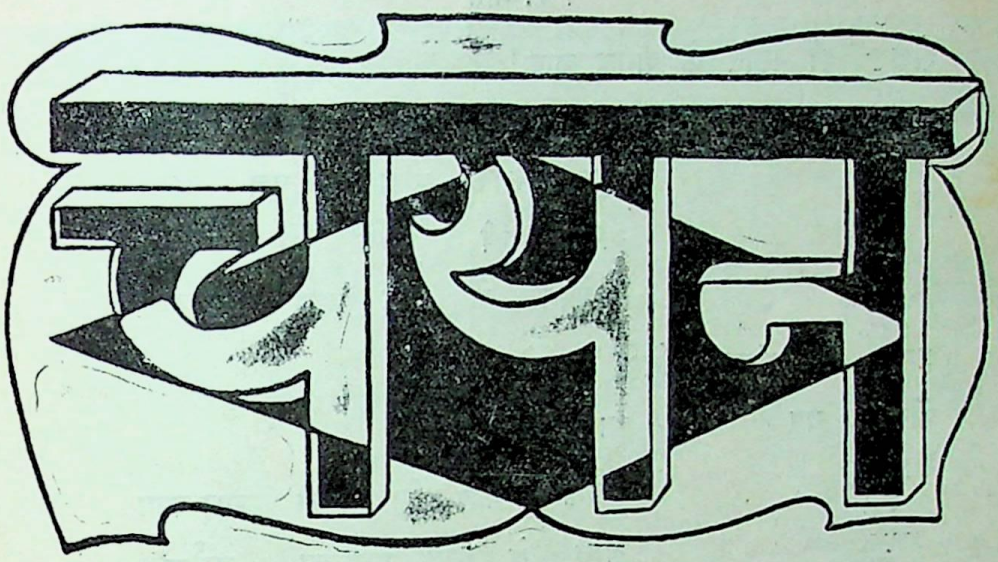

१. अमर तुलसीदास

तुव विमलतम कीर्ति का हम क्या करें गुण-गान ?
राम-पद-पंकज-मधुप बनकर किया मधु-पान !
राम-यश सागर-सदृश है अति अगम्य, अपार,
पार पर तुमने किया ले प्रेम की पतवार।
था करों में नव सुखद रस प्रिय, तुम्हारे पास ;
कवि कहें या रवि तुम्हें ? हे अमर तुलसीदास !

मंजु है मानस तुम्हारा, हंस संत-समाज
सैर कर उसमें सदा ही मोद पाता आज।
रत्न थे सुरलोक के, पर ले यहाँ अवतार—
भक्ति-पथ दीपित किया हरकर सकल भव-भार।
अज्ञता का तिमिर तुमने ही किया है नाश ;
कवि कहें या रवि तुम्हें ? हे अमर तुलसीदास !

देखकर तुव काव्य पंडितगण रहे हैं हार ;
भक्तजन को है तुम्हीं ने तो दिया सुख-सार।
धन्य तुव माता-पिता-गुरु, धन्य तुव शुभ भक्ति ;
धन्य तुव कर्तव्य-दृढ़ता, धन्य तुव अनुरक्ति।
अस्त हो, तो भी तुम्हारा आज व्याप्त प्रकाश ;
कवि कहें या रवि तुम्हें ? हे अमर तुलसीदास !

(श्रीमती) किशोरीदेवी चतुर्वेदन

× × ×

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२. गीत

शैशव की स्मृति के पागल क्षण !
आँसू की तुम बूँदें बनकर
झूलो पलक - डोल पर पल - भर,
यौवन की झंझा से मर्दित
भोलेपन के हे क्षण सुंदर !

प्रणय - प्रभंजन धूमिल पथ के
बीत गए मेरे आकर्षण !
उलझे केश-राशि से मधु-कण
करते थे नित मधु का वर्षण,
हरित अद्रि की कांति मनोहर,
सांध्य रश्मि में वे आलिंगन।

प्रियतम के मृदु अंकस्थल में
लोल लहर - सा मेरा नर्तन।
यौवन से सुंदर शेफाली,
भर कुसुमों की सौरभ - प्याली,
झुक - झुक, झूम - झूम पड़ती थी
पवन - विलोड़ित मैं मतवाली।

करुणा औ' विषादमय जग के
शुष्क कर रही हूँ मैं श्रम - कण।
पागल उर की नव अभिलाषे,
बनकर सुखद शांति की साँसे,
जीवन के लघुतम सुपात्र में
भरती हैं आशा की साँसें।

मेरे यौवन के ये कुछ क्षण,
प्रियतम, तुमको करती अर्पण !

केतकीदेवी गौड़ 'रश्मि'

× × ×

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

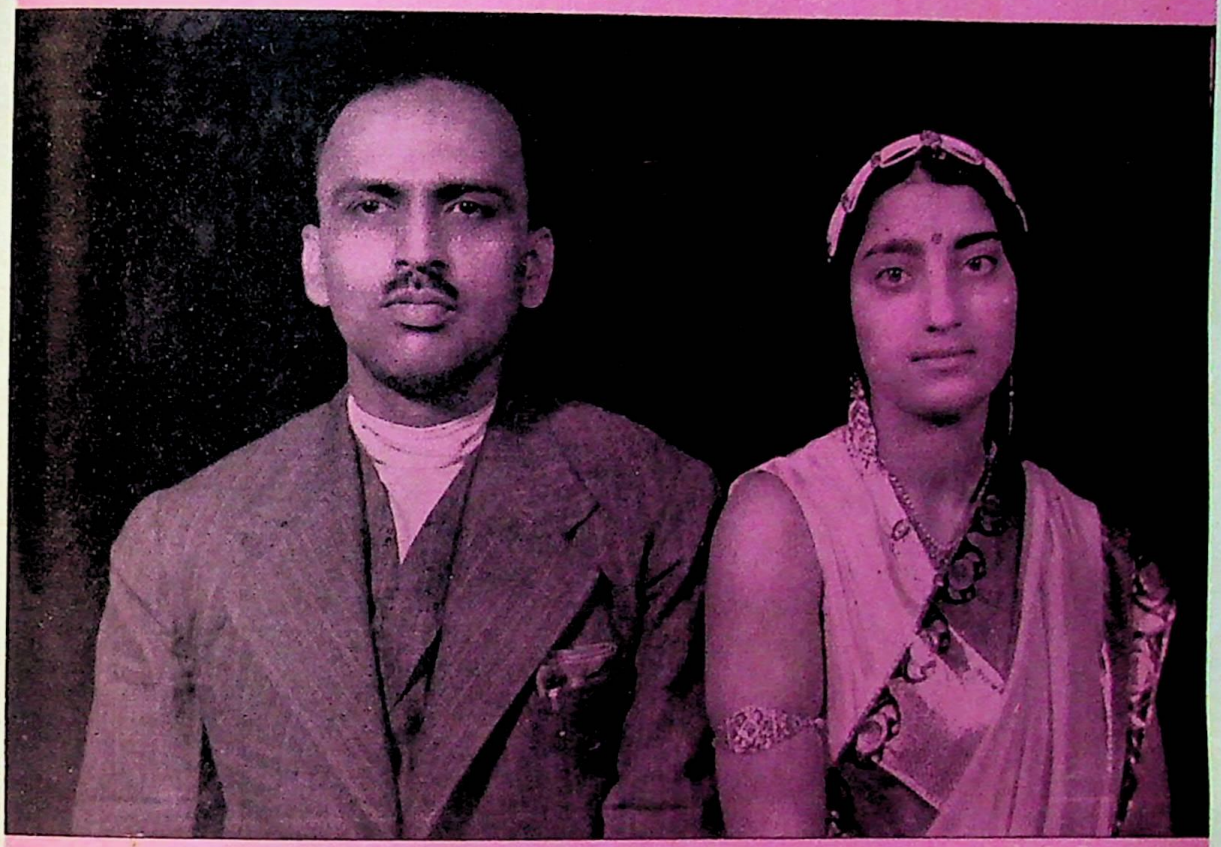

श्रीयुत सद्गोपालजी एम्० एस-सी० और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला बी० ए०

[हिंदोस्तान-ऐरोमैटिक्स कंपनी, बनारस के प्रधान रासायनिक श्रीसद्गोपालजी एम्० एस-सी० का शुभ विवाह अभी हाल में, जाति-पाँति तोड़कर, कुमारी कमला बी० ए० से, जो पंजाब-विश्वविद्यालय की तेज़ छात्रा रही हैं, हुआ है। वर महोदय तेल, साबुन तथा अन्य शृंगार-सामग्रियों के निर्माण में विशेषज्ञ समझे जाते हैं। आपका परिवार साहित्यिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत ही प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपकी सबसे बड़ी बहन कुमारी गोपालदेवी लाहौर में संगीत और चित्रकला का एक विशेष कॉलेज चला रही हैं। इन कलाओं में आप विशेष प्रवीण हैं। आपकी दूसरी और तीसरी बहनें श्रीमती ज्ञानदेवी स्नातिका और श्रीमती अमृतलता स्नातिका हिंदी की अच्छी लेखिकाएँ हैं, और हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्रीजगबहादुरसिंहजी बी० ए० (उप-संपादक 'ट्रिब्यून') और श्रीएम्० पी० केदार आई० डी० डी० (आर्गनाइज़र इंडियन डेरी कॉरपोरेशन) को ब्याही हैं। इस तरह आपका सारा परिवार सुशिक्षित और हिंदी-सेवी है। आपके पिता स्वर्गीय लाला दीवानचंदजी जालंधर के प्रसिद्ध आर्यसमाजी सज्जन थे, और उन्हीं के प्रयत्न से यह सारा परिवार उन्नत, सुशिक्षित और सुसंस्कृत हो सका है। श्रीमती कमला बी० ए० लाहौर के सुप्रसिद्ध प्रो० श्रीशिवदयालजी की सुपुत्री हैं। आपने अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र लेकर इस वर्ष बी० ए० पास किया है। आपको गृह-विज्ञान, सिलाई और फल-संरक्षण का विशेष शौक और अभ्यास है।]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुधा के प्रतिष्ठित लेखक
श्रीशंकरदेवजी विद्यालंकार
(अपनी नव-परिणीता धर्मपत्नी श्रीमती सुरेंद्रबालादेवी-सहित)

[आपका अभी हाल में, जाति-पाँति तोड़कर, आदर्श विवाह हुआ है। आपके संबंध में एक नोट सौरभ में गया है।]

गंगा-फ्राइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

३. मन का मैल

(१)

इसी बड़े दिन की बात है। कॉलेज में छुट्टी थी। पढ़ाई में मन नहीं लगता था। श्रीमती की याद रात-दिन सताया करती थी। उषा ने चिट्ठी में लिखा था—"क्या मेरा महत्त्व तुम्हारी पुस्तकों से भी कम है?"

मैं इस उलाहने को न सह सका, किताबों को निर्जीव आलमारी की गोद में सुलाकर घर भागा। ज्यों-त्यों कर ट्रेन इलाहाबाद पहुँची। घर पहुँचा, शाम हुई, रात हुई, और मैं अपने हृदय की रानी के पास!

दो-तीन दिन की दुनिया कैसे बीती, यह पता न चला। नई उम्र के उठते यौवन की तरंगों में हम डूब रहे थे। जब घर की चहारदीवारी, माता-पिता का लिहाज़ और दिन-भर की जुदाई कुछ खटकने लगी, तो हमने बड़ी चालाकी से, दो-चार दिन के लिये, लड़कों को लेकर, लखनऊ-नुमाइश घूमने की आज्ञा प्राप्त कर ली। फिर क्या था, उड़ती हुई आज़ादी में फुदकती हुई उमंगों के पालने पर बैठकर हम लखनऊ पहुँचे, और अमीनाबाद के इंपीरियल होटल में ठहर गए।

(२)

शाम अभी हुई थी। बिजली का प्रकाश मुस्किराने लगा था। एक हल्की-सी मस्ती हरएक के चेहरे पर झलक रही थी। नुमाइश की सड़कें परिस्तान हो रही थीं। जिधर देखो, उधर ही कोई सलोना चेहरा दिखलाई पड़ रहा था। पर मैं अपनी उषा से बढ़कर न किसी को सोच सकता था, न समझ सकता था। किसी सुंदरी की ओर देखकर मैं उसकी ओर तिरस्कार की नज़रें फेंकता और अपनी उषा को मन-ही-मन चूम लेता था। लड़के इधर-उधर मचलते चल रहे थे। उषा मेरा हाथ पकड़े, अपने रूप और यौवन के भार से दबी हुई, इठलाती चल रही थी। जब चित्त में विशेष उद्वेग होता, तो मैं उसका हाथ दबा देता। मेरे प्रेम के समुद्र में वह भी ग़ोता लगाती हुई कह बैठती—"उफ़!"

पास से एक गरोह निकला—सभी परियाँ थीं। एक-से-एक बढ़कर जार्जेट की साड़ी, उलझी अलकें, मतवाली पलकें, अटपटी चाल—सभी सुंदरी झूमती चली जा रही थीं। उनके गरोह को देखकर प्रायः लोग हट जाते थे, रास्ता छोड़ देते थे। रूप का भी बड़ा रोब होता है। हम भी हटने लगे।

इतने में मेरी निगाह उनमें से एक पर पड़ी। दोनो की दोनो आँखें मिलकर चार हो गईं। वह पास आ गई थी। वर्षों पहले की कहानी दोनो के नेत्रों के सामने खड़ी हो गई। वह मुस्किराई—मैं सहमा। वह चमक उठी, मैं मुरझाने लगा। अब वह पास आ गई थी। मैं पीछे हट रहा था। वह बग़ल में आ गई—मैं मुड़ने लगा। उसने मेरा बायाँ हाथ कसकर दबा दिया, और आगे बढ़ गई। उषा की बड़ी-बड़ी हिरन-सी आँखों से मेरे चेहरे का उतार-चढ़ाव, मेरी उलझन, घबराहट और परेशानी न छिपी। उसने उसका हाथ दबाना और मेरा सहम जाना भी देख लिया।

मैं कुछ कहना चाहता था—अपनी सफ़ाई देना चाहता था। उसने रोक दिया—"तुम क्या कह रहे हो? चलो, नुमाइश के बाहर चलें, मेरा जी घबरा रहा है।"

उसका नन्हा-सा कलेजा पीड़ा से व्याकुल हो रहा था। स्त्री-सुलभ डाह और स्वार्थ उसके मन को एकदम मैला कर चुका था। मैं कुछ कह भी न पाया था कि वह बाहर की ओर चली। मैं भी चुपचाप लौटा। लड़के विरोध करते ही रहे। होटल पहुँचते-पहुँचते उषा को ज्वर हो आया। रात को १०३ डिग्री तक बुख़ार हो गया। मेरी बात मेरे

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मन में ही रह गई। उसकी चोट उसके दिल में ही लगी रही। उसकी कोई दवा न हो सकी। बीमारी की हालत में वह इलाहाबाद पहुँचाई गई। और हालत बिगड़ते देख उसके पिता उसे अपने घर दिल्ली ले गए।

मेरा कॉलेज खुल गया। मैं कानपुर चला गया। दिल की चोट ज्यों-की-त्यों रही। उषा के पत्र आते थे—बड़े दर्द-भरे, पर उसमें उस घटना का कोई ज़िक्र ही न था। मेरी भी हिम्मत एक नई बात छेड़ने की न पड़ती थी। उसकी बीमारी ने भीषण रूप धारण किया। बचपन की कमज़ोरी, असामयिक यौवन, बीमारी की बदपरहेज़ी ने मिलकर उसे जीर्ण-ज्वर का शिकार बना दिया। मेरी दुनिया लुटा चाहती थी। और, इस विप्लव, इस आँधी, इस ठेस का कारण था उस कुसुम का मेरा हाथ लेना।

(३)

कनककुसुम अपने पिता की एकमात्र लड़की थी। कनक का भाई रमेश उससे तीन बरस उम्र में बड़ा होगा। मा-बाप ने बड़े लाड़-प्यार से दोनो को पाला था। बाप का पैसा और मा की ममता का ऐसा प्रभाव पड़ा कि रूप, सौंदर्य और माहकता की खान कनक बड़ी लापरवाह, साख़र्च एवं विलास-प्रिय हो गई थी। बचपन ने ज्यों ही रास्ता लिया, जवानी की मुरादें ज्यों ही गोद में अठखेलियाँ लेने लगीं, पहलू में दिल भी धड़कना शुरू हुआ। कुसुम को अपना साथी केवल एक मिला—रमेश! वह भी सुंदर जवान था। भाई-बहन में ख़ूब पटती थी।

बात मंसूरी की है, जहाँ यह काँटा मुझे चुभा था। ज़ोरों की हवा, तेज़ आँधी, घनघोर पानी, यह सब दस मिनट में हो गया। छोटी-सी, पर एक उँची टेकरी पर रमेश और कनक प्रकृति का आनंद ले रहे थे। कनक ने कहा—"भैया, दुनिया में कितना सौंदर्य भरा है।" रमेश ने जवाब दिया—"बहन, सचमुच दुनिया बड़ी मीठी है।"

इसी समय प्रकृति का बलवा शुरू हो गया। कनक डर गई। सहमकर वह भागना चाहती थी कि पानी आ गया। उसने कोई दूसरा उपाय न देखकर भाई की गोद में मुँह छिपा लिया। हवा-पानी दोनो ही बढ़ गए। अनायास भाई-बहन चिपट गए। जीवन का यह प्रथम आलिंगन बड़ा भीषण था। कनक तथा रमेश दोनो काँप उठे। प्रकृति के नियम बड़े कठोर होते हैं।

मैट्रिक पास किए अभी दस ही पाँच दिन हुए थे। मैं जीवन में उतना ही कच्चा था, जितना पढ़ने में। पर पैसा था, साथी थे, इसलिये योगेंद्र के साथ मैं भी मंसूरी की सैर के लिये आया था।

इस आँधी-पानी में मैं भी उस टेकरी पर पहुँच चुका था, और तूफ़ान से बचने का सहारा ढूँढ़ रहा था। योगेंद्र के पास लाठी थी। वह उसी को टेककर अपना बचाव कर रहा था। इतने में हमने जो देखा, तो हवा-पानी भी भूल गए। एक युवक-युवती एक दूसरे से चिपटे खड़े हैं। मैंने युवती को देखा, उसके रूप को देखा। पानी में भीगती उस विधाता की अनोखी पुतली में कितना सौंदर्य था।

नसों में ख़ून भर आया। दिल में धड़कन-सी होने लगी। चित्त चंचल हो उठा। योगेंद्र तो बड़ा कूढ़-मग्ज़ था। वह अपनी लाठी सँभाल रहा था, मैं अपना दिल!

मैंने उसे कई बार देखा—सिनेमा, होटल, बाग़, पहाड़, चारो तरफ़। वह मेरी आँखों में नाच रही थी। मैं परछाईं की तरह उसके साथ था। मैंने उसका पता लगाया। जिस होटल में वह ठहरी थी, उसी में मैं भी उठ आया। उर्दू-शेरों की किताबें खरीद लीं। एक-न-एक लाइन याद करना, उसको पढ़ना, और जब वह उधर से

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

निकले, उसे गुनगुना देना ! इसी तरह कई दिन बीत गए। मैं कनक को रोज़ देखता, खूब देखता, जी भरकर देखता, और वह भी मेरी ओर कुछ नीची आँखें किए देख लेती।

एक दिन की रात की बात है। कनक का कमरा खुला था। मैं उधर से निकला। मुझसे न रहा गया। मैं पूछ ही बैठा—"क्यों साहब, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"

"आइए।" उसने सुरीली आवाज़ में कहा। मैं कमरे में चला गया; पर न मैं बोला, न कनक। दोनो चुप थे, एक दूसरे की तरफ़ देख रहे थे। इतने में पीछे पैर की आहट हुई। रमेश बाबू कमरे में आ गए। मेरी ओर देखकर बड़े क्रोध से बोले—"तुम यहाँ क्यों आए हो?"

मैं कुछ कहना ही चाहता था कि वह बड़े ज़ोर से कह बैठे—"चले जाओ यहाँ से।"

मेरे लिये यह अपमान सहने योग्य न था। मैं धीरे से बाहर निकला। इतने में कनक उठ पड़ी। उसने मुझे पुकारकर कहा—"ठहरिए, आप मुझसे पूछकर आए हैं।"

मैं रुका। फिर क्या था। रमेश और कनक में युद्ध छिड़ गया। वे भाई-बहन हैं, यह मैंने अभी समझा। दोनो एक दूसरे को किस भाव से देखते हैं, यह मैं समझ पाया, पर कनक कहने लगी—"पिताजी ने तुम्हारे साथ पहाड़ पर भेजा है, पर तुम मेरे ऊपर हुकूमत नहीं कर सकते। तुम भाई हो, भाई की तरह रहो। डाह करना तुम्हारा धर्म नहीं।"

रमेश को क्रोध आ गया। वह कनक पर टूट पड़ा। दो बेंत उसके कोमल शरीर पर बरस पड़े। मुझसे अब न देखा गया। मेरी रमेश की कुश्ती हो गई, और मुझसे जितना हो सका, मैंने उसे पीट डाला।

(४)

सबेरा हुआ, तो वह कमरा ख़ाली था। मैनेजर ने बतलाया कि वे रात की गाड़ी से लखनऊ चले गए। लखनऊ में ही उनका घर है। हाँ, वह लड़की मेरे नाम एक चिट्ठी दे गई है।

मैंने पत्र ले लिया। अपने कमरे में चला आया, और उसे ग़ौर से पढ़ने लगा—"तुम मुझे प्यार करते हो, यह मेरे नेत्र मुझे बतला चुके हैं। तुम सुशील हो, सच्चे हो, स्नेही हो, यह मैं तुम्हारे नेत्रों से जान चुकी हूँ। पर मेरा रूप मेरा शत्रु है। मेरी वासना मुझे पागल बना रही है। मैं दीवानी हो रही हूँ। मैं जिसे देखती हूँ, उसी की होकर रहना चाहती हूँ। तुम पहले व्यक्ति नहीं, जिसने मुझे प्यार किया हो। मेरा भाई तक मुझे प्यार करता है—किस रूप में? यह मैं नहीं कह सकती। मेरा दिमाग़ ख़राब हो रहा है, इसलिये अपने को क़ाबू में करने के लिये मैं घर भाग रही हूँ। संभव है, वहाँ जाते ही मेरे ब्याह की बातचीत चल पड़े, पर यह भी संभव है कि तुम्हें बहुत समय में भूल सकूँ।"

पत्र पढ़कर मुझे काठ-सा मार गया। सिड़ी योगेंद्र हँसता रहा। वह क्या जाने, क्या समझे। हम भी घर लौटे। कॉलेज खुला। प्रेम का पहला पाठ भी समाप्त हो गया। मैं कनक-कुसुम को भूल गया। समय पाकर काँटा निकल गया—मेरी रानी उषा का मेरे ऊपर अधिकार हो गया।

(५)

उषा की तबियत ख़राब ही होती गई। सबकी राय से यह तय हुआ कि लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में रक्खा जाय। दिल्ली से लखनऊ लाई गई। मैं भी उस समय वहीं था। एक अच्छा वार्ड लेकर मैंने उसे उसमें भर्ती करा दिया। डॉक्टर ने आकर काफ़ी जाँच-पड़ताल की—काफ़ी परीक्षा ली गई। यह तय हुआ कि तीन नर्स सदैव उसकी सेवा में रहेंगी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहली नर्स आई, और चली गई। दूसरी आई, उसकी भी ड्यूटी समाप्त हो गई। रात हुई। तीसरी नर्स की ड्यूटी थी। क़रीब ६ बजे के मैं भी कमरे में आया। नर्स उषा के गले के पास चिपटी-सी कुछ कह रही थी। मैं सुनने लगा—

"हाँ बहन, तो मेरी वासना ने मुझे कहीं का न छोड़ा। मैं पति को प्रसन्न न कर सकी। मैंने चारो ओर सुख ढूँढ़ा, पर उसकी तृप्ति न हो सकी। मन को शांति न मिली। तुम्हारे पति का हाथ मैं अपनी उसी वासना की हालत में दबा उठी थी। पर उसके बाद मेरे पति से मेरा घोर युद्ध हुआ। मेरे भाई से मेरा पुराना वैर है। मुझे जीवन नीरस मालूम होने लगा। अंत में मैंने यही सोचा कि अब अपना जीवन रोगी-दुःखी की सेवा में व्यतीत करूँ। मुझे इसमें शांति मिल सकती है। इसीलिये मैं अब अस्पताल में बिना वेतन की नर्स हूँ। रात को काम करना सबसे कठिन है। रात को ही वासनाएँ जाग जाती हैं। इसीलिये मैं अपनी रात रोगी की सेवा में बिताती हूँ। अब संसार में मेरा कोई नहीं है। मैं—मेरे रोगी ये साथी हैं।"

मैं कमरे के भीतर खड़ा था। आगे बढ़कर उषा के खाट के पास चला आया। कुसुम और उषा दोनो रो रही थीं। मुझे देखते ही उषा ने बाहें फैला दीं।

नुमाइश के बाद यह हमारा पहला आलिंगन न था। उषा ने रुँधे गले से कहा—"प्यारे, मेरे मन का मैल साफ़ हो गया।" और कनक, हमने मुड़कर देखा, वह न-जाने कहाँ चली गई थी। उस समय से उसका पता न चला।

हम दोनो आज भी उसके विषय में चर्चा करते हैं। उषा मेरे हृदय की रानी है। वासना की पुतली कुसुम कहाँ है, यह ईश्वर जाने।

(दीवान) गणेशचंद्र कपूर

× × ×

४. क्यों बना गईं मेरी दुनिया दीवानी?

तुम चार दिनों को आकर मेरी रानी,
क्यों बना गईं मेरी दुनिया दीवानी?

थी आलोकित अब तक वह अस्फुट रेखा—
उस शशव के उन्मुक्त हास्य का लेखा—
चल चंचल चरणों की वह मंजुल-सी ध्वनि,
रुन-झुन करती थी जिसमें रंजित किंकिणि।

श्रीदेवर्षि सनाढ्य 'सुमन' (शास्त्री।)

मैं "मचल उठा करता था चिर अभिमानी;
था समझ न पाता कुछ भी आनाकानी।
पर चार दिनों को आ तुम मेरी रानी,
क्यों बना गईं मेरी दुनिया दीवानी?

मैं भूल न पाया था वे सुंदर सपने,
जब खेला करते थे होकर सब अपने।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अह ! थी कितनी सुंदर वह विग्रह-छाया,
थी संधि छिपी फैला जिसमें निज माया।
हो शय्या पर सुनना एकाग्र कहानी;
मैं भूल न पाया था वे 'राजा-रानी'।
पर चार दिनों को आ तुम मेरी रानी,
क्यों बना गईं मेरी दुनिया दीवानी ?
कुछ बड़ा हुआ, देखा मैंने जग-सपना;
कुछ समझ सका था सुख-दुख में यों खपना।
वे चले गए दिन, गईं रात मदमातीं,
थे मिलते कभी-कभी अब शैशव-साथी।
मैं हुआ बिराना, बढ़ी ज़रा नादानी,
ये जग की साँसें, आसें हुईं बिरानी।
पर चार दिनों को आ तुम मेरी रानी,
क्यों बना गईं मेरी दुनिया दीवानी ?
मैं सबसे अलग बनाए सुंदर कुटिया
सोता था, सबसे अलग बसाए दुनिया।
पर जाने चंदा से, तारों से, नभ से,
या उपज पड़ीं तुम 'चिर सुंदर' इस मन से।
तुम छीन ले गईं जो था मेरा रानी,
मैं शांत खड़ा था, तुमने एक न मानी।
क्यों चली गईं अब करके यह नादानी;
तुम चार दिनों को आकर मेरी रानी !

श्रीदेवर्षि सनाढ्य 'सुमन' (शास्त्री)

× × ×

५. परदेशी

परदेशी,

रात की बेला है, सुनसान अमराई में अंधकार छाया है, और मैं सास-ननँद का सोने देकर तुम्हें पत्र लिखने बैठी हूँ। मालती पंखा डुला रही है, फिर भी हृदय की उष्णता उबल-उबलकर कपोलों पर आ रही है, और प्रस्वेद की नन्ही बूँदों से पत्र भर गया है।

आँचल खिसका हुआ है, मेरी क़लम बँध गई है, हाथ स्थिर हैं, और सूनी शय्या देखकर आँखें भर आई हैं।

रात की बेला है, सुनसान अमराई में अंधकार बिखरा है, और मैं उन्हें सुलाकर तुम्हें पत्र लिखने बैठी हूँ !

* * *

परदेशी,

अब तो लौट आओ।

संध्या की आँखों में श्रावण के आँसू हैं, उद्यान के फूलों पर यौवन का अनुराग है, मधुकर के चुंबन में प्रकृति-प्रणय का इतिहास है, सौंदर्य के शिशुपन में वैभव की विडंबना है, इस अनुराग-हीन जीवन में स्मृतियों की शाश्वत मनोव्यथा ओठों तक छलक आई है ! संध्या की आँखों में श्रावण के आँसू हैं !

मनचले ! अब तो लौट आओ !

(कुमारी) [illegible]

× × ×

६. खुले पथिक, कुटिया के द्वार।

खुले पथिक, कुटिया के द्वार।
राह देखती खड़ी हुई हूँ आँखें चारो ओर पसार;
माला गूँथूँ अश्रु कहाँ अब ? कैसा यह प्रतिकार।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पथिक, यह कैसा है प्रतिकार ?
खुले मेरी कुटिया के द्वार।
भूली भान, भुलाया सब कुछ, त्याग चुकी संसार;
खड़े किंतु हो पास द्वार पर क्या कर रहे विचार ?
पथिक, हो क्यों कर रहे विचार;
खुले मेरी कुटिया के द्वार।
आओ, आओ, श्रमित बटोही, तुम मेरे नयनों के द्वार;
कितनी-कितनी आशाओं की यह डाली कर लो स्वीकार।
पथिक, केवल डाली उपहार;
खुले मेरी कुटिया के द्वार।
हाथ पकड़ लो, मुझे थाम लो, गिरी-गिरी मैं अपने द्वार;
साथ मुझे भी अपने ले लो, करके भव-सागर से पार।
पथिक, इस भव-सागर से पार;
खुले मेरी कुटिया के द्वार।

लक्ष्मीनारायण-दीनदयाल अवस्थी

बच्चों को हृष्ट-पुष्ट और हँसमुख बनाने के लिये उनको पिलाइए—

सब जगह मिलता है।

लखनऊ शहर के सोल एजेंट—किंग मेडिकल हाल, २५, अमीनाबाद-पार्क।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तृतीय सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

३००) का पुरस्कार लीजिए !

१७५) शुद्ध पूर्ति पर

१२५) न्यूनतम अशुद्धियों पर

३००) का पुरस्कार लीजिए !

सुधा-पहेली-प्रतियोगिता !!

तारीख़ बढ़ा दी गई !!!

वर्ग-पूर्ति २८ दिसंबर तक करके भेजिए !!!

सुधा-पहेली-प्रतियोगिता की अंतिम तारीख अब हमने २८ दिसंबर कर दी है। वर्ग-पूर्ति सुधा ऑक्टोबर, नवंबर, दिसंबर, किसी भी संख्या में प्रकाशित फ़ार्म पर करके लोग भेज सकते हैं।

सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

के

संबंध में

विशेष विवरण अंदर पढ़िए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

योगिता के प्रवेश-शुल्क-पत्र द्वारा भेजी जा सकती है। इन प्रवेश-शुल्क-पत्रों की किताबें हमारे कार्यालय से २) में मँगाई जा सकती हैं। २) की किताब में ४ आठ आने मूल्य के पत्र बँधे हैं। एक ही कुटुंब के अनेक व्यक्ति, जिनका पता-ठिकाना भी एक ही हो, एक ही मनीऑर्डर द्वारा अपनी-चाहिए, और दूर के स्थानों से भेजनेवालों की पूर्तियाँ २ दिन बाद तक ली जायँगी। मैनेजर 'सुधा' का निर्णय सब प्रकार से और प्रत्येक दशा में मान्य होगा। शुद्ध वर्ग-पूर्ति की प्रतिलिपि जनवरी-मास की 'सुधा' में प्रकाशित होगी। इसे पूर्ति करनेवाले सज्जन मँगा-कर अपनी वर्ग-पूर्ति की शुद्धता-अशुद्धता जाँच लें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पथिक, यह कैसा है प्रतिकार ?
खुले मेरी कुटिया के द्वार।
भूली भान, भुलाया सब कुछ, त्याग चुकी संसार ;
खड़े किंतु हो पास द्वार पर क्या कर रहे विचार ?
पथिक, हो क्यों कर रहे विचार :

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि०
कलकत्ता ब्रिभाग नं० ४६
सब जगह मिलता है।
लखनऊ शहर के सोल एजेंट—किंग मेडिकल हाल, २५, अमीनाबाद-पार्क।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तृतीय सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

३००) का पुरस्कार लीजिए !

१७५) शुद्ध पूर्ति पर

१२५) न्यूनतम अशुद्धियों पर

नियम—(१) पहेली नं० ३ की पूर्ति करनेवालों को प्रथम पारितोषिक—संपूर्णतया शुद्ध पूर्ति पर १७५) । द्वितीय पारितोषिक—न्यूनतम अशुद्धियों पर १२५) । जो पूर्ति बंद करके रख दी गई है, उससे जो पूर्ति मिलेगी, वही सही मानी जायगी ।

(२) पहेली के रिक्त कोष्ठों में ऐसे अक्षर लिखने चाहिए, जिनसे 'निर्दिष्ट शब्द' बन जाय । उसका संकेत अंक-परिचय में दिया गया है । प्रत्येक शब्द उस घर से आरंभ होता है, जिस पर कोई-न-कोई अंक लगा हुआ है, और इस चिह्न (■■) के पहले समाप्त होता है । अंक-परिचय में ऊपर से नीचे और बाएँ से दाहनी ओर पढ़े जानेवाले शब्दों के अंक अलग-अलग कर दिए गए हैं ।

(३) प्रत्येक वर्ग की पूर्ति स्याही से की जाय । पेंसिल से की गई पूर्तियाँ स्वीकार न की जायँगी । अक्षर सुंदर, सुडौल और छापे के सदृश स्पष्ट लिखने चाहिए । जो अक्षर पढ़ा न जा सकेगा, अथवा बिगाड़कर या काटकर दूसरी बार लिखा गया होगा, वह अशुद्ध माना जायगा ।

(४) प्रतियोगिता में शामिल होने के लिये जो फ़ीस ॥) वर्ग के ऊपर छपी है, देनी होगी । फ़ीस टिकटों या मनीऑर्डर द्वारा या सुधा-पहेली-प्रतियोगिता के प्रवेश-शुल्क-पत्र द्वारा भेजी जा सकती है । इन प्रवेश-शुल्क-पत्रों की किताबें हमारे कार्यालय से २) में मँगाई जा सकती हैं । २) की किताब में ४ आठ आने मूल्य के पत्र बँधे हैं । एक ही कुटुंब के अनेक व्यक्ति, जिनका पता-ठिकाना भी एक ही हो, एक ही मनीऑर्डर द्वारा अपनी-अपनी फ़ीस भेज सकते हैं, और उनकी वर्ग-पूर्तियाँ और टिकट भी एक ही लिफ़ाफ़े या पैकेट में भेजे जा सकते हैं । टिकट, मनीऑर्डर और वर्ग-पूर्तियाँ "मैनेजर सुधा, पहेली-प्रतियोगिता-विभाग, लखनऊ" के पते से आनी चाहिए ।

(५) लिफ़ाफ़े में वर्ग-पूर्ति के साथ मनीऑर्डर की रसीद या प्रवेश-शुल्क-पत्र नत्थी होकर आना अनिवार्य है । रसीद या प्रवेश-शुल्क-पत्र न होने पर वर्ग-पूर्ति की जाँच न की जायगी । लिफ़ाफ़े की दूसरी ओर अर्थात् पीठ पर मनीऑर्डर भेजनेवाले का नाम और पूर्ति-संख्या लिखनी आवश्यक है । पूर्ति यथासंभव रजिस्ट्री से भेजनी चाहिए । सादे लिफ़ाफ़ों में भेजनेवाले व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी पर ऐसा कर सकते हैं ।

(६) किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह जितनी पूर्तियाँ भेजना चाहे, भेजे । किंतु प्रत्येक वर्ग-पूर्ति ऑक्टोबर, नवंबर या दिसंबर की 'सुधा' में छपे हुए फ़ार्म पर होनी चाहिए । इस प्रतियोगिता में एक व्यक्ति को केवल एक ही इनाम मिल सकता है । वर्ग-पर्ति की फ़ीस किसी भी दशा में नहीं लौटाई जायगी ।

(७) जो वर्ग-पूर्ति १८ दिसंबर तक नहीं पहुँचेगी, जाँच में नहीं शामिल की जायगी । स्थानीय पूर्तियाँ १८ दिसंबर को ६ बजे तक बक्स में पड़ जानी चाहिए, और दूर के स्थानों से भेजनेवालों की पूर्तियाँ २ दिन बाद तक ली जायँगी । मैनेजर 'सुधा' का निर्णय सब प्रकार से और प्रत्येक दशा में मान्य होगा । शुद्ध वर्ग-पूर्ति की प्रतिलिपि जनवरी-मास की 'सुधा' में प्रकाशित होगी । इसे पूर्ति करनेवाले सज्जन मँगाकर अपनी वर्ग-पूर्ति की शुद्धता-अशुद्धता जाँच लें ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्ग-नं० ३ सुधा-पहेली कीमत ।:)

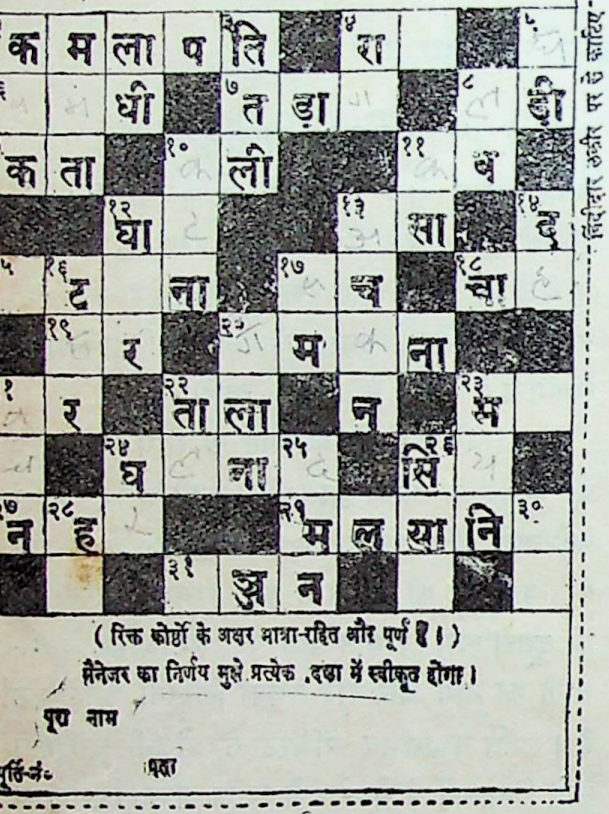

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं।)

मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

पूरा नाम

पूर्ति-नं० पता

किनारे लकीर पर से काटिए

वर्ग-नं० ३ सुधा-पहेली कीमत ।।)

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं।)

मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

पूरा नाम

पूर्ति-नं० पता

किनारे लकीर पर से काटिए

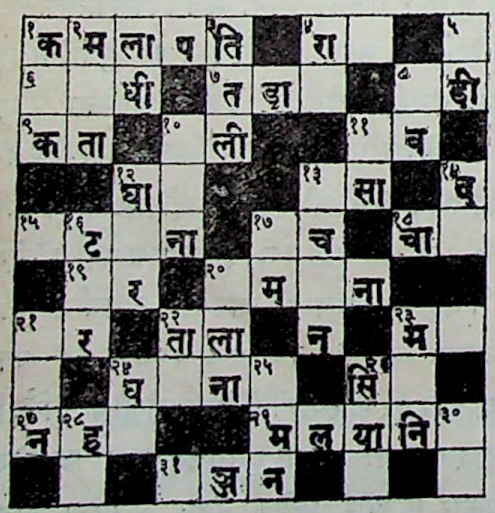

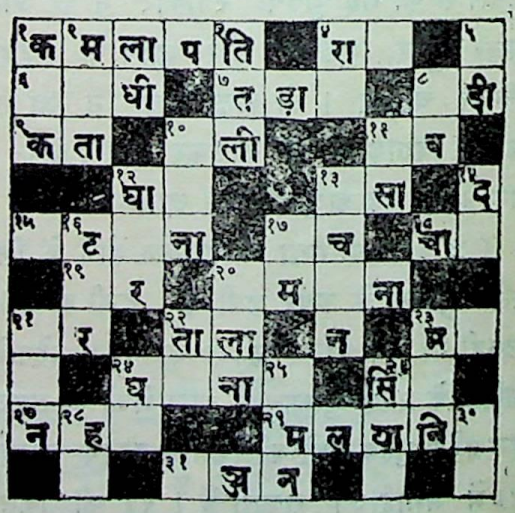

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ३ की पूर्तियों की प्रतिलिपि यहाँ कर लीजिए,
और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्ग-नं० ३ का अंक-परिचय

बाएँ से दाहने

१. लक्ष्मी के पति।
४. बड़ों की बताई हुई बहुधा ठीक होती है।
६. यदि हुए, तो ब्याह-शादी में ज़रूर मिलते हैं।
७. ताल। ८. मोतियों की अच्छी लगती है।
९. ...सूत हो, तो कपड़ा टिकाऊ बनेगा।
१०. इसे तोड़ना न चाहिए।
११. समय का प्रश्न है।
१२. पक्का हो या कच्चा, तैराक नहीं चूकते।
१३. राजदरबार में ज़रूर ही दिखाई देता है।
१५. बहुतों की आदत में आ जाता है।
१७. झूठ का उलटा। १८. अभिलाषा।
१९. एक अँगरेज़ी उपाधि। २०. खब सुगंध देना।
२१. माता-पिता अपनी कन्या के लिये सुयोग्य, प्रतिष्ठित ..... खोजते हैं।
२२. ताल में न होने पर भी ताला है।
२३. सोच-समझकर देना चाहिए।
२४. इंद्रजीत। २६. लव-कुश की माता।
२७. खेतों की सिंचाई में इससे काम लिया जाता है।
२९. मलय-पर्वत की वायु।
३१. स्त्री-पुरुष दोनों इसका उपयोग करते हैं।

ऊपर से नीचे

१. पराई किसको होती है।
२. माता का हृदय ही इसे जानता है
३. इसे फूलों पर उड़ते देखा है।
४. संगीतज्ञ ही इसके भेद को समझते हैं।
५. पास रखने से समय पर काम आती है।
८. यह 'बल' का फेरफार है।
१०. अंगों का...दुःखदायी होता है। ११. तंग।
१२. यहाँ करवा टूट गया है।
१३. यह पुराना पहनावा है। १४. यहाँ 'हद' उलट गई है।
१६. घटिया रेशम। १७. बराबर। १९. ताल है, पर लय नहीं।
२०. सुनार इस काम को जानते हैं।
२१. दृढ़प्रतिज्ञ स्त्री-पुरुष अपने...का पालन करते हैं।
२२. ऊँचा हो, तो दूर तक सुनाई देती है।
२३. यहाँ 'नियम' उलट गया है।
२४. सबको इसकी चिंता रहती है।
२५. शत्रुओं के साथ यही व्यवहार उचित है।
२६. गींदड़। २८. किसी बात के लिये अड़ना।
२९. इसकी गति कहाँ नहीं है?
३०. एक बार पड़कर इसका छूटना असंभव नहीं, तो कष्ट-दायक अवश्य है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

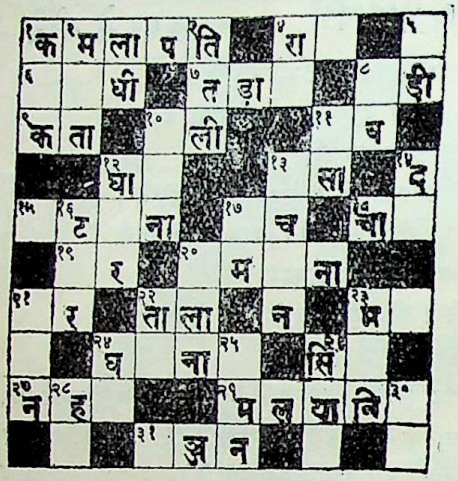

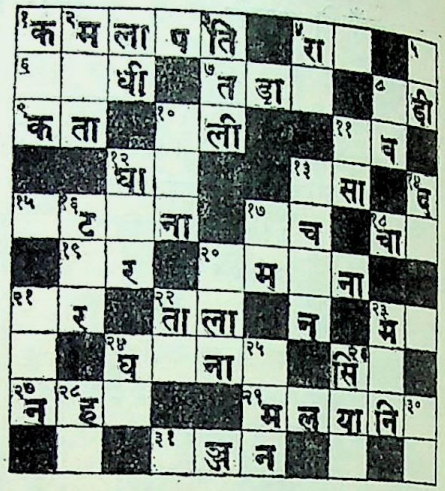

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ३ की पूर्तियों की प्रतिलिप यहाँ कर लीजिए,
और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए।

आवश्यक सूचनाएँ

(१) प्रतियोगियों की सुविधा के लिये हमने प्रवेश-शुल्क-पत्र छाप दिए हैं, जो हमारे कार्यालय से नक़द दाम देकर ख़रीदे जा सकते हैं। उस पत्र पर अपना नाम स्वयं लिखकर पूर्ति के साथ नत्थी करना चाहिए।

(२) स्थानीय पूर्तियाँ सुधा-प्रतियोगिता-बक्स में, जो गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस में, सामने, रक्खा गया है, ६ और ६ बजे के बीच में डाली जा सकती हैं।

(३) पहेली नं० ३ का नतीजा, जो बंद लिफ़ाफे में मुहर लगाकर रख दिया गया है, ता० २२ दिसंबर को, सुधा-विभाग में, ११ बजे, सर्वसाधारण के सामने, खोला जायगा, उस समय जो सज्जन चाहें, स्वयं उपस्थित होकर उसे देख सकते हैं।

(४) मनीऑर्डर की रसीद, जो रुपया भेजते समय डाकघर से मिलती है, पूर्ति के साथ अवश्य भेजनी चाहिए। पूर्तियों की प्राप्ति की सूचना नहीं भेजी जायगी। मनी-ऑर्डर, प्रवेश-शुल्क-पत्र या डाकघर के दो पैसे के टिकटों द्वारा ही प्रतियोगिता-फ़ीस ली जायगी। पतली निब से साफ़ बनाकर छपे वर्ग पर ही पूत भेजनी चाहिए। वर्ग को काटकर जो काग़ज़ पर चिपका देते हैं, और अलग से भी लिखकर भेजते हैं, ऐसी पूर्तियाँ प्रतियोगिता में नहीं ली जायँगी। लिफ़ाफ़ों में पूर्तियों को ऐसे रखना चाहिए कि यहाँ खोलने में कूपन या वर्ग फटें नहीं।

(५) इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले लोग प्रायः ऐसी भूलें कर देते हैं, जिन्हें वे यदि नियमों को ध्यान से देखें, तो न करें। बैरंग चिट्ठियाँ नहीं ली जायँगी। हाँ, ॥) के मनीऑर्डर या प्रवेश-शुल्क-पत्र के बजाय जो इसी मूल्य के डाकघर के दो दो पैसेवाले १६ टिकट भेजेंगे, उनके उत्तर पर भी विचार होगा। एक वर्ग-पूर्ति भेज चुकने पर उसका संशोधन दूसरे लिफ़ाफ़े में भेजना टिकट का अपव्यय करना होगा, क्योंकि उस पर विचार न होगा। छोटे कूपन या कूपन की नक़ल पर भेजी गई वर्ग-पूर्तियों पर भी विचार न होगा।

(६) पहेली के संबंध में हमें जो कुछ कहना होगा, उसे सुधा में छाप देंगे। पत्रों का हम पृथक् से कोई उत्तर न देंगे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहेली-पूर्तिकारों के पत्र

महोदयजी,

आपकी 'सुधा-पहेली नं० २' का शुद्ध उत्तर और परिणाम देखा। पूर्ण संतोष रहा।

मुझे पहेली भरने का शौक़ है। ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर मैं कई छोटे-बड़े पुरस्कार भी जीत चुका हूँ। यद्यपि हिंदी की कई पत्र-पत्रिकाएँ पज़ल निकालती हैं, पर आप-जैसी सरल और मनोरंजक किसी की पहेली नहीं होती। अन्य प्रकाशक तो संकेतों से दूर जो भी अप्रचलित और कड़ा शब्द पा जाते हैं, कोष्ठों में रख देते हैं, चाहे वे एकदम ग़लत ही क्यों न हों।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि आपका उद्देश्य जनता से रुपया ऐंठना नहीं है!

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि पहेली-प्रेमी सज्जन आपकी सचाई देख, बड़ी संख्या में 'सुधा-पहेलियों' में भाग लेकर शीघ्र ही पुरस्कार की रक़म बढ़ा देने के लिये आपको उत्साहित करेंगे।

भवदीय

हरीकृष्ण कपूर 'कृष्ण'

रईस, पिहानी (हरदोई)

पुरस्कार-विजेताओं की कुछ और चिट्ठियाँ

१—ठा० भगतसिंह हटा (दमोह), सी० पी०—

आपकी पुरस्कार-प्राप्ति का सूचना-पत्र मिला। धन्यवाद! कृपया पुरस्कार मनीआर्डर से न भेजकर मेरा नाम 'सुधा' के स्थायी ग्राहकों में लिख लें।

२—श्रीनिवास कौशिक मास्टर हिंदू-हाईस्कूल सोनीपत (पंजाब)—

आपके पत्र में अपने इनाम की सूचना पढ़कर अति हर्ष हुआ। इसके लिये आपको अनेकधन्यवाद!

३—श्रीमती सुशीलकुमारी मिश्र, स्टेशन-रोड मुरादाबाद—

आपका कृपा-पत्र तथा १) के प्रवेश-शुल्क-पत्र मय पुस्तकों की सूची के प्राप्त हुए। धन्यवाद! मैंने पहली बार में ही २) जीते, इसकी मुझे प्रसन्नता है। ईश्वर आगे मुझे प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने की शक्ति दे। कृपया सुधा की एक प्रति नवंबर-मास की शीघ्र ही भेज दीजिए, जिससे मैं वर्ग नं० ३ की पूर्ति शीघ्र भरकर भेज सकूँ।

४—जनरंजन गोविंद, १६, शीतल लॉज, लंका (बनारस)—

आपके 'सुधा'-वर्ग नं० २ में मुझे और मेरे भाईजी को दो-दो रुपए इनाम मिला। धन्यवाद! प्रवेश-शुल्क-पत्र यथासमय मिल गए। शेष मूल्य नक़द न भेजकर मुझे सस्ता संस्करण का ग्राहक बनाने की कृपा करें।

५—श्रीमती विद्यावतीदेवी, ग़ाज़ियाबाद—

'सुधा'-वर्ग नं० २ की पुरस्कार-प्राप्ति पर आपने मुझे जो बधाई दी है, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, और ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि आपकी पहेली दिन-प्रति-दिन उन्नत हो। आपके भेजे हुए प्रवेश-शुल्क-पत्र मुझे ठीक समय पर मिल गए। पुनः धन्यवाद!

मुझे बड़ा हर्ष है कि मेरी पहली कोशिश में ही मैं सफल हो सका। मैं गर्व के साथ कहता हूँ कि मैं अकेला एक दक्षिण-भारतीय—एक अहिंदी प्रांतवाला—हूँ, जिसने सुधा-पहेली-प्रतियोगिता में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्ग-पूर्ति भेजकर सम्मान प्राप्त किया, चाहे रक़म छोटी हो।

अंत में निवेदन है कि आप हमें आशीर्वाद दें कि इस बार हम प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर लेने में समर्थ हो सकें। नमस्कार है।

वानियमकोलम
८-११-१९३७

आपका विनीत—
माधवन

पता—
M. M. Parakat
C/o The Vijayalakshmi Bank
Vaniamcolum
Ottapalam—S. Malabar.
S. India.

महात्माजी का अद्भुत चमत्कार

पाठको! यह महात्माजी का वह चमत्कारिक योग है, जिसके ७ दिन सेवन से शरीर में रक्त दौड़ने लगता है, २१ दिन में चेहरा लाल हो जाता तथा ४० दिन में कैसी ही निर्बलता, नपुंसकता हो, दूर होकर अपार बल-वीर्य बढ़ जाता है। प्रमेह, स्वप्नदोष, बवासीर, खाँसी, दमा, नज़ला, जिगर, तिल्ली के रोग, स्त्रियों का प्रदर, मूत्र में शकर जाना (डायबटीज़) आदि अनेक रोग दूर होकर देह कुंदन बन जाती है। कल्याती पहाड़ी के रत्नगिरि साधु ने यही कुछ दवा एक ग्वाला को दी थी, जो सब एक बार में ही खा गया, जिससे उसने बुढ़ापे में तीन विवाह किए थे। साधु से योग नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदखाँ को मिला, फिर आप से पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य को। शर्माजी ने परीक्षा कर देशोपकारक में छापा, तथा इससे उत्तम योग देने-वाले को उसके अपने ३ योगों के लिये १०००) का इनाम मयसार्टीफिकेट के देने को लिखा था, जिसे किसी ने न पाया है। वास्तव में यह बड़ा ही उत्तम योग है। यह कब्ज़ भी नहीं करता, बल्कि दूनी भूक लगाता है, तथा हर मौसम में युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष को एकसा लाभ करता है। इसकी प्रशंसा मथुरा के वैद्य बाबू हरिदासजी ने छापी है कि एक आदमी का वज़न इससे एक सप्ताह में ५ पौंड बढ़ा तथा दूसरे का चेहरा सुर्ख़ हुआ। भूपाल के वैद्यराज बालकृष्ण शर्मा लिखते हैं—मैंने इस १७० लोगों पर बरता और पूर्ण गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक वैद्य छोटेलाल जैन ने छापा है कि हमने ऐसा गुणकारी दूसरा योग नहीं देखा। गोलाना के डॉ० रामेश्वरदयाल लिखते हैं कि इससे २२० रोगी मैंने अच्छे किए हैं। पाठको! ४० दिन सेवन कर चमत्कार देखो।

योग यह है - शुद्ध बुगदा फौलाद २० तोला को प्रथा १ तोला शुद्ध श्वेत मल्ल १॥ माशा शुद्ध कपूर के साथ कुमारी के रस में घोट ५ सेर कंडा में फूंके, दुबारा हरताल वर्की शुद्ध १ तोला, कपूर १॥ माशा, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर १॥ माशा, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा के साथ पूर्ववत् फूँके। इसी क्रम से १६ आँचें दें, फिर दवा ज़मीन में गाड़ दें और ४ मास बाद चार चावल प्रातः सायं मक्खन, मलाई से खावें। इतना बल बढ़ेगा कि आप हैरान हो जायँगे। अगर कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी पत्र भेज उत्तर मँगा सकते हो। यह दवा हमारे यहाँ बनी मिलती है; चाहें, तो ४० दिन के लिये ८० मात्रा दवा डाक-ख़र्च सहित ५।) में मँगा लें।

सेवक—श्यामविहारीलाल वैद्यभूषण,
श्यामचक्र-कार्यालय (रजिस्टर्ड) ५५३ बी०, शाहजहाँपुर (यू० पी०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जनो तथा महिलाओ,

हम लोगों का ध्यान पढ़ने की ओर तो आकर्षित अवश्य हुआ है, पर हममें से अधिकांश को अभी यह निश्चय नहीं हुआ कि क्या पढ़ें, विशेषकर हम महिलाओं के लिये तो कोई उचित प्रबंध नहीं दिखाई देता। न हमें यह ज्ञात कि विदेशों में क्या हो रहा है, और न यह कि स्वदेश में भिन्न-भिन्न स्थानों पर क्या चर्चा छिड़ी हुई है! न क्रम से कोई पत्र-पत्रिका ही पढ़ मिलती है, और न मनचाही पुस्तकें ही प्राप्त हो पाती हैं। सब लोग तो पैसा देकर सारी पुस्तकें मोल ले नहीं सकते। फिर यह भी पता नहीं कि पढ़ने योग्य पुस्तकें हैं कौन? न हम अच्छे लेखकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा ही कर पाती हैं, और न साहित्य में कूड़ा भरनेवालों की पहचान। यही कारण है कि हमारे यहाँ के सच्चे लेखक अपनी प्रशंसा के लिये दूसरों के मोहताज रहते हैं। अतः यदि अपने सुबीते के लिये हम स्त्रियों का एक हिंदी-पुस्तकालय खोल सकें, तो अति उत्तम हो। इसका सारा प्रबंध रहे स्त्रियों के हाथों में। हममें से पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ सब भाँति इसके सब प्रकार के कामों में हाथ बँटावें। यदि वे अपना एक या आधा घंटा भी नित्य निकाल सकेंगी, तो मिल-बाँटकर काम सरलता से हो जायगा।

परदेदार स्त्रियाँ भी इसमें स्वतंत्रता से बैठकर पढ़ें-लिखें, और अपने-अपने अनुभवों से स्त्री-जाति की साहित्यिक, धार्मिक तथा गृहस्थी-संबंधी उन्नति में सहायता दें। इस पुस्तकालय में स्त्रियों की रुचि के अनुसार ही पुस्तकें रक्खी जायँ। समय-समय पर जिन पुस्तकों की आवश्यकता हो, मँगवा ली जायँ। इस प्रकार यह पुस्तकालय हम सभी का हो। कुछ महिलाएँ इसका काम सँभालें, और शेष स्त्री-जाति अच्छी-अच्छी और स्युपयोगी एक-एक, दो-दो पुस्तकें भेजकर अपना आशीर्वाद भेजे। जो सज्जन तथा देवियाँ रुपए द्वारा सहायता पहुँचाना चाहें, पहुँचाएँ। तब हम शीघ्र ही देखेंगे कि कैसी काया-पलट हो जाती है। हममें मस्तिष्क-बल की कमी न रह जायगी, और देश में एक बार फिर सच्चे ज्ञान की बाढ़ आ जायगी। फिर हम अबला न रह जायँगी, और न आजकल के कवियों की इन ज़ोरदार लाइनों में कुछ ज़ोर रह जायगा—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"अबला-जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी—
आँचल में है दूध, और नयनों में पानी।"

यदि इस पुस्तकालय द्वारा हम अपनी बहनों की पुस्तकों से मिल-बाँटकर लाभ उठा सकें, तो निर्धन भारत का कल्याण दूर नहीं। कदाचित् हमारा जीवन अधिक सुखमय बन सके, और गृहस्थियाँ स्वर्ग से होड़ ले सकें। यह भी प्रयत्न किया जाय कि जो बहनें किसी को भेजकर या स्वयं आकर पुस्तकें न ले सकें, उनके लिये घर पर चपरासी पुस्तकें पहुँचाया करे। वे केवल एक बार कहला-भर दें। किंतु जो बहनें पुस्तकें मँगवा सकती अथवा स्वयं आकर पढ़ सकती हैं, उनके लिये यदि यह प्रयत्न न होगा, तो कोई आपत्ति की बात न होगी। इस प्रकार यह पुस्तकालय अन्य पुस्तकालयों से हमारे लिये अधिक सुबीते का हो सकेगा। यदि हम लोग पहले एक पुस्तकालय इलाहाबाद में खोल सकें, और यह लाभदायक भी प्रतीत हो, तो सभी छोटे-बड़े शहरों में भी खोलना कोई कठिनाई की बात न होगी। और, सारा हिंदी-संसार ज्ञान के उच्च शिखर पर विराज सकेगा। इसका नाम, यदि सब लोगों को रुच गया तो, कमलाजी के नाम पर 'कमला-सदन' ही रख दिया जायगा।

मैंने अपनी थोड़ी-सी पूँजी से एक अलमारी के लगभग पुस्तकें एकत्र की हैं। अब यदि हमारी सभी बहनें पत्र द्वारा अपनी-अपनी सम्मतियाँ भेज सकें, तो शीघ्र ही कार्य प्रारंभ हो जाय, और हम लोग इस विषय में कुछ आगे सोच सकें।

विनीता
विद्यावती कोकिल

लूटिए ! कैसा ?

❀ पुरस्कार ❀
१०००) रुपए
किस प्रकार मिलेगा ?

लूटिए !! कितना ?

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत पुस्तकों की मदद से।

सैकड़ों तरह के सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक १)
रंग की पुस्तक १)
सुगंधित तेल की पुस्तक १)
सरल रसायन (Chemistry) १) } साथ लेने
हिंदी-केमिस्ट्री १) } से १॥) में
आरोग्य-विद्या (Hygiene) ॥)
रिसाला साबुनसाज़ी (उर्दू-संस्करण) ॥)
इत्र की पुस्तक १)
देशी जड़ी-बूटी और उनके गुण (छप रही है)
तद्धित-प्रयोग-सूची =)
१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक ॥)
वार्निश और पेंट १)
विद्युत्-शास्त्र (Electricity) ॥)
आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)
अयोध्या-गाइड -)॥
तंतु-कला (सूत का हुनर) और माड़ी चढ़ाने की पुस्तक १)
अनुवाद-कला (Sanskrit Teacher) ।)
हस्त-रेखा =)
चुंबकत्व और फ़ोटोग्राफ़ी (छपनेवाली है)

जनवरी तक आधे मूल्य में

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए० (इलाहाबाद), एम्० एस्-सी० टेक्० (विक्टोरिया, इँगलैंड), एफ़्० सी० ए० (लंदन), एस्० एम्० एस० टी० (मैनचेस्टर) इत्यादि (मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्डस ऑफ़् लंदन इंस्टिच्यूट), विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरकंद की गली, बनारस सिटी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'सूर-साहित्य' (समालोचना)—लेखक, श्रीयुत हजारीप्रसाद द्विवेदी; मूल्य १॥)

(२) 'खेती' (कृषि-संबंधी)—लेखक, चौ० मुखत्यारसिंह वकील; मूल्य ४)

(३) 'सविता' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत अनूप साहित्यरत्न; मूल्य २)

(४) 'नयन-तारा' (उपन्यास)—लेखक, ठाकुर श्रीनाथसिंह; मूल्य १॥)

(५) 'मज्झिम निकाय' (बुद्ध-वचनामृत)—लेखक, त्रिपिटकाचार्य श्रीराहुल सांकृत्यायन; मूल्य ६)

(६) 'हिंदी-ज्ञानेश्वरी' (धार्मिक)—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य ३)

(७) 'घर की राह' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत इंद्र वसावडा बी० ए० ; मूल्य १।)

(८) 'कफ़न' (कहानियाँ)—लेखक, स्व० मुंशी प्रेमचंदजी; मूल्य २)

(९) 'कौमुदी' (कहानियाँ)—लेखिका, श्रीपत्नी शिवरानीदेवी; मूल्य १॥)

(१०) 'कल की बात' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, त्रयोदशगण; मूल्य १)

(११) 'चुंबन' (नाटक)—लेखक, पांडेय श्रीबेचन शर्मा 'उग्र'; मूल्य ३)

(१२) 'हवाई नाव' (उपन्यास)—अनुवादक, श्रीयुत गंगाप्रसाद गुप्त; मूल्य ।)

(१३) 'ठगराज' (कहानियाँ)—संपादक दुर्गाप्रसाद खत्री; मूल्य ।)

(१४) 'चोर' (उपन्यास)—लेखक, श्रीबैजनाथदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य १॥।)

(१५) 'दुष्ट-दमन' (उपन्यास)—लेखक, श्रीगिरिजाशंकर गुप्त; मूल्य १॥)

(१६) 'मीठी भूल' (उपन्यास)—लेखक, श्रीकृष्णकुमार मुखोपाध्याय; मूल्य १।)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

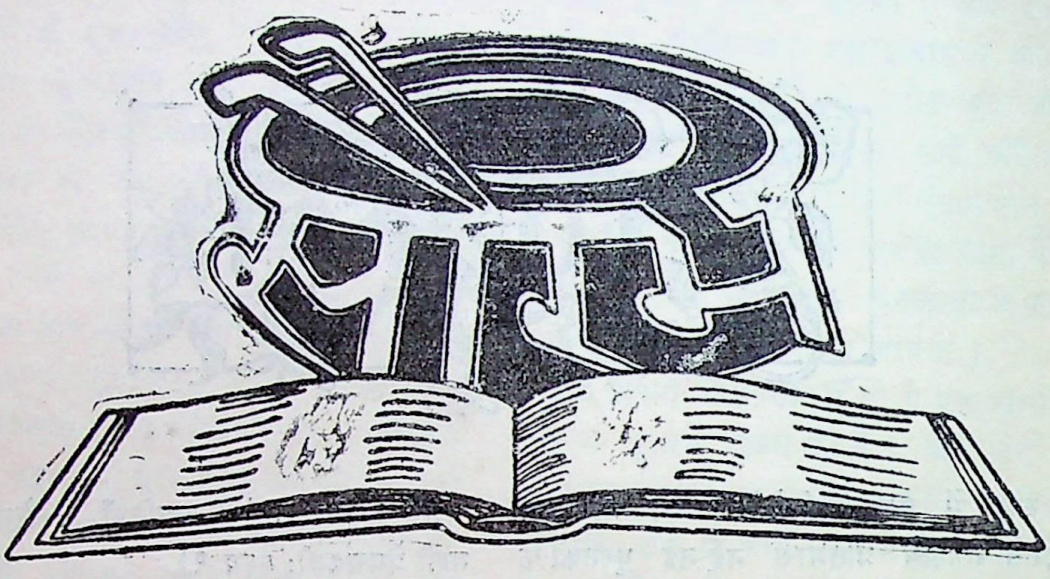

[संपादकीय विचार]

१. शिक्षा की समस्या

स बात के दुहराने की अब आवश्यकता नहीं रह गई कि शिक्षा की दृष्टि से हमारा देश संसार के अन्य देशों से बहुत पिछड़ा हुआ है। यहाँ केवल सात फ़ीसदी पुरुष और डेढ़ फ़ीसदी स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी हैं, जिनमें अधिक तादाद ऐसे लोगों की है, जो केवल अक्षर-ज्ञान तक पढ़े-लिखे कहे जाते हैं। अब जब से नए शासन-विधान के अंदर हिंदोस्तान के जिन सूबों में कांग्रेस-सरकार स्थापित हुई है, तब से उन सूबों में अन्य सुधारों के साथ-साथ शिक्षा-सुधार की समस्या भी पेश है, और सभी प्रांतों की सरकारें इसके लिये अपनी-अपनी योजनाएँ तैयार कर रही हैं। यह हर्ष और सौभाग्य की बात है कि महात्मा गांधी शिक्षा-समस्या पर विशेष ध्यान दे रहे हैं, और इस संबंध में उन्होंने एक आयोजना की रचना की है। यही आयोजना कांग्रेस-प्रांतों में शिक्षा-सुधार का आधार होगी। उस दिन वर्धा में सभी कांग्रेस-प्रांतों के शिक्षा-मंत्रियों की एक बैठक हुई। उसमें अन्य शिक्षा-संस्थाओं के प्रमुख व्यक्तियों ने भी भाग लिया। इस कान्फ्रेंस में महात्माजी ने शिक्षा-सुधार के संबंध में अपना दृष्टिकोण बतलाया है। सबसे पहले सी० पी० में इस आयोजना का श्रीगणेश होगा, क्योंकि वहाँ के शिक्षा-सचिव श्रीरविशंकर शुक्ल ने प्रारंभ से ही महात्मा गांधी से इस संबंध में सलाह ली है, और शिक्षा-सुधार की जो नवीन आयोजना तैयार की गई है, उसमें आपका विशेष हाथ है। प्रांत-विशेष की आर्थिक दशा और अन्य कारणों से इस योजना के अनुसार शिक्षा-प्रसार में थोड़ा-बहुत अंतर भी होगा। मिसाल के लिये प्रत्येक प्रांत की कांग्रेस-सरकार अपने-अपने यहाँ अनिवार्य शिक्षा-पद्धति तुरंत ही जारी नहीं कर सकती, क्योंकि इसके लिये अभी तक उनके पास पर्याप्त साधन और कोष नहीं। फिर भी माननीय गोखले ने जिस अनिवार्य शिक्षा की देश के लिये आव-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्यकता बतलाई थी, उसे कार्य-रूप में परिणत करने का अवसर अब कांग्रेसवालों के हाथ में आया है। और, आशा की जानी चाहिए कि वे अपने-अपने प्रांतों में, जितना शीघ्र संभव हो सके, प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य कर देंगे।

महात्माजी की सलाह से तैयार की गई शिक्षा-सुधार की आयोजना में तीन बातें मुख्य हैं—पहली बात यह कि प्रारंभिक शिक्षा में दस्तकारी को खास महत्त्व दिया जाय, और शिक्षा अक्षर-ज्ञान के साथ-साथ दस्तकारी की तालीम से शुरू की जाय। दूसरे, प्रारंभिक शिक्षा के काल में ही माध्यमिक शिक्षा का कोर्स भी खत्म करा दिया जाय, और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रक्खी जाय। तीसरे, प्रारंभिक शिक्षा को स्वावलंबी बनाया जाय, मगर उसका बोझ राज्य के ऊपर न लादा जाय।

इस संक्षिप्त आयोजना की व्याख्या में शिक्षा से संबंधित अन्य सभी बातें आ जाती हैं। बड़े-बड़े शिक्षा-विशारद और विशेषज्ञों की भी अब तक यह राय रही है कि भारत की शिक्षा-पद्धति दोष-पूर्ण है, और उसमें आमूल परिवर्तन होना चाहिए। उक्त आयोजना के आधार पर प्रारंभिक शिक्षा-पद्धति में तो क्रांतिकारी परिवर्तन हो जायगा। इसके जारी होने पर ग्रामीण पाठशालाओं में ही आजकल की हाईस्कूल तक की शिक्षा की पूर्ति हो जायगी। अलबत्ता उसमें अँगरेज़ी ज़बान नहीं सिखाई जायगी। प्रत्येक गाँव की पाठशाला में पढ़ाई पर जो व्यय होगा, उसकी पूर्ति गाँव से ही की जायगी, और राज्य की ओर से कुछ ज़मीन पाठशाला में लगा दी जायगी, तथा गाँव की एक कमेटी पाठशाले का प्रबंध करेगी। इन पाठशालाओं में दस्तकारी की तालीम से जो चीज़ें तैयार की जायँगी, राज्य उन्हें ख़रीद लेगा, और उससे शिक्षा का ख़र्च चलेगा। इस तरह शिक्षा स्वावलंबी बनाई जायगी। माध्यमिक और उच्च शिक्षा के लिये जो बातें रक्खी हैं, उनमें एक यह भी है कि प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करके जो कुछ काल तक सार्वजनिक सेवा का कार्य करेंगे, उन्हें माध्यमिक शिक्षा के लिये तथा माध्यमिक शिक्षा की पढ़ाई ख़त्म करके जो उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहेंगे, उन्हें भी कुछ काल तक सेवा-कार्य करना होगा, तभी वे अधिक शिक्षा प्राप्त करने के योग्य समझे जायँगे।

इसमें संदेह नहीं कि इस आयोजना के कार्य-रूप में परिणत होने के साथ शिक्षा की पुरानी परिपाटी समाप्त हो जायगी, पर इस नई पद्धति का असर कुछ काल बाद ही लोगों को मालूम होगा। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या है, और वह देश की बेकारी एवं ग़रीबी दूर करने में कहाँ तक सहायक हो सकती है, इसका जवाब उक्त आयोजना के कार्य-रूप में परिणत होने के बाद मिलेगा। हम इस आयोजना की हार्दिक सफलता चाहते हैं।

× × ×

२. कांग्रेस-सरकार और सार्वजनिक शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य कर देने और शिक्षा-पद्धति में सुधार कर देने से जहाँ भारत की नव-संतति का हित-साधन होगा, वहाँ गाँव की अशिक्षित और अर्ध-शिक्षित जनता इस आयोजना से पूरा लाभ नहीं उठा सकती, जब तक कि अन्य तरीक़ों से उसमें शिक्षा-प्रसार न किया जाय। कांग्रेस के प्रचार से देहात में जो जागृति हुई है, उससे अब देहात की जनता में भी देश और विदेश की हलचलों, आर्थिक समस्याओं और सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं के संबंध में विशेष ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा पैदा हो गई है। उसकी इस जिज्ञासा की पूर्ति केवल स्कूल और पाठशालाओं से नहीं हो सकती, जब तक कि उसके साथ समाचार-पत्र, स्थायी और चलते-फिरते पुस्तकालय तथा सार्वजनिक व्याख्यानों द्वारा उसमें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सभी बातों का प्रचार नहीं किया जाता। अपने प्रांत में कांग्रेस-सरकार ने ग्राम-सुधार की जो आयोजना बनाई है, उसमें ये बातें आ गई हैं, पर हम उस पर और भी विशेष रूप से ज़ोर देने को कहेंगे। म्युनिसिपल-बोर्ड और ज़िला-बोर्डों की तरफ़ से यह कार्य बहुत पहले ही कर देना चाहिए था, और अब भी इस कार्य में बोर्ड काफ़ी सहायता दे सकते हैं। सार्वजनिक शिक्षा-प्रचार में पुस्तकालयों से बड़ी सहायता मिल सकती है। प्रत्येक ग्रामीण पाठशाला के साथ एक पुस्तकालय होना अत्यंत आवश्यक है, जिसमें अर्थ, राजनीति, समाज-शास्त्र, ग्रामीण उद्योग-धंधे और शिक्षा-विषयक पुस्तकों का संकलन हो। नाटक, उपन्यास, बाल-शिक्षा, महिला-सुधार और कविता की पुस्तकों को भी यथेष्ट स्थान दिया जाय। उसी से संबंधित एक वाचनालय हो, जिसमें एक-दो दैनिक पत्र, खास-खास साप्ताहिक पत्र और मासिक पत्रिकाएँ भी मँगाई जायँ। पाठशाला के अध्यापक पुस्तकालय के प्रबंधक हों, और उनका यह कार्य भी हो कि वे बेपढ़े-लिखे लोगों को पुस्तकें और समाचार-पत्र पढ़कर सुनावें। हो सके, तो बाल-पुस्तकालय, महिला-पुस्तकालय, वाचनालय और बड़े-बड़े पुस्तकालयों की अलग अलग व्यवस्था भी हो। असल में तो यह विभाग अलग ही होना चाहिए। जहाँ गाँव-गाँव में पुस्तकालय की आयोजना न हो सके, वहाँ कई गाँव पीछे एक पुस्तकालय हो। और, कुछ आदमी ऐसे रक्खे जायँ, जो गाँव-गाँव पुस्तकें और अखबार लेकर जायँ, और चलते-फिरते पुस्तकालयों का कार्य करें। लोगों में दवा बाँटने और अखबारों के लिये संवाददाता का कार्य भी वे लोग बड़ी खूबी से कर सकते हैं। और, जहाँ खर्च का सवाल हो, वह इन लोगों से इतना काम लेकर पूरा किया जा सकता है। बड़ौदा-राज्य में इस तरह की आयोजना बड़ी सफल हुई है, जहाँ आठ सौ छोटे-छोटे ग्राम-पुस्तकालय और पचास बड़े पुस्तकालय हैं। इसके अलावा बाल-पुस्तकालय और महिला-पुस्तकालय अलग हैं। इसी के साथ तीन सौ वाचनालय हैं। उपदेश और व्याख्यान देने का कार्य भी इन पुस्तकालयों द्वारा अच्छा हो सकता है। गाँवों में ही ऐसे लोग निकल सकते हैं, जो विविध विषयों की पुस्तकें पढ़कर स्वास्थ्य, सफ़ाई, बाग़-बानी, पशु-चिकित्सा, खेती आदि विषयों पर व्याख्यान देकर लोगों की वास्तविक सेवा कर सकते हैं, और इससे सरकार के कार्यों में भी काफ़ी मदद मिल सकती है। किसी विशेषज्ञ द्वारा इस कार्य के लिये ऐसी आयोजना तैयार कराई जा सकती है, जिससे यह कार्य थोड़े खर्च में और काफ़ी सुविधा के साथ चलाया जा सकता है। जिन सूबों में कांग्रेस की सरकार है, वहाँ तो यह कार्य होना ही चाहिए, पर अन्य प्रांतों की सरकारें भी इस मार्ग का अवलंबन कर अपने सार्वजनिक सेवा के उद्देश्य को पूरा कर सकती हैं।

× × ×

३. महासमर का स्वप्न

एक मुद्दत से दुनिया भावी महासमर के स्वप्न देख रही है, पर अभी तक उसका स्वप्न जाग्रत् अवस्था में परिणत नहीं हुआ। इसका अर्थ यह नहीं कि संसार के राष्ट्रों के पास युद्ध की सामग्री नहीं, या युद्ध के लिये वे तैयार नहीं। सन् १९१४ ई० में उनके पास युद्ध का जितना सामान था, उससे कईगुना आज मौजूद है। योरप से लगाकर जापान और अमेरिका तक युद्ध का बारूदख़ाना बन रहा है, सिर्फ़ एक चिनगारी डालने की देर है। किंतु इस चिनगारी डालने का ख़तरा कोई सबल राष्ट्र अपने ऊपर नहीं ले रहा है, युद्ध होने में सिर्फ़ इतनी ही देर है। जब तक इँगलैंड, अमेरिका, जापान, जर्मनी, इटली, रूस और फ़्रांस, इन सबल राष्ट्रों में से कोई राष्ट्र

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इनमें से किसी राष्ट्र के विरुद्ध हथियार नहीं उठाता, तब तक भावी महासमर का स्वप्न स्वप्न ही रहेगा। इनमें से जहाँ दो राष्ट्रों में आपस में खटकी कि सारा संसार युद्ध के बिगुल से गूँज उठेगा। और, फिर अपनी-अपनी अवस्था एवं परिस्थितियों के कारण अन्य राष्ट्रों को भी किसी एक तरफ़ मिल जाना होगा। युद्ध की तैयारी से आज सभी राष्ट्र सिंह बने हुए हैं, और युद्ध में देर इसीलिये हो रही है कि सिंह का मुँह सिंह को ही खुजलाना पड़ेगा। हाँ, जो राष्ट्र निर्बल हैं, और युद्ध-सामग्री से सुसज्जित नहीं, उनके लिये अब भी युद्ध रूठा हुआ नहीं है। इटली अबीसीनिया और जापान के लिये चीन को रौंद डालने का मार्ग प्रशस्त है, और कोई भी राष्ट उनके मार्ग में बाधक नहीं बन सकता। अबीसीनिया पर इटली की चढ़ाई का विरोध राष्ट्र संघ में किया गया, और उस पर आर्थिक दंड-व्यवस्था भी क़ायम की गई, पर इटली सबको ठेंगा दिखाकर अपने मार्ग पर बढ़ता गया, और उसका किसी ने कुछ न बिगाड़ लिया। जापान ने इससे सबक़ सीखा, और अब वह चीन में इटली का अनुकरण कर रहा है। इँगलैंड, फ्रांस, अमेरिका और रूस जापान की चढ़ाई के विरुद्ध हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि चीन पर जापान का अधिकार हो गया, तो पूर्व में उनके मुक़ाबिले एक ऐसा राष्ट्र तैयार हो जायगा, जो पैसफ़िक महासागर से उन्हें खदेड़ देगा, तथा चीन से इन राष्ट्रों के जो हित-साधन होते हैं, उनका अंत हो जायगा। फिर भी वे जापान के खिलाफ़ हथियार नहीं उठा सकते। कारण, योरप में इटली और जर्मनी की संयुक्त शक्ति का डर। मुसोलिनी और हिटलर की हाल की मुलाक़ात ने योरप के राष्ट्रों का भय और भी बढ़ा दिया है। और, हाल में योरप के राष्ट्रों का जो सम्मेलन हो रहा है, उससे तो इन दोनो राष्ट्रों ने संसार की शक्तियों को खुला चैलेंज दे दिया है। इँगलैंड आज हर बात में इटली को रँडुआ देखना चाहता है। फ्रांस जर्मनी के डर से इँगलैंड की हाँ में हाँ मिलाता है। जर्मनी और इटली खुल्लमखुल्ला स्पेन के विद्रोही दल को मदद दे रहे हैं, और मुसोलिनी जनरल फ्रांको की पीठ ठोक रहा है। रूस एक तरफ़ जापान और दूसरी तरफ़ जर्मनी से युद्ध की एक साथ ही दो बाज़ी लेना नहीं चाहता। रूस और अमेरिका को अपने रचनात्मक कार्य का लोभ भी है, और लड़ाई में पड़ जाने से उनकी आर्थिक योजनाएँ नष्ट-भ्रष्ट हो जायँगी, इसलिये वे अपनी तरफ़ से लड़ाई मोल लेना नहीं चाहते। नतीजा यह कि हिटलर और मुसोलिनी की शक्ति का बोलबाला है!

तब क्या युद्ध का स्वप्न स्वप्न ही रहेगा? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि या तो राष्ट्र-संघ को इटली की अबीसीनिया-विजय को स्वीकार करना पड़ेगा, और जर्मनी के उपनिवेश उसे लौटाने पड़ेंगे, या फिर युद्ध का स्वप्न जाग्रत् अवस्था में परिणत हो जायगा। तब संसार की वह साढ़े पाँच करोड़ सेना, जिस पर संसार के राष्ट्र साल-भर से इतना खर्च कर रहे हैं कि यदि वह रक़म सब हिंदोस्तानियों में बाँट दी जाय, तो प्रत्येक के हिस्से में सौ रुपए आ जायँ, एक दिन में युद्ध के मैदान में खड़ी हुई दिखाई देगी। परमात्मा करे, वह दिन दिखाई न दे, और महायुद्ध का स्वप्न स्वप्न ही बना रहे।

× × ×

४. भारतीय व्यापार की दशा

जहाँ हमें इस बात से संतोष होता है कि पिछले कई वर्षों से भारत का निर्यात मूल्य में आयात से अधिक बैठता है, वहाँ व्यापार-संबंधी सरकारी रिपोर्टों को देखने से इस बात पर खेद भी होता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है कि देश के व्यापार की उन्नति बहुत ही मंद गति से हो रही है। सन् १९३६-३७ के व्यापार की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, उसके अनुसार इस वर्ष का निर्यात (भारत से विदेशों को गए हुए माल का मूल्य) १ अरब ९६ करोड़ है, और आयात (विदेशों से भारत में आए हुए माल का मूल्य) १ अरब २५ करोड़। इस प्रकार दस साल के व्यापार में भारत को ७१ करोड़ का लाभ है। सन् १९२८-२९ की अपेक्षा भारत का निर्यात १ अरब ३४ करोड़ अर्थात् ४१ प्रतिशत गिर गया है। इसका कारण यह है कि सन् १९२८-२९ में भी चीज़ों के दाम बढ़े-चढ़े थे, और उसके बाद चीज़ों के मूल्य में उत्तरोत्तर कमी होती गई है। यही प्रभाव आयात की चीज़ों पर भी पड़ा है। सन् १९२८-२९ में भारत का आयात २ अरब ५३ करोड़ था, अर्थात् सन् १९२८-२९ से सन् १९३६-३७ में भारत में बाहर से आनेवाले माल में ५१ प्रतिशत की कमी हो गई। इस दृष्टि से सन् १९२८-२९ की अपेक्षा जहाँ निर्यात में ४१ प्रतिशत कमी हुई है, वहाँ आयात में ५१ प्रतिशत की कमी है, तब भी भारत को १० प्रतिशत का लाभ है। गत वर्ष की अपेक्षा जहाँ निर्यात में ३६ करोड़ रुपए की वृद्धि हुई है, वहाँ आयात में और ९ करोड़ की कमी हुई है। इसके अतिरिक्त चीज़ों के मूल्य में सन् १९३३-३४ तक जो कमी हुई थी, वह इसके बाद और नहीं हुई। इस साल कई चीज़ों के मूल्य में वृद्धि हुई है। रुई का मूल्य सन् १९२८-२९ से सन् १९३१-३२ में एकदम आधा रह गया था, फिर उसमें धीरे-धीरे वृद्धि हुई, और अब इस साल सन् १९२८-२९ की अपेक्षा केवल ४० प्रतिशत की कमी रही है। चावल का भी यही हाल है। चाय, सरसों और अलसी के मूल्य में वृद्धि हो रही है। गेहूँ के मूल्य में घटती-बढ़ती होती रही है, पर तब भी इस साल उसके मूल्य में काफ़ी वृद्धि हुई है। इन बातों से प्रकट है कि भारत की पैदावार जो कच्चे माल के रूप में बाहर जाती है, उसके मूल्य में वृद्धि हुई है, और इसी के कारण भारत का निर्यात बढ़ा है। चीनी का व्यापार उन्नति पर है, और उसमें तिगुनी तरक़्क़ी हुई है। यह सब परिस्थिति का प्रभाव है। दुनिया के बाज़ार में जिन चीज़ों की जैसी माँग बढ़ी, उसी के अनुसार इन चीज़ों का मूल्य भी बढ़ा। उदाहरण के लिये अर्जेंटाइन और उत्तरी आफ़्रिका में सरसों की खेती मारी गई, तो भारत में सरसों के दाम चढ़ गए। पर सरकार की ओर से इस संबंध में कोई उल्लेखनीय प्रयत्न नहीं किया गया। कच्चे माल के मूल्य में वृद्धि करने के लिये तो वह कर ही क्या सकती है, पर बाहर से भारत में जो माल ऐसा आता है, जिसका मुक़ाबिला उसी क़िस्म के भारत में तैयार हुए माल के साथ होता है, उसमें वह विदेशी माल पर टैक्स बढ़ाकर उसको भारतीय माल के मुक़ाबिले बहुत तेज़ बना सकती है। साथ ही जो चीज़ें भारत में अब तक तैयार नहीं हुई हैं, उनके लिये भारत कब तक विदेशों में अपनी पूँजी भेजता रहे, क्योंकि इस साल ही जहाँ बाहर से आनेवाली अन्य चीज़ों में कमी नज़र आती है, वहाँ मशीन आदि के मूल्य में और एक करोड़ की वृद्धि हुई है। सोने के आयात में तो बराबर कमी होती आ रही है। सन् १९३२-३३ में जहाँ ६६ करोड़ का सोना भारत में आया, वहाँ सन् १९३६-३७ में केवल २८ करोड़ का, और यहाँ से विदेश के लिये प्रति-सप्ताह सोने की जो एक बड़ी भारी गठरी चली जाती है, उसका मूल्य इँगलैंड के गोल्ड-स्टैंडर्ड टूट जाने के समय से अब तक कई अरब पहुँच चुका है। देश के सब प्रकार के व्यापार की संरक्षक वहाँ की सरकार होती है, इसलिये भारत

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के व्यापार की तरक़्क़ी में जो बुराइयाँ हैं, उनके उत्तरदायित्व से यहाँ के शासक बरी नहीं हो सकते।

× × ×

५. कांकरोली और उसका विद्या-विभाग

मेवाड़-प्रांत में कांकरोली - नामक एक सुंदर संस्थान है, जो धार्मिक वैष्णव-जगत् के लिये ही प्रसिद्ध तीर्थ नहीं, वरन् ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्व-पूर्ण है। राजसमुद्र नामक सुविशाल जलाशय के किनारे स्थित होने से इसकी शोभा और भी रमणीक हो उठी है।

यहाँ का जलाशय भारत के मशहूर जलाशयों में से है, और ऐतिहासिक विशेषताओं से चमत्कृत है। इस पर तथा कांकरोली-संबधी ऐतिह्य बातों पर फिर कभी प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायगा। संप्रति कांकरोली के वातावरण का कुछ दिग्दर्शन कराते हुए विशेषतया उसके विद्या-विभाग का परिचय देना है।

कांकरोली एक अच्छा क़स्बा है। जन-संख्या ६ या ७ हज़ार होगी। बस्ती खुले मैदान में है, जिसका अर्द्ध-भाग जलाशय के विशाल बाँध पर आ गया है। समुद्र-सामीप्य और आस-पास विस्तीर्ण, खुला मैदान होने से यहाँ का जल-वायु अत्यंत स्वच्छ, सुंदर और स्वास्थ्यकर है। जल-वायु की दृष्टि से इसे मेवाड़ का सेनेटोरियम कह सकते हैं। व्यापार भी यहाँ का उत्तम है। सभी प्रकार के सौकर्य प्रायः सुलभ हैं। अस्तु।

यहाँ के वर्तमान महाराजा गो० श्रीव्रजभूषण-लालजी महाराज हैं। आप बड़े ही सहृदय, उदार और उत्साही नवयुवक हैं। आपका विद्यानुराग प्रशंसनीय एवं आदर्श है। साहित्य और कला से आपका अटूट प्रेम है। आपने अपने समय में सबसे प्रथम साहित्य और कला पर ध्यान दिया है। विद्या की उन्नति हो, यही आपका एकांत लक्ष्य है। सौभाग्य से आपको पो० कंठमणि शास्त्री-जैसे प्रतिभावान् विद्वान् का सहयोग प्राप्त हो गया है। आपने अपने सिद्धांत-स्वरूप कांकरोली में, दस वर्ष हुए, विद्या-विभाग नाम की एक विशाल संस्था स्थापित की है, जो वास्तव में आदर्श, भव्य और दर्शनीय है। इसके अध्यक्ष श्रीमान् गो० श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज और उपाध्यक्ष आपके अनुज गो० श्रीविट्ठलनाथजी महाराज हैं। संचालक उक्त शास्त्री-जी महोदय हैं। आप ही के तत्त्वावधान में विद्या-विभाग का समस्त कार्य संचालित होता है। दोनो महाराजश्री तथा उक्त शास्त्रीजी स्वयं परिश्रम-पूर्वक सारे विभागों का काम करते हैं। आपके तथा श्रीमानों के अथक उद्योग के कारण ही विद्या-विभाग की संस्था इतनी उच्च और आदर्श बन चुकी है कि मेवाड़ - प्रांत के लिये साहित्यिक दृष्टि से गौरव-स्वरूप कही जा सकती है। अस्तु। विद्या - विभाग के खास-खास कार्य - कलाप का संक्षिप्त परिचय आगामी किसी संख्या में देंगे।

विद्या-विभाग की संस्थापना सं० १९८५ में हुई। तब से अब तक निम्न-लिखित विभागों में इसका कार्य संपादित किया गया है—

(१) पाठशाला-संस्थापन, (२) पुस्तकालय-संस्थापन, (३) धर्म-प्रचार-सभा, (४) ग्रंथ-प्रकाशन, (५) उपदेशक मंडल, (६) परीक्षा-विभाग, (७) गोरक्षण-प्रचार, (८) स्वयंसेवक-मंडल, (९) कवि-मंडल, (१०) चित्रशाला, (११) विश्व वस्तु-संग्रहालय और (१२) व्यायामशाला।

इस आयोजना को क्रियात्मक रूप देने के लिये एक संयोजक समिति निर्वाचित की गई है, जिसमें बड़े-बड़े महानुभावों का सहयोग प्राप्त हो चुका है। कुँ० तेजसिंहजी महता, मिनिस्टर, मेवाड़, रायबहादुर पं० कमलाकरजी दुबे, रेवेन्यू-कमिश्नर, महामहोपाध्याय रायबहादुर पं० गौरीशंकरजी ओझा, कुँ० मानसिंहजी बार-एट-लॉ, पं० लक्ष्मीलालजी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जोशी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीराजकिशनजी माथुर एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, पं० उमाशंकरजी द्विवेदी साहित्यरत्न, सुधा-संपादक आदि सज्जन इसके सदस्य निर्वाचित किए गए हैं। 'महोत्सव' की ता० २६ दिसंबर से २ जनवरी सन् ३८ ई० रक्खी गई है, जिसमें शहर के विद्वान्, प्रोफ़ेसर, मास्टर, विद्यार्थी-समुदाय को सम्मिलित होने का समय-सौकर्य रहे। संयोजक समिति बाहर से विद्वानों को आमंत्रित करने के लिये अभी से लिखा-पढ़ी कर रही है। पूर्व-रूप देखते हुए आशा की जाती है कि दशाब्दी-महोत्सव अच्छे समारोह के साथ संपन्न होगा। कवि-सम्मेलन २९-३० ता० को हो रहा है। २०-३० बड़े कवि हमारे साथ उसमें सम्मिलित होने जा रहे हैं। कवि-सम्मेलन का सारा कार्य-भार हमारे ऊपर छोड़ दिया गया है।

कांकरोली में श्रीबालकृष्ण-विद्याभवन बन रहा है। इसी तरह कन्या-पाठशाला और ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित करने की भी आयोजना चल रही है। सुना है, उक्त तीनो संस्थाओं का उद्घाटन-समारोह वर्तमान मेदपाटाधीश्वर महाराणा महोदय के कर-कमलों द्वारा कार्त्तिक शुक्ल पक्ष में ही हो चुका है। श्रीमान् महाराणा साहब की ठिकाने पर पूर्ण कृपा है। इस महोत्सव के प्रति भी पूर्ण सहानुभूति और यथेष्ट सहयोग प्रदान करने का आपने अभिवचन प्रदान किया है।

ऐसे साहित्यिक एवं कला-प्रदर्शनात्मक अवसर पर उपस्थित होने के लिये संचालकों ने उत्साही विद्वानों और गुणग्राही सज्जनों को आमंत्रित किया है। वे चाहते हैं कि दयामय भगवान् की कृपा से यह समारोह सुसंस्कृत एवं दर्शनीय रूप में संपादित हो। महाराजा गो० श्रीव्रजभूषणलालजी के पुत्र-प्राकट्योत्सव के सौभाग्य से इसकी सफलता और उत्साह में अधिक श्री-वृद्धि की संभावना हो गई है। शम्।

× × ×

६. बीकानेर-नरेश के शासन की स्वर्ण-जयंती

अपने शासन-काल के पचास वर्ष व्यतीत होने पर बीकानेर-नरेश ने अपने राज्य की स्वर्ण-जयंती मनाई। ऐसा अवसर इतिहास में भी बहुत थोड़े राजों को मिला है, जिन्होंने आधी शताब्दी तक अपनी प्रजा पर शासन किया हो। बीकानेर-नरेश सचमुच भाग्यवान् हैं। इस अवसर पर हम उन्हें और उनकी प्रजा, दोनो को बधाई देना अपना कर्तव्य समझते हैं। बधाई का कारण केवल यही नहीं कि बीकानेर-नरेश ने इतने अधिक समय तक शासन किया, बल्कि इस लंबे काल में उन्होंने अपनी प्रजा में जैसी शांति रक्खी, और सुशासन एवं प्रजा-वत्सलता का जो आदर्श क़ायम किया, उससे वह भारत के देशी नरेशों में अग्रणी कहलाने के पात्र हैं। पचास वर्ष पूर्व जब आपने अपने राज्य का शासन-भार अपने ऊपर लिया था, तब बीकानेर-राज्य मारवाड़ के मरु-प्रदेश का वीरान और साधन-हीन भाग था। आज वह बहुत कुछ अंशों में हरा-भरा और गुलज़ार हो रहा है। यों तो बीकानेर के महाराज ने अपनी प्रजा की उन्नति के लिये कितने ही कार्य किए, पर सबसे महत्त्व-पूर्ण कार्य, जिसके लिये आप बीकानेर की प्रजा में चिर-स्मरणीय रहेंगे, उस बालुकामय प्रदेश में गंगा-नहर निकालना है। वास्तव में आपका यह भगीरथ प्रयत्न युगों तक स्मरणीय रहेगा। बीकानेर-राज्य के लोगों के लिये यह गंगा-नहर भगवती भागीरथी से कम मूल्य की नहीं। आपका नाम गंगासिंह है, और इस प्रकार आपने अपना नाम सार्थक कर दिखाया। राजपूताने के उस शुष्क, जल-हीन प्रदेश को—जहाँ वर्षा और पानी के अभाव में बारहो मास अकाल रहता है, जहाँ कृषि की अवस्था अत्यंत शोचनीय है, यहाँ तक कि आम प्रजा और पशु पानी के लिये चातक की-सी रट लगाते रहते हैं, जहाँ कविवर बिहारी के कथनानुसार "मरुधर पाइ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मतीर हूँ मारू कहत पयोधि"—आपने स स और स्रावित कर दिखाया।

आजकल शासन के कार्य में प्रजा के अधिकारों की वृद्धि करने का आंदोलन सब जगह चल रहा है। बीकानेर-नरेश ने अपनी प्रजा को इस संबंध में कभी असंतुष्ट नहीं किया। आपने राज्य में स्वायत्त शासन की वृद्धि की, म्युनिसिपैलिटी क़ायम की, और प्रजा के प्रतिनिधियों को व्यवस्थापिका सभा में स्थान दिया। इस स्वर्ण-जयंती के अवसर पर आपने इन दोनो लोकसत्तात्मक कार्यों में और सुधार करने की घोषणा की है, जिसमें म्युनिसिपैलिटियों को जनता के प्रतिनिधियों को अपना चेयरमैन स्वयं चुनने का अधिकार होगा, और व्यवस्थापिका सभा में जनता के प्रतिनिधियों का बहुमत रहेगा। आजकल इस कार्य में हमारे देशी राज्य जितने पिछड़े हुए हैं, उन्हें देखते हुए बीकानेर-नरेश का यह शुभ प्रयत्न निस्संदेह देशी राजाओं के लिये आदर्श है। इसके अतिरिक्त आपने अपने राज्य में अस्पताल और औषधालय खुलवाने, किसानों को लगान और क़र्ज़ के बोझ से मुक्त करने तथा ग्राम-सुधार-कार्य में बारह लाख रुपए व्यय करने की भी घोषणा की है। इससे यह प्रकट है कि देश की वर्तमान प्रगतियों से आप कितना निकट संबंध रखते हैं, और ब्रिटिश प्रजा के समान ही अपनी प्रजा की माँगों को पूरा करने की चेष्टा करते हैं। हमारे देशी नरेशों पर आजकल यह लांछन लगाया जाता है कि वह प्रजा के धन को अपने आमोद-प्रमोद और भोग-वासनाओं में फूकते हैं, लेकिन बीकानेर-नरेश इसके अपवाद हैं। आपने राज्य-कोष को अपने व्यक्तिगत आय-व्यय से पृथक् रक्खा है, और प्रजा का धन प्रजा के कामों में ही खर्च करते हैं। परमात्मा बीकानेर-नरेश को दीर्घायु प्रदान करें, और उनकी प्रजा को सुख-शांति का वरदान दें। स्वर्ण-जयंती के अवसर पर हम यही शुभ कामना महाराज की भेंट कर सकते हैं।

× × ×

७. फ़ेडरेशन की आयोजना

कलकत्ते में, अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी के अधिवेशन में, जिस महत्त्व पूर्ण विषय पर विचार किया गया, वह है भारत में संघ-शासन-विधान की स्थापना को असफल बनाना। सन् १९३५ के इंडिया-ऐक्ट के प्रथम भाग—प्रांतीय स्वाधीनता—को कार्य-रूप में परिणत हुए आठ-नौ महीने हो चुके। कांग्रेस ने प्रारंभ से ही नए शासन-विधान को रद्द करने की घोषणा की थी, और उसकी वह नीति सिद्धांत-रूप में अभी तक क़ायम है। व्यवहार-रूप में कांग्रेस नए शासन-विधान से जनता का जितना भी हित हो सकता है, उसे कर दिखाने की चेष्टा कर रही है। विधान को रद्द करने का समय कब आएगा, आएगा भी या नहीं, इसे आज कोई नहीं बता सकता। आज तो कांग्रेस नए विधान के अनुसार शासन का कार्य चला रही है। अतः ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को इससे उपयुक्त अवसर और कब मिलेगा, जब वे इंडिया-ऐक्ट के द्वितीय भाग—फ़ेडरेशन—की स्थापना कर सकें। इसलिये वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो फ़ेडरेशन की योजना को सफल बनाने के लिये भरसक चेष्टा कर रहे हैं। उन्हें यह आत्मविश्वास है कि जिस प्रकार प्रांतीय स्वाधीनता के प्रारंभ-काल में पैदा हुई एक बड़ी जटिल पहेली को उन्होंने सरकार की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रखते हुए हल कर लिया, उसी प्रकार वह कांग्रेस के फ़ेडरेशन स्थापित न होने देने के सिद्धांत को व्यवहार में फ़ेडरेशन की स्थापना करके दिखला देंगे। हो सकता है, आपका यह स्वप्न सच साबित हो जाय, पर इससे पूर्व बड़ी कठिनाइयों का पहाड़ लाँघना पड़ेगा। फ़ेडरेशन की स्थापना के

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिये जो भूमि तैयार की जा रही है, अभी तक तो उसके खाई-खंदक भी नहीं भर पाए हैं। देशी नरेशों का रुख अभी तक मालूम नहीं हुआ; फ़ेडरेशन में शामिल होने से पूर्व अभी वे न-जाने ब्रिटिश सरकार से कितने और वायदे पूरे करवा लेना चाहते हैं। कांग्रेस का रुख स्पष्ट है ही; मुसलमान भी फ़ेडरेशन का विरोध कर रहे हैं। और, संघ-सरकार में ये ही तीन बड़ी शक्तियाँ काम करेंगी, जो तीनो अपने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से संघ-सरकार स्थापित होने के विरोध में हैं। देशी राजों को सबसे बड़ा भय यह है कि जब उनके प्रतिनिधि ब्रिटिश इंडिया के शासन में भी भाग लेंगे, तो स्वाभाविक ही अँगरेज़ी भारत के राज्य-प्रतिनिधियों का दावा उनके राजकीय कार्यों की देख-भाल रखना भी होगा। तब फ़ेडरेशन में जिस राजनीतिक दल की शक्ति सर्वोपरि होगी, उसकी नीति का प्रभाव देशी राज्यों पर भी पड़ेगा। ऐसी दशा में उनकी वर्तमान सुख-शांति में विघ्न पैदा न हो जाय, इसका शक उन्हें बना हुआ है। मुसलमान और खासकर मि० जिन्ना और उनकी मुसलिम लीग महज़ सांप्रदायिक ढंग पर फ़ेडरेशन का विरोध कर रही है, क्योंकि उनके मत में फ़ेडरेशन हिंदू-प्रधान होगा—देशी राजों में हिंदू-राज्यों की संख्या अधिक है, और कांग्रेस को वे हिंदू-संस्था मानते ही हैं।

कांग्रेस का दृष्टिकोण इन सबसे भिन्न और शुद्ध राजनीतिक है—उसमें न वैयक्तिक स्वार्थों का सवाल है, न क़ौमियत का झगड़ा। कांग्रेस फ़ेडरेशन को ग़ुलामी का एक नया तौक़ समझती है। उसकी राय में फ़ेडरेल-सरकार क़ायम होते ही देश की कठिनाइयाँ और बढ़ जायँगी, तथा प्रांतीय स्वाधीनता से जो थोड़ा बहुत जनता का हित हो सकता है, फ़ेडरेशन की स्थापना के साथ ही उसकी प्रतिक्रिया होने लगेगी। देशी भूपतियों से यह उम्मेद नहीं कि वे फ़ेडरेल-सरकार में देश की राष्ट्रीय भावना के साथ रहेंगे। मुसलमानों में भी अधिकतर प्रतिक्रिया-वादियों का साथ ग्रहण करेंगे, और फ़ेडरेशन-विधान का निर्माण जिस ढंग पर किया गया है, उसमें कांग्रेस को शुद्ध बहुमत प्राप्त होना असंभव है। जब तक कांग्रेस को फ़ेडरेल एसेंबली में पूरा बहुमत प्राप्त न हो, तब तक वह नए विधान से लाभ नहीं उठा सकती। इसीलिये वह फ़ेडरेशन की योजना का विरोध करती है। अब प्रश्न यह है कि यह विरोध कहाँ तक सफल हो सकता है, और फ़ेडरेशन की स्थापना कैसे असंभव बनाई जा सकती है? इसके लिये कांग्रेस ने एक कमेटी की स्थापना की, जिसमें सरदार वल्लभभाई पटेल और श्रीभूलाभाई देसाई-जैसे अनुभवी नेता और क़ानून के पंडित थे। इस कमेटी ने प्रत्येक पहलू पर विचार करके अपनी रिपोर्ट कलकत्ते के अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी के अधिवेशन में पेश की। रिपोर्ट का सार यह है कि फ़ेडरेशन की स्थापना असंभव करने के लिये यदि सातो प्रांतों के कांग्रेसी मिनिस्टर अपने पदों से इस्तीफ़ा दे दें, तब भी विधान का जैसा ताना-बाना बुना गया है, उसमें गवर्नर प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा को भंग न करके फ़ेडरेल एसेंबली का चुनाव करवा सकता है। फ़ेडरेशन के मार्ग में रोड़ा अटकाने का कांग्रेस के पास हाल में यही सबसे प्रबल शस्त्र है कि उसके मिनिस्टर प्रांतीय शासन से असहयोग कर दें, और प्रांतीय शासन-विधान का चलाना रोककर सरकार को फ़ेडरेशन स्थापित न करने के लिये मजबूर कर दें। पर यह हथियार फ़ेडरेल एसेंबली के चुनाव को नहीं रोक सकता, क्योंकि गवर्नर को अधिकार है कि वह मंत्रियों के इस्तीफ़ा दे देने पर भी एसेंबली को क़ायम कर दे, और इस तरह कांग्रेस के सदस्य चुनाव में भाग न लेंगे, तब भी दूसरे दल के लोग

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फ़ेडरेल व्यवस्थापिका के लिये प्रतिनिधि चुन लेंगे। तब यह तजवीज़ रक्खी गई कि मिनिस्टर लोग अपने पद पर काम करते रहें, और प्रांतीय एसेंबली के कांग्रेस-सदस्य अपनी सदस्यता से इस्तीफ़ा दे दें। ऐसी दशा में गवर्नर को दुबारा चुनाव करने के लिये मजबूर होना पड़ेगा, और उस चुनाव में भी कांग्रेस की जीत होगी। इस तरकीब से प्रांतीय एसेंबली के कांग्रेसी सदस्य फ़ेडरेल एसेंबली का चुनाव होना असंभव कर देंगे, और फ़ेडरेशन की स्थापना असंभव हो जायगी।

यह युक्ति कहाँ तक अपने अर्थ में सही निकलेगी, इसकी कल्पना हम नहीं कर सकते। पर इसका एक अर्थ तो स्पष्ट है, और वह यह कि फ़ेडरेशन की स्थापना के लिये संकट-काल उपस्थित है। अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी के अधिवेशन में फ़ेडरेशन की स्थापना रोकने के लिये कांग्रेस के एक पक्ष की तरफ़ से बाहरी आंदोलन शुरू कर देने की भी तजवीज़ रक्खी गई, पर कमेटी ने उसे स्वीकार नहीं किया। उसका समय भी अब नहीं है, पर वैधानिक संकट उपस्थित करके और अड़ंगे की नीति अख्त्यार करके कांग्रेस फ़ेडरेशन की स्थापना नहीं होने देगी। यह विचार भी भावी वैधानिक युद्ध की सूचना देता है। हम चाहते हैं कि देश में जैसा शांति-पूर्ण वातावरण स्थापित हो गया है, उसमें अशांति की घटा फिर न घिरे, और यह सब वायसराय के किए ही हो सकता है। यह सुना जा रहा है कि वायसराय को इस स्थिति का ज्ञान है, और वह इस तरह की परिस्थिति पैदा न हं ने देने के लिये कांग्रेस को संतुष्ट करने का कोई आंदोलन करेंगे। इसके लिये भारतीय प्रतिनिधियों की एक गोलमेज़-कान्फ्रेंस बुलाने की भी तजवीज़ हो रही है, ऐसी ख़बर है, तथा वायसराय कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं से मुलाक़ात करनेवाले हैं। अगर इस प्रकार लॉर्ड लिनलिथगो ने अपनी दूरदर्शिता-पूर्ण नीति से फ़ेडरेशन की स्थापना के लिये उपयुक्त वातावरण पैदा कर लिया, तो यह उनकी दूसरी विजय होगी, और इससे इँगलैंड तथा भारत का संबंध दृढ़ होगा।

× × ×

८. हमारे खिलाड़ी और विदेशी टीमें

इधर हमारे यहाँ दो विदेशी टीमें आई हैं—एक क्रिकेट की और दूसरी फ़ुटबाल की। इनके अलावा, कुछ ही दिनों के भीतर, टेनिस की टीम भी यहाँ आ पहुँचेगी। इस बात से यह भली भाँति सूचित होता है कि भारतवर्ष में भी क्रीड़ा-विषयक जागृति हो चली है, और उपर्युक्त खेलों में हमारे देशवासी अच्छा विनोद पाते हैं।

खेल के मैदानों का जितना महत्त्व विदेशों में है, उतना हमारे यहाँ नहीं। वहाँ खेलों को लोग केवल-मात्र विनोद का ही साधन नहीं समझते, उनके द्वारा शारीरिक बल, मानसिक चैतन्य और जातीय गौरव की वृद्धि का भी प्रयत्न किया जाता है। हमारे देश में खेल होते तो हैं, पर सर्वथा अव्यवस्थित रूप में। एक खेल की लहर उठी, दो-चार दिन हो-हल्ला हुआ, फिर वही सन्नाटा; पता भी नहीं चलता कि यहाँवाले किसी क्रीड़ा-विशेष में दिलचस्पी लेते भी थे या नहीं। जमकर, नियमितरूपेण क्रीड़ाओं का आयोजन किया ही नहीं जाता। यदि विदेशों से कोई टीम आई, तो हमारे हर्ता-कर्ता किसी-न-किसी तरह एक टीम उसके मुक़ाबिले खड़ी कर देते हैं। वैयक्तिकरूपेण सभी खिलाड़ी अच्छे होते हैं, पर सम्मिलित रूप से—आपस में अभ्यास न करने के कारण—खेल के मैदान में ये सभी कुछ घबरा-से जाते हैं, और दोयम दर्जे के विदेशी खिलाड़ी आसानी के साथ विजय प्राप्त करते हैं।

पिछले दिनों लाहौर में जो क्रिकेट का खेल हुआ है, उसका नतीजा हमारी उपर्युक्त धारणा की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुष्टि करता है। लॉर्ड टेनीसन की टीम साधारण टीम है, विलायत के प्रख्यात बैट धारी इसमें नहीं, पर जो भी हैं, वे खूब खेलने के अभ्यस्त और परस्पर खेलने के आदी हैं। इनके विपक्ष में हमारी टीम के खिलाड़ी भी कुछ कम खेलनेवाले न थे, पर इन्होंने—जहाँ तक हमें मालूम है—इस मैच से पहले साथ-साथ १० दिन भी खेलने का अभ्यास नहीं किया था। इस उपेक्षा का प्रतिफल वही हुआ, जो होना चाहिए था। हमारी टीम हारी, और बुरी तरह हारी। इस हार ने भी यह अच्छी तरह सिद्ध कर दिया कि हमारे खिलाड़ी पिछली हारों से जीत का सबक़ नहीं सीख पाए हैं।

कहनेवाले चाहे कुछ कहें, पर हम यह मानने को तैयार नहीं कि हममें क्रीड़ा-शक्ति की न्यूनता है। इस गए-बीते ज़माने में भी हमारे हाकी के खिलाड़ियों ने यह भली भाँति व्यक्त कर दिया है कि अवकाश मिलने पर हमारे खिलाड़ी अन्यदेशीय खिलाड़ियों के मुक़ाबिले किसी तरह भी न्यून नहीं रह सकते। हमारे यहाँ क्रीड़ा को कुछ उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, और खिलाड़ियों को किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं मिलता। औरों की देखादेखी इधर कुछ-कुछ इस दिशा में सुधार तो होने लगा है, पर उतना पर्याप्त नहीं। हम तो चाहते हैं कि हमारा देश क्रीड़ा-क्षेत्र में भी पिछड़ा न समझा जाय, और हमारे खिलाड़ी जहाँ भी जायँ, अपना नाम अमर कर लौटें।

इस संबंध में हमें यह भी कहना पड़ता है कि जब तक अपनी तैयारियाँ पूरी नहीं हो जातीं, तब तक विदेशी टीमों के मुक़ाबिले अपनी कमज़ोर टीमों को 'आल इंडिया' के नाम से खड़ा करना कुछ विशेष उपयोगिता नहीं रखता। हम यह मानते हैं कि खेल के नतीजे पर ही सारा दारोमदार नहीं रक्खा जा सकता। वक़्त पर बढ़िया-से-बढ़िया खिलाड़ी भी मार खा जाते हैं, पर कम-से-कम यह अवश्य होता है कि वे अपनी शक्ति-भर जीतने का प्रयत्न करते हैं, और हाथ-पैर फुला घबराए नहीं रहते। हमारे खिलाड़ियों में यह भी एक बड़ी कमज़ोरी है कि जहाँ दो-एक खिलाड़ी आउट हुए, वहाँ औरों के छक्के यों ही छूट जाते हैं, या जहाँ एक-दो गोल हुए कि बस पस्त हो चले। यह खिलाड़ियों के समुपयुक्त बात नहीं। विदेशी खिलाड़ी हार होते देख दुगने उत्साह से खेलते और हार को जीत में परिवर्तित करने के लिये यत्नशील रहते हैं। हमारे खिलाड़ियों को यही वृत्ति स्वीकार करनी चाहिए। हमें विश्वास है, यदि आल इंडिया-मैचों से पूर्व पर्याप्त अभ्यास कराया जाय, और प्रत्येक खिलाड़ी अपनी डरने की दुर्वृत्ति को हटा, निर्भय हो डटकर खेलना प्रारंभ करे, तो हमारे खिलाड़ी भी विदेशी टीमों को पहले तो हरा ही दें, और यदि हार भी जायँ, तो कम-से-कम क़दम-क़दम पर दाँत खट्टे करने में समर्थ हों।

अब भी यदि लगन के साथ काम किया जाय, तो, आशा है, हमारे खिलाड़ी कुछ कर गुज़रेंगे। क्या अधिकारिवर्ग हमारे विचारों की ओर ध्यान देंगे? हम 'सुधा' की पिछली संख्याओं में भी अपने विचार प्रकट कर चुके हैं, और आज भी इसी आशा से लिख रहे हैं कि अधिकारी क्रीड़ा की उन्नति की ओर पर्याप्त ध्यान दें, और ऐसे उपाय सोचें, जिनके फल-स्वरूप भारतवर्ष का नाम क्रीड़ा-क्षेत्र में आदर के साथ लिया जा सके।

× × ×

९. एक आदर्श विवाह

'सुधा' के लेखक, बंधु शंकरदेवजी विद्यालंकार से सभी पाठक परिचित ही हैं। उनका शुभ परिणय अभी कुछ समय पूर्व ही सुदूर ब्रह्मदेश में निवास करनेवाले एक आर्य-गुण-संपन्न परिवार की संस्कारी और शिक्षिता पुत्री सुश्री सुरेंद्रबालादेवी के साथ हुआ है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस विवाह की प्रधानतया दो विशेषताएँ हैं—प्रथम तो यह विवाह जाति-पाँति के कल्पित रिवाजों और बंधनों को तोड़कर हुआ है। यह विवाह आंतरजातीय हुआ है। सुश्री सुरेंद्रबालाजी क्षत्रिय-कुलोत्पन्न हैं, और भाई शंकरदेवजी गुजराती ब्राह्मण। दूसरी विशेषता यह है कि यह विवाह आंतरप्रांतीय है। इस विवाह द्वारा ब्रह्मदेश और गुजरात के दो संस्कारी आर्य-कुटुंबों का सम्मिलन हुआ है।

सुश्री सुरेंद्रबालादेवी के पिता श्रीबधावामलजी आर्य ब्रह्मदेश के प्रसिद्ध आर्य सज्जन हैं। ब्रह्मदेश में आर्य-समाज की सर्व प्रकार की प्रवृत्तियों के वह केंद्र हैं। वर्षा से वह ब्रह्मदेश-आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान और उप-प्रधान के सम्मानित पदों पर अधिष्ठित रहे हैं। संप्रति वह उप-प्रधान पद पर हैं। उन्होंने अपने सुपुत्रों को गुरुकुल-विश्वविद्यालय कांगड़ी भेजकर सुंदर शिक्षा दिलाई है। इसी प्रकार अपनी पुत्रियों को भी ऊँची शिक्षा-दीक्षा देकर संस्कारी और सुशिक्षिता बनाया है। श्रीबधावामलजी का परिवार समस्त ब्रह्मदेश में अपनी संस्कारिता, सुरुचि और सुशिक्षा के लिये प्रसिद्ध है। इन्हीं की तृतीय विदुषी पुत्री सुरेंद्रबालादेवी से भाई शंकरदेवजी का विवाह हुआ है। सुरेंद्रबालादेवी को हिंदी, अँगरेज़ी और उर्दू-भाषा का सुंदर परिज्ञान है, साथ ही गृह-कार्य, वस्त्र-चित्रकारी और फ़ोटोग्राफ़ी का विशेष ज्ञान रखती हैं।

भाई शंकरदेवजी के पिता श्रीयुत मुकुंदजी भाई का परिवार गुजरात में एक आदर्श आर्य-परिवार माना जाता है। गुजरात में आर्य-धर्म-प्रचार और समाज-सुधार के काम में श्रीमुकुंदजी भाई का बड़ा हिस्सा है। उन्होंने अपने पुत्रों और पुत्रियों को क्रमशः गुरुकुल कांगड़ी और कन्या-गुरुकुल, देहरादून में शिक्षित किया है।

भाई शंकरदेवजी उन्हीं के ज्येष्ठ-पुत्र हैं। वह कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक और हिंदी तथा गुजराती-भाषा के सुलेखक हैं। गुरुकुल-विद्या-मंदिर, सूपा के मंत्री हैं, और हिंदी-साहित्य तथा आचार-शास्त्र के अध्यापक।

इस प्रकार यह विवाह अनेक दृष्टियों से आदर्श और अनुकरणीय रहा है। ईश्वर नवदंपति को नवीन जीवन-यात्रा में सफलता प्रदान करें।

× × ×

१०. डरबन (दक्षिण-आफ्रिका) में आदर्श विवाह

गत ४ ऑक्टोबर को दक्षिण-आफ्रिका के प्रसिद्ध नगर डरबन के सिटी-हॉल में, श्रीमान् मेयर के सभापतित्व में, एक भारतीय विवाह का जो उत्सव मनाया गया, वह यहाँ के प्रवासी भाइयों के इतिहास में अभूतपूर्व है। श्रीमगनलाल और श्रीगायत्री-देवी के विवाह के उपलक्ष्य में साउथ-आफ्रिकन इंडियन कांग्रेस के प्रधान मंत्री श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी और स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी की ओर से एक चाय-पार्टी दी गई थी, जिसमें डरबन के सभी प्रख्यात भारतीय और योरपियन सम्मिलित हुए थे।

श्रीक़ाज़ी साहब ने अपने विनोद-पूर्ण व्याख्यान से उत्सव का श्रीगणेश किया। आपने नगर के मेयर श्रीफ़्लेमिंग जॉनसन की उपस्थिति पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की, और पाँचवीं बार मेयर के पद पर निर्वाचित होने के कारण उन्हें बधाई दी। माननीय सेठ इ० एम्० पारख ने मेयर को पुष्प-हार पहनाया, और मेयोरेस एवं गायत्रीदेवी को पुष्प-गुच्छ प्रदान किया।

श्रीमान् मेयर ने वर और कन्या के मंगल भविष्य के लिये शुभ कामना प्रकट की। नेटाल की प्रॉविंशियल कौंसिल के माननीय मेंबर श्री-एस्० जे० स्मिथ ने श्रीमगनलाल की योग्यता का बखान किया, और यह भी कहा कि प्रवासी भारतीयों की अपूर्व सेवा करके स्वामी भवानीदयालजी

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी उनके प्रेम और आदर के पात्र बन गए हैं। उनके बाद हिंदू-महासभा के प्रधान श्रीबी० एम्० पटेल, आर्य-प्रतिनिधि-सभा के मंत्री श्रीसत्यदेव, बैरिस्टर एस्० आर० पत्तर और श्रीरुक्नुद्दीन ने वर और वधू को बधाई दी। श्रीमगनलाल ने सभी वक्ताओं की शुभ कामना के लिये धन्यवाद दिया। अंत में स्वामी भवानीदयालजी ने सभी अतिथियों और विशेषतः मेयर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

इस उत्सव में जिन लोगों ने भाग लिया था, उनमें से निम्न-लिखित व्यक्तियों का नाम विशेष उल्लेख योग्य है—डॉक्टर और श्रीमती फ़्लेमिंग जॉनसन, श्रीमती सोराबजी-रुस्तमजी, सपत्नीक कौंसिलर कवेल, श्रीउमर हाजी अमदजवेरी, श्रीअलेक वेनलेस एम्० पी० सी०, श्रीशेष हमीद, श्रीमती यूल, डॉक्टर सिद्दात, सपत्नीक श्रीब्रेमर, श्रीके० बैजनाथ, शास्त्री-कॉलेज के प्रिंसिपल श्रीबस और उनकी पत्नी, श्रीए० एम्० एम्० लोकाट, श्रीमती मोरेल, रेवरेंड बी० एल्० ई० सिगामणी, सपत्नीक श्रीसेंडफ़ोर्ड, सपत्नीक श्रीबी० लावरेंस, श्रीआर० राजकुमार, सपत्नीक श्रीबैली, श्रीएम्० बी० नायक, सपत्नीक श्रीमेकाले, पं० रामसुंदर पाठक, श्रीमती और कुमारी जॉनसन, सपत्नीक श्रीसत्यपाल, श्रीमती और कुमारी जेम्स, सपत्नीक श्रीसापूरजी, रंडेरिया, सपत्नीक श्रीफ़िरोज़शाह, श्रीरामप्रताल, श्रीई० एम्० अली, श्रीअब्दुलहक़ क़ाज़ी, श्रीमती कुंजविहारीसिंह, श्रीराघवजी रघुनाथ, श्रीचुन्नीलाल, श्रीगोविदमाणी, श्रीई० जे० चुन्नू और श्रीबी० बेचू।

इस विवाह का धार्मिक कृत्य पूर्ण वैदिक विधि से, महात्मा गांधी के जन्म-दिवस पर २री ऑक्टोबर को, जेकोब्स (डरबन) में हुआ था। यह संबंध जाति-बंधन को तिलांजलि देकर हुआ है। वर एक सुशिक्षित युवक है, और वधू है जालंधर-कन्या-महाविद्यालय की एक छात्रा और स्वामी भवानीदयालजी की भतीजी। दक्षिण-आफ़्रिका के भारतीयों के इतिहास में यह पहला ही विवाहोत्सव है, जो नगर के श्रीमान् मेयर की अध्यक्षता में, डरबन के सिटी-हॉल में, मनाया गया है। हिंदू संन्यासी और मुसलमान क़ाज़ी इस उत्सव के मेजमान थे, और मेहमान थे हिंदू, मुसलमान, ईसाई और पारसियों के सभी प्रमुख व्यक्ति एवं अनेक भारतीयों के हित-चिंतक, प्रतिष्ठित योरपियन। सिटी-हॉल की सजावट और प्रथम श्रेणी के वाद्य-गान के कारण उत्सव की शोभा और भी बढ़ गई थी।

× × ×

११. जापान की शक्ति

जापान भले ही देखने में छोटा हो, पर करामात में बड़े-बड़े देशों को भी मात देनेवाला है। पिछले ५० वर्षों के अंदर-ही-अंदर इसने जो तरक्की कर डाली है, वह संसार के इतिहास में अद्भुत है। आज दिन जापान इतनी शक्ति रखता है कि अकेले ही अपने को बचा सके। वह एक ओर रूस को घुड़कता है, तो दूसरी ओर अमेरिका को डपटता है। उसकी स्थल, जल और वायु-शक्ति पर्याप्त है। योरप की कूटनीति को वह खूब समझता है, और यह भी जानता है कि इस समय वहाँ की अंदरूनी हालत कैसी है। अतः वह अपने को निरापद् मानता है, और वैदेशिक भय के अभाव में थोड़े काल में ही अधिकाधिक लाभ उठाना चाहता है। "काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।" वाली नीति का जापान ने पूरा-पूरा आश्रय लिया है, और पूर्व इसके कि कोई और देश चीन पर आधिपत्य जमाने की चेष्टा करे, वह स्वयं ही चीन में धँस गया है, और धीरे-धीरे उसका अंग भंग कर अपने साम्राज्य की वृद्धि कर रहा है।

पर जापान की श्री-वृद्धि देखकर और देश भी चुप नहीं। गुप्त और प्रकट रूप से उसके विरुद्ध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

काफ़ी आंदोलन हो रहा है। हाल में नौ-राष्ट्रों की एक कान्फ्रेंस ब्रूसेल्स में हो रही है। ज़ाहिरा तो इस कान्फ्रेंस का कार्य चीन-जापान के युद्ध से जो अशांत वातावरण सुदूर पूर्व में उपस्थित हो गया है, उसे हटाना है, पर अप्रकट रूप से न-जाने और क्या-क्या है। जापान ने इस कान्फ्रेंस में भाग लेने से इनकार कर दिया है। सुनते हैं, इस कान्फ्रेंस में सहयोग देनेवाले राष्ट्रों में इटली के अलावा और सबों ने जापान पर सम्मिलित दबाव डालने का उपक्रम करने की धमकी दी है। पर जापान इस धमकी से डरा नहीं। उसने कहा कि ऐसी स्थिति में वह इन विदेशी राष्ट्रों से बात ही नहीं करना चाहता।

यह भी सुना जाता है कि इटली, जर्मनी और जापान के बीच एक गुप्त संधि भी हो चुकी है, जिसके द्वारा इन राष्ट्रों ने परस्पर सहायता करने का प्रण किया है। यदि स्पेन में जनरल फ्रांको की विजय हुई, तो स्पेन भी इस त्रिपुटी में भाग लेगा, ऐसा बहुतों का विचार है। पर बहुत लोग यह भी कहते हैं कि आए वक़्त योरपियन राष्ट्र जापान का अहित करने से बाज़ नहीं आवेंगे, और इसीलिये जापान अपनी शक्ति बढ़ा रहा है, एवं चीन का खंड-खंड विजय कर अपनी शक्ति को सुसंगठित करता हुआ आगे बढ़ रहा है। यदि चीन को किसी अन्य देश ने सहायता न दी, तो अबीसीनिया की तरह यह भी एक पराजित देश हो जायगा, और जापान की शक्ति कईगुना बढ़ जायगी।

हम जापान की शक्ति की तारीफ़ करते हैं, इसलिये नहीं कि चीन को असहाय पाकर वह उस पर आक्रमण कर रहा है, बल्कि इसलिये कि वह एक ऐसा एशियाई देश है, जहाँ घर-घर देश-भक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है, और देश के लिये सर्वस्व अर्पण करने की शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। यह इसी शिक्षा का प्रभाव है कि जापान आज अपने पैरों खड़ा ही नहीं है, बल्कि अपने बल से अन्य देशों में भी टाँग अड़ाने की हिम्मत रखता है। यदि जापान अपने को इतना शक्तिशाली न बनाए होता, तो योरपियन राष्ट्र उसे भी चीन-सा बना डालते।

जापान का अतुलित देश-प्रेम प्रदर्शनीय है। यही उसकी शक्ति और यही उसका बल है। जिस जाति में ऐक्य और पारस्परिक प्रेम है, वह कभी नष्ट नहीं हो सकती। जापान और चीन में इस समय भयानक मार-काट मची हुई है। जापान शीघ्रातिशीघ्र मामला खत्म करना चाहता है। चीन लड़ तो रहा है, पर उसके पास जापान के बराबर साधन नहीं, अतः जाननेवालों की दृष्टि में नतीजा बहुत कुछ ज़ाहिर ही है। हम जापान के जहाँ प्रशंसक हैं, वहाँ यह भी कह देना उचित समझते हैं कि चीन के प्रति उसका व्यवहार समुचित नहीं। हम चाहते हैं कि इन दोनो बौद्ध देशों में अहिंसा का कोरा शाब्दिक प्रचार ही न हो, वरन् वास्तविक व्यवहार भी हो, और यह आपसी युद्ध बंद हो जाय। चीन और जापान दोनो को अपनी स्थिति सुधारने के लिये शांति की आवश्यकता है। यदि ये दोनो देश कुछ वर्ष लड़ते ही रहे, तो दोनो की शक्ति का ह्रास हो जायगा। और, बहुत संभव है, किसी और को इन पर अपना भारी हाथ रखने का मौक़ा मिल जाय।

× × ×

१२. चीफ़ जस्टिस बाबू विश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव

आप चीफ़ कोर्ट ऑफ़ अवध, लखनऊ के स्थायी रूप से मुख्य न्यायाधीश, गत २२ ऑक्टोबर, १९३७ से, नियुक्त हुए हैं। आप भारत के उन इने-गिने वकीलों में हैं, जो स्वयं अपनी योग्यता के बल पर इस पद को प्राप्त कर सके हैं। आपने शासनारूढ़ होते ही वकीलों की एक कमेटी बनाई, जो हर समय मुंसिफ़ों और जजों के विरुद्ध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शिकायतों को आपके सामने यदा-कदा पेश किया करे। इस कमेटी की अतीव आवश्यकता थी। और आशा है, इससे स्थायी लाभ होगा।

खेद है, आजकल आप अस्वस्थ और छुट्टी पर हैं। अभी उस दिन तो आपकी हालत बहुत ही निराशा-जनक हो गई थी, पर ईश्वर की कृपा से आप इस विपत्ति से बच गए। अब हालत सुधर रही है। परमेश्वर से प्रार्थना है कि आपको शीघ्र नीरोग करें।

× × ×

१३. बधाई! बड़ी खुशी की बात है कि सुधा के माननीय कवि, द्वितीय देवपुरस्कार-विजेता, प्रयाग-विश्वविद्यालय के हिंदी-अध्यापक श्रीरामकुमारजी वर्मा एम्० ए० को, उनकी 'चंद्रकिरण'-नामक सुंदर पुस्तक पर, चक्रधर-पारितोषिक मिला है। हम इस विजय पर उन्हें सहर्ष बधाई देते हैं! इस पारितोषिक के प्रदाता हैं रायगढ़ (सी० पी०) के प्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी नरेश, और यह उसका पहला वर्ष था। केवल सी० पी० के कवि ही इस पुरस्कार-प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।

श्रीरामकुमारजी वर्मा एम्० ए०

× × ×

१४. पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय का स्वास्थ्य

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, आर्य-समाज के प्रतिष्ठित नेता तथा दार्शनिक विद्वान् पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय से 'सुधा' के पाठक भली भाँति परिचित हैं। आपके अनेक गवेषणा-पूर्ण लेख 'सुधा' में प्रकाशित हो चुके हैं। खेद है, वह इधर कई मास से बीमार हैं! खाँसी अब भी आती है। ईश्वर उन्हें शीघ्र स्वस्थ कर।

× × ×

१५. अलीगढ़ का दंगा अलीगढ़ में कई बरसों बाद इस वर्ष रामलीला हुई थी। स्थानीय डिप्टी-कमिश्नर मिस्टर नक़वी ने इस दिशा में बड़ा प्रशंसनीय उद्योग किया था, और हमें यह आशा हो चली थी कि शायद अलीगढ़ का दूषित वातावरण शुद्ध हो जायगा। खेद है, यह शांति बहुत दिनों स्थायी न रह सकी, और हिंदू-मुसलमान, जो कुछ ही दिन पूर्व भाईचारे का दम भर रहे थे, आपस में लड़ ही गए। कई दिन तक अलीगढ़ में भी वही हुआ, जो लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, बनारस आदि में हो चुका है। इस आकस्मिक विस्फोट ने जो

× × ×

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हानि की, वह शब्दों द्वारा व्यक्त करने योग्य नहीं। हिंदू और मुसलमान यह समझते हैं कि आपसी लड़ाई हर तरह बुरी है। पर जब इस मूल-मंत्र के व्यवहार का वक़्त आता है, तब आवेश बुद्धि का अतिक्रम कर दोनो संप्रदायों को कुत्ते-बिल्ली की भाँति लड़वा डालता है।

बहुत-से मनुष्यों का कहना है कि सांप्रदायिक दंगों के मूल में राजनीतिक शक्ति का प्रश्न निहित है। हम इस बात को सर्वथा सत्य नहीं समझते। हमारी यह धारणा है कि धार्मिक आवेश के सामने राजनीतिक हानि-लाभ की कुछ गणना ही नहीं, और धर्म के नाम पर मर मिटनेवाले अपने सर्वस्व का होम करने के लिये हर समय तैयार रहते हैं। हमारे हिंदू-मुसलमान यदि राजनीतिक अधिकारों के लिये लड़ते, तो आज तक यह पारस्परिक झगड़ा कब का मिट गया होता; किंतु झगड़े का रूप सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांप्रदायिक भी है। जो संप्रदाय-विशेष की इन कमज़ोरियों से परिचित हैं, वे इन पर अधिक ज़ोर दे अपना उल्लू सीधा करते हैं। आश्चर्य यह कि वे सांप्रदायिक महापुरुष, जो "धर्म ख़तरे में है" की आवाज़ें उठाते हैं, जो धर्म और संस्कृति के नाम क़समें ही नहीं खाते, प्रत्युत मरने का भी दम भरते हैं, अधिकतर अपने धर्म-विशेष का पूर्णतया पालन करनेवाले नहीं होते, पर बात इस जोश के साथ करते हैं कि सच्चे धर्म का अनुसरण करनेवाले उन्हें ठीक मानकर अर्थ का अनर्थ कर डालते हैं।

हम इस सांप्रदायिक प्रश्न पर 'सुधा' की कई संख्याओं में अपने विचार प्रकट कर चुके हैं, हम चाहते हैं, यह अवस्था, यह सांप्रदायिक कलह जिस तरह भी हो, दूर ही नहीं, नष्ट कर दिया जाय। हमारा अपना विचार है कि देश के नेता इस प्रश्न की गंभीरता समझते तो हैं, पर इसके दूरीकरण के लिये यत्नशील नहीं। उन्हें चाहिए कि सांप्रदायिकता हटाने पर ही अधिक ज़ोर दें। हर्ष है, कांग्रेस मुसलिम-जनता में अपने भावों का अधिक प्रचार करना चाहती है, और एतदर्थ यत्नशील भी है। परंतु कांग्रेस राजनीतिक गुत्थियों और आर्थिक प्रश्नों पर ही अधिक ध्यान दे रही है, सांप्रदायिकता को उतना महत्त्व नहीं दे रही। यदि कांग्रेस के हिंदू-नेता मुसलमानों को यह भली भाँति समझावें कि उनका इरादा उनके धर्म, संस्कृति, भाषा आदि में आक्षेप करने का नहीं, प्रत्युत उन्हें शांति-पूर्वक सहायता देने का है, और कांग्रेस के मुसलिम-नेता हिंदुओं को यह आश्वासन दें कि मुसलमान किसी भी प्रकार उन्हें तंग करना नहीं चाहते, वरन् भाई की भाँति मदद देना चाहते हैं, तो हमारा विश्वास है कि सांप्रदायिक दृष्टिकोण में बहुत भेद आ जायगा।

इस समय सात प्रांतों में कांग्रेस का आधिपत्य है, अतः यदि कांग्रेस-मिनिस्टर सरकारी तौर से भी सांप्रदायिकता दूर करने में यत्नशील हों, और अपने पब्लिसिटी-विभाग द्वारा जनता के पारस्परिक मन-मुटाव, अज्ञान और सांप्रदायिक कोण को बदलने की चेष्टा करें, तो बहुत कुछ हो सकता है। पर यह कार्य नियमित रूप से होना चाहिए। कांग्रेस-मिनिस्टरी सरकारी तौर और कांग्रेस-संस्थाएँ ग़ैर-सरकारी तौर पर यदि मिलकर इस सांप्रदायिकता के भूत को भगा सकें, तो देश का अहोभाग्य समझिए। यदि हर नगर, हर ग्राम में सांप्रदायिकता के विरुद्ध प्रतिदिन प्रयत्न किए जायँ, तो कोई कारण नहीं कि साल ही भर में हिंदू-मुसलिम-इत्तहाद की जड़ें मज़बूत न हों। पर क्या इस प्रकार कार्य करने की कोई योजना हमारे नेता कर रहे हैं? पत्र, नाटक, सिनेमा, लेक्चर, रेडियो आदि सभी साधनों का आश्रय लेकर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐसा वातावरण तैयार किया जा सकता है कि सांप्रदायिकता को छिपने का भी स्थान न मिले। पर खेद है, अभी तक राष्ट्रीय रूप में सभी ओर से इसके विपरीत चेष्टा नहीं हो रही! हम चाहते हैं, देश-भर में 'सांप्रदायिकता मुर्दाबाद' की मनोवृत्ति का ज़ोरों के साथ प्रचार हो, इसी में देश की भलाई है।

क्या देश के विचारशील सज्जन इस महत्त्व-पूर्ण कार्य की ओर अग्रसर होंगे? हम अपने प्रांत के पब्लिसिटी-विभाग के पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी बाबू गोपीनाथ श्रीवास्तव का ध्यान इधर विशेष रूप से आकर्षित करते हैं।

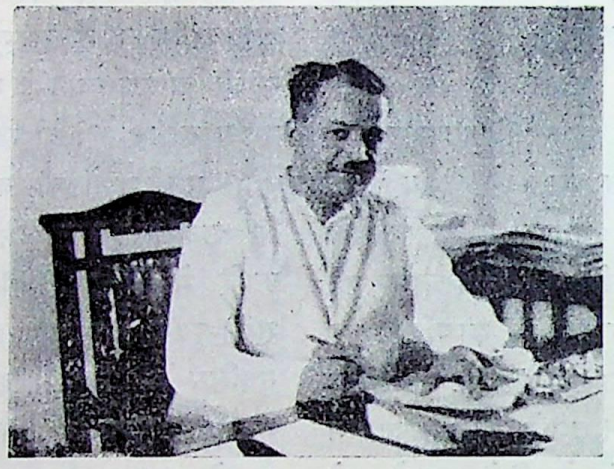

बाबू गोपीनाथ श्रीवास्तव

× × ×

१६. टंडनजी को चाय-पार्टी

हमने, गत ऑक्टोबर-मास की ३ ता० को, युक्त-प्रांतीय एसेंबली के अध्यक्ष माननीय श्रीपुरुषोत्तम-दासजी टंडन के सम्मानार्थ, बटलर-पार्क, क़ैसरबाग़ में, एसेंबली के सब मिनिस्टरों, मेंबरों और लखनऊ के सुप्रतिष्ठित स्त्री-पुरुषों को चाय-पार्टी दी। इस पार्टी में ३०० से अधिक व्यक्तियों ने सम्मिलित होने की कृपा की थी। कुछ प्रमुख व्यक्तियों के नाम ये हैं—

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू, माननीय पं० गोविंदवल्लभ पंत, माननीय पं० प्यारेलाल शर्मा, माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, माननीय हाफ़िज़, मुहम्मद इब्राहीम, माननीय डॉक्टर कैलासनाथ काटजू, जस्टिस माननीय विश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव, लेडी वज़ीरहसन, डॉक्टर नारायणप्रसाद अष्ठाना, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र, माननीय डॉक्टर सर सीताराम, लेडी एजाज़ रसूल, आचार्य कृपलानी, आचार्य नरेंद्रदेव आदि।

गर्भ-निवारक प्रयोग

जो स्त्री बच्चा पैदा करते-करते थक गई हो, वह अपने शरीर को सुंदर और सुकोमल तथा सुडौल रखने के लिये गर्भ धारण करना नहीं चाहती, उसके लिये गर्भ-निवारक प्रयोग है। इस प्रयोग को मासिक धर्म (रजस्वला, माहवारी) के समय फ़क़त ४ ही दिन कर लेने से न रहेंगे बाँस और न बजैगी बाँसुरी याने आजन्म के लिये वंध्या (बाँझ) रह जावेगी। यदि फिर भी गर्भ धारण करने की इच्छा हो, तो इस प्रयोग को उलटा दीजिए। गर्भ रह जायगा। क़ीमत सिर्फ़ ५) । साथ में एक प्रयोग और दिया जाता है, जिससे मासिक धर्म होना बंद नहीं होता, क्योंकि मासिक धर्म के बंद होने से दूषित ख़ून शरीर में जमा होकर अनेक प्रकार की अन्यान्य व्याधि उत्पन्न कर देता है। अतः यह साथ में ज़रूर मँगाना चाहिए, जिसका दाम ५) पृथक् देना होगा। ऑर्डर देने के वक्त यह लिख देना होगा कि १०) के दोनों प्रयोग भेजिए। वी० पी० से मँगानेवालों को दोनों मय ख़र्च के ११) में घर बैठे मिलेंगे। १०) अगाड़ी भेज देने से ख़र्चा माफ़। जवाब -) का टिकट आने से ही दिया जायगा।

भारत-भैषज्य-भंडार—नं० १०८, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मनोकामना पूर्ण होगी

पुरुष तथा स्त्री में यदि किसी रोग के कारण कोई विकार है, तो उसे दूर करें, और पश्चात् आपकी कामना पूर्ण होगी।

पुरुषों के लिये औषधियाँ

अक्सीर नं० ७२—शुक्रमेह, शीघ्रपतन, और स्वप्नदोष को दूर करती है। परंतु इसका विशेष गुण यह है कि शुक्र कीटाणु उत्पन्न करती है, और वीर्य्य को संतानोत्पत्ति के योग्य बनाती है। मूल्य २०० गोली ३)

अक्सीर नं० ३३—रज-वीर्य को शुद्ध करती है, और संतान के योग्य बनाती है, तथा गठिया आदि सब प्रकार के दर्दों के लिये अक्सीर है। स्त्री-पुरुष दोनो के सेवन करने की चीज़ है। मूल्य ६४ गोली ४), १६ गोली १)

स्त्रियों के लिये औषधियाँ

फलघृत—स्त्रियों के लिये कामधेनु, आयुर्वेद का सर्वोत्तम प्रयोग, गर्भाशय के संपूर्ण विकारों को नष्ट कर संतानोत्पत्ति के योग्य बनाता है। इस प्रयोग के होते हुए ९० प्रतिशत निःसंतानों को निराश नहीं होना चाहिए। मूल्य ३०) प्रति सेर।

पताली—(रजिस्टर्ड) ऋतुस्राव का कम होना, वा न आना, वेदना-सहित आना और तत्संबंधी सर्व रोगों को दूर करके ऋतु को खोलता है और बल प्रदान करता है। स्त्रियों के लिये टानिक औषधि है। मूल्य ४ औंस २), नमूना १ औंस ॥)

नोट—पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मुफ़्त मँगावें।

पत्र-व्यवहार तथा तार का पता—अमृतधारा, १३, लाहौर

विज्ञापक—मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन, अमृतधारा सड़क अमृतधारा डाकखाना, लाहौर।

सूतिका, पौरुषहीनता, अजीर्ण और ज्वर को दूर करनेवाला

सर्वश्रेष्ठ टॉनिक वाइन

पता—ढाका आयुर्वेदीय फार्मेसी लिमिटेड

एक पिंट का दो रुपए आठ आने
क्वार्टर का चार रुपए आठ आने
स्थानीय एजेंटों से लीजिए
या
सीधे हेड ऑफ़िस ढाका (बंगाल) से मँगाइए

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

سمن واسطے قرارداد امور تنقیح طلب
(آرڈر ۵—قاعدہ ۱ و ۵)

نمبر مقدمہ ۲۸۸ سنہ ۱۹۳۷ع
عدالت منصفی ایٹہ ضلع علیگڑھہ
منشی جانکی پرساد خلف منشی رامداس قوم کایستھہ ساکن قصبہ ایٹہ حال پہاڑگڑھہ ریاست گوالیار ضلع گوالیار بنام مدعی
بابو رامیشرپرساد ولد منشی شیوپرساد و بنکٹیش پرساد و سرستی پرساد و بابو ہرپرساد عرف ہری بابو و بابو رام پرکاش نابالغان برفاقت بابو جگدیشر پرساد برادر چچازاد پسران ساکھیری پرساد ساکن قصبہ ایٹہ و شانتی پرساد ولد شاکھیری پرساد قوم کایستھہ ساکن قصبہ ایٹہ حال ملازم ریاست گوالیار مدعاعلیہم

ہرگاہ مدعی نے آپ کے نام ایک نالش بابت ہرجہ کے دائر کی ہے لہذا آپ کو حکم ہوتا ہے کہ آپ بتاریخ ۲۲ ماہ دسمبر سنہ ۱۹۳۷ع بوقت ۱۰ بجے دن کے اصالتاً یا معرفت وکیل کے جو مقدمہ کے حالات سے قرار واقعی واقف کیا گیا ہو اور کل اُمورات اہم متعلقہ مقدمہ کا جواب دے سکے یا جس کے ساتھہ کوئی اور شخص ہو کہ جو جواب ایسے سوالات کا دے سکے حاضر ہون اور جوابدہی دعویٰ کی کریں اور آپ کو لازم ہے کہ اُسی روز جملہ دستاویزات پیش کریں جن پر آپ بتائید اپنے جوابدہی کے استدلال کرنا چاہتے ہون—

آپ کو اطلاع دیجاتی ہے کہ اگر بروز مذکور آپ حاضر نہ ہونگے تو مقدمہ بغیر حاضری آپ کے مسموع اور فیصل ہوگا—

بہ ثبت میرے دستخط اور مہر عدالت کے آج بتاریخ یکم ماہ دسمبر سنہ ۱۹۳۷ع جاری کیا گیا—
منصرم

दुनिया में हलचल मचा देनेवाली

अद्भुत पुस्तक

(आसामी, बंगाली तिलस्मी राज़ या ख़ज़ाना करामात)

यह वही अद्भुत पुस्तक है, जिसने भारत के कोने-कोने में हलचल मचा दी है, और जिसका पहला संस्करण हज़ारों की तादाद में, ५) मूल्य होते हुए भी, हाथोहाथ ख़त्म हो गया था। पहले एडीशन पर हज़ारों आदमियों का यह कहना है कि यह पुस्तक नहीं, बल्कि नामर्दों का मर्द, बाँझों को संतान, रोगियों को नीरोग और हज़ारों प्राणियों को प्रतिवर्ष काल के मुख से बचानेवाली भारत के पूज्य महात्माओं की अद्भुत शक्ति का भंडार सचमुच (ख़ज़ाना करामात) ही है। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश (आसाम), बंगाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण विद्या की अद्भुत लीलाएँ, जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं, बल्कि एक अद्भुत शक्ति का भंडार हाथ लगेगा, और इन विद्याओं की सचाई शीशे की तरह प्रकट हो जायगी। पुस्तक के बारे में हमारी गारंटी है। यदि किसी तरह आपको नापसंद हो, तो ३ दिन देखकर वापस कर सकते हैं। हम तुरंत मूल्य लौटा देंगे। इससे बढ़कर और क्या सचाई होगी! अब नए संस्करण में दसो अद्भुत वशीकरण आदि के परीक्षित, कभी न फ़ेल होनेवाले, प्रयोग बढ़ाए गए हैं। पृष्ठ-संख्या भी पहले से अधिक लगभग ६५० हो गई है। परंतु मूल्य वही ५), सजिल्द ५।।।) और डाक-महसूल ।।।) अलग है। परंतु ऑर्डर के साथ पेशगी रुपया भेजनेवालों को महसूल माफ़ होता है।

नोट—अब की बार पुस्तक का सस्ता एडीशन भी निकाला गया है। मूल्य ३।।), सजिल्द ४।); महसूल अलग है। ऑर्डर में सजिल्द व सस्ता एडीशन के बारे में स्पष्ट लिखें, जिसमें भूल न हो।

पता—मैनेजर इंडियन स्टोर्स (१६), जेनरल मर्चेंट ऐंड बैंकर्स, शीलांग (आसाम)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ठ

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए ।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
—हरएक घर में रहना चाहिए—

(जूड़ी ज्वर)

मलेरिया का महा न् शत्रु

झंडु-मलेरिया मिक्श्चर

सेवन करके
मलेरिया की जड़ को
नेस्तनाबूद कर दीजिए।

झंडु-फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

लखनऊ के " " —माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।

CCO, Gurukul Kan...

मत चूको ! मत चूको !!

समय पर चूकनेवाला ही सदा पछताता है !

बहती गंगा में हाथ पखार लो !

हम इस संसार या गृहस्थी में नहीं रहेंगे ।

हमारा-सा काम हमारे घरवाले कभी नहीं करेंगे ।

खुशखबरी !

१ नवंबर से ३१ दिसंबर तक

दवाओं और पुस्तकों की—

आधी कीमत

इस समय तो सातो भाग तैयार हैं, पर शीघ्र ही कोई भाग घटेगा । शतक तो और भी जल्दी खत्म होंगे । फ़ौरन् ५) या १०) भेजकर, अपना नाम, पूरा पता, पास के स्टेशन का नाम, पुस्तकों के नाम मनीआर्डर- कूपन पर लिख दो, ताकि माल जल्दी मिले ।

मुफ़्त में, १०० गोदान का पुण्य !

अगर आप हर मिलनेवाले से आधी क़ीमत की ख़बर कह दें और उनसे यह भी कह दें कि भाई तुम भी सौ-सौ आदमियों से कह देना, तो देश का भला होगा, लाखों की जान बचेगी, करोड़ों रु० सात समंदर-पार जाने से बचेगा ।

दवाओं तथा पुस्तकों की बाबत विशेष जानना हो तो;

नया सूचीपत्र मँगा लो ।

चिकित्सा-चंद्रोदय ७ भाग आधा दाम १७॥)

भर्तृहरि के तीन शतक ,, ,, ६)

हिंदी गुलिस्तां ,, ,, १)

नोट—पैकिंग, रजिस्ट्री फ़ीस, कुली के बारह आने अलग लगेंगे । किताबें बिना जिल्द की मिलेंगी । सिर्फ़ वराग्यशतक की मनमोहिनी जिल्द मिलेगी ।

हरिदास ऐंड कंपनी गली रावलिया, मथुरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खुशखबरी !

हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा की

सारी पुस्तकों और दवाओं की

आधी कीमत

चिकित्सा-चंद्रोदय ७ भाग	३५॥)	आधी	१७॥।)
शतकत्रय ६० चित्र १५०० सफ़े	१२॥)	,,	६)
हिंदी गुलिस्ताँ	२॥)	,,	१।)
गालिब, ज़ौक, नज़ीर, दाग़ (चार पुस्तकें)	३।)	,,	१॥=)
सूक्ति-मुक्तावली (४०० पुस्तकों का मक्खन)	१॥।)	,,	।॥=)
अदृष्ट (भाग्य के खेल)	२॥)	,,	१।)
अँगरेज़ी-हिंदी-शिक्षा ५ भाग	८॥।)	,,	४।=)
बँगला-हिंदी-शिक्षा ३ भाग	३।)	,,	१॥=)
बिछुड़ी दुलहन (सचित्र)	१॥)	,,	।।)
रामकृष्ण परमहंस के उपदेश	।=)	,,	≡)
ब्रह्मयोग-विद्या	१।)	,,	॥=)
द्रौपदी (महाभारत का सार-सचित्र)	२॥)	,,	१।)
सुहागिनी सचित्र (उपन्यास-सम्राट्)	३।)	,,	१॥=)
शैलबाला सचित्र	१)	,,	॥)
अक़्लमंदी का ख़ज़ाना	२।)	,,	१=)

नियम—५) पेशगी भेजो। पास के स्टेशन का नाम लिखो।

चंदन के वृक्ष सर्वत्र नहीं मिलते !

सचाई भी सब जगह नहीं पाई जाती

खुशखबरी !

हरिदास ऐंड कंपनी की सारी अचूक दवाओं की—

आधी कीमत

तिला नं० १	पूरा दाम	१५)	आधा	७॥) शीशी
असली नारायण तेल	पूरा दाम	१२) रु० सेर	आधा	६) सेर
कामिनीरंजन तेल (भारत के सब सिर के तेलों का राजा)		॥=)	आधा	।-) शीशी
नपुंसक संजीवनी वटी—	१०० गोली	४)	आधा	२)
स्वर्ण संजीवन वटी—	८० गोली	२०)	आधा	१०)
काम-संदीपन वटी—	८० गोली	२०)	आधा	१०)
राजकामेश्वर रस—	१ तोले की	२०)	आधी नहीं	×
सर्वज्वरनाशिनी वटी—	१०० गोली	१)	,,	॥)

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, गली रावलिया, मथुरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

काया-पलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान् परोपकारी, महान् योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदखाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-सुश्रूषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। ठंडा होने पर दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रबधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रबधू जलकर खाक हो जाय, तो हवा देकर दें। बस अपूर्व शक्ति-दाता महाबाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामविहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आयगा। २९ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेव की तरह चमकाने लगेगा और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों के हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट व बार-बार थूक गिरना; बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली-भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-खर्च-सहित ५।।) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)

नं० ३, कंचौसी, इटावा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला फ़र्रुखाबाद

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये

मुकद्दमा नंबर ३३२ सन् १९३७ ई० तारीख पेशी ६ दिसंबर सन् ३७ ई०

नाम फरीकैन निहालसिंह बनाम दौलतसिंह वगैरह

हरगाह निहालसिंह वल्द पहलवानसिंह व कल्यानसिंह वल्द निहालसिंह व विशुनाथसिंह पिसर नाबालिग कल्यानसिंह बविलायत कल्यानसिंह ठाकुर साकिन अलादादपुर परगना सौरिख जिला फर्रुखाबाद ने कए दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्जदार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूद तशख़ीस मालगुजारी
१	२	३	४	५	६	७
१	फर्रुखाबाद	हकीयत जमीदारी	अलादादपुर परगना सौरिख पट्टी उमरावसिंह नं० १	१९ बिस्वांसी ५ कचवांसी ३ ननवांसी १२ $\frac{५}{३}$ पनवांसी		२४॥-)

जमीमा (ख)

कर्जदार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिल सले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हकियत की वसाअत (विस्तार)
१	२	३
	३ किता बागात वाके मौजा अलादादपुर परगना सौरिख से १ सुलस हिस्सा सायलान मकान मसकूना सामान खानादारी बरतन व चारपाई पारचाहाय पोशिश	कीमती तखमीनन १००)

फ़ा० १ मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नं० १७०

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल मुज़फ़्फ़रनगर

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

मु० नं० ३७ सन् १९३६ ई०

हरगाह सैयद हादीहसन वग़ैरह मेंहदीहसन सैयद साकिन खानजापुर परगना खातोली ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर सायल ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो उस तारीख़ से, जो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत का दिस्तूर जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
मौजा नसीरपुर प० मुनार	मुज़फ़्फ़रनगर		गरेदायान	४	२५ बीघा	६४।=) दरोबस्त
रथेड़ी ,,	,,		मेंहदीहसन	३	२५—४	माफ़ी ११॥—) ,,
शहापुर खातोली	,,		मेंहदीहसन	४	७१६—१६	७४१।।=) ५८०—१४जुमले ७१६—१६
,, ,,	,,		,,	५	७७—१८	माफ़ी १२) दरोबस्त
खानजापुर,,	,,		,,	१	१०५—१८	१५०) १०५—१० जुमले १०५—१८
,, ,,	,,		,,	२	३७—१	अबवाब ७।।) माली दरोबस्त
ताजपुर ,,	,,		जहौरहसन		१२—११	१६।।) दरोबस्त
,, ,,	,,		,,		११२—८	१७४।।—)।।। ,,
,, ,,	,,		,,	२	७—१	१) दरोबस्त हक़ मुरतहनी
,, ,,	,,		क़दरहसन	२	८—२	१३।=) ६ हिस्सा जुमले १६ हिस्सा ८—२
,, ,,	,,		गरेदायान	१	४६—१७	७०।—) ३६१२२८ हिस्सा जुमले ५१६१२०—४१
,, ,,	,,		,,	४	३—१२	५।।।=) १ हिस्सा जुमले ५ हिस्सा ½ ½ जुमले १४ शयाम जुमले २२ शयाम ३—१२ हस्ब रसद
ताजपुर ,,	,,		गरेदायान	७	१—१७	४।।=) ,,
,, ,,	,,		,,	८	४—४	।।।=) ,,
,, ,,	,,		,,	९	१२—१०	३०) ,,
,, ,,	,,		मौता बेगम	१	५७—१३	
नसीरपुर ,,	,,					

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

نمونہ نمبر ۱۷۰

فارم اِطلاع نامہ حسب دفعہ ۱۱ ایکٹ جائدادھاے مقروضہ ممالک متحدہ

بعدالت جناب اسپیشل جج صاحب بہادر درجہ دویم فرخ آباد

مقدمہ نمبر ۲۳۸ سنہ ۱۹۳۶ع پیشی ۲۵ نومبر سنہ ۱۹۳۷ع

(۱) ہرگاہ مسماۃ رکھنی بیوہ متھراپرساد
(۲) دولارے } پسران نابالغان متھراپرساد بولایت
(۳) پیارے } مسماۃ رکھنی مادر خود
} اقوام کرمی ساکنان بھوپت پٹی پرگنہ پہاڑہ ضلع فرخ آباد

سایلان نے ایک درخواست حسب دفعہ ۳ ایکٹ جائدادھاے مقروضہ پیش کی ھے لہذا اس تحریر کی رو سے حسب دفعہ ضمنی ۱ دفعہ ۱۱ ایکٹ مذکور اطلاع دیجاتی ھے کہ اُس جائداد کو جس کی تفصیل ضمیمہ ھاے منسلکہ میں درج ھے درخواست دھندہ نے حسب دفعہ ۸ یا حقداران نے حسب دفعہ ۱۰ مذکور کی جائداد بتایا ھے

اگر کوئی شخص جائداد مذکور پر کوئی دعوی رکھتا ھو تو وہ اِس اِشتہار کے گزٹ ممالک متحدہ میں شائع ھونے کی تاریخ سے تین ماہ کے اندر اپنے اِستحقاق کے بارہ میں اُس حاکم کے روبرو اپنی عرضی پیش کرے جس کے دستخط ذیل میں ثبت ھیں—

ضمیمہ (الف)

قرضدار کے اِستحقاق مالکانہ متعلق اراضی

نمبر سلسلہ وار	نام موضع اور پرگنہ	نام مقام تپٹی	تعداد حصہ	رقبہ	مالگزاری
۱—	فرخ آباد زمیداری	گیارم پور پرگنہ پہاڑہ پٹی نمبر ۴		۰۳ — ۱	حال ابواب ۳ روپیہ ۴ آنہ ۱۰ پائی
۲—	,,	بھوپت پٹی پرگنہ پہاڑہ پٹی نمبر ۸ محال للتا بی بی		۱۱-۲	حال ابواب ۳۰ روپیہ ۲ روپیہ

منصرم

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नंबर १७० [बदस्त अबाम फ़रोख्त के लिये

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूक़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू जगदीशकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

मुक़द्दमा नं० ८१३ सन् १९३६ ई०

हरगाह उमरावसिंह पिसर मुतबन्ना देखा बालिग़ महेंद्रसिंह नाबालिग़ पिसर उमरावसिंह बविलायत उमराव-सिंह पिदर खुद क़ौम जाट साकिनान मौज़ा टटोली परगना शामिली जिला मुज़फ़्फ़रनगर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूक़ा पेश की है, ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़्कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़्कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़्कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं ।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतालिक़

नंबर खेवट	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व सुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	
६	मुज़फ़्फ़रनगर	मौज़ा टटोली परगना शामिली		½ हिस्सा	३२ बीघा २ बि० १० बि०	८४।=)
१	,,	,,		७ बीघा १५ बि० अज़ कुल खेवट	७ बीघा १८ बि०	२४।=)

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत की वसाअत (विस्तार)
१	२	३

तिहाई हिस्सा अज़ एक मंज़िल हवेली शर्क़रुया तामीरा खाम मय मकानात अंदरूनी वाक़े आदाही मौजा टटोली परगना शामली महदूदा जल—

पूरब रास्ता, पश्चिम मकान मारसिंह व होटयारा व मकान नत्थू जाट, दक्खिन मकान शिब्बा जाट, उत्तर मकानात चमारान रिआया ।

निस्फ़ी हिस्सा अज़ एक मंज़िल हवेली शुमालरुया तामीरा ख़ाम मय मकानात अंदरूनी मय हक़ दहलीज़ बग़ैरा मुहाल तारीफ़ वाक़े मौ० टटोली परगना शामिली महदूदा जैल—

पूरब मकान हरीसिंह ब्राह्मण, पश्चिम मकान उमरसिंह जाट, दक्खिन रास्ता, उत्तर मकान चमारान रिआया

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू जगदंशकिशोर टंडन बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुजफ्फरनगर

मुकद्दमा नं० ८२६ सन् १९३६ ई०

हरगाह रामरतन पिसर बलदेवसिंह व हरपालसिंह वल्द रामरतन नाबालिग बविलायत रामरतन कौम जाट साकिन मौजा हैदरनगर परगना बघरा जिला मुजफ्फरनगर

ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है। लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

कर्जदार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

नंबर खेवट	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतिकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी
१	मुजफ्फरनगर	मौ० हैदरनगर	मुहाल माड़ासिंह	दरोबस्त	१५बी. १७बि. १८बि.	१८३॥)
९	,,	,,	मुहाल माड़ासिंह	हस्ब रसद	८ बी० २ वि०	२२॥)
१०	,,	,,	मुहाल हरदयाल	½ हिस्सा अज़	११ बीघा	१८॥)
				कुल खेवट		

जमीमा (ख)

कर्जदार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफा १० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१—नैशकर मालियत तखमीनन ५००)

२—गोदुम मालियत तखमीनन ५००)

३—दरोबस्त एक मंजिल घर गर्बरुया तामीरा पुख्ता व खाम वाकै मौजा हैदरनगर परगना बघरा महदूदा जैल—
शर्की सहन व रास्ता, गर्बी मकान जहाँगीर तेली, जनूबी मकान माड़ा जाट, शुमाली मकान माड़ा जाट

४—दरोबस्त एक मंजिल घेर मुन्हरिमा गर्बरुया तामीरा खाम मय जुमला हक हकूक वाकै हैदरनगर परगना बघरा महमूदा जैल—शर्की आराजी उफ्तादा वगैरा, गर्बी गलियारा, जनूबी मकान माड़ा जाट व आराजी उफ्तादा, शुमाल हवेली लेवा जाट

५—दरोबस्त एक हवेली गर्बरुया व शर्करुया तामीरा पुख्ता मय मकानात अंदरूनी वाकै मौजा हैदरनगर परगना बघरा जिला मुजफ्फरनगर महमूदा जैल—
शर्की सहन भूजन जाट, गर्बी सहन व गलियारा, जनूबी गलियारा व उफ्तादा, शुमाली जीवन वगैरा जाट

६—चार बैल, दो भैंस, एक गाय

७—एक मंजिल अहाता गर्बरुया वाकै हैदरनगर महमूदा जैल
शर्की मकान चमारान, गर्बी सहन व रास्ता, शुमाली हवेली माड़ासिंह, जनूबी घेर माड़ासिंह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

८—दरोबस्त एक मंजिल सहदरी शर्कुरुया मय अंदरून टुकड़या जिसके दो दरवाजे शर्कुरुया व गर्बुरुया पुख्ता अंदर हवेली शर्कुरुया वाकै हैदरनगर महदूदा जैल—
शर्की सहन व रास्ता खास व आम, गर्बी मकान होश्यारा, शुमाली मकान छज्जू जोगी, जनूबी जाम उफ्तादा
९—दरोबस्त एक मंजिल घेर शर्कुरुया खाम मय दरख्तान वगैरा
शर्की रास्ता, गर्बी आम उफ्तादा, जनूबी जाय उफ्तादा, शुमाली हवेली मँगता जाट
आज बतारीख १८—१०—१९३७ मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से जारी हुआ। मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब बाबू जगदंशकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर
मुक़द्दमा नं० ७१६ सन् १९३६ ई०
हरगाह सैयद लियाक़तहुसेन पिसर उमरावहुसेन व मुसम्मात नौशाई बेगम जौजे लियाक़तहुसेन क़ौम सैयद साकिन मौजा खलाबड़ा कलाँ परगना खातौली ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर खेवट	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुतल्लिक़ व क़ाबिज़ विरासत और क़ाबिज़ इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़्ख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
२	मुज़फ़्फ़र-नगर	मौ० खलाबड़ा कलाँ प० खातौली मुहाल नंदलाल		दरोबस्त ममलूका सायल नं० १ सैयद लियाक़तहुसेन १९ बी० १ बि० मिनजुमला ३८ बी० १४ बि० ममलूका सायल नं० २ मुस० नौशाईबेगम	२९ बी० २ बि०	३५।।।=)
२	,,	मौ० खलाबड़ा कलाँ प० खातौली मुहाल मुज़फ़्फ़रबिसाँ			३८ बी० १४ बि०	५०।।=)

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नं० १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम फतेहपुर

मुक़द्दमा नं० १३१ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी १३—१—१९३८ ई०

इंद्रदयालसिंह वग़ैरह वल्द बिसुनाथसिंह क़ौम ठाकुर साकिन सयाटी परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर

ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है। लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्था किए हुए ज़मीमों दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या इकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीम (क)

कर्जदार के इक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक
जायदाद इंद्रदयालसिंह सायल नं० १

१. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल हिस्सा —) ३ पाई मिनजुमला ।।) खाता नं० १ वाक़ै मौज़ा सयाटी परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर मालगुज़ारी १६।)।।। अबवाब १।।≡)

२. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल हिस्सा —) ६ पाई १० किरांत मिनजमला ।।) खाता नं० २ वाके मौजा सयाटी पट्टी रुस्तमअली परगना हथगाम जिला फतेहपुर मालगुजारी २१।—) ३ पाई अबवाब २=) ३, पाई

३. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल हिस्सा ६ पाई मिनजुमला १) खाता नं० १ वाके मौजा कराकर-नाई मुहाल बिसनाथसिंह परगना कूतला जिला फतेहपुर मालगुज़ारी २१।) अबवाब २=)

४. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल हिस्सा ३ पाई मिनजुमला १) खाता नं० १ वाके मौजा चमपतपुर परगना हथगाम जिला फतेहपुर मालगुजारी १२।)

५. जमींदारी मौरूसा काबिल इंतिकाल खाता नं० १ मिनजुमला ।—) ६ पाई ७ कि० ८ जौ ६ टून ५ रवा ७८ प० के ५ पाई १५ कि० ५ जौ ११ टून ५ रवा ५९$\frac{1}{2}$ प० जो रेहन है और उसके उसी क़दर हिस्सा का निस्फ है और वह भी रेहन है, वाकै मौजा रज़ोपूर चूलहा मुहाल बिसनाथसिंह पट्टी फतेहअली परगना हथगाम जिला फतेहपुर मालगुजारी १३।—) ४ पाई अबवाब १।—) ४ पाई

६. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल खाता नं० ३ मिनजुमला ।।) ६ पाई १ कि० ६ जौ ४ टून ३ रवा ७१ प० के —) ५ पाई ६ कि० ८ जौ १० टून १५ रवा २५$\frac{1}{3}$ प० जो रेहन है और मिनजुमला —) ५ पाई ६ कि० ८ जौ १० टून १५ रवा २५$\frac{1}{3}$ प० के निस्फ वह भी रेहन है, वाकै मौजा रजोपुर चूलहा मुहाल बिसनाथसिंह पट्टी मज़हरअली परगना हथगाम जिला फतेहपुर मालगुज़ारी १५) अबवाब १।)

जायदाद जग्गूसिंह सायल नं० २

१. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल खाता नंबर १ मिनजुमला ।।) के ८ पाई १० कि० वाकै मौजा सयाटी पट्टी सादिकअली परगना हथगाम जिला फतेहपुर मालगुजारी २५≡) ३ पाई अबवाब २।।) ३ पाई

२. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल खाता नं० २ मिनजुमला ।।) के ७ पाई १० कि० वाकै मौजा सयाटी पट्टी रुस्तमअली परगना हथगाम जिला फतेहपुर मालगुजारी २४।।—) ६ पाई अबवाब २।≡) ३ पाई

३. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल खाता नं० १ मिनजुमला १) के ।) आना वाकै मौजा कराकरनाई मुहाल बिसनाथसिंह परगना कूतला ज़िला फतेहपुर मालगुज़ारी २१।) अबवाब २=)

४. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल खाता नं० १ मिनजुमला १) के ३ पाई वाक़ै मौज़ा चमपतपुर परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर मालगुजारी १२।)

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

५. जमींदारी मौरूसी क़ाबिल इंतिकाल खाता नं० १ मिनजुमला ।—) ९ पाई ७ कि० ८ जौ ६ टून १५ रवा के ५ पाई १५ कि० ५ जौ ११ टून १५ रवा ५५½ प० का निस्फ हिस्सा जो रेहन है व मिनजुमला ५ पाई १५ कि० ५ जौ ११ टून ५ रवा ५½ प० के निस्फ जो महफूज़रेहन है, वाके मौजा रज़ोपुर चूलहा परगना हथगाम मुहाल बिसनाथसिंह पट्टी फतेहअली ज़िला फतेहपुर मालगुज़ारी १३।—) ४ पाई अबवाब १।—) ४ पाई

६. जमींदारी मौरूसी काबिल इंतिकाल खाता नं० ३ मिनजुमला ॥) ६ पाई १ कि० ६ जौ १ टून ३ रवा ७१ प० के —) ५ पाई ३ कि० ८ जौ १० टून १५ रवा ५½ प० का निस्फ जो रामजियावन के यहाँ रेहन है और मिनजुमला ॥) ६ पाई १ कि० ६ जौ ४ टून के —) ५ पाई ६ कि० ८ जौ १० टून १५ रवा २५½ प० जो महफूज़रेहन है वाक मौज़ा रज़ोपुर चूलहा परगना हथगाम मुहाल बिसनाथसिंह पट्टी मज़हरअली ज़िला फतेहपुर मालगुज़ारी ५१) अबवाब १॥)

आज बतारीख १७—९—१९३७ ई० मेरे दस्त ख़त और अदालत की मुहर से जारी किया गया।

मुंसरिम

---

२३ نومبر سنہ ۳۷ ع بغرض ادخال بیان تحریری

۲۹ ,, ,, تنقیحات

سمن بغرض قرارداد اُمور تنقیح طلب

جناب پنڈت پیارےلال بھارگو صاحب

عدالت دیوانی جناب اڈیشنل سیول جج صاحب بہادر سیتاپور مقام سیتاپور

مقدمہ نمبر ۳۰ سنہ ۱۹۳۷ ع

مدعی { ۱—سکھانند ۲—سیتہ‌چند } پسران نانک‌چند قوم سراوک ساکن موضع بلہرا پرگنہ فتح‌پور ضلع بارہ‌بنکی

بنام

مدعاعلیہم { ۱—ہرچرن‌لال ولد اچھن پرساد قوم کرمی ساکن کھپورہ پرگنہ و تحصیل فتح‌پور ضلع بارہ‌بنکی ۲—نورالحسن‌خاں ولد اصغرحسین خاں قوم شیخ ساکن متیورہ پرگنہ محمودآباد ضلع سیتاپور

واضح ہو کہ مدعیان نے تمہارے نام ایک نالش بابت وصولیابی حصہ ۱ آنہ ۴ پائی موضع متیورہ پرگنہ محمودآباد ضلع سیتاپور نے دایر کی ہے لہذا تمکو حکم ہوتا ہے کہ تم بتاریخ ۲۹ ماہ نومبر سنہ ۱۹۳۷ ع وقت ۱۰ بجے دن پر اصالتاً یا معرفت وکیل کے جو مقدمہ کے حال سے قرار واقعی واقف کیا گیا ہو اور جو کل امورات اہم متعلقہ مقدمہ کا جواب دے سکے یا جس کے ساتھہ کوئی اور شخص ہو جو جواب ایسے سوالات کا دے سکے حاضر ہو اور جوابدہی دعوی مدعی مذکور کی کرو اور تم کو ہدایت کی جاتی ہے کہ جملہ دستاویزات کو جن پر تم بتائید اپنی جوابدہی کے استدلال کرنا چاہتے ہو پیش کرو—

مطلع رہو کہ اگر بروز مذکور تم حاضر نہ ہوگے تو مقدمہ تمہاری غیر حاضری میں سموع اور فیصل ہوگا—

آج بتاریخ یکم ماہ نومبر سنہ ۱۹۳۷ ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا۔

شنکرلال منصوم

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इश्आ़त हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० द्वारिकाप्रसाद साहब शुक्ला स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम हरदोई
तारीख़ पेशी २२ दिसंबर सन् १९३७ ई०
मुक़द्दमा नंबरी नं० ७२ सन् १९३६ ई०

(१) गजराजसिंह वल्द पीतमसिंह
(२) शंकरसिंह } बालिगान पिसरान
(३) हरिहरसिंह } गजराजसिंह
(४) इंद्रविक्रमपालसिंह } बालिगान
(५) कृष्णपालसिंह }
(६) रामपालसिंह } नाबालिगान बविलायत
(७) रघुराजसिंह } शंकरसिंह पिदर खुद
(८) भगवानबख़्शसिंह } नाबालिगान पिसरान हरिहरसिंह बविलायत
(९) मक्कूसिंह } शंकरसिंह चचा हक़ीक़ी खुद
(१०) चंद्रपालसिंह नाबालिग वल्द इंद्रविक्रमसिंह बविलायत शंकरसिंह

अकवाम ठाकुर साकिनान व मौजा बरौली परगना बालामऊ तहसील संदीला ज़िला हरदोई सायलान

बनाम

कर्ज़ख़्वाह फरीकसानी

गंगाप्रसाद वल्द विशंभरनाथ कौम ब्राह्मण साकिन मौजा महमूदपुर मजरा महगवाँ परगना कल्यानमल तहसील संदीला जिला हरदोई

चूँकि गजराजसिंह वल्द पीतमसिंह साकिन मौजा बरौली जिला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है। लिहाजा हस्ब दफा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदरजे दफा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफसील मुंदरजा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा ममालिक मुतहदा

फेहरिस्त (अ)

कर्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिका आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा नंबर व बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देहंदा की मुस्तकिल काबिल वरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाग्रत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर तफसील मौजूदा मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	...	बरौली खाता नं० २ मय मजरा धौली जादलखेड़ा व बंजरहार व पकवनियाँ तकिया व रामपुर व शंकरपुर व समजखेड़ा व पहाड़पुर	२ बिस्वा १० बिस्वांसी	कुल	३३०) १९१) मुरतहनी ५२१)	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (ब)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बइस्तसनाय हक़ूक मालिकाना मुतालिक़ा आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

नं० सिल-सिला	नवइयत जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	हक मुरतहनी ६ बिस्वांसी ६ कचवांसी १३⅓ ननवांसी वाक़ै मौज़ा बरौली मय मजरा पट्टी अजोध्यासिंह परगना बालामऊ ज़िला हरदोई	कुल	
२	हक मुरतहनी १ बिस्वा १३ बिस्वांसी ६ कचवांसी १३⅓ ननवांसी वाक़ मौज़ा बरौली मय मुजराजात पट्टी बिसुनलाल परगना बालामऊ जिला हरदोई	⅓	
३	हक मुरतहनी १ बिस्वा १३ बिस्वांसी ६ कचवांसी १३½ ननवांसी वाक़ै मौज़ा बरौली मय मुजराजात पट्टी भगतसिंह जिला हरदोई	½	
४	एक रास गाय मय बछड़ा क़ीमती ५)	कुल	
५	मकान मसकूना वाक़ै मौज़ा बरौली परगना बालामऊ क़ीमती ५०)	,,	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १६ ऑक्टोबर १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४)

बअदालत जनाब पंडित द्वारकाप्रसाद शुक्ला स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर ११६ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ३ जनवरी सन् १९३७ ई०

१—रघुबरसिंह वल्द भुम्मासिंह
२—दलगंजनसिंह वल्द रघुबरसिंह
३—बाबूरामसरनसिंह
४—मोरध्वजसिंह
५—भैयासिंह
नाबालिग़ान पिसरान दलगंजनसिंह बरिफ़ाक़त पिदर ख़ुद

अक़वाम ठाकुर साकिन मौजा गाजू परगना व तहसील संडीला ज़िला हरदोई

क़र्ज़दार सायल

बनाम

गजोधरप्रसाद वग़ैरह

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि रघुबरसिंह वग़ैरह वल्द भुम्मासिंह साकिन मौज़ा गाजू ज़िला हरदोई ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस ज़ायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

फ़ेहरिस्त जायदादहाय पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतअल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय बंदोबस्त व माहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतकाल हक़ीयत की तसरीह	वसाइत हक़ीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहंदा मुंदरजा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	ज़मींदारी	गाजू परगना त० संडीला खा० ४-५ ६-७-८-९-१२-३२	२ बिस्वा १०बिस्वां०	मलिकाना	२००)	
२	,,	,,	वहीदन मज़रा गाजू परगना त० संडीला खा० ४-५-६ ७-८-९-१२ ३२	,,	,,	२००)	
३	,,	,,	गोठवा मज़रा गाजू परगना त० संडीला खा० ४-५-६ ७-८-९-१२ ३२	,,	,,	१२५)	
४	,,	,,	फ़तेहपुर म० गाजू परगना तह० संडीला खा० ४-५-६ ७-८-९-१२ ३२	,,	,,	१२५)	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक आराज़ी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसीअत इक्कीयत दरख्वास्त देहंदा	कैफ़ियत
१	रेहन दखली	१ बिस्वांसी १७ कच० १५ $\frac{५}{६}$ नन०	मौज़ा वहीदन मज़रा गाज़ परगना व तहसील संडीला ज़िला हरदोई
२	बैल	४ रास	
३	भैंस	२ ,,	
४	घोड़ा	१ ,,	
५	गाड़ी	२ मंजिल	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २६ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बनाम अशखास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुकाम हरदोई

मुकद्दमा नंबरी नंबर ३७५ सन् १९३६ ई०

पेशी ता० १७ दिसंबर सन् ३७ ई०

१—श्यामसिंह वल्द कालिकासिंह
२—मु० राजदुलारी ज़ौजे श्यामसिंह
३—जसकरनसिंह नाबालिग़ बविलायत श्यामसिंह पिदर खुद

अकवाम ठाकुर साकिनान मौज़ा बरौली परगना बालामऊ तहसील संडीला ज़िला हरदोई

क़र्ज़दार सायल

बनाम

मातादीन वग़ैरह

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि श्यामसिंह वग़ैरह वल्द कालिकासिंह साकिन बरौली ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है और चूँकि जायदाद जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त देहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिहाज़ा हस्ब दफा ११ (१) ऐक्ट मज़कूर तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मज़कूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्तप्रांतीय गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से ३ मास के अंदर एक दरख्वास्त अदालत हाज़ा में असालतन या बज़रिए मुख्तार मजाज पेश करो।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ)

क़र्ज़दार के हकूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
				हकीयत मालिकाना	बनामसायलनं० १		
				बि० बि० क० न०			
१	हरदोई		बरौली खास	१ १३ ६ १३⅓	कुल	मालगुजारी	
२	,,		घौली मज़रा बरौली	,, ,, ,, ,,	,,	तादाद तख-	
३	,,		जादौ खेरा ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,	मीनन	
४	,,		बंजर हार ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,	२३४॥।)॥।	
५	,,		पटकुइयाँ ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,	एकजाई	
६	,,		तकिया ,,	,, ,, ,, ,,	,,	बमूजिब	
७	,,		रामपुर ,,	,, ,, ,, ,,	,,	खेवट	
८	,,		शंकरपुर ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
९	,,		भमुआँ खेरा ,,		,,		
१०	,,		पहाड़पुर ,,		,,		
			हकीयत मालिकाना	बनाम सायल नं० २			
				बि० बि० क० न०	,,		
११	,,		बरौली खास	१ १३ ६ १३⅓	,,		
१२	,,		घौली मज़रा बरौली	,, ,, ,, ,,	,,		
१३	,,		जादौ खेरा ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
१४	,,		बंजर हार ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
१५	,,		पटकुइयाँ ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
१६	,,		तकिया ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
१७	,,		रामपुर ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
१८	,,		शंकरपुर ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
१९	,,		भमुआँ खेरा ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		
२०	,,		पहाड़पुर ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,,		

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्त देहंदा	कैफ़ियत
१	बरौली खास पट्टी अयोध्यासिंह १४ बिस्वा १३ बिस्वांसी आराजी निस्बत नं० १०४८ वे	१/६	
२	पट्टी विशुनलाल मौजा बरौली आराजी नंबरी १०५४ तादादी २/४	१/३	
३	पट्टी मंगलसिंह खाता नं० ३ मौज़ा बरौली आराज़ी नंबरी १०४८/॥/४ व ८८०/१॥।/२ व ९००/१।१३	१/३	
४	थोक मंगलीसिंह पट्टी नं० ४ वाकै मौज़ा बराली खास बाबत नंबरान २१२/२/४ व ३६०/२/२ वे व २००/१॥।/२ व ९००/१॥।/३	१/६	
५	एक किता मकान खाम वाक मौजा बरौली कीमती तखमीनन ६००)		
६	एक किता बाग़ वाकै मौज़ा मज़कूर कीमती तखमीनन २००)	१/६	
७	एक रास भैंस कीमती तखमीनन ४०)		

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख ९ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुकद्दमा नंबरी नंबर ४०३ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी ६—१—१९३८ई०
सूबेदार वल्द दयाशंकर क़ौम ब्राह्मण सानकि मौज़े सराबर परगना पँडुरवा तहसील शाहाबाद ज़िला हरदोई क़र्ज़दार सायल

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बनाम

मथुराप्रसाद वग़ैरह

कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि सूबेदार की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िम्न (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्त-हाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदरजा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफ़ियत
१	हरदोई		मौज़े सरावर थोक छब्बा पट्टी सूबेदार खाता नं० १४	मालिकाना	६ बिस्वांसी १० कचवांसी	३३-)	
२	,,		मौज़े सरावर थोक मथुराप्रसाद पट्टी अयोध्या खाता नं० २२	मालिकाना	६ बिस्वांसी १० कचवांसी	३०)	

फ़ेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	बैल	२ रास	
२	भैंस	१ रास	
३	गाय	१ रास	
४	बछिया	१ रास	
५	लहड़ू	१ मंजिल	
६	गाड़ी	१ मंजिल	
७	किता मकान मय गोड़ा खाम वाक़ै मौज़ा सरावर परगना पँडुरवा	१ किता	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २९ ऑक्टोबर, १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़ारज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब चौधरी विशंभरनाथ साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ४९४ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ५ जनवरी सन् १९३८ ई०

१—दयाशंकर वल्द श्यामचरन
२—ब्रजकिशोर } नाबालिग़ान पिसरान
३—कौशलकिशोर } दयाशंकर बवि० छोटेलाल

अक़्वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा खेरिया परगना सरहजनूबी ज़िला हरदोई
क़र्ज़दार सायलान

बनाम

लक्ष्मीनाथ वग़ैरह
क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि दयाशंकर वग़ैरह साकिन मौज़े खेरिया ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है। लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तकिल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसीअत हक़ीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	...	मौजा अतबहा परगना सरहजनूबी	हक़ीयत ज़मीदारी	१ बिस्वा ५ बिस्वां० पट्टी रघुबरचरन खाता खेवट ५	१५)	
२	,,	...	,,	,,	६ बिस्वां० ५ कच० मिन० १२ बिस्वां० पट्टी रामचरन खाता खेवट ९	१।)	
३	,,	...	मौजा खेरिया परगना सरहजनूबी	,,	आराज़ी तादादी ३४।।५१ के निस्फ़ का ५/८ हिस्सा मौकूबा खाता खेवट १४	१४-)	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २८ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।
मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

بدست عرام فووخت کے لئے]

نمونہ نمبر ۱۷۰

فارم اطلاع نامہ حسب دفعہ ۱۱ ایکٹ جایدادھاے مقروضہ ممالک متحدہ

بعدالت مسٹر ہرپرساد گپتا صاحب بہادر اسپیشل جج درجہ دوم الہ آباد

نمبر مقدمہ ۳۱۳ سنہ ۱۹۳۶ ع

ہرگاہ شیخ ظفرالحق ولد شیخ عبدالحق ساکن سید سرادان پرگنہ چائل ضلع الہ آباد حال سنٹری انسپکٹر ریلوے اسٹیشن مغل سراے ضلع بنارس—

نے ایک درخواست حسب دفعہ ۴ ایکٹ جائدادھاے مقروضہ پیش کی ہے—

لہذا اس تحریر کی روسے حسب دفعہ ضمنی ۱ دفعہ ۱۱ ایکٹ مذکور اطلاع دیجاتی ہے کہ اُس جائداد کو جس کی تفصیل ضمیمہ ھاے منسلکہ میں درج ہے درخواست دھندہ نے حسب دفعہ ۸ یا حقداران نے حسب دفعہ ۱۰ سائل مذکور کی جائداد بتایا ہے—

اگر کوئی شخص جائداد مذکور پر کوئی دعوی رکھتا ہو تو وہ اس اشتہار کے گزٹ ممالک متحدہ میں شائع ہونے کی تاریخ سے تین ماہ کے اندر اپنے استحقاق کے بارہ میں اُس حکم کے روبرو اپنی عرضی پیش کرے جس کے دستخط ذیل میں ثبت ہیں—

ضمیمہ (الف)

فہرست جائداد زمینداری

۱—موضع سید سرادان محال امان علی پرگنہ چایل	کھاتہ کھیوت نمبری ۲ و ۳ و ۲۱ و ۶۷ و ۶۹ و ۷۳ و ۷۴ و ۷۵ و ۷۶ و ۷۷ و ۷۸ و ۷۹ و ۸۰ و ۸۱ و ۸۲ و ۸۳ و ۸۴ و ۸۵ و ۸۶ جملہ رقبہ ۱۵۰ بیگہ ۱۸ بسوا ۲ بسوانسی جمعی ۲۴۸ روپیہ ۴ آنہ ۷ ½ پائی
۲—موضع حافظاپور محال امان علی پرگنا چائل	کھاتہ کھیوت نمبر ۹ و ۱۰ جمعی ۱ روپیہ ۳ آنہ ۳ پائی
۳—موضع جیدپور محال امان علی پرگنہ چایل	کھاتہ کھیوت نمبر ۲ و ۳ و ۴ جمعی ۱۸ روپیہ ۸ آنہ ۲ پائی
۴—موضع ناھرپور محال امان علی پرگنہ چایل	کھاتہ کھیوت نمبر ۱ و ۳۴ و ۴۰ و ۴۱ جمعی ۳۰ روپیہ ۸ آنہ
۵—موضع قطن الدین پور محال امان علی پرگنہ چایل	کھاتہ کھیوت نمبر ۱ و ۱۹ و ۲۲ و ۲۳ و ۲۴ و ۲۶ جمعی ۸ روپیہ ۸ آنہ ۸ پائی
۶—موضع رتگھا محال امان علی پرگنہ چایل	کھاتہ کھیوت نمبر ۱ جمعی ۵ آنہ
۷—موضع محمدپور تیوا محال امان علی پرگنہ چایل	کھاتہ کھیوت نمبر ۲ و ۲۲ و ۲۳ جمعی ۱۵ روپیہ ۷ آنہ ۱ ½ پائی
جملہ ۳۲۲ روپیہ ۱ آنہ ۲ پائی	

منجرم

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फरोख़्त के लिये

नमूना नंबर १६६

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ६ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

इश्तिहार

मुतफ़र्रिका

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल फर्रुख़ाबाद

मुक़द्दमा नंबर २ सन् १९३७ ई०

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है।

१—नवाबसिंह } पिसरान रघुबीरसिंह
२—हाकिमसिंह }

३—बीरभानसिंह बालिग़ } पिसरान नवाबसिंह बत्रिलायत
४—उदैभानसिंह नाबालिग़ } नवाबसिंह पिदर खद

५—चंद्रभानसिंह
६—सूरजभानसिंह
७—बिंद्रासिंह } पिसरान नाबालिग़ान हाकिमसिंह
८—हरेंद्रसिंह } बविलायत नवाबसिंह पिदर खद
९—नरेंद्रसिंह

अकवाम ठाकुर साकिनान मौज़ा अगौस परगना तिरवठ ज़िला फ़र्रुख़ाबाद सायलान

बनाम

१—शाह बदूधजी वल्द खुन्नूलाल क़ौम साध साकिन शहर फ़र्रुख़ाबाद मुहल्ला सधबाड़ा ज़िला फ़र्रुख़ाबाद
२—छोटेलाल वल्द मोहनलाल क़ौम ब्राह्मण माड़वारी साकिन मौज़ा नगरया परगना बिधूना ज़िला इटावा

क़र्ज़ख़्वाहान

ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ६ (१) जायदादहाय मक़रूज़ा सयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई०, जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिग्री किए हुए और बिना डिग्री किए हुए निज के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर एक दावा डिग्रीशुदा या ग़ैरडिग्रीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला अग़राज़ व मौरक़ाजात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाजाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुकाम हरदोई

मुकद्दमा नंबरी नंबर ३६२ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ६—१—१९३८ ई०

सै० अलीहामिद शाह उर्फ नन्हें मियाँ वल्द अब्दुल्लाहुसेन साकिन साँडी मुहल्ला पीरज़ादा परगना साँडी जिला हरदोई

क़र्ज़दार सायल

बनाम

रामभरोसे वग़ैरा

क़र्ज़ख़्वाह फरीकसानी

चूँकि सै० अलीहामिद शाह वल्द अब्दुल्लाहुसेन साकिन साँडी ज़िला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजो पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वा- पेश करे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
१	हरदोई		साँडी मुहाल सीसाला खाता नं० ५	१३ बीघा १८ बि०	कुल		नं० बाबत खाता नं० ५ साँडी मुहाल सीसाला = १०१२/२३ व
२	,,		साँडी मुहाल सीसाला खाता नं० ८	१४ बीघा ७ बि० जुज रहनी	,,		१००८/१४ व १०१०/१७ व १००९/१२ व
३	,,		साँडी मुहाल सीसाला खाता नं० ३	१५ बीघा ६ बि०	कुल	२५)	१०१४/२५ व १०१५/२४ व १०१७/१५१ व १०११/१५१२ व १०१३/२७ व १०१६/२४ व
४	,,		हूसेपूर मुहाल पंजसाला खाता नं० ५	३ बीघा ९ बि०	,,		१०१८/१५५ व ८५१/३५१० व ८३९/२५ जुमला १५५४ में १३५१८
५	,,		हूसेपुर मुहाल-सीसाला खाता नं० ४	८ बीघा १९ बि०	,,		नं० बाबत खाता नं० ८ जुज रहनी साँडी मुहाल सीसाला
६	,,		चौधरियापूर खाता नं० १५	३ बीघा	,,		७६२/१५१२ व ८३६/७५ व १०९१, १०९२/५५४ जुमला १४५७
							नं० बाबत खाता नं० ३ साँडी मुहाल सीसाला १०७९/९५१४ व १०८०/५५३ व ११६१/५७ व ८३८/५२ जुमला १५५६
१	हरदोई		साँडी मुहाल सीसाला	आराजी नं० १२००/११ हाल व १०५५/१०३३ साबिक तादादी ७ बि० पुख्ता व नं० ११७० व ११६८ व ११६९ हाल व साबिक नं० १०५५ मिनजुमला तादादी ३ बिस्वा पुख्ता			यह जायदाद महाजन नं० १ ने अपने बयान तहरीरी में दिखलाई है
१	,,		,,	आराजी नं० ११७० व ११७१			यह जायदाद महाजन नं० ३ व ४ ने अपने बयान तहरीरी में दिखाई है

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्त देहंदा	कैफ़ियत
१	बागात मालिकाना वाक़ै साँडी मुहाल सीसाला	नं० १०७९ हाल व $\frac{९२१}{२}$ व $\frac{९२१}{२}$ साबिक	यह जायदाद महाजन नं० १ ने अपने बयान तहरीरी में दिखलाई है
१	बाग़ कलमी वाक़ै साँडी मौसूमा नौधा	$\frac{९२२}{१०८०}$ तादादी ५ बीघा पुख्ता	यह जायदाद महाजन नं० ६ ने अपने बयान तहरीरी में दिखाई है

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख २९ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई
मुक़द्दमा नं० ५९४ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ४—१—१९३८ ई०

१. मुसम्मात छुटका बेवा द्वारकाप्रसाद
२. गंगाप्रसाद } पिसरान
३. काशीप्रसाद } द्वारकाप्रसाद
४. शांतिस्वरूप नाबालिग़ बविलायत गंगाप्रसाद पिदर खुद
५. रामसरूप } नाबालिग़ान पिसरान काशी-
६. राधेश्याम } प्रसाद बविलायत पिदर खुद

अकवाम ब्राह्मण पेशा जमींदारी साकिनान शिवबक्शपुरवा मजरा गुरा परगना गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई

कर्ज़दार सायलान

बनाम

शंकरप्रसाद वग़ैरा

कर्ज़ख्वाह फरीकसानी

चूँकि सायलान मजकूरा बाला साकिन शिवबक्सपुरवा ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़) कर्ज़दार हुकूक के मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर व हल्क़ा व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तसखीस मालगुजारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	×	नयागाँव हबीबपुर मु० चित्तरकुँअरि खातानं.१	२० बिस्वा	कुल	४६॥-)	
२	,,	×	नयागाँव हबीबपुर मुहाल भूपसिंह	४ बिस्वा मिनजुमला बिस्त बिस्वा	,,	९॥-) ७ पाई	
३	,,	×	अख्तयारपुर मज़रा रारा खाता नं०११	१ बिस्वा	,,	३३-) ६ पाई	

फेहरिस्त (बे) कर्जदार की जायदाद जो ब इस्तिनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफ़ा ६० शान्ता दीवानी १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसायत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१.	एक किता मकान खाम वाकै मौजा शिवबक्सपुरवा मजरा रारा परगना गोपामऊ		
२.	हक मुरतैहनी १ बिस्वांसी १३ कचवांसी ५ ननवांसी मुहाल अयार वाकै मौजा नन्हे पर० गोपामऊ दस्तावेज नविश्ते सीताराम बहक द्वारकाप्रसाद तादादी ६००)		
३.	एक किता दस्तावेज रेहननामा नविश्ते रायसाहब ठा० भभूतीसिंह व भूधरसिंह बहक द्वारकाप्रसाद तादादी २३००) सन् १९२८ ई०		
४-७	बैल २ रास, भैंस १ रास, गाय १ रास, गाड़ी १ मंजिल		
८.	एक किता डिगरी इस्मी द्वारकप्रसाद बनाम रघुबरसिंह इजलासी मुंसफी शुमाली हरदोई तादादी ९३४) मय खर्चा		
९.	बर्तन बिरंजी खानेदारी इस्तेमाली तखमीनन २० सेर		
१०.	एक अदद साइकिल		
११.	एक किता प्रोनोट नविश्ते ठा० हेमसिंह बहक द्वारकाप्रसाद तादादी १८००) मुवर्रखा २ सितंबर १९३२ ई०		

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २५ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा
संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई

मुकद्दमा नं० ४१४ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी २० दिसंबर १९३७ ई०

१—सूरतसिंह वल्द खुशालसिंह
२—परमेश्वरबख्शसिंह
३—महावीरसिंह
४—हरिहरसिंह
५—कृष्णपालसिंह

नाबालिगान पिसरान परमेश्वरबख़शसिंह बरीफाकत परमेश्वरबख्शसिंह पिदर खुद

अकवाम ठाकुरान साकिन मौजा भदैचा परगना बंगर तहसील व ज़िला हरदोई

सायलान

बनाम

मुंशीसिंह वगैरह

फरीकसानियान

चूँकि सायलान मजकूरैन साकिन भदैचा ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुतालिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे। फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तश-खीस मालगुजारी	कैफियत
१	हरदोई	मौजा भदैचा	मालिकाना	$\frac{७}{२४}$ हिस्सा मिनजुमला ९९५ बीघा १२ बिस्वा ५ बिस्वांसी	१७०)		जिसकी खेवट सायल नं० १ है
२	,,	मौजा भदैचा	,,	$\frac{१}{२}$ हिस्सा मि० ९९५ बीघा			जिसकी खेवट सायल नं० २ है
३	,,	मौजा जूरा	,,	$\frac{७}{४८}$ हिस्सा मि० २०१ बीघा ६ बिस्वा १० बिस्वांसी			जिसकी खेवट सायल नं० १ है
४	,,	मौजा जूरा	,,	$\frac{१}{२}$ हिस्सा मि० २०१ बीघा ६ बिस्वा १० बिस्वांसी			जिसकी खेवट सायल नं० २ है
५	,,	मौजा जरा खाता खेवट नं० ९	,,	७ बीघा ९२ बिस्वा $\frac{१}{२}$ बिस्वांसी			जिसकी खेवट सायल नं० १ है
६	,,	मौजा जरा खाता खेवट नं० ९	,,	२ बीघा ३ बिस्वा १४ बिस्वांसी			जिसकी खेवट सायल नं० २ है

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो व इस्तिनाय हुकूक मालिकाना मुतालिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत इकीयत दरख्वास्त दिहिंदा	कैफियत
	गाय	२ रास	
	बैला	२ रास	
	भैंस	२ रास	
	लहड़ू	१ मजिल	
	बछड़ा	१ रास	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १६ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब चौधरी विशंभरनाथ साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ४९९ सन १९३६ ई० तारीख पेशी ४ जनवरी १९३८

१—हरसेवक वल्द द्वारिकाप्रसाद
२—ज्वालाप्रसाद
३—गोकरनप्रसाद } पिसरान हरसेवक
४—अमरनाथ
५—चंद्रसेन } नाबालिग़ान पिसरान
६—उग्रसेन } ज्वालाप्रसाद बरिफ़ाक़त
७—सुरजसेन } हरसेवक मजकूर

अकवाम ब्राह्मण साकिन सरदापूर परगना गोपामऊ तहसील व जिला हरदोई

कर्जदार सायलान

बनाम

लछमीनारायन वग़ैरा

कर्जख्वाह फ़रीकसानियान

चूँकि हरसेवक वग़ैरा साकिन मौजा सरदापूर जिला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुन्सलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस वह इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दस्तखत पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुन्दर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर व बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीकत दरख्वास्त-देहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलक्टर लिला	दरख्वास्त देहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीसमालगुजारी	कैफियत
१	हरदोई	०	मौजा सरदापूर परगना गोपामऊ	हकीयत जमींदारी	५ बिस्वा	७५।।=)	
२	,,	०	मौजा हूसेपूर खाता नं० ५ मुहाल पूरब पट्टी मुगजेह-हुसेन	,,	६ बिस्वा १० बिस्वांसी	४११=)।	
३	,,	०	मौजा हूसेपूर मुहाल पूरब पट्टी भभूतीसिंह खाता नं० १	,,	१४ बिस्वा	१।।।=)	
४	,,	०	मौजा बहौली परगना गोपामऊ	आराजी मातहदारी	एकचहारुममिनजुमले ६६ बीघा ८ बिस्वा		

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो ब इस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजहस्ब दफा ६० जान्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

सराहत जायदाद ममलूका सायलान

हकूक मुरतहानी मुतालिक एक शिशुम हकीयत मिनजुमले बिस्तबिस्वा वाकै मौजे थोक कतूलपूर परगना गोपामऊ नविश्ते साँवलसिंह मौसूमे हरसेवक तदादी १४०००) अलावा सूद

गाय	भैंस	लहड़ू	तखत	मीजान
एक रास ९०)	एक रास ३५)	एक मंजिल २५)	चोबी ५)	७५)

तफसील जायदाद मुन्दरजे बयान तहरीरी मुखबासीलाल फरीकसानी नं० ११

बैल	गाय	लड़ी	बरतन हर किस्म	जेवर तिलाई व नुकरई	गल्ला हर किस्म
८	२१	२	६०)	१०००)	६००)

पारचापेशदेनी	कालीन	जाजम	चारपाई
१००)	२	२	१५

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २६ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला सीतापुर

मुकद्दमा नंबर २५३ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ९-१२-१९३७ ई०

१—श्रीराम
२—राधेश्याम
} बिसरान महादेवप्रसाद

३—सुरेंद्रनाथ नाबालिग वल्द गयाप्रसाद बविलायत मुसम्मात जुमनादेई मादर खुद
४—बुधसागर नाबालिग बविलायत श्रीराम पिदर खुद

} अकवाम ब्राह्मण साकिनान मौजा कैमहरा प० ब तहसील मिसरिख जिला सीतापुर सायलान

बनाम

१—धरमेश्वर वल्द रामदीन
२—गिरजादयाल वल्द उमराव
३—कन्हैयालाल वल्द केदारी
} अकवाम ब्राह्मण साकिनान मौजा भटपुरवा परगना व तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

४—शिवप्रसाद वल्द चुन्नीलाल कौम ब्राह्मण साकिन कैमहरा परगना व तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

५—ब्रह्मादीन वल्द गौरीशंकर कौम बक्काल साकिन सीतापुर मुहल्ला बनियन टोला परगना व तहसील व जिला सीतापुर

६—रामकुमार वल्द लालताप्रसाद कौम बक्काल साकिन तामसेनगंज सीतापुर परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर

७—लल्लूराम वल्द श्रीकिसन कौम ब्राह्मण साकिन नई बस्ती सीतापुर परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर

फरीकसानियान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे जैल दरख्वास्तकुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रहे जैल हासिल हो, तो वह अंदर मीयाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

तफसील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व जिला	नाम महाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	मौजा कैमहरा परगना व तहसील मिसरिख जिला सीतापुर	...	३½ बिस्वा बाजाफा हक जिठांसी फीसदी ५॥।—) मिनजुमले २० बिस्वा	हकीयत जमींदारी हक आला मौरूसी	७७॥।≡)	७॥।—)
२	मौजा टिकारा खुर्द नं० हदबस्त २१० परगना व तहसील व जिला सीतापुर	...	हिस्सा ½ बाजाफा जिठांसी फीसदी ५॥।—) मिनजुमले ५ बिस्वा	,,	१८)॥	१॥।)॥।
३	मौजा हरदोरपुर नं० हदबस्त ६३९ परगना व तहसील व जिला सीतापुर	.	मिनजुमले २० बिस्वा हिस्सा ½ बाजाफा जिठांसी फीसदी ५॥।—) मिनजुमले ५ बिस्वा मिनजुमले २० बिस्वा	,,	१३॥≡)॥।	१।=)।

फेहरिस्त (जीम)

१—अद्धा १ अदद २५) २—गाय १ रास ८) ३—चौकी चोबी १ अदद ३), मीजान ३६)

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नं० १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला बस्ती

मुकद्दमा नं० ८७३ सन् १९३६ ई०

रियायतअली, अजमतअली पिसरान अमानतुल्लाह, हसनरजा बालिग, तवक्कलहुसेन, नूरुलयहिया, मुहम्मद सईद नाबालिगान बविलायत हसनरजा पिस० शाकिरअली, हैसियतअली, शौकतअली पिस० अजमतअली, अलीरजा वल्द रियासतअली, मु० वजीरन बीबी व मु० सवाल बीबी व बहुरुलन्निसां बीबी साकिनान चाई कलाँ तप्पा अमानाबाद पो० मगहर पूर्व जिला बस्ती ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

कर्ज़दार के हक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत का विस्तार जो रजिस्ट दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी
१	बस्ती		चाई कलाँ तप्पा अमानाबाद प्र० मगहर पूर्व खाता नं १३		=) ५ पाई ६ दंत ७ कंत	
२	,,		चाई खुर्द तप्पा व परगना मज़कूर खाता नं० ४		=) ६ पाई १ ३/६ दंत	

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

सिलसिले का नंबर और जायदाद की क़िस्म		दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)
१— बैल	२ रास	१४०)
२— बटुली	४ रास	७)
३— लोटा	३ रास	६)
४— बरतन		१०)
५— मकान दो किता वाकै मौज़ा चाई कलाँ		१५०)

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ६ ऑक्टोबर, १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

سمن بغرض قرارداد اُمور تنقیح طلب

بعدالت جناب منصف صاحب بہادر حوالی لکھنؤ

مقدمہ ابتدائی نمبر ۱۸۴ سنہ ۱۹۳۷ع

سریمتی سومترہ دیوی زوجہ راے بہادر پنڈت سنکٹھاپرساد باجپیئی ساکن لکھیمپور پرگنہ و ضلع کھیری — مدعیہ

بنام

گیادین وغیرہ — مدعاعلیہ

بنام ۱—گیادین عمر تخمیناً ۶۰ سال } پسران نندلال
۲—چندی پرساد عمر تخمیناً ۵۵ " }
۴—مسماۃ بہسہ عمر تخمیناً ۵۵ سال بیوہ نیک رام
۵—رامچندر عمر تخمیناً ۲۸ سال ولد گیادین
} اقوام برھمن ساکنان موئی پنڈیانہ پرگنہ بجنور ضلع لکھنؤ

۷—مسماۃ مینڈا عمر تخمیناً ۴۰ سال زوجہ شیودت قوم برھمن ساکن موندہ پرگنہ کاکوری ضلع لکھنو

واضح ہو کہ مدعیہ نے تمھارے نام ایک نالش بابت استقرار حق کے دایر کی ہے لہذا تمکو حکم ہوتا ہے کہ تم بتاریخ ۸ ماہ دسمبر سنہ ۱۹۳۷ع وقت ۱۰ بجے دن پر اصالتاً یا معرفت وکیل کے جو مقدمہ کے حال سے قرار واقعی واقف کیا گیا ہو اور جو کل امورات اہم متعلقہ مقدمہ کا جواب دے سکے یا جس کے ساتھہ کوئی اور شخص ہو جو جواب ایسے سوالات کا دے سکے حاضر ہو اور جوابدہی دعویٰ مدعی مذکور کی کرو اور تم کو ہدایت کی جاتی ہے کہ جملہ دستاویزات کو جن پر تم بتائید اپنی جوابدہی کے استدلال کرنا چاہتے ہو پیش کرو—

مطلع رہو کہ اگر بروز مذکور تم حاضر نہ ہوگے تو مقدمہ تمھاری غیر حاضری میں مسموع اور فیصل ہوگا—

آج بتاریخ ۱۶ ماہ نومبر سنہ ۱۹۳۷ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا—

منصرم

नमूना नंबर १७० [बदस्त अवाम फ़रोख्त के लिये

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब मिस्टर ओमप्रकाश साहब एम्० ए०, एल्-एल्० बी० स्पेशल जज दरजा दोयम एटा

मुकद्दमा नं० ४३९ सन् १९३७ ई० तारीख पेशी २०—१—१९३८

हरगाह मुसम्मात कलावती व गंगादेवी दुख्तरान सुंदरलाल कौम ब्राह्मण साकिन बदायूँ मुहल्ला कानूनगोयान ज़िला बदायूँ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा १ ज़िम्नी दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह उस तारीख से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख है, ३ मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

१—हकीयत जमींदारी ६ बिस्वा १३ बिस्वांसी ६ ⅔ कचवांसी वाके मौज़ा पाठकपुर तहसील कासगंज जमई २०१=) ८ पाई खेवट नं० १

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२—हकीयत जमींदारी ६$\frac{२}{३}$ बिस्वा मौजा देवपुर परगना उलाई तहसील कासगंज जमई १३६।-) ३ पाई खेवट नं० ३ पट्टी सीताराम

३—हकीयत ज़मींदारी २ बिस्वा ८ बिस्वांसी १ कचवांसी ५ ननवांसी में $\frac{१}{२}$ का $\frac{२}{३}$ हिस्सा सायलान जमई ७।॥≋)७ पाई कुल मालगुजारी खेवट नं० १४ पट्टी सुंदरलाल मौज़ा हिम्मतनगर बजेहरा मुहाल पछायां पुख्ता परगना निधपुर

४—हकीयत ज़मींदारी २ बिस्वा ८ बिस्वांसी १ कचवांसी ५ ननवांसी मालगुजारी ६८) १० पाई मय अबवाब में निस्फ़ का $\frac{२}{३}$ हिस्सा सायलान खेवट १२ पट्टी सुंदरलाल मौजा हिम्मतनगर बजेहरा मुहाल पछायाँ खाम परगना निधपुर

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बहराइच

इब्तिदाई मामूली मुकद्दमा नं० ६३ सन् १९३६ ई० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट

तारीख पेशी २२ दिसंबर सन् १९३७ ई०

१—सैयद मुहम्मदहुसैन
२—सैयद मुहम्मदहसन
} पिसरान आशिकअली अकवाम सैयद साकिनान व जमींदारान मौजा नगरौर परगना बहराइच जिला बहराइच

कर्ज़दार सायलान

बनाम

राजा वीर इंद्रविक्रमसिंह साहब ताल्लुक़दार रियासत पयागपुर परगना व ज़िला बहराइच

कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि १—सैयद मुहम्मदहुसैन २—सैयद मुहम्मदहसन वल्द आशिकअली साकिन नगरौर जिला बहराइच ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफा ११ ज़िम्न (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास क अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदरजा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल वरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बवासाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जा जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तफसील मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बहराइच	खाता खेवट नं ५	मौजा नगरौर मुहाल खादिम-हुसैन हदबस्त नं० ५६३	एकड़ डिसमिल ०—६ जमींदारी मौरूसी	एकड़ डिसमिल ०—६	मय अबवाब रु०-आ० पाई ०—०—८	मय अबवाब
२	,,	,, १७	,,	२२—११$\frac{२}{३}$,,	२२—११$\frac{२}{३}$	२६—५—८	,,
३	,,	,, १८	,,	१६—८४ ,,	१६—८४	१२—३—२	,,
४	,,	,, २०	,,	०—६७ ,,	०—६७	०—११—०	,,
५	,,	,, २१	,,	०—३०$\frac{१}{२}$,,	०—३०$\frac{१}{२}$	०—१—१०	,,
६	,,	,, २३	,,	०—१६$\frac{१}{४}$,,	०—१६$\frac{१}{४}$	०—२—१०	,,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तसनाय हक़ूक मालिकाना मुताल्लिका आराज़ी हस्ब दफ़ा ६०

ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

१ मकान मसकूना वाकै मौजा नगरौर महमूदा जैल जो हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी काबिल कुरकी व नीलाम नहीं है—
पूर्व मकान मसकूना सैयद इफ्तिखारहुसैन व मुसम्मात कनीज सैयदा बेगम, पच्छिम अहाता बगीचा सैयद इफ्तखारहुसैन व मुसम्मात कनीज सैयदा बेगम, उत्तर इमामबाड़ा, दक्खिन रास्ता व मकान मसकूना सैयद बदरुलहसन

२ पतीली मिसी २
३ रकाबी ,, २
४ कटोरा ,, २
५ लोटा पीतल १
६ तवा आहिनी १
७ कफगीर ,, १
८ चारपाई चोबी २
९ दरी २
१० रजाई २
११ पारचा पोसी दनी मुसतामला ४ जोड़
१२ गगरे आहनी २
१३ चौकी चोबी १

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १८ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बहराइच
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ५३ सन् १९३६ ई०
पेशी ता० १० दिसंबर सन् १९३७ ई०

कर्जदार सायल

जंगबहादुरसिंह वगैरह

बनाम

रामबहादुरसिंह वगैरह

कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि जंगबहादुरसिंह वगैरह साकिन बसंतपूर जिला बहराइच ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० इनकंबर्ड मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

तफसील जायदाद

१ मौजा बसंतपूर परगना हिसामपूर हकीयत जमींदारी ४८ एकड़
२ मौजा विशनूपूर परगना हिसामपूर हकीयत जमींदारी ६ ,,
३ मौजा हरिहरपूर परगना हिसामपूर हकीयत जमींदारी २४ डिस०

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १६ नवंबर १९३७ ई० जारी हुआ।

स्पेशल जज

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३२ ई०)

बअदालत ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी ७१ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १३ दिसंबर १९३७ ई०

शफीअहमदखाँ वल्द मुहम्मद बशीरअहमदखाँ साहब कौम पठान साकिन मिरजागंज परगना व तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

बनाम

सैयद हसन वग़ैरह

बनाम—१ – सैयद हसन वल्द सैयद अब्दुलहक़ सा० मिर्ज़ागंज परगना मलिहाबाद जिला लखनऊ

२ जियाबुलहसन वल्द अनवारुलहसनखाँ कौम पठान सा० मिरजागंज परगना मलिहाबाद जि० लखनऊ

३—महेशप्रसाद वल्द कालकाप्रसाद कौम कायस्थ साकिन महेशप्रसाद स्ट्रीट मौलवीगंज, शहर लखनऊ

४—मन्नीलाल वल्द लाला लल्लूमल कौम वैश्य साकिन मशकगंज शहर लखनऊ

५—मुसम्मात बिसमिलबेगम बेवा मुहम्मदबशीरअहमद कौम पठान साकिन मिरजागंज जिला लखनऊ

६ – माधुरीशरन वल्द परभूदयाल रस्तोगी साकिन नाला बेगमगंज शहर लखनऊ

७—मुसम्मात शईदा बेगम जौजे शफीअहमदखाँ साकिन मिरजागंज परगना मलिहाबाद जिला लखनऊ

फ़रीकसानियान

चूँकि शफीअहमदखाँ वल्द मुहम्मद बशीरअहमदखाँ साकिन मिरजागंज जिला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्त हाय मुनसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त-देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद जाहिर की है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के गजट संयुक्तप्रांत में शाया होने की तारीख से तीन माह के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्ज़ाख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	लखनऊ	जमींदारी	मौजा सरावन प० व त० मलिहाबाद जि०लखनऊ	काबिल विरासत व काबिल इंतिकाल	आराजी तादादी ३ बीघा ५ बिस्वा मिनजुमला ६ बीघा १५ बिस्वा मुनदर्जा खाता खेवट नं० ८ मुसल्लम मोहाल शफीअहमदखाँ		
२	,,	,,	मौजा सैदापुर प० व तह०मलिहाबाद जिला लखनऊ	,,			

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

३	लखनऊ	जमींदारी	मौजा भदेसरमऊ परगना व त० मलिहाबाद जिला लखनऊ	काबिल विरासत व काबिल इंतिकाल	हिस्सा जमींदारी तादादी २ आना ८ पाई
४	,,	,,	कस्बा मलिहाबाद जिला लखनऊ	,,	६ बीघा ४ बिस्वा मिनजुमला ४४ बीघा ८ बिस्वा ५ बिस्वांसी खाता खेवट नं० ४३३
५	,,	,,	,,	,,	३ बीघा १२ बिस्वा ५ बिस्वांसी मिन० ७ बीघा ४ बिस्वा १० बिस्वांसी खाता खेवट नं० ४३४
६	,,	,,	,,	,,	१५ बिस्वांसी मिन० ५ बीघा ५ बिस्वांसी खाता खेवट नं० ४३५
७	,,	,,	,,	,,	२ बिस्वा ५ बिस्वांसी मिन० २ बीघा ७ बिस्वा खाता खेवट नं० ४६
८	,,	,,	,,	,,	१ बिस्वा १० बिस्वांसी मिनजुमला ५ बिस्वा १० बिस्वांसी खाता खेवट ५१७/४६

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहैसियत हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	मियाना	१ अदद	
२	मेज़ खुर्द व कलाँ	४ अदद	
३	कुर्सी खुर्द कला मुखतलिफ़ इक़साम	१० अदद	
४	बंदूक़ दूनाली कारतूसी १२ पोड़	१ अदद	
५	कर्जा	जिम्मे दीवान गड़रिया जरिए पुरोनोट मुवर्रिखे ८ दिसंबर ३५, तादादी ३०)	
६	डिगरी	शफीअहमदखाँ बनाम रामचरन इजलास तहसीलदार साहब मलिहाबाद फैसला ३ जुलाई ३५, ३४।=)	
७	,,	शफीअहमदखाँ बनाम रामनरायन वगैरा त० मलिहाबाद फैसला ३०-७-३४ ई० ५६॥-)॥।	
८	,,	शफीअहमदखाँ बनाम जुराखन चमार अडिशनल जज खफीफा लखनऊ मुवर्रिखे ४ नवंबर १९३२ ई० ३३॥।=)	
९	,,	शफीअहमदखाँ बनाम पोई अडीशनल जज खफीफा लखनऊ २५ अगस्त ३६ ई० ६५॥।)	
१०	,,	शफीअहमदखाँ बनाम बदर फैसला २५ सितंबर १९३० तादादी ६६।) इजलास अडिशनल जज खफीफा लखनऊ	
११	मकान मसकूना मिर्जागंज		
१२	मशमूला हिस्सा जमींदारी मलिहाबाद	कारखाना कलम हाय अंबा इस्मी रियाज विरादरस मालती २००) बिला आराज़ी	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २० अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[काबिल फरोख्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुकाम बाराबंकी
मुकद्दमा नंबरी नंबर ४०३ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १९—१—३८

१—अशफाकहुसैन } पिसरान इश्त्याकहुसैन सैयद साकिन व मौजा मितई परगना देवा जिला बाराबंकी
२—मुश्ताकहुसैन } कर्जदार सायल

बनाम गुलामहज़रत वगैरह कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि अशफाकहुसैन व मुश्ताकहुसैन पिसरान इश्त्याकहुसैन मौजा मितई परगना देवा जिला बाराबंकी की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त मुहाल	दरख्वास्तदिहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्त दिहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदिहंदा की हकीयत पर मौजूदा तश्खीस मालगुजारी	कैफियत
१	बाराबंकी	गैर मनकूला	मौजा मितई परगना देवा मुहाल व पट्टी काजिम-अली खाता १	आला	हिस्सा ३।८ पाई ½ हिस्सा मिनजुमला रक़बा ७९ बीघा ३ बिस्वा ९ बिस्वांसी		२१।)
२	,,	,,	मौजा मितई परगना देवा मुहाल सैयद-अली खाता जमीमा १	हकीयत मुतफर्रिका	½ हिस्सा मिनजुमला रकबा १ बीघा १३ बिस्वा १६ बिस्वांसी		१।-)

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २५ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नंबर १० [बदस्त अवाम फ़रोख्त के लिये

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज दरजा दोयम जिला एटा

बइजलास मि० ओमप्रकाश साहब एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

मुकद्दमा नं० २६८ सन् १९३६ ई०

ता० पेशी १६—१—१९३८ ई०

हरगाह ठा० दीपसिंह वल्द रनजीतसिंह व कुँ० महेंद्रप्रतापसिंह वल्द दीपसिंह व कुँ० राजबहादुरसिंह नाबालिग बरिफाकत ठा० दीपसिंह पिदर खुद व कुँ० नरेंद्रसिंह व कुँ० गजेंद्रसिंह नाबालिगान पिसरान कुँ० प्रतापसिंह बविलायत ठा० दीपसिंह कौम ठाकुर साकिन महुआखेड़ा परगना सोहार जिला एटा सायलान ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमो में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो उस तारीख से, जो इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख है, तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क) कर्जदार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

१ हकीयत मौजा सोहार मु० गनेशकुँवरि खेवट नं २, ५ बिस्वा ८ बिस्वांसी १६ कच० १० तन० १६ पन० मालगुजारी ४७॥≡) अबवाब ४॥।)४

२ ,, ,, ,, ,, ,, ,, नं० ३ १८ बिस्वांसी १४ कच० १ तन० १३ पन० ८≡) अब० ।।।-)।

३ ,, ,, यार पं० सोहार मु० रंजीतसिंह खेवट नं० ३ ६ बिस्वा १ बिस्वांसी २ कच० १२ तन० ७५॥≡) अब० ७॥-)२

४ ,, ,, महुआखेड़ा पं० सोहार मु० गनेश कुँवरि खे० नं० ५, १३ बिस्वांसी ४ कच० ८ नन० ६ तन० ३०॥≡)५ अब० ३-)

५ ,, ,, ,, ,, ,, खे० नं० ८, ५ बिस्वांसी १६ कच० ५ पन० १५ तन० १३≡)१० अब० १-)७

६ ,, नगला पंचम ,, थोक किशनसिंह खे० नं० ९ २ बिस्वा १६ बिस्वांसी १७ कच० १४ नन० ३ तन० ६ पन० ४७-)३ ४॥≡)६

७ ,, मौ० रामनगर ,, ,, खे० नं० १९, २ बिस्वा १९ बिस्वांसी १७ कच० १४ नन० ३ तन० ७ पन० ६४॥-)३ ,, ६≡)४

८ ,, मौजा देवपुरा ,, ,, खे० नं० ४, १ बिस्वा १८ बिस्वांसी ४ कच० ७ नन० १० तन० २२॥।-)७ ,, २।)७

९ ,, ,, ,, ,, खेवट नं० ६, १ बिस्वा १ बिस्वांसी १३ क० ६ नन० १३ तन० ६ पन० ११) ,, १-)७

१० ,, मुहम्मदपुर थोक मु० गनेश कुँवरि खेवट नं० १, ३ बिस्वा १८ बिस्वांसी १४ नन० १६ तन० १ पन० ५०॥≡) ,, ५-)

११ ,, ,, ,, ,, ,, ५, १ बिस्वा ११ बि० २ कच० १२ नन० १ तन० ७ प० १० अ० २०।) ,, २)५

१२ ,, नगला पंचम थोक किशनसिंह खे० नं० २, २ बि० ७ बि० ५ क० २७)७ ,, २॥≡)१

जमीमा (ख)

कर्जदार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१३— १ मंजिल मकान मसकूला वाके मौजा महुआखेड़ा परगना सोहार जिला एटा

१४—एक किता बाग नगला पंचम बकदर एक चहारुम

१५—एक ,, मौजा महुआखेड़ा बकदर निस्फ

१६—,, ,, मौजा मुहम्मदपुर बकदर निस्फ

१७—,, ,, देवपुरा बकदर ½ हिस्सा

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फ़रोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज दर्जा दोयम एटा

इजलासी जनाब मि० ओ३म्प्रकाश साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम एटा

मु० नं० २४८ सन् ३६ ई० तारीख पेशी ५ जनवरी ३८ ई०

हरगाह मु० मानकुँवरि बेवा जालिमसिंह कौम ठाकुर साकिन करमपुर परगना सिढ़पुरा ज़िला एटा ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिमनी १ दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो उस तारीख से, जो इश्तिहार के संयुक्त-प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख है, तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) कर्जदार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

१ हकीयत जमीदारी मवाज़ी ४२—२४ मुंदर्जा खाता खेवट नं० १ पट्टी सोभाराम
२ ,, ,, ,, ३३—८० ,, ,, नं० ३ मानकुँवरि
३ ,, ,, ,, ४१—५४ ,, ,, नं० ४ फूलसिंह
मुहाल करनसिंह के बकदर ½ हिस्सा

} वाकै करमपुर परगना सिढ़पुरा जिला एटा

मुंसरिम स्पेशल जज, एटा

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ६ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत [क़ाबिल फरोख्त

(ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा औवल मुकाम रायबरेली

मुकदमा नंबर २२ सन् १९३७ ई० तारीख पेशी ३० - ३—३८

१—शाह महबूबअली
२—मोहम्मद सलीम
} पिसरान लाल जगबहादुरसिंह सा० सेमरौता जि० रायबरेली कर्जदार सायल

बनाम

१—ला० बेनीमाधौ
२—ला० बसंतराय
} पिसरान ला० मोहनलाल रस्तोगी सा० मो० रस्तोगी-टोला शहर लखनऊ

३—अहोरपा
४—रामलोटन
} ब्राह्मण सा० व डा० सीवन जि० रायबरेली

५—मु० बागेसुरी बेड़िन सा० मांझगाँव डा० हलोर जि० रायबरेली

६—पं० राजनरायन व० पं० काशीप्रसाद पांडे सा० मो० निशातगंज शहर लखनऊ हालवारिद मो० रुद्रनगर शहर सुलतांपुर

७ - रानी जैराजकुँवरि ताल्लुकदारिया चंदापुर डा० चंदापुर जि० रायबरेली

चूँकि एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०) जिसकी तरमीम अजरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, महबूबअली वल्द लाला जगबहादुरसिंह साकिन सेमरौता जि० रायबरेली की तरफ से इस गरज़ से पेश हुई है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा के अहकाम उस पर लगाए जावें।

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ६ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम अज़रूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि जुमला अशखास, जो शाह महबूबअली मजकूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा खानगी कर्जाजात के मुताल्लिक दावा रखते हों, वह गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात से उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दर्ज हैं, वरना अदम तामील में हरएक दावा उसके खिलाफ ख्वाह डिगरीशुदा हो या ग़ैरडिगरीशुदा तरमीम अगराज और मौकों के लिये इस ऐक्ट की दफा १३ की रू से बाज़ाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ६ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सैयद अख़तरअहसन स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुक़ाम रायबरेली
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ७५ सन् १९३६ ई०
पेशी तारीख १३ जनवरी सन् १९३८ ई०
मु० खातूनबीबी जौजे ग़िस्सूख़ाँ सा० सलोन परगना सलोन ज़िला रायबरेली

कर्ज़दार सायला

बनाम

सिद्दीकअहमद वग़ैरह

कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि मुसम्मात खातूनबीबी जौजे ग़िस्सूख़ाँ साकिन सलोन परगना सलोन ज़िला रायबरेली ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुन्सलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० मुसम्मात खातूनबीबी मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इश्तिहकाक के बारे में अदालतहाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	रायबरेली	मिनजुमला १) के ३ पाई हक़ीयत आला	सलोन ख़ास	हक़ीयत आला	मिनजुमला १) के ३ पाई	३३।।।)	
२	,,	मिनजुमला १) के ६ पाई हक़ीयत आला	मख़दूमपुर परगना सलोन	हक़ीयत आला	मिनजुमला १) के ६ पाई		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख २४-९-१९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

[काबिल फरोख़्त

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू महाबीरप्रसाद साहब वर्मा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुकाम लखीमपुर जिला खीरी
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३४८ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ६ जनवरी सन् १९३८ ई०

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१—लाला गनेशप्रसाद वल्द अंबरलाल
२—श्याममनोहरलाल } पिसरान गनेशप्रसाद
३—श्यामसुंदरलाल }
४—राजबहादुर } पिसरान बच्चूलाल
५—रणधीरसिंह }
६—त्रिवेनीसहाय वल्द देवीसहाय

अकवाम कायस्थ साकिन लाल्हनपुर मशमूले कैमा बुजुर्ग परगना पैला जिला खीरी

कर्जदार सायलान

बनाम

१—पं० पुत्तूलाल } पिसरान पं० जग्गीदत्त कौम ब्राह्मण साकिन धौरहरा वारिद हाल लखीमपुर परगना
२—खुन्नूलाल } व जिला खीरी
३—देवदत्त वल्द नामालूम कौम ब्राह्मण साकिन धौरहरा जिला खीरी
४—मातादीन साह वल्द पेम्मा साह कौम कलवार साकिन मौज़ा बरूई परगना पैला ज़िला खीरी
५—राज राजबहादुरसिंह वल्द राज रघुबरसिंह कौम ठाकुर साकिन व ताल्लुकेदार झंडी परगना निघासन ज़िला खीरी

कर्ज़ख्वाह फरीकसानियान

चूँकि लाला गनेशप्रसाद वग़ैरह साकिन लाल्हनपुर मशमूले कैमा बुजुर्ग परगना पैला जिला खीरी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है। लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेश करदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तकिल काबिल बिरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदिहिंदा मंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
					एकड़—डिसमल		
१	खीरी	हकीयत जमींदारी	कैमा बुजुर्ग	आला	१२८५—८५	१५४०)	
२	,,	,,	करदहिया मानपुर मुहाल मुन्नूपुर	,,	५४०—९३	२२)	
३	,,	,,	करदहिया मानपुर मुहाल फतेहपुर	,,	५४०—९२	१=)	
४	,,	,,	सौना	,,	मुसल्लम चक	१=)	
५	,,	,,	मुंडिया	,,	मुसल्लम चक	माफ	
६	,,	,,	करसौर	मातहती	७०—४६	१३)	
७	,,	,,	लखहा	,,	१०६—११	१७५=)	
८	,,	,,	पूजागाँव	,,	तखमीनन १०—१	१=)	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत इकीयत दरख्वास्त देहंदा	कैफियत
१	चारपाई २	मुसल्लम	
२	अद्धा १	,,	
३	बैल २ रास २	,,	
४	मेज़ चोबी १	,,	
५	तखत चोबी २	,,	
६	कुरसी २	,,	
७	लालटेन २	,,	
८	गाय १	,,	
९	एक किता बाग़ वाकै गौरिया परगना व तहसील निघासन ज़िला खीरी	,,	
१०	एक किता बाग़ वाकै खखहिया परगना व तहसील जिला खीरी	,,	
११	एक किता बाग़ वाकै कटहा परगना व तहसील निघासन ज़िला खीरी	,,	
१२	एक किता मकान पुख्ता वाकै मुहल्ला शीतलादेवी शहर लखीमपुर परगना व ज़िला खीरी	,,	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २१ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सैयद अख्तरअहसन साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम रायबरेली

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १०८ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी ३ जनवरी १९३८ ई०

१—भगवतसिंह वल्द चंद्रभानसिंह
२—रामबहादुरसिंह वल्द अर्जुनसिंह
} अक़वाम ठाकुर वैश्य साकिन मौजा बरुआ परगना रायबरेली

कर्जदार सायलान

बनाम

बिशुनाथप्रसाद वग़ैरह कर्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि भगवतसिंह वल्द चंद्रभानसिंह व रामबहादुरसिंह वल्द अरजुनसिंह अकवाम ठाकुर वैश्य साकिन मौज़ा बरुआ परगना रायबरेली ज़िला रायबरेली ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गजट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तिहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फिहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तकिल क़ाबिल खिरासत व क़ाबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसआत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहंदा की हकीयत पर मजदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
१	रायबरेली	हकीयत आला जमीदारी	मौजा बरुआ पर० रायबरेली पट्टी अर्जुनसिंह	।) ५ पाई ३ किरांट ३ जौ ५½ तिल	खाता हकीयत आला	मालगुजारी ३५३।।।) अबवाब ३४।।=)।।।	मीजान कुल ३८८।।= ११ पाई
२	,,	,,	,,	हकीयत मुतफर्रिका खाता नंबर २ २१।।)४-१७ ३ रबि- हिस्सा सायलान	हकीयत मुतफर्रिका खाता नं० २	,,	
३	,,	,,	मौजा बरुआ पर० रायबरेली पट्टी चौहरजा- बख्शसिंह	हकीयत मुतफर्रिका खाता नं० ४,१२।।।) ३०१२ ३ रबि- हिस्सा सायलान	हकीयत मुतफर्रिका खाता नं० ४	,,	
४	,,	,,	मौजा बरुआ परगना रायबरेली	मकान मसकूना खाम	एक किता	,,	

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत हकीयत दरख्वास्त दिहंदा	कैफियत
१	भैंस	१ रास	नंबर २ लगायत ५ मुसम्मियान जगन्नाथसिंह व भारतसिंह व दगपालसिंह बाबू उर्फ हनोमानप्रसाद महाजनान ने सायलान की जायदाद से ज्यादा दिखलाया है।
२	,,	४ ,,	
३	बैल	६ ,,	
४	गाय	५ ,,	
५	गादी चोबी	१ मंजिल	नंबर ६ मुसम्मियान लाला लछिमनप्रसाद, लाला मदनलाल महाजनान ने सायलान की जायदाद से ज्यादा दिखलाया है।
६	बछिया	१ रास	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २३ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज साहब बहादुर सेकेंड ग्रेड जौनपुर

नंबर मुक़द्दमा ६३ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १८—१२—१९३७ ई०

हरगाह जदूसिंह वल्द पुंचईसिंह साकिन मौज़ा मेघपुर ज़िला जौनपुर की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, उससे तीन मास से अंदर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टार दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तश-खीस मालगुज़ारी
१.	जौनपुर	जमीदारी	मेघपुरप० बियालसी	।=)	।=)	
२.	,,	हकीयत पुतफर्रिका	,, ,,	६—७०	६—७०	

ज़मीम (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़र्क़ और नीलाम हो सकती है।

१—तालाब मय भीठा बाकै मौज़ा मेघपुर परगना बियालसी जौनपुर

२—एक क़िता मकान मय सहन व कोठी बाँस मय दो दरख्तान आम व महुआ व जामुन वग़ैरह

मुंसरिम

बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नं १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम फतेहपुर

मुक़द्दमा नं० २२४ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १३-१-३८

जोधीसिंह वग़ैरह वल्द गजोधरसिंह कौम ठाकुर साकिन पधारा परगना बिंदकी ज़िला फतेहपुर सायलान

बनाम

गयादीनसिंह

हरगाह सायलान ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख है, उससे तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी
१	फतेहपूर	ज़मींदारी	मौजा पधारा मु० वंशगोपल परगना बिंदकी	मौरूसी	॥) अज़ुर्द मुहाल	११०) मालगुज़ारी मय अबवाब

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिलेवार नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत वसाअत का विस्तार
१	भैंस १ रास	४०)
२	चारपाई	
३	गाय १ रास	१५)
४	बेझर १०ऽ	
५	अरहर २ऽ	
६	गेहूँ ५ऽ	
७	बैलगाड़ी २	
८	बछवा २	
९	गाड़ी १	
१०	चारपाई १०	
११	तख्त २	
१२	घोड़ा १	

आज बतारीख १७ सितंबर सन् १९३७ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

मुकद्दमा नंबर ११९ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी ७—१—१९३८ ई०

हरगाह गयादीन व महादेव पिसरान रामस्वरूप व गौरीशंकर व मातादीन बालिगान व रामगोपाल नाबालिग बविलायत माताबदल पिसरान रघुबीरप्रसाद व अयोध्याप्रसाद वल्द गयादीन व परसोत्तमप्रसाद नाबालिग वल्द अजोध्याप्रसाद बविलायत अजोध्याप्रसाद कौम ब्राह्मण साकिन बुधेरा परगना हथगाम जिला फतेहपुर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ज़िम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख से ३ मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतकाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ियत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	फतेहपुर	ज़मादारी	बुधेरा मुहाल रामस्वरूप प० हथगाम जिला फतेहपुर	सायलान मालिक व काबिज जायदाद हैं और हर तरह के अख़त्यारात निस्बत जायदाद हासिल है	१)	

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१—एक किता मकान मसकूना वाक मौजा बुधेरा परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर महदूदा जैल—पूरब बगर सायलान, पच्छिम मकान शिवचरन चमार, उत्तर परती, दक्खिन मकान नंदा पासी

२—एक किता बगर वाकै मौज़ा बुधेरा परगना हथगाम ज़िला फतेहपुर महदूदा जैल—पूरब मकान रामअधीन मल्लाह, पच्छिम मकान लालताप्रसाद

आम व महुवा ६० दरख्त कटहल १ कुल हिस्सा कटहल १ निस्फ हिस्सा, एक दहाना चाह खाम कुल हिस्सा, एक दहाना चाह पुख्ता निस्फ हिस्सा

पड़िया	घोड़ी	गाय	भैंस	घोड़ा	बैल
२	१	१+६	१+८	१	८

बागात दो किता वाकै मौजा बुधेरा परगना हथगाम जिला फतेहपुर महदूदा जैल

१—बाग महुवा जिसके पूरब जंगल, पच्छिम खेत सीर सायलान, उत्तर जंगल व वेत सीर सायलान, दक्खिन जंगल

२—बाग़ आम, जिसके पूरब चरी मन्नालाल ब्राह्मण, पच्छिम खेत शिवरतन व बैजू अहीर, उत्तर खेत सायलान, दक्खिन परती व चरी लालताप्रसाद

आज बतारीख़ ७—९—३७ को मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के जारी किया गया। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम क़ुरोक़ल के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज दरजा दोयम एटा इजलासी जनाब मि० ओ३म्प्रकाश साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम एटा

मुक़द्दमा नंबर १८४ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी ११ दिसंबर सन् १९३७ ई०

कृपागिरि व महेंद्रगिरि पिसरान उदईगिरि नाबालिगान बविलायत मु० कलावती मादर खुद क़ौम गोसाईं साकिन मनौरा परगना मारहरा ३—मुंशीलाल व हेतराम वग़ैरह भीमसेन कौम अहीर साकिन सभापुर मुजरा मनौरा परगना मारहरा ज़िला एटा की ओर से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर दावा रखता हो, तो उस तारीख से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतालिक़

सायलान नंबर १ व २

१. हकीयत जमींदारी तादादी ३—८४ डि० मुंदरजा खाता खेवट नंबर २३ पट्टी बाकीमादा मु० चुन्नीकुँवरि नंबरदार गुलज़ारीलाल मुहाल ग़ैरख्वाहिदगान वाक़ै मनौरा परगना मारहरा ज़िला एटा

सायलान नंबर ३ व ४

हकीयत जमींदारी तादादी १—७२ डि० मुंदरजा खाता खेवट नंबर २३ पट्टी बाकीमादा मु० चुन्नीकुँवरि नंबरदारी गुलज़ारीलाल मुहाल ग़ैरख्वाहिदगान वाक़ै मनौरा परगना मारहरा ज़िला एटा के २ हिस्सा

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)
१	२	३
१	दो रासान भैंस	सायलान नं० १ व २
२	दो रासान भैंस एक रास घोड़ी	सायलान नं० ३ व ४

१. एक किता रेहननामा हक मुरतहनी दखली तादादी ६००) नविस्ता उमराय मौसूमे मुंशीलाल सायल नं० ३ जिसमें हकीयत मिनजुमला ३ बिस्वा ६ बिस्वांसी १३ कचवांसी ६ ननवांसी खाता खेवट नं० ५ वाक़ै मौजा मरगावा मुहाल नंदूसिंह का $\frac{1}{3}$ हिस्सा व मिनजुमला १३ बिस्वांसी ६ कचवांसी १४ ननवांसी खाता खेवट नं० ६ वाक़ै पृथ्वीराजपुर मुहाल १५ बिस्वा पट्टी शिवसिंह का $\frac{1}{2}$ व १ बिस्वांसी १४$\frac{3}{4}$ कचवांसी खेवट नं० ६ वाक़ै सिडरई मुहाल गैरख्वाहिदगान पट्टी नेकराम परगना मारहरा ज़िला एटा मुसलिरा

२. एक किता रेहननामा हक मुरतहनी दखली तादादी ३००) नविस्ता उमराय मौसूमा मुंशीलाल सायल नं० ३ मवाजी २ बिस्वांसी १$\frac{1}{3}$ कचवांसी खाता खेवट नं० ६ वाक़ै मौजा सिडरई मुहाल गैरख्वाहिदगान परगना मारहरा के $\frac{1}{2}$ हिस्सा हक मुरतहनी पट्टी नेकराम व मिनजुमला मवाजी ३ बिस्वा ६ बिस्वांसी १३ कचवांसी ६ ननवांसी खाता खेवट नं० ५ वाक़ै मरगावाँ मुहाल व पट्टी नंदूसिंह का ७ हिस्सा के मालिक मिनजुमला १ हिस्सा के $\frac{1}{3}$ हिस्सा हक मुरतहनी हिस्सा व मवाजी १ बिस्वा ६ बिस्वांसी १२ कचवांसी १२ ननवांसी खाता खेवट नं० १ वाक़ै मरगावाँ मुहाल गैरख्वाहिदगान पट्टी भोजराजसिंह परगना मारहरा जिसका ४८० हिस्सा मिनजुमला ४८० हिस्सा में से ५ हिस्सा हक मुरतहनी।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ११४ सन् १९३६ ई०

शेख मुहम्मदहाशिमअली — कर्जदार सायल

बनाम

मुहम्मदयूनुसखाँ वग़ैरा — कर्जख़्वाह फरीक़सानी

चूँकि शेख मुहम्मदहाशिमअली वल्द शेख आजमअली साकिन व जमींदार जुग्गौर जिला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त-देहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० शेख मुहम्मदहाशिमअली मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वहइस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय ग़ज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ) कर्जदार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तशरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तसखीस मालगुजारी	कैफियत
१	लखनऊ	पट्टी जुग्गौर	मौजा जुग्गौर पट्टी शेख आजमअली खाता खेवट नंबर १	मिलकियत आला	२९बीघा १ बि० १२ बिस्वांसी १० कचवांसी भैयाचारा	रु०आ०पा० ४०३-२-०	लोकल रेट ४०।-) मय हिस्सा खाता-जात पट्टियाँ शामिलाती नं० १८, १९, २१, २२, २३, २५, ४३, ४५, ४८, ४९, ५०, ५२, ६०, ६१, ६२, ६४, ६५, ६६, ७०, ७५, ७६
२	,,	,,	,,	हकीयत मुतफर्रिका	५ बीघा ९ बि० पक्का	रु० आ०पाई १०--०--०	लोकल रेट १)
३	,,	हबीबपुर	हबीबपुर मुहाल शेख-हाशिमअली परगना मलि-हाबाद	मिलकियत आला	रु० आ० पाई ०—१५—६ १२ $\frac{13}{16}$ किरांट	रु० आ० पाई ५०९-११-१	लोकल रेट ५०।।≦)४ पाई मालगुजारी व लोक० मुंदर० में से ५ पाई ७ $\frac{6}{16}$ किरांट की माल० मिनहा होना चाहिए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

४	बाराबंकी	बंदगीनगर	बंदगीनगर मुहाल अकरम अली तहसील फतेहपुर	,,	५ आ० ४ पाई	रु० आ० पाई लोकल रेट ६०--०--४ २।।।=)१० पाई

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	रेहननामा ८ दिसं० १९२२	३०००) ११ फीसदी सालाना	अब्दुलहमीदखाँ वल्द अब्दुल्लाहखाँ साकिन रहमाननगर मजरा हबीबपुर परगना व तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ ने क़ाज़ी अहमदुल्लाह वल्द काजी-मन्नतुल्लाह को लिखा। शेख हाशिमअली ने ९ ऑक्टोबर १९३० को खरीदा।
२	रेहननामा १४ जून १९३०	७५) २ फीसदी माहवार	गयाबक्ससिंह वग़ारा वल्द दगपालसिंह सा० नरेंदी परगना व तहसील व ज़िला लखनऊ ने शेख हाशिमअली को लिखा।
३	रेहननामा २६फर० १९२६	६८८) १ फीसदी माह०	जसवंतसिंह व जसकरनसिंह पिसरान सूरजबलीसिंह व भगवतसिंह उर्फ पीलोसिंह वल्द नीलकंठसिंह सा० पूरा नेबाज़ मज़रा जुग्गौर पर० व तह० व ज़िला लखनऊ ने शेख हाशिमअली को लिखा।
४	,,	२५०) १ फीसदी माहवार	रनजीतसिंह वल्द मानसिंह सा० पूरा नेबाज़ मज़रा जुग्गौर पर० तह० ज़िला लखनऊ ने शेख हाशिमअली को लिखा।
५	रेहननामा १८ अगस्त १९३२	४२५) १ फीसदी माह०	अहमदहुसेन वल्द इबनुलहसन सा० जुग्गौर परगना व तह० व ज़िला लखनऊ ने शेख हाशिमअली को लिखा।
६	रेहननामा १८ जून १९३०	४००) १ फीसदी माहवार	,, ,, ,,
७	पुरोनोट २९अग० १९३६	१६५) १ फीसदी माहवार	,, ,, ,,
८	पुरोनोट १० जुलाई १९३६	१५०।।।) फीसदी माह०	जकीमुहम्मद वल्द शेख अलीमुहम्मद सा० जुग्गौर पर० व तह० व ज़िला लखनऊ ने शेख हाशिमअली को लिखा।
९	पुरोनोट १ फरवरी १९२६	१५०) २ फीसदी माह०	समीउद्दीन वल्द शेख रियाजउद्दीन साकिन जुग्गौर परगना व तहसील व जिला लखनऊ ने शेखहाशिमअली को लिखा।
१०	पुरोनोट १४ जून १९३५	९३) १½ फीसदी माह०	लालशाह व शिवराम पिसरान हेमराज पासी सा० नरेंदी परगना व तहसील व जिला लखनऊ ने शेखहाशिमअली को लिखा।
११	पुरोनोट २० मई १९३६	१३५) २ फीसदी माह०	नन्हकू वल्द शिवचरन साकिन जुग्गौर परगना व तह० व जिला लखनऊ ने शेख हाशिमअली को लिखा।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा मुमालिक मुत्तहिदा
(ऐक्ट २१ सन् १९३४ ई०)

बअदालत पं० दातारम मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम लखनऊ
मुक़द्दमा नंबर १४७, सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी १३ दिसंबर सन् १९३७ ई०
गिरिजादयाल वल्द मुं० शंभूदयाल कौम कायस्थ साकिन मुहल्ला नेवाजगंज शहर लखनऊ

कर्ज़दार सायल

बनाम

१—रामलाल वल्द छेदालाल कौम कलवार साकिन मौज़ा कमालपुर परगना बरगद तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर

२—डा० लक्ष्मीनारायण वल्द रहसबिहारीलाल कौम कायस्थ साकिन मुहल्ला नेवाजगंज लखनऊ

३—ब्रजबिहारीलाल वल्द जुगलकिशोर कौम कायस्थ साकिन मौज़ा केसरमऊ कलाँ परगना महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

४—मुसम्मात मून्ना बित कँधई जमादार कौम मल्लाह साकिन मुहल्ला मुकारिमनगर थाना हसनगंज पार लखनऊ

५—पुरुषोत्तमदास देवेंद्रनाथ महाजनान साकिनान मुहल्ला अशरफ़ाबाद लखनऊ

६—मुसम्मात फ़ख़्रुन्निसां बेवा गुलाममुस्तफ़ा साकिन महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

७—बिहारी वल्द हुलासी लोध साकिन चतवारा मौज़ा कठवारा पर० महोना तह० मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

८—चंद्रिकाप्रसाद वल्द मथुराप्रसाद साकिन मौजा कठवारा तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि गिरिजादयाल साकिन मु० नेवाज़गंज लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है। लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन १ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद ज़ाहिर की है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के ग़ज़ट मुमालिक मुत्तहदा में शाया होने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्त (अलिफ़) कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	सायल की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत सायल मुंदरजा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर	सायल की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीस माल०
१	लखनऊ	जमीदारी	मौजा कठवारा खाता नं० १ मुहाल भगवंतसिंह परहा	जमीदारी	२ आना ९ पाई १२ किरांट	२२—११—१०
२	,,	,,	मौ० कठवारा खाता नं० ५ मुहाल भगवंतसिंह करैवा	,,	१ आना २ पाई ४ किरांट	१७—१३—१
३	,,	,,	मौ० कठवारा खाता नंबर १,३,५ व १७ मु० शिवदर्शनसिंह	,,	३ आना २ पाई ४ किरांट	६५—५—०
४	,,	,,	मौजा रैथा पट्टी साँवलसिंह	,,	३ पाई १६ किरांट	४४—८—१०

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो बहस्तनाय हक्कूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क व नीलाम हो सकती है।

मकान मसकूना वाक मुहल्ला नेवाजगंज लखनऊ

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर आज बतीख़ १६—१०—१९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[बदस्त अवाम फरोख़्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब गिरिवरचरन अग्रवाल साहब स्पेशल जज दर्जा दोयम बस्ती

मुक़दमा नं० ६६८ सन् १९३६ ई०

दरगाह इंद्रजीत पांडे वल्द राजाराम पांडे साकिन धौरापार तप्पा मेंहदावल परगना मगहर तहसील खलीलाबाद ज़िला बस्ती ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तश-ख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	बस्ती	ज़मीदारी	धौरापार तप्पा मेंहदावल प० मगहर पूरब		१।।ऽ३-४ आराज़ी	४३।।)
२	,,	,,	मलाई तप्पा मेंहदावल परगना मगहर पूरब		५ पाई ११ छटाक	५।।=)
३	,,	,,	टेरवा मोहाल ६ तप्पा मेंहदावल परगना मगहर पूरब		=)७ पाई ४९ तिल	१९।।≡)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जमीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)
१	२	३
१	बैल गाड़ीवाले २ रास	८०)
२	भैंस २ रास	६०)
३	पड़िया २ रास	२०)
४	गाय १२ ,,	७२)
५	बछवा ३ ,,	३६)
६	बछिया ३ ,,	६)
७	एक किता मकान सिफाला व धारी खसपोश ताफा मौज़ा धौरापार तप्पा मेंह-दावल पर० मगहर पूरब पूरब पढ़वा सावंत का मकान, पच्छिम आराज़ी मज़रूवा जंगल, उत्तर मकान पतरी केवट, दखिन मकान मेड़ई तेली	७००)

मुंसरिम

[काबिल फरोख्त

इस्तिजानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब पं० दाताराम स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम लखनऊ

मुकद्दमा नंबर १०९ सन् १९३६ ई०

कालीदीन वल्द मंगलप्रसाद व सुंदरलाल व श्यामसुंदर ब्राह्मण सा० खरगपुर पर० व जिला लखनऊ

कर्जदार सायल

बनाम

(१) राधेश्याम वल्द शिवनरायन } अकवाम वैश्य सा० मुहल्ला अलीगंज लखनऊ
(२) भगवानदीन वल्द रामदयाल }
(३) रामगोपाल वल्द सरयूप्रसाद ब्राह्मण सा० इटौंजा मजरे तुरकी पर० महोना ज़िला लखनऊ
(४) मु० चंदन बेवा मातादीन ब्राह्मण सा० खरगपुर जागीर पर० जिला लखनऊ
(५) ब्रह्मादीन वल्द कालीदीन ब्राह्मण सा० खरगपुर जागीर पर० जिला लखनऊ

चूँकि कालीदीन वल्द मंगलप्रसाद ब्राह्मण सा० खरगपुर जागीर परगना व जिला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिहाजा हस्ब दफा ११ जिल्नी (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तरफ से इश्तिहारहाय मुनसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदिहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने दरख्वास्त हस्ब दफ़ा १० कालीदीन मज़कूर की जायदाद जाहिर की है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदह कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदरजे दफ़ा ८ व पेशकरदह कर्जख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजे दफ़ा १० जायदादहाय मक़रूजा मुमालिक मुत्तहिदा कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नंबर सिलसिला	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुजारी
१	लखनऊ	हिस्सा ज़मींदारी	खरगपुर जागीर प्र० लखनऊ मुहाल परागीलाल पट्टी कालीदीन	हक आला	।)	अव्वल ५ साल ६३।।।) अ०६।=) बाद ५ साल ७२।।) अ०७।)
२	,,	,,	पहाड़पुर परगना मोहना तहसील मलीहाबाद	,,	।।।)	२३।)॥
३	,,	५ किता बाग़ात	खरगपुर जागीर मु० परागीलाल	,,	हिस्सा १/४	
४	,,	मकान ख़ाम	खरगपुर जागीर	,,		
५	,,	अहाता मवेशियान	,,	,,		
६	,,	१ किता मकान ख़ाम	,,	,,	हिस्सा १/४	

७ १ किता डिगरी इजलासी मुंसिफ हवेली लखनऊ बमुकदमा छोटेलाल वगैरह बनाम बिहारी वगैरह नंबरी २७६ सन् ३१ मुनफसिला २० ऑक्टोबर सन् ३४ ई० जिसमें हिस्सा सायल १/४ है तादादी ५१६॥)

८ १ किता रेहन्नामा नविस्ते तुलसीराम व बिहारी बहक़ कालीदीन सायल मुवर्रिखे ११ सितंबर सन् १९२४ जिसमें हिस्सा सायल १/४ है तादादी ६००)

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १२ जुलाई, १९ ७ जारी हुआ।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नमूना नं० १७०

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूक़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर

मु० नं० १०२ सन् ३६ ई० तारीख़ मुक़र्रा १८—१२—३७ ई०

हरगाह मुसलेहयारखाँ वल्द महमूदयारखाँ साकिन बादशाहपुर परगना मोगरा ज़िला जौनपुर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदाद हाय मक़रूक़ा पेश की है

लिहाज़ा हस्ब तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़्कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद के, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर को जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन माह के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क) कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का बिस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तख़फ़ीफ़ मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	जौनपुर	ज़मीदारी	बादशाहपुर	) १० पाई	) १० पाई	
२	,,	,,	,,	) १ पाई १५ के०		
३	,,	,,	,,	८ पाई ५ के०		

४ आराज़ियात सीर वाक़ा मौजा बादशाहपुर प्र० मोगरा ज़ि० जौनपुर

७ गाटा
१—१४ बक़ब्जा सायलान नं० १ व २

५ गाटा
१—२१ बक़ब्जा मथुरा कसरवानी

२ गाटा
—३६ बक़ब्जा वंशपालसिंह

३ गाटा
—५५ बक़ब्जा रामभरोस

२ गाटा
—४५ बक़ब्जा रामसुमिरन

जमीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क और नीलाम हो सकती है।

एक किता मकान वाक़ा मौजा बादशाहपुर प्र० मोगरा जौनपुर

एक किता मकान वाक़ा मौजा वाजिदपुर प्र० हवेली जौनपुर

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[बदस्त अवाम फ़रोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब मि० ओमप्रकाश साहब एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला एटा

मुक़द्दमा नंबर १७६ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी ११—२—१९३८ ई०

मु० हरप्यारी जौजे बाबू रामशंकर वकील मथुरा दुख़्तर छेदालाल क़ौम कायस्थ साकिन मैंनागढ़ सदर बाज़ार मथुरा सायला

बनाम

मु० गोपीकुँवरि बेवा रामप्रसाद पटवारी मुतवफ्फी बरमकान कुंजबिहारीलाल क़ौम कायस्थ मुहल्ला लटोंड़ा कस्बा जलेसर ज़िला एटा

ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायला मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो उस तारीख से, जो इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आरोजी के मुताल्लिक

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह		दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का बिस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है		दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तश्खीस मालगुजारी
१	२	३	४	५		६		७
				ए०	डि०	ए०	डि०	८६)।
१	एटा	राहिना	मौज़ा गोपालपुर परगना जलेसर जिला एटा मुहाल पौने नौ बिसे पट्टी जदुनंदन खेवट नं० ६	३६	६४	३९	६४	
२	,,	,,	मौजा सराय राजनगर परगना जलेसर जिला एटा मुहाल पौने उन्नीस बिसे पट्टी जदुनंदन खेवट नं० ४	११	५६	११	५६	४३॥)११
								१२६।) मीज़ान

मुंसरिम स्पेशल जज दर्जा दोयम ज़िला एटा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फार्म इत्तिलानामा बगरज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुकाम बाराबंकी
मुकद्दमा नंबरी नंबर ११९ सन् १९३६ ई०

१—मुहम्मद इमतियाजअलीखाँ तालुकदार नेवरा वल्द निसारअली } कौम भट्टी साकिन नेवरा परगना
२—मुहम्मद वाजिदअलीखाँ वल्द अमजदअलीखाँ } बसौंढ़ी ज़िला बाराबंकी
कर्ज़दार सायलान

बनाम—बाबू राजामोहन मनौचा वग़ैरा

कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि १—मुहम्मद इमतियाजअलीखाँ तालुकदार नेवरा २—मुहम्मद वाजिदअलीखाँ वल्द अमजदअलीखाँ भट्टी साकिन नेवरा परगना बसौंढ़ी ज़िला बाराबंकी ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है। लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफसील मुंदरजा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदराजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	ग़ैरमनकूला	मौज़ा नेवरा मुहाल नेवरा	मुलाहिजही खाना कैफियत	मुलाहिजही खाना कैफियत	१३१-)	*
२	,,	,,	मौजा जैसुखपुर मुहाल जैसुखपुर	,,	,,	१०७२॥)/११	
३	,,	,,	मौजा अशरफनगर मुहाल मुहम्मदहुसेन	,,	,,	३६४॥≡)	
४	,,	,,	मौजा शेरपुर मुहाल शिवपाल मिश्र	,,	,,	१८॥-)८	
५	,,	,,	बरतरा पट्टी शेरखाँ खाता नं० १४	,,	,,	१२२=)८	
	,,	,,	बरतरा पट्टी जहाँगीरबख्श खाता नं० १०	,,	,,	५॥)	
	,,	,,	बरतरा पट्टी जफरखाँ खाता ४ व ३ जमीमा २ खाता ६ जमीमा १			७१-)८	

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

६	बाराबंकी	गैरमनकूला	मौजा बीबीपुर मु० बीबीपुर खाता नं० २	मुलाहिजही खाना कैफियत	मुलाहिजही खाना कैफियत	५८॥।)६
	,,	,,	मौजा बीबीपुर मु० शहपुर खाना २ व ३	,,	,,	७६।॥≡)७
७	,,	,,	मौजा हुनहना मु० मुहम्मदहुसनखाँ नेवरा	,,	,,	२१४)
	,,	,,	मौजा हुनहना मु० तजम्मुलहुसेन खाता १ व २	,,	,,	६।)
	,,	,,	मौजा हुनहना पट्टी जमालुद्दीन खाता नं० १	,,	,,	४॥=)
	,,	,,	मौजा हुनहना पट्टी अजीजुद्दीन खाता २ जमीमा १	,,	,,	४॥=)
८	,,	,,	मौजा रानीमऊ मु० महम्मदहुसेनखाँ	,,	,,	१०६८॥—)
९	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० महम्मद-हुसेनखाँ खाता नं० जमीमा ३ व १४ व १५ व १६ व १८ व २०	,,	,,	५०६।=)४
	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० बिधासिंह खाता नं० १	,,	,,	६२=)८
	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० सल्तनतसिंह खाता १ जमीमा ९ व १० व १३ व १५	,,	,,	९=)८
	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० शिवदत्त अमरसिंह खाता १ जमीमा १ से ६	,,	,,	६॥=)१०
	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० रतन-सिंह खाता १ जमीमा ६ व ७ व खाता २ जमी-मा ८ व १४ व $\frac{१९}{१}$ व $\frac{१९}{२}$	,,	,,	३९।)
	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० भुलई खाता २ जमीमा १, खाता $\frac{५}{३}$ जमीमा १, खाता $\frac{६}{३}$ जमीमा १ व ४	,,	,,	३४)
	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० हर-बक्शसिंह खाता १ जमीमा ३	,,	,,	१।=)८
	,,	,,	मौजा बिहाड़ा मु० राज-मलीवअलीखाँ खाता २ जमीमा ५ व ७	,,	,,	२॥।—)४

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१०	बाराबंकी	ग़ैरमनकूला	मौजा मवई मु० इम्तियाज़अलीखाँ	मुलाहिज़ही खाना कैफ़ियत	मुलाहिज़ही खाना कैफ़ियत	११८॥)
११	,,	,,	मौजा सरोहा खाता ३७	,,	,,	
१२	,,	,,	मौजा सोडाहारा मु० इम्तियाज़अलीखाँ	,,	,,	५।≡)१०
१३	,,	,,	सिपहिया बुटवा मु० महम्मदहुसेनखाँ	,,	,,	१११≈)
१४	,,	,,	मौजा डीमा पट्टी महम्मद-हुसेनखाँ	,,	,,	६५॥।–)६
१५	,,	,,	मौजा रसूलपुर खाता नं० ५	,,	,,	११७॥≡)२
१६	,,	,,	मौजा अशरफपुर खाता नं० २४	,,	,,	६१॥)
१७	,,	,,	मौजा सकरहना पट्टी बशारतखाँ	,,	,,	१२।)४
१८	,,	,,	सलीमपुर पट्टी महम्मद-हुसेनखाँ खाता नं० १२	,,	,,	४॥।)६
१९	,,	,,	मौजा सहजना पट्टी महम्मदहुसेनखाँ खाता ६ व ३२	,,	,,	७८≡)
२०	,,	,,	कथुया खाता १ व २	,,	,,	३६)
२१	,,	,,	नेवरा मुहाल कुवरे पट्टी खाता ३ व ४	,,	,,	४३५॥≡)४
	,,	,,	नेवरा मु० खानापुर पट्टी इमामखाँ	,,	,,	×
२२	,,	,,	महमूदपुर पट्टी लुकमानखाँ	,,	,,	१७२)
२३	,,	,,	अहमदपुर मुहाल मसी-हुद्दीन	,,	,,	२७४।)६
२४	,,	,,	चिलंकी मुहाल फसीह-उद्दीन	,,	,,	२४।।≡)१
२५	,,	,,	महम्मदपुर पट्टी चौधरी वाजिदअलीखाँ खाता ४	,,	,,	२६॥।–)५
२६	,,	,,	संडवा मुहाल गुलाम-सरवरखाँ खाता ३	,,	,,	१७।≡)१०
२७	,,	,,	नेवरापुर पट्टी वजीर-अलीखाँ खाता ३	,,	,,	३६॥≡)४
२८	,,	,,	बरौली मुहाल बाल-गोबिंद ज़० १	,,	,,	२)१०
	,,	,,	बरौली मुहाल छोटेलाल ज़० १	,,	,,	२)१०
२९	,,	,,	पटखौं पट्टी वजीरअली-खाँ खाता १ ज़० २ व ३	,,	,,	१६॥–)६

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

३०	बाराबंकी	रौरमनकूला	बाबूपुर खाता ३	मुलाहिजही खाना कैफियत	मुलाहिजही खाना कैफियत	४९॥≡)२
३१	,,	,,	मीरा मु० गुलामसरवरखाँ खाता ३	,,	,,	३९–)
३२	,,	,,	कुंडरा खाता २	,,	,,	२६॥=)४
३३	,,	,,	रजनपुर खाता ५	,,	,,	८≡)
	,,	,,	रजनपुर खाता २८ ज़० १	,,	,,	४–)७
३४	,,	,,	छामापुर मुहाल नेवरा	,,	,,	१९२–)
३५	,,	,,	महमूदपुर दाऊदपूर मुहाल अब्दुलकरीम	,,	,,	५४॥।=)
	,,	,,	महमूदपूर मुहाल रहमानपट्टी	,,	,,	२०॥)११
३६	,,	,,	बसौढ़ा मुहाल नेवरा	,,	,,	३७८॥=)३
३७	,,	,,	कुसहरी मुहाल इमतियाजअली नेवरा	,,	,,	६९६॥।≈)८
३८	,,	,,	अशरफपुर जँगरेला मुहाल महम्मदहुसेनखाँ	,,	,,	३२९।)
३९	,,	,,	रतनपुर पट्टी मुहम्मदहुसेन	,,	,,	१३८=)६
४०	,,	,,	चक कुटवा खाता ३ व ४ जमीमा ६	,,	,,	३४॥)६
४१	,,	,,	संडवा भेलू मुहाल चक भेलू पट्टी पुरदिलखाँ	,,	,,	४३।॥–)
	,,	,,	चक पट्टी जहाँगीरबख्शखाँ	,,	,,	} ४३१।–)६
	,,	,,	,, ,, हुसेनबख्शखाँ २९ जमीमा १	,,	,,	
४२	,,	,,	पारा हाजी पट्टी महम्मदहुसेनखाँ	,,	,,	२२)
४३	,,	,,	बेलपूर खाता ३० व ३१	,,	,,	२३≡)३
४४	,,	,,	सावन ढिबढा खाता ३५	,,	,,	२४)३
४५	,,	,,	नौरूजपुर बघेरी खाता नं० ६	,,	,,	९१–)६
४६	,,	,,	मझौरी मुहाल मझौरी	,,	,,	५६)
,,	,,	,,	,, ,, मुहाल अल्लानगर	,,	,,	१६।)
४७	,,	,,	महमूदमऊ मुहाल महम्मदहुसेनखाँ	,,	,,	२५२॥)
,,	,,	,,	,, मुहाल महमूदमऊ	,,	,,	२–)
४८	,,	,,	कुँडरा पट्टी इमतियाजअलीखाँ खाता ११ खाता २ निस्फ	,,	,,	९४२।≡)२$\frac{1}{2}$

* मवाजियात नंबरी १ लगायत ४ मुतजिकरा फ़ेहरिस्तहाजा में सायल नं० १ तनहा मालिक बकदर हिस्सा ।) मालिक आला बकदर हिस्सा ॥) आराजियात नंबरी ५ लगायत २० तनहा मालिक बकदर हिस्सा ॥) मालिक आला बकदर हिस्सा ॥) का है और मवाजियात नंबरी ३३ लगायत ४८ में सायल नंबर १ तनहा मालिक आला है, और सायल नंबर १ की मुबलिक २६३) सालाना हक तालुकदारी व नंबरदारी पुखतादारान मुसम्मियान अकबरहुसेनखाँ व एकरामहुसेनखाँ व मु० हफीजन से मिलता है और मुबालिगान मजकूरा मवाजियात नंबरी १ लगायत ४ व ३३ लगायत ४८ पर है और सायल नंबर २ मवजियात नं० १ लगायत ४ मुंदरजे फेहरिस्त हाजा में बकदर हिस्सा ।) का पुख्तादार है और मवाजियात नंबरी ५ लगायत २० बकदर हिस्सा ॥) का पुख्तादार हूँ और हरदो सायलान मवाजियात नंबरी २१ लगायत ३२ मुंदरजे फेहरिस्त हाजा में बहिस्सा सावी मालिक हैं।

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २ अगस्त सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[काबिल फरीख्त

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० दाताराम मिश्रा साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुकाम लखनऊ

मुकद्दमा नंबरी नंबर ११ सन् १९३७ ई०

तारीख पेशी १४-१२-१९३७ ई०

श्रीराम वल्द गोवर्द्धनदास साकिन दुगावाँ थाना वजीरगंज शहर लखनऊ कर्जदार सायल

बनाम

फर्म शीतलप्रसाद रामेश्वरदास वगैरा कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि श्रीराम वल्द गोवर्द्धनदास साकिन दुगावाँ शहर लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करें।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्त देहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	लखनऊ	...	अटसवा मुहाल श्रीकिशुनदास	...	॥)	३५५)	
२	लखनऊ	...	पट्टी गोविंदप्रसाद मुहाल जुत्ती	...	≡) १६ किरांट १७½ डिसमिल	५२॥।-)	
३	लखनऊ	...	मौजा काँकराबाद पट्टी विक्रमसिंह	...	६ पाई १५ कि० १ डिस० १५ जौ	६७॥।≡) ८ पाई	
४	लखनऊ	...	ठाकुरगंज करीब ३ बीघा	...	½ हिस्सा	...	
५	लखनऊ	....	झाँखड़ बाग करीब ४ बीघा	...	,, हिस्सा	...	
६	लखनऊ	...	अटसवा पलाट नं० ८१० व ८११	...	,, हिस्सा	...	

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो बहस्तसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकी है

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नंबर सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख़्वास्त देहंदा	कैफियत
१	दो किता मकानात वाकै चौकड़ी-टोला लखनऊ	१/२ हिस्सा	
२	एक किता दूकान वाक चौकबाजार लखनऊ	,, हिस्सा	
३	एक किता मकान वाकै दुगावाँ लखनऊ	१/४ ,,	
४	पुरोनोट तादादी २४०) मोरखे २० नवंबर सन् ३३ ई० नविश्ते सैयद हामिदअली		
५	रेहननामा मोरखे ३० जून सन् २८ ई० तादादी ३००) नविश्ते ज्वालाबख्शसिंह		
६	डिगरी बरबिनाय रेहननामा तादादी ८३८६॥।≡) ३ पाई मय सूद अयनदा खिलाफ गुलाबकुँवर वगैरा	१/२ ,,	
७	रकम ११६२) जिम्मगी दामोदर-दास बाबत कीमत ७ अदद कलमी तसवीर ११८७)	,, हिस्सा	
८	११८७)		
९	५ किता कलमी तसवीरें बकब्जे लाला बल्लभदास	,, हिस्सा	
१०	एक जोड़ पछेलवा एक जोड़ छन तिलाई वजनी ९ भरी बकब्जे लाला बल्लभदास व बिसंभरदास	,, हिस्सा	
११	तमस्सुक तादादी २५०) मोरखे ३ मई सन् ३१ ई० नविश्ते मुसम्मात मूना	,, हिस्सा	
१२	पुरोनोट मोरखे ४ जूलाई सन् ३४ ई० तादादी १६०) नविश्ते रामदयाल	,, हिस्सा	
१३	पुरोनोट मोरखे २३ जुलाई सन् ३४ ई० तादादी ८८) नविश्ते कीढा	,, हिस्सा	
१४	तमस्सुक मोरखे २० नवंबर सन् ३३ ई० तादादी १००) नविश्ते हसनू	,, ,,	
१५	डिगरी जर नकद तादादी ३०००) खिलाफ नवाब मुहम्मदअलीखाँ	,, ,,	
१६	डिगरी तादादी १००) खिलाफ अबदुलरहमान	,, ,,	
१७	डिगरी तादादी १२८।) खिलाफ अबदुल्ला	,, ,,	
१८	डिगरी तादादी २९१) खिलाफ रामलाल	,, ,,	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १९ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल जिला सीतापुर

मुकद्दमा नंबर ७४ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २६ दिसंबर सन् १९३७ ई०

१—ठा० चंद्रभूषणसिंह वल्द ठा० बेनीमाधौसिंह
२—ठा० योगेंद्रसिंह
३—कुँ० भानुप्रतापसिंह
४—कुँ० वीरेंद्रसिंह नाबालिग पिसरान ठा० चंद्रभूषणसिंह
५—कुँ० रनवीरसिंह
६—कुँ० गोविंदसिंह
अकवाम ठाकुर साकिनान बीहट बीरम पर० मछरेहटा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर सायलान

बनाम

१—ला० रामनरायन वल्द ला० मातादीन कौम खत्री सैगल सा० खैराबाद परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर

२—मुहम्मदरफी सा० बटगंज सीतापुर वारिदहाल लखनऊ मुहल्ला बारूदखाना

३—ठा० हनोमानसिंह वल्द ठा० पूरनसिंह कौम ठाकुर सा० बीहट बीरम पर० मछरेहटा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

४—कुँ० जवाहिरसिंह वल्द ठा० लालताबख्शसिंह कौम ठाकुर साकिन बीहट बीरम पर० मछरेहटा तहसील मिसरिख जिला सीतापुर

५—श्री रघुनाथजी स्थापित मंदिर राजगोपाल अयोध्याजी व सरबराकारी महंत रामदासजी

हरगाह कि जायदाद मुमर्रहे जैल दरख्वास्तकुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मसर्रहे जैल हासिल हो, वह अंदर मीआद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

तफसील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा खाता खेवट	नवइयत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	हालूपुर परगना मछरेहटा तह० मिसरिख जि०सीतापुर		६ बिस्वा ८ बिस्वां० मि० मुसल्लम मौजा	हकीयत आला	९६-)	९॥)८
२	विक्रमपुर पर० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर		,,	,,	८०)१	८)
३	बीरमपुर पर० मछरेहटा त० मिसरिख जि० सीतापुर		१—४ मिनजुमला मुसल्लम मौजा	,,	१६०)१	१६)
४	मिलिक पर० मछरेहटा त० मिसरिख जि० सीतापुर		३/४ मिन० २० बिस्वा वकमी जेठांसी फी०४	,,	१०८॥)१०	१०॥।=)१
५	उमरापुर पर० मछरेहटा त० मिसरिख जि० सीतापुर		६ बिस्वा ८ बिस्वां० मिन० २० बिस्वा	,,	३८४)	३८।=)५
६	केसरा पर० मछरेहटा त० मिसरिख जि० सीतापुर		६ बिस्वा ८ बिस्वां० मिन० २० बिस्वा वकमी जेठांसी फी०४	,,	३१२)	३१८)३
७	बड़गावाँ पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	जोतपुर	मुसल्लम मुहाल बइस्तनाय आराजी	,,	२३०)	२३)
८	भदेमर पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	बक्सीनगर	५/८ मिन० १६ आना मुसल्लम मु०	,,	३५)	३॥)

८

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

९	दुधरा पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	बलीनगर	१ बिस्वा मिनजुमला २० बिस्वा	हक़ आला	१८॥)	१।॥-)९
१०	बरसंधिया पर० मछरेहटा त० मिसरिख जिला सीतापुर	,,	१ बिस्वा मिनजुमला २० बिस्वा	,,	१९।=)६	१॥।≡)
११	संडिला पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतपुर	,,	आराजी तादादी १ बीघा १९ बिस्वा	,,	॥।≡)४	)८
१२	राजपुर प्रताप पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	,,	आराजी तादादी जंगल	,,	१।=)९	१।-)३
१३	बद्दरावा पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	मुन्नूपुर कलाँ	मुसल्लम मुहाल ब-इस्तनाय आराजी ११ ए० ९० डि० व २१ ए० २२ डि०	,,	९५)२	८॥-)५
१४	बद्दरावा पर० मछरेहटा त० मिसरिख जि० सीतापुर	मुन्नूपुर खुर्द	मुसल्लम मुहाल ब-इस्तनाय आराजी ३ ए० २७ डि० व २१ ए० ६५ डि०	,,	१९४॥)८	१९।≡)८
१५	अकिलपुर पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर		$\frac{१}{३}$ मिन० ।≡) मिन० १९ आना	,,	४२॥)	४।=)
१६	गौरिया पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	भीखमपुर	आराजी तादादी २२६ बी० १० बि० मिन० खाता खेवट नं० १ व हिस्सा $\frac{३}{४}$ मि० खाता २ खेवट नं० ३ जो आराजी बँटवारा से रह गई है हिस्सा $\frac{१}{३}$	,,	२११=)२	२१-)१०
१७	ठकुरेपुर पर० चंदरा तह० मिसरिख जि० सीतापुर		हिस्सा $\frac{१}{३}$ मि० ६ बि० १३$\frac{१}{३}$ बि० मि० २० बिस्वा	,,	४७॥-)६	४॥।)२
१८	बदैया पर० महोली तह० मिसरिख जि० सीतापुर		१ बि० १५ बि० ११$\frac{१}{४}$ कच० मि० २० बिस्वा	,,	२५॥)१	२॥)
१९	बगहा पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर		१ बि० १५ बि० ११$\frac{१}{४}$ कच० मि० २० बिस्वा	,,	१८॥=)११	१॥।-)४
२०	महमदपुर पर० गुरिंदा परसंदन तह० हसनगंज जि० उन्नाव	हिम्मतसिंह	$\frac{१}{३}$ हिस्सा मि० मुसल्लम मुहाल	,,	१३।-)४	१।-)४
२१	महमदपुर पर० गुरिंदा परसंदन तह० हसनगंज जि० उन्नाव	शिवदीनसिंह	,, हिस्सा मि० मुसल्लम मुहाल	,,	३९।॥)४	३।॥≡)९

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२२	नदहौआ पर० गुरिंदा परसंदन तह० हसनगंज जिला उन्नाव	बक्किया	१/३ मिन० १ बिस्वा ८ बि० ६ कच १७अन० १/३ पन० मिन० २० बिस्वा	हक आला	५।=)२	१॥)७
२३	रानीपुर पर० गुरिंदा परसंदन तहसील हसनगंज जिला उन्नाव	शिवदीनसिंह	,, मिन० मुसल्लम मुहाल	,,	३३।=)४	३।=)४
२४	नंदहौआ पर० गुरिंदा परसंदन तह० हसनगंज जिला उन्नाव	,,	,, मिन० १६ आना मुसल्लम मुहाल	,,	३३।=)२	३।=)३
२५	रसूलपुर पर० गुरिंदा परसंदन तह० हसनगंज जिला उन्नाव	,,	१/८ मिन० ३ बि० ६ बि० १२ कच० ६ अन० १० पनवांसी	,,	६२॥≡)४	६)४
२६	मदियामऊ पर० गुरिंदा परसंदन तह० हसनगंज जि० उन्नाव	,,	१/२ मिन० मुसल्लम मुहाल १६ आना	,,	६६।=)५	६॥=)३
२७	लालपुर पर० गुरिंदा परसंदन तह० हसनगंज जि० उन्नाव	,,	,, मिन० मुसल्लम मुहाल १६ आना	,,	२५)	२॥)
२८	बीहट बीरम पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	खास	,, मिन० ।) आना खाता खेवट नं० १ व २/८ मिन०।) खा० नं० २ मिन० १) थोक भवानीसिंह	,,	५६।≡) ३	५॥)६
२९	गोंडा पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	धर्मापुर	,, मिन० आराजी तादादी २१ ए० १६ डि०	,,	१५।≡)४	१)८
३०	कोरैया पर० लहरपुर तह० व जि० सीतापुर	गंगादास	१/१२ मिन० २० बिस्वा	,,		

फेहरिस्त हर्फ $\frac{ज}{अ}$ जयदाद मुरतहनी

तफसील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व जिला	नाम मुहाल	तादात हिस्सा खाता खेवट	नवइयत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	अकिलपुर पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	बहरामपुर	१/३ मि० ।)१/२ पाई मि० १६ आना	मुरतहनी	३०)	३)
२	बरसंधिया पर० मछरेहटा तह० मिसरिख जि० सीतापुर	,,	,, मि० २ बिस्वा मि० २० बिस्वा बहस्तनाथ आराजी १ बी० १५ बि० पुख्ता	,,	१३)५	१।=)२
३	जुमेरापुर पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जि० बहराइच	,,	१/८ मि० मुसल्लम मौजा	,,	६६॥≡)	६॥=)४

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

४	साथा पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	बहरामपुर	$\frac{3}{16}$ मिन० मुसल्लम मौजा	मुरतहनी	१३३।=)४	१३।=)४
५	सपसा पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	,,	,, मिन० मुसल्लम पट्टी	,,	२८।=)९	२॥=)९
६	मुड़ियाडीह पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	,,	,, मिन० मुसल्लम पट्टी	,,	२६॥=)१०	२॥=)९
७	नासिरगंज पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	,,	,, मिन० मुसल्लम मौजा	,,	१४४।=)३	१४।=)१
८	परसोहर पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	अमानतअली	,, मिन० पट्टी जिसका हिस्सा ९ बि० १२ बि० ६ कच० १३$\frac{1}{3}$ अन० व $\frac{9}{3}$ मिन० मुसल्लम पट्टी मिलकियत नवव दीना रकबा १६ ए० १६ डि०, १७ ए० २४ डि० व १७ ए० २१ डि०	,,	६८॥)४	६॥=)
९	बम्हौरा पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	मुस्तफाबाद	$\frac{3}{16}$ मिन० रकबा २२ ए० २१ डि०	,,		
१०	बम्हौरा पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	रघुबीरसिंह	,, मिन० खाता खेवट नं० ३ खाता खेवट नं० २ में हिस्सा ।) व खाता खेवट नं० ३ का रकबा १६ ए० १३ डि०	,,	२२॥)११	२॥)११
११	बम्हौरा पर० हिसामपुर त० कैसरगंज जिला बहरायच	,,	खाता खेवट नं० १ हिस्सा ॥) का			
१२	पकरी पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	शफीहुसेन-अलां	,, मिन० रकबा ३ ए० १६ डि०	,,	१=)४	=)
१३	बम्हौरा पर० हिसामपुर तह० कैसरगंज जिला बहरायच	मुस्तफाबाद	,, मिन० नंबरान ५७० ०—५०, ५७१ ०—७५, ६१२ ०—७६, ६१३ ०—६४ ६१४ १—१०, ६०२,६०४ ०—३० ६०६ १—१८, ६०५ ०—६६ जु० ६ ए० २६ डि० लगानी	,,	शामिल मौजे बम्हौरा नं० ६ में	

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१४	गौरिया पर० मझरेहटा तह० मिसरिख जिला सीतापुर	भीखमपुर	$\frac{६१}{५-०}$ बिलालगानी मिन० ७ बिस्वा ४ बिस्वांसी पट्टा नं० २, $३\frac{१}{३}$	,,	११८॥=)६	११॥-)१०
१५	उमरापुर पर० मझरेहटा तह० मिसरिख जिला सीतापुर	,,	मिन० ३ बिस्वा १२ बिस्वांसी	,,	७२)	७≡)३

फेहरिस्त हर्फ़ ज जायदाद मनकूला

बैलगाड़ी १ अद्धा १ भैंस २ गाय ४ बछवा बछिया ३ बटुआ करकुट २ डेग पीतल १ थाली फूल ४ कटोरा कटोरी १५ पतैली छोटी ४ दरा बड़ा १ कालीन १ शामयाना १ छोलदारी १ पलंग ४ तख़्त २ हिस्सा बकदर $\frac{१}{३}$ है

मकान पुख्ता वाकै लोहारबाग सीतापुर हिस्सा बकदर $\frac{१}{३}$ है

मुंसरिम

[काबिल फरोख़्त

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुकाम बहराइच

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३१ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १६—१२—३७ ई०
कुँवर शिवराजसिंह वगैरह कर्जदार सायल

बनाम

ठा० पलराम कुँवर वगैरह कर्जख्वाह फरीकसानी

चूंकि कुँवर शिवराजसिंह वगैरह साकिनान मझारां जिला बहराइच ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ७ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्त जायदाद

१—मुसक्कम मौजा मझारां परगना बहराइच हकीयत जमींदारी रकबा ११४ ए० ६७ डि० मालगुजारी मय अबवाब १२१०)

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २५ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापुर

मुक़द्दमा नंबर ४५९ सन् १९३७ ई०

तारीख़ पेशी २१ दिसंबर सन् १९३७ ई०

केदारसिंह वल्द दरियावसिंह कौम ठाकुर साकिन कठूरा परगना तंबौर तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

सायल

बनाम

१—जदुनंदनप्रसाद
२—सरजूप्रसाद
३—मु० जगरानी बेवा बिहारीलाल
} पिसरान कामताप्रसाद } अकवाम ब्राह्मण सा० कुंडवा धमधमपुर परगना कुँडरी तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

४—त्रिभवनदत्त वल्द गंगाराम
५—कन्हैयाप्रसाद वल्द भगवानदीन
} अकवाम ब्राह्मण साकिन बेदौरा ममानपुर परगना तंबौर तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

६—केदार वल्द जुराखन कौम ब्राह्मण साकिन पतरासा परगना तंबौर तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

७—गजराजसिंह वल्द गोकरनसिंह
८—मु० फूलकुँवरि बेवा देवीदीनबख़्शसिंह
} अकवाम ठाकुर साकिन सुपौली परगना कुँडरी तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

९—बद्री
१०—रामदत्त
११—मनोरथ
} पिसरान कालीचरन कौम ब्राह्मण साकिन पचुर्खी परगना कुँडरी तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

१२—गौरीशंकर वल्द शिवदत्त ब्राह्मण साकिन कनकारी

१३—कालिका वल्द नामालूम
१४—केदारनाथ
१५—मुरलीधर
} पिसरान मंसादीन अक० ब्राह्मण सा० ससथीध्याना

१६—चंदभाल वल्द नामालूम
१७—बैजनाथ वल्द नामालूम
} अक० ब्राह्मण सा० सालपुर

परगना कुँडरी तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर

फरीक़सानी महाजनान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफा ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल हो, वह अंदर मियाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करें।

तफसील जायदाद मनकूला व ममलूका सायल

बैल बग़रज काश्तकारी	गाड़ी चोबी मुसल्लम	बैल गाड़ी भैंस मय बच्चा	वग़ैरा गायमय बच्चा	वग़ैरा शीरख़्वार
४ रास	एक मंजिल	२ रास	८ रास	६ रास

तफसील क़र्ज़ात मार्फ़तनी सायल दीगर अख़ास डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा

१—मिनजुमला मुबलिगान मज़कूरा बाला मुबलिग १६) वसूल हो चुका है।

२—गुरदीनदास वल्द बल्दी कौम चमार साकिन कठूरा परगना तंबौर बजरिए रुक्का जेठ सुदी १३ सं० ४३ फ़० तादादी ३३) शरह सूद २) फ़ीसदी माहवार

३—हजारी वल्द रामचरन पासी साकिन कंहरिया परगना तंबौर बजरिए रुक्का कार्तिक सुदी ३ सं० ४२ फ़० ५७) सूद १) फ़ीसदी माहवारी

४—गंगा वल्द अँगनें कौम कहार साकिन बेहटा परगना तंबौर तहसील बिसवाँ बजरिए रुक्का पूस बदी ७ सं० ४२ फ० ३८) सूद २) माहवार मिनजुमला मुबलिगान मज़करा बाला ३) सूद के वसूल हुए

५—दुल्लू वल्द बल्लू बसालत कौम हज्जाम साकिन पुरवा मुंसिमखाँ मौजा मानपुर परगना तंबौर बजरिए रुक्का बैसाख बदी १३ सं० ४२ फ० १२) सूद २) माहवार

६—दुल्लू वल्द गयादीन कहार साकिन कठूर परगना तंबौर तहसील बिसवाँ बजरिए रुक्का चैत सुदी ६ सं० १३४२ फ० तादादी २००) सूद १) फीसदी माहवार

७—भिग्गा वल्द डल्ला कौम धोबी साकिन कठूरा परगना तंबौर तहसील बिसवाँ बजरिए रुक्का बैसाख सुदी २ सं १३४२ फ० २००) सूद १) फीसदी माहवार वसूल ४)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

८—गोकरन वल्द परसनाथ ब्राह्मण साकिन कठूरा परगना तंबौर बजरिए रुक्का बैसाख सुदी १० सं० ४२ फ० १९०) सूद ॥) सैकड़ा माहवार

९—गोकुल वल्द लालता कौम कहार साकिन कठूरा परगना तंबौर तहसील बिसवाँ बजरिए रुक्का बैसाख सुदी १४ सं० १३४२ फ० १००) सूद १) फीसदी माहवार

१०—बलदेव वल्द दीनबंधु कौम कुर्मी साकिन कंहरिया परगना तंबौर बजरिए रुक्का जेठ बदी ११ सं० ४२ ७३) सूद २) फीसदी माहवार वसूल ११)

११—गोकरनसिंह वल्द बसावनसिंह कौम ठाकुर साकिन कठूरा परगना तंबौर बजरिए रुक्का जेठ सुदी ११ सं० ४२ फ० ७१) सूद १) फीसदी माहवार

१२—दयाल वल्द शिवचरन मुराऊ साकिन हरियाना परगना कोइरी तहसील बिसवाँ बजरिए रुक्का जेठ सुदी १२ सं० १३४२ फ० सूद २२) सूद ३॥) फीसदी माहवार वसूल १)

१३—पाँचू वल्द शिवदयाल चमार सा० कठूरा परगना तंबौर बजरिए रुक्का ३० दि० १५ ई० १३) सूद २) फी०मा०

१४—द्वारिका वल्द शंकर कौम पासी साकिन कंहरिया परगना तंबौर बजरिए रुक्का पूस सुदी २ सं० ४३ फ० तादादी २००) सूद १) फीसदी माहवार

१५—मुरली वल्द मातादीन कौम ब्राह्मण साकिन सिकरी परगना तंबौर तहसील बिसवाँ बजरिए रुक्का फागुन बदी ८ सं० ४२ फ० ४५) सूद १) फीसदी माहवार

१६—सुकई वल्द दयाल कौम लोनिया साकिन सिकरी परगना तंबौर तहसील बिसवाँ बजरिए तमस्सुक किस्तबंदी २५ मई ३४ ई० ३६) बिला सूदी मिनजुमला मुबलिगान मजकूरा बाला सिर्फ ६) बाकी हैं

तफ़सील जायदाद

नं० शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवैयत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	कठूरा प० तंबौर त० बिसवाँ ज़िला सीतापुर	शिवसिंह	हिस्सा १ बि० १२ बिं० १० कच०मि०२०बि०खा०खे०नं०१	मौरूसी	११।=)	१=)१
२	खमरिया प० तंबौर त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर	,,	१ बि० १२ बि० १० कच० मि० २० बिस्वा	,,	७॥≡)६	।॥)३
३	सिकरी प० तंबौर त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		११$\frac{3}{5}$ पाई मि० १६ आना खाता खेवट नं० ५	,,	४२=)३	४≡)९
४	मानपुर प० तंबौर त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		११$\frac{3}{5}$ पाई मि० १६ आना खाता खेवट नं० २	,,	१२६।॥)५	१२॥≡)६
५	पतगासा प० तंबौर त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		११$\frac{3}{5}$ पाई मि० १६ आना खाता खेवट नं० १	,,	३७।-)४	३॥॥)
६	जालिमपुर प० तंबौर त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		९$\frac{3}{5}$ पाई मि० १६ आना खाता खेवट नं० १	,,	१९।-)४	१॥॥≡)१
७	ननी प० तंबौर त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		हि० ११$\frac{3}{5}$ पाई मि० १६ आ० खाता खेवट पट्टी नं० १	,,	१५।=)६	१॥)६
८	हथना प० कुँडरी त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		११$\frac{3}{5}$ पाई मि० १६ आ० खा० खेवट नं० ८ मुहाल कुंडरी	,,	२३)	२≡)१
९	बटउआ प० कुँडरी त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		११$\frac{3}{3}$ पाई मि० १६ आना खाता खेवट नं० पट्टी ५	,,	८३।-)४	८।-)१
१०	बेल्लाहयानी प० कुँडरी त० बिसवाँ जि० सीतापुर		$\frac{8}{20}$ मि० आराज़ी १८ बि० १६ बिसवाँ	,,	नानकार	
११	महोला प० तंबौर त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर		५ पाई मि० १६ आना कल मुहासल खेवट ६ पट्टी चौका	,,		

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

12584

आगामी कांग्रेस के अवसर पर

हिंदी के सर्वश्रेष्ठ दैनिक और साप्ताहिक

लोकमान्य

का

भारतीय वाणिज्य-व्यवसाय

विशेषांक

बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा

जिसमें

भारत के विविध वाणिज्य-व्यवसायों की
पिछले ५० वर्षों की परिस्थिति का
सिंहावलोकन किया जायगा।

भारतीय वाणिज्य - व्यवसाय पर विशेषज्ञों
के खोज-पूर्ण, ज्ञातव्य लेखों का
अपूर्व संकलन

अपनी प्रति के लिये आज ही लिखिए
विज्ञापनदाता इस अवसर से लाभ उठायें—

मैनेजर 'लोकमान्य'
१६०, हैरिसन रोड
कलकत्ता

पुस्तकालय
112584
विश्वविद्यालय हरिद्वार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

धातुपौष्टिक योग

इसके प्रताप से हज़ारों नामर्द मर्द बन चुके हैं। यह बहुत वर्षों से प्रचलित हो रहा है, क्योंकि इस औषधालय को इस कलकत्ता महानगर में स्थापित हुए ६० वर्ष से अधिक हो गए हैं—

यह योग तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखा देता है। पानी के समान पतले वीर्य को एकदम गाढ़ा कर देता है, पेशाब की समस्त बीमारियों को हटाकर दस्त साफ़ करता है, तथा गिरती हुई धातु को रोकता है। उपदंश (गर्मी), मेह, प्रमेह (गनोरिया-सूजाक) रोगों को यह जड़ से खो देता है, तथा शरीर को बलवान् करके स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, हस्तमैथुन से उत्पन्न कमज़ोरी (शिथिलता), रगों की सुस्ती, धातु-क्षीणता, स्मरण-मात्र से ही पतन (शीघ्र वीर्य का गत होना), पाख़ाना व पेशाब के साथ धातु का गिरना, अधिक विलासिता के कारण कमर में दर्द, हाथ-पैर का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना, नामर्द हो जाना इत्यादि रोगों को दूर कर रक्त शुद्ध करता है, और भूख, शक्ति तथा वज़न को बढ़ाता है। जिससे शरीर वज्र के समान मज़बूत हो जाता है। जिसमें पुरुषत्व न हो, उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त कराकर उनके वीर्य को गाढ़ा और गर्भ धारण करने के योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक़ पूर्ण गुणकारी १ डिब्बे की क़ीमत ५) रुपया, डाक-पैकिंग-ख़र्च ।।।) आना। यदि गुप्तेंद्रिय की भी शिकायत होवे, तो रोग़न मदन-मस्ताना को भी इस धातुपौष्टिक योग के साथ में ही मँगाकर उपरियोग (मालिश) करिए, संपूर्ण शिकायतें दूर होंगी।

जैसा इसका नाम है, वैसा ही इसका गुण है—जिस प्रकार कवियों ने लिखा है—यथा नामस्तथा गुणाः। विशेष खुलासा डाल अश्लीलता के कारण नहीं लिख सकते हैं। मालिश करने में किसी प्रकार का झंझट या परहेज़ तथा तकलीफ़ नहीं होती। साधारण रीति से प्रतिदिन मालिश करना होता है। दाम ५) रु० शीशी। विश्वास रखिए, यह दोनो दवा बहुत ही शीघ्र फ़ायदा दिखानेवाली हैं।

कितने नामर्द (नपुंसक), जो निराश हो चुके थे, शर्म से मुँह छिपाए चलते थे, घर में नित्य कलह रहती थी, दवा सेवन कर अब ताल ठोंक बाज़ी मार रहे हैं। चेहरे पर हँसी है। बूढ़े तक को भी यह दवा नया वीर्य, नया ख़ून, नई ताक़त और नया जोश ला देती है। नामर्द होना पाप ही नहीं है, बल्कि संतान नहीं होने से मानव-जीवन में कलंक भी है। अतः एक बार ज़रूर लेकर देखिए।

औरतों के लिये

स्त्री-रोग-निवारक तथा गर्भदाता योग

इस योग के सेवन से औरतों की क्षीणता तथा सब तरह का प्रदर, मासिक धर्म के समय पेट या कमर में दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनों से होना, बिलकुल ही न होना, असमय में मासिक धर्म होना, ख़ून के क़तरे गिरना, गर्भाशय में दोष होने के कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल संतति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगों पर २१ दिन योग को सेवन करने से गर्भाशय तथा शरीर के सब दोष दूर होकर मासिक धर्म समय पर होगा, और गर्भपात न होकर संतति नीरोग उत्पन्न होगी, यहाँ तक कि ७० वर्ष की स्त्री को भी इसके सेवन से निश्चय ही गर्भ धारण हो जाता है। २१ दिन तक सेवन करने योग्य दवा के एक डिब्बे की क़ीमत ५) रु०, डाक-पै०-ख़र्च ।।।), ऋतु (स्त्री)-धर्म के समय पेट (गर्भाशय) साफ़ करने को ८ पुड़िया काढ़ा का देना होता है, जिसका दाम और १) देना होगा।

स्त्रियों को भी धातुक्षीण होता है, जिसके कारण बार-बार पेशाब का उतरना, जलन होना, बूँद-बूँद पेशाब का गिरना, मूत्र-नली से पानी के समान या गाढ़ा मवाद के समान दुर्गंध-युक्त स्राव निकलना आदि तुरंत इस दवा से आराम होते हैं।

इन दवाओं को स्त्री और पुरुष हर मौसम में खा सकते हैं। परहेज़ वग़ैरह कुछ भी नहीं है। संतान की इच्छावालों को यह दोनो ही दवा स्त्री और पुरुष दोनो ही को एक साथ खाने से अच्छा होगा। ये दवाएँ तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इन्हें अवश्य मँगाव।

भारत-भैषज्य-भांडार, १०८, तुलापट्टी, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Registered No. A. 1712.

छप गया ! ऑर्डर दीजिए !!

आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ

नवयुग-काव्य-विमर्ष

हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्यों का मार्मिक विवेचन तथा आलोचन

रचयिता

हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक

पंडित ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

(भूतपूर्व सं० 'मनोरमा' और 'भारत')

हिंदी के वर्तमान आलोचना-साहित्य में यह एक अपूर्व ग्रंथ है। छायावादी या रहस्यवादी कवियों के साधारण परिचय के साथ उनके समस्त काव्य का मननपूर्वक, मार्मिक विवेचन किया गया है। काव्य की भाषा, भाव, अलंकार, रस, गुण और दोष का आकर्षक प्रतिपादन हुआ है। पुस्तक तीन खंडों में विभाजित की गई है—

प्रथम खंड (भाव-प्रधान कवि)—पं० माखनलाल चतुर्वेदी, राय कृष्णदास, बा० सियारामशरण गुप्त, पं० बालकृष्ण शर्मा, बाबू भगवतीचरण वर्मा और श्रीजगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद'।

द्वितीय खंड (कल्पना-प्रधान कवि)—बाबू जयशंकर 'प्रसाद', पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', पं० सुमित्रानंदन पंत, श्रीमती महादेवी वर्मा, प्रो० रामकुमार वर्मा और पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी'।

तृतीय खंड—सर्वश्री द्विज, प्रेमी, दिनकर, बच्चन और नरेंद्र आदि वर्तमान हिंदी के कई उदीयमान कवियों की कविताओं पर प्रकाश डाला गया है।

इस ग्रंथ में प्रकाशित कविताओं के चुनाव में यह विशेषता है कि उनका चुनाव उन्हीं कवियों द्वारा कराया गया है। यह ग्रंथ वर्तमान हिंदी-साहित्य में अपूर्व है, और इससे ऐसी आलोचनात्मक रचना की पूर्ति होती है, जिसका हिंदी में बिलकुल अभाव था। इसके द्वारा छायावादी कवियों की भाव पूर्ण मनोरम रचनाओं के मनन करने के एक सुंदर साधन की पूर्ति होगी।

विवेचना-पूर्ण भूमिका

पुस्तक के प्रारंभ में हिंदी के वर्तमान काव्य-साहित्य का काफ़ी विस्तृत और विद्वत्ता-पूर्ण विवेचन हुआ है। रहस्यवाद क्या है, संसार की अन्य भाषाओं में उसका क्या स्थान है, हिंदी-साहित्य में रहस्यवाद या छायावाद का क्या स्थान है, और वर्तमान छायावादी कवियों से हिंदी की क्या गौरव-वृद्धि हुई है, इस संबंध में पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक बड़ी आकर्षक, रोचक और विद्वत्ता-पूर्ण रीति से लिखी गई है। प्रत्येक हिंदी-प्रेमी का यह कर्तव्य है कि ऐसी उपादेय पुस्तक की एक प्रति अपने पास रक्खे। मूल्य २)

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Compiled
1999-2000

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri
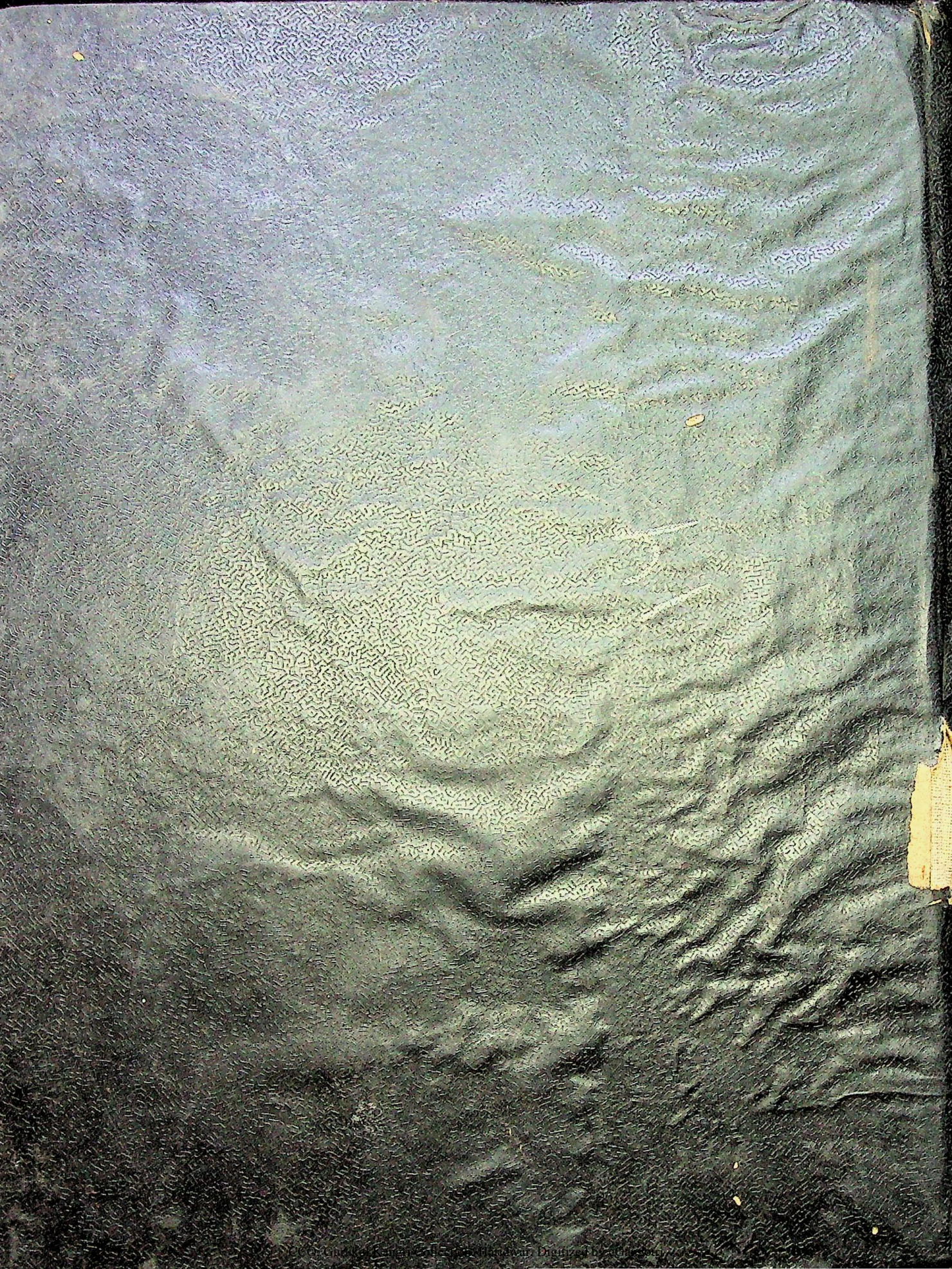
CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri